

ग्रन्थकर्ता
पं० देवानन्द शर्मा बटविकाश्रमस्थः

* भूमिका *

विदितचरमेवास्तीदम् तत्रभवतां निगमागमावबोधोत्कृष्ट-
सूक्ष्मेन्द्रियविषय विभागानां विदुषाम् । यदिह परब्रह्मपरमा-
त्मनो मायाशक्तिविजृम्भिते, ब्रह्माण्डखण्डाभ्यन्तराले । अनादि
कालकर्मवासनासंस्त्रियमाण जीवजातोपभोगनिमित्तं, स्थावरजङ्ग
मात्मकं सृष्टिचक्रं वर्तते । तत्र स्थावरसृष्ट्यपेक्षया जङ्गमस्यो-
त्कृष्टतया, तत्रापि कृमि कीट पक्षि मृग पशु मनुष्याणां मुत्तरो
त्तरं प्रबोधाधिक्येन, सकलजीव जात निकायानां मध्ये, मनुष्य
जातरे च प्राधान्य मस्तीति सुस्पष्टमेव । तस्यारचातुर्वर्ण्येन
विभागं कुर्यता भगवता गुणकर्मोपाधिस्तद्धेतु त्वेननिर्दिष्टः । तत्रच
कर्मणां नित्यनैमित्तिककाम्यरूपाणां त्रैविध्यम्-तेषांच नित्यानां
संध्यावन्दनादीनां । नैमित्तिकानाम्-जातकर्मादीनां, काम्यानाम्-
व्रतोपवासयज्ञादीनां, अवयवावयवि भावेनानेकविधत्वं धर्म
प्रमाणैर्मुनिभिः स्वकीयासु संहितासु बाहुल्येनोपवर्णनंकृतम् ।
अथच गुणकर्मोपाधिगतानां, ब्राह्मण क्षत्रिय विद् शूद्राणां चतुर्णां
वर्णानामाद्यानां त्रैवर्णिकानां द्विजत्वसंपादको वीजगर्भसमुद्-
भवैर्नोनिर्वहणार्थकः संस्कारो विहितः । तथा व्रतोपवास शालादि
कर्मसु, आराध्यदेवतानां, पूजाविधाननियमोनिर्दिष्टः । तत्र
वर्तमान कलिकालपिहित कर्मकाण्डविषये, प्रतिकूल क्रियाकला-
पक्रमसरणिमनुरुध्य, प्रवृत्तासु सतीष्वपि नानादिग्देशव्यवस्थानु
सारिणीषु विकलाङ्गासु व्यतिक्रम क्रियार्थासु पद्धतिषु, सकृत्स
मष्टिक्रिया क्रमविधानानुवर्तमानेन स्या पूर्वाचार्य विचारपद्धति
मनुक्रम्य कर्मकाण्डरत्नाकरनाम्नाऽयग्रन्थः संगृहीतः अत्र च पूजा
खण्डसंस्कारखण्ड दानखण्ड-शान्तिखण्डभेदेन चतुर्धाविभज्य,
विषय विभागोपवर्णनमकारि, प्रत्येकस्य विषयस्य प्रथमतस्तदासु-
खे सप्रमाणां विषयसिद्धिं विधाय तदनुसारेण कर्मपद्धतिश्चोक्ता ।
तत्रसहजात प्रमादघशेन अक्षरयोजकाद्यनवधानघशेन वा,
यदिस्युः काश्चन दृष्टयस्ताः क्षन्तव्याः, तथा तत्सूचनानुग्रहेणा
नुग्रहीतव्योऽयमनुचरो विदुषामितिशम् ।

॥ प्रस्तावना ॥



श्री परब्रह्म जगदाधार ईश्वर की मानुष सृष्टि अनादिकाल से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चातुर्वर्णीय है। इन वर्णों में से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इनकी द्विजत्व सत्ता संपादन है। जिन तीन वर्णों के परम्परा से जन्म संस्कारादिकर्म होते आये हैं उन्हें द्विज कहते हैं। इनके जन्म और संस्कार के विषय में अस्मदादि के पूर्वज व्यास वसिष्ठादि महर्षियों ने ब्रह्मनादि वेदों के अनुसार कर्मकांड विषय की श्रुति स्मृति गृह्यसूत्र पुराणादिकों में यथेष्ट रीति से विवरण किया है। पर चक्रकाल के प्रभाव से तथा नाना मत मतान्तरों के कारण आधुनिक पद्धतियों पूर्वाचार्यों की निर्माण की हुई पद्धतियों के प्रतिकूल भिन्न २ प्रकार की हैं। छपी हुई पद्धतियों जो लब्ध हो रही हैं उन में भी, सूत्रकारों के मतानुसार, समयोपयोगी कर्मों की यथेष्ट ज्ञानप्रद पद्धति के प्राप्त न होने के कारण मैंने आज तक ५ वर्ष के अन्दर वेद उक्तिपद, धर्मशास्त्र, गृह्यसूत्र पुराण दन्त्रशास्त्रादिकों का यथेष्टावलोकन करके यथासम्भव आधुनिक कर्मोपयोगितानुसार पद्धतियों का यह ग्रन्थ कर्मशास्त्ररत्नाकर नाम का रचा है, जिसमें प्रत्येक पद्धति के पूर्ण नाना ग्रन्थों के प्रमाणों को एकत्रित करके अमुक कर्म परिभाषा नाम से संग्रह किया है और तदनन्तर, अमुक कर्मपद्धति की रचना की है। इस पुस्तक को चार खण्डों में विभाजित किया है।

प्रथम पूजाखण्ड में गणेशादि पञ्चाङ्ग पूजा, ग्रहयागादि कोटि होमान्त अङ्ग प्रत्यङ्गादि समस्त वर्णन, तथा ग्रहयागादि ६ भद्रों के चित्र सहित पूजादि विषय और सामयिक एकादश्यादि शान्तिपद्धतियां तथा नररात्रादि विधान सप्तसती चंडी आदि के समस्त अनुष्ठान, और रद्यादि समस्त महामहा ह्रन्त, पद्धतियों की रचना की है, इस प्रकार पूजाखण्ड में १५० से अधिक परिभाषा और पद्धतियां हैं।

दूसरा संस्कार खण्ड है। उसमें भी प्रथम विवाह संस्कार पारस्कर सूत्रानुसार जो भी विवाहोपयोग्य विषय सूत्रन्यायया व धर्मशास्त्रादिकों से निर्णय करके परिभाषा लिखी गई है। तदनन्तर विवाह पद्धति की रचना हुई है। इसी तरह पोडश संस्कारों की परिभाषा व पद्धतियों के भित्ति प्रतिमा विवाह अर्क विद्यादि जिन २ ट्टर्यों की पुरातन ग्रन्थानुसार विना पद्धतियों के किया करत थे उनका भी पद्धतियां शास्त्रानुसृत निर्माण की गई है।

तीसरा दानपत्र है। इसके भाद्रि में भी सर्वदान परिभाषा विशेष प्रमाणों से सविस्तर रची गई है। तदनन्तर गोदानादि तुलादानान्त जितने भी दान साम्प्रति समयानुकूल किये जाते हैं परिभाषा के अनुकूल पद्धतियां निर्माण की गई हैं।

चतुर्थ शांतिखण्ड है— इसमें रजोदर्शन शांति से ग्रहशान्त्यन्तः जितनी भी जातक शांति हैं सप्रमाण निर्मित हैं। छपने के पूर्व गतवर्ष कार्तिकमास में मैंने यह ग्रन्थ पं० वासवानन्द शास्त्री जी को समालोचनार्थ दिखाया श्रीमान ने बड़े परिश्रम से इस ग्रन्थ की भानुपूर्व्य देखकर, प्रमाण पत्र को वंश वर्णन रूप से देकर कृतार्थ किया। तदनन्तर माघके महीने काशी जाकर राजकीय वर्वींस विद्यालय के भूतपूर्व अध्यापक पं० विश्वनाथ जी सर्वतन्त्र स्वतन्त्र सर्वशास्त्र पारंगत महा-राज व मीमांसादि पारंगत वर्वींस विद्यालय के महाध्यापक पं० बालवीध मिश्रजी व हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रधान महा महाध्यापक प्रोफेसर पं० बालकृष्ण जी, तथा चित्र स्वामी जी, तथा तत्काल तर्कचूडामणि महामहोपाध्याय पं० अ नदा-चरण, विद्वन्मंडली की सेवामें उपस्थित हुआ। तदनन्तर महामहोपाध्याय पं० हरना रायण विद्यासागर जी व पं० परमानन्द जी शास्त्री ज्योतिर्विद् धौतगर निवासी ने बड़ी उदारता पूर्वक इस ग्रन्थ के भाद्रि वृष्ट से अत्यन्तक जैसे २ छपते गया अवलोकन करने का कष्ट किया। उपरोक्त श्रीमन्तोंने इस ग्रन्थ की समालोचना की और प्रमाण पत्र प्रदान कर, जिनकी प्रतिलिपि ग्रन्थ में मुद्रित हैं, मुझे कृतार्थ किया। श्रीमान पं० हरिप्रसाद जी डिमरी शास्त्री तथा पं० चन्दीधरजी डिमरी शास्त्रीजी का भी मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस कार्य में सहायता दी।

समस्त विद्वन्मण्डली से तथा कर्मठ पुरोहितों से मन्त्र तियेदन है कि पहिले पद्धतियों की परिभाषाओं की विचार पूर्वक समालोचना करके पद्धतियों का अवलोकन करें। इस ग्रन्थ के छपने का यह प्रथम अवसर है यदि कोई त्रुटियां रह गई हों तो विद्वान् जन कृपा पुनः सर मुझे सूचना देने की कृपा करें जो कि पुनः संस्करण में ठीक कर दी जायगी।

पर्यन्त है कि अशुद्धियाँ विशेषतः ह्रस्व इकार की मात्राओं के छपते समय दृष्ट जाने से तथा कर्मजोडियों की व मरी अभावधानी से रह गई हैं शुद्धि पत्रानुसार संशोधन करने की कृपा करें जिनमे कि मन्त्रोच्चारण में किसी प्रकार त्रुटि न रहे।

श्रीमान् प० वासवानन्द शास्त्रिणां ग्रन्थकर्तृपरिचयरूपात्मकं

प्रमाणपत्रम् ।

अनेकधात्पलचन्दवित्तैर्हिण्मये राजतरत्नशृङ्गे ।

अस्यध्युदीचित्रिदशत्रमाप्तो हिमालयोनाम नगाधिराज ॥१॥

वर्वर्तितस्मिन्निविधैर्विचित्रैश्छायाप्रधानैस्तरभि फलाढ्यैः ।

समन्वितं चालकनन्दया वा पवित्रितं तद्ददरीवनाभ्यम् ॥२॥

यत्राय योगीवदरीशरोऽसौ संसृद्धवाहोन्द्रिय चित्तवृत्तिः ।

आत्मानमध्यात्ममयात्मनैव निरीक्ष्यमाणो भजते तदस्पाम् ॥३॥

तस्मिन्प्रदेशे किल काश्यपानां वद्रीशपादाचर्कसद्विजानाम् ।

ग्रहर्निशं ज्ञाह्यणवेदानादा ह्यास्ते पुरीडिग्मरनामनेया ॥४॥

वभूयतस्यां गुणरूपविद्या विचार विज्ञान विधानदक्ष ।

कुलाभ्युपुत्रोऽन्वयमात्रमुख्य श्रीवद्विदत्त किलभूमिदेव ॥५॥

अवापतस्माज्जनिमात्मजोऽपि श्रीकृष्णयात्रोत्सवपुण्यकाले ।

अध्यात्मविज्ञानविधेयकृष्णश्रीकृष्णदत्तसुकृते सत्सु ॥६॥

अभूदथैतस्यचसूनुरेको योजीवमात्रानुगृहीतचित्तः ।

परार्थसंज्ञानपटुश्च जीवानन्देतिनाम्ना प्रथितोदयालु ॥७॥

त्रिणोर्भक्तिपरायणस्य सुतरां सत्यप्रवृत्ते सदा-

नानाद्यत्नविधानशास्त्रसरणिप्रारब्धसिद्धार्थिनः ।

तस्यायात्मसमाशभायविभवस्यासन्सुतासन्ततम्

पुसोऽर्थाद्वयेऽनुरूपगुणगाञ्चत्वार एवाभवन् ॥८॥

तेषांज्येष्ठतमो गृहीतप्रिनयो वृद्धानुयायीनयी-

स्तसेवाधिगतार्थेशास्त्रविभवो प्रज्ञाप्रधानेन्द्रियः ।

दीर्घोदारविचारचित्रचरितो नव्यार्थसंस्कारवृत्तु-

देवानन्द इति प्रसिद्धिमगमान्नाम्ना गुरुषां प्रिय ॥९॥

तनेयं विदुषा गभीरधिपणाधेर्षान्वितेनाधुना-

पूर्वाचार्यविचारपद्धतिमनुसृत्यैव संपन्नतः ।

सवीक्ष्याधुनिकास्तु कर्मसरणिष्व्वाकस्मिकं व्यत्ययम्

बुद्ध्या संप्रथितो द्विजन्मविधिरुन् रत्नाकरोऽयं मुदा ॥१०॥

परिचायक —

वासवानन्द शास्त्री

विदितमिदमस्तु प्रेक्षा वक्षाम्

दृष्टि काश्रमनिवासिनापरिगत बुद्धिना
डिम सी उपनाम्ना देवानन्दशर्मपरिशुद्धिणा
सातिजमभरंनिर्मितोऽ न्वर्थनाम्ना कर्म
काशपुरना कशेयं शब्दः क्वचित् क्वचिदंश
तः श्रुतस्तेन श्रुतमात्रतः कर्मगनामुपैगी संस्रभा
श्रुत इति काशी स्थः काशीनाथपरिशुद्धितो विना
पथतीति शम्

दु. सर्वतन्त्र स्वर्तन

कार्गोस्थ - त्रिदशविद्यालयस्य प्रधानाध्यापकानाम प्रमाण पत्रम्

श्रीमत्त पण्डितप्रवरेण देवानन्दडिमपरिशुद्धिणा
बहून् प्रान्तीयान् नूतनाश्च स्मृतिम् स्मृतिान् मूलग्रन्था
न्निबन्धनग्रन्थाश्च सम्यगनलोभ्य परिशील्यम्
सङ्गृहीतोऽयं कर्मकाण्डरत्नाकराख्यः स्मृतिग्रन्थः
स्मृतिषु कर्मकाण्डेऽयं प्रवेशो भिन्नवता विपास्ये
तां जागाणाम् च महानामुपकारकारणात्
नरिष्यिणीं गृहीत् च पूर्येदिति सुदृढं
निश्चयित्वात् ॥ ५ ॥

चित्तस्वामीशास्त्री
जानकेश मिश्र

रा) ३१-१९१७-२२७७ राश्री

श्री. १०८

श्रीमता श्रीमती धनमामेन देवानन्द शर्मणा विद्वदरेण प्राचीनी कर्मकाण्ड,
परिचयसम्पत्तिं काशीज्योतिषशास्त्राभाषिणीं सम्मन्त्रितान् श्रुत्वादिभ्यः प्रमा
णानि सङ्गृह्य सप्रमणा कर्मकाण्डश्लाकरनामालोचयपुत्रसर्वोपयोगी
यं प्रस्तावयामहेति विदुषा विदुषा सहस्रनामानामेव कर्मकाण्डे
समे प्रस्तावयामहेति विदुषा सहस्रनामानामेव कर्मकाण्डे
तेति सप्तदशति नान्नोभावेन

श्री. ^{गणेशाय} गणेशाय नमः श्रीमान् कोट्येन बनारस
श्रीमतीला नेतन आकरणा व्याप सन्नि ॥ १०८ ॥

श्री.

महामहाप्राध्याय विद्या सागरादिपदविभूषित -

श्री पण्डित हरनारायण शास्त्रिणां सम्मति :-

द्विमरी लुपाद्धेन पण्डित देवानन्द शर्मणा विरचितः कर्मकाण्डश्लाकराख्या
ग्रन्थोमया सम्प्रमवलोकितः । अस्मिन् परिभाषा प्रधान पुर . सरं प्रत्येक कर्म
पद्धति संप्रहो यशेन एतः । क्वचि सिद्धि प्राप्तीय रीत्यनुरोध प्रणो ५ प्ययं
ग्रन्थो ५ संज्ञयं महता प्रपत्नेन सम्पादितः । सफलं भूतश्चास्मिन् विषयेग्रन्थ
कर्तुं धम । पूजा दान संस्कार शान्ति विधान यानामक खगडचतुष्टय
भूषितोऽयं निबन्ध कर्म काण्ड विषयजिज्ञासुना महापकाराय भविष्यतीति
मवीया सम्मति ।

हरनारायण शास्त्री,

प्रोफेसर हिन्दू कालिज दिल्ली ।

ता० १७ अक्टूबर १९३२

कधिराज पण्डित परमानन्द ज्योतिर्विदुः शास्त्री रसायनाचार्य

ता० १७ अक्टूबर १९३२

श्रीनगर (गढ़वाल)

देवानन्दामिधानहिजघररचितं कर्मकाण्ड प्रधानं,
ग्रन्थं श्रीदयोपकार क्षममति रुचिरं जायते पूर्ण हर्ष ।

कुर्धन व्याख्यां घहनामति विशदमति कर्मणां ग्रन्थकर्त्ता,
प्राप्त साफल्य मस्मिन्निति घदति भिषक् देहरी प्रान्तवासी ॥

परमानन्दपाराडेय

इन्द्रप्रस्थीय म्युनिसिपल्टीय प्रधान वेद्य देहली

* विषयसूची *

—*—

विषयः	पृष्ठे	विषयः	पृष्ठे
(अ)			
अग्न्यादिपुंत्वकहोमः	४१०	अर्कविवाहपरिभाषा	४३६
अकालवृष्टिः	३६५	अर्घसूत्रव्याख्या	३५४
अप्राहासमिधः	१२८	अर्घ्यद्रव्याणि	=
अग्निजिह्वानामानि	१२८	अशमारोहण सूत्रव्याख्या	३७१
अग्निपूजनम्	१२४	अशमारोहयोगाथागतम्	३७१
अग्निस्थापनम्	१२४	अश्वदानपद्धतिः	५८३
अग्निसंस्काराः	१२६	अश्वदानविधिः	५८३
अशेरुपस्थानम्	१२८	असुरादिविवाह विषयाः	३६५
अजिनधारण सूत्रव्याख्या	५१३	अष्टाङ्गार्घ्यम्	=
अतिचारगतगुरुफलम्	३६३	(आ)	
अतिरुद्रस्वरूपम्	३४६	आचमन प्रकारः	४
अदेयवस्त्राणि	६	आचमनीयम्	=
अन्धशुक्रः	५८५	आचमनेजलप्रमाणम्	५
अन्यपवित्रधारणम्	४	आचमनेवर्ज्यजलम्	५
अन्नप्राशनकर्मपद्धतिः	४८३	आचार्यशुश्रूषादि सूत्रव्याख्या	५१६
अन्नप्राशनसूत्रव्याख्या	४८२	आचार्यायमिदानिवेदनम्	५१७
अधिदेव प्रत्यधिदेवानां स्थापनेकमः	१४३	आचार्यायवर्दानसूत्रव्याख्या	३७४
अनाश्रमीप्रायश्चित्तम्	३५४	आज्यस्थाली	१२६
अन्वारब्धसूत्रव्याख्या	५१४	आज्योद्गासनादि सूत्रव्याख्या	१२७
अन्वारब्धादि सूत्रव्याख्या	१२६	आदित्यशान्तिः	६८६
अभिषेकादिमंत्रसंघट्टः	५३	आभ्यातानहोमः	४०८
अभुक्तमूलक्षणम्	६१३	आमाचारयाजननशान्तिपद्धतिः	६६०
अर्कविवाहपद्धतिः	४३७	आमाचोस्याजनन शान्तिपरिभाषा	६५६
		आयुष्यकरण सूत्रव्याख्या	४५६

विषयः	पृष्ठे	विषयः	पृष्ठे
आर्षलुप्तोद्देशत निर्वचनम्	११	(ऊ)	
अश्लेषा शान्तिपद्धतिः	६३६	ऊर्ध्वपुंड्रतिलकधारणम्	४
अश्लेषाजनन शान्तिपरिभाषा	६३६	(ऋ)	
आश्विन्य शुक्लेनवरात्र निर्णयः	२४३	ऋग्वेदोक्तशान्तिपाठः	२५
आशौचेदेवीपूजा निर्णयः	२४३	ऋत्विग्वरणम्	१४५
आसनप्रमाणम्	३	ऋत्विगादीनांदक्षिणादिनियमः	१४६
आसनम्	३	ऋतुगामिन स्नानम्	४४३
(उ)		ऋतुस्नानेदिनशुद्धिः	४४२
उत्तरीयम्	४	ऋध्यादीनामुच्चारणम्	११
उपनयन नक्षत्राणि	५११	(ए)	
उपनयनपद्धतिः	५२८	एकादश्यांकपालवेधः	२६८
उपनयनसूत्र व्याख्या	५१०	एकादशीनिर्णयः	२६७
उपनयनाचार्यं लक्षणम्	५११	एकादशीब्रतोद्यापनपद्धतिः	२६६
उपनयनकालाब्द सूत्रव्याख्या	५१०	एकादशीब्रतोद्यापनविधिः	२६८
उपनयने उरगतादिविचारः	५११	एकाहुतिप्रमाणम्	१४५
उपनयने गुरुविचारः	५११	एकोत्तरवृद्धिचंडापाठविधिः	२५३
उपनयने गुरुशुद्धिः	५१०	एकोनविंशतिरेखात्मकभद्रोद्धारः	६४
उपनयनेतिथयः	५११	एकोनविंशतिरेखात्मकभद्रप्रमाणम्	६४
उपनयनेनसहचौलसंस्कारपद्धतिः	५२६	(क)	
उपनयनेप्रदोष रज्यम्	५११	कन्यागुरु शुद्धि विचारः	३६३
उपनयनेप्रासपक्षादिविचारः	५१०	कन्यागृहे भोजन रज्यम्	४२६
उपनयनेलग्नशुद्धिः	५११	कन्यादानसंकलनः	३६१
उपनयनेवस्त्रपरिधानसूत्रव्याख्या	५१२	कन्या रजस्वलां प्रति विशेषः	३६३
उपनयनेवाराः	५११	कन्यारजोदर्शन शान्तिपद्धतिः	६०६
उपनयनेहृदयालम्बनसूत्रव्याख्या	५१३	कन्या रजोदर्शन शान्ति परिभाषा	६०५
उभयमुखीधेनुदानपद्धतिः	५७४	कन्यालक्षणाणि	३५४
उभयमुखीधेनुदानविधिः	५७३	क यावत्परिधानसूत्रव्याख्या	३६८
उष्णोदकस्नानरज्यम्	३		

विषयः	पृष्ठे	विषयः	पृष्ठे
फल्पाविवाहकालः	३६२	कीलाटवलिलक्षणम्	१४
कर्णवेद्य-पद्धतिः	५०३	कुण्डकण्डलक्षणम्	१४१
कर्मपरत्वेनहोमकुण्डविधानम्	१२२	कुण्डनाभिलक्षणम्	१४५
कर्मभूमिः	१	कुण्डनिर्माणाथभूमिसोधनम्	१२२
कर्मभेदेनाग्निनामानि	१२४	कुण्डयोनिलक्षणम्	१४५
कर्मविशेषेणवेदीमानम्	५९	कुण्डाभावे स्थडिलम्	१४५
कर्माङ्कदेवतानामानि	१४	कुण्डेनालक्षणम्	१४५
कर्माचार्येणलक्षणम्	५६३	कुण्डेमेखलादिमानम्	१२३
कर्मार्यभूमिविचारः	३	कुण्डेपुमेखलामानम्	१४५
कर्मादौनिलकविचारः	१०	कुम्भविवाहपद्धतिः	४३०
कर्मोपासनायांदिग्विचारः	४	कुम्भविवाहपरिभाषा	४३०
कलशप्रमाणम्	७	कुमारीपूजापद्धतिः	२५०
कलशस्थोपनपुण्याहवाचनपरिभाषा	१५	कुमारी लक्षणम्	२४२
कलौगवालमनवज्यम्	३६०	कुमारोपद्रवेजपनीयमंत्र	४५७
काकमैथुनदर्शनशान्तिविधिः	६६८	कुशकण्डिकासूत्रव्याख्या	१२२
काकविष्टपतनशान्तिपद्धतिः	६६८	कुशमयोब्रह्मा	१२५
काकविष्टापतनशान्तिविधिः	६६७	कुशपरिस्तरणम्	१२५
काम्यकुमारीपूजनम्	२४३	कुशपवित्रप्रमाणम्	१२६
कार्तिकद्वन्द्वपूजननेसौरप्रमाणम्	६६३	कूटस्थमाभ्यगणना	३५५
कार्तिकवाराहद्वन्द्वपूजननशान्तिपद्धतिः	६६४	केशधिवासनविधिः	४६५
कार्तिकवाराहद्वन्द्वपूजननशान्ति परिभाषा	६६३	कोटिहोमकुण्डमानम्	१४५
कार्यपरत्वेनान्दी श्राद्धविचारः	१०	(ख)	
कार्यपरत्वेन-होममुद्राविचारः	१४६	खट्वारोहणम्	४७८
कालिकाप्रयोगविधिः	२६७	खानेनिसृत्वस्तुकलम्	१८३
कालिकार्यपूजापद्धतिः	२६६	(ग)	
कालिकार्यश्रोतारविधिः	२६७	गरुडप्रमाणम्	२
		गरुडप्रक्षेपणम्	२
		गणेशपूजापद्धतिः	२५

विषयः	पृष्ठे	विषयः	पृष्ठे
गणेशपूजापरिभाषा	१५	गोकर्णप्रमाणम्	१२६
गन्धानुलेपनम्	७	गोदानपद्धतिः	५६७
गर्त्तं वायुपरीक्षा	१८१	गोदानपरिभाषा	५६६
गर्भधारणोपायसूत्रव्याख्या	४४६	गोदानेयोग्यब्राह्मणः	५६६
गर्भाधानपद्धतिः	४४४	गोदानस्थानानि	५६६
गर्भाधानसूत्रव्याख्या	४४४	गोदानसमयांक्तविषयाः	५६६
गर्भिणीधर्मपरिभाषा	४५४	गोमुखप्रसवशान्तिपद्धतिः	६०८
गर्भिणीपतिधर्माः	४५४	गोमुखप्रसवशान्तिपरिभाषा	६०७
गर्वालम्बनसूत्रव्याख्या	३६०	गोरङ्गदेवताः	७६६
गायत्रीनिर्णयविशेषः	५१५	गोत्रगणना	३५५
गुरुपूजाविधिः	६८०	गोत्रप्रदरेत्रयेविवाहनिर्णयः	३५६
शुर्वादित्यादिफलम्	३६३	ग्रन्थसमाप्तिवर्णनम्	६८८
शुर्वर्कप्रतिकूलशान्तिपरिभाषा	६८०	ग्रहगोत्राणि	१४०
गृहनिर्माणेदिक्साधनम्	१८३	ग्रहणजननशान्तिविधिः	६६३
गृहनिर्माणेवेषपटलम्	१८४	ग्रहमन्त्रम्	६४४
गृहप्रवेशपद्धतिः	२२६	ग्रहयागपद्धतिः	६४८
गृहमातरः	१७	ग्रहयागपरिभाषा	६४३
गृहवास्तुदेवतानामानि	१८८	ग्रहयागभद्रोद्धारः	१४७
गृहवास्तुपूजापद्धतिः	२०८	ग्रहवर्णानि	१४३
गृहवास्तुभद्रोद्धारः	१६५	ग्रहसमिधः	१४५
गृहवास्तुभद्रेखानामानि	१८८	ग्रहहोमपद्धतिः	१६३
गृहवास्तुयागपद्धतिः	२०८	ग्रहाकाराणि	१४३
गृहवास्तुयलिदानम्	२१३	ग्रहाणामग्नय	१४४
गृहवास्तुहोमनामावलि	२११	ग्रहाणांजन्मभूमयः	१६४
गृहवास्तुहोमपद्धतिः	२१०	ग्रहाणांदानपद्धतिः	५६८
गृहवास्तुपरिभाषा	१८३	ग्रहाणांद्रव्याहुतिप्रमाणम्	१४६
गृहादिसूत्रारम्भविधिः	१६०	ग्रहाणांस्थापनेदिङ्निपयः	१४३

विषयः	पृष्ठे
ग्रहाणांप्रतिमाः	१४३
ग्रहाणां बलिदानपद्धतिः	१७४
ग्रहाणामधिदेवाः	१४३
ग्रहानाहमात्म्ये	१४३

[घ]

घृतच्छायादर्शनम्	५१
घृतमातरः	१७

(च)

चण्डीदीपदानपद्धतिः	२६५
चतुर्थ्यांस्थालीपाकप्राशनसूत्रव्या०	३७५
चतुर्थ्यांस्थालीपाकहोमव्याख्या	३७५
चतुर्थीकर्मपद्धति	४१६
चतुर्थीकर्मसूत्रव्याख्या	३७४
चन्द्रग्रह शांतिः	६८७
चरुस्थालीलक्षणम्	१२६
चूडाकर्मकेशान्तपद्धतिः	८६९
चूडाकर्मकेशान्तसूत्रव्याख्या	८६२

(छ)

छन्दोलक्षणम्	११
छागबलिविधिः	२४७
छोलिकाभरणम्	३६६

(ज)

जम्भोसय कर्मपद्धतिः	४८६
जयहोमः	४०७
जलशीचम्	२
अहमातरः	१७
जलाभावेभ्राच्चमनम्	५

विषयः	पृष्ठे
जातकर्मपद्धतिः	४५८
जातकर्मसूत्रव्याख्या	४५५
जातस्यदुग्धपानम्	४८१
जीवमातरः	१७

(त)

तिलधेनुदानपद्धतिः	५७८
तिलधेनुदानविधिः	५७७
तिलपात्रदानम्	५२
तिलोत्राक्षणस्यवर्णानुपूर्वेणविवाहा	३६७
तुलसीविवाहेधूर्तर्यर्घ्यपद्धतिः	३१७
तुलसीविवाहेवाग्दानपद्धतिः	३१६
तुलसीविवाहपद्धतिः	३१८
तुलसीविवाहेपूर्वाङ्गकर्मपद्धतिः	३१३
तुलसीविवाहविधिः	३१२
तुलादानदेवताः	५६०
तुलादानपद्धतिः	५६२
तुलादानपरिभाषा	५६०
तुलादानादौमंडपमानम्	५८
तुलादाने-तुलाप्रमाणम्	५६०
तुलादाने-वारणमंडलभद्रप्रमाणम्	५६१
तुलादानेवारणमंडलभद्रोद्धारः	५६२
तृणवृक्षादिपरीक्षागृहनिर्माणे	१८२
तोरणनिर्माणम्	५८
तोरणपूजाध्वजारोपणपद्धतिः	६८
तोरणार्थवृक्षा	५६
तोरणोपरिफलककीलनम्	५६
तोरणोपरिफलकेभ्रायुधचिन्हानि	५६
तोरणोपरिफलकेचिन्हमानम्	५६

विषयः	पृष्ठे	विषयः	पृष्ठे
(द)		दीक्षांगसर्वतोभद्रपूजनम्	८१
दत्तककन्योद्वाहेनान्दीश्राद्धविचारः	१८	दीक्षांगसर्वतोभद्रोद्धारः	८०
दत्तकपुत्रस्यसापिण्डव्यम्	३५६	दुर्दन्तजननशान्तिपद्धतिः	६५५
दधितिलादिसूत्रव्याख्या	५२४	दुर्दन्तजननशान्तिपरिभाषा	६५५
दन्तधावनकाष्ठम्	२	दूर्वातुलस्योश्नेत्रनविचारः	८
दन्तधावनवर्ज्यम्	२	देवपूजायांप्रतिमाविचारः	६
दशम्यां देवीविसर्जनपद्धतिः	२५२	देवपूजायां सर्ववर्णाधिकारः	६
दशम्यद्वितीयाविसर्जनविधिः	२११	देवानामपिनान्दीविशेषणम्	१७
दक्षिणाकालिकायन्त्रोद्धारः	२६६	देवार्चनेवर्ज्यपुष्पाणि	८
दक्षिणतोत्रह्यासनम्	१२५	देवार्थचन्दनम्	६
दक्षिणेतानुलकन्यापरिणयनम्	३५७	देवार्थ-भूपणम्	६
दानकालः	५६३	देवार्थयज्ञोपवातम्	६
दानखंडप्रारम्भः	५६३	देवीप्रियपुष्पाणि	६
दानपात्रलक्षणम्	५६३	देवीपुराणेहोमेसमन्त्रकीविधिः	१२४
दानप्रतिग्रहविधिः	५६४	देवीभागवतेयज्ञरात्रसंस्करणम्	१२८
दानधि	५६४	द्रव्याणां होमेप्रतिनिधयः	१४५
दानसमयेप्रतिग्रहस्थानानि	५६५	द्वादशल्लितोभद्रपरिभाषा	३२१
दानेद्रव्यपरत्वेनदेवताः	५६५	द्वारनिर्माणादिसूत्रव्याख्या	१८३
दिकपालबलिदानपद्धतिः	७४	द्वारमातर	११
दिकज्ञानार्थ-शंकुरोपणम्	५८	द्विरागमनादिपरिभाषा	४२७
दिविष्यभागो न ग्रहाणां मुखानि	१४४	(ध)	
दीक्षाङ्गवास्तुभद्रपरिभाषा	१०२	धनिकद्विद्रादिभिर्दक्षिणादेयमानम्	१४६
दीक्षाङ्गवास्तुभद्रोद्धारः	१०४	धर्मशालादानपद्धतिः	५८६
दीक्षांगवास्तुभद्रपूजापद्धतिः	१०५	धर्मशालादानपरिभाषा	५८५
दीक्षांगवास्तुबलिदानपद्धतिः	११६	धुल्यर्षमधुपर्कपद्धतिः	३८०
दीक्षांगवास्तुहोमपद्धतिः	१२१	ध्रुवदर्शनसूत्रव्याख्या	३५४
दीक्षांगसर्वतोभद्रपरिभाषा	८६	ध्रुवादिमायादयः	१८७

विषयः	पृष्ठे	विषयः	पृष्ठे
(न)			
नक्तकालः	२६८	निघरजोदर्शनशान्तिपद्धतिः	६००
नन्दाद्रिशिलाप्रमाणम्	१८७	निघरजोदर्शनशान्तिपरिभाषा	६००
नरकचतुर्दशीकर्म पद्धतिः	२६०	निर्माल्यलक्षणम्	६
नरकचतुर्दशीपरिभाषा	२८६	निष्कमणसूत्रव्याख्या	३६८
नवग्रहपूजापद्धतिः	४७	निपिद्धभूमिः	१८२
नवग्रहपूजापरिभाषा	१६	न्यूनहोमेनसूत्रप्रमाणम्	१२७
नवरात्रनिराण्यः	२४३	(प)	
नवरात्रपरिभाषा	२४१	पंचगव्यकरणम्	२०
नवरात्रदेवीपूजापद्धतिः	२४४	पंचगव्यवलिलक्षणम्	१४
नान्दीमुखविधिश्चावश्यकेविशेषः	३६७	पंचगव्यद्रव्यलक्षणम्	१४
नान्दीश्राद्धपद्धतिः	४३	पंचगव्यामिमन्त्रणम्	२०
नान्दीश्राद्धपरिभाषा	१७	पंचगर्गःखलिलक्षणम्	१४
नान्दीश्राद्धकालः	१७	पंचपल्लवानि	७
नान्दीश्राद्धतिलस्वधापदस्थानेविचारः	१८	पंचमाखलिलक्षणम्	१४
नान्दीश्राद्धदक्षिणजानुनिपातरथ	१८	पंचरत्नानि	७
नान्दीश्राद्धपितरा.	१८	पंचरसलक्षणम्	१४
नान्दीश्राद्धेपित्रादिचर्मजीवितेविशेषः	१८	पंचसुगन्धलक्षणम्	१५
नान्दीश्राद्धेब्राह्मणसंख्या	१८	पन्थुपवेशनेविचारः	१०
नान्दीश्राद्धसंकल्पार्थविशेषः	१७	पतितसार्धत्रोक्तसूत्रव्याख्या	५२०
नान्दीश्राद्धोत्तरधर्माः	४२६	परकीयकन्योद्वाहेनान्दीविचारः	१८
नान्दीश्राद्धोत्तरतर्पणनिषेधः	१६	पल्लीपतनशरठारोहणशान्तिः	६६६
नान्दीश्राद्धोत्तरर्षिहदानवर्ज्यम्	१६	पवित्रधारणम्	४
नान्दीश्राद्धोत्तरर्षिडादिविधानम्	१६	पाणिग्रहणसूत्रव्याख्या	३६३
नानाविधिचण्डीपाठकाम्यप्रयोगा	२७७	पाणिप्रतपनाङ्गसूत्रव्याख्या	४१६
नामकरणसूत्रव्याख्या	४७१	पादुकाधारणविचारः	३१
नामकरणपद्धतिः	४७२	पाद्यपात्रेप्रक्षेपणीयम्	८
		पाद्यसूत्रव्याख्या	३५८

विषय.	पृष्ठे	विषय	पृष्ठे
पार्थिवलिङ्ग-निर्माणप्रकार	३२५	प्रतिशुकशान्तिपद्धति	६८१
पित्राद्येकनक्षत्रजननशान्तिपद्धति	६५३	प्रतिशुकशान्तिपरिभाषा	६८४
पित्राद्येकनक्षत्रजननपरिभाषा	६५३	प्रतिशुकापवाद	६८५
पुण्याहवाचनपद्धति	३३	प्रतिष्ठादिसूत्रव्याख्या	११
पुनरुपनयनविधि	५२१	प्रत्युद्वाहादिनिर्णय	३६८
पुंसवनकर्मपद्धति	४४७	प्रतिवेकरदर्शनम्	१
पुंसवनसूत्रव्याख्या	४४६	प्रसरवतीधर्मशुक्लम्	४५५
पुत्रजन्मनिनान्दीविचार	४५५	प्रातःशकुनादि	२
पुत्रोत्पत्तौपितृस्नानम्	४५५	प्रातरयोग्यदर्शनीया	२
पूजाधिकारिण	६	प्रातरुद्यानकाल	१
पूजानिर्माल्योद्घासनम्	७	प्रायश्चित्तसूत्रव्याख्या	३६६
पूजापात्रस्थापनक्रमम्	८	प्रोढ़पादादिपिंडाशनानि	३
पूजायांप्रतिनिधिविचार.	६	प्रोक्षणीपात्रम्	१२१
पूजार्थजलम्	७		
पूजाविषया	६	(फ)	
पूजासमयेनादित्राणां ध्वनि	८	फलविशेषेण रुद्रीसंख्या	३४६
पूर्णपात्रलक्षणम्	१३०	(व)	
पूर्णाहुति	१३०	बलिराजद्वयम्	१६७
पूर्वादिद्विद्वेषत्रयावस्थानम्	५६	विष्णुस्रोत्सर्गविचार	२
प्रकारान्तरेणभूमिपरीक्षा	१८१	बुधग्रहशान्ति	६८७
प्रतिकूलगुरशान्ति	६८१	बृहस्पतिग्रहशान्ति	६८७
प्रतिकूलप्रिनायकशान्तिपद्धति	६७२	(भ)	
(प)		भद्ररंजनद्रव्याणि	७
प्रतिकूलादिनिर्णय	३६५	भस्मधारणम्	४
प्रतिकूलाकशान्तिपद्धति	६८३	भस्मधारणविधि	२२३
प्रतिमान्युत्तारणम्	८१	गिदाचर्याचरणसूत्रव्याख्या	५१७
प्रतिमाप्रिनाहपद्धति	४३३	भूमिपचक्रपरिभाषा	३०७
प्रतिशुकदोषा.	६८४	भूमिपचक्रपूजापद्धति	३०८

विषयः	पृष्ठे	विषयः	पृष्ठे
भूगन्धज्ञानम्	१८१	मधुपर्कम्	८
भूमिदानपद्धतिः	५८४	मन्त्रस्यदेवतालक्षणम्	११
भूमिदानपरिभाषा	५८४	मन्त्रस्यविनियोगलक्षणम्	११
भूमिसुप्तादिपरीक्षा	१८२	महामृत्युञ्जपञ्चविधिः	३४७
भूमिरसज्ञानम्	१८१	महारुद्रस्वरूपम्	३४६
भूमिसमोन्नतपरीक्षा	१८१	महिषपूजापद्धतिः	२८३
भौमग्रहशान्तिः	६८७	महिषीदानपद्धतिः	५८१
(म)		महिषीदानविधिः	५८०
मंगलद्रव्याणि	७	मांगल्येवर्ज्यतिलकर्म	१०
मंगलस्नानम्	१०	माणवकायमनुशासनम्	५१४
मंगलाचरणम्	१	माणवकशिक्षासूत्रव्याख्या	५१८
मंगलेमातृरजोदर्शनम्	३६६	मातृकापूजापरिभाषा	१६
मणिहेमादिरचितपुण्याणि	६	मातृकायंत्रोद्धारः	१६
मंडपदिविचारः	१४३	मातृकापूजाप्रकारः	१६
मंडपद्वारप्रमाणम्	५८	मातृक्यामुपघृतेनवसोर्धारा	१७
मंडपनिर्माणविवाहे	३६१	पातनम्	१७
मंडपप्रतिष्ठाविधिः	३६२	मानसिकसंध्याविचारः	५
मंडपवेधविचारः	५८	मार्जनविचारः	५
मंडपाच्छादनम्	५८	मार्जनसंबन्धिनः केचिदुत्सर्गाः	५
मंडपादिस्तम्भपरिभाषा	५८	मासपरत्वेनमूलर्क्षनिवासः	६१३
मंडपार्थभूषणनविचारः	५८	मूलर्क्षवृक्षविभागः	६१३
मंडपार्थभूपरीक्षा	५८	मूलशान्तिपद्धतिः	६१६
मंडपार्थभूमिपूजनम्	५८	मूलशान्तिपरिभाषा	६१३
मंडपार्थभूमिपूजापद्धतिः	६०	मूलशान्तिविधिः	६१४
मंडपार्थस्त्रीकरणमंडपमानम्	५८	मेखलालक्षणम्	१४५
मंडपेवेदीनांदिक्परत्वेनस्थापनम्	५६	मेखलाबंधनसूत्रव्याख्या	५१२
मंडपेवेदीनिर्माणम्	५६	मंधाजननसूत्रव्याख्या	४५५

विषयः	पृष्ठे	विषयः	पृष्ठे
(य)			
यजमानस्यनीराजनम्	३६	लक्ष्मीपूजापद्धतिः	२६३
यथोक्ताभावेयज्ञकरणेदोषः	१४६	लक्ष्मीपूजापरिभाषा	२६१
यमलजननशांतिपरिभाषा	६४४	लक्ष्मीपूजामायां ग्रहणादिनिर्णयः	२६२
यमलजननादिशांतिपद्धतिः	६४४	लक्ष्मिमेकुण्डमानम्	१४४
यज्ञशास्त्रादिवर्णनम्	१०६	लाजाहोम	४१०
यज्ञोपवीततन्तुदेवताः	५१३	लाजाहोमसूत्रव्याख्या	३७०
यज्ञोपवीतनिर्माणप्रकारः	५१२	लेखनप्रमाणम्	७६
यज्ञोपवीतादिमंत्रणविधिः	५१३	लोकमातरः	१७
युगपरत्वेनदानादिधर्माः	५६३	(व)	
योगिनीनामानि	२६८	वधूजलाशयपूजा	४२६
(र)		वधूप्रवेशपद्धतिः	४२४
रजस्वलास्नानविशेष	३	वन्धुत्रयनिरूपणम्	३५५
रजोदर्शनादिपरिभाषा	४४२	वरदोषाः	३५४
रजोदर्शनेमासपक्षादिफलम्	४४३	वरणानन्तरं ऋत्विजिमृते	१०६
रजोवतीस्त्रीधर्माः	४४३	वरवधोर्गमने मार्गरेक्षाविधिः	४२२
रक्षाविधानम्	५०	वरवधोर्गृह्यागमन परिभाषा	३५६
राष्ट्रभूद्धोमः	४०५	वरुणपूजापद्धतिः	३०
राष्ट्रभूद्धोमसूत्रव्याख्या	३६६	वर्णपरत्वेनकुरङ्कारुतिमानम्	१२३
रुद्राक्षधारणविधिः	३२४	वर्णपरत्वेनदण्डसूत्रव्याख्या	५१८
रुद्री, पक्षादशिनीविधिः	३४५	वर्णपरत्वेनमेखला सूत्रव्याख्या	५१८
रुद्री, पक्षावृत्तिविधिः	३४५	वर्णपरत्वेनसावित्रीप्रदानसूत्रव्याख्या	५१५
रुद्रीपंचमेदाः	३४५	वर्णपरत्वेनाजिनसूत्रव्याख्या	५१८
रुद्रीरूपकसरूपम्	३४५	वर्णपरत्वेनलब्धमामात्रादिद्रव्यविचारः	१८
रोगपरत्वेनतुलादानानि	५६०	वर्णव्यवस्थया शिलामानम्	१८८
(ल)		वर्णानामुपनयनकालातीतव्याख्या	५२०
लघुरुद्रस्वरूपम्	४४६	वर्धापनपूजाविधिः	४८२
		वसोधन्तापूजनम्	४२

विषयः	पृष्ठे	विषयः	पृष्ठे
ब्रह्मपरिधानविचारः	१०	विवाहार्थमधुपर्कसूत्रव्याख्या	३५७
ब्रह्मपरिधानादि सूत्रव्याख्या	५२५	विवाहावसर.	३५४
ब्रह्मम्	८	विवाहेऽप्राशौचनिर्णयः	३६७
ब्रह्मेणाद्र्गात्र परिमार्जनम्	८	विवाहे कृलपरीक्षा	३५४
वाग्दानभूल्यघण्टपद्धतिः	३७६	विवाहेग्रामवचनसूत्रव्याख्या	३७१
वाग्दानपद्धतिः	३७७	विवाहे जन्ममासादिवर्ज्यः	३६४
वाग्दानार्थकन्यादातारः	३५७	विवाहे दशदोष विचारः	३६५
वाग्दानोत्तरत्रमरणे विशेष	३५७	विवाहे नान्दीधादविचारः	१८
बालकस्य जीविकापरीक्षाज्ञानम्	४८३	विवाहे परिक्रमणसूत्रव्याख्या	३७१
बालकस्यनिक्रमण सूत्रव्याख्या	४७८	विवाहेप्रवरैक्ये विशेष विचार.	३५५
वास्तुपूजने दिक्पालवलिः	२२५	विवाहेमूर्द्धामिश्रेण व्याख्या	३७२
वास्तुपूजाविधानम्	१८८	विवाहेविरुद्ध संवन्धा.	३५६
वास्तुभद्रोद्धार	१८८	विवाहेसंक्रान्तिदोष	३६५
वास्तुस्थापनविधिः	१२२	विवाहेसप्तपदाव्याख्या	३७२
विद्यारम्भपद्धति	५०५	विवाहेसुमंगली व्याख्या	३७३
विद्यारम्भपरिभाषा	५०५	विवाहेसूर्यदर्शनव्याख्या	३७३
विनायक शान्तिपरिभाषा	६६६	विवाहेस्कन्दकलराप्रमाणम्	३७२
विनायक शान्ति विधिः	६७०	विवाहेहृदयालंभन व्याख्या	३७३
विवाहकालेकन्याऋतुमती	३६७	विवाहोत्तरवर्ज्यविषयाणि	४२६
विवाहनक्षत्र सूत्रव्याख्या	३६४	विवाहोत्तरांगकर्मपद्धतिः	४२१
विवाहपद्धति.	३८७	विष्णुप्रियपुष्पाणि	६
विवाहभेदाः	३५४	विष्णुप्रमाणम्	३५७
विवाहमासा	३६४	विष्णुसूत्रव्याख्या	३५७
विवाहलक्षणानि	३५४	वृद्ध्यभावेऽपकर्षदोषः	३६६
विवाहस्यप्राथम्यम्	३५३	वृषभदानपरिभाषा	५८६
विष हसूत्रव्याख्या	१५३	वृषभदानपद्धतिः	५८२
विवाहसूत्रव्याख्या	३६१	वेदवृत्तः	४

विषयः	पृष्ठे	विषयः	पृष्ठे
वेदारम्भपद्धतिः	५४१	शुचिस्वविचारः	१
वेदारम्भ सूत्रव्याख्या	५२२	शुद्धभूमिविचारः	१०१
वेदीप्रमाणम्	१०३	शुद्धविवाहे विशेषः	३६७
वेद्युपवेशने सूत्रव्याख्या	३६६	शौचस्थलम्	२
वेदोक्तशिवार्चनपद्धतिः	३३६	शौचेजलम्	२
वैकुण्ठचतुर्दशीदीपदानपद्धतिः	३४६	शौचे दिक्प्रमाणम्	२
वैकुण्ठचतुर्दशी परिभाषा	३४८	शौचेमुखम्	२
मतबन्धादौ पूर्णाहुतिनिषेधः	६३०	शौचेमृत्तिकाग्रहणम्	२
(श)		शौचेमृत्तिकामानम्	२
शतचंडीपरिभाषा-	२५५	शौचेमृदालेपनम्	२
शतचंडीप्रयोगपद्धतिः	२५८	शौचेयज्ञोपवीतधारणम्	२
शतमूलनामानि	६१३	शौचेशेषजलम्	२
शतचंडीहोमविधिः	२५६	शौचेहस्तविचारः	२
शनिश्चरादिशांतिः	६८७	(ष)	
शांतिखंड प्रारम्भपत्रे	६००	षष्ठीमहोत्सवपद्धतिः	४६४
शांतिपाठमंत्राः	२३	षष्ठीमहोत्सवपरिभाषा	४६३
शान्तिपाठविधिः	२३	षोडशमातृकानामानि	१६
शालाकर्मसूत्रव्याख्या	१८१	षोडशमातृकापूजापद्धतिः	३६
शिक्षामुक्तिविचारः	४	षोडशसंस्काराः	३५३
शिवप्रियपुष्पाणि	६	(स)	
शिलानामानि	१८८	सत्यनारायणपूजापद्धतिः	२३१
शिलान्यासविधिः	२१४	सत्यनारायणपरिभाषा	२३१
शिलास्थापनार्थं स्नानम्	१८८	संकटचतुर्थ्यादितपूजापद्धतिः	२३१
शिवलक्षणावर्तिपद्धतिः	३५१	संकल्पविचारः	६
शिवानुष्ठानादिपरिभाषा	३४५	संध्यकालनिर्णयः	५
शुक्रशांतिः	६८७	संध्यधिकारिणः	५
शुक्रास्तेऽपिदेवीपूजनम्	२४३	संध्यसेवनम्	६

विषयः	पृष्ठे	विषयः	पृष्ठे
संस्कारकर्मबोधनीपरिभाषा	१०	सर्वोपध्यः	७
संस्कार्यमातृरजसिन्धीशान्तिः -	६०४	सव्योपवृत्तेनानांतीश्राद्धः	१८
संस्कार्यमातृरजपरिभाषा	६०४	सहजनन शान्तिपरिभाषा -	६५७
संस्कारेक्षोरनिर्णयः	१०	सहजननशान्तिपद्धतिः	६५८
संस्कार्योपवेशनम्	१०	सहसूचंडीपरिभाषा	२६३
सप्तधान्यवलिप्रमाणम्	१४	सापत्नमातृकुलेसापिंड्य निर्णयः	३५६
सप्तधान्यानि	७	सापिंड्यलक्षणम्	३५४
समानार्पणोत्रविवाहेदोषः	३५५	सापिंड्यविवरणम्	३६३
समावर्तनपद्धतिः	५४७	सार्धनवचंडीप्रयोगपद्धतिः	२६४
समावर्तनसूत्रव्याख्या	५२३	सार्धनवचंडीपरिभाषा	३६३
समावर्तनस्नानव्याख्या	५२४	सावित्र्यप्रहणोकालातीतेनिर्णयः	५२०
समावर्तनेकलशामियेकसूत्रव्याख्या	५२४	सावित्र्युपदेशसूत्रव्याख्या	५१४
समावर्तनेपितृभवनेजनम्	५२५	सिंहगवादिप्रसवव्याख्या	६६७
समावर्तनोद्धर्तनव्याख्या	५२५	सिंहमकरस्थगुरुनिर्णयः	६६३
समिधाधानम्	५१६	सीतामृतसर्पशान्तिविधिः	६६७
समिल्लक्षणम्	१२७	सीमन्तसूत्रव्याख्या	४४८
समीक्षणसूत्रव्याख्या	३६६	सीमन्तोन्नयनपद्धतिः	४४३
संमंजनसूत्रव्याख्या	३६८	सूतिकाम्निस्थापनसूत्रव्याख्या	४५७
सर्पयुग्मदर्शनशान्ति	३६७	सूतिकाजलपूजापद्धतिः -	४८०
सर्वकर्मविधिविधि.	२१	सूर्यप्रियपुत्राणि	८
सर्वकर्मादौदेवपूजाविचारः	११	सूर्यावलोकननिक्रमणम्	४७६
सर्वकर्मादौप्राणायामः	५	सूर्योदीक्षण सूत्रव्याख्या	५१३
सर्वकर्मादौसंध्योपासनम्	५	सूत्रपातविधानम्	७८
सर्वकर्मापयोगीमुद्रा.	७	सौभाग्यवतीनांस्नाने विशेषः	३
सर्वगन्धलक्षणम्	७	स्तंभानांस्थया	५८
सर्वतोभद्रपूजापद्धतिः	६१	स्तम्भपूजापद्धतिः	६१
सर्वोत्तमाभूमिः	१२२	स्नानकाल.	२

विषय.	पृष्ठे	विषय.	पृष्ठे
स्नानद्रव्याणि	८	होमानुसारेणकुण्डमानम्	१२३
स्नानादौवर्ज्यजलम्	३	होमान्तेपवित्रप्रतिपत्ति	१३०
स्नानार्थजलम्	३	होमान्तेस्वाहादेवी	१२६
स्नानोत्तरं वर्ज्यवस्त्रम्	३	होमकृण्डमानं नवयहमखे	१४४
सुवधारणविधानम्	१२७	होमउत्तानहस्तप्रमाणम्	१३०
स्वगोत्रप्रवराज्ञानेनिर्णय.	३५६	होममंउपरचना	१२३
स्वाहादेव्या पूजनम्	१२६	होममृग्यादिमुद्राः	१४६
(ह)		होममृग्यादिमुद्रालक्षणम्	१४६
हरिहरमंडलभद्रपूजापद्धतिः	१२४	होमोत्तर कृत्यम्	१४६
हरिहरमंडलभद्रोच्चार	३२२		
हरितालिकापूजनम्	२३६	(त्र)	
हरिसालिकात्रतपरिभाषा	२३७	त्रिकप्रसवशान्तिपद्धति	६४७
हस्तघृतोत्थितार्षंडदीपदानपद्धति	३४६	त्रिकप्रसवशान्तिपरिभाषा	६४७
होमकुण्डोत्तरपूर्वेदेवतास्थापनार्थवेदी	१४४	त्रिगव्यम्	१४
होमद्रव्याभावेप्रतिनिधय.	१३०	त्रिषलक्षणम्	१४
होमपद्धति	१३१	त्रिपुण्डूलक्षणम्	१४
होमादौद्रव्यदेवताध्यानम्	१४६	त्रिमंगलविचारः	४२६
होमाग्ने प्रमाणम्	१३१	त्रिसलक्षणम्	१४
होमादौपञ्चभूसंस्कारा	१२३	त्रिसुगन्धलक्षणम्	१४
होमाद्यभावेकन्यावरान्तरायदेया	३५७	न्यायुपकरणम्	१२१

—❀ इति अकारादि विषयानुक्रमणिका ❀—

अशुद्धिः	शुद्धिः	पृष्ठे,	पंक्तौ
नित्य,	नित्य,	२०	३
पिणीम,	पिणीम्	२०	३
मास,	मसि,	२०	२५
यान,	यानि,	२३	५
इति,	इति,	२७	२३
स्पतियज्ञ,	स्पतियज्ञ,	३१	२०
वान्य,	वान्य	३६	२५
आस्म,	अस्मि	३८	१९
इहातष्ट,	इहतिष्ठ,	४०	२४
पाताय,	पातयि,	४१	२२
इहागच्छे,	इहागच्छे,	५२	२०
यादवा,	यदिवा,	५३	६
दाक्षणे,	दक्षिणे,	५३	१७
पुष्पाण,	पुष्पाणि,	५७	७
कर्ममा,	कूर्मा,	६०	१३
रथाधि,	रथाधि,	६३	११
सिनी,	सिनी,	६६	२६
हातष्ट,	हतिष्ठ,	७०	१३
वालस०,	वलिस०,	७४	२०
अस्मत्स,	अस्मिन्स,	७५	२७
महाविष्णु	महाविष्णु	८६	५
मात,	यति	८६	२५
ईशाने,	आग्नेये,	८६	११
तितसु०,	तिष्ठसु०	८८	११
मन्त्राय,	मन्त्राय,	१०६	२२
नापर्गा,	वृषिर्गा	१०६	२८
पात,	पति,	१०७	३

अशुद्धिः	शुद्धिः	पृष्ठे	पंक्तौ
सीतापशं,	सीत्पिशं	११०	१७
पूषवन,	पूषन,	१११	१३
तजमानस्य,	यजमानस्य,	१२०	२६
ऋष	ऋषिः	१३६	३
आधातु	आदधातु	१४१	१६
रक्षामूत्र	रक्षासूत्र	१४६	२६
सूर्याभि	सूर्याभि	१५०	२८
सुरपातः	सुरपतिः	१५३	३७
शूपाढ्यो	भूपाढ्यो	१५८	१४
सर्पेभ्यो	सर्वेभ्यो	१६३	१२
भूर्भुःस्वः	भूर्भुवःस्वः	१६५	३
विदथे	विदथे	१७१	२०
सन्तुपो	सन्तुयो	१७४	७
मपरि०	सपरि०	१७५	२३
यतो	ततो	१७६	३
यत्किञ्चि	यत्किञ्चि	१८४	७
मीशानाद	मीशानादि	१८८	३२
पूजयामि	पूजयामि	१९६	३
आह्रिय	अह्रियि	२०२	२७
नधातन	दधातन	२०५	५
यस्यास्ते	यस्यास्ते	२०७	१०
माप्रतिष्ठ	मैप्रतिष्ठ	२०८	२१
पुणोक्त	पुणोक्त	२१५	१
मधुवाऋता,	मधुवाताऋता,	२१५	१०
पुत्रमस्योवश	पुत्रमस्यैविश	२१६	२७
नन्देत्वं,	नन्देत्वाम्	२१६	२६
वदस्येत्यस्य	वदस्येत्यस्य	२२१	५

अशुद्धिः	शुद्धिः	पृष्ठे	पंक्तौ
स्वास्त	स्वति	२१२	१०
स्योना	स्योनापृथिविनो	२२२	२८
त्वद्गात	त्वदगतिं	२८	१६
नवग्रहणा	नवग्रहाणां	२२६	७१
ध्वंनमोनमः	ध्वंनमोनमं	२३६	२१
समनिन्वितम्	समन्वितम्	२१०	११
पूजास्थनम्	पूजास्थानम्	२४४	२६
पाद्याम्	पाद्यम्	२४६	१
मुखायानमः	मुखायनम'	२४८	८
सञ्चालनान्ते	सञ्चालनान्ते	२४६	१३
देवींविमृज्य	देवींविस्मृज्य	२४३	४
नवमीमिथि	नवमीतिथि	२४३	५
चण्डीपाठ	चण्डीपाठ	२४४	६
लक्षण,	लक्षणां,	२४८	५
पश्चिमद्वार,	पश्चिमद्वार	२४८	१४
वाल,	वलिं,	२६१	१२
पत्रागे,	पत्रागे,	२६६	१०
इतिमंत्रै,	इतिमंत्रै	२७०	१६
इतिसप्रार्थ्यं	इतिसप्रार्थ्यं	२७०	२८
श्रीमद्वाङ्मय,	श्रीमद्वाङ्मय,	२७३	२६
महाभयम्	महाभयम्,	२७६	२७
स्थापयाम,	स्थापयामि,	२७७	२३
श्रोत्रक्येनम ,	श्रोत्रक्येनम ,	२७६	२४
शंभुरूपोऽसि,	शंभुरूपोऽसि,	२८५	६
श्चशिलोच्चय ,	श्चशिलोच्चय ,	२८६	७
महिषाशिरसि,	महिषशिरसि,	२८८	२२
दुर्गांत,	दुर्गतिं	२८६	१

अशुद्धिः	शुद्धिः	पृष्ठे,	पंक्तौ
रङ्गेनभिन्नि,	खङ्गेनभिन्नि,	२०८	५।६
मार्गादर्शां,	मार्गादर्शां,	२६१	११
लक्ष्मणमः,	लक्ष्मणमः,	२६५	७
काकमण्यै	कक्किमण्यै	३०४	१६
पोडपहस्त	पोडशहस्त	३१३	१०
घृणुयात्	घृणुयात्	३१४	१२
पात्री	पीत्री	३१५	१
त्वंसुखा	त्वंसुखी	३१७	४
स्थापयित्वा	स्थापयित्वा	३१७	७
पातगृह्यताम्	प्रतिगृह्यताम्	३१७	२३
वृन्दाण्ये	वृन्दाण्ये	३१८	६
विष्णुरित्यस्य	विष्णुरित्यस्य	३२६	२०
पश्चिमालग	पश्चिमलिग	३३०	१५
वज्रायनमः	वज्रायनमः	३३३	१५
अथकं	अथकं	३३८	१२
मृतात्	भृतात्	३४७	२५
पूर्वोक्त	पूर्वोक्त	३४८	३
सह	सह	३४८	२३
एव	एव	३५२	५
रजतदीपं	रजतदीपं	३५२	५
नवाष्ट	नवाष्ट	३५२	१७

मत्त. परं संस्कारस्य शुद्धिपत्रम् ।

ममां	मिमां	१७०	६
योमा	योमा	३८१	२५
याहो	याहो	३८३	१८
केपेपु	केपेपु	१८०	२५

शुद्धिः	अशुद्धिः	पृष्ठे	पंक्तौ
ऋष्याश्चैव	ऋष्यायाश्चैव	३८६	२२
स्पष्ट	स्पृष्टं	३२१	१६
अंमुकक	अमुक	३६१	१६
नातिरितन्या	नातिचरितन्या	३६६	१
ददति	ददाति	३६६	८
पद्बोशं	पद्बोश	४००	१३
द्विजोत्तम्	द्विजोत्तम	४०१	२५
बहास्यमानी	बहास्ययानो	४०५	६
दक्षिणांदाः ३	दक्षिणाँद्वो	४०७	१२
पितरः	पितर	४०८	६
देवहृया १५	देवहृत्या १५	४०८	१३
ब्रह्मयस्मिन्	ब्रह्मयस्मिन्	४०८	२३
प्रायश्चित्त	प्रायश्चित्त	४१८	१०
वरबधूयभ्यां	वरबधूभ्यां	४२१	१५
पुजा	पूजा	४२७	२१
वरणदत्वा	वरणदत्वा	४३८	२४
प्रार्थयत्	प्रार्थयत्	४३८	२८
तारासुकुले	तारासुकूले	४४७	३
करिष्ये	करिष्ये	४७६	८
५	+	४८०	२८
विधाना	विधिना	४८१	२८
प्रवेशः	प्रवेश	४८६	४
प्राणायामत्रयं	प्राणायामत्रयं	४६६	२३
राधारथं	राधारथ	४८७	१६
पे० न० ५०२	पे० न० ५०१		
पे० न० ५०१	पे० न० ५०२		
प्रोक्षणीपात्रे	प्रोक्षणीपात्रे	४६८	११

शुद्धिः	अशुद्धिः	पृष्ठे	पंक्तौ
व वे	व डे	५०७	१६
पद्धितः	पद्धति	५२६	२३
वारजिन	वारजित	५२८	१०
सुगन्ध	सुगन्धि	५३१	६
निधिपो	निधिपो	५३७	३७
रमुकोर्ह	रमुकोर्ह	५४४	२६
दर्क्षित	दर्क्षित	५४८	१४
सूत्रकारेणु	सूत्रकारेणु	५५४	१८

अतः पर दानखण्डस्य शुद्धिपत्रम्

दानखण्ड प्रारभ्यते

५६३

१

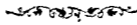
भक्षतेत्य	भक्षतेनित्य	५६८	१२
कुशक्षत	कुशाक्षत	५७०	८
सर्वत	सर्वत	५७३	१४
सावतु	सावितु	५७५	४
अमक	अमुक	५७५	१०
स्वयभुजीन	स्वयभु जीत	५८२	२८
भूपयैर्भूषित	भूपयैर्भूषित	५८७	१

अतः पर शान्तिखण्डस्य, शुद्धिपत्रम् ।

भोजित्वा	भोजयित्वा	६०७	१६
जनन	जनन	६१६	३१
रक्षुष्टा	रक्षुष्टाया	६१८	१०
वधर्षीन्	वधर्षीन्	६२४	१
क्षयहीनय	क्षयहीनय	६४६	१५
पुष्य	पुष्य	६३८	१८
तत्सधमम	तत्सधमम	६४२	१
पुष्पाजलि	पुष्पाजलि	६५८	१७
भ्रुवोऽसि	भ्रुवोऽसि	६६५	२
खड्गधरो	खड्गधरो	६६६	७
पुरीष्यामि	पुरीष्यामि	६७३	२८
कुरुण	कुरुण	१७३	१८

इति

अथ कर्मकांड रत्नाकरस्य पूजाखंड प्रारम्भः ॥



श्रीगणेशायनमः, श्रीसरस्वत्यैनमः, श्रीगुरुचरण कमलेभ्योनमः ।



श्रीगणेशगुरुं चैव शारदां भुवनेश्वरीम् ।
 सर्वाभीष्ट प्रदातारं वदरीशं च नौम्यहम् ॥
 डिमरीत्युपनाम्ना च वदरीनाथ वासिना ।
 देवानन्देन विदुषा क्रियते ग्रन्थ संग्रहः ॥
 आदौ संगृह्य शास्त्रेभ्यो देवपूजा विधायकम् ।
 सप्रमाणं विवक्ष्येऽहं पूजाखंडं यथेष्टदम् ॥

अथ कर्मबोधनी-परिभाषां वक्ष्ये, तत्रादी कर्मभूमि माह विष्णुपुराणे—कथापि भारतं धेष्टं जंघुद्धीषि महामुनि । यतोहि कर्मभूरपा ततोऽन्या भोग भूमयः॥ कदाचित्तभते जन्तुर्मनुष्यं पुण्य संचयात् ॥ गायन्ति देवाः किलगीतकानि धन्यास्तुयेभारतभूमिभागे । स्वर्गा पवर्गस्य च हेतुभूते भवन्ति भूय पुरुषा सुरत्वात् । तत्र शुचित्व विचारः—सदा कुर्याद्धर्मं कार्ये मापयापि शुचिर्नरः । धृतिस्मृत्युदितं कर्म न कुर्या दशुचिः क्वचिदि तिभृशुः । आचारे याज्ञं वल्क्ष्यः । सुतिस्मृतिः सदाचारः स्वस्य च धियमात्मनः । वशिष्ठः—आचारः परमीधर्मः सर्व-पामिति निश्चयः । हीनाचारी परीतात्मा प्रेख्येह विनश्यति । चतुर्णामपि वर्णाना माचारो धर्म-पालनम् । आचार अष्टवेदानां भवेद्धर्म परांमुखः । प्रातरस्थान कालः, मनुः—ब्राह्मेमुहूर्त्तं युष्येत धर्मार्थां यनुचिन्तयेत् । ब्राह्ममुहूर्त्तः विष्णुपुराणे—रात्रेः पश्चिम यामस्य सुहूर्त्तय स्तृतीयकः । सव्राह्म इति विज्ञेयो विहितः मः प्रबोधने । पंच पंचउपः—कालः सप्तपंचारणोदयः—पष्टपंचभवेत्प्रात-स्ततःसूर्योदयः स्मृतः । तद्भावेदोपः रत्नावल्याम्—ब्राह्मेमुहूर्त्तं यानिद्रा सापुण्य क्षयकारिणी । तांकरंतिद्विजामोहात्पाद कृच्छ्रेणेशुष्यति । अंगिराः—उत्थायपश्चिमैरात्रे ततश्चाचम्य चोदकम् । प्रभाते करदर्शनम्—कराग्र्येयसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती । करमूले स्थितो ब्रह्माः । ति स्तनमंढले ।

धोत्रियंशुभगां गांच अग्निमग्नि चितंतथा । प्रातरस्थाय य पश्येदापद्भ्यः सप्रमुच्यते । प्रतः शकुनानिः-भारद्वाज मयूराणां चापस्य नकुलस्यच । प्रभातेदर्शनं श्रेष्ठं धामपृष्ठे विशेषतः । प्रातरयोग्यदर्शनीयाः-पापिष्ठदुर्भंगचान्धं नग्न मुत्कृत्त नासिकम् । भलतकं कर्षफलं क्राक मा-जार् मूपकान् । वलीवंचगर्धभंचैव नपश्येत्प्रातरैवहि । विरमूत्रोत्सर्गः पारस्करमूत्रे ॥ तिष्ठप्र मूत्र पुरीषे कुर्यात् । स्वयंप्रशींसेन काष्ठेनगुदं प्रमृजीत । विकृतंवासां नाच्छादयति । भूःपुरीषे-ष्टीवनं चातपि नकुर्यात् । दक्षः-शौचैयलः सदाकार्यः शौचमूलां यतोद्विजः । शौचाचार विहीनस्य समस्ता निष्फलाः क्रियाः । शौचेद्विक् प्रमाणं पाराशरः-ततः प्रातः समुत्थाय कुर्याद्विरमूत्रमेवच, नैर्ऋत्या मिषुविज्ञेपा दतीत्याभ्यधिकेभुवः । शौचेमुख्यमः-प्रत्यदमुखस्तु पूर्वाह्णेऽपराह्णे प्रादमुखस्तथा । उदङ्मुखस्तु मध्याह्ने निशायां दक्षिणामुखः

मनुः-छायायामन्धकारेच रात्रावहनि वाद्विजः । यथासुखं सुसंक्रुयां त्प्राणवाधा भयेपुच । शौचैयज्ञोपवीतधारणम्-अमरे-उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोध्तेदक्षिणेकरे । प्राचीना धीतमन्यस्मिन्नीवीतं कंठलंबितम् । कारिकासु-मूत्रे तु दक्षिणे कण्ठे पुरीषेवामकण्ठे उप-पीतंसदाधाय मेधुनेत्प वीतिवत् । सायणीये-मलमूत्रं लजेद्विप्रोविस्मृत्येवोपवीतधृक् । उपवीते तदुत्सृज्य धार्यमन्यं नवंतदा । शौचस्थलमाह अंगिराः-अथज्ञियैरनाद्रेष्व तृणैः संछाद्य मेदिनीम् । कुर्यान्मूत्र पुरीषे तु शुचोधेने समाहितः । वीधानः-दशहस्तान्परिलज्य मूत्रं कुर्यां ऋजलाशयेशतहस्ता न्युरीपाधेतीधंनया चतुर्गुणम् । जलशौचमाह-धाराशौचं नकुर्वीत शौचशुद्धिमसीप्सिता । चुलकैरेवकसंख्यं हस्तशुद्धि विधानत । तीर्थशौचं नकुर्वीत कुर्वीतो ध्दत-धारिणा । शौचशेष जलम्-गृहीत्वाजल पात्रंतु विरमूत्रं कुरतेयदि । तज्जलं मूत्रसदृशमतथा-न्द्रायणं चरेत् शौचोत्तर मितिशेष । शौचेहस्तविचार आश्वलायनः-लिगशौचं पुराकृत्वा गुदशौचं ततः परम् । धर्मविदक्षिणं हस्तमध शौचनयीजयेत् । तथाच वामहस्तेन नाभेर्हृष्यं नशोधयेत् । शौचेमृत्तिकाग्रहणम् शातातपः-अंतर्जलादेवगृहाद्ब्रह्मीकान्मूषकमहात् । दृ-त-शौचस्थलञ्चैव नप्राह्या पंचमृत्तिका । शौचेमृदालेपन ज्ञालनमभृगुः-द्वैलिगे मृत्तिके द्येयुदेपंच करेदश । उभयोः सप्तदातव्या विदशौचे मृत्तिका स्मृता । एकं शौचं गृहस्थ स्य-द्विगुणं ब्रह्मचारिण । वाणप्रस्थस्य त्रिगुणंयतीनाच चतुर्गुणम् । यदिया विहितं शौचंतदर्ध-निशिकीर्तितम् । तदर्धमातुरे प्रोक्त मातुरस्यार्धमध्यनि । स्त्रीशूद्रयोः-स्त्रीशूद्रयोरर्ध मान्शौचं प्रोक्तमनीपिनि । शौचेमृत्तिकामानं शौनकः-आर्द्रामलक भात्रास्तु मूत्रशौचेहि मृत्तिकाः । पादक्षालनम्-चंद्रिकायाम् पादतले तिष्ठोमृत्तिका गुणकयोधतलः । गंडू पप्रमाणं आश्व-लायनः । कुर्याद्वादश गंडूपाण्युरीषोत्सर्जने ततः । मूत्रोत्सर्गं चतुरोभोजनान्तेच पोटश भक्ष्यभांश्या वसानेषु गंडूपाण्कमाचरेत् । गंडू पप्रक्षेपये विचारः द्रयंग पारिजाते-पुरतःसर्वैवाथदक्षिणे पितरः स्तथा । अणयः पृष्ठतः सर्वैवामे गंडूप प्रक्षिपेत् । दंतधावन-काष्ठम्पारस्करः-श्रीदुम्बरेण दन्तान्धावेत् । धन्वंतरिः-निम्बधत्तिकावे धेय कपाये खादिर-स्तथा । तत्रादी दंतपवनं द्वादशांगुलमायतम् । दंतवाघनधज्यं द्यासः...प्रतिपदं पृष्टीसु नवम्यां रविवासरे । दन्तानां वाष्ठ संयोगो दहत्या सप्तमं गुलम् ॥

स्नानकालः, हेमाद्री-अरुणकिरण युक्ता प्राचीदिश नयलोभयशायदिति, स्नानार्थं जलममरीचिः-गांगपय पुनात्येव पापमा मरणात्कृतम् । यमः-भापण्यमदापृता स्नानोदन्दि

विशाधक । तस्मात्सर्वेषु कालेषु उष्णाभ पावनस्मृतम् । उपोष्येदक स्नानउच्यते मनुः—
 संकान्त्वा रविचारच सप्तम्याराहुदर्शन । आराग्ये पुत्रदित्रार्थे नन्ननायादुष्णवारिणा ॥ मृतज-
 न्मनि सकान्तौ श्राद्धे जन्मदिनतथा श्ररपृष्ठ रपशंदनचैव नरनाया दुष्णवारिणा । जायान्ति,—
 शशिरस्क भवन्स्नान स्नानाशक्त । तुकर्मिणा । आद्रंश वाससावापि मार्जन दैहिकविदु । रजस्पला
 स्नानविशेष.—च्युरामिभूता यानारी रजसाच परिप्लुता । कथतस्या भवच्छीचशुद्धि रयाफ-
 नकर्मणा । चतुर्थऽह्निसंप्राप्तेस्पृश दन्यातुतां स्त्रियम् । सासचैलाऽपगहाप स्नात्वा स्नात्वा
 पुन स्पृशत् । दशद्वादश कृत्वाया आचमच्च पुन पुन । अन्तेच वाससात्यागस्तथाशुद्धाभवतुसा ।
 स्नानादीं वच्यंजलमाह धन्यैतरि — तृणपणत्त्रियुत क्लृप विपसयुतम् । यावगहत वर्षासु
 पिनेद्वापि नवजलम् । सवाद्या भ्यतरारागान्प्राप्तुयात्त्रिमवहि । वाचस्पति — स्नानमाचमन
 दान देवतापितृतर्पणम् । शूद्रादकैर्न्युर्वात तथामपाद्विनि सृते । कात्यायनः—यच्चद्वय श्रावणादि
 सर्वानधारज स्थला —तामुस्नान न्युर्वात बर्जयित्वा सुरापगाम् । (वचित्समुद्रगा) उपाकर्मणि
 चात्मर्ग प्रेतस्नानेतथैवच । चन्द्रसूर्य ग्रहचैव जादापो नदियते । कात्यायनसूत्रे—जटिलरय
 शिरारा गिरुश्च कठ मज्जनस्नानम् । सौभाग्यवती स्त्रिया विशेष स्नाने—सभर्तृन् यापितांच
 ग्रहणादि निमित्तागगादितोवपु सकान्त्वादि पर्वनिमित्तकच कठस्नानप लप्रदम् । पाराशर —शिर-
 स्नान तृणजलेनैव सीभाभ्यवतीना प्रशस्त । शैत्येनत्वमलम् । नित्यमेव स्त्रीगृहाणा सर्वत्र
 तृष्णीस्नानम् । स्नानोत्तर वच्यंवरुम्—दक्ष ईषधीत स्त्रियाधीत शूद्रधीत तथैवच । प्रसा-
 रित यमदिशि गहित सर्वकर्मसु । आपस्तव —आद्रवासातुय कुर्या जपहोम परिग्रहान्सर्व
 तद्राक्षस विद्यत्वमे जातच यच्छुतम् । यज्जलेशुष्कवक्षेण स्थलेचैवाद्रवससा । जपोहीमस्तथा-
 दान तत्सर्वे निष्फलमेव । कर्मार्थभूमि विचार याज्ञवल्क्य —सर्वत्र वसुधापूतायत्रलेपीने
 विद्यते । यत्रलेपा भवत्तत्र पुनलेपेनशुद्ध्यति । आसन माहव्यास —कौशये कवलचैवअजिनं पट
 मेवच । दारुज तालपत्रंवाआसन परिकल्पयेत् । आसन गुणा —कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिमाद्यथीर्व्या-
 प्रचर्मणि । यशाजिने व्याधिनाश कम्बले दु समोचनम् ॥ कार्यपत्वेनासन विचार —अभि-
 चारेनीलवर्ण रक्तं वर्यादि कर्मणि । शान्तिकेम्बल प्राक्त सर्वथं चिन्नकम्बलम् । कुशासन
 सर्वसिद्धि कथिता मुनिमि पुरा । वरयायादु खसम्भृति पापाणे व्यधिसम्भव । आसन परिमाणं
 कालिका पुराणे—चतुर्विंशत्यैशुलैरुत्तरीर्ष काष्ठासनं मतम् । पादशागुलविस्तीर्णं सुस्तेपे चतु-
 रगुलम् । वर्षं द्विहस्तान्न र्षीर्ष सार्धं हस्तानविरुत्तम् । अगुत्तु तर्षं नृशैर्वै कुर्याःपूजासुमानव
 पादुकाधारण विचार —अन्यागार गवागण्डैव ब्राह्मण सन्निधौ आहरे जपकालच पादुकानां
 विसर्जनम् । अथच कर्म विशेषे शरीरवयव सक्तौच विवसन भेदेन शरीर साध्यानि पडा
 स्नानान्याह तत्रादीं प्रोढपाद् मासन माचार मयूखे—दानमाचमने होमं भोजन देवताचं-
 नम् । प्रादपावन कुर्यात स्वाध्यायं पितृतर्पणम् । प्रोढपादासन लक्षणम्—आसनगडपादस्तु
 जायुनागोचजघया । वृतावसथिकोयथ प्रोढपाद् सञ्जयते । देवीभागवते पंचामनानि—
 पञ्चमनं स्वस्तिरच भद्रपञ्चासनंतथा । वीरासनमितिप्राक्तं त्रमादान पञ्चकम् । पञ्चासनम्—
 उर्वाक्षरि विन्यस्य सम्यक्पादतलशुभे । अगुधौन निषधीया धस्ताभ्यां व्युत्कसासंत । स्वस्ति-
 कासनम्—अजुनायाविश्वे गी स्वस्तिर्नं तत्प्रचक्षते । भद्रासनम्—सोयन्या पार्श्वयोन्वस्य
 शुष्कयुग्मे सुनिधितम् । वृषणाध पादपाणि पाणिभ्यापरिव धयेत् । भद्रामन मितिप्रोक्तयोगिभिः

परिपूजितम् । वज्रासनम्—उर्वोः पादौ क्रमान्यस्य जन्वोः प्रत्यङ्मुखान्गुलि । करौविदध्या दारव्यान्तं वज्रासन मनुत्तमम् । वीरासनम्—एकेपादमधः कृत्वा विन्यस्यैकं तथोत्तरे । श्रुज-
कार्यां विशेषांगी वीरासन मितौरितम् । सर्वकर्मोपासने दिग्विचारमाह—वृहत्पाराशरः ईशा-
न्याभि मुखंभूत्वा द्विजः पूर्वमुखोऽपिवा । सन्ध्या मुपासयेन्नित्यंयथा वत्तत्रिविधत । परिभाषा
कर्मप्रदीपे—यत्रदिनि यमोनस्या जपहोमादि कर्मसु । तिस्रस्त प्रदिशः प्रोक्ता एतौसौम्याऽपरा-
जिता । गौतमाः—रात्राखुदेमुखः कुर्या द्वैवकार्यं सदैवहि । शिवार्चनं सदाप्येवं शुचिः कुर्यादुद-
मुखः । कर्मादौ उर्ध्वपुंड्रतिलकधारणं, वृहन्नारदीये—स्नानं दानंजपोहोमः सन्ध्यास्वध्याय
कर्मसु । ऊर्ध्वपुंड्र विहीनारचे तत्सर्वं निफलं भवत् । द्र्योगपारिजातके—ललाटे तिलकं
कृत्वा सन्ध्याकर्म समाचरेत् । अकृत्वा भालतिलकंतत्स्यकर्म निर्धकम् । भस्मधारणं
भद्रिष्ये—सितेनभस्मना कुर्यात् त्रिसंध्यंच त्रिपुण्ड्रम् सर्वपाप विनिर्मुक्ताशिबेनसह
मांदते । याह्यभस्म—अग्निहोत्राग्निर्जभस्म विरजाहोमजं तथा श्रोपासन
समुपपन्नं समिदप्रिसमुद्भवम् । समिदमि समुद्भूतं धार्यैव ब्रह्मचारिणा ।
अन्ये—अन्येषामपिसर्वेषां धार्येदावानलोद्भवम् । त्रिपुण्ड्रलक्षण काशीखंडे—भुवोर्मध्यंसमा-
रभ्य यावदन्ती भवद्भ्रयो । मध्यमानामिकागुत्यो मध्येतुप्रतिलोमतः । अंगुष्टेनकृतारेखात्रिपुंड्र
सोभिधीयते । प्रातःससलिलेभस्म मध्याह्ने गंधनिधितम् । सायान्हे निज्जलेभस्म, एवंभस्मविलि-
पयेत् । रुद्राक्षधारणम्—रुद्राक्षायस्य गात्रेपुललाटेच त्रिपुंड्रकम् । सचाढालं पि संपूज्यः सर्व-
षणोत्तमोभवेत् । अभक्तोवाभिभक्तोवानोचोनीचतराऽपिवा । रुद्राक्षान्धारयेद्यस्तुस्यतेसर्वपातकैः ।
पवित्रधारणम् मार्कण्डेयः—सपवित्रेणहस्तेन कुर्यादाचमन क्रियाम् । नोच्छिष्टं तत्पवित्रंतु भुक्तो
च्छिष्टैर्जयन्ते । कुशपवित्रप्रमाणम्—अंगुलमूलतलयं ग्रंथिरे कागुलिर्मेधेत् । चतुरंगुलम-
प्रस्यात्पवित्रस्यप्रमाणकम् । प्रयोगपारिजातके—स्नानेहोमेजपेदानेस्वाध्यायेपिपृकर्मणि । करौ-
सदभौकुर्यात् तथासन्ध्याभिवादाने । अन्यपवित्रधारणम् क्रातीयसूत्रभाष्ये—उशा.काशा शरा-
द्व्यायवगोधूमषलकला । सुर्वेणारजतैतताम्रदशदर्भा प्रकीर्तिता । सुवर्णदिपिचंशरदायाम्—
साम्रतारसुवर्णानामकर्मपोडशलेन्दुभिः । कृतात्रिशक्तिमुद्रेयंतीमदारित्रनाशिनी । इदंपवित्रतर्जण्या
धारयन्तिसदाद्विजा । उत्तरीयं द्योगपारिजातके—उत्तरीययोगहस्तजन्यारजतैतथा । नजीव-
न्पितृकैर्धार्यं त्र्येष्टोवादिधनेयदि । शिर्याचंघ्ननम् नागदेव —स्मृत्वांनारैचगायत्री नियन्नीया-
च्छिर्यातत । मानातोकेनमत्रेण शिर्यायै रंतुकारयेत् । कौशीशिखाधारणं संस्कारभास्करे-
रत्नवाट्टवादिदोषेण विशिरस्येनेरोभवेत् । कौशीतदाधारयोत ब्रह्मप्रन्थियुताशिराम् । ग्रन्थांतरे-
स्नानदानंजपेहोमे संध्यायादेवमार्चनं । शिर्याप्रधिबिनाकर्म न्नुयादिकदाचन ॥ शिर्यामुक्तिदि-
चारः—शीवेऽधमयनेमंगे (मिधुने) भांजनन्दतथायने । शिर्यामुक्तिमदा कुर्यादासौधेमनुरवचीत ॥
आचमनप्रकारः शिवामित्रकले—शुद्धेस्मात्तथाचैव पीराणवैदिकंतथा । तत्रिकंभ्रौत
स्मात्तथाचैवधुनिनादितं ॥ शुध्याचमनम्—विष्णुमूत्रादिशरीरेषुशुद्धैचपरिकीर्तितम् ॥ स्मा-
ताचमनम्—वेशाचैव त्रिभि पीत्याद्वाध्याप्रचालयेत्नरी । द्वाध्यामोत्रीनुमंशुभ्याद्वाध्यामुमार्जन
मभा । तत्रेत्तस्ती प्रचान्यपाटाप्रथितर्धयच ॥ संप्रादयेरेनमुद्दार्नततः संप्रणोदिभि । ग्राम्याना-

नम्—प्रणयपूर्वमुच्चार्यसावित्रीतर्जनंतरम् । तथैवव्याहतीस्त्रिः धीताचमनमुच्यते । **घैदिका चमनम्**—कर्मगतुत्रिराचम्य, प्राणायामप्रयंसृष्टम् । प्राट्मुखांवापिकर्त्तव्यं कर्मकुयत्प्रयत्नतः । **जलाभावेआचमनंपाराशरः**—प्रभासाक्षीनितीर्थानि, गंगायाःसरितस्तथा । विप्रस्यदक्षिणेकथं वसन्तिमुनिरववीत् । गंगाचदक्षिणेथोत्रे, नासिकाया हुताशनः, उभयोः स्पर्शनंचैव तत्क्षणादेवशु-
ध्यति । **आचार मयूखे**—जुतेनिष्ठोर्नंचैव जूम्भमाणेतथाऽनूते,, पतितानांचंसभापे दक्षिणंधव-
रुंस्पृशेत् । **आचमनेजलप्रमाणं नागदेवः**—संहतांगुलिनातोय, गृहीत्वापाणिनाद्विजः । मुष्का-
गुष्टंनिष्ठेनशेषेणाचमनं चरेत् । मायामात्रमुयरीस्य यत्रमज्जतिचैमणिः । एतदाचमनंप्रोक्तं, पवि-
त्रंकायशीधनम् । **आचमनेवज्यं जलमाहव्यासः**—अपः पाणिनरैस्पृष्ट्वा, आचमेधस्तुयाद्विजः
सुरापानेनतत्तुल्यमित्येवमृपिरववीत् । **सर्वकर्मादीसंध्योपासनंनित्यंकात्यायनः**—स्नानंसंध्या
त्यजन्विप्र, सप्ताहाच्छुद्रतावजेत् । तस्मात्स्नानंचसंध्याच, सूतकेपिनंसत्यजेत् । **सन्ध्योपासनं**
केचिदपवादांश्रिः—उन्मत्तदोषयुक्तस्य, व्याधितस्यचनित्यशः । पिताभ्रातातथान्यांवा, सं-
ध्यावंदनमाचरेत् । देवाग्निद्विजविद्यानां, कार्यमहत्तिसंस्थिते । संध्याहानी नदांपोऽस्त्रियतस्तत्पुण्य
साधनम् । **मानसिकसन्ध्या**—अशक्तानिर्जलेदेशे, मृतीजातीचसूतके । जपेच्चमानसोसंध्या,
कुशवारिविवर्जिताम् । **संध्याकालमाह देवीपुराणे**—उत्तमातारको पेतामध्यमालुसतारका
अधमाभास्करोपेता, प्रातः संध्यात्रिधोच्यते । उत्तमाभास्करोपेता, मध्यमालुसभास्करा । अधमा-
तारकोपेता सायंसंध्यात्रियामता । अध्यर्धयामादासायं संध्यामाध्यान्हिकीप्यते । **सन्ध्याधिरिणः**
धर्मसिन्धुसारे—उपनीताद्विजाएवा त्राधिकारिणः । श्रीशृङ्गाणामनधिकारिवम् । तेषामुपनय-
नाभावा द्वेदमत्रेषुअधिकारोनास्ति । **सर्वकर्मादी प्राणायामः कर्त्तव्यः**—अगस्त्यसंहितायाम्
प्राणायामैविनायथकृतं कर्मनिरर्धकम् । अतोयत्ननकर्त्तव्यः, प्राणायामः शुभार्थिनां । **प्राणायाम**
सक्षरणः—प्राणोवायुरितिप्रोक्त आयामस्तन्निरोधनम् । प्राणायामइतिप्रोक्तोयोगिनांयोगसाधनम् ।
कात्यायनः—प्राणायामैस्त्रिभिःपूत स्तत्क्षणावजनेमिवत् । यथापर्वतधातूनां दोषान्हरतिपावकः
एवमंतर्गतपापं प्राणायामेन दहते ।

माजैनंविश्वामित्र कल्पे—भूमीशिरशिचाकाशे, आकाशेभुविमंडले । मंडलेचतथा-
काशे, एवंचनवधाक्षिपेत् । सैमधत्रयमाकाशे, ववरत्रयंमस्तके । नकाराणांत्रयंभूमौ'नान्यथापावितं
भवेत् । एवमापोहिष्ठेति तृचेनमाजैनंकुयांत । **याज्ञवल्क्यः**—अर्धंचैयाक्षिपेदूर्ध्वं, मर्धंचैयाक्षिपे-
दधः । अधोभागे विसृष्टाभि, रसुरायान्तिसंक्षयम् । शिरसोमाजैनंकुयात्कुरौःसोदकविन्दुभिः । **अत्र-**
विधिसंबंधिनकेचिदुत्सर्गान्वद्यादिः—(१) यत्रयत्राचमनंभवेत्तत्रत्रिवारंजलंपिबेत् । चतुर्थवारं
जलंभूमौक्षिपेत् । (२) यत्रयत्रश्रृप्यादिकं विनियोगोभवेत्तत्रतत्रजलंकरे गृहीत्वाकर्मापचारान्ते भूमौ
क्षिपेत् । (३) यत्रयत्रमाजैनंभवेत्तत्रत्र कुशोदकविन्दुभिःशिरःक्षिपेत् । (४) यत्रयत्रध्यानंभवेत्त-
त्रतत्रनमस्कार मुद्रयाकार्यम् । (५) यत्रयत्रोपस्थाने स्यात्तत्रकरी स्वतिकाकारी कुयात् । (६)
यत्रयत्रावाहनं तत्रतत्राजलिमुद्राकार्या । (अपवादस्तु तत्रतत्रभिन्नभिन्नप्रकारेणेषुदर्शिता)
संध्याप्राचान्यं विश्वामित्रकल्पे विप्रोवृक्षस्तस्यमूलंचमंध्या, वेदः शाखाधर्मकर्माणिपत्रे ।
तस्मान्मूलंयज्ञतोरक्षणीधे, छिन्नेमूलैर्नैव शाखानपत्रे । **वेदवृक्षः**—३ कारःप्रौढमूलः कमपदस
हितइन्द्र विस्तीर्णशाखो' ऋक्षपत्रः-सामपुष्यीयजुरधिककलोऽ धर्वगंधदानः । यज्ञश्छायासमे

तोद्विजमधुपगणैः सेव्यमानः प्रभातेमध्येसायंत्रिकालंसुचरितचरितः पातुयांवेदश्रुतः । **संध्यासेवनम्** स्वकालसेवता नित्यंसन्ध्याकामदुष्ठा भवेत् । अकालसेवितासाच सन्ध्यावन्ध्यावधूरिव । सन्ध्याहीनोऽ शुचिनित्यमनर्हः सर्वकर्मसु । यदन्यात्कुरुतेकर्म नतस्यफलमश्नुते । **संकल्प विचारोभविष्ये**—संकल्पेवविनाविप्रयत्किंचित्कुरतेनरः । फलं चस्याल्पकं तस्य धर्मस्याधिष्ठायो भवेत् । अत्रसंकल्प विषेयशास्त्राकारैर्नावाधि वैशविशेषभेदादि दिवामहूर्ता दिनानाप्रकाराण्युक्तानि परंचात्रप्रथयिस्तारभयात्रसंग्रहीतानि, **संकल्पवाचयन्तुहेमाद्रौ** श्राद्धखंडेप्रदर्शितम् । ७ इहपृथिव्यां जम्बूद्वीपे भारतवर्षं कुमारिकाखंडं प्राजापत्यादि, अमुकप्रवेशे एवंवेशादिकंसमनुकीर्त्य ब्रह्मणेद्वितीयपराश्रद्ध, श्रोश्वेतवाराहकल्पे, वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमस्य कलियुगस्य प्रथमचरणे, पष्ठिसम्बत्सराणामध्ये, वत्समानसम्बत्सरायनर्तुमासपक्षतिथिवार नक्षत्रयोगकरण दिवारात्रीमहूर्तनामानि चैतानि सप्तमर्थता न्नुचारयेत्, विशेषः प्रयोगपुरपष्ठः ।

अथच पूजाविषयोपयोग्य विषयान्प्रदश्ये—

तत्र पूजानाम् देवतोद्देशेन द्रव्य त्यागात्मक त्वयागएव । तत्र दद्यापिरेपाचिदावाहनादीनामवागात्मकत्वात्पूजात्वं नरयात् । नचतेषां पूजात्व नास्त्येवेतिवाच्यम् । षोडशेष्यपुपचारेषु शास्त्रकाराणां पूजाशब्द प्रयोगात् । तथापि यागायागसमुदाये, पूजाशब्दो-गीरवित-प्रीतिहेतुक्रियात्वेनोपाधिनाहृदएव, यथा इष्टिपशु सोमसमुदाये राजस्य शब्दः, दद्यापि ईश्वरे यागायागसमुदाय क्रियया जीवन्दतः करण, वृत्तिरूपा प्रीतिर्नोत्पद्यते, अन्त करणाभावात् । तथापि मायावृत्ति विशेष एवप्रीतिः शिञ्जादिवत् । साच दद्यापि उत्पन्नत्वान्नश्यति, तथापि फल यावत्तिष्ठतीतिदिक् ॥ **पूजाधिकारिणः नृसिंहपुराणे**—अनाश्रमित्यं गृहभक्तकारण मतो-गृहाणाश्रम मुत्तमं मुने । अनाश्रमस्यैद्विजधेदपारगै, रपित्वह नानुगृहामि चार्चनम् । अनाश्रमि कृतपूजांतु नगृहहामीत्यर्थ ॥ **स्कन्दपुराणे**—पाखण्डिनश्च पतिता येचवैनास्तिकाद्विजाः पूजाकर्मणितेषां वै, सन्निविनैष्यतेकचित् ॥ **देवपूजायां सर्ववर्णाधिकारमाह विष्णुः**—आगमोक्तेन मार्गेण स्त्रीशूद्रैरपिपूजनम् । स्मृत्यर्थं सारे वौधायनः । शूद्राणां चैवभवति नाम्नावैदेवतार्चनम् । चतुर्थ्ये तेनयेवतानामने त्यर्थः, तथा-दीक्षामन्प्रविहीनोपि उयादिवार्चनंबुधः । **देवीपुराणे**—पूजाविधौ भवेत् श्रेष्ठो, नापटुर्नकुशिलव । नानैष्टिकोदाम्भिकोवा, पूजकः प्राप्यते शुभः, कुशिलरोनट ॥ **पूजाप्रतिनिधयः मंत्रराजानुष्टुप्विधानेः**—गुरव पूजकाश्चैव, विद्वांसोयेऽग्निहोत्रिण । अधिकारित्व महंति, दद्या याश्चिकदीक्षिताः । धेदवैदार्थं वेत्ताच, स्मार्तकर्मज्ञ एववा ॥ **पूजाकाल नृसिंहपुराणे**—देवकार्यस्य सर्वस्य, पूर्वाह्णस्तुविधीयते । नारदीये विशेषः—प्रातर्मध्येदिनेरार्थं, देवपूजा समाचरेत् । नैमित्तिकेषु-सर्वेषु, तत्तन्कालां विशेषतः ॥ **देवपूजायां प्रतिमाद्विस्थान विरोपान्प्रदश्येः**—गृहपरिशिष्टे-तानममुवाग्नौ सूर्यंवास्थेऽहिले, प्रतिमागु थावाहन विनर्जनंभवत् । स्मृत्युपि शस्तागु देयतां सन्निहितेति । **मनुः**—अपर्यागोपैव हृदये, स्थण्डिले प्रतिमासुच । विषेयुचहरेः गम्ययर्चनं, मनुनास्मृतम् ॥ अग्नीक्रियापता देवो, दिविर्देवो मनिषिणम् । प्रतिमारवत्पुष्पानां, योगिनां हृदयेहरिः ॥ **स्कान्देः**—पूजार्थं मुत्तमंस्थानं, शालमानंतर्दुष्यते । शृगिहपूजगेष्टा, शालमानो-

झयाशिला । द्वारकाजात चम्पाका शिलाधेष्टातथैवच । धात्रीफल प्रमाणाया, करगंविहितांगका ।
 शालग्रामोद्भवाशस्ता, जातायाचकतीर्थक ॥ प्रतिमास्तत्रैवः—रत्नजाहमजाचैव, राजती
 ताम्रजतथा । रैतिकीवातथालीही, शैलजाडुमजातथा । रैतिकीपित्तलजा—अधमाधमाविज्ञेया
 मृन्मयीप्रतिमाचया । सर्वकामप्रदाचैव, रत्नजाचोत्तमोत्तमा ॥ **लिंगपुराणे**—यंत्रमन्त्रमंत्रप्रोक्तं
 मन्त्रात्माधेवतेतिच । मन्त्रविनाकृतापूजा वेवतानप्रसीदति ॥ **ब्रह्मपुराणे**—जलेस्थलेम्बरेमूर्त्तां,
 कुम्भेवाकमलोपरि । **पूजानिर्माद्योद्वासनं हलायुधः**—प्रातःकाले सदाकुर्या म्निर्माक्याद्वासनं
 बुधः ॥ **वाराहपुराणे**—उपलेपनंच स्थानस्य प्रातरेवहिशारयते ॥ **पूजार्थजलमाह**
भारद्वाजः—स्वच्छेसुशीतलंवाडुलघुसत्पात्रपूरितम् ॥ आनीतंसञ्जनैर्धत्तसत्तिलं तीर्थजंशुभम् ।
गंधानुलेपनं वृत्सिंह पुराणे—कुंकुमागुह श्रीरगटफूपूरेणाच्युताकृति । आलिप्यभर्ग्या
 राजेन्द्रकल्पकोटिवसेहिवि । **पद्मपुराणे**—गन्धेभ्यश्चन्दनंपुरयेचन्दनूदगुरुवरः । कृष्णागुरुस्तः
 धेष्टः कुंकुमेतुततौवरम् ॥ कालेयंचतुष्केचरत्तचन्दनमेवच । नृणांभवेतिदत्तानिपुण्यानिदेवपूजने ।
सर्वं गंधंगारुडे—कस्तूरिकायाभागीद्वीचत्वारधन्दनस्यतु । कुंकुमस्यत्रयश्चैवशशिनःस्याच्चतुः
 समम् ॥ **अन्येच**—कपूरंचन्दनंरुपः कुंकुमश्चचतुःसमम् । सर्वगन्धमितिप्रोक्तंसमस्तमुवरलमम् ॥
मङ्गलद्रव्याणिमदनरत्नस्कान्दे—हरिद्राकुंकुमञ्चैव सिन्दूरंकज्जलतथा । कूर्पासकश्चतम्बूलं
 मांगत्याभरणंशुभम् ॥ **भद्ररंजन द्रव्याणि**—रुद्रानिपद्मवर्णानिमगढलार्थंस्तुकारयेत् । शालि-
 तगङ्गलवृष्णेशुभलवायवमम्भवम् । रक्तंकुसुम्भ-मिन्दूर गैरिकादिसमुद्भवम् । हरितालोद्भवंपीत
 हरिद्रासम्भवन्तुवा ॥ कृष्णंदग्धयैश्चैव हरितंदिव्यपत्रजैः ॥ **कलशप्रमाणं विष्णुधर्मोत्तरे**-
 देमराजतताम्रधर्ममयालक्षणाग्निता । यात्रोद्वाहप्रतिष्ठासुकुम्भा स्युरभिषेचने ॥ धातुजंमृगमयं-
 यापिकलशंयत्प्रतिष्ठितं । तद्वत्प्रादेशदीर्घच चतुरंगुलमु च्छितम् ॥ **सप्तमृदू**—अश्वस्थानाद्गज-
 स्थानाद्दहमीकालगङ्गमा ध्रदागराजद्वाराच गंशाष्वमृदमानीयनिक्षिपेत् ॥ **पञ्चरत्नानिस्मृत्यंतरे**—
 कनकंकुलिशंनिलंलपद्मरागंचमीहिकम् । एतानिपञ्चरत्नानिकलशाभ्यंतरेक्षिपेत् ॥ **पञ्चपल्लवा-
 द्वाहो**—अश्वस्थोद्वर, प्लक्ष्चूतन्यग्रोधयलवा । पञ्चभक्ताइतिप्रोक्ता, सर्वकर्मसुशोभनाः ॥
सर्वापथ्य—कृष्टंमासीहरिद्रेद्रैरु र शैलेयचन्दनम् । यत्राचम्पक मुस्ताचसर्वापथ्योदशस्मृताः ॥
सप्तधान्यानिपट् त्रिंशन्मते—यवगं, धूमधान्यानितिला, ककुधमुद्गकाः । स्यामा कथणका
 श्वैवमसधान्यमुदाहृतम् ॥ **अथसर्वकर्मोपयोगी, मुद्रालक्षणानिवद्ये**—उक्तञ्चस्मृति-
संग्रहे—अर्चनेजपकालेतुध्यानेकाम्बेचकर्मणी । तत्तन्मुद्राप्रयोगव्याधेयतागन्निधापकाः ॥ **आवा-
 हनी**—हस्तायामञ्जलिकृत्वाऽनामिकामूलपर्यणीः । अंगुष्ठीनिक्षिपेत्सेयंमुद्रात्वावाहनीस्मृताः ॥ १ ॥
स्थापनी—अधोमुखी द्विचंकेत्या स्थापनी मुद्रिकास्मृताः ॥ २ ॥ **संस्थापनी**—उत्थिता-
 गुष्टमुखास्तुसंयोगात्सन्निधापनी ॥ ३ ॥ **संरोधिनी**—अन्तः प्रवेशितांगुष्ठा सैवसंरोधिनीमता
 ॥ ४ ॥ **प्रसादिनी**—उत्तानांतुकरीकृत्वा प्रसार्थहृदयस्थिताः । प्रमादमुद्राविज्ञेया सर्वदेव प्रसा-
 दिनी ॥ ५ ॥ **अवगुण्टनमुद्रा**—हस्तांतुममुखीकृत्वा ; मुष्टीकृत्वाविकुंचयेत् । तयोपरिचा-
 गुष्ठी निक्षिपेद्द्विततथा । अवगुण्टनमुद्रैर् सर्वकामफलप्रदा ॥ ६ ॥ **सगमुखमुद्रिका**—मुष्टिद्वय-
 स्थितांगुष्ठी सम्मुखीचपरस्परम् । संश्लिष्टावुच्छ्रिताकुर्यात्सेयं सम्मुखमुद्रिका ॥ ७ ॥ **प्राथेनी**—
 प्रसृतागुलिनीहस्ती, मिथश्लिष्टीच सम्मुखी । कुर्यात्स्वहृदयेनेयंमुद्राप्राथनसंज्ञिका ॥ ८ ॥ **शङ्ख-**

मुद्रा—समस्तानां देवतानामेताः शस्तातु पूजने वामांगुष्ठं तु संयुज्य दक्षिणेन तु मुष्टिम् । कृत्योत्तानं तथा मुष्टिं मंगुष्ठं तु प्रसारयेत्, वामांगुल्यस्तस्याश्लिष्टाः संयुक्तां सुप्रसारिताः । दक्षिणांगुष्ठसंस्पृष्टा मुद्रा शंखस्य चोदिता ॥ ९ ॥ **नाराचमुद्रा**—अंगुष्ठतर्जनीभ्यामनाम्नां सज्ये नाराचमुद्रिका ॥ १० ॥ **योनिमुद्रा**—**मिथः**—कनिष्ठके वध्यातर्जनीभ्यामनामिके । अनामिकोर्ध्वमश्लिष्टदीर्घमध्यमयो रघः अंगुष्ठप्रद्वयं न्यस्ये योनिमुद्रेय मीरिता ॥ ११ ॥ **गरुडमुद्रा**—हस्तीतु मम्मसूत्रीकृत्वा, प्रथमपित्वा कनिष्ठके । मिथस्तर्जनि के श्लिष्टे, श्लिष्टावंगुष्ठकौ तथा । मध्यमानामिक्वे द्वे तु द्वौ पक्षाविव कुक्षयेत् । एषा गरुडमुद्रा स्यात्, देशेप विपनाशिनी ॥ **धेनुमुद्रा**—हस्तद्रये त्वधोचक्रे सम्मुखे च परस्परम् । वामांगुली दक्षिणस्य चांगुलीनां हि सन्धिषु । प्रदर्श्य मध्यमाभ्यान्तु तज्ये नौ द्वे प्रयोजयेत् । कनिष्ठे द्वे-
-ऽनामिकाभ्यां युज्यात्साधेनु मुद्रिका ॥ **विसर्जनीमुद्रा**—आवाहने तु यामुद्रासंबोक्ता तु विसर्जने ॥ **लक्ष्मी मुद्रा**—पद्माकारौ करौ कुर्यां दूर्ध्वां प्रीकरां सम्मितौ, ध्यायेद्देवीवदात्मानं लक्ष्मी मुद्रेयमुच्यते । एतादेव्याः प्रयत्नेन मुद्राराशोः प्रदर्शयेत् । **सप्तखिन्नाख्यमुद्रा**—मणिवंधे स्थितीकृत्वा प्रसृतांगुलिकी करो । कनिष्ठांगुष्ठयुगले मिलित्वान्तः प्रसारयेत् । सप्तखिन्नाख्यमुद्रेयं वैश्वानर वंशकरी ॥ **दुर्गामुद्रा**—मुष्टिकृत्वा कराभ्यां च वामस्योपरि दक्षिणम् । कृत्वा शिरसि सायुज्यादुर्गामुद्रेय मीरिता ॥ **नमस्कारमुद्रा**—स्पर्शयेद्दाम हस्ताग्रं वाम हस्तस्य मूलतः । दक्षिणेन नमस्कारमुद्रा ह्येषा प्रकीर्तिता ॥ इति कर्ममुद्रा लक्षणानि ॥

पूजापात्रस्थापनक्रमः पुष्पसारसुधानिधौ—अर्घ्यपात्रं तु वायव्ये नैऋत्या पाषाणपात्रकम् । आग्नेयां ज्ञानकलशं भैरोत्वाचमनीयकम् । मध्ये तु मधुपर्कस्या दिव्ये तत्पात्रलक्षणम् ॥ कर्मपात्रे सम्मुखे च तद्देशे गंधपात्रकम् । कर्मपात्रस्य वामे तु स्थापयेत् आदर्घटिकां ॥ कर्मपात्राग्रतः शंखत्रिपुष्टुपरिस्थापयेत् ॥ पत्रपुष्पोपकरणं यथास्थाने तु स्थापयेत् । धूपदीपे च द्वेषात्रे कर्मपात्रस्य दक्षिणे, नैवेद्यं कर्मशरैश्च वैवता दक्षिणे न्यसेत् । **पाषाणपात्रे प्रक्षेपणीयं द्रव्याणि रत्नप्रकाशे**—पंचविंशत्युष्णैश्च दूर्वाश्यामाकमेव च, चत्वारि पाषाणद्रव्याणि लब्धेषु वापि समाचरेत् । **अर्घ्यद्रव्याणि तत्रैव**—कुशाक्षततिलव्रीहि यवमाष प्रियंगुभिः । सिध्दार्थक समायुक्तमर्घ्यस्या तु विशेषतः ॥ **सामान्यार्घ्यैः**—रक्तवित्तवृत्तैः पुष्पैर्दधिदूर्वाकुशैस्तैः । सामान्यः सर्वदेवानामाद्यं परि क्रीतितः । अलामेदधिदूर्वादिर्मनसापि विहितयेत् । **अष्टांगार्घ्यम्**—आप. क्षीरं कुराग्राणि, दधिसर्पिधत्तंडला । यवसिद्धार्थकाश्चैव अष्टागोर्घः प्रकीर्तितः ॥ **आगमेतु**—शंखे कृत्वा तु पानीयं मधुपुष्पाक्षतान्यितम् । अर्धददाति वैवस्यससागर धराफलम् ॥ **मधुपर्कम्**—इन्मधुधृतं चैव पयोदधिसहैव तु । प्रथममाणां वामाग्रं मधुपर्कमिहोच्यते ॥ **आचमनीयम्**—एलालवंगीक्षीरं च कंबकोलं च तुर्धकम् । आचमनीयं विठेयं यालाभं प्रदृश्यात् ॥ **स्नाने द्रव्याणि नृसिंहपुराणे**—क्षीरेण पूर्वं कुर्वीत दध्नापयाद्वेदनं च । मधुना चाधर्षेन (शर्करया) कमोक्षेयो विचक्षणैः ॥ प्रत्येकद्रव्यस्नानन्ते जलेनैव तु स्नापयेत् ॥ **सर्वं स्नानं**ते शंखतोयेन स्नानस्कान्दे—शंखे कृत्वा तु पानीयं शशाङ्गं बुभुमान्वितं ॥ स्नापयेद्देवदेवेशं जीवन्मुक्ताभपेरिदिसः ॥ **पूजासमये वादित्राणां ध्वनिः** स्कांदे—यदि त्राणामभावे तु पूजाकाले च सर्पदा । घंटाशब्देनैरे. कायं सर्वेषां मयोयतः ॥ **ध्वजं** च आर्द्रगात्रं **मार्जनम्**—विष्णुज्जानार्द्रगात्रं तु ध्वजं परिमार्जयेत् ॥ **ध्वजं** माह भारद्वाजः—नैत्रप्रियाणि-स्रस्ताणि नूतनानि धनानि च । न्यायागतानि वस्त्राणि प्रशस्तानि भवन्ति हि । अदेयवस्त्राणि-

वैधायनः—आखुदधानिदधानि जोखान्यन्मैधृतानिच । कृमिदधानिदीर्णानि स्थूलाण्युपहृतानि-
 निच । दुष्कर्मसुप्रयुक्तानिदेवायनैवचार्ययेत् । **यक्षोपवीतम्**—त्रिभुक्तुजलचपीतत्र परस्त्रादि
 निर्मितम् । यक्षोपवीतं देवेचदत्त्वायेदान्तगोभयेत् । **भूयणानि नन्दिपुराणो**—स्वशनखादेव-
 देवेशं भूयणैर्भूपयन्तिये । स्वर्गतिर्थातितेभक्ता यावदिन्द्राथतुदेशः ॥ **चन्दनवामनपुराणो**—
 सुगन्धैधसुरामासिकपूरुगुरुचन्दनैः । तथान्यैश्चशुभैर्द्रव्यैरचयेद्देयताद्विजः ॥ **तत्रादौ विष्णुप्रिय**
पुष्पाणि चये—पाद्ये—तुलसीकृष्णगौराच तथाभ्यर्च्यजनार्दनम् । नरोयातितर्जुत्यत्वां चैर्णवा
 शाश्वतो गतिम् । अन्नात्वातुलसीद्विवासोपनक्तस्तथैवच । सयातिनरकेधोरे यावदाभूतसम्प्लयम् ॥
दुर्घातुलस्योश्चद्वेदनवर्जितं विष्णुधर्मोत्तरे—रविवारंविनादूरी तुलसीद्वादशीविना ।
 जीवितस्याविनाशाय प्रथिचिन्वीनधर्मैश्च । संक्रान्तापकंपचान्ते द्वादश्यानिशितसन्धयोः ॥
 यैश्चिच्छन्नतुलसीपत्रं तैश्चिन्नोहरिमस्तकः । **पादुमेविशेषः**—देवाथेतुलसीछेदी होमार्थसमिध-
 स्तथा । इन्दुक्षयेनदुष्येत गवाथेतुतृणस्यच ॥ **वलिप्रतिप्रह्लादोक्त पुष्पाणिवामनपुराणे**—
 तान्येवचप्रशस्तानिकुशुमानिमहासुर । यानिस्युर्वर्णयुक्तानिरसगन्धयुतानिच ॥ **अग्निपुराणे**—
 विल्वपत्रं शमोपत्रं पत्रं वृहत्तजस्यच । पत्रं दमन वृहत्तज हरेस्तुष्टिकरं परम् ॥ **मणिहेमादि-**
निर्मितपुष्पाणि तत्वमागरे नारदोक्तानि—मणिरत्नसुवर्णादि निर्मितं कुसुमोत्तमम् । तत्परं
 कुसुमं प्रोक्त मपरं चित्रयत्नजम् ॥ उत्तमं वृहत्तजं पुष्प मधमं फलहपकम् । अधमं कुसुमं
 प्रोक्तं पत्रिका जातमेववा । पराणा मपराणांच निर्माल्यत्वं नविद्यते । स्वर्णपुष्पेण चैवेन पूज्य-
 मुक्तिमवाप्नुयात् । किंपुनरंक्षमुक्तादि खचितं स्वर्णं पुष्पकम् । आरोप्यप्रतिमा मूर्धनपूजामाः
 सिद्धिभागभवेत् ॥ **निर्माल्यलक्षणम्**—नारद उवाच—निर्माल्यद्विविधं प्रोक्तमुत्सृष्टंप्रातमेवच ।
 मन्त्रेणविधिनादत्तं देवाथोत्सृष्टमेवतत् ॥ न क्रियान्तरयोर्म्यं तत्सर्वथा त्याज्यमेवच । प्रातपुष्प
 फलसिन्धे दल्पतन्मनसान्यथा ॥ **देवार्चने चर्च्यपुष्पाणि**—स्वयपतित पुष्पाणि कालातीतानि
 चैवहि । कुपात्रान्तर संस्थानि, कुत्सित स्थान जानिच । दन्धिकीटानिचान्यानि विशोभान्य-
 शुभानिवै ॥ एवंविधानि पुष्पाणि त्याज्यान्येवविचक्षणैः । **विष्णुधर्मो**—नशुक्लैः पूजयेद्देवं
 कुसुमैर्नमहीगतैः । नार्कनोन्मत्तककांकी तथैवगिरिकाणिकां ॥ नकण्टकारिका पुष्पमच्युताय
 निषेदयेत् । करानीतं पटानीतं भानीतं चाकपत्रवे, एररुपत्रेप्यानीतं तत्सुष्पंपरिवजयेत् ।
 देवोपरि धृतंयश्चवामहस्तेच यद्दधतम् । अधोवस्त्रधृतंयश्च तत्सुष्पं परिवर्जयेत् ॥ **अथदेवी**
प्रियपुष्पाणि देवीपुराणे—उक्ताशुक्लैस्तथापुष्पैर्जलजैश्चल सम्भवैः । पत्रैः पुष्पैर्यथालाभम्
 सर्वापधिसमन्वितैः । धान्यानां सर्वपत्रैश्च पुष्पैश्चैव प्रपूजयेत् । शुभंवाप्यशुभंवापि फलपुष्पं
 निषेदयेत्—॥ भक्त्यानिषेदयेत्सर्वनाशुभंकिचिदाप्नुयात् ॥ **फवचित्**—नार्चयेद्दूर्जयादुर्गाम् ॥
पद्मपुराणे—युक्तातितुलसीं शुष्कानपि पर्युषितां प्रभुः । चर्च्यपर्युषितंपत्रं चर्च्यपर्युषितंजलम् ।
 नवर्च्यजान्दहीतोयं नवर्च्यं तुलसीदलम् ॥ करवीरार्कपुष्पैश्च शाशपैश्चापराजितैः । सितपीतै-
 स्तथारकैः कृष्णैश्चैव चतुर्विधैः । लतामिषांहाशुक्लस्य, दूर्वांकुरैः सकोमलैः । मञ्जरीमि कुशा-
 नांच विल्वपत्रैः सुशोभनैः ॥ **अथ सूर्यप्रियपुष्पाणि**—**अभिष्यपुराणे**—पुष्पैररुणसम्भूतैः
 पत्रैर्वागिरि- सम्भवैः । अपर्युषित निरिच्छ्रैः प्रोक्षितैर्जन्तुवर्जितैः ॥ **आत्मारामो**—देवापि
 भक्त्या सम्पूजयेद्विम् । **अथ शिवप्रियपुष्पाणि**—**नारदः**—विष्णोयानोह चोक्तानि

पुष्पाण्यपिचपत्रिका । वेतकीपुष्पमेकन्तु विनातान्यखिलान्यपि । शस्तान्येवसुरश्रेष्ठ शङ्कर-
राधनेपिहि । धतूरवेणयोर्लिङ्ग सकृत्पूजयतेनर । सगोलक्षफलप्राप्य शिवलाभे महीयते ।
बिल्वपत्रसहस्रेभ्यो द्रोणपुत्रं विशिष्यते । सर्वांसोपुष्पजातीनां प्रवरनीलमुत्तमम् । (बोलकन
कैलासर्ज) स्कन्दपुराणे—चतुराणापुष्पजातीनां गन्धमाघ्रातिशङ्कर । श्रकंस्यकरवीरस
विल्वस्यचवकस्यच । लिङ्गपूरन्त्य कुर्वाण्ममदेवि दृढव्रत । शतवर्ष सहस्राणि दिव्यनि
दिविमोदते । बृहन्नारदीये—तुलसीदलमालाभि कुर्वात्पूजाशिवस्य । गवांकारिप्रदानेन
यत्फलतल्लमेन्नर । ॐ नम शिवायेतिमन्त्रेण । योनर पूजयेच्छिवम् ॥ अखण्ड बिल
पत्रैश्च शिवसायुज्य माप्नुयात् । विशेषस्तत्रतत्र प्रमाणग्रन्थेषुदृष्टव्य धूपदीपनैवेद्यादि विषय
प्रधानत्वात्प्रसङ्गहीत ॥ इति पूर्वाङ्ग कर्मबोधिनी परिभाषा ॥

अथ संस्कार कर्माङ्गबोधिनी परिभाषा माह—तत्रादीक्षातस्यैव कर्माधिकार ।
दानहेमाद्र्यं वाराहे—सुखात् सम्यगाचान्त कृतसन्ध्यादिकक्रिय । काम क्रोध विहीनश्च
पाखण्डस्पर्शवर्जित ॥ जितेन्द्रिय सत्यवादी सर्वकर्मसुशस्यते ॥ तत्रादीक्षां च विचार-
मार्करण्डेयपुराणे—प्रासुराददमुखोवापिशमसु कर्मचकारयेत् । व्रतवन्धे विवाहेच सस्कार्य
स्यचयतनत । मङ्गलस्नानं परशुराम रद्रपञ्चतै—तत स्वगृहमागत्य मङ्गलस्नानमा
चरेत् । सर्वापधीगन्धचूर्णयुक्तै कृष्णतिलामलै ॥ उद्वृत्याङ्गानितैलेन चम्पकादि सुगन्धिना ।
मागल्ये मङ्गलस्नान कुर्वीत ब्राह्मणै सह । (यजमानस्य नतु ब्राह्मणस्य) निर्यसिध्दौ
कात्यायन—मागल्य विद्यतेस्तान वृद्धिपूर्वात्सवेपुच ॥ स्नेहिरव्य समायुक्त मध्याह्ना प्रक
दिष्यते ॥ वशिष्टसहितायाम्—कर्मादीमन्त्र सयुक्त मङ्गलस्नानमाचरेत् । दिव्याभरण वस्त्रौ
भिरलकृत्यतत शुचि । विवाहादि दिनेपाप्ते तत्कर्त्राभार्ययासह । कुलदेवादिसम्प्राप्त्यै ब्राह्मणाय
सुवासिनी स्नापयित्वासकन्येन स्नातव्य समुत्तेनच । परिधायऽहृत वस्त्र द्विपटौश्च स्व्यपिष्टवम् ।
वस्त्रपरिधानमाहमजु—खण्ड वस्त्रावृत्तश्चैव वस्त्रार्थालम्बितस्तथा । उत्तरीय व्यपेतश्च तद्वृत्
निष्फलभवेत् । गौतम—एकवस्त्रोनभुञ्जीतध्रीतेस्मात्तैच कर्मणी । नव्याऽद्वयकार्याणि दान
होमजप तथा । विधान पारिजातके—एक वस्त्रावुयारी मुक्तवेशा व्यवस्थिता । नसाधिष्ठारि
शीजेया श्रीतेस्मात्तच कर्मणि । प्रथं गपारिजातके—सस्कार्यं पुर्योवापि खोवादक्षिणत
सदा । सस्कारकर्त्ता सवत्र तिष्ठे दुत्तरत सदा । पत्न्युपवेशने विचार धर्मऽवृत्तौ—
जातके नामकेचैव ह्यन्नप्रशान कमणि । तथानिष्कमणेचैव पत्नीपुत्रच दक्षिणे । गर्भापत्ते
पुसवने सीमन्तो नयनेतथा । वधूपवेशनेचैव पुन सन्धान एवच । प्रदानेमधुपकंस्य इन्ना-
दाने तथैवच । कर्मस्वेतेषुवैभार्या दक्षिणे तूपवेशयेत् ॥ स्मृतिसप्रहे—व्रतवधे विवातेव
चतुर्भ्यासहभोजन । व्रतेदानेमले श्राद्धे—पत्नी तिष्ठति दक्षिणे । धर्मऽवृत्तौ—शशवेदि
ऽभिपेकेच पादप्रक्षालने तथा । शयने भोजनेचैव पत्नीदुत्तरतोभवेत् । कर्मादी तिलक
विचारः मदनपारिजातके—मङ्गल तिलक कुर्वात्सि दूरादेविचक्षण । रयाम (इपर
कस्तूरीभ्या) शान्तिकर प्रोक्त रक्त वश्यकस्तथा ॥ श्रीकर पीतमिलाहु स्वेत मंस
प्रदायकम् ॥ इतिकामानामेदेनकुर्वात् ॥ मांगत्ये चर्त्यतिलकमाह आचार रत्ने—अन्वये
सूतकेचैव विवाहे पुत्रजन्मनि । मांगल्येषुच सर्वपुनधायै गोपिचन्दनम् । सर्वकर्मादी देव

पूजन विचारः, रुद्रकल्पद्रुमे—गणेशः सर्वदेवानां मादौ पूज्यः । सर्वैरपि महा-
विघ्न नाशकोन्यां न विद्यते ॥ विशेषस्तत्र तत्र कर्मपरिभाषासु दृष्टव्यः ॥ अथ च द्विजानां
वेदाध्ययनाह याज्ञवल्क्यः—यज्ञानां तपसांचैव शुभानांचैव कर्मणां । वेदेषु द्विजातीनां
निःश्रेयसकरं परम् ॥ व्यासः—धृतिस्मृतिश्च विप्राणां नमनं द्वे विनिमित्ते ॥ एकैकः किलः
कापो द्वाभ्यामर्थः प्रकीर्तितः ॥ अत्रिः—वेदाः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणं, धर्माध्यायुक्तं यजनं
प्रमाणं । अतः प्रयत्नप्रभवेत्प्रमाणं तद्वायव्यशुक्लं कुरुतत्प्रमाणम् । वेदज्ञापिप्राप्त्यर्थं ऋषि-
छन्दादीनि स्मरेत् ॥ मदनरत्ने याज्ञवल्क्यः—आर्षछन्दश्च देवतयं विनियोगस्तथैव च वेदितव्यं
प्रयत्नं च, ब्राह्मणेन विशेषतः ॥ अविदित्वा तु यजनाप्ययनं जपम् । होममन्तर्जलादीनि
तस्य चाल्प फलं भवेत् ॥ ऋष्यादीनां मुञ्चारणं फलम्—यश्च जानाति तत्त्वेन आर्षं छन्दश्च
देवतं । विनियोगं ब्राह्मणं च मन्त्रार्थं ज्ञानमेव च । एकैकस्य ऋषेः सोपि च न्योऽपि तिथिषु च
भवेत् । देवतायाश्च सायुज्यं गच्छत्ययनशंसयः । पूर्वोक्तप्रकारेण ऋष्यादीन्वेत्तित्यो द्विजः ।
अधिकारो भवेत्तस्य रहस्यादिषु कर्मसु ॥ आपछन्दाश्चैव तन्निवचनम्—येन यश्च पिपासादृष्टं
सिद्धिः प्राप्ता च येन वै । मन्त्रेण तस्य तत्प्रोक्तमर्थं भावस्तदार्थकम् । छन्दो लक्षणम्—छान्दा-
च्छन्द उद्दिष्टं वाससो इव चाकृतेः । आत्मा संछादितो वैश्वभृत्यो भातैस्तुर्वपुरा ॥ आदित्यैर्वसुभ्यो
रुद्रैस्तेन छन्दासितानिवै ॥ देवता लक्षणं मन्त्रस्य—यस्य यस्य तु मन्त्रस्य उद्दिष्टा देवता तु या
तदाकारं भवेत्तस्य देवत्वं देवतोऽच्यते । मन्त्रस्य विनियोग लक्षणम्—पुरा कल्पे समुत्पन्ना
मन्त्राः कर्मार्थं मेव च । अननचेदं कर्तव्यं विनियोगः स उच्यते । तैरुक्तं यच्च मन्त्रस्य विनि-
योगः प्रयोजनम् । ब्राह्मणम्—प्रतिष्ठानं स्तुतिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते । एवं पञ्चविधयोगं
जपकाले ह्यनुस्मरेत् । होमेषु चान्तर्जलयोगं स्वाध्यायं शंजने तथा । एवं सर्वानुक्रमं सूत्रे
फात्यायनम्—ऋषिदेवतच्छन्दास्यनुक्रमिष्याम ॥ इति प्रकृत्याह—एतान्यविदित्वा यो धोते नमूते
जपति जुहोति यजते याजते वा तस्य ब्रह्म निर्वायं यातयामं भवत्यथान्तरात् गती वाऽऽपद्यते
वच्छक्तिं प्रसीयते वा प्राप्नोति भवत्यथ विज्ञायैतानि, यो धोते—तस्य वीर्यवत्तरम् भवति । जपति-
हुत्वेष्ट्वा तत्फलं युज्यते । अन्यथापि यत्रैकस्याक्रियायाश्चनेक मन्त्राणां विनियोगस्तत्रा-
प्येवमेव, यथा रुद्रजपामिषेकादी, एवं पञ्चविधयोगमिति ब्राह्मणान्तर्भावेन पञ्चविधत्वं
प्रकारान्तरमधिकं फलार्थं वा । आचारादर्शं वाचस्पतः—इदं च ऋष्यादिस्मरणं यत्र मन्त्रे
प्रामाणिकं ततः प्राक्प्रयोग एव कर्तव्यम् । आर्षदिर्धिकल्पम्—इदं च ऋष्यादि ज्ञानं वैकल्पिक-
कम् । एतान्यविदित्वा तुपुन्यं तस्य ब्रह्मनिर्वायं यातयामं भवतीत्युक्त्वात् । अथ विज्ञायै-
तानियो धोते तस्य वीर्यवदित्युक्तेः सर्वमेतच्छन्दो देवतार्थं च विज्ञाय यत्किञ्चिज्जपेत्तो मादिकरोति
स तस्य फलमश्नुते । इति वैद्यनाथः, कृष्णभट्टीयतु—नच स्मरेत् इतिरुद्रः प्राद्वैतानि कै-
मले । अमिहोत्रे वैश्वदेवे विवाहादि विधीयते ॥

अथ च प्रसङ्गवशाद् वैदिक मन्त्राणां मुञ्चारणार्थं संक्षेपेण प्रतिज्ञासूत्रादिकं
शिक्षां च व्याख्यायते—अथ प्रतिज्ञा अथ श्रीतस्मात् सूत्रकथनानंतरं प्रतिशास्त्रसूत्रकथना-
नन्तरं च, प्रतिज्ञाव्यवहारजन्यज्ञानविपर्ययोः, विधास्यते । स्वरसंस्कारयोश्छन्दस्तिनियमात्तद्वा-
नार्थलक्षणमाह ॥ (मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदं नामधेयम्) २ मन्त्रब्रह्मदेवतादिः, ब्राह्मणं च तत्र सुमेव्यं

मित्यादि । तयोर्वेदसंज्ञेत्यर्थः ॥ (तस्मिंस्तुवलेयाञ्जुपागनायेमाध्यंदिनीयके मन्त्रेस्वर-
 प्रक्रिया) ३ तस्मिन्नेतावन्मात्रोक्ती अन्यशाखायामतिप्रसङ्गस्यादत्त आह—शुबलेइत्यादिकृष्ण्य
 जुषोव्यावृत्त्यर्थंशुबलप्रहरणम् । यञ्जु वेदोक्ताना मृचामपिवक्ष्यमाण स्वरसंस्कारसिद्ध्यर्थं मान्नाय-
 पदोपादानम् । अन्यथा यञ्जुर्लक्षणाकान्ता नामनियत परिमाणानामेव । इपेत्वादिमन्त्राणां
 ग्रहणंस्यात् । ननुपादसंबन्धानामग्निमूर्द्धेत्यादिनाम् ॥ कण्वशाखाव्यावृत्त्यर्थमाह—शुबलेमाध्यं-
 दिनीयके इति ॥ कण्वशाखा हिनमाध्यंदिनप्रोक्तेति नतत्रातिप्रसङ्गः । ब्राह्मणेत् दातानुदात्तौ
 भाषिकस्वारी । इत्यनेन ब्राह्मणे विशेषरूपेणस्वरस्ववक्ष्यमाणत्वात् माध्यंदिनीयकेमन्त्रेइति ॥
 स्वरप्रकृत्या स्वराणामुदात्तादीनां प्रकृत्याप्रयोगः कथ्यतेइतिशेषः । उच्चैरुदात्तः—इत्यादिभिरा-
 रम्भः ॥ याक्षवल्क्यः—समुच्चारयेद्वर्णान्हस्तेनचमुखेनच । स्वरश्चैवतुहस्तश्च द्वावेतौयुगपद-
 स्थितौ ॥ हस्तभ्रष्टस्वरोभ्रष्टो नवेदफलमश्नुते ॥ यथावाणी तथापाणी रिक्तं तु परिवर्जयेत् ।
 यत्रयत्र स्थितावाणी पाणीरूत्रं वतिष्ठति । उत्तानसोमत् किञ्चित्सुव्यङ्ग्यांशुलिरजितम् ॥ स्वर-
 विद्धं करंशुयतिप्रदेशोदेशगामिनम् ॥ स्वरिते व्यंगुलंविद्यान्निपातेतुषडंगुलं । उधामेतु नवांगुल्य
 मेतस्वारस्यलक्षणम् । (हृद्यनुदात्तः) ४ सामीप्येसप्तमी हृदयसमीपेहस्तेनानुदात्तः
 प्रदर्शनीयः । अनुदात्तोच्चारणवैलायां हृदयसमीपे हस्तस्थापनं कर्त्तव्यम् इत्यावत् ॥ यद्यपि
 प्रातिशाख्ये हस्तेनते, इति सामान्येनोक्तम् तथापिदक्षिण एवहरतोप्र.ह्यः ॥ कर्त्तव्यः—
 यत्रोपदिश्यतेतिपूर्वाहः ॥ (मृध्नुदात्तः) ५ मूर्ध्निमुखप्रदेशेऽनुदात्तः प्रदर्शनीयः । मख-
 स्यापिमस्वका वयवत्वप्रसिद्धे, निष्कृष्टार्थे पूर्ववत् । (श्रुतिर्मूलेस्वरगितः) ६ दक्षिण कर्त्तव्ये
 स्वरितः प्रदर्शनीयइत्यर्थः । क्रमेणैषामुदाहरणानि वायव्येत्थप्रपूर्वकारोत्तराऽऽकारोऽनुदात्तः
 यकारोत्तराकारऽनुदात्तः । उत्तरवकारोत्तराकार स्वरितः । एवञ्जात्यादयोऽभिहिता ७
 यथाप्रचयस्यस्वरितमेवस्य प्रातिशाख्येऽभिधानम् । एवं जात्यादयोपिस्वरितमेदास्तत्रैवाभिहिताः
 (ब्राह्मणेत्तूदात्तानुदात्तौ भाषिकस्वारी) ८ ब्राह्मणेपूर्वांके व्रतमुपैष्यन्त्रित्यादिभागेतु-
 उदात्तानुदात्तौभाषिक लक्षणलक्षितौ स्वरावेवस्वारी, स्वार्थेऽक्षर । तेनस्वरितस्यव्यावृत्तिः ।
 हृदिमूर्ध्निचभवते, इति अनुश्रुत्यालभ्यते । (तानिस्वराणि हृन्दौवत्स्वराणि) ९ सुश्राणि,
 कल्पाः, अर्थातोऽधिकार इत्यादयः श्रुंगम्राहिकन्यायेन अन्यान्यपि सिद्धादीनि पेदाह्वानि
 हृन्दौवच्छन्दसातुल्यानि भवन्तिस्वर संस्कारनियमेइतिशेषः—उदात्तादिस्वर वाधनार्थतानस्वरा-
 णीति । तान एकध्रुतिः स्वरोयेषांतानितथाच तत्रनोदात्तादिप्रवृत्तिरितिभावः ॥ इति प्रथमा
 कण्डिका ॥ (अथान्तस्थानामाद्यस्य, पदादिस्थस्यान्यहलसंयुक्तस्य, संयुक्तस्या-
 पिरेफोप्मान्त्याभ्यामृकारेण्चा विशेषेणादिमध्यावसानेपूच्चाररे जकारोच्चारणम्)
 १ अथ स्वरनिरूपणानन्तरं संस्कार प्रकृत्या उच्यते । इतिशेषः । अन्तस्थानां, य, र, ल, व,
 यणां आद्यस्य यकारस्य पदादौ विद्यमानस्य जकारोच्चारणम् इत्युत्तराणाम्बयः कर्त्तव्य इति
 शेषः । यथा—शुंजानः प्रथमम् । इत्यादौ पदादिस्थस्येत्युक्त्या, धियः इत्यादौ नातिप्रसङ्गः ॥
 तस्माद्यथादित्यादायतिप्रसङ्ग पारणायाम्हाह । अन्येइति—अन्येनहस्ताव्रतसंयुक्तस्य संयोगमप्राप्त-
 स्येत्यर्थः ॥ घृताचीर्यन्तुहृदयेत्यादौपदादिस्थाभावा हकारोच्चारणं नस्यादत्तत्वात्तानुविधानेन
 एतंगुह्यस्यापीति । रेफोरकारः ऊष्णामनयोहकारः, ताभ्यां युष्णयापि यकारस्य जकारो-

आरण्यम्भवति ॥ तथाच पूर्वादाहरणेपित्तिसिद्धिः । अत्रापि विशेषणआदिमध्यावसानेषु इति सम्बन्ध्यते । तेन-धृताचीर्यन्तुहर्षत । सूर्य्यषडा, इत्यादिपुसर्वत्रजकारोच्चारणंभवति । कृणुह्य-ध्वरम् । गेह्यायच, मख्येधेदाभूया । इत्यादीनिहकारयोगो दाहरणानि हेयानि, अन्य हलसंयुक्तस्यैतिकाकाक्षिगोलकन्यायेन । अत्रापिसम्बन्ध्यते, तेन—अग्निर्ज्योतिरित्यादीनातिप्रसङ्गः । अकारेणसंयुक्तस्यापि जकारोच्चारण मविशेषेण । अत्रअन्यहलसंयुक्तस्येति, नसम्बन्ध्यते । रेफोष्मात्याभ्यां पृथक्पाठसामर्थ्यात् । तेन—सदोऽऽसृतस्येत्यत्र सकारयोगेपि जकारोच्चारणं सिध्यते । (द्विर्भाव्येष्वम्) २ धाव्याइत्यादीजकारोच्चारणसिद्धये इदम् । अथापरान्तस्थस्यायुक्तान्यहलः संयुक्तस्योष्म ऋकारै रेकारसहितो च्चारणम् ।) ३ अथ—आदान्तस्थादेशकथनान्तरं अपरान्तस्थस्यरेफस्यअयुक्तः, योममप्राप्तः, अन्यहलयस्मिन्तादशस्यऊष्मभिः अकारेण वायुक्तस्य, एकारसहितोच्चारणं कर्तव्यमितिशेषः पूर्ववत्, यथादर्शतमित्यत्र,, दरेशतमितिपाठः, नतुरेफमात्रघटितः, एधं, वधो, वधोयसि, वहिरमि ॥ इत्यादावपि बोध्यम् । कर्षायाच, यज्ञपतिहोषोत् । इत्यादावन्यहलः यकारस्य मकारस्य वासंयोगात् एकारसहितोच्चारणम् । (एवं तृतीयान्तस्थस्यक्वचित्) ४ । तृतीयान्तस्थस्य लकारस्यापि क्वचिल्लक्ष्यानुरोधेन एकारसहितोच्चारणम् । यथा—शतवल्शा विरोहतात् ॥ इत्यादी शतवल्शा इतिपाठः (ऋकारस्यतु संयुक्ता संयुक्तस्या विशेषेण सर्वत्रैवम्) ५ । एकारससितोच्चारणो देश प्रसंगादिदम् । संयुक्ता संयुक्तस्य अविशेषेण सर्वत्र—आदिमध्यावसानेषु एकारसहितोच्चारणम् । ऋतापाङ्, सजप्रशस्त, कृणुहि, सामान्यग्भिरित्या दीनुदाहरणनिबोध्यानि (अथान्त्य स्थान्तस्थानां पदादि मध्यान्तस्थस्य त्रिविधम् गुरुमध्यमं लघु वृत्तिभिरुच्चारणम्) ६ । अथ तृतीयान्तस्थादेश कथनानन्तरं, अन्तस्थानामन्त्यस्य वकारस्यत्रिविधं, त्रिप्रकारं गुरुमध्यम लघुवृत्तिभिरुच्चारणं कर्तव्य मित्युच्यते । एतच्चपदादिक मणजेयम् । तदुक्तमन्यत्र—वकारस्त्रिविधोऽप्येवो गुरुर्लघुर्लघुतरः । आदिगुरुः, मध्येलघुः, पदान्तेचलघुतरः ॥ इति, यथा न्यायवस्थ, सविता, देवोवः । इत्यादि ॥ (अथो—मूर्द्धन्योष्मणो ऽ संयुक्तस्य च खकारोच्चारणम्) ७ ॥ अथो—अन्तस्थादेश कथनान्तरं मूर्द्धन्योष्मणः, पकारस्य असंयुक्तस्पर्द्धं, टवर्गं योगं विना संयुक्तस्यच खकारोच्चारणं कर्तव्यमित्युपदिष्यते, यथा—सहस्रशीर्षा, सहस्रशीर्षा, पुरुषः, विभर्ष्यस्तवे, शप्प्यायत्वेत्यादी खकारोच्चारणं कर्तव्यम् । टवर्गयोगितु—प्रत्युष्टं, कृणोसि, श्रेष्ठतमायेत्यादीतुखकारोच्चारणं नभवति । (अध्ययनादि कर्मस्वथवेलायां प्रकृत्या) ८ ॥ एतेपूर्वोक्ताः स्वराः संस्काराश्च अध्ययनादि कर्मस्वेवेति नियम्यते । अध्ययनादीति आदिना यजनयाजनाध्यापनादि परिग्रहः । मन्त्रार्थ वेलायान्तु प्रकृत्या रूपैर्बोच्चारणम् ॥ इति द्वितीयकण्डिका २ ॥ (अथानुस्वारस्य टं० इत्यादेशः श, ष, स, ह, रेफेषु तस्यैवैष्यमाख्यातं ह्रस्व दीर्घं गुरुभेदैः ॥ दीर्घतपरो ह्रस्वो ह्रस्वात्परो दीर्घो गुरोपरेगुरुः परसवर्णोपतप्रकृत्याचान्यत्र) १ ॥ अथ ऊष्मादेशोपदेशानन्तरं श, ष, स, ह, रेफेषुपरेषु वर्णेषुपरेषु, अनुस्वारस्यस्थाने टं० इत्यादेशः । तस्य टं० कारस्य त्रैविध्यं ह्रस्व दीर्घं गुरुभेदैः । ह्रस्वोऽेकमातृकात्परोदीर्घः । दीर्घोद्विहमातृकात्परो ह्रस्वः । गुरो संयुक्ताक्षरेपरेगुरुर्बोध्यः । यद्यपि दीर्घोपि गुरुर्भवति तथापि संयोगेपरे

ह्रस्वस्यापि गुरुसंज्ञाविधानात् । ह्रस्वात्परस्यापि संयोगेपरं गुरुत्वं विधानात्ततोविशेषः ।
 यथा—त्रि टं० शब्दमेत्यादौ ह्रस्वात्परोदीर्घः । पृथिव्या षं शतेनपार्श्वे रित्यादौ दीर्घात्परो
 ह्रस्वः । कल्पन्ता षं श्रोत्रम् । सोमान टं० स्वरणम् । इत्यादौ संयोगेपरे ह्रस्वादीर्घाच्चपरो
 गुरुः । अन्यत्रशपसहरेफपरत्वाभावे, परा अनुस्वारात्परा तत्सवर्णाया ईपत्प्रकृतिः, तथा
 उच्चारणम् । अर्थात्परत्र विद्यमान वर्णं वर्गीय पञ्चमवर्णं सदृशसुच्चारणम् कर्तव्यमिति फलति
 (विसर्गेऽपि पद्विरामः) २ । विसर्गेऽपि अः, इत्यादिषु ईपद्विरामः, किंचिद्विरम्यते, विसर्गस्य
 स्पष्टोच्चारणार्थं ॥ (पदाद्यस्या संयुताकारस्येपदीर्घताच भवतीपदीर्घताच भवति) ३ ।
 पदादौ विद्यमानस्या संयुक्तस्य व्यञ्जनरहितस्य अकारस्येपदीर्घताच भवति । अरमन्पूर्ज-
 मित्यत्र शकारात्पूर्वः, अकारः । इपदीर्घानभवति संयुक्तत्वात् । पदादौ विद्यमानस्येत्यु-
 क्त्यागोपतावित्यादौ, पकारोत्तकारस्य न दीर्घता । अकारस्येत्युक्त्याच विभ्राडित्यादा विकार-
 स्य नदीर्घता । किन्तुव्वसोः पवित्रमित्यादौ वकाराकारस्य पकारा कारस्यच दीर्घता । तथाच
 तयोः ईपदीर्घोच्चारणं यथा भवति तथापठनीयम् ॥ एवमन्यत्रापिवाध्यम् । अन्तेद्विरभ्यास-
 परिसमाप्त्यर्थः । इति तृतीयाकाण्डिका पर्यन्ता प्रतिज्ञासूत्रव्याख्या समाप्ता ॥

कर्माङ्गं देवता नामानि छन्दोर्गं परिशिष्टे—तेन विवाहाङ्गं भूत उचितवाचनानि
 पञ्चाङ्गं देवता पूजनात्, यथाविधाहस्याग्निर्देवता भवति,, तत्रादौ पञ्चाङ्गं पूजान्ते—३^म विवाह
 कर्माङ्गं देवताभिः प्रीयताम्—॥ इत्युच्चारणं भवति,, एवं सर्वत्रवक्ष्यमाणं कर्माङ्गं देवोच्चारणं
 कर्मान्ते कुर्यात् ॥ श्रीपासने—अग्निं सूर्यं प्रजापतय । स्थालीपाके—अग्निः । गर्भधाने—
 ब्रह्मा । पुंसबने—प्रजापतिः । सीमन्ते—घाता । जातकर्मणि—मृत्युः । नामकर्म
 निष्कर्मणाञ्च प्राशनेषु—सविता । वास्तुहोमे—वास्तोष्पति रन्ते प्रजापतिः । चूडायाम्—
 केशिनः । उपनयने—इन्द्रः अश्वमेधा । केशान्ते—सुधवा । पुनरुपनयने—अग्निः ।
 संभावत्तने—इन्द्रः । उपाकर्मणि व्रतेषुच—सविता । तडागादि प्रतिष्ठासु—वरुणः ।
 पहोमे—नमहाः । कृष्णाङ्गहोमं चान्द्रायणं अग्न्याधानेषु—अग्न्यादय सर्वे ।
 अन्येषुऽष्टिकर्मसु—प्रजापतिः । पंचगव्यलक्षणम्—गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पि-
 कुशोदकम् ॥ पञ्चगव्यमिदं ज्ञानं कथितं पापनाशनम् ॥ त्रिगव्यम्—दधिक्षीरं घृतं चैव
 त्रिगव्यं परिकीर्तितम् ॥ त्रिरस-लक्षणम्—घृतं तैलं तथा क्षीरं त्रिरसं परिकीर्तितम् ।
 पंचरस लक्षणम्—घृतं तैलं तथा क्षीरं दधिः क्षीरं चपंचमम् ॥ सप्तधान्यं वलिलक्षणम्—
 सुदृग्माषु मसूराश्च गोधूमचणकानिच । मसुष्टक. कपालश्च सप्तसप्त्योवलिस्मृतः । मसुष्टको
 वनसुदृग्मः कपालः शलाघुः । पंचमासवलि लक्षणम्—कुन्मापेन्द्रिरिकासुपवटकैः साढवा-
 न्वितैः । पञ्चमासवलिः प्रोक्तः सदासासभुजां प्रियः । पञ्चगव्यं धलि लक्षणम्—कीलाट
 दधिकार्यस्य क्षीरतकैर्मनोरमैः । पञ्चगव्यो बलिः प्रोक्तः सततं शैशवः प्रियः । कीलाट
 लक्षणम्—बहुतकोऽल्प दुग्धोयः पाषेन घनतागतः ॥ कीलाटः सतुगातपः पुंस्वनिद्रा
 बलप्रदः ॥ पंचगोड वलि लक्षणम्—मौदकैश्च तथा पूर्णः पायसेन तयवच गुडोदमेन च
 तथा पाचनेन शुभेनच ॥ पञ्चगोड वलिः प्रोक्तः परः सौभाग्यवर्धनः ॥ त्रिपत्र लक्षणम्—
 त्रिस्वंच मुल्लोपत्रं जातोपत्रं तथैवच । त्रिसुगन्ध लक्षणम्—कूपूरगुणलं चैव त्रियंगुं च

ध्रिगंधकम् ॥ पंचसुगन्ध लक्षणम्—चन्दनंच प्रियंगुंच तथा कर्पूरकान्वितम् । कुंकुमं मृग-
दपंश पद्मगन्धं प्रकीर्तितम् ॥ इतिकर्मघोषिणी परिभाषा ॥ विशेषस्तत्र पद्धति परि-
भाषा सूत्र ध्यास्यासुंच दृष्टव्यः ॥

अथ गणेशपूजा परिभाषा

स्कन्दपुराणे—अपयऊचुः—निर्विघ्नेनतुकार्याणि कथंमिध्यन्तिस्ततज । कविदता
नमस्कृत्य कार्यनिद्धिर्भवेन्नृणाम् । पूजयित्वा महाभाग गणेशं सिद्धिदायकम् ।
सिध्यन्ति सर्वकार्याणि मनसाचिन्तितान्यपि । शिवाहादौ क्रियमाणे पूजनीयोगसाधिपः ॥
लिंगपुराणे—सर्वकामसमृध्यर्थे मादौपूज्योविनायकः ॥ रुद्रकल्पे—गणेशः सर्वदेवाना मादौ-
पूज्यःसदैवहि । “स्कान्दे”—चन्दनेनलिखेत्पक्कशिका वेशरान्वितम् । आसनाद्यर्घ्यपाद्यंच दत्त्वा-
पश्चात्प्रयत्नतः । रुद्रपद्धतौ—गणेशंपूजयेदादौ निर्विघ्नार्थंस्वकर्मणः । पटटेवामृगमयेपीठे रक्त-
वस्त्रेऽरुणाक्षतैः । कार्यसष्टदलंपद्मं तस्योपरिगणेशवरम् ॥ पञ्चोपचार पूजनमात्स्ये—उप-
चारैः ससिन्दूरश्चन्दनैरक्तचन्दनैः, पुष्पधूपैस्तथादीपै राच्छादनसुशोभनैः । मूर्तिप्रमाणरुकादे—
स्रगशक्त्यागणनाथस्यस्वर्णरौप्यमयाकृति । अथवामृगमयीकार्यावित्तशाख्यनकायेत् ॥ षोडशो-
पचारम्—पूर्वमावाहनंप्रोक्तमासनंतदन्तरम् । ततश्चाद्यमर्ध्यंचततस्त्वाचमनीयकम् । स्नानं-
पञ्चचोपवीतं ततोगन्धादिचन्दनम् ॥ पुष्पधूपश्चदीपश्च नैवेद्यं तदनन्तरम् । ततोवैद्याप्रणामश्च ततो
देवाप्रदक्षिणा ॥ विसर्जनंततोदद्यादुपचारारुषोडश ॥ अथ गणेशपूजनादिविषये, कृतिचित्प्रमाण
वादिभिः, निर्यायग्रन्थेषुलिखितम् । आदौ नवग्रहानर्च्यंततः कर्मसमारभेत । आदौप्रधानसङ्कल्प-
स्ततः पुण्याहवाचनम् । मातृपूजाततः कार्यावृद्धिश्चादूर्ध्वततः स्मृतमिति . परश्च । उत्तंचपदुम-
पुराणे—नाचितोहिगणाध्यक्षो यज्ञादीयत्सुरोत्तम । तस्माद्विघ्नसमुत्पन्न माकस्मिक मिदन्तव ।
पारस्करग्रहसूत्रेगदाधरभाष्येपि, पुण्याहवाचनप्रयोगे कृत्वाचमनः प्रोडमुखोयजमान. पीठेउपविष्य
पत्नींच स्वदक्षिणात प्राडमुखीमुपवेश्य सेरकार्यंचतथैवोपवेश्य, । सुमुखस्वैकदन्तश्च । इत्यादि-
सर्वैध्वारम्भकार्येषु इत्यन्तं, गणेशपूजाविधानमा दौकृत्वा कलशस्थापनान्ते पुण्याहवाचनप्रयोगो-
दर्शितः । अत.सर्वेषामपिपञ्चारां स्वग्रहोक्तविधीयते । तथापि—स्मृतिसंप्रहे-नश्लेषेपु स्मृति-
र्येषां श्राद्धादाद्युपलभ्यते कर्तुमर्हन्तिते सर्वे पारस्करमुनीरितिमितिदिक् ॥ इत्यादिनिर्णयेनादौगणेश
स्यैवपूजनंभवतीतिशास्त्रसम्मतिः ॥ इति गणेशपूजा परिभाषा

अथ कलशस्थापनपुण्याहवाचन परिभाषा—अथनित्यनैमित्तिककाम्येषु त्रिविधेषु-
कर्मसु । तत्पूर्वाङ्गतया भ्युदयिकानन्दो श्राद्धस्यावश्याविरुद्ध कर्तव्यत्वाविहितत्वेन ततोऽपिपूर्वं
मातृकापूजनस्य कर्तव्यत्वात् तदुपरि वसुधाराणामपिविधानात् । मातृकापूजनात्प्राक्पुण्याह-
वाचनस्यनिर्णततथा—उत्तंच—आदौप्रधानसङ्कल्पस्ततः पुण्याहवाचनम् ॥ मातृपूजाततः
कार्यावृद्धिश्चादूर्ध्वतत.परम् ॥ इति वाचस्पति मिश्रोत्लेखात्—मातृपूजनात्प्रागेवपुण्याह-
वाचनप्रतीयते । यथाच—पारस्करसूत्रे गदाधरभाष्ये सौनिकः—पुण्याहवाचनविधिवक्ष्यामी
यथाविधि ॥ प्रयोवतुः कर्मणासादायन्तेचोदयसिद्धये । तच्चकर्मप्रयोगान्तर्गतमितिकैचित् ॥

आद्यपक्षेकर्मप्रयोगसङ्कल्पकृत्वाकार्यम् ॥ द्वितीयेतुतत्कृत्वाकर्मसङ्कल्पः । हेमाद्रौदानखण्डेचहृत्च-
 शुद्धपरिशिष्टेनेोक्तः—सकलसाधारणशिष्टाचारप्राप्तश्च पुण्याहवाचनप्रयोगः । इतिप्रमाणैरादौ
 पुण्याहवाचनं प्रतीयते ॥ तस्यच—पारस्करस्मृतौ गदाधरभाष्ये कर्मप्रयोगे, श्रवणिकृतजानुमंडल
 कमलमुकुलसदृशमञ्जलिशिरस्याधाय, दक्षिणेनपाणिनासुवर्णैर्पूर्णकलशं, धारयित्वाआशयिष्य. प्रार्थ-
 येत् इतिसकलश विधानेनतत्पूर्वकलशस्थापन पूजनस्यविधानत्वात्समादादौ शान्तिपाठस्वस्ति-
 वाचन, गणेशपूजनंचलभ्यते । तच्चादौनिर्णीतं तत्रैवद्रष्टव्यम् । तथाचार्यक्रमः—गणेशपूजनान्ते
 पुण्याहवाचनाद्भवेनकलशस्थापनमेवलभ्यते-चयाऽयंपारंपर्यं शिष्टाचारोपि, अत्रप्रसिद्धं अत-
 आदौ कलशपूजनंकृत्वा तत्पुण्याहवाचयेत् ॥ इति कलशस्थापनपुण्याहवाचन-
 परिभाषा—नीराजनम्—ततोऽभिषेकान्ते, यजमानस्य नीराजनं कुर्यादिति गदाधरः ॥
 इति नीराजनविधिः ॥ -

अथ मातृकापूजन परिभाषा

अथच—वैदिकेषु कर्मसुमातृकागस्यावश्यकीयत्वेन, विहितत्वाद्करणेप्रत्यवायध्रवणाच्च ।
 नान्दीश्राद्धात्पूर्वं मातृकापूजनंचलभ्यते, तच्चकदाकार्यमिति विचार्यते—उक्तञ्च विष्णुपुराणे—
 अकृत्वामातृक्यागंस्तु वैदिकंय समाचरेत् । तस्यक्रोधसमागुक्ता हिंसामिच्छन्तिमातर ॥ गणेशै-
 नाधिकाहोता वृद्धीपुण्यास्तुषोडशः । इतिवचनैर्गणेशपूजनान्तेमातृकापूजालभ्यते । परब्रह्मवाचपति
 मिश्रादेयः पुण्याहवाचनान्ते षोडशमातृकापूजनवदन्ति ॥ तच्चआदौप्रधानं सङ्कल्पस्तत् पुण्याह-
 वाचनम् । मातृपूजातत् कार्यावृद्धिश्चादधंतत स्मृतम् ॥ परिशिष्टे—यत्रयत्रभवेच्छ्रद्धधतत्रतत्र
 चमातरः इतिप्रमाणे पुण्याहवाचनानन्तरं मातृपूजनंनिश्चितमेव । इयमेवचपरम्परापूजानातुकर्म-
 णस्य सर्वत्रविधिषुलभ्यते ॥ इहगद्वावलदेशेचप्रसिद्ध ॥ एएवकर्म पारस्करीयशुद्धगदाधरीय
 भाष्येणाप्यनुदर्शितः । सच-तत्राधरवौवाकरिप्यमाणकर्माङ्गतया आदौपुण्याहवाचनानन्तरं कर्म-
 निमित्तकनान्दीश्राद्धस्यविहिवात् यद्यपिकूर्माश्रलीयपद्धतिषु दानखण्डमदनरत्नप्रहयहमहाकरद,
 पंढरतिपदानुसरणेनकुमारिलभट्टोक्त—आदावन्तेप्रयौक्तव्यम् । इतिवचनेनचनान्दीश्राद्धानन्तर
 पुण्याहवाचनम् निर्णीतं । तथापिपूर्वोक्तप्रकारेणपुण्याहवाचनस्य मातृपूजनात्प्रागेवप्रयोगसिद्धी
 मातृपूजनानन्तरविधीयमानं नान्दीश्राद्धस्तुतरामैवप्राक्सिद्धत्वात्पुण्याहवाचनान्ते मातृकापूजा
 विधिवच्ये ॥ तत्रादौ मातृका यंत्रोद्धारः—विष्णुपुराणे—पञ्चोर्ध्वा पञ्चतीर्थक्षेत्रेस्ताः
 कार्या प्रयत्नतः । कुलदेवीगणेशच गौरीपद्मातर्धैवच । पूजयेन्मध्यमेकोष्ठेशिवावाहोहिकोष्ठके ॥
 मध्यकोष्ठेचतुष्केतु स्थापयेच्चपृथक्पृथक् । गणेशवासुकोणंचशिवावकोणकुक्षेरीम् ॥ गौरीचर्नश्रंते
 पूज्यापपापावककोणवे । शशीचपश्चिमेस्थाप्यामेषांचवद्वितीयके । सावित्रीदक्षिणेषुपूज्याविजयाच
 द्वितीयके । ज्योतीरेच सस्थाप्यादेवसेनाद्वितीयके । स्वाहामग्नौसमभ्यर्च्येपानकेचस्वधातथा ॥
 पूर्वतुमातर पूज्यास्तदम्रेलोकमातर । धृति पुष्टिवायुकोणेषुष्टिर्नैश्रंत्यके तथा । एवहिमातर स्थाप्या
 स्वस्वस्थाने पृथक् पृथक् ॥ षोडशमातृकानामानि छन्दोगपरिविष्टे—गौरीपद्माशचीमेधा
 सावित्रीविजयाजया । वैषसेनास्वधास्वाहा मातरौलोकमातरः । धृति पुष्टिस्तपाष्टिः, तपाम-
 कुलदेवनाः ॥ गणेशेनाधिकारोत्ता वृद्धीपूज्यास्तुषोडशः ॥ अत्राप्यार्वांगणपतिपूजनम्—

आदी विनायकः पूज्योत्तमैव कुलदेवताः अत्र क्वचिन्मतेन चतुर्दशोपादानात्, मातरो लोक-
मातरः इति सर्वासां विशेषण मुक्तम् । अथ गृहमातरः—कीर्तिलक्ष्मीर्धृतिर्मेधा, पुष्टिः भद्रा-
क्रियामतिः । बुद्धिलक्ष्मावपुः शान्तिस्तुष्टिः कांतिस्तुमातरः ॥ अत्रलोकात्मातरः—ब्राह्मी
माहेश्वरीचैव कौमारी वैष्णवी तथा । वाराहीच तथेन्द्राणी चांमुडा सप्तमातरः । अत्रैव
प्रसङ्गवशात् द्वार मातृर्धृतमातृर्जावमातृर्जलमातृश्चदये—द्वारमातरः—कुमारीधन-
दानन्दा विपुला मङ्गलाचला । पद्माचैव समाख्याताः सप्तैता द्वारमातरः । अथ घृतमातरः—
श्रीधलक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः प्रज्ञा सरस्वती । मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैताधृतमातरः । अथजीव-
मातरः—कल्याणी मङ्गलाभद्रा पुण्यापुण्यमुखीतथा । जयाचविजयाचैव, सप्तैता जीवमातरः ।
जलमातरः—मात्सीकूर्मीच वाराहीकुवकुटी दर्दुरीतथा ॥ जलूकीचैव सोमाच सप्तैताजल-
मातरः । मातृपूजा प्रकारः—प्रतिमासुच शुभ्रासुलिखित्वावा पटादिषु । अपिवास्तुत
पुञ्जेषु नैवेद्यैश्च पृथक् विधौ ॥ मातृणामुपरि घृतेनवसोर्धारापातनम्—कुञ्जस्तंभमुत्सलप्रा
मातृणामुपरिस्थिताः । कारयेत्पश्चात्तिलोवाससवोदङ्मुखस्थिताः अत्रवह्व्यः प्रथा दृश्यन्ते
यथादेशाचार मनुष्ठेयम् ॥

॥ इति मातृकापूजा परिभाषा ॥

अथ नान्दी श्राद्ध परिभाषा ।

अखिलकर्मणा माभ्युदयिक पूर्वकत्वात्तस्यच विधान प्राचुर्यात्तन्निर्णयः क्रियते ॥
उक्तं च कात्यायनस्मृत्यः—अभ्युदयिके प्रदक्षिणमुपचारः । पूर्वाह्णेपिच्य मन्त्र वष्यजपः ।
अजबोदभाः । यवैस्तिलार्थाः । सम्पन्नमिति वृत्ति प्रथः । सुसम्पन्नमितरेषुयुः । दधिवदराक्षत
मिश्रः पिरुडाः । नान्दीमुखान्पितृनावाहयिष्ये । इतिपृच्छति । आवाहमेत्यनुज्ञातो । नान्दी-
मुखान्पितृनाचयिष्ये । इतिपृच्छति । वाच्यतामित्यनुज्ञातो, नान्दीमुखाः पितरः, पितामहाः
प्रपितामहाः मातामहाः प्रमातामहाः वृद्धप्रमातामहाश्च प्रीयन्ताम् । इति । नस्वर्धाप्रयुक्तंजीत
युग्मानाशयेदत्र । विष्णुपुराणे—कन्यापुत्र विवाहेषु प्रवेशे नववेशमनः । शुभकर्मणि
वालानां चूडाकर्मदिके तथा । सीमन्तोन्नयनेचैव पुत्रादि मुखदर्शने । नान्दीमुखान्पितृनादौ
तर्पयेत्प्रयतोऽहो । तत्रकर्ममाह आश्वलायनः—माता पितामहीचैव सम्पूज्या प्रपितामही ।
पित्रादयस्त्रयश्चैव मातुः पित्रादयस्त्रयः । एतेन वैवाचीनायाः—पितरौभ्युदयेद्विजः । वृद्धपा-
राशरमतेतु देवानामपि नान्दी विशेषण मुक्तम्—नान्दी मुखेभ्यो वैशेभ्यो प्रदक्षिण
कुशासनम् ॥ कालमाहशातातपः—मातृश्राद्धन्तु पूर्वैद्युः कर्माह्नितु पैतृकम् । मातामहं
चोत्तरे द्युर्बुद्धीश्राद्ध त्रयंस्मृतम् ॥ कालालाभे—पूर्वैद्युरेव पूर्वाह्णेमातृकं मध्याह्णे
पैतृकम् । अपराह्णे माता महानाम् । अस्याप्यसंभवे वृद्धमनुराह—अलामे श्राद्धकालानां
नान्दी श्राद्ध त्रयंबुधः । पूर्वैद्युरेव कूर्वात पूर्वाह्णे मातृपूर्वकम् । अत्रसंकल्पपादौ विशेषः
संप्रहृ—शुभायप्रथमान्तेन वृद्धौ संकल्पमाचरेत् । नपष्टया यदिवाक्यान्महादीयोभिजायते ।
नपष्टया नवतृथ्यावा सम्युध्यावा फदाचन । अनस्मद्वृद्धशन्दानामरूपाणास गोत्रिणाम् ॥
अनाम्नामितिलायैश्च नान्दी श्राद्धं च सव्यवत् । हेमाद्रौशातातपः—कर्त्तव्यं चाभ्युदयिकं

धाद्मभ्युदयार्थिना । सप्येनचोपवीतेन श्रुजुदग्ंध धोमता । पितृणांरूपमाह्यायवेचां श्रन्नं
 समभते । तस्मात्सप्येनदातव्यं वृद्धिकालेनित्यदा । कात्यायनः—दक्षिणं पातयेज्जानु देवा-
 न्परिचरन्नादा । पातयेदितरं जागु पितृन्परि चरन्नपि । निपातो नहिसव्यस्य जानुनो विद्यते
 कश्चित् । सदापरिचरेद्भक्त्या पितृनप्यत्र भेषयत् । आश्वत्थलायनः—तिलांसीति पदस्थाने
 यपोसीति पदंयगेत् । स्वभेतिच पदस्थाने पुश्या शब्दंयदेदिद् । पितृनिति पदात्पूर्वं यदेप्रान्दी
 मुरानिति । अत्रस्वभाशब्दस्थाने वैदिक मन्त्रेपि स्वाहा इति शब्दो वाच्यः, पुराणस्सु-
 च्चये—नकर्म पितृतीर्थेन ननुशाद्विणीकृताः । भृगुः—गोघ्नसंयन्ध नमानि पितृकर्मणि कीर्तयेत्-
 व्यासः—एकैकस्यतुविप्रस्य अर्घपात्रंविनिक्षिपेत् । अत्रसत्यवस्तुसंज्ञकाः विश्वंदेवाः, नान्दीश्राद्धे
 सत्यवसूइतिपचनात् ॥ नान्दीश्राद्धे प्राणणरंरयामाह कात्यायनः—प्रातरामंत्रितानुविप्रान्
 युग्मानुभयतस्थितान् । उपवेश्यपुशान्द्रथातश्रुजुनैवहिपाशिना । निमित्तकनान्दीश्राद्धंमाकं-
 ड्येपुराणो—निमित्तकमधोपच्ये धाद्मभ्युदयात्मकम् । पुत्रजन्मनित्तकार्यं जातकर्मसमंनरः
 वृद्धमनुः—पुत्रजन्मनिवृदिनेपाराश्रीया भुक्त्वतोपवासिनावापुत्रजन्मनानन्तरं नालधेदनादयो-
 गेवकार्यं ॥ कात्यायनः—स्वपितृभ्यःपितादाद्यास्तुतसंस्कारकर्मसु । पिडानोद्वहनात्तेषां तस्या-
 भाषेतुतत्कमाव । उद्वाहोऽत्रपूर्वाभिप्रेतः । द्वितीयेतुपितरिजीवस्यपि स्वकर्तृत्वम् ॥ तथाच-
 स्मृतिः—नान्दीश्राद्धंपिताकुर्वादाये पाणिग्रहेपुनः अत ऊर्ध्वंप्रकुर्वीतस्वयमेवतुनान्दिकम् ।
 प्रयोग पारिजेतेतु—तत्राऽजीवपितृकृः पित्रादीनुद्दिश्यावेधिपाहेपिवरः स्वयमाभ्युदयिकं
 कुर्यात् । वापितुरभाषे— पितृव्याचार्यमातुलादियः संस्कारंकुर्यात्मतःकमात्पितरमारभ्यसंस्का-
 र्यस्ययः पितृणांकमस्तेनक्रमेणदद्यादित्यर्थः । पित्रादिवर्गजीवितेशेप —मातृवगं पितृ-
 वर्गे तथामातामहस्यच ॥ जीवेत्तुयदिवर्गाद्यस्तंवर्गेतुपरित्यजेत् । विशेषश्छन्दोगपरिशिष्टे-
 कात्यायनः—वृद्धधीतीर्थेचसन्त्यस्ते तातेचपतितेसति । वैभ्यएवपितादाद्या तेभ्योदयात्स्वयंसुतः
 तेनजीवपितृकृ. स्वपितुःपित्रादीन्मातामहादीन्कोद्दिश्याभ्युदयिकंश्राद्धंभुक्त्वात् । कल्पतरुहैल्ल
 युधभाष्ये—पितापितामहश्चैतर्धेयप्रपितामह । प्रयोह्यधुमुखाहोते पितरसंप्रकीर्तिता ।
 तेभ्यःपूर्वतरायेचप्रजायन्तःसुखेपिण । तेतुनान्दीमुत्तान्दी समृद्धिरितिकथ्यते । परकीय-
 कन्योद्वाहे नान्दीश्राद्धविचारः—आत्मीकृत्यसुवर्णेन परकीयातुकन्यकाम् । धर्मशाधिना-
 दातुः समगोत्रोपियुज्यते ॥ येनकेनापिप्रकारेणपरकीयांकन्यांदातुमिच्छति । सोपिसंस्कार्यकन्याया.
 पित्रादीनुद्दिश्यपूर्ववतययासम्भवंनान्दीश्राद्धंसमाचरेत् ॥ दत्तककन्योद्वाहेविशेषः—गणश-
 क्रियमाणानामेकंस्वान्मातृपूजनं । वृद्धिश्राद्धंचतन्त्रस्याद्धोमस्तुस्यात्पृथक्पृथग्गतिसृष्ट्यर्थसारव-
 चनात् ॥ सुवर्णेनान्दीश्राद्धमाह्वयास —द्रव्याभाषेद्विजाभाषेप्रवासेपुत्रजन्मनि । हेमश्राद्धं
 प्रकुर्वीतयस्यभार्यारजस्वला । पटुशिशन्मतेतु—हेमश्राद्धंप्रकुर्वीतवर्जयित्वा च्येऽहनि ॥
 संवर्त्तः—पुत्रजन्मनिर्कुर्वीतश्राद्धं हेमनैवयुद्धिमान् । नपवधेननचामेनकल्याणान्यभिकामयन् ।
 त्रिस्थलीमेतीकात्यायन —आपयनगनीतीर्थेच प्रवासेपुत्रजन्मनि । आमश्राद्धंप्रकुर्वीतभार्या
 रजसिसंक्रमे ॥ वाराहपुराणे पाराशरस्मृतौच—असमर्थोद्दानस्य धान्यमामंस्वशक्तिः ।
 प्रदद्यात्तुद्दिजातिभ्यःस्यल्पामपिचदक्षिणाम् ॥ अथेच आहायोनवर्णपरत्वे लब्धमामाञ्जादि-
 द्रव्यस्य विनियोगविचारमाहव्यासः—हिरण्यमामंश्राद्धीर्थं स्वर्णयत्कत्रियादितः । यथेष्ठं

विनियोज्यस्याद् भुंजीयाद्ग्राहणःस्पयम् । हेमाद्रौषट्त्रिंशन्मतेः—आनंशुद्दस्ययत्किचि-
च्छ्राद्धिकंप्रतिगृह्यते । तत्सर्वभोजनायां नित्येनैमित्तिकेनच । नान्दीश्राध्वानन्तरं पिंडवा-
नादिनिषेधःस्मृतिगन्तावल्याम्—विवाहमौजीवन्धोर्ध्वपांधंघर्षमेवया पिरडान्तपिंडानांदद्वयुः
सपिण्डीकरणंविना । विवाहप्रत्यूडासुवर्षमर्घतदर्धकम् । पिरडदानंनकर्त्तव्यं ज्ञातोनामृद्धि
गृह्यते । अत्रसपिण्डीकरणप्रहरणं तत्पूर्वभाविनांप्रैतश्राद्धानामुपलक्षणार्थम् ॥ पिंडादिकरणे-
निन्दामाहव्यासः—वृद्धिश्चाद्धेकृतेपरश्चतुनः पिरडान्ददातिथः । गांप्रवृद्धिधिपातीस्याघ्नरकं
प्रतिपद्यते ॥ फ्वचित्प्रकारान्तरेण नादीश्राध्वानन्तरं पिंडादिविधानमाह स्मृतिरत्ना-
वल्याम्—पित्राःस्रयाहेयजेच पितृयजेमहालये ॥ गयायांपिरडदानस्य नकदाचिधिराक्रिया ।
गृहस्पतिः—महालयेगयाश्राद्धे मातापित्रोःस्रयेऽहनि । कृतोद्वाहोपिकुर्वीत पिरडनिर्घणं-
सुतः ॥ तिलतपणं निषेधमाह मरीचिः—विवाहंचोपनयने चीलेसतिथथाक्रमम् । वर्षमर्धे
तदर्धचनेत्याहुस्तिलतर्पणम् ॥ स्मृत्यर्थसारे—वृद्धोसत्याश्चतन्मासि नेत्याहुस्तिलतर्पणम् ॥
मरीचिः—कटाःकण्ठाश्वजायालायेचवाजसनेयिनः । सतिलंतर्पणंकुर्यु निषिद्धेषुदिनेष्वपि ॥
त्रिस्थलीन्मैतौ—तोर्धंतिथिविशेषेच गयायां प्रैतपक्षके । निषिद्धेषुदिनेषुत्तर्पणंति लमि-
थितम् ॥ निषिद्धेषुवर्जितेषुदिनेष्वपि ॥

॥ इति नान्दी श्राध्वपरिभाषा ॥

॥ अथ सामान्य नवग्रह पूजा परिभाषा ॥

अथच नवग्रह पूजाप्रमाणं तच्चद्विविधं, यागसहितं तद्रहितंच, सयागन्तु वृहत्कार्येषु-
भवति । यागरहितंच नित्येनैमित्तिक उत्सवसंस्कार शान्ति पौष्टिकादि कर्मेषु, यत्रयत्र गणेश
कलश—पुरायाहवाचन मातृकादि पूजा भवति तत्र सामान्य कर्मसु ग्रहयागस्य अशान्त्य कर्तृक-
त्यात्पञ्चाङ्गान्तर्गततया सामान्येनापि, ग्रहपूजा भवति । इति पूर्वसूत्रिभिः । स्वशास्त्रीयपद्धतौ
लिखितं । असौगणेशादि ग्रहपूजान्तप्रयोगस्त्रिविध कार्येषु भवति । यथायोविषुवोपरामादि
पर्वदिनेषु विहितः । अथशयमेव कर्त्तव्यः सनित्यः । गमाधानादिसंस्कार कर्मणि नैमित्तिकः ।
शान्त्यादिषु काम्य विषयेषु काम्यः । अस्य विस्तारपूर्वक परिभाषां ग्रहयाग प्रकरणे वक्ष्यामि ।
अथ ग्रन्थविस्तारमियानदर्शिताद्विद्विस्तत्रैव दृष्टव्या ॥

इति नवग्रह परिभाषा—

अथ पञ्चगव्यकरणम्

अथ पञ्चगव्यविधिः, उक्तञ्चपराशरस्मृतौ—अतः परंप्रवक्षामिपञ्चगव्यमनु-
 तमम् । पायनार्थं द्विजातीना मिहलोके परब्रह्मं १ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुशो-
 दकम् । निर्दिष्टं पञ्चगव्यन्तु पवित्रं मुनिपुङ्गवैः ॥ गोमूत्रं वरुणो देवो हव्यवाहस्तु गोमये
 क्षीरं शशधरो देवो वायुर्दधिसमाधितः ॥ भानुः सर्पिर्पिसंदिष्टः कुशो ब्रह्मादिदेवताः ॥
 जले साक्षाद्दरिः संस्यः पवित्रं तेन नित्यशः ॥ मूत्रं तु नीलवर्णायाः कृष्णाया गोमयं-
 स्मृतम् ॥ क्षीरं तु ताम्रवर्णायाः श्रेताया उच्यते दधि ॥ सर्पिस्तुकपिलाया वै ब्राह्मं
 पातकनाशमम् ॥ श्रभावे सर्ववर्णानां कपिलायाः प्रगृह्यते ॥ अथ पञ्चगव्यद्रव्य
 प्रमाणं—पलमात्रं तु गोमूत्रं मंत्रं घ्राह्यं तु गोमयम् । क्षीरं सप्तपलं ब्राह्मं दधि त्रिपल
 मीरितम् ॥ सर्पिस्त्वेकपलं देयं मुदकं पलमात्रकम् । सर्वमेतत्ताम्रपात्रस्थितं कुर्या-
 दथविधिः ॥ सर्वेषामपलाभे सर्पिः कुशोदकं पयश्च त्तिर्णय ॥ गायत्र्या दायगोमूत्रं गन्ध-
 द्वारं तिगोमयम् । आप्यायस्वेति वै क्षीरं दधिक्राव्णेति वै दधि ॥ तेजोसिशुकसर्पिस्तु
 देवस्य त्वाकुशोदकम् । मन्त्रयित्वा प्रोक्षन्तु आपोहिष्टेति मन्त्रतः ॥

अथ पञ्चगव्याभिमन्त्रणम्

ॐ भूर्भुवः स्वः ० इति गायत्र्या पलमात्रं गोमूत्रमभिमन्त्र्य
 ताम्रपात्रे वा पलाशपात्रपुटेवरुणदेवं ध्यायन्स्थापयेत् । गोमयम्—
 ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां
 तामिहोपहृष्ये श्रियम् । इत्यंशुष्टार्धमात्रं गोमयमभिमन्त्र्य अग्निदेवं
 ध्यायंस्तत्रैवस्थापयेत् ॥ दुग्धम्—ॐ आप्यायस्वसमेतुते विश्वतः
 सोमवृष्यस्यम् । भवाव्वाजस्यसङ्गथे ॥ इति सप्तपलदुग्धमभिमन्त्र्य
 सोमदेवं ध्यायंस्तत्रैवस्थापयेत् ॥ दधि—ॐ दधिक्राव्णोऽन्नकारिषं
 जिष्णोरश्वस्यव्वाजिनः । सुरमिनो मुखाकरत्प्रणऽत्रायूँ पितारिपत्
 इति त्रिपलन्दध्यभिमन्त्र्य वायुदेवं ध्यायंस्तत्रैवस्थापयेत् ॥ घृतम्—
 ॐ तेजोऽसिशुकमस्यमृतमसिधामनामासि प्रियं देवानामनापृष्टं
 देवयजनमास ॥ इत्येकपलं घृतमभिमन्त्र्य सूर्यदेवं ध्यायंस्तत्रैव
 स्थापयेत् ॥ कुशोदकम्—ॐ देवस्य त्वासवितुः प्रसवेश्विनोर्वाहुभ्यां
 पूष्णो हस्ताभ्याम् । इति पलमात्रं कुशोदकमभिमन्त्र्य हरिं देवं ध्यायं
 स्तत्रैवस्थापयेत् ॥ ततः कुशैर्वाहुर्वाभिर्यं द्यमाणतिसुभिरालो

डयेत् ॥ ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातुनः महेरणाय चक्षुषेयोवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिवमातर स्तस्माऽअरङ्गमामवो यस्यक्षयायजिन्वथ, आपोजनयथाचनः इति सप्रमाण पञ्चगव्यम् ॥

सर्व कर्माधिविधिः ।

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ श्रीगुरुचरण कमलेभ्यो नमः । ॐ नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् । देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥ १ ॥ तत्रादौ सर्वकर्मादि कर्णीय विधिवक्ष्ये ॥ तत्रकर्त्ता शुभदिने सुस्नातः शुद्धेवाससी परिधाय शुभासने प्राङ्मुखोवोदङ्मुखः सन्नुपविश्य । ॐ सिद्धम् ३ इति वारत्रयं पठित्वा, आचमनं कुर्यात् । ॐ अच्युतायनमः । ॐ केशवायनमः । ॐ माधवायनमः । त्रिराचम्य । गायत्र्याशिखा-वंधनं कृत्वा, कुशपवित्रे धृत्वा । दीपं पूर्वाभिमुखं प्रज्वाल्य । ॐ अस्यश्री आसनमंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं, छन्दः कूर्मोदेवता कूर्मासनो पवेशने विनियोगः । हस्ते अक्षतानगृहीत्वा ॐ हिरण्यवर्णासुभगा हिरण्य कशिपुर्मही तस्या हिरण्यं दापये सत्या अकरं नमः ॥ इत्यक्षतान्भूमौ क्षिप्त्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव इहागच्छेहतिष्ठ । ॐ पृथिव्यै नमः । इतिमंत्रेण पाद्यादिभिः संपूज्य प्रार्थयेत्—ॐ पृथिवत्वया धृतालोका देवित्वं विष्णुना धृता त्वं च धारय मां भद्रे पवित्रं कुरुचासनम् ॥ तत—जलं वामहस्ते धृत्वा दक्षिण हस्तेन कुशैरभिषेकं कुर्यात् । ॐ आपो हिष्ठा भयोभुव स्तानऽऊर्जेदधातुनः । महेरणाय चक्षुषे योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः, उशती रिवमातर स्तस्माऽअरङ्ग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपोजन यथाचनः ॥ ॐ पुण्ड-रीकाक्षाय नमः पुनातु ॥ गौरसर्षपानादाय—भूतोत्सादनं कुर्यात् । ॐ अपःक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशः । सर्वेषा मचिरोधेन ब्रह्मकर्मसमारभे । अपसर्पन्तुतेभूता येभूता भुवि

संस्थिताः । येभूता विघ्न कर्तार स्तेनश्चन्तु शिवाज्ञया । ततः—
 निर्गच्छ तांच भूतानां वत्सर्मदद्यात्स्ववामतः । वामभागे हस्ताभ्यां
 तालत्रयं दत्त्वा सर्वाङ्घ्रानुत्सार्यततः, ॐ सर्व वाद्यमयी
 घंटायै नमः । इतिमंत्रेण घंटासंपूज्य, ॐ आगमार्थं च देवानां
 निर्गमार्थं च रक्षसाम् । सर्वभूत हितार्थाय घण्टानादं करोम्यहम्
 ॥ इतिवादयित्वा स्ववामभागे कुक्षीषु घंटांस्थापयेत् । ॐ गंधर्व
 देवाय धूपपात्रायनमः, इतिसंपूज्य, स्वदक्षिणभागे निदध्यात् ।
 ॐ वह्नि दैवत्याय दीपपात्राय नमः ॥ संपूज्य तत्रैवस्थापयेत् ॥
 ततो ब्राह्मण द्वारा स्वमंगल तिलकं कारयेत् । मंत्रः—ॐ भद्र-
 मस्तु शिवंचास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु । रक्षन्तु त्वां सुराः सर्वे
 संपदः सन्तुसुस्थिराः ॥ ततः पूर्वप्रज्वालितं दीपं, ॐ दीपनाथ
 भैरवाय नमः । इतिमंत्रेण पंचोपचारैः संपूज्य पुष्पंगृहीत्वा
 प्रार्थयेत् । ॐ करकलित कपालः कुण्डली दंडपाणिस्तरुण
 तिमिर नीलो व्यालयज्ञो पर्वती ॥ ऋतु समय सपर्या विघ्न
 विच्छेदहेतुर्जयति बहुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥ इति
 संप्रार्थ्य । अर्घ्यस्थापनं कुर्यात्—रक्तपीतगंधेन चन्दनेनवा भूमौ
 त्रिकोणं वृत्तं चतुरस्रमंडलं च लिखित्वा तत्र त्रिपादिकां
 संस्थाप्य तदुपरि शंखंवा ताम्रमगार्घ्यं संस्थाप्य—संपूज्यच ॥ ॐ
 शन्नोदेवी रभिष्टयञ्चापो भवन्तु पीतये । शंखोरभिस्रवन्तुनः ।
 इतिजलेनापूर्य ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे
 सिन्धो कावेरिजलेऽस्मिन्सन्निधि कुरु ॥ इत्यंकुशमुद्रया तीर्था-
 रण्या वाह्य । तत्रगंधाक्षत पुष्पाणि निक्षिप्य; सम्पूज्य च, तेना-
 घादकेन कुशैः पूजापकरण सामग्रीं सप्रोक्ष्य, आत्मानंचाभियिञ्च्य-
 अर्घ्यं तत्रैव स्थापयेत् । ततः प्राणायामं कृत्वा प्रधानदेवतार्चनं
 कुर्यात् ॥

॥ इति कर्मादि विधिः ॥

अथ सर्वकर्मादौ शान्तिपाठविधिः

अस्यात्रपर्वतीयदेशेषु स्वस्तिवाचनेनापि व्यवहारः । यथार्थं श्रायम् । बहूनां मन्त्राणां स्वस्तिशब्दघटितत्वेन देहलीदीपन्यायेन सर्वमन्त्राणां तदभिधानस्य योग्यत्वात् ॥ गृहभाष्ये गदाधरेण गर्भाधानशान्तिप्रकरणे, आनोभद्रा इति शुक्लयजुर्वेदस्य पञ्चविंशतितमेऽध्याये, आनोभद्रेत्यारभ्यै कादशोऽनुवाके दशमन्त्रा उक्ताः । क्वचित्पध्दतौ, स्वस्तिनोमिमीता मिति पंचमन्त्रा अपि उक्ताः, परञ्च विशेषतः, गढवालदेशे पुराननपध्दतौ एना न्पंचमन्त्रान्हित्वा, यजुर्वेदस्यैव षड्त्रिंशदध्यायस्य प्रथमानुवाकस्य, दधीचिऋषिदर्शिताः पंचदशमन्त्राः शान्तिपाठे सम्मिलिताः सन्ति, अतः पंचविंशतिमन्त्रायजुः शाखिनां सर्वकर्मारम्भे मंगलप्रदा भवन्तीति शान्तिपाठे तद्दर्शनाच्चेति ॥

॥ अथ यजुर्वेदीनां शान्तिपाठ मन्त्राः ॥

हरिः—३० आनोभद्राः ऋतवोर्यन्तु द्विवश्वतोदध्यासोऽअपरीतासऽ उद्भिदः । देवानोर्यथा सदमृद्वृधेऽ असन्नप्रायुवोरक्षितारो दिवेदिवे ॥ १ ॥ देवानां भद्रासुमतिर्ऋजूनानां देवानां ॐ रातिरभिनोनिवर्त्तताम् । देवानां ॐ सख्यमुपसे दिमावयं देवानऽ आयुःप्रतिरन्तु जीवसे ॥ २ ॥ तान्पूर्वधानि विदाहमहेव्वयं भगं म्मिन्नमदितिन्दक्षमस्त्रिधम् । अर्यमणं वरुणं ई० सोममश्विना सरस्वतीनः सुभगा मयस्करत् ॥ ३ ॥ तन्नोऽवातोमयोऽमुच्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिताद्व्यौः । तद्ग्रावाणः सोमसुतोमयोऽभुवस्नदश्विनां शृणुतं धिष्ण्याय्युवम् ॥ ४ ॥ तमीशानं जगस्तेस्युर्पस्पतिं धियं जिन्वमवसे हमहेव्वयम् । पूषानोर्यथाव्वेद सामसद्द्वृधेराक्षितापायुरदव्यः स्वस्तये ॥ ५ ॥ स्वस्तिनऽ इन्द्रोऽवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः । स्वस्तिनस्नादर्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्तिनोऽवृहस्पतिर्द्धातु ॥ ६ ॥ पृषदश्वामस्तः पृथिनमातरः शुभं व्याव्वा

नोव्विदधेषुजगमयः ॥ अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षुसो विश्वेनो
 देवाऽ अवसागमन्निह ॥ ७ ॥ भद्रंकरणेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्प-
 श्येमाक्षभि र्यजत्राः ॥ स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनृभिर्व्यसे
 महिदेवहितंय्यदायुः ॥ ८ ॥ शतमिन्नुशरदोऽअंतिदेवा यत्रानश्चक्रा
 जरसन्तनूनाम् ॥ पुत्रासोयत्रपितरो भवन्तिमानो मध्दथारी रिष-
 तायुर्गन्तोः ॥ ९ ॥ अदितिर्द्यौरदिति रन्तरिक्षमदितिर्मातासपि
 तासपुत्रः ॥ विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्जात मदिति
 र्जनित्वम् ॥ १० ॥ ऋचंवाचंप्रपद्ये मनोयजुः प्रपद्येसाम्प्रार्णं
 प्रपद्येचक्षुःश्रोत्रंप्रपद्ये ॥ वागोजः सहौजोमधिप्राणापानौ ॥११॥
 यन्मेच्छिद्रंचक्षुषो हृदयस्य मनसो व्वाति तृणम्बृहस्पतिर्ममैतद्घातु
 शन्नोभवतुभुवनस्ययस्पतिः ॥१२॥ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्य
 म्भर्गोदेवस्यधीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥१३॥ कयानश्चि-
 त्तऽआभुवदतीसदावृधः सखा ॥ कयाश्चिष्ट्यावृता ॥१४॥ कस्त्वा-
 सत्यो मदानाम ई० हिष्टो मत्संदधसः ॥ हृवाचि दारुजे व्वसु
 ॥१५॥ अभीषुणः सखीनाम विता जरित्शृणाम् ॥ शतम्भवा स्यू-
 तिभिः ॥१६॥ कयात्त्वन्न ऽ उत्थाभिप्रमन्दसेवृषन् कयास्तोतृभ्य ऽ
 आभर ॥१७॥ इन्द्रोव्विश्वस्यराजति । शन्नो ऽ अस्तुद्विपदेशंचतु-
 षपदे ॥१८॥ शन्नोमित्रः शंवरुणः शन्नोभवत्त्वर्यमा ॥ शन्न ऽ
 इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो व्विष्णुरूक्रमः ॥१९॥ शन्नोव्वातः पवता
 ॐ शन्नस्तपतु सूर्यः ॥ शन्नः कनिकददेवः पर्जन्यो ऽ अभिवर्षतु
 ॥२०॥ अहानि शम्भवन्तुनः श ई० रात्रीः प्रतिधीयताम् ॥ शन्न ऽ
 इन्द्राग्नीभवतामवोभिः शन्न ऽ इन्द्राव्वरुणा रातह्वया । शन्न ऽ
 इन्द्रा पूषणाव्वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंय्योः ॥२१॥
 शन्नोदेवी रभिष्टय ऽ आपोभवन्तु पीतये । शंय्योरभिश्चवन्तुनः
 सप्रथाः ॥२३॥ द्यौःशान्तिरन्तरिक्ष ई० शान्तिःपृथिवी शान्तिरापः
 शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ व्वनस्पतयः शान्तिर्धिरश्वेदेवाः शान्ति
 ब्रह्म शान्तिः सर्व ई० शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सामा शान्ति

रेधि ॥२४॥ त्विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रंतन्न
ऽ आसुव ॥२५॥ ॥ इति यजुः शान्ति पाठः ॥

॥ अथ ऋग्वेदोक्त शान्ति पाठमंत्राः ॥

ऋ० अष्टक ४ अध्याय ३ कं० ७

हरिः ॐ ॥ स्वस्तिनोमिमीतामश्विनाभगः स्वस्तिदेव्यदिति
रनर्वणः । स्वस्तिपूपाअसुरोदधातुनः स्वस्तिद्यावापृथिवी सुचेतुना
॥१॥ स्वस्तयेवायुमुपप्रवामहै सोमंस्वस्तिभुवनस्पयस्पतिः । वृहस्प-
तिं सर्वगणंस्वस्तये स्वस्तयथादित्यासो भवन्तुनः ॥२॥ विश्वेदेवा-
नोअद्यास्वस्तये वैश्वानरोवसुरग्निः स्वस्तये । देवा अवन्वृभवः
स्वस्तयेस्वस्तिनोरुद्रः पाल्वंहसः ॥३॥ स्वस्तिमित्रावरुणा स्वस्ति
पथ्येरेवति । स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्तिनोअदितेकृधि ॥४॥
स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ॥ पुनर्ददता ऽ घनता
जानतासद्भमेमहि ॥५॥ स्वस्तययनंतादर्यमरिष्ट नेमिमहद्भूतं
वायसंदेवतानाम् ॥ असुरघनमिन्द्रसखंसमत्सुवृहद्यशोनावमिवा-
रुहेम ॥ ६ ॥ अंहोमुंचमांगिरसंगयंचस्वस्त्यात्रेयंमनसाचतादर्यम् ।
प्रयतपाणिः शरणांप्रपद्येस्वस्तिसम्प्रायेष्वभयन्नो अस्तु ॥ ७ ॥

इति ऋग्वेदोक्त स्वस्तिवाचनम् ॥



॥ अथगणेशपूजापद्धतिः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ कर्त्ताकर्मदिनेप्रातर्कृत्यायशुधेवाससी
परिधाय, सामग्रींसपाद्यपूर्वोदितेनविधिना आचमनदीपपूजन
अर्घस्थापनादिकंकृत्वा नित्यकर्मचसमाप्य सर्वविघ्ननिवारणार्थं
गणपतिपूजनंकुर्यात् ॥ हस्तेपुष्पंगृहीत्वा-३० सुमुखरचैकदंनश्च
कपिलोगजकर्णिकः । लम्बोदरश्चविकटो विघ्ननाशोगणाधिपः ॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानिनामानियः
पठेच्छृणुयादपि, । विद्यारम्भेविवाहेच प्रवेशेनिर्गमे, तथा । संग्रा-
मेसंकटेचैव विघ्नस्तस्यनजायते । विघ्नबह्वलीकुठारायगणाधिपत-
येनमः । वक्रतुंडमहाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ । अविघ्नंकुरुमेदेव
सर्वकार्येषुसर्वदा,, पुष्पांजलिंगणेशसन्निधौ क्षिपेत् ॥ ततोविष्णुं
ध्यायेत्— ॐ शुक्लाम्बरधरदेवं शशिवर्णचतुर्भुजम् ॥ प्रसन्नवदनं
ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये । लाभस्तेपांजयस्तेपां कुतस्तेपांपरा-
जयः ॥ येषामिंदीवरश्यामो हृदयस्थोजनार्दनः । तेषानित्याभियु-
क्तानां योगक्षेमंवहाम्यहम् । स्मृतेसकल कल्याणंभाजनंयत्र-
जायते । पुरुपस्तमर्जन्तियं, ब्रजामिशरणंहरिम् ॥ सर्वेष्वारम्भ
कार्येषुत्रयस्त्रिभुवनेश्वराः । देवादिशंतुनः सिद्धिं ब्रह्मविष्णु
महेश्वराः ॥ सर्वदासर्वकार्येषु नास्तितेषाममंगलम् ॥ येषांहृदिस्थो
भगवान्मंगलायतनोहरिः ॥ तदेवलग्नंसुदिनं तदेवतारावलं
चन्द्रवलंतदेव । विद्यावलंतदेवलंतदेव लक्ष्मीपतेतेद्भि युगंस्मरामि
तत्रैवसमर्पयेत् ॥ ततोगौरीं—ॐ सर्वमंगलमांगल्ये शिवेसर्वार्थ
साधिके ॥ शरण्येऽयं वकेगौरि नारायणिनमोस्तुते ॥ इ० पु०स० ॥
तिलकुशजलान्यादाय संकल्पंकुर्यात्— ॐ नमः परमात्मने श्री
पुराणपुरुषोत्तमाय, श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवश्वतमन्वंतरे, अष्टा
विंशतिसंख्यके कलियुगेप्रथमचरणे द्वितीयेयामे तृतीये-
दिवसे जंबूद्वीपे भरतखण्डेभारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत
पुरण्यक्षेत्रेअनेक नदीसुशोभिते अनन्तशिवलिंगाद्यनेक ॥
शक्ति विष्णुप्रतिमादिविराजिते, वदरिकारण्यांतर्गत उर्वशीक्षेत्रे
केदारखंडान्तर्गत सुमेरोर्दक्षिणपार्श्वे, अलकनन्दा भागीरथीपिंडर
कालीनदीनां (दक्षिणकूले वा वामकूलेऽथवामध्ये शुध्देऽमुक क्षेत्रे
वाप्रदेशेऽथवास्वगृहे) पष्टिसंवत्सराणां मध्ये, अमुकनाम संवत्स
रेअमुक्यायने, अमुकत्तौ, अमुकमासे, शुक्लेऽथवा कृष्णेपक्षे, अमुक
निधौ, अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगयोः, अमुककरणे,
सुम्हर्त्ते, अमुकराशिस्थितेसूर्ये, अमुकराशिस्थितेचन्द्रे, भौमे, बुधे

गुरौ, भार्गवे, शनौ, राहौ, केतौ, यथाराशिस्थानस्थितेषु ग्रहेषु सत्सु, श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त चतुर्वर्गफलप्राप्तये, अमुकगोत्रोऽमुक राशि रमुक शर्मा वर्मा गुप्तो दासो वाहं करिष्यमाणामुक कर्मणो निर्विघ्नतासिद्धये, तत्रादौ भगवतोगणेशस्य, तथाकलशस्थापन वरुणपूजन पुण्याहवाचन, मातृकापूजनवसोर्द्धारानिपातन, नान्दी श्राद्ध, नवग्रहादीनां पंचोपचारेणवापोऽशोपचारेण पूजनं करिष्ये ॥ तत्रादौ लिखितपट्टपीठे, रक्ताक्षतैर्विद्यमाण मंत्रैरक्षतान्विकीर्य पंचोपचारविधिना, नवशक्तिपूजनं कुर्यात्—३० तीव्रायै नमः तीव्रा मावाहयामि स्थापयामि पूजयामि, एवं सर्वत्र ॥ ३० ज्वालिन्यै नमः ज्वालिनीं० । ३० नन्दायै नमः, नन्दाम्० । ३० भोगदायै नमः, भोगदाम्० ॥ ३० कामरूपिण्यै नमः । कामरूपिणीम्० । ३० सत्यायै नमः, सत्यां० । ३० उग्रायै नमः, उग्रां० । ३० तेजोवत्यै नमः तेजोवतीम्० । ३० मध्येविघ्नविनाशिन्यै नमः विघ्नविनाशिनीम्० । ३० सर्वशक्तिकमलासनाय नमः ॥ इति पीठशक्ति पूजनं विधाय ॥ हस्ते सरक्ताक्षत पुष्पनिधाय, गणपत्यावाहनं कुर्यात् ॥ ३० एहि हेरम्बत्वमेहोहि श्रविकात्र्यं वकात्मज । सिद्धि बुद्धि पतेत्र्यक्षलक्षलाभपितः पितः । नागस्य नागहारत्वं गणराजचतुर्भुज । भूपितः स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुशपरश्वधैः । आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः । इहागत्य गृहाणत्वं प्रजाकर्तुश्चरत्तमे । आवाहो वं गणेशं पूजाद्रव्यैः प्रपूजयेत् ॥ प्रतिष्ठां कुर्यात्—३० एतन्ते देव सविनर्यज्ञं प्राहृष्टं हस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतितेन मामव । मनोजूतिर्जुपता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमंतनो त्वरिष्टं यज्ञं ई० समिमं दधातु । विश्वे देवासः इह मा दयंतामो प्रतिष्ठ । इतं प्रतिष्ठाप्य । स्थापनम्—३० गणानान्त्वेति प्रजापति ऋषिर्यजुश्छन्दो गणपतिर्देवता गणपतिस्थापने धिनियोगः । ३० गणानान्त्वा गणपति ई० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ई० हवामहे । निधीनान्त्वानिधिपति ई० हवामहे व्वसोमम आहमजानिगर्भं ध मात्वमजा सिगर्भधम् ॥ ३० अर्भुवः स्वः गणपतिं स्थापयामि, गणपत इह सुप्रतिष्ठि-

तोवरदोभव ॥ ॐ३० गणपतयेनमः । इति मूलमंत्रेणवापुरुपसूक्तेन
 पंचोपचारपूजनंकुर्यात् ॥ इति पंचोपचारपूजनम् ॥ (वक्ष्यमाण
 पूजाप्रकारः स्मृतिकौस्तुभेपोडशोपचार विधिस्तुविष्णुपुराणोक्तः
 सश्चायम् ॥) ध्यानम्—एकदंतंशूर्पकर्णगजवत्क्रंचतुर्भुजम् । पाशां
 कुशधरंदेवं ध्यायेत्सिद्धिविनायकम् ॥ आवाहनम्—विनायक नम-
 स्तेस्तुउमामलसमुद्भव । इमांमयाकृतां पूजांगृहाण सुरसत्तम ॥
 आसनम्—अनेकरत्नसंयुक्तं मुक्तादामविराजितम् । स्वर्णसिंहासनं
 चाम्प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् । पाद्यम्—पाद्यंगृहाण भगवन् दिव्यचन्दन
 मुत्तमम् । कर्णाकरहेरम्ब गणाध्यक्षायतेनमः ॥ अर्घ्यम्—गौरी
 प्रियनमस्तेस्तु शंकरप्रियसिद्धिद । गृहाणार्घ्यं मयादत्तं सर्वसिद्धि-
 प्रदायक ॥ आचमनीयम्—गंगादितीर्थसलिलंस्वर्णकुंभेसमाहृतम् ।
 उमापुत्र नमस्तेस्तुगृहाणाचमनीयकम् ॥ मधुपर्कम्—विघ्नेश्वर
 विशालाक्ष सप्तार्णव विनोदन ॥ मधुपर्कगृहाणेदंमयासंपादितं
 विभो ॥ पंचामृतस्नाम्—स्नानंपंचामृतं दिव्यंगृहाणद्विरदानन ।
 अनाथनाथदेवेश सुरासुर सुपूजित ॥ शुद्धोदकस्नानं—सर्वतीर्था-
 त्समुद्धृत्य गंधतोयैः कुशोदकैः ॥ फलतोयैर्जलेर्गन्धैः स्नापयामि
 गणेश्वरं ॥ वस्त्रयुग्मम्—रक्तवस्त्रद्वयंदिव्यं देवतार्हं सुमंगलम् ॥
 सर्वप्रदं गृहाणेदं लम्बोदर हरात्मज ॥ यज्ञोपवीतम्—राजतं ब्रह्म
 सूत्रंचक्रांचनस्योत्तरीयकम् । विनायकनमस्तेस्तुगृहाण सुरसत्तम ॥
 गंधम्—गंधंगृहाण भगवन्दिव्य चंदनमुत्तमम् । कर्पूरामलसंयुक्तं
 लंबोदरहरात्मज ॥ अक्षताः—अक्षतान्धवलान्देवगृहाणद्विरदानन ।
 अमराणामतिश्रेष्ठ, पद्मवासमतिप्रिय ॥ पुष्पाणि—सुगन्धितानि
 पुष्पाणि नवदूर्वाकुराणिच । मयानीतानि पूजार्थंगृहाण भक्त-
 वत्सल ॥ धूपम्—दशांगुगुलंधूपंसुगंधि सुमनोहरम् । उमापुत्र
 नमस्तेस्तुगृहाणवरदोभव ॥ दीपम्—गृहाणमंगलंदीपं घृतवर्तिस-
 मन्वितम् । दीपं ज्ञानप्रदं देवरुद्रप्रियनमोस्तुते ॥ नैवेद्यम्—पकान्-

दि० प्रणवादि नमोन्तच चतुर्थ्यन्तच सत्तम । देवताया स्वकनाम
 मूलमत्र प्रकीर्तित ।

मौदकंचैव दधिघृतसमन्वितं ॥ नैवेद्यंसफलंदद्यां गृहार्तां विघ्न
नाशिने ॥ कराननशुद्ध्यर्थंजलम्—विघ्नेश्वर गणाध्यक्ष भालचन्द्र
नमोस्तुते ॥ कराननविशुद्ध्यर्थं जलमेतद्गृह्णाणमे ॥ उपायनम्—
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमवीजं वीभावसोः । अनन्तपुण्यं फलदमतः
शान्तिं प्रयच्छुमे ॥ ततो नारिकेलयुतं सफलमर्घ्यं वामहस्ते
धृत्वा तदुपर्युत्तानं दक्षिण हस्तं निधाय निवेदयत् ॥
ॐ रत्नरत्नगणाध्यक्ष रत्नत्रैलोक्यरत्नक, भक्तानामभयंकृत्वा
त्राताभवभवार्णवात् ॥ द्वैमातुरकृपासिन्धो पाणमातुरग्रजप्रभो ॥
वरदत्वंवरंदेहि वाञ्छितंवाञ्छितार्थद । अनेनफलदानेनफलदोस्तु
सदामम । इदंफलंमयादेव स्थापितंपुरतस्तव । तेनमेसफलावाप्ति
र्भवेज्जन्मनिजन्मनि ॥ फलमग्रतोनिधायार्घ्यं चारिणागणपतिंस्ना-
पयेत् ॥ ततोद्वादशनाममंत्रैर्दूर्वाकुरयुग्मं गंधलिपिंगृहीत्वा, प्रति-
मंत्रान्तेसमर्पयेत्—ॐ गणाधिपतयेनमः दूर्वाकुरयुग्मंसमर्पयामि
(एवंसर्वत्र) ॐ उमापुत्रायनमः । ॐ अघनाशिनेनमः ॐ एकद-
न्तायनमः ॐ इभवकायनमः ॐ मूषकवाहनायनमः ॐ विना-
यकायनमः ॐ ईशपुत्रायनमः ॐ सर्वसिद्धिप्रदायकायनमः ॐ
कुमारगुरवेनमः ॐ चतुर्थीशायनमः ॐ सर्वविघ्नहरायनमः ॥
ततोनीराजनम्— ॐ अन्तस्तेजोवह्निस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम् ।
नीराजनमिदं देव गृह्णाणमदनुग्रहात् ॥ पुष्पांजलिम्—विघ्नेश्वरा-
यवरदाय सुरप्रियायलम्बोदराय सकलायजगद्धिताय । नागान-
नाय श्रुतियज्ञविभूषिनायगौरीसुताय गणनाथनमोनमस्ते ।
भक्त्यातिनाशनपराय गणेश्वराय । सर्वेश्वरायशुभदायसुरेश्वराय
विद्याधरायविकटायच वामनाय । भक्तप्रसन्नवरदाय नमोनमस्ते ।
नमस्तेब्रह्मरूपाय विष्णुरूपायतेनमः । नमस्तेऋद्रूपाय करिरूपा-
यतेनमः । विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे । भक्तप्रियाय-
देवाय नमस्तुभ्यंविनायक । त्वांविघ्नशत्रुदलनेतिच सुन्दरेति ।
भक्तिप्रदेतिमुखदेति फलप्रदेति । विद्याप्रदेत्यघहरेतिच येस्तुवन्ति
नेभ्योगणेश्वरदो भवनित्यमेव । लम्बोदरनमस्तुभ्यं सततंमोदक

प्रिय । अविध्नंकुरुमेदेव सर्वकार्येषुसर्वदा ॥ इतिसमर्थं प्रदक्षि-
णा १ त्रयं कुर्यात्—३० आखुवाहनदेवेश विश्वव्यापिन्सनातन ।
प्रदक्षिणां गृहाणेश ? ममत्वं सन्निधौ भव । ततःप्रणामं २ कुर्यात्—
३० वाहुभ्यांच सजानुभ्यां शिरसावचसाहशा । अविघ्नार्थमुमापुत्रं
प्रणमामिसुहृर्मुहुः ॥

इति गणेशपूजापद्धति



अथ वरुणपूजा पद्धतिः ।

तत्रादौ भूमिस्पर्शं मन्त्रमाह—३० महीर्षोः पृथिवीच न
इमं यज्ञं मिमिक्षतां पिपृतान्नो भरीमभिः ॥ अथयवक्षेपः—
३० ओषधयः समवदन्त सोमेन सहराज्ञा यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्त
१० राजन्पारयामसि ॥ ततः कलशस्थापनं—३० आजिघ्नकलशं
मह्यात्वा विशन्तिवन्दवः पुनरूर्जा निवर्त्तस्वसानः सहस्रंधुक्षोर
धारापयस्वतीपुनर्मा विशताद्रयिः ॥ ततो जलेनापूरणम्—३०
व्वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋत सद-
न्यसि वरुणस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य ऋत सदन मासीद ।
ततो गन्धक्षेपणम्—३० गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यं पुष्टां करीषी-
णीम् । ईश्वरीं सर्वं भूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ ततः सर्वो-
षधिक्षेपणम्—३० याओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगंपुरा मनैनु
वभूणामह १० शतं धामानि सप्तच ॥ ततः सप्तमृत्तिका—३०
स्योनापृथिविनो भवान्मृत्क्षरा निवेशनी यच्छ्रानः शर्मसप्रथाः ॥
ततो दूर्वाक्षेपणम्—३० कांडात्कांडात्प्ररोहन्ती पन्धः परुधस्परि ।

१ टि०—एक चह्यां र्वांसप्त त्रीणिद्याद्विनायके । चत्वारिविष्णवेद्यान
शिवस्यार्द्धं प्रदक्षिणम् ।

२ विष्णुकटप लतायाम्—पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां उरसा शिरसाहशा ॥
वचसामनसा चेति प्रणामो ऽ ष्टांगईति ॥

एवानो द्रुवं प्रतनु सहस्रेण शतेनच ॥ पञ्चपल्लवम्—३० अश्व-
 त्येवो निपदनं पण्णवो वसतिष्कृताः ॥ गोभाज इत्किलासथ—
 यत्स नवथपूरुपम् ॥ ततः पूगीफलक्षेपणम्—३० याफली नीर्या
 अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणी । बृहस्पति प्रसूता स्तानोमुंचत्व
 र्दं० हसः ॥ ततः पञ्चरत्नक्षेपणम्—परिवाजपतिः कविरग्निर्द्व्या
 न्यकमीत् ॥ दधद्रत्नानिदाशुपे ॥ हिरण्यक्षेपणम्—३० हिरण्य-
 गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत् । सदाधार
 पृथिवीं यामृतेमां कस्मै देवाय हविषाव्विधेम ॥ वस्त्रम्—यद
 श्वायव्वासऽउपस्तृण्यधीवासं—याहिरण्यान्यस्मै ॥ सन्दानम-
 र्व्वन्तं पद्भीशं प्रियादेवेष्वायामयन्ति । ततो धान्यपूर्णं पुटकं
 कलशोपरिस्थापनम्—३० पूर्णां दधिं परापत सुपूर्णां पुनरापत ।
 वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जं र्दं० शतक्रतो—तदुपरिश्रीफलम्—
 ३० श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पारर्वेनक्षत्राणि रूपमशिव-
 नौव्यासत् ॥ इष्णुलिषाणा मुम्मइषाण सर्व्वलोकम्मइषाण ॥
 ततो वरुणमावा हयेत्—३० तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमान-
 स्तदाशास्ते—यजमानो हविर्भिः । अहेड मानो वरु-
 णोहवो ध्युरुश र्दं० समानऽआयुः प्रमोषीः ॥—ततः
 प्रतिष्ठापयेत्— ॐ एतन्तेदेव सचितर्य्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतयेब्रह्मणे
 तेनयज्ञमवतेनयज्ञपतितेनमामव । मनोजूतिर्जुषतामाजस्य बृह-
 स्पतियज्ञमिमं तनोत्वरिष्टंयजर्दं० समिमं दधातुव्विश्वेदेवासऽइहमा
 दयंतामोप्रतिष्ठ ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः वरुणेहागच्छेहतिष्ठप्रसुतिष्ठितो-
 भव ॥ आसनं—आसनं च महद्दिव्यं रञ्जितं च मनोहरम् । अपांपति
 गृहाणत्वं ममसौर्य्यविवर्धय ॥ पाद्यम्—कवोष्णमुदकं दिव्य मष्ट-
 गन्धसमन्वितम् । पाद्यं गृहाण देवेश, वरुणाय नमोनमः ॥ अर्घ्यम्—
 गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तं दूर्वाधिसमन्वितम् । अर्घ्यं गृहाण वरुण सर्व-
 सिद्धिप्रदो भव ॥ पञ्चाशृतम्—सशर्करं दधिर्लोड्रं पयोशृतसमन्वितम्
 पञ्चाशृतं गृहाणेश जलाधिपतये नमः ॥ स्नानम्—सुशीतलं निर्मलं च
 श्रीगङ्गालकनन्दयोः । वारिगन्धसमायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्णताम् ॥

गन्धम्—श्रीखण्डचन्दनं दिव्यं केशरेणसुरञ्जितम् । ददामिभाल-
शोभार्थं वरुणायनमोनमः ॥ अक्षतम्—अक्षतान्स्वेतवर्णाभां स्ताडु-
लान्सुमनोहरान् ॥ वरुणत्वंगृहाणौ तान्मम शान्तिकरोभव ॥
पुष्पाणि—ऋतुजानिसुपुष्पाणि यथालब्धानि वैप्रभो । निवेदयामि
जलपसर्वसौख्यं विवर्धय ॥ धूपम्—वनस्पतिरसोत्पन्नं गन्धाढ्यम्,
सुमनोहरम् । धूपंगृहाण वरुणसर्वसम्पत्करोभव ॥ दीपम्—घृता-
क्तवर्तिकायुक्तं वह्निनादीपितं प्रभो । गृहाण मङ्गलं दीपं रत्नाकर-
गृहाधिप ॥ नैवेद्यम्—अन्नंचतुर्विधं स्वादुनानाव्यञ्जनसंयुतम् । निवे-
दयामि नैवेद्यं स्वात्मकल्याणहेतवे ॥ नैवेद्यान्तेजलम्—कराननविशु-
ध्यर्थं नैवेद्यान्तेजलं प्रभो । गृहाण परयाभक्त्या जलेशायनमोनमः ॥
उपायनम्—हिरण्यं ताम्रखण्डवा राजतं यन्मया र्पितम् । उपायनं
गृहाणेश सर्वसम्पत्करोभव ॥ ततः पुण्याहवाचनार्थं कलशे देवता-
आवाहयेत् ॥ ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठेरुद्रः समाश्रितः । मूले
तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥ कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्त-
द्वीपावसुन्धरा । ऋग्वेदो धयजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ अग्निश्च
सहिताः सर्वे कलशान्तु समाश्रिताः ॥ अत्र गायत्री सावित्री शान्ति-
पुष्टिकरी तथा ॥ आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥ सर्वे-
समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदानदाः ॥ आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरित-
क्षयकारकाः ॥ ततो हस्तौ सम्बाह्व कलशं प्रार्थयेत्—देवदानवसंवादे
मथ्यमाने महोदधौ ॥ उत्पन्नो सितदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि
त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वञ्च प्रजा-
पतिः । आदित्यावसवो रुद्रा विश्वे देवाः सपैतृकाः ॥ त्वयि तिष्ठन्ति
सर्वेऽपियतः कामफलप्रदः । त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव ॥
सान्निध्यं कुरु देवेश प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ नमोनमस्ते स्फटिकप्रभाय
सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय । सुपाशहस्ताय भूपासनाय जलाधिनाथाय
नमोनमस्ते ॥ पाशपाणेन मस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक ॥ पुण्याह-
वाचनं यावत्तावत्वं सन्निधो भव ॥ इति वरुण कलमपूजा पद्धतिः ॥

अथ पुण्याहवाचन पद्धतिः ।

तत्रादौस्मार्त्ताचमनंकृत्वा पूर्वोक्तविधिनाअर्घ्यं संस्थाप्य
 ब्राह्मणानपिसंस्थाप्य, सङ्कल्पंकुर्यात् ॐ अद्येत्यादिदेशकालौ
 संकीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्माऽहं, अमुककर्मणि सर्वा
 भ्युदयप्राप्तये ब्राह्मणद्वारापुण्याहंवाचयिष्ये, तदङ्गतयाब्राह्मणानां
 पूजनंवरणाश्चकरिष्ये ॥ वरणद्रव्यंसम्पूज्य, ब्राह्मणेभ्योऽर्घदद्यात्-
 ॐ भूमिदेवाग्रजन्मासि त्वंविप्रपुरुषोत्तम । प्रत्यक्षोयज्ञपुरुषो ह्यर्घ्यो
 ऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ इतिमन्त्रेण प्रथक्प्रथक् ब्राह्मणहस्तेपुदत्वा
 पूजयेत् ॥ ॐ गन्धद्वारेतिगन्धम्०, ॐ नमोस्त्वनन्ताय० ॥ अक्षत
 पुष्पादिभिःसम्पूज्य वरणंकुर्यात्—अथपूर्वाचारित० अमुकोहम-
 मुककर्मणि एभिर्गन्धाक्षत, पुष्प, पूगीफलद्रव्यैः सर्वाभ्युदयप्राप्तये
 पुण्याहवाचनार्थं, अमुकगोत्रंअमुकशर्माणं ब्राह्मणंत्वामहंबृणे ।
 वृतोऽस्मीतिब्राह्मणो ब्रूयात् ॥ एवंसर्वान्बृत्वा अञ्जलिं वध्वाप्रार्थयेत्
 ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोऽवेनआवः । सवु-
 धन्याऽउपमाऽस्यविष्टाःसतस्य योनिमसतश्चन्विवः । ततोयज
 मानोऽवनिकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृश मञ्जलिसिरस्याधा-
 य दक्षिणेनपाणिना सुवर्णपूर्णाकलशं धारयित्वाङ्गानिस्पृशेत् ।
 शिरसिमेसौभाग्यमस्तु, मस्तकेश्रीःकान्तिरस्तुचक्षुषोः सुनेजोऽस्तु
 श्रोत्रयोः श्रवणेन्द्रियमस्तु बाह्वोर्मेवलमस्तु । तत आशिषःप्रार्थयेत् ॥
 प्रार्थनामाह—यजमानोवारत्रयंब्रूयात्—एताःसत्याआशिषःसन्तु ।
 ब्राह्मणाः, वारत्रयंब्रूयुः ॥ सत्याः सन्तु ॥ ३ ॥ ॐ दीर्घानागा
 नद्योगिरयन्त्रीणिविष्णुपदानिच । ॐ श्रीणिपदाविचक्रमेविष्णुर्गोपा
 ऽअदाभ्यः । अतोऽधर्माणिधारयन् ॥ तेनायुष्प्रमाणेन पुण्यंपुण्याहं
 दीर्घमायुरस्तु । इतिभवन्तोऽवन्तु, इति यजमानो वारत्रयं ब्राह्म-
 णानब्रूयात् ब्राह्मणाः—ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु । इतिवारत्रयं
 ब्रूवन्तु—(एवंसर्वत्र यजमान ब्राह्मणोक्तिः) यज०—ब्राह्मणानां
 हस्तेषु सुप्रोक्षितमस्तु, ब्राह्म०—अस्तुसुप्रोक्षितम् । ॐ अर्पां

मध्येस्थितादेवाः सर्वमप्सुप्रतिष्ठितम् । ब्राह्मणानां करेन्यस्ताः
 शिवा आपो भवन्तुते ॥ यज०—३० शिवा आपः सन्तु । ब्रा०
 ३० सन्तु शिवा आपः । यज०—सौमनस्यमस्तु । ब्रा०—अस्तुसौम-
 नस्यम् ॥ य०—अक्षतं चारिष्टं चास्तु । ब्रा०—अस्त्वक्षतमरिष्टं च ।
 य०—गन्धापान्तु सौमङ्गल्यं चास्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु । ब्रा०—
 गन्धापान्तु सौमङ्गल्यं चास्तु । य०—अक्षतापान्तु आयुष्यमस्तु ।
 ब्रा०—अक्षताः पान्तु आयुष्यमस्तु । य०—घुष्पाणि पान्तुसौश्रि-
 यमस्तु । ब्रा०—घुष्पाणिपान्तु सौश्रियमस्तु । य०—ताम्बूलानि
 पान्तु ऐश्वर्यमस्तु । ब्रा०—ताम्बूलानि पान्तु ऐश्वर्यमस्तु । य०—दक्षिणा
 पान्तु बहुदेयं चास्तु । ब्रा०—दक्षिणापान्तु बहुदेयं चास्तु । य०—
 दीर्घमायुः श्रेयः शान्तिः पुष्टि स्तुष्टिः श्रीर्यशोविद्या विनयोवित्तं
 बहुपुत्रत्वं चायुष्यं चास्तु । ब्रा०—३० तथास्तु ॥ [अत्र सर्वत्र
 ब्राह्मणैरस्त्विति प्रत्युत्तरं देयमितिगदाधरः] यजमानः—यंकृ-
 त्वा सर्ववेदयज्ञ क्रियाकरण कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्त्त-
 न्तेतमह मोंकारमादि कृत्वा ऋग्यजु सामा धर्वाशीर्ध्वचनं बहुऋ-
 पिसम्मतं सम्बिजातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये ।
 ब्रा०—वाच्यताम् ॥ यजुः—३० भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवाभद्रं
 पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यशे महि-
 देवहितं यदायुः ॥१॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ॐ
 रातिरभिनो निवर्त्तनाम् । देवाना ॐ सख्यमुपसेदिमा व्ययं
 देवानऽआयुः प्रनिरन्तुजीवसे ॥२॥ नतद्रक्षा ॐ सि नपिशाचा
 स्तरन्ति देवाना मोजः प्रथमज ॐ ह्येतत् । योविभक्तिं दात्तायण
 र्दं हिरण्य र्दं सदेवेषु कृणुते दीर्घमायुः समनुष्येषु कृणुते दीर्घ-
 मायुः ॥३॥ दीर्घा युस्तऽओपथे खनितायस्मै चत्वा खनाम्यहम् ॥
 अथोत्वंदीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शाद्विरोहतात् ॥४॥ द्रविणोदाः
 पिपीपति जुहोत प्रचतिष्ठत । नेप्राह्लुभिरिष्यत ॥ ५ ॥ ऋक्—
 ३० द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयंसत ।

द्रविणोदान्वीरवती मिपन्नोद्रविणोदारासते दीर्घमायुः ॥ १ ॥
 सवितापश्चात् सवितापुरस्तात् सवितोत्तरात्तात् सविताऽधरा-
 तात् । सवितानःसुवतुसर्वतानिसवितानोरासतां दीर्घमायुः॥ २ ॥
 नवोनवोभवति जायमानोऽह्वांकैतुरूपसामेत्यग्रम् । भागंदेवेभ्यो
 विदधात्यायं प्रचन्द्रमास्तिरतेदीर्घमायुः ॥ ३ ॥ उच्चादिविदक्षि-
 णावन्तोऽअस्थुर्येऽअश्वदाः सहतेसूर्येण । हिरण्यदाऽअमृतत्वम्भजंते
 वासोदाः सोमप्रतिरन्तआयुः ॥ साम-३०आपउन्दन्तुजीवसे दीर्घा-
 युत्वायवर्चसे । यस्त्वाहृदाकीरिणा मन्यमानोमर्त्यमर्त्योजोह-
 वीमि ! जातवेदोयशोअस्मासुधेहिप्रजाभिरग्ने ऽअमृतत्वमश्या ।
 यस्मेत्वंसुकृतेजातवेदउलोकमग्नेऽकृणवस्योमम् ॥ अश्विनंसपुत्रिणं
 वीरवन्तंगोमन्तरयिन्नुशतेस्वस्ति ॥ यजमानोक्तिः-व्रतजपनियम
 तपः स्वाध्यायकलशमदमदयादान विशिष्टानांसर्वेषांब्राह्मणानांमनः
 समाधीयताम् ॥ ब्राह्मणाव्यूः-प्रसन्नाःस्मः ॥ य०-३०शान्तिरस्तु ।
 ब्रा०-३० अस्तु । य०-३०पुष्टिरस्तु । ब्रा०-३०अस्तु । ३०तुष्टिरस्तु ।
 [ब्राह्मणाएवंसर्वत्रोत्तरत्रयों, अस्तरितिब्यूः] य०-३० वृद्धिरस्तु ।
 ३० अविघ्नमस्तु । ३०आगुण्यमस्तु । ३० आरोग्यमस्तु । ३० शिवमस्तु !
 ३०शिवकर्मास्तु । ३०कर्मसमृद्धिरस्तु । ३०वेदसमृद्धिरस्तु । ३०
 शास्त्रसमृद्धिरस्तु । ३०पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु । ३०धनधान्य समृद्धि-
 रस्तु । ३०इष्टसम्पदस्तु । ततोऽक्षतान् वक्ष्यमाणमन्त्रोच्चारणान्ते
 वहिःक्षिपेत्-३०अरिष्टनिरसनमस्तु । ३०यत्पापंरोगंशोकमकल्याणं
 नद्दूरेप्रतिहतमस्तु ॥ अत्रोदकस्पर्शः । [ततोऽन्तदेशेऽक्षतान्क्षिपेत्]
 ३०यच्छ्रेयस्तदस्तु । ३० उत्तरेकर्मण्यविघ्नमस्तु । ३०उत्तरोत्तरम
 हरहरभिवृद्धिरस्तु । ३०उत्तरोत्तराःक्रियाःशुभाःशोभनाः सम्प-
 दन्ताम् । ३० तिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु ॥ ३० तिथि
 करणमुहूर्त्तनक्षत्र ग्रहलग्नाधिदेवताःप्रीयन्ताम् । ३० तिथिकरणे
 सुमुहूर्त्तंसनक्षत्रेसग्रहे सलग्ने सदैवते प्रीयेताम् । ३० दुर्गापांचा-
 ल्यौप्रीयेताम् । ३० अग्निपुरोगाविश्वेदेवाःप्रीयन्तां । ३० इन्द्र-

पुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम् । ॐ वशिष्टपुरोगाः ऋषिगणाः प्रीय
 न्ताम् ॥ ॐ माहेश्वरीपुरोगाः उमामातरः प्रीयन्ताम् । ॐ अरु-
 न्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे देवाः-
 प्रीयन्ताम् । ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम् । ॐ ब्रह्मच
 ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम् । ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम् । ॐ अद्भामेधे
 प्रीयेताम् ॥ ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयतां । ॐ भगवती माहे
 श्वरी प्रीयताम् । ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् । ॐ भगवती
 पुष्टिकरी प्रीयतां । ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् । ॐ भगवन्तौ
 विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् । ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम् । ॐ
 सर्वाग्रामदेवताः प्रीयन्तां ॥ पुनरक्षतान् वहिः क्षिपेत्-ॐ हताश्च
 ब्रह्मविद्विषः । ॐ हताश्च परिपन्थिनः-ॐ हता अस्य कर्मणो विघ्न
 कर्तारः । ॐ शत्रवः पराभवयन्तु । ॐ शाम्यन्तु घोराणि । ॐ
 शाम्यन्तु पापानि । ॐ शाम्यन्तु वीतयः । पुनरपः स्पर्शः । पुनरक्षता-
 नन्तर्दंशे क्षिपेत् । ॐ शुभानि वर्धन्तां । ॐ शिवा आपः शन्तु ।
 ॐ शिवाः ऋतवः सन्तु । ॐ शिवा अग्नयः सन्तु । ॐ शिवा आहु-
 तयः सन्तु । ॐ शिवा औषधयः सन्तु । ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु ।
 ॐ शिवा अग्निथयः सन्तु । ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम् । ॐ निकामे
 निकामेनः पर्जन्यो वर्षेत् फलवत्योऽप्यौषधयः पच्यन्तां योगक्षे-
 मोनः कल्पताम् ॥ १ ॥ ॐ निकामे निकामेनः प्रजन्यो वर्षेत् त्विति
 निकामे निकामे वै तत्र पर्जन्यो वर्षेत् त्रैतेन यजेन यजन्ते फलवत्योऽन
 ऽप्यौषधयः पच्यन्तामिति फलवत्यो वै तत्र औषधयः पच्यन्ते यत्रैतेन
 यजेन यजन्ते योगक्षेमोऽनः कल्पतामिति योगक्षेमो वै तत्र कल्पते
 यत्रैतेन यजेन यजन्ते तस्माद्यत्रैतेन लक्ष्मः प्रजानां योगक्षेमो भवति ॥
 ॐ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चर राहुकेतु सोमसहिता आदित्य
 पुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम् । ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम् । ॐ
 भगवन्नारायणः प्रीयताम् ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयतां ।
 यजमानः-ॐ पुण्यं पुण्याहकालान्वाचयिष्ये । ब्राह्मणाव्युः-

वाच्यतां । ३० ब्राह्मणपुण्यमहर्घ्यं च स्रष्टर्युत्पादनकारकं । वेदवृत्तौ द्वं
नित्यं तत्पुण्याहं वृवन्तुनः ॥ यजमानोक्तिः—भो ब्राह्मणाममगृहे
ऽव्यकरिष्यमाणामुक्तकर्मणि । ३० पुण्याहं भवन्तो वृवन्तु । ततो
ब्राह्मणाः—३० पुण्याहम् । मन्दस्वरेण १ ३० पुण्याहम् । मध्यमस्वरेण
३० पुण्याहम् । उच्चस्वरेण वारत्रयं वृगुरेवमग्रेऽपि ॥ ३० पुनन्तु-
मादेवजनाः पुनन्तुमन्साधियः । पुनन्तुद्विश्वाभूतानि जातवेदः-
पुनीहिमा ॥ ३० उद्गातेव शकुने सामगायसि ब्रह्मपुत्रहवसवनेपुं
शंससि । वृषेव चाजीशिशुमतीरपीत्यासर्वतो नः सकुने । भद्रमावद
विश्वतो नः शकुने पुण्यमावद ॥ ब्रा०—३० पुण्याहसमृद्धिरस्तु ॥ ३ ॥
यजमानोक्तिः—पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत्कल्याणं पुराकृतम् । ऋषि-
भिः सिद्धगन्ध वैस्तत्कल्याणं वृवन्तुनः ॥ भो०—ब्राह्मणाः अ० क०
कल्याणं भवन्तो वृवन्तु ३ । ब्रा०—३० कल्याणम् ॥ ३ ॥ ३० यथे-
मांवाचं कल्याणी भावदानि जनेभ्यः ब्रह्मराजन्याभ्यां ॐ शूद्राय-
चार्याय च स्वायचारणाय च ॥ प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूया
समयम्मेकामः समृद्धयताम् ॥ ब्रा०—३० कल्याणसमृद्धिरस्तु । ३ ॥ यज
मानः—३० सागरस्य तु या ऋद्धिर्मेहालक्ष्म्यादिभिः कृता । सम्पूर्णा
सुप्रभावा च तां च ऋद्धिं वृवन्तुनः । भो ब्राह्मणाममगृहेऽसुक्तकर्मणि-
ऋद्धिं भवन्तो वृवन्तु । ३ ॥ ब्रा०—३० ऋद्धयताम् ॥ ३ ॥ ३० सत्रस्य
ऋद्धिरस्य गन्मज्योतिरमृताऽअभूम । दिवं पृथिव्याऽअध्यारुहामा
विदाम देवान्स्वज्योतिः ॥ ३० ऋध्यामस्तोमं सनुयामवाजमानो
मंत्रं सरथेहोपयातम् । यशोनपक्वं मधुगोष्वन्तरा भूतांशो अश्विनोः
काममप्राः ॥ ब्रा०—३० ऋद्धिसमृद्धिरस्तु ॥ ३ ॥ ३० स्वस्ति-
स्तुयाऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा । दिनायकप्रियानित्यं,
तां च स्वस्तिवृवन्तुनः । भो ब्राह्मणाममगृहे० स्वस्ति भवन्तो वृवन्तु
। ३ ॥ ब्रा०—३० आयुष्मते स्वस्ति ॥ ३ ॥ ३० स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्ध अवाः
स्वस्ति नः पूषा द्विश्ववेदाः । स्वस्ति नस्तादर्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो
वृहस्पतिर्दधातु ॥ ३० स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति-
देव्यदिति रनर्वणः । स्वस्ति पृषा असुरो दधातु नः स्वस्ति व्यावा

पृथिवीसुचेतुना ॥ ब्रा०—३० आयुष्मतेस्वस्तिरस्तु । ३० समुद्र-
मथनोत्पन्ना जगदानन्ददायिनी । हरिप्रियाचमाङ्गल्यातांश्रियञ्च
वृवन्ततुनः ॥ भो ब्राह्मणाः, ममगृहेऽमुककर्मणिसकुटम्बस्य सपरि-
वारस्यश्रियंभवंतोवृवन्तु ३ ब्राह्मणाः ३० श्रीरस्तु ॥ ३ ॥ ३०
श्रीश्वतेलक्ष्मीश्वपत्न्या वहोरात्रे पारवैनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्या-
त्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥ ३० श्रिये
जातः श्रियञ्चा निरियायश्रियंवयोजरितृभ्योदधाति । श्रियंव्वसा-
नाऽअमृतत्वमायन् भवन्तिसत्यासमिथामितद्रौ ॥ ब्रा०—३० श्रीरस्तु
ततः सुवर्णपूर्णं कलशं भूमौस्थापयित्वा तज्जलेन सपत्निपुत्रसहितं
यजमानं ब्राह्मणा आम्रादि पल्लवैरभिषेक मन्त्रै रभिषिचयेयुः ॥
अभिषेक विधिरग्रेवदयते ॥ ततोयजमानः सदक्षिणामात्रानि
प्रोक्षयित्वा, पूर्वपूजित ब्राह्मणेभ्योनमः सम्पूज्यच । संकल्पः
कार्यः—अद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्य, अमुकराशिरमुकोहं ममामुक-
कर्मणि कारितस्य ब्राह्मण द्वारा पुण्याहवाचन कर्मणः सांगफला
वाप्तयेहमानिसोपस्कराणि सदक्षिणान्यामात्रानि प्रजापति दैव-
तानि यथानामगोत्रेभ्यः पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य-
दातुमहमुत्सजे ॥ इतिदत्त्वाप्रार्थयेत्—आसन्पुण्याहवाचने न्यूना
तिरिक्तोयोविधिः सउपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात्परिपूर्णोस्त्विति
भवन्तोवृवन्तु । ३० परिपूर्णोऽस्तुविधिः ॥

॥ इति पुण्याहवाचनम् ॥



अथ यजमानस्य नीराजनम् ॥

कच्चित्तैजसेपात्रे घृताभ्यक्तां ज्वलन्तीं वस्त्रिकां संस्थाप्य, तत्रपात्रे गन्धाक्षतदधिहरिद्रासहितं पूगीफलञ्च संस्थाप्य, ब्राह्मणो यजमानं नीराजयेत्-३० अग्निज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहाः सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ ततो तिलकं कुर्यात्-३० भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु ॥ रक्षन्तु त्वांसुराः सर्वे सम्पदः सन्तु सुस्थिराः ॥ तत आशिषं दद्यात्-३० पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमदुच्यते पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥ पुण्याहवाचनात्सर्वं कल्याणमस्तु ते गृहे । कीर्तिवीर्यान्वित्वो भूत्वा जीवत्वं शरदांशतम् ॥ ततो ब्राह्मणाय दक्षिणां दद्यात् ॥ इति नीराजनम्-

अथ षोडश मातृका पूजापद्धतिः ।

अथ च पूर्वोक्तमातृका पूजा परिभाषा प्रकारेण (पंचोच्छ्वाः पंचतिर्यक् च रेखाः कार्याः प्रयत्नः) षोडशमातृकायंत्रं सिन्दूरकंकुमादिना पट्टेलिखित्वा दूर्वाभिर्विभूष्यवक्ष्यमाण विधिना स्थापयेत्पूजयेच्च ॥ संकल्पं कुर्यात्-अद्य पूर्वोच्चारित, अमुक गोत्रोऽमुकराशिरसुकोऽहं अमुककर्मणः पूर्वाङ्गत्वेन सर्वाभ्युदय प्राप्तये पीठे- लिखितासु प्रतिमासु गणपतिसहितगौर्यादि षोडशमातृकाणां पूजनं करिष्ये ॥ तत्रादौ मध्य चतुष्कवायव्य कोणे गणेशमावाहयेत् । अक्षतगुप्पैः-मध्ये तु मातृवर्गस्य सर्वविग्रहरंसदा । त्रैलोक्यपूजितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम् ॥ ३० भूर्भुवः स्वः गणेशो हागच्छेद्दृष्टिः । मध्य नैर्ऋत्ये गौरीम्-हिमाद्रितनयादेवीं चरदां शङ्कर प्रियाम् ॥ लम्बोदरस्थजननीं गौरीमावा ह्याम्यहम् ॥ ३०

भू० गौरीहागच्छेहतिष्ठ । मध्याग्नेयाम् पद्माम्—सुवर्णाभांपद्म
हस्तां विष्णोर्वक्षस्थलस्थिताम् ॥ त्रैलोक्यपूजितां देवीं पद्मामावा
हयाम्यहम् ॥ ३० भू० पद्मेद्गहागच्छेहतिष्ठ ॥ ततो वायव्यसन्नि-
हित पश्चिमे प्रथमकोष्ठे वाह्येशचीम्—दिव्यरूपां विशालार्चींशुचिं
कुण्डलधारिणीम् । देवराजप्रियां भद्रांशचीमावाहयाम्यहम् ॥
३० भू० शचीहागच्छेहतिष्ठ । पश्चिमे द्वितीयकोष्ठे मेधां—वैवस्व-
त्कृतफुल्लाब्ज तुल्याभांपद्मवासिनीम् । बुद्धिप्रसादिनींसौम्यां मेधामा
वाहयाम्यहम् ॥ ३० भू० मेधे इहा० ॥ ततो नैर्ऋत्यसन्निहितदक्षिणे
प्रथमकोष्ठेसावित्रीम्—जगत्सृष्टिकरीं धात्री रूपेणचव्यवस्थितां ।
३० काराख्यां भगवतींसावित्रीमाहयाम्यहम् ॥ ३० भू०
सावित्री० ॥ ततो द्वितीयकोष्ठे दक्षिणे विजयाम्—विष्णुरुद्रार्क
देवानांसर्वदाविजयप्रदाम् ॥ त्रैलोक्यवासिनीं देवीं विजयामाहया
म्यहम् ॥ ३० भूर्भवःस्वः विजये, इहागच्छेहतिष्ठ ॥ तत ईशान
सन्निहिते प्रथमकोष्ठे उत्तरेजयाम्—दैत्यरक्षःक्षयकरीं देवानामभय
प्रदां । त्रैलोक्यवन्दितां देवीं जयामावाहयाम्यहम् ॥ ३० भू० जये
उत्तरेद्वितीयकोष्ठे देवसेनाम्—मयूरवाहनां देवीं शक्तिखड्गधनुर्ध-
राम् ॥ आवाहये देवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ॥ ३० भू० देवसेने
ईशानेस्वधाम्—कव्यमादायसततं पितृभ्योयाप्रयच्छति । पितृ-
लोकार्चितां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम् ॥ ३० भू० स्व धे० ॥
आग्नेयांस्वाहाम्—हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्योयाप्रयच्छति । वन्धि
प्रियाचया देवी स्वाहांतामाहयाम्यहम् ॥ ३० भू० स्वाहे हागच्छेह
तिष्ठ ॥ तत ईशान सन्निहिते प्रथमकोष्ठे मातः—भूतग्राममिमंकृत्सं
याभिस्तपादितंपुरा ॥ त्रैलोक्यपूजिता देवी मातरावाहयाम्यहम् ॥
३० भू० भोकीर्त्यादित्रयोदशगृहमातरः, इहागच्छत, इहातष्ठत ॥
पूर्वेद्वितीयकोष्ठे लोकमातुः—आवाहये लोकमातृर्जगत्पालनसंस्थिताः
शक्राद्यैरर्चिता देवीः स्तोत्रैराराधनेस्तथा ॥ ३० भू० भो ब्राह्म्यादि
सप्तलोकमातरः, इहागच्छत, इहनिष्ठत ॥ ततो वायव्येष्टिपुष्टिच-
नमस्तुष्टि करीं देवीं लोकानुग्रह कर्मणि । सर्वकार्यं समृ-

ध्यर्थं धृतिमावाहयाम्यहम् ॥ ३० भू० धृते० ॥ तत्रैव पुष्टिम्—
 आवाहयाम्यहं पुष्टिं जगद्विघ्न विनाशिनीम् कार्यपुष्टि करीं देवीं
 रक्षणायाध्वरस्यच ॥ ३० भू० पुष्टि० । ततो नैर्ऋत्येतुष्टिम्—आ-
 वाहयाम्यहं तुष्टिं विद्युदुज्वल कुण्डलाम् ॥ धर्मतुष्टिकरीं देवीं
 यज्ञरक्षणहेतवे ॥ तत आभ्यन्तरईशानकोष्ठे कुलदेवीं—आवाहयामि
 त्वां मातृशरत्नार्थमध्वरे । सर्वसिद्धि प्रदांमायां कुलदेवीं प्रपूजये ॥
 ३० भू० अमुकिकुलदेवि, इहागच्छेहतिष्ठ । ३० एतन्तेति प्रति-
 ष्ठाप्य,, ३० भूर्भुवःस्वः गणेशसहिताः गौर्यादि मातरः, लोक
 मातरः, गृहमातरः, सुप्रतिष्ठिता भवन्तु, चिरमिहतिष्ठन्तु वरदा
 भवन्तुच ॥—३० गणपति सहित गौर्यादि मातृभ्योनमः इति
 मन्त्रेण,, पाद्यं समर्पयामिबोनमः ॥ स्नानीयंजलम्० । वस्त्रं०
 चन्दनम्० पुष्पाणि० । धूपं० । दीपं० । नैवेद्यम्० । दक्षिणाम्० ॥
 पूजनविधाय, वसोर्धारा संकल्पंकुर्यात्—अथे० अमुकोहं, अमुक
 कर्मणि, सर्वाभ्युदय प्राप्नये गणपति सहित गौर्यादि—मातृश्रृणा
 मुपरि गुडघृताभ्यां वसोर्धाराः पातयिष्ये ॥ ततः पात्रे सगुड-
 घृतं द्रवीभूतं कृत्वा—पट्टलिखित मातृश्रृणामुपरि पञ्चसप्तवा
 वसोर्धाराः पातयेत्—३० व्वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः
 पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सवितापुनातु व्वसोः पवित्रेण
 शतधारेणसुप्वाः कामधुक्तः ॥ ३० आज्यं यतोस्तिदेवानामशनं
 मङ्गलात्मकम् । ततो मातृश्रुः समुद्दिश्यघृतधारा ददाम्यहम् ॥
 इतिमन्त्राभ्यां (कुड्यस्तम्भसुसंलग्ना मातृश्रृणामुपारस्थिताः ॥
 कारयेत्पञ्चतिस्त्रोवा सप्तवोदङ्मुखस्थिताः) इतिधाराः पाताय-
 त्वा तच्छेषघृतं यजमानः स्वशिरसि लिम्पेत् ॥ [केचिदत्रघृत
 मातृश्रृणामपि पूजनंकुर्वन्ति तद्यथाध्यायेत्—३० श्रीश्रुलक्ष्मीधृ-
 तिर्मेधापुष्टिः प्रज्ञा सरस्वती । मार्गल्येषु प्रपूज्यन्तेसप्तैता घृत-
 मातरः । ३० श्रियैनमः । ३० लक्ष्म्यैनमः । ३० धृत्यैनमः । ३०
 मेधायैनमः । ३० पुष्ट्यैनमः । प्रज्ञायैनमः । ३० सरस्वत्यै
 नमः ॥ इति नाममन्त्रैः पाद्यादिभिः सम्पूज्य ॥ वसोर्धारा

पूजनंकुर्यात् ॥ ३० वसोधारादेवताभ्योनमः ॥ इति मूल-
मन्त्रेण सम्पूज्य—ततो नीराजनम्—कर्पूरनिर्मलं दिव्यं वन्धि-
नादीपितंमया । नीराजनं प्रगृहीतयुयं सर्वाश्चमातृकाः ॥]
ततः क्रमशः पुष्पांजाल दद्यादादौ गणपतिम्—मध्येतुमातृवर्गस्य
सर्वदिग्हरंसदा । त्रैलोक्यपूजितं देवं गणेशं प्रणमाम्यहम् ॥ ततो
गौर्यादीः—३० गौरीं पद्मां शचीं मेधां सावित्रीं विजयांजयाम् ।
देवसेनांस्वधांस्वाहां मातृश्च लोकमातृकाः ॥ धृतिं पुष्टिं तथा
तुष्टिं आत्मनः कुलदेवताम् । प्रार्थयामिसदाभक्त्या वृद्धिश्चाध्व
समृद्धये ॥—ततो गृहमातृः—कीर्तिःकीर्तिकरी समृद्धिकरणी
लक्ष्मीर्धृतिर्धैर्यदा, मेधाधीकरणीच पुष्टिरमला श्रद्धाक्रियावामतिः ।
लज्जाविग्रहणीच शान्तिशरणी तुष्टिश्च कान्तिस्तथा, वन्देहं गृह-
मातृकार्गृहपतेः सौभाग्य सौख्याप्तये ॥ ततोलोकमातृः—
३० ब्राह्मींमाहेश्वरींचैव कौमारींचैष्णवींतथा ॥ वाराहींच तथे-
न्द्राणींचांसुडां प्रणमाम्यहम् ॥ वसून—३० वसवोऽष्टौमहा-
भागाः पूजिताविधिमार्गतः ॥ कुर्वन्तुकार्यं मखिलं निर्विघ्नेन
ऋतृद्भवम् ॥ सांगागौर्यादि षोडशमातरः प्रसन्नाभवन्तु ॥

॥ इति षोडश मातृकापूजा पद्धतिः ॥

अथ देशप्रथा नुकूलेवसोधारा पूजनम् ॥

तत्रादौपूर्वोत्तरक्रमेणभित्तौ पञ्चसप्तवाचृतधाराःवक्ष्यमाण
मन्त्रेणकुर्यात्—३० वसोःपवित्रमसिशतधारं वसोःपवित्रमसि-
सहस्रधारंदेवस्त्वासवितापुनातु ॥ वसोःपवित्रेणशतधारेण सुप्त्वा
कामधुजः ॥ इतिकृत्वा, ३० एतन्तेदेव० इतिप्रतिष्ठाप्य, ३० वसु-
धारादेवताभ्योनमः, इतिपाद्यादिभिःसम्पूज्य प्रार्थयेत्—३० वसवो
ष्टौमहाभागाः पूजिताविधिमार्गतः ॥ कुर्वन्तुकार्यंमखिलं निर्वि-
घ्नेनऋतृद्भवम् ॥ वा—शान्ताकारं० ॥

इति वसुधारा पूजाम् ॥

अथ नान्दीश्राद्धपद्धतिः

अथा ऽभ्युदयिक श्राद्धम्—घौतंश्वेतवस्त्रं परिधाय त्रिराचम्य पुष्पाक्षतहस्तः, ३० यंत्रहस्तवेदान्तविदो वदन्ति परंप्रधानं पुरुषं तथा ऽन्ये । विश्वोद्गते कारणमीश्वरम्वा तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय, ॥ विष्णुं ध्यायेत्—३० शुक्लांबरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् द्विष्णुं विघ्नोपशान्तये ॥ दूर्वायवान्मृहीत्वा दिग्बन्धनं कुर्यात् ॥ यवारक्षन्तुदिति जाद्दूर्वारक्षन्तुराक्षसात्, पंक्तिवैश्रोत्रियोरक्षे दिति धिः सर्वरक्षकः ॥ ततो दूर्वाभिर्नीवी बन्धनम्—३० सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्य योनिरसि सुसस्यास्कृपीस्कृधिः ॥ इति दक्षिणकट्यां धारयेत् ॥ ततो भूमौ चन्दनेन शङ्खचक्रे लिखित्वा लदुपरि दूर्वात्रयमासनंतदुपरि, अर्घपात्रं तत्र दूर्वापवित्रं क्षिपेत्—मन्त्रः—३० पवित्रे स्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसवऽऽत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्परश्मिभिः । तत्पात्रे जलम् मन्त्रः—३० शन्नो देवीरभिष्टयऽत्रापो भवन्तु पीतये शंभ्योरभिश्च वन्तुनः ॥ यवान्—३० यवो ऽसियवया स्रद्धेपो यवयारातिर्दिवेत्वा न्तरिक्षायत्वा पृथिव्यैत्वा शुध्दन्तां लोकाः पितृपदनापितृपदनमसि ॥ चन्दनाक्षतपुष्पाणि तृष्णीं निक्षिप्य तेन जलेन दूर्वाङ्कुरैरात्मानं नान्दीमुखश्राद्धसामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य, प्राणायामं कृत्वा, पितृनुद्दिश्यावाहयेत्* ३० देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्यऽएव च । नमः स्वाहायै स्वाहायै नित्यमेव नमो नमः ॥ इति वारत्रयं पठेत् ॥ ततः पुनर्गायत्रीमन्त्रेण कर्मपात्रस्थजलमभिमन्त्र्य, ३० शुद्धादिदृष्टिनिपातदोषादात्मादीनां पवित्रतास्तु ॥ इत्यामात्मादीन्प्रोक्ष्य प्रतिज्ञासंकल्पं कुर्यात्—३० अथेत्यादिदेशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्राणां अस्मन्मातृपितामही प्रपितामहीनाम् अमुकदेवीनां वसु-रादित्यस्वरूपाणां नान्दीमुखीनां, तथा—अमुकगोत्राणां अस्मिन्पितृपितामह प्रपितामहानां, अमुकदेवानां वसु-ऋदादित्यस्वरूपाणां

* टि० अत्र बृद्धि श्राद्धे वैदिक मन्त्रे ऽपि न आशब्द प्रयोगे स्वाहा, इति वाच्यः ॥

नान्दीमुखीनां, तथा—असुकगोत्राणां, अस्मन्मातामहप्रमातामह
वृद्धप्रमातामहानां, असुकदेवानांसपत्निकानां वसुरुद्रादित्यस्वरू-
पाणां नान्दीमुखानां, प्रीतयेअसुककर्मणिसत्यवसुसंज्ञक विश्वेदेव
पूर्वकं नान्दीमुखश्चाधमहंकरिष्ये ॥ कुरुष्वेतिब्राह्मणोवदेत् ॥
ततोब्राह्मणक्रमेणा आसनानिदद्यात् ॥ दूर्वात्रयंयवजलंच गृहीत्वा-
अद्येह नान्दीमुखाऽसुकगोत्रास्मन्मात्रादि त्रयश्चाद्ध सम्बन्धिनां,
तथासुकगोत्रास्मत्पित्रादित्रयश्चाद्ध सम्बन्धिनां, तथाऽसुकगोत्रा
स्मन्मातामहादि त्रयश्चाद्ध सम्बन्धिनां—सत्यवसु संज्ञकानां वि-
श्वेषां देवानां, इदमासनं वो नमो वृद्धि २ अत्रियै,, ३० विश्वेदेवाः
शृणुतेम र्दं० हवस्मे येऽअन्तरिक्षेयऽउपद्यविष्ट ॥ येऽअग्निजिह्वा
ऽउतवायजत्राऽआसद्यास्मिन्वर्हिषि मादयध्वम् ॥ ३० सत्यव
सुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्योनमः,, ततो मात्रादित्रयस्थंडिले
आसनदानम्—तथा असुकगोत्रा अस्मन्मातृपितामही, प्रपिता
मह्यः, असुकदेव्यः वसुरादित्य स्वरूपानान्दीमुख्यः, इदमासनं
वो नमो वृद्धि २ अत्रियै,, तथासुकगोत्रा अस्यत्पितृपितामह
प्रपितामहा असुकदेवाः, वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः नान्दीमुखाः, इद
मासनं वो नमोवृद्धि २ अत्रियै,, तथासुकगोत्रा अस्मन्मातामह,
प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः वसुरादित्यस्वरूपाः
नान्दीमुखाः इदमासनं वो नमो वृद्धि २ अत्रियै,,
इतिध्यात्वा ॥ नतआसनक्रमेणपूजनं, तत्रादौविश्वेपादेवानाम्—३०
व्विश्वेदेवाऽऽगतशृणुतामहमर्दं०हवम् ॥ एदम्बर्हिर्निपीदत ॥
३० सत्यवसुसंज्ञकेभ्योविश्वेभ्यो देवेभ्योनमः ॥ गन्धात्ततपुष्प
धूप दीपनैवैद्यादिकंदत्वा पितृपूजनम्—३० मातृ पितामहीप्रपिता
महीभ्योनमः । ३० पितृपितामहप्रपितामहेभ्योनमः ३० मातामह
प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्निकेभ्योनमः सम्पूज्य ॥
सङ्कल्पः अद्येहअसुकगोत्रास्मन्मात्रादि त्रयश्चाद्धसम्बन्धिनः, तथा
सुकगोत्रास्मत्पित्रादित्रयश्चाद्धसम्बन्धिनः, तथाऽसुकगोत्रास्मन्मा
तामहादित्रयश्चाद्धसम्बन्धिनः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाःअर्चन-

विधौऽइमानि गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवैद्य वासोदक्षिणादीनिआमा
 न्नानिच, यथाविभागंवोनमो वृद्धि २ श्रियै ॥ ततोमातृस्थण्डिले
 अद्येत्यादि० अमुकगोत्राअस्मन्मातृपितामही प्रपितामहाः अमुक
 देव्यः, नान्दी मुख्यः ॥ तथाऽसुक गोत्रास्मत्पितृ पितामह प्रपि-
 तामहाः, अमुकदेवाः वसुरुद्रादित्य स्वरूपाः नान्दीमुखाः, तथा
 मुरुगोत्रा अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहा अमुकदेवाः
 सपत्नीका वसुरुद्रादित्य स्वरूपा नान्दीमुखा अर्चनविधौ, इमानि
 गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप नैवैद्य वासो दक्षिणा दीनि-यथा
 विभागंवो नमो वृद्धि २ श्रियै, पुनः पूजनम् ॐ मातृपितामही
 प्रपितामहीभ्योनमः ॥ ॐ पितृपितामह प्रपितामहेभ्योनमः ॥
 ॐ मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्योनमः ॥
 इति गन्धाक्षतादिभिः सम्पूज्य, ॥ यजमानोचदेत्-अर्चनविधिः
 परिपूर्णोऽस्तु ॥ ब्राह्मणः-अस्तुपरिपूर्णः ॥ आचमनंकृत्वा, ततो
 सफल दधिघृत मिष्ठान्नसहितानि सदक्षिणानि आमालानि चतु-
 स्थण्डिलेषुचतुर्धाविभज्य, पात्रेषु स्थापयेत्, संकल्पः-अद्येह,
 अमुक गोत्रास्मन्मात्रादित्रय नान्दीश्राद्ध सम्बन्धिभ्यः, तथा,
 अमुक गोत्रास्मत्पित्रादित्रय, नान्दीश्राद्ध सम्बन्धिभ्यः, तथा-
 अमुक गोत्रास्मन्मातामहादित्रय नान्दीश्राद्ध सम्बन्धिभ्यः सत्य
 वसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्योदेवेभ्यः इदमामान्नं सदक्षिणं यथांशंवो
 नमो वृद्धि २ श्रियै, तथा-अमुकगोत्राभ्योऽस्मन्मातृ पिता-
 मही प्रपितामहीभ्यः, अमुक देवीभ्यो वसुरुद्रादित्य स्वरूपाभ्यो
 नान्दीमुखेभ्य इदमामान्नं सदक्षिणं दधिघृत जल सहितं यथा-
 विभागंवो नमो वृद्धि २ श्रियै, तथा-अमुक गोत्रेभ्योऽस्मत्पि-
 तृपितामह प्रपितामहेभ्यो ऽअमुकदेवेभ्यो वसुरुद्रादित्य स्वरूपे
 भ्योनान्दीमुखेभ्य इदमामान्नं सदक्षिणं-सजल दधिघृतादियुतं
 यथाविभागंवो नमो वृद्धि २ श्रियै, तथा अमुकगोत्रेभ्योऽस्म-
 न्मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहेभ्योऽसुकदेवेभ्यः सपत्नीके-
 भ्यो वसुरुद्रादित्य स्वरूपेभ्यो नान्दीमुखेभ्य इदमामान्नं सजल

दधिघृतादिसहितं, सदक्षिणं—यथा विभागंबो नमो वृद्धि २
 श्रियै,, इति समर्प्य ॥ तत आमान्नपूजनम्—ॐ अन्न पतेन्नस्य
 नोदेह्यनमीवस्य शुष्मिणः प्रप्रदातारन्तारिप ऽऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदे
 चतुष्पदे,, इतिमन्त्रेण गन्धाक्षतादिभिः सम्पूज्य, ब्राह्मणं च
 सम्पूज्य,, सङ्कल्पः—अग्रेहेत्यादिदेशकालौ संकीर्त्या ऽमुकोहं
 मात्रादि त्रयाणां पित्रादि त्रयाणां, सपत्नीकानां मातामहादि—
 त्रयाणां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां नान्दी मखानां प्रीतये अमक
 कर्मनिमित्तक सत्य वसु संज्ञक विश्वेदेव पूर्वक नान्दीमुख आध्द
 कर्मणः सांगफल प्राप्तये समस्त पितृशृणां—विश्वेषां देवानां च
 प्रीतये इमान्यामानानि प्रजापति देवत्यानि सदक्षिणानि, अमक
 शर्मणे ब्राह्मणाय समस्त पितृशृणा मत्तय्य तृप्त्यर्थं वो नमो
 वृद्धि २ श्रियै, ततो यजमानो वक्ष्यमाणमन्त्रेण स्वतिलकंकुर्यात्—
 ॐ सत्यानुष्ठानसम्पन्नाः सर्वदायज्ञबुध्दयः । पितृ मातृ पराश्चैव
 सन्त्वस्मत्कुलजानराः ॥ ततो—ॐ देवताभ्यः इति त्रिःपठेत्—
 ततो यजमानो वदेत्—विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ॥ ब्राह्मणोक्तिः—
 ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ॥ य० स्वस्तिभवन्तो हवन्तु,, ब्रा०
 ॐ स्वस्ति ॥ य० इदं वृद्धि आध्दं देशकाल अन्नदक्षिणादि वाक्य
 हीनं यत्कृतं तत्सुकृतमस्तु ॥ यत्कृतं श्रीनारायणप्रसादाद्ब्राह्मण
 वचनात्परि पूर्णमस्तु ॥ ब्रा० अस्तुपरिपूर्णम् ॥ ततः आध्दं विस-
 र्जयेत्—तत्रादौ विश्वेदेवान्विसर्जयेत्—ॐ वाजेवाजेवत वाजि-
 नोनो धनेषुविप्राऽअमृतामृतज्ञाः ॥ अस्यमध्वः पिबतमादयध्दं
 तृप्तायात पथिभिर्देवयानैः ॥—ततो नीवीं विसृज्य अर्घपात्रं भ्राम
 यित्वा विसृज्य आचम्य,, पितृप्रसादं गृहीयात् ॥

॥ इत्याभ्युर्दायिक श्राद्धपद्धति ॥



अथ नवग्रहपूजापद्धति ।

अथच कर्त्ता आचमनादिभूतोत्सादनंकृत्वा प्राणायामं विधाय, सङ्कल्पः—अद्येत्यादिदेशकालौसंकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुक शर्म्माहममुककर्मणि पंचोपचारेणवाषोडशोपचारेण सूर्यादिनवग्रहाणांपजनंकरिष्ये,, तत्रादौसूर्यमध्येध्यायेत्—पद्मासनंपद्मकरो द्विवाहुः पद्मद्युतिःसप्ततुरङ्गवाहनः ॥ दिवाकरोलोकगुरुःकिरीटी मयिप्रसादंविदधातुदेवः ॥ आवाहयेत्—आकृष्णेतिहिरण्यस्तूप ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सवितादेवतासूर्यावाहनेधिनियोगः ॥ ऋक्—३० आकृष्णेनरजसावर्त्तमानोनिवेशन्नमृतं मर्त्यश्चहिरण्ययेनसवितारथेनदेवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥ ३० भूर्भुवःस्वः कलिंगदेशोद्भव काश्यपसगोत्रसूर्येहागच्छेहतिष्ठ । सोमन्ध्यायेत्—श्वेताम्बरःश्वेत विभूषणश्च श्वेतद्युतिर्देवदधरोद्विवाहुः ॥ चन्द्रोऽमृतात्मावरदः किरीटी मयिप्रसादंविदधातुदेवः ॥ इमंदेवेतिगौतमऋषिर्द्विपदा विराड्छन्दः सोमोदेवतासोमावाहने वि० ॥ ऋक्—३० इमन्देवाऽअसपत्नर्द० सुवध्वदंमहतेक्षत्रायमहते ज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्या येन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इयममुष्यपुत्र ममुष्येपुत्रमस्यै, विशऽपवो मीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाँराजा ॥ ३० भू० यमुनातीरोद्भवात्रेयसगोत्र, सोमेहागच्छेहतिष्ठ ॥ भौमंध्यायेत्—रक्ताम्बरो रक्तवपुःकिरीटी चतुर्भुजोमेपगमोगदाधरः ॥ धरासुतःशक्तिधरश्च शूली सदाममस्याद्वरदःप्रशान्तः ॥ आवाहयेत्३०अग्निर्मूर्धंतिविरूपाक्ष ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽङ्गारकोदेवताभौमावाहने वि० ॥ ऋक्—३० अग्निर्मूर्द्धादिवःककुत्पतिःपृथिव्याऽअयम् ॥ अपाँरेताँसिजिन्वति ॥ ३० भू० अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजगोत्रभौमेहागच्छेहतिष्ठ ॥ बुधंध्यायेत्—पीताम्बरःपीतवपुःकिरीटीचतुर्भुजोदण्ड धरश्चसौम्यः ॥ सिंहस्थितश्चन्द्रसुतोहरिप्रियः सदाममस्याद्वरदोस्तसौम्यः ॥ आवाहयेत्—उद्वुध्यस्वेतिपरमेष्ठीऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो बुधोदेवताबुधावाहने वि० ॥ ऋक्—३० उद्वुद्धयस्वाग्ने प्रनिजागृ-

हित्व मिष्टापूर्त्तैसर्द० सृजेथामयञ्च ॥ अस्मिन्सधस्थेअध्युतरस्मि-
 न्विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत ॥ ३० भू० मगधदेशोद्भवात्रेयस
 गोत्रबुधेहागच्छेहतिष्ठ ॥ गुरुंध्यायेत्—पीताम्बरः पीतवपुःकिरीटी
 चतुर्भुजो देवगुरुःप्रशान्तः ॥ तथात्तसूत्रञ्च कमण्डलुश्चदंडं च विभ्रद्
 रदोस्तुमह्यम् ॥ आवाहयेत्—बृहस्पतइति गृत्समदऋषिभिर्गुण्डुल्लुन्दो
 गुरुदेवतां, बृहस्पत्यावाहने वि० ॥ ऋक्—३० बृहस्पतेऽअतियदर्थ्यो
 अर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेपु । यद्दीदयच्छ्रवसऽऋतप्रजा ततदस्मा
 सुद्रविणंवेहिचित्रम् ॥ ३० भूर्भुवःस्वः, सिन्धुदेशोद्भवाङ्गिरसगोत्र
 बृहस्पते, इहागच्छेहतिष्ठ ॥ भृगुंध्यायेत्—श्वेताम्बरःश्वेतवपुः
 किरीटी चतुर्भुजोदैत्यगुरुः प्रशान्तः । तथात्तसूत्रञ्चकमण्डलुश्च
 दण्डश्चविभ्रद्दरदोस्तुमह्यम् ॥ आवाहयेत्—अन्नात्परिश्रुतइतिप्रजा-
 पत्यश्वीसरस्वतीन्द्रादयऋषयस्त्रिजगतील्लुन्दः शुक्रोदेवताशुक्रा
 वाहने विनियोगः ॥ ऋक्—ॐ अन्नात्परिश्रुतोरसंत्रह्यणव्यपि
 बत्त्त्रंपयः सोमंप्रजापतिः । ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानर्दं शुक्र
 मन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतंमधु ॥ ३० भू० भोजकटदेशोद्भ
 वभार्गवगोत्रशुक्रेहागच्छेहतिष्ठ ॥ शनिंध्यायेत्—नीलाम्बरःशूल
 धरःकिरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरोधनुष्मान् । चतुर्भुजःसूर्यसुतः
 प्रशान्तः सदास्तुमह्यंवरदोल्पगामी ॥ आवाहयेत्—शन्नोदेवीनि
 दधेद्यड्डांथर्वण ऋषिर्गायत्रील्लुन्दः शनिश्चरोदेवता शनिश्चरा
 वाहने वि० ॥ ऋक्—ॐशन्नोदेवीरभिष्ठयऽआपोभवन्तुपीतये ।
 शंयोरभिश्चवन्तुनः ॥ ३० भू० सौराष्ट्रदेशोद्भवकाश्यपगोत्रशने,
 इहागच्छेहतिष्ठ ॥ राहुंध्यायेत्—नीलाम्बरोनीलवपुःकिरीटी, कराल
 वक्त्रःकरतालशूली, चतुर्भुजश्चक्रधरश्चराहुः सिंहासनस्थोवरदो-
 स्तुमह्यम्, आवाहयेत्—कयानइतिवामदेवऋषिर्गायत्रील्लुन्दो राहु
 देवताराहावाहने वि० । ऋक्—३० कयानश्चित्रऽआभुवदतीसदा
 वृधःसग्वा । कयाशचिष्ठयावृता ॥ ३० भू० राठीनापुरोद्भवपैठिनस
 गोत्र राहोइहागच्छेहतिष्ठ ॥ केतुंध्यायेत्—धूम्रोद्भिवाहुर्वरदोगदा-
 धरोगृध्रासनस्थोचिक्वृत्ताननश्च । किरीटकेग्रविभृपिनश्च सदास्तु

मे केतुगणःप्रशान्त्यै ॥ आवाहयेत्—केतुकृण्वन्नितिमधुरञ्जन्दकृपि
 गायत्रीञ्जन्दः केतुदं वताकेत्वावाहने वि० । ॐ केतुकृण्वन्नकेतवे
 पेशोमर्याऽअपेशसे । समुपद्भिरजायथा, ॐ भू० अन्तर्वेदीसमु-
 द्भव जैमिनसरोत्र केतो इहागच्छेहतिष्ठ, ततः प्रतिष्टायेत्—ॐ
 एतन्ते देवसवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेनयज्ञ मवतेन
 यज्ञपतिं तेनमामव । मनोयूतिर्युपता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ
 मिमंत्वनोत्वरिष्टंयज्ञ र्द० समिमन्दधातु । विश्वेदेवासऽइहमादयन्ता
 मोम्प्रतिष्ठ ॥ ॐ भास्कराद्यानग्रहाः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु ॥ आ-
 सनम्—दिव्यांवरं निर्मलंच कौशेय निर्भितंपरम् ॥ आसनंच
 मयदात्तं प्रगृहीत नवग्रहाः । स्नानीयंजलम्—पवित्रं निर्मलंवारि
 सर्वगन्धसमन्वितम् ॥ स्नानीयं परमंदिव्यं प्रगृहीत नवग्रहाः ॥
 वस्त्रम्—ग्रहवर्णानिवस्त्राणि पवित्राणि शुभानिच । मयादत्तानि
 गृह्णन्तु भास्कराद्या नवग्रहाः ॥ चन्दनम्—मलयागिरिसम्भूतं
 केशरेणसमन्वितम् । प्रगृह्णन्तुमयादत्तंचन्दनंग्रहदेवताः ॥ ॐ नवग्रह
 देवताभ्योनमःअक्षतान्समर्पयामि ॥ ऋतुजानिसुपुष्पाणि दूर्वाकुर-
 युतानिच । समानीतानि पूजार्थं गृह्णन्तु ग्रहदेवताः ॥ धूपम्—वन-
 स्पतिरसोत्पन्नं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ॥ धूपमाघेयकं दिव्यं
 प्रगृहीत नवग्रहाः ॥ दीपम्—साज्यंसहस्रि संयुक्तं वह्निना
 दीपितं मया ॥ आरातिक्यं प्रगृहीत भास्कराद्या नवग्रहाः ॥
 नैवेद्यम्—अन्नंचतुर्विधंखादु-घृतदुग्ध समन्वितम् ॥ भक्त्यार्पितंच
 नैवेद्यं प्रगृहीत नवग्रहाः ॥ ॐ ग्रहदेवताभ्योनमः, उपायनीभूत
 द्रव्यं समर्पयामि । पुष्पाक्षतहस्तः प्रार्थयेत्—ॐ ब्रह्मासुरारि
 त्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतोबुधश्च ॥ गुरुश्चशुक्रः शनि-
 राहुकेतवः सर्वेग्रहाः शान्तिकराभवन्तु ॥ ॐ मन्त्रहीनंक्रियाहीनं
 भक्तिहीनंच यत्कृतम् । पूजनंतन्मयाचात्रक्षमध्वं ग्रहदेवताः ॥

॥ इति नवग्रहपूजा पद्धतिः ॥

अथ रत्नाविधानम् ॥

यवान्कुशास्तथा दूर्वा सर्षपाङ्गन्धमक्षतान् । गोमयदधि
 संयुक्तंकारयेत्ताम्रभाजने ॥ तत्रैव स्थापयेत्सूत्रं रत्नार्थं रक्तपीत
 कम् ॥ हस्तेनमन्त्रये द्विद्वान्वेद्यमाणैः सुमन्त्रकैः ॥ मन्त्राः ॐ
 गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् । विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं
 वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् । आचार्या मुनयश्चैव भास्कराद्या नव
 ग्रहाः ते सर्वे मम यज्ञस्य रत्नां कुर्वन्तु विघ्नतः । प्राचीं रत्नं तु गोविंद
 आग्नेयीं गरुडध्वजः । यामीं रत्नं तु वाराहो नारसिंहस्तु नैऋतीम् ।
 केशवो वारुणीं रत्ने द्वायवीं मधुसूदनः । उदीचीं श्रीधरो रत्ने
 दैशानीं तु गदाधरः । ऊर्ध्वं गोवर्धनघरो ह्यधस्ताद्दरणीधरः एवं
 दश दिशो रत्ने द्वासु देवो जनार्दनः । शंखो गदा तथा चक्रः पद्म
 द्वाराणि रत्नयेत् । उपेन्द्रः पातु ब्रह्माणमाचार्यपातु वामनः । यज्ञ
 मानं सपत्नीकं पुण्डरीकं विलोचनः । रत्नाहीनं च यत्स्थानं
 तत्सर्वं रत्नताद्वरिः । वेदमन्त्रैश्च कर्त्तव्यारत्नांशुभ्रैश्च सर्षपैः ।
 कृत्वापोटलीकां पूर्ववधनीयाहक्षिणेकरे ॥ वेदमन्त्राः— आदी
 गायत्री १ ॐ गणान्त्वा ० २ ॥ ॐ जातिवेदसे सुनवामसो
 ममराती यतो निदहाति वेदः । सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानाविव
 सिन्धुं दुरितास्त्यग्निः— ॐ सप्तऋषयः प्रतिहिताः शरीरं
 सप्तरत्नानि सद्मप्रमादम् ॥ सप्तापः स्वपतो लोकमीयु
 स्तत्र जागृतोऽब्रुस्वप्रजो सत्रसदौ च देवो ॥ नतद्रत्ना
 ॐ सिनपिशचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमं ॐ ह्यनत ।
 यो विभर्ति दाक्षायण्टं समनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः यदा बध्नन्दा
 क्षायणा हिरण्यटं शतानीकाय सुमनस्यमानाः । तन्मऽद्यां बध्ना
 मिशतशारदाया युष्मान् जरदष्टिर्धयासम् । रत्नो ह्यणंब्यलगहनं
 वैष्णवीमिदमहं तम्ब्वलगमुत्किरामि यम्मेनिष्टथो यममात्यो निच
 खाने दमहंतम्ब्वलगमुत्किरामि यम्मेसमानो यमसमानो निचखाने
 दमहंतम्ब्वलगमुत्किरामि यम्मे सवन्धुर्यमसवन्धुर्निचखाने दमहं

तेष्वलगमुत्किरामि यस्मैसजातोयमसजातो निचखानोत्कृत्यां-
किरामि ॥ रत्नोद्दणोव्वोव्वलगहनः प्रोक्षामिवैष्णवान् रत्नोद्दणो
वोव्वलगहनो ऽवनयामि वैष्णवान् रत्नोद्दणो वोव्वलगहनो ऽव-
स्तृणामिवैष्णवान् रत्नोद्दणोवांव्वलगहना ऽउपदधामिवैष्णवी
रत्नोद्दणोवांव्वलगहनो पर्यूरुहामिवैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवास्थः
प्रत्युष्टं० रत्नः प्रत्युष्टाऽअरातयो निष्ठतर्हं० रत्नोनिष्टताऽअरा-
तयः । उर्वन्तरिक्तमन्वेमि । रत्नोद्दहा विश्वचर्पणि रभियोनिमयो-
हते द्रोणेसधस्तमासदत् ॥ इति मंत्रैः पीतकौशेयवस्त्रे पोठलिका
मभिमन्थ्य पुष्पस्यदक्षिणकरे स्त्रियोवामकरेवध्नीयात् ॥ चन्धन्-
मन्त्रौ—३० येनवध्दो वलीराजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेनत्वामभि-
वध्नामि रत्नेमाचलमाचल ॥ ३० त्वर्यविष्टदःशुपो नृरूपाहि शृणु
धीगिरः । रत्नातोकमुत्सना ।

इति रत्नावि गानम् ।

० ०

अथ घृतच्छायादर्शनम् ।

अथच द्रवीभूतमाज्यं ताम्रपात्रेकांस्यपात्रेवा पूरयित्वा तत्र
सुवर्णं रजनद्रव्यंवाप्रक्षिप्यचन्दनाक्षतैः सम्पूज्यवक्ष्यमाणमन्त्रैः
कुशैर्दूर्वाभिरालोड्याभिमन्त्रयेत्—मन्त्राः—३० आज्यंपरमयज्ञी
यमाज्यंतेजोमयोनिधिः । आज्यंहिदेवदेवानां प्रियमाज्ये स्थितं
जगत् ॥ तदाज्यवीक्षणेभक्त्या कृतेमङ्गलमाप्नुयात् ॥ दुःस्वप्नो
दुर्निमित्तंच विघ्नौघोनश्यतिध्रुवम् । तेजः प्रज्ञाचशौर्यंच बलंचापि
प्रवर्धते । पुण्यंसप्ताङ्गराज्यंच भवेदन्यमभीप्सितम् ॥ ज्ञात्वावा
ज्ञानतोवापि मनोवाक्कायकर्माभिः । कृतंयत्पातकंतन्मे घृतस्पर्शा-
द्विनश्येत् ॥ आज्येचैवमुखंहृष्ट्वा सर्वपापैःप्रमुच्यते । इत्यभिमन्थ्य
सङ्कल्पः—अद्येत्यादि० अमुकगोत्रो ऽमुकराशिरमुकोहं सर्वारिष्ट
निवृत्तये आज्यावेक्षणंकरिष्ये । ३० तेजोसीति परमेष्ठीऋषिञ्चि

षट्पञ्चन्दः, आज्यं देवता आज्यावेक्षणे विनियोगः । ॐ तेजोसि
 शुक्रमस्यमृतमसिधामनामासि प्रियं देवाना मनाघृष्टं देवयजनमसि
 ॐ ध्रुवोसिध्रुवोयं यजमानेस्त्रिनायतने प्रजया पशुभिर्भूर्यात् ।
 घृतेनद्यावापृथिवी पूर्येथासिन्द्रस्यच्छदिरसि विश्वजनस्यच्छाया ।
 इतिघृतेशरीरच्छाया दर्शनंकृत्वा आज्यं हस्तेन स्पृष्ट्वा,, ब्राह्मणं
 सम्पूज्य अचेत्यादि० अमुकराशिरमुकशर्माहं इदं छायादर्शितमाज्यं
 सपात्रं सद्रव्यंच मृत्युञ्जयप्रीतये सर्वारिष्टपरिहारार्थं अमुकगोत्राया
 मुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहंसम्प्रददे ॥ ॐ तत्सन्नमम, इतिदत्त्वा
 दानवाक्यंपठेत्—ॐ कामधेनोः समुद्भूतं देवाना मुत्तमंहविः ।
 आयुर्वृद्धिकरंदोतु राज्यंपातुसदैवमाम् । ततो मृत्युञ्जयंप्रार्थयेत् ॥
 ॐ त्र्यम्बकं व्यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धना-
 न्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ ब्राह्मणो ब्रूयात्—मृत्युञ्जय प्रसादादीर्घायु
 षोऽस्तु ॥ ततः कर्त्ता हस्तौपादौ प्रक्षालयेत् ॥

इति घृतच्छायादर्शनम् ।

— ० —

अथ तिलपात्र दानमन्त्रः ॥

ॐ त्र्यम्बक मिति वशिष्ठऋषि त्र्यम्बक रुद्रो देवता सरजित
 तिल ताम्र दाने आवाहने विनियोगः । ध्यानम्—त्र्यम्बकं वृषभा-
 रुढं प्रतिवक्रं त्रिलोचनम् ॥ कपाल शूल खट्वांगं चन्द्र मौलि
 सदा शिवम् ॥ १ ॥

ऋचा—ॐ त्र्यम्बकं व्यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्धनम् । उर्वारुक
 मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ त्र्यम्बकं व्यजामहे
 सुगन्धिपुष्टि वेदनम् उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामृतात् ।

ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बक इह गच्छेत् इतिष्ट सुप्रतिष्ठितो वरदो
 भव ॥ त्र्यम्बक प्रीतिकारक स ताम्र तिलान्ते भ्यो नमः सम्पूज्य

ततो ब्राह्मणायनमः सम्पूज्य ॥ अद्येत्यादि अमुकगोत्रोऽमुकश-
 र्माहं ममसमस्त दुष्टारिष्ट निवृत्ति पूर्वकं सुखसौभाग्य वृद्धये
 अमुक कर्मणि न्यूनातिरक्तजन्म दोषापनुत्तये अपूर्णपूर्णाथं मिवं
 हिरण्यमृत्योपकारूपतं रजितसहितसताम्र तिलान्नं चन्द्रार्कप्रजा-
 पति दैवतममुकगोत्राय, अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे
 अथ कृतैतत् सताम्र तिलान्नदान प्रतिष्ठार्थं किञ्चिद्धिरण्य मृत्योप
 कविपतं रजतंचन्द्र दैवतममुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय
 तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ प्रार्थना ॥ तिलापुण्याः पवित्राश्च सर्वकाम
 कराशुभा ॥ शुक्लावायादवा कृष्णा विष्णुगात्र समुद्भवाः ॥ १ ॥
 यानि कानिच पापानि जन्मान्तर कृतानिच ॥ तिलपात्र प्रदानेन
 तानि नश्यन्तु मे सदा ॥ २ ॥

ब्रह्मासुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशिः भूमिसुतोवुधश्च ॥
 गुरुश्चशुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वग्रहाः शान्तिकराभवन्तु ॥ १ ॥

इति तिलपात्र दानम् ।

—०—०—

अथाभिषेकाशीर्वादादि मन्त्रसंग्रहः ॥

अथ यजमानस्य, अभिषेक मन्त्रतिलकाशीर्वादादि कार्यान्त
 कर्त्तव्यं वक्ष्ये ॥ ततः सपरिवारो यजमानः मण्डपस्थेशानोत्तर
 मध्यभागे, वा होमकुण्ड देवता सन्निधौच, पत्नीं वामभागेकृत्वा
 तस्यावामतः पुत्रादीन्दाक्षणे भातृवर्गाश्चकृत्वा भद्रासने पूर्वाभि-
 मुखः सनतिष्ठेत् ॥ आचार्य्यादय उत्तराभिमुखा उत्थायकलशो-
 दकेन वैदिकैः पौराणिकैश्च मन्त्रैर्यजमानमभिषिक्तकुर्युः ॥
 तत्रादी वैदिक मंत्राः—हरिः ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहु-
 भ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ सरस्वत्यैन्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्ना-
 ज्येनाभिषिञ्चामि ॥१॥ ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बा-
 हुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ अश्विनोर्भयज्येनतेजसेब्रह्मवर्चसा

याभिषिंचामि ॥२॥ ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः
 पूषाव्विश्व वेदाः । स्वस्तिनस्तादृषोऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृह-
 स्पतिर्दधातु ॥३॥ ॐ पयः पृथिव्यां पयऽत्रौषधीषुपयोदिव्यन्त
 रिक्षेपयोधाः । पयः स्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥४॥ ॐ
 अग्निर्देवता स्वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता व्वसवोदेवता
 रुद्रा देवताऽऽदित्यादेवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्प-
 तिर्देवतेन्द्रोदेवता व्वरुणो देवता ॥ ॐ मूर्ध्वासिराद्भ्रुवासि-
 धरणी धर्यसिधरणी । आयुषेत्वा वचर्चसेत्वा कृष्यैत्वाक्षेमाय
 कल्पन्ताम् ॥६॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोश्चप्त्रेस्थोविष्णोः
 स्यूरसिविष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसिविष्णवेत्वा ॥७॥ ॐ शौः
 शान्तिरन्तरिक्षं ई० शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरौषधयः
 शान्तिर्वनस्पतयःशान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व्व ई०
 शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि,, ॥८॥ ॐ सुशान्तिर्भवतु
 ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानिपरासुव । यद्भद्रंतत्तऽऽत्रासुव
 ॥९॥ ॐ आपोहिष्ठा मवोभुवस्तान ऽ ऊज्जंदधातन । महेरणाय
 चक्षसे ॥ योवः शिवतमोरस स्तस्यभाजयतेहनः । उशतीरिव
 मातरः । ॐ तस्माऽ अरङ्गमामवोयस्य क्षयायजिन्वथ । आपो-
 जन यथाचनः ॥ पौगणिक मंत्रा—उक्तश्चमात्स्ये—ॐ सर्व्वसमुद्राः
 सरित स्तीर्थानिजलदानदाः । आयान्तुयजमानस्य दुरितक्षयकार-
 काः ॥ ॐ सुरास्त्वामभिषिंचन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः । वासुदेवो
 जगन्नाथ स्तथासङ्कपर्णोविभुः । प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विज-
 यायते ॥ अखण्डलोग्निर्भगवान्यमोवे निर्ऋतिस्तथा । वरुणःपवन-
 सदा ॥ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मैधापुष्टिः श्रद्धाक्रियामतिः । बुद्धिर्लज्जावपुः
 शान्तिस्तुष्टिःकान्तिश्चमातरः । एतास्त्वामभिषिंचन्तुधर्मपत्न्यःसमा-
 गताः । आवित्यरचन्द्रमाभौमो बुधोजीवः सितोऽर्कजः । ब्रह्मा
 स्वामभिषिंचन्तु राहुःकेतुश्च तर्पिताः ॥ देवदानवगन्धर्वा पक्ष
 राक्षसपन्नगाः । ऋषयोऽसुनयोगाधो देवमातरएवच । देवपत्न्यो

द्रुमानागा दैत्याश्चाप्सरसांगणाः । अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजा
 वाहनानिच । श्योपधानिच रत्नानि कालस्यावयवाश्चये । सरि
 सागराः शैला स्तीर्यानिजलदानदाः ॥ एतेत्वामभिषिंचंतु स
 कामार्थे सिद्धये ॥ ३० गणाधिपोभानु शशीधरासुतोबुधोगुरुभ
 र्गवसूर्यनन्दनः । राहुश्चकेतुः प्रभृतिर्ग्रहानवकुर्वन्तुवः पूर्णमनोर
 सदा । उपेन्द्रइन्द्रो वरुणोहुताशनो धर्म्मोयमोवायु हर्ष
 श्वतुर्भुजः गन्धर्वधत्तो रगसिद्ध चारणा कुर्वन्तु० । नव
 दधिचिः सगरः पुरुरवा सकौन्तलेयो भरतोधनञ्जयः । राम
 त्रयं वेनवली युधिष्ठिरः कुर्वन्तुवः० । मनुर्मरीचिर्भृगुदक्ष नारद
 पराशरो व्यासवशिष्ठ भार्गवाः । वाल्मीकि कुम्भोज्ज्वग
 गौतमाः कुर्वन्तुवः० । रम्भासती सत्यवतीच देवकी गौरी
 लक्ष्मीश्च दितिश्च रुक्मिणी । कूर्मांगजेन्द्रोप्यचराचरा धरा
 कुर्वन्तुवः० । गङ्गा लकावा यमुना सरस्वती गोदावरी वेत्त्रवर्त
 च नर्मदा । साचन्द्रभागा वरुणा अशीनदी कुर्वन्तुवः पूर्ण मनो
 रथं सदा ॥ तुङ्गप्रभासो गुरुचक्र पुष्करो गया च काशी वदरीश्वरो
 नरः ॥ केदारनाथस्त्वथमार्गदायिनी कुर्व० । प्रयागराजो ह्यथ
 देवराजो रुद्रप्रयागोप्यथ कर्णतीर्थः । कण्वाश्रमो । वष्णुप्रयागराजः
 कुर्व० पूर्णमनोरथंसदा ॥ (केचिदान्चार्या इदानीमभिषेकान्ते
 यजमानस्य सपत्निकस्य, तैल हरिद्रोद्वर्त्तनपूर्वकम् सचैल मङ्गल
 स्नानमाचरन्ति, स्नान वस्त्राणि आचार्यायदत्त्वा, नूतनवस्त्राणि
 परिधाप्य पत्नीं वामतः कृत्वा पुत्रादिभ्यो तथाकृत्वा आसनेषूप
 वेशयित्वा, आचार्यो मन्त्रतिलकं कुर्यात्) मन्त्रः—३० भद्रमस्तु
 शिवंचास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु । रचन्तुत्वां सुराःसर्वे सम्पदः
 सांतु सर्वदा ॥ अक्षतारोपणम्—३० युञ्जन्तिव्रध्नमरुधं चरन्तं
 परितस्थुषः । रोचन्ते रोचनादिवि ॥ रक्षाबंधनम्—मन्त्रः—३०
 येनवधो बलीराजा धानवेन्द्रो महाबलः । तेनत्वामभि वध्नामि
 रक्षेमःचल माचल ॥ ३० त्वंयवािष्ठव.शुषोः नृपाहि शृणुधीगिरः
 रक्षातोक मुत्तमा ॥ ३० रक्षा सरक्षा भ्रयात् ॥ आभ्यां पुंसां

वक्षिणहस्ते, स्त्रीणां वामहस्ते रत्नासूत्रं बध्नीयात् ॥ अथाशीर्वाद्
 मन्त्राः—आचार्यादयो ब्राह्मणाः सफलपुष्पमालादिकं हस्तेषु
 गृहीत्वा उत्तराभिमुखोत्थाय मन्त्रोच्चारणं कुर्यः—मन्त्राः—ॐ
 गणानान्त्वा० ॐ आकृष्णेन० इत्यादि नवग्रहणां मन्त्रान्पठित्वाऽ ॥
 ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरे
 रङ्गैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यशे महिदेवहितं यदायुः ॥ शतमिन्दु
 शरदोऽअन्तिदेवा यत्रानश्चक्रा जरसंतनूनाम् । पुत्रासो यत्रपितरो
 भवन्तिमानो मध्यारीरिपतायुर्गन्तोः ॥ ॐ ब्राह्मणा सहपितरः
 सोम्यासः शिवेनो द्यावा पृथिवीऽनेहसा । पूपातः पातुदुरिता
 हतावृधो रत्नामाकिन्नोऽअघश र्दं० सईशतः । ॐ एताऽउच सुभ-
 गाविश्वरूपाद्विपक्षोभिः श्रयमाणाऽउदातैः । ऋष्याः सतीः
 कवषः शुम्भमाना द्वारोदेवीः सुप्रायणा भवन्तु ॥ ॐ ब्रह्मणस्पते
 त्वमस्ययन्ता सूक्तस्यबोधि तनयश्चजिन्व । विश्वंतद्भद्रं यदवन्ति
 देवा बृहद्भदेमविदथे सुवीराः । यऽइमांविश्वा विश्वकर्म्मार्थिनः
 पितान्नपतेन्नस्यनोदेहि ॥ ॐ पुनन्त्वादित्या रुद्रावसवः समि
 घतां पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथयज्ञैः । धृतेनत्वन्तन्व्वं वर्धयस्व सत्याः
 सन्तु यजमानस्यकामाः ॥ ॐ आब्रह्मन्त्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी
 जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शुरऽइषव्योति व्याधीमहारथो जायतां
 दोग्धी धेनुर्व्रौढाऽनइवानाशुः शप्तिः पुरन्धर्योषा जिष्णूरथेष्टाः ॥
 सभेयोयुवास्य यजमानस्य ध्वीरो जायतां निकामे निकामेनः
 पर्जन्यो वर्धेतुफलवत्योनऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमोनः कल्प
 न्ताम् ॥ वैराणिक मंत्रा—ॐ येनोत्थाय समूल मन्दरगिरिश्छत्री
 कृतो गोकुले, राहुर्गेन महाबलो सुररिपुः कार्यादशेरीकृतः ।
 कृत्वा त्रीणि पदानिधेन वसुधा, बध्दोवलिर्लालयायोयं पातुयुगे
 युगे युगपति खैलोक्यनाथोहरिः ॐ यौतौ शङ्खकपाल भूपित
 करौ मालास्थिमालाधरौ देवौद्वारवती श्मशानानलयौ नागारि
 गोवाहनौ ॥ द्विच्यक्षौ वलिदक्षयज्ञमथनौ श्रीशैलजावल्लभौ दुःखं
 वो हररतां सदा हरिहरौ श्री वत्स गङ्गाधरौ ॥ ॐ कमलासन

कमलेक्षणकमलारि किरीटकमलभृद्वाहैः ॥ नुतपदकमलाकरधृत
 कमला करोतुतेमंगलम् ॥ ॐ लक्ष्मीस्तेपंकजाक्षी निवसतुगृहेभा-
 रतीकंठदेशे, वर्धन्तां वन्धुवर्गाः स्वजनरिपुगणायान्तुपातालमूले ।
 देशेदेशेच कीर्त्तिः प्रभवतुभवतां देवतानांप्रसादात् ॥ जेजीव्या-
 त्पुत्रपौत्रैः सुजनप्रियजनैः पत्नियुक्तस्त्वमेव,, ततोयजमानपत्न्यं-
 चले- ॐ गन्धाः पान्तुसुमंगलंचास्तु । ॐ अक्षताः पान्तु,
 आयुष्यंचास्तु, ॐ पुष्पाणिपान्तु, बहुदेयंचनोऽस्तु,, इतिक्षिप्त्वा ।
 ॐ श्रीश्रुते० इतिमंत्रेणादौ फलादिकंकान्ताभ्योदत्त्वा,, ॐ सौभा-
 ग्यवती पुत्रवतीआयुष्मती धनवतीभव । ततः पुरुषेभ्यः, मंत्रार्थाः
 सुफलाःसन्तुपूर्णाः सन्तुमनोरथाः ॥ शत्रूणांबुद्धिनाशोऽस्तु मित्रा-
 णामुदयस्तव । एवमाशिपंदत्त्वा देवंविमृज्य यथासुखं विहरेयुः ।

इत्यभिषेकादि मंत्रसंग्रहविधिः ॥



- अयमगण्डपादिस्तम्भ परिभाषां वक्ष्ये—अयन यज्ञादीना चीलोपनयन कन्यादान
 राज्याभिषेक तुलादानादिपुन मण्डपस्यापश्यक तयामण्डपमिमांशार्थ मण्डपरिभाषासंग्रह-
 वक्ष्यति—मण्डपनिर्माणार्थं विचारः—मात्स्ये— गृहस्योत्तरपूर्वेषु मण्डपंकारयेदुभयः ॥
 मङ्गलकृत्येषु विशेषो मुहूर्त्तचिन्तामणौ—हस्तोऽन्यायेदहस्तैः गमन्तास्तुन्यायेदोत्तरप्र-
 वामभागे । युग्मेपरेषु पृष्टहीनचपन गप्ताहस्यान्मण्डपाद्वागनंगत ॥ विवाहपटलेऽप्येवम्—
 प्रतयन्धेसंस्कार्यत्वा दृढहस्तेनयेदोनिर्मितिः विवाहेतुकन्यागृहे एववरम्ययजनां कृत्वा दृष्टहस्ता
 थमस्य । तदायत्तत्वात् कन्याहस्तेनैवपदिमण्डपयांनिर्माणम् । मण्डपार्थं भूपरिज्ञा—
 शारदातिलके—नक्षत्र राशिवाराणा मनुकूलेशुमेऽहनि । ततोभूमितलेशुद्धे तुपारांगार
 बजिते । पुण्याहंवाचयित्वा तु मण्डपंरचयेत्पुनः ॥ तत्रभूपूजनंमात्स्ये—वाराहकर्मशेषोच
 क्षितिंचैवविधानतः । पूजयेद्वास्तुकायंपु विधिनासाधकोत्तमः ॥ दिग्ज्ञानार्थं शंक्रुनोपणाम्—
 कुण्डरत्नावल्ल्याम्—देशेसंभाविते प्राग्विधिवदिहममां सन्विधायाधभूमिं, मम्पूज्यात्रैवमभ्ये
 विरचितयलये रोपयेत्प्रशंसुम् ॥ तच्छायाप्रंचयस्मिन्विशतिचयलये भातियस्नाभदेशा,
 क्षीप्रत्यक्पूर्वपेशौ तदनुगतगुणः प्रागुणोऽनीप्रदिष्टः ॥ दिग्ज्ञानानंतरं सूत्रीकरणं मण्डप
 मानंचाह—उमाद्रीशांतिहृदि—ततस्तुराहितोविप्रैः सत्रयेन्मण्डपंशुभम् । उत्तमंशतहस्तान्
 तदद्वेनतुमध्यमम् । जघन्यशतदद्वेन शक्तिकालाद्यपेक्षया । पञ्चरात्रादौ—कनीयान्दशहस्तः
 स्यान्मध्यमाद्वादशोन्मितः । तथापोऽशभिहंस्ते मण्डपः स्यादिहोत्तमः ॥ गौतमीयत्रये—
 चतुर्द्वारसमायुक्तं चतुरस्रंमन्तत ॥ प्रतयंधंविवाहयोर्विशेषः—कार्यः षोडशहस्तोवा
 द्विपटुस्तोदशावधिः ॥ पञ्चरात्रे—मण्डपाः कर्मसुप्रोक्ता श्रुत्वामध्यास्तयोत्तमाः । यथापेशं
 यथाकाले प्रयोष्यस्ते विचक्षणैः ॥ धेयमाहविवाहपटले— द्वारविद्धा वलीविद्धा कूपवृत्तव्यधा
 तथा ॥ न कायावेदिकातश्चै शुभामङ्गलकर्मसु । तुलादानादौर्लगे—विशदस्तप्रमाणेन मण्डपं
 कुण्डमेववा । आयाष्टादशहस्तेन कलाहस्तेनवापुनः । विश्वकर्मप्रकारे—सर्ववासर्ववर्णानां
 कार्याः कार्यानुसारतः । भूयननविचार, मुहूर्त्तचिन्तामणौ—सूर्येऽज्ञानसिंह धटेपुशैवे स्तंभो
 लिकोदण्डमृगेपुवायी । मीनाजकुम्भेनिर्भृतीविवाहे स्याप्योऽग्निकोणे वृषयुगमकके । स्तम्भानां-
 संख्यारत्नावल्ल्याम्—स्तम्भाः षोडशयज्ञ दाहजहदावैदे विदिच्चायता, श्चत्वारोऽष्टकरावहिः
 शरकरास्तेऽष्टकोणेऽपिना ॥ चूडाभिः सहितारच तन्निखननंसर्वत्रपञ्चाशकम् । द्वात्रिंशद्वल्लिकाः
 समारचस्विलाः कार्यास्ततोऽतद्वये ॥ वास्तुशास्त्रे—पश्चमांसंयत्सेद्भूमौ सर्वसाधारणोविधिः
 मध्यस्तम्भानां निवेशनमाह—मण्डपेमध्यमास्तम्भा मण्डपावर्द्धप्रमाणतः । समन्ततस्त्रिभा-
 गेन परितोद्वादशापरा ॥ द्वारप्रमाणंमन्त्रमुक्त्वावल्याम्—द्विद्वाराणिचत्वारि विदध्यात्पञ्च-
 मांशतः ॥ विशेषः—मण्डपंतुदशाधाविभज्यवै यत्रयत्रचभवेद्गुणसन्धिः । तत्रतत्रविधिवेसमे
 द्श, हस्तकानपिबहि शरहस्तान् । द्वाराणिद्विद्विकराणिचालपे मध्येतुषेदांशुलवद्वितानि ।
 श्रेष्ठन्तुनागाद्गुलवृद्धिरुक्ता तंद्वादयेतानितुवर्जयित्वा । स्पष्टम्—कनिष्ठमण्डपे द्विहस्तोन्मितानि
 मध्यमेवेदागुलेर्वद्वितानि । उत्तमेविशतिहस्तोपरिमण्डपे शतहस्तपर्यन्तेच द्विहस्ताष्टालंद्वारमध्य
 प्रवेशंक्रुयादित्यर्थ ॥ मण्डपाच्छादनक्रियासारे—आद्याथमण्डपाः सर्वद्वारवर्ज्यन्तुसर्वतः ॥
 वनौस्ततश्चसरलैः सुकटैरथापितंनारिवेत्तदलै रथवापिपदै ॥ स्थूणाः शुचामरदर्पण-

कैर्यापि सम्भूपयेतु सुपटैरयधण्डिकाभि वास्तुशास्त्रेऽप्येवम् तोरण शब्दा-
 थमाह— तोरणानिवहिद्वाराणि ॥ तोरणोऽस्त्रीवहिद्वारमित्यमर ॥ तोरणनिर्माणमाह—
 तस्मात्करैवाद्धिकरेऽपिहस्तेदीर्घाणिवाहां ७ ग ६ शरैस्तुकाष्ठे । अश्वत्थयज्ञानं जटोपटानां
 श्रेष्ठादिपुस्त्यु खलु तोरणानि । स्पष्टम्— तस्मान्मण्डपात्करे हस्तमात्र वाद्येद्वारामे चतुर्षु द्वारेषु
 तोरणानिकुर्यात् ॥ पिंगलमनत्रु— हस्तद्वयवह्निस्त्यक्त्वा तोरणानि निवेशयत् ॥ तोरणार्थ-
 वृत्ता— अश्वत्थोदुवर प्लवत्पटशास्त्राकृतानिच । मण्डपस्यप्रतिदिशं द्वाराण्यतानिभारयेत् ॥
 द्वाराणि तोरणानिवहिद्वाराणीत्यर्थ ॥ तोरणोपरिफलकं क्रीलनम्— रत्नाकरम्— प्राच्या
 दिदिक्षुपरितोमनोज्ञ चूडामुदेयफलकं हितेषाम् ॥ तर्द्धमानतु निवेशनीयामभ्य सजातीयकदारु
 कोल ॥ रुपिलपत्ररात्रे— देवास्तोरणरूपेण सस्थितायज्ञ मण्डपे । सर्वविघ्नप्रिनाशार्थं रक्षार्थं
 चाध्वरस्यच ॥ फलकानांमाह— अर्थादिके दि १० गूरवि १२ शक १४ पय दाधस्तता
 स्वाप्रिमितामनोज्ञा । फलकोपरिचिन्हान्याह— विष्णुवायुधामा अथ विष्णुयामे शैवत्रिशूला
 स्वधरागुलोना । स्पष्टम्— विष्णुयामे फलकोपरि विष्णुवायुधानि शसत्रकगदा कमलाना
 माकाराणिचिन्हानिकुर्यात् ॥ शैवेशि वायुधानादिषु, त्रिशूलाकारचिन्हानि विष्णुवायुध पञ्चया,
 एकागुलानानिकुर्यात् ॥ वास्तुशास्त्रे— मस्तकेद्वादशांशेन शयत्रचकगदाम्बुज ॥ तोरणानां
 प्रकुर्याद्वैपुर्वादिषुकमाद्बुध ॥ पिंगलमते— शूलैरचिन्हिता कार्याद्वारशास्त्रास्तुमस्तके । शूले
 ननागुलदैर्घ्यतुरीयांशेन विस्तृत ॥ स्तभतारणादीं ना पूजनविधानपूजाप्रयोगे वक्ष्यामि ॥
 मण्डपेवेदीना निर्माणं रत्नाधल्याम्— अथ प्रधानादपियत्रपूर्वं प्रहाधिवासश्चतदाप्रधानम् ।
 ईशानवेशेच ततस्त्ववाच्या श्रोत्रेऽवेदि करयिस्तृताञ्चा । कर्मविशेषेवर्द्धमानम्— रुद्रादी
 ह्वनेधवेदिरधवा वेदा ४ ग ६ नागै = करैरेकद्वित्रिमि रगुलैश्चकयिता रानादपुन्यूनता ।
 पादोचाधतुलाविधौतुनाभि ६ नागै = स्वरैवापिसा द्वाभ्यासार्थं करेणहस्त १ विमिता प्युन्वाध
 वाप्या दिषु ॥ क्रियास्तम्— हस्तमात्रतदुत्लेधचतुरस्र समन्तत । हस्तानतानविस्तीर्णं
 चतुर्हस्ते समन्तत । निद्रातशेखरे— वेदीचतुर्विधाप्राक्का चतुरस्राचपद्मिनी । श्रीधरी सर्वतो
 भद्रा दीक्षासुस्थापनादिषु । चतुरस्राचतु कोणा वेदीसर्वफलप्रदा । तडागादि प्रतिष्ठाया पद्मिनी
 पद्मसन्निभा ॥ राक्षास्यात्सर्वतोभद्रा चतुर्भद्राऽभिपचने । विवाहे श्रीधरीवेदीविशत्यस्र समन्विता ।
 मण्डपेवेदीना द्विपरत्वेनस्थापनकम मथानभैरवतत्रे शेषव्यातत स्यात् हस्तमकतुवि
 स्तरे । उच्छ्रायोऽर्काङ्गुल प्रोक्त स्नानवेदीद्विहस्तका । आग्नेयां मातृकावदी वास्तुवेदीचनैःस्त
 क्षेत्रपालस्य वायव्या भीशान्यांच नमप्रहा ॥ अथपूर्वादिदिल्लुमण्डपाद् वहिध्वजावस्था-
 नमाह— पूर्वस्यादिशि पीतवर्णहचिरा नापांकितेन्द्रस्वयं आग्नेय्यात्वधवन्हिवर्णसदृशा भेषा
 कितानेध्वजा । स्यात्कृष्णायमवाहनाद्धितध्वजा ऽ वाच्यायमस्यैवच ॥ पञ्चास्याद्धित स्यामवण
 रुचिरानैर्ऋत्यगानिर्ऋते । १। स्वैतास्फटादिकवत्तथा जलपतेर्मत्स्याकितापश्चिम वायव्याच सधूम्र
 वर्णसदृशा वायो कुरत्ताह्निता ॥ औदीच्याच तुरग चिन्हसहिता पीताङ्गुलैरस्यर्थ । ईशाने रूपमे
 श्वरस्यचसिता, गोवाहनेनाकिता ॥२॥ दिगीशानांच पूर्वोक्ताध्वजावशु वैक्रमात् ॥ मण्डपस्य
 चरक्षार्थं सस्थाप्यायत्सतोयुधै ॥३॥

मण्डपार्थ भूमिपूजा पद्धतिः ।

शारदा तिलके—ततो भूमितले शुद्धे तुपारांगार वजिते
 पुण्याह वाचयित्वा तु मण्डपं रचयेच्छुभम्, भूम्यादि पूजनं
 मात्स्ये—वाराहं कूर्मशेषौ च क्षितिचैव विधानतः,, पूजयेद्वास्तु
 कार्येषु विधिना साधकौत्तमः,, अथच कुण्डमण्डपादिविधानकर्त्ता
 वास्तुशास्त्रानुसारेण भूमि परीक्ष्य, तत्र शुभेदिनेगत्वामध्यभागे
 काष्ठपीठोपरि गणेशंस्थापयित्वा स्वस्ति वाचनं पठित्वा तत्रैव
 भूमौ वाराह यंत्रं चिन्वित्वा । तदुपरिपार्थिवंश्वेतवस्त्रं प्रसार्य
 पूजनं कुर्यात्—आचम्य प्राणायामादिकं कृत्वा सङ्कल्पः—अथे-
 त्यादि० असुकोहं कर्त्तव्यासुकुण्डमण्डपादि रचनकर्मणि पृथि-
 वी वराह कूर्मशेषाणां पूजनं करिष्ये—तत्रादौ पृथिवीं—ॐ भूर्भुवः
 स्व पृथ्वी मावाहयामि—ॐ पृथिव्यैनमः इतिमंत्रेण पाद्यादिभिः
 सम्पूज्य प्रार्थयेत्—वराहं—ॐ भू० ॐ दष्ट्रोद्धत वसुंधराय
 वराहाय नमः, इति वराहं पूजयित्वा,, कूर्मम्—ॐ भूर्भुवः स्वः
 कूर्ममा० ॐ पृष्ठोद्धत वसुंधराय कूर्मायनमः,, इति सम्पूज्य,,
 शेषंपू०—ॐ भू० ॐ सहस्रफण विराजमानाय फणोपरिपृथ्वी
 धरायनमः,, इति सम्पूज्य,, यजमानमभिषिच्य,, मध्यशंकुस्था-
 पयित्वापूर्वोक्त परिभाषानुसारेण मण्डपंयथाविभवं विरच्य
 मण्डपविस्तारात्स्तंभानुद्धित्याच्चाद्य तोरणानि चतुर्द्वाराणि कल्प-
 यित्वा वक्ष्यमाण पद्धत्या पूजनादिकं कुर्यात् ।

इति भूमिपूजा पद्धति ।

अथ स्तम्भ पूजापद्धतिः ॥

ततःकर्त्ता हस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्य प्राणायामत्रयंकृत्वा ईशानस्थरक्षादीपं प्रज्वाल्य सम्पूज्यच । प्रतिज्ञासङ्कल्पं कुर्यात्—
 अथेत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रो ऽमुकशर्माऽहं करिष्यमाणो
 ऽमुककर्मणि तदुपयोग्य युतात्मकअमुककर्मसंरक्षणाय पूर्वाङ्गतया
 सदीपपोडशचरणकलश पूजनपूर्वकब्रह्मादिपोडशसरल कदलीमय
 सस्थूणशक्तिसहितान्स्तंभान्पूजयिष्ये ॥ तत्रादावाभ्यन्तरोशाने—पृथि-
 व्यां स्तम्भमूले पुटकंसंस्थाप्य, यवान्गृहीत्वा—३० औपधयः
 समवदन्तसोमेन सहराजायस्मैकृणोति ब्राह्मणस्त ई० राजन्पार-
 यामसि ॥ इतियवांस्तत्रक्षिप्त्वा,, कलशंतदुपरि । ३० आजिघ
 कलशं मध्यात्वाविशान्तिवन्दवः पुनरूर्जानिवर्त्तस्वसानः सहस्रं
 धुत्तोधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः ॥ संस्थाप्य ॥ ३० व्वरुण
 स्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भ सज्जनीस्थो व्वरुणस्य ऋतसद-
 न्यसि व्वरुणस्य ऋतसदनमसिव्वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥ इत
 जलेनापूर्य,, ततस्तदुपरिधान्यपूर्णापात्रं—३० पूर्णादर्विपरापत ।
 सुपूर्णापुनरापत । व्वस्नेव विक्रीणावहाऽहपमूर्ज ई० शतक्रतो ॥
 ततः ३० वरुणायनमः,, इतिमंत्रेण कलशंसम्पूज्य, एवंरीत्या
 स्तम्भपूजनादौ सर्वत्रकलशस्थापनंकृत्वा) ईशानस्तम्भंपूजयंत साक्षत
 पुष्पः ब्रह्माण्ध्यायंत—एह्येहिविप्रेन्द्रपितामहेश हंसादिरूढ स्त्रिदशैक
 वंच्यः । श्वेतोत्पलाभासकुशाम्बुहस्त गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ३०
 ब्रह्मयज्ञानमिति गौतमऋषिसिण्डुप्लुन्दो ब्रह्मादेवता मण्डप संर-
 क्षणार्थस्तम्भेब्रह्मास्थापने विनियोगः—ऋक्—३०ब्रह्मयज्ञानं प्रथमंपु-
 रस्ता द्विसीमनः सुरचोव्वेनऽआवः । सवुध्न्याऽअस्यविष्टाः उपमाऽ
 सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः । ३० भूर्भुवः स्वः, भोब्रह्मन्निहागच्छे
 हतिष्ठ,, सुप्रतिष्ठितोवरदोभव ॥ ३० ब्रह्मस्तम्भायनमः, इति
 सम्पूज्यप्रार्थयेत्—३० कृष्णाम्बराजिनधर, पद्मासनचतुर्मुख, माला
 कमण्डलुधर प्रसीदकमलासन ॥ इति संप्रार्थ्य स्तम्भेशक्ति पूजनं

कुर्यात्- ॐ सावित्र्यैनमः, ॐ ब्राह्म्यैनमः, ॐ गङ्गायैनमः,,
 संपूज्यस्तम्भमालभ्य,, ॐ ऊर्ध्वऊपुणऽऊतयेतिष्टा देवोनसविता
 ऊर्ध्वोव्वाजस्यसनिया यदञ्जिभिर्वाघिर्द्विर्विह्वयामहे ॥ स्तम्भ-
 शिरसि, ॐ नागमात्रेणमः । सम्पूज्य, शाखावन्धनंकुर्यात्-ॐ
 आयंगोः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः पितरश्च प्रयन्त्स्वः,, ततः
 क्षमापयेत्-यतोयतः समीहसे ततो नोऽद्यभयंकुरु । शन्नः कुरु-
 प्रजाभ्योभयंनः पशुभ्यः ॥ ॐ भोब्रह्मन् स्तम्भरूपेण पूजितोऽ-
 स्मिन्मखेमया । स्थिरो भवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यसमाप्यते ॥ भो-
 ब्रह्मदैवतस्तम्भ पूजितोसिच्चमस्व एवं सर्वत्र ॥ तत आभ्यन्तरा-
 ग्नेये-विष्णुमावाहयेत्-ॐ एहोहि नारायणदिव्यरूप सर्वाभिरै-
 रचितपादपद्म । शुभा शुभानन्दशुचामधीश गृहाण पूजां भगवन्न-
 मस्ते ॥ ॐ इदं विष्णुरिति मेधातिथि ऋषिर्गायत्री छन्दो विष्णुदे-
 वता विष्णुस्थापने विनियोगः ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निद-
 धेपदम् । समूहमस्य पा ॐ सुरेखाहा ॥ ॐ भू० भोविष्णो इहा
 गच्छेहतिष्ठ,, ॐ विष्णुरूपिणे स्तम्भाय नमः सम्पूज्य, प्रार्थयेत्-
 ॐ महाविष्णो नमस्तेऽस्तु देवदेव जगत्पते,, यज्ञपाहि, सुरेशस्त्वं
 श्रीनाथ भक्तवत्सल ॥ स्तम्भे शक्तिपू० ॐ लक्ष्म्यैनमः, ॐ नन्दा-
 यैनमः, ॐ वैष्णव्यैनमः,, सम्पूज्य स्तम्भमालंमनम् ॐ ऊर्ध्व-
 ऊपुणः० स्तम्भशिरसि ॐ नागमात्र्यैनमः सं० । शाखावन्धनम्-
 ॐ आयंगोः० ॥ ॐ भोविष्णो स्तम्भरूपेण पूजितोऽस्मिन्मखे-
 मया ॥ स्थिरो भवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यसमाप्यते ॥ भो विष्णुदैव-
 तस्तम्भ पू० ॥ २ ॥ ततो नैर्ऋत्ये-रुद्र-एहोहि गौरीशपिनाक
 पाणे शशाङ्कमौले वृषभाधिरुद्र । गणाधिदेवेश च रुद्रदेव गृहाण
 पूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐ नमस्त इति वामदेव ऋषिन्निष्ठुच्छन्दो
 रुद्रो देवता मण्डपसंरक्षणार्थं स्तम्भे रुद्रस्थापने विनियोगः । ॐ
 नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतो त इषवे नमः । वाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐ भू०
 भोरुद्र इहा गच्छेहतिष्ठ, ॐ रुद्राय नमः सम्पूज्य ॥ स्तम्भे-ॐ
 माहेश्वर्यैनमः, ॐ गौर्यैनमः, ॐ शोभनायैनमः ॥ सम्पूज्य,,

शेषपूर्ववत् ॥३॥ ततोवायव्ये, इन्द्रं आवाहयेत्—एहोहिदेवेन्द्र
सुरेशवन्द्य शचीपतेवज्रधरामरेश,, संस्तृत्यमानोप्सरसांगणेन
गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ३० त्रातारमिति गर्गऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द
इन्द्रोदेवता मण्डपसंरक्षार्थस्तम्भे, इन्द्रस्थापने वि० ॥ ३० त्रातार
मिन्द्र भवितारमिन्द्र ई० हवेहवे सुहव ई० शूरमिन्द्रम् । ह्यामि-
शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ई० स्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥ ३० भू० भो
इन्द्रे हागच्छेदितिष्ठ, ३० इन्द्रायनमः सं० स्तम्भेशक्ति पू० ३०
इन्द्रायैनमः,, ३० आनन्दायैनमः,, ३० विभृत्यैनमः । स्तम्भ-
स्पर्शनादिकंपूर्ववत् प्रार्थयेत्—३० भोइन्द्र स्तम्भरूपेण पूजितो
ऽस्मिन्मखेमया, स्थिरोभवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यसमाप्यते ॥४॥
ततो वाह्येशाने—सूर्यमावाहयेत्—३० एहोहिसप्ताश्वरथाधरुद्ध सह-
स्ररश्मिन्करुणेशभानो । श्रीकाश्यपेयारुण वर्णं सूर्यगृहाणपूजां
भगवन्नमस्ते ॥ ३० चित्रं देवानामिति कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः
सविता देवतास्तम्भे मण्डप संरक्षणार्थं सूर्यस्थापने वि० ॥ ३०
चित्रं देवाना मुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्रा-
द्यावा पृथिवीऽथन्तरिक्ष ई० सूर्यऽथात्मा जगतस्तस्तुषश्च ॥
३० भू० भोसूर्येहागच्छेदितिष्ठ ३० सूर्यायनमः, सम्पूज्य स्तम्भे
शक्तिपू०—३० सावित्र्यैनमः, ३० ह्यायैनमः, ३० संज्ञायैनमः,
सम्पूज्यस्तम्भालंभनादिकं पूर्ववत् ॥ प्रार्थयेत्—भोसूर्यस्तम्भ-
रूपेण पूजितोऽस्मिन्मखेमया ॥ स्थिरोभवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यं
समाप्यते ॥५॥ ततईशान पूर्वयोरन्तराले—गणेशमावाहयेत्—एहो-
हि लम्बोदर नागवक्त्र गणेशगौरी सुतदेवदेव ॥ सन्मङ्गलेत्वं
प्रथमप्रधान गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ३० गणानान्त्वेति प्रजा-
पतिऋषिर्यजुश्छन्दो गणपतिदेवता मण्डप संरक्षणार्थस्तम्भे गण
पतिस्थापने वि० ॥ ३० गणानान्त्वा गणपति ई० हवामहे प्रिया-
णांत्वा प्रियपति ई० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ई० हवा
महे न्वसोमम ॥ आहमजा निगर्भर्धमात्वमजासिगर्भर्धम्,
३० भूर्भुवः स्वः, भोगणेशेहागच्छेदितिष्ठ,, ३० गणेशायनमः

सम्पूज्यस्तम्भे शक्तिपूजनं कुर्यात्—ॐ विघ्नहारिण्यैनमः, ॐ
 ऋधयैनमः, ॐ सिधयैनमः, शेषं पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ
 गणेशस्तम्भ रूपेण पूजितोऽस्मिन्मखेमया, स्थिरोभवात्ररक्षार्थं
 यावत्कार्यं समाप्यते ॥६॥ ततः पूर्वाग्नेययोरंतराले यममावाह
 येत्—ॐ एहोहिसूर्यात्मज धर्मराज लोकेशनैय्याधिकधर्मशील ॥
 विशाल वक्षस्थल दण्डधारिन्गृहाणपूजां—भगवन्नमस्ते ॥ ॐ
 यमायत्वेति दध्यङ्ङाधर्वण ऋषिर्यजुश्छन्दो यमोदेवता मण्डप-
 संरक्षणार्थस्तम्भे यमस्थापने वि० । ॐ यमायत्वा मास्वायत्वा
 सूर्यस्यत्वा तपसेदेवस्त्वा सविता मध्वानक्तुपृथिव्याःसर्वेस्पृश-
 स्पाहि, ॐ भू० भोयम इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ यमायनमः सम्पूज्य
 स्तम्भे शक्ति पू० ॥ ॐ पूर्वसन्ध्यायैनमः, ॐ क्रूरायैनमः, ॐ
 नियन्त्रयैनमः, शेषं पूर्ववत्—सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ भोयमस्तम्भ-
 रूपेण पूजितोऽस्मिन्मखेमया, स्थिरोभवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यं
 समाप्यते ॥७॥ ततो बाह्याग्नेयकोणे नागराजमावाहयेत्—ॐ
 एहोहि नागेन्द्र सहस्रमूर्धन्पातालवासिन बहुक्रोधधारिम्, नागां
 गनाभिः स्तुतिगीयमान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐ नमोस्तु
 सर्वेभ्यःइति देवाश्रवाऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो नागराजो देवतामण्डप
 रक्षणार्थस्तम्भे नागराजस्थापने विनियोगः ॥ ॐ नमोस्तु सर्वे-
 भ्यो येकेच पृथिवी मनुष्येऽन्तरिक्षेदिवितेभ्यः सर्वेभ्योनमः ॥
 ॐ भू० नागराजेहागच्छेहतिष्ठ, ॐ नागराजायनमः सम्पूज्य
 स्तम्भेशक्तिपूजनं कुर्यात्—ॐ अधरायैनमः, ॐ पद्मायैनमः, ॐ
 महापद्मायैनमः ॥ शेषं पूर्ववत्सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ भोनागस्त
 म्भरूपेण पूजितोऽस्मिन्मखेमया ॥ स्थिरोभवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यं
 समाप्यते ॥८॥ तत आग्नेयदक्षिणयोरंतराले स्कन्दमा वाहयेत्—
 एहोहि गौरीसुत देव देव, पट्कृत्तिकानन्दन सिद्धवन्ध, मयूर-
 वाह प्रणतार्तिहारिन्गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐ यदक्रन्द
 इति भार्गव जमदग्नि दीर्घ तमसा ऋषयस्त्रिष्टुप्छन्दः स्कन्दो
 देवता मण्डप रक्षणार्थस्तम्भेस्कन्दस्थापने वि० ॥ ॐ यदक्रन्दः

प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्रा द्रुतवापुरीपात् ॥ श्येनस्यपत्न्या हरि-
णस्यवाह उपस्तुत्यंमहिजातन्ते अर्ध्वन् ॥ ॐ भू० भोस्कन्द इहा
गच्छेहतिष्ठ ॐ स्कन्दयनमः सम्पूज्यस्तम्भे-शक्ति पू० । ॐ
जयायै नमः, ॐ विजयायै नमः । ॐ पश्चिमसन्ध्यायै नमः । शेषं
पूर्ववत् ॥ प्रार्थयेत्—ॐ सेनानिस्तम्भरूपेण पूजितोऽस्मिन्मखे
मया ॥ स्थिरो भवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥ ६ ॥ ततो
दक्षिणैर्ऋत्ययोरंतराले वायुमावाहयेत्—ॐ एहोहिवायो मन्वर
क्षणाय कुरङ्गवाह जगदाभिवन्द्य, सर्वप्रिय प्राण शरीरधारिणां
गृहाणपजां भगवन्नमस्ते । ॐ वायुरिति वशिष्टऋषिस्त्रिष्टुष्टन्दो
वायुदेवता मंडप संरक्षणार्थं स्तम्भे वायुस्थापने वि० ॥ ३० वायु-
रग्नेरग्नेगायत्रीः साकंगन्मनसायज्ञं शिवोनियुद्धिः शिवाभिः,
३० भू० वायो इहागच्छेहतिष्ठ, ३० वायवे नमः सम्पूज्य शक्ति
पू० ॥ ३० तीव्रायै नमः । ३० गायत्र्यै नमः । ३० वायव्यै नमः, शेषं
पूर्ववत्—ततः प्रार्थयेत्—३० वायोस्त्वंस्तम्भरूपेण पूजितोऽस्मि-
न्मखेमया । स्थिरो भवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥१०॥ ततो
नैर्ऋत्ये सोममावाहयेत्—एहोहिराशीश शशांकरूप विधत्स्वरक्षां
स्वगणेनसाध्दम् ॥ द्विजाधिदेवेश सुधामयेश गृहाणपजां भगव-
न्नमस्ते ॥ ३० सोममिति वन्दुर्ऋषिर्गात्रीष्टुन्दः—सोमो देवता
मण्डप संरक्षणार्थं स्तम्भे सोमस्थापने वि० ॥ ३० सोम ई०
राजानं साग्निमन्वारभामहे । आदित्यान्वाणु ई० सूर्यं ब्रह्माणं
च वृहस्पति ई० स्वाहा ॥ -३० भूर्भुवः स्वः भोसोम इहागच्छेह-
तिष्ठ, ॐ सोमाय नमः, सम्पूज्य स्तम्भे शक्ति पू० ॥ ॐ सावि-
त्र्यै नमः । ॐ अमृतकलायै नमः । ॐ विजयायै नमः ॥ शेषं
पू० । ततः प्रार्थयेत्—भोसोमस्तम्भरूपेण पूजितोऽस्मिन्मखेमया ।
स्थिरो भवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥११॥ ततः पश्चिम
नैर्ऋत्ययोरंतराले वरुण मावाहयेत् ॥ ॐ एहोहिवाशिन्सरिता
मधीशलोकेश देवेश समुद्रनाथः, केयूरवान्कुरण्डल हारधारिन्-

हाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ३० इमम्मेवरुणेति वत्सऋषिर्वृहती
 छन्दो वरुणो देवता मण्डपरक्षणार्थं स्तम्भे वरुणस्थापने वि० ॥
 ३० इमम्मेववरुणश्रुधी, ह्यमद्याचमृडय, त्वामवस्युराचके ॥ ३०
 भू० भोवरुणेहागच्छतेहतिष्ठ,, ३० वरुणायनमः,, स्तम्भे शक्ति
 पू० । ३० वारुण्यैनमः । ३० बार्हस्पत्यै नमः । ३० पाशधारि
 र्यैनमः । सम्पूज्य शेषं प० । प्रार्थयेत्—३० वरुणस्तम्भरूपेण
 पजितोऽस्मिन्मखेमया । स्थिरो भवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यं समा-
 प्यते ॥१२॥ ततः पश्चिम वायव्ययोरंतराले वसूनावाहयेत्—३०
 इतेतदेवा वसवो सुरूपाः सौन्दर्यमुख्यागुण शीलवन्तः । सुपुष्प
 मालाभिरलंकृताश्च गृहीध्वमत्रार्चन मानतोऽस्मि ॥ ३० सुगाव
 इति वसिष्ठ ऋषिर्गायत्री छन्दो वसवो देवता मण्डप संरक्षणार्थं
 स्तम्भेवसूनां स्थापने वि० ॥ ३० सुगावो देवाः सदनाऽन्नकर्मयऽ-
 आजग्मेद र्दं० सवनंजुपाणाः । भरमाणा ब्रह्मानाहवीर्ष्य
 स्मेघत्त वसवो ब्रह्मसूनि स्वाहा ॥ ३० भू० भोवसव इहागच्छ
 तेह तिष्ठत, ३० वसुभ्योनमः,, सम्पूज्य शक्ति पू० ॥ ३० विन-
 तायैनमः । ३० गरिमायैनमः । ३० सम्भृत्यैनमः सम्पूज्य
 प्रार्थयेत्—३० वसवोऽष्टौ महाभागाः स्तम्भेऽस्मिन्पूजितामयाता
 वत्तिष्ठन्तु रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥१३॥ ततो वायव्ये धन
 दमावाहयेत्—३० एहोहियक्षैः परिसेव्यमान विशालयानेश्वर
 किन्नरेश ॥ ममाध्वरंरक्ष कुबेरदेव गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ३०
 सोमोधेनुमिति गोतमऋषिस्त्रिष्टुब्धुन्दो धनदो देवता मण्डप
 संरक्षणार्थंस्तम्भे कुबेरस्थापने वि० ॥ ३० सोमोधेनु र्दं० सोमोऽ-
 ब्रवन्तमाशु र्दं० सोमोवीरं कर्मण्यं ददाति ॥ सादन्यं विदत्त्य
 र्दं० सभेयं पितृ श्रवणं यो ददाशदस्मै ॥ ३० भू० भोकुबेरेहा-
 गच्छेहतिष्ठ ३० कुबेरायनमः,, सम्पूज्य शक्ति पू० । ३० अदि
 त्यैनमः । ३० सनीवालयैनमः । ३० लघिन्यैनमः सम्पूज्य
 प्रार्थयेत्—३० धनाध्यक्ष महावाहोस्तम्भेऽस्मिन्पूजितोमया ॥ स्थि-
 रो भवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥१४॥ तत उत्तर वायव्या

न्तराले बृहस्पति मावाहयेत्—३५ एहोहिविप्रेन्द्र सुरेश मन्त्रिन्बृ-
हस्पतेदेवगुरो प्रशान्त ॥ पीताम्बरा लंकृत देववन्द्य गृहाणपूजां
भगवन्नमस्ते ॥ ३० बृहस्पत इति गृत्समदश्रुपिस्त्रिष्टुप्स्तुदो बृह-
स्पतिदेवता मण्डपसंरक्षणार्थस्तम्भे बृहस्पतिस्थापने विनियोगः ॥
३० बृहस्पतेऽश्रुतिदय्यो अर्हाशुमद्विभातिक्रतुमजनेषु । यदीदय-
च्छ्रवसऽश्रुत प्रजा तत दस्मासुद्रविण्धेहि चित्रम् ॥ ३० भूर्भुवः
स्वः, भोबृहस्पते, इहागच्छेहतिष्ठ,, ३० बृहस्पतयेनमः सम्पूज्य
स्तम्भे शक्ति पू०,, ३० पौर्णमास्यैनमः, ३० वेदमास्यैनमः । ३०
सन्नत्तयैनमः, सम्पूज्यशेषं पूर्ववत्—ततः प्रार्थयेत्—३० भोगुरो
स्तम्भरूपेणपूजितोस्मिन्मखेमया । स्थिरो भवात्र रक्षार्थं याव-
त्कार्यं समाप्यते ॥१५॥ तत उत्तरेशानान्तराले विश्वकर्माणमावा-
हयेत्—३० एहोहि शिल्पज्ञ विशालबुध्दे, प्राकारनिर्माण कलाय-
गण्य ॥ दोर्देण्ड संसाधित सर्वकार्यगृहाणपूजां भगवन्नमस्ते,, ३०
विश्वकर्मन्नितिमन्त्रस्य शासश्रुपिस्त्रिष्टुप्स्तुदो विश्वकर्मा देवता
मण्डप संरक्षणार्थं स्तम्भे विश्वकर्म स्थापने वि० ॥ ३० विश्व
कर्मन्हविषावर्धने नत्रातारमिन्द्रमकृणोरबध्यं तस्मैविशः । सम-
नमन्तपूर्वीरयमुग्रोविह्वयो यथासत् ॥ ३० भू० विश्वकर्मन्निहा-
गच्छेहतिष्ठ ॥ ३० विश्वकर्मणेनम', सम्पूज्य, स्तम्भे शक्ति पू०,,
३० वास्तुदेवतायैनमः, ३० वैश्वकर्मिण्यैनमः, ३० शारदायै नमः,
सम्पूज्य शेषं पूर्ववत्—ततः प्रार्थयेत्—३० विश्वकर्मन्मयाचात्र
स्तम्भे सम्पूजितो नघ,, स्थिरो भवत्वं रक्षार्थं यावत्कार्यं
समाप्यते ॥

इति षोडशस्तम्भ पूजापद्धति ॥

(यद्यपिस्तम्भ पूजा शास्त्र कारेणदर्शितान च तत्पूजायां प्रमाण वाक्या न्युप-
लभ्यन्ते तथापि देशान्तर स्तस्या आवश्यकत्वान्मयापिदर्शिता) ॥



अथ तोरण पूजापद्धतिः ध्वजारोपण सहिता ॥

अथच पूर्वपरिभाषोक्तरीत्या मण्डपाद्धस्तं मात्रं वहिश्चतुर्द्धा-
 राणि तोरणानि प्रकल्प्य सुसज्यच. वक्ष्यमाण प्रकारेण पूजनं
 कुर्यात् ॥ तत्रादौ पूर्वद्वारं तोरणं पूजयत्—अक्षत पुष्पादिभिः,, तोरणो
 र्ध्वभागे—३० श्रियैनमः,, स्थापयामि पूजयामि,, अधः—३०
 देहल्यैनमः,, स्थाप० । पूज० ॥ तत उत्तर दक्षिण स्थम्भमूले
 द्वेकलशेचिन्यस्य,, कलश स्थापन पूजन, विधिना संस्थाप्य सम्पू-
 ज्यच,, उत्तरस्तम्भे स्वदक्षिणभागे—३० स्कन्दायनमः स्कन्दमावा-
 हयामि स्थापयामि,, स्ववामे—३० गणेशायनमः,, गणेशमावा-
 हयामि स्थापयामि, द्वारकलशद्वये, ३० गङ्गायैनमः,, ३० यमुना-
 यैनमः,, इति नाममन्त्रैः सम्पूज्य,, ततः शङ्खांकित तोरणं पूर्वद्वारं
 हस्तेन स्पृष्ट्वा मन्त्रः—३० अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्यदेव हत-
 मम् ॥ होतारं रत्नघातमम् ॥ ३० एतन्तेति० पठित्वा,, ३० भूर्भुवः
 स्वः सुदृढतोरण, इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदोभव,, इत्येवं
 प्रतिष्ठाप्य,, ३० सुदृढतोरणायनमः,, इति मन्त्रेण सम्पूज्य ॥ तत्र
 ३० राह्वेनमः,, राहुमावाहयामि, ३० बृहस्पतयेनमः,, बृहस्पति
 मावाहयामि, स्था० पू० ॥ तत्रद्वाराद्बहिः ॥ ३० एरावत दिग्गजा-
 यनमः,, स्थापयामि, पूजयामि, प्रार्थयेत्—एरावतं स्थापयामि
 रक्षार्थद्वारदिग्गजम् ॥ यावत्कार्यं समाप्तिश्च चतुर्दन्त स्थिरोभव,
 तत ऋग्वेदिनौ द्वारपालौ ऋग्वेद शांतिपाठकौ, आहूय गन्धादिना
 सम्पूज्य,, ३० ऋग्वेदः पद्मपत्राक्षो गायत्रः सोमदैवतः ॥ अग्नि
 गोत्रस्तु विप्रेन्द्र शांतिपाठंमखेकुरु ॥ एवंद्वितीयञ्च सम्प्रार्थ्य, तत,
 इन्द्रमावाहयेत्—३० एह्येहि सर्वामरसिद्धसाधयै, रभिष्टुतोवज्र
 धरामरेश । सवीज्यमानो ऽप्सरसाङ्गणेन रक्षाध्वरंनो भगवन्न
 मस्ते ॥ तत एरावतां कितां वज्रांकितांच पताकामानीय गन्धादि-
 भिः ३० आशुः शिशानो वृषभोनभीमो घनाघनः क्षोभणध्वर्यणी-
 नाम ॥ संक्रन्दनोऽनिमिषऽएकवीरः शन र्द० सेनाऽअजयत्साक

मिन्द्रः, इति मन्त्रेण सम्पूज्य च ध्वजमुच्छ्रित्य तत्र ध्वजे—ॐ इन्द्राय
 नमः, सम्पूज्य, प्रार्थयेत् ॐ देवराजनमस्तुभ्यं ध्वजेऽस्मिन्स्था-
 पितो मया ॥ स्थिरो भवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यसमाप्यते ॥ तत
 आग्नेये रक्तवर्णा मेपाङ्किता मग्निदेवतकां ध्वजामानीय—तत्र
 कलशसंस्थाप्य, ॐ पुण्डरीकामृताय नमः इति मन्त्रेण तत्र पुण्ड-
 रीकामृतसम्पूज्य, अग्निं ध्यायेत् ॐ एहो हि सर्वा मरुद्ब्यवाह
 मुनि प्रवीरैरभितो ऽभिजुष्ट । तेजोवता लोकगणेन सार्धं, ममाध्व
 रम्पाहिकवे नमस्ते । ॐ भू० भो अग्ने इहागच्छे हतिष्ठ ॥ ॐ
 अग्नेये नमः कलशे अग्निं सम्पूज्य, ध्वजां हस्ते कृत्वा, ॐ अग्नि-
 नृतं पुरोदधे हव्यव्याहमुपसृवे ॥ देवा २९ आसादयादिह, इति
 ध्वजमुच्छ्रित्य, ॐ अग्नेये नमः, सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॐ अग्निदेव
 नमस्तुभ्यं ध्वजेऽस्मिन्स्थापितो मया ॥ स्थिरो भवात्र रक्षार्थं याव-
 त्कार्यसमाप्यते ॥ ततो दक्षिणद्वार तोरण पूजनम् ॥ ततो द्वार-
 ऊर्ध्वं—ॐ अग्नये नमः, अधः—ॐ देहल्यै नमः पूर्ववत्कलश द्वयं पूर्व-
 पश्चिम शाखयोर्मूले स्थापयित्वा पूजयित्वा च तेनैव क्रमेण—ॐ
 पुष्पदन्ताय नमः स्थापयामि पू० । ॐ कपर्दिने नमः स्था० पू०
 कलशद्वये—ॐ गोदायै नमः, ॐ कृष्णायै नमः । सम्पू० । ततश्च
 प्राङ्कित तोरण दक्षिणद्वारं हस्तेन स्पृष्ट्वा वक्ष्यमाण मंत्रेण—ॐ इवे
 त्वोजेत्वा व्वायवस्थ देवोवः सविता प्रार्थयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण
 ऽ आप्याय ध्वमग्न्या ऽ इन्द्राय भागं प्रजावती रनमीवा ऽ अयक्ष्मा
 मावस्तेन ऽ ईशतमाघश र्दं सोध्रुवा ऽ अस्मिन् गोपतौ स्यात
 वह्नीर्यजमानस्य पशुन्पाहि ॥ ॐ समुद्र तोरणाय नमः ॥ इति
 सम्पूज्य प्रतिष्ठाप्य च द्वारशाखयोः—ॐ सूर्याय नमः, ॐ भौमा-
 य नमः, स्था० पू० ॥ ततो वामनाख्य दिग्गजमावाहयेत्—ॐ
 वामनाख्य दिग्गजाय नमः स्थापयामि पूजयामि, प्रार्थयेत्—वाम-
 नख्यं स्थापयामि रक्षार्थं द्वारदिग्गजम् ॥ यावत्कार्य समाप्तिश्च
 तावत्त्वं रक्षको भव ॥ ततो यजुर्वेदिनी द्वारपालौ यजुः शान्ति-
 पाठकौ, आह्वय गन्धादिभिः सम्पूज्य ॐ कातराक्षो यजुर्वेद

त्रैलोक्यो विष्णुदेवतः । काश्यपेयस्तुविप्रेन्द्र शान्तिपाठं मखेकुरु ॥
 एवंद्वितीयमपिसंप्राथ्यं, ततो दण्डमहिषांकितांध्वजां हस्तेनिधाय
 गन्धादिभिः सम्पूज्य यममावाहयेत्—ॐ एहोहि वैवश्वन धर्मराज
 सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्ते ॥ शुभाशुभानन्द शुचामधीश शिवायनः
 पाहिमग्वंनमस्ते ॥ इत्यावाह्य सम्पूज्य प्रतिष्ठाप्यच । ॐ आयंगौः
 पृथिनरक्रमीद सदन्मातरंपुरः पितरश्च प्रत्यंस्वः, इतिमंत्रेण ध्वज-
 मुच्छिन्न्य, ॐ यमायनमः । इति सम्पूज्य संस्थाप्यच, प्रार्थयेत्—
 ॐ धर्मराज नमस्तुभ्यं ध्वजेऽस्मिन्स्थापितोमया । स्थिरो भवात्र
 रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥ ततो नैर्ऋत्य कोणेकलशं संस्थाप्य,
 तत्रकालशे, ॐ कुमुद दुर्जयाभ्यांनमः, स्थापयामि पूजयामि,
 इति सम्पूज्य—निर्ऋतिंध्यायेत्—ॐ एहोहिरन्तो गणनायकस्त्वं
 विशालवेतालपिशाच संघैः ॥ ममाध्वरंपाहि पिशाचनाथ लोके-
 श्वरस्त्वं भगन्नमस्ते, ॐ भू० भोनिर्ऋते इहागच्छेहोतष्ठ । ॐ
 निर्ऋतयेनमः इति कलशे निर्ऋतिं सम्पूज्य ॥ ध्वजं हस्तेकृत्वा—
 ॐ मोषूणऽइन्द्रात्रपृत्सु देवैरस्तिहिष्मातेऽग्निमन्नवयाः । महश्चि-
 त्तस्य मीदुषो यव्याहविष्मतो मरुतो वन्दतेगीः ॥ इति ध्वज-
 मुच्छिन्न्य, ॐ निर्ऋतयेनमः ध्वजे निर्ऋतिं सम्पूज्य, प्रार्थयेत्—
 ॐ नमस्तुभ्यं निर्ऋतेऽस्तु ध्वजेऽस्मिन्स्थापितोमया, स्थिरो भवात्र
 रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥ ततः पश्चिम द्वार तोरण पूजनम-
 उध्वं—ॐ श्रियैनमः, संपू० अधः—ॐ देहल्यैनमः, ततः
 स्तम्भमूले पूर्ववद्वेकलशे संस्थाप्य सम्पूज्यच, दक्षिणस्तम्भे—ॐ
 चण्डायनमः सं० वामे—ॐ नन्दिनेनमः संपूज्य, कलशद्वये—
 ॐ रेवायैनमः, ॐ नर्मदायैनमः सम्पूज्य, ततो गदांकित तोरणं
 पश्चिमद्वारं हस्तेन स्पृष्ट्वा—ॐ अग्नऽआयाहि वीतये, गृणानो
 हव्यदातये । निहोतासत्सिर्वर्हिपि, एतन्ते० इति प्रतिष्ठाप्य, ॐ
 भू० सुकर्मतोरण इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितोवरदोभव, ॐ
 सुकर्मतोरणायनमः, इति संपूज्य, दक्षिणस्तम्भे—ॐ शुक्रायनमः
 ॐ शुक्रायनमः । वामे—ॐ बुधायनमः स्था० ए० ॥ तत्र द्वारवहिः—

ॐ अञ्जनाख्यं स्थापयामि रत्नार्थं द्वारदिग्गजम् ॥ यावत्कार्यं
समाप्तिश्च तावत्त्वंरत्नकोभव, ततः सामवेदिनौ द्वारपालौ शांति-
पाठ वाचकौ, आह्वयगन्धादिना सम्पूज्य, प्रार्थयेत्—३० साम-
वेदस्तु पिंगाक्षो जागतः शक्रदैवतः ॥ भारद्वाजस्तु विप्रेन्द्र शांति-
पाठं मखेकुरु, एवंद्वितीयमपि, ततो वरुणमावाहयेत्—३०
एहोहि यादोगण वारिधीनां गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभिः । विधा-
धरेन्द्रामरगीयमान पाहित्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥ ततो स्वेत
मत्स्यांकित पाशचिन्हितं स्वेतध्वजं हस्तेनिधाय, ॐ इमंमेव-
रुण श्रुधीहवमथाचमृडय । त्वामवस्युराचके ॥ इतिध्वजमुद्धृत्य,
ॐ व्वरुणायनमः, इतिसम्पूज्य, प्रार्थयेत्—ॐ वरुणायनमः स्तुभ्यं
ध्वजेऽस्मिन्स्थापितोमया । स्थिरो भवात्र रत्नार्थं यावत्कार्यं
समाप्यते, ततो वायव्ये—पूर्ववत्कलशं संस्थाप्य सम्पूज्यच तत्र
—ॐ पुष्पदन्तायनमः स्था० पू० ॐ सिद्धार्थायनमः स्था० पू० ॥
—ॐ भौ सम्पूज्य चायुंध्यायेत्—ॐ एहोहियजे ममरत्नणायमृगा-
दिरुद्धः सहसिद्धसंधैः ॥ प्राणाधिपः कालकवे सहाय गृहाणपूजां
भगवन्नमस्ते । ३० भू० भोवायो इहगच्छेहतिष्ठ, ३० वायवे
नमः० सम्पूज्य धूम्रवर्णमंक्रुश मृगांकितं ध्वजं हस्तेनिधाय
गन्धादिभिः—सम्पूज्य, ॐ वातोवा मनोवा गन्धर्वाः सप्तवि-
ट् ० शक्तिः । तेऽग्रगेश्वर मयुंजस्तेऽ अस्मिञ्जवमादधुः ॥
इति ध्वजमुद्धृत्य, ॐ वायवेनमः ध्वजे चायुंसम्पूज्य, प्रार्थयेत्—
ॐ वायु राजनमस्तुभ्यं ध्वजेऽस्मिन्स्थापितोमया । स्थिरोभवात्र
रत्नार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥ तत उत्तरद्वारतोरण पूजनम्—
ऊर्ध्वम्—ॐ अग्नेयनमः, अधः—ॐ देहल्यैनमः संपू० ॥ ततःस्तम्भ
योर्मूले द्वेकलशे संस्थाप्य सम्पूज्यच ॥ स्तम्भद्वये—ॐ रौद्रायनमः
३० प्रचण्डायनमः सम्पू० ॥ कलशद्वये—ॐ वारुण्यैनमः, ३०
वेण्यैनमः सम्पूज्य—ततः पद्माङ्कित तोरणमुत्तरद्वारं हस्तेन स्पृष्ट्वा
—३० शन्नो देवी रभिष्ठय ऽ आपो भवन्तु पीतये ।
शंयोरभिः श्रवन्तुनः ॥ ॐ भ० सुहोत्र तोरणद्वहागच्छे

हतिष्ठ ॐ शुहोत्र तोरणायनमः सम्पूज्य,, प्रतिष्ठाप्य
 च ॥ दक्षिणस्तम्भे—ॐ सोमायनमः, वामे—ॐ केतवेनमः
 मध्ये ॐ शनिश्चरायनमः, स्था० पू० ॥ तत्रद्वारवहिः—ॐ
 सार्वभौम दिग्गजायनमः ॥ स्था० पू० ॥ इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्—
 ॐ सार्वभौमं स्थापयामि रक्षार्थद्वारदिग्गजम् ॥ यावत्कार्यं
 समाप्तिश्च तावत्त्वं सुस्थिरोभव,, तत अथर्ववेदिनौ द्वारपालौ
 शान्तिपाठवाचकौ, आह्वय गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ
 बृहन्नेत्रो ऽथर्ववेदो ऽनुष्टुभोरुद्रदैवतः । वैशम्पायन विप्रेन्द्र
 शान्तिपाठं मखेकुरु ॥ एवं द्वितीयमपि, ततः कुवेरमावाहयेत्—
 ॐ एहोहि यज्ञेश्वरयज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्र गणेनसार्धम् ॥
 सवौषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते,, ॐ भू०
 भोकुवेर, इहागच्छेहतिष्ठ प्रतिष्ठाप्यच,, ततो हरिद्वर्णं गदाश्वान्-
 कितं ध्वजं हस्तेकृत्वा ॥ ॐ आप्यायस्व समेतुते त्विश्वतः सोम-
 वृष्णयम् । भवाञ्वाजस्यसङ्गथे ॥ इति ध्वजमुच्छ्रित्य,, ॐ कुवे-
 रायनमः इति मन्त्रेणध्वजे, कुवेरं सम्पूज्य,, प्रार्थयेत्—ॐ धना-
 ध्यक्षनमस्तुभ्यं ध्वजेऽस्मिन्स्थापितोमया ॥ स्थिरोभवात्ररक्षार्थं
 यावत्कार्यं समाप्यते,, तत ईशाने—तत्रपूर्ववद् कलशं सम्पूज्य,
 तत्र—ॐ सुप्रतीकायनमः, ॐ भौमायनमः सम्पूज्य,, ईशानं
 ध्यायेत्—ॐ एहोहियज्ञेश्वर नस्त्रिशूल कपालखट्वाङ्ग धरेण
 सार्धम् ॥ लोकेन यज्ञेश्वर यज्ञसिध्वै गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥
 ॐ भू० भोईशाने हागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदोभव, ॐ
 ईशानायनमः सम्पूज्य,, ततस्त्रिशूलाङ्कितं रवेतध्वजं, वृषभचिन्हं
 युनं हस्ते धृत्वा सम्पूज्य—ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुपस्पतिं धियं
 जिन्व भवसे ह्रमहेव्वयम् ॥ पूपानो यथा वेदसाम सद्गृधे रक्षिता
 पायुरदन्धः स्वस्तये,, इति ध्वजमुच्छ्रित्य, ॐ ईशानायनमः ध्वजे
 ईशानं सम्पूज्य, प्रार्थयेत्—ॐ ईशानेश नमस्तुभ्यं ध्वजेऽस्मिन्स्था-
 पितोमया स्थिरोभवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते, तत ईशान-
 पर्वगोरंतराले—ब्रह्माणं ध्यायेत्—ॐ एहोहि सर्वाधिपते सुरेन्द्र

लोकेन सार्धं पितृदेवताभिः ॥ सर्वस्यधाताऽस्यमित प्रभाषो
 विशाध्वरंनः सततंशिवाय,, ॐ भू० भोत्रह्यग्निहागच्छेहतिष्ठ ।
 ततो रक्तध्वजं हंसकमंडल्वो श्विन्हाङ्कितं हस्तेनिधाय,, ॐ
 ब्रह्मजज्ञानम्यथमं पुरस्ताद्द्विसीमतः सुरुचोऽब्धेनऽश्रावः । सवु-
 ध्द्वयाऽउपमाऽअस्यन्विष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चन्विवः ॥ इतिमंत्रे-
 णध्वजमुच्छ्रित्य,, ॐ ब्रह्मणेनमः, इतिध्वजेत्रह्याणंसंपूज्य प्रार्थयेत्
 ॐ आदिदेवनमस्तुभ्यं ध्वजेस्मिन्स्थापितोमया,, स्थिरोभवात्र
 रक्षार्थं यावत्कार्यसमाप्यते,, ततः पश्चिमनैर्ऋत्ययोरन्तराले, अन-
 न्तमावाहयेत्—ॐ एहोहिपातालधरामरेन्द्र नागाङ्गनाकिन्नरगी-
 यमान,, यक्षोरगेन्द्रामरलोकसंघे रनन्तरक्षाध्वरमस्मदीयम्,, ॐ
 भू० भो, अनन्तेहागच्छेहतिष्ठ,, ततोमेघवर्णं चक्राङ्कितं ध्वजं ह-
 स्तेनिधाय,,—ॐ नमोस्तुसर्पेभ्योयेकेन पृथिवीमनु । येऽअन्तरि
 क्षेयेदिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः,, इतिमंत्रेणध्वजमुच्छ्रित्य,, ॐ
 अनन्नायनमः संपूज्य प्रार्थयेत्—ॐ नमस्तुभ्यमनेनाय, ध्वजेऽ-
 स्मिन्स्थापितोमया,, स्थिरोभवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते,,
 ततोमंडपमध्ये वृद्धध्वजंक्षुद्रघंटिका चामरयुतं हस्तेकृत्वा—ॐ
 इन्द्रस्यवृष्णो देवराजस्यराज्ञऽआदित्यानां मरुता ॐ शर्धेऽउग्रम् ।
 महामनसां भुवनत्रयवानां धोषोदेवानां जयतामुदस्थान—इत्युच्छ्रि-
 त्य,, ॐ मंडपस्थदेवताभ्योनमः,, संपूज्य प्रार्थयेत्,, ॐ नमोमं-
 डपदेवेभ्योः ध्वजेऽस्मिन्स्थापितामया,, स्थिरामवन्तुरक्षार्थं,,
 यावत्कार्यसमाप्यते॥ ॐ स्तंभादिसर्वेभ्योदेवेभ्योनमः ॥

इति ध्वजारोपण तोरण पूजा पद्धतिः ॥



॥ अथ दिक्पाल वलिदान पद्धतिः ॥

ततोमंडपाद्बहि रिन्द्रादि दशदिक्पालेभ्यः पूर्वादिक्रमेण,
 संदीपसदक्षिण दधिमाषान्नोदन वलीन्दद्यात्—तत्रादौपूर्वद्वारे
 इन्द्राय—सदीपसदक्षिण दधिभक्तवलिं पात्रेकृत्वा, इन्द्रमावा-
 ह्येत्—ॐ आतारमितिर्गर्ग ऋषिस्त्रिष्टुष्टुन्द इन्द्रोदेवता इन्द्रा-
 वाहने वलिदाने च विनियोगः—ॐ आतारमिन्द्र मवितार ई०
 हवे हवे सुहव ई० शूरमिद्रं ह्यामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्र ई० स्वस्तिनो
 मधंवाधात्विन्द्रः ॐ इन्द्रंसांगं सपरिवारंस शक्तिकमेभिर्गन्धाबु-
 पचारै स्त्वामहं पूजयामि, इतिवलिं संपूज्य—ॐ इन्द्राय सांगाय
 सपरिवाराय सायुधायसशक्तिकाय इमं सदीपमापभक्तवलिं
 समर्पयामि, हस्तेजलं गृहीत्वा—भोइन्द्रदिशंरक्ष वलिंभक्तममसकु-
 दुम्बस्यायुः कर्त्ताक्षेमकर्त्ता शान्तिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता निर्विघ्नकर्त्ता
 वरदोभव, ॐ मण्डलेसंप्रवक्ष्यामि मयाभक्त्या निवेदितम्, इदं
 मध्यामिदं पावन्दीपोयं प्रतिगृह्यताम्, इतिवलयुपरि जलंविमृजेत् ।
 ततं आग्नेये—ॐ त्वन्नोऽअग्नि इति हिरण्यमूप ऋषि स्त्रिष्टुष्टुन्दो
 ऽग्निर्देवता गन्यावाहने वलिदाने च वि० ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने वर-
 णस्य दिव्वान्देवस्यहेडो ऽअवयासिसीष्टाः ॥ यजिष्ठो वन्दितामः ॥
 शोशुचानो त्विश्वाद्वेषा ॐ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ ॐ भू०
 भोभो अग्ने इहागच्छेहातष्ट, ॐ अग्नेनमः वलिसम्पूज्यं,
 जलैर्गु० ॐ अग्नेये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिका-
 यैनं दधिमाष भक्तवाल स० ॥ भो भो, अग्नेदिशंरक्षेन्नवाल भक्त
 भक्त मम सकुदुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेम० शान्ति० पुष्टि० निर्विघ्न०
 वरदोभव ॥ ॐ मण्डले सम्प्रवक्ष्यामि० ॥ इति जलंविमृजेत् । २।
 ततो दक्षिणे—ॐ असीति जमदग्निर्ऋषि स्त्रिष्टुष्टुन्द यमोदेवता
 यमावाहने वलिदानेच वि० ॥ ॐ असिसिमोऽअस्यादित्योऽअर्ब-
 नसि त्रितोगुह्येन व्रतेन असिसोमेन समयाविष्ट । आहुस्ते-
 त्रीणिदिविबन्धनानि स्वाहा ॥ ॐ भू० भोयमेहागच्छेहतिष्ठ,

३५ यमायनमः बलिं सम्पूज्य, जलं०—३० यमाय साङ्गायसपरि
 वाराय, सायुधाय. सशक्तिकायैर्न दधिमाप भक्तबलिं सम० ॥ भो
 २ यम दिशंरचैनं बलिं भक्त २ ममसकुटुम्बस्य आयुःकर्ता,
 क्षेम० शान्ति० पुष्टि० तुष्टि० निर्विघ्न० वरदोभव ॥ ॐ० मण्डले
 सम्प्रवक्ष्यामि ॥ इतिजलंबिसृजेत् ॥३॥ ततो नैर्ऋत्ये, ३० असु-
 न्वन्त मिनिविवन्वापिगिण्डुप्लुन्दो निर्ऋतिर्देवता निर्ऋतयाः
 वाहने बलिदानेच विनियोगः। ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छ-
 स्तेन स्यन्यास्तस्करम्यान्वैपि । अन्यमस्मदिच्छसान ऽ इत्या नमो-
 देवि निर्ऋतेतुभ्यमस्तु ॥ ॐ भूर्भुवः भो २ निर्ऋतइहागच्छे
 इतिष्ठ ॐ निर्ऋतयेनमः बलिं सम्पूज्य, जलं०—ॐ निर्ऋतये सांग्गा
 य सपरिवाराय सायुधाय सशक्ति कायैर्न दधिमाप भक्तवलिं
 सम० ॥ भो २ निर्ऋते दिशंरचैनं बलिं भक्त २ ममसकुटुम्बस्य
 आयुःकर्ता, क्षेम० शान्ति० पुष्टि० तुष्टि० निर्विघ्नकर्ता वरदोभव,
 ३० मण्डले सम्प्रवक्ष्यामि मयाभक्त्या निवेदितम् ॥ इदमर्घ्यं
 मिदंपाद्यं दीपो ऽ यंप्रनिगृह्यताम् । जलंबिसृजेत् ॥४॥ ततः पश्चि-
 मे—ॐ तत्वायामीति शुनः शेषकृपि म्त्रिण्डुप्लुन्दो वरुणोदेवता
 वरुणावाहने बलिदानेच विनियोगः—ॐ तत्वायामि ब्रह्मणावन्द
 मानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणो ध्युच्छ
 र्दं समान ऽ आयुः प्रमोपीः, ॐ भू० भोवरुणे हागच्छेइतिष्ठ
 ३० वरुणायनमः बलिं सम्पूज्य ॥ जलं०— ॐ वरुणायसाङ्गाय
 सशक्तिकायैर्न दधिमाप भक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो २ वरुण
 दिशं रचैनं बलिं भक्त २ मम सकुटुम्बस्य आयुःकर्ता, क्षेम०
 शान्ति० पुष्टि० तुष्टि० निर्विघ्नकर्ता वरदोभव ॥ ३० मण्डलेसं
 जलंबि० ॥५॥ ततोवायव्ये—३० आनोनियुद्धिरिति वसिष्ठकृपि
 म्त्रिण्डुप्लुन्दो वायुर्देवता वायवावाहने बलिदानेच वि० ॥ ३०
 आनोनियुद्धिः शतनीभिरध्वर र्दं सहस्रिणीभि रूपयाहि यज्ञस्य
 व्वायो ऽ ऽम्नन्सवने मादयस्वयूयंपातः स्वस्तिभिःसदानः ॥
 ॐ भू० भोवायो इहागच्छेइतिष्ठ, ॐ वायवेनमः बलि सम्पूज्य

जलं गृ०—ॐ वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सशक्तिकाय, सायु-
 धायैनं दधिमाष भक्तवलिं समर्पयामि, भो २ वायो दिशंरक्षैनं
 वलिं भक्त २ ममसकुटुम्बस्य आयुःकर्ता क्षेम० शांति० पुष्टि०
 तुष्टि० निर्विघ्न० वरदोभव, ॐ मण्डलेसं० जलम्विसृजेत् ॥३॥
 तत उत्तरे—ॐ वयमिति बन्धु ऋषिस्त्रिष्टुप्सुन्दः सोमो देवता
 सोमावाहने वलिदानेच वि० ॥ ॐ व्वय र्त० सोमव्रते तवमनस्तनृ-
 षुविभ्रतः ॥ प्रजावन्तःसचेमहि ॥ ॐ भू० भोसोमेहागच्छेहतिष्ठ,
 ॐ सोमायनमः, वलि संपूज्य, जलं गृ०—३० सोमाय साङ्गाय
 सशक्तिकाय सपरिवाराय सायुधायैनं दधिमाष भक्तवलि समर्प-
 यामि, भो २ सोम दिशंरक्षैनं वलि भक्त २ ममसकुटुम्बस्यायुः
 कर्ता क्षेम० शांति० पुष्टि० तुष्टि० निर्विघ्नकर्ता वरदोभव ॥ ॐ
 मण्डले सं० । इति ब्रह्म्युपरिजलं विसृजेत् ॥७॥ तत ईशाने—ॐ
 तमीशानमित्यस्य गौतमऋषिर्जगतीळुन्दः—ईशानो देवतेशाना-
 वाहने वलिदानेच वि० ॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पति धियं-
 जिन्वमवसेद्भ्रमहेव्वयम् ॥ प्रपानो यथावेदसाम सद्बृधे रक्षिता
 पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॐ भू० भोईशानेहागच्छेहतिष्ठ, ॐ ईशा-
 नायनमः वलिं सम्पूज्य, ॐ ईशानाय साङ्गायसपरिवाराय सायु-
 धाय सशक्तिकायैनं दधिमाष भक्तवलि समर्पयामि, भो २
 ईशान दिशंरक्षैनं वलि भक्त २ ममसकुटुम्बस्य आयुःकर्ता क्षेम०
 शान्ति० पुष्टि० तुष्टि० निर्विघ्नकर्ता वरदोभव, ॐ मण्डले सं०,
 ब्रह्म्युपरिजलं चिपेत ॥८॥ तत ईशान पर्वयोरंतराले—(संग्रहशि-
 रोमणौ—ईशानान्तेच ब्रह्माणं पूर्वैशान्योस्तु मध्यमे, प्रतीचीनैर्ऋतीं
 मध्ये, अनन्तं स्थापयेदिति ॥) ॐ ब्रह्मयज्ञानमिति गोतम
 ऋषिस्त्रिष्टुप्सुन्दो ब्रह्मादेवता ब्रह्मावाहने-वलिदानेच वि० ॥ ॐ
 ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विशीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः । सवुध्न्या
 ऽऽपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्चयोनिम सतश्चन्विवः, ॐ भू० भो-
 त्रह्मिहागच्छेहतिष्ठ, ॐ ब्रह्मणेनमः वलि सम्पूज्य, जलं गृ० ।
 ॐ ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकायैनं दधि

माषभक्तवलिं समर्पयामि, भो० २ ब्रह्मन्दिशं रत्नैर्नवलं भक्त २
ममसकुटुम्बस्य आयुःकर्ता जेम० शान्ति० पुष्टि० तुष्टि० निविघ्न-
कर्त्तावरदोभव, ३० मण्डले सं० ॥६॥ ततो नैर्ऋति पश्चिमयो-
रन्तराले—३० नमोस्त्विति देवश्रवाऋषिभिःपृष्ठन्दः, अनन्तो
देवता अनन्नावाहने वलिदानेच वि० ॥ ३० नमोस्तु सर्पभ्यो
येकेच पृथिवी मनु । येऽन्नन्तरिक्षे येदिवितेभ्यः सर्पभ्योनमः ।
३० भू० भो, अनन्नेहागच्छेद्दृष्टि ३० अनन्नायनमः वलिं सं०
जलं गृ० । ३० अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्ति-
कायैनं दधिमाषभक्तवलिं समर्पयामि, भो० २ अनन्तदिशंरत्नैर्न
वलिंभक्त २ ममसकुटुम्बस्य आयुःकर्ता जेम० शान्ति० पुष्टि०
तुष्टि० निविघ्नकर्त्तावरदोभव, ३० मंडलेसं० बल्युपरिजलंक्षिपेत्
मय क्षेत्रपाल वलिदानम्, ततो मण्डपाद्बहिर्वायव्यांदिशि दुर्वाह्यं
❀ निमन्त्र्य तत्राह्वय—सङ्कल्पं कुर्यात्—अद्यत्यादि देशकालौ
संकीर्त्या मुकोऽहंकृतस्यासुक कर्मण उत्तरांगत्वेन सर्वारिष्ट निर्वृ-
त्यर्थं क्षेत्रपालाय वलिदानं करिष्ये तदंगत्वेन पूजनंच करिष्ये,
ततो ब्राह्मणं पूजयेत्—ध्यानम्—सिन्दूर कज्जलाकारं शूलहस्तं
त्रिलोचनम्, ध्यायामि मनसाभक्त्या क्षेत्रपालं सुरक्षकम् ॥ ततः
पाथ सिन्दूर कज्जलादिभिः, क्षेत्रपाल स्वरूपिणं ब्राह्मणं सम्पूज्य
रक्तपुष्प मालामिरलंकृत्य, रक्तवस्त्रेणा ह्याद्यच, ततः सदक्षिण
सिन्दूर कज्जल कुसरात्रापुपान्न पक्वानवलिं सुसज्य तदुपरि—चतु-
र्वर्त्तिसंयुक्तं दीपं प्रज्वलय्य वलिं जलेन संप्रोक्ष्य रक्तचन्दनादिभिः
सम्पूज्यच—तत्र क्षेत्रपालं ध्यायेत् ॐ आजद्रक्त्र जटाधरं त्रिन-
यनं नीलाजनादिप्रभं, दोर्दण्डान्तं गदाकपोलमरुणस्त्रगन्ध
वस्त्रावृतम् ॥ घण्टाघुर्घरमेखलाध्वनि मिलध्वंकारभीमं विभुं,
वन्दे संहित सर्पकुण्डलधरं श्रीक्षेत्रपालंसदा, ॐ भू० भोक्षेत्र-
पालेहागच्छेद्दृष्टि सुप्रतिष्ठितो वरदोभव, ॐ ज्ञौं क्षेत्रपालाय

* टिप्पणी—यस्य वेदश्च वेदीच विच्छिद्येते त्रिपुरूपम् । सबहुर्ब्राह्मणोनाम
सर्वं कर्मसुगर्हितं ॥

भूत प्रेत पिशाच टाकिनी शाकिनी वेतालादि परिवार युताय
 ण्य सदीपः सताम्बूलः सदक्षिणः कृसरान्नवलिर्नमः, इति समर्प्य,
 हस्तेजलंगृहीत्वा—भो भोक्षेत्रपाल दिशंरक्ष २ बलि भक्षभक्ष,
 ममसकुटुम्बस्य आयुष्कर्ता जेमकर्ता शांतिकर्ता तुष्टिकर्ता
 पुष्टिकर्ता वरदोभव, ॐ मण्डले सम्प्रवक्ष्यामि०, इतिजलं
 बल्युपरिक्षिप्त्वा, ॐ दधिमापोदनैर्युक्तं सदीपं बलिमुत्तमम् । क्षेत्र
 पाल गृहाणत्वं रक्षोविघ्नं प्रणाशय, इतिमन्त्रेणबलि ब्राह्मण
 हस्तेदत्त्वा, हस्ते गन्धाक्षत जलंगृहीत्वा वक्ष्यमाणेननिः सारण
 कुर्यात्—ॐ यं यं यं योगिराजं सकल गुणमयं नीलवर्णधनाभं ॥
 शं शं शं शूल हस्तं करधृत डमरुं डि डिम वादयन्तं, मँ मँ मँ
 मण्डपस्यो परिगमन भयाद्विघ्नकान्द्रावयन्मम । जो जा जौ
 क्षेत्रपालं भुवनभयहरं, पजयामीहभक्त्या, इतिनज्जलं ब्रह्मिर्गुन
 ब्राह्मणोपरिक्षिपेत्, सब्राह्मणः स्वयंभुंजीन वाचपुष्पथे प्रक्षिपेत् ॥
 तत आचम्य ॐ भद्रं कर्णेभिः, इति मन्त्रं पठित्वा यथावकाश
 कुर्यात् ॥

इति क्षेत्रपाल बलिदानम् ॥



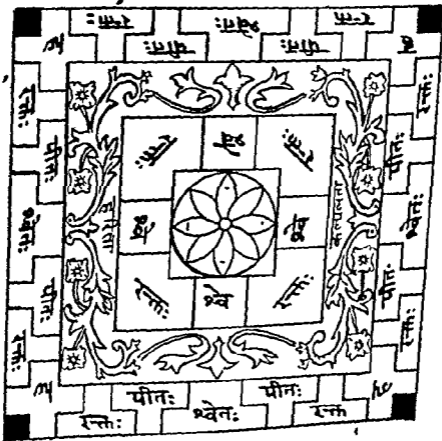
सप्तदश रेखात्मक दीक्षांगसर्वतो भद्रपरिभाषा

अथ शारदा तिलकोक्त सप्तदशरेखात्मक सर्वतो भद्र परिभाषां वक्षे— तत्रा-
 र्दोवेदीमानं मुक्तं कुराड रक्षावरयोम्—पैदः ४ साथ शरं ५ स्तथाप्यथ हयं ७ हस्तैर्मि-
 ताया यवोमध्ये मन्डप रन्ध्रभाग ६ विमिताध्यक्षापि हस्तोत्थका ॥ भूपानां प्रचरामिषिचन
 विधी स्यात्सर्वतो भद्रिकाज्ञेया पद्मिनीभा जलाशय विधीपाणिमहे श्रीधरी ॥ क्रियासारेपि—
 हस्तमात्रं तदुत्सेधं चतुरस्रं समन्तत । हस्तोपताच विस्तीर्णा चतुर्हस्तैः समन्ततः ॥
 शारदातिल के—सूत्रपातविधानमुक्तम्—चतुश्चे चतुष्कोष्टे कर्णसूत्रसमन्विते । चतुर्ष्व-
 पिचकोष्टेषु कोणसूत्र चतुष्टयम् । १ । मध्येमध्ये यथामत्स्याभक्षेयुः पातयेत्तथा । पूर्वापरायते द्वेद्वे
 मन्त्रीयाम्योत्तरायते । २ । पातयेत्तपुमत्स्येषु समंसूत्र चतुष्टयम् । पूर्ववत्कोण कोष्टेषु कर्ण
 सूत्राणिपातयेत् । ३ । ततुद्भूतेषु मत्स्येषु दद्यात्सूत्रचतुष्टयम् । तत कोणेषु मत्स्याःस्युस्तेषु
 सूत्राणि पातयेत् । ४ । यावच्छत द्वयंमन्त्री हृत्पञ्चाशत्पदान्यपि । तावत्तेनैव विधिनाकर्ण-
 सूत्राणि पातयेत् । ५ । अथ लेख प्रमाणम्—पद्मत्रिंशतापदैर्मध्ये लिखेत्पत्रं सुलक्षणम् ।
 वह्नि पंक्त्याभवेत्पीठं पंक्तियुग्मेनवीथिका । १ । द्वारशोभोपशोभासा शिष्टाभ्यां परिकल्पयेत् ।
 शास्त्रोक्त विधिनामन्त्रीततः पद्मसमालिखेत् । २ । पद्मक्षेत्रस्य सन्यस्य द्वादशां शंखिः सुधीः ।
 तन्मध्ये विभजे द्बुक्तं त्रिभिः समविभागत । ३ । आद्यंस्यात्कारिकास्थानं वैशाराणां द्वितीयकम्
 तृतीयं तत्रप्राणां मुक्तांशेनदलाप्रकम् । ४ । बाह्यवृत्तान्तरालस्य मामेन विधिनासुधी ।
 निधायवेशरामेषु परितो ऽर्द्धनिशाकरान् । ५ । लिखित्वा सन्धिर्मेस्थानि तत्रसूत्राणिपातयेत् ।
 दलाप्राणां चयन्मानं तन्मानाठपृत्तमालिखेत् । ६ । तदन्तराल तन्मध्ये सूत्रन्यां भयत्, सुधीः ।
 आलिखेद्वाह्यहस्तेन दलाप्राणि समन्ततः । ७ । दशमूलेषुयुगशं वैशाराणि प्रकल्पयेत् । एत-
 त्माधारणप्रोक्त पङ्कजं तन्त्रवेदिभिः । ८ । पदान्त्रिंशत्पादार्थं पीठकोणेषु मार्जयेत् । अथक्षिष्टैः
 पदैर्द्विद्वान्पीठयात्राणि कल्पयेत् । ९ । पदानि वीथिसंस्थानि मार्जयेत्पङ्कजमेदत् । दिक्षुद्वाराणि
 रचयेद्द्विचतुष्कोष्टकैस्तत । १० । पदैस्त्रिभि रथंकेन शोभा स्युर्द्वारपाश्वतः । उपशोभाःस्युरैकेन
 त्रिभिः कोष्ठैरनंतरम् । ११ । अथक्षिष्टैः पदैः पश्चि कोणानां स्यात्चतुष्टयम् । रङ्गकर्तव्या—
 रञ्जयेत्पद्ममिवर्णं मण्डलं तन्मनोहरम् । १२ । पीठं हरिद्रा चूर्णस्यारिसतं तदुल्लसत्सम्भवं ।
 कुसुमचूर्णं मरुणकृष्णोदग्ध पुलाकजम् । १३ । विद्यादिपत्रज श्याममित्युक्तं वर्णपथकम् ॥
 अंगुलात्सेधविस्तारं सीमारैखा सिताशुभा । १ । करिकापीतवर्णैः वैशाराण्यरुणेनच । शुक्ल-
 वर्णैः पश्चाणि तत्सन्धी श्यामलेनतु । २ । रजसारजयेन्मन्त्री यद्वापीतंषकणिका । वैशाराः
 पीतरक्षाः स्यूरक्तानिच्छदनानिच । ३ । सन्धयः कृष्णावशां स्युः सितेनाप्यसितेनवा । रञ्जयेत्पीठ

गर्भाणि पादा स्युरदृष्टप्रभा । ४ । गात्रापितस्य शुक्लानि वीथीष्वपि चतसृषु । आलितेक
 ल्पलतिका सर्पदृष्टि मनोहराम् । ५ । वरुणोनाधिर्धैश्चित्रां दलपुष्प फलाम्बिताम् । द्वाराणि
 श्वेतवर्णानि कोणान्य सितमानि च । ६ । रक्षाशोभा समुद्दिष्टो पसोभातु पिराङ्गिका । तिबो,
 रेखा बहि दुर्वात्सितरक्षा-सिता क्रमात् । ७ । मण्डल सर्वतोभद्र मन्त्रसाधारणस्युत्तम् ।
 पृथिव्यादिचतुराशीतिवैवता स्थापनाय च । ८ ।

अत परं समन्त्रक देवता स्थापन क्रमोऽस्ति परंत्वत्र ग्रन्थविस्तार भयात्
 दर्शित ॥

दीक्षाङ्ग सर्वतो भद्रोद्धारः ॥



अथ प्रतिमाग्न्यु तारणम्;

अथ लोहकार स्वर्णकारादि श्रुतित प्रतिमाग्न्यु तारण विधिः ॥ आचम्य

देशकालौसंकीर्त्य अस्यामूर्त्तौ स्वर्णकार लोहकारकृत घट्टनटंका-
द्यवघातादि समस्तदोष परिहारार्थं देवत्वप्राप्त्यर्थमग्न्युतारण
कर्मकरिष्ये,, प्रतिमांपात्रे निधायवक्ष्यमाणाष्टकेनप्रथमावृत्तौ
दुग्धधारां द्वितीयावृत्तौ जलधारां प्रतिमोपरिदद्यात् ॥ तंत्रमंत्राः
ॐ समुद्र स्यत्वावर्क्याग्ने परिब्ययामसि । पावकोऽअस्मभ्य ई०
शिवोभव । १ । ॐ हिमस्यत्वा जरायुणाग्ने परिब्ययामसि ।
पावकोऽअस्मभ्य ई० शिवोभव । २ ॐ उपज्मन्नुपवेतसे वतर
नदीप्वा । अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकिताभिरागहि सेमन्नो
यज्ञम्पावक वर्ण ई० शिवंकृधि । ३ । ॐ अपामिदंन्ययन ई०
समुद्रस्य निवेशनम । अन्यांस्तेऽअस्मत्तुपन्तुहेतयः पावकोऽअस्म-
भ्य ई० शिवोभव ॥ ४ ॥ ॐ अग्नेपात्रकरोचिषा मन्द्र्यादेव-
जिह्वया । आदेवान्वक्षियन्ति च ॥ ५ ॥ ॐ सनः पावक दीदिवोग्ने
देवा ३ऽ। इहावह । उपयज्ञ ई० हविश्चनः ॥ ३ ॥ ॐ पावकया
यश्चितयन्त्या कृपाक्षामान्नुस्त्व उपसोभानुना । तूर्वन्नयामन्नेत-
शस्य नूरण आयोघृणेन ततृपाणोऽअजगः ॥ ७ ॥ ॐ नमस्तेहरसे
शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः ।
पावकोऽअस्मभ्य ई० शिवोभव । इतिमंत्रैः प्रतिमांसंस्नाप्य गंधा-
दिभिरालोञ्च्य यथास्थाने स्थापयेत् ॥

॥ इति प्रतिमाग्न्यु तारणम् ॥



अथ दीक्षांग सर्वतोभद्र देवता स्थापनम्पूजनंच ।

अथ कर्त्ता सर्वतोभद्र वेदीसन्निधिभागत्याचम्य,भूतो-
त्सादनादिकं, कृत्वा वेदीशानकोणेरक्षादीपं प्रज्वलय्य,, संकल्पं
कुर्यात्-अथेहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोऽहं ममास्यकुमारस्य
वीजगर्भसमुद्भवैनो निवर्हणाय श्रीपरमेश्वर प्रीतये, द्विजत्व

संपादकश्रौतस्मार्तिकमनुष्ठानासद्धिद्वाराषोडशसंस्कारान्गर्गतकरि
ष्यमाणामुकसंस्कारकर्मणितदुपयोग्ययुतात्मकनवग्रहमंडपेमखसं
क्षणाय दीक्षाङ्ग सर्वतो भद्रवैद्यां पृथिव्यादि चतुरशीति, देवतानां
तत्तत्प्रति मास्थापन पूर्वकमावाहनादि षोडशो पंचारविधिना
पूजनं करिष्ये,, नतोभद्रमध्ये कलशस्थापन विधिना कलशसंस्था-
प्य सम्पूज्य च, चतुरशीति सुवर्ण रजतादि प्रतिमाः संस्थाप्य,
भद्रस्थदेवता पूजामारभेत्—तत्रादौ कणिकायाम्—पृथिवीमावा-
हयेत्—साक्षतपुष्पः—ॐ स्योना पृथ्वीनिमेधातिथिर्ऋषिर्गा-
यत्री छन्दः पृथ्वी देवता पृथिव्यावाहने विनियोगः, ॐ स्योना
पृथिविनो भवान्चरानिवेशनी । यच्छानः शर्मसप्रथाः ॥
ॐ ॐ भूर्भुवः स्वः भो, पृथ्वीहागच्छेदितिष्ठ सुप्रतिष्ठिता वरदा-
भव, हस्ते पुष्पं गृहीत्वा स्थापनीं मुद्रां दर्शयित्वा, ॐ पृथिव्या
धार्यते विश्वं दुर्वाहं सागरैर्नगैः । अतस्त्वां स्थापयामीह मण्डले
ब्रह्मणःपदे, ॐ पृथिव्यैनमः संस्थाप्य प्रतिष्ठां कुर्यात्, ॐ
एतन्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यजमवतेन
यजपतिं तेन मामव ॥ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ-
मिमं तनोत्व रिष्टं यज ई० समिमंदधातु द्विश्वेदेवाऽऽहमा-
दयंतामो प्रतिष्ठ,, इति प्रतिष्ठाप्य, ॐ पृथिव्यैनमः सम्पूज्य,
प्रार्थयेत्, एवं सर्वत्र, नतः केशराख्यपदे मेरुम्—ॐ प्रपर्वतस्ये-
ति देवरातत्रापस्त्रिष्टुष्टुन्दो मेरुर्वेवता मेर्वावाहने विनियोगः । ॐ
प्रपर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठाक्षवक्षरन्ति स्वसिखड्यानाः ॥ ताऽत्राव-
ष्टुत्रधरागुदक्ताऽऽह्रिर्बुध्न्य मनुरीयमाणाः । विष्णोर्विक्रमण

५ टि० मत्स्य पुराणे—आवाहयेद्व्याहृतिभिः, सिद्धान्तसारे—
पुष्पांजलिं समादाय मुद्रया च त्रिकण्डया । यथोक्तां देवतां ध्यात्वा मूलमङ्गं
समुच्चरन् ॥ सम्पूज्यन्तं देवतामा प्रागृच्छामच्छेषेभ्यःपि, देवस्य तेजस्तन्मूर्त्तौ
आवाहित्याख्यमुद्रया । ततः संस्थापनं कुर्यादितिष्टेदितिष्ठ ॥ संस्थापनीयां
मुद्रां च दर्शयित्वा विभावयेत् ॥ ज्ञात स्थितो देव इति पश्चात्संस्थापयेदिति ॥
मुद्रालक्षणं सर्वकर्म परिभाषायां द्रष्टव्यम् ॥

मसि विष्णोर्विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि ॥ पुष्पं—ॐ पर्व-
 तेशं दिव्यवर्णं देवगन्धर्वं सेवितं । सर्वकल्याण सिध्यर्थं मेरुं
 संस्थापयाम्यहम् । ॐ भू० मेरो इहागच्छेहतिष्ठ० । ॐ मेरवे
 नमः, सम्पूज्य, पत्रस्थाने ब्रह्माणं—ॐ ब्रह्मयज्ञानमिति गोतम
 ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो ब्रह्मा देवता ब्रह्मावाहने वि० ॥ ॐ ब्रह्मय-
 ज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोब्धेन आवः । सबुध्न्याऽ
 उपमाऽअस्यविष्टाः सतश्चयोनि मसतश्चन्विवः ॥ पु०—ॐ
 चतुर्भुवं दिव्यरूपं हंसगान समन्वितं । मण्डले स्थापयाम्यत्र—
 ब्रह्माणं कमलासनम् ॥ ॐ भू० भो ब्रह्मनिहागच्छेहतिष्ठ, ॐ
 ब्रह्मणेनमः ॥ ततो वहिरीशाने—ईशम्— ॐ तमीशानमिति
 गोतम ऋषिर्जगतीच्छन्द ईशानो देवतेशानावाहने वि० ॥ ॐ
 तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्यमवसे इमहेव्यम् ॥
 पूषानो यथाव्वेद सामसद्वृषे रक्षितापायुरदग्धः स्वस्तये, पु०—
 ॐ ईशानी पालकं देवं सर्वलोकाभयंकरम् । मण्डलेस्थापयाम्य-
 स्मिन्नीशान्यां सर्वसिद्धये, ॐ भू० भोइशोहागच्छेहतिष्ठ, ॐ
 ईशांयनमः, सं०, नतः पूर्वं, इन्द्रम्—ॐ त्रानारमिन्द्रमिति गर्ग
 ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवतेन्द्रावाहने वि० । ॐ त्रानारमिन्द्र-
 मवितार मिद्र ई० हवे हवे सुहव ई० शूरमिन्द्रं ह्वयामि शक्रं
 पुरुहूतमिन्द्र ई० स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ॥ पु०—ॐ सर्वलो-
 काधिपं श्रेष्ठं देवर्षीणांच पालकम् ॥ पूर्वदिक्पालकं देवराजं वैस्था-
 पयाम्यहम् । ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्रेहागच्छेहतिष्ठ०, ॐ
 इन्द्रायनमः सं० ॥ तत आग्नेय्यामग्निम्—ॐ त्वन्नोऽअग्ने
 वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडो ऽ अवयासि सीष्टाः ॥ यजिष्ठोवन्धि-
 तमः शोशुचानो त्विश्वाद्रेपाँसि प्रमुमुग्धस्मत् ॥ पु०—त्रिपादं
 मेषवाहं च त्रिशिवं च त्रिलोचनम् । आग्नेयां स्थापयाम्यत्र
 बन्धि पुरुषमुत्तमम् ॥ ॐ भू० भो, अग्ने, इहागच्छेहतिष्ठ सुप्र-
 तिष्ठिनो वरदोभवः ॥ ॐ अग्नेये नमः, सम्पूज्य ॥ ततो
 बन्धिणे धर्मराजम्—ॐ यमायत्वेति दधीची ऋषि र्षिणि-

क्लृन्दो धर्मराजो देवता धर्मराजावाहने वि० ॥ ॐ यमा-
 यत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा धर्मापस्वाहा धर्मः पित्रे ॥
 पु०— अन्तकः सर्वलोकानां धर्मराज इति श्रुतः । अतस्त्वां स्थाप-
 याम्यत्र रत्नोदियज्ञिणं प्रभुम् ॥ ॐ भू० भोधर्मराजेहागच्छते
 हतिष्ठ सु० । ॐ धर्मराजाय नमः, सम्पूज्य ॥ ततो नैर्ऋत्येनिर्ऋ-
 तिम्— ॐ असुन्वन्तमिति मधुश्छंदा ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो निर्ऋति-
 देवता निर्ऋत्यावाहने विनियोगः— असुन्वन्तम यजमानमिच्छुस्ते
 नस्येमन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छुसात ऽ इत्यानमोदेवि
 निर्ऋतेतुभ्यमस्तु । पु०— नैर्ऋत्यां वसतिर्धस्य घोररूपीसदाहियः ।
 निर्ऋतिं स्थापयाम्यत्र नैर्ऋत्यां मण्डलेशुभे ॥ ॐ भू० भो निर्ऋत
 इहागच्छे हतिष्ठ सु० । ॐ निर्ऋतये नमः पू० ॥ ततः पश्चिमे वरु-
 णम्— ॐ इमम्म इत्यस्य शुनशोफ ऋषिर्गायत्रीछन्दो ववरुणो
 देवता ववरुणावाहने विनियोगः । ॐ इमम्मे ववरुण श्रुधी हव-
 मद्याच मृडय । त्वामवस्युराचके । पु०— ॐ अपांपतिं पाशधरं
 यादसांचपतिं शुभम् । वरुणं स्थापयाम्यत्र वारुण्यां मवरुणे ॥
 ॐ भू० वरुण इहागच्छे हतिष्ठ सुप्र० ॥ ॐ वरुणाय नमः, पू० ॥
 ततो वायव्ये वायुम्— ॐ वातोवामन इति बृहस्पतिऋषि रूषिणः
 क्लृन्दो वायुदेवता वायवावाहने वि० ॥ ॐ वातोवामनोवा-
 गन्धर्वाः सप्तविंशतिः । ते ऽ अग्रेश्वमयुञ्जस्ते अस्मिञ्जवमा-
 दधुः ॥ पुष्पम् गृ०— ॐ आशुगं सर्वबोधञ्च गन्धवाहं मनोरमम् ।
 मण्डलेस्थापयामीह वायव्यां दिशिरक्षकम् ॥ ॐ भू० भोवायो,
 इहागच्छे हातष्ठ सुप्र० ॥ ॐ वायव्ये नमः । पू० । तत उत्तरे
 सोमम्— ॐ सोममिति तापसऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः सोमोदेवता
 सोमावाहने वि० । ॐ सोमं ऽ राजान मवसेग्निं गीर्भिर्हवामहे
 आदित्यान्विष्णुं ऽ सूर्यं ब्राह्मणं च बृहस्पतिम् ॥ पु०— ॐ चीरोदा-
 र्णवसम्भूतं लक्ष्मीबंधुं निशाकरम् । मण्डले स्थापयाम्यत्र सोमं
 सर्वार्थं सिद्धये ॥ ॐ भू० भोसोमेहागच्छे हतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो-
 भव ॥ ॐ सोमाय नमः, पू० ॥ ततो वहिरीशानवामे एकादशमद्रान-

३० रुद्रास दै० सृज्य इति सिन्धुद्वीपऋषिरनुष्टुप्छन्दो रुद्रादेवता
रुद्रावाहने वि० ॥ ३० रुद्रास दै० सृज्य पृथिवीं वृ ज्योतिः
समीधरे । तेषां भानुरजस्रऽइच्छुक्रो देवपुरोचते ॥ पु०—३० एका-
दशाधिकान् रुद्रानजपादैकपूर्वकान् । सखसंरक्षणार्थाय स्थापयामि
सुरोत्तमान् । रुद्रनामानि—अजैकपादहिर्बुध्न्यो विरूपाक्षोथरै-
वतः । हरश्चबहुरूपश्च त्र्यम्बकश्चसुरेश्वरः ॥ सावित्रश्चऽयन्तश्च
पिनाकी रुद्रसंज्ञकाः ॥ इति संस्थाप्य—३० भूर्भुवःस्वः, ओ एका-
दशरुद्राः, इहागच्छतेहतिष्ठत सुप्रतिष्ठिता वरदाभवन्तु, , ३०
एकादश रुद्रभ्यो नमः पू० ॥ तत इन्द्रदक्षभागेवसून्—३० ज्मया
इति वसिष्ठऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो वसवो देवता वस्वावाहने वि० ॥
ॐ ज्मया अत्रवसवो रन्तदेवाउरावन्तरिक्षे, मर्जयन्तशुभ्राः ॥
अर्वाक्यथउरुग्रयः कृणुध्वं श्चोतादृतस्य जग्मुपोनो ऽ अस्य ॥
पु०—ॐ ध्रुवंधरतथासोमं आपश्चैवानिलंनलं । प्रत्यूर्ध्वं च प्रभासंच
क्रमशः स्थापयाम्यहम् ॥ ३० भू० भोवसवेहागच्छते इतिष्ठत-
सुप्रतिष्ठिता वरदाभवन्तु ॐ अष्टवसुभ्योनमः, पू० । तत्र इन्द्र-
वामेआदित्यान्—ॐ यज्ञोदेवानामित्यस्य कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द
आदित्यादेवता आदित्यानामावाहने वि० ॥ ॐ यज्ञोदेवानां
प्रत्येतिसुमनादित्यासो भवतामृडयन्तः ॥ अबोर्वाचीसुमतिर्व्व
वृत्याद दै० होश्चिद्याच्यरिवो वित्तरासदादित्येभ्यस्त्वा ॥ पु०—
ॐ धातारं चैव रुद्रं च, अर्यम्णं मित्र संज्ञकं । सूर्य्यभगं विवस्वन्तं
पूषणं सवितारकम् ॥ त्वाष्ट्रमच्युतनामानमादित्यान्द्रादशांश्च-
त्तान् । स्थापयाम्यत्ररक्षार्थं द्वादशादित्यसंज्ञकान् ॥ ३० भू० भो
द्वादशादित्या इहागच्छतेहतिष्ठत सुप्रतिष्ठितावरदाभवन्तु ॥ ॐ
द्वादशादित्येभ्योनमः, पू० ॥ ततोदक्षिणेअश्विनौ—ॐ यावां-
कशा इत्यस्य मेधातिथि ऋषिर्गायत्री छन्द अश्विनौदेवते अश्वि-
नौरावाहने वि० । ३० यावाङ्कशामधुमत्यश्विना सूनुतावती ।
तयायजंमिमिक्षतम् । ३० अश्विनौदेव वैद्यौ च दिव्यरूपधरौ
शुभौ ॥ मण्डले स्थापयित्वातीं पूजयामि सुसिद्धये ॥ ३० भू०

भो अश्विनाविहागच्छतमिहृतिष्टतम् ॥ वरदाभवेनाम् ॥
 ॐ अश्विभ्यांनमः ॥ ततोऽग्निवामे विष्णुम्-३० विष्णोरराट
 मितिउनत्थ्य ऋषिर्यजुश्छन्दो विष्णुर्देवता विष्णवा वाहने वि० ।
 ३० विष्णोरराट मसि विष्णोरन प्त्रेस्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णो-
 र्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्त्वा । ३० नारायणं महावष्णुं
 संसारार्णवतारकम्, मत्र संरक्षणार्थत्वां स्थापयाम्यत्र भक्तितः ॥
 ३० भू० विष्णो, इहागच्छेद्वहतिष्ट सुप्र० । ३० विष्णवेनमः पूजयेत् ॥
 नतोयम दक्षेदुर्गा-३० तामग्निवर्णामिति सौभ्रुपि त्रिष्टुष्टुन्दो
 दुर्गादेवता दुर्गावाहने वि० ॥ ३० तामग्निवर्णां तपसाज्वलन्तीं
 वैरोचनीं कर्मलेफपुत्रुष्टाम् ॥ दुर्गादेवीं शरणमहं प्रपद्येसुनर
 सितरसेनमः ॥ ३० अग्निवर्णां ज्वलन्तींच महसा सर्वदा शुभाम् ।
 भक्तानां वरदां देवींदुर्गां संस्थापयाम्यहम् ॥ ३० भूर्भुवःस्वः
 भोदुर्गं, इहागच्छेद्वहतिष्ट सुप्रतिष्ठिता वरदाभव ॥ ३० दुर्गार्येनमः,
 पू० ॥ नतोयमवामे स्वधाम्- ३० उदीरितामिति शंक् ऋषि
 त्रिष्टुष्टुन्दः, स्वधा देवता स्वधावाहने विनियोगः- ३० उदीरिता-
 मवरऽउत्परासऽउन्मध्यमापितरः सौम्यासः ॥ असुंयऽईयुरवृका
 ऋतजा स्तेनोवन्तु पितरोहवेपु ॥ पु०-३० त्वंस्वाहा त्वंस्वधात्थं
 द्विवपृकार स्वरात्मिका ॥ अतःस्वांमंडलेप्यस्मिन्स्थापयामि-
 स्थिराभव ॥ ३० भू० भोस्वधेइहागच्छेद्वहतिष्ट सुप्रतिष्ठिता वर-
 दाभव, ३० स्वधायैनमः, पू० ॥ ततोनिर्ऋतिदक्षेष्टुनिम-३०
 परंमृत्योरिति संक्रुशुक ऋषित्रिष्टुष्टुन्दो मृतिर्देवता मृतेग-
 वाहने विनियोगः, ॐ परंमृत्योऽश्नुपरैहि पंथायस्तेऽअन्यऽउनरो
 देवयानात् । चतुष्पतेशृण्वतेतेब्रवीमिमानः प्रजा ॐ रीरियोमोन
 र्वीरान्, पु०-३० अनेकविधन्याध्यादि रोग दोष समन्विनाम् ।
 मृत संस्थापयामीहदुष्टारिष्ट प्रशान्तये ॥ ३० भू० भोमृते, इहा-
 गच्छेद्वहतिष्ट, सुप्रतिष्ठिता वरदाभव, ३० मृत्यवेनमः, पू० ॥ नतो
 निर्ऋतिवामेदक्षं-३० अदिनिरिति वृहस्पति ऋषिनुष्टुष्टुन्दो
 दक्षोदेवता दक्षावाहने वि० ॥ ३० अदिनिहाज

देवाः ३॥ऽ अन्वजायन्नभद्राऽ अमृत्वबंधवः ॥ पु०-३॥ दक्षोऽसि
सर्वकार्येषु महान्यजकर प्रियः । ऋषीणां सर्वदादक्षो मण्डले
ऽस्मिन्निश्चरो भव ॥ ३॥ भू० दक्षेहागच्छेतिष्ट सुप्र० ॥ ३॥ दक्षाय
नमः पू० ॥ ततो वरणदक्षेगणेशम्—३॥ गणनान्त्वेति प्रजापति
ऋषिर्यजुश्छन्दो गणपतिर्देवता गणपत्यावाहने वि० । ३॥ गणा-
नान्त्वा गणपति ई० हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ई० हवा-
महे ॥ निधीनान्त्वा निधिपति ई० हवामहे च्वसोममऽथाहमजा
निगर्भध मात्वमजासिर्गम्भधम् । पु०-३॥ सिद्धिबुद्धीश्वरंदेवंगणेशं
यजनायकम् । अतस्त्वांस्थापयाम्यत्र मङ्गलार्थं विनायकं ॥ ३॥ भू०
गणेशेहागच्छेहितिष्टसुप्र० ॥ ३॥ गणेशायनमः । पू० ततो कार्तिकेयम्—
३॥ यत्रवाणा इति, अप्रतिरथ ऋपःपंक्तिश्छन्दः कार्तिकेयो देवता
कार्तिकेया वाहने वि० । ३॥ यत्रवाणासम्पतन्ति कुमारान्विशि-
त्वाऽहव । तन्नऽइन्द्रो वृहस्पतिरदितिः शर्मयच्छतु ॥ पु०-३॥
षाण्मातुरं कार्तिकेयं मयूरवरवाहनम् । मण्डलेस्थापयाम्यत्र मख-
संररक्षणाय च । ३॥ भू० भोकार्तिकेयेहागच्छेहितिष्टसुप्र० ॥ ३॥
कार्तिकेयाय नमः । पूजयेत् ॥ ततो वायुदक्षेगन्धर्वम्—३॥ गन्धर्व-
स्त्वेति प्रजापतिऋषिर्यजुश्छन्दो गन्धर्वो देवता गन्धर्वावाहने वि० ।
३॥ गन्धर्वस्त्वाविश्वावसुः परिदधातुविश्वस्यारिष्ट्यै यजमान-
स्य परिधिरस्याग्निरिडऽईडितः ॥ पु०-३॥ स्थापयाम्यत्र गन्धर्व-
मप्सरोगणसेवितं । विश्वावसुंसुरागजं, ताललावण्यकोविदम् ॥
३॥ भू० भो विश्वावसो, इहागच्छेहितिष्टसुप्र० । ३॥ विश्वावसवे-
नमः । पू० ॥ ततो वायुवामे ऋपमम्—३॥ ऋपममिति वैराजऋपि
रनुष्टुप्छन्दो ऋपभो देवता ऋपभावाहने वि० । ३॥ ऋपममास-
मानानां सपत्नानां विपासहिम् । हंतारं शङ्खणांकृषि विराजंगोपतिं
गवाम् ॥ ३॥ पु०-योगान्चार्ययोगिभर्ध्यानगम्यं, प्रजापारंगोपतिं-
श्रीनिकेतम् ॥ संस्थाप्यैवं सर्वसौभाग्यहेतुं भद्रेचास्मिन्योगिराजं
नतोऽस्मि ॥ ३॥ भू० ऋपभेहागच्छेहितिष्टसुप्र० ३॥ ऋपमायनमः
पू० । ततः सोमदक्षे प्रजापतिम्—३॥ प्रजापते निहिरण्यगर्भऋपि-

त्रिष्टुप्छन्दः प्रजापतिर्देवताप्रजापत्यावाहनेवि० । ३० प्रजापते
 नत्वदेतानन्यो विश्वारूपाणिपरितावभूवयत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो
 ऽथस्तुवय र्थे० स्यामपतयोरयीणाम् । ॐ चतुर्वाहुंसौम्यरूपं जगन्म
 गलकारणम् । प्रजापतिंस्थापयामि सर्वविघ्नप्रशान्तये । ॐ
 भूर्भुवःस्वः भोप्रजापते, इहागच्छेहतिष्ठ, सुप्रतिष्ठितोवरदोभव,
 ॐ प्रजापतयेनमः, पूजयेत् ॥ ततः सोमवामे अदितिम्-३०
 अदितिर्वौरितिगौतमश्चपि त्रिष्टुप्छन्दो ऽ दितिर्देवता, अदित्या-
 वाहने विानयोगः-३० अदिनिद्यौरदितिरन्तरिचमदितिर्माता
 सपितासपुत्रः । त्विश्वेदेवा ऽ अदितिः पञ्चजना ऽ अदितिर्जात
 मदितिर्जनित्वम् । पु०-३० सर्वसौभाग्यसंयुक्तां कश्यपप्राण-
 यल्लभां । देवानांमातरंदेवी मदितिंस्थापयाम्यहम् ॥ ॐ भू० भो
 अदिते, इहागच्छेहोतष्टसुप्र० ॥ ॐ अदित्येनमः । पू० ॥ तत
 ईशानदत्तेध्रुवम्-३० ध्रुवासीतिप्रजापतिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दो ध्रुवो
 देवताध्रुवावाहने वि० । ॐ ध्रुवोसिध्रुवोयंयजमानो ऽ स्मिन्नाय-
 तनेप्रजयापशुभिर्भूयात् ॥ पु०-३० औत्तानपादंरणदुर्जयंघ्रुवंनारा-
 यणाल्लव्यपदंदुरंतरम् ॥ तराजपुत्रंमुनिवर्षदीक्षितं संस्थापयाम्यत्र
 सुमङ्गलार्थम् ॥ ३० भू० भोध्रुवइहागच्छेहतिष्ठसुप्र० । ॐ ध्रुवाय
 नमः पू० ॥ ततो ऽ न्तरेशानमारभ्य नाममन्त्रैर्हस्ताभ्यामावाहनीं
 स्थापनीं मुद्राश्चप्रदर्यपाद्यादिभिः पूजनंकुर्यात्-ईशाने-३० वैना-
 यक्यैनरः ३० भूर्भुवः स्वः वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि
 पूजियामि ॥ एवंसर्वत्र-पूर्वे-३० ऐंद्र्यैनमः ॐ भूर्भुवःस्वः एन्द्रीं
 आ० । स्था० । पू० । आग्नेये-३० कौमार्यैनमः ३० भू० कौमारीं
 आ० स्था० पू० ॥ दक्षिणे-३० ब्राह्म्यैनमः ३० भू० ब्राह्मीं आ०
 स्था० पू० । नैर्ऋत्ये-३० वाराह्यैनमः ३० भू० वाराहीं आ०
 स्था० पू० । पश्चिमे-३० चासुण्डायैनमः । ३० भू० चासुण्डाम् ।
 आ० स्था० पू० । वायव्ये-३० वैष्णव्यैनमः ३० भू० वैष्णवीम्,
 आ० स्था० पू० । उत्तरे-३० ऐश्वर्यैनमः ३० भू० ईश्वरीं आ०
 स्था० पू० । ततर्ईशानवामे-तेनैवविधना-३० गौतमायनमः, ३०

भूर्भुवःस्वः गौतममावाह्यामिस्थापयामिपूजयामि । पूर्ववामे—
 ॐ भरद्वाजायनः, ॐ भू० भरद्वाजमावाहयामि स्था० पू० ।
 अग्निवामे— ॐ विश्वामित्रायनमः । ॐ भू० विश्वामित्रम्—आ०
 स्था० पू० दक्षिणवामे ॐ कश्यपायनमः, ॐ भू० कश्यपम्—आ०
 स्था० पू० । नैर्ऋत्यवामे—ॐ जमदग्निनमः । ॐ भू० जमदग्निम्
 आ० स्था० पू० । पश्चिमवामे—ॐ वसिष्ठायनमः, ॐ भू० वसिष्ठम्
 आ० स्था० पू० । वायव्यवामे—ॐ अत्रयेनमः, ॐ भू० अत्रिम्
 आ० स्था० पू० । उत्तरवामे—ॐ अरुन्धत्यैनमः ॐ भू० अरुन्ध-
 तीम् आ० स्था० पू० । ततोवीथीशाने—ॐ त्रिशूलायनमः, ॐ
 भू० त्रिशूलम्, आ० स्था० पू० । पूर्वे ॐ अशनयेनमः, ॐ भू०
 अशनिम् आ० स्था० पू० ईशाने—ॐ शक्तयेनमः, ॐ भू० शक्तिम्
 आ० स्था० पू० । दक्षिणे—ॐ दंडायनमः, ॐ भू० दंडं आ० स्था०
 पू० । नैर्ऋत्ये—ॐ ग्वह्नायनमः । ॐ भू० खड्गम्, आ० स्था० पू० ।
 पश्चिमे— ॐ पाशायनमः, ॐ भू० पाशम् आ० स्था० पू० ।
 वातव्ये— ॐ अंकुशायनमः, ॐ भू० अंकुशम्, आ० स्था० पू०
 उत्तरे— ॐ गदायैनमः, ॐ भू० गदाम्— आ० स्था० पू० । ततो-
 वीथीपु पूर्वादिदिक्षु—ॐ ओमास इति मधुरच्छन्द ऋषिर्गायत्री-
 छन्दो विश्वेदेवादेवता विश्वेदेवावाहने वि० । ॐ ओमासश्चर्ष-
 णीधृतोऽश्विश्चदेवास ऽ आगत । दास्वा ॐ सोदासुपःसुतम् । पु०-
 ॐ विश्वे देवान्पितृ गुरु ब्रह्मकान्मंडपेश्वरान् । स्थापयामीह
 भक्त्यातान्पितृ यज्ञपरायणान् । ॐ भू० भोविश्वेदेवा इहागच्छ
 तेहृतिष्ठत सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः
 प्रजयेत् । ततोवीथी दक्षिणेपितृभ्यन्—ॐ आयन्त्विति शंखऋषि
 म्त्रिष्टुच्छन्दः पितरोदेवताः पित्रावाहने वि० । ॐ आयन्तुनः
 पितरः सोम्यासो ऽग्निष्वात्ताः—पथिभिर्देवयानैः । अस्मिन्यज्ञे
 स्वधया मदन्तोऽधिष्ठवन्तुते वन्त्वस्मान् । पु०—ॐ अग्निष्वात्ता
 दिकान्पितृभ्यन्मन्त्रगलंकार भूषितान् । देवयानानुगान्सर्वान्मन्डलेस्था
 पयाम्यहम् । ॐ भू० भोपितरः, इहागच्छत, इहतिष्ठत, सुप्रति-

ष्ठितावरदा भवन्तु । ॐ पितृभ्योनमः । ५० । ततोवीथी पश्चिमे
 सागरान्—ॐ धाम्नइति गौतमऋषिर्गायत्रीछन्दःसागरादेवताः
 सागरा वाहने वि० । ॐ धाम्नोधाम्नो राजप्रितो व्वरुणो नुमुञ्च
 यदापो ऽ अघ्न्या ऽ इतिव्वरुणेति शयामहेततो व्वरुणोनुमुञ्च । ५०
 ॐ लवणेक्षुसुरा सर्पिर्दधिदुग्ध जलाभिधान् । सागरान्सप्तक्रम-
 शोमंडपे स्थापयाम्यहम् । ॐ भू० भोसप्तसागरा इहागच्छत
 इहतिष्ठत सुप्रतिष्ठिता वरदाभवन्तु । ॐ सप्त सागरेभ्योनमः
 पू० । ततोवीथ्युत्तरे सरितः—ॐ इमम्मे इति सिन्धुचित्प्रेयमेध
 ऋषिर्जगतीछन्दः सरितोदेवताः सरिता मावाहने विनियोगः । ३०
 इमम्मे गंगेयमुने सरस्वति शतद्रूस्तोमं स्वचतापरुष्ट्या । असिक्-
 न्यामरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया । ५०—३०
 गंगां चैव सरस्वतीं च यमुनां गोदावरीं नर्वदां कावेरीं सरयूं महेन्द
 तनयां चर्मण्वतीं चालकाम् । क्षिप्रं चैत्रवतीं महासुरनदीं, ख्या-
 तांबुधैर्गंडकी मैनाः पूर्णजलाः समुद्रसहिताः संस्थापयामि क्रमात् ॥
 ३० भू० गंगांसि सरित इहागच्छते इतिष्ठत, सुप्रतिष्ठिता वरदा
 भवन्तु । ३० सरिद्भ्योनमः । पू० ॥

॥ इति सप्तदश खान्मक सर्वतोभद्रे, देवता स्थापन क्रम ॥



॥ अथ सर्वतो भद्र संघ पूजायां वैदिक पूजापद्धति ॥

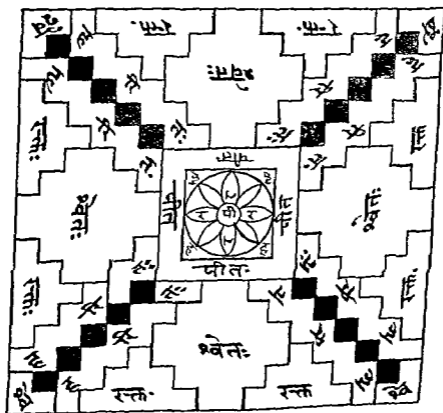
एवं पूर्वोक्त पद्धत्या सर्वतोभद्रे देवताः संस्थाप्य, एतन्तेति प्रतिष्ठाप्यत्र ध्यायत्—हरिः ३० सहस्रशीर्षा पुरुषः—सहस्राक्षः सहस्रपात् सभूमिर्द० सर्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ आसनम्—३० पुरुषऽण्वेदं द० सर्वं यद्भूतं यन्त्रभाव्यम् । उतामृत च्वस्ये शानो यदन्नेनातिरोहति,, आसनंसमर्पयामि, पायम्—३० एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्चपुरुषः । पादोस्य त्रिविधा भूतानि त्रिपादस्था मृतं दिवि, पा०स० । अर्घ्यं गन्धाक्षत सुगन्धिद्रव्य युतंच—३० त्रिपा दूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः । तलो विध्वंश्यक्रा मत्साशनानशनेऽभि ॥ अ०स० ॥ आचमनीयम्—३० ततोऽन्विराडजायत त्रिविराजोऽधिपुरुषः । सजातोऽत्यरि व्यत पश्चाद्भूमि मथोपुरः । आ०स० स्नानीयंजलम्—३० तस्माद्यज्ञा त्सर्वहुतः सम्भृतं षष्टदाज्यम् ॥ पशूंस्तार्श्चक्रे व्वायव्या नारण्या ग्राम्याश्चये ॥स्ना०ज०स०॥ पयःस्नानम्—३० पयः पृथिव्यां पयऽश्रौषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयःस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् । प०स्ना०स० । दधिस्नानम्—३० दधिक्राव्णोऽकारिपं जिष्णो रश्वस्य व्वाजिनः । सुरभिना मुक्त्वा करत्प्रणऽश्रायूँ पितारिपत् ।द०स्ना०स०। घृतस्नानम्—३० घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृतेऽश्रितो घृतम्वस्यधाम ॥ अनुष्वधमा वहमादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ बलिह्वयम् । घृत स्ना० स० । मधुस्नानम्—३० मधु व्वाताऽन्मृतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीर्मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव द० रजः । मधुर्द्यौरस्तुनः पिता मधुमान्नो व्वनस्पतिर्मधुमा र्३॥ अस्तुसूर्ध्वः । माध्वीर्गावो भवन्तुनः । म०स्ना०स० । शर्करास्नानम्—३० अपाँँ रसस्ययोरस स्तंबोर्गृह्णाम्येपते योनिरिन्द्रा यत्वा जुष्टतमम् । श० स्ना० स० । गन्धोदकस्नानम्—३० गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्येत्रियम् । ग०स्ना०स०।

ततः शंग्वोदकेन—पुरुषसूक्तेना ऽभिषेकं कुर्यान्, अमृताऽभिवे-
 कोऽस्तु,, स्नानान्ते आचमनीयम्—३० ततोऽन्विराड जायतन्विर-
 राजोऽधिपूरुषः, सजातोऽत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः। स्ना-
 नं स०। चन्द्रम्—३० तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽसृचःसामानि जजिरे
 छन्दाँँसिजजिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत, वस्त्रं सम०। वस्त्रा-
 न्ते आचमनीयं स०। यजोपवीतम्—३० तस्मादश्वा ऽग्रजायन्त-
 येकेचो भयादतः। गावोऽजजिरे तस्मात्तस्मा ज्जाताऽग्रजावयः
 यजोपवीतं स०। आचमनीयं स०। चन्दनम्—३० तंयज्ञंवाँँदिपि-
 प्रोक्षन्पुरुषं जातमग्रतः। तेनदेवाऽअग्रजन्त साभ्याऽसृपयश्चये।
 चन्दनं स०। भृषणम्—३० स्वर्णधर्मः स्वाहा स्वर्णः स्वाहा
 स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा।
 भृषणं,समर्पयामि। अक्षतान्—३० अक्षतमीमद त ह्यवप्रिया ऽ-
 धूपत। अस्तोपत स्वभानवो विप्रान विष्टया मती-
 योजान्विन्द्रते हरी ॥ अ० स०। कंकुमादि सौभाग्य द्रव्यम्—
 ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति वाँँ ज्यायाहेति परिवाधमानः।
 हस्तघ्नो विश्वा व्युनानि त्विन्द्रान्पुमान्पुसाँँ सम्परिपातु-
 विश्वतः। सौभाग्यद्रव्यं स०। पुष्पाणि—ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः
 कतिधाव्यकल्पयन्। मुखंकिमस्यासीत्किवाँँ किमूरुपादाऽ-
 उच्येते। पुष्पाणि स०। तुलसीदलम्—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे-
 त्रेधानिदधेपदम्। समृढमस्यपाँँ सुरे स्वाहा, तुलसी स० ॥
 विल्वपत्रम्—ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वमिणे च
 वरुधिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय च
 हनन्याय च। विल्वपत्र स० ॥ दूर्वाँँकुरान्—ॐ काण्डात्काण्डा-
 त्परोहन्ती परुषः परुस्परि। एवानो दूर्वं प्रतनुसहस्रेण शतेन च
 दूर्वाँँकुरान्समर्पयामि। धूपम्—ॐ धूरसि धूर्वधूर्वन्त धूर्वत योस्मा-
 त्पूर्व तितं धूर्वयंबयं धूर्वामः। देवानामसि बन्धितम ई० सस्ति-
 तमं पप्रितमं जुष्टमं देवज्ञतमम्। धूपं स०। आरातिंश्यदीपम्—
 ॐ अग्निज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योँँ ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः

स्वाहा ॥ अग्निर्वर्चां ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योर्वर्चां ज्योतिर्वर्चः
 स्वाहाः । ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ आ' स० ॥
 नैवेद्यम्—३० नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षं १० शीष्णांघ्रौः समव-
 र्त्तन पद्भ्यां भूमिदिशः श्रोत्रान्तथालोका ॥२९ अकलयन् ॥
 पूर्वापोशनम् ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ
 उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा । नैवेद्यान्ते जलं समर्प-
 यामि ॥ ततः पूगीफलम्—पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलै-
 र्मुत्तम् । सर्वतोभद्र देवानां प्रीतये कल्पयाम्यहम् । १० स० ।
 उपायनम्—ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताये भूतस्यजातः पतिरेक
 आसीत् । सदाधार पृथिवींद्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा-
 न्विधेम । उपायनं स० । ततः सफलार्धदद्यात्—ॐ याफली
 नीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणी । बृहस्पति प्रमूलास्तानो
 मुंचन्त्व १० हसः ॥ अर्घजलेन देवंस्नापयित्वा फलमग्रेस्थापयेत् ॥
 ततः पूर्वोक्त मन्त्रेण कर्पूरातिक्थं कृत्वा—पुष्पाञ्जलिर्दद्यात्—ॐ
 यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । तेहनाकं
 महिमानः सचन्त यत्रपूर्वं साध्याः सन्तिदेवाः । ॐ ब्रह्मादक्षः
 कुबेरो यमवरुण मरुद्वन्दिचन्द्रेन्द्र रुद्राः । शैलानद्यः समुद्रा ग्रह-
 गणमनुजा दैत्यगन्धर्व नागाः । सिद्धानक्षत्र तारा रविवसुमुन-
 योव्योमभूरशिवनीच, प्रोक्तानुक्ताश्च वेद्यां विहित सुरगणाः
 पान्तुनः सर्वदेवाः, ॐ चतुर्भिश्च चतुर्भिश्चद्वाभ्यां पञ्चभिरेव च ।
 ह्यते च पुनर्द्वाभ्यां समेविष्णुः प्रसीदतु ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं
 विधिहीनं च यद्भवेत् । जम्यन्तु सर्वतद्देवाः प्रसीदन्तु सदा मयि ॥
 ततः कार्यान्ते उत्तराङ्ग पूजनविधाय, पुनर्भन्त्र पुष्पाञ्जलिदत्त्वा ।
 देवताविसर्जनार्थं हस्ताभ्याम क्षतान्भद्रो परिक्षिप्त्वा, मन्त्रमुच्च-
 रेत्—ॐ यान्तुदेवगणाः सर्वे, पूजामादाय मामकीम् । इष्टकाम
 समृद्ध्यर्थं, पुनरागमनाय च, सर्वे गच्छन्तु भोदेवाः, सर्वतो
 भद्रदेवताः स्वस्वस्थानेषु तिष्ठन्तु मम कल्याण हेतवे ॥

अथेकोनविंशति रेखात्मक सर्वतोभद्रप्रमाणम्—उक्त च देवी पुराणे—
समसूत्ररुत क्षत्रे प्रागुदकप्रणभुवि । मण्डल लक्षणापत नायतत्रमहासुन । प्रागुत्तरंच मध्यवा
यथा लाभ मनाविल । सूत्रणरता शुद्धता न्यस्यावादिशिनितम् । हस्तमान प्रमाणेनतत्रस्थ
मुपरोक्षितम् । उक्त च भद्रमार्कियायाम् प्रागुदीन्यायतारैस्त्रा कुर्वाणान विंशतिम् ।
खड्गदुस्त्रिपद काण शृंगलपचभि पद । एकादश पदावल्लीभद्रतु नवभि पदै । मध्य
योडपभि कोष्ठ पद्ममण्डल स्मृतम् । श्वतेदु भ्रखला कृष्णा वल्ली नीलेनपुरयत । भद्रारुणा
सितावापि परिधि पीतवर्णं । वायातर दलं श्वेता कणिनापीतवर्णिका । परिध्यावृष्टित
पद्म वाद्यगतवरजस्तम । तन्मध्यस्थापयद्देवात्रह्याद्याश्चसुरश्वरान् । कुर्यामण्डप विस्तार
स्तम्भ पूजाकमानत ।

॥ एकोनविंशति रेखात्मक सर्वतोभद्रोद्धारः ॥



अथ दीक्षेत्रकर्मस्वेकोनविंशति रेखात्मक सर्वतो भद्र-
देवता स्थापनं पजनंचवक्ष्ये—तत्रादौकर्ता प्रातर्नित्यक्रियांकृत्वा
पूजास्थलमागत्य गणेशादीन्सम्पूज्य, प्रतिजासङ्कल्पं च कुर्यात्-
अथेत्यादिदेशकालौ सकीर्त्यामुकराशिरमुकगोत्रो ऽ मुको ऽ हं

कर्त्तव्यामुक्त कर्माङ्गत्वेन ब्रह्मादि सर्वतोभद्रस्थ देवानामावाहन
स्थापन क्रमेणपूजनं करिष्ये—आचार्यमपिच वृणुयात् । तत्रादौ
मध्येकार्णिकायाम्—अक्षतपुष्पै रावाहनीमुद्रां प्रदर्श्य ब्रह्माणमावा
हयेत् । ३० आवाहयामिदेवेशं ब्रह्माणंकमलासनम् । चतुर्भुजं
सृष्टिकरंधारयन्तं कमण्डलुम् । ३० ब्रह्मजज्ञानमितिमन्त्रस्य प्रजा
पतिऋषिस्त्रिष्टुप्प्लुन्दो ब्रह्मादेवता ब्रह्मस्थापने विनियोगः । ३०
ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमनं सुरुचोब्धेन ऽ आचः । सुबुध्या
ऽ उपमा ऽ अस्यविष्टाः सतश्चयोनि मसतश्चच्चिवः । ३० भूर्भु-
वः स्वः, ब्रह्मत्रिहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदोभवः । ३०
ब्रह्मणेनमः । एवंसर्वत्र ॥ तत उदीचीमारभ्य वायव्यान्तं कुबेरादी
न्वायुपर्यन्तान्नष्टौ लोकपान्स्थापयेत् ॥ उत्तरेवाप्यांसोमम्—आवा
हयाम्यहंसोमं रोहिणीशंसुधामयम् । ३० ज्योतिर्मण्डलसंकीर्णं सर्व
कल्याणहेतवे । ३० वयं ऀ० सोमेत्यस्य वन्धुऋषिर्गायत्रीहृन्दः
सोमोदेवता सोमस्थापने विनियोगः । ३० वयं ऀ० सोमव्रतेतव
मनस्तनूषुविभ्रतःप्रजावंतःसचैमहि । ३० भू० सोम० ॥ ईशान्यां
वण्डेन्दायीशानम्—आवाहयाम्यहं देवमीशानं वृषवाहनम् । पञ्चवक्रं
त्रिनेत्रं शूलहस्तं कपालिनम् । ३० तमीशानमित्यस्य गौतम-
ऋषिर्जगतीहृन्द ईशानोदेवता ईशानस्थापने विनियोगः । ३०
तमीशानं जगतस्तस्थुस्पतिं धियं जिन्वमवसे ह्रमहेव्वयम् ।
पूषानोयथाव्वेदसाम सद्बुधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये । ३० भू०
ईशान० ॥ पूर्ववाप्यामिन्द्रम्—३० आवाहयामिदेवेशं देवराजं
सुरार्चितम् । एरावतसमारूढं वृत्रघ्नं कुलिशायुधम् । ३० त्रातार
मितिमन्त्रस्य गर्गऋषिस्त्रिष्टुप्प्लुन्द इन्द्रोदेवता-इन्द्रस्थापने विनि-
योगः । ३० त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं ऀ० हवेहवे सुहव ऀ०
सूरमिन्द्रम् । ह्यामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्रं ऀ० स्वस्तिनोमघवा
धात्विन्द्रः । ३० भू० इ० । आग्नेयां स्वण्डेन्दावग्निम्—दिव्यरूपं
त्रिनयनं देवानां हव्यवाहकम् । सप्तजिह्वं वायुसगवमाहयेद्बुधवाह-
नम् । ३० त्वन्नो ऽ अग्र इतिमन्त्रस्यांगिरस हिरण्यस्तुप ऋषि

जगतीञ्छन्दो ऽग्निदेवताग्निस्थापने विनियोगः । ३० त्वन्नो ऽ
 अग्ने तवदेवपायुभिर्मघोनोरक्षन्वश्चव्यः । चातातोकस्यतनये
 गवामरयनिमेष ई० रक्षमाणस्तवव्रते । ॐ भू० अग्ने० ॥ दक्षिणे
 वाप्यांशमम् ।—आवाहयाम्यहं देवं परेतेशंभयङ्करम् । दण्डहस्तं
 रक्तनेत्रं यममहिषवाहनम् । ३० यमायत्वेतिमन्त्रस्य - दध्यङ्गाथ-
 र्वणऋषि ऋषिण्यजूषि आद्यस्य यमनामा चालोत्पयोर्धर्मो देवता
 यमस्थापने विनियोगः । ॐ यमायत्वांगिरस्वते पितृमतेस्वाहा ।
 स्वहाघर्वायस्वाहा घर्मःपित्रे । ॐ भू० यम० ॥ नैर्ऋत्यांखण्डेन्दौ
 निर्ऋतिम् । ॐ आवाहयांमिरक्षार्थं निर्ऋतिंनैर्ऋताधिपम् । खड्ग
 हस्तंकरालास्यं लिहन्तंसृक्किणीद्वयम् । ॐ असुन्वन्तमित्यस्य
 प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो निर्ऋतिदेवता निर्ऋतिस्थापने विनि-
 योगः । ३० असुन्वन्तम यजमानमिच्छुस्तेनस्येत्या मन्विहितस्कर-
 रस्य । अन्यमस्मदिच्छुसातऽइत्या नमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु । ॐ
 भू० निर्ऋते० । पश्चिमेवाप्यांवरुणं—आवाहयामिदेवेशं वरुणं
 सागराधिपम् । मखसंरक्षणार्थं च मुक्ताहारविराजितम् । ३० इमम्म
 इत्यस्यशुनः शोफ ऋषिर्गायत्रीछन्दो वरुणो देवता वरुणस्थापने
 विनियोगः । ॐ इमम्मे वरुणश्रुधी हवमद्या चमृडय त्वामवस्यु
 राचके । ॐ भू० वरुण० ॥ खण्डेन्दौ वायव्यांवायुम् । ३० आवा
 हयामिदेवेशं वायुंवायव्यरक्षकम् । मृगारूढं चण्डवेगं सर्वप्राणे-
 श्वरंप्रभुम् । ३० आनोनियुद्धिरितिमन्त्रस्य वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छ-
 न्दो वायुदेवता वायुस्थापने विनियोगः । ३० आनोनियुद्धिः
 शतनीभिरध्वर ई० सहस्रिणीभिरुपयाहियजम् । वायो ऽ अस्मि
 न्सवनेमादयस्वयूयंपातः स्वस्तिभिः सदानः । ॐ भु० वायो० ॥
 ततो वायु सोममध्ये भद्रे वसून् । ॐ आगच्छन्तु महाभागा
 वसवोऽग्नौ महावलाः । अस्ययागस्यसिद्धयर्थं यूयमत्रसुतिष्ठतः ।
 ॐ सुगावो देवा इति मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वसवो
 देवताऽष्टवसुस्थापने विनियोगः । ३० सुगावो देवाः सदानाऽ
 अकर्मज ऽ आजग्मेद ई० सवनं जुपाणाः । भरमाणा च्वहमाना-

हवीं ँप्यस्मैघत्त व्वसवोव्वसूनि । ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ध्रुवं
धरं च सोमं च तथैवापोनिलानलौ । प्रत्यूपं च प्रभासं च भद्रे
संस्थापयाम्यहम् । ॐ अष्टवसुभ्योनमः । वसव इहागच्छते-
हतिष्ठतः । सोमेशानमध्ये भद्रे एकादश रुद्रान् । ॐ आवाह-
यामि लोकेशान् रुद्रान्नैकादशान् क्रमात् । विश्वधारिणो
नीलान् घराभयकराञ्छुभान् । ॐ रुद्राः स र्दं सृज्येत्यस्य
प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दो रुद्रा देवता एकादश, रुद्रस्थापने विनि-
योगः । ॐ रुद्राः स र्दं सृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे ।
तेषां भानुरजस्र इच्छुक्रो देवपुरोचते । ॐ अजैकपादहिर्बुध्न्यौ
विरूपाक्षं च रैवतम् । हरं च बहुरूपं च त्र्यम्बकं च सुरेश्वरम् ॥
सावित्रं च जयन्तं च पिनाकिनमतः परम् । स्थापयामि क्रमादे-
तान् रुद्रान्मण्डल पूजने । ॐ भू० एकादश रुद्रा इहागच्छते-
हतिष्ठत सु० ॥ अत्रोदक स्पर्शः—ईशानेन्द्रमध्येभद्रे द्वादशादित्यान
ॐ आवाहयामि देवेशानंधकारविनाशकान् । तीक्ष्णरश्मीन्मा-
सभेदाद्द्वादशादित्य संज्ञकान् । ॐ यज्ञो देवानामित्यस्य कुत्स
ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द आदित्यो देवता आदित्य स्थापने विनियोगः ।
ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्या सो भवता मृडयन्तः ।
आधोर्वाची सुमतिर्ववृत्याद र्दं होरिचया च्वरिधोचित्तरा
सदादित्येभ्यस्त्वा । ॐ भू० धातारमधरुद्रं च ततश्चार्यं ममित्र-
कौ । वरुणाख्यं च सूर्य्यं च विवस्वन्तं भगं तथा । पूषं च सवि-
तारं च त्वाष्ट्रं चैव क्रमादिह । मखसंरक्षणार्थाय भद्रेऽस्मिन्स्था-
पयाम्यहम् । भो द्वादशादित्या इहागच्छतेह ॥ ॐ द्वादशादि-
त्येभ्यो नमः । इन्द्राग्निमध्ये भद्रेऽश्विनौ । ॐ आवाहयाम्यहं देवा
वाश्विनेयौभिषग्वरौ । सूर्य्यपुत्रौयुग्मदेहौ सौम्यरूप धराबुभौ ॥
ॐ यावांशेत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽश्विनौ देवतेऽ-
श्विनोः स्थापने विनियोगः । ॐ यावांशामधुमत्यश्विना
सूनुतावती । तथा यज्ञमिमिच्छतम् । ॐ भू० अश्विनौ० ।
अग्नियममध्ये भद्रे विश्वेदेवान्—ॐ आवाहयामि देवेशान् विश्वे

देवान्विचक्षणान् । पितृध्यान परान्सौम्यान्स्मेराननविभूषितान् ॥
 ३० विश्वेदेवास ऽ इत्यस्य गृत्समद् ऋषिर्गायत्री छन्दो विश्वेदेवा
 देवताविश्वेदेव स्थापने विनियोगः । ३० विश्वेदेवास ऽ आगत
 शृणुतामऽइम ई० हवम् । एदम्बर्हिर्निषीदत । ३० भू० विश्वे-
 देवा० ॥ यमनिर्ऋतिमध्ये भद्रेयज्ञान्—३० आवाहयाम्यहं
 यज्ञान्विकटास्या नभयापहान् । यमनिर्ऋतयोर्मध्येभद्ररक्षणहेतवे
 ॐ अभित्यं देवमित्यस्यवत्स ऋषिर्जगतीछन्दो यज्ञादेवता यज्ञ
 स्थापने विनियोगः । ॐ अभित्यंदेव ई० सवितारमोय्योः कवि-
 क्रतुमर्चामि सत्यसव ई० रत्नधामभिः प्रियंमर्तिकविम् । ऊर्ध्वा-
 यस्यामतिर्भा अदित्युत्सवी मनिहिरण्यपाणि रमिमीत शुक्रतुः
 कृपास्वः । ॐ भू० यज्ञाद्वागच्छतेहति तसु० । निर्ऋति वरुण-
 मध्येभद्रे सर्पान्—३० काद्रवेयान्महाभागानाशीविषधरान्परान् ।
 पन्नगारीन्महासर्पान्भद्रेऽस्मिन्नाहयाम्यहम् । ॐ नमोऽस्तु
 सर्पेभ्य इत्यस्य प्रजापतिर्षिर्ऋरनुष्टुप्छन्दः सर्पादेवताः सर्पस्था
 पने विनियोगः । ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथिवीमनु । येऽ-
 अन्तरिक्षे वेदिवितेभ्य- सर्पेभ्योनमः । ३० भू० सर्पा० । तत्रैव
 भूतान्—३० भूतेभ्योनमः । भूतानाव ह्यामि स्थापयामि । वरु-
 णवायुमध्येभद्रे- गन्धर्वाप्सरसः—३० गन्धर्वाप्सरसश्चैव शक्ता-
 दित्रिदशप्रियान् । अस्ययागस्य सिद्धयर्थं भद्रेऽस्मिन्नाहयाम्य-
 हम् ॥ ३० ऋतापाडित्योभयो लृशोधानाक ऋषिरुष्णिक्छन्दो
 गन्धर्वाप्सरसो देवता गन्धर्वाप्सरसः स्थापने विनियोगः । ३०
 ऋतापाडित्य धामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदोनाम ।
 सनऽइदं ब्रह्मज्ञत्रं पातुतस्मै स्वाहा वाट्ताभ्यः स्वाहा । ३० भू०
 गन्धर्वाप्सरस० ॥ उत्तरे वाप्यां ब्रह्मसोममध्ये स्कंदादीन्—३०
 आगच्छन्तुमहाभागा स्कन्दाद्या देवतागणाः । अस्ययागस्य
 शान्त्यर्थं भद्रेऽस्मिन्नाहयाम्यहम् । ३० यदप्रांद्देत्यस्य जमदग्नि
 दीर्घतमावृथी त्रिष्टुप्छन्दः स्कन्दो देवता स्कन्द स्थापने विनियोगः
 ३० यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रा हुतवापुरीपात् ।

रथेनस्यपक्षा हरिणस्य चाहृऽ उपस्तुत्यंमहि जातंतेऽथर्वन् । ३०
 भू० स्कन्द० तत्रैवनाम मंत्रै ३० भू० नन्दिने नमः । नन्दिनमा-
 वाहयामि स्था० । ॐ भू० ईश्वरायनमः । ईश्वरमावा० ॐ भू०
 शूलायनमः । शूलं० । ॐ भू० महाकालायनमः । महाकालं० ।
 ब्रह्मेशानमध्ये वल्लीपु दत्तादिसप्तकम् । ॐ नमस्ते देवदेवेशंसत्य-
 लोक निवासिनम् । आवाहयामि मखेहास्मिन्कुशलं दक्षस-
 प्तकम् । ॐ तानित्यस्य गौतम ऋषि जंगतीञ्छन्दो दत्तादयो
 देवता दक्षसप्तक स्थापने विनियोगः ॥ ॐ तान्पूर्व्वयानि
 विदाहमहे व्वयं भगंमित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम् । अर्घ्यमणं
 वरुण ई० सोममरिधना रस्वतीनः सुभगामयस्करत् ॥
 ३० भू० दत्तादिसप्तकेहागच्छ० । ब्रह्मेन्द्रमध्येवाप्यांद्गुर्गाम् ।
 आवाहयामिदेवेशिं दुर्गादुर्गातिनाशिनीम् । सर्वसौख्यप्रदात्रींच
 जगन्मङ्गलकारणीम् । ३० अम्बेअम्बिकइत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनु-
 ष्टुञ्छन्दो दुर्गादेवता दुर्गास्थापने विनियोगः ३० अम्बे अम्बिके-
 म्वालिके नमानयतिकश्चन । ससत्यः श्वकः सुभद्रिकां काम्पील
 वासनीम् । भू० दुर्गे० । तत्रैवविष्णुम्—आवाहयामिमहाविष्णुं
 शार्ङ्गचक्रधरंप्रभूम् । गदाजलजविभ्राणंशरण्यं कमलाप्रियम् । ३०
 इदंविष्णुरित्यस्य मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीञ्छन्दो विष्णुर्देवताविष्णु-
 स्थापने विनियोगः । ३० इदंविष्णुर्विचकमे त्रेधानिदधेपदम् ।
 समूढमस्यपा ॐ सुरे । ३० भू० विष्णो० । ब्रह्माग्निमध्ये वल्ली-
 पुपित्ऋन्वधयासह—आवाहयामिसोष्णीपान पित्ऋन्वमदिशि-
 स्थितान् । अग्निष्वातादिकारंश्चैव भद्रे ऽ स्मिन्स्वधयासह ॥ ॐ
 पितृभ्यइत्यस्य प्रजापत्यरिव सरस्वत्यऋषयः सप्तयजूंपितृन्दांसि
 मन्त्रालिंगोक्तादेवताः स्वधयासहपितृस्थापने वि० । ॐ पितृभ्यः
 स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः ।
 प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः । अक्षन्नपितरो मीमदन्त-
 पितरो तीतृपन्तः पितरः शुन्धध्वम् । ३० भू० स्वधयासह पितृ-
 गणा इहागच्छतेह० । ब्रह्मयममध्येवाप्यांमृत्युम् । ३० कालशक्ति

धरदेवं मृत्युंप्राणापहारकम् । आह्वयामिकरालास्यं यजरक्षण-
हेतवे । ॐ परंमृत्यो इत्यस्यसङ्कसुकर्षिस्त्रिष्टुष्टुन्दो मृत्युर्देवता-
मृत्युस्थापने विनियोगः । ॐ परंमृत्यो ऽ अनुपरेहिपन्थां यस्ते ऽ
अन्य इतरोदेवयानात् । चक्षुष्मतेशृण्वते तेब्रवीमिमानः प्रजा ॐ
रीरिषोमोतब्वीरान् । ॐ भू० मृत्यो० । अत्रोदकः स्पर्शः ।
ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये वल्लीपुगणेशम् । ॐ आवाहयामिदेवेशं गजा-
स्यमेकदन्तकम् । जगन्मङ्गलकर्त्तारं गणेशंविघ्ननाशकम् । ॐ
गणानान्तवेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरचत्वारि यजूंषिष्ठुन्दांसि गण-
पतिर्देवता गणपतिस्था० ॐ गणानान्त्वा० सिगर्भधम् । ॐ भू०
गणेश० । ब्रह्मवरुणमध्येवाप्यामपः—आगच्छन्तुमहाभागा अपः
शुभ्रामलापहाः । जगतां प्रलयेवापिनारायण समाश्रिताः । ॐ
शन्नोदेवीरित्यस्यदध्यङ्गाथर्वण ऋषिर्गायत्रीछन्दऽआपोदेवता
अपांस्थापने वि० । ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय ऽ आपोभङ्गन्तुपीतये ।
शंयोरभिभ्रयन्तुनः । ॐ भू० अपडहागच्छतेह० । ब्रह्मवायुमध्ये
वल्लीपुमरुतः—ॐ आगच्छन्तुमहाभागा मारुतारचण्डविक्रमाः
इन्द्रानुजाः सौम्यरूपासैलोक्यप्राणरक्षकाः । ॐ मरुतोयस्येतस्य
गौतमऋषिर्गायत्रीछन्दो मरुद्देवता मरुतांस्थापने विनियोगः । ॐ
मरुतोयस्यहिच्छेपाथादिवोच्चिमहसः ससुगोपातमोजनः ॐ भू०
एकोनपञ्चाशन्मरुतडहा० । मध्येब्रह्मणःपादमूलेकर्णिकाधः पृथिवीम्
आवाहयामि वसुधां सर्वेषांस्थितिर्ऋषिणीम् । वराहस्थापितां
देवीं सर्वाकर निभांपराम् । ॐ स्योनापृथिवीत्यस्य मेधातिथि-
र्ऋषिर्गायत्री छन्दः पृथ्वी देवता पृथ्वी स्था० । ॐ स्योना
पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथाः । ॐ
भू० पृथिवी० । तत्रैवमेरुम् ॥ आवाहयाम्यहं मेरुं दिव्यलोक
समाश्रितम् । यज्ञविघ्नोपशान्त्यर्थं पर्वताधिपति प्रभुम् । ॐ
प्रवर्ततेत्यस्य देववात ऋषिस्त्रिष्टुष्टुन्दो मेरुर्देवता मेरु स्था० ।
ॐ प्रवर्ततस्य ऋषभस्य पृष्ठानावश्ररन्ति स्वसि च ऽ इयानाः ।
ना ८ आच वृत्रघ्नधरागुदक्ता अहि बुध्न्य मनुरीयमाणाः । ॐ

भू० मेरो० । तत्रैवगंगादि नदीः । गंगाद्याः सरितः श्रेया जग-
दाद्यौघधस्मराः । पुण्यापो निर्मलाः सर्वाः भद्रेऽस्मिन्नाह्या-
म्यहम् । ॐ इमम्मे—इति सिन्धुक्षित्प्रैयमेधऋषिर्जगती ह्यन्दो
वरुणो देवता सरित्स्था० । ॐ इमम्मे गंगे यमुने सरस्वति
शतद्रुस्तोमंस्व च तापरुष्ठया । असिकन्या मरुद्बृधेवितस्तयार्जी-
कीये शृणुह्याशुषो मया ॥ ॐ भू० गङ्गादि सप्तसरितः० । तत्रैव
पृथिव्यां सप्तसागरान्—ॐ आवाहयामि देवेशान्—सागरात्र-
लगभिनान् । जलाधिपाश्रितान्सर्वान्यजरत्नाकरानहम् ॥ ॐ
समुद्रोसीत्यस्य लुपोधानाकऋषिर्गायत्रीह्यन्दो वरुणो देवता
समुद्रावा० । ३० समुद्रोसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूरभिमावाहि
स्वाहा । ३० भू० सप्तसागराः० । ततो बाह्योत्तरपरिधौ सोमादि
समीपे ३० भूर्भुव स्वः, गदायै नमः, गदामावाहयामि स्थापया-
मि पूजयामि च । एवं सर्वत्र ॥ ईशानान्तिके ३० भू० त्रिशू-
लायनमः । त्रिशूलं० । पू० इन्द्रान्तिके—३० भू० वज्रायनमः ।
वज्रमा० । ३० आ० अग्निसमीपे—३० भू० शक्तयेनमः शक्तिमा० ।
द० यमान्तिके ३० भू० दण्डायनमः, दण्डमावा० । नै० निर्ऋ-
तिसमीपे—३० भू० खड्गायनमः खड्गमावा० । प० वरुणांतिके—
३० भू० पाशायनमः पाशमा० । वा० वायुसमीपे—३० अंकुशा-
यनमोऽकुशमा० गदाबाह्योतरे—३० भू० गौतमायनमः । गौतम
मावा० । ईशाने—३० भू० भरद्वाजायनमः, भरद्वाजमावा० ।
आग्नेय्यां—३० भू० करयपायनमः करयपं० । दक्षिणे—
३० भू० जमदग्नेयनमः, जमदग्निमा० । नैर्ऋत्यां—३० भू०
वसिष्ठाय नमः वसिष्ठमावाहयामि परिचमे—ॐ भू० अत्रये
नमः, अत्रिमावा० । वायव्याम्—३० भू० अरुंधत्येनमः
अरुंधतीमा० । तद्बाह्योर्ष्वदितोऽष्टौ शक्तिः स्थापयेत् । ३० ऐं
ऐन्द्री नमः । ऐन्द्रीमा० । आग्नेये—३० कौं कौमायै नमः कौमारीमा० ।
दक्षिणे—त्रं ब्राह्म्ये नमः, ब्राह्मीमा० । नैर्ऋत्याम् वं वराह्ये नमः,
वराहीं० । पश्चिमे ३० चां चामुण्डायै नमः । चामुण्डामा० ।

वाद्यव्ये-वं वैष्णव्येनमः । वैष्णवीं० । उत्तरे-कौं कौवेयैनमः
 कौवेरीमा० । एवं सर्वतोभद्रदेवता आवाह्यः पूजनं तु पूर्वं
 दीक्षाङ्ग सर्वतोभद्रोक्त प्रकारेण वा पुरुषसूक्तेन सङ्घपूजनादिकं
 विधायतेनैव प्रकारेण दिग्पालादि क्षेत्रपालान्तां वलिदत्त्वा प्रधान
 होमान्ते-स्थापनक्रमेणैव तत्तन्मन्त्रैर्वा नाममन्त्रैः प्रत्येकं दशदश-
 यवतिलाज्याहुतिभिरेकैकाज्याहुत्या वा जुहुयात् । ग्रन्थ विस्तीर-
 भयान्नात्र दर्शितः ॥

॥ इत्येकोनविंशति रेखात्मक सर्वतोभद्रपूजा पद्धतिः ॥



श्री गणेशायनमः । उक्तं च शास्त्रात्तिलके । ततोऽप्यमिदं चोगवास्तुयागपुरस्सरम् ।
 कृतेनयेनमंत्रज्ञोदीक्षायाः फलमरगुते ॥१॥ राजसंवास्तुनामानं हन्वादिप्रयत्तसुम् । स्थितास्त्रिंश-
 चाशदंवास्तोभ्यः पूर्ववलिदरेत ॥२॥ वलिमण्डलमन्तेपायथावदभिधोयते । पूर्वापरायतंस्रंविन्व-
 मेदुक्तमानतः ॥३॥ तन्मध्येकिंचिदालव्यं मत्स्यौद्वीपरिकल्पयेत् । तयोमध्येस्थितसूत्रं विन्वसे
 दक्षिणोत्तरम् ॥४॥ द्वाभ्यांद्वाभ्यांततोप्राभ्यां कोणेपुमकरास्त्रिवेत । मत्स्यमध्येस्थिताप्राणि तत्र
 सूत्राणिपातयेत् ॥५॥ चतुरस्रभवेत्तत्र चतुष्कोष्ठमन्वितम् । तत्तुनविभजेन्मत्रो चतुःपष्ठिपदं
 यथा ॥६॥ ईशानाद्रक्षसांयावद्यापदप्रेप्रभंजन । एवं सूत्रद्वयंदशान्करस्य सूत्रं समाहितः ॥७॥
 ब्रह्मणः पूजये दादीमध्ये काष्ठचतुष्टये । दिक्चतुष्केषुपूर्वादियजेत्प्यनखोन्तरम् ॥८॥ विवस्वन्तं
 ततोमित्रं महीधरमत परम् । शोणाहंकोष्ठद्वन्द्वेषुपन्थादि परितः पुन ॥९॥ सावित्रं सवितारं
 च शक्रमिन्द्रं जयं पुनः । रद्रंजयन्तं चयजेदपश्चैवापवत्सकम् ॥१०॥ स्वर्गस्य सूत्रोभयतः कांठ-
 द्वन्द्वेषुदेविकः शर्वगुहंचार्यमणसं जृम्भकं मयजेत्ततः ॥११॥ चरको च विदारो च पूतना पाप-
 राक्षसीम् । अर्चये द्विसुपूर्वादिसाधांशन्त पदेश्विमान् ॥१२॥ अष्टायष्टी विभागोनेदवान्ते शिक-
 सत्तम । क्रमादोशानपजेन्व्यं शिखिवोभ्यमसत्रकान् ॥१३॥ पिष्टिपिष्टं गत्यगृश्रीचान्तरिचन्नु-
 पूर्वकं । अग्निपूष्यं चवितर्थयमं चगृहरक्षम् ॥१४॥ गन्धर्वं गृगराजं चगृगंदर्पितानस्तथा ।
 दीवारिकं च सुग्रीवंवरुणं पुष्पदन्तकम् ॥१५॥ असुरं च तथापार्षं रोमं पित्र्द्वैचपश्चिनमः । पायु-
 नागं च मोमं च सुदुर्गं भद्राटभेवच ॥१६॥ संपदिति चादितितुषुधेरं दिशि पूजयेत् । उष्णाना-
 मपिदेवानां पदान्यापूर्वं पचभि ॥१७॥ रजाभिरहैष्यैर्हैभ्यः पायागान्पंचलिहरेत् । क्रयदा-
 स्वस्व वलिभिर्वास्तु मण्डलमर्चयेत् ॥१८॥ इति वास्तुमण्डलभेवानांस्थापनम् ॥ अत्र च वास्तु-
 भद्रस्थामराणां सर्वशो मंत्रवर्णनमस्त्यग्रं । ब्रह्मणः हरितं ब्रह्मज्ञानमिति मयजेत् । त्रिवर्णन्ते
 पीतवर्णं विरस्वमिति संयजेत् ॥१९॥ मित्रं श्वेताशुभं मित्रस्वर्णमग्रेण मयजेत् ।
 महीधरं नीलवर्णसद्ग्राम इति मयजेत् ॥२०॥ सावित्रं कपिलं चार सुपयामेति मयजेत् । मरुतारं च

कपितं विश्रानोति चास्येति ॥ १३ ॥ शक्रशुभ्रदेवर्षेण वेन्द्रामन्नेति मयजेत । इन्द्र च कपिला वा-
मायाविक्रेति मयजेत । १४ ॥ तस्य च तपित्तार गंधमिदं मयतोयजेत । इन्द्र नीलवृत्तिताने इन्द्र
मंत्रेण मयजेत । १५ ॥ जयन्त शुभ्रवर्षेण च त्रैभूत्तरयेति मयजेत । अथ शुभायनेश्या क्रामान्मा
त्तर इत्यत । १६ ॥ आपान कृष्णवर्षेण आोत्तमेति मयजेत । शत इयेतावृत्ति मानोमहाय्य मिति
मयजेत । १७ ॥ स्वन्द शुभ्रवदवन्द मय्येण मयजेत्तत । रथवर्षेण चार्थमण्येण मयजेत्तत । १८ ॥ चंभक पीतवर्षेण च गर्दैवामिति मयजेत । चरकी कृष्णवर्षा च वन्देदेविति मयजेत । १९ ॥
त्रिदारो कपित्तारा मत्तराजयतो यजेत । पूतना पीतवर्षा च कट्टिप्रिया यतोयजेत । ११० ॥
पापराक्षिकीकृष्ण मय्याहोमन्त्रतोयजेत । ईशानशुभ्रवर्षेण यमोशानेति मयजेत । १११ ॥
पर्वन्मन्त्रोत्तपण्येण जन्तोपातेति मयजेत । शिपिनकजकार नम शम्भरायतोयजेत । ११२ ॥
वीभन्मन्त्रुत्तपण्येणो वस्वधीमन्त्रतोयजेत । पिपिपिन्दुवृष्णाण्य कपित्तारिमयतोयजेत । ११३ ॥
सत्यं कपिलवर्षेण च मह्यं चमेति मयजेत । मृशकपिलरथेण अत्तराहृषितं यजेत । ११४ ॥ अन्तरिच
शुभ्रवर्षेण च तं मे प्रणतं यजेत । अग्निरहावृत्ति त्वन्नोश्चाने मय्येण यजेत । ११५ ॥ पुष्परायामलवर्षेण
च स्वयंभूरमितोयजेत । तिलधपीतवर्षेण तत्तत्तयेति मयजेत । ११६ ॥ यमस्यामलरथेण यमाम
त्वेति मयजेत । मत्तराजयत्तर मत्तमाममयतोयजेत । ११७ ॥ मधवद्वेत्तवर्षेण च मधवद्वेत्तयेति
मयजेत । अहाराजनीलवर्षेण गौरीशिलाकतोयजेत । ११८ ॥ मृगलुरक्षवर्षेण मृगोमिति यजेत्तत ।
द्वीवारिचंभ्रवर्षेण द्वे विरूपेति तोयजेत । ११९ ॥ सुप्रोपीतवर्षेण नीलवर्षेति मयजेत । यदण्युहिना-
कार ब्रह्मण्येति मयजेत । १२० ॥ पुष्पदन्तपीतवर्षेण मोममयति यजेत । असुरं कर्मलाकारं यम-
द्विनेति मयजेत । १२१ ॥ पापकृष्णावृत्ति चैतनेन्द्राद्वि मयजेत । रोगरहावृत्ति यद्वेपोदनेति
मयजेत । १२२ ॥ पितृवृशुभाहृणागान्त मय्येण च मेति । वायुरहावृत्ति वायुं धेतं मय्येण मयजेत ।
१२३ ॥ नम कृष्णावृत्ति चराहृषियेति मय्येण । गोमशुभावृत्ति गोमराजानमिति मयजेत । १२४ ॥
सुख्यशुभावृत्तिमान स्तोत्रे मय्येण मयजेत । भ्राष्टनीलवर्षेण मिमात्रावतोयजेत । १२५ ॥ शेष
इयेत यात्रशोममय्येण च मय्येण । द्वितिरहावृत्ति द्विरमय्येति मय्येण । १२६ ॥ अदितिकृष्ण-
वर्षेणैव एतावन्ति तोयजेत । वाहानाण्यमय्येण वाहानाण्येति तोयजेत । १२७ ॥ अथ जिनं
विधानं रथे मन्त्रपायत विन्तारतोष वासोमानीदिति । कवीप्यन्तु प्रयत्नेन चतुरस्र
यथावन्ति ॥ १ ॥ वास्तभद्रेण्येदेव च शुभ्रवर्षेण मय्येण । कवीप्येत्तरादिरं कवीधनुकोणेपु
वर्षे ॥ २ ॥ त्र्योपविन्ति येद्भद्रं पूर्वोत्तविधिनामृषी । त्रैवर्षवर्षेण मय्येण स्थानानि पूरयेत् ॥ ३ ॥
वास्ववावृत्तिस्त्रैणमयी नामाकारां गुशाभनाम् । प्रतिमां स्थापयेत् मय्येण मय्येण पश्चिमि तटे ॥ ४ ॥
कायां सुप्रतिमां मय्येण चैतुशुभ्रवर्षेण । सामान्यव्यक्तिभिः काशीराजता प्रतिमां शुभा ॥ ५ ॥
अम्युत्तारणां कृत्वा पूर्वोत्तविधिनामृषी । मगदले शानकोणे तु सदीपकलान्यसेत् ॥ ६ ॥ पश्चो
त्तविधानेन कलशपूजयेत्तत । सङ्कल्पवत्तत पूजां तत पूजां मय्येण ॥ ७ ॥ प्रतिमां स्थापये
तत स्थानपुत्रपुत्रपुत्र । परं भावाकविगिनयेता स्थापयेत्कमात् ॥ ८ ॥ ब्रह्मण्यपि च
द्वैयानिवर्णतुल्यानि जामत । शाभार्थपदसनां च न्यसेत्पूजापलान्यपि ॥ ९ ॥ पच्यमाणा विधानेन च
रहद्भद्रव्यता । पाद्याद्येन विधानेन प्रयुज्यात्सुपूजनम् ॥ १० ॥



दीक्षांग वास्तु भद्रम् ।

पूर्वः

<p>शिरः २५ कर्मलकारः</p> <p>पञ्चमः २५ रश्मिः २५</p> <p>शिरः २५ कर्मलकारः</p>	<p>शिरः २५ कर्मलकारः</p>	<p>वोमसः गुणः २६</p> <p>विलिपिच्छः २७ कृष्णः</p>	<p>सत्यः कपिलवर्णः २८</p>	<p>शुभः २६ कपिल</p> <p>अपतरिका ३० अग्निर ३०</p>
<p>शिरः २५ कर्मलकारः</p> <p>शिरः २५ कर्मलकारः</p> <p>शिरः २५ कर्मलकारः</p>	<p>महीधरः ५ नील</p>	<p>अयमा २ स्वेतः</p> <p>ब्रह्मा १ हरितः</p> <p>वास्तुपुरुपायनमः नागाकृतिः</p>	<p>कर्मलकारः नविताना २६</p> <p>विद्यमानः ३ पीतः</p>	<p>वितथः ३३ पतिः</p> <p>यमः ३४ कृष्णः</p> <p>गृहरत्नाकरः श्वेतः ३५</p>
<p>शिरः २५ कर्मलकारः</p> <p>शिरः २५ कर्मलकारः</p> <p>शिरः २५ कर्मलकारः</p>	<p>शिरः २५ कर्मलकारः</p> <p>शिरः २५ कर्मलकारः</p> <p>शिरः २५ कर्मलकारः</p>	<p>शिरः २५ कर्मलकारः</p> <p>शिरः २५ कर्मलकारः</p> <p>शिरः २५ कर्मलकारः</p>	<p>शिरः २५ कर्मलकारः</p> <p>शिरः २५ कर्मलकारः</p> <p>शिरः २५ कर्मलकारः</p>	<p>शिरः २५ कर्मलकारः</p> <p>शिरः २५ कर्मलकारः</p> <p>शिरः २५ कर्मलकारः</p>

पच्छिमः

दीक्षांग वास्तुमण्डल देवता पूजा पद्धतिः

कर्ता प्रातः कृत्यंकृत्वा गणपत्यादि पंचांगपूजां विधाय वास्तुमण्डपमागत्य—हरिः ॐ अच्युतायनमः । ॐ केशवायनमः । ॐ माधवायनमः । त्रिराचम्य पृथ्वीं सम्पूज्याक्षते भूतोत्सादनं रक्षाविधानानुसारेण कृत्वादीपं प्रज्वाल्य सम्पूज्य च प्राणायामत्रयं विधायप्रधान संकल्पं कुर्यात् । हरिः ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोऽहं मेऽस्याभैकस्यामुकशर्मणो वर्मणोगुप्तस्यवा वैजिकगार्भिकैनो निवर्हेण पूर्वक ब्रह्मवलायु वृद्धये, श्रौतस्मार्त कर्मानुष्ठान सिद्धिद्वारा, करिष्यमाण चूडोपनयन वेदारंभ समावर्तनाख्य कर्मसु तदुपयोग्य युतात्मक ग्रहमखमंडपरक्षणाय वास्त्वर्चनविधौ, ब्रह्मादि वास्तुपुरुषपर्यन्तानां देवतानां प्रीतये तत्तद्देवतानां मन्त्रैरावाहनाद्यर्चनं करिष्ये ॥ इति ॥ तदंगतया वास्तुपूजन वलिदानं च करिष्ये तत्पूर्वाङ्गतयावरुणपूजनंचकरिष्ये; तत्रादावाचार्यं वृणुयान् । ॐ नमोस्त्वन्तायेति पार्थसमर्पयामि । गंधद्वारामितिगन्धम् । पुष्पादिभिराचार्यं ब्राह्मणं संपूज्य सधौत्तोत्तरीयांगुलीयं यथावित्तद्रव्यंहस्तेनिधाय ॐ अद्येत्याद्यमुकोऽहममुकनान्मो मत्पुत्रस्य करिष्यमाणामुक कर्मणि वास्त्वर्चन विधावाचार्यं कर्मकर्तृमनेन वासोंगुलीयकासनद्रव्येणामुक गोत्र ममुकशर्माणं ब्राह्मणमाचार्यं कर्म कर्तृत्वेनाहं वृणे । इति वरणद्रव्यं ब्राह्मणायदत्त्वा, सोऽपि वृतोऽस्मीतिवृयात् । प्रार्थयेत् । ॐ आचार्यत्वे यथास्वर्गं देवानां च बृहस्पतिः । तथात्वंममयज्ञेऽस्मिन्नाचार्योभवसुव्रतः । १। अहंभवानि । ततर्ईशानकोणे वरुणविधानेन कलशंसम्पूज्य । अथ चाचार्यो वेद्याश्चतुर्दिक्षु चतुरोखादिर शंकून् तदभावे लोह शंकून्, समंत्रं कीलयेत् । ॐ विश्वन्तुभूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः । अस्मिन्गृहेऽवतिष्ठन्त्वायुर्वलकराः सदा । १। इति मंत्रमुच्चारयन्नाचार्यं ईशानादि चतुर्दिक्षु कीलयेत् ततस्तद्देवताभ्योमापभक्तवलि चतुष्टयं सदीपंसंपूज्यानेनैव क्रमणेदद्यात् ।

तत्रादावीशाने जलंगृहीत्वामंत्रान्ते वलौक्षिपेत । सर्वत्र मंत्रः ।
 ३० रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्योयेचान्ये नत्समाश्रिताः । वलि तेभ्यः
 प्रयच्छामि, पुण्यमोदनमुत्तमम् । १। आग्नेये— ३० अग्निभ्योऽप्यथ
 सर्पेभ्योये चान्येतत्स माश्रिताः । तेभ्योवलिप्रयच्छामि पुण्यमो-
 ददमुत्तमम् । २। नैर्ऋत्ये ३० नैर्ऋत्या धिपतिश्चैव नैर्ऋत्यांये च
 राक्षसाः । तेभ्योवलिप्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् । ३। वायव्ये-
 ३० वायव्याधिपतिश्चैव वायव्यां ये च राक्षसाः । तेभ्योवलि प्रय-
 च्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् । ४। अथ पूर्वनिर्मितवास्तुभट्टे वास्तु-
 भट्ट देवता स्थापनम् ॥ ३० ब्रह्मजज्ञामिति गौतमर्षिन्निष्ठुष्टुष्टुन्दो
 ब्रह्मादेवता ब्रह्मावाहने स्थापनेपूजने च विनियोगः । ऋक् ३० ब्रह्म-
 ज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनआव । सवुध्न्याउपमा
 अस्यविष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः । ३० भूर्भुवः स्वः, ब्रह्मनि-
 हागच्छेहतिष्ठ, ३० ब्रह्मणेनमः । संस्थाप्य च पूजयेत् । ततः पीतं
 विवस्ततं ३० विवस्वन्निति कुत्सऋषिरनुष्टुष्टुष्टुन्दो विवस्वान्देवता
 विवस्वदावाहने विनियोः । ऋक् ३० विवस्वन्नादित्यैपतेसोमपी
 थस्तस्मिन्मत्स्व श्रदस्मै नरो वर्चसैदधातनयदाशीर्दा दम्पती
 वाममश्नुतः । पुमान् पुत्रो जायते विन्दतेवस्त्रधा विश्वाहारपऽ
 पृथतेगृहे । ३० भूर्भुवः स्वः विवस्वन्निहागच्छेहतिष्ठ ३० विवस्व-
 तेनमः स्थापयामि पूजयामि । ततः श्वेतंमित्रम् । ३० मित्रस्य
 शिखामित्रऋषिर्गायत्रीष्टुष्टुन्दो मित्रोदेवता मित्रावाहने विनि-
 योगः । ऋक् ३० मित्रस्यचर्षणी धृतोवोदेवस्य सानसिद्युम्नंचित्र
 श्रवस्तमम् । ३० भूर्भुवः स्वः मित्रइहागच्छेहतिष्ठ । ३० मित्राय
 नमः स्थापयामि पूजयामि । ततो नीलंमहीधरम् । यद्ग्राम इति
 प्रजापति ऋषिरनुष्टुष्टुष्टुन्दो महीधरो देवता महीधरावाहने विनि-
 योगः । ऋक्-३० यद्ग्रामे यदरण्येयत्सभायां यदिन्द्रियेयदेनश्च
 कृत्वावयमिदं तदव यजामहेस्वाहा ॥ ३० भू० स्वः महीधर इहा-
 गच्छेहतिष्ठ, ३० महीधरायनमः । स्थाप० पूज० । ततः कपिलं
 सात्रिभ्रम् । ३० उपयामगृहीतोसीति विवस्वान्नापर्गायत्रीष्टुष्टुन्दः

सावित्रोदेवता सावित्रावाहने विनियोगः । ३५ उपयामगृहीतोसि
सावित्रोसिचनोधा असिचनोमयिधेहिजिन्वयज्ञं जिन्वयज्ञपात
भगायदेवायत्वासवित्रे । ३६ भू० स्वः भोसावित्र इहागच्छेहतिष्ठ
३७ सावित्रायनमः स्थाप० पूज० । ततः कपिलंसवितारं । ३८
विश्वानीति श्यावाश्वऋषिर्गायत्रीलुन्दः सवितादेवता सावित्रा-
वाहने विनियोगः । ऋक् ३५ त्विश्वानिदेव सवितुर्दुरितानि परा-
सुवयद्भद्रं तन्नआसुवः । ३६ भू० स्वः सविता इहागच्छेहतिष्ठ, ३७
सवित्रेनमः । स्थाप० पूज० । शुभ्रंशक्रम् । इन्द्र इति अप्रतिरथ
ऋषिस्त्रिष्टुप्पुण्ड्रः शक्रोदेवता शक्रावाहने विनियोगः । ऋक्-
३७ इन्द्र आसन्नेता बृहस्पतिर्देक्षिणायज्ञः पुरणुसोमः
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनांमरुतो यन्त्वग्रम् ॥
३५ भूर्भुवः स्वः शक्रेहागच्छेहतिष्ठ, ३६ शक्रायनमः स्थाप० पूज०
कपिलमिन्द्रम् । ३७ आयात्त्विति वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्पुण्ड्र इन्द्रो
देवता इन्द्रावाहने विनियोगः । ऋक्—३७ आयान्त्विन्द्रोवस
उपनइहस्तुतः सधमादस्तुशूरः वांतधानस्तविपीर्यस्य पूर्वीद्यौर्नि-
क्षत्रमभिभूमिपुण्यात् । ३७ भूर्भुवः स्वः इन्द्रइहागच्छेहतिष्ठ,
३७ इन्द्रायनमः स्थापयामिपूज० । कपिलंजयम् । ३७ गोत्रभिदिति
अप्रतिरथऋषिस्त्रिष्टुप्पुण्ड्रो जयोदेवता जयावाहने विनियोगः ।
३७ गोत्रभिदंगोविदं यज्ञवाहुं जयन्तमज्मप्रमृणं तमोजसा ।
इम ई० सजाता ऽ अनुवीरयध्वमिन्द्र ई० सग्वायो ऽ अनुस ई०
रमध्वम् । ३५ भूर्भुवः स्वः जयइहागच्छेहतिष्ठ ३७ जयायनमः
स्थापयामिपू० । नीलंरुद्रम् । ३७ यातेरुद्रेतिपरमेष्ठीऋषिरनुष्टु-
प्पुण्ड्रो रुद्रोदेवता रुद्रावाहने विनियोगः । ऋक्—३७ याते रुद्र
शिवातनू रघोरापापकाशिनी नयानस्तन्वाशन्नमयागिरिशन्ना-
भिचाकशीहि । ३७ भूर्भुवः स्वः रुद्र इहागच्छेहतिष्ठ, ३७ रुद्राय-
नमः स्था० पू० । शुभ्रवर्णंजयन्तम् । ३७ जीमूतस्येति-भरद्वाज-
ऋषिस्त्रिष्टुप्पुण्ड्रो जयन्तोदेवता जयन्तावाहनेविनियोगः ।
ऋक्—३७ जीमूतस्येवभवतिप्रतीकं यद्दभीयातिसमुदासुपस्ये ऽ

अनाविद्धयातन्वा जयन्त ई० सत्वा वर्मणोमहिमापिपर्तु । ॐ
 भूर्भुवः स्वः जयन्तइहागच्छेहतिष्ठ ॐ जयन्तायनमः स्थाप०
 पूज० । शुभ्राश्वापः । ॐ आपोअस्मानिति देवश्रवाऋषिरनुष्टुप्छ-
 न्दःआपोदेवताअपामावाहनेवि० । ऋक्—ॐ आपोऽअस्मान्मातरः
 शुन्धयन्तुघृतेननोघृतपत्रः पुनन्तुन्विश्व ई० हिरिप्रंवहन्तिदेवी
 रुदिदाभ्यः शुचिरापूतमि । ॐ भू० स्वः आपइहागच्छन्विह-
 तिप्रन्तु ॥ ॐ अद्भ्योनमः स्था० पूज० ॥ कृष्णवर्णमापवत्सम् ॥
 ॐ आतेवत्सइति कण्वऋषिर्गायत्रीछन्द आपवत्सोदेवताआप-
 वत्सावाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ आतेवत्सोमनोयमत्परामा
 चित्सधस्थात् अग्नेत्वांकामयागिरा । ॐ भूर्भुवः स्वः भो आप-
 वत्स इहागच्छेहतिष्ठ ॐ आपवत्सायनमः स्थाप० पू० । श्वेतवर्ण
 शर्वम् । ॐ मानोमहान्तमितिकृत्सऋषिर्जगतीछन्दः शवंदेवता
 शर्वावाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ मानोमहान्तमुतमानो ऽअर्भ
 कंम्मानउक्षन्तमुतमान ऽ उक्षितम् । मानोवधीः पितरंमोतमान-
 रंमानः प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिपः । ॐ भू० स्वः शर्वइहागच्छेहतिष्ठ
 ॐ शर्वायनमः स्था० पू० । शुभ्रंस्कन्दम् । ॐ यदक्रन्दइतिदीर्घतमा
 ऋषिन्त्रिष्टुप्छन्दः स्कन्दोदेवता स्कन्दावाहने विनियोगः । ऋक्-
 ॐ यदक्रन्दप्रथमंजायमानमुद्यन्तसमुद्राद्भुतवापुरीपात् । शेनस्यपक्षा-
 हरिणयस्यबाहु उपस्तुत्यंमहिजायन्तेअर्वन । ॐ भूर्भुवःस्वः
 स्कन्द इहागच्छेहतिष्ठ ॐ स्कन्दायनमः आवा० पूज० । रक्तवर्ण-
 मर्धमणम् । ॐ अर्यमणमितिषड्भि ऋषिरनुष्टुप्छन्दो ऽ र्यमा-
 देवता ऽर्यमावाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ अर्यमणंवृहस्पति-
 मिन्द्रं दानायचोदयवाचंविष्णु ई० सरस्वती ॐ सवितारंच
 वाजिन ॐ स्वाहा । ॐ भू० स्वः अर्यमन्निहागच्छेहतिष्ठ ॐ
 अर्यम्णोनमः स्थाप० पूज० । पीतवर्णजृम्भकम् । ॐ यदेपमितिवत्स
 ऋषिर्गायत्रीछन्दो जृम्भकोदेवता जृम्भकावाहने विनियोगः ।
 ऋक्—ॐ यदेपंपृषतिरथैः प्रष्टिर्वहतिरोहितः यान्तिशुभ्राणिन्नपः
 ॐ भू० स्वः जृम्भकइहागच्छेहतिष्ठ, ॐ जृम्भकायनमः स्थाप०

पूज० ॥ कृष्णवर्णाश्वरकीम् ॥ ॐ यन्तेदेवीतिमधुरल्लन्दऋपिःपंक्ति
रल्लन्दः चरकीदेवता चरक्यावाहने विनियोगः ॥ ३० यन्तेदेवी-
निर्ऋतिरावबंध पाशंग्रीवास्वविचृतम् । तन्तेविष्याम्यायुपोनम-
ध्यादधैतंपितुमध्यप्रसूतः नमोभूत्यैयेदं चकार ॥ ॐ भू० स्वः
चरकीहागच्छेहतिष्ठ, ॐ चरक्यै नमः स्थाप० पूज० ॥ ततोकपि-
लांविदारीम् ॥ ॐ अक्षराजायेतिनारायण ऋपिः प्रकृतिरल्लन्दो
विदारीदेवता विदार्यावाहने विनियोगः ॥ ऋक् ॐ अक्षराजाया
कितवः कृतायादिनवदर्श त्रैतायैकल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिन
मास्कन्दायसभास्थाणुंभृत्यवेगोऽन्यबल्लमन्तकाय ॥ गोघातंक्षुधेयो-
गांविकृतंतंभिक्ष्माण उपतिष्ठतिदुष्कृतायचरकाचार्य पापमनेशैल-
गम् ॥ ॐ भू० स्वः विदारीहागच्छेहतिष्ठ ॐ विदार्यै नमः स्था-
प० पूजियामि ॥ १६ ॥ पीतवर्णापूतनाम् ॥ ॐ कदुप्रियायेति
आत्रेयऋपिर्जगतील्लन्दः पूतनादेवता पूतनावाहनेविनियोगः ॥
३० कदुप्रियायधास्नेमनामहे स्वच्छत्राय स्वयशोममहेवयम् ॥
आमेन्यस्य रजसोदयभ्रंशं अपोवृणाना वितनोतिमायिनी ॥
ॐ भूर्भुवःस्वः, पूतने इहागच्छेहतिष्ठ । ३० पूतनायै नमः स्थाप०
पूज० ॥ कृष्णां पापराक्षसिम् ॥ ॐ यस्यास्त इति मधुरल्लन्द
ऋपिस्त्रिष्टुल्लन्दः पाप राक्षसिका देवता पाप राक्षस्या वाहने
विनियोगः ॥ ऋक्—ॐ यस्यास्ते घोर आसं जुहोम्येषाम्ब-
न्धानामवसर्जनाय यांत्वाजनोभूमिरिति प्रमदन्तेनिर्ऋतित्वाहं
परि वेदविश्वतः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पाप राक्षसि इहागच्छेह
तिष्ठ ॥ ॐ पाप राक्षस्यै नमः स्थाप० पूज० ॥ शुभ्रवर्णं मीशा-
नम् ॥ ॐ तमीशानमिति गौतम ऋपिर्जगती ल्लन्दः ईशानो
देवता ईशाना वाहने विनियोगः ॥ ऋक्—ॐ तमीशानं जगत-
स्तस्थुपस्पतिं धियं जिन्वमवसेहमहेवयम् । पुषानो यथावेदसाम
सद्वृधे रक्षिता पायुरदध्नः स्वस्तये ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो ईशान
इहागच्छेहतिष्ठ, ३० ईशानाय नमः स्था० पूजयामि ॥ श्वेतं
पूर्जन्यम् ॥ शन्नोवात इति दध्यङ्गाथर्वण ऋपिरनुष्टुल्लन्दः

पर्जन्यो देवता पर्जन्या वाहने विनियोगः ॥ ३० शन्नोवातः
 पवता ॐ शन्नस्नपतु सूर्यः शन्नः कनिकददेवः पर्जन्योऽग्निव-
 र्षतु ॥ ३० भूर्भुवः स्वः पर्जन्य इहागच्छेहतिष्ठः, ३० पर्जन्याय
 नमः आवाहयामि स्थापयामि ॥ कजलाकारं त्रिखिन्म ॥ ३०
 नमः शम्भवायेति वामदेव ऋषिन्निष्टुष्टुन्दः शिखी देवता
 शिख्यावाहने विनियोगः ३० नमः शम्भवाय च मयोभवाय च
 नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतरायच ॥
 ३० भूर्भुवः स्वः शिखिन्निहागच्छेहतिष्ठ, ३० शिखिने नमः
 स्थाप० पूज० शुभ्रवर्णं वीभत्सम् । ३० उदस्तम्भीति विश्वामित्र
 ऋषिन्निष्टुष्टुन्दो वीभत्सो देवता वीभत्सावाहने विनियोगः ।
 ॐ उदस्तम्भीत्समिधानाक मृष्वो अग्निमवन्तुतमो रोचना-
 नाम् । यदीभृशुभ्यः परिमातरिश्वा गुहासन्तह्वयवाहसमीधे ॥
 ॐ भू० स्वः वीभत्स इहागच्छेहतिष्ठ ३० वीभत्साय नमः
 स्थाप० पूज० ॥ कृष्ण वर्णं पिल्लिपिच्छम् । ३० कास्विदितिप्रजा
 पतिर्ऋषिन्निष्टुष्टुन्दः पिल्लिपिच्छो देवताः पिल्लिपिच्छावाहने
 विनियोगः । ऋक्—३० कास्विदासीत्पूर्वचित्तिः किँस्विदासी-
 द्बृहद्वयः । कास्विदासीत्पिलिप्पिला कास्विदासीत्पशंगिला ।
 ३० भू० स्वः पिल्लिपिच्छ इहागच्छेहतिष्ठ ३० पिल्लिपिच्छाय
 नमः स्थाप० पूजयामि । कपिलं सत्यम् ॥ ३० सत्यं च मेति
 देवा ऋषयो विराट् शकरीष्टुन्दः सत्यो देवता सत्यावाहने वि-
 नियोगः ॥ ऋक्—३० सत्यंचमे श्रद्धाचमे जगच्चमे धनंचमे मह-
 अचमे क्रीडाचमे मोदचमे जातंचमे जनिष्यमाणंचमे सृक्तंचमे
 सुकृतंचमे यजेन्न कल्पन्ताम् । ३० भू० स्वः भो सत्य इहागच्छे-
 हतिष्ठ ३० सत्यायनमः स्था० पू० । कपिलवर्णं भृशम् ॥ ३० आ-
 त्वाहार्षमिति ध्रुवऋषिरनुष्टुष्टुन्दो भृशो देवता भृशावाहने विनि-
 योगः ऋक् ॐ आत्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठा विचाचलिः । विश-
 स्त्वा सर्वावांच्छतु मात्वद्राष्ट्र मधिभ्रशत् । ३० भू० स्वः भृश
 इहागच्छेहतिष्ठ ३० भृशायनमः स्था० पू० । शुभ्रवर्णं मन्तरि-

जम् । ॐ घृतमिति दीर्घतमा ऋषिः पंक्तिरह्णन्दोऽन्नरिक्तो देवता
 अन्नरिक्ता वाहने विनियोगः । ॐ घृतं घृतपावानः पिवतवसां
 वसापावानः पिवतान्नरिक्तस्यहविरसिस्वाहा दिशः प्रदिशऽद्यादि-
 शो विदिश उदिशो दिग्भ्यः स्वाहा । ॐ भू० स्वः अन्नरिक्त
 इहागच्छेहतिष्ठ ॐ अन्नरिक्तायनमः स्था० पू० । ततो रक्तमग्निम्
 त्वन्नो अग्रइति हिरण्यस्तृप ऋषिस्त्रिष्टुप्पुण्डोऽग्निर्देवता अग्न्या
 वाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ त्वन्नोऽअग्ने तवदेव पायुभिर्म-
 धोनोरक्षन्वश्चवन्द्य । आना तोकस्यतनयेगवामस्यनिमेष ई०
 रक्षमाणस्नवव्रते । ॐ भू० स्वः अग्ने इहागच्छेहतिष्ठ ॐ अग्नये
 नमः स्थाप० पूज० ॥३०॥ श्यामलं पूषणम् । ॐ स्वयम्भूरसीति
 सूर्य ऋषिऽर्याजुषीह्णन्दः पूषा देवता पूषावाहने विनियोगः । ऋक्
 ॐ स्वयम्भूरसि श्रेष्ठोरश्मिर्वर्चोदाऽअसि वर्चामि देहिसूर्यस्या
 घृतमन्वावर्ते । ॐ भू० स्वः पूषण इहागच्छेहतिष्ठ ॐ पूषणे
 नमः स्थापयामि पू० । वितथं पीतवर्णम् ॥ ॐ तत्सूर्यस्येति-
 क्तस ऋषिस्त्रिष्टुप्पुण्डो वितथो देवता वितथावाहने विनियोगः
 ऋक्—ॐ तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्याकर्त्रोर्वितत ई०
 संजभारः यदेवयुक्तहरितः सधस्थादाद्रात्रीवासस्तनुतेसिमस्मै ॐ
 भू० स्वः वितथ इहागच्छेहतिष्ठ ॐ वितथायनमः स्था० पू० ।
 श्यामलं यमम् । ॐ यमायत्वेति दध्यङ्ङाथर्वणऽपिर्ष्यजुरह्णन्दो
 यमो देवता यमावाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ यमायत्वा
 मयायत्वा सूर्यस्यत्वातपसे देवस्त्वा सवितामध्वानक्तु पृथिव्या
 संस्पृशस्पाहि । अचिरसिशोचिरसि तपोसि । ॐ भू० स्वः
 यमइहागच्छेहतिष्ठ ॐ यमायनमः स्था० पू० । स्वेतंगृहरक्षाकरम्
 ॐ गृहामाविभीतमिति आसुरी ऋषिः पंक्तिरह्णन्दो गृहरक्षाकरो
 देवता गृहरक्षाकरावाहने विनियोगः । ऋक् गृहामाविभीतमा
 वेपध्वमूर्जं विभ्रतऽणमसि ऊर्जविभ्रद्गः सुमनाः सुमेधाः गृहानैमि-
 मनसा मोदमानः । ॐ भू० स्वः भोगृहरक्षाकर इहागच्छेहतिष्ठ
 ॐ गृहरक्षाकरायनमः । स्था० पू० ततो श्वेतवर्णं गंधर्वम् । ३५

गन्धर्वस्त्वेति प्रजापति ऋषि र्यजुश्छन्दो गन्धर्वादेवता गन्धर्वा-
 वाहने विनियोगः । ऋक् ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु
 त्विश्वस्यारिष्ठयै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः । इन्द्रस्य
 वाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ठयै यजमानस्यपरिधिरस्यग्नि
 रिडऽईडितः । ॐ भू० स्वः भोविश्वावसो इहागच्छेहतिष्ठ । ॐ
 विश्वावसवेनमः स्था० पू० । नीलवर्णभृंगराजम् । ॐ सौरीवलागेति
 सुरिग्ऋषिर्जगतीछन्दो भृंगराजोदेवता भृंगराजावाहनेविनियोगः ।
 ऋक् ॐ सौरीवलाकाशार्गः सृजयः शयाण्डकस्ते मैत्राः सरस्व-
 त्यैशारिः पुरुषवाक् श्वाविद्भौमी शार्दूलोवृकः पृदाकुस्ते मन्यवे
 सरस्वतेशुकः पुरुषवाक्— ॐ भू० स्वः भृंगराज इहागच्छेहतिष्ठ
 भृङ्गराजायनमः स्था० पू० । रक्तवर्णमृगम् । ॐ मृगोनेतिजय-
 ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो मृगोदेवता मृगावाहने विनियोगः ऋक्—ॐ
 मृगोन्भीमः कुचरोगिरिष्ठाः परावतञ्जाजगन्धापरस्याः सूक र्द०
 स र्द० शायपविमिन्द्र तिग्मंविशत्रून्ताडिह विमृदोनुदस्व । ॐ
 भू० स्वः मृगइहागच्छेहतिष्ठ ॐ मृगायनमः स्था० पू० । धूम्रवर्ण
 दौवारिकम् ॐ द्वेरूपे इति कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो दौवारिको
 देवता दौवारिकावाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ द्वेविरूपेचरतः
 स्वर्धेअन्यान्यावत्समुपधापयेते हरिरन्यस्यां भवतिस्वधावान्
 शुक्रोअन्यस्यांददृशेसुवर्चाः । ॐ भू० स्वः दौवारिक इहागच्छे-
 हतिष्ठ ॐ दौवारिकायनमः स्था० पू० पीतवर्णसुग्रीवम् । ॐ
 नीलग्रीवेतिपरमेष्ठि ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सुग्रीवोदेवता सुग्रीवावाहने
 विनियोगः । ऋक्—ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठादिव र्द० रुद्राऽउप
 श्रिताः । तेषां ॐ सहस्रयोजनेयधन्वानितन्मसि । ॐ भू० स्वःसुग्री
 बइहागच्छेहतिष्ठ ॐ सुग्रीवायनमः स्था० पू० तुहिनाकारंवरुणम् ।
 ॐ वरुणस्येति शुनः शोफऋषिर्गायत्रीछन्दो वरुणोदेवता वरुणा
 वाहने विनियोगः ऋक् ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भ
 सर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋत सदन्यसि वरुणस्यऽऋत सदनमसि
 वरुणस्यऽऋत सदनमासीद । ॐ भूर्भुवःस्वः वरुण इहागच्छेहतिष्ठ

श्रुतवन्ध ऋषिर्गायत्री छन्दो ऽ दितिर्देवता अदित्यावाहने
विनियोगः । ऋक्-३० एङगृह्यदितऽगृहिकाम्याऽपतमयिवः काम-
धरणं भूयात् । ३० भू० स्वः अदिते इहागच्छेदितिष्ठ ३० अदितयेनमः
स्था० पू० । ततोभद्रमध्येब्रह्मणोऽन्तिके शुभ्रवर्णं नागाकृतिं वास्तु
पुरुषम् । ध्यानम् नागाकृतिं चतुर्बाहुंब्रह्मण्यं च गृहाधिपम् ।
भद्रस्थदेवसहितं ध्यायाम्यावाहनार्थकम् । १। ३० वास्तोष्पत इति
वशिष्ठ ऋषिन्निष्टुच्छन्दो वास्तुर्देवता वास्त्वा वाहने विनियोगः ।
ऋक् ३० वास्तोष्पते प्रतिजानी हास्मान्स्वावेशो ऽ अनमीवो भ-
वानः । यत्वेमहे प्रतितन्नो जुपस्व शन्नोभव द्विपेदेशं चतुष्पदे ।
३० भूर्भुवः स्वः भो वास्तो इहागच्छेदितिष्ठ ब्रह्मादि त्रिपञ्चा
शदेवसहितः सांगोपाङ्गः सन्मेपूजांगृहाण मन्वसंरक्षणं कुरुकुरु ।
३० सांगोपाङ्ग वास्तु पुरुषायनमः । ३० एतन्तते देवसचिन्त्यं
प्राहुर्वृहस्पतये ब्रह्मणे । तेनयज्ञमवतेन यज्ञपतिं तेनमामव । ३०
मनोयूतिर्युपनामाज्यस्य वृहस्पति र्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ठं यज्ञ ई०
समिमं दधातु विश्वेदेवासऽइहमा दयन्तामोऽप्रतिष्ठ । ३० भूर्भुवः
स्वः वास्तु सहितब्रह्मादि चतुःपञ्चाशदेवाः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु ।
ततः प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा आयाहयेत् ध्यानम् । नागाकृतिं चतुर्बाहुं
ब्रह्मपुत्रं सुवर्चसम् ॥ ग्राम गृहाधिपं वास्तुध्यायाम्यावास हेतवे
आयाहनं—आदित्यान् दितिजांश्चैव वास्तु मण्डल मध्यगान् ॥
गृहसौख्य समृध्यर्थं देवानावाहयाम्यहम् ॥ आसनम् ॥ अनेक वस्त्र
संयुक्तं भद्राकृतिमनो हरम् ॥ आसनं प्रतिगृह्णन्तु वास्तु भद्रस्थ
देवताः ॥ पाद्यम् ॥ सुपात्रे निर्मलं दिव्यं भक्त्यार्पित शुभं जलम् ॥
पाथंगृह्णन्तु यूयं वै वास्तु भद्रस्थ देवताः ॥ अर्घ्यम् ॥ सदध्यक्षत
दूर्वाह्यं जलंपरमसुन्दरम् ॥ गृह्णन्त्वर्घं च संप्रीत्या वास्तु भद्रस्थ
देवताः ॥ स्नानीयं ॥ नानागन्ध समायुक्तं स्नानीयकमनुनमम् ।
गृह्णन्तु संघपूजायां वास्तु भद्रस्थदेवताः ॥ पंचामृतस्नानम् ॥ पयो-
दधिघृतं क्षौद्रं शर्कराभिर्विमिश्रितम् । पंचामृतं प्रगृह्णन्तु वास्तु
भद्रस्थदेवताः । शुद्धोदक स्नानम् । शुद्धोदकं मयादतं पवित्रं

निर्मलं शुभम् । पुनः स्नानाय गृह्णन्तु वास्तुभद्रस्थ देवताः ।
 वस्त्राणि—कौशेयानि सुवस्त्राणि नानावर्णात्मकानि च मया दत्तानि
 गृह्णन्तु वास्तु भद्रस्थदेवताः । यज्ञोपवीतम्—गृह्णन्तु चोपवी-
 तानिये च यज्ञोपवीतिनः कर्पासतन्तुमूलानि वास्तु भद्रस्थ देवताः
 चन्दनम्—मलयाचल संभूतंसकर्पूरं सकेशरम् । चन्दनं प्रतिगृह्ण-
 न्तु वास्तुभद्रस्थ देवताः । अक्षताः—अक्षतांस्तण्डुलाञ्छुभ्रान्भाल-
 शोभाकरान्परान् । शोभार्थं प्रतिगृह्णन्तु वास्तु भद्रस्थ देवताः ।
 पुष्पाणि—नानाविधानि पुष्पाणि देशकालोद्भवानि च । महत्तानि
 प्रगृह्णन्तु वास्तु भद्रस्थ देवताः । धूपम्—वनस्पतिसमुद्भूतं दिव्य
 गंधमनोहरम् । धूपं गृह्णन्तु चाधेयं वास्तु भद्रस्थ देवताः । आरा-
 तिक्यम्—घृताक्त यतिकायुक्तमारतिक्यं प्रकाशितम् । सन्मङ्ग-
 लार्थं गृह्णन्तु वास्तुभद्रस्थ देवताः । नैवेद्यम्—भक्ष्यं भोज्यं च पक्का-
 न्नं मधुरं घृतपायसम् । नैवेद्यं प्रतिगृह्णन्तु वास्तुभद्रस्थ देवताः ।
 नैवेद्यान्ते जलम्—कराननविशुद्ध्यर्थं गन्धद्रव्यं सुसंस्कृतम् ।
 जलं च प्रति गृह्णन्तु वास्तुभद्रस्थ देवताः । उपायनद्रव्यम्—
 उपायनी भूतमिदं वित्तशाध्यविवर्जितम् । द्रव्यं गृह्णन्तु महत्तं
 वास्तु भद्रस्थ देवताः । फलम्—पूगी फलं लवंगं च ऋतुजानि
 फलान्यपि । भक्त्यार्पितानि गृह्णन्तु वास्तुभद्रस्थ देवताः । इति
 पूगीफलैर्वास्तु भद्रं सुसज्य होमवेद्युपरि वक्ष्यमाण प्रकारेण मग्नं
 कुर्यात् । तच्च वास्तुमण्डल देवताः संपूज्य होमवेदी समीप
 मागम्य संस्कारादिषु वक्ष्यमाण प्रकारेण हवनं कुर्यात् । तत्रादौ
 संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुक्त कर्मणि वा-
 स्तुमण्डलार्चित देवतानां पूर्वोक्त पूजा प्रकारेण प्रति देवताप्रीत्य
 र्थं तिलाज्य द्रव्येण पायसेन वा—अष्टाभिराहुनिभिः प्रत्येकं वक्ष्ये ।
 वास्तुपुरुषं प्रति जपदशमांशेन पायसेन विल्वफलसंयुक्तेन जुहुया-
 त् । होम संख्या न्यूनताया मष्टोत्तर शताहुतिभिर्जुहुयात् । ननो
 वास्तुमंडपमागत्य वक्ष्यमाण प्रकारेण वलीन्द्यात् । तत्प्रकारस्तु-
 मांसमद्य यत्लिहित्वा विप्रेण घृतपायसम् ॥ देयं क्षत्रिय मुर्ग्यस्तु

ॐ वरुणाय नमः स्था० पू० । पीतवर्णं पुष्पदन्तम् । ॐ नमोगणो-
भ्य इति कुत्सऋषिः शकरी छन्दः पुष्प दन्तो देवतापुष्पदन्ता
वाहने विनियोगः । ऋक् ॐ नमोगणोभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमो
नमो व्रातेभ्योव्रात पतिभ्यश्चवो नमोनमो गृत्सेभ्यो गृत्सपति-
भ्यश्चवो नमोनमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्चवो नमोनमः ॐ
भू० स्वः पुष्पदन्तइहागच्छेहतिष्ठ । ॐ पुष्पदन्ताय नमः स्था० पू०
कश्मलाकारमसुरम् । ॐ यमशिवनेति वच्चिवन्दपिच्छिण्डुपल्लन्दोऽ
सुरोदेवता असुरावाहने विनियोगः ऋक् ॐ यमशिवना नमुचेरा-
सुरा दधि सरस्वत्य सुनोदिन्द्रियाय । इमन्त र्तं० शुक्रं मधुमन्त
मिन्दु र्तं० सोम र्तं० राजानमिह भक्षयामि । ॐ भू० स्वः
असुर इहागच्छेहतिष्ठ ॐ असुराय नमः स्था० पू० । कृष्णपापम् ।
ॐ एतत्ते सदा इति वशिष्ठ ऋषिः पंक्तिश्छन्दः पापो देवता
पापावाहने विनियोगः । ऋक्— ॐ एतत्ते रुद्रावसन्तेन परो-
मृजवतोतीहि अवततधन्वा पिनाकावसः कृतिवासाऽ अहि र्तं०
शन्नः शिचोतीहि । ॐ भूर्भुवः स्वः पाप इहागच्छेहतिष्ठ ॐ
पापाय नमः स्था० पू० ॥ रक्तं रोगम् । ॐ यद्देवाऽइति प्रजापति
ऋपिरनुष्टुप्छन्दो रोगो देवता रोगावाहने विनियोगः । ऋक्—
ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चक्रमावयम् । अग्निर्मातस्मादेनसो
विश्वान्मुञ्चत्व र्तं० हसः । ॐ भू० स्वः रोग इहागच्छेतिष्ठ ॐ
रोगाय नमः स्था० पू० । शुभ्रान्पितृन् । ॐ आयन्तुनः इति
शङ्खऋषिच्छिण्डुपल्लन्दः पितरो देवता पितृऋणामावाहने विनि-
योगः । ऋक्— ॐ आयन्तुनः पितरः सोभ्यासोऽग्निष्वात्ताः
पथिभिर्देवयानैः । अस्मिन्यज्ञे स्वधयामदन्तोऽ अधिव्वन्तुतेऽ
वंत्वस्मान् । ॐ भू० स्वः पितर इहागच्छतइहतिष्ठतः ॐ पितृऋ-
भ्योनमः स्था० पू० । रक्तं वायुम् । ॐ वायो येते इति गृत्स-
मदऋषिर्गायत्री छन्दो वायुर्देवता वाय्वावाहने विनियोगः ।
ऋक्— ॐ वायो येते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि । नियुत्वा-
न्त्सोमपीतये । ॐ भू० स्वः वायो इहागच्छेहतिष्ठ ॐ वायवे

नमः स्था० पू० । कृष्णं नागम् । ॐ अहिरिवेति पायुर्द्धिषस्त्रि-
 ष्टुष्टुन्दो नागो देवता नागावाहने विनियोगः । ऋक्—३०
 अहिरिवभोगैः पर्येतिवाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः । हस्त-
 घ्नो विश्वावयुनानि विद्वान्पुमान्पुमा ॐ सम्परिपातु विश्वतः ।
 ॐ भू० स्वः नाग इहागच्छेहतिष्ठ ३० नागायनमः स्था० पू० ।
 शुभ्रं सोमम् । ॐ सोम र्द० राजानमिति तापस ऋषिरनुष्टुष्टु-
 न्दः सोमो देवता सोमावाहने विनियोगः । ऋक्—३० सोम र्द०
 राजानमवसेऽग्निमन्वारभामहे । अदित्यां विष्णु र्द० सूर्य्यं ब्रह्मा-
 णं च बृहस्पतिम् । ३० भू० स्वः सोम इहागच्छेहतिष्ठ ३०
 सोमायनः स्था० पू० । शुभ्रं मुख्यम् । ३० मानस्तोक इति कुत्स
 ऋषिर्जगती छन्दो मुख्यो देवता मुख्यावाहने विनियोगः । ऋक्
 ॐ मानस्तोके तनयेमान्ऽत्रायुषिमानो गोषुमानो अश्वेपुरीरिषः
 मानोवीराद्भ्रुभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे ३० भू०
 स्वः मुख्य इहागच्छेहतिष्ठ ३० मुख्यायनमः स्था० पू० । नीलवर्ण
 भल्लाटम् । ३० इमारुद्रायेति कुत्स ऋषिर्जगती छन्दो भल्लाटो
 देवता भल्लाटावाहने विनियोगः । ऋक्—३० इमारुद्रायतवसे
 कपदिनेक्ष्य द्वीरायप्रभरामहेमतिः । यथा समसद्विपदे चतुष्पदे
 विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् । ३० भू० स्वः भो भल्लाट इहा
 गच्छेहतिष्ठ ॐ भल्लाटायनमः स्था० पू० । श्वेतं शेषम् । ३०
 याइपव इति देवश्रवा ऋषिरनुष्टुष्टुन्दः शेषो देवता शेषावाहने
 विनियोगः । ऋक्—३० याइपवोयातु धानानां येवाचनस्पत्ती-
 र्ः॥रनु । येवाचटेपु शेरतेतेभ्यः सर्पेभ्योनमः । ॐ भू० स्वः शेष
 इहागच्छेहतिष्ठ शेषायनमः स्था० पू० । दितिं रक्ताम् । ३०
 हिरण्यरूपा इति वरुण ऋषिस्त्रिष्टुष्टुन्दो दितिर्देवतादित्यावाहने
 विनियोगः । ऋक् ३० हिरण्यरूपाऽउपशो विरोकउभाविन्द्राउ-
 दिथः सूर्य्यश्च । आरोहन्तं वरुणमिन्नगर्त्तन्ततश्चक्षाधामदितिं
 दितिं च मित्त्रोसि वरुणोसि । ३० भू० स्वः दिते इहागच्छेह-
 तिष्ठ ३० दितयेनमः स्था० पू० । कृष्णामदितिम् । ३० इष्टऽऽहीति

ॐ मण्डलेशम् ॥२५॥ पिष्टिपिच्छायमापभक्ताज्यं सलवणपायस
 म् ॐ पिष्टिपिच्छायनमः वालसम्पूज्य भोभोपिष्टिपिच्छममयज
 मानस्य० ॐ मण्डलेशम् ॥२६॥ सक्तुसमन्वितं बहुप्रकारान्नवलिं
 सत्याय । ॐ सत्यायनमः वलिसम्पूज्यभोभो सत्यममयजमान-
 स्य० ॐ मण्डलेशम् ॥२७॥ भृशायमुद्गात्रपूरितापूपं सलवण
 पायसंभक्तसहितम् । ॐ भृशायनमः वलिसम्पूज्यभोभोभृश
 ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम् ॥२८॥ अन्तरिक्षायशर्करामिश्रित
 सवल्कलधान्यंदुग्धं च । ॐ आकाशायनमः सम्पूज्यभो २ आका-
 शममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम् ॥२९॥ शर्करामध्वाज्यपक्वान्न
 वलिमग्नये ॐ अग्नयेनमः वलिसम्पूज्यभो अग्ने ममयजमानस्य०
 मण्डलेशम् ॥३०॥ पूष्णेसशर्कर गोधूमपिष्टदुग्धसाधितम् ॐ
 पूष्णेनमः सं० भो २ पूषन ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम् ॥३१॥
 हरिद्रासहितंदधिवितथाय । ॐ वितथायनमः वलिसं०
 भो २ वितथममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम् ॥३२॥ यमायमधु-
 भक्तवलिम् । ॐ यमायनमो वलिसं० भो २ यमममयजमानस्य
 ॐ मण्डलेशम् ॥३३॥ गृहरक्षकाय नवनीतौदनम् । ॐ गृहरक्ष-
 कायनमः सं० भो २ गृहरक्षक ममयजमानस्य० ॐ मण्डले
 शम् ॥३४॥ गन्धर्वायसफल पृतपक्वान्नम् ॐ गन्धर्वायनमः
 सम्पूज्य भो २ गन्धर्व ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम् ॥३५॥
 भृङ्गराजायमेपजिह्वाकृति पूरिकांपद्मपचर्चितं भक्तम् । ॐ
 भृङ्गराजायनमो वलिं सम्पूज्य भो भोभृङ्गराज ममयजमानस्य०
 ॐ मण्डलेशम् ॥३६॥ मृगाय तिलाज्यगन्धम् ॐ मृगायनमः
 सं० भोभो मृग यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम् ॥३७॥ दौवारि-
 काय सचन्दनागरुपिष्टम् । ॐ दौवारिकायनमो वलिं सं० भो
 दौवारिकममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम् ॥३८॥ सुग्रीवाय
 अपूप्राज्य सितादुग्धं दन्तकाष्ठ समन्विम् । सुग्रीवाय नमो वलिं
 सं० भो सुग्रीव मम यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम् ॥३९॥ वरु-
 णाय सपद्मपुष्प कुशपक्वान्नम् । ॐ वरुणायनमः सं० भो वरुण

मम यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥४०॥ पुष्पदन्तायपायसान्नं
 सपुष्पगन्धाज्यम् । ॐ पुष्पदन्तायनमो वलिं स० भो पुष्पदन्त
 मम यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥४१॥ असुराद्य यव सक्तुकं-
 सलवण दुग्धं भक्तम् । ॐ असुरायनमो वलिं स० भो असुर
 मम यजमानस्य० ॐ मण्डले० ॥४२॥ पापाययवचूर्णाज्यदुग्ध
 वलिम् । ॐ पापायनमः स० भो पाप मम यजमानस्य० ॐ
 मण्डले० ॥४३॥ रोगाय घृतमौदकयुतं लाजावलिम् । ॐ रोगाय
 नमो वलिं स० भो रोग मम यजमानस्य० ॐ मण्डलेश० ॥४४॥
 पितृभ्यो मधुसर्पिः पायसान्नम् । ॐ पितृभ्योनमो वलिं स० भो
 पितरोममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥४५॥ वायवे घृत पायस
 स् । ॐ वायवे नमो वलिं स० वायो मम यजमानस्य० ॐ
 मण्डलेशम्० ॥४६॥ मधुघृतदुग्धयुतं शालि पिष्टं नागाय ॐ ना-
 गाय नमः वलिं स० नाग मम यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्०
 ॥४७॥ सोमायमधुयुतदुग्धं दध्यौदनं च । ॐ सोमायनमो वलिं
 स० सोम मम यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम् ॥४८॥
 मुख्याय पायसौदनम् । ॐ मुख्याय नमो वलिं स० मुख्य मम
 यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥४९॥ भल्लाटायसपायसं मुद्गसू-
 पौदनम् । ॐ भल्लाटायनमः स० भल्लाटमम यजमानस्य० ॐ
 मण्डलेशम्० ॥५०॥ शेषाय कर्पूरैलाविमिश्रितघृतौदनम् ॥ ॐ
 शेषाय नमो वलिं स० संपूज्य शेष मम यजमानस्य ॐ स० ॥५१॥
 वित्तये क्षीराज्ययुतां पोलिकाम् ॐ दितये नमः स० दिते मम
 यजमानस्य ॐ मण्डलेशम् ॥५२॥ अदितये घृताक्त शर्करापोलि-
 काम् ॐ अदितये नमो वलिं स० अदिते मम यजमानस्य० ॐ
 मण्डलेशम्० ततोवास्तु पुरुषाय नानापक्वानन्न सहितं छागाकृति
 पोलिकाम् ॐ वास्तवे नमः वलिं स० पुरग्रामप्रसादाधिप भग-
 वम् वास्तोर्मम तजमानस्य सकुटुम्बस्यायुः कर्तात्तेमकर्ता तुष्टिदः
 पुष्टिदोभव ॐ मण्डलेशं प्रवक्षामि तुभ्यं भक्त्या निवेदितम् ॥
 एमं वलिसदीपंच गृहाणपरमेश्वर ॥ ततो वास्तुपुरुषाय सफला-

द्रव्यं यत्कपिलोदितम् ॥ सर्वैर्वा विधिवद्देयः कुशपुष्पफलाक्षतैः ।
दधि तण्डुलमापानैर्यद्वादेयो वलिर्बुधैः ॥ अथ वलिदान प्रकारं
ब्राह्मणस्तु पूर्वोक्त कथनानुसारेण वास्तु भद्रस्थ देवताभ्यो घृत
पायसवलिं दद्यात् । आचम्य—३७ नमः परमात्मने इत्यादि देश
कालौ संकीर्त्यामुकोऽहम्ममयजमानस्य वा सपुत्र परिवारस्था
युरारोग्याभिर्वृद्धिपूर्वकं सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं निर्विघ्नतया मुकपुत्र-
स्यदीक्षा सम्पादनार्थं ब्रह्मादि वास्तुपर्यन्त चतुःपंचा शहेवानां
प्रीतये तेभ्यः पायसेनमापान्नेन वा वलिदानं करिष्ये । तत्रादौ
ब्रह्मणेपायसम् । वलिं सम्पूज्य नदुपरि दीपं प्रज्वाल्य ३७ ब्रह्मणे
नमः इति मंत्रमुच्चार्य हस्तेजलं गृहीत्वा भो ब्रह्मन् ममयजमानस्य
सकुटुम्बस्यायुः कर्ता जेम कर्ता तुष्टिदः पुष्टिदो भव ॥ ३७
भण्डलेशंप्रवक्ष्यामि तुभ्यं भक्त्या निवेदितम् । एनं वलिं सदीपंचगृहाण
परमेश्वरः । इति वल्युपरिजलं क्षिप्त्वा ये उपरि ब्रह्मणः पदेन्यसेत् १।
एवं सर्वत्र बोध्यम् । ततो कर्पूरचन्दनयुतं पायसं विवस्वते ३७
विवस्वते नमः सम्पूज्य भो भो विवस्वन् ममयजमानस्य सपरिवा-
रस्य ० ३७ भण्डलेशं ॥२॥ महीधराय माषौदनम् ॥३॥ ३७ मही-
धराय नमः सम्पूज्य भो भो महीधर ममयजमानस्य सकुटुम्बस्य ० ।
३७ भण्डलेशं । ततो मित्राय पुष्पसहितं पायसम् । ३७ मित्राय नमः
सम्पूज्य भो भो मित्र ममयज ० सकुटुम्बस्य ० ३७ । ३७ भण्डलेशं
॥४॥ सावित्राय कर्पूरपुष्पकुशयुतजलम् । ३७ सावित्राय नमः
सम्पूज्य भो भो सावित्र ! ममयजमानस्य । ३७ भण्डलेशं ॥५॥
सवित्रे सगन्धरक्तभक्तं रक्तपुष्पयुतम् । ३७ सवित्रे नमः सं०
भो भो सवितो ममयजमानस्य ० भण्डलेशं ॥६॥ इन्द्राय पुष्पकुं-
कुमसंयुक्तं पायसम् । ३७ इन्द्राय नमः वलिं सम्पू० भो भो इन्द्र म-
यजमानस्य ० भण्डलेशं ॥७॥ शक्राय सघृतमाषभक्तं सवस्त्रम् ३७
शक्राय नमः सम्पू० ३७ भो भो शक्र ममयजमानस्य भण्डलेशं ॥८॥
जयाय पिष्टं यस्त्रयुतं सगन्धम् । जयाय नमः सं० भो भो जय म-
यजमानस्य ० भण्डलेशं ॥९॥ ततो रुद्राय सलवणपायसं वस्त्रं च ३७

रुद्रायनमः । वलिसम्पूज्य भोभोऋद्रममयजमानस्य० मण्डलेशं
 ॥१०॥ जयन्तायवृत्तौदनम् । ॐ जयन्तायनमः सम्पू० भोभो
 जयन्तममयजमानस्य० मण्डलेशं ॥११॥ अद्भ्योमधुपुष्पयुतंक्षीरम्
 ॐ अद्भ्योनमः सम्पू० भोभोआपमम यजमानस्य० मण्डलेशं
 ॥१२॥ आपवत्सायगुटदध्योदनम् । ॐ आपवत्साय नमः सम्पू-
 ज्यभोभोआपवत्सममयजमान० मण्डलेशं ॥१३॥ शर्वायदध्योदनं
 सरक्तपुष्पम् । ॐ शर्वायनमः सम्पूज्यभोभो शर्वममयजमानस्य
 मण्डलेशं ॥१४॥ सलवणक्षीरं भापान्नंस्कन्दाय । ॐ स्कन्दायनमः
 सम्पूज्यभोभोस्कन्दममयजमानस्य० मण्डलेशं ॥१५॥ अर्घ्यम्णे-
 सलवणपायसाप्पकं कृसरान्नम् । ॐ अर्घ्यम्णेनमः वलिसम्पू-
 ज्यभोभो अर्घ्यमन्ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशं ॥१६॥ जृम्भ-
 कायमत्स्याकृति पोलिकांसलवणपायसाम् ॐ जृम्भकायनमः
 सम्पूज्य० भोभोजृम्भक ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशं ॥१७॥
 चरक्यैसघृतलवणपायसम् । ॐ चरक्यैनमः वलिसम्पूज्य भोभो
 चरके ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशं ॥१८॥ विदार्यैसलवण
 पायसंसिन्दूरयुक्तम् । ॐ विदार्यैनमः सम्पूज्य० भोभोविदारि
 ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशं ॥१९॥ पूतनायैसतैलमापान्नदधि-
 भक्त वलिम् । ॐ पूतनायैनमः वलिसम्पूज्य भोभोपूतनेममयज
 मानस्य० ॐ मण्डलेशं ॥२०॥ पापराक्षसिकायै सलवणपायसो
 परिमत्स्याकृति पोलिकांसलवणदुग्धञ्च । ॐ पापराक्षिकायैनमः
 वलिसम्पूज्य भोभोपापराक्षसिकेममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशं
 ॥२१॥ ईशानायसदुग्धभक्तवलिम् । ॐ ईशानायनमः सम्पूज्य
 भोभोईशानममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशं ॥२२॥ पर्जन्याय
 तण्डुललाजासहितंघृतपक्वानम् । ॐ पर्जन्यायनमः वलिसम्पूज्य
 भोभोपर्जन्यममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम् ॥२३॥ शिखिनेघृ-
 तपक्वानवलिम् । शिखिनेनमः सम्पूज्यभोभोशिखिन् ममयजमा-
 नस्य० ॐ मण्डलेशम् ॥२४॥ वीभत्सायल्लागकर्णाकृतिपोलिकाम्
 ॐ वीभत्सायनमः वलिसम्पूज्यभोभोवीभत्स ममयजमानस्य०

र्षदानम् । ३० इदंफलंमयादत्तंस्थापितं पुरतस्तवतेनमेसफलावाप्ति
 भवेज्जन्यनिजन्मनि । क्षेत्रपालपूजाविधानम् स्तम्भपूजाप्रयोगे
 लिखितम् । तदनुसारेण क्षेत्रपालाय वलिंदद्यात् । तत उत्तराङ्ग
 पूजनंविधायप्रार्थयेत् । पुष्पंगृहीत्वा ३० मंत्रहीनंक्रियाहीनं अद्रां-
 भक्तिविवर्जितम् । तत्सर्वपरिपूर्णस्यात् वास्तोतवप्रसादतः ।
 नमस्तेघास्तुपुरुषनमस्ते देवसम्भव । पुत्रंपौत्रं धनंदेहि सर्वाङ्गामा
 श्वदेहिमे । ततो हस्तेपुष्पाक्षतान्गृहीत्वाविसर्जयेत् ॥ ३० उत्तिष्ठ
 ब्रह्मणस्पतेदेवयन्तस्त्वे महेउपप्रयन्तु मरुतःसुदानव इन्द्रप्राशूर्भवा
 सुचा । ततः कलशाभिपेकादिकंयजमानस्यकृत्वादेव निर्माल्यं
 ब्राह्मणोदद्यात् ॥ इति दीक्षाङ्ग वास्तुभद्रपूजापद्धतिर्वलिदान
 प्रयोगसहिता ।

—:§§§§§§§§:—

अथ दीक्षांग वास्तु होमे नाममंत्र पद्धतिः ।

ॐ ब्रह्मणेनमः स्वाहा । ॐ विवस्वतेनमः स्वाहा । ॐ मित्रा
 यनमः स्वाहा । ॐ महीधरायनमः स्वाहा । ॐ सावित्रायनमः ० ।
 ॐ सवित्रेनमः ० । ॐ शक्रायनमः ० । ॐ इन्द्रायनमः स्वाहा ।
 ॐ जयायनमः ० । ॐ रुद्रायनमः ० । ॐ जयन्तायः ० । ॐ
 अद्भ्योनमः ० । ॐ आपवत्सायनमः ० । ॐ शर्वायनमः स्वाहा ।
 ॐ स्कंदायनमः ० । ॐ अर्यम्णेनमः ० । ॐ जुंभकायनमः ० ।
 ॐ चरक्येनमः ० । ॐ विदायैनमः ० । ॐ पूतनायैनमः स्वाहा ।
 ॐ पाषराक्षसिकायै नमः । ॐ ईशानायनमः ० । ॐ पर्जन्या-
 यनमः ० । ॐ शिबिनेनमः ० । ॐ वीभत्सायनमः स्वाहा ।
 ॐ पिलिपिच्छायनमः ० । ॐ सत्यायनमः ० । ॐ भृशायनमः ० ।
 ॐ अन्तरिक्षायनमः ० । ॐ अग्नयेनमः ० । ॐ पूषणेनमः स्वाहा ।
 ॐ वितथायनमः ० । ॐ यमायनमः ० । ॐ गृहरक्षाकरायनमः ० ।
 ॐ गंधर्वायनमः ० । ॐ भृङ्गराजायनमः स्वाहा । ॐ सृगाय-

नमः० । ॐ दौवारिकायनमः० । ॐ सुग्रीवायनमः स्वाहा ।
 ॐ वरुणायनमः० । ॐ पुष्पदन्नायनमः० । ॐ असुरायनमः० ।
 ॐ पापायनमः० । ॐ रोगायनमः० । ॐ पितृभ्योनमः स्वाहा ।
 ॐ वायवेनमः० । ॐ नागायनमः स्वाहा । ॐ सोमायनमः० ।
 ॐ मुख्यायनमः० । ॐ भल्लाटायनमः स्वाहा । ॐ शोपायनमः० ।
 ॐ दित्यैनमः० । ॐ अदित्यैनमः स्वाहा । ॐ वास्तुपुरुपायनमः
 स्वाहा ॥ (वास्तोष्पते होमं गृहवास्तु पध्दत्युक्त प्रकारेण
 विल्वपंचक होमं च कुर्यात् ॥)

इति दीर्घागवास्तु होम पध्दतिः ।



कुश कण्डिका सूत्रव्याख्या ।

अथ कुशकण्डिका सूत्रव्याख्यां वदये—(अथातो गृहस्थालोपाकानां कर्म । १ ।)

अथ धौतकर्म विधानानन्तरंयत श्रौतानिकर्माणि विहितानि स्मार्त्तानितु विधेयानि, अतोहेतो
 गृह्ये आयसध्वेग्नौ येस्थालीपाका तेषांगृह्यस्थालीपाकानांकर्म क्रियानुष्ठानमितियावत् वदयते,
 इति सूत्रेषु । तत्रादावाधानादि सर्वकर्मणांसाधारणोविधि, प्रथमकण्डियोच्यते । तत्रगृह्ये
 एवावमस्याधानादिषु सर्वकर्मभुयजमान एवकर्त्ता । नान्यश्रुतिवक्तव्या नुक्तत्वात् । अथयजमान
 सुस्नात् सुप्रक्षालित पाणिपाद स्वाचान्त कर्मस्थानमागत्य वारणादि यज्ञियवृत्तौद् भयासमे
 प्राग्ग्रा नुदगधान्वात्रीन्कुशानपसार्य, प्राङ्मुखउपविश्य चाग्यत शुभ्यायांभूमौ सप्तविशत्यंशुलं
 मञ्जुपरिलिख्य, इतिहरिहर ॥ अत्रकुंडमान सूत्रकारेण नोक्तम्, मयाप्रधानतरेभ्य समहीतम्
 वशिष्ठ सहितायाम्—अनेकदोषद कुंडमग्रन्यूनाधिकंयदि । तस्मात्सम्यक्परीक्ष्यैव कर्त्तव्यं
 शुभमिच्छता । क्रियासंरं—न्यूनाधिक प्रमाण्य त्कुंडंक्रयुरमेखलम् । धृंगाररहितंयच्च यज-
 मान विनाशकृत् ॥ कुंडमंडप निर्माणार्थं भूमि शोधनं वास्तुशाल्खे—देशेसंभाषितेप्राग्नि
 धिबदिहसर्मा सेविधायाम्भूमि । संपूज्यात्रैवमध्य विरचितवलये रोपयेत्साम्राशकुम् ॥ तच्छाया-
 मंचयस्मि निवशतिचवलये यांतियस्माच्च देशात् । तीप्रत्यक्पूर्वदेशी तदनुगतगुण प्राग्गुणौ
 ऽसौप्रदिष्ट । कर्मपर स्वैनैककु डस्य विधानम्—एककुंडंशुभदं मध्येशान्तौजपांग हवनेषु
 आरभ्येकादशितौ लघुमहदतिरुद्रहवनविधौ ॥ शान्तिस्तम्भन सिद्धिभद्रयशां वरयेत्तुवैदासकं,

भोगाकर्षणप्रकृद्भगमर्थो वरयेचशान्तीमृती ॥ अर्धेन्द्राभमधारिनाशान् निधीहेषतथाकर्षणे,
 अस्त्रिस्यादय वरयपुष्टिकरणे सम्पत्तिशान्त्योर्भूतिः ॥ शत्रुच्छाटनमारणादिविषयस्यास्तंभेऽगा-
 स्त्रकं पद्मपुष्टिधनागमाद्य गदकृद्दश्याथ मानप्रदम् । सर्वापत्तोच तथागजसमपितथोगार्थमुक्त्वि-
 प्रदं, सम्पद्कृद्गुरुकुण्ड मन्त्रशरासिस्याच्च भूतादिहत ॥ वर्णपरत्वेन कुण्डाकृतिमानं
 शारदातिलके—विप्राणांचतुरस्रंस्या द्राक्षावर्जुलमिष्यते । वैश्यानामर्धचन्द्राभं शृङ्गाणांभ्यसमी-
 रितम् । नारदपञ्चरात्रे—चतुरस्रं तु सर्वेषां केचिदिच्छन्ति सूरयः सनस्कृमां संहितायाम्—
 श्रीणांकुण्डानिविप्रेन्द्र योन्याकाराणिकारयेदिति । वैदिकायामेखलात्याज्या—वशिष्टसंहिता
 याम्—अयोदशांगुलव्यवत्वा वैदिकायाश्चतुर्दशं । क्रियासारे—व्यवत्वावैदिकचतुर्भागं कुण्डामि-
 नवपञ्चमा । होमानुमांशु कुण्डमानं शारदातिलके—एकहस्तमितं कुण्डं लक्षहोमविधीयते
 लक्षाणां दशकं यावत्ता वद्धस्तेन वर्द्धयेत् । भविष्ये विशेष—मुष्टिमात्रं शताद्वैस्याच्छतं चारत्ति-
 मात्रकम् । महत्त्वे त्वथर्हातव्ये कुण्डं कुर्यात्करात्मकम् । द्विहस्तमयुते तच्च लक्षहोमं चतुःकरम् ।
 दशलक्षमिते होमे षट्करं सम्प्रचक्षते । अष्टहस्तात्मकं कुण्डं कांटीहोमं तु नाधिकम् । कुण्डरत्नाव-
 ल्याम्—यन्मण्डपेयत्करकुण्डमिष्टं ज्ञात्वेयकुण्डादिकमारभेत । न्यूनं च कुण्डेऽप्यधिको विधेयः ।
 न्यूनो नर्होमस्त्वविकंप्रशस्त ॥ अत्र कुण्डस्थंडिलव्यवस्था तु होमद्रव्यस्याधिकसूक्ष्ममानात्सुधीभिः
 स्वबुध्यैव कायां विशेषः कुण्डनिर्माणग्रन्थेषु द्रष्टव्यं ॥ मंडपरचनामाह नारदपञ्चरात्रे—
 शुद्धाभिर्मृत्तिकाभिश्च बालुभिश्चमिते शुभं । सपादहस्तमानेन स्थंडिलं परिफलप्येम् ॥ चतुरस्रं
 समन्ताच्च चतुरंगुलमुष्ठितम् समेखलं स्थंडिलन्तु प्रशस्तं होमकर्मणि ॥ कण्ठन्तुवर्जयेच्च रवाते
 कण्ठः प्रकीर्तितः । अभ्यायतनधर्माह यतस्तेमेखलाद्याः । चौं वायनः—कुण्डबन्धमेखला
 कृत्वा योनिं कृत्वा तत् परम् । मेखलारहिते होमः शोक प्रदः धृतीरितः मेखलाकण्ठयोर्न्यादीनो
 व्यनस्थां गृह्यागप्रकरणे वक्ष्यामि ॥ एवंविधना कुण्डं स्थण्डिलबन्धनिर्माणं । (परिसमुद्य २ ।)
 त्रिभिर्दंडैः पासूनुपसायं । तच्चसामर्थ्यात्पास्वपसारणयोग्यैर्दंडादिभिर्यावत्पास्वपसारणो भवति
 तावत्कार्यं ॥ एके च दर्भेण वारत्रयमितिकारिकाकारः अनन्तः—तत्साधनान्तरात्तुक्त्वाद्भस्ते
 नैवपरिममूहं कुर्यात् ॥ (उपलप्य ३ ।) उपलपनं भूमेरुद्धर्तनं तच्च गोमयेन, स्थण्डिले वा कु-
 गडंगोमयेनोपलप्यते ॥ मैत्रायणिगृह्या दिदमपि वारत्रयं भवतीति चेत् । (उल्लिख्य ४ ।)
 त्रि. खादिरेण हस्तमात्रेण खड्गाकृतिना स्पर्शने उल्लिख्य, प्रागभा. उदक्मंस्था. स्थण्डिलपरिमाणं
 स्तिखारेखा कृत्वा, वर्द्धमानमतेन—पञ्चवारिखा.—स्थण्डिलसंल्लेखनं कुर्यात्सुखेण च कुर्वते न च ॥
 (उद्धृत्य ५ ।) अनामिकागुण्ठाय यथोलिखितं मेखाभ्यः पांशुत्तच्छत्य, (अभ्युद्य ६ ।)
 मणिकान्तिरभिविष्य । गङ्गादितोर्यभूतेन वार्ध्वपात्रेखवारिणा । मणिकामेचने कुर्यान्पुञ्जहस्ता
 त्युनः पुनः ॥ वद्धमान—उत्तानेन तु हस्तेन प्रोक्ष्यं गमुदाहृतम् । तिरश्चात्तत्रांगप्रोक्तं नीचेना

भ्युक्षणंस्मृतम् । दैवपरिसमूहनादित्रिभिः पित्र्येसकृत्सकृत—इति कर्कांपाध्यायः ॥ एतेपञ्चभूतं
 स्काराः, इतिभर्तृयज्ञः अग्न्यथाः इतिकर्कः तेनयत्रयत्राग्नेः स्थापनंतत्रतत्रैतेकर्तव्याः एषएवविधि
 र्यत्रकचिद्धोमः इतिहरिहरः । (अग्निमुपसमाधाय । ७ ।) कर्मसाधनभूतं लौकिकंस्मार्त
 श्रौतंवाग्निं आत्माभिमुखंस्थापयित्वा ॥ मेरुतंत्रे—पात्रान्तरेणपिहिते ताम्रपात्रादिकेशुभे ।
 अग्निप्रणयनं कुर्याच्छ्रवणे वाथनूतने ॥ इतिपारस्कगचार्यं मतेनाग्निस्थापनविधिः ॥
 देवीपुराणादिपुत्रु समन्त्रकोविधिः—नारायणउवाच—ततः कुरुडस्यसंस्कारं स्थण्डिलस्य
 चवामुने । प्रवक्ष्यामिसमासेन यथाविधिविधानतः । वेदोक्तेनविधानेन कुर्याद्भूपञ्चसं-
 स्कृतिम् । समूहनंकुशैः कुर्यात्स्यद्देवादेवहेडनात् । मानस्तोकेनमन्त्रेण गोमयनोपलेपयेत् ॥
 त्वाङ्ग्रेष्विन्द्रमन्त्रेण त्रिहोरेखाविलेखयेत् । पांसूनुष्यत्यलेखानां व्रजङ्गच्छेतिमन्त्रतः । अद्भिर
 भ्युक्षणंकुर्याद्देवस्यत्वेतिमन्त्रतः । त्रिकोणवृत्तपट्कोणं साष्टपत्रं शुभपुरम् । यंत्रम्विभावयेद्ब्रह्मैः
 कुरुदेवास्थंडिलेशुभे । ततः संस्थापयेद्ब्रह्मि अग्निर्मूर्ध्नेति मन्त्रतः । संस्थाप्यवर्णिहरंबीज
 मुच्चार्यतदनंतरम् । समिधाग्निदुमन्त्रेण समिदा-धानमाचरंत, अग्निसन्धुक्षणंकुर्यात्तमयिष्टुक्तामि
 मन्त्रतः । वा-चित्पिपलहहनदहपचयुगमंततः परमस्वाहा । या सर्वज्ञाज्ञापयस्वाहा, इति मन्त्रेणवा
 कर्मभेदेनाग्निनामान्याह वाचस्मृतिः—लौकिकेपावकोवर्णिः प्रथमःप्रकीर्तितः अग्निस्तुमा
 स्तोनामा गर्भाधानेप्रकीर्तितः पुंसवेचमसोनाम शोमनःशुभकर्मसु । सीमन्तेमज्जलानाम प्रगल्भो
 जातकर्मणि ॥ पार्थिवोनामकरणे प्राशनेऽन्नस्यवैशुचिः । सभ्यनामातुचूड्यायां व्रतादेशे समुद्रवः ।
 पुरातनपद्धतिषु प्रक्षिप्तोऽर्द्धः—व्रतमध्ये हरिनाम व्रतान्तेराजपुत्रकः ॥ गोदानं सूर्यना-
 मास्या द्विवाहे बीजकःस्मृतः ॥ वाचस्पति मंतंतु—गोदाने सूर्यनामास्या त्केशान्तेयाजकः
 स्मृतः । वैश्वानरोधिसर्गस्या द्विवाहे वलदस्मृतः । चतुर्थीकर्मणिशिखीधृति रग्निस्तथापरे ।
 आवसथ्यस्तथा धाने वैश्वदेवेतुपावकः । ब्रह्माग्निर्गार्हपत्येस्या इक्षिणाग्निस्तथे श्वरः ।
 विष्णुराहवनीयेस्या दग्निहोत्रेप्रयोमताः । लक्ष्मिमेऽभीष्टदस्या त्कोटिहोमे महाशानः ।
 एकेघृताचिपे प्राहुरग्निव्यानप्ररायणाः । रुद्रादीतुमृडोनाम शान्तिकं शुभकृतथा ।
 कञ्चित्—शान्तिके वरदः प्रोक्तः पौष्टिके वल वर्द्धनः । पूर्णाहुत्यां मृडोनाम कौधाग्निधा-
 मिचारके । प्रायश्चित्ते विटश्चैव पाकयज्ञेषु पावकः । देवानां हव्यवाहय पितृणां कव्यवाहनः ।
 वश्याथैकामदोनाम वनदाहेतु दूषकः । कुक्षीतु जाठरोनाम कन्वादो शपदाहेनं । वर्णिनामा
 लक्ष्मिमे कोटि होमे हुताशनः । वृषोत्सर्गेऽध्वरोनाम शुचये ब्राह्मणस्मृतः । नमुद्रैवाडया-
 मिधत्तयसम्बर्त्तकत्वात् । विष्णुराहवनीयः स्यादमिहांत्रे प्रयोऽमयः । शतैवमग्निनामानि
 ततः पूजनं मारभत ॥ (सप्तकारेणाग्निपूजनं नस्त्रितं परमपद्धतिकारं, नवपत्रं यत्रादिपु
 पूजनं जिदानांच पूजनं मुक्तम् । कस्मिंश्चित्पु पुरातन पद्धतिषु स्यादग्निहोमान्ते वर्णिपूजनं

मुक्तं क्वचिन्नवाहुति होमान्ते लिखितं, परश्च सर्वं कर्मादी ध्यानं पूजनादिकं भवति अग्निध्यानं—
 अग्निं प्रज्वलितं वन्देति, ध्यानादग्ने पूजनं समित्प्रक्षेपान्तो समीचीनमतम् ॥) अत्राचार्य
 वरणस्थैवावश्यकतास्ति, अर्घ्ये कर्मसु वेदयोगादिति, सर्वं कर्मसु अर्घ्यो कर्तव्यम् ।
 पादशौचार्यं पद्माद्यै रत्नायादीन्समर्चयेत् । परश्च हरिहरादिभिर्यजमानस्थैव कर्तव्यं मुक्तं
 परश्च यजमानस्य कर्तृत्वेऽपि पुस्तकाचार्यस्य वरणं करणे वापि च्छतिर्नास्तीति शास्त्रं सम्मतः ।
 (दक्षिणतो ब्रह्मग्नमास्तीर्थे ८) तस्याऽग्ने सन्मुखस्थापितम्याग्नेर्दक्षिणस्या दिशि ब्रह्मणे
 आसने वारणादि यज्ञियदारनिर्मितं पीठमास्तीर्थे कुशैराढ्या, तत्र वरणाभरणाभ्यां पूर्वतम्पादितं
 कर्मसु तत्त्वज्ञं ब्राह्मणं तद्भाव—बुधमयो ब्रह्मा इतिकर्क— पद्माशता भवेद्ब्रह्मा तदर्धेनतुवि
 ष्टः । इति पद्माशकुशनिर्मितं ब्रह्मण्यग्नेरुत्तरत प्रामुखमागोन स्वयमुदंमुख आग्नीनीऽनु-
 लेपनं पुष्पमाल्य पद्मालहारादिभिः सम्पूज्य, असुक्शमाहं करिष्ये । तत्रासुक गोत्रासुक
 प्रवरत्वं ब्रह्माभक्तिवृत्त्या, भवानि इत्युक्तवन्तमुपनय, अग्निगृह्ये— यमा वैवश्वतो राजा
 दक्षिणार्थां निरस्यते । तस्मात्सरक्षणायां ब्रह्मातिष्ठति दक्षिणे ॥ (अग्नोऽ) अप इतिभेदः ।
 अग्निगृह्ये—ब्रह्माचार्यं प्रणीतानामाशनं च त्रिभिः कुशैः ॥ तद्वाभ्यामिकदर्मणं प्रपन्ति
 ऋषीश्वरा ॥ पात्राणां स्थापनं कुर्यात् दुत्तरे यज्ञं कर्मणि । तद्यथा— अग्नेरुत्तरत आगम-
 स्त्रिभिः कुशैरासनद्वयं कल्पयित्वा वारणं द्वादशांगुलदीर्घं चतुरंगुलं विस्तारं चतुरंगुलमध्यखातं
 चर्मसं सन्ध्यहस्तेऽहत्वा दक्षिणहस्ताद्भूतं पात्रस्यादकेन— पूरयित्वा पथिमासने निवायऽऽलभ्य
 पूर्वांसने स्थापयित्वा द्वापिक्वाया पश्चादुत्तरतो वास्रात्पात्रासादनं मन्त्रितं । उत्तरचेदु-
 दसंस्थं प्राक्सस्य पश्चिमस्य च । एतच्च विपुस्त्यालं सम्भवे अस्मभ्यवदु— कर्तव्यं यज्ञं—
 प्राचिप्राचं मुदग्नेरुग्रम समीपत । (परिस्तीय, १०) अग्निं बहिर्मुष्टिमादाय, ईशानादि
 प्रागग्रैर्वहिर्भिरुदक्सस्थमग्नें परिस्तरणं कृत्वा । अग्निगृह्ये—वन्दितस्तुपरिलज्जं द्वादशा-
 गुलतो गृह्णि । परिस्तरणं दर्भास्तु पादशा द्वादशापिवा । (अर्थवदासाध, ११) यावद्भिः
 पदार्थैरर्थं प्रयोजनं तावत् पदार्थान् द्वद्वा प्राक्सस्थानुदग्मानग्नेरुत्तरत पश्चाद्वा आसाध,,
 कुशाभावे कार्तायमून् भाष्ये कुशाभावतुनाशा स्तु नाशा कुशासमाहृता । काशाभावे
 गृहीतव्या अन्यदर्भा यथाचिता । कुशाकाशा शराद्वर्गवर्गाधूमवल्गजा । सुवर्णराजनेताभ्यं
 दशदर्भा प्रकीर्तिता ॥ कार्तिकायाम्—आसादयतिपात्राणि प्रवेशेवरकेषु । त्र्यंगुलान्तरमानं
 पात्रात्पात्रान्तरस्थिति । तद्यथा—पत्रिण उदनानि त्रिंशुकुशतस्यानि । पवित्रेसामे अनन्त-
 गर्भं द्वेऽशतं रुणे । (प्राक्षणीपात्रं वारणं द्वादशांगुलदीर्घं करतलं सम्भितखातं पद्मपत्राकृति
 कमलमुकुलाकृतिवा । आज्यम्यालो तैजतो मृगमयीना द्वादशांगुलं विशाला प्रादेशोक्ता, तथैव
 चरुस्थाली, सम्मार्गं कुशाह्वयं, उपयमनकुशाद्विप्रभृतय पद्ममत्तवा । समिधस्तिह

पालाशय' प्रादेशमात्रम्, सुव' खादिरोहस्तमंत्रोंगुष्ट पर्वमात्रखात परिणाह वसुंल पुष्करः ।
 आभ्यंगव्यम् चरुश्चेद्ब्रूहि तरङ्गला । पटपश्चाशदधिक मुष्टिशतद्वयपरिमितं परार्ध्यं बहु-
 भोवत्पुरुषाहार परिमितमपराध्यं तरङ्गलायन्न पूर्णपात्रं दक्षिणावरोधा यथाशक्ति हिरण्यदि-
 द्रव्यम् । (पवित्रेकृत्वा १२) प्रथमं त्रिभिः कुशतरुणैरप्रतः प्रादेशमात्रं विहाय, द्वेकुशत-
 रुणे प्रद्विय, कुशपवित्र प्रमाणं कुशकरिडका भाष्ये—ब्रह्मयज्ञे गौर्ण प्रमाणीद्वी
 दभों, तर्पणे—हस्त प्रमाणास्त्रयोदभाः ॥ गौर्णप्रमाणम्—प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्या-
 दियुतेतते । अंगुष्ठे सकनिष्ठस्या द्वितस्तद्वादशांगुल इत्यमरः ॥ मार्कण्डेयः—चतुर्भिर्दभं
 पिजूलैर्ब्राह्मणस्य पवित्रकम् । एकैकन्यूनमुद्विष्टं वर्यं वर्यं यथाक्रमम् ॥ सपवित्रेण हस्तेन
 कुर्यादाचमनं कियाम् ॥ नोच्छिद्ये तत्पवित्रं तु भुक्तोच्छिद्यं तु वर्जयेत् ॥ वौधायनः—हस्तयो-
 र्भयो द्वौद्वावासनेऽपि तथैव च । शेषं कर्मवोधिनी परिभाषायां द्रष्टव्यम् ॥ प्रयोगपारिजाते—
 उत्तरीयं योगपटं तर्जन्याच पवित्रकम् ॥ नजीदित्पितृकैर्धार्यं श्यंषीवाविद्यते यदि ॥ (प्रोक्षणीः
 संस्कृत्य । १३) प्रोक्षणीपात्रं वारणं वारण काष्ठ निर्मितं द्वादशांगुल दीर्घं करतल समित
 खातं कमल मुकुलाकृतिर्भवति, इतिहरिर ॥ यज्ञपाश्वं सप्रह कारिकाशाम्—वैकंकतं
 पाणिमात्रं प्रोक्षणी पात्रमुच्यते । हंसमुख प्रसेकं च त्वनिवत् चतुरंगुलं ॥ कंकतानि त्रिद-
 न्तीनि वारणानि भवन्ति हि ॥ प्रणीतोदकमासिच्य पवित्राभ्यामुत्पूय पवित्रे प्रोक्षणी पात्रे
 निधाय दक्षिण हस्तेन प्रोक्षणी पात्रं मुथाप्य सव्येकृत्वा तदुदकं दक्षिणा नामिकागुष्ठाभ्यां
 सपवित्राभ्यामुच्चात्य प्रणीतोदकेन सम्प्रोक्ष्य (अर्थवत्प्रोक्ष्य, १४) अर्थवन्ति प्रयोजनयन्ति,
 आज्यस्थाल्यादीनि पूर्णपात्रपर्यन्तानि प्रोक्ष्येयद्विरासादनक्रमेणैकैकश प्रोक्ष्य,, असन्नरे
 प्रणीताभ्योरन्तराले प्रोक्षणीपात्रं निदध्यात् । अग्निगृहोऽपि—निदध्यात्प्रोक्षणी पात्रं सप-
 वित्रमसन्नरे । यदन्तरं प्रणीताभ्योरगन्नरस्तु सम्मृतम् ॥ (निरूप्याश्व. १५) आसादित
 मान्यं आज्यस्थाल्यां पश्चादग्नेर्निहितायं प्रक्षिप्य । आभ्यंगव्यमिति हरिहरादयः । कान्यायनः—
 घृतमाभ्यं लिगादित, तच्च गव्यमिति । महीनागवां पयाऽपि इतिमन्त्रं लिगात् ॥ गव्य
 घृताऽभावे प्रतिनिधिमाह मण्डनमिश्र—गवाज्या भावतरङ्गगी महिध्यादेर्पुतंक्रमात् ।
 तदभावे गवादीनां क्रमाद्बुधं त्रिधोयते । तदभावे दधिप्राह्य मलाभेतलमिष्यते । वौधाय
 नः—घृताभावे तु तलस्यात्तदभावे तु जातं तलम् । तदभावे च कौमुभन्तदभावे च सापंपम् ॥
 आज्यस्थाली लक्षणम्—आज्यस्थाली तु कस्तंब्या तजमद्रव्यं सम्भवा । माह्यीवपिकर्तव्या
 नित्यं सर्वाग्निर्कर्मसु ॥ आज्यस्थाल्या प्रमाणं च यथावामन्तु कारयेत् ॥ द्वादशांगुल विन्तीणा
 प्रादेशोच्चावचा शुभा ॥ चरस्थाली लक्षणम् आज्यस्थाली समानेन चरस्थाली प्रशस्तं ।
 यज्ञपाश्वं—गृगमयोदुम्बरीवापी चरस्थाली प्रशस्तं । तीर्थगुप्ते गमिन्मात्रा द्वातानि

वृहन्मुखी । तस्य हस्तपटित स्थाव्यादि रत्नद्वयकम चरश्चेत्तरस्थाव्यां प्रणीतादक मासिच्य
 आसादितान्ताण्डुलान्प्रक्षिप्य ॥ (अर्धधित्य च १६) तत्राप्य ब्रह्माधिभ्रयति, तदुत्तरत
 स्वयमाचार्यधरमम युगपदमापाराप्य (पर्यग्निवृत्त्यात् १७) ज्वलदुन्मुख ममान्ता दाज्य
 चवार्त्पर्यध्रिं प्रदक्षिणकमण भ्रामयत । (म्रुधं प्रतप्य नमज्याभ्युदय पुन प्रतप्य
 निदध्यात् १८) दक्षिणहस्तेन सुवमादाय प्राञ्चमधामुत्तमग्री तापयित्वा तस्यपाणौ-
 कृत्वा दक्षिणेन मन्मगात्रं कुशैर्मूलतोऽप्रपर्यन्त मूलरममारभ्य मूलपर्यन्त मध्वान्मूलपर्यन्त
 मगृह्य, प्रणीतोदधे नामिषिच्य, पुन पर्यवत्प्रतप्य । **आग्नेयत्वायन** — ताम्बुशान्कृतसम्माना
 न्स्थापिताग्नौक्षिपेदिति । **व्यास** — कर्मार्थं दक्षिणे भाग आचाय स्थापयत्युत्तोलुक्लुवाविति ।
म्रुवलक्षणादेशे — अगुष्ठपर्यवृत्ता म्यातरन्तिमात्र लुवाभवत । कातीय- ग्वादिरा बाहु
 मात्रस्तु जुहुक् सङ्गक सुय । अरति मानो हस्तास्यो वर्तुलोगुष्ठ पववत । अर्धपर्यवृत्ता-
 व्याच युनतोनासाकृतिर्भवेत् । वायवीये—लुवद्युवौ तैजसौप्राहौ नकास्यायस सैसकौ ।
 यज्ञदाहमयीवापि तात्रिकौ शिल्प सम्मितौ । **न्यूनहोमे चमिष्ट** — पालाशपत्रे जिश्छिद्रे
 रुचिरेलुक्लुवौमती । प्रकुर्याद्वाग्ध्रपत्रे मक्षिप्त होमकमणि ॥ **म्रुवधारणविधानं**
मात्स्य—मूल हानिकर प्रावत मध्यशोककरतथा । अग्ने व्याधि कर श्रोवत लुवधारयते
 कथम् । **तद्भाग्य प्रकार** — चतुरगुल परित्यज्य अग्नेचैव द्विरष्टकम् । चतुरगुल च तन्मध्य
 धारयन्लुवमुद्रया । हीयते यजमानो वैलुवमूलस्य दशनात् । तस्मात्सगोपयन्मूल होमकाले
 लुवस्यतु ॥ (**आज्यमुद्रास्य १६**) आज्यमुत्पाप्यचरा पूर्वेणनीत्वा, अग्नेरुत्तरत
 स्थापयित्वा चरमुत्थाप्य आच्यस्य पश्चिमतागोत्वा आज्यस्योत्तरत स्थापयेत् । आज्य
 मन्म पक्षदानीय चरुचानीय आच्यस्योत्तरतपश्चिम एवत्रिचतुरा कीन्त्यान्मि कृदापि
 उद्गासय, दधिधिताना पूर्वणोद्गासिताना पश्चिमता हविषउद्गास्या नयनमिति साक्षिकसम्प्रदा-
 यात् । (**उत्पूय २०**) पूर्ववत्पवित्राभ्या मान्यमुत्तिष्ठप्य पवित्रे प्रणीतास्तु निधाय ।
 (**अवेद्य २१**) श्रवलोक्थाय्य तस्मादपद्रव्य निरसनम् । (**प्रोक्षणांश्च पूर्ववत् २२**)
 पूर्ववत्पवित्राभ्या मान्यमुत्तिष्ठप्य पवित्रे प्रणीताया निधाय (**उपयमनन्कुशानादाय २३**)
 दक्षिणपाणिना गृहीत्वा सव्यनिधाय (**समिधोऽभ्याघाय २४**) उत्तिष्ठन्नि खोसमिध अग्नी
 प्रक्षिप्य । **समिद्धक्षणमाह** कात्यायन — प्रागग्रा समिधो देयस्ताश्च योगेषु
 पातितः । शान्त्यर्ष्यु प्रशस्त्रां विपरीता जिघांसति ॥ होतव्यामधु—
 मर्षिन्याद्भन्नाक्षीरणयुता । प्रागशमाग्रा समिधा ग्राह्य सर्वत्रचैववा ॥ **स्मृत्यधमारे**—पाला-
 शरवदिरारश्वाथ शम्भुदुम्बरजासमित । अयासागाऽर्कबूवाश्च कुशाश्चेतपरेविदु ॥ सत्वच
 नमिध कायां श्रुजुरलक्षणा ममास्तया । शस्तादशांगुलास्तास्तुद्वादशांगुलिकास्तथा ॥ आदी

पक्वा समन्त्रेदा स्तर्जन्यं गुणिवर्तुला । अपाट्टिताश्चाद्विश्रया कृमिदोषविजिता ईदशाहोम-
 येत्प्राज्ञ प्राप्नोति विपुलाश्रयम् । अत्राद्यसमिधोत्रायुपुराणो विशीर्षाविदलाहस्या वक्राथ
 मुशिरा कृशा दोषास्थूलाघुर्षोर्दृष्टा कर्ममिद्धिविनाशका ॥ प्रम्राण्यञ्चत्तास्तत्रैव—निवासा-
 येचकीटानालताभिवष्टिताश्चये । अयज्ञियागर्हिताश्च पल्मीकरश्चसमावृता ॥ शकुनीनानिवासाश्च
 ससानेयमहोरुहा । अन्याश्चैवविधानसर्वा न्यज्ञियाश्चविद्यजेयत ॥ (पर्युद्यजुहुयात् २४)
 प्रोक्ष्ययुद्वेनसपवित्रेण दक्षिणचुल्वेनशुहीतेन, अग्निमीशानादि उदगपवर्गपरिपिच्यजुहुयात् ।
 आधारादीन्सस्त्रवन्धारणार्थं पात्रप्रणीतान्योर्मध्यनिदध्यात् । अग्नेरपस्थानम्—अग्निप्रव-
 लितवन्दे ० ॥ पाद्यगन्धादिभिरश्चैव कुण्डमध्येप्रपूजयत् ॥ ३० अग्नयजातवेदसेनम्, इतिमन्त्रेण ।
 देवीपुराणे—इदानोमेवतत्रैव स्वाहाशक्तिञ्चपूजयत् । मध्येपदस्वपिकाणेषु हिरण्यागगना
 तथा । रक्ताक्षरणासुप्रभाच बहुरूपातिरक्तिका । पूजयेत्सप्तजिह्वास्ता वेशरेष्वङ्गपूजनम् । दले
 पुपूजयेन्मूर्त्तौ शक्तिस्वस्तिकवारिणी जातवेदा सप्तजिह्वो हव्यवाहनएवच । अश्वोदरज
 मज्ञोन्य पुनर्यैश्वानराह्वय । ताराग्नयदाया स्युर्नत्यन्तावन्दिमूर्त्तय । ३० अग्नयजातवेदसे-
 नम् । इत्यादि प्रयोगऊह्य । अग्निजिह्वानामानिपरशुरामकारिकायाम्—हिरण्याकनकार
 ङ्गा कृष्णातदनुसुप्रभा । बहुरूपातिरिक्ताचन्द्रजिह्वाश्चसप्तयै ॥ शारदातिलके—कालीकराली
 च मनाजवाच सुलोहिताश्चैवसुधूमवर्णा । स्फुलिङ्गिनोविश्वरश्चिस्तर्ध्वलालायमाना सलुसप्त-
 जिह्वाः । दक्षिणान्तुचतुर्जिह्वन्त्रिजिह्वमुत्तरमुत्त । गृह्य मंत्रहे—सप्तजिह्वाभवन्त्यता हुताशनमुखो
 दूता । याभिहव्यसदाश्रन्ति हुतसम्यक्द्विजोत्तमै । पावकस्यमुग्मव्यक्ष सुदुत्तपद्मयानिना ।
 सप्तजिह्वाप्रमाणान्तु प्रवेशपरिकर्तितम् । प्रमाणचतुरस्रश्चतुर्गुणमुत्तरमडलम् ॥ पुरातनपद-
 क्षो—करालीधूमिनीश्चैता लोहिताचातिलाहिता । सुवर्णापधरागाच सप्तैता परिकीर्तिता ।
 करालीराक्षसाश्रन्ति धूमिनीमसुरास्तथा । श्वेतानागा ममश्रन्ति पिशाचालाङ्गितथा । अलो-
 हितागन्धर्वा सुवर्णाश्चयमास्तथा । पधरागातथादवा द्याताजिह्वाहुताशने । तस्यातुहामये-
 प्रित्य सुसमिद्धे हुताशने । पेशश्चोक्ता समासन तातव्यास्तुद्विजातमै ॥ दवाभागवत—
 तत खक्सुत्रसंस्कारा वाज्यसंस्कारणवच । कत्वाहोमतत कुर्यात्सुवर्णदायवैपुतम् । ब्रह्मासन
 दक्षिणेतुहिरण्यगर्भमन्त्रत ॥ प्रणीतास्थापन कुर्यादापोहिष्टेतिमन्त्रत । क्यानरिचमन्त्रेण
 प्रणीताङ्गि प्रपूरयत । प्रणीतान्योर्न्तराल स्थापयत्प्रोक्षणीबुध पवित्रेश्चार्धेष्णव्या वितिच
 ह्निन्देत्पवित्रे । गव्यमाज्यश्चसस्वुया दिपेत्वेतेनमन्त्रत । आतारमिन्द्रमन्त्रेण प्रनुर्यासुयता
 पनम् । नवितुर्यै प्रसननुर्यादुत्पवनसुन । अग्निपर्युदाणकुर्या धरतीनिमन्त्रत । दक्षिणाद्-
 पृतभागात्तुवर्धदक्षिणलाचने । जुहुयादग्नयस्साहृत्य पर्वण्यमासतन्वत गामायस्याहतिमप्यात्
 वृतगादायसत्तम् अग्नोपामाभ्यास्वाहति मध्यमनेहुनतत । गताराभिष्याहनिभर्तुहुयादप

साधकः । जुहुयादग्निमन्त्रेण त्रिवारं तु ततः परम् । ततस्तु प्रणवेन वा प्यष्टावष्टौ घृताहुतिः । गर्भाधानादिसंस्कार कृते तु जुहुयान्मुने । अग्नि संस्काराः— गर्भाधानं पुन्यवनं गीमन्तोऽप्रयन्ततः । जाते कर्मनामकर्मा प्युपनिष्कमन्तथा । अत्राशमन्तथा च्छा व्रतयन्धस्तथैव च । महानाम्यमन्त पश्चात्तथैवोपनिषद्व्रतम् । गौदानोद्वाहकौ प्रौक्ताः संस्काराः श्रुतचोदिताः (एष एव विधिव्यत्र पृष-
 त्त्रिहोमः २६) परिसमूहनादिपर्युक्षणपर्यन्तो विधिरेवनमन्त्रा, इति सूत्रकारः यत्र यत्र पृष च न-
 लोके स्मार्त्तवाग्नीहोमस्तत्र वेदितव्यः । परशुराम कारिकायाम्— जन्वाव्यदक्षिणहोमं
 कुर्येण जुहुयाद्घृतम् । स्वाहान्ते जुहुयाद्धोता स्वाहयासहवाहवि । देवीभाग प्रते— स्वाहा देवी
 हविदग्निं प्रशस्तासर्वकर्मसु । दग्धुं नशक्तः प्रकृतिर्हुताशश्च त्वया विना । त्वनामो च्चार्यमन्त्रान्ते योदा-
 म्यति हविर्नरः । सुरेभ्यस्तत्राप्यनुवन्ति सुराः सानन्दपूर्वकम् । दक्षिणाग्निगार्हपत्या हवनीयान्कमे-
 ण च । ऋषयो मुनयश्चैव ब्राह्मणाः क्षत्रियादयः । खाहामन्त्रं समुच्चार्य हविदानं च चक्रिरे । स्वाहा-
 देव्याः पूजनमप्युक्तं तत्रैव— सर्वयज्ञारम्भकाले शालप्रामेघदेववा । खाहांसम्पूज्ययत्नेन यज्ञं
 कुर्यात्फलाप्तये । ध्यानश्च सामवेदोक्तं स्तोत्रं पूजाविधानकम् । खाहां मन्त्राङ्गयुक्ता च मन्त्रसिद्धि-
 स्वरूपिणीम् । सिद्धाचिसिद्धिदात्रिणां कर्मणां फलदांशुभाम् । इति ध्यात्वा च मूलेन दत्त्वा पादादिकं नरः
 ७ ह्रीं श्रीं वन्दिजायायै देव्यै स्वाहान्त्यनेन च । मन्त्रेणाकारपूतेन स्वाहान्तेन विचक्षणः । स्वाहावसाने
 जुहुयाद्धयात्न्यै मन्त्रदेवताम् । मन्त्रोच्चारणक्रम- याज्ञवल्क्यः— वर्णं स्पष्टतरं कार्योनासा
 श्वासावधीति वा । मुखश्वात्मावधिः श्वभूमिर्पैकार्चनेषु च ॥ अतः परमाचार्येण द्वितीयकण्डिकायां
 आधाननिरूपणं कृतं परब्रह्मवर्त्रहोमपद्धतौ अन्वारब्धहोमविधानापत्ते प्रथमकण्डपञ्चमो कण्डिका-
 कारपरपर्यहरिहरादेरुक्तप्रमाणो न करोमिति च— अत्र वैवाहिकहोमप्रसंगेन सर्वकर्मगाधारणी परि-
 भाषां करोत्याचार्य । (अन्वारब्धश्चाद्या वाज्यभागो मह व्याहृतय सर्वप्रायश्चित्तं
 प्राजापत्यं चैव स्विष्टकृच्च ॥ ३ ॥ एतन्निन्यं २० सर्वत्र ॥ ४ ॥) ब्रह्मणा दक्षिणे वाही
 दक्षिणाहस्तेन अन्वारब्धे कर्त्तरि आधारसंज्ञके आख्याहृती— यथामनसा प्राजापतये स्वाहा— इदं प्राजापत-
 ये, मनसात्सामगमपि— इति हरिहरः । होमेत्यागस्वाह त्वत्सकृतः, यथासहस्रादिलक्षादि अनेक-
 कर्त्तृकहोमे, प्रत्याहुतियागस्य कर्तुमशक्यत्वा दिति जैमिनि ॥ दानचन्द्रिकायान्तु— दानोत्तरं
 नममेतिकीर्त्तयेत् ॥ इति प्रमाणाभ्यांसाधारणहोमे प्रायश्चित्तसंज्ञके प्रतिस्वाहान्तेन ममेत्युच्चारणे
 कर्त्तव्ये किमपि क्षितिनां स्तोत्रादिकम् । ७ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय, आज्यभागसंज्ञको होमौ यथा
 अन्त्ये स्वाहा इदमन्त्ये, सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय । महाव्याहृतयो भूशब्दोत्पत्तौ यथा । भूः
 स्वाहा इदमन्त्ये— इदं भूयो । भुवः स्वाहा इदं वायवे भुवि वा, स्व स्वाहा इदं स्यांश्च— स्व इति वा । सर्वे
 प्रायश्चित्तसंज्ञकाः पञ्चाहृतयु— यथा— त्वत्रोऽ अग्नि इत्यादि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा, सत्त्वतोऽश्वाने-
 सु इधो नऽप्यि स्वाहा । इदं नग्नीवृणाभ्यां द्वान्यां त्यागः । इति पञ्चानां होमः— आर्थां प्राजापति-

देवताकोहोमः प्राजापत्यशब्देनोच्यते । खिष्टकृच्छ्रव्येनखिष्टकृद्धोमोच्यते । अयंचहोमः उत्तरा-
 ईर्भवति, यथाश्रमनयेखिष्टकृते, चकारात्समुच्चयः एतदाधारादिखिष्टकृदवसाने, सर्वत्रयज्ञेऽ-
 होमात्सकेषु कर्मसुनित्यं ॥ यत्रहोमाभावस्तत्रनास्ति, अन्तेविहितस्यस्विष्टकृद्धोमस्य कर्मविशेषे
 स्थानान्तरमाह । प्राङ्महाव्याहृतिभ्यः स्विष्टकृद्भ्यश्चेदाज्याद्धविः ॥ यत्राभ्याति-
 रिक्तं हविरस्तितत्रमहाव्याहृति हीमात्पूर्वमनुष्ठेयः । होमेउत्तानहस्तप्रमाणम्—उत्तानेक्षुः
 हस्तेनश्रंगुष्ठा त्रेण पीडितम् । संहितांशुलि पाणिस्तु धाम्यतो जुहुयाद्धविः ॥ होमात्त-
 पवित्र प्रतिपत्तिः—सर्वकर्मसु होमान्ते पवित्राभ्यां मार्जनं कृत्वा तत अग्नी ॐ
 स्वाहा, इति प्रक्षिपयेत् ॥ परिस्तरण बर्हीणामपि होमोविधीयते । प्रणीताश्च विमोक्तः
 पश्चिमे विहितः । एतेपदार्थाः भाष्यकारमते गृह्यस्थाली पाक कर्मसु नभवति । परंच पद्धति
 कारणां पद्धत्युक्तत्वा दनुष्ठीयन्ते । अमन्त्रत्वाच्छन्दोगपरिशिष्टे—आज्यं हव्य मनावेशे जुहोतिऽ-
 विधीयते । मन्त्रस्य देवतायाश्च प्रजापतिरितिस्थितिः । होमद्रघ्याभावे—घृतं प्राह्यं ॥
 मन्त्रानुवर्तौ प्रजापति देवताकस्य मन्त्रो महाव्याहृति मन्त्रो ग्राह्योभवति । देवतायाऽनुवर्तौ
 प्रजापतिप्राह्यः । यथा यत्रमन्त्रा न विद्यन्ते व्याहृतीस्त्रयो जयेत् । मन्त्राणामेवचोद्देशे मन्त्रैः
 कर्मसमारभेत् ॥ भूरादयो व्याहृतयो वेदेभ्योनिःसृतापुरा । महत्वं व्याहृतोर्नां च प्राप्तास्ते
 नैवकर्मणा । ॐकारजननात्तासां महत्त्वं प्रतिभाष्यते । व्याप्ताच व्याहृतिरत्वं च तेनैवविद्यतां
 ययुः ततः प्रणीता विमोक्तानन्तरम् ॥ पूर्णपात्रलक्षणं मेरुतन्त्रे—द्रात्रिशत्पलमातेन
 निर्मितं ताम्रपात्रकम् । तण्डुलैस्तत्समापूर्य सहिरण्यं सच्चिदम् । पूर्णपात्र दानमाहः-
 कात्यायन—ब्रह्मणेदक्षिणा देया यायत्र परिकीर्तिता । कर्मन्तेऽनुच्यमानायां पूर्णपात्रादिका
 भवेत् । विदध्याध्वौत्रमन्यश्चेदक्षिणार्धं हरोभवेत् । स्वयंचेदुभयं कुर्यादन्यस्मै प्रतिपादयेत् ।
 मूर्खं ब्राह्मणाय दाननिषेधः—अहमस्मिं ददानीति एवमाभाष्य दीयते । नैतानपृष्ट्वा
 ददतः पात्रेऽपिफलमस्तिहि । दूरस्थानपिद्वाभ्यां च प्रदायमन साधनम् । इतरेभ्यस्ततोदया
 दैषदान विधिस्मृतः । सन्निकृष्ट मधीयानं ब्राह्मणं यो व्यति क्रमेत् । यद्दति तमुत्सृज्य
 ततः स्तेयेन युज्यते ॥ यस्यत्वेकगृहे मूर्खो दूरस्थश्च गुणान्वितः । गुणान्विताय दातव्यं-
 नास्ति मूर्खं व्यतिक्रमः । ब्राह्मणाति क्रमोनास्ति विप्रे वेदविभजिते । ततः पूर्णाहुतिः—
 ततः पूर्णाहुतिं कृत्वा सर्वं तन्त्र समन्विता । गन्धपाल्यं वास्तवन्ते प्रदग्नेवासमी तथा ।
 स्त्रीनक्तः—अथपर्णाहुतिं दद्यान्धपुष्प फलान्विताम् । साक्षतामूर्ध्वकायश्च समपाच्छकदि-
 मुखः । गोभिल गृह्ये—पर्णाहुतिं च मूर्धानं दिव इत्यभिपातयेत् । तडीष—प्रतन्त्रे
 निवाहे च शालायां यौल कर्मणि । गभीधानादि संस्कारे पूर्णाहुतिं न कारयेत् ॥ पूर्णाहुत्यन्तरं
 अग्नी अविच्छिन्नांघृतधारामाचरन्ति—ततो होमानशिष्टेन घृतेनापूर्यनैशुपम् । निधाय घृत्वं

संशामिन्नुपेणाधोमुखेनताम् । सद्यर्भया समाच्छाद्य मूलेना जलिनोत्थित । चीपडन्नेन
 शुद्धियादारां जपरामन्विताम् । वेचित--ॐ यसुभ्य स्वाहा, इति मन्त्रेण वसोधारा माच-
 रन्ति ॥ श्यायुष करणं गृह्यमभहे—ततः।नामिकया कुर्यां द्विन्दुं सप्रतभस्मना । ह्यम-
 थोल्लाटे च श्यायुषेति पदै क्रमात् । होमार्गं प्रमाणं ब्रह्मपुराणे—क्षुत्तुडभ्यां क्रोध संयुक्ता
 होन मन्त्रो जुहोतिथ । अग्रवृद्धे सधूमवासांस्यस्या दन्य जन्मनि । स्वल्पेरुद्धेरास्कुलिगे
 नामानसं भयानके । श्राद्रकाष्टैश्च सम्पूरां फुत्कारवतिपायके । कृष्णाचिपि सद्गुण्ये तथा-
 ल्लिहति मेदिनीम् । श्राहुतिर्जुहुयाद्यस्तु तस्य नाशो भनधुवम् । विशेषो प्रहयाग परि-
 भाषायां दृष्टव्यः ॥

॥ इति कुशकरिडका सूत्र व्याख्या ॥



॥ अथ होम पद्धतिः ॥

अथातोऽग्नि स्थापन पद्धतिसूत्रोक्तविधानेन वक्ष्ये—तत्रा
 दौकर्त्ता शुद्धेधौते वाससीपरिधाय, दीपंप्रज्वाल्यसंपूज्यचाचम्य
 प्राणायामं विधाय, पूर्वोक्त परिभाषानुसारेण स्थंडिलं कुंडंवा
 यथासंभवं विस्तारपूर्वकं प्रादेशमात्रादारभ्य चतुर्हस्तायतात्मकं
 होमानुसारंनिर्माय । वेद्याः पश्चिमतः पूर्वाभिमुखःसनग्निं
 स्थापन कर्मसमारभेत् । तत्रादौ गणेशस्मृत्वा होमेशानभागे
 अष्टदल कमलोपरि वरुणपूजाविधिना कलशं संस्थाप्यसंपूज्यच ।
 तत्रपंचाशत्कुशनिर्मितं ब्रह्माणं दक्षिणाभिमुखं, ॐ ब्रह्मजज्ञान
 मिति मंत्रेण संस्थाप्य प्रतिष्ठाप्य संपूज्यच, होमसामग्रीं संपाद्य
 संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्या मुकगोत्रप्रवरोऽहं करिष्य
 माणामुक कर्मणिस्वशाखोक्त पद्धत्यानुसारेणाग्निस्थापन कर्म
 करिष्ये—तत्रादौत्रिभिः कुशैः स्थंडिलंकुण्डंवावारत्रयं परिसमुह्य

†-टि० अग्निगृहं—कृमिकीट पतंगाया भ्रमन्ति यत्तुधातले । तयां संरक्षणीया
 य कुर्यात्परि समूहनम् ॥

गोमयोदकेन त्रिरुपलिप्य, § ततः स्वादिरेण ग्वद्वाकृतिनास्फेनतद
 भावे सुवमूलेनवा, प्रागग्रा उदक्संस्थाः स्थंडिलप्रमाणा स्तिस्रो
 रेखांकृत्वा, अनामिकांगुष्ठाभ्यां यथोल्लिखिताभ्यो लेखाभ्यः पां
 सूनुद्धृत्येशानकोणे क्षिप्तवा*, मणिकाङ्गिस्तदभावे कमंडलु
 जलेनाभ्युक्ष्य, इतिपंचभूसंस्कारान्कृत्वा, पीठंपूजयेत्-पुष्पाक्षतैः-
 ॐ रत्नमंदिरायनमः, ॐ चतुर्द्वारमंडलायनमः, ॐ रत्नवेदिका-
 यैनमः, ॐ श्वेतछत्रायनमः, ॐ रत्नसिंहासनायनमः, ॐ धर्मा
 यनमः, ॐ ज्ञानायनमः, ॐ वैराग्यायनमः, ॐ ऐश्वर्यायनमः,
 ॐ अधर्मायनमः, ॐ अज्ञानायनमः, ॐ अवैराग्यायनमः, ॐ
 अनैश्वर्यायनमः, (गृहसूत्रातिरिक्तोयंविधिः) ततस्ताम्रादिपात्रे
 कर्मसाधनभूतं पात्रान्तरेणपिहितं लौकिकंस्मार्त्तं श्रौतंवाग्निं स्वा
 भिसुखं स्थायित्वा, अग्नि संस्कारंकुर्यात्—ॐ मयिगृह्णाम्यग्नेति
 मंत्रस्यावत्सारऋषिः ककुब्जन्दोऽग्निर्देवताग्निग्रहणे विनियोगः
 ॐ मयिगृह्णाम्यग्नेऽअग्निं ई० रायस्पोपाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्या
 य । मामुदेवताः सचन्ताम् ॥ इतिग्रहणम् ॥ ॐ गर्भइति विरूपा
 क्षऋषि रूणिक्वन्दोऽग्निर्देवता गर्भाधाने वि० ॐ गर्भोऽअस्यो
 पधीनां गर्भोऽव्वनस्पतीनां गर्भोऽविश्वस्य भूतस्याग्निर्गर्भोऽअपा
 मसि । ॐ विवस्वन्निति गृत्समद ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता
 पुंसवने वि० । ॐ विवस्वन्नादित्यैपते सोमपीथ स्तस्मिन्मत्स्यं
 अदस्मै नरोयर्चसे दधातन । यदाशीर्दा दम्पतीवाममश्नुतः । पुमा
 न्पुत्रो जायते विन्दते ध्रस्वधाद्विशवाहा रपऽअधते गृहे । ॐ
 कस्त्वा सत्येति धामदेव ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवतासीमन्नोन्न-
 यने वि० । ॐ कस्त्वासत्यो भदानाम ई० द्विष्टोमत्सदंधसः ।

§ टि० पुरा इन्द्रेण वज्रं ण हतो वृत्रोमहासुर । देवी भागवत-मधुञ्जय भयोर्मेद
 संयोगान्मदिर्नास्मृता । तन्मदमा गधजती तदर्थं मुरलेपनम् ॥

* टि० घ्राकाश गामिनो येच राक्षसा यमपातवा । तेभ्य संरक्षणाधाय उपहतं
 चैव कायंत् ॥

हृदाचि दारुजेवसुः ॥ ३० अजीजन इति अरुणत्रसु दस्युर्ऋषिरनु-
 पृच्छन्दोऽग्निर्देवता जातकर्मणि विनियोगः ॥ ३० अजीजनोहि
 पवमानस्य सूर्य विधारेशकमनापयः । गोर्जरग्यार ई० ह्रमाणा
 पुरन्ध्या ॥ ३० यदापीति भृगुर्ऋषिस्त्रिपृच्छन्दोऽग्निर्देवता नाम
 करणे विनियोगः । ३० यदापिपेप मातरं पुत्रः प्रमुदितोधयन् ।
 एतत्तदग्नेऽन्नृणोभवाम्यहं तौपितरौमया संपृचस्थसम्माभद्रेण
 पृङ्क्त विपृचस्थ विमा पाप्मना पृङ्क्तः ॥ ३० पपेति तापसऋषि
 निचृत्साम्नी पंक्तिश्छन्दो लिंगोक्तादेवता निष्क्रमणो विनियोगः ।
 ३० पूयापंचाक्षरेण पंचदिशउदजयत्ता ऽ उज्जेप ई० सवितापउच्च
 रेणषड्भृनुदजयत्ता नुज्जेपमरुतःसप्ताक्षरेणगायत्री मुदजयत्तामुज्जे
 पम् । ३० अन्नपत इतिनाभानेदिष्ट ऋषिर्वृहतीछन्दोऽग्निर्देवताऽन्नप्रा
 शनेविनियोगः ३० अन्नपतेऽन्नस्यनोदेहयनमीवस्यशुष्मिणः । प्रप्रदानारं
 तारिषऽऊर्ज्जन्नोधेहि द्विपदेचतुष्पदे ॥ ३० अग्नइति भरद्वाजऋषि-
 र्गायत्रीन्दोऽग्निर्देवता चौलकरणे वि० । ३० अग्नऽआयाहि
 वीतयेगृणानो हव्यदातये । निहोतासत्तिसचहिर्षि । ३० भद्रं कर्णे-
 भिरिति गौतमऋषि स्त्रिपृच्छन्दोऽग्निर्देवता कर्णवेधेविनियोगः ।
 ३० भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्जजत्राः । स्थिरैरङ्गै-
 स्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यसे महिदेवहितं यदायुः । ३० अग्निरेकाक्षरे-
 णेति तापसऋषि निचृदार्षागायत्रीछन्दो लिंगोक्तादेवताः
 उपनयने वि० ३० अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजत्त मुज्जेपमश्विनौ ।
 द्व्यक्षरेण द्विपदोमनुष्या नुदजयतांता नुज्जेपंविष्णुस्यक्षरेण
 त्रींल्लोका नुदजयत्ता नुज्जेप ई० सोमश्चतुरक्षरेण चतुष्पदे
 पशुनुदजयत्ता नुज्जेपम् । ३० अश्वस्येति गर्गऋषि रनुपृच्छन्दोऽ-
 ग्निर्देवता वेदारम्भे विनियोगः । ३० अश्वस्यान्नस्यसम्पनिः
 पुत्राणामभिसंपदे । आयुर्वलश्रिया ददन्त्वासानऽपहिरुन्धति । ३०
 व्रतमिति आगिरसऋषि रनुपृच्छन्दोऽग्निर्देवता समावर्त्तने विनि-
 योगः । ३० व्रतं कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्धजो ब्रवन्स्पति र्यजियः ।
 दैवीन्धियं मनामहेसुमृडी कामभिष्टये वचोधायज्जवाहस ई०

सुतीर्थानोऽअसद्वसे । येदेवामनोजाता मनोयुजोदक्ष कृतवस्तेनो
वन्तुतेनः पान्तुतेभ्यः । ३० गावमितिपुरुमीढा अजमीढाऋषि
र्गायत्रीछन्दोः गावोदेवता गोदाने विनियोगः । ३० गावऽउपां-
वतावतम्मही यज्ञस्यरप्सुदा । उभाकर्णा हिरण्यया । ३० भग-
इति वसिष्ठऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता परिणये विनियोगः ।
३० भगएवभगवां ३॥ अस्तुदेवा स्तेनवयं भगवन्तः स्याम ॥
तत्त्वाभगसर्वइज्जो हवीतिसनोभग पुरएतामवेह । ३० ऋतावा-
नमिति प्रजापतिऋषिः पंक्तिश्छन्दोऽग्निर्देवता चतुर्थीकरणे वि०
३० ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिष्मति असृष्ट्वर्ममीमहे ।
'आवाहनम्—ॐ उपयाम गृहीतोसीति वैश्वानसऋषिः सर्वेषां
मंत्राणांजगती भुरिगार्षी गायत्रीछन्दांसि सोमाग्नीदेवते
अग्न्यावाहने विनियोगः । ॐ उपायमगृहीतोस्यग्नयेत्वा वर्चसं
एपतेयोनि रग्नयेत्यावर्चसेऽ अग्नेवर्चस्यन्वर्चस्वांस्त्वं देवेष्वसिं
वर्चस्वानहं मनुष्येषुभूयासम् ॥ ३० अग्निदृतमिति भारद्वाज
ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता स्थापने विनियोगः । ॐ अग्नि-
दृतंपुरोदधे हव्यवाह सुपवृवे । देवां ३॥ आसादयादिह, इति
संस्कार्यमग्निं वेद्यांकुंडे स्थापयेत्, तत्पात्रेऽक्षत पुष्पाणिक्षिप्त्वा,
३० भूर्भुवः स्वः भो अग्नेइहागच्छेहतिष्ठ इत्यावाह्य—३० एनन्ते
देव मवितर्यज्ञं प्राहूर्वृहस्पतये ब्रह्मणे । तेनयज्ञमवतेन यज्ञपतिं
तेनमामव । मनोजूतिर्जुपता माज्यस्य वृहस्पति र्यज्ञमिमंत्वनो
त्वरिष्ठयज्ञं दे० समिमंदधातु । विश्वेदेवासऽ इहमादयन्तामोंप्रतिष्ठ
इति प्रतिष्ठाप्य, तत अग्नेरुत्तरत आचार्य ब्रह्मणो धरणार्थं मांस-
नद्वयं कुशैः कल्पयित्वा तत्रादौ आचार्य माह्वयवृह्यजादौ पांथी
चमनीयविष्टरमधुमर्कं पूर्वकमाचार्य ब्रह्माणं च सम्पूज्य, वरण-
सामग्रीं संपूज्य हस्तेधृत्वा संकल्पं कुर्यात् अयेत्यादि संकीर्त्या
मुकोऽहं करिष्यमाणो ऽमुकहोम कर्मणि एभिर्वरण द्रव्यैरमुक
शर्माणं ब्राह्मणमाचार्य कर्मकर्तृत्वां वृणे, वरणद्रव्यं तस्मैदत्त्वां
वृतोऽस्मि, प्रार्थयेत्—आचार्यस्तुयथास्वर्गं शक्रादीनां वृहस्पतिः ॥

तथा. त्वंममयज्ञेस्मिन्नाचार्यो भवसुव्रत । कर्मकुरु करवणीति.
 प्रत्युक्तिः, ततो ब्रह्माणमपि सम्पूज्यासनेऽपवेशयित्वा संकल्पः—
 अद्येत्यादि० अमुकोऽहं करिष्यमाणा मुकटोमकर्मणि कृताकृतावे-
 क्षणादि ब्रह्मकर्मकर्तुं मेभिर्वरण द्रव्यैरमुक शर्माणं ब्राह्मणं.
 ब्रह्मत्येनत्वां वृणे, वृतोऽस्मि । प्रार्थयेत्—यथा चतुर्मुखो ब्रह्मासर्व
 वेदधरोविभुः । तथात्वं ममयज्ञेऽस्मि न्ब्रह्माभव द्विजोत्तम, कर्म
 कुरु करवारणीति प्रत्युक्तिः । इति चरणं कृत्वाऽग्नेर्दक्षिणतो
 ब्रह्मोपवेशनार्थं चारणपीठं कुशैराह्लाद्य, अग्नेः प्रदक्षिणक्रमेण,
 वृत्तं ब्रह्माणं तत्रोपवेशयित्वा, आचार्यासनमग्नेरुत्तरतः पश्चिम-
 दिशि कुशैराह्लाद्य तत्राचार्यं सुपविशेत् । ततोऽग्नेरुत्तरः पश्चि-
 मभागे एकासनं पूर्वभागे द्वितीयासनं प्रागग्रैस्त्रिभिस्त्रिभिः कुशैः-
 कल्पयित्वा प्रणीतापात्रं दक्षिण हस्तेनादाय सव्यहस्ते धृत्वा,
 दक्षिण हस्तस्थ पात्रजलेनापूर्य कुशैराह्लाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य
 पश्चिमासने निधायदक्षिण हस्तेनालभ्य पूर्वासने निदध्यात् ।
 ततः पूर्वादिदिक्षु प्रागग्रैरुद गग्रैश्चकुशैः परिस्तरणं कुर्यात्^१
 दक्षिणहस्तेकुशानादाय आग्नेयादीशानान्तं प्रागग्रैरुद गग्रैश्च,
 ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं मुदगग्रैः, परचादक्षिणत उत्तरपर्यन्तोदगग्रैः
 कुशैराह्लाद्य, ततोर्ध्वन्तिवस्तुनि अंगुलत्रयविस्तारेणा सादनीयानि,
 पश्चिमतउत्तरस्यां—पवित्रछेदनानित्रीणि कुशतरुणानि, द्वेपवित्रे-
 साग्रे.अनन्तर्गभे, प्रोक्षणीपात्रं, आज्यस्थाली, चरुचेत् चरुस्थाली,
 सम्मार्जनकुशाः पंच, उपयमनकुशास्त्रिप्रभृतयः त्रयोदशपर्यन्ता
 ग्राह्याः समिधस्त्रिभ्यः पालाशयः प्रादेशमाज्यः सुवः गन्धमाज्यम्,
 चरुचेद्द्वीहितंडुलाः, पूर्णपात्रं षट्पंचाशदधिकं मुष्टिशतद्वय
 परिमितं, वाबहुभोक्तुः पुरुषस्याहार परिमितंवा, कर्मोपयोगिनी

* द्वि. स्मृत्यन्तरे— यज्ञवास्तुनि मृष्टौच. स्तम्भेदधं यदोस्तथा दर्भसंख्यान-
 विहितं विष्टग स्तरणेषुच. ॥ अग्निग्रहो—बन्धितस्तु परित्यज्य द्वादशांगुल-
 तोवृद्धिः परिस्तरणं दर्भास्तु षोडशा द्वादशापिच ॥

दक्षिणा, वरोवा,, गोब्राह्मणस्यवरः एतानिवस्तृनि अग्नेः प
 त्पाक्संस्थानि स्थापयेत् । तत्रपात्राणि प्राग्विलान्युद गय
 स्थापयेत् । तत्रादौ त्रिभिर्दमै द्वैपवित्रे प्रादेशमात्रे प्रच्छि
 प्रोक्षणीपात्रं प्रणीता सन्निधौ संस्थाप्य, तत्रपात्रान्तरेण वारि
 पूर्य पवित्राभ्यामुत्पूय पवित्रे प्रोक्षणीषु निधाय, दक्षिणहस्ते
 प्रोक्षणीपात्रमुत्थाप्य सव्येहस्तेधृत्वा, उत्तानेन दक्षिणहस्ते
 मध्यमानामिकांगुल्यो मध्यपर्वाभ्यां तज्जलमुच्छ्राल्य पवित्राभ
 प्रणीतोदकेनप्रोक्षेदितिप्रोक्षणीं संस्कृत्य, ततः पवित्राभ्यां प्रय
 जनवन्ति आज्यस्थाल्यादीनि पूर्णपात्र पर्यन्तान्यासादित वस्तु
 प्रोक्षण्युदकेनैकैकशः संप्रोक्ष्य, प्रोक्षणीपात्र मसंचरे प्रणीताग्न्य
 रंतरालेस्थापयेत्, तत आज्यस्थाल्यामाज्यांक्षिप्त्वा ऽग्नावारोपयेत्
 तत्राज्यं ब्रह्माधिश्चयति, चरुश्चेच्चरुस्थाल्यां चरुधृततंडुलदुग्धा
 दिकं प्रक्षिप्य, आज्यस्योत्तरतः स्वयमा चार्योवा प्रावारोपयेत्
 अर्धध्रिते चरावाज्येच ज्वलदुल्मुकंच ब्रह्माचार्यौ आज्यचर्वोरुप
 रितः समंताद्भ्रामयित्वातदुल्मुकम्बन्धौ प्रक्षिपेत्, दक्षिणहस्तेन
 परिभाषोक्त प्रकारेण शंखमुद्रया सुवमादायाधो मुखं प्रांचं प्रतप्य
 सव्येपाणौकृत्वा पंचभिः सम्मार्जन कुशाग्रै मूलतोऽप्रपर्यन्तं कुश-
 मूलैरधस्ताद्भागे अग्रमारभ्य मूलपर्यन्तं सम्मार्ज्यं, तान्कुशानग्नौ
 प्रक्षिपेत्, ततः पवित्राभ्यां प्रणीतोदकेन सुवमभ्युक्ष्यपुनः प्रतप्य
 हस्ताभ्यां सम्मार्ज्यं स्वदक्षिणभागे कुशोपरि निदध्यात् । आज्य
 मग्निन उत्तार्योत्तरतः स्थापयित्वा, अग्नेः पश्चा दानयेत् ।
 (चरुसत्वे प्रथममाज्यं मुत्थाप्य चरोः पूर्वेणनीत्वा ऽग्नेरुत्तरतः
 स्थापयित्वा, चरुमुत्थाप्या ज्यस्यपश्चिमतोनीत्वा, आज्यस्योत्तर
 तः स्थापयित्वा ऽऽज्यमग्नेः पश्चादानीय चरुचानीय, आज्यस्यो
 त्तरतो निदध्यात्) ततो ऽ गुष्ठानामिकाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा ऽऽ
 ज्यमुत्पूय, अबेक्ष्यन्न, अपद्रव्य निरसनं कृत्वा पुनः पवित्राभ्यां
 प्रोक्षण्युदकमुत्पूय तत्रैवपवित्रे निदध्यात् ॥ उपयमन कुशान्दक्षि-
 णहस्तेनादाय वाम हस्तेकृत्वा, उत्तिष्ठन्धृताक्तास्त्रिभ्यः समिधः,

आदाय तृष्णीमग्नौ प्रक्षिपेद्धानच्च-३० समिधाग्निमिनिमंत्राणां
 आंगिरस ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता समिद्धोमे विनियोगः
 ३० समिधाग्निन्दु वस्यत घृतैर्वांधयनानिधिम, आस्मिन्हव्याजु-
 ह्नोतन ।१। सुसमिद्धाय शोचिपे घृतंतीघ्रं जुहोतन । अग्नये
 जातवेदसे ।२। नन्था समिद्धिरंगिरोघृतेन वर्द्धयामसि । वृहच्छ्रो
 ष्व यविप्र्य ।३। उपत्वाग्ने हविष्मनीर्भृताचीर्गन्तुहर्ष्यतः । जुशस्व
 समिधोमम-स्वाहा ।४। नतोपविश्य प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रेण
 दक्षिणशुलकगृहीतेन, ईशानादि उत्तर पर्यन्त मग्निं संप्रोक्ष्य,
 पवित्रे प्रणीतायां निदध्यात् । ॐ आज्य होमे संस्त्रवधारणार्थं
 प्रोक्षणीपात्रं प्रणीताग्नयोर्मध्ये निदध्यात्- ततोयजमानः संकल्प
 पर्वकं द्रव्यदेवता मिध्यानं कुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोह-
 ममुक होमकर्मणि, प्रजापति, इन्द्रं, अग्निं, सोमं, अग्निं, वायुं,
 सूर्यं, अग्नीवरुणौ, अग्नीवरुणौ, अग्निं, वरुणं, सवितारं, विष्णुं,
 विस्वान्मन्नस्वर्कान्, वरुणमदिनिं, अग्निप्रजापतिं, अग्निस्विष्ट
 कृतंच, आज्येनाहंयक्ष्ये, एतद्धोमद्रव्यं तत्तद्देवताभ्यो मयापरित्यक्तं
 ३० तत्सद्यथा दैवतमस्तु नममेत्येवं त्यागः कार्यः ॥ एतन्तेति
 पुनः प्रतिष्ठाप्य अमुकनामाग्ने सुप्रतिष्ठितोवरदोभव ॥ ततोऽग्निं
 ध्यायेत्—३० तद्देवाग्निस्तदा दित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः । तद्देव
 शुक्रं तद्ब्रह्मताऽआपः सप्रजापतिः । एषोहदेवः प्रदिशोनुसर्वाः
 पूर्वोहजातःसऽउगर्भेऽअन्तः । सऽएवजातः सजनिष्यमाणःप्रत्यङ्
 जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः । ३० अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं
 हुताशनम् । सुवर्णवर्णं ममलं समिद्धं सर्वतोमुखम् ॥ सर्वतःपाणि
 पादरच सर्वतोक्षिशिरोमुखः । विश्वरूपोमहानग्निः प्रणीतः सर्व

* टि० पयुं ज्याग्निं प्रणीतासु निक्षिपे तत्पवित्रकम् । इति परशुराम कारिकायां ॥

+ टि० प्रोक्षणीपुन्यजेच्छेष संस्त्रवन्तु खुवाहुतेः । हस्ताहुते हविर्यस्य संतत्तस्य
 प्रकल्पयेत् ॥ एतच्चाज्यहोमं आज्यातिरिक्त होम द्रव्येतु पात्रान्तरे शेष
 प्रक्षेपः । यथा चतुर्थी कर्मादि विषयेषु ॥

कर्मसु । इतिध्यात्वा, परिभाषोक्त प्रमाणेन कार्यपरत्वेन—३०
 अमुक नामाग्नयेनमः, पाद्यादिभिः संपूज्य, रेखाः पूजयेत्—
 पूर्वरेखायाम्—३० ब्राह्मणेनमः, मध्यरेखायाम्—३० विष्णवेनमः । तृती
 यरेखायां—३० शिवायनमः ॥ इतिनाममंत्रैः संपूज्य, अग्नि जिह्वा
 पूजनं कुर्यात्—३० कराल्यैनमः । ३० धूमिन्यैनमः । ३० श्वेतायै-
 नमः । ३० लोहितायैनमः । ३० महालोहितायैनमः ॥ ३० सुवर्णा
 यैनमः । ३० पद्मरागायैनमः । इतिसप्तजिह्वाः संपूज्य, ३० ह्रीं श्रीं
 वन्ति जायायैदेव्यैस्वाहा इति मंत्रेण पाद्यादिभिः स्वाहा शक्ति
 च संपूज्य ॥ होम कुण्डस्य चतुर्दिक्षु गोमय प्रतिमासु चतुर्वेदान्पू
 जयेत्—पूर्वे—३० अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्यदेव मृत्विजम् । होतारं
 रत्नधातमम् ॥ ३० ऋग्वेदायनमः, इतिपाद्यादिभिः संपूज्यदक्षि-
 णे—३० इपेत्वोज्जंत्वा व्यायवस्थदेवोवः सविता प्रार्पयतुः श्रेष्ठत
 माय कर्मणऽआप्यायध्वमग्ध्याऽ इन्द्रायभागं प्रजावतीरनमीवा
 ऽ अयक्ष्मा मावस्तेन ऽ ईशान माघश ई० सोध्रुवा ऽ अस्मिन्गोपनी
 स्यातवहीर्यजमानस्य पशुन्पाहि । ३० यजुर्वेदायनमः पूजयेत् ॥
 पश्चिमे—३० अग्निऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदानये । निहोता
 सत्सिवाहिपि ॥ ३० सामवेदायनमः, पूजयेत् । उत्तरे—३० शन्नो
 देवी रभिष्टयऽआणेभवन्तु पीतये शंयोरभिश्चवन्तुनः ॥ ३० अथ-
 र्ववेदायनमः संपूज्य ॥ ततो दक्षिणं जान्वाच्य भूमौनिपातयित्वा
 ब्रह्मणान्वारब्धः (दक्षिणेनवाहौ कुशेन दक्षिणेनहस्तेन स्पृष्टः)
 आधारावाज्य भागौच समिद्धतमेग्नौ जुहुयात् ॥ ३० प्रजापतये
 स्वाहा, मनसा प्रजापतिं ध्यात्वा । इदं प्रजापतयेनमम ॥ (हुतशेष
 घृतं प्रणीताग्नयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रे क्षिपेदिति गदाधरः) एव मुत्त
 रत्र सर्वत्रबोधयम्, ३० इंद्रायस्वाहा—इदमिन्द्रायनमम ॥ ३०
 अग्नयेस्वाहा—इदमग्नयेनमम । ३० सोमायस्वाहा—इदं सोमाय
 नमम ॥ इति हुत्वा ततः—(ब्रह्मणाऽनन्वारब्धः प्रकृतहोमविधाय
 ब्रह्मणान्वारब्धो भूरादिहोमंकुर्यात्) ३० भूरादिव्याहृतीनां
 प्रजापति ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्ण्ण्वांसि अग्निवायुसूर्यादेवताः

प्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये नमम । ॐ
 भुवः स्वाहा इदं वायवे नमम । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय नमम,
 ॐ त्वन्नो अग्ने इति वामदेव ऋषिन्निष्टुष्टुन्दः अग्नी वरुणौ
 देवते प्रायश्चित्त होमे विनियोगः—ॐ त्वन्नोऽ अग्ने वरुणस्य
 विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्टाः । यजिष्ठो वन्द्दितमः शोशु-
 चानो विश्वादेपा ॐ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणा-
 भ्यां नमम । ॐ सत्वन्नोऽअग्ने इति वामदेव ऋषिन्निष्टुष्टुन्दः
 अग्नी वरुणौ देवते प्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ॐ सत्वन्नोऽ
 अग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्टोऽअस्याऽ उपसोव्युष्टौ । अवयद्वनो
 व्वरुण ई० रराणोव्वीहि मृडीक ई० सुह्योनऽपधि—स्वाहा—
 इदमग्नीवरुणाभ्यां नमम । ॐ अथाश्वाग्ने इति प्रजापतिर्ऋषि-
 विराट्छन्दोऽअग्निर्देवता प्रायश्चित्त होमे विनियोगः ॥ ॐ
 अथाश्वाग्नेऽस्य नभिशस्ति पाश्च सत्यमित्त्वमयाऽअसि । आयानो
 यजं बहास्पयानो धेहिभेपज ॐ स्वाहा । इदमग्नये नमम ॥ ॐ
 येते शतमिति शुनः शेफ ऋषिन्निष्टुष्टुन्दो व्वरुणः सविता वि-
 ण्णुर्विश्वे देवा मरुतः स्वर्काश्च देवता प्रायश्चित्त होमे विनि-
 योगः—ॐ येतेशतं व्वरुणं येसहस्रं यजियाः पाशाः विवताम-
 हान्तः तेभिर्नोऽअथ सवितोत विवण्णुर्विश्वेसुचन्तुमरुतः स्वर्काः
 स्वाहा—इदं व्वरुणाय सवित्रे विण्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः
 स्वर्केभ्यश्च नमम ॥ ॐ उदुत्तममिति शुनः शेफ ऋषिन्निष्टु-
 ष्टुन्दो व्वरुणो देवता प्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ॐ उदु-
 त्तमं व्वरुण पाश मस्मदवाधमं विमध्यम ॐ अथाय । अथाव्व-
 यमादित्य व्रते तवानागसोऽ अदितये स्याम—स्वाहा—इदं व्वरु-
 णायादित्याय नमम ॥—मनसा—ॐ प्रजापतये स्वाहा—इदं
 प्रजापतये नमम । ॐ अग्नये स्विष्टकृते—स्वाहा—इदमग्नये
 स्विष्टकृते नमम । (आज्यातिरिक्त होमद्रव्य सत्वे, स्विष्टकृद्धो-
 मो महा व्याहृत्यादि होमात्प्रागेव कर्त्तव्यस्ततो व्याहृत्यादि
 प्राजापत्यान्तश्च) ततो वहिर्होमः—ॐ स्वाहा—इदं प्रजापतये

नममः । ततः संख्यव प्राशनमवघ्राणं च कृत्वा द्विराचम्य,
 ब्रह्मणे पूर्णपात्र दानम्—अद्येत्यादि मयाकारितस्य ब्राह्मणद्वारा
 अमुक होम कर्मणः सांगफल प्राप्तये अपूर्ण पूरणार्थं च इदंसद्रव्यं
 पूर्णपात्रं ब्रह्मणेतुभ्य महंसम्प्रददे—ॐ तत्सन्नमस ॥ दानवाक्यं
 पठेत्—ॐ अकन्कर्म कर्मकृतः सह्याचा मयोभुवा । देवेभ्यः
 कर्मकृत्वाऽस्तमेत सचाभुवः । ततः सुक्सुवधोः सम्मार्जनं पूर्वाक्त
 प्रकारेणकृत्वा—ततो होमावशिष्टं घृतं सुवेणद्वादशवारं गृहीत्वा
 घृतपूर्णयासुचा पूर्णाहुतिं जुहुयात् । तदभावेसुवेणैव पूर्णाहुतिं जुहु-
 यात्—ततो ब्रह्मणा आज्यम्याल्याः सुवेण सुचिद्वादशवारमाज्यं
 देयम् । तिष्ठन्नाचार्यो यजमानोवा अन्वारम्भ होमं कुर्यात् ॥
 ततः सुचंसुववा घृताभिधारितनारिकेल पूगीफलान्यतम फल-
 पूरितंकृत्वा त्र्यक्षमाणमन्त्रेण गन्धात्तनादिभिस्सम्पूजयेत्—ॐ
 सुचश्चमं त्रमसानश्चमे त्रायव्यानिचमे द्रोणकलशश्चमे प्रावाणश्च-
 मे धिषवणेचमे पूतभृच्चमऽआधवनीयश्चमे वेदिश्चमे वहिश्चमे
 ऽ वभृथश्चमे स्वगाकारश्चमे यजेनकल्पन्ताम् ॥ इति सम्पूज्य—
 सङ्कल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकोटं अमुककाम
 नयामुकहोमकर्मणः साङ्गफलाप्तये न्यूनातिरिक्तदोष परिहारार्थं
 श्रीपरमेश्वर यज्ञपुरुषप्रीत्यर्थं च मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिहोमकरि-
 ल्ये ॥ ३० मूर्द्धानन्दिव इति भारद्वाजऋषिन्त्रिपटुप्लुन्दो महा
 वैश्वानरोदेवता मृडाग्नौ पूर्णाहुति होमेविनियोगः—३० मूर्द्धानं-
 दिवो ऽ अरिनिं पृथिव्यावैश्वानरमृत ऽ आज्ञातमग्निम् । कवि
 र्द० सम्राजमतिथिंजनाना मासत्रापात्रं जनयन्तदेवाः स्वाहा—
 ३० पूर्णादर्वीति हिरण्यगर्भऋषि त्रिपटुप्लुन्दो ऽ ग्निर्देवता
 मृडाग्नौ पूर्णाहुति होमेविनियोगः—३० पूर्णादर्विपरापत सुपू-
 र्णापुनरापत वस्नेवविक्रीणावहा ऽ इपमूर्ज र्द० शतक्रतोस्वाहा—
 इतिश्रीफलंघ्नौ प्रक्षिप्त्वावक्ष्यमाणमन्त्रै रविच्छिन्न घृतधाराभि-
 र्वन्दिप्रार्थयेत्— सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्यकाम्यम् । सनि-
 म्भेधामघासिप ॐ स्वाहा । १। ३० याम्भेधांदैवगणाः पितरश्चो-

पासते । तयामामग्नेधया ऽग्नेमेधाविनं कुरुस्वाहा । २। ३०
 मेधाम्मेवरूपो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः । मेधामिन्द्रश्चव्यायु
 श्चमेधान्धाताददातुमेस्वाहा । २। ततोवायव्यकोणेगत्वा अग्ने
 रुत्तराङ्गपूजनं कुर्यात्—३० अग्नेनघेत्यस्यअगस्त्यऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो
 ऽग्निर्देवता, उत्तराङ्गपूजने विनियोगः ॥ ३० अग्नेनयसुपथाराये
 ऽ अस्मान्विश्वानिदेव व्युनानिविद्वान् । युयोध्यस्मञ्जुहुराण
 मेनो भृगिष्ठान्तेनमऽउक्तिविधेम । इनिगन्धादिभीः सम्पूज्यः
 प्रार्थयेत्—श्राद्धामेधांगशः प्रजां विद्यांपुष्टिवलंश्रियम् । आयुष्यं
 द्रव्यमारोग्यं देहिमेह्वयवाहन ॥ ततः सुवहस्तः प्रदक्षिणाचतु-
 ष्ठयंकुर्यात्—३० यानिकानिचपापानि० । मयाजन्मसहस्रेषु यो-
 जितः पापसञ्चयः । प्रदक्षिणपदेनैव विलयंयात्त्वसंशयम् ॥ ततो
 यजमानस्याग्न्यालम्भनम्—३० तनूपाइत्यस्यावत्सारऋषिस्त्रिष्टु-
 प्छन्दो ऽग्निर्देवता अग्न्यालम्भने विनियोगः—३० तनूपा ऽ
 अग्ने ऽ सितन्वंमेपाहि ॐ आयुर्दाऽअग्नेस्यायुर्मेदेहि ३० वर्चादाऽ
 अग्ने सिवर्चामेदेहि । ३० अग्नेयन्मेतन्वा ऽ अनंतन्म ऽ आपृण
 ॐ मेधाम्मेदेवः सविताआधातु । ॐ मेधाम्मेदेवीसरस्वती ऽ
 आदधातु । ३० मेधामरिवनौदेवा वाधत्ताम्पुष्करस्रजौ । इति
 मन्त्रैरग्नौपाणिप्रतपनपूर्वकं सुग्वंप्रोच्छयेत् । ततो ऽ ज्ञानिस्पृशेत्—
 ३० अङ्गानिचम ऽ आप्यायताम् । सर्वाङ्गान्युपस्पृशेत् । ॐ वाक्
 चम ऽ आप्यायताम्—मुखे ॥ ॐ प्राणचश्चम, आप्यायताम्—
 नासिकायाम् । ३० चक्षुश्चम ऽ आप्यायताम्—नेत्रयोः । ३० श्रो-
 त्रं चम ऽ आप्यायताम् । कर्णयोः । ॐ यशोवलयं चम ऽ आप्याय-
 ताम् । बाह्वोः । ३० सुमित्रियान इतिदध्यङ्गुलाधवर्णऋषि रापो-
 देवता प्रणीताद्भिः शिरः प्रोक्षणे विनियोगः—३० सुमित्रियान
 ऽ आप ऽ औपधयः सन्तु ॥ इतिसपवित्राभ्यां हस्ताभ्यां प्रणी-
 ताजलेनशिरःसम्प्रोक्ष्य ॥ ३० दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोष्मानद्वे-
 ष्टियञ्चवयं द्विष्मः इति प्रणीतापात्रमग्नेः परिचमेवा ईशानेन्युञ्जी
 कुर्यात् ॥ ततः परिस्तरणादिकुशान्घृता क्तानुत्थाप्य—३० देवा-

गात्विति, अत्रिऋषिरुष्णिक्छन्दोमनसस्पतिर्देवतावर्हिर्होमे वि-
नियोगः ॥ ३० देवागातुविदोगांतु वित्वागातुमितमनसस्पत ।
इमं देव यज्ञ ॐ स्वाहांवातेधाः । इति वन्दौप्रक्षिपेत् ॥ ततश्च
युषकरणम्—ततः सुवमूलेवृत्तंलिंपयित्वा तेनेशानकोण इस्ममा
हृत्य कांऽस्यपात्रेस्थापयित्वा तत्रगव्यमाज्यंक्षिप्त्वा ऽ नामिकया
एकीकृत्यतेनैवधारयेच्च—३० त्र्यायुपमितिनारायणऋषि रुष्णिक्
छन्दः शिवोदेवता त्र्यायुपकरणे विनियोगः—३० त्र्यायुषंजम-
दग्नेः—इतिललाटे । ३० करयपस्यत्र्यायुषंमितिग्रीवायाम् । ३०
यद्देवेषुत्र्यायुपमितिदक्षिणांशे । ३० तन्नोऽश्रुत्तुत्र्यायुपमितिहृदि
ततोहवनदशांशंदुग्धमिश्रितजलेन तन्मन्त्रैस्तर्पणं कृत्वा, तद्दशां-
शेनमार्जयेत् । तत आचार्यादिभ्यो दक्षिणांदद्यात् । ततः पूर्वोक्त
पद्धत्यनुसारेणाभिषेकादिकंकृत्वा शीर्वादंतवोभाभ्यां हस्ताभ्या
मक्षतपुष्पान्गृहीत्वा ऽ ग्नौप्रक्षिपेत् । ३० गच्छगच्छसुरश्रेष्ठ
स्वस्थानेपरमेश्वर । यत्रब्रह्मादयोदेवास्तत्रगच्छहुताशन । भोभो
अग्नेमहाशक्ते सर्वकर्मार्थसाधक । कर्मन्तरे ऽ पिसम्प्राप्ते सा-
न्निध्यंकुरुसादरम् ३० यान्तुदेवगणाःसर्वे पूजामादायमामिकाम् ।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनायच । इत्यग्निं विसर्जयित्वा ब्राह्म-
णांश्चभोजयेत् ॥

॥ इति कुशकण्डिका पद्धति ॥



॥ अथ ग्रहयाग परिभाषा ॥

अथ ग्रहयाग परिभाषापद्य-तयाचशोनक — ग्रहशान्ति प्रवक्षामि शौनकोऽहद्विजम
नाम् । पुण्यहनि शुभवारे कुर्याद्वाथ निजन्मसु । अथने विपुर्वैचैव रामस्यापरागयो ॥ ग्रहाणां
मुप्रवेष्टाना मतांशाति समाचरेत् । आदी विनायक पूज्यग्रहाश्चैव विधानत । कर्मणा सिद्धिमा
प्नोतिश्रेयश्चाप्नोत्यनुत्तमम् । कर्मतत्प दीपिकायाम्—गर्भाधानादि सस्कार कर्मस्वपि
विशपत । कायारम्भेषु सर्वपुनर्ववेशमप्रवेशन । त्रिवाहाःसव यनेपुप्रतिष्ठादिपुक्मसु । निर्विघ्ना
र्थ मुनिश्रेष्ठतथोद्वेगाद्भवपुच । वश्यकर्माभिचारेषु तथैवोचाटनादिषु । नवग्रह मत्कृत्वा तत
काम्य समाचरेत् । मंडपदिग्विचारम्—ग्रहस्योत्तरपूर्वण मंडपकारयद्बुध । रुद्रायतनभू
मौवा चतुरस्रमुदकूटवम् । दशहस्तमथाष्टौवा हस्ताङ्कुर्यापयोदशान् । तस्यद्वाराणि चत्वारि
कर्त्तव्यानिविचक्ष्यौ । वेदीप्रमाणमात्स्य—ग्रहस्योत्तरप्रवण वितस्तिद्वयविस्तृताम् । वप्रद्वय
वृत्तवेदी वितस्त्युच्छयसम्मिताम् ॥ सस्थापनाय वेदानां चतुरस्रामुदङ्मुस्ताम् । स्नानेऽग्रेयम्—
त्रिवप्र चतुरस्रचस्थडिल हस्तमात्रकम् । ग्रहानाहमात्स्ये—स्य सीमस्तथाभौमो बुधजीव
मितार्कता । राहु वेतु रितिप्रोक्ता ग्रहलोप हिताहा । ग्रहाणादिकं स्थापनम्—मध्येतु
भास्वर विद्याल्लोहित दक्षिणेजतु । उत्तरेण गुरु विद्याद्बुधपूर्वोत्तरेणतु । पूर्वण भागव विद्यात्मा
म दक्षिण पूर्वणे । पश्चिमन शनिविद्याद्राहु पश्चिम दक्षिण । पश्चिमोत्तरत वेतु स्थापयेच्छु
कृतडले ॥ ग्रहाकाराग्याहस्कान्दे—भास्वरस्यत वृत्तस्यान्वद्रस्य चतुरस्रकम् ॥ कुजस्यतु
त्रिकोणस्या द्वाणाकार वधुस्यत । गुरोर्दोषचतष्कोण पचकोण सितस्यच । चापाकार शने
राहो शर्पकेतोध्यजाकृति । ग्रहाधिपेवानाह भास्करस्येश्वर त्रिया दुमाच शशिनस्तथा ।
स्कन्द भगारकस्यापि बुधस्य च तथा हरिम् ॥ ब्रह्माण च गुरोर्विद्याल्लुकस्यापिशचीपतिम् ॥
शनैश्वरस्यतु यम राहो काच तथैवत । केताश्च चत्र गुप्त व मवषा मधि देवता ।
ग्रहाणां प्रत्यधिपेवानाह—अग्निराप क्तिविष्णु रिद्रोद्रीचवैवता । प्रजापतिश्च सर्पा
श्च ब्रह्मा प्रयधिव्यता । विनायक तथा दुगा वायुमाकाशमैवच ॥ आवाहयेद्व्याहृतिमिस्त
धैवाशिव कुमारको ॥ अग्निदेव प्रत्यधिपेवानास्थापने विचार—अधिपेवा दक्षिण तो
नाम प्रत्यधि देवता । ग्रहवर्णा सस्मरद्रक्तादित्यमोकारेण समन्वित । सामशुको तथाश्वे
ती बुधजीवीच पिङ्गली । मन्दराहू तथा कृष्णी भूखवेतु गणविदु । ग्रहाणां प्रतिमानाह
याज्ञवल्क्य —ताम्रकात्स्फटिका द्रक्त चदनात्स्वशाक्राभौ । रचता द्यस सीसात्कास्यत्का
याग्रहा क्रमात् ॥ सर्वशैवापदे लेट्यागधैमडलेपुवा । स्त्राणि—ग्रह यर्षानिदेवानि वासासि
कुसुमानिच । धूपामोदोत्र सुरभिरु परिष्ठाद्वितानम् । शाभाथस्थापयेत्प्राज्ञ फल्पुपसमन्वितम् ।

ग्रहभद्रयमाहः— गुडौदनं रवेर्दद्यात्सोमाय घृतपायसम् । अंगारकाय संयाव बुधाय क्षीर षष्टि
कम् । दध्नीर्दनं च जीवाय शुक्राय च गुडौदनम् शनेश्चराय कृशार मञ्जामां च राहवे । चित्रौ-
दनं च नेतुभ्यः सर्वं भक्ष्यं रथाचयेत् । संस्कार भास्करे स्कान्देः—जन्म भूर्गोत्र
-मग्निश्च वर्षे स्थानं मुखानि च । यो ऽ ज्ञात्वा कुरुते शान्तिं प्रहास्तेना ऽ वमानिताः ॥
ग्रहाणां जन्मभूमयः—उत्पन्नोऽर्कं कल्मिषेषु यमुनायांचन्द्रमा । अंगारकस्त्ववन्त्या च
मगधयाहिमाशुजः । मेघवेपुगुरुजातः शुक्रोभोजकटे तथा । शनैश्चरस्तुसौराष्ट्रेराहुवैराट्टिनेपुरे ।
अन्तर्वैशातथावेतुः इत्येताग्रहभूमयः । संस्कारभास्करे ग्रहगोत्राणि —आदित्य काश्यपे
गोत्रे अजिजश्चंद्रमाभवेत् । भारद्वाजो भवेद्भूमस्तथाऽत्रेयश्चन्द्रजः । शक्रपूज्योऽङ्गिरागोत्रः
शुक्रोवैभार्गवस्तथा ॥ शनि काश्यपगोत्रोऽथराहु पैठीनसिस्तथा । नेतवोऽजैमिनियाश्च ग्रहगो-
त्राणिकीर्तयेत् । द्विग्विभागेनग्रहाणां मुखानि स्कान्देः—शुक्रार्कंप्राङ्मुखी जैवी गुरुसीम्या
बुधइमुखी । प्रत्यङ्मुखः शनिः सोमः शेषादक्षिणतोमुखा । आदित्याभिमुखा सर्वे साधिप्रत्यधि
देवता । स्थापनीया मुनिश्रेष्ठ नान्तरेण पराङ्मुखा प्राङ्मुखत्वम् । ऊर्ध्वदृष्टिम् । उदङ्मुख-
त्वम्—वामदृष्टित्वम् । दक्षिणमुखत्वम्—दक्षिणदृष्टित्वम् । अहाग्नयः संस्कारगणपतौ—
आदित्ये कपिलीनाम पिंगलः सौमञ्चयते । धूम्रवेतुस्तथाभीमं जाठरीऽग्निर्वृषेऽस्यत् । गुरौचैष
शिखीनाम शुक्रेभवति हाष्क । शनैश्चरेमहातेजाराहुकत्वोर्हुताशन । ततोऽयमामामिषेकार्थं
कलशस्थापनं स्कान्देः—प्रागुत्तरेण कलशं दध्यञ्चत विभूषितम् । पत्रपल्लवसंयुक्तं भूमौ
संस्थापयेद्बुध । वरुणेन विधानेन पूजयेत्सु प्रयत्नत । द्यौमार्थकुंडमानमाह स्कान्देः—
अतः परं प्रयत्नामि द्यौमार्थं बुटमानकम् । नवग्रहमखैकुंडं हस्तामात्रं समंभवेत् । चतुरस्रमधो-
द्वस्तं योनिवक्रं समंखलम् । चतुरंगुलविस्तारं मंखलास्तद्वदुच्छिन्ना । मानहीनदिकं पुंडमनेक
भबदंभवेत् । यस्मात्तस्मात्सुगुणं शांतिकुंडं विधीयते । लक्षद्वयोः कुंडमनम्—अस्माद्गण
गुणं प्रोक्तो लक्षद्वयोः स्वयंशुभा । आहुतीभिः प्रयत्नेन दक्षिणाभिस्तथैव च । द्विद्वस्तं निस्तु-
तंतद्वच्च चतुरस्रसंभवेत् । लक्षद्वयोः भवेत्कुंडं योनिवक्रं त्रिंखलम् । विशेषो होमपद्धतौ द्रष्टव्यः ।
होमकुंडोत्तरं पूर्वोऽपि देवता स्थापनार्थं वेदीनिर्माणस्तत्रैव—तस्यचात्तरं पूर्वेण
वितस्ति त्रयसंस्थितम् प्राङ्दक्षिणपदनं तच्चचतुरस्रं समंततम् । विष्णुभाष्योद्धितं प्रोक्तंस्थंडिलं
विश्वकर्मणा । संस्थापनाय देवानां चप्रयसमावृतम् । व्यंगुलं ह्युद्धितोऽथ प्रथमं समुदाहृतः
अंगुलोच्छ्रय संयुक्तं चप्रद्वयं मधोपरि व्यंगुलस्य च विस्तारं सिद्धं पाठ्यते सुभे । दशांगुली
द्धिताभित्तिः स्थंडिलेऽप्यथोपरि । तस्मिन्नावहयं हेमान्पूर्वपत्न्युत्पतंडलं आदित्याभिमुखा सर्वं
साधिप्रत्यधि देवता । स्थापनीया मुनिश्रेष्ठ नोत्तरेण पराङ्मुखाः महत्मानधिकं स्तन
संभूयः शिवमिच्छता । शामध्वनि शरीरस्त्वं नाहनः परमेष्ठिनः । कोटि द्यौमं

कुंडमानम्—अस्माच्छत गुणाः प्रोक्तः कोटिहोमः स्वयंभुवा । आहुतीभिः प्रयत्नेन दक्षिणाभिः फलेनच । पूर्ववद्ग्रहदेवा नामावाहन विसर्जने । होममंत्रास्त एयोक्ताः स्नाने दाने तथैवच । कुंडमंडप वेदीनां विशेषोऽयंनिबोधम् । कोटिहोमं चतुर्हस्तं चतुरस्रं समन्ततः । योनिष्वक्रद्वयोपेतं तदप्याहुत्त्रिमंखलम् ॥ सर्वं कुण्डेषुमंखलामानम्—व्यंगुला भ्युच्छ्रिता कार्या प्रथमामेखलायुधैः व्यंगुलाभ्युच्छ्रितातद्वद्वितीया परिकोत्तिता । उच्छ्रायविस्तरयशा वृतीया चतुरंगुला खाता विकांगुले त्यक्त्वा मेखलानां स्थितिर्भवेत् । कुण्डाकारं मेखलालक्षणम्—स्युर्वेहिमंखलास्तानंदां ६ ग ६ श्यु ३ खवेद ४ त्रि ३ करविततय इति । कंठाद्वहि मंखला भवन्ति, तत्राद्यामेखला नवांगुलीभ्रता चतुरंगुलविस्तृताभवति । कंठलाक्षणम्—खाताकुंडगणात् व्यंगुलेन, एकांगुलेनवहिः कंठोभवति । कंठयक्त्वा मेखलाकार्या । नाभिलाक्षणं कुंडरत्नावल्याम्—तेषां कुंडानामध्ये वेदांगुलैश्चतुर्भिरंगुलैर्विस्तृतः द्विरंगुलैश्चः कुंडाकारवन्नभिर्भवति संनाभिः पद्मकुंडे नभवति, तत्रकणिकायाः सत्वात् । शारदा तिलके—कुंडानां कल्पवेदन्तनां भिमंयुज सन्निभाम् । तरकुंडायनुरूपया मानमस्य निगद्यते । मुद्गररत्न्येकहस्कनांनाना भिरुत्सेधतो मता । नेत्रवेदां गुलोवापिपात्रे नामिचचर्जयेत् । योनिस्त्रयं—दीवारसांशैस्तु तथैवचोच्चास्य लातथविद लवैस्तताच । एकाव्धिभागैर्यदि मेखलास्यात्तदाच योनिर्भवतीय मेव । साचार्यत्वं दलाकृतिः पुनरियंसाकुंड सिद्धियुक्तचत्वाव्यस्ता द्रुपतीह हस्त्यधर वद्विस्तार देव्यांभवेत् ॥ वस्तिष्टः—योनिश्च पश्चिमभागे प्राङ्मुखीमध्यसंस्थिता पदंगुलैश्च विस्तीर्णाचायता द्वादशंगुलैः ॥ मेखलोपरि सर्वत्र अश्वत्थदल सन्निभा ॥ शारदातिलके—स्थलादारभ्य नालंस्याद्यौ न्यारं प्रेसरंप्रकम् । कल्पलेतायां यामले—नालमेखलयोर्मध्ये परिधि स्यापनायचरंधं कुर्यात्तथा विद्वाद्द्वितीय मेखलोपरि । योनिकुंडे तथायोनि पात्रेनाभिच चर्जयेत् ॥ विशेषः कुंडमंडप ग्रंथेषु द्रष्टव्यं होमं स्थंडिले चासमाचरेत् । तार्यं ब्रह्मापश्चान्मुले स्थितः । संस्नाप्यस्थापितं कुंभं चतुर्बाहुरचतुर्मुखः । ब्रह्मयज्ञान मितिवा गायत्र्याचा प्रपूजयेत् ॥ ग्रहसमिध—अकं पलाशखदिर अपामायां भपिप्पल । श्रीदुम्बर शमीदूर्वा कुशाश्च समिधः क्रमात् ॥ समिधामानम्—प्रावेशमात्रा अशिफा अशाखा अपलाशिनी । समिधः कल्पयेत्प्राज्ञः सर्वं कर्मसुसर्वदा । एकहृत्ति प्रमाणं पशुरामकारिकांसु—कर्ममात्रं घृतं होमे शुक्तिमात्रं पयः स्मृतमुक्तानि पंचगव्यानि शुक्तिमात्राणिसाधुभिः । तत्समंमधुदुग्धाक्षमस्यमात्रमुदाहृतम् । दधि प्रद्यति मांसेस्याल्लाजा. स्युर्मुष्टि संमिताः । पृथुकास्तत्प्रमाणांस्युः सक्तवोऽपि तथाविधाः ॥ पलाशैः गुडमानेच शर्करापितथाविधा । प्रासाद्वै मानमत्रानामिच्छुः पवाविधिः स्मृतः । एकैकं पत्रपुष्पादि तथाऽपूपादि कल्पयेत् । कदलीफल नारिंग फलान्यैकै कशीविडुः । अष्टधानारि वेलानिखंडितानि विदुर्वुधाः । व्रीहयो मुष्टिमात्रा.स्युर्मुद्गा माषायवास्तथा । चन्द्र चन्दन करमीर कस्तूरी यज्ञकदेमान् । कलयासम्मितानेता न्युगुलवदरास्थिवत् । चतुःपष्टितिलैः प्रोक्ता तिलानामाहुतिर्बुधैः । मोहीणां च यवानां च शतमाहुति रिष्यते । द्रव्याणां प्रतिनिधयः—विष्णु धर्मसंस्तरदेश्य स्नामे पयोपाखं मध्वलामे तथागुडः । घृत प्रतिनिधिं कुर्यात्पयोवा दधिचातृप । घृतस्यप्रतिनिधयः कुशकंडिका व्याख्यां द्रष्टव्याः ॥ ऋत्विग्वरणा

स्कन्द पुराणे—नवग्रह मखेकुर्याद्विद्विजश्चतुरः शुभान् । अथवा चैकमभ्यर्च्य विधिना ज्ञप्-
 णासह । **ग्रहदीपिकायाम्**—ऋत्विजोऽष्टौ चत्वारौ द्वात्र्येकस्तथैव च । एतच्चोपलक्ष्यं
 बहवोऽपि कर्त्तव्याः । होम संख्यकान् ऋत्विजो वृणोत । आचार्यं ब्रह्माणौ विनाचरणं सर्वत्र
 होतृत्वा उपपत्तेः । उक्तं चानन्तभाष्ये—होतृत्व प्रापणायैतद्वरणं दृष्टसाधनम् । यजमानेनक
 कर्त्तव्य मानन्त्यार्थं मिहापितत् । वरणानन्तरं ऋत्विजि मृते रोगपीडितेवा तत्स्थाने
 यजमानो ऽ न्यं द्विजं घृत्वा कर्मणि योजयन्त्—यावन्न योज्यतेऽन्यस्तु वरणेन
 स्वकर्मणि । नतावन्तत्समाख्यानं लभते कर्म हेतुकम् । **होममुद्राः**—होमे मुद्रा स्मृ-
 तास्तिष्ठो मृगोहंसीचसूकरौ । मुद्राविनाकृतोहोमः सर्वो भवति निष्फलः ॥ **मुद्रालक्षणाह**—
 सूकरौ करसंकोची हंसीमुक्त कनिष्ठिका ॥ मुक्तकनिष्ठा तर्जनी, मृगोमुद्रा प्रकीर्तिता ।
कार्यपरत्वेनहोममुद्रा—शान्तिकेतु मृगोज्ञिया हंसीपौष्टिक कर्मणि । सूकरमारणोद्यते कार्या
 तंत्रविदुत्तमैः । मृगोमोक्षेप्रकर्त्तव्या आहुतिः सर्वकामिका । हुतंयद्दुमुद्रयाहीनं तत्सर्वनिष्फलं
 भवेत् ॥ **यथोक्ताभावेयज्ञकरणं दोषमाह**—अन्नहीनः कृतोयस्माद्दुर्भिक्ष फलदोभवेत् ।
 अन्नहीनोदहेद्राष्ट्रं मंत्रहोनेस्तु ऋत्विजः । यष्टारं दक्षिणाहोत्रोनास्तियज्ञसमीरिपूः नावाप्याल्पधनः
 कुर्याल्लक्षहोमनरः कश्चिन् । यस्मात्पीडाकरोनित्यं यज्ञेभवतिविग्रह । यस्तुपीडाकारोऽनित्यम
 ल्पवित्तस्यवैग्रहः । तमेव पूजेयद्भक्त्या द्वीवात्रीनवां यथाविधौ एकमभ्यर्चयेद्भक्त्या
 आह्वयं वेदपारंग । दक्षिणाभिःप्रयत्ननेन बहूनल्पवित्तवान् । लक्षहोमस्तुकर्त्तव्यो यथावित्तं
 यथाविधिः । अतः सर्वानवाप्नोतिकुर्वन्कामान्विधानतः । सत्काम मवाप्नोति पदमानेत्यमरश्रुते ॥
 अनेन विधिनायस्तु कोटिहोमं समाचरेत् । सर्वान्कामानवाप्नोति ततोविष्णुपदं व्रजेत् । अन्यथा
 फलदंपुसान्काम्यं जायते कश्चित् । तस्मादयत्तु होमस्य विधानं पूर्वमाचरेत् ॥ **होमसस्यै**
द्रव्यत्रैवतानां ध्यानम्—देवतानामभिधानंनकरोत्यत्रमूढधीः । तस्यकर्मवृथैर्नस्या दितिवेद-
 विदोविदुः ॥ द्रव्यं तृतीययाध्याये देवतांच दुतियया ॥ द्रव्यदेवत ह्पस्वात्कर्मणोऽतस्तदुच्यते ॥
ग्रहाणां द्रव्य न्यूनवाहुल्ये अहुती संख्याप्रमाणां प्रयोगपारिजाते—ततोयजमानस्य
 द्रव्यत्यागन्ते—समिदादि द्रव्येण प्रतिग्रहं प्रतिद्रव्यं दश दशाहुतीर्हुत्वा अधिदेवतादुर्भिरय
 प्रत्येकं तिस्रः तिस्रः एकैकांवा आहुतिर्हुत्वाचतस्रभि व्याहृतीभिरचतस्र आहुतीर्हुत्वात्-
 होमवाहुल्ये, यदा नवग्रहाणांमष्टोत्तर शतह्रुति होमसंख्यासु, अधिदेवताप्रत्याधि देवतानां तृतीयां
 सेन जुहुयात् दशमांशेनवा । **होमोत्तरं कृत्यमाह**—पूर्जां कृत्वा ग्रहाणांच हुवेस्त्विष्ट कृदाहुतिः ।
 नबाहुतीस्ततोहुत्वा वलिदान मथाचरेत् ॥ मूर्दानमिति मंत्रेण दद्यात्पूर्णाहुतिसतः । होमोर्ष
 समाप्याथ आचार्योऽथद्विजैःसह अथाभिषेक मंत्रेण वाद्यमंगलगीतकैः । पूर्णकुम्भेनेतेन होमान्ते
 प्राग्दुर्गुलैः । अव्याह्ना वयवै ब्रह्मनू हेमङ्गादास भूपितैः । यजमानस्य कर्त्तव्यं चतुभिः स्नपनं ॥
 द्विजैः । ऋत्विगादीनां दक्षिणदि-अध्यान्दद्यान्मुनिश्रेष्ठ भूपथान्यपिशक्तिः । शयनानिसद्व्राणि
 हेमानिकटकानि च । स्वर्णोशुलिपविप्राणि कंठसूत्राणिशक्तिमान् । नकुर्याद्दक्षिणाहीनवित्तशाठ्येन-
 मानवः । अद्दल्लोभतोमोहात्कलक्षय मवाप्नुयात् । अन्नदानंयथाशक्त्या कर्त्तव्यं भूतिमिच्छता ।
 धनिक दरिद्रादिभिर्दक्षिणदेवप्रमाणं कार्यानुसारं—वाराह पुराणं—व्याहृतीनां-
 सह सस्य । होमशुक्लं द्विजोऽर्पयेत् । मापमात्रं शुवर्णं लक्षहोमंशतंयवा । धनिको द्विगुणं दद्या-

त्रिगुणं तु महाधनः । यथाद्भृतुदरिद्रेण दातव्यं पुण्यलब्धये । दद्यान्महा दरिद्रस्तु तदर्धं गुल्क-
मेव तु । महाभारते—यदोपनिषदे चैव सर्वकर्मसु दक्षिणा । सर्वत्रैव तु चांदिष्टा भूमिगोविधका-
चनम् ॥ शेषः पूजाविधौ सप्तः । इति ग्रहयाग-परिभाषा ॥

॥ नवग्रह स्थापने वेदी ॥

॥ ग्रहयाग भद्रम् ॥

<p>ईशाने</p> <p>वाणाकारः पीतः बुधः दक्षिणे । वामे- अ० दे० । प्र० दे० हरिः । विष्णुः</p>	<p>पूर्वे</p> <p>पञ्चकोणत्मकः श्वेतः शुक्रः दक्षिणे । वामे- अ० देवः । प्र० देवः इन्द्रः । ऐंद्राः</p>	<p>आग्नेये</p> <p>चतुरस्रः श्वेतश्चन्द्रः दक्षिणे । वामे- अ० देवः । प्र० देवः उमा । आपः</p>
<p>उत्तरे</p> <p>उत्तरे दीर्घचतुरस्रः पीतवर्णो गुरुः दक्षिणे । वामे- अधिदेवः । प्र० दे० ब्रह्मा । इन्द्रः</p>	<p>मध्ये वर्तुलाकारः रक्तवर्णः सूर्यः दक्षिणे । वामे- अधिदेवः । प्रत्यधिदेवः ईश्वरः । अग्निः</p>	<p>दक्षिणे श्रीः श्रीकोणारमकोरकः श्रीः दक्षिणे । वामे- अ० दे० । प्र० दे० स्कन्दः । पृथ्वी</p> <p>दक्षिणे</p>
<p>वामे</p> <p>वामे दक्षिणे । वामे- अ० दे० । प्र० दे० विश्वाम्भ । ब्रह्मा</p> <p>कृषिः वज्रकालिभुवः</p>	<p>पश्चिमे</p> <p>पश्चिमे दक्षिणे । वामे- अ० दे० । प्र० दे० शमः । इन्द्रः</p> <p>शनि कृष्णवर्णप्रसापाकारः</p>	<p>दक्षिणे</p> <p>दक्षिणे । वामे- अ० दे० । प्र० दे० कालः । सप्तः</p> <p>शनिः सर्पाकारः कृष्णवर्णः</p>

अथ ग्रहयाग पद्धतिः

अथपूर्वोक्तविधानेन वेद्यांनवग्रहस्थापनार्थं नवकोष्ठाकारा-
णिकृत्वा, तत्राग्न्युत्तारणपूर्वकंपूर्वोक्ताः प्रतिमाः सर्वेसूर्याभि-
मुखाः संस्थाप्य, पूजासामग्रींवरणद्रव्यंच सम्पाद्य स्वासनउप-
विश्य पत्नींस्वदक्षिणतउपवेशयित्वा, आचम्यभूतोत्सादनंकृत्वा
रक्षादीपं प्रज्वाल्यसम्पूज्यच, गणेशादीन्सम्पूज्य, संस्मृत्वाच,
प्रधानसङ्कल्पंकुर्यात्—३० अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकोहं
तथाचामुकराशेरमुकशर्मणो ऽ स्यकुमारस्य वटोर्वावीजगर्भं समु-
द्भवैनो निवर्हणद्वारा आयुर्वर्चोभेधाभिवृद्धये औत्समार्त्तकर्मानु-
ष्ठानसिद्धिद्वारा अद्य,श्वो, वाकरिष्यमाणे (वृडोपनयन वेदारंभ
समावर्त्तन कन्योद्वाह, तथा दशाविदशान्तर्दशास्थितादित्यादिग्रह
सूचितदुष्टफलोपशान्तिपूर्वकशुभफलप्राप्तये) अमुक कर्मणिसर्वो-
पद्रव शान्तिपूर्वक दीर्घायुरारोग्य हर्षविजयप्राप्तये श्री परमेश्वर-
प्रीत्यर्थंच तदुपयोग्य युतात्मकग्रहमखमण्डपे मखसंरक्षणायवरु-
णपूजनपूर्वकं ग्रहयाग मण्डलस्थ सूर्यादिनवग्रह साधिप्रत्यधि-
देवताष्टलोकपालादीनांचपूजनं करिष्ये तथाच तत्पूर्वागत्वेना-
चार्यादीनां वरणञ्चकरिष्ये ॥ आचार्यब्राह्मणं पाद्य मधुपर्कादिभिः
सम्पूज्य, वरणासामग्रींच, करेकृत्वा—सकल्पः—अद्येत्यादि०
अमुकोहं करिष्यमाणो मुककर्मणि, एभिर्गन्धाक्षतपुष्प पूगीफल
करांगुलीयक द्रव्यधौतवस्त्रोत्तरीय यज्ञोपवीतपुष्पमालादिभिः,
अस्मिन्नग्रहयागकर्मणि आचार्यकर्मकर्तुममुकगोत्रममुकशर्मणं
अमुकवेदाध्यायिनं आचार्यत्वेनत्वांवृणे, वरणद्रव्यंतस्मैदत्वा,
वृतो ऽ स्मीत्याचार्योक्तिः । प्रार्थयेत्—३० आचार्यस्तुयथास्वर्गे०
संप्रार्थ्य-यजमानोक्तिः—अस्यग्रह यागकर्मणः प्रतिष्ठापनार्थं
त्वम्मेधाचार्योभव । अहंभवानीतिप्रत्युक्तिः ॥ तथैव ब्राह्मणं-
सम्पूज्य-अद्येत्यादि० एभिर्वासांगुलीयक धौतवस्त्रादिभिः अस्मि-
न्नग्रहमखेकृताकृतावेक्षणादि ब्रह्मकर्मकर्तुंब्रह्मत्वेनैभिर्वरणद्रव्यै

रमुकगोत्र प्रवरममुकशर्माणं ब्राह्मणंत्वामहंवृणे । वृतो ऽ स्मीति
 व्रूयात्, प्रा०-यथाचतुमुखी० । अस्मिन्ग्रहयागकर्मणि, त्वमे ब्रह्मा-
 भव । अहंभवानीति प्र० । एवंहोमसंख्यानुसारेणऋत्विजो ऽ
 पि वृणुयात् ॥ शान्तिपाठार्थं यथाविस्तारतश्चतुरो ब्राह्मणान्द्वार-
 पालानपिवृणुयात् ॥ वा होमवेलायांहोमकुण्डसन्निधौ, वृणुयात् ।
 इदानींतु, जापक ब्राह्मणान्वृणुयात् ॥ ३० अथेत्यादि० असुकोऽहं
 अमुककर्मनिमित्तकग्रहयाग कर्मणिनिर्विघ्नार्थमादौ, गणेश्वरस्यै
 जपंकर्त्तुं अमुक ब्राह्मणंत्वामहंवृणे ॥ एवंसूर्यादीनामपि जापकां-
 श्च वृणुयात् ॥ यजमानोक्तिः-यथाविहितंकर्मकुरु । तेषां
 प्रत्युक्तिः-करवामः ॥ इति वरणविधिः ॥

अथ ग्रह स्थापन पूजनम् ।

ततः शुक्लाम्बरधरः शुक्लमाल्यानुलेपनःसपत्नीकः साचा-
 र्यःऋत्विक्सदस्य सहितोयजमानः । जलपूर्णकलशहस्तो मङ्गल-
 ध्वनि पुरःसरोभद्रं कर्णभिरित्यादि मन्त्रान्पठन् मण्डपंप्रदक्षिणी
 कृत्य, पश्चिमद्वारेणप्रविशेत्-तत्रग्रहवेदी सन्निधौ, पूर्वाभिमुखो
 पविश्य, पत्नींस्वदक्षिणत रूपवेशयेत् आचम्यार्घसंस्थाप्य भूतो-
 त्सादनंविधाप्य पंचगव्येनमण्डपं सम्प्रोच्य, पूर्वस्यांपूर्वाभिमुखं
 दीपंसम्पूज्य, (इदानींकचित्पद्धतिपुक्कुण्डे अग्निस्थापनविधि
 र्चार्यद्वारा लिखितोदेशाचारमनुकर्त्तव्यम्) पूजासङ्कल्पंकुर्यात्
 अथेत्यादि संकीर्त्यासुकोहं ग्रहयागकर्मणः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त
 फलावाप्तये सुवर्णताम्रादि प्रतिमासु आदित्यादिनवग्रहाणां,
 अधिदेवता प्रत्यधिदेवतासहितानां पद्मयुक्तदेवतानां वा सर्वेषां
 आवाहन स्थापन पूजनंचकरिष्ये, ततो ग्रहभद्रेशानकोणे अष्टदल
 कमलंविलिख्य, कलशंसंस्थाप्य महीद्योरितमंत्रं मारभ्यप्रसन्नो
 भव सर्वदेनिपर्यन्तवरुणंयागरक्षार्थं तत्रसम्पूज्य ॥ तत्रैवकलशे
 पंचाशत्कुशनिर्मितं चतुर्भुजं चतुर्मुखंब्रह्माणंच रक्षार्थस्थापयेत् ॥
 रक्षासूत्रमामंन्यच स्थापयेत् । ततो वेद्यांग्रहानावाहयेत् तत्रादौ

मध्ये कार्णिकायां द्वादशांगुलवर्तुले रक्तमण्डलेप्राङ्मुखं सूर्यरक्त
 पुष्पाक्षतैर्ध्यायेत्—३० पद्मासनः पद्मकरोद्विवाहुः पद्मद्युतिः
 सप्त तुरङ्गवाहनः । दिवाकरो लोक गुरुः किरीटी मयि-
 प्रसादं विदधातु देवः ॥ आवाहनम्—ॐ आकृष्णोक्ति
 हिरण्यस्तूप ऋषि त्रिष्टुप्छन्दः सवितादेवता सूर्यावाहने विनि-
 योगः—ऋक् ३० आकृष्णेनरजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं
 मर्त्यं च । हिरण्ययेन सवितारथेन देवोयातिभुवनानिपश्यन्, ३०
 भूर्भुवः स्वः कलिंगदेशोद्भव काश्यपस गोत्र रक्तवर्णपूर्वाभिमुख
 सूर्य, इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदोभव, ततः सूर्यदक्षिण
 पार्श्वे, सुर्याधिदेवं-ईश्वरम्-शुक्लपुष्पैर्ध्यायेत्—ॐ पंचवक्रोवृ-
 षारूढः प्रतिवक्रं त्रिलोचनम् । कपाल शूलखट्वाङ्गी चन्द्रमौली
 सदाशिवः । ॐ त्र्यंबकमिति वशिष्ठऋषिरनुष्टुप्छन्द त्र्यंबकोदेवता
 त्र्यंबकावाहने वि० ॥ ॐ त्र्यंबकं यजामहेसुगन्ध पुष्टिवर्धनम् ।
 उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ ॐ भू० त्र्यंबक
 सूर्यदक्षिणे, इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रति० । ततो वामपार्श्वेसूर्यप्रत्यधि
 देवतामग्निम्—ध्या० ॐ पिंगलः श्मश्रुकेशाक्षः पीनांगजठरोऽ-
 रुणः । ज्हागस्थः साक्षसूत्रोऽग्निः सप्ताक्षिः शक्तिधारकः ॥ ॐ
 अग्निं दूतमिति मंत्रस्य विरूपाक्षऋषिर्गायत्रीछन्दो ऽग्निदेवता
 ऽग्न्यावाहने वि० । ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाह सुपत्न्युदेवा
 ऽऽ ॥ आसादयादिह । ॐ भू० अग्ने सूर्यवामे इहागच्छेहतिष्ठ
 सुप्रति० । १। तत आग्नेयदले चतुरस्रे सोमं श्वेतपुष्पैः ॐ श्वेता-
 म्बरः श्वेतः विभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दंडधरोद्विवाहुः । चन्द्रोऽमृता-
 त्मावरदः किरीटी श्रेयांसिमन्त्रं विदधातुदेवः । ॐ इमं देवा इति
 गौतमऋषि द्विपदा विराड्छन्दः सोमोदेवता सोमावाहने वि० ।
 ३० इमं देवाऽअसपत्न ३० मुवध्वं महतेक्षत्राय महतेज्यैष्ठ्याय
 महते जानराजायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्य पुत्रमस्यै
 विशाऽपवोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणा ना ॐ राजा, ॐ
 भू० यमुनातीरोद्भव, आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्ण भोदष्टे सूर्याभि-

मुखसोमेहागच्छेहतिष्ठ सुप्रति० । ततः सोमदक्षिणे सोमाधि
 देवतासुमां सूर्याभिमुखवहृष्टिं, ध्यायेत्—ॐ अक्षसूत्रं च कमलं
 दर्पणं चैव कन्दुकम् । उमा विभक्तिहस्तेषु पूजिता च सुरासुरैः ।
 आ०—ॐ श्रीश्चत इति नारायणं ऋषिं स्त्रिष्टुष्टुन्द उमादेवता,
 उमावाहने वि० । ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पारर्वेन-
 च्छत्राणि रूपमश्विनोऽव्यात्तम् । इष्णस्त्रिपाण मुम्मऽहपाण सर्व-
 लोक म्मईषाण । ॐ भू० सूर्याभिमुखवहृष्टे उमे इहागच्छेहतिष्ठ,
 सुप्रति० । ततः सोमवामे प्रत्यधिदेवतामपः सूर्याभिमुखवहृष्टिं
 ध्यायेत् ॐ अपः स्त्रीरूप धारिण्यः श्वेतामकर वाहनाः । दधानाः
 पाशकलशौ मुक्ताभरणभूषिताः । ॐ अश्विदत्तिमेधातिथि
 ऋषिरनुष्टुष्टुन्दः, आपोदेवता अपामावाहने वि० । ॐ अश्व-
 न्तर मृतमप्सु भेषजमपासुतप्रशस्तिष्व श्वाभवतवाजिनः । देवी
 राप्पो योवऽऽभिः प्रतृतिः ककुन्मान्वाजसा स्तेनायंवाज र्तं सेत् ।
 ॐ भू० आप इहागच्छेहतिष्ठत सुप्रतिष्ठिता वरदाभवेयुः । २। ततो
 दक्षिणे त्रिकोणमंडले रक्तपुष्पाक्षतैर्भौमम् ध्यायेत्—ॐ रक्ताम्बरो
 रक्तवपुः किरीटीचतुर्भुजो भेषगमो गदाधरः । धरासुतः शक्ति-
 धरश्चशूली सवाममस्या द्वरदः प्रशान्तः । आ० ॐ अग्निर्मूर्ध्वेति
 विरूपाक्षऋषिर्गात्रीछन्दो भौमोदेवता भौमावाहने वि० ॐ अग्नि-
 मूर्ध्वादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् अपाँरेताँ सिजिन्वति ।
 ॐ भू० । अवनतिदेशोद्भव भारद्वाज गोत्र रक्तवर्ण दक्षिणवहृष्टे
 भौम सूर्याभिमुख इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रति० ॥ ततो भौम दक्षिण
 पारर्वे भौमाधिदेवं सूर्याभिमुखवहृष्टिं, स्कन्दं ध्यायेत्—ॐ
 कुमारः परमृग्वः कार्यः शिखण्डी कविभूषणः । रक्तांबर धरो
 देवो मयूर वरवाहनः ॥ ॐ यदक्रन्द इति दीर्घतमा ऋषिस्त्रि-
 ष्टुष्टुन्दः स्कन्दो देवता स्कन्दावाहने विनियोगः । ॐ यदक्रन्दः
 प्रथमं जायमानऽ उद्यन्तसमुद्रा हुतवा पुरीषात् । श्वेनस्यपक्षा
 हरिणस्य बाह्र उपस्तुत्यं महिजातन्ते ऽ अर्वन ॥ ॐ भू० स्कन्दे
 हागच्छेहतिष्ठ सुप्रति० । ततो भौमवामपारर्वे सूर्याभिमुखवहृष्टि

भौमप्रत्यधि देवता पृथ्वीं ध्यायेत् — ॐ शुक्लवर्णा महीकार्या
 सर्वाभरण भूषिता । चतुर्भुजा सौम्यवपुश्चण्डांसु सदृशाम्बरा ॥
 आ०—ॐ स्योना पृथ्वीति मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दः पृथ्वी
 देवता पृथ्व्या वाहने वि० ॥ ॐ स्योना पृथिविनो भवानृत्तरा
 निवेशनी यच्छानः शर्मसप्रथाः ॐ भू० पृथिवि, इहागच्छेहतिष्ठ
 सुप्रतिष्ठिता वरदाभव ॥३॥ तत ईशाने वाणाकारमण्डले पीतं
 बुधं ध्यायेत् ॥ ॐ पीताम्बरः पीतः वपुः किरीटी चतुर्भुजो
 दण्डधरश्चहारी । चर्मासिभृत्सोमसुतः सदामे सिंहाधि रूढो
 वरदो बुधोऽस्तु ॥ आ०—ॐ उद्बुध्यस्वेति परमेष्ठी ऋषि त्रिष्टु-
 प्छन्दो बुधो देवता बुधावाहने विनियोगः । ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने
 प्रतिजागृहित्व मिष्टापूर्त्तंस ई० सृजेथा मयंच । अस्मिन्सधस्थे
 ऽअध्युतरसस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥ ॐ भू० मगध
 देशोद्भव आत्रेयस गोत्र पीतवर्ण वामदृष्टे बुध सूर्याभिमुखे इहा
 गच्छेहतिष्ठ, सुप्रति० ॥ ततो बुध दक्षिण पार्श्वे बुधाधिदेवं विष्णु
 मावाहयेत्—ॐ विष्णुः कौमोदकी पद्म शङ्ख चक्रधरः क्रमात् ।
 प्रदक्षिणं दक्षिणाधः करादारभ्य नित्यशः ॥ आ०—ॐ विष्णो-
 रराट् मितिदीर्घतमा ऋषि रुष्णिक्छन्दो विष्णुर्देवता विष्णवा
 वाहने विनियोगः ॐ विष्णो रराट्मसि त्रिविष्णोः श्रद्धेस्थो
 त्रिविष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा । ॐ
 भू० विष्णोऽइहागच्छेहतिष्ठ सुप्र० ॥ बुधवामपार्श्वे नारायणं
 ध्यायेत्—ॐ नारायणश्चतुर्बाहुः शङ्ख चक्रधरः प्रभुः । गदा पद्म
 धरश्चैव नीलजीमूतसन्निभः । आ०—ॐ इदं विष्णु रिनिमेधा-
 तिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दो नारायणो देवता विष्णवा वाहने
 वि० ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिनधेपदम् । समृद्धमस्यपा ॐ
 सुरेस्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रति०
 ॥४॥ तत उत्तरे चतुरस्रे पीत मण्डले शुक्रं ध्यायेत्—ॐ पीतवर्णः
 पीतवासा अक्षसूत्र कमण्डलुम् । दण्डंस्वकीय हस्तेषु दधानो
 गुरुरीश्वरः । आ०—ॐ बृहस्पत इति गृत्समद ऋषिर्त्रिष्टुप्छन्दो

बृहस्पतिर्देवता बृहस्पत्या वाहने विनियोगः । ॐ बृहस्पते ५
 अतिथदर्यो ५ अर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छ्रवसः ५
 ऋतप्रजा ततस्मात्तु द्रविणं धेहिचित्रम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धु
 देशोद्भव आंगिरसगोत्र पीतवर्ण वामदृष्टे सूर्याभिसुग्व, गुरो
 इहागच्छेदतिष्ठ, सुप्रतिष्ठितो वरदोभव ॥ ततो गुरु दक्षिणपार्श्वे
 गुरोरधि देवं ब्रह्माणं ध्यायेत्—चतुर्भुवः पद्मसंस्थो ब्रह्माकार्य-
 श्चतुर्भुजः । अक्षमाला श्रुवं विभ्रत्पुस्तकं च कमण्डलुम् ॥ आ०—
 ॐ ब्रह्मजज्ञानमिनि प्रजापति ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता
 ब्रह्मावाहने वि० ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ता द्विसीमतः सुरु-
 चोव्वेनऽत्रायः । सवुध्न्या ५ उपमा ५ अस्यविष्टाः सनश्नयोनि-
 मसतश्चच्चिवः । ॐ भ० ब्रह्मा त्रिहागच्छेदतिष्ठ ॥ ततो गुरुवा-
 मपार्श्वे गुरोः प्रत्यधि देवमिन्द्रं ध्यायेत्—ॐ चतुर्दन्त गजारूढो
 वज्रीकुलिशभृत्करः । शचीपतिः प्रकर्त्तव्यो नानाभरण भूषितः ॥
 ॐ सजोपा इति त्विश्वामित्र ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः, इन्द्रो देवता
 इन्द्रावाहने वि० । ॐ सजोपा ५ इन्द्रसगणो मरुद्भिः सोमंपिव
 वृत्रहाशूरविद्वान् । जहिशत्रू ३॥ रपमृधोनुदस्वाथा भयंकृणुहि
 विश्वतोमः । ॐ भ० इन्द्रेहागच्छेदतिष्ठः सुप्रतिष्ठितो ॥१॥
 ततः षडं पञ्चकोणे श्वेत मण्डले शक्रं ध्यायेत्—श्वेताम्बरः
 श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजो वैत्यगुरुः प्रशान्तः । तथा क्षसूत्रं
 च कमण्डलञ्च दण्डं च विश्वहरदोस्तु मह्यम् ॥ आ०—ॐ
 अन्नादिति प्रजापतिर्ऋषि रतिजगतीछन्दः शुक्रोदेवता शुक्रावाहने
 वि० । ॐ अन्नात्परिन्तोरस ब्रह्माणान्यपिवत्क्षत्रपयः सोमंप्रजा-
 पतिः । ऋतेनसत्य मिन्द्रियं विषान् दे० शुक्रमंधस ५ इन्द्रस्येन्द्रिय
 मिदं पयोमृतमधु । ॐ भूर्भुवः स्वः, भोजकटदेशोद्भवः भार्गवस
 गोत्र शुक्लवर्ण ऊर्ध्वदृष्टे सूर्याभिसुग्व शुक्रेहागच्छेदतिष्ठ सुप्रति-
 स्थितो वरदोभव । ततोदक्षिणपार्श्वे भृगोरधिदेवमिन्द्रं ध्यायेत्—
 ॐ इन्द्रः सुरपातः श्रेष्ठो वज्रहस्तोमहायत्नः । सहस्रनेत्रः पीताङ्गः
 शतयज्ञकरः प्रभुः । आ०—ॐ त्रातारमिन्द्रमिति गर्गऋषिस्त्रिष्टु-

प्लुन्दः, इन्द्रोदेवता, इन्द्रा वाहने वि० । ३० त्रातार मिन्द्र मवि-
 तारमिन्द्र ई० हवेहवे सुहव ई० शूरमिन्द्रम् ॥ हयामिशक्रं पुरूहूत
 मिन्द्र ई० स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ॥ ३० भृ० इन्द्रेहागच्छेह
 तिष्टसुप्रति० । भृगुवामपाश्वे इन्द्राणीं भृगोः प्रत्यधिदेवतां ध्या-
 येत्—३० इन्द्राणी सर्वसिद्धार्था सर्वाभरण भूपिता । वरदा
 मंडिता कार्या सर्वसौभाग्य दायिनी ॥ आ० ३० आदित्यै राष्णा
 सीति दध्यङ्गा थर्वणऋषिर्यजुश्छन्द इन्द्राणीदेवते न्द्राण्या वाहने
 वि० । ॐ आदित्यै राष्णासीन्द्राण्या ऽ उष्णीपः पूषासि धर्माय
 दीप्व । ॐ भृ० इन्द्राणीहागच्छेह तिष्टसुप्र० ॥६॥ ततः पश्चिमे
 धनुपाकारे कृष्णमंडले कृष्णशनि तिलाक्षत पुष्पैर्ध्यायेत्—ॐ
 नीलग्रतिः शूलधरः किरीटीगृध्रस्थित स्त्रासकरो धनुष्मान । च
 तुर्भुजः सूर्यसुतःप्रशान्तःसदास्तुमहं वरदोऽल्पगामी । ॐ शन्नो
 देवीति दध्यङ्गाथर्वण ऋषिर्गायत्रीछन्दः शनिर्देवता शन्यावाहने-
 वि० । ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय ऽ आपोभवन्तु पीतये शंयोरभि
 स्रवन्तुनः । ॐ भृ० सौराष्ट्रदेशोद्भव कारयपसगोत्र कृष्णवर्ण
 सूर्याभिमुख, अघोदृष्टे शने इहागच्छेहतिष्ट सुप्रति० ॥ ततः शने
 दक्षिणपाश्वे यममधिदेवतामावाहयेत्—ॐ महामहिषमारूढो
 धर्मराजश्चतुर्भुजः । दंडग्वह्णोऽभयकरोऽभयराजोऽभयप्रद । आ०
 ॐ यमायत्वेति दध्यङ्गाथर्वण ऋषिर्यजुश्छन्दो धर्मराजो देवता
 यमावाहने वि० । ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमतेस्वाहा घर्मा-
 यस्वाहा घर्मःपित्रे ॥ ॐ भृ० यमेहागच्छेहतिष्ट सुप्र० । शनेर्वा
 मपाश्वे प्रजापति प्रत्यधिदेवं ध्यायेत्—ॐ यज्ञोपवीती सिंहस्थ
 एकवक्रश्चतुर्भुजः । अक्षस्रजं स्रुवंविभ्रत्पुस्तकं च प्रजापतिः ॥ आ०
 ॐ प्रजापत इति हिरण्यगर्भ ऋषिर्त्रिष्टुप्छन्दः प्रजापतिर्देवता
 प्रजापत्यावाहने विनियोगः ।—ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विव-
 श्वारूपाणि परितावभूव । यत्कामास्ते जुहमस्तन्नो ऽ अस्तुव्यय
 ई० स्यामपतयो रयीणाम् । ३० भूर्भुवः स्वःप्रजापते, इहागच्छेह
 तिष्टसु० ॥७॥ ततो नैऋत्ये सूर्पाकारे कृष्णमंडले राहुं तिलाक्षत

पुष्पैर्ध्यायेत्—३० नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी कराल वक्रः कर
वाल शूली । चतुर्भुजश्चर्मधरश्चराहुः सिंहाधिरुढो वरदोस्तुम-
ह्यम् । आ०—३० कयानश्चित्र इति वामदेव ऋषिर्गायत्रीछन्दो
राहुर्देवता राहावाहने वि० । ॐ कयानश्चित्र ५ आसुवदृती सदा
वृधः । सखाकयासचिष्टया वृता ॥ ३० भू० वैराटिनपुरोद्भव पैठी
नसगोत्र कृष्णवर्ण दक्षिणहस्ते सूर्याभिमुख राहो, इहागच्छेहति-
ष्ट सुप्रति० ॥ राहोर्दक्षिणपार्श्वे कालंध्यायेत्—ॐ जन्तुप्राणहरो
कालो लेलिहानश्चसृक्षिणीम् । यमदृताश्रणी स्तवंवैमाविघ्नंकुरुमे
मखे । आ०—३० कार्पीरसिसमुद्रस्यत्वा क्षिन्याऽउन्नयामि समा-
पोऽअङ्गिरग्मत समोपधीभिरोपधीः ॥ ॐ भू० कालेहागच्छेहति
ष्ट सुप्र० । राहोर्वामपार्श्वे राहोः प्रत्यधिदेवा न्सर्पान्ध्या येत्
ॐ अक्षमूत्रधराः सर्पाः कुंडिकाधिप दंष्ट्रिणः । एक भोगा स्त्रि
भोगावा सर्वकार्याश्चभीषणाः ॥ आ०—३० नमोस्त्विति देव-
श्रवाऋषि त्रिष्टुप्छन्दः सर्पादेवताः सर्पावाहने वि० । ३० नमो
ऽस्तु सर्पेभ्यो येकेच पृथिवीमनु । येऽअन्तरिक्षे येदिवितेभ्यः
सर्पेभ्यो नमः ॥ ३० भू० सर्पा इहागच्छतेह तिष्टत सुप्र० ॥८॥
ततोवायव्ये ध्वजाकारे धूम्रमंडले केतुं ध्यायेत् ॐ धूम्रोद्विबाहुर्व
रदोगदाभृद्गृध्रासनस्थो विकृताननश्च ॥ किरीटकेयूर विभूषिता
ङ्गः सदास्तुमेकेतु गणः प्रशान्तः । आ०—केतुकृण्वन्निति मधुरछन्द
ऋषिर्गायत्री छन्दः केतुर्देवता केत्यावाहने वि० । ३० केतुकृण्वन्न
केतवे पेशोमर्त्याऽअपेशसे । समुपद्गिरजायथा ॥ ॐ भू० अन्तर्वे
दीय समुद्भवजैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण दक्षिणहस्ते सूर्याभिमुख
केतो, इहागच्छेहतिष्ट, सुप्रति० । केतोर्दक्षिण पार्श्वे केत्वधिदेवं
चित्रगुप्तंध्यायेत्—३० विवेकवांश्च जन्तूनां कर्मणां गुप्तरूपतः
सुकृताना मनिष्ठानां चित्रगुप्तः सुवेपवान् । आ०—ॐ चित्राव
सो इति प्रजापतिर्ऋषिर्धनुश्छन्दश्चित्र गुप्तोदेवता चित्रगुप्तावा-
हने वि० । ३० चित्राव्यसो स्वस्तिते पारमशीय । ॐ भूर्भुवःस्वः
चित्रगुप्त इहागच्छेहतिष्ट, सुप्रति० ॥ केतुवामपार्श्वे केतुप्रत्यधि

देवं ब्रह्माण्डध्यायेत्—ॐ हंसपृष्ठसमारूढः सिन्दूराभश्चतुर्भुजः ।
 प्रसन्नवदनः सौम्यो ब्रह्मालोक पितामहः ॥ आ—ॐ ब्रह्मजज्ञा
 नमिति गोतमऋषि स्त्रिषट्पञ्चन्दो ब्रह्मादेवता ब्रह्मावाहने वि० ॥
 ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमंपुरस्ताद्वितीस्रीसमतः सुरुचोऽन्वेनऽध्यावः । सवु-
 ध्न्याऽऽपमाऽअस्यविष्टासतश्चयोनिमसतश्चिविच । ॐ भू० ब्रह्मनि
 हागच्छेहितिष्ट सु० ॥ ६ ॥ ततो गणपत्यादिपञ्चलोकपालानावाहयेत् ॥
 राहोरुतरे गणपतिं ध्यायेत्—ॐ सिन्दूरवर्णः शुभदेो गणेशो
 राहुसौम्यगः । नागयज्ञो पर्वीतीच त्रिनेत्रश्च चतुर्भुजः । ॐ
 गणानान्तेति प्रजापतिर्ऋषि यजुरऋन्दो गणपतिर्देवता गणपत्या
 वाहने वि० । ॐ गणानान्त्वा गणपति ई० हवामहे प्रियाणान्त्वा
 प्रियपति ई० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ई० हवामहे स्व-
 सोमम । आहमजानिगर्भधभात्वमजा सिगर्भधम् ॥—ॐ भू०
 गणपते, इहागच्छेहितिष्ट सु० । शनेरुतरे दुर्गाम्—ध्या०—ॐ दुर्गा
 चतुर्भुजासौम्या सर्वाभरण भूषिता । कालाभ्रसन्निभादेवीसर्वलोक
 भयापहा । ॐ अम्बेइतिप्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्ऋन्दो दुर्गादेवतादुर्गा-
 वाहनेदि० ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽअम्ब्यालिकेनमानयतिकश्चन । ससस्य
 स्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् । ॐ भू० दुर्गेइहागच्छेह-
 तिष्ट । सु० रवेरुत्तरतोवायुम्—ॐ सर्वप्राणेश्वरः सौम्यः सर्वगंध
 वहः शुचीः । प्रचण्डवेगगामीच बलवांश्चसमीरणः ॥ ॐ वातो
 वामनहति वृहस्पतिर्ऋषिरुष्णिक्ऋन्दो वायुर्देवता वाय्वावाहने
 वि० । ॐ स्वातोवामनोवा गन्धर्वाः सप्तवि ई० सतिः । ते ऽ
 ग्नेश्वमयुजंस्ते ऽ अस्मिञ्जवमादधुः ॥ ॐ भू० वायोइहागच्छेहिति
 ष्ट सु० । राहोर्दक्षिणे आकाशम्—ॐ नीलोत्पलाभङ्गगनं तद्वर्णा-
 म्बरधारकः । चन्द्रार्कहस्तंकर्त्तव्यं द्विभुजं सौम्यदण्डवत् ॥ ॐ
 अग्निश्चेतिविवश्वानृषिर्गायत्रीऋन्दो अन्तरिक्षोदेवताकाशस्था-
 पने वि० ॐ अग्निश्चपृथिवीच सन्नतेनेमेसन्नमतामदो वायुश्चा-
 न्तरिक्षं च सन्नतेनेमेसन्नमतामदः ॥ ॐ भू० आकेशेइहागच्छेहितिष्ट
 सु० । केतोर्दक्षिणे, अश्विनौ, ध्यायेत्—द्विभूजोदेवभिपजो कर्त्त

व्यौदेहसंयुतौ । तयोरोपधयः कार्यादित्रयादक्षिणहस्तयोः । ॐ-
यावाङ्कसेति मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः, अश्विनौदेवते अश्वि-
नोरावाहने वि० । ३० यावाङ्कसामधुमत्यश्विना सृन्तावतीतया
यज्ञमिमिक्षताम् ॥ ३० भू० अश्विनौ, इहागच्छेत्मिहतिष्ठतम्
सुप्रतिष्ठितोवरदोभवेताम् ॥ (संग्रहशिरोमणौ-वास्तोष्पतिक्षेत्र
पालंस्थापयेत्तु गुरुक्षेत्रे) गुरोर्क्षेत्रे—वास्तुपुरुषम्—ॐ क्षेत्रेशो
वास्तुपुरुषः सर्वसौख्यप्रदोविभुः । नागरूपीगर्तशार्थः गृहरक्षण
तत्परः ॥ ॐ वास्तोष्पतीति वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वास्तोष्प-
तिर्देवता वास्तोष्पतिस्थापने वि० । ३० वास्तोष्पते प्रतिजानी
ह्यस्मानन्त्स्यावेशो ऽ अनमीवोभवानः । यत्वेमहेप्रतितन्नोजुपस्व
शन्नोभव द्विपदेशंचतुष्पदे ॥ ३० भू० वास्तोष्पते, इहागच्छेत्मिहतिष्ठ ।
ततवास्तोरुत्तरं क्षेत्राधिपतिं ध्यायेत्—ॐ क्षेत्राधिपः क्षेत्रपालः
क्षेत्ररक्षणतत्परः । सर्वसौख्यप्रदोदेवः सर्वशक्तिधरोविभुः ॥ ॐ
क्षेत्राधिपतयेनमः ॥ ३० भू० क्षेत्राधिपते, इहागच्छेत्मिहतिष्ठ, सुप्र-
ति० ॥ ततः ऋतुसंरक्षकानिन्द्रादि दिक्पालानावाहयेत् ॥ पूर्वेंद्रं
ध्या०—ॐ परावतगजारूढो वज्रपाणिःशचीपतिः । पुरन्दरः
सहस्राक्षोन्नानाभरणभूषितः । ३० त्रातारमितिगर्गऋषि स्त्रिष्टु-
प्छन्द इन्द्रोदेवता, इन्द्रावाहने वि० । ॐ तारमिन्द्र यवितारमिन्द्र
र्दं, हवेहवेसुहवर्दं शूरमिन्द्रम् । ह्यामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्र र्दं
स्वस्तिनोमघवाधास्विन्द्रः ॥ ॐ भू० इन्द्रेहागच्छेत्मिहतिष्ठ० । अग्नेये
अग्निध्या०—ॐ छागारूढः शक्तिधरः पिंगाक्षोह्यवाहकः ॥
सप्तार्चिजटिलोचन्हिः रक्तांगोसप्तजिह्वकः । ॐ त्वन्नो अग्नइति
हिरण्यस्तृपऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो ऽग्निर्देवताग्न्यावाहने वि० । ३०
त्वन्नो ऽ अग्नेतवदेवपायुभिर्मघोनोरक्षतन्वश्चवन्व । त्रातातोक
स्यानघेगवामस्थनिमेष र्दं रक्षमाणस्तवव्रते । ३० भू० अग्नेइहा-
गच्छेत्मिहतिष्ठ सुप्र० दक्षिणैयमम्—ध्या०—३० महिपस्थोमहाबाहुः
श्यामांगोरक्तलोचनः । यमराजोदण्डहस्तः खड्गहस्तोभयङ्करः ।
३० यम इतिप्रजापतिर्ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दोयमोदेवतायमावाहने वि० ।

ॐ यमशिघनासरस्वती हविषेन्द्रमवर्धयत् । सविभेदवत्तंभवन्न-
मुचानासुरेसचा । ॐ भू० यमेहागच्छेहतिष्ठसु० । नैऋत्येनिर्ऋतिं
ध्या०—ॐ रक्तहृत्पाशभृत्कुब्जो निर्ऋतिर्विकृताननः । प्रेतस्थः
ग्वङ्गहस्तश्च ध्यातव्यः सर्वदैवतु ॥ ॐ नमःसुतइत्यस्य मधुच्छन्दा
ऋषिःपंक्तिश्छन्दो निर्ऋतिर्देवता निर्ऋत्यावाहने वि० । ॐ नमः
सुतेनिर्ऋतेतिग्मतेजोयस्मयं त्रिचूत्तावन्धमेतम् । यमेनत्वंयस्या-
सम्बिदानोत्तमे नाके ऽअधिरोहयैनम् ॥ ॐ भू०निर्ऋते, इहा-
गच्छेहतिष्ठ सुप्र० । पश्चिमेवरुणं ध्या—ॐ वरुणःपाशभृत्सौम्यः
प्रतीच्यांमकराश्रयः, पाशाहस्तात्मकोदेवो जलराशयधिपोमहान् ।
ॐ इमम्म इत्यस्यशुनः शेषऋषिर्गायत्रीछन्दोवरुणोदेवतावरुणा
वाहने विनियोगः । ॐ इममेव्वरुणश्रुधी हवमद्याचमृडय ।
त्वामवस्युराचके ॥ ॐ भू० वरुणोहागच्छेहतिष्ठ सुप्र० । वायव्ये
वायुम्—ॐ धावद्दरिणपृष्ठस्थोखङ्गधारीमहाबलः । सर्वाभरण
शूषाढ्योदिव्यमाल्यानुलेपनः । ॐ आनोऽनियुद्धिरिति वशिष्ठ
ऋषिर्त्रिष्टुप्छन्दो वायुर्देवता वाय्वावाहने वि० । ॐ आनोऽनियु-
द्धिः शतनीभिरध्वर ई० सहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम् । व्वायो
ऽ अस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयंपातः स्वस्तिभिः सदानः । ॐ
भू० वायो इहागच्छे हतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो० । उत्तरे सोमम्—
ध्या०— ॐ दशाश्वरथगः सोमो गदापाणिर्वर प्रदः ।
नक्षत्राणां च सर्वेषां सोमोराजा प्रकीर्तितः ॥ ॐ वयमिति
बन्धु ऋषिन्त्रिष्टुप्छन्दः कुबेरो देवता कुबेरा वाहने वि० ॥ ॐ
व्वय ई० सोमवृते तवमनस्तनूषु विप्रतः । प्रजावन्तः सवेमहि ।
ॐ भू० कुबेर इहागच्छेहतिष्ठ सु० । ईशाने ईशंध्या० पूर्वोत्तरे
त्रिनेत्रश्च वृषभस्थास्त्रिशूल धृक् । कपालपाणिश्चन्द्रार्धभूपणः
परमेश्वरः ॥ ॐ तमीशानमिति गौतम ऋषिर्जगती छन्दः, ईशो
देवता, ईशावाहने वि० । ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं
जिन्वमवसे इमहे व्वयम् । पूषानो यथाव्वेद सामसद्वृधे रक्षिता
पायुरदन्धः—स्वस्तये । ॐ भूर्भुवः स्वः, ईशोहागच्छेहतिष्ठ

सुप्रतिष्ठितो चरदो भव ॥ ऊर्ध्व-पूर्वशानयोर्मध्ये—ब्रह्माणम्—
 ॐ ब्रह्मयोनिश्चतुर्भूर्तिर्वेदव्यासः पितामहः । हंसपृष्ठ
 समासीनः सुवहस्तो महाबलः । ॐ ब्रह्मणस्पत इत्यस्य
 याज्ञवल्क्य ऋषि स्त्रिष्टुप्लुन्दः ब्रह्मा देवता ब्रह्मावाहने०
 ॐ ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य वोधितनयञ्च-
 जिन्व ॥ त्विशयंतद्भद्रं यदवन्तिदेवा बृहद्वदेम त्विदधे-
 सुवीराः ॥ ॐ भू० भो ब्रह्मन्निहागच्छेहतिष्ठ सु० । ततो भूमे
 रथः परिचम नैर्ऋत्ययोरंतराले, अनन्तं ध्यायेत् ॥ ॐ फणां-
 गाधिपतिर्देवो ऽ नन्तनामा महाबलः । पातालवासी रुचिरमणि
 भूषण भूषितः ॥ ॐ यादृषवइत्यस्य देवश्रवा ऋषि रनुष्टुप्लुन्दः,
 अनन्तो देवता अनन्ता वाहने वि० । ॐ या ऽ इषवो यातुधा-
 नानां स्येवा व्यनस्पति ३। रनु । येवाव्वटेपुशोरते तेभ्यः सप्ते-
 भ्योनमः ॥ ॐ भू० अनन्त, इहागच्छेहतिष्ठ ॥ इति दिक्पाल
 स्थापननम् ॥ (क्वचित्पुस्तकेषु चक्ष्यमाण शेषादि देवतानामत्रपू-
 जनं नास्तिपरंचात्र गढवाल देश निवासिभिराचार्य वर्यैः पुरातन
 पद्धतिष्वेतेषां स्थापनं पूजनं चोक्तम् प्रमाण रहितत्वादपि, महा-
 जनोयेन गतः सपन्थेतिन्यायेन साम्प्रदायित्वात्तत्पूजनंवक्ष्ये)
 सप्रणव चतुर्थ्यन्तेन नाममन्त्रेण पूजनं कुर्यात्—यथारवेः पूर्व—
 ॐ शेषायनमः, ॐ भू० स्वः—भोशेष इहागच्छेहतिष्ठ, एवंसर्वत्र
 सोमाग्रे—ॐ वासुकयेनमः । वासुके इ० । भौमाग्रे—ॐ तक्ष-
 कायनमः, तक्षक इहा० । बुधस्याग्रे—ॐ कर्कोटकायनमः । कर्को० ।
 गुरोरग्रे—ॐ पद्मायनमः । पद्म इ० । शुक्रोत्तरे—ॐ महा पद्मा-
 यनमः । महापद्म इ० । शनेः परिचमे—शङ्खपालाय नमः ।
 शङ्खपाल, इ० । राहोरग्रे—ॐ कम्बलायनमः । कम्बल, इहाग-
 च्छेहतिष्ठ । केतोरग्रे—ॐ कम्बलायनमः, कम्बल इ० । ततो
 वहिर्भूमौ—पूर्व—ॐ अरिषिन्यादि सप्तनक्षत्रेभ्योनमः । ॐ
 विष्कुम्भादि सप्तयोगेभ्योनमः । आवाहयामि स्थापयामिति
 सर्वत्र ॥ ॐ यव वालथ कर्णाभ्यां नमः आ स्था० । ॐ सप्त-

द्वीपेभ्योनमः । आ० स्था० ॥ ३० ऋग्वेदाय नमः, आ० स्था० ।
 ततो दक्षिणे—३० पुष्यादि सप्तनक्षत्रेभ्योनमः आ० स्था० । ३०
 धृत्यादि सप्तयोगेभ्यो नमः । आ० स्था० । ३० कौलवतैतिल
 कर्णाभ्यां नमः आ० स्था० ॥ ३० सप्तसागरेभ्यो नमः आ०
 स्था० । ३० यजुर्वेदाय नमः आ० स्था० । पश्चिमे—३० स्वा-
 त्यादि सप्तनक्षत्रेभ्यो नमः । आ० स्था० । ३० वज्रादि सप्तयोगे
 भ्योनमः आ० स्था० । ३० गरवणिजकर्णाभ्यां नमः । आ०
 स्था० । ३० अतलादि सप्तविवरेभ्यो नमः । आ० स्था० । ३०
 सामवेदाय नमः । आ० स्था० । ततउत्तरे, ३० अभिजितादि
 सप्त नक्षत्रेभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि । ३० साध्यादि
 षड्योगेभ्यो नमः आ० स्था० । ३० विष्टिकर्णाय नमः आ०
 स्था० । ३० भूरादि सप्तोर्ध्वलोकेभ्यो नमः । आ० ॥ ३०
 अथर्ववेदाय नमः आ० । ईशाने—३० ध्रुवावाय नमः । आ० । ३०
 सप्तर्षिभ्यो नमः । ३० गङ्गादि सप्तसरिङ्गयो नमः । ३० सप्त
 कुलाचलेभ्यो नमः । ३० अष्ट वसुभ्यो नमः । ३० द्वादशादित्ये-
 भ्यो नमः । ३० एकादश रुद्रेभ्यो नमः । ३० एकोनपञ्चाशन्मरु-
 ङ्गयोनमः । ३० षोडशमातृभ्योनमः । ३० पड्भुवनमः । ३०
 द्वादश मासेभ्योनमः । ३० उभाभ्यामयनाभ्यां नमः । ३० पञ्चदश
 तिथिभ्योनमः । ३० षष्टिसम्बत्सरेभ्योनमः । ३० सुपर्णाय नमः ।
 आवाहयामि स्थापयामि ॥ इति ग्रहयाग भद्रस्थ देवताः संस्था-
 प्य—प्राण प्रतिष्ठां कुर्यात्—३० एतन्तेदेव सवितर्यज्ञं प्राहु बृहस्प-
 तये ब्रह्मणे । तेनयज्ञ मवतेन यज्ञपतिं तेनमामव । मनोयूतिर्जु-
 पता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ र्दं० समिमं
 दधातु । त्विश्वेदेवाऽऽइहमादयन्तामो प्रतिष्ठ । ३० भूसुवः स्वः
 ग्रहभद्रस्थ देवताः, इहागच्छतेहतिष्ठत सुप्रतिष्ठिता वरदाभवत ।
 इतिप्रतिष्ठाप्य सङ्गपूजनं कुर्यात्—आसनम्—३० नानावर्णमयं दिव्यं
 पवित्रं शुद्धमासनम् । प्रगृह्णन्तु मया दत्तं ग्रहभद्रस्थदेवताः । आवा-
 हनम्—पूर्वमावाहिता देवा ग्रहयागार्थं कर्मणि करोम्यावाहनन्तेपां

सर्वेषां सङ्घपूजने ॥ पाद्यम्—जलमेतत्तुपाद्यार्थं पात्रस्थंगन्धसंयु-
तम् । प्रगृह्णन्तुमयादत्तं ग्रहभद्रस्थदेवताः । अर्घ्यम्—कुशाक्षतैः
समायुक्तं ताम्रपात्रस्थ मुत्तमं । अर्घ्यं गृह्णन्तुतेसर्वे ग्रहभद्रस्थ
देवताः । पञ्चामृतम्—पयोदधि घृतक्षौद्र शर्करा मिश्रितं परम् ।
पञ्चामृतं प्रगृह्णन्तु ग्रहभद्रस्थ देवताः । स्नानीयम्—यथालब्धं
परंद्रव्यं गन्धौषधि विमिश्रितम् । जलं गृह्णन्तु स्नानीयं ग्रह
भद्रस्थ देवताः । यज्ञोपवीतम्—वेदोक्त विधिना शुद्धकार्पास
निर्मितानि च । उपवीतानि गृह्णन्तु ग्रहभद्रस्थ देवताः । वस्त्राणि
—दिव्य रंगैः सुरक्तानि ग्रहाणां भिन्नरूपिणाम् । वासांसि
प्रति गृह्णन्तु ग्रहभद्रस्थ देवताः । भूषणानि—भूषणार्थमिदं द्रव्यं
भूषणानिचवा यथा । देशकालानुकूलतल्लब्धं गृह्णन्तुमेग्रहाः ।
चन्दनम्—कस्तूरी कुंकुमयुतं निमी केशर कल्पितं । चन्दनं प्रति-
गृह्णन्तु ग्रहभद्रस्थ देवताः । अक्षतानि—चन्दनोपरिशोभार्थं मत्त-
ताग्निर्मलाञ्जुमान् । प्रगृह्णन्तु मयादत्तान् ग्र० भद्र० देवताः ।
पुष्पाणि—ऋतुजानिच पुष्पाणि कुन्द जातिजपानिच । पत्रं दूर्वाः
प्रगृह्णन्तु ग्रहभद्रस्थ देवताः । धूपम्—मासी चन्दन संयुक्तं गुग्गु-
लेन समन्तिम् । धूपं गृह्णन्तुते सर्वे ग्रहभद्रस्थ देवताः । दीपम्—
सात्यं सद्दत्तिकाभिश्च योजितं निमिरापहम् ॥ दीपं गृह्णन्तुते सर्वे
ग्रहभद्रस्थ देवताः । नैवेद्यम्—घृतपक्वं पयः पक्वं नैवेद्यं स्वादु
चूर्णकम् । गृह्णन्तु परयाप्रीत्या ग्रहभद्रस्थ देवताः । आचम-
नम्—नैवेद्यांगाचमं दिव्यं शीतलं निर्मलं जलम् । करानन विशु-
ध्यं गृह्णन्तु सर्वदेवताः । उपायनम्—उपायनं मिदं द्रव्यं यथावि-
त्तो ग्लव्यकम् । प्रगृह्णन्तु मयादत्तं ग्रहभद्रस्थ देवताः । फलम्—
पूर्णाफलं श्रीफलं च लवंगं कदलीफलम् । प्रगृह्णन्तु यथालब्धं
ग्रहभद्रस्थ देवताः ॥ पुष्पाञ्जलिः—ॐ ब्रह्मा सुरारिन्त्रिपुरान्त-
कारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ॥ गुरुश्च शुक्रः शनि राहु
केतवः सर्वग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥ सूर्यः सौर्यमथेन्दुरुक्ष
पदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः

शुभं-शंशनिः ॥ राहुर्वाहुवलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं
नित्यं श्रीनि कराभवन्तु ममते सर्वेऽनुकूलाग्रहाः ॥

इति ग्रहयाग कर्मणि ग्रहस्थापन पूजन पद्धति ।



अथ ग्रहयाग विधौ ग्रहहोम पद्धतिः ॥

अथचाचार्यो यजमानेन सपत्निनासह होमकुण्ड सन्निधिमा-
गत्यो पविश्य यजमानः पत्नीं १ स्वदक्षिणतोपवेशयित्वा होम
कुण्डोत्तरभागे निर्मित २ ग्रहवेद्यां, पूर्वोक्त प्रकारेण ग्रहाना
वाह्य सम्पूज्य च ॥ तत्रेशानप्रदेशे कलशंच संस्थाप्य, तस्मिन्क-
लशे पञ्चाशत्कुश निर्मितं चतुर्हस्तं चतुर्मुखं, ब्रह्माणं च संस्थाप्य,
कलशपूजोक्त विधिना, महीद्यौरित्यादि प्रसन्नो भव सर्वदेत्यन्तं
कर्मकृत्वा, कृता कृता वेक्षणरूप ब्रह्माणं च सम्पूज्य, गणेशं
पुष्पां जलिं निवेद्य, होमपद्धत्यनुसारेण, अग्निस्थापनादि
कर्मकृत्वा पूर्वोक्त प्रकारेण आचार्यादीन्वृत्वा, तत आचार्यो
ब्रह्मोपवेशनादि पर्युक्षणान्तं कर्मकृत्वा संस्रव धारणार्थं प्रोक्षणी
पात्रं अग्निप्रणीतयोर्मध्ये संस्थाप्य, द्रव्य देवताभिध्यानं कुर्यात् ॥
संकल्पः—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकोऽहं, अमुककर्मणि
नवग्रह मखे, प्रजापतिं, इन्द्रं, अग्निं, सोमं, आज्येन, प्रधानानि

टि—१ स्मृति सग्रहे—ग्रतवन्ने विवाहे च चतुर्थ्या सहभोजनं ॥ व्रतेदान भवे
आद्ये पत्नी तिष्ठति दक्षिणे ॥

टि—२ तस्य चोत्तर पूर्वेषु पितृस्ति त्रय संस्थितम् ॥ इत्यादि ग्रहयाग पंति-
भोषोक्त प्रमाणेन वेदां निर्मापयन् ॥

सूर्यः सोमं भौमं, बुधं, गुरुं भृगुं, शनिं, राहुं, केतुं, च प्रत्येक
मष्टाहुतिभिः, समिच्चर्वाज्य यवतिल द्रव्यैः ईश्वरं, उमां,
स्कन्दं, विष्णुं, ब्रह्माणं इन्द्रं, यमं, कालं चित्रगुप्तं, अग्निं, अपः,
भूमिं, विष्णुं, इन्द्रं, इन्द्राणीं, प्रजापतिं, सर्पान्, ब्रह्माणं च तैरेव
द्रव्यैः, प्रत्येकं चतुः संख्यकाहुतिभिः । विनायकं, दुर्गां वायुं
आकाशं, अश्विनौ, इन्द्रं, अग्निं, यमं, निर्ऋतिं, वरुणं, वायुं,
कुबेरं, ईशानं, ब्रह्माणं, अनन्तं च, तैरेव द्रव्यैः, प्रत्येकं द्विसंख्या
हुतिभिः । शेषेण खिष्टकृतं अग्निं, वायुं, सूर्यं, अग्निवरुणौ,
अग्निं, वरुणं, सवितारं, विष्णुं, विश्वान्देवान्ममृतः स्वर्कान्,
वरुणं, प्रजापतिं, चाज्येनाहं—यद्ये, अथन यजमानः आचार्या
दीनां होम कर्तृत्वे यजमानस्य प्रत्याहुति यथोक्त त्यागस्या
सम्भवात् संकल्प विधिना इदानीमेव सर्पेभ्यो देवेभ्यो त्यागं
कुर्यात्—अथेत्यादि देशकालौ संकीर्त्या मुक्तोऽहं अमुक कर्मणि
नवग्रहमग्ने, एतत्सम्पादित मिदं समिद्यव तिलाज्य द्रव्यं,
आदित्याय, सोमाय, भौमाय, बुधाय, गुरवे, शुक्राय शनये,
राहवे, केतवे, ईशाय, उमायै, स्कन्दाय, विष्णवे, ब्रह्मणे, इन्द्राय,
यमाय, कालाय, चित्रगुप्ताय, अग्नये, अद्भ्यः, पृथिव्यै, विष्णवे,
इन्द्राय, इन्द्रायै, प्रजापतये, सर्पेभ्यः, ब्रह्मणे, विनायकाय,
दुर्गायै, वायवे, आकाशाय, अश्विभ्यां, इन्द्राय, अग्नये, यमाय,
निर्ऋतये, वरुणाय, वायवे, कुबेराय, सोमाय, ईशानाय, ब्रह्मणे,
अनन्तायच, मयापरित्यक्तं तत्तद्देवताकमस्तुनमम । इतिद्रव्यत्यागं
कृत्वा वरदनामाग्निंसम्पूज्य प्रतिष्ठाप्यच ब्रह्मणान्वारब्धः कुश-
करिडकोक्तप्रकारेण प्राक्संस्थौआधारौहुत्वा समिद्धतमेर्ग्नौआज्य-
भागौचहुत्वा, अनन्वारब्धः ऋत्विक्सहिताचार्यः यथोक्तघृता-
क्तसमिदादिहोमं सृगीमुद्रया १—कुर्यात्—२—अथहोममन्त्राः—

टि० १—परशुगम कारिकासु—मुक्तकनिष्ठातर्जनी सृगीमुद्राप्रकीर्तिता ॥ भृगी-
मोक्षेप्रकर्त्तव्या आहुतिः सर्वकामिका ॥ शान्तिकेतुसृजांज्ञया ॥ इति ॥

तत्रादौ कुराडेकपिलाग्निं आवाहयेद्रक्तपुष्पाक्षतैः—ॐ भूर्भुवःस्वः
 कपिलाग्ने इहसन्निधो भव ॐ कपिलाग्नेनमः, कुण्डे तस्मिन्ने-
 षान्नौ पाद्यगन्धाक्षतादिभिः सम्पूज्य-विनियोगः—ॐ आकृ-
 ष्णोति हिरण्यस्तूपऋषिं ख्रिष्टुष्णुन्दः सविता देवता सूर्यप्रीतये
 कपिलाग्ने अर्कसमिद्धोमे यथोक्तद्रव्यहोचविनियोगः ॥ ॐ
 आकृष्णो नरजसा ववर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन
 सवितारथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्-स्वाहा ३—ततः सूर्याधि-
 देवस्य—ॐ अथ म्वकमिति वशिष्ठऋषिरनुष्टुप्छन्दो रुद्रो देवता
 रुद्रप्रीतये पलाशसमिद्धोमे (यथोक्तद्रव्य) होमे विनियोगः—ॐ
 अथ वक्रं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो
 मुक्षी यमाऽमृतात्स्वाहा ॥ ततः सूर्यप्रत्याधि देवस्य—ॐ अग्निदूत-
 मिति विरूपाक्षऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निदेवता, अग्निप्रीतये पलाश
 समिद्धोमे वायवतिलाज्य होमे विनियोगः—ॐ अग्निदूतं पुरो-
 दधे हन्यवाह मुपवृवे । देवाँऽऽ ॥ आसादयादिह स्वाहा ॥ इदमग्नये ॥

टि० २—अत्र ग्रहाणां साधिदेव प्रत्यधिदेवानां च होमानुमारेणाहुतिमानमाह
 संस्कारभास्करादौ अत्र द्रव्यदेवता भिधानेकेवलग्रहयागे अष्टाभिः
 सख्याभिः नवग्रहाणां समिद्धाम्, इष्यते । ग्रहहोमसंस्कारमाधिदेवानां च
 अधिदेवाद्यसख्याहोमप्रत्यधिदेवानां । अयत्तु तत्रकोटि होमादिषु तु,
 क्रमेण ग्रहाणां, अष्टाष्टविंशत्यष्टात्तरसहस्रसख्या भवन्ति ॥ ग्रहाणां प्रत्य-
 ष्ठीदेवानान्तु अष्टाष्टाविंशति, अष्टात्तरशतसख्या भवन्ति, विनायकादीनां
 सर्वेशान्तु—चतुरष्टाष्टविंशति सख्याश्च भवन्ति ॥ नृसिंहपुराणे—अयु-
 तादिसख्याश्च व्याहृतिभिः स्तिलाज्यहोमेषु पूर्णया इति ॥

टि० ३—अत्र नवग्रहात्मके मन्त्रे प्रवानानां सूयादिग्रहाणां प्रथम, २ अग्निनिर्देशेन
 तत्तद्गनाववाहुतानां मौचित्येऽपि तदधि प्रत्यधिदेवानां प्रथमाग्निनिर्देशा-
 भावेन स्वकीयप्रवानाग्राह्यत्वेनापि साहचर्यन्यायेन हामाविधेः शक्ते—
 (योऽहिन्य प्रधानं तद्विधेस्तद्गोप्यति निर्दिष्टत्वात्) इति ॥

इतिसूर्य साङ्गहोमः ॥१॥ चन्द्रस्य-तत्रकुण्डे-पिंगलनामाग्निं श्वेत
 पुष्पाक्षतैरावाहयेत् ॥ ३० भूर्भुवःस्वः पिंगलाग्ने, इहागच्छेहतिष्ठ,,
 ३० पिंगलाग्नेयेनमः ॥ गन्धादिभिःसम्पूज्य । ॐ इदं देवा ऽ इति
 गौतमऋषिर्द्विपदाविराद्भृन्दः सोमो देवता सोमप्रीतये पिंगला-
 ग्नौ पलाशसमिद्धोमे तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः—ॐ इमं-
 देवाऽ असपत्न र्दं सुवध्वंमहतेक्षत्राय महतेज्यैष्ठायमहते जान
 राजायेन्द्रसेन्द्रियाय । इममसुष्यपुत्रमसुष्यैपुत्रमस्यैविशऽएवोमी
 राजा सोमो ऽ स्माकं ब्राह्मणाना ॐ राजास्वाहा-इदंसोमाय ॥
 ततः सोमाधिदेवताउमायै—ॐ श्रीश्रुतेऽत्युत्तर नारायणऋषि
 म्त्रिष्टुष्टुन्दः उमादेवता उमाप्रीतयेपलाशसमिद्धोमे तिलयवाज्य
 होमेवा विनियोगः—ॐ श्रीश्रुतेलक्ष्मीश्रुपत्न्या बहोरात्रेपार्श्वे
 नक्षत्राणिरूपमश्विनौद्यात्तम् । इष्णन्निपाणमुम्म ऽ इपाणसर्व-
 लोकम्म ऽ इपाणस्वाहा । इदमुमायै ॥ ततःसोमप्रत्यधिदेवता
 द्भ्यः—ॐ अश्वन्तरिनिवृहस्पतिर्ऋषिरुष्णिक्भृन्दः, आपो
 देवता, अपांप्रीतयेपलाशसमिद्धोमे, तिलयवाज्यहोमेवा विनि० ।
 ॐ अश्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपासुतप्रशस्ति ष्वरवाभवतन्वा-
 जिनः । देवीरापोयोव ऽ ऊर्मिः प्रतूत्तिः ककुम्भान्याजसा स्तेना-
 ऽ यं च्वाज र्दं सेत्-स्वाहा, इदमद्भ्यः ॥२॥ इतिचन्द्रसाङ्गहोमः
 ततोभौमस्य ततः कुण्डेरक्तपुष्पाक्षतैर्धूम्रकेत्वग्निमावाहयेत्-३०
 भूर्भुवःस्वः धूम्रकेत्वग्ने, इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ धूम्रकेत्वग्नेयेनमः,
 सम्पूज्य-ॐ अग्निर्मुद्गाइति विरूपाक्षऋषिर्गायत्रीभृन्दः भौमो
 देवता भौमप्रीतये धूम्रकेत्वग्नौखदिरममिध्दोमे, तिलयवाज्य
 होमेवा, विनियोगः । ॐ अग्निर्मुद्गादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या
 ऽ अयम् । अपा ॐ रेता ॐ सिजिन्वति-स्वाहा ॥ इदंभौमाय ॥
 ततोभौमाधिदेवस्कन्दाय ३० यदक्रन्द इति भार्गव जमदग्नि,
 दीर्घतमसऋषय स्त्रिष्टुष्टुन्दः स्कन्दो देवता स्कन्दप्रीतये
 पलाशसमिध्दोमे तिलयवाज्य होमेवा विनियोगः ॥ ॐ

यदक्रन्दः प्रथमंजायमानऽ उच्यन्तसमुद्रा दूतचापुरीपात् ।
 श्येनस्यपक्षा हरिणस्यबाहूऽउपस्तुत्यं महिजातन्तेऽ अर्वन्त्स्वाहा ।
 इदंस्कन्दाय, ततो भौम प्रत्यधिदेवतायै पृथिव्यै—ॐ स्योनापृ-
 थिवीति मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः पृथिवीदेवता पृथिवी
 प्रीतये पलाशसमिधोमे तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः ॥ ३०
 स्योनापृथिविनो भवानृत्तरानिवेशनी । यच्छानः शर्मसप्रथाः
 स्वाहा । इदंपृथिव्यै । इति भौमसाङ्गहोमः ॥३॥ अथबुधस्य—ततः
 कुंडेपीतपुण्याक्षतैः जाठराग्निमावाहयेत्—ॐ भूर्भुवः स्वः जाठ-
 राग्ने, इहागच्छेदितिष्ट, ॐ जाठराग्नयेनमः । संपूज्य ३० उद्बु-
 ध्यस्वेति परमेष्ठी ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो बुधोदेवता बुधप्रीतये जाठरा-
 ग्नौ, अपामार्गं समिधोमे तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः । ॐ
 उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृह्णित्व मिष्टापत्तंस ई० मृजेथामयञ्च ।
 अस्मिन्सधमध्येऽ अद्युतरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत स्वाहा
 इदंबुधाय । ततो बुधाधिदेवाय विष्णवे ॐ विष्णोरराट मिति
 दीर्घतमा ऋषि रुष्णिक्छन्दो विष्णुर्देवता विष्णुप्रीतये पलाशस-
 मिधोमे तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः । ॐ विष्णोरराटमसि
 विष्णोः शनप्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्भुवोऽसि वैष्णव-
 मसि विष्णवेत्वा स्वाहा । इदंविष्णवे । ततोबुधप्रत्यधिदेवाय
 विष्णवे—ॐ इदंविष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दो नाराय-
 णोदेवता, विष्णुप्रीतये पलाशसमिधोमे तिलयवाज्यहोमेवा
 विनियोगः । ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपा
 ॐ सुरेस्वाहा—इदंविष्णवे । इति बुध साङ्गहोमः ॥४॥ अथगुरोः
 ततः शिखिनामाग्नि पीतपुष्पाक्षतैरावाहयेत्—ॐ भूर्भुवः स्वः
 शिखिनामाग्ने इहागच्छेदितिष्ट, ॐ शिखिनामाग्नयेनमः संपूज्य,
 ॐ बृहस्पति इति गृत्समद ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः बृहस्पतिर्देवता
 बृहस्पति प्रीतयेशिख्यग्नौ अश्वत्थसमिधोमे तिलयवाज्यहोमेवा
 विनियोगः । ॐ बृहस्पतेऽ अतियदग्न्योऽ अर्हासुमद्विभाति

ऋतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छ्रवसऽ ऋतप्रजा ततस्मासु द्रविणधेहि-
चित्रम्—स्वाहा, इदं बृहस्पतये । ततो गुरोरधिदेवाय ब्रह्मणे—ॐ
ब्रह्मयज्ञानमिति प्रजापतिर्ऋपिस्त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मादेवता ब्रह्मप्रीतये
पलाशसमिधोमे तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः । ३० ब्रह्मज-
ज्ञानं प्रथमं पुरस्ता द्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽत्रावः सबुधःयाऽउपमा
ऽअस्यविष्टाः सतश्चयोनि मसतश्चविवः स्वाहा । ततः प्रत्यधि-
देवाय इन्द्राय—ॐ त्रितारमिति गर्गर्ऋपिस्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता
इन्द्रप्रीतये पलाशसमिधोमे, तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः ॐ
त्रितारमिन्द्र मवितारमिन्द्र ई० हवेहवेसुहव ई० शूरमिन्द्रम् ।
ह्यामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्र ई० स्वस्तिनोमथवाधात्विन्द्रः स्वाहा ।
इदमिन्द्राय, इति गुरोः साङ्गहोमः ॥५॥ अथशुक्रस्य—ततः कुण्डेहा-
टकनामार्गिणं श्वेतपुष्पाक्षतैरावाहयेत्—३० भूर्भुवः स्वः हाटकाग्ने
इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ हाटकाग्ने नमः इति संपूज्य ॐ अघ्रात्प-
रिश्रुत इति प्रजापत्यशिव सरस्वतीन्द्राऋषयः, जगतीछन्दः शुक्रो
देवता शुक्रप्रीतये हाटकाग्नौ उदुम्बर समिधोमे तिलयवाज्यहो-
मेवा विनियोगः । ३० अघ्रात्परिश्रुतोरसंब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रंपयः-
सोमंप्रजातिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ई० शुक्रमंधसऽइन्द्र-
स्येन्द्रियमिदंपयो मृतंमधु स्वाहा । ततः शुक्राधिदेवायेन्द्राय—
३० सजोषा इन्द्र इति विश्वामित्र ऋपिस्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता
इन्द्रप्रीतये पलाशसमिधोमे, तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः ।
ॐ सजोषाऽइन्द्रसगणो मरुद्भिः सोमंपिव वृत्रहा शूरविद्वान् ।
जहिशत्रूँ ॥ ५ रपमृधो नुदस्वाथा भयंकृणुहिद्विश्व तोनः—
स्वाहा । इदमिन्द्राय । ततः प्रत्यधिदेवते द्राण्यै—३० अदित्यै रास्ना
सीतिदध्यङ्गैर्धर्वण ऋपिर्यजुश्छन्दः, इन्द्राणीदेवता इन्द्राणी
प्रीतये पलाशसमिधोमे तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः ॥ ३०
अदित्यै रास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः पूषाऽसिधर्माय दीप्त्वस्वाहा ।
इदमिन्द्राण्यै ॥ इति शुक्रस्यसाङ्ग होमः ॥ अथशनेः—कुण्डेमहाते-

जोगिनं कृष्णाक्षत पुष्पैरावाहयेत्—३० भू० महातेजोग्ने इहाग-
 च्छेहतिष्ठ, ३० महातेजोग्ने नमः सम्पूज्य ॥ ३० शन्नोदेवी रि-
 तिदध्यङ्गोर्ध्वेण ऋषिर्गायत्रीछन्दः शनिर्देवता शनिप्रीतये महाते-
 जोऽग्नौ शमीसमिद्धोमे वायवतिलाज्य होमे विनियोगः ॥ ३०-
 शन्नोदेवीरभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये । संयोरभिश्चवन्तुनः-
 स्वाहा—इदंशनये, ततः शनेरधिदेवाययमाय—३० असियम
 इति भार्गव जमदग्नि दीर्घतमस ऋषयश्चिष्टुच्छन्दः यमोदेवता-
 यमप्रीतये पलाशसमिद्धोमे तिलयवाज्य होमेवा वि० । ३० असि-
 यमोऽस्यदित्योऽथर्वन्नसि त्रितोगुह्येनच्चतेन । असिसोमेन स
 मया च्विष्टुक्त ऽ आहुस्ते त्रीणि दिविवन्धनानि—स्वाहा ॥ इदंय
 माय । अत्रोदक स्पर्शः ॥ ततः प्रत्यधिदेवायकालाय—ॐ कार्पि-
 रसीति प्रजापतिर्ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः कालोदेवताकालप्रीतये
 पलाश समिद्धो मे यवति लाज्य होमेवा विनियोगः ॥
 ॐ कार्पिरसि समुद्रायत्वा ऽ अक्षित्या ऽ उन्नयामि । समापोऽ
 अद्भिरग्मतसमोपधीभिरोपधीः स्वाहा । इदंकालाय- पुनरुदक
 स्पर्शः ॥ इतिशनेः साङ्गहोमः ॥७॥ अथराहोः—ततःकुण्डेहुताशना
 ग्निं कृष्णाक्षतपुष्पैरावाहयेत्—ॐ भूर्भुवःस्वः हुताशनाग्ने इहा-
 गच्छेहतिष्ठ, ॐ हुताशनाग्नेनमः सम्पूज्य ॥ ॐ कयानश्चित्र
 इति वामदेव ऋषिर्गायत्रीछन्दः, राहुर्देवताहुताशनाग्नौ राहु-
 प्रीतये दूर्वा समिद्धोमेवातिलाज्यहोमे विनियोगः । ॐ कयान-
 श्चित्र ऽ आभुवदृतीसदावृधः । सखाकयास चिष्टयावृतास्वाहा ॥
 इदंराह्वे ॥ ततोराहोरधिदेवाय कालाय—ॐ कार्पिरसीति प्रजा
 पतिर्ऋषि रनुष्टुप्छन्दः कालोदेवता कालप्रीतयेपलाशसमिद्धोमे
 तिलयवाज्य होमेवा विनियोगः । ॐ कार्पिरसिसमुद्रस्यत्वा ऽ
 क्षित्या ऽ उन्नयामि । समापो ऽ अद्भिरग्मत समोपधीभिरोपधीः
 स्वाहा । इदंकालाय । ततःप्रत्यधिदेवेभ्यः सर्पेभ्यः—३० नमोस्तुस-
 र्पेभ्य इति प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सर्पादेवताः सर्पाणांप्रीतये

पलाशसमिद्धोमे तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः । ३० नमोस्तु-
सर्पेभ्योयेकेच पृथिवीमनु । ये ऽ अन्तरिक्षेयेदिवितेभ्यः सर्पेभ्यो
नमः—स्वाहा । इदं सर्पेभ्यः । इतिराहोःसाङ्गहोमः ॥८॥ अथकेतोः
(क्वचित्पुस्तके केतोरोहिताग्निदर्शनात्) ततःकुरण्डेधूम्रपुष्पासूते
रोहितनामाग्निमावाहयेत्—३० भूर्भुवः स्वः रोहिताग्ने इहागच्छे
दतिष्ठ, ॐ रोहिताग्ने नमः सम्पूज्य, ॐ केतुकृण्वन्निति मधु-
श्छन्दा ऋषिर्गायत्रीछन्दः केतुर्देवता केतुर्प्रीतये रोहिताग्ने कुर-
समिद्धोमे तिलयवाः य होमेवा विनियोगः ॥ ३० केतुं कृण्वन्नकेतवे
पेशो मय्याऽअपेशसे । समुपङ्गिरजायथा स्वाहा । इदं केतवे-
ततः केतोरधिदेवाय चित्रगुणाय—३० चित्रावसोरिति राशि
दैवत्य ऋषिः, जगतीछन्दः चित्रगुप्तो देवता चित्रगुप्त प्रीतये
पलाशसमिद्धोमेतिलयवाज्यहोमे त्रि० ॥ ३० चित्राव्वसो स्वस्तिते
पारमशीय—स्वाहा । इदं चित्रगुणाय । ततः केतोः प्रत्यधि देवाय
ब्रह्मणे—३० ब्रह्मजज्ञानमिति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो ब्रह्मादेवता
ब्रह्मप्रीतयेपलाशसमिद्धोमेवातिलयवाज्यहोमे त्रि० । ३० ब्रह्मजज्ञानं
प्रथमं पुरस्ताद्विहीततः सुन्वोव्वेन आवः । सवुष्ण्या ऽ उपमा ऽ
अस्यविष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः स्वाहा—इदं ब्रह्मणे ॥
इति केतोः सांगहोमः ॥९॥ अथ विनायकादि पञ्चलोकपाला-
नाम्—३० गणानान्त्वेति प्रजापतिर्ऋषिर्गणेशछन्दो गणपतिर्देवता
गणपति प्रीतये पलाश समिद्धोमे तिलयवाज्य होमेवा विनि० ॥
३० गणानात्वा गणपति र्द० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्द०
हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्द० हवामहे व्वसोमम । आहमजा-
निगर्भर्भधमात्य मजा सिगर्भधम्—स्वाहा । इदंगणपतये ॥१॥
३० अम्बेअम्बिके इतिप्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः दुर्गादेवता दुर्गा
प्रीतये पलाशसमिद्धोमे यवतिलाज्य होमेवाविनियोगः ॥ ३० अम्बे
अम्बिके ऽ अम्बालिके नमानयनिकश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रि-
कां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा ॥ इदं दुर्गायै ॥ ३० वातोवेति
वृहस्पति ऋषिः, उष्टिण्छन्दः वातो देवता वायु प्रीतये पलाश

समिद्धोमेवा तिलयवाज्य होमे वि० । ॐ व्यानोवा मनोवा गन्ध-
 र्वाः सप्तविंशतिः । ते ऽ अग्नेऽश्व मयुञ्जस्तेऽअस्मिन्जव-
 मादधुः—स्वाहा, इदंवायवे ॥ ॐ ऊर्ध्वा अस्थेति प्रजापतिर्ऋषिः
 उष्णिक्छन्दः आकाशो देवता आकाश प्रीतये पलाश समिद्धोमे
 वायवतिलाज्यहोमे वि० । ॐ ऊर्ध्वा ऽ अस्यासमिधो भवन्त्य-
 र्ध्वा शुक्राशोचीऽप्यग्नेः । तुमत्तमा सुप्रतीकस्य सूनोः—स्वाहा ॥
 इदमाकाशाय । ॐ यावाङ्कशेति मेधानिश्चिर्ऋषिः गायत्रीछन्दः,
 अश्विनोदेवते अश्विनोः प्रीतये पलाश समिद्धोमेवायवतिलाज्य
 होमे वि० । ॐ यावाङ्कशामधुमत्यश्विना सवृतावती । तथा
 यजामिमि—क्षतम् स्वाहा ॥ इदमश्विभ्याम् ॥ ॐ वास्तोष्पतीनि
 वज्रिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वास्तोष्पतिर्देवता वास्तोष्पनि प्रीतये
 पलाशसमिद्धोमे, वायवतिलाज्यहोमे वि० । ॐ वास्तोष्पने
 प्रतिजानी ह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः । यत्वेमहे प्रति-
 तन्नो जुपस्व शन्नोभव द्विपदे शञ्चतुष्पदे—स्वाहा ॥ इदं वास्तो-
 ष्पतये । ॐ जेत्राधिपतये स्वा० । अथेन्द्रादिलोकपालानाम् ॐ
 त्रातारमितिगर्गऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रोदेवता इन्द्रप्रीतयेपालाश-
 समिद्धोमे वा तिलयवाज्य होमे वि० । ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार
 मिन्द्र ई० हवेहवे सुहव ई० शूरमिन्द्रम् । हयामि शक्रं पुम्हृत
 मिन्द्र ई० स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः—स्वाहा । इदमिन्द्राय ।
 ॐ अनिन्दृतमिति विरूपाक्ष ऋषिः गायत्री छन्दः, अग्निर्देवता
 अग्नि प्रीतये पलाश समिद्धोमेवा यवतिलाज्य होमे विनियोगः ।
 ॐ अग्निदत्तं पुरोर्दधे हव्यवाह सुपृष्टवे । देवा २॥ऽ आसादया
 दिह—स्वाहा । इदमग्नये । ॐ यमइति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो
 यमोदेवता यमप्रीतये पलाश समिद्धोमेवा तिलवाज्यहोमे वि० ॥
 ॐ यमश्विना सरस्वती हविषेन्द्र मबर्धयन् । सविभेदवक्षे
 भवन्नमुचाना सुरेसचा—स्वाहा । इदंयमाय ॥ अत्रोदक स्पर्शः ॥
 ॐ नमः सुत इत्यस्य मधुश्छन्दा ऋषिः पंक्तिश्छन्दो निर्ऋतिर्दे-
 वता निर्ऋति प्रीतये पलाश समिद्धोमेवा तिलयवाज्य होमे

वि० । ३० नमः सुतेनिर्ऋतेतिग्मतेजो यस्मयं विचृत्तावन्धमेनम्
 स्वाहा ॥ इदं निर्ऋतये ॥ ३० इमम्म इत्यस्य शुनः शेष ऋपि,
 गायत्रीछन्दो वरुणो देवता वरुण प्रीतये पलाशसमिद्धोमे वातिल
 यवाज्यहोमे वि० ३० इमस्मे वरुण श्रुधी हवमद्याचमृडयत्वामव-
 सपुराचके स्वा० इदं वरुणाय । ३० आनोनियुद्धिरिति वशिष्ठ ऋपिस्त्रि
 ष्टुच्छन्दोवायुर्देवतागुप्रीतये पलाशसमिद्धोमेवा निलयवाज्यहोमे
 वि० । ३० आनोनियुद्धिः शतनीभिरध्वर ई० सहस्रिणीभिरुप-
 याहि यजम् । द्वायोऽ अस्मिन्सवने मादयस्व यूयंपातः स्व-
 स्तिभिः सदानः—स्वाहा इदंवायवे । ३० वयमिति बन्धुऋपि
 स्त्रिष्टुच्छन्दः कुबेरो देवता कुबेर प्रीतये पलाश समिद्धोमेवा नि-
 लयवाज्य होमे वि० । ३० व्वय ई० सोमव्रते तवमनस्तनृपु
 विभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि—स्वाहा । इदं कुबेराय । ३० तमी-
 शानमिति गौतम ऋपिर्जगती छन्दः ईशानो देवता, ईशानप्रीतये
 पलाशसमिद्धोमेवा निलयवाज्य होमे वि० ॥ ३० तमीशानंजग-
 तस्तस्थुपस्पतिं धियंजिन्व मवसेहृन्वेव्यम् । पूपानो यथावेद
 साम सद्वृथे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये—स्वाहा, इदमीशानाय
 ३० ब्रह्माणस्पत इत्यस्य याज्ञवल्क्य ऋपिस्त्रिष्टुच्छन्दः, ब्रह्मादेवता
 ब्रह्म प्रीतये पलाशसमिद्धोमेवा निलयवाज्य होमे वि० । ३०
 ब्रह्माणस्पतेत्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधितनयं च जिन्व । विश्वं
 तद्भद्रं व्यदवन्ति देवा बृहद्भदेम । द्वादथेसुवीराः—स्वाहा । इदं
 ब्रह्मणे ॥ ३० याऽपव इत्यस्य देवश्रवा ऋपि रनुष्टुच्छन्दः, अन-
 न्तो देवता अनन्त प्रीतये पलाश समिद्धोमेवानिलयवाज्य होमे
 वि० ॥ ३० याऽपवो यातुधानानां व्येयाव्वनस्पती ३॥ रनु । येवा
 व्यदेषुशरतेतेभ्यः सर्वेभ्योनमः स्वाहा इदमनन्ताय ॥ ३० विश्वक-
 र्म्मन्निति भरद्वाजः शाशऋपि स्त्रिष्टुच्छन्दो विश्वकर्मा देवता
 विश्वकर्म्म प्रीतये पलाश समिद्धोमेवा निलयवाज्य होमे
 वि० ॥ ३० विश्वकर्म्मन्हृदिषा व्यर्ध्वेनेनत्रानारमिन्द्र
 मकृणोरबध्यम् । तस्मैविशः समनमन्तपूर्वोरयमुग्रोद्विहृष्यो

यथासत्—स्वाहा । इदं विश्वकर्म्मणे अतः परं शेषा
 दीनां होमनाम मंत्रैर्जुहुयात्--ॐ शेषाय स्वाहा, इदं
 शेषाय । ॐ वासुकये स्वाहा, इदंवासुकये । ॐ तक्षकाय स्वाहा
 इदं तक्षकाय । ॐ कर्कोटकाय स्वाहा, इदं कर्कोटकाय । ॐ
 पद्माय स्वाहा, इदंपद्माय । ॐ शंखपालाय स्वाहा, इदं शंखपा-
 लाय । ॐ महापद्मायस्वाहा, इदंमहापद्माय । ॐ कंवलायस्वाहा
 इदं कंवलाय । ॐ अश्विन्यादि सप्तकेभ्यः स्वाहा । इदमश्विन्या
 दिभ्यः । ॐ विष्कुंभादि सप्तकेभ्यः स्वाहा, इदंविष्कुंभादिभ्यः
 ॐ घववालव कर्णाभ्यां स्वाहा, इदंघवादिभ्याम् । ॐ सप्त
 द्वीपेभ्यः स्वाहा, इदंसप्तद्वीपेभ्यः । ॐ ऋग्वेदायस्वाहा । इदं
 ऋग्वेदाय । ॐ पुष्यादि सप्तकेभ्यः स्वाहा, इदं पुष्यादिभ्यः ।
 ॐ धृत्यादि सप्तकेभ्यःस्वाहा, इदंधृत्यादिभ्यः । ॐ कौलवनैति
 लाभ्यां स्वाहा, इदंकौलवादिभ्याम् । ॐ लवणादि सप्तसागरे-
 भ्यःस्वाहा, इदंलवणादिभ्यः । ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा, इदंयजुषे ।
 ॐ स्वात्यादि सप्तकेभ्यः स्वाहा इदंस्वात्यादिभ्यः । ॐ वज्रादि
 सप्तकेभ्यः स्वाहा । इदं वज्रादिभ्यः । ॐ गरवणिजकर्णाभ्यां
 स्वाहा, इदंगरादिभ्याम् । ॐ अनलादि सप्तविदरेभ्यः स्वाहा ।
 इदमतलादि सप्तकेभ्यः । ॐ सामवेदायस्वाहा । इदंसामवेदाय ।
 ॐ अभिजितादि सप्तकेभ्यः स्वाहा, इदमभिजितादिभ्यः । ॐ
 साध्यादि षड्भ्यः स्वाहा, इदंसाध्यादिभ्यः । ॐ विष्टिकरणाय-
 स्वाहा, इदं विष्ट्यै । ॐ भूरादिसप्तोर्ध्वलोकेभ्यःस्वाहा, इदंभ्वा
 दिभ्यः । ॐ अथर्ववेदायस्वाहा, इदमथर्वाय । ॐ ध्रुवायस्वाहा
 इदंध्रुवाय । ॐ सप्तर्षिभ्यःस्वाहा, इदंसप्तर्षिभ्यः । ॐ गंगादि
 सरिद्भ्यः स्वाहा । इदं० । ॐ सप्तकुलाचलेभ्यः स्वाहा, इदं० ।
 ॐ अष्टवसुभ्यःस्वाहा, इदं० । ॐ द्वादशादित्येभ्यःस्वाहा, इदं० ।
 ॐ एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा । इदं० रुद्रेभ्यः । ॐ एकोनपंचाशन्म-
 रुद्भ्यः स्वाहा, इदं० । ॐ षोडशमातृभ्यःस्वाहा, इदं० । ॐ षड्
 ऋतुभ्यः स्वाहा, इदं० । ॐ मासेभ्यः स्वाहा, इदं० । ॐ अयना-

भ्यां स्वाहा, इदं० । ३० निधिभ्यःस्वाहा, इदं० । ३० पष्टिसंवत्सरे
 भ्यः स्वाहा, इदं० ३० सुपर्णाय स्वाहा, इदं सुपर्णाय,,—एवंवि-
 धिना ग्रहयागस्थ देवान्हुत्वा ततः स्वैष्टहोमं कुर्यात् ॥ स्वैष्ट हो-
 मावसाने—३० अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृतेन
 मम ॥ अथ भूरादि नवाहुति होमः— घृतेन—पातित वामजानुः
 ब्रह्माणान्वारब्धो भूरादि नवाहुतयःकुर्यात्—३० व्याहृतीनांप्रजा
 पतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्टिगनुष्टुप्छन्दांसि अग्निवायुसूर्यादेवताः, प्राय
 श्चित्त होमेविनियोगः । ३० भू० स्वाहा, इदमग्नयेनमम । ३०
 भुवः स्वाहा, इदंवायवे नमम । ३० स्वः स्वाहा, इदं० सूर्यायन
 मम । ३० त्वन्नो अग्ने इतिवामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः, अग्नी
 वरुणोदेवते सर्वप्रायश्चित्त होमे वि० । ३० त्वन्नो ऽ अग्ने वरु-
 णस्यन्विद्धान्देवस्यहेडो ऽ अवयासि सीष्टाः । यजिष्ठोवन्हितमः
 शोशुचानोन्विश्वाहेपः ॐ सिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा । इदमग्नी वरु-
 णभ्यांनमम ॥ ३० सत्वन्नो अग्ने इति वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः
 अग्नीवरुणोदेवते सर्वप्रायश्चित्तहोमे वि० ॥ ३० सत्वन्नो ऽअग्ने
 ऽअवमो भवोतीने दिष्टो ऽ अस्था ऽ उपसोऽ्युष्टो । अवयद्वनो
 वरुणं ३० रराणो व्वीहिंसृडीक ३० सुह्वोन ऽ एधिस्वाहा । इद
 मग्नीवरुणाभ्यांनमम ॥ ३० अयाश्चाग्ने इति प्रजापतिर्ऋषिर्विरा
 द्छन्दो अग्निर्देवता सर्व प्रायश्चित्त होमे वि० । ३० अयाश्चाग्ने
 हानमिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्व मयाऽअसि । अग्रानो यज्ञंन्वहास्य
 यानोधेहि भेषज ॐ स्वाहा । इदमग्नये नमम । ३० येतेशनमिति
 शुनःशेफ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणः सविता विष्णुर्विश्वे देवा मरुतः
 स्वर्काश्चदेवताः सर्वप्रायश्चित्त होमे वि० । ३० येतेशतंन्वरुणं ये
 सहस्रं यज्ञियाः पाशाव्वितना महान्तः । तेभिर्नो ऽ अथसवितो
 त न्यिष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा—इदं वरुणायसवित्रे
 विष्णवे विश्वेभ्योदेवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमम ॥ ३०
 ३० उदुत्तममिति शुनः—शेफ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणोदेवता सर्व
 प्रायश्चित्त होमे वि० ३० उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमं वि-

मध्यमर्धश्रधाय, अथाव्ययमा दित्यव्रतेनवा ऽनागसो ऽ अदिनये
स्याम-स्वाहा, इदं वरुणायसवित्रे (आज्यातिरिक्त द्रव्यहोमे-स्वि
ष्टकृधोमो व्याहृत्यादि होमात्प्रागेवाचरे दिति हरिहरः) केवला
ज्यहोमे त्विदांनीस्विष्टकृद्भवति, तनोवर्हिहोमः, ॐ स्वाहा,
प्रजापतयेनमम, ततः संस्रवंप्राश्यद्विराचम्य, पवित्राम्यां प्रणीता
जलेन, ॐ सुमित्रियान ऽ आप ऽ ओपधयः सन्तु, इतिमार्जनं
कृत्वा, ॐ स्वाहा, वन्दौप्रक्षिपेत्, ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुपो ऽ
स्मान्द्वेष्टियं च वयं द्विष्मः, इत्यग्नेः पश्चात्प्रणीता विमोकंकृत्वा
ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ अद्येत्यादिदेशकालौसंकीर्त्य, अमुकोहंग्रह
यागोक्त होमानुष्ठान विधिना, अमुकहोमकर्मणः सांगफलाप्तये,-
अपूर्णपूर्णार्थच इदंपूर्णपात्रं सदक्षिणंब्रह्मणे, अमुकशर्मणे ब्राह्म-
णायतुभ्यमहंसम्प्रददे ॥ ॐ तत्सन्नमम, इतिदत्त्वा, यजमानोवा
आचार्योपटेत्—ॐ अक्रन्कर्मकर्मकृतः सहवाचामयोभुवा । देवे-
भ्यःकर्मकृत्वा ऽ स्तं प्रेतसचाभुवः । ततः पूर्वोक्तप्रकारेण स्तुक्
स्तुवयोर्मार्जनंकृत्वा, ग्रहेभ्योवेद्युत्तरभागे वापूर्वभागे परिभाषोक्त
ग्रहभक्ष्यद्रव्यैः, यथा गुडौदनंरवेर्दद्याद्वा, पायसेन, वामापदधि
भक्तेनबलिदानंकुर्यात् ॥ सश्चायंक्रमः—ततोग्रहाणांवलीन् ज्वल
द्वर्तिकान्त्रिभिः पुटकैःपृथक्पृथक् साधिप्रत्यधि देवताभ्यश्च नव-
त्रिकंसंस्थापनं सदक्षिणश्चकुर्यात् ॥ अथसूर्यादित्रिकस्य, बलिदा-
नम्—ततःपुटकत्रिकंसम्मुखेकृत्वाचम्य, हस्तेजलंगृहीत्वा—ॐ
सूर्यायसाङ्गाय सपरिवाराय सायुधायसशक्तिकायैवं दक्षिणभागे
व्यम्बकाय सूर्याधिदेवाय साङ्गायसपरिवाराय सायुधायसशक्ति-
काय, वामे-अग्नये प्रत्यधिदेवाय, सां० स० सशक्तिसायु० एता
न्सदीपान्पायसान्न गुडौदनवलीन्समर्पयामि ॥ बलिंसमर्घ्यसम्पू-
ज्यन्तु ॥ हस्तेजलंगृहीत्वा, भोभोसूर्य साधिदेवप्रत्यधिदेवाभ्यां
सहैतान्बलीन्प्रगृहीत ॥ भवन्तोममयजमानस्य वाममसकुटुम्ब-
स्य, आयुष्कर्तारः क्षेमकर्तारः, शान्तिकर्तारः, पुष्टिकर्तारः,
तुष्टिकर्तारोभवन्तु ॥ वा—मण्डलेशांश्चवोज्ञात्वा यूयंसम्यक्

निवेदितान् । रत्नार्थयजमानस्यप्रगृहीत शुभान्वलीन् ॥ एवंसर्वत्र
 तनश्चन्द्रादीनां—हस्तेजलंगृहीत्वा—३ॐ चन्द्रायसाङ्गाय सपरि-
 वाराय सायुधायसशक्तिकाय दक्षिणपार्श्वे—पार्श्वे चन्द्राधिदेव
 तायै सा० । वामपार्श्वे—अद्भ्यश्चन्द्रप्रत्यधि देवेभ्यश्चसांगेभ्यः
 एतान्स दीपान् बलीन्स मर्षयामिवोनमः, भो भो सोमसाधिदेव
 प्रत्यधिदेवसहैतान्वलीन्प्रगृहीत ॥ भवन्तो ममयजमानस्यममवा
 सकुटुम्बस्य आयुष्कर्तारः क्षे० शा० तु० पु० भवन्तु । मण्डले
 शांश्च० इति बल्युपरिजलंक्षिपेत् ॥ ततो भौमादीनाम्—३ॐ
 भौमायसा० दक्षिणपार्श्वे—स्कन्दाय भौमाधिदेवायसाङ्गाय० वाम
 पार्श्वेपृथिव्यै भौमप्रत्यधिदेवतायै, साङ्गाय० एतान्वलीन्सदीपा-
 न्समर्षयामिवोनमः । भोभोभौम साधिदेवैः प्रत्यधिदेवैः सहैता
 न्वलीन्गृहाण भवन्तो ममयजमानस्य ममवासकुटुम्बस्य सपरि-
 वारस्य० आयुष्कर्तारः क्षे० शा० तु० पु० भवन्तु । मण्डलेशांश्च०
 ॥३॥ तनोवुधादीनाम्—३ॐ बुधायसाङ्गाय, सपरिवाराय० । दक्षि
 णपार्श्वे—विष्णवेबुधाधिदेवाय साङ्गाय० । वामपार्श्वे—विष्णवे
 प्रत्यधिदेवाय साङ्गाय० एतान्सदीपा न्वलीन्समर्षयामिवोनमः ।
 भोभोबुधसाधिदेवैः प्रत्यधिदेवैः सहैतान्वलीन्गृहाण । भवन्तो
 ममयजमानस्य ममवासकु० सपरि० आयुष्कर्तारः क्षे० शा० तु०
 पु० भवन्तु ॥ मण्डलेशांश्च० ॥४॥ तनोगुर्वादीनां—३ॐ गुरवेसांगाय
 सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय, दक्षिणपार्श्वे ब्रह्मणे गुर्बधि
 देवाय साङ्गाय । वामे इन्द्रायगुरुप्रत्यधिदेवाय सांगाय० । एता-
 न्सदीपान्वलीन्समर्षयामि वोनमः । भोभोगुरोसाधिदेवैः सहैता
 न्वलीन्गृहाण । भवन्तः, ममय० ममवास कु० सपरि० आयुष्कर्तारः
 क्षे० शा० तु० पुष्टिकर्तारोभवन्तु । मण्डलेशांश्चवोज्ञात्वा ययं
 सम्यक् निवेदितान् । रत्नार्थयजमानस्य प्रगृहीतशुभान्वलीन् ।
 इ० जलं वि० ॥५॥ ततः शुक्रादीनां—३ॐ शुक्राय साङ्गाय, सपरि०
 सायु० सशक्ति० दक्षिणेन्द्रायशुक्रप्रत्यधि देवायसांगाय० वामे
 इन्द्रायै शुक्रप्रत्यधिदेवतायै सायुधायै, सशक्ति० सपरिवारायै

एतान्सदीपान्वलीन्समर्पयामिवोनमः । भोभो भृगोसाधिदेवैः
 प्रत्यधिदेवैः सहैतान्वलीन्गृहाण ॥ ममयजमानस्य ममवा सकु^०
 सपरि^० आयुष्कर्त्तारः ज्ञे^० शा^० तु^० पुष्टिकर्त्तारोभवन्तु । मण्डले
 शांश्च^० ॥६॥ ततः शनिश्चरादीनां-३^० शनिश्चराय सां^० सप^०
 सा^० सशक्तिकाय, दक्षिणे यमायाधिदेवाय सां^० स^० सश^० सायु
 धाय । वामे-प्रजापतये प्रत्यधिदेवाय सां^० सप^० सा^० सशक्ति-
 काय, एतान्सदीपान्वलीन्समर्पयामिवोनमः, भोभो शनेसाधि-
 देवैः सहैतान्वलीन्गृहाण ॥ ममयजमानस्य ममवा सकु^० सपरि-
 वा^० आयुष्कर्त्तारः ज्ञे शा^० तु^० पु^० भवत । मण्डलेशांश्चवो^०
 ॥७॥ ततोराहादीनाम्-३^० राहवे सां^० सप^० सा^० स^० दक्षिणे
 कालाय सां^० स^० सा^० सक्ति^० वामे सर्पायप्रत्यधिदेवायसां^० स^०
 सा^० सशक्तिकाय एतान्सदीपान्वलीन्समर्पयामिवोनमः । भोभो
 राहोसाधिदेव प्रत्यधिदेवैः सहैतान्वलीन्गृहाण ॥ भवन्तः मम-
 यजमानस्य ममवासपरि^० सकु^० आयुष्कर्त्तारः ज्ञे^० शा^० तु^०
 पुष्टिकर्त्तारोभवन्तु, मण्डलेशांश्च^० ॥८॥ ततः केत्वादीनाम्-ततः
 केतवेसांगाय सपरिवाराय साधुधायसशक्तिकाय दक्षिणे-चित्र-
 गुणायसांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय-वामेब्रह्मणे
 प्रत्यधिदेवाय सां^० स^० सा^० सशक्ति^० । एतान्सदीपान्वलीन्सम-
 र्पयामिवोनमः ॥ भोभो केनोसाधिदेवैः सहैतान्वलीन्गृहाण-
 भवन्तः, ममयजमानस्य ममवासपरिवारस्य सकुटुम्बस्य आयु-
 ष्कर्त्तारः ज्ञेमकर्त्तारः शान्तिकर्त्तारः तुष्टिकर्त्तार पुष्टिकर्त्तारो
 भवंतु । मंडलेशांश्चवोज्जत्वा यूयंसम्यक् निवेदितान् । रत्नार्थ
 यजमानस्य प्रगृह्णीत शुभान्वलीन् ॥९॥ अथ विनायकादीनाम्-
 ३^० विनायका सां^० एषसदीप वलिर्नमः भोभो विनायक एतंस-
 दीपं वलिगृहाण मम सपरिवारस्य आयु^० ज्ञे^० शा^० तु^० पु^०
 भव, मंडलेशंश्चवत्तामि मया भक्त्यानिवेदितम् । यजमानस्य
 रत्नार्थं गृहाणवलिमुत्तमम् ॥ ततोदुर्गायै-३^० दुर्गायै सांगायै

सपरिवारायै० एषसदीपवलिर्नमः । भो भो दुर्गे एतंसदीपं वलिं
 गृहाण ममसकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुष्कर्त्री क्षेमकर्त्री तु०
 पू० भव, मण्डले सं० ॥२॥ तत आकाशाय—३० आकाशाय
 सांगाय सं० सा० सश० एषसदीप वलिर्नमः । भो आकाश, एतं
 सदीपं वलिं गृहाण । ममयज० ममवासकु० सप० आयुष्कर्त्ता
 शा० पु० तु० भव, मण्डले सं० ॥३॥ वायवे—३० वायवे सां०
 एषसदीपवलिर्नमः । भो वायो एतं सदीपं वलिं गृहाण । मम-
 यज० ममवा आयुष्कर्त्ता क्षे० शा० तु० पुष्टिकर्त्ता भव, मण्डले
 सं० ॥४॥ ततो अश्विभ्याम्—३० अश्विभ्यां सांगाय सपरिवा-
 राय सायुधाय सशक्तिकाय एषसदीपवलिर्नमः । भो अश्विनौ
 एतं सदीपं पायं सबलिं गृह्णीतम्, सपरि० ममयज० आयुष्क-
 र्त्तारौ क्षेमकर्त्तारौ शा० पु० तु० भवेवम्, ततो लोकपालेभ्यो
 लोकपाल बलिदान पढत्युक्त प्रकारेण वलीं दद्यात् ॥ क्षेत्रपालाय
 वायव्ये क्षेत्रपाल वेदीसन्निधौ दद्यात् । तत्रैकोक्तम् ॥ वास्तुमन्त्री
 परि दीक्षादि विधौ दीक्षाग वास्तु बल्युक्त प्रकारेण दद्यात् ।
 प्रतिष्ठादौ प्रतिष्ठा वास्तु बल्युक्त प्रकारेण दद्यात् । तत आचम्य,
 शौःशान्तिरिति पठित्वा आत्मानं मार्ययित्वा, ततो होमकुण्ड
 सन्निधावागत्य, भार्यादक्षिणत उपवेशयित्वा चम्य, सङ्कल्पः—
 अद्येत्यादि० अमुकोहं ममामुकस्य चातुर्वर्गसिद्धये, ग्रहयागोक्त
 प्रकारेण मुकनिमित्ताकामुकहोमकर्मणो न्यूनातिरिक्त दोषपरिहा-
 रार्थं मृडाग्नौ अपूर्ण पूर्णता सिद्धये पूर्णाहुति होमं करिष्ये, ततः
 कुण्डे, ॐ मृडाग्नये नमः, मन्त्रेण गन्धादिभिर्मृडनामार्गि
 सम्पूज्य ॥ पुत्रादि बन्धुवर्गान्वाम भागे कृत्वा भार्या दक्षिणतः
 सर्वे उत्तिष्ठन्तः सन्तः ॥ घृताभिधारितं पीतयटाच्छादितं श्रीफ-
 लं च सशाकल्यं हस्ते निधाय, भार्यापि स्वदक्षिणहस्तं पतिहस्त
 सङ्घट्टं कृत्वा सर्वेष्वेव हवनं द्रव्यं वा तद्दृच्छीफलादिकानि स्व स्थ
 निधाय । ॐ पूर्णादूर्वाति मन्त्रस्योर्णनाभ ऋषि रघुष्टुच्छन्दः

शत ऋतुद्वेषता पूर्णाहुति होमे विनियोगः ॥ ॐ पूर्णादिविं परा-
 पत सुपूर्णा पुनरापत वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ई० शतक्रतो ।
 ॐ पुनस्त्वारुद्रावसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीध यज्ञैः ।
 घृतेनत्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः—
 स्वाहा ॥ इति मन्त्राभ्यां श्रीफलं कुण्डे प्रक्षित्वा ॥ वक्ष्यमाण
 मन्त्रेण सुवेणाविच्छिन्न घृतधाराभिर्जुहुयात् ॥ ॐ सप्त
 इत्यस्य सप्तर्षिर्ऋषिः त्रिष्टुब्धः अग्निर्देवता अग्निर्तृप्तये घृताव-
 च्छिन्नधारा पूर्णाहुन्त्यन्ते होमेच विनियोगः—ॐ सप्तते अग्ने
 सभिः सप्तजिह्वाः सप्तऋषयः सप्तधाम प्रियाणि । सप्तहोत्राः
 सप्तधात्वा यजन्ति सप्तयोनीराष्टणस्व घृतेन स्वाहा, इति द्वादश-
 धा सुवेणहुत्वा, ततः प्रदक्षिणा चतुष्टयं कृत्वा । वक्ष्यमाणमंत्रैः
 अग्निप्रतपन पूर्वक पाणिभ्यां सर्वाङ्गान्युपस्पृशेयुः । मन्त्रा—ॐ
 अङ्गानिचम ऽ आप्यायताम्—इति सर्वाङ्गस्पृशेत् ॥ ॐ वाक्चम
 ऽ आप्यायताम् । इतिमुग्वंस्पृशेत् । ॐ प्राणश्चम ऽ आप्याय-
 ताम्—नासिकांस्पृशेत् ॥ ॐ चक्षुश्चमऽआप्यायताम्—इति नेत्रे,
 स्पृशेत् ॥ ॐ श्रोत्रं चम ऽ आप्यायताम्—कर्णौस्पृशेत् ॥ ॐ
 यशोवलयं चम ऽ आप्यायताम्—बाह्वोः स्पृशेत् । तत हस्तौ प्रक्षाल्य,
 ततः सर्वेऋत्विजः कस्मिंश्चित्पात्रेसदुग्ध जलकुशैः होमसंख्या-
 याः दशमांसानि तर्पणानि कृत्वा, तर्पण संख्या दशमांशंमार्जित
 मप्या चरन्तु ॥ ततः न्यायुषकरणं—ॐ न्यायुषमिति जमदग्नि
 ऋषि त्रिष्टुब्धः शिवो देवता न्यायुषकरणे विनियोगः । ॐ
 न्यायुषं जमदग्नेः । ललाटे धारयेत् । ॐ काश्यपस्य न्यायुषम्—
 ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषु न्यायपम्—दक्षिणांसे, ॐ तन्नो ऽ अस्तु
 न्यायुषम्—हृदये ॥ ततः पुनरावाहित देवानग्नि च सम्पूज्य ॥
 सूर्यादि ग्रहाणां शान्त्यर्थं, दानानि कुर्यात्—सूर्याय कपिलांगाम् ।
 चन्द्रायशङ्खम् । भौमाय रक्तवृषभम् । बुध गुरुभ्यां सुवर्णम् ।
 शुक्रायश्वेतारवंवारजिताश्वं । शनये कृष्णांगाम् । राहवे खड्गं ।
 केतवे कर्तुरेन्द्रागम् । यथोक्तालाभे वित्तानुसारेण दानानिकृत्वा ।

आचार्यादीनां दक्षिणादानं--वैशंपायनः--सर्वेषामथवा-
 वो दातव्या हेम भूषिताः । शय्यादानम्-शय्यादानं ततः
 र्यादाचार्याय निवेदयेत् । यतो दक्षिणा सङ्कल्पः--अथेत्यादि
 कालौ संकीर्त्य, अमुक राशिरमुक गोत्र प्रवरो ऽ मुकोहम् ।
 मुक कर्मनिमित्तकस्यामुक कामनया कृतस्य ग्रहयाग कर्मणो ऽ
 चालुर्वर्गार्थसिद्धये, श्रीपरमेश्वर यज्ञपुरुष प्रीतये, साद्गुण्या-
 च, वासुकदेवतायास्तुष्टयर्थ, इदं सुवर्णं मुद्रां, वा सुवर्णमुद्रा-
 ष्कयी भूताः रजतादि मुद्राः, इमां दक्षिणां च, आचार्याय,
 ह्यणे, ऋत्विगभ्यो, जापकेभ्यो द्वारपालेभ्यः सदस्या-
 र्याय च यथांशेन विभज्य दास्ये, ॐ तत्सन्नमम् ॥ इति
 न्वा, आचार्याय मण्डपदानम् वायवीये-मण्डपं गुरवेदद्याद्या-
 पोकरणैःसह ॥ अशक्तरवेत्तन्निष्कयीभूतं द्रव्यंगांचवा दद्यात् ॥
 था कर्मान्ते गोदानंकृत्वा ततो भूयसीसंकल्पः--अथेत्यादि०
 मुकोऽहं ग्रहयागकर्मणः सांगफलाप्यये न्यूनातिरिक्त दोषपरि-
 रार्थं इमांभूयसीं दक्षिणांच, नाना नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो
 विभज्यदास्ये । ॐ तत्सन्नमम् । ततोब्राह्मण भोजनसंकल्पः--
 थेत्यादि० मयाकृतैतद् ग्रहयाग कर्मणः साद्गुण्यार्थं, पक्वान्नेन
 थासंख्यकान्ब्राह्मणान्भोजयिष्ये, ननो घृतच्छायादर्शनं पध्दत्युक्त
 कारेणकृत्वा । तत उत्तरेशानांतरालेस्नानवेद्यां, सपरिवार सप-
 तीकंयजमानं होमकुंडस्थेशान बृहत्कलश जलेनआचार्यादयः,
 थाय पूर्वोक्तवैदिकपौराणिकमंत्रैरभिषिक्तंकुर्युः । ततोमंत्रा-
 भेपेकानन्तरं संभवेसति, उद्धर्त्तनपूर्वकं यजान्तं स्नानंकृत्वा
 हदनींगंगाप्रदेश निवासिनो वादित्रादिपुरसरंजलयात्रां
 ामनिवासिभिः सहगंगास्नानं कुर्वन्तितत्रैवोद्धर्त्तनेन स्नास्यंतीनि
 (शसमाचारः) नूतने वाससीपरिधाय, सचैलस्नान बभ्राण्या-
 षार्यादद्यात् । होमकुंड सन्निधायागत्य, तिलककरणां ३० भद्रमस्तु
 त्यादि पूर्वोक्त पध्दत्या नुसारा दाशीर्वादं गृहीत्वा, ततोमंड-
 स्थ देवतानामुत्तराङ्ग, पूजनविधाय--प्रदक्षिणा चतुष्टयंकृत्वा,

मंडपेसमागत्य, हस्तेषुष्पाक्षतान्गृहीत्वा वक्ष्यमाण मंत्रैस्तत्रतत्र विकिरेत्—विषर्जनमंत्राः—ॐ गच्छुगच्छुगणेशत्वं, विघ्नसंघ-
निवारण, इष्टकामसमृद्धयर्थं पुनरागमनंकुरु । ॐ ब्रह्मस्त्वंगच्छु-
वैकुण्ठे सर्वं कर्मप्रसाधक । विष्णो त्वंगच्छुगोलोके कैलासेत्वं
महेश्वर । लक्ष्मीत्वं विष्णुपादर्वेच स्वभर्तारमनुव्रज । रवेगच्छु-
कलिंगेत्वं चन्द्रत्वंपमुनातटे । अवनतिगच्छुभौमत्वं बुधत्वं भग-
धेवव्रज । गुरोव्रजसिन्धुदेशे भृगोभोजकटेव्रज । मंदत्वंगच्छु-
सौरष्ट्रेराहोपैठीनकंव्रज । केनोन्तर्वेदींगच्छुत्वं स्वस्वस्थानं नव-
ग्रहाः । इन्द्रामरावतींगच्छु तथाग्नेयींचपावक । यमसंयमनींगच्छु
नैर्ऋतींव्रज निर्ऋते । वरुणांभोनिधौगच्छु सर्वत्रव्रजमारुहः गच्छु
लर्काकुबेरत्वमीशेशानीं दिशंव्रज । ॐ यान्तुदेवगणाः सर्वे
पूजामादाय मामिकाम् । इष्टकामसमृद्धयर्थं पुनरागमनायच । ततो
होमकुण्डे-ॐ भोभोवन्दे महाशक्ते सर्वकर्म प्रसाधक । कर्मान्त
रेपिसंप्राप्ते सान्निध्यं कुरुसादरम् । गच्छुत्वं भगवन्वन्दे कुंडम-
ध्यात्सुरेश्वर ॥ यत्रब्रह्मादयो देवास्वत्रगच्छु हुताशन ॥ ॐ
चतुर्भिश्चचतुर्भिश्चद्वाभ्यांपंचभिरेवच । इयतेचपुनर्द्वाभ्यांसमे
विष्णुः प्रसीदितु । हस्तेजलंगृहीत्वा ॐ कायेनवाचामनसेन्द्रियैर्वा-
बुध्यात्मनावा प्रकृतिः स्वभोवात् । करोमियद्यत्सकलं परस्मै-
नारायणायेति समर्पयामि । अनेन ग्रहयागकर्मणा श्रीयज्ञपुरुषो
महाविष्णुः प्रीयताम् । ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तुततो ब्राह्मण
भोजनं कारयेत् ।

इति ग्रहयाग होम पद्धति ।

॥ अथ भूमि परीक्षा पूजनं ॥

धी गणेशायनमः ॥ अथ च वास्तुभद्रं गृहं प्रवेशं मन्दिरं वापीकूपं जलाशयानां प्रतिष्ठा
 कर्मण्यावश्यकत्वात्प्रादीं निमोणार्थं भूमिपरिक्षामाह— उक्तंचगृहसूत्रे—(अध्यातः शालाकर्म)
 १॥ शतं आवस्थ्याधानादीनि शालानोसाध्यानि, अनुविहितानि, शालाकरणं चर्नाक्रमं, अतोहे-
 तोशाशलाकर्मशालायाः, गृहस्य क्रिया व्याख्यास्यते, (पुण्याहे शालां कारयेत्) ॥ २ पुण्यं शुभं
 मलमासं बलदृष्टास्तमितं शुवादित्यं सिंहस्थं गुरुक्षयमामं दिनत्रयं ह क्रूरग्रहा ऽ कान्तं युक्तनक्ष-
 त्रादि दीपरहितं ज्योतिः शास्त्रोक्तं गृहारम्भविहितं मामपक्षं तिथिवारनक्षत्रं योगकर्णमूहृतं
 चन्द्रतारा बललग्नादि गुणान्वितमहः पुण्याहम् । तस्मिन् पुण्याहे शालां गृहं कारयेत्, निमाय
 यन् । यन्नाम्ना तंस्व शाग्नाया पारवयमविरोधियत् । विद्वद्भिस्तदनुष्ठेयं मग्निहोत्रादि कर्म
 यत् ॥ १॥ इति वचनात् पारस्कं राचार्येणां शुक्रमपि— गोमिलगृहसूत्रोक्तं (१-७) देशं विधीय
 मविरोधात् अपेक्षितत्वाच्च त्रिसामः ॥ तद्यथा— कीदृशे देशे शालां गृहं कारयेत्, समेज्जालामही
 ध्विर्भेदिनि प्राचीनं प्रथमे उदक्चा अक्षरम् । कंटका कटुकौपधिवति भूमौ तत्रैव गोमिलं (गो-
 रपाथे सुवाङ्मणस्य ५) गौराश्वेतवशां । पांसधारेणवां यस्मिन्नयसामे तद्गौरपांसुं श्ववर्मा
 गृहम् तद्वाङ्मणस्य भवति । उत्तरसूत्रयोरध्वेयमेवविग्रहः (लोहितं पाथे सुक्षत्रियस्य) ६-रक्तं
 मृत्तिका क्षत्रियस्य (कृष्णं पाथे सुवैश्यस्य ७) कृष्णवर्णावैश्यस्य— वास्तुशास्त्रमते तु— वैश्यस्य
 पीतपासी— शूद्रस्य कृष्णपासी— अथ भूमौ समोन्नतं परीक्षा— (स्थिराघातं मंकरंणमशुक्र-
 मनुपरं ममरुपरिहितं मकिलिनम्) सुद्वारादिभिरपि यदाहन्यमानं न विदार्थिते तत्र स्थिराघातात्
 एकवर्णम्, अभिन्नवर्णम्, यत्रोपेतं माना एवीपधयो नशुष्येयुस्तदशुक्रम् । ऊपरम् इरिणम्,
 यत्रोपेतं प्ररोहितं । न ऊपरम्, अनुपरम् । मरु शब्देनोदकं रहितः प्रदेश उच्यते । यत्र दूर-
 मपि खनद्भिः किञ्चिदेवोदकं सुपलभ्यते । उक्तंच— द्रूपमुन्नतमाट्यात् शादाचैयांष्टकाः स्मृताः
 किलिनं सजलं प्रोक्तं दूरखातोदकोमरुः ॥ शुद्धं भूमिविचारः— मूर्हतं मार्तण्डे— श्वेता
 रक्तकपीत वसुधा स्वादुः कटुस्तिक्तकाः कपाया घृतशोखिताश्च मदिरागंधाशुना विप्रतः ॥
 भृगुन्धवानाम्— सुगन्धा माहाणी भूमौ रक्तगंधात् क्षत्रिया । मधुगंधा भवेद्वैश्या मयगंधा
 चन्द्रिका ॥ भूमेरसं ज्ञानं मृत्तिका भक्षणात्— मधुरा माहाणी भूमिः कपाया क्षत्रियामता ।
 अमला नैश्याभवेद् भूमिस्तिक्ता शूद्रा प्रकीर्तिता ॥ प्रकारांतरेण भूमिपरिक्षामाह— विश्व-
 कर्मप्रकारे— निर्यमेद् हस्तमात्रेण पुनस्तेनैव पूरयेत् ॥ पशुनाधिकं मध्याना भेष्टा मध्यापमा
 क्रमात् ॥ पुन स्तत्रैव गत्तं वायुपरीक्षां कुर्यात्— तातमध्ये गत्तं मध्यवर्ति दीपं प्रचाल्य

वायुतो दीप शिखादक्षिण दिशिगता भूमि परित्यजेत् ॥ पुनः—फालकृष्टे ऽथवा वेशेसर्ववी-
जानिवापयेत्, त्रिपंच सप्तत्रयेण यत्रराहन्ति तान्यपि, ज्यैष्ठोत्तमाकनिष्ठाभूमाङ्गा चर्याचसामता
अरदिनमात्रंगतये अनुलिप्तेतुसर्वशः ॥ घृतमाम शरावस्थं कृत्वा वर्तिचतुष्टयम् ॥ ज्वलयेद्भूमि
परीक्षार्थं संपूर्णे सर्वदिद्मुखम् ॥ दिप्त्या पूर्वादि गृह्णीयात्, चर्यानामनुपूर्वशः ॥ सर्वतो दीप्तो
सर्वेषां शुभदेति पूर्त्तमला करे मात्स्ये पुनस्तत्रैव ॥ श्वध्रमथवाबु पूर्णपद शनमिवा गतस्य
यदिनोनम् तदद्वयं यच्चभनेत् पलान्यपा माडकं चतु पष्टि ॥ भूमि सुप्तादि परीक्षा वास्तु
शास्त्रे—कर्त्ताग्राम दिशश्चैव स्वरयुक्तं तु कारयेत् ॥ बन्दिभिस्तु हरेद्भागं शेपाकेफल सादिसि ॥
एकं जागति भूमिश्च द्वितीये समता भवेत् ॥ तृतीये राक्षसी भूमिस्तस्या गृह्युर्नशंमयः ॥

स्तुणवृक्षादि परीक्षामाह—उक्तं च पारस्पर गृह्यसूत्रे— (दभेगमितं ब्रह्मवर्चगना-
मस्य ऽ)—दर्भसंयुक्त भूर्ब्रह्मवर्चगज्याग्यानां तत्कामस्य (बृहत्सर्गैर्नक्षत्रकामस्य १०) गृह्यसूत्रे.
पशुर्कामस्य १०) स्पष्टम् ॥ उक्तं च मत्स्यपुराणे—कंटक क्षीरवृक्षभ्रामन सपशोद्भुमः ॥
धनहाभि प्रजाहाभि कुर्वन्ति क्रमशस्तथा ॥१॥ ब्रह्मचैत्रतपुराणे—द्वारिका निम्मानि—शान्म-
लीना तितिडीना हिन्तालाना तथैत्रच ॥ निम्बानां गिन्दुवाराणां उम्बूरोक्षांभद्रकम् ॥१॥
घत्तूराणा वटाना च एरगडानां मवाञ्जिनम् ॥ एनेषामतिरिक्तानां क्षिप्रिकाष्ठ सुतमम् ॥२॥
वृक्षं च ब्रह्महतकं दूरतोपरिवर्जयेत् ॥ पुत्रदार धनं हन्यादित्याह कमलाद्रवः ॥३॥ उक्तं च
मात्स्ये—पुत्रगां शोक वज्रहत्तमा निलक चम्पकान् ॥ दाशिमोपिपकोद्राक्षा तथा कुमुममंड-
पम् ॥१॥ जम्भीर पूगपनमहुममंजरोमिजाती सरोज शतपत्रिक मतिरुभिः ॥ यक्षारिषेल
कदलीदल पाटलीभिर्युक्तं तदत्र भवनं धियमागतीति ॥२॥ वास्तुप्रदीपे—आङ्गणी भू उत्तो-
पेता क्षत्रियास्याञ्जरा कुला । उशकाशाउलावैश्या गृह्यामवतृणाकुला ॥१॥ आङ्गणी सर्वे
सुमदा क्षत्रिया राज्यदा भवेत् ॥ धन धान्य करी वैश्या गृह्यातु निर्दिता युधिः ॥२॥
निषिद्धभूमिमाह वास्तुप्रदीपे—स्फुटिताचमशल्याच वन्मोकारां हृणीयात् । दूरतः परि-
वर्त्यै कर्तुरायुर्धनापहा ॥३॥ स्फुटितामरणं कुयोदपरिवननाशिनो ॥ मशान्नापशान्निभं
विपमाशुबधिनी ॥२॥ सर्वोत्तमां भूमिमाह पारस्कर गृह्यसूत्रे—(शासतास्मितभ १२)
(मण्डलैर्द्वीपसम्मितेषा १३) (यधषाश्वध्रः स्वयंसाता गवंतो ऽ भिमुग्ना ह्युः १४)
शादेष्टकालेशान्तरप्रसिद्धे । चतुरस्रमित्यर्थ ॥ मण्डलंतरदिनमण्डलंतुल्यमित्यर्थः द्वीपशास्त्रेण प्रत
गभिधीयते, मण्डलाय तद्वीपंच मण्डलद्वीपं तसम्मितंथा तदाकृतिवा, कर्पणान, उमतभ्यगतः
परिदृष्टिः परिमण्डलाकाया ॥ चतुरस्रापेति । यत्रवायस्मिन् स्थाने श्वध्रा भवता स्वयंसाताः
स्वयमुत्पन्ना भवन्तः सर्वास्तुदिच अभिसुरादिनेतराभिमुग्नेनापि धिताकानव ह्युः ॥ (२. ११)

पसानं प्रागद्वारं यशस्कामो बलकामः कुर्वतिः १५) तत्रतस्मिन्नैयं गुणविशिष्टस्थाने अयसाने
 एहं । अयमवसानशब्दो गृहवचनः । पुत्रः पुनरवसानग्रहणात् । अनुद्वारं च गृहद्वार मिति एद
 शब्दध्रुत्तेश्च । प्रागद्वारं-प्राङ्मुखद्वारं यशस्कामो बलकामः कुर्वति । कामशब्दाभ्यासादन्यतर
 कामो नोभयकामः । यद्दुयुभयमभिप्रेतं स्या तथामतियशो बल काम इत्यपच्यत् । तस्माद्यशस्का
 मो बलकामो वेति द्रष्टव्यम् । (उद्वारं पुत्रपशुकामः १६) अयमानं कुर्वति ति पसंते । (दक्षिणा
 द्वारं ६० सर्वकामः १७) दक्षिणाद्वारे वास्तुनियत्कामयते तत्तद्भवतीति दर्शयति । (न प्राच
 द्वारं कुर्वति ॥१८॥ अनुद्वारं च ॥१९॥ गृहद्वारम् ॥२०॥ ननु कीति ति पसंते , अनुपश्चाद्द्वारं
 अनुद्वारम् । तादृशं गृहद्वारं न कुर्वति । द्विद्वार मित्यर्थः । अथवा द्वारमनुद्वारं न कुर्वीत ।
 कर्षणाम्, अन्यमुत्तरद्वाराभिमुखं गृहद्वारं न कुर्वीतित्यर्थः । उच्चं च वास्तुशास्त्रे—द्वारगवाच्चतमैः
 कर्षममित्यन्तकोणेष्वैश्वर्यं । नैष्ठं वास्तुद्वारं पिडमनाकरोतमार्थं च । गृहद्वारं न कुर्वीतित्यर्थः ॥
 (यथानसंलोको स्यात् ॥२१॥) यथाथेन प्रकरोत्यायं वास्तुनि सन्धोपागन होमार्चनभोग्नादि
 क्रियाप्रवृत्तौ वसिर्पतिना चांतालपतित्तादीनां संलोको, आलोकन सन्धोपागन भवेत् , स्वाते नि-
 सृत् वस्तुप्राह वास्तुशास्त्रे—स्वातेमदिशमालभते हिरण्यं तथेष्टकाद्यथ समुद्रिरत्न । इत्यं च
 रम्याणि सुगमनिधत्ते, ताम्रादिधानुर्यदि तत्र वृद्धिः । पिपीलिका ददुरिकाहके स्या द्विसप्ततत्रासित
 कार्यद्वानि । तुपास्थिचोराणि तथैव मस्माद्यण्डानिमर्षामरणप्रदास्युः ॥ पराटिका दुःखदरिद्र
 दात्री काष्ठीमृदातिददातिरोगम् । काष्ठप्रदग्धं दरिं गच्छति कलिर्भवेत्स्वर्परवेन नित्यम् लोहेन
 कर्तुर्मरणं प्रदिष्टं विचार्ये वास्तुप्रचदन्ति तज्ज्ञा । दिक्साधनं सिद्धान्तरहस्ये—पृत्ते मम मृगतु
 नेन्द्रः स्थितिशंकाः क्रमशां विशरयैति । छायाप्रमिहाचपूर्वा ताभ्यां सिध्यति मेरुदिकृचयाम्या ।
भूमिसुप्तमाह—प्रथोतनात्पञ्चनगाङ्गस्य नवन्दुपट्टिविशतितेपुभेपु । शतं महीनैव गृहं विधेयं
 तटांगवापी खननं नशस्तं । अथ गृह निर्माणे वैध-पट्टलमाह—प्रथम्यवारपतीपुत्रं ध्यात्वा
 नारायणं गुरुम् । लोकानामुपकाराय क्रियते वैधरं प्रहः ॥१॥ शिवउवाच—वैधेत्तृतीयं यो न्ति
 देवमानुपराक्षसाः । वैधेन हन्त्यन्तं नित्यं नास्ति वैधममोरिपुः ॥२॥ वैधेन कलहं नित्यं वैधेन च कुक्ष्यचमः
 वैधेन ह्रियते सर्वं तस्माद् वैधेनिरोक्षयेत् ॥३॥ विष्णुः पृष्टे शिवो दृष्टौ चण्डिकाय प्रदक्षिणे । तत्र वैधं
 निजानीयाद् गमस्य वचनं यथा ॥४॥ कोण १ दक् २ द्विद्व २ छाया रच ४ अष्ट ५ वंशा ६
 छ ७ भूमयः ८ संघात ९ दन्तकौ १० । चैतिवैधास्तु दशधारमृताः । ५ कोणवैधे मवेन्मृत्यु
 ईश्वे भेधु धनक्षयः । पशुहानि भवेच्छिद्रे छायावैधे चराक्षसाः । ६ अष्टवैधे महाप्रापी यन्शानास्तु
 यन्शाने । अक्षये पशुहानिः स्याद्दिग्भूमौ च धनक्षयः । ७ संघाते निधनं शीघ्रं दन्तवेशोकमादिशेत् ।
 कोणादिकोणपर्यन्तं प्रमाणं कोणवैधजम् ॥८॥ कोणात्तनिधनं शीघ्रं गृहे दोषं निरर्भकम् । तथानीच

स्थितकोणे कोणवैवानजायते । ६। समद्विद्वेष्टिद्वेषो (शुकावेष) भूवधोनाधिकान्तरे । हर्षया
दृष्टिपातिस्या च्छायासूर्यो न दृश्यते । १०। यामादूर्ध्वन्तुवाद्याया छायाप्रहरादथ साछायादोषदा कृष्णा
वृक्षप्रसादगोहजा ॥११॥ सवपामपि वृक्षाणा छाया रोगफलप्रदा । सधयन्ति सदा वृक्षा किन्नरोरग
राक्षसा ॥१२॥ नकुर्यात्साम्यनैर्ऋत्यामानये (पिपाटिकाम्) अन्यथाफलहाद्वेगौ कष्टकालभते
नर ॥१३॥ वृक्षवैधमाह—वर्जयत्पूर्वतो ऽ श्वत्थ पृच्छदक्षिणतस्तथा । न्यग्रोधमपराहेसा
दुत्तराद्याधुदुम्बरम् ॥१४॥ श्वत्थत्वादिनिभयविद्यात् प्लक्ष्माभूया प्रमायुक्ता । न्यग्रोधात्
(वटवृक्षात्) शस्त्रसम्पीडामक्षामय मुदुम्बरात् ॥१५॥ आदित्यदैवतो ऽ श्वत्थः प्लक्षश्च
यमदैवम् । न्यग्रोधायास्सा वृक्ष प्रनापत्य उदुम्बर ॥१६॥ कृपादिवेधानाह—कृपकोश
स्तस्वस्तम्भीदेवोद्धारश्चवर्त्मच । जलधाराश्चवहिश्व दशवेधाद्यहेस्मृता ॥१७॥ कृपवेधे भवेन्मृत्यु
कोशवेधे दरिद्रता । अरपीनातरोर्वधे मृत्युस्तम्भस्यवेवत ॥१८॥ देववधस्य पुनत्वं द्वारवधदरि-
द्रता । मार्गवेधाद्भ्रूवद्ब्याधि मृतिस्तु जलवेवत ॥१९॥ धारावध प्यपुत्रत्वं व्याधि स्यादग्नि
वेवत । गृहाणा सन्निकृष्टत्वा द्वारावेधः प्रजायते ॥२०॥ कोशाध्वभ्रमकृपकर्मतेषु द्वैस्तम्भ
वेवक्षितम् । सन्नोद्विगुणाधिकान्तरभवनधन दीप क्लि ॥२१॥ एश्वर्यपुनर्हानिश्च स्तोनाशो
भरणभवेत् । सम्पद्भ्रुभयसीत्य पुष्टि पुर्वाक्षित क्रभात ॥२२॥ गृहमव्यभवेत्कूपो धनहानि
प्रजायते । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन नकुर्यात्गृहमध्यगम् ॥२३॥ पुष्करिणीवकुलं चैव प्रामादो नदी
चेति । अशुभादिदिक्षुकथिता पूर्वातिरयो शुभाएव ॥२४॥ प्रायादिस्थेमल्लिङ्गानि शिखि
भयरिपुभयश्च । स्त्रीपादोष कलहानि स्ववित्तसुतप्राप्तिश्च ॥२५॥ पाषाणादिवेधानाह—
पाषाणस्त रुवे वश्च सम्भवे प्रस्तथैव च , चलभूमिजलाकारा लिंगछत्र त्रिशूलकम् ॥२६॥ पर्व
पाषाणजायेध स्तरवेधो ऽ ग्निकोणव । स्तम्भवेधस्तु याम्यार्या चलभूमिस्तु नैष्ठित ॥२७॥
जलाकारघटाश्रया लिंगवेधस्तु मारुते छत्रवेधस्तु सीम्याया त्रिशूलच्छम्भुकाणवे २८ आलं
गितोपगूडाश्च शिलालाष्टातिस्तथा । उपविष्टोपगाहीच तुषवेधा स्मृतावुर्धे । २९। विवरपूर्वदि
ग्भागेयाम्येव मठमदिर । पश्चिमनादरी कुयारिवात् नैवतधातरे । ३०। मदिर पूर्वदिग्भागे
याम्येयार्यैश्मकंठकान् । पश्चिम मठव्यच श्मशानं चोत्तरे नैवत । ३१। याम्यादिपशुभफल
जातास्तरप प्रदक्षिणवैव । उदगादि पुप्रशस्ता प्लक्षवटो दुम्बराश्च ३२ अयान्यैस्पर्शन
वेद्वृक्षाणा धारावेधो जायते सन्निकृष्टे । ३३, वृक्षारोपणप्रकार माह विश्वकर्म प्रकाशे ।
नगर विन्यस दादी पश्चाद्दृष्टाश्च विन्यसत । पीठान्ते चैवतपूर्व रथपार्श्वे दापदा ॥३४॥
आग्नेयां चौर वृक्षेन नैर्ऋत्यां च कर्दपव । वायव्य कटकाद्या नैर्ऋत्यां च दक्षिणत ॥३५॥
पूर्वदिग्भागे वृक्षं च विष्वक्च दक्षिणे । पश्चिम पुष्पान्द्रक्षा उत्तरे गणन तरम् ॥३६॥

१
 देशान्या रक्षुषुपत्र आग्नेयामपिपट्टानाम । नैऋत्यां षट्कं विपत्र वायव्येशान्यालि त्वगेर ॥३८॥
 टिकुपरत्वेन वृक्षारोपणे शुभफलमाह तत्रैव— पिच्यमं शाकमल्लोद्वं वायव्ये तिमिष्णो
 तथा । उत्तरे शरत्तत्र च ईशानं शर्पिष्ठाङ्गम् ॥३९॥ पूर्वादिपुत्रयं ओष्णाः पादपापेवकारजाः ।
 व्यम्ना शुभफला प्रोष्णाधनवान्य फलप्रदम् ३६ षट् पुरस्ताद्वन्द्यस्या दक्षिणेचाप्यु
 दुम्बरः । अश्वत्थः पश्चिमभागेपल्लवत्तरत शुभ ॥४०॥ केशपपट्टौ— कोशाद्द्वैकं शम्भेवा
 याम्यादिगृहमेव च । अश्वत्थीदुम्बरश्चमूर्त्तौयस्तम्भपुरालया ॥४१॥ पश्चिमतुत्रिंशो याम
 दक्षिणामुर्गा । यामेहानिस्तथाप्यस्य दक्षिणेरंगशोकभाज ॥४२॥ नभसुमेयुसुमानौनि
 नदोपो ऽ स्तिनतोनते । मत्स्यपुरारो— म्गटकांक्षीरवृचश्च आसन्नः मफलं दुम्भः । धनहानि
 प्रजाहानिकुर्षन्तिनशस्तथा ॥४३॥ नद्विद्यश्चदि तान-यान्तरे रवापदेन्दुमान् । पुत्राणांशोक
 वकुलशमीतिलकनम्पान् ॥४४॥ दाटिमोपिपलीक्ष्णा तथासुसुममगण्डम ॥४५॥ जम्बीर
 पूषपनमट्टमभरीभिजाती तरुजशतपत्रिमस्त्रिभि । यत्राविबेलमट्टलोदलापट्टलामियुक्तं
 तद्वन्नभनं धियमातनाति ॥४६॥ पूर्वपदिच्छनयोर्वेधं निर्णय — वृक्षवेधेभधेपूर्वं द्वापु
 मुनियम्मत । पश्चिमसर्वनिहन्त्ये र्गोस्यवननंयथा ॥४७॥ पूर्ववेधेभधेस्युः कलहनिन्यनि-य
 श । अणुपंचजयते चाहम्यामिनिकानितम् ॥४८॥ वापीदूपतङ्गेऽत्र प्रागादृगृहमिदरे ।
 एतेभेधाभवयत्र चारुगयाप्रेममभया ॥४९॥ वृक्षवेधेभधेस्युः शूक्ष्मेधेभधेस्युः वेधेभेअणुः
 मुनिभि परिकीर्तितम् ॥५०॥ द्वारवेधेभधेस्युः परमगान्गन्थातदा । रत्रीणांश्वहुषोषाच
 माउव्यवननंयथा ॥५१॥ पत्रतुजशतान्धे आग्नेयाय उर्गन्तया । दक्षिणेतरशब्देच नैऋत्येवाण
 गाननम् ॥५२॥ पूर्वदिग्मन्दिरेव — र्गन्तिर्नन्दिरेव । यहुमानभवद्रेवा गर्गस्यवचनंयथा ।
 ॥५३॥ अग्नेयवायव्यवेधं निर्णयः । तुक्ष्मस्तुयदाग्नेयं निन्दनयव्यमेव च । पहुषेधांभवेतत्र
 अवाणावचनंस्मृतम् ॥५४॥ षट्पट्टंक्षीरवृक्षान्वियजम्भीरदडिगन । मलेरंवाके वृक्षश्च अग्नेधां
 दिशिर्वर्षयेत् ॥५५॥ आग्नेयास्तुयदापेय, आपिप्यामिभयभवेत् । रागर्षट्टुविधेयुक्ता कायव्यस्या
 श्वमातया ॥५६॥ नीचंभवतिनाग्नेया सुचनयव्यमेव च । नधेरीजायतेतत्र व्यासस्यवचनं
 तथा ॥५७॥ प्रहराध्वयदिग्जया वृक्षप्रागादग्नेजा । वेधतत्रविजानीया दग्नेयायव्यमेव च ।
 ॥५८॥ आग्नेयामन्दिरेत्स्या द्वायव्याद्वारण्यन । अतिवेधोभवेत् गर्गस्यवचनंयथा ॥५९॥
 वन्देशादु तानि यद्योजायतेत्यतिवेधत । वेपताश्चस्यंयान्ति मनुष्याणांनुपया ॥६०॥
 आग्नेयजायत्रवेधस्तमिहाट्टतित्रियात् । तदातत्रवेधे स्यादगर्गस्यवचनंयथा ॥६१॥ अथ
 दक्षिणीत्तरवेधं निर्णय — दक्षिणस्याभवेदुक्च गोचंत्तरदिग्द्विरम । वेधेत्तत्रविजानीया
 स्युपुरीगभयाधितम् ॥६२॥ दक्षिणमन्दिरेस्तम्भज्जपापाणमेव च । लिगन्त्रेजलंरूपं मेपास-ग

वमनतु ॥६३॥ उत्तरस्यागृहपति. पञ्चतनात्रसंशय. प्लवचम्पकसर्जूरमाततधोजपूरकान ।
 ॥६४॥ एतान्द्वयमयान्बेधान्दक्षिण्यापरित्यजेत् ॥६५॥ आभ्रंनिर्वचसर्जूरं दाडिमंकीजपूरकम् ।
 एतान्बेकलभेधास्तु दक्षिणस्याविवर्जेयेत् ॥६६॥ पुत्रहान्दिश्वर्धहानि रथवापशुनाशनम् ।
 दारिद्र्यंजायतेतत्र मुनीनावचनंयथा ॥६७॥ संस्थाप्यपूजेत्तत्र हनुमन्तंशुहोपरि ॥ धंधलत्र
 नजायेत् दक्षिणोत्तरयोर्मिथ. ॥६८॥ अथनैऋत्येशानयोर्वेधं निर्याय.—नैऋत्यामन्दिरंत्त्वं
 पोष्यन्ते त्योशद्विषुस्थिताः जनापमंतिथैतच्च तेषानाशोभवंसदा ॥६९॥ गृहंशासादकश्चैत्र
 तारणो ऽ दालमयच नैऋत्येयद्विदृश्यन्तेत्वीशानेवेधमं निदा. ॥७०॥ रत्नपुत्रीचदाष्टिबी छाट्ट-
 रचानोष्वटस्तथा ॥ एतेफलमयावृत्तानैऋत्यादिशिवर्जिता ॥७१॥ पदरीनाद्विरश्चैव विन्दश्च
 बटवृक्षक. एतैर्वंधंविजानीया दीशानेनैऋतसाच ॥७२॥ स्त्रीणांकीर्तिविवाद. स्याद्वभूनात्रउ
 मिः सह स्याद्विपतापुत्रयोर्वैर मिति त्रैधाश्चनैऋते ॥७३॥ गृहप्रवेष्ट्रियतेस्वामिपतश्री पञ्चमंत्वे ॥
 चतुर्थेपुत्रहानिः स्यान्मर्वनश्यन्तिचाश्रमं ॥७४॥ पक्षिचमासिचक्रुद्रयैचमम्बन्मरे दापिपुत्रंविधां
 शुभाशुभंज्ञेयमिदंबुधैश्चनात् परंपात्रविचितगीचम् ॥७५॥ अथहस्तादिमानम्—चतुरविंश-
 तुलविंशतिमित. करोयुग४करोदण्ड । तद्विमहसंकोश क्रोशचतुर्कंयोजनंक्रोकम् ॥७६॥ अथ
 युगानुसारेणदूरीव्यवस्था—कृतेतुयोजनाद्वेधेत्तेतायाशोसमात्रत द्वापरंनरशब्दाधकलांण
 प्रपातनात् ॥७७॥ देशविभागेनवेधमानम्—जातधरेहस्तमंरयापर्वतेदण्डवा गृहताः नव्यर्श
 क्रोशमव्याद्वीपाभ्येयोजने स्मृता ॥७८॥ धंधन्माद्रनुपशतंशरपातंचैकतोयाम्ये तस्यर्द्धयार्गयो
 तस्यार्द्धेकोत्तरंषूष ॥७९॥ कोशमात्रेवारिरेधोयोजनेत्रयमत्रत गृहस्यशरपातेत्यंपरमंविपठ्यो
 ॥८०॥ अर्ध्यावस्थयावेधमानम्—पाभेधादशदंड स्यामाम्येगोशस्तुपश्चिमे । कंडर्शितक
 मीम्येगवेदा १० विपमघनाम् ॥८१॥ पाण्या शतद्वयंरा याम्याविधोद्विदंनतात् । चतु शत
 पश्चिमाया भुङ्क्ते शं वृषाभयात् ॥८२॥ राजगोहपदेवस्था चोपदेवाम्युगघनाम् । वेधम्यनुप
 धस्योपि नंधोनीचजातिच ॥८३॥ उच्चनीच समभूमिवेध — नीचानां तरे पत्र तुंगस्था
 परदक्षिणे तीर्थभू सर्वदिग्भागं पंजान्ते पुरवाम्नि ॥८४॥ दशदंडानि यदंतं पंजो पत्र
 नीचकम् । उत्तरे द्वादश नीचस्वस्थानस्थिततः सदा ॥८५॥ पश्चिमे सान्नि ३० कंडानि यदधि
 दुच्चभूमिषु । दूरस्थं याम्नीपदेव नवयाम्य गृहंयजेत् ॥८६॥ एकग्रामं विशेष माह —
 नगरेया पुरेपाडपि एकग्राम गृहस्थिता । तदंतरमितर्हंमैतः संस्थापयतु दिग्दशं ॥८७॥ दशदंडेषु
 पूर्वस्या माग्नेय्यापोऽशायधि । विशदंडेषु याम्यादां पोजनं गृहपाणि ॥८८॥ चतुरिंशत्
 नैऋत्यां त्रिगदंडेषु पश्चिमे । अष्ट दंडेषु याम्या मष्टादशतारोत्तरे ॥८९॥ चतुर्दश दंडेषु
 पश्चिमां शंभुनीकां तत्रदंडमितेयारत्तपरं च गृहंयजेत् ॥९०॥ शिवोक्तिः दशदंडानां

अथ सर्वद्विभुमहेश्वरि नगरेकापुरेचैव दशभूमिं विधत्ते ६१ वेधेऽथद्विधात्समाह.— वाणने-
 धात्परंतापि नैव सधेगम्मतो व्ययानरिवतोवास्ता ननथ परिकीर्तित ६२ नमभूमि
 यदाविधोक्तान्तरं परिनापंत श्रुत्वा नीरा तरगन्ताशोय प्रवर्तते ६३ अथ्युन्न मत्रदडा
 न्मग्नोत्तर शता १०० स्परम् । द्वियष्टिमित वंडानामभ्यशनेपति नीचगम ६४ धनु.
 शोभाभंतर पूर्णोचै गुणनी ह्यमनेनिवि सं सोमोत्था पश्चिमदिगिभागे दिनान्न ७३ वं
 न्युत् शिराय ६१ भरनपुर ग्रामाद्यावेणोण रनेपुनितमनी द्रोपा । शपचार्योभ्य जायती
 धाविर्ग द्वागान्ति ६— वैश्वपरिहाण माह —तायद्व्यालये ताय नीतुके गयगउपे । नगी-
 थागम्मानन श्रानिन प्रजामत । ६७ आगोप्राम युत्तरभन्तावेपिज मन्निग्म । आश्विनश
 धाम येनामिन यस्मद्गुह । ६८ अथ्युन्नपानिनीचेया प्यहपुह्य मध्यग । जलशयश्चनन्माये
 १। इत्तत्र नजायते ६९ वापीदुपनडागानां गागा र्गाम्भवेभ्मना भित्तोरित्तवे । म्यादानमायं
 न गपुगे १०० विदिग्म तात्तयव म्याप्रभ श्चतापिदुरन नाचरनीनभवद्वो नन ग्मृगुणोद्वन
 १०१ तथा नोवस्थितेकोण काणन तानजाया म्भाम्यतनवे सं ता गिन्याताउमेशर म म य
 ता न्द्रकयत नगीगासाग एवन गप्रवैपिन्दा भुमिनीरितागान तापने ३ **समभूमि** —नगरा
 द्विगुणाभूमि त्यक्त्वा पीडान-तापते गृहच्छाया द्विगुणिनां सान्का शाननजायते ४ तताग्यालेय
 शृङ्गान्वेध पुरजाभिकाम वास्तुनेमेभ्यगाभुमि र्म्याद्वेधररीमया ५ न्यनरे पर्वतराजमागं
 तरेनवधोन्नरतरिचनाऽपि । ग्रामान्तराजगृहान्तरैवा गृहस्यमानाद्विगुणोन्नदोय । ६ इति
 धाह्ये धनिर्णय अथगृह निर्माणे द्वारादिवेधानाह द्वारागवात्तस्मभं कर्दमभियता
 कोणवधेभ्व । नडरास्तुद्वार विधमना म-तमार्याय । ७ एकभित्तीद्वारयुग्मं तयोत्तर पराह
 सुतम । अधतन विजानीयाप्र य पीडा प्रजायते । ८ कुब्जिद्वार नक्तव्ये शृष्टेद्वार तथेय ।
 कुलीहानिचन्निरेया शृष्टेव्यापि विानदिशत । ९ स्तभहीन नक्तव्य प्रगांरंन मट्टेष्टम ।
 गाम्पुत्तौ तराश्चक तस्मात् तभाभ्व तारयत । १०। उदघाटने विधातेव गशब्दंन शोभनम्
 धेनाय नभार तान विद्व द्वार विजयत । ११।

इति वैश्व पट्टल ।

अथध्वजदि आयाद्यः—विस्तारेण हतवैधे विभजेदष्टभित्तत । यन् उपसभेदायी
 ध्वजायास्तेपुरिष्ठ ता ध्वजाभूमोदरि भागी सरभोनायमोष्ठम । श्रीपति - गृहेषुचाया विपमा
 प्रशस्ता । वशिष्ठ —विपमाय शुभायैवसमाय शापुट गद अथ नन्दादि शिलाप्रमा-
 याम्—विष्टकर्म प्रकारे—शिलाप्रमाण भमश यदिण वर्णांशुपूषण तथागुल नाम ।
 अथैव विशद्वपनविश्वनन्दा विस्तारके व्याममित तर्धम् । तर्धमानां द्यवर्षिडिकास्या दू सो-

धिमा न्यूनतरानकायां । चर्खन्व्यदस्थया शिलामानम् एकविंश द्विजम्भूषा कृत्राणादश
 सप्ततच । प्रयादशन्तुवैश्याना ग्राणानु नवागलम् । प्रासादादौ तु विशेष विश्वकर्मशास्त्रे-
 प्रायादग्दी विधानेन न्यगतव्या सुमनाहरा । चतुरस्रा समा कृत्रा नमन्ता इत्त मम्मिता ।
 शिलानामानि सचिन्हानि—नन्दा भद्रानया रिक्तापृष्ठातुनजिलासुत्र । पदमंसिहागनचन
 तोरणा च्चर्मवच । कूर्मचतुर्भुज विष्णु टकेन क्रमशालिपत्र । टंकादिदोषपरिहारार्थ-
 स्तपनविधानमग्निपुराणे—सर्वांमामविशेषण तनुत्रेणावगुण्डनम् । मृद्विगामयगामृण
 काप्रसिर्गन्वारिणा विधिनापञ्चमथन रनानपक्षासृतेनच गन्धतापान्तरकुत्रा निपननामरिता
 गुना फलरत्नसुनयाना गा-दृक्कसनिर्नन्त ॥ चन्दननमम लभ्यपश्वरान्त्रदयच्छिला स्तपन
 पृजनमंत-प्रथ गेचक्षणि शिलास्थापनार्थं यतनदमत्राम्नुशास्त्रे—इति वास्तुविधान्तु
 कृवाता रनान्मगउपाा सनानीयनिज स्तपनम् । रागुगान्वित तत्रदिग्माधनउर्वाा गृहमध
 सुमाधिते ईशानादिक्रमणय रणकुद लान्तु । यन्तिनाकाणभागपु मन्थैयिरुपत । नाभि
 गातेतवागत शिलानामपन शुभम् । शानताति कृत्राग्राउत्तियनविन्ध्यमा ॥ स्थापन
 मन्त्रादि नियमप्रयागपचरामि ॥ नन्दादिशिलानास्थापनाय, प्रनिशिलयास्य गाराय पत्राशिला
 कपयत ॥ तेषामुपशिलानामध्व पत्रादिधिक्रमया तामभयाभृत्तय तानिप्रादिवर्गक्रमण
 पत्रागुला मा द्धगुण सपादागुला पत्रकुम्भा नया ॥ युवशिल वास्तुनत खनि तकुम्भप्र
 तिष्ठ प्यशरागुलीयम् । त्रिप्रादियेणानुगत पशस्तो स्तपामान-सुनद ईमानम् । वास्तुपूजाविधा
 नम्—तत्रेय—त्रिभागमण्डपकृत्रा म यभागतुक्त्रिण । निमाणेन्द्राणाय प्राश्रितिः । ५
 पिता । वास्तुपूजातुक्त्रेनातस्मात्तास्वयाम्यत । गृहमन्थस्तमात्रमन्त्र-मण्डलादि ।
 एकशीतिपदंय रतुभद्रनार्यम् । अतिरशिट ॥ सूत्रपाततवाक्य तवास्तुम्भान्ययुन । द्वाररुगं
 च्छूयतद्वत्प्रथममवतता । वास्तुपशमनेतद्वद्वास्तु यलस्तुपत्रा ॥ वास्तुभद्रोच्चार —पनी-
 क्षीतिपदकुश्रिणुभि कनकनच । पत्रादिपष्टेनानुलिपे स्रोताल उमवत । ११ दशपनापरारंगा
 दशधेनात्तरयता । सत्रवास्तुविभागपु त्रितयानवकादन । **देवानामानि**—शमतायशोरतो
 धान्ता विशालाप्राणसाहिनी । सती तसुमनान दा सुभद्रासु धिनातथा । पूवापरागतायेता उदग्मा
 म्याध्रिनास्तथा । हिरण्य सुत्रतालदर्मी तिभतित्रिमल प्रिया । तयातान विज कत्र तथेद्रादशमी
 स्मृता । अथतव्यक्रमप्रेरमन्थान्पत्रमान्धिना । प्रवाग्निशस्त्रपनार्थे भन्तल पवमशुतम् । कुण्डं
 कुश्रिद्वि गौन यावासारपितपत । स्रमिउत्राप्रयुवाए प्रतिमायि गान्त्र । पदस्त्रेन्पूतयदेगा
 त्रिशापशदशत्रय । ईशानादिक्रमेणैता-प्र-दक्षिण्यनन्ध पथा । नन्दादिशिनरका गन प्रायस्-
 मानत । पत्रे यपीतयणि निमानैवैवपदजैव । पातपत्रतद्विपदत्रोमृतस्यैवमत्रत । पौत

भांगतु वय ई० मामन्त्रत अथेशभागे चेशान तमीशानेति मन्त्रत । अस्मैऽति ब्रह्माणं
 मध्येशान पूर्वमी । इतानाष्टमी त्यन्तच मध्यपरिचम निरन्ता । वास्तु भद्र पूजादि
 प्रमाणमाह शौनक — शिवादि पंच तत्र रिश देनास्तत्र पजयेत् । वेदमंत्रानामपि प्रण-
 प्याहति भिरन्ता । होमस्त्रि मन्त्रेण्यौ । कुंटेऽस्त प्रमाणम् । यवेकृण्विले स्तद् ममिद्धि-
 क्षीरत्रयम् । पलायः नादिरांप्यपामाणा उन्वर मन्त्रे । पुण्ड्रुं मयेऽपि मजुमपि समा-
 न्तिने तस्यस्तु पंचभिर्भिर मित्रमीन रभापिसा तान्ते भक्ष्य शोभ्येय चास्तुगस बलित्रय ।
 नमस्सारास्तु युक्तं प्रणय देन मर्त । ततान्यद्वे मिहानं स्त्रिष्ट कृशाम मन्त्र । प्रणाति
 च सुदनामंसय पागने तत शैव प्रयोग तद्व्यभि ।

इति गृहास्तु परिभाषा ।

~ * ~ * ~

गृहादि सूत्रारम्भ विधिः ॥

अथ सूत्रारम्भ विधानं वक्ष्ये शुभे ज्योतिः शास्त्रोक्त सूत्रा-
 रम्भ मुहूर्ते पुण्येऽहनि नूतन गृहं कर्तुमुत्सुको गृहान्मङ्गल ध्वनि
 वादित्रादिपुरः सरं शुस्नानः सुवासाः सानार्थः शान्तिपाठादि
 मङ्गलसूक्तानि पठित्वा पूर्वोक्त कथनानुकूल परीक्षितं चतुरन्गगृहं
 निर्माणस्थानमागत्य पश्चगव्येनाभिपेक विधानेन कुशपिंडुलिना
 वा दुर्वाभिस्तद्भूमिर्भूमिपिंड्येशान कोणैकदेशे गोमयेनोपलिप्य
 दीपं प्रज्वाल्य सम्पूज्य च भूतोत्सादनदिकं विधाय गणेशादि
 पञ्चांग पूजनं कृत्वा-ईशानकोणे धान्यपुञ्जोपरि बृहत्कलशं ब्रह्म
 विधिना सम्पूज्य शमीवट विल्याद्यन्यतमवृत्तं सम्भृतान् ब्रह्मादि
 रहितान्यथोक्त लक्षणान् चतुरः शंकून् कौशेय कार्पाश शणनि-
 मित्रं मध्यग्रन्थिरहित मर्थांशुल विशाल सूत्रं तत्र सामयिकान्य-
 न्यानि वस्तून्यपि च नत्कलशपार्श्वे संस्थाप्यवक्ष्यमाण मन्त्रेण
 विश्वकर्माणं मावाहयेत् ॥ ॐ विश्वकर्मन्त्रित्यस्य शासकृपिन्नि-
 पृच्छन्दः विश्वकर्मा देवता विश्वकर्मा चादने विनियोगः । ॐ

विश्वकर्मन्हविषाव्वर्धनेन त्रातारमिन्द्रम् कृणोरवध्यम् । तस्मै
 धिः। समनमन्तपूर्वीरयमुग्रोच्चिह्नयोयथा ऽ सत इति पंचोप-
 चारादिभिर्विश्वकर्माणं सम्पूज्य ॐ विश्वकर्माणे नमः सम्प्रार्थ्यं
 शान शंकुम् । ॐ तमीशान मिलस्य गौतम ऋषिर्जगनीलुन्द
 ईशानो देवता ईशान कोण शंकु पूजने विनियोगः ॥ ऋक् ॥ ॐ
 तमीशानं जगतस्तस्थुपस्पतिं धियं जिन्न मवसे ह्रमहेव्ययम् ॥
 पूषानो यथा वेदसामसद्बुधे । रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥
 ॐ ईशानाय नमः सम्पूज्य प्रथक् स्थापयेत्-तत आग्नेय शंकुम् ॥
 ॐ अग्नेनयेत्यस्यागस्त्य ऋषि स्त्रिष्टुष्टुन्दो ऽ ग्निर्देवता आग्नेय
 कोण शंकु पूजने विनियोगः—ऋक्—ॐ अग्नेनय सुपथारावेऽ
 अस्मान विश्वानिदेव द्ययुनानि विद्वान् ॥ युयोध्यस्म उजुहुरा-
 णमेनो भृगिष्ठान्ते नम ऽ उक्तिं विवेम ॐ अग्नये नमः सम्पूज्य
 प्रथकस्थापयेत् ॥ ततो नैर्ऋत्यशंकुम् ॥ ॐ षपते इत्यस्य वरुण
 ऋषि रनुष्टुष्टुन्दः निर्ऋतिर्देवता निर्ऋतिकोण शंकुपूजने विनि० ॥
 ऋक्—ॐ षपते निर्ऋते भागस्तंजुपस्व रवाहा ॐ निर्ऋतयेनमः
 सम्पूज्य च प्र० ॥ ततो नायक्य शंकुम् ॥ ॐ वानोवेत्यस्य वृह-
 स्पति ऋषि स्त्रिष्टुष्टुन्दो वायुर्देवता वायुकोण शंकु पूजने वि० ॥
 ॐ वानोवामनोवा गन्धर्वा सप्त वि द्दं शनिः ॥ ते ऽ अग्ने
 स्वमयुजंस्ते ऽ अस्मिन्नवमादधुः ॥ ॐ वायवेनमः सम्पूज्य प्रथक्
 स्थापयेत् । ततः प्रधान शिल्पिनमाह्वय नं सम्बोध्यात्र त्वं मम
 गृह निर्माण कर्मणि प्रधान शिल्पी भवितुमर्हसि ॥ अस्मीति
 प्रत्युक्तिः ॥ त्वं भव भवानीति शिल्पी वृथात् ॥ शिल्पिनं पारि-
 तोषिकं यथाशक्त्या द्रव्य परिधेय वस्त्रादिकं दत्त्वा तत्र शोधि-
 ताया भूमौ चतुरस्रे मण्डले शिल्पी अन्यदुपसूत्रं गृहीत्वा
 गृहभूमेश्चतुस्त्रायत यथोक्त रीत्यानिरीच्य चतुर्षु कोणेषु उपशंकुन्
 स्थापयित्वा शंकुसूत्रेण द्विवेष्टयित्वा प्रादक्षिण्याग्नेयादि क्रमेण
 शान शंकुपरि दृढीकृत्येशानान्नैर्ऋत्य शंकुयावन् कर्णसूत्रं पानयेत् ।

तद्द्वन्द्वेयाद्वायव्य शंकुपरिकर्णशूत्रं पानयेत् । धेन प्रकारेण द्वयोः
सूत्रयोर्दोषैक्यता भवेत् । एवं विधिना त्रिकोण रहितं कुर्यात् ॥
ततो ज्योतिः शास्त्रोक्तं सृष्टे पदानुसारेणानुक्त स्थानस्थ ग्रहा-
णां दानानि कृत्वा सूत्रपानं कुर्यात् । अत्र सूत्रपातविधिं केचि-
दाचार्या आग्नेयकोणतो वदन्ति ॥ अपरेर्ईशानतः ॥ अतोदेश
प्रधानुसारात् पूर्वं पूजित प्रथमशंकोरुपरि सूत्रं दृढीकृत्य शंकोरग्रं
तीक्ष्णमुग्वं घृतदुग्धादिभिर्विलिप्याचार्यो लोहमुष्टिं (हतोर्डी)
गृहीत्वा तत्र स्तम्भ निर्माणार्थं गर्तं विधाय पूर्वं शंकधिष्टित
भूम्यामवक्रं दृढं पूजितमीशान शंकुं धृत्वा मन्त्रमुच्चेत् ॥ ॐ
विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः । अस्मिन् स्थाने तु
निष्ठन्तु आयुर्वलकराः सदा ॥ इति मन्त्रं पठन् शंकुं लोहमुष्टिना
अष्टवारं ताडयेत् ॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः । भद्रं पश्ये-
माल्लभिर्जजत्राः ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनभिर्यसे महिदेव-
हितं यदायुः ॥ शंकोर्भन्दे भङ्गे चानिष्टफलम् ॥ पूर्वोत्तरे शानेषु
शंकु शिरस्तिरश्चीनंचेच्छुभम् अन्यथा शुभम् ॥ ईशान
स्थूणस्तम्भमपि सान्निध्ये दृढीकृत्य ॐ ब्रह्मणे नमः—
इति मन्त्रेण पाद्यादिभिः सम्पूज्य बलिं दद्यात् ॥ माप
भक्तवलिं सम्पूज्य ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो घेचान्ये तत्समा-
धिताः । बलितेभ्यः प्रयच्छामि गृहन्तु सततोत्सुकाः स्वाहा, एवं
सर्वत्र तत् आग्नेये ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः ।
अस्मिन् स्थाने तु निष्ठन्तु आयुर्वलकराः सदा । अनेन मन्त्रेण सुष्टुनरं
शंकुं कीलयेत् । स्थूणस्तम्भं । ॐ विष्णवे नमः पाद्यादिभिः सम्पू-
ज्याग्नेयशंकुं सूत्रेण प्रदक्षिणक्रमेण द्विद्विवेष्टयित्वा बलिं दाप्यत् ।
बलिसंपूज्य ॐ अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्यो घेचान्ये तत्समाधिताः ।
बलितेभ्यः प्रयच्छामि पुष्पमोदनं सुतमम् स्वाहा । ततो नैर्ऋत्ये ।
नैर्ऋत्ये शंकुसूत्रेण द्विवेष्टयित्वा । ॐ विशन्तु भूतले नागा लोक-
पालाश्च सर्वतः । अस्मिन् स्थाने तु निष्ठन्तु आयुर्वलकराः सदा ।

इति शंकुपूर्ववत्कीलयेत् । रत्नमेम् ॥ ७० ॥ महेश्वरायनमः पाद्या-
 दिभिः सम्पूज्य वलिंच । ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां
 येचराक्षसाः । वलितेभ्यः प्रयच्छामि सर्वं गृह्णन्तु साम्प्रतं स्वाहा ।
 वायव्यकोणशंकुं द्विवंष्ट्रयित्वा-७१ विरान्तुभृतलेनागा लोकपाला
 ऋसर्वतः । अस्मिन् स्थाने तु तिष्ठन्तुआयुर्वतकराः सदा । पूर्वव-
 त्कीलयेत् ७२ इन्द्रायनमः स्नम्भं सम्पूज्य वलिंच । ॐ वायव्य
 घासिनोघेच येचान्येतत्समाश्रिताः । तेभ्योवलिं प्रयच्छामि गृह्णन्तु
 पुण्यमोदनम् स्वाहा । इति चतुष्कोणेषु शंकुकीलनादनन्तरं ततः
 ईशानकोणस्थ शंकौनत्सूत्रं हृदी कुर्यात् । तत आचम्य (अत्रके-
 चिदाचार्या ग्रहयाग पूर्वकवास्तुयागंचं तन्मध्यभूमौ वास्तु
 वेदीमेकाशीनि पदां निर्माय वास्तुमद्र पूजा पद्धत्यनुसारेण
 पूजावलि लोमादिकमपि प्रवदन्ति ॥ उक्तं च शब्द कल्पद्रुमे,
 मात्स्ये सूत्रपातादौ ॥ सूत्रपाने तथा कार्यं तथा स्तम्भोदयेपुनः ।
 द्वारबन्धोच्छ्रये तद्गतप्रवेश समये तथा ॥ वास्तूपशमने तद्गद्वास्तु
 यज्ञस्तु पञ्चधा ॥ इति प्रमाणवचनेः सूत्रपाता दारभ्यो गृहप्रवेशा-
 न्तोक्त समयानुकूलो वास्तु यज्ञः पञ्चधा भवतीति) क्षेत्रमध्ये ऽ
 अष्टदलं कमलं लिखित्वा तत्र पृथ्वीं पूजयेत् ॥ ध्यानम्—
 सुरूपां प्रमदारूपां सर्वं लोक धरामहीम् । ध्यायामिमनसा देवीं
 दिव्या भरण भूषिताम् ॥ ॐ स्योना पृथ्वीनि मेधातिथिर्ऋषि-
 र्गायत्री हृन्दः पृथ्वी देवता पृथ्व्यावाहने पूजने विनियोगः ॥
 ऋक् ॐ स्योना पृथिवीनो भना वृक्षरा निवेशनी । यच्छानः
 शर्म सप्रथाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्तः भो पृथ्वीहागच्छेहृतिष्ट सुप्र-
 तिष्ठिता वरदाभव ॥ ॐ पृथिव्यैनमः ॥ इति पाद्यगन्धादिभिः
 सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ पृथिव त्वं सर्वलोकानामाश्रयायाचितासुरैः ।
 अनोमेगृह निर्माण जमस्थानं प्रकल्पय ॥ तत्रैव मध्यपदे वास्तु
 पुरुषं ध्यायेत् ॥ ध्यानम् ॥ ॐ एहोहि भगवन् वास्तो गृहेश सर्व
 सौख्यद । पूजां गृहाण देवेश सर्वसम्पत्करो भवं ॥ ॐ वास्तो-
 ष्यत इति वशिष्ट ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वास्तुदेवता वास्त्वावाहने

विनियोगः । ऋक्ः३० वास्तोष्पते प्रतिजानिह्यस्मान्स्वावेशो ऽ
 अनमीवोभवानः । यत्त्वेमहे प्रतितन्नोजुपस्वशन्नो भवद्विपदेशं
 चतुष्पदे । ३० वास्तु पुरुषायनमः ॥ पाद्यादिभिः सम्पूज्य
 प्रार्थयेत्—वास्तो स्वामिन् शक्तिरूप सर्व सौभाग्यसंयुत । गृहं-
 रत्न ममाभिष्टं प्रसाधय मुदाप्रभो । ततः ईशानमागत्य वृहत्कलश
 मादयाचार्यः स्वस्तिवाचन पूर्वकंकलशजलेनेशानादि प्रादक्षिण्येन
 सूत्रमार्गेण धारां दत्त्वा ईशान एव पुनस्तं कलशं यत्कचिज्जल
 सहितं संस्थाप्य तेनैव क्रमेण यवान् वापयेत् ॥ तत स्तस्मिन्नेव
 सङ्गने आचार्यः (अत्र स्वातंशिलान्यासमपि आग्नेयतो वदन्ति-
 केचित् । देशप्रथानुकूलं कुर्यात्) शान्तिसूक्तादिपुरः सरशिल्पिना
 सह घृतमधुमुखेन कुहालेन उदङ्मुखेन भित्तिनिर्माणार्थं शिलास्थानं
 खातयेत्— ततो मृदंनवेन वेणव पिष्टकेन नैर्ऋत्यां प्रक्षिपेत् । एवं
 चतुर्षु कोणेषु खातं कृत्वैशान्यां दिशि तत्खातं गच्छेत् यवगन्धपंच-
 रत्न सुवर्णं रजतादि मुद्रां स्वनां मांकिते स्वर्णपत्रे तद्दिनस्य सूर्याश
 संवत्सरगणानां कादिकं सुलेख्य शिलाधः स्थापयेत् । उपरित
 उत्तरं पूर्वाभिमूखेनाचार्यः—ईशानशिलानन्दानाम्नीमुत्थाप्य ॐ
 स्थिरो भववीङ्खग ऽ आशुर्भवद्वाज्यर्वन् । पृथुर्भवसुखदस्त्वम ,
 अग्नेः पुरीषवाहणः इति ईशाने स्थापयेत् । ३० नन्दायै नमः ।
 गन्धादिभिः सम्पूजयेत् तत आग्नेये खनितगतं पूर्वदन्त्यस्याग्ने-
 यशिर्जा भद्रानाम्नीमुत्थाप्य ३० भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः
 भद्रं पश्येमाक्षभिर्जजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यसे-
 महि देवहितं यदायुः । ॐ भद्रायै नमः सम्पूज्य ततो निर्ऋतिकोणे
 जयानाम्नी शिलामुत्थाप्य ३० स्थिरो भववीङ्खग ऽ आशुर्भवद्वा-
 ज्यर्वन् । पृथुर्भवसुखदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहणः इति संस्थाप्य
 ॐ जयायै नमः इति सम्पूज्य । ततो वायव्य कोणेरिक्तानाम्नीं
 शिलामुत्थाप्य ३० अम्बकं यजामहे सुराभिपुष्टि वर्धनम् ।
 उर्वारकमिव बन्धनान्मृत्यो मुञ्जीय मामृतान् ॐ रिक्तायै नमः
 संस्थाप्य सम्पूज्य च तत आचार्यः शान्तिकलशोदकेन शिलाभ-

मिच संप्रोक्ष्यकुहालादिकमपि जले आप्लान्द्यगन्धादिना पूजयेत्
 ततो सपत्नीक्यजमानं अभिषेक मंत्रैरापिच्य ॐ भद्रमस्तु
 शिवंचास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु । रक्षन्तुत्वां सुराः सर्वसम्पदः
 सुस्थिराभव ॥ इति देवोपभुक्त निर्मात्यंदत्त्वा आचार्यादीन् ।
 शिल्पकारादींश्च दक्षिणाभिः पारितोषिकादिना तोपयेत् ।

(१) सूत्रारम्भ विधिः ।

गृहवास्तुभद्रम्

स्मृत्यायनम् १० रक्त

विदायनम् ३७ रक्त

चरवयनम् १ :

रक्त शिनिन १	पत्नी-याय पीत २	विद्येयनम् ३२	आपाय ३३	प्रीत ३३०	द्विपदे जयताय नमः ३	द्विपदे कुलेशानुवाय नमः ६ पीत	द्विपदे सयाय नमः १ रक्त	द्विपदे सत्तान नमः ६ श्वेत	द्विपदे शशाय नमः ७ दृष्ण	श्रावशायाय नमः ८ पीत	धृष वायव्यनमः ६
द्विपदे नमः ३२	श्रावशाय नमः ३३	द्विपदे नमः ३३०	द्विपदे नमः ३३	द्विपदे नमः ३३०	द्विपदे नमः ३	द्विपदे नमः ६ पीत	द्विपदे नमः १ रक्त	द्विपदे नमः ६ श्वेत	द्विपदे नमः ७ दृष्ण	श्रावशायाय नमः ८ पीत	धृष वायव्यनमः ६
द्विपदे नमः ३२	श्रावशाय नमः ३३	द्विपदे नमः ३३०	द्विपदे नमः ३३	द्विपदे नमः ३३०	द्विपदे नमः ३	द्विपदे नमः ६ पीत	द्विपदे नमः १ रक्त	द्विपदे नमः ६ श्वेत	द्विपदे नमः ७ दृष्ण	श्रावशायाय नमः ८ पीत	धृष वायव्यनमः ६
द्विपदे नमः ३२	श्रावशाय नमः ३३	द्विपदे नमः ३३०	द्विपदे नमः ३३	द्विपदे नमः ३३०	द्विपदे नमः ३	द्विपदे नमः ६ पीत	द्विपदे नमः १ रक्त	द्विपदे नमः ६ श्वेत	द्विपदे नमः ७ दृष्ण	श्रावशायाय नमः ८ पीत	धृष वायव्यनमः ६

विहितविशेषाद्यनम् ४२ पीतः

परपराव्ययनम् ४२ रक्त

जम्भकाय नमः १५

अथ वास्तुयाग पद्धतिः ।

तत्रादौ, नूतन गृहपतिज्योतिर्विन्निरूपिते शुभे मुहूर्ते आचा-
 योक्त्यनुसारेण शिल्पकार द्वारा पञ्चशिलाः पूर्वांक्त विधिना
 यथा ब्राह्मण एक विशल्यंगुल दीर्घाः । क्षत्रिः सप्तदशांगुलदीर्घाः ।
 वैश्यस्त्रयोदशांगुल दीर्घाः । शूद्रे नवांगुल दीर्घाः । दैर्घ्यात्
 विशालाः । विशालताद्द्व प्रमाणोन्नताः समाः मनोहरा घाट-
 येन ॥ तासु क्रमशः नन्दायां पद्मम् । भद्रायाम् सिंहासनम् ।
 जयायां तोरणं लुत्रम् । रिक्तायां कूर्मम् । वर्णायां चतुर्भुजं
 विष्णुम् । शिल्पीयंकेन लिखेत ॥ तासां शिलानां च स्थापनार्थं
 शिलामयाआधारशिला । वितस्तिमात्रायनाअष्टांगुलोच्छ्रिताः पदां
 गुलायनाः ॥ विंशतिशिलाः । अन्या अपिकारयेत्, यथागर्भमध्ये
 चतस्रणामुपशिलानां मध्ये इत्यादि निधि कुम्भस्थापनार्थं प्रादेश
 मात्रं चतुरस्रं कुण्डं भवेत् । पद्मादिनिधि कुम्भाश्च ताम्रका
 सृष्टमया वा वर्णादीनां क्रमेण पञ्चांगुलाश्चतुरस्राः सार्द्धं द्वयंगुलाः
 सपदांगुलाः पञ्चकार्याः शूद्राणामपि सपदांगुलाण्व । तेषां पञ्च
 कुम्भानां विधानानि च कार्याणि ॥ अथ कर्म प्रयोगः ॥ तत्र
 पूर्वोऽहनि कृतैकभुक्तो यजमानः सपत्नीकः प्रांगुण्योपविश्यदीपं
 प्राङ्गाल्याचम्य स्वस्ति वाचनं पठित्वा ॐ सुमुखेत्यादिना गण-
 शाय पुष्पांजलि निवेद्य स्वैष्ट देवतां स्मृत्वा अर्घ्यं संस्थाप्य प्राणा-
 याम त्रयं विधाय गौरसर्षपाक्षतैर्भूतोत्सादनं विधाय कुशानिल
 जलान्यादाय संकल्पं कुर्यात् ॥ अथेत्यादि संकीर्त्यामुक्तोऽहं वास्तु
 शान्तिपूर्वकं शिलान्यास गृह प्रवेश कर्मणि च निधिप्रना सिद्धये
 आदौ श्री गणपत्यादि पंचांग देवतानां ण्जन पूर्वकं नादीध्राद्ध
 पुण्याहवाचनादि कर्म करिष्ये ॥ पूर्वांक्त विधानेनेतान्सम्पूज्य
 प्रधान सङ्कल्पं कुर्यात् ॥ अथेत्यादि संकीर्त्यामुक्तोऽहं नूतनगृहे
 शिलान्यासपूर्वकं करिष्यमाणं प्रवेश कर्मणि सर्वोपद्रव शान्ति
 पूर्वकमायुरारोग्यैश्वर्याभिर्बुद्धये पुत्रपौत्र धन धान्यादि द्विपद चतु-

पुष्पादि वृद्धये श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं ग्रहमन्त्रं सहितानां सर्वतो
 भद्रं ग्रहंभद्रं वास्तु भद्रं पूजनयुतानां वास्तु शान्तिं करिष्ये—
 तथाचगणेशनवग्रहादि साधकानां मार्चार्यव्रतार्थिगंसदस्यद्वारपाल
 कानाश्चयथाक्रमंवरणंकरिष्ये ॥ वासांगुलीयकासन पंचपात्रधौत्तो
 तरीय वस्त्रादिसामग्रीं सम्पाद्यजलेनाभ्युक्ष्य गन्धान्नादिभिः
 सम्पूज्याचार्यब्राह्मणमाह्वयार्थ्यदत्त्वा गन्धादिभिः सम्पूज्याद्येत्या
 दि संकीर्त्यामुक्तो ऽ ह्येभिर्गन्धात्त यज्ञोपवीत पुष्पमाला वासो
 लङ्करणद्रव्यैः सवास्तुशान्तिशिलान्यासगृहप्रवेशकर्मण्याचार्यत्वेना
 मुक्त शर्माणं ब्राह्मणं वृणे । वरणं तस्मैदत्त्वा—वृतो ऽ स्मीत्याचार्यो
 व्रूयात् । प्रार्थयेत्—आचार्यस्तु यथास्वर्गे शक्रादीनां वृहस्पतिः ।
 तथात्वं मरुयज्ञे ऽ स्मिन्नाचार्यो भवसुव्रत ॥ तथा गणेशमन्त्र
 जापकं नवग्रहमन्त्रजापकान । संहितापाठकंशात्यध्याय पाठ-
 वान् द्वारपालान् यथाशक्तितो वृणुयात् । तत्र आचार्यसहितो यज-
 मानः । धूपदीपादीनि सर्वां पकरणवस्तूनि ब्राह्मणैर्ग्राहयित्वावादि
 त्रादिमङ्गलध्वनिं पुरस्कृत्य मण्डपं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारेण
 प्रवेशं कुर्यात् । तत्र सुलिप्तायां भूमौ मण्डपमध्यभागे यजमानहस्ता
 चतुर्हस्तां चतुरस्रां सर्वतोभद्रवेदिकां हस्तोच्छ्रितां वासपादेहस्तां
 चतुरस्रां शिल्पकारद्वारा निर्माय तत्राधारं श्वेतवस्त्रं प्रसार्याचार्यः
 पूर्वाक्तप्रकारेण रेण्वानिर्माणं रचनादिसंस्कृत्या स्तम्भपूजोक्त
 विधिना षोडश स्तम्भान् सम्पूज्यमध्ये यथेष्टं देवं वेदोक्तविधिना
 सम्पूज्य यदि शिवशक्तिविष्णवादि मन्दिराणां वा पीकूप तडागा-
 दीनां प्रतिष्ठाचेत् ॥ अष्टलिंगतो भद्रादीनां रत्नयत्तद्देवतानां
 स्थापनं पूजनं च कुर्यात् ॥ तत ईशानेग्रहं भद्रोक्तरीत्या त्रिवर्षावेदीं
 निर्माय पद्धत्यनुसारेण पूजनं कुर्यात् ॥ तत्र आग्नेये यजमानहस्तेन
 हस्तमितायामविस्तारां चतुरंगुलोच्छ्रितां वास्तुवेदीं निर्माय वैशु-
 परिश्वेतवस्त्रं प्रसार्य ततो ईशानादिकोणं चतुष्केषु ॐ विशन्तु
 भूतलेनागा लोकपालरक्षसर्वतः । अस्मिन् गृहे तु तिष्ठन्तु आयुर्वल-
 कराः सदा ॥ इति मन्त्रेण प्रादक्षिण्येन ग्वाधरोदि कीलिकाचारो-

पयेत् ॥ तत्रैवपाश्वरं मापभक्तवलिदद्यात् ॥ ॐ अग्निभ्यो ऽ
 प्यथसर्पेभ्योयेचान्ये तत्समाश्रिताः । तेभ्योवलिंप्रयच्छामिपुण्य-
 मोदनमुत्तमम् ॥ ततोवास्तुवेद्युपरिवस्त्रे स्वर्णशलाकयाव्यंगुला-
 न्तराला समादश रेखानाम मन्त्रैः कुंकुम हरिद्रादिभिर्मत्र
 मुच्चार्य कुर्यात् । आदौ पश्चादारब्धाः प्रागन्ताः । ॐ
 शान्तायै नमः ॐ यशोवत्यै नमः ॐ कान्तायै नमः । ॐ
 ॐ विशालायै नमः । ॐ प्राणवाहिन्यै नमः । ॐ सत्यै नमः । ॐ
 सुमनायै नमः । ॐ नन्दायै नमः । ॐ सुभद्रायै नमः । ॐ सुर-
 थायै नमः ॥१०॥ अतो दक्षिणारम्भाउदंगताः प्राक्संस्थाव्यंगुला-
 न्तरालाः समादशरेखाः कृत्वा ॐ हिरण्यायै नमः ॐ सुव्रतायै नमः
 ॐ लक्ष्म्यै नमः । ॐ विभूत्यै नमः ॐ विमलायै नमः ॐ प्रिया-
 यै नमः । ॐ जयायै नमः ॥ ॐ कलायै नमः । ॐ विशोकायै नमः
 ॐ इडायै नमः ॥१०॥ एवं एकाशीतिपदं वास्तुमण्डलं विधाय
 पूर्वाक्तानुसारेण रक्तपीतादित्थं वर्णयित्वा वक्ष्यमाण प्रकारेण
 पदेषु देवता स्थापन पूजनादिकं च कुर्यात् ततो वास्तुवेद्याः
 परिचमेवोनरे सयोनिमेखलं हस्तमात्रायत विस्तारंकुटं चतुरंगुलो
 च्छ्रानंस्थान्दिलंवाकृत्वा चतुर्द्वारयुक्तांशालावेदिकारचध्वजादिभिः-
 सुसज्य यजमान आचार्यो वा वक्ष्यमाणपध्दत्या वास्तुवेद्यामी-
 शानादि क्रमेण शिख्यादि देवानावाहयेत् । अथातो वास्तुभद्र
 पूजन विधिः । ॐसिध्दम् ३ त्रिराचम्यसंकल्पंकुर्यात्— अथे-
 त्यादि देशकालो संकीर्त्यामुकोऽ ह्मनुकर्मणि शिख्यादि वास्तु
 भद्रस्थदेवतानां सुवर्णरजनादि प्रतिमा स्थापन पूर्वकमीशानाद
 प्रादक्षिण्य क्रमेण तत्तद्देवतानामावाहनादिःप्रकारेण पूजनंकरिष्ये ।
 ततः सुवर्ण मयीनागाकृतिं वास्तुप्रतिमामान्यारच प्रतिमास्ता
 अपात्रेसंस्थाप्याग्न्युत्तारण विधिना ऽ ग्न्युत्तारणं कृत्वा लिखित
 वास्तुभद्रानुसारेण तत्तत्स्थानेषु प्रतिमास्थापयित्वा कर्मारंभं
 कुर्यात्-। पंचशिलाश्च वास्तुवेद्याः परिनः स्थापयेत् । तत्रादौ
 घाहृईशान एकपदेरक्ते शिम्बिनम् । ॐ सतः पावक इत्यस्य

मेधातिथि ऋषिर्गायत्रीछन्दो ऽग्नि देवता शिख्यावाहने विनि-
योगः । ७० सन पाचक दीदिवोग्नेदेवा । ११॥ इहाचह । उपथञ्ज
र्द० हविश्चम ७० भूर्भुवः स्वः शिखिनेनमः स्थापयामि पूजय-
मि । तदग्रतः प्रादक्षिण्य क्रमेणैकपदेपर्जन्यं पीतम् ॥
ॐ शन्नो वात इत्यस्य दध्यंगाथर्वण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः पर्जन्यो
देवता पर्जन्य स्थापने विनियोगः ॥ ॐ शन्नो वातः पवताँ
शन्नस्तपतु सूर्यः शन्नः कनिक्कददेवः पर्जन्योऽभिवर्षतु ॥ ७० भू०
स्वः पर्जन्यायनमः स्था० पू० ॥ तदग्रतो जयंतं द्विपदे पीतं । ॐ
गोत्रभिदमित्यस्याप्रतिरथ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता जय-
न्तस्थापने विनियोगः ॥ ॐ गोत्रभिदं गोविदं वज्रवाहुँ जयन्त
मज्मप्रमृणं तमोजसा ॥ १२० सजाता ऽ अनुवीर यध्वमिन्द्र
र्द० सन्वायो ऽ अनुस र्द० रभध्वम् ॥ ॐ भू० स्वः जयन्तायनमः
जयन्तं स्था० पू० ॥ ततो द्विपदे पीतं कुलिशायुधम् ॥ ॐ मस्त्वा
१॥ इत्यस्य विश्वामित्र ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता कुलि-
शायुध स्थापने वि० ॥ ॐ मस्त्वा १॥ इन्द्रवृषभोरणावपिवा-
सोम-मनुष्यधम्मदाय । आसिंचस्वजठरे मध्वद् ऊमिन्त्व र्द०
राजासि प्रतिपत्मुतानाम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिशायुधायनमः
स्था० पू० ॥ तदग्रे रक्तं द्विपदं सूर्यम् ॥ ॐ आकृष्णेनेत्यस्य हिर-
ण्यस्तुप ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सविता देवता सूर्य स्थापने० ॥ ॐ
आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्य येन
सञ्चिता रथेन देवोयाति भुवनानि पश्यन् ॥ ॐ भू० स्वः-सूर्याय
नमः स्था० पू० ॥ तदग्रे पदद्वये शुक्लं सत्यं ॥ ७० व्रतेन दीक्षेत्य-
स्य प्रजापति ऋषि रनुष्टुप्छन्दः सत्यो देवता सत्य स्थापने
वि० ॥ ७० व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्राद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥ ७० भू०
स्वः ७० सत्याय नमः स्था० पू० तदग्रे पदद्वये भृशं
कृष्णं । ७० भायै दार्वारमित्यस्य नारायण ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो
नारायणो देवता भृश । स्थापने विनियोगः ॥ ७० भायै दार्वार-

द्वारं प्रभाया ऽ अग्नयेभं ब्रध्नस्य द्विष्टपाग्नाभिपेक्षारं च्वपिष्टाय
 नाकाय परिवेष्टारं देवलोकायमेजितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितारं
 ॐ संपंभ्यो लोकेभ्य ऽ उपसेक्षारं मवश्रुत्यैवधायोपमन्थितारं
 मेधायव्वासः पल्पूलिं प्रकामायरजपित्रीम् ॥ ३० ॥ भू० स्वः०
 भृशाय नमः स्था० पू० ॥ भृशाग्रत एकपदे आकाशं—ॐ घृतंघृतं
 पावानइत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो विश्वेदेवा देवता आकाश
 स्थापने विनियोगः ॥ ३० ॥ घृतंघृतंपावानः पितृवसां वसांपावानः
 पितृवसान्तरिक्षस्य हृचिरसि स्वाहा दिशः प्रदिशश्चादिशो द्विदिश ऽ
 उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ ३० ॥ भूर्भुवः स्वः आकाशाग्रतमः
 आकाशं स्था० पू० तत आग्नेये एकपदे शुभ्रवर्णं वायुम् । ॐ
 द्वायोः एतइत्यस्यामूर्तिं ऋषिर्गायत्रीछन्दः सोमो देवता वायु-
 स्थापने विनियोगः ३० वायोः एतः पवित्रेण प्रत्यङ्गं सोमो ऽ
 अतिद्रुतः । इन्द्रस्य पूज्यः सन्वा ॐ भूर्भुवः स्वः वायुं स्था० पू०
 तत एकपदे रक्तं पूषणम् । ३० पूषणं वनिष्टुना इत्यस्य प्रजापति
 ऋषिः पूषा देवता पूषणः स्थापने विनियोगः ३० पूषणं च्वनिष्टुनां
 धानीन्स्थूल गुदयासर्पान्गुदाभिर्विह्वल आन्त्रैरपोवस्थिना घृ-
 णमांडाभ्यां द्वाजिन ६० शेषेन प्रजा ॐ रेतसा चापान पितृ-
 प्रदरान्पायुना कृष्मांडांश्छकपिरुष्टैः ३० भू० स्व० पूषणं स्था० पू०
 ततो द्विपदेशुकलं चितथम् ॐ विभद्यदीत्यस्य कुशिक ऋषिश्चि-
 द्मुच्छन्दः इन्द्रो देवता चितथ स्थापने विनियोगः ३० विदद्यदी
 सरमारुणमद्रे भिहिपाथः पूर्य ६० सध्रूकः अग्रंनपत्सु पदरा-
 णाम धारयं प्रथमा जानतीगात् ॥ ३० ॥ भू० स्वः वि० स्था० पू०
 ॥ ११ ॥ ततः पदद्वये पीतं गृहक्षतम् ॥ ३० ॥ गृहमाइत्यस्य शंकु
 ऋषिः सित्रिष्टुच्छन्दः वास्तुदेवता गृहक्षत स्थापने वि० ॥ ३०
 गृहामा विभीतमा वेपथ्वमूर्जं विभृतं ऽ एमसि । ऊर्जं विभ्रतः
 सुमनाः सुमेधां गृहानेमि मनसा मोदमानः ॥ ३० ॥ भू० स्वः । गृह
 क्षताय नमः स्था० पू० ॥ ततो दक्षिणे पदद्वये कृष्णं यमम् ॥ ३०
 यमायेत्यस्य दध्यंगाथर्वणं ऋषिस्त्रिस्त्रियज्ञं पि आगस्य यम

नामा चातोदेवता अन्त्ययोधर्मोदेवता यमस्थापने वि० । ३० यमा
यत्वांगिरस्वते पितृमतेस्वाहा । धर्मायस्वाहा । धर्मः पित्रे ॥ ३०
भू० स्वः यमायनमः स्था० पूजयामि । ततो रक्तवर्णपदद्वयेगन्ध-
र्वम् । ३० गन्धर्वस्त्वेत्यस्य परमेष्ठीऋषिर्यजुश्छन्दःपरिधयोदेवता
गन्धर्वस्थापने विनियोगः । ३० गन्धर्वस्त्वाविवश्वावसुः परिधा
तु विश्वस्थारिष्टत्रै यजमानस्यपरिधिरस्यग्निरिर्द्धितः ३० भू०
स्वः ३० गन्धर्वाय० स्था० पू० । ततोभृङ्गराजं द्विपदं कृष्णम् ॥ ३०
सोम ई० राजानमिति तापसऋषिरनुष्टुप्छन्दः सोमाग्न्यादिदेवता
भृङ्गराजस्थापने विनियोगः ॥ ३० सोम ई० राजानमवसेशिमन्वा
रभामहे । आदित्यान्विष्णु ई० सूर्यब्रह्माणं च बृहस्पति ॐ स्वाहा
३० भू० स्वः भृङ्गराजायनमः स्था० पू० ततएकपदे पीतं मृगम् ।
३० मृगो नभीमइत्यस्य जयपिः त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता मृगस्थापने
विनियोगः । ३० मृगो नभीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावन आर्जगंधा
परस्याः । स्रक ई० स ई० शायपविमिन्द्रनिगमं विशत्रूताद्विवि-
मृधोनुदस्व ॥ ३० भू० स्व० मृगायनमः स्था० पूजयामि । ततो नैर्ऋ
त्यएकपदे रक्तान्पितृभ्यः । ३० पितृभ्य इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः सप्तय
जूं पिच्छंदांसि पितरो देवता पितृस्थापने विनियोगः । ३० पितृभ्यः स्वधा
यिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपिता
महेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः ॥ अक्षन्नपितरो मीमदन्तपितरो
तीतृपन्तः पितरः पितरः शुन्वच्छदम् ॥ ३० भू० स्वः पितृभ्यो नमः
स्था० पू० ॥ ततएकपदे रक्तदौवारिकम् । ३० द्वैविरूपेति मन्त्रस्य
कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता दौवारिकस्थापने विनि० ।
३० द्वैविरूपे चरतः स्वर्धे ऽ न्यान्यावत्समुपधापयेते । हरिरन्यस्यां
भवति स्वधावांश्च्छुको ऽ अन्यस्यां दहदो सुवर्चाः ॥ ३० भूर्भुवः
स्वः दौवारिकायनमः स्था० पू० । ततो द्विपदेशुक्लंसुग्रीवम् । ३०
तन्नोवातमित्यस्य गौतमऋषिर्जगतीछन्दः विश्वेदेवादेवताः
सुग्रीवस्थापने विनियोगः । ३० तन्नोवातो मयो भुवातु मे पजं
तन्माता पृथिवी तनपिता अग्नौ स्तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तद-

शिचनाश्रुणुतं धिष्णयायुवम् ॥ ३० ॥ भूर्भुवः स्वः सृष्टीवायनमःस्था०
 पू० नद्रग्रेद्विपदंरक्तंपुष्पदन्तम् ३० नमः पायायेत्यस्य परमेष्ठीऋषि
 र्यज्ञंपिच्छन्दांसिरुद्रादेवतापुष्पदन्त स्थापने विनियोगः । ३० नमः
 पार्यायचावार्यायच नमः प्रतरणायचोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय
 च कृत्वायच नमः शण्यायच फेन्यायच ॥ ३० ॥ भूर्भुवः स्वः पुष्प-
 दन्तायनमः स्था० पू० । ततः पश्चिमे श्वेतं द्विपदेवस्थम् । ३०
 इमस्मेनिशुनः ओफऋषिर्गायत्रीछन्दो वरुणोदेवता वरुणस्थापने
 विनियोगः । ३० इमस्मे वरुणश्रुधीत्वमग्रा च मृडय । त्वाम
 वस्युराचके । ३० भू० स्वः वरुणायनमः स्था० पू० । ततो द्विपदे
 पीतमसुरम् । ३० येरूपाणि—इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप्छ-
 न्दः अग्निदेवताऽ सुरस्थापने वि० ३० येरूपाणिप्रतिमुञ्चमानाऽअसु
 राःसन्तः स्वधयाचरन्ति । परापुरोनिपुरोये भरन्त्यग्निष्टां लोका-
 कात्प्रणुदात्यस्मात् । ३० भूर्भुवःस्वःअसुरायनमः स्था० पू० । ततो
 द्विपदेकृष्णशोपम् । ३० नमोस्तुसर्पेभ्यइत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनु-
 ष्टुप्छन्दः सर्पादेवताः शोपस्थापने विनियोगः । ३० नमोस्तु
 सर्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु । ये ऽ अन्तरिक्षेदिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः
 ३० भू० स्वः शोपायनमः स्था० पू० । तत एकपदेपीतंपापम् ॥ ३०
 भामेर्माइत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्द्युश्छन्दः पापोदेवतापापस्थापने
 विनियोगः । ३० माभेर्मासस्त्रिश्वा ऽ ऊर्जधत्स्त्रधिषणेर्वाइवी
 सतीइवीडयेया मूर्जदेधाथाम् ॥ पाप्माहनो नसोमः ३० भू० स्वः
 पापायनमः स्था० पू० ततोवायव्येएकपदे रक्तंरोगम् । परंमृत्यो
 रित्यस्यसङ्कल्पऋषिःत्रिष्टुप्छन्दःमृत्युदेवतारोगस्थापने विनियोगः
 ३० परं मृत्योऽअनुपरेहिपन्थाग्यस्ते ऽ अन्य ऽ इतरो देवधानात् ।
 चक्षुष्मतेश्रुण्यते न्त्रवीमिमानः प्रजा ॐ रीरिपोमोनइवीरान् ॥
 ३० भूर्भुवः स्वः । रोगायनमः स्था० पू० । तत एकपदेरक्तमहिम् ।
 ३० अहिरिव भोगेरित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः इस्तघ्नो
 देवता अहिस्थापने विनियोगः ॥ ३० आहिरिव भोगैः पर्यंतिवा
 हुञ्ज्याथाहेति परिवाधमानः ॥ इस्तघ्नो विश्वाध्वयुनानि त्रिष्टुप्छ-

ऋमान्पुमा ॐ संपरिपातुविश्वतः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अह्ये नमः
 स्था० पू० ततो द्विपदे मुख्यं रक्तं—३० मुख्यं ई० सदस्य इत्यस्य
 प्रजापत्यशिव सरस्वत्य ऋपयोजगनीञ्जन्दः अशिवसरस्वतीन्द्रा
 देवता मुख्य स्था० वि० ॥ ३० मुख्य ई० सदस्य शिरऽ इत्सतेन
 जिह्वा पवित्र मशिवनासनसरस्वती । चप्पत्रपायु भिषगस्य वा-
 लोवस्तिर्न शोपो हरसातरस्वी । ॐ भूर्भुवः स्वः मुख्यायनमः ।
 स्था० पू० । ततःपदद्वये कृष्णं भल्लाटम् । ॐ भद्रं कर्णेभिरित्यस्य
 गौतम ऋपिस्त्रिष्टुप्छन्दः विश्वेदेवा देवताभल्लाट स्था० वि० ॥
 ३० भद्रं कर्णेभिःशृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरै
 रङ्गैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनृभिवर्षसे महिदेवहितं यदायुः ॥ ॐ
 भूर्भुवः स्वः भल्लाटायनमः स्था० पू० । ततो द्विपदेशुक्लंसोममुत्तरे ।
 ३० वय ई० सोमैत्यस्य वन्धु ऋपिर्गायत्रीछन्दः सोमोदेवता सोम
 स्थापने वि० ॥ ३० वय ई० सोमव्रतेतवमन स्तनृपु विभ्रतः ॥
 प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ॐ भू० स्वः सोमायनमः । स्था० पू० ततो
 द्विपदे कृष्णं सर्पम् । ॐ येषामीत्यस्य प्रजापतिर्ऋपिरनुष्टुप्छन्दः
 सर्पादेवता सर्पस्था० वि० । ॐ येषामीरोचने दिवोयेवा सूर्यस्य
 रश्मिषु । येषामप्सुसदस्कृतं तेभ्यः सर्पेभ्योनमः । ३० भूर्भुवः स्वः
 सर्पायनमः स्था० पू० ॥ ततः पदद्वये पीतामदितिम् ॥ ॐ अदिनि
 थौरित्यस्य गौतम ऋपिस्त्रिष्टुप्छन्दः विश्वेदेवाधिदेवता अदिति
 स्थापनेवि० ॥ ३० अदिनिथौरदितिरन्नरिक्त मदितिर्मातासपिता
 सपुत्रः । विश्वेदेवाऽ अदितिः पञ्चजनाऽ अदितिर्जान मदिति
 र्जनित्वम् ॥ ॐ भू० स्वः अदित्यैनमः स्था० पू० ॥ तत एकपदे
 पीतवर्णादितिम् ॥ ३० कायस्वाहेत्यस्य प्रजापतिर्ऋपिर्द्विवृहत्या
 दिच्छन्दांसि लिंगोक्ता देवताऽदिनिस्थापने वि० ॥ ॐ कायस्वाहा
 कस्मैस्वाहा कनमस्मैस्वाहा स्वाहाधिमाधीताय स्वाहा मनःप्रजा
 पतये स्वाहा चित्तविज्ञानायादित्यै स्वाहा दित्यैमहै स्वाहा दित्यै
 सुमृडीकार्यै स्वाहा सरस्वत्यैस्वाहा सरस्वत्यैपावकायै स्वाहा सर-
 स्वत्यै बृहन्त्यै स्वाहा पूष्णेस्वाहा प्रपथ्यायस्वाहा पूष्णेनरधिपाय

स्वाहा त्वष्ट्रेस्वाहा त्वष्ट्रेतुरीपाय स्वाहा त्वष्ट्रेपुरुस्पाय स्वाहा
 त्रिष्णवेस्वाहा त्रिष्णवेविभृपायस्वाहा त्रिष्णवेजिपिविष्टायस्वाहा
 ॐ भू० स्वः दित्यै नमः स्या० पू० ॥ इति चाक्षपरिधौ द्वाशत्रिंशद्दे-
 वतास्थापनक्रमः ॥ अथान्तरीशानादिचतुर्षु विदित्तु अवादिदेवता
 स्थापनक्रमः ॥ ततो चाक्षपरिधौ ईशानाभ्यन्तरे कपदे श्वेता
 अपः ॥ ३० अपो अस्मानित्यस्य प्रजापति ऋषिरत्यष्टीञ्जुन्दः आपो
 देवता अपांस्थापने विनियोगः । ३० आपो अस्मान् मातरः शुंघ-
 यन्तु गृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु । ३० विश्व ई० त्रिप्रिंप्रवहन्ती देवी
 रुदिवाभ्यः शुचिरापन ऽ णसि ॥ ३० भूर्भुवःस्वः अद्भ्योनमः स्था०
 पू० ॥ तत प्राग्नय आभ्यन्तरे कपदे शुक्लं सावित्रं ॥ ३० वरुणहा
 नित्यस्य जमदग्निर्ऋषिर्धृङ्गलीञ्जुन्दः सविता देवता सवितृस्थापने
 वि० ॥ ३० वरुणहा ३॥ असिसूर्य्यवटादित्यमहा ३॥ असिमहस्ते
 सतो महिमा पनस्यते द्वादेवमहां असि ॥ ३० भू० स्वः सवित्रे नमः
 स्या० पू० ॥ ततो नैऋत्य आभ्यन्तरीये कपदे शुक्लं जयन्तम् ॥ ३०
 गोत्रभिद मित्यस्याप्रतिरथ ऋषिस्त्रिष्टुप्ञ्जुन्दः इन्द्रो देवता जयन्ता
 वाहने विनियोगः ॥ ३० गोत्रभिदं गोविदं व्यज्रवाहुं जयन्तमज्म
 प्रमृणं तमोजसा । इम ई० सजाना ऽ अनुवीर्यधु मिद्र ई० स-
 खायो ऽ अनुस ई० रमध्वरम् ॥ ३० भू० स्वः जयन्ताय नमः
 स्या० पू० । ततो वायव्ये आभ्यन्तरीये कपदे शुक्लं रुद्रं
 ॐ याते रुद्रेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिरनुष्टुप्ञ्जुन्दः एकरुद्रो देवता रुद्रा-
 वाहने विनियोगः ॐ याते रुद्रशिवातन् रघोराषापकाशिनी ।
 तयानस्तन्वा शंतमया गिरिशन्ताभि चाऋषिः ॥ ३० भू० स्वः
 रुद्राय नमः स्या० पू० ॥ ३६ ॥ ततः पूर्वपदत्रये कृष्णमर्धमणम् ।
 ३० अर्धमणमित्यस्य तापसऋषि रनुष्टुप्ञ्जुन्दः अर्धमा देवता अर्धम-
 स्थापने वि० ॐ अर्धमणं वृहस्पति मिन्द्रं दानाय चोदयन्वाचं
 त्रिष्णु ई० सरस्वती ॐ सवितारं च च्वाजिन ॐ स्वाहा । ३०
 भू० स्वः अर्धमणे नमः स्या० पू० ॥ तत आग्नेये कपदे रक्तं सवि-
 तारम् । ३० सविता त्वेत्यस्य वरुण ऋषि रतिजगतीञ्जुन्दः

यजमानो देवता सवितुः स्थापने वि० ३० सवितात्वासवाना ॐ
सुवतामग्निं गृह्णतीना ॐ सोमोऽन्नस्पतीनाम् । बृहस्पति
र्वाचमिन्द्रो ज्येष्ठयायन्द्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो धर्मणो धर्म-
पतीनाम् ॥ ३० भू० स्वः सवित्रेणमः स्था० पू० ॥ ततो दक्षिणे
पदत्रये शुक्लं विवस्वन्तम् ॥ ३० विवस्वन्नित्यस्य प्रजापति
ऋषिर्जगती छन्दः आशीर्देवता विवस्वत्स्थापने विनियोगः ।
३० विवस्वन्नादित्यैपते सोमपीथस्तस्मिन्वत्स । श्रद्धस्मै नरो वचसे
नधातन यदाशीर्दादंपती व्वाममरनुतः ॥ ३० भू० स्वः विवस्तेनमः
स्था० पू० ॥ ततो नैऋत्यैकपदे रक्तं विबुधाधिपम् । ३० उदित्य
मित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिः सौरी गायत्री छन्दः सविता देवता
विबुधाधिप स्था० वि० ॥ ३० उदुल्यं जातवेदसे देवं बहन्तिकेनवः
दृशे विश्वायसूर्यम् । ३० भू० स्वः विबुधाधिषाय नमः स्था० पू० ॥
ततोऽपश्चिमे पदत्रयेशुक्लवर्णमित्रम् । ३० नमो मित्रस्येत्यस्य
सूर्यं ऋषिः सौरी जगती छन्दः मित्रो देवता मित्र स्था० वि० ॥
३० नमो मित्रस्य व्यरणस्य चक्षसे महो देवायतदृते सपर्यत ।
दूरे दृशे देव जाताय केनवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शर्दं शत ॥ ३० भू०
स्व० मित्रायानमः ॥ स्था० पू० । ततो त्रायव्यैकपदे रक्तं राजय-
द्वमाणम् । ३० साकंयद्वैत्यस्यार्थवर्णो भिषगृपिरनुदुष्टुच्छन्दः
श्रौषधिर्देवता राजयद्वमाणः स्थापने वि० । ३० साकंयद्वम प्रपत-
त्रात्रेण किंकिदीविना । साकं व्यात्तस्य प्राज्या साकं तस्य निहाक्या ।
३० भू० स्वः राजयद्वमणे नमः । तत उत्तरे त्रिपदे रक्तं पृथ्वीधरम् ।
३० पृथिवी देवयजनीत्यस्य परमेष्ठी ऋषिर्भृशुश्छन्दः सविता-
देवता पृथ्वीधर स्थापने वि० । ३० पृथिवी देवयजन्भ्यो पृथ्या स्ते-
मृतां माहिर्दं सिंपन्नजंगच्छुगोष्ठानं चर्षतु तेद्यौर्यधानदेव सवि-
तः परस्वस्यां पृथिव्या ॐ शतेन पाशैर्योस्मान् द्वेषियं चवयं द्वि-
पमस्तमतो मामौक ॥ ३० भू० स्वः पृथ्वीधराय नमः स्था० पू० ।
तत ईशान एकपदे शुक्लं मापवत्सम् ॥ ३० आपनये त्वेत्यस्य
प्रजापतिर्ऋषिर्भृशुश्छन्दः वायुर्देवता आपवत्सस्थापने विनियोगः

ॐ आपतयेत्वा परिपतयेद्गृहामि तन्नृपत्रे शाकराय शकनऽ
 ओजिष्ठाय । अनाधृष्ट मस्पना धृष्यदेवाना मौजोनभि शस्त्य-
 भित्तिपाऽअनभिशस्ने न्यमंजसा सत्यमुपगेष ॐ स्थितेमाधाः ।
 ॐ भू० स्वः आपवत्सायनमः स्था० पू० ॥ ४४ ॥ ततो मध्येवेद्यां
 नवपदेहृदये ब्रह्माणं पीतवर्णमावाहयेत् ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानमिनि
 गौतम ऋषि स्त्रिष्टुष्टुन्दो ब्रह्मादेवनाब्रह्म स्थापने वि० ३० ब्रह्म-
 जज्ञानं प्रथमं पुरस्ता द्विसीमनः सुरुचोब्धेन आवः सबुध्याऽ
 उपमाऽअस्थविष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चवियः । ३० भू० स्वः—
 ब्रह्मणेनमः स्था० पू० । भोब्रह्मन् सु० व० । तनस्तस्मिन्नेवपदे
 तदुत्तरतः स्वीरुपां पृथिवीम् ॥ ॐ स्योनापृथ्वीति मेधातिथि
 ऋषिर्गायत्री छन्दः पृथ्वीदेवता पृथ्वीस्थापने विनियोगः । ३०
 स्योनापृथिवी नो भवा नृचरानिवेशनी । यच्छानः शर्मसप्रथाः ॥
 ३० भू० स्वः पृथिव्यैनमः स्था० पू० ॥ ततस्नस्मिन्नेव तदुत्तरतो
 सुवर्णप्रतिमायां वृषवास्तुं सर्पाकारं विलिख्यस्थापयेत् ॥ आवा-
 हनम्—आवाहयाम्यहंवास्तुं वृषरूपधरं शुभम् । नागाकृति गृहेशं-
 त्वं पूजार्थमत्रमण्डले ॥ ३० वास्तोष्पत इतिवपिष्ट ऋषिस्त्रिष्टु-
 ष्टुन्दो वास्तुर्देवता वास्तुस्थापने विनियोगः ॥ ३० वास्तोष्पते
 प्रतिजानिहृस्मन्वावेशोऽअनमीवोभवानः ॥ यत्त्वेमहे प्रतितन्नो
 जुषस्वशन्नो भवद्विपदेशं चतुष्पदे ॥ ३० भू० स्वः वास्तवेनमः
 स्था० पू० । भोवास्तो सु० व० ॥ ततो वास्तु मंडप संलग्नेऽष्टदल
 कमले चरक्यादिवाहदेवतानामीशानादिषु स्थापन क्रमः । ततः
 ईशानकोणे धूम्रवर्णां चरकीम् ॥ ३० यन्ते देवीति मधुश्छन्द
 ऋषिः पंक्तिश्छन्दः चरकीदेवता चरकीस्थापने वि० । ऋक्— ३०
 यन्ते देवि निर्ऋति रावबन्धपाशं ग्रीवां ग्व विञ्चत्यम् । तन्ते
 विष्याम्यायुषो नमध्यादयैतं पितुमद्धिप्रसूत नमोभृत्यैयेदं चकार ॐ
 भूस्वः चरक्यैनमः स्था० पू० आग्नेयेततोविदारीम् कृष्णांपिगलाम्
 ३० अक्षराजायेति नारायण ऋषिः प्रकृतिश्छन्दो विदारीदेवता
 विदारीस्थापने विनियोगः ॥ ३० अक्षराजाय कितव कृताया

दिनवदर्श त्रेतायैकल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिन मास्कन्दाय सभा
 स्थाणुं मृत्यवे गोत्र्यच्छमेतकाय गोघातं लुपेयोगां विकृतनाभिन्न
 माण्डर्यानिष्टनि दुष्कृतायचरका चार्य्य पाप्मने शैलगम् ॥
 ॐ भू० स्वः विदार्येनमः स्था० पूजयामि । ततो नैर्ऋत्ये पीतवर्णां
 पूतनाम् । ॐ कटुप्रियायेति आत्रेयऋपिर्जगतीच्छन्दः पूतनादेवता
 पूतनास्थापने वि० । ॐ कटुप्रियाय धाम्नेमनामहे स्वच्छत्रायस्यय
 शसे महेवयम् । आमेन्यस्यरजसोयदभ्रत्राँ ३॥ अपोवृणानावित-
 नोतिमायिनी । ॐ भू० स्वः पूतनायैनमः स्था० पू० । तनोवाय-
 व्येकृष्णांपापराक्षसीम् । ॐ यस्यास्तइतिमधुरच्छन्द ऋपिस्त्रिष्टु
 प्छन्दः पापराक्षसीदेवता पापराक्षसीस्थापने वि० । ॐ यस्यस्ते
 घोरआसंजुहोस्येपां बन्धनामवसर्जनाय यांत्वाजनोभूमिरितिप्रम
 दन्ते निर्ऋतित्वाहं परिवेदविश्वतः ॥ ॐ भू० स्वः पापराक्षस्यै
 नमः स्था० पू० ततः पूर्वादिदिक्षु । पूर्वस्कन्दरक्तम् । ॐ यदक्रन्दे
 त्यस्यदीर्घतमाऋपि स्त्रिष्टुप्छन्दः स्कन्दोदेवता स्कन्दस्थापने
 वि० ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानउच्यन्त्समुद्रा दुतवापुरीपात् ।
 शेनस्यपक्षा हरिण्यस्यवाहः ऽ उपस्तुत्यंमहिजातन्ते ऽ अर्ध्वन् ॥
 ॐ भू० स्वः ॐ स्कन्दानमः स्था० पू० । तनोदक्षिणे ऽ र्यमणम्
 कृष्णम् ॥ ॐ अर्यमणमित्यस्य तापसऋपिस्त्रिष्टुप्छन्दो ऽ र्यसा
 देवताअर्यमणःस्थापने वि० ॐ अर्यमणंवृहस्पतिभिन्द्रदानायचोदय
 ज्वाचं विष्णु ई० सरस्वती ई० सवितारं च वाजिन ई० स्वाहा
 ॐ भू० स्व० अर्यमणेनमः स्था० पू० ततःपश्चिमेज्जम्भकम् रक्तम्
 ॐ येरूपाणि—इत्यस्य प्रजापतिर्ऋपिस्त्रिष्टुप्छन्दो ऽ ग्निर्देवता
 ज्जम्भक स्थापने वि० । ॐ ये रूपाणि प्रतिमुंचमाना ऽ असुराः
 सन्नः स्वधयाचरन्ति । परापुरो निपुरोये भरन्त्यग्निष्ठांल्लोका
 त्प्रणुदात्यस्मात् ॥ ॐ भू० स्वः ज्जम्भकायनमः, स्था० पू० ततो
 वाहोत्तरे पीतंपिलिपित्सम् ॥ ॐ नतं विदाथइत्यस्य विश्वकर्मा
 भौवनऋपिस्त्रि० विश्वकर्मादेवता पिलिपित्स स्थापने वि० । ॐ
 नतं विदाथय ऽ इमाजनानान्यद्युष्माकमन्तरं वभूव । नीहारेण

प्रावृताजल्प्या चासुनृप उक्थशाशश्चरन्नि ॥ ३० भू० स्वः पिलि-
 पित्सायनमः स्था० पू० ॥ ततोवेदिसंल्लग्न कमलाग्रभागे पूर्वा
 दिदिक्षु नाममंत्रैरष्टदिक्पालान् स्थापयेत् ॥ पूर्वकमलाग्रभागे
 इन्द्रम् । ॐ इन्द्रायनमः इन्द्रंस्थापयामि पूजयामि । आग्नेयको
 कोणे ऽग्निम् ॥ ॐ अग्नयेनमः । अग्निं स्था० पू० । ततो दक्षिणे-
 यमम् ॥ ॐ यमायनमः । यमं स्था० पू० ततो नैर्ऋतिकोणे नैर्ऋ-
 तिम् । ॐ नैर्ऋतयेनमनैर्ऋतिंस्था० पू० । ततःपश्चिमेष्वरुणम् । ॐ
 वरुणायनमः । वरुणंस्था० पू० ततो वायव्ये वायुम् । ॐ वायवे-
 नमः । वायुं स्था० पू० तत उत्तरे कुबेरम् । ॐ कुबेरायनमः ।
 कुबेरं स्था० पू० तत ईशानेईशं ॐ ईशानाय नमः । ईशं
 स्था० पू० । तत उर्ध्वम् । ॐ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्माणं स्था०
 पू० । ततोऽधः । ॐ अनन्तायनमः । अनन्तं स्था० पू० । इतिवास्तु
 भद्रश्च देवता स्थापन क्रमः ॥ अथवास्तु भद्रसंघ पूजा पद्धतिः
 आवाहनम्-ब्रह्मादीं ल्लोकपालान्तान्वास्तुभद्रप्रतिष्ठितान् । देवा-
 न्नावाहयामीहसङ्घपूजन कर्मणि । अर्घ्यम् ॥ गङ्गाजलं परंदिव्यं
 ताम्रपात्रस्थमुत्तमम् । देवागृह्णन्तुसौख्याय प्रतिष्ठावास्तुकर्मणि ॥
 आसनम्—सर्वरङ्गविचित्राद्य मासनंदिव्यमुत्तमम् । देवागृह्णन्तु
 सौख्याय संस्थितावास्तुमण्डले । तत्रप्राणप्रतिष्ठाम् । ॐ एतन्ते-
 देव सविनर्यज्ञप्रहृष्टृहस्पतये ब्रह्मणेतेनयज्ञमवतेनयज्ञ पतितेनमा-
 मव । ॐ मनोजूतिर्जूपतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमंतनोत्विरिष्टं
 यज्ञ ई० समिमंदधातुविवश्वेदेवासऽइहमादयन्तामाप्रतिष्ठ ॐ भूर्भु-
 वःस्वःब्रह्मादिलोकपालान्तदेवताविग्रहसांगप्रतिष्ठावास्तोइहतिष्ठेह
 सु०वरदोभव । इतिप्राणप्रतिष्ठांकृत्वा—पंचामृतम् । दधिदुग्धधृतक्षौ-
 द्रशर्करा मिश्रितंपरम् । देवा गृह्णन्तु सौख्याय वास्तुमंडप संस्थि-
 ताः स्नानीयम्—पवित्रंतीर्थंजंदिव्यं स्नानीयं मंगलप्रदम् । देवा
 गृह्णन्तु सौख्याय प्रतिष्ठा वास्तुमंडले । यज्ञोपवीतम् नवतन्तु
 समायुक्तामुपवीतांश्चपीतकान् देवागृह्णन्तुसौख्यायसंस्थितावास्तु
 मंडले वस्त्रम् वस्त्रसंघंसमानीतं नानावर्णात्मकंपरम् देवा गृह्णन्तु

सौख्याय वास्तुमंडलसंस्थिताः । चन्दनम् । भालशोभाकरं दिव्यं
चन्दनं सुमनोहरम् । देवा गृह्णन्तु सौख्याय प्रनिष्ठावास्तुमंडले ।
अक्षताः । शुद्धमुक्ताफलाभास्ता व्रजतां च्छशिसंनिभान् । देवा
गृह्णन्तु सौख्याय वास्तु मंडल संस्थिताः । पुष्पाणि—जातीचम्पक
पुष्पाणिर्द्वापत्रादिकानिच । देवा गृह्णन्तु सौख्याय वास्तु मंडल
संस्थिताः । धूपम्—धूपं नागरकं दिव्यं गुग्गुलेन समन्वितम्
देवागृह्णन्तु सौख्याय वास्तु पूजाविधौ मुदा । आरातिक्यम्—गवा-
ज्यं वनिसंदीपनं आरातिक्यं सुमंगलम् । देवाः पश्यन्तु सौख्याय
वास्तुपूजनकर्मणि । नैवेद्यम्—अन्नं चतुर्विधं दिव्यं घृतमिष्टान्न
संयुतम् । देवागृह्णन्तु सौख्याय संस्थितावास्तुमंडले । नैवेद्यान्तेजलम्
नैवेद्यान्तेजलंचैव कराननविशुद्धिदम् । देवागृह्णन्तु सौख्याय
तिष्ठंतो वास्तुभद्रके । उपायनम्—२ हिरण्यं राजतं द्रव्यं मुपायन-
निमित्तकम् । देवा गृह्णन्तु सौख्याय वास्तुपूजनकर्मणि । क्षमाप-
नम्—विधि हीनं द्रव्यहीनं श्रद्धाहीनंच यद्भवेत् । देवाः क्षाम्यन्तु
तत्सर्वं संस्थिता वास्तुमंडले । इति संघपूजनम्—ततः प्रदक्षिणा
चतुष्टयंकुर्यात् । यानिकानीत्यादिना । मन्त्रपुष्पांजलिः । ३ॐ
आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मचर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर ५ इप-
व्योतिव्याधी महारथो जायतां दोग्धीधेनु चोदानडवानाशुः सप्तः
पुरंधिर्योपा जिष्णू रथेष्टाः सभेयो युवाश्च यजमानस्य वीरोजा-
यतां निकामे निकामेनः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्योन ५ औपधयः
पच्यन्तां योगक्षेमोनः कल्पन्ताम् । ततो ५ षट्पदकमलाद्बहि उत्तर-
स्यांदिशि त्रिशूलचिन्हं कृत्वा तस्मिन् क्षेत्रपालं पूजयेत् । आ०—
३०—नमो भगवते क्षेत्रपालाय सर्वदेवताधिनिजिनाय भास्वद्भासुर
किंकिणी ज्वालामुखाय भैरवरूपाय । द्वौ लोँ मुरु २ तुरु २ लल पप
दूँदूँ फेंफेंकाररूपाय हूँफट्ट क्षेत्रपाल इहागच्छेहतिष्ठ पूजांगृहाण
३० क्षेत्रस्योनिरसि क्षेत्रस्य नाभिरसि स्वात्वाहि ई० सीन्मा-
माहि ई० सीः ॥ इति पाद्यादिभिः सम्पूज्यततो वास्तुवेद्यां वास्तु
पदेनाश्रकलशं पूर्वोक्तानां पंचानां कलशानां मध्ये एकपंचरत्न तीर्थ-

जल तीर्थमृत्तिकादि सर्वांपधियुतंस्थापयेत् । तत्रैववास्तुप्रतिष्ठां
पंचपल्लवसहितां स्थापयेत् । एवंविधिनाचतुर्भुकोणेषु स्थापित
नन्दादिशिलासन्निधिपुचतुरःकलशांस्थापयेत् । तेनैवविधिनावनमा-
लादिपंचपल्लवसंल्लगनां गृहवर्गायुतांत्रिसूत्रींचाभिन्व्यनत्रैव
स्थापयेत् ॥

॥ अथ गृहवास्तु होमः ॥

अथगृहवास्तुहोमः—ततः सर्वेषूवांक्तायाचार्या होम
वेदी वा कुण्डसन्निधिमागत्य शिलानामभिषेकार्थं संस्रवधारणार्थं
जलकुम्भमग्नेरुत्तरतो यथा विधिकलशपूजाविधिना सम्पूज्य
स्थापयेत् । सकलाचार्योयजमानो वा कुशकण्डिकाविधानेन प्रजा
पतिमग्निं वा वरदनामानं संस्थाप्यसम्पूज्यथ (वास्तुयागेप्रजा-
पतिः) ततो यजमानोद्रव्यदेवता भिध्यानंकृत्वा द्रव्यत्यागं
कुर्यात् ॥ सङ्कल्पः । ३० अद्येत्यादिसंकीर्त्यामुको ऽ हं वाममयज-
मानस्यनृत्ननग्रहेवा देवालयेगृहप्रवेशनिमित्तकमूर्तिं स्थापनकर्मणि
शिलान्यासविधानपूर्वकं वास्तुस्थापनकर्मणः साङ्गफलावाप्तये
ग्रहयागमखेनयद्ये ॥ नत्रप्रजापत्यादीनाज्येन जुहुयात् ॥ आदि-
त्यादिग्रहान् साधिदेवप्रत्याधिदेवसहितान् ग्रहयागहोमरीत्या ग्रह-
यागाचार्योजुहुयात् ॥ सर्वतोभद्राचार्यः सर्वतोभद्रदेवतान्प-
द्धत्युक्तप्रकारेणजुहुयात् ॥ इदानींप्रतिष्ठांगत्वाद्वास्तुयागविधिं
यथोक्तविधिनावद्ये ॥ ततो वास्तुकाचार्यः यजमानोवासङ्कल्पं
कुर्यात् ॥ अद्येत्यादिसंकीर्त्यसशिलान्यासगृहप्रवेशदेवालयं प्रति
ष्ठामूर्तिस्थापनादि वास्तुस्थापनकर्मणि प्रजापत्यादीनाज्येनादित्या
दिग्रहान्समिद्धिः प्रत्येकमष्टाहुतिभिः । अधिदेवता प्रत्यधिदेवता
श्चचतुः संख्याहुतिभिर्विनायकादीन्निद्रादींश्च द्विसंव्याहुतिभिः
शिखादीन् पञ्चचत्वारिंशदेवान् शर्करामधुघृताक्त समिदोदुम्बर

पालाशसमीखादिरापामार्गाद्यन्यतमाज्य तिलयवादिभिर्देश
 संख्याकाहुतिभिः पृथ्वींचाष्टाहुनि भिर्वास्तोष्पनिंचाष्टोत्तरशता-
 हुतिभिः पञ्चभिविल्व फलैश्चाग्न्यादीन् प्रजापत्यन्तान्नन्दाद्या
 शिलाश्चाज्येनाहंयद्ध्ये । एतत्सम्पादितमाज्यादिद्रव्यम् । पृथ्वीं
 देवताभ्यश्च मयापरित्यक्तं यथादैवतमस्तुनमम । इति द्रव्यम्
 त्यक्त्वा ततश्चाचार्यः—अग्निस्थापनविधना आधाराज्यभागयात्र
 दग्नीहुत्वाऋत्विजोवृणुयात् । अथेत्यादिनामुक्तशर्मणं ब्राह्मणं
 ब्रह्मत्वेनामुक्तामुक्तशर्मणो ब्राह्मणाऋत्विक्त्वेन युष्मानवृणे । तत
 ऋत्विग्भिः सहाचार्यः—अनन्वारब्धस्तिलाज्य यवतण्डुलमधु-
 शर्करापायसादिभिः प्रत्येकमष्टसंख्यया ग्रहहोमंचतुः संख्ययाधि-
 देवना प्रत्यधिदेवता होमं द्विसंख्यालोकपाल दिक्पालहोमंचकृत्वा
 प्रधानहोमं सङ्कल्पोक्त समिद्धिर्वा तिलाज्यादिभिर्देश संख्यया
 कुर्यात् ॥

॥ अथ होम नामावलिः ॥

ॐ शिखिनेस्वाहा ॐ पर्जन्यायस्वाहा ॐ जयन्तायस्वाहा
 ॐ कुलिशायुधायसहा ॐ सूर्यायस्वाहा ॐ सत्यायस्वहा ॐ
 भृशायस्वाहा ॐ आकाशायस्वाहा ॐ वायवेस्वाहा ॐ पूष्णे-
 स्वाहा ॐ वितथायस्वाहा ॐ गृहक्ष्णायस्वाहा ॐ यमायस्वाहा
 ॐ गन्धर्वायस्वा० ॐ भृंगराजायस्वा० ॐ सृगायस्वा०
 ॐ पितृगणायस्वा० ॐ दौशरिकायस्वा० ॐ सुग्रीवायस्वा०
 ॐ पुष्पदन्तायस्वा० ॐ वरुणायस्वा० ॐ असुरायस्वा० ॐ
 शोषायस्वा० ॐ पापायस्वा० ॐ रोगायस्वा० ॐ अहवेस्वा० ॐ
 मुख्यायस्वा० ॐ भृष्टाशयस्वा० ॐ सोमायस्वा० ॐ सर्पेभ्यः
 स्वा० ॐ अदिनयेस्वा० ॐ दितयेस्वा० ॐ आपायस्वा० ॐ
 सवित्रायस्वा० ॐ जयायस्वा० ॐ रुद्रायस्वा० ॐ अर्यम्णेस्वा०
 ॐ सवित्रेस्वा० ॐ विधस्वतेस्वा० ॐ विबुधाधिपायस्वा० ॐ

मित्रायस्वा० ३० राजयक्षणेस्वा० ॐ पृथ्वीधरायस्वा० ॐ आपं-
वत्सायस्वा० ॐ ब्रह्मणेस्वा० । पृवांक्तनाममंत्रैर्होमं प्रत्येकं दश
संख्यया कृत्वा पृथ्वीहोमं ३० स्योनापृथ्वीति मेधातिर्कृपिर्गाय
त्रीञ्छन्दः पृथ्वीदेवता होमेविनियोगः ॥ ऋक्—३० स्योनापृथि-
विनोभवा नृत्तरानिवेशनीयच्छानः शर्मसप्रथाः ॥ इतिमंत्रेणाष्ट
संख्ययाहुत्वावास्तोष्पतेः प्रधानत्वाध्दोमंवक्ष्यमाणेनकुर्यात् ॥ ॐ
वास्तोष्पत इति वशिष्ठऋपि म्निष्पुष्पुन्दोवास्तुर्देवता होमे विनि-
योगः ॥ ऋक्—३० वास्तोष्पते प्रतिजानीह्मस्मन्त्स्वावेशो ऽ अन-
मीवोभवानः । यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुपस्व शन्नोभव द्विपदेशं
चतुष्पदे, इतिमंत्रेणाष्टोत्तर संख्ययानिलाज्येन होमं कृत्वानतो
विल्वफलेन घृताक्तेनवक्ष्यमाणमंत्रैर्जुहुयात् । (उक्तंचपारस्करसूत्रे
कां० ३ कं० ४) ३० वास्तोष्पतेनिचतसृणां वशिष्ठऋपिम्निष्पुष्पाय-
त्रीञ्छन्दांसि वास्तोष्पतिर्देवता हो० वि० ॥ ऋक्—३० वास्तोष्पते
प्रतिजानीह्मस्मन्त्स्वावेशो ऽ अनमीवोभवानः । यत्त्वेमहेप्रतितन्नो
जुपस्वशन्नोभव द्विपदेशंचतुष्पदे स्वाहा ॥१॥ ॐ वास्तोष्पते
प्रनरणोऽ एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्द्रो ऽ अजरासस्ते
सह्येस्याम पितैव पुत्रान्प्रतिनो जुपस्वस्वाहा ॥ ३० वास्तोष्पते
सगमया स ई० सदातेसजीमहिरएवया गातुमत्या । पाहिजेम ऽ
उत्तयोगे वरंनोयूर्यंपातस्वस्तिभिः सदानः स्वाहा ॥२॥ ॐ अमी
वह्ना वास्तोष्पते विश्वारूपायया विशत् । सखासुशेव ऽ एधिनः
स्वा० ॥३॥ पुनः—ॐ वास्तोष्पते प्रनि० स्वा० ॥४॥ इति मंत्रैर्वि-
ल्वफल होमं कृत्वानतश्चरक्यादि बाह्यदेवताभ्यः प्रत्येकंनाम
मंत्रैरष्टाहुतिभिर्जुहुयात् ॥ ३० वास्तवेम्वाह ३० चरक्यैस्वा० ३०
विदार्यै स्वा० ॐ पूतनायै स्वा० ३० पापराक्षस्यै स्वा० ॐ
स्कन्दाय स्वा० ३० अर्यम्णैस्वा० ३० जृम्भकायस्वा० ३० पिली-
न्वारब्धेन स्विष्टऋध्दोमभुरादिनवाहुत्यन्तं विधाय संश्रव प्राश-
नानि पवित्र प्रतिपत्तिः प्रणीता विमोकरचनज्जलर्माशानादि

स्थापिते कुम्भेनिक्षिप्य चेशान्यां न्युञ्जीकुर्यात् ॥ ततो ब्रह्मणे
पूर्णपात्रदानम् ॥ संकल्पः ॥ अद्येहेत्यादि संकीर्त्यामुको ऽ हं
शिलान्यास वास्तृपशमनांग होमकर्मणो ऽ पूर्णपूर्णता सिद्ध्यर्थ
त्रेदंसद्रव्यं सुवर्णं सहितं पूर्णपात्रममुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे
तुभ्यमहं संप्रददे । इति ब्रह्मणे दद्यात् ॥ ब्रह्मात्रूयान्—३० अक्र
न्कर्म कर्मकृतःसहवाचामयोभुवा । देवेभ्यः कर्मकृत्वास्तंप्रेत सचा
भुवा । परिपूर्णमस्तु । तत आचार्यो वास्तुदेवताभ्यः पायसवलिं
कूसरान्नवलिंदद्यात् ॥ संकल्पः—अद्येहेत्यादि संकीर्त्यामुको ऽ हं
मम यजमानस्य सकुटुम्भ सपरिवारस्थायुरा रोग्यादि वृद्धिपूर्वकं
सर्वोपद्रव शान्त्यर्थं नवग्रहादिभ्यो ग्रहयागपद्धत्यं नुक्रमतः
शित्यादि पंचपंचाशद्देवताभ्यश्च पायसेन कूसरान्नेनदध्यक्षतादि-
भिश्च वलिदानंकरिष्ये ॥ आदौ ग्रहयागोक्तद्धत्यां ग्रहादिभ्यो
होमकुंडसन्निधौ वलिंदत्त्वा तत्पश्चाद्वास्तु वेद्युपरि यथास्थानस्था
पित देवतासन्निधौ वक्ष्यमाणरीत्या दद्यात् ॥ यथादौ—३०
शिग्विनेनमः, इति चतुर्वर्तिं वलिनां वलि संपूज्य हस्तेजलं गृही
त्वा भोभो शिखिन्निहागच्छेहनिष्ठ, एनं सदीपं सद्रव्यं पायस
वलिं (कूसरान्नमाषौदन वलिम्) गृह्णाण ममयजमानस्यायुः कर्ता
शान्तिकर्ता क्षेमकर्ता भव इतिवलयुपरिजलं विसृजेत् ॥ एवंसर्वत्र-

ॐ शिग्विनेनमः भोशिग्वि न्० ॐ पर्जन्यायनमः भोपर्ज-
न्यए० ३० जयन्तायनमः भोजयन्तए० ३० कुलिशायुधायनमः
भो कुलिशायुधए० ३० सूर्यानमः भो सूर्यए० ३० सत्यायनमः
भोसत्यए० ३० भृशायनमः भो भृशए० ३० वलिं ३० आकाशान-
नमः भो आकाश ए० ३० वायवेनमः भोवायोए० ३० पूष्णेनमः
भो पूषन् ए० ३० वितथायनमः भो वितथ ए० ३० गृहक्षताय
नमः भोगृहक्षन् ए० ३० यमायनमः भो यम ए० ३० वलिं ३०
गन्धर्वायनमः भो गन्धर्व ए० ३० वलिं ३० भृंगराजायनमः भो
भृंगराज ए० ३० मृगायनमः भो मृगए० ३० पितृगणायनमः
भोपितृगण ए० ३० दौवारिकायनमः भो दौरिकए० ३०

सुग्रीवायनमः भो सुग्रीवए० ३० पुष्पदन्तायनमः भो पुष्पदन्त
 ए० ३० वरुणायनमः भोवरुणए० ३० असुरायनमः भो, असुर
 ए० ३० शोषायनमः भोशोष ए० ३० पापायनमः भोपाप ए०-
 वलि० ३० रोगायनमः भोरोगए० ३० अहयेनमः भोअहे ए०
 ३० मुख्यायनमः भोमुख्य ए० ३० भल्लाटायनमः भो भल्लाट
 ए० ३० सोमायनमः भोसोम ए० ३० सर्पेभ्योनमः भो सर्पा
 ए० ३० अदिनयेनमः भोअदिते ए० ३० दितेनमः भो दिते ए०
 ३० आपायनमः भोआप ए० ३० सावित्रायनमः भोसावित्र
 ए० ३० जयायनमः भोजयए० ३० रुद्रायनमः भोरुद्र ए० ३०
 अर्यम्णेनमः भो अर्यमन् ए० ३० सवित्रेनमः भोसवि० ३० विव
 स्वतेनमः भोविवस्वन्ए० ३० विवुधाधिपायनमः भोविवुधाधिपए०
 ३० मित्रायनमः भोमित्र ए० वलि० ३० राजघट्टेनमः भोराज-
 यदमन् ए० ३० पृथ्वीधरायनमः भो पृथ्वीधर ए० ३० आपवत्सा,
 यनमः भोआपवत्स ए० ३० ब्रह्मणेनमः भो ब्रह्मन् ए० ३० पृथि-
 व्येनमः भो पृथिवि ए० ३० वास्तेनमः भोवास्तो ए० ३०
 चरक्येनमः भोचरकि ए० ३० विदार्येनमः भोविदारि ए० ३०
 पूतानायैनमः भोपूतने ए० ३० पापराक्षस्येनमः भोपापराक्षसि
 ए० वलि० ३० स्कन्दायनमः भोस्कन्द ए० ३० अर्यम्णेनमः
 भोअर्यमन् ए० ३० जुम्भकायनमः भोजुम्भक ए० ३० पिलि-
 पिच्छायनमः भोपिलिपिच्छ ए० वलि० गृहाण ।

॥ अथ शिलान्यास विधिः ॥

अथ शिलान्यासविधिः । ब्रह्मणः पूर्णपात्र दानान्ते आचार्या
 वास्तुवेदी समीपमागत्य पूर्वोक्त वर्णप्रमाणतोनिभिन्नाः शिलाः
 कर्मशोभन्दा १ भद्रा २ जया ३ रिक्ता ४ पूर्णा ५ इतिपंचशिलाः
 पञ्चाङ्किता उपशिलाः (आधारशिलाः) सहिताः कुशोपरि

स्थापयित्वा नन्दादिशिलामु अग्निपुणोक्त १७ सप्तदशमुखस्य
 कलशेषु विहितवस्तूनि संपाद्य यथाप्रथमे सप्तमृत्तिकोदकं १ पं-
 चकपायः २ गोमूत्रं ३ गोमयं ४ पंचगव्यं ५ पंचामृतं ६ सफल-
 जलं ७ सरत्नजलं ८ ससुवर्णजलं ९ वृषशृंगजलं १० तीर्थजलं
 ११ गन्धोदकं १२ नन्दादिषु ब्रह्म विष्णु रुद्र ईशानं सदाशिव
 कलशेषु देवान्नावाह्य प्रतिष्ठाप्य वज्रादिभिराच्छाद्य सम्पूज्य च
 मंत्रे नन्दाद्याः शिलाः स्नापयेत् अदौ सप्तमृत्तिकोदकेन । ॐ
 अग्निर्मूर्ध्नादिवः क्रकृत्पनिः पृथिव्या ऽ अयम् । अथा ॐ रेता ॐ
 सिजिन्वति । ततो गोमूत्रेण गोमयेन च गायत्री मंत्रेण ततो
 मधुनामंत्रः— ॐ मधुवा ऋतायतेमधु चरन्ति सिन्धवः माध्वी-
 र्णः सन्त्वोपधीः । पयः स्नानम् । ॐ पयः पृथिव्यां पय ओप-
 धिषु पयोदिव्यन्नरिक्षे पयोधाः । पयः स्वतीः प्रदिशः सन्तुमेहाम्
 दधिस्नानम् । ॐ दधिकाव्णो अकारिपंजिष्णो ऽ रश्वस्यवाजिनः
 सुरभिनो मुवाकरत्प्रण ऽ आयू ॐ पितारिपत् । घृतस्नानम्—ॐ
 घृतवती भुवनानामभिश्चिरोर्वी पृथ्वी मधुदुधेसुपेशसा । व्याया
 पृथिवी वरुणस्य धर्मणाविष्कभिते ऽ अजरे भरिरेतसा । शर्करा-
 स्नानम्—ॐ आर्यंगोः प्रश्निरक्रमीद् सदन्मातरंपुरः । पितरंच
 प्रयन्त्स्वः । तप्नोदकेन । सप्तधाङ्गोदकेन ॐ ओपधयः समवन्त
 सोमेनसहराज्ञा । यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्त ई० राजन्पारयामसि। ॐ
 पशुगोदकेन ॐ हविष्मनीरिमाऽआपोहविष्मां ३॥ अविवासतीह
 विष्मानदेवाऽअध्वरोहविष्मां ३॥ अस्तुसूर्यः पंचगव्येनतीर्थजलेन
 ३० इमंमेवरुण भुधीहवमद्याचमूटयत्वामवस्युराचके । सुवर्णादकेन
 ३० हिरण्यगर्भः समवर्नताग्रे भूतस्यजातः पनिरेक ऽ आसीत् ।
 सदाधारपृथिवीव्यामुतेमां कस्मैदवायहविपाविधेम ॥ गन्धोदकेन-
 गन्धद्वारांदुराधर्षा नित्यपुष्टांकरीषिणीम् । ईश्वरींसर्वभूतानां
 तामिहोपहृधेश्चियम् ॥ ततः पूर्वलिखितपद्यादिषु अष्टगन्धयुक्त
 चन्दनेनलिखेत् । नन्दाशिलायांपद्मम्—भद्रायांसिंहासनं । जया-
 यां तोरणल्लञ्च रिक्तायांकूर्मपर्णायां चतुर्भुजावष्णुञ्च लिखित्वा

वस्त्रेणाच्छ्राय ॥ अथमन्वादिशिलानां मूलेषुपूर्वस्थापित पंचकल-
शोदकेनाभिपेकं कुर्यात् ॥ तत्रादौ त्रेह्यं कलशोदकेन नन्दाशिला
मूले ऽ भिपिंचेत् ॥ ॐ आत्रेह्यन्त्रोत्तमो ब्रह्मवचसीजायतामां
राष्ट्रेराजन्यः शूर ऽ इष्यो ऽ तिव्याधी महारथोजायतांदोग्धी
धनुर्बाढा ऽ अनड्वानाशुः सप्तिः पुरंधिय्यांपाजिष्णूरधैषाः ॥
सभ्योयुवास्य यजमानस्यर्वीरोजायतां निकामेनिकामेनः पर्जन्यौ
वर्षतुफलवत्योन ऽ औपधयः पच्यन्तां योगक्षेमोनः कल्पन्ताम्-
ततोविष्णुकलशेन भद्राशिलामूले ऽ भिपिंचेत् । ॐ भद्रं कर्णेभिः
शृणुयामदेवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ॐ
सस्तनृभिर्धर्यसे महिदेवहितयदायुः ॥ ततो जयामूलेन्द्रकलशोद-
केन ॥ ॐ यातेन्द्रशिवातनूरयोरापापकाशिनी तयानस्तन्वाशन्त
मयागिरिशन्ताभिचाकंशीः ॥ ततो रिक्तामूले ईशान कुम्भोदकेन
ॐ यमापत्वामवायत्वा सूर्यस्यत्वा तपसे देवस्त्वासवितामध्वा
ऽ नक्तुपृथिव्याः स ॐ स्पृशस्पाह्याचिरसि शोचिरसितपोसि ॥
ततः पूर्णाशिलामूले भद्राशिवकलशोदकेन ॐ पूर्णादिविप्रापत
सुपूर्णापुनरापत । न्वस्नेवद्विक्रीणावहा ऽ इषमूर्जं ६० शतक्रीतौ ।
अथ शिलानां मध्याभिपेकस्ते नैवजलेन कुर्यात् आदौ नन्दाया
मध्ये— ॐ नाभिर्मेचित्तं विज्ञानंपायुर्मे ऽ पंचितिर्भसत् ॥
आनन्दनन्दावांष्टौ मेभगः सौभाग्यंपसः ॥ भद्राशिलामध्ये—
ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ता द्विसीमतः सुरुचोव्वेन ऽ आवः
सबुध्न्या ऽ उपमा ऽ अस्यविष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चद्विवः ।
जयाशिलामध्ये— ॐ विष्णोरराटममि विष्णोः शनत्रेस्थो द्वि-
ष्णोः स्यूरसि द्विष्णो ध्रुवोसि । वैष्णवमसि द्विष्णवेत्वा ।
रिक्तामध्ये ॐ नमस्तेरुद्रमन्यव ऽ उतोतइपवेनमः बाहुभ्यां मुत-
तेनमः । पूर्णामध्ये ॐ इमं देवा ऽ असपत्नं ६० सुवभ्रं महते
चत्राय महते ज्येष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्यं द्वियाय ।
इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैवश ऽ एषवोमीराजासोमो ऽ
स्माकं ब्राह्मणानाराजा तत स्तासांशिरसि अभिपेकं कुर्यात् ।

आदौनन्दायाः—३० तद्विष्णोः परमंपद ई० सदापश्यन्ति सूरयः
 दिवीय चचुराततम् ॥ भद्रायाः—३० इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानि-
 दधेपदम् । समूढमस्यपा ॐ सुरेस्वाहा ॥ जयायाः ३० समख्ये
 देव्याधिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा । माम ५ आयुः प्रमोषीमां ५
 अहं तववीरं त्विदेयंतवदेवि संहशि ॥ रिक्तायाः—३० इयं वकं
 यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्युर्मुक्षीय
 मामृतात् ॥ पूर्णशिलायाः—शिरसि ३० मूर्धानन्दियो ५ अरतिं
 पृथिव्या वैश्वानरमृत ५ आजातमग्निम् । कवि ई० सम्राजमति-
 थिं जनाना मासन्नापात्रं जनयन्तदेवाः ॥ अथ शिलासुदेवतावाह-
 नम्—तत्रादौनन्दायाम् ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानमित्यस्या वत्सार ऋषि
 निष्ठुच्छन्दः ब्रह्मादेवता नन्दाशिलायां ब्रह्मावाहने स्थापने वि० ॥
 ३० ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेन ५ आवः ।
 सवृध्न्या ५ उपमा ५ अस्यविष्टा सतश्चयोऽन मसतश्चविवः ॥
 ३० भूर्भुवः स्वः भो ब्रह्मन्निहा गच्छेहृतिष्ठ ३० ब्रह्मणेमः पाव्यादि
 नीराजनान्तं सम्पूज्य—भद्रायाम्—ॐ इदं विष्णुरित्यस्य मेधा
 निथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दोविष्णुर्देवता भद्राशिलायां विष्णवावाहने
 स्था० वि० ॥ ३० इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपा
 ॐ सुरेस्वाहा ॥ ३० भू० स्वः भोविष्णो इहागच्छ ३० विष्णवे
 नमः सम्पूज्य । जयायाम्—३० नमस्ते इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिर्गा-
 यत्रीछन्दः रुद्रोदेवता जयाशिलायां रुद्रावाहनेस्था० विनियोगः ॥
 ३० नमस्ते रुद्रमन्यव ५ उतोत ५ इषवेनमः । बाहुभ्यामुलते नमः ॥
 ३० भू० स्वः भोरुद्र इहागच्छेहृ ३० रुद्रायनमः सम्पूज्य ॥
 रिक्तायाम्—३० इमं देवेतिगोतमऋषि विराद्छन्द ईश्वरोदेवता
 रिक्ताशिलाया मीश्वरावाहने स्था० वि० ॥ ३० इमन्देवा ५ अस-
 पत्न ई० सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महतेजानराऽभ्या
 येन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ५ एषवो
 मीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ॐ राजां—३० भू० स्वः भोईश्वर
 इहागच्छेहृ ३० ईश्वरायनमः सम्पूज्य—पूर्णायाम्—ॐ तद्विष्णोरि-

त्यस्य मेधानिधिर्ऋषिर्विष्णुर्देवता पूर्णाशिलायां सदाशिवावाहने
 स्था० वि० ॥ ३० तद्विष्णोः परमंपद ई० सदापरयन्नि सूरयः ।
 दिवीव चक्षुरानतम् ३० भू० स्वः मो सदाशिवविष्णेः ३० ३०
 सदाशिवरूपिणं विष्णवेनमः ॥ सम्पूज्य ॥ वस्त्रादिभिः सम्बेष्टय
 च तत आचार्यांहोमवेदी समीपमागत्य ३० अग्नेत्यादि संकीर्त्या
 मुक्तो ऽ हं ममयजमानस्य नूतनगृहे वास्तुस्थापनशिलान्यास
 कर्मणि नन्दादिशिलासु पूर्वोक्तविधानेन देवत्वसम्पादनार्थं शिला
 होमंकरिष्ये । तत्रशिलानाममन्त्रै रथवाशिलास्थापनमन्त्रैर्यथा
 क्रमेणादौ नन्दायाहोमं कुर्यात् ॥ अष्टोत्तरशताहुनिभिरथवायथा
 सम्भवंअन्यूनाष्टनम संख्ययावृतेन जुहुयात् ॥ ३० नन्दायै स्वा०
 ३० भद्रायै स्वा० ३० जयायै स्वा० ३० रिक्तायै स्वा०-३० पूर्णायै
 स्वा० । इतिप्रत्येकंहुत्वा ३० यातेरुद्रइत्यस्यपरमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्दः
 एकरुद्रो देवता रुद्रप्रीतये अंधोरहोमे वि० । ३० यातेरुद्रशिवानन्
 रघोरापापकाशिनी । तयानस्तन्वाशन्तमया गिरियन्ताभिचाकशी
 हि स्वाहा ॥ इत्यंधोरमन्त्रेणाष्टोत्तरशताहुनिभिर्जुहुयात् । एवं होमं
 विधाय होमवेद्याईशान स्थापितकलशोदकेनकुशैः शिलाआपो
 हिष्टेत्यादिभिः सम्प्राजयेत् शिलास्थापनकर्मच कुर्यात् ॥ अथ
 क्रमः ॥ ततः सुलग्नेसम्प्राप्ते पंचयाद्यानिवादयेत् ॥ इति वि०
 क्र० प्र० ॥ आचार्यां यजमानेनसहवास्तुभूमौ (नूतनगृहे) गत्वा
 आदौईशानादि प्रादक्षिण्यक्रमेण पंचशिलानन्दादि वक्ष्यमाण
 विधानेन स्थापयेत् ॥ अथ ईशानेनन्दाशिला स्थापनविधिः—
 तत आचार्य ईशानकोणमागत्यभूमिं प्रार्थयेत् । ३० विश्वेत्वं
 कमलेभूतेपृथिवीलोकधारिणि । यज्ञार्थंचोभितादेवि प्रसीदपर
 मेश्वरि ॥ तस्मात्त्वांखानयेदेवि सानुकूलामखेभव ॥ सर्वदेवमयी
 भूमिः सर्वदेवरसान्विता ॥ इति सम्प्रार्थयंशानकोणेशिलायतदै-
 र्घ्यानुसारेण जानुप्रमाणगर्तकुहालेनकृत्वा गोमयेनोपलिप्यपिष्टेन
 तण्डुलैर्वा सर्पाकारंवास्तुपुरुषं वहिर्मुखंलिखित्वा, आवाहयेत्—
 ३० आवाहयाम्यहंदेवं भूमिष्टंचाप्पधोमुखम् । वास्तुनाथंजग-

त्प्राणं पूर्वस्थां प्रथमाश्रितम् ॥ ३० ॥ एतमित्यस्यप्रजापतिर्ऋषिर्यज्ञं
 रञ्जन्दः विश्वेदेवादेवता प्रतिष्ठापनेविनि० ॥ ३० ॥ एतन्तेदेवः सवित
 र्जज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणेतेन यज्ञमवत्तेन यज्ञपतिंतेन मामव ॥ मनो
 यूतिर्जुपतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्व रिष्टं यज्ञं ६० ॥ समिमं
 दधातु । विश्वेदेवास ऽ इहमादयन्तामो ३॥ प्रतिष्ठ ॥ इति प्रति-
 ष्ठाप्य ॥ ३० ॥ वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्य स्मान्त्स्यावेशो ऽ अन्मीवो
 भवानः । यत्वेमहेप्रतितन्नोजुपस्व शन्नोभवद्विपदेशंचतुष्पदे ॥
 इतिसम्पूज्यप्रार्थयेत् ॥ वास्तोष्पतेनमस्तेस्तु भूमिशर्यारतः प्रभो
 मदगृहंधनधान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा । तनोदेवज्ञबोधिते सुलग्ने
 मङ्गलघोषवादित्रादिगुत आधारशिला पद्मकलशसहितां नन्दा-
 शिलांचानीयभूमौकुशोपरिन्यसेत् । तत आधारशिलामावाहयेत् ।
 तेजोमयींलंबरूपां सदाशिवस्वरूपिणीम् । ध्यायामि मनसादेवीं
 शिलामाधाररूपकाम् ॥ ३० ॥ एतन्ते० इतिप्रतिष्ठाप्य ३० भू० स्व०
 आधारशिले सु० व० ॥ ३० ॥ आधारशिलायै नमः स्थापयामि
 इतिप्राक्शिरस्कां स्थापयित्वा सम्पूज्यच समानान्मृदाहृदीकृत्य
 त्रामपाश्र्वंगणै दीपंप्रज्वाल्य, पद्मकलशाभ्यन्तरे सप्तमृतिका
 तीर्थजलपारदनवरत्न सुवर्णरजनमुद्रादिनिक्षिप्यपिधानेन कलश
 मुत्वंमुद्रयित्वा आधारशिलोपरि यवनगडुलपुञ्जेपुन्यसेत् । पुनः
 पिहितकलशंमृदाहृदीकृत्य पद्मकलशोपरिप्राक् शिरस्कांनन्दाशिलां
 वक्ष्यमाणमन्त्रेण स्थापयेत् ॥ ३० ॥ नाभिर्मंडत्यस्य प्रजापतिर्ऋषि
 र्जगनीह्यन्दः भगोदेवता नन्दाशला स्था० विनियोगः ॥ ३०
 नाभिर्मन्त्रित्तविद्यानंपायुमंपचनिर्मसन् ॥ आनन्दनन्दावांडौमेभगः
 सौभाग्यंपसः ॥ इति संस्थाप्य ॥ ३० ॥ स्थिरो भवेत्यस्य त्रितऋषि
 रनुष्टुप्छन्दः रासभोदेवतास्थिरीकरणे विनि० ॥ ३० ॥ स्थिरो भव-
 वीड्वङ्ग ऽ आशुर्भवः स्वाज्यर्वन् । पृथुर्भवसुखदस्त्वमग्ने पुरीष
 वाहणः । इतिस्थिरीकृत्य—३० नन्दायै नमः । गन्धादिभिःसम्पू-
 ज्यप्रार्थयेत्—नन्देत्वं नन्दिनीपुसां त्वामत्रस्थापयाम्यहम् । वैशम-
 नित्विहसन्निष्ट यावच्चन्द्रदिवाकरो । आयुरारोग्यमैश्वर्यं श्रियं

मेदेहिनन्दिनि । अस्मिन्नरक्षात्वयाकार्यासदावेशमनियत्नतः । ततः
समन्तान्मृदा दृढी कुर्यात् ॥ इति नन्दाशिला स्थापनम् ॥
अथ भद्राशिलास्थापनम्—तत आग्नेयकोणमागत्य ३० विश्वेत्वं
कमले, इति भूमिसम्प्रार्थ्यं गतंविधायोपलिप्य पिष्टैर्वास्तुंगतैर्वि
लिख्य, आवाहयाम्यह मित्यावाह—एनन्तेति प्रतिष्ठाप्य ३०
वास्तोष्पत इति संपूज्य । वास्तोष्पतेनमस्तेस्तुसम्प्रार्थ्यं । तदुपरि
आधारशिलां विन्यस्यावाहयेत्, तेजोमयीं लंबरूपां सदाशिव स्व
रूपिणीम् । ध्यायामि मनसादेवीं शिलामाधार रूपकाम् ॥ एन
न्तइति प्रतिष्ठाप्य—३० भू० स्वः आधारशिले सुप्रोक्तव० ॥ पाद्य
गन्धादिभिः संपूज्य मृदादृढीकुर्यात् ॥ तस्या वामेदीपंप्रज्वालया
धारशिलोपरि महापद्मनामकताम्र कलशेपूर्ववत्पारद नवरन्नादि
कंनिक्षिप्य पिधानेनमुग्वंपिधायधार शिलोपरिस्थापयेत्—कलशं
पुनर्भृदादृढीकृत्य प्राक्शिरस्कांभद्राशिलां ३० भद्रमित्यस्य गौतम
ऋषिर्निष्ठल्लुन्दः विश्वेदेवादेवता भद्राशिलास्थापने विनि० । ३०
भद्रंकरणेभिः शृणुयामदेवा भद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैः रंगै
स्तुष्टुवा ॐ सस्तनृभिर्यसेमहिदेवहित यदायुः ॥ इतिसंस्थाप्य—
३० वरुणस्येत्यस्य वत्सऋषिविराट्लुन्दः वरुणोदेवता भद्राशिला
स्थिरीकरणे विनि० ॥ ३० वरुणस्योत्तंभनमसि वरुणस्य स्कम्भ
सर्जनीस्थोवरुणस्य ऽ ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऽ ऋतसदनमसि
वरुणस्य ऽ ऋतसदनमासीद ॥ स्थिरीकृत्यैनन्तेति प्रतिष्ठाप्य ३०
भद्रायैनमः गन्धादिभिः संपूज्य ३० भू० स्वः भद्रे सुप्रति० पर
दाभव ॥ प्रार्थयेत्—भद्रेत्वं सर्वदा भद्रं लोकानांकुम्भकश्यपि ।
अ युर्दाकामदादेवि मुग्वदा च सदाभव ॥ न्वामन्न स्थापयाम्यग
गृहे ऽ म्मिन्भद्रदायिनि ॥ धेशमनिर्विह संनिष्ठयावच्चन्द्र दिवा
करो ॥

॥ इति भद्राशिला स्थापनम् ॥

अथ जयाशिलास्थापनम्—नैर्ऋत्यकोणे गत्वाविश्वेत्वं कमले
इति सम्प्रार्थ्यंगतं विधायोपलिप्य च गतैपिष्टेन वास्तुंचिलिख्याय-
व्याम्यहमिस्थावाह—एनन्तेति प्रतिष्ठाप्य ३० वास्तोष्पत इति

संपूज्य वास्तोष्पते नमस्तेस्तु० सम्प्रार्थ्य तदुपर्याधारशिलां विन्य
स्य तेजोमयीं लंबरूपां—इत्यावाहा तदुपरि यवनं डुलाघ्निलिप्य
तत्र शंखनामकलशं संस्थाप्य वामेदीपं प्रज्वाल्यतत्रपूर्वाक्त पार-
दादीनि निलिप्य पिधायमृदाहृदीकृत्य ३० भू० स्वः, आधारशिले
सुप्र० व० ॥ संपूज्य चप्राक् शिरस्कां जयाशिलाम्—३० वरुणस्येत्यस्य
वत्सऋषिर्विराड्छन्दः वरुणोदेवता जयाशिलास्थापनेविनियोगः ॥
३० वरुणस्योत्तमनमसि वरुणस्यस्कंभसर्जनीस्थोऽवरुणस्य ऽ
ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऽ ऋत सदनमसिऽवरुणस्य ऽ ऋतसदन-
मासीद । इति संस्थाप्य—३० स्थिरो भवेत्यस्य त्रितऋपिरनुष्टु-
च्छन्दः रासभोदेवता जयाशिला स्थिरीकरणे विनि० । ॐ स्थिरो
भववीड्वंगऽआशुर्भववाज्यवन् । पृथुर्भवसुखदस्त्वमग्ने—पुरीष
वाहणः ॥ एतन्तेनि प्रतिष्ठाप्य ३० भू० स्वः जये सु० व० ॥ ३०
जयायै नमः संपूज्यप्रार्थयेत्—गर्गगोत्रसमुद्भूतां त्रिनेत्रां च चतु-
भुजाम् । गृहे ऽ स्मिन् स्थापयाम्यद्य जयां चारुवि लोचनां ॥
नित्यं जयाय भूतैश्च स्वामिनो भवभार्गवि । वेश्मनि त्विह
संनिष्ठ यावच्चन्द्र दिवाकरौ ॥ इति जया शिला स्थापनम् ॥
अथ रिक्ताशिलास्थापनम्—ततो वायव्यकोणे ॐ विश्वेत्वंकमले
इति भूमिं सम्प्रार्थ्यगर्तं कृत्वोपलिप्य च वास्तुविलिप्य, आवा-
हयाम्यहम्० इ० वा० एतन्ते० प्र० । ३० वास्तोष्पते० । संपूज्य ।
वास्तोष्पते नमस्तेतु० संप्रार्थ्य० । तदुपर्याधारशिलां संस्थाप्य
३० तेजोमयीं लंबरूपां० इति ध्यात्वा तस्यावामेदीपं संस्थाप्य
शिलोपरियवनगडुलेषु पूर्वाक्तपारदादीनि विजयनाम कुम्भेनि-
लिप्य स्थापयेत्— एतन्ते, इति प्रतिष्ठाप्य संपूज्य च मृदाहृदी-
कृत्य प्राक् शिरस्कां रिक्ताशिलां ३० त्र्यम्बकमिति वशिष्ठऋषि
त्रिष्टुच्छन्दः रुद्रोदेवता रिक्ताशिलास्थापने वि० ॐ त्र्यम्बकं
यजा० संस्थाप्य० ॐ वरुणस्योत्तमनमसि० इति स्थिरीकृत्वा
एतन्ते० प्रति० ॐ भूर्भुवः स्वः रिक्ते सु० व० । ॐ रिक्तायै नमः
संपूज्य प्रार्थयेत् । रिक्तं रिक्तदोषघ्ने सिद्धि भुक्तिप्रदेशुभे ।

वेरमनित्विहसंतिष्ठयावचन्द्रदियाकरौ । इतिरिक्ताशिलास्थापनम् ।
 अथ पूर्णाशिलास्थापनम्—ततोवास्तुभूमेमध्येभागे, ॐ विश्वेदेवं
 कमले० इति भूमिं संप्रार्थ्यगर्भं कृन्वोपलिप्य वास्तुविलिप्य ।
 आवाहयाम्यहं० इत्यावाह्य एतन्ते इति प्रतिष्ठाप्य ३० वास्तोष्पते
 इति संपूज्य । वास्तोष्पते नमस्नेस्तु० संप्रार्थ्य । तदुपर्याधार
 शिलांविन्यस्य । तेजोमयीं लम्बरूपां० ध्यात्वा । तदुपरिपारदा-
 दिगभित सवेतोभद्र नामकं कुम्भंसंस्थाप्य वामेदीपं प्रज्वाल्य ।
 एतन्ते० इति प्रतिष्ठाप्य गंधादिना संपूज्यच मृदासर्वतो हठीकृत्य
 तदुपरिपूर्णाशिला प्राक् शिरस्कां ॐ पूर्णादर्वीत्यस्यौर्या नामऋषि
 रनुष्टुप्छन्दः इन्द्रोदेवता पूर्णाशिला स्थापने विनि० । ॐ पूर्णा-
 दर्विपगपन सुपूर्णा पुनरापन । वस्नेवविक्रीणावहा ऽ इधमूर्जं ऽ०
 शनकतो । इति संस्थाप्य । एतन्ते० इति प्रतिष्ठाप्य ३० भू० स्वः
 पूर्णं सुस्थिरा सुप्रति० वरदाभव । ३० पूर्णायै नमः संपूज्य प्रार्थ-
 येत् पूर्णं सर्वदा पूर्णालोकानां पूर्णकामिनी । अयुर्दाकामदा
 देवि धनदामुनदा तथा । गृहाधारा वास्तुमयी वास्तुदीपेन संयुता ।
 त्वाम्नुतेनास्तिजगता माधारश्चजगत्प्रिये । वेरमनित्विहसंतिष्ठ
 यावचन्द्र दियाकरौ इति सम्प्रार्थ्य ततः पंचशिलाभ्यो । पाय-
 सबलिं दध्यत्त, बलिंदद्यात् ॐ नन्दायै नमः बलिसंपूज्य भो
 नन्दे एनं बलिगृहाण, एवंसर्वत्र ॐ भद्रायै नमः ॐ रिक्तायै नमः
 ३० पूर्णायै नमः । हस्तौपादौ प्रक्षाल्य पुरुषसूक्त पाठंवा स्वास्ति
 वाचनं पठेत् । इति शिलान्यास विधिः ।

अथ वास्तुस्थापनविधिः—अथचाचार्यः शिलान्यासादिकर्मकृत्वा
 वास्तुपुरुष संस्थापनार्थं वास्तुभूमेः (नूतनसञ्जनः) एकाशीनि
 भागं विधायेशानकोणादष्टमे आकाशपदे रौद्रभागे आग्नेयस्थं
 वायुस्थानंत्यक्त्वा वास्तुंस्थापयेत् । तत्रपृथ्वीं प्रार्थयेत् । ३०
 वाराहं स्थापितां देवीं सर्वलोकधरामहीम् । ध्यायामिप्रमदारूपां
 दिव्याभरणभूषिताम् । ध्यात्वा ३० स्योनेत्यस्य मेघातिथिं ऋषि
 म्त्रिष्टुप्छन्दः पृथ्वी देवता पृथ्व्यावाहने पूजने वि० । ॐ स्योना

भवानृत्तरा निवेशनी । यच्छानः शर्मसप्रथाः ३० भू० स्वः पृथ्व्यै
 नमः संपूज्य भो पृथिव सु० व० । ॐ वास्तु पुरुपायनमः ध्यात्वा
 संपूज्य प्रार्थयेत् । ततो गृहं त्रिस्रन्दा अश्वत्थाम्रपल्लवादिनि
 मितव नमालया च वक्ष्यमाण रत्नोघ्नसूक्तं पवमानेन च-
 वेष्टयेत्—अथ रत्नोघ्नम्—३० कृणुष्वपाजः प्रसिन्निन्नपृथ्वी
 याहिराजे वामवां । ३॥ इभेन त्रिष्वीमनुप्रसिन्निद्रणानो ऽस्ताऽसि
 विवध रत्नसस्तापष्टः ॥१॥ तव भ्रमासऽआशुया पतन्त्यनुस्पृश
 धूपनाशोगुचानः । तपू ॐ प्यग्ने जुह्वापतंगाने संदिशो विवसृज
 विष्वगुल्काः ॥२॥ प्रतिस्पृभो विवसृज तृणितमो भवापायुर्विशो
 ऽ अस्या ऽ अदब्धः । योनोदरे ऽ अघश र्द० सोयोऽन्त्यग्नेमा
 किष्टेव्यधिरा दधर्षान् ॥३॥ उदग्नेतिष्ठप्रत्यातनुष्व न्यमित्रां ३॥
 ओपतातिग्महेते । योनो ऽ अरानि र्द० समिधानचक्रे नीचान्
 धक्ष्यतसन्नशुष्कम् ॥४॥ ऊर्ध्वांभव प्रतिविध्याध्यस्मदा विष्कृणुष्व
 देव्यान्ग्ने । अवस्थिरा तनुहियातजृनां जामिमजामि प्रमृणीहि
 शङ्घन् ॥५॥

अथ पवमानसूक्तम्—अनेन नूतन गृहस्य सूत्रमार्गद्वारासदु-
 ग्धजलेन पिचेत् । गृहस्य धुरानः अविच्छिन्नधाराद्वय उभयोः पक्ष
 योर्दधान् ॥ ॐ पुनन्तुमापितरः सोम्यासः पुनन्तुमापितामहाः ॥
 पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा ॥१॥ पुनन्तुमा पितामहाः
 पुनन्तुमाप्रपितामहाः ॥ पवित्रेण शतायुषा विवश्वमायुर्वर्धनवै ॥२॥
 अग्ने ऽ आयू ॐ विपवस ऽ आसुयोर्ज मिषंचनः ॥ आरेवाधस्व
 वुच्छुनाम् ॥३॥ पुनन्तु मादेवजनाः पुनन्तु मनसाधियः ॥ पुनन्तु
 विवश्व भूतानि जानवेदः पुनीहिमा ॥४॥ पवित्रेण पुनीहिमा
 शुक्लेण देवदीव्यत् ॥ अग्नेकृत्वा क्रतू ३॥ रतु ॥५॥ पवमानः सो ऽ
 अयनः पवित्रेण विवचर्षणिः ॥ यः पोतासपुनातुमा ॥६॥ उभा-
 भ्यां देवसवितः पवित्रेण सवेनच । मांपुनीहि विवश्वतः ॥७॥
 वैश्वदेवी पुनतिदेव्या गालाभ्यामिमाव ह्वयतन्वो ध्वीतष्टाः ॥

अथमादेव्यः सधमादेव्यः ॐ भ्यामपतयोरयीणाम् ॥ इति होम

कुंडस्थेशान स्थापित कुम्भजल मिश्रितजल दुग्धेन गृह्मविच्छिन्न
 धाराभिः समाज्यं सप्तधान्यबीजानि वेशानादिक्रमेण सूत्रमार्ग
 द्वारा वह्निः सिक्त भूमौवापयेत् ॥ ततः पूर्वोक्त ईशानकोणमागत्य
 शिलास्थानात्पूर्वमाकाशपदे जानुमात्रं खानयित्वा सप्तमृत्तिकागोमय
 तीर्थजलैरुपलिप्य पंचरत्नपारद श्वेत पुष्प सप्तधान्यादि दधि सु-
 वर्णं रजतादिभिरलंकृत्य प्रक्षिपेच्च ॥ होमवेदीशानस्थ संस्रवधार
 णार्थकलशजल मिश्रित नूतन वृहद्धटजलं गन्धादिभिः संपूज्य घटं
 हस्ताभ्यां गृहीत्वा ऽ वनिकृत जानुमण्डलः सन् ॥ वास्त्ववटं
 तेनजलेन ॐ तत्वायामीति शुनः शोफकृषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वरुणो
 देवता वास्त्ववट जलप्ररणे वि० ॥ ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमा
 नस्तिदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अद्देडमानो वरुणो ह्रबोधगुरु-
 श ई० समान ऽ आयुः प्रमोपीः ॥ इति पूरयेत् ॥ ततः सैवाल
 सप्तधान्यसप्तमृत्तिका पुष्पाणि च प्रक्षिपेत् ॥ ततो वास्तुवेदीमुपा-
 गत्य पूजितनागाकृति वास्तुप्रतिमां सकलशांवाद्य ध्वनिपुरः सरं
 शान्तिसूक्तं पठन्अनीय तत्रसंस्थाप्य गन्धादिभिः सम्पूज्य
 कलशे शैवाल पारद पंचरत्नाष्टगन्धादीनि निक्षिप्य वास्तु प्रति-
 मां नागाकृतिं कलशेअधोमुखीकृत्या कलशमुखं पिधानेन दृढी
 कृत्य प्रार्थयेत्—प्रसीदपाहि विश्वेश देहिमेगृहजंसुखम् । पूजितोऽ
 सि मयावास्तोहोमाद्यैरर्चनैः शुभैः । वास्त्र पुरुष नमस्ते
 स्तु भूमिशय्यारत प्रभो । नदगृहं धनधान्यादि समृद्धं कुरु सर्वदा ॥
 ॐ वास्तोष्पत इति वसिष्ठकृषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वास्तु देवता नूतन
 गृहे वास्तुस्थापने विनियोगः । ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीहस्मा-
 न्स्ववेशो अनधीवोभवानः । यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नोभव
 द्विपदेशं चतुष्पदे । इति सप्रतिमं कलशं तत्रावटे स्थापयित्वा
 वामेदीपं प्रज्वाल्य ॐ एतन्ते देवसन्वितर्थज्ञाहो ध्रुहस्पतये ब्रह्मणे
 तेनयज्ञमवतेन यजपति तेनमामव । ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्य-
 स्यवृहस्पति धज्ञमिमंतनो स्वरिष्टं यज्ञ ई० समिमं दधातु विश्वे
 देवासऽ इहमादयन्तामों प्रतिष्ठ । ॐ भूर्भुव स्वः वास्तो इहाग-

च्छेदतिष्ठ । सुप्रतिष्ठितोवरदोभव । ॐ वास्तु पुरुपायनमः ।
नाममंत्रेण पुनः सम्पूज्यप्रार्थयेत् ॥ यावद्भूमण्डलं धत्तेसशीलवन
सागरान् । तावदस्मिन् गृहेनिष्ठ सर्वसंपत्करोभव ॥ भोगास्तोः
पूजितो ऽ सिद्धमस्व ॥ ततः पूर्वोत्खातमृदा गर्तंपूरयेत्, ततोवलिं
दद्यात्—उपरितोगोमयादिनोपलिप्य वास्तुवेदीं देवविसर्जनान्ते
तत्र स्थापयेत् ॥ अत्र देशाचार व्यवस्था वास्तुवेद्युपरि पालाश
दण्डस्थापनस्यास्ति तमप्याचार्यः स्थापयेत् । तत आचार्योवास्तु-
स्थापनं कृत्वागृहाद्बहिः पूर्वादिदिक्षुदशदिक्पालेभ्यो (दधि घृत
मधु मिश्रित भक्तं) वामापान्नं सदीपंपताकोच्छ्रितं वलिंदद्यात्—
तत्रपूर्वं इन्द्रमावाहयेत् ॐ ऐरावत समारूढं वज्रहस्तं महाबलम् ।
आश्रितं दिशिपूर्वस्यामिन्द्रमावाहयाम्यहम् ॥ दधिमाप भक्त-
वलिं सदीपंसंपूज्य हस्तेजलनिधाय ॐ इन्द्रायसांगाय सशक्ति
काय सपरिपरिवारायै नं वलिसमर्पयामि, भो २ इन्द्रदिशंरक्ष २
वलिंभक्त २ यजमानस्यायुष्कर्त्ता पुष्टिकर्त्ता क्षेमकर्त्ताभववलि-
नासह पीतपताकांच गृहाण इति वल्युपरि जलंक्षिपेत्—प्रार्थयेत्—
इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः । शतयज्ञाधिपो देवस्त-
स्मै नित्यं नमोनमः ॥ एवं सर्वत्र ॥ तत आग्नेय्यामग्निमावा
हयेत्—प्रार्थयेच्च—लुलायस्थो समारूढं शक्तिहस्तं महाबलम् ।
आश्रितं दिशमाग्नेयीमग्निमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ अग्नेयेनमः,
इति सरक्तपताकंवलिंसदीपंसंपूज्य—ॐ अग्नेयेनमः सा०सा०स०
स० नमः एनं० मा० समर्पयामि भो २ अग्नेदिशंरक्षवलिंभक्त २
यजमानस्यायुष्कर्त्ता० प्रार्थयेत्—आग्नेयः पुरुपोरक्तः सर्वदेवमयो
व्ययः ॥ धूम्रकेतुर्ध्वजोयस्यतस्मै नित्यंनमोनमः ॥२॥ ततोदक्षिणे
यममावाहयेत्—महामहिष मारूढं दंडहस्तमहाबलम् । आवाह-
यामियज्ञे ऽ स्मिन् पूजेयंप्रतिगृहाताम् ॥ कृष्णपताकायुतंवलिं
संपूज्य ॐ यमायसांगाय० भो २ यमदिशंरक्ष २ वलिंभक्त २
यजमानस्यायुष्कर्त्ताभवैनंवलिंगृहाण । प्रार्थयेत्—लुलायस्थो
महाकायो दण्डहस्तो पराक्रमी । वृहत्पीनो महाबाहुस्तस्मैनित्यं

नमोनमः ॥ नैर्ऋत्ये निर्ऋतिम्—निर्ऋतिं खड्गहस्तं च सर्वलोक
भयंकरम् । आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ नील
पताकायुतं वलिसंपूज्यः ३० निर्ऋतये सांगाय० भो निर्ऋते दिशं-
रक्ष २ वलिं भक्ष २ यजमानस्यायुष्कर्ता० भव । एनं वलिं गृहाण ॥
प्रार्थयेत्—निर्ऋतिः खड्गहस्तश्च सर्वलोकैकपावनः । नागरूढो
महाकायस्तस्मै नित्यं नमोनमः ॥ पश्चिमे वरुणमावाहयेत्—पाश
हस्तं च वरुणं यादसांपतिमीश्वरम् । आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्
पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ श्वेतपताकायुतं वलिसंपूज्य—३० वरुणाय-
सांगायसायुधाय सशक्तिकाय सपरिवारार्यै नं वलिं समर्पयामि ।
भो २ वरुणदिशंरक्ष २ वलिंभक्ष २ यजमानस्यायुष्कर्ता० एनं
वलिं गृहाण ॥ प्रार्थयेत्—पाशहस्तात्मको देवो वरुणो यादसांपतिः ।
भूपितो मणिरत्नैश्च तस्मै नित्यं नमोनमः ॥ वायव्ये वायुमावाह-
येत्—वायुमाकाशगंचैव शीघ्रगंच महाबलम् । आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्
पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ धूम्र पताकायुतं वलिं संपूज्य धाय वेसांगाय०
भो २ वायो दिशंरक्ष २ वलिंभक्ष २ यजमानस्यायुष्कर्ता०
एनं वलिं गृहाण । प्रार्थयेत् । त्रैलोक्यान्तश्चरो वायुः सर्वेषामीप्सित
प्रदः । सर्वाभरणसंयुक्तस्तस्मै नित्यं नमोनमः ॥ कुबेरमुत्तरावा-
हयेत्—आवाहयामि देवेशं धनाध्यक्षं महाप्रभुम् । उत्तरस्यां दिगीशं
तमलकावासिनं शुभम् ॥ हरितपताकायुतं वलिं संपूज्य ३०
कुबेराय सांगाय० । भो २ कुबेर दिशंरक्ष ० वलिंभक्ष २ यजमा-
नस्यायुष्कर्ता० एनं वलिं गृहाण ॥ कुबेराय सुरेशाय धनाध्यक्षा-
यते नमः । उत्तरेशाय सौम्याय यक्षेशाय नमोनमः । ईशाने ईशमा
वाहयेत् । वृषभस्कन्ध मारुदंशूल हस्तं पिनाकिनम् । आवाहयामि-
यज्ञेऽस्मिन् पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ श्वेत पताकायुतं वलिं संपूज्य—
ईशानाय सांगाय० भो ईशान दिशंरक्ष २ वलिंभक्ष २ यजमानस्या
युष्कर्ता० भव ॥ एनं वलिं गृहाण प्रार्थयेत्—सर्वाधिपो महादेव
ईशानः शुक्लेश्वरः ॥ शूलपाणिर्विरूपाक्षस्तस्मै नित्यं नमोनमः ॥
पूर्वशानयोर्मध्ये ब्रह्माण मावाहयेत्—हंस पृष्ठ समारूढं स्त्रुवहस्तं

महावलम् ॥ लंबोदरं चतुर्वक्रं ब्रह्माणमाह्वयाम्यहम् ॥ रक्तपताका
युतं वलिं सम्पूज्य ब्रह्मणेसा० भो २ ब्रह्मन् दिशंरक्ष २ वलिंभक्ष
२ यजमानस्यायुष्कर्ता० एनं वलिगृ० प्रार्थयेन् । पञ्चपाणिश्चतुर्मूर्ति
वंदावासः पितामहः । यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्रस्तस्मै नित्यं नमोनमः ।
नैर्ऋत्यं पश्चिमयोर्मध्ये ५ नन्तमावाहयेत्—नागपृष्ठं समासृष्टं
पातालतलवासिनम् । आवाहयाम्यहं देव मनन्तं सर्पराजकम् ॥
मेघवर्णं पताकायुतं वलिं सं० अनन्ताय सांगाय० भो २ अनन्त
दिशंरक्ष २ वलिंभक्ष २ यजमानस्यायुष्कर्ता० ॥ एनं वलिगृ० प्रा०
अनन्त रूपिणा घेन विष्णुना सचरा चरम् । पुष्प
वध्दारितं नित्यं तस्मै तुभ्यं नमो नमः ॥ १० ॥
एवं गृहप्रवेशांगत्वेन दिक्पालेभ्यो बलीन्दत्वा क्षेत्रपालाय पुनः
पूर्वाक्तानुसारेण मापवलिंदत्वा वलिशेषमासभक्तादिकमुभाभ्यां
हस्ताभ्यांपुष्टके सम्पुटीकृत्य नूतनगृहस्य नैर्ऋतक्रोणे गत्वोत्तराभि
मुखो भूत्वासन्ध्याकालनिमित्तक वलिमिदानीमपकृष्य वक्ष्यमाण
मन्त्रैः—उक्तंच विश्वकर्मप्रकाशे—देव्यो देवासुनीन्द्राः समुवनपत-
योदानवाः सर्वसिद्धाय चारक्षासिनागा गरुडमुग्धखगागुहका देव
देवाः ॥ योगिन्यो देववेश्या हरिदधिपतयो मातरो विघ्ननाथाः ।
प्रेताभूताः पिशाचाः पितृवननगराद्याधिपाः क्षेत्रपालाः ॥१॥
गन्धर्वाः किन्नराः सर्वे गुहकाः पितरो ग्रहाः । कृष्णायडाः पूतना-
रोगास्तथावेतालकाः शिवाः ॥२॥ असृक्प्लुताश्च शिशुनां मांस-
भक्षणतत्पराः । लम्बक्रोडास्तथा ह्रस्वादीर्घाशुक्तास्तथैव च ॥३॥
सूर्यकोटिप्रतीकाशा विद्युत्सदृशवर्चसः । गृहन्तु च वलिसर्वे तृप्ता
यान्तु वलिर्नमः ॥ सर्वेभ्यो भूतेभ्यो नमः, इति वलिंदत्वा हस्तौ पादौ
प्रक्षाल्य ततो होमवेदीसमीपमागत्य सपुत्रकलत्रादि परिवारयुतो
यजमानो होमपद्धत्युक्तप्रकारेण पूर्णाहुतिं जुहुयात् । ततो गोदान
विधिना शान्त्यर्थमाचार्याय सवत्सां पयस्वर्नीगां च दद्यात् ॥ तत
आचार्यब्रह्मासदस्य पाठक जापक ऋत्विक् द्वारपालादिभ्यो यथांशेन
सुवर्णादिमुद्रां भूयसीदक्षिणां च दद्यात् ॥ सङ्कल्पः—अद्येत्यादि

संकीर्त्यामुकराशिः सपत्नीकः सपुत्रपौत्रवन्धुवर्ग परिवारसहितो
 ऽ हं कृतेतन्नूतनगृहकर्मणि शिलान्यासवास्तुस्थापन गृहप्रवेशांग
 कर्मणः साङ्गफलप्राप्तये साद्गुरुर्यार्थं च गांगोनिष्कयीभूतं द्रव्यं वा
 आचार्यादि ब्राह्मणेभ्यो ब्रह्मादिभ्यश्च सुवर्णरजतादिमुद्रादक्षिणां
 दास्ये तथाचन्यूनोतिरिक्त दोषपरिहारार्थमिमां भूयसींदक्षिणां
 नानानामगौत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नटनर्तकादिभ्यो विभज्यदास्ये
 यथासंख्यकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये । इति सर्वेभ्योदक्षिणां यथां
 शेन विभज्यमण्डपे सर्वपादेवानामुत्तरांगपूजनं विधाय प्रार्थयेत्
 मन्त्रपुष्पाञ्जलिंदद्यात् ॥ ३० ॥ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रेभूतस्थजातः
 पतिरेकआसीत् । सदाधारपृथ्वीं व्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा
 विधेम ॥ ३० ॥ यजेन यज्जमजयन्त देवास्तानिधर्माणि प्रथमान्यासन्
 तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वेसाध्याः सन्ति देवाः ॥ ३० ॥ राजा-
 धिराजाय प्रसहासाहिनेनमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे ॥ समेकामान्
 कामकामाय मह्यं कामेश्वरौ वैश्रवणोददातु कुयेराय वैश्रवणाय मह्यं
 राजाय नमः ॥ अहं मूढो न जानामि न जानामि चिसर्जनम् । पूजांचै-
 व न जानामि त्वद्गातपरमेश्वर ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च य-
 द्भवेत् । सत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ३० ॥ गणेशादिपंचाङ्ग
 देवताभ्योनमः । सर्वतोभद्रदेवताभ्योनमः । गृहभद्रस्थदेवतावास्तु
 भद्रस्थ शिख्यादिदेवताभ्योनमः । ३० ॥ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजा
 मादाय भ्यामिकाम् । इष्टकामसमृद्धयर्थं पुनरागमनाय च । इति
 भद्रस्थदेवान् विसृज्य सर्वमण्डपस्थ कलशेभ्योजलमादाय होम
 संनिधिमागत्य सर्वकलशजलं तर्पणमार्जनजल सहितमेकीकृत्य
 होमेशानकलशस्थ जलमपि चैकीकृत्य न्यायुष्करणं कुर्यात् ॥ तत
 आचार्यो वामस्थ पत्नीपुत्रादिवरिवारयुतं यजमानमात्रादिपल्लवैः
 पूर्वांक्ताभिपेक (सुरास्त्वामभिपिंचन्तु) विधिनावेदोक्तमन्त्रैश्च
 अभिपेकाद्याशीर्वादान्तं कर्मविधाय होमकुण्डस्थदेवानामुत्तरांग
 पूजनं नीराजनादिकं कृत्वा ऽ ग्निप्रार्थयेत्- ३० चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वा
 भ्यां पंचभिरेव च । हृयते च पुनर्द्वाभ्यां समे विष्णुः प्रसीदतु ॥ गच्छतु च

भगवद्गनेकुण्डमध्यात्यधासुखम् । इष्टकामसमुद्ध्यर्थपुनरागम-
नायच ॥ इति अग्निविमृजेन् । ततोब्राह्मणान्भोजयेन् ॥ इति
वास्तुस्थापनविधिः ॥

॥ अथ गृहप्रवेशः ॥



पूर्वादिनोविधिकृत्वा नूतनगृहप्रवेशे ब्राह्मणान्भोजयित्वा
तस्मिन्नेवदिने दिवारात्रौ चाज्योतिर्विंदादिष्टे सहस्रगने (उक्तं-
चमात्स्ये) कृत्वाग्रतोद्विजवरानथपूर्णकुम्भन्दध्यक्षताप्रदलपुष्पफलो
पशोभम् ॥ मांगल्यशान्तिनिलयागगृहंविशेत्तु । शुक्लाम्बरःस्वभ-
वनंप्रविशेत्सधूपम् ॥ कृत्वादौचांस्तृजांजलभृतकलशं ब्राह्मणांश्चा
ग्रतोर्कं चामंकृत्वाथकार्यानिवतरंभवने तोरणाद्व्येप्रवेशः । ब्राह्मणैः
कृत्वा स्वस्त्ययनो मङ्गल तूर्थवादित्रादिगीतशान्तिपाठेन सफल
सजल पूर्ण पंचपल्लव युक्तकलशी ब्राह्मणपुरः सरः शुक्ल-
मालयानुलेपनस्नाहशकलत्र पुत्रयौत्रादि समेनः सशकुनः
सूचिताभ्युदयस्तोरणाढ्यांशालां त्रिया अंचलग्रंथिवध्वा स्वेष्ट-
देवता वेदपुस्तक यत्र श्रीफलादि भंगलवस्तूनिवंशनिर्मितनूतने
पात्रे पत्नी शिरसिकृत्वा शुभ्रवस्त्रेणाच्छाद्यतामनुगच्छन्सन गृह-
स्यप्रदक्षिणां कृत्वाश्रेष्ठद्वार समीपमागत्य पूर्वोक्त गणेशपूजा
विधिना देहलीगणेशं संपूज्य प्रतिष्ठाप्यचैक विशंतिमोदकानर्द्वी-
कुरैः सह निवेद्यच मूर्हर्तसामयिक लग्नदानं कुर्यात्दानसामग्रीं
संपाद्य-संकल्पः-अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकशर्मा सपरिवारः सपत्नी
कोऽहं नूतनगृहप्रवेशकर्मणि गृहप्रवेशसामयिक लग्नाद्यत्र कुत्र-
स्थानस्थिता दित्यादि नवग्रहणामपस्थानामनिष्टफलोपशान्त्यर्थ

शुभस्थानां शुभफलाधिक्य प्राप्तये एतद्द्रव्यममुकशर्मणेदैवज्ञाय
संप्रददे-इतिदत्त्वाद्द्वारमातृपूजनं कुर्यात् ॥ अद्येत्यादि-अमुक शर्मा
सपत्नीकोऽहं नूतनगृहप्रवेशकर्मणिद्द्वारमातृकृष्णांपूजनं करिष्ये-आवा
हनम्-आवाहयाम्यहं देवीद्द्वारमातृः सुमंगलाः । नववेश्मप्रवेशार्थं
पूजनंचकरोम्यहम् ॥ एतन्त इति प्र० कृत्वा ३० भू० स्वः द्वार-
मातरः इहागच्छन्तु-इहितिष्ठन्तु सुप्रति० वरदाभवन्तु-इतिप्रतिष्ठा
प्यध्यायेत्- ३० कुमारी धनदानन्दा विपुलामंगलाचला । पद्माचैवेति
नाम्नोक्ताः सप्तैताद्द्वारमातरः ॥ नाम मंत्रैः पूजनं कुर्यात्- ३०
कुमार्यैनमः, ३० धनदायैनमः, ३० नन्दायैनमः, ३० विपुलायैनमः,
३० मंगलायैनमः, ३० अचलायैनमः, ३० पद्मायैनमः, इति
गन्धाक्षतादिभिर्नैवेद्यदक्षिणां दत्त्वा संपूज्य चाचार्यः स्वस्तिवाचनं
पठन् गृहाभ्यन्तरं प्रविश्य स्वासन उपविश्य गणेशादि पंचांग पूजां
कृत्वा जीवमातृकृष्णांपूजनं कुर्यात् ॥ पदूटेः गणेश समीपे वा सप्तद-
ध्यक्षत पुंजोपरि-आवाहयेत्-अद्येत्याद्यमुकोऽहं नूतन गृहप्रवेश
कर्मणिकल्याण्यादिजीवमातृकृष्णांपूजनं करिष्ये । आवाहयेत्-आवाहया
म्यहं देवीर्जीमातृः सुशोभनाः ॥ नववेश्म प्रवेशाय आयुष्कामा-
र्थं सिद्धये ॥ एतन्ते० प्र० प्रति० ॐ भू० स्वः कल्याण्यादि
सप्तजीवमातर इहागच्छन्तिवहितिष्ठन्तु ॥ सुप्रतिष्ठिता वरदाभवन्तु ॥
इति प्रतिष्ठाप्य-कल्याणी मंगला भद्रापुरया पुण्यमुखी तथा । जया
च विजया चैव वरदा भयपाणयः ॥ इति ध्यात्वा- ॐ कल्याण्यैनमः,
ॐ मंगलायैनमः, ॐ भद्रायैनमः, ॐ पुण्यायैनमः, ॐ पुण्य-
मुख्यैनमः, ॐ जयायैनमः, ॐ विजयायैनमः, ३० इति नाम मंत्रै
रावाहनादि नीराजनान्तं संपूज्य गुडसपिंभ्यां जीवमातृकृष्णां उपरि
चसोर्धाराः पातयेत्- ३० वसोः पवित्र मसीनिमंत्रेण तनो ब्राह्म-
णादि भ्यो दक्षिणां दत्त्वा-आचार्यः-महानीराजनं निलकं च
कारयित्वाऽभिषेकादिकं कृत्वाऽऽशीर्षयान् ॥ ततः सुहृद्गन्धुयुनो
भुंजीत तनो यथासुखं गेहेपंचरात्रपर्यन्तं शयनासनादिकं सतनं
कर्त्तव्यम् ॥ इति गृहप्रवेश विधिः ॥ ॐ

अथ सत्यनारायण पूजा परिभाषा ।

— ॐ —

श्री भगवानुवाच—प्रतमस्तिमहत्पुण्यं स्वर्गमर्त्यं च दुर्लभम् ॥११॥ तवस्नेहान्मया
 वत्स ! प्रकाशः क्रियतेऽधुना । सत्यनारायणस्यैवंप्रतं मन्मथिप्रधानतः ॥१२॥ कृत्वास्यथः मुखं
 भुक्त्वापरश्रेमोक्षमाप्नुयात् । तच्छुवाभगयद्वाक्यं नारदोमुनिर प्रवीत् ॥१३॥ नारदउवाच ।
 किंप्रैकिविधानं च कृतंकैनेव तद्ब्रूतम । तत्सर्वविस्ताराद् ब्रूहिकदाकार्यहि तद्ब्रूतम् ॥१४॥
 श्री भगवानुवाच । दु ख शोकाभिशन्ननंधनधान्य प्रवर्द्धनम् । सीमाभ्य संततिकरं सर्वप्रविजय
 प्रदम् ॥१५॥ अमावास्यां च संक्रान्तीं पीपामास्यां पितृपतः । यस्मिन्कस्मिन्दिने वाधभक्तिध-
 द्दा समन्वितः ॥१६॥ सत्यनारायणं देवं पूजयेन्नशिषामुखं । द्वायणैवान्धवैश्चैव सहितोधर्म
 तत्परः ॥१७॥ नैवेद्यं भक्तितो दद्यात्सपादं भक्तिसंयुतम् । रंभाफलंपूतं क्षीरंगोधूमस्य च षण्ण-
 कम् १८ अभावे शालिवृक्षेवाशर्करां च गुदंतथा । सपादं सर्वभक्ष्याणि चैकीकृत्य निवेदयेत् ।
 ॥२६॥ विप्रायदक्षिणां दद्यात्कथां धृत्वा जनेः सह । ततश्च वंधुभिःसार्धंविप्रांश्चप्र तिभोजयेत् ।
 ॥२०॥ पपादंभक्ष्यंद् भक्त्या मृत्युगीतादिकं चरेत् । ततश्चस्वगृहं गत्वात्सत्यनारायणं स्मरन् ।
 ॥२१॥ एवं कृतेमनुश्याणं वाञ्छासिद्धिर्भवेद्दुवम् । विशेषतः कलियुगे लक्ष्म्यायो ऽ स्तिभूतले ।
 ॥२२॥ प्रकुर्याच्च तर्तंवेदीं कदलोस्तम्भमसिद्धताम् । सपादहस्त विस्तीर्णांश्चतुरङ्गुलमुग्र-
 ताम् ॥२३॥ सर्वतो भद्रवद्दद्याद्रेखां श्चैकोनविंशतिः । तैनेवच प्रकारेण भद्रंतत्र प्रकल्पयेत् ।२४॥
 सर्वतोभद्र विधिना स्थापयेत्तत्र देवता । २६। गणनाथं प्रपूज्यादीं कलशं स्थापयेत्सुधीः ।
 नान्दंमुखं मातृपूजां पुण्याहं वाचयेत्ततः ॥२७॥ प्रहाचिनं विधायैव ततः पूजां समारभेत् ।
 वेद्यां संस्थापयेत्तत्र कलशंमुमनोहरम् ॥२८॥ वारुणेन विधानेन पूजनं कथितंशुभम् । तत्राधारे
 मन्ययेवं शालिग्रामं च स्थापयेत् । २६। चतुर्भुजां स्वर्णमयांप्रतिमां वाथ स्थापयेत् । आचार्यं वरणं
 कृत्वा ततः पूजां समारभेत् ॥ ३० पूजान्तं च कथारम्यां स्कान्दोक्तां धावयेत्सुधीः ॥ ३१ ॥
 धनवस्त्रादिभिरथैव माचायपरितोषयेत् । आचार्यं परितुष्टेहि सूर्यवेद्योऽपि तुष्यति ॥ ३२॥ रात्री
 जगरणं कृत्वा ह्रीं पुनःप्रधानतः । शान्त्यर्थं दक्षिणां श्चैवगां च दद्यात्पयस्विनीम् ॥३३॥

— ॐ —

॥ अथ सत्यनारायण पूजा पद्धतिः ॥

अथ च सत्यनारायण पूजाकथायां सपाद हस्तां चतुरस्रां चतुरंगु
 लोच्छ्रितां वेदीं कृत्वासर्वतोभद्रविधिनासुलिख्य स्तम्भतोरणैः
 समलं कृत्य त्रिसूत्र्यावेष्ट्य गणेशादिपंचांग पूजनं पूर्वोदितं

विधायवेदीमध्ये पंचांगपूजिन वरुण कलशमन्यं वा संस्थाप्य तत्र शालिग्राम शिलां वा सुवर्णप्रतिमामाधारोपरिसंस्थाप्य पूजनं कुर्यात्- तत्र कर्ता पूर्वोक्तविध्यनुसारतः पौर्णिमायां वामावास्यायां संक्रान्तौ वा मनेक्षितेघ्ने निशामुखेस्वासन उपविश्य दीपं प्रज्वाल्य संपूज्य चाधारं पूजयेत् । प्राणायामत्रयं विधाय संकल्पं कुर्यात् । अचेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रप्रवरोऽमुकशर्माहं सकल दुरितोपशमनसर्वापच्छ्रान्तिपूर्वकं सकल मनोरथ सिद्धयर्थं यथासंपादित सामग्र्याऽ गणेश गौरी वरुणदेवता पञ्चलोकपाल दशदिग्पाल सूर्यादिग्रह देवता पूजन पूर्वकं पूर्वांगी कृतं श्री सत्यनारायण पूजनं कथा श्रवणं च करिष्ये । ततो गणेशादि देवता एको न विशन्ति रेखात्मकं सर्वतोभद्रं च संपूज्य कलशोपरि पात्रे पूर्वोक्तां प्रतिमां संस्थाप्य पुष्पाक्षत हस्तः श्री सत्यनारायणं ध्यायेत्-सत्येशं सत्यदेवेशं वरदं कामदं विभुम् । ध्यायामिमनसाभक्त्या सत्यनाराधणं प्रभुम् ॥१॥ अर्घ्यम्— ॥ सत्यदेव नमस्तेऽस्तु संसारार्णवताराक । अर्घ्यगृहाण सत्येश सत्यनारायण प्रभो ? ॥१२॥ पाद्यम्— मंदोष्णं निर्मलं नीरं गन्धाक्षत समन्वितम् ॥ पाद्यं गृहाणदेवेश सत्यनारायणप्रभो ? ॥३॥ आचमनम्—यथालब्धंप्रंधारि सर्वगन्धसमन्वितम् । सम्यगाचम्यतादेवसत्यनारायणप्रभो ? ॥४॥ पंचामृतम्—दधिदुग्ध घृत-क्षौद्र शर्करामिश्रितं परम् । पंचामृतंगृहाणेशसत्यनारायणप्रभो ॥५॥ स्नानम्—अष्टगन्धसमायुक्तं स्नानीयंजलमुत्तमम् । स्नानार्थगृह्य सर्वज्ञसत्यनारायणप्रभो ? ॥६॥ स्नानान्ताचमनम्—स्नानान्ताचमनं दिव्यं गांगेयंजलमुत्तमम् । पुनर्गृहाणश्रीनाथसत्यनारायणप्रभो ॥७॥ चक्षुः—अङ्गशोभाकरं दिव्यं वर्णतन्तुसमन्वितम् । चक्षुःगृहाणगोपीशसत्यनारायणप्रभो ? ॥८॥ यज्ञोपवीतम्—ब्रह्माद्यैर्निर्मितं शुद्धमुपवीतंसुमङ्गलम् । गृहाणकमलाकान्त सत्यनारायणप्रभो ? ॥९॥ चन्दनम्—चन्दनंपरमं दिव्यं कस्तूरीकेशरान्वितम् । भालशोभाकरं दिव्यं चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥१०॥ निला-

जलम्—तिलाज्जतान्सुसंस्निग्धान्विष्णुप्रियमनोहरान् । गृहाणदेव
 देवेशसत्यनारायणप्रभो ? ॥११॥ पुष्पाणि—जातीपुष्पाणि सुभ्राणि
 तुलसी च समञ्जरीम् । सत्यनारायण प्रभो ? गृहाण तुलसी प्रिय
 ॥१२॥ धूपम्—गंधद्रव्यसमुद्भूतं गुग्गुलेन युतंप्रियम् । धूपं
 गृहाणलक्ष्मीश सत्यनारायणप्रभो ? ॥१३॥ दीपम्—गवाज्यवर्ति
 संश्लिष्टं दीपितं ह्यविदर्शकम् । आरार्तिक्यंगृहाणेश सत्यनारायण
 प्रभो ? ॥१४॥ नैवेद्यम्—नानाव्यञ्जनसंयुतंच सरसंजम्भीररम्भा
 फलम्, चूर्णचैवसुचारुपेयमधुरंदुग्धं समिष्टंशुभम् ॥ लाजाभ्राष्ट्र
 सुसंस्कृताश्चमधुराश्चोष्यंचलेहंतथा, नैवेद्यंचददामिस्वीकुरुहरे ?
 श्रीसत्यनारायण ? ॥१५॥ नैवेद्यान्ताचमनम्—लवङ्गकर्पूरयुतंनैवे-
 द्यान्तंजलंपरम् । गृहाणाचमनंदेव सत्यनारायणप्रभो ? ॥१६॥
 ताम्बूलम्—ग्वादिरेणसुसंलिप्तं पुगीलवंगमिश्रितम् । ताम्बूलं
 गृह्णदेवेश सत्यनारायणप्रभो ? ॥१७॥ दक्षिणाम्—उपायनीभूत-
 मिदंविस्तशाव्यविवर्जितम् ॥ द्रव्यंगृहाणदेवेश सत्यनारायणप्रभो ?
 ॥१८॥ ततः सफलार्घ्यम्—गन्धाज्जलजलमर्घं निधायोपरितः फलं
 संस्थाप्य वामहस्तेधृत्वोपरित उत्तानंदक्षिणहस्तंकृत्वा ॥ गन्ध-
 वारिसप्तशुक्तं फलंचारुमनोहरम् । सफलार्घ्यंगृहाणेश सत्यनारा-
 यणप्रभो ? ॥१९॥ फलमग्रेस्थापयित्वा वारिणादेवंस्नापयेत् ॥
 कर्पूरार्तिक्यम्—कर्पूरंपरमंद्रव्यं चन्दिनादीपितंमया । कर्पूरार्ति-
 क्यमादत्स्व सत्यनारायणप्रभो ? ॥२०॥ प्रदक्षिणाम्—यानिकानि
 चपापानि जन्मान्तर कृतानि च । तानितानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण
 पदेपदे ॥२१॥ इति—सत्यनारायणं भक्त्यासम्पूज्य कथां श्राव-
 यितुमाचार्यं वृणुयात्—३० अथेत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुक
 राशिरमुक शर्माहं चातुर्वर्गफलाप्ति कामनया श्री सत्यनारायण
 कथा परायणकर्तुमेभिर्वरणद्रव्यै रमुकगोत्रप्रवरान्वितममुक शर्मा
 णं ब्राह्मणं व्यासत्वेनाहं वृणे, इति—वरणद्रव्यं माचार्यहस्तेदन्वा
 प्रार्थयेत्—व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे । नमो वै
 ब्रह्मविधये वासिष्ठाय नमोनमः ॥२२॥ ततः पुस्तकं संपूज्य व्या-

सस्तवनं कुर्यात् । ततः सर्वे श्रोतारः समाहित मनस्काभवन्तु
 कथां च शृणुयुः । ततः कथावसाने चतुर्वर्तियु तमारार्तिक्यं सत्य-
 नारायणस्य कुर्यात् ॥ सर्वेश्रोतारोच्यसा पूजां कृत्वोपायनं
 निवेद्य करे कुसुमानि गृहित्वा मंत्र पुष्पाञ्जलिं दद्युः । ॐ यन्म-
 या भक्तियुक्ते न पत्रं पुष्पं फलं जलम् । निवेदितं चतत्सर्वं कृपया
 स्वीकुरुभो ? ॥२३॥ सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्ययोनिं
 निहितं च सत्ये । सत्यस्य सत्यभृत सत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां
 शरणंप्रपन्ना ॥२४॥ विभर्षिरूपायवबोध आत्मा ज्ञेमाय लोकस्य
 चराचरस्य ॥ सत्वोपपन्नानि सुखावहानि सतामभद्राणि मुहुः
 खलानाम् ॥२५॥ स्वयं समुत्तीर्य्य मुदुस्तरं द्युमुद्भवार्णवंभीमम-
 दभ्रसौहृदाः । भवत्पदाम्भोरुहनावमत्रते निधाययाताः सदनु-
 ग्रहोभवान् ॥२६॥ सत्वंविशुद्धं अयतेभवान्स्थितौ शरीरिणांश्रेय
 उपायनंवपुः । वेदक्रियायोग तपः समाधिभिस्तवाहर्णयेन जनः
 समीहते ॥२७॥ शृगवन्गृणन्संस्मरयंश्च चिन्तय त्रामानि रूपाणि
 चमंगलानि ते । क्रियासु यस्त्वच्चरणारविन्दयो राविष्टचेता
 नभवाय कल्पते ॥२८॥ नवांभोजनेत्रं नवंकेलिपात्रंचतुर्बाहुचामी
 करं चारु गात्रम् ॥ जगत्राणहेतुरिषो धूम्रकेतुं सदासत्यनारायणं
 स्तौमिदेवम् ॥२९॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं च यत्कृतम् ।
 सर्वं तत्पूर्णतांयांतु सत्यनारायणप्रभो ? ॥३०॥ तत रात्रौ जाग-
 रणं नृत्यगीतादिकं विदध्यात् । द्वितीयदिनोपसि पूर्ववद्देवं
 संपूज्य संस्तुत्य च होमादिकंकृत्वा गौदानं कुर्यात् । ततः पूजा
 स्थलमागत्य ॐ गच्छगच्छ सुरश्रेष्ठ सत्यनारायणप्रभो ? । इष्ट
 कामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनं कुरु ॥३१॥ ततः कलश जलेनपूर्वाक्त
 विधिनाभिषेकं कृत्वायजमानाय सपरिवारायासीर्दद्यात् । ततो
 ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वयमपि भुञ्जीत ॥

इति श्री सत्यनारायण पूजापद्धतिः ।

॥ अथ सङ्कट चतुर्थीव्रतं ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ सङ्कटचतुर्थी व्रतपूजा तथा शान्तिनिधानम् ॥ अन्यचतुर्थी गणेशनिमित्तकप्रदानम् ॥ चतुर्थीपि—सर्वमतेगणेशप्रतातिरिक्तापरैव । युग्मवाद्यगन्तात् एकादशं तथाषष्ठी आमानास्याचतुर्थिका । उपाध्याः परमंयुक्ताः परापूर्वगुणोजिताः । इति मात्रमीये—बृहद्दशिशोक्तेः । नागचतुर्थीमध्याह्नव्यापिनी पद्ममीयुक्ताचप्राद्या । गणेशव्रतंतु मध्याह्नव्यापिनीमुद्याचतुर्थीगणनाथस्य मातृविद्धाप्रशस्यते ॥ प्रातःशुक्लतिथौ, स्नान्ना मन्व्याह्ने पूजयेन्मृष । वस्तुतस्तुयत्रभाद्रशुक्ल चतुर्थ्यादीगणेशव्रतविशेषे मध्याह्नपूर्वाङ्गा तद्विमयाणि प्रागुक्त्वचनानि ॥ ननुमार्गत्रिकाणि ॥ सङ्कटचतुर्थ्यादीवहूनांकर्मकालानां वाधापरतः ॥ तेन सर्वत्रगणेशव्रते पूर्वैवेतिसिद्धम् ॥ सङ्कटचतुर्थीतुचन्द्रोदयव्यापिनीप्राद्या ॥ दिनद्वयेतस्मात्तृतीयस्य सत्वात्पूर्वैतिकेचित् ॥ अन्येतुदिने मूर्हर्तत्रयादिरुपरत्र तृतीयायोगस्थाभावावपरिदिधि । माधवाक्तमध्याह्नव्यापि सत्यात्सम्पूर्णैवात्र परेत्याचरन्ते, दिनद्वयेतद्भावे ऽपिपरैव ॥ निर्णयतत्वे—सङ्कटहर्त्राकिलयाचतुर्थी सेन्द्रोदयस्थायदिचोभदत्त ॥ पूर्वापरावारित्वाविधेया नवेद्युयुग्मंहिपरातदैव ॥ इत्यादि प्रमाधवाक्त्रैः सङ्कटापरामातृयोगः त्यात्पूर्वविद्धाप्रकृत्या ॥ सङ्कटचतुर्थीतुचन्द्रोदय कर्मकालव्यापिनीप्राद्या ॥

अथ पूजाविधानम्—प्रायस एतद्व्रतं स्त्रियो भर्तुरारोग्यै-
श्वर्य निमित्तं कुर्वन्ति ॥ प्रातर्नवादाँ स्नानं विधाय सायंकाले
चन्द्रोदिते समये पट्टे गणेशं कृत्वा पूजनं कुर्यात् तत्र संकल्पः—
ॐ तत्सदितिदेशकालौ संकीर्त्यामुक्ती नाम्न्यहं यन्मयास्वभर्तु
रायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धये आत्मनश्चजीवितावधिपत्यासह सर्व
सौभाग्य प्राप्तये, इदानीं संकट चतुर्थ्या यथा लब्धोपचारेण
पोडशमातृकासहितं सङ्कष्टमोचननामकगणेशपूजनं करिष्ये—पुष्पा-
ज्जतहस्ता सन्ध्यायेत् ॐ लम्बोदरंचतुर्बाहुं रक्तवर्णत्रिनेत्रकम् ।
ध्यायामिमनसा भक्त्या सङ्कष्टहरणं प्रभुम् ॥ ॐ विघ्नविनाशिने नमः
आसनं समर्पयामि । ॐ लम्बोदराय नमः पाद्यं समर्पयामि ॥ ॐ
चन्द्रार्धधारिणे नमः, अर्घ्यं समर्पयामि । ॐ विश्वप्रियाय नमः,
आचमनं समर्पयामि । विघ्ननाशाय नमः स्नानं समर्पयामि । ॐ
ब्रह्मचारिणे नमः यज्ञोपवीतं समर्प० ॐ गजकर्णाय नमः वस्त्रं

सम० । ॐ चन्द्रशैलिसुतायनमः, चन्दनम्० ॐ सुमुखायनमः
 पुष्पम्० । ॐ उमापुत्रायनमः धूपं० । ॐ हरप्रियायनमः दीपम्
 ॐ विघ्ननाशायनमः नैवेद्यम्० ॐ सिद्धिदायनमः ताम्बूलम्० ॐ
 वरदायनमः इति फलम्० । ॐ विद्याधरायनमः दक्षिणां० ॐ
 गणेश्वरायनमः नीराजनम्० ॐ सृष्टकृत्वाहनायनमः प्रदक्षिणां
 कुर्यात् ॥ पुष्पाञ्जलिः—विघ्नध्वान्तनिवारणैक तरणिर्विघ्नाटवी
 हव्यवाद्बिघ्नत्र्यालकुलाभिमानगरुडो विघ्नेभपंचाननः ॥ विघ्नो
 त्तुद्गगिप्रभेदनपवि विघ्नाःशुभौवाटवो विघ्नार्थोघघनप्रचण्ड
 पवनो विघ्नेश्वरः पातुवः ॥ ततः सूर्पपायसंवाएकविशतिमोदका-
 न वैकविशतिनिलप्रतिशङ्कुलीः संस्थाप्यसूर्परक्तवस्त्राच्छादितं
 कृत्वा गणेशायनिवेदयेत् । ततश्चन्द्राय दुग्धार्घ्यदद्यात् । पात्रा-
 दिभिः सम्पूज्याञ्जलौपात्रेवा-दधिदुग्धंमुगन्धिमिश्रितं निधायो
 त्थायच ॐ चन्दनागरुर्षुर्दधिदुग्ध मुमिश्रितम् । भक्त्यार्पितं
 मयादेवगृहाणार्घ्यनिशकर ॥ अर्घ्यदत्त्वा गणपतिसमीपमागत्य
 दम्पत्युत्तरांगपजनं विधाय प्रसादंगृहीयास्ताम् ॥ अथ व्रतशान्ति
 प्रकारं वक्ष्ये—कर्तात्रिती, रात्रौचतुर्थी सर्वतो भद्रपूजा विधानेन
 सम्पूज्यमध्येकलशविधिना सम्पूज्य तत्र सुवर्णप्रनिमां गणेशं
 पूर्वाक्तविधिनासम्पूज्य—द्वितीये ऽ हि पंचम्यां—गणानान्तेनिमंत्रेण
 घृताक्तपायसेन वायवतिलाज्येन वा मोदकैः ॥ अष्टोत्तरसहस्र
 मष्टोत्तरशतमष्टोत्तर विशतिसंख्यकाहुतिभिर्यज्ये ॥ ब्रह्मादिदेवता
 भ्यो एकैकामाहुतिदद्यात् । एवं पूर्णाहुत्यादिभिर्होमं समाप्येक
 ब्राह्मणायैक मोदकं सदक्षिणं रक्तवस्त्रवेष्टितं दद्यात् ॥ एवं सर्वेभ्यो
 दद्यात् ॥ तत्रमन्त्रः—ॐ गणेशायनमः, ॐ संकटहरायनमः
 २ ॐ लम्बोदरायनमः ३ ॐ विघ्ननाशाय० ४ ॐ गणाध्यक्षाय
 नमः ५ ॐ वक्रतुण्डाय० ६ गजाननाय० ७ ॐ सूर्पकर्णाय० ८
 ॐ एकदन्ताय० ९ ॐ भालचन्द्रायनमः१० ॐ उमापुत्रायनमः
 ११ ॐ हरप्रियाय० १२ ॐ विकटायनम. १३ ॐ वामनायनमः

१४ ॐ विद्याधराय नमः १५ ॐ ब्रह्मचारिणे नमः १६ ॐ वर-
दाय नमः १७ ॐ विनायकाय ० १८ ॐ हेरम्वाय ० १९ ॐ
संकटमोचनाय नमः २० ॐ विश्वरूपाय नमः—तत आचार्यायैक-
विंशति सर्पस्थानमोदकान्दद्यात् ॥ सम्पूज्य—विप्रवर्गगृहाण-
त्वं मोदकानेकविंशति । आवयोर्देहिसौ भाग्यसंकटंचहरप्रभो ।
ततो गौदानं कृत्वा गणेशं प्रार्थयेत् ॥ अन्नहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं-
च यद्भवेत् । तत्सर्वपूर्णताया तु विघ्नेश्वर नमोस्तुते ॥ आशिषो
गृहीत्वा घन्धुवर्गजनैः सह भुञ्जीत् ॥

इति सङ्गृह्यचतुर्थी व्रतम् ॥



॥ अथ हरितालिकाव्रतं ॥

उक्तञ्च हेसाङ्गीभद्रिष्ये कृष्णउद्यान—शुके भाद्रपद स्थेन वृत्तोद्यानां सभाचरेत् । रत्ने
धान्यैः सर्वैश्चै कृत्वा हरित शङ्खै । रात्रेर्नोरिषलैश्चफले धानविधैस्तथा ॥ मातुलिंग पुगु-
रमैश्च धान्यैश्च जोरिक् स्तथा । गंधे पुष्पकैल द्रवि नैर्वनै मांदिकादिभिः । प्रीणयि
त्वा समास्थाय पद्मरागेषु भास्वता । घंटापाद्यादिमिगार्ते शुभैर्दिव्यैश्च पानकैः पूजनीया
महाभाग मंत्रेणानेन भक्तित । हरेर्नाम्निसमुत्पन्ने हरितालि हरिप्रिये । सर्वदा सस्य मूर्ति
स्ये प्रणनाति हरेर्नमः । इत्थं मेषु-य ता देवी दद्याद्विप्राय दक्षिणाम् । कृत्वा जागरणं
रात्रौ प्रभाते किञ्चि उद्भगते । तदा मुयामिनी भिस्तु सानेयात् जज्ञ शये । ततो जलाशये
रम्ये मंत्रेणै वं विमर्जयेत् । अन्वैतामि मया मक्त्या गच्छ देवि सुरालयम् । मम दी
भोग्यनाशाय पुनरागमनाय च । एतं पाङ्कजैश्च हरितालिव्रतंचरेत् । प्रतिवर्षं विधानेन नारी
वाभक्तिवरा । नीत्वायत्फलमाप्नोति तदन्वयेन नलभ्यते । दे-युवाच—नामेदं कवितं देव विधि
यदममप्रभो । क्रिपुसर्गैर्किलैकास्य वेन प्राविधिनाचरेत् । ईश्वर उवाच—शृणु देवि विविधवच्ये
नारीणां तत्सुतमम् । कर्त्तव्यनुप्रयत्नेन यदि मीनागमिच्छति । तोरणादिप्रकर्त्तव्यं कदलो-
स्तम्भमणिष्ठतम् । आङ्गाद्यपश्येस्तु नानावर्णैर्विचिचितम् । चन्दनादिमुगन्धेन लेपयेद्गृह-
गण्डपम् । शंखभेरीमूर्धंगैश्च वादिनैः प्रहुमिर्वरे । नानामङ्गलयोगरतु कर्त्तव्यं भगवतः । स्थापनं
तत्र कर्त्तव्यं पर्यव्या सहितम्य मे । पूजयेद्बहुभि पुष्पैर्गन्धैर्भूमिनां हरे । उपोष्य पूजये

द्भक्त्या कुश्यां जागरणं निशि । नारिके लैश्चजंबोरै रन्यैश्च विविधैः फलैः ॥
 ऋतुंशोद्भवैः सर्वैर्नैवेद्यैः कुमुमंनयैः । सुगन्धैर्धूपदोषैश्च मंत्रेणानेन पूजयेत् । नमः शिवाय
 शान्ताय पंच वक्रागशूलिने । नन्दिभूमि महाकाल गणयुक्ताय शंभवे । शिवायैशिवस्वायै
 मंगलायै महेश्वरो । शिवैसार्थिभे देवि शिवरूपे नमोस्तुते । नमस्ते शिवरूपिण्यं जगद्धा
 त्र्येनमो नमः । संसार भोगि संश्रसं प्राहिमा सिंहवाहिनि । सदापि येन कस्मिन् पूजितामि
 महेश्वरि । रात्र्यं देहिन्यमौभाग्यं प्रसन्नाभव पार्वति । मंत्रेणानेन तादेवि पूजये दुमयामह ।
 ततः कथां समाकृत्य शक्त्या दद्याच्चदक्षिणाम् । ब्राह्मणाय प्रदातव्यं वस्त्रधेनु हिरण्य
 कम् । तृतीयायान्तु यानारो क्लिप्तभोजन माचरेत् । जन्मजन्मभवेद्ब्रह्म्या विधवा चपुनः पुन —
 याति सानरकं घोरमुपवासं नयाचरेत् । काचनं स्वमपात्रं तास्रकंवा तथैवच । वैशु
 मृन्मय पात्रेणो पूषानि विविधैः फलैः । एवंषोडश संख्यानि ब्राह्मणाम्यः प्रदापयेत् ।
 यद्वाब्राह्मण योपिद्भ्यः पारणा तदनें तरम् । एतन्ते कथितं देवि व्रतानामुन्तंभ व्रतम् तेन
 मात्वं प्रपन्नमि ममवेहार्थितात या । अथोद्यापन विधिं खधेव—युक्तिर उवाच—
 उद्यापनविधिं ब्रूहि तृतीयायाः सुरेश्वर ॥ भाक्ततः श्रोतुमिच्छामि व्रतसंपूर्णं हेतवे । श्री
 कृष्ण उवाच—उद्यापनमहंश्चक्षे सावधानि नवाश्टयु । त्रिंशद्गुणं प्रमाणेन प्रमितं दक्षिणोत्तरे ।
 प्रत्यगप्रागपिराजेन्द्र तद्गोवर्त्मसमिधये ॥ गोवर्त्मं मार्गं लेप्यतद् गोमयेनविचक्षणम् । मंडलं
 कारयेत्तत्र नानावर्णं सुसोभनम् । ग्रहमंडलं पार्श्वंतु पद्ममण्डलं लिखेत् । तन्मध्येस्थापये
 त्कुम्भमत्रणं मृन्मयं शुभम् । ताम्रपात्रं प्रकुर्वीत पलैः शोडशभिस्तथा । तदधार्धनवाकुर्वी
 द्विन्तं शाड्यं विवर्जयेत् । कर्पमात्रं सुत्रं प्रतिमा कारयेद्भुवः । तदधर्मधर्मप्राक्तं तदर्धतु
 कनिष्ठकम् । कृत्वाहं प्रयत्नेन पार्वत्याश्च हरस्यच । अथताम्रमय पात्रे प्रतिमा तत्रविन्यसेत् ।
 शत्रुवधश्च सुगच्छश्च श्रेत यज्ञोपवीतताम् । भाजनं च तिलैः पूषा कटाशस्योपरिन्यसेत् ॥
 पार्वत्यास्तु युगं दद्यात्स्थ पवित्याविवानत । वेदोक्तेन प्रतिष्ठाप्य कर्त्तव्या चाधत्तरेणा ।
 पद्माभूतेन स्नानं कृत्वा वैश्वस्य चोत्तमम् । स्नानेन कारयेत्पश्चात्तत्र पूजा समाचरेत् ॥ गौत
 म्यादि संयुक्तं कथा पुस्तकं वाचने । उद्योगं जागरंतत्र कर्त्तव्यं भक्तिभावतः । ततः प्रभाते
 विमले कृत्वा स्नानादि कर्मच । पूर्ववच्चार्ययेहैवं पात्रवाद्बोधकं कारयेत् । प्रारभेच्च ततोहीमं
 नमग्रह पुरः सरं । जुहुयाद्द्रुमंनेण गौरीमंनेण वैश्वि । अत्रोत्तरशंनयापि अश्वविशति
 संख्यया । एवं समाप्य हीमंतु तत्र कार्यं प्रवृत्तयेत् ॥ धनुस्तत्राद्या दद्यात्सवालंकार भूषितम् ।
 प्रयत्नेनच कर्त्तव्यं पक्वार्तं षोडशोन्मितम् । षोडश प्रमितैर्युक्तं ब्राह्मणाय निवेदयेत् । वंशपात्रं
 प्रयत्नेन पक्वार्तैकैने शुभं । अन्तेगोविप्र वर्णं प्रो दक्षिणां च प्रयत्नतः । अर्धेन परमा
 भक्त्या प्रदद्यादनुवारत । वंधुभि महंभुजोवनियतश्चपरहनि । एवंकृते भवेत्प्रार्थं परिपूर्णं

प्रतीयतः । इति भविष्योत्तरे हरितालिका व्रतोद्यपन परिभाषा ॥ अत्र त्रतद्वयंऽपि
तृतीया मुहूर्त्तमात्रसीरुषि परैवप्राद्या । चतुर्थीमहितायातु सातृतीया शुभप्रदा । अथैधव्यकरी
श्रीणा पुत्रवीच फलप्रदा । द्वितीयाशेषमंयुक्ता याकरंति विमोहिता सावैव्य मत्राप्नोति
प्रवदन्ति मनीषिण । इति माध्रवायेऽधेर्वं, इति हरितालिका व्रत निर्णयः ॥

॥ अथ हरतालिका पूजनम् ॥

अथच हरितालिकाव्रतानारी, प्रातः स्नात्वा प्रदोष समये
शिवालये वा स्वगृहे, परिभाषोक्त प्रकारेण गौचर्म परिमितां
भूमिं गोमयोदके नोपलिप्य, तत्राष्टदलं कमलं विलिख्य मस्य
खर्जुर पुष्पपत्रादिभिर्हरितालिका भूर्तिकृत्वा,, वा सृद्वालुकया-
निर्मितं पार्वती सहितं शिवलिंगं निर्माय तत्र वक्ष्यमाणविधिना
शिवगौरी पूजामाचरेत् ,, पूजास्थलमागत्याचम्य, संकल्पः—
अद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्य, अमुकीदेव्यहं, करिष्यमाण हरि-
तालिका व्रताचारण विधौभर्तुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धये श्रीपरमेश्वर
हरगौरीप्रीत्यर्थ, निमित्तप्रतिभोपरि हरगौरी पूजनं करिष्ये,
पुष्पाक्षतहस्ता ध्यायेत्—मंदारमालाकुलितालकायै कपालमालां
किनशेखराय । दिव्यांवरायैच दिगंवराय नमः शिवायैच नमः
शिवाय । एतत्सहितेनैकैक वक्ष्यमाणमंत्रेण शिवयोः पूजनंका-
र्यम् । आवाहनम्—ॐ सहस्रशीर्षागुरुषः० । देवदेव जगन्नाथ
प्रार्थयेहं जगत्पते । तावत्वं प्रीतिभावेन लिंगेऽस्मिन्सन्निधोभव ।
आसनम्—ॐ पुष्टपऽणवेद टं० सर्व० । कार्त्तरस्वरमयंदिव्यं नाना
मणिगणान्वितं । अनेकशक्ति संयुक्तमासनं प्रतिगृह्यताम् । पादम्
ॐ एतावानस्य० गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मयाप्रार्थनयादृतं । तोयमे-
तत्सुखस्पर्शं दाशार्थं प्रतिगृह्यताम् । अर्घ्यम्—ॐ त्रिपादूर्ध्वं०
वरेभ्ययज्ञपूरुषप्रजा पालनतत्पर । नमोमाहात्म्यदेवाय गृहाणा-
ध्वनमोनमः । आचमनीयम्—ॐ ततो द्विराडजायत० । पाटलो
शीरकपूरसुरभिस्वाहुनिर्मलम् । तोयमाचमनीयार्थं शीतलं
प्रतिगृह्यताम् । पंचामृतस्नानम्—ॐ आप्या यस्व० पयोदधिघृत-

ज्योत्स्ना शर्करास्नानमुत्तमम् । तृप्त्यर्थं देवदेवेश गृह्यतां परमेश्वर,
 शुध्दोदकस्नानम्—३० यत्पुरुषेण० । मंदाकिन्याः समानीतं हेमां
 भोरुहवासितम् । स्नानायतेमयावृत्तं नीरंस्वीक्रियतामिदम्,
 वस्त्रम्—३० तंयज्ञम्० । सर्वभूपाधिके सौम्येलोकलज्जानिवारके
 मयोपपादितेतुभ्यंवाससी प्रति गृह्यताम् । गजोपदीतम्—३०
 तस्माद्यज्ञात्० महादेव नमस्तेस्तु त्राहिमांभवसागरात् । ब्रह्मसू-
 त्रं सौत्तरीयं गृहाणपुरुषोत्तम । चन्दनम्—३० तस्माद्यज्ञात्सर्व
 हुतऽऋचः, मलयाचलसंभृतंघनसारं मनोहरम् । हृदयानंदनं चारु
 चन्दनं प्रतिगृह्यताम् । अक्षताः—रंजिताः कुंकुमाद्येन, अक्षतास्तु
 सुशोभनाः । गृहाणसर्वपापेभ्यस्त्राहिमांभृषभध्वज । पुष्पाणि -
 ३० तस्मादश्वाः, माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनिवैप्रभो ।
 मयाहृतानिपूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् । धूपम्—३० यत्पुष्पं
 व्यदधुः०, वनस्पत्युद्भवो दिव्योगंधाद्द्व्योगंधोत्तमः । आग्नेयः
 सर्वदेवानांधूपोयं प्रतिगृह्यताम् । दीपं—३० ब्राह्मणोऽस्य०
 आज्यंचवत्तिसंयुक्तं वन्दिनायोजितंमया । दीपंगृहाणदेवेश त्रैलो-
 क्यत्तिमिरापह । नैवेद्यम्—३० चन्द्रसामन० । अन्नंचतुर्विधंस्वाहु-
 रसैः पद्भिसमन्वितम् । भक्ष्यभोज्यसमायुक्तं नैवेद्यं प्रति
 गृह्यताम् । नैवेद्यान्ताचमयीयम्—कर्पूरवामितंतोयं मंदाकिन्याः
 समाहृतम् । आचम्यता मुमानाथमयादत्तं हि भक्तिनः । फलम्—
 इदंफलं मयादेवस्थापितं पुरतस्तव । तेनमेसुफलावाप्तिर्भवेज्ज-
 न्मनि जन्मनि । ताम्बूलम्—पूगीफलंसकर्पूरं नागवल्लीदलैर्यु-
 तम् । लवंगादि सप्पायुक्तं ताम्बूलं प्रति गृह्यताम् ।
 दक्षिणा—हिरण्यगर्भं गर्भस्थं हेमवीजंविभावसोः । अन्नं
 पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छमे । नमस्कारः—३० नाभ्याऽ आ-
 सीदं०, नमस्ते देवेदेवेश नमस्ते धरणीधर । नमस्ते विश्वरूपाय
 नमस्ते पुष्पोत्तम । प्रदक्षिणा—३० सप्तास्यासन्०—संसारार्णव
 मग्नं च त्राहिमां चन्द्रशेखर ॥ हराय च नमस्तुभ्यं त्रैलोक्यव्या-
 पिने नमः । प्रार्थना—३० नमः शिवायशान्ताय पंचवमाय शक्तिने

नंदिभृगिमहाकाल गणयुक्ताय शंभवे । शिवायैशिवरूपायै मंगला
 यैमहेश्वरि । शिवेसर्वार्थदेदेवि शिवरूपेनमोस्तुते । नमस्ते सर्व
 रूपिण्यै जगद्धात्र्यैनमोनमः । संसारभीति संत्रस्तं त्राहिमां
 सिंहवाहिनि । मयापियेनकामेन पूजितासि महेश्वरि । राज्यं
 देहिच सौभाग्यं हरितालि नमोस्तुते । ततः कथा श्रवणं रात्रौ
 सोपवासं जागरणंच कुर्यात्-ततः किंचिदुदगते प्रभाते उत्तरांगं
 पूजनंकृत्वा । सुवासिनीभिः, हरितालिकादेवीं शिवेनसंहोत्थाप्य
 जलासयेगत्वा तत्रानेन मंत्रेणविसर्जयेत्—ॐ अचितासिमंघ्राभ
 क्त्या गच्छदेवि सुरालयम् । ममदौर्भाग्यनाशायपुनरागमनाय
 च । इति देवीविमृज्य यथासुखंभोजनंकुर्यात् । इति हरितालिका
 व्रत पूजापद्धतिः उद्यापनंतु परिभाषोक्त विधिनाकुर्यात् । तत्र
 स्पष्टत्वान्नात्रदशितम् ॥ इत्पुद्यापनम् ॥

॥ इति हरितालिका पूजा ॥

अथ नवरात्र परिभाषा

अथ नवरात्र परिभाषा—उक्तं च देवी भागवते—जनमेजयउवाच—नवरात्रे
 तुमप्राप्ते किंकर्तव्यं द्विजोत्तम ! त्रिधानं विविद ब्रह्मि शरत्काले विंशतः । उवाच—
 गृणुरात्रं प्रवक्ष्यामि नवरात्रं नतं शुभम् । शरत्काले विशेषेण कर्तव्यं विधिपूर्वकम् । वसन्ते च
 प्रकृतव्यं तथैव प्रेमपूर्वकम् । आपदे चैव मार्गच प्रकृतव्यं प्रवृत्ततः । द्वावेवमु महाघोराहृत्तुरोग
 करौ नृणां । यतन्त शरदावैव जननाश करानुभी । तस्मात्तत्र कर्तव्यं चण्डिका पूजनं दुर्घः ।
 अमायात्वा च गम्प्राप्य संभारं कल्पयेच्छुभम् । हविष्यं चाशनं कार्यमेक भुक्तं तु तद्दिने । मंडप-
 स्तु प्रकृतव्यः समेदो शुभेष्टहे ॥ हस्तधीडशमानेन स्तंभञ्च जसन्वितः । गौरभृद् गोमया-
 ध्यां च लेपनं कारयेत्ततः । तन्मध्ये बद्धिवा शुभ्रा कर्तव्या च समास्थिरा । चतुर्हस्ता च हस्तौ
 च्छ्रा पीठार्थं स्थानमुत्तमम् । तोरणानि विधित्राणि वितानंच प्रकल्पयेत् । रात्रौ द्विजानभार्थं
 देवीतत्त्वविशारदान् । आचारनिरतान्दान्वात्वेदभेदांगपारगान् । नवपंच प्रयश्चैको देव्यापाते
 द्विजाः स्मृताः । विसृज्य न कर्तव्यं विनयेति कर्हिचिन् । द्विजानां वरणाड्याद् भक्तियुक्ते
 न भेदना ॥ गणनाथं च मम्पूज्य निविध्याये प्रयत्नतः । स्वस्ति दाननकं कार्यवेदमंत्रविधानतः

त्रैलोक्यसिंहासने स्थाप्य क्षीमवत्स समन्वितम् ॥ तत्र स्थाप्यायिकादेवीननुर्हस्ता ऽ युधायिनी ।
 शंखचक्रगदापद्म धरासिंहेस्थिता शिवा । अष्टादश भुजापाणि प्रतिष्ठाप्या सनातनी । मार्कण्डेये
 ऽ खिले—खिलेदृष्टदंष्ट्रं चंदनागुरु कुंडुमैः । पद्ममध्ये लिखितं पट्कोणं नशिडकामयम् ॥
 पट्कोणं चक्रमध्यस्थ मायंवीजप्रयन्वसेव । त्रिदिव्य यंत्रमेवं तुमस्य गाराधनं चरेत् । ज्ञेयं
 विधिनापद् कोणादृष्ट भूपुरात्मकं यंत्रं भवति । देवीभागवते—अर्चाभावे तथायंत्रं नवाणं
 मंत्रं संयुतम् । स्थापयेत्पाठ पूजायै कलशं तत्र पार्श्वतः । तदुक्तं रुद्रयामले—गुभाभिर्मृत्तिका
 भिरत्र पूर्वकृत्वा तु वेदिकाम् । यवान्यै वापयेत्तत्र गोधूमैश्च मन्विताम् ॥ उक्तं च देवीभाग
 वते—पंचपलत्र संयुक्तं वेदमन्त्रैः सुसंस्कृतम् । सुतीर्थजल सम्पूर्य हेमरत्नै समन्वितम् ।
 पार्श्वं पूजार्थं संभारान् परिकल्प्य समंततः । गीतवादित्र निर्घापात्कारयेन्नंगलाय वै । तिथौ
 हस्ताग्नितायां च नन्दायां पूजनं वरम् । प्रथमे दिवसे राजन्विधिवत्कामदंष्ट्रणाम् । नियमप्रथमं
 कृत्या पश्चात्पूजां समाप्तेत् । उपवासेन नक्षत्रेणैकभुक्तेन वापुन । करिष्यामि व्रतं मानवं
 रात्रौ मनुत्तमम् ॥ सहाय्यं कुरु मे देवि जगदम्बममाखिलम् । यथा शक्तिप्रकर्तव्यो नियमो व्रत
 हेतवे । चन्दनागरुकरूपैः कुसुमैश्च सुगन्धिभिः । मालती ब्रह्मराजपुष्पैस्तथा विन्वदलैः शुभैः ॥
 अन्नदानं प्रकर्तव्यं नाना व्यञ्जन संयुतम् । “यदन्नं योनरो भुंक्ते तदन्नं तस्य देवताः ।” पूजये
 ष्जगतां धात्रीं धूपैर्दीपं विधानतः । नारिवेलैर्मातुलिंगैर्दाडिमी वदलोफलैः । नारंगैः पनसैश्चैत
 त्थापूर्यफलैः शुभैः । उक्तं च मार्कण्डेये ऽ खिले—संप्रप्य विधिवद्देवीं नशिडं कृततर्पणाम् ।
 फलैरे पूजयेद्देवीं यन्त्रेया पूजयेत्ततः । समन्तात्पूजयेद्दित्तु दिशापालान्यधावमम् । चन्दनेन ति
 लिप्तैः स्रग्नीन्याम परायणम् । नवाहं भूषणैकैकं मीनीवद्दामनोजपेन । प्रणयादिरहस्यान्तं
 च नशिडका चरितत्रयम् ॥ शतमादौ शनं चान्ते जपेन्मंत्रं नराण्यवम् । चण्डी सप्तम
 तां मध्ये संपुटो ऽ यमुदाहृतः । नव दुर्भंति विद्यातां पाप ताप प्रणाशिनी ।
 कुमारी लक्ष्म्यं देवी भागवते—एकं वर्षां न कर्तव्या कन्या पूजाविधौ वृष । परमहृष्ट
 भोगीनी गंधादीनां च बालिका । कुमारिका तुमा प्रोक्ता द्विचपांतु भवेदिह । निमूर्तिश्च विषया
 च कन्याणी चतुरन्दिना । रोहिणी पंचयया च पदययां कालिका स्मृता ॥ चण्डिका मत्त
 पयांस्त्वा दष्ट वर्षां च साभरी नव वर्षां भवेद्दुर्गा सुभद्रा दशवर्षिका । अत ऊर्ध्वं न कर्तव्या
 मृषकार्यं विगहिता । हीनांगी वर्जयेत्कन्यां कुष्ठयुक्तां वशाङ्गिताम् । गंधस्फुरित हीनांगी विराज
 कुल संभवाम् । जान्यथा केचनराजाणो रक्तपुष्पादिनां किताम् । क्षमां गर्भं समुद्भूतांगीणां
 कन्यकोत्सवाम् । वर्जनीया मद्राभैताः गर्भपूजादिषु मंगु । प्राज्ञा—शरीरिणां मुद्रयां
 मुन्दरी वशाङ्गिताम् ॥ एतं वंशं समुद्भूतां कन्यां मन्व्यत्र प्रपूजयेत् । प्राज्ञैर्गर्भं प्राजा पया

राजर्ष्यव्रतवंशजाः वैश्वेद्विचगजा. पृथ्वाश्चतस्र.पादसंभवै. । काम्यकुमारी पूजनम्—
 ब्रह्मणी सर्वकायपु जायायै नृप वंशजाम् । लाभार्थं वैश्य वंशोत्थो गुताय शूद्र वंशजाम् ।
 वारणे चान्य जातानां पूजयं द्विधिनानर. । वेदपारायणमप्युस्तं रुद्रयामले—एवं चतुर्वेद
 त्रिको विप्रान्सर्वांप्रसादयेत् । तेषां च वरस्यै कार्येवेदपारायणोयवे ॥ तथा—एकौत्तरामिवृध्यातु
 नवमीयाववैवहि । चण्डीपाठं जपेच्छैव जापयेद्वा विमानतः । उक्तंच वाराहो तन्त्रे—
 आधारे स्थापयित्वा तुपुस्तकं प्रजपेत्सुधी. । हस्तसंस्थापनादेव यस्माद्धि विफलं भवेत् । स्वयंन
 लिखितं यच्च शूद्रेण लिखितं भवत् । अत्रावापेन लिखितं तत्रचापि विकर्म भवेत् ॥
 देवीभागवते—होमार्थं चैवकतव्यं कुण्ड चैव त्रिकोणम् । स्वेटिलिना प्रतयेव्यं त्रिकोणं
 मानत शुभम् । त्रिकालं पूजनं नित्यं नानाद्रव्यैर्मनोहरैः । गीतवादित्र नृयैश्च कर्तव्यश्च
 महात्म्य. नित्यं भूमीच शयनं कुम्भरीणां च पूजनम् । भणित्ये—एक भक्तेन नक्तान नरात्रो-
 पनागत । पूजनीया जगद्वी स्थाने स्थाने पुरे पुरे । गृहे गृहे शक्तिपरं ग्रामं ग्रामं वने वने ।
 स्नानं. प्रमुदिनं हृष्टं ब्राह्मणै. क्षत्रियै नृपै । वेद्ये शूद्रैर्भक्तियुक्तं मन्त्रैश्चैश्चमानवै । विना-
 मंत्रेस्नामनीस्या त्रिरातानां तुपम्भता ॥ तामसपूजापरम्—वम्भालंकरणैर्दिव्यं भोजनं च
 मुधामयै. । विभस्यानुसारेण कर्तव्यं पूजनं त्रित । वित्तशास्त्रं न कर्तव्यं रात्रश्चक्ति मध्येतदा ।
 इदं च देवी पूजनं शुकास्तादायि कार्यं तदुक्तं धर्मप्रदाये—नष्टे शुके तथा जीवे
 गिहस्थे च बृहस्पती । कायांचैव स्वदेव्यर्चा प्रदावं कुल धर्मत । मन्त्रमांसेतु पचनाभावात्
 भवति । अत्राशीच विशेषो निर्यामृते विश्वरूप नियन्धने—आश्विनं शुक्लपक्षे तु
 प्रारब्धं नवरात्रि वै । शाश्वतीच मसुपन त्रिया कार्या. नथंबुधै. । सतकेवर्तमानं च तत्रोपनर्न.
 मद्रावुधै । देवपूजा प्रकर्तव्या शुभयज्ञ विधानत । मूलवं पूजनं प्राक्तं दानं चैव विशेपतः ।
 वेरेमु द्वैद्य कर्तव्यम् तत्र दोगो न धियते ॥ कालादर्शं विष्णुरहस्ये ऽपि—पूर्वं मंक्लिपितं
 यच्चप्रतं मुनियत त्रतं । तन्त्रतंध्यं नरै. शुद्धं दानार्थं त्रिवलितम् । उक्तं चगौडनिचन्द्रे—
 त्रिवि तन्त्र । आश्विनकृष्ण नवम्यादि शुक्लप्रदिपदादि पष्ट्यादि नवम्यादि चैरं कर्मश्चतरचमध्यं
 आशीचपने ऽपि नदाप । गन्त्यो ब्रतमत्रयारिति । कृया होमादिक्वैवैनरदुर्गा विमानवत ।
 त्रितशट्य परित्यज्य बुधांश्चान्यतोपणम् ॥ रक्षागु नीयभूवेनुवाजि होमप्रदानतः । अशक्तो
 निष्कमेवेतु देयमस्मं प्रयत्नत । विद्धान वि गानेन य पना नयनगिठकाम् । सद्युग्रास्य पत्रे-
 भूपयोहिकश्चिदनेन वै । ऐन्द्र महादयो भागाम्तमायान्तिप्रवशिनुम् । अपुत्रो लभतेपुत्रान्न तन.
 गजनीभधै. । व्या रय नक्षयंयानि शत्रुवद नमुदाकणा । न तन्म्याहित नयै वैचिद्राजचौराग्नि
 प्रारिचमिति । आश्विन्य शुक्ल प्रतिपदि नवरात्रारंभन्तनित्यय - अमाशुक्ला न कर्तव्या प्रति-

पूजनंमम । सुहृत्तमात्रा कर्तव्या द्वितीया दिगुष्णान्विता । आद्याषाडश नाडिस्तु लब्ध्वाय
 कुशनेनर । कलश स्थापनं तत्र हरिष्टं जायतेध्रुवम् । उक्तं च स्कान्दे— वर्जनीया प्रयत्न
 श्रमायुक्ता तुपाधिव द्वितीयादिगुणैर्युक्ता प्रतिपत्सर्वकामदा । तथा देवीपुराणे— यदि कुर्वादिमा-
 युक्ता प्रतिपत्स्वापनेमन । तन्मशापायुन दवाभस्मशेषं करोम्यहम् । आग्रहात्कुरुते वस्तु कल
 शस्थापनंमम । तस्यसंपत् विनाशः स्वाज्घृष्ट पुत्रोविनश्यति । धनाधिभिविदोषेण वशहान्तिन
 जायते । नदर्शकलययुक्ताप्रतिपत्तगिडकार्त्तन । ३ यादि शनस प्रमाणवाच्यै नैवरात्रारभे प्रनि
 पद्द्वितीया युक्तायाथा । उक्त च भागव वचन टीरिकायां देवीपुराणे— वाष्ट्र वैष्टि
 युक्ताचित्प्रति पचंदिनाचिन तयारने विधातुर्न कलशारोपणवु ३ । चिावैष्टुनि युक्ताद्विती
 या युक्ताने नैवरात्रे पुनम् ॥

॥ २८ नवरात्र न आया ॥

अथ नवरात्र पूजा पद्धतिः ।

चैत्रेनथाश्विनेमासि आभावास्यायां सामांश्रीसम्पाद्य शुभेसमे
 देशेगृहाभ्यन्तरेवा विशेषानुष्ठाने पृथोक्तषोडश हस्तपारामितं
 मनोहरमंडपं विधायषोडशस्तंभ विभूषितं च कृत्वा श्वेतमृद
 गोमयाग्यामुपलिप्यमध्ये चतुर्हस्तायनां हस्तोच्छ्रितामायतविस्तृ-
 तां वेदिकां विरच्य । श्री देवीतत्वविदान् वैदिकांश्चद्विजान्
 नवसप्तपंच त्रीनेकंवा अमावास्यायां निमन्त्रयेत् । ततो गृहमा-
 गत्यैकवारं हविष्यान्नं भुक्त्वाभूमौ शुद्धासने शयीत । यदिप्रति-
 वादिकोत्सवपजनं चेदेकंविप्रं निमन्त्र्य स्वगृहे पूजास्थानं चोपलिप्य
 सम्मार्ज्यं च वक्ष्यमाण विधानेन प्रतिपदि नवदुर्गाचर्चनारंभं कुर्यात्
 णवममावैष्टुनि दोषरहितायां प्रतिपदि साधकोयजमानोवा
 नित्यकर्म कृत्वा पूजास्थानमागत्य स्वासन उपविस्थाचम्यभृतो-
 त्सादनं कृत्वा दीपंप्रज्वाल्य संपज्य च कुशपुंजेन पंचगव्येन
 पूजास्थानं सम्मार्ज्याचार्यं वृणुयात् शाचार्यं पाप्यगंधादिना सम्प-
 ज्य वरणसामग्रीं सम्पाद्य अग्नेहेत्यादि संकीर्त्या मुक्तो ५
 हं करिष्ये माण श्री दुर्गात्सव नवरात्र कर्मणि

अमुकशर्माणंब्राह्मणं कर्मकर्तुं तथा मुकामुकविप्रान् वेदपारायणा-
 दि देवीभागवतसप्तसतीपाठकानेभिर्धरणद्रव्यै स्त्वांगुवावः
 वृणै-ततत्राचार्यो गणेशादिनवग्रहान्त पूजनंकारयित्वा कलश
 पूजाविधिना वरुणकलशं सम्पूज्य बृहत्पूजायांपूर्वाक्त चतुर्हस्त-
 विस्तृतायांवेदिकायां यन्त्रं निर्मायतन्मध्ये सिंहासनंसंस्थाप्य
 हस्तमात्रांवेदिकां शुष्कमृदानिर्माय शुष्कगोमयंच योज्यचतुर्मां
 कुर्यात् । तत्र स्वस्तिवाचनमन्त्रै र्यवान्वारत्रयंवापयेत् । तत्र
 मध्येवरुणोक्तविधिना पूजिनंकलशं स्थापयेत् । तत्रदुर्गार्चनं
 कुर्यात् । वेदिकायामपिपीठे यन्त्रेवा वक्ष्यमाण विधिना देवीं
 पूजयेत् । इदानींपौराणिकीं पूजांवक्ष्ये संकल्पं कुर्यात्—अचेहे-
 त्यादि देशकालौ संकीर्त्यममेह जन्मनि श्री भुवनेश्वरी प्रीतिद्वारा
 सर्वापच्छान्तिपूर्वक दीर्घायुविपुल धनपुत्रपौत्राचनवच्छिन्न
 संतनि वृद्धि स्थिरलक्ष्मी कीर्तिलाभ शत्रुपराजय सदभीष्टसिद्ध्यर्थ
 वसन्त शरदनवरात्रप्रतिपदि विहिनकलश स्थापन पूर्वकं श्री
 भुवनेश्वरी महाकाली त्यादीष्ट देवता पूजनमहं करिष्ये । तत्र
 भूमौ त्रिकोण चतुरस्रमण्डलं कृत्वा पूजयेत् । ३० अखण्डं मण्ड-
 लाकारंविश्वंन्याप्य व्यवस्थितम् । त्रैलोक्यं मण्डनं येनमण्डलं
 तत्सदाशिवम् । नवार्णव मन्त्रेण गन्धादिभिः सम्पूज्य तत्राधारां
 त्रिपादिकां संस्थाप्य ३० मं दशकलाव्याप्त बन्धिभंडलाय नमः ।
 संपूज्य तदुपरि पात्रंसंस्थाप्य ॐ अं द्वादशकलात्मने सूर्य मण्ड-
 लायनमः । सम्पूज्य जलेनापूर्य ॐ क्रों गंगेव यमुनेवैव गोदावरि
 सरस्वति । नर्मदे सिन्धुकावेरी जले ऽस्मिन्सन्निधिकुरु । इत्यंकु
 कुश मुद्रया तीर्थमावाह ॐ उं षोडश कलात्मने सोममंडलाय
 नमः । सम्पूज्य मूलेनाष्टवारमभिमन्त्र्य धेनुमुद्रया वं इत्यमृती
 कृत्यगरुडमुद्रया निर्विपीकृत्याम्त्रेण संरक्ष्य ३० हुं इत्यवगुंध्यप्र-
 णमेव । तेनार्धजलेन पूजाद्रव्यमभिषिञ्च्य देवींपुष्पं धृत्वाध्यायेत्
 मूलमन्त्रमुक्त्वा ३० आगच्छवरदेदेवि दैत्यदर्पनिपूदिनि । पूजां
 गृह्णाण सुमिति नमस्ते शंकरप्रिये ॥ अस्मिन्वष्टे समागच्छ तिष्ठ-

देवगणैः सह । भुवनेशिसमागच्छ सास्त्रिध्यमिह कल्पय । वलिं
 पूजांगृहाणत्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह । पाद्याम्भुवनेशिसुरेशानि
 ज्ञानमार्गप्रदे शिवे । पाद्यंगृहाणदेवेशि भद्रकालिनमोस्तुते ।
 आसनम्—कात्यायनि स्मेरसुखि चामुण्डेशंकरप्रिये । आसनं दिव्य
 वस्त्रं च गृहाणत्वं सुरेश्वरि । अर्घ्यम्—जगद्वंदिनिलोकेशि
 सर्वासुरविभंजनि । अष्टांगार्घ्यगृहाणत्वं तापत्रयनिवारिणि ।
 आचमनम्—गांगेयं निर्मलं वारिदिव्यपात्रस्थमुत्तमम् । गृहाणा-
 चमनं देवि शान्तिं कुरु सुरेश्वरि । पंचामृतम् । दधिदुग्धधृत लौद्र-
 शर्करामिश्रितं परम् । पंचामृतं प्रियंतुभ्यं ददामि भुवनेश्वरि ।
 स्नानीयम् । गन्धचन्दनसंमिश्रं तीर्थोदकं समन्वितम् । जलं गृहाण
 स्नानार्थं जगज्जननि सौहृदे । पुनराचमनम् । स्नानान्ते निर्मलं दिव्यं
 लवंगेन समन्वितम् । गृहाणाचमनं देवि सर्व सिद्धिप्रदायिनि
 वस्त्रम्—वस्त्रं स्वच्छं महार्हं च पटसूत्रेण निर्मितम् गृहाण भुवने-
 शित्वं दुकूलं च सुरेश्वरि । अलंकारान् । देवासुर शिरोरत्न निघृष्ट
 चरणाम्बुजे । अलंकारान् गृहाणत्वं नानाविधि विभूषितान् ।
 चन्दनम् । कस्तूरी कुंकुमयुक्तं केशरेण समन्वितम् । भालशोभाकरं
 दिव्यं चन्दनं प्रतिगृह्यताम् । सिद्धरम् । नागभस्मं परं दिव्यं मंजि-
 ष्ठारं जितं शुभम् । चन्द्रार्धोपरि विन्द्यं सिद्धरं गृह्यदेवित्वम् ।
 अक्षतान्—अक्षतानि सुधौनानि सिद्धरोपरि मंगले । गृहाण परया
 प्रीत्या भद्रदायिनि तेनमः पुष्पम्—नानापुष्प विचित्राह्यां दिव्यमालां
 मनोहराम् । अर्थयामि च पुष्पाणि त्वंगृहाण सुरेश्वरि । धूपम्
 गुग्गुलं नृतसंयुक्तं गन्धद्रव्यसमन्वितम् । धूपं दिव्यं समाधेयं
 गृहाण भुवनेश्वरि । दीपम् गवाड्याभ्यक्तसङ्घर्षां चन्दिनादीपिनं
 शुभम् । आरानिक्यंगृहाणत्वं देहि देवि परं सुखम् । कज्जलम्—
 नेत्रांजनं परं दिव्यं धूपकर्पूर संयुतम् । पद्मपंक्ति सुशोभार्थं गृहाण
 दिव्यं चतुके । नैवेद्यम् । दिव्यन्नं रससंयुक्तं नानाविधिसुसंस्कृतम् ।
 नैवेद्यं गृह्यमानस्त्वं चोप्यपेयसमन्वितम् । आचमनम् । कराननविशु-
 द्ध्यर्थं नैवेद्यान्ते जलं शुभम् । अर्पयामि शिवे तुभ्यं देहि मे विपुलं

सुखम् । फलानि—नानाफलानिदिव्यानि ऋतुदेशभवानि च ।
 पूगीफलैश्चसहितान्यवत्वामर्पयाम्यहम् । ताम्बूलम्—गृहाण देवि
 ताम्बूलं लवंगेनसमन्वितम् । पूगीफल समायुक्तं ग्वादिरेण सम-
 न्वितम् । ततो वामहस्ते सफलजलयुतमर्घ्यं कृत्वोत्तानं दाक्षिहस्तं
 उपरितोनिधाय—मनोहरफलेनैवपूरितं शुद्ध वारिणा सफलाघ्यं
 गृहाणत्वं फलदातुसदाभव । फलदेव्यग्रेनिधाय वारिणा देवीं स्ना-
 पयेत् उपायनम् उपायनीभृत्तमिदंद्रव्यंदेविसुरेश्वरिगृहाणपरया-
 प्रीत्या दयांकुरु सुरेश्वरी । मन्त्रपुष्पांजलिम्—भुवनेशिनमस्तुभ्यं
 चातुवर्गार्थदायिनि । मन्त्रपुष्पांजलिंदेवि गृहाणत्वंसुरार्चिते ।
 नमस्कारः—विश्वेश्वरीं विश्वरूपां विश्वपालानकारिणीम् ।
 प्रणमामिसदाभक्त्या विश्वात्वांभुवनेश्वरीम् । ईशानभानरंदेवी-
 मीश्वरीमीश्वरप्रियाम् । प्रणतोऽस्मिसदादुर्गा संसारार्णवतारणीम्
 वालार्कमण्डलाभासांश्चतुर्बाहुत्रिलोचनाम् ॥ सर्वलोकप्रणेत्रीं च
 प्रणमामिसदाशिवाम् । योगिनीयोगगम्यांश्चण्डिकां सर्वभंगलाम् ॥
 प्रणमामीश्वरीं भक्त्याकालिकांमुण्डमालिनीम् ।

॥ इति ॥

॥ अथ ब्रह्मबलि विधिः ॥

पूर्वोक्त पूजनान्ते नवम्यां वा यथेष्ट दिने सुतक्ष्णल्लग्नं
 देव्यग्रेआनीय ततः पशुप्रोक्षणमारभेत् । ॐ अग्निः पशुरासीत्तेना
 जंतसऽग्नंरुलोक मजयद्यस्मि न्नग्निः सते लोको भविष्यति ।
 तन्जेप्यसिपिवेताऽअपः । इति ल्हागं सम्प्रोक्ष्य प्रार्थयेत्-ॐ शुभे-
 पृष्ठे ललाटे च पादयोर्जघयोस्तथा । उदरे सर्वं गात्राणि मुचन्तु
 पशुदेवताः । पशोः शंभुगृहीत्वा कुशैः सम्मार्जयेत् । ॐ कालि
 २ ॐ ह्रीं ह्रं २ ॐ ह्रूं ॐ ह्रूं ॐ ह्रूं ॐ ह्रूं ॐ ह्रूं ॐ ह्रूं ॐ ह्रूं
 स्तम्भय २ इति सम्मार्ज्यं ततः पशोश्चूङ्गं गृहीत्वापठेत्-ॐ पशोः
 शृङ्गं गृहीतोसि पशुत्वं क्षिप्रहीयताम् । उपयोगस्त्वया कार्यां

देवी पूजाविधौ सदा । त्रिःपठेत् । ३० पशुपाशाय विश्वहे शिरच्छे-
 दाय धीमही । तन्नो पशु प्रचोदयान् । अनेनैव मंत्रेण पशुं पाय
 गंधादिना ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वदेवता । स्वरूपिणे बलिरूपाय द्वाग-
 मेष, पशवे नमः सम्पूज्य रक्तचन्दन सिंदूराक्षत रक्तमाल्यादि-
 भिः समलं कृत्य तंफट् इति सुसंरक्ष्य टं इत्यवगुंथ्य धेनुमुद्रया
 मृतीकृत्य बलेरंगपूजनं कुर्यात् । ब्रह्मरन्ध्रे ३० ब्रह्मणे नमः ।
 नासायां ३० मेदिन्यै नमः । कर्णयोरों आकाशया नमः । जिहा-
 याम् ३० सर्वतोमुखाया नमः । नेत्रयोः ३० ज्योतिर्भ्यां नमः ।
 वदने ३० विष्णवे नमः । ललाटे ३० चन्द्राय नमः । दक्षगण्डे
 ३० शक्राय नमः । वामगण्डे ३० बन्धये नमः । ग्रीवायां ३०
 समवर्तिने नमः । रोमकूपेषु ३० धृत्यै नमः । भ्रूमध्ये ॐ प्रचेतसे
 नमः । नासामूले ॐ स्वसनाय नमः । स्कन्धे ॐ महेश्वराय नमः
 हृदये ॐ सर्वराजेन्द्राय नमः । इत्यक्षतादिभिः सम्पूज्य तद्दक्ष
 कर्णं पशुगायत्रीं मंत्रां श्चपठेत्-ॐ पशुपाशाय विश्वहे शिरच्छे-
 दाय धीमहि तन्नः पशुः प्रचोदयान् ॐ ह्रीं हूं फट् शिवस्वरूपं
 गच्छ स्वाहा ॐ जुंसः हसन्नमलवरगूं शिवरूपंगच्छ स्वाहा, इति
 चारत्रयं प्रजप्य पुष्पं गृहीत्वा ३० महातपोभिर्दानैश्च यज्ञैर्यत्सा-
 ध्यते नरैः । तन्मे देहि महाभाग सत्वरं चाप्नुहीश्रियं । बलि
 शिरसि क्षिपेत् । ततो बलि पशुं संशोधयेत् ३० यज्ञार्थपशवः
 सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा । अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद् यज्ञे
 बधोऽवधः । शिवायत्तमिदं पिण्डमनस्त्वं शिवतांगतः । उद्बुध्य
 स्व पशो त्वंहि नाशिवस्त्वं शिवोऽसिद्धि । पशोत्वं जीव रूपेण
 मम भाग्यादुपस्थितः । चण्डिकाप्रतिदानेन दातुरापट्टिनाशक,
 पुरतः खड्गं संस्थाप्य पूजयेत् खड्गमध्ये ह्रीं वीजंलेख्य ३० ह्रीं
 कालि कालिवज्रेश्वरि लोहदण्डायै नमः, इति खड्गमभिमंथय्या-
 येत्- कृष्णं पिनाकपाणिं च कालरात्रि स्वरूपिणम् । उग्रं रक्तास्य-
 नयनं रक्तमाल्यानुलेपनम् रक्तांबरधरं चैवपाशरस्तं क्रुद्धम्बिनम् ।
 पियमानं च रुरिरं भुञ्जानं प्रच्य सक्षयं ॥ रसनात्वंचाण्डिकायाः

सुरलोकप्रसाधकः । ३५ कालि कालि वज्रेश्वरि लोहपूर्णायै नमः ।
 इति खड्गमभिमन्त्र्य ॐ गं ह्रीं श्रीं फट् लौहदण्डाय तीक्ष्णधाराय
 खड्गाय नमः । इति गंधादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्-ॐ तीक्ष्ण
 धाराय खड्गाय तस्मै शुद्धायते नमः । पुगदेवासुरे युद्धे निमित्तोऽ
 सि जयप्रदः । तेजो रूपाय नद्गाय जयं देहि नमस्तुते । हस्ते खड्गं
 गृहीत्वा श्रीं श्रीं ह्रीं फट् इति मंत्रेण खड्गं छागस्कन्धे स्पृशेत् ।
 मन्त्रमुच्चरेत्-ह्रीं कालि २ विकट दंष्ट्रे स्फं २ खादय २ छेदय २
 सर्वदुष्टान्मारय २ छागं छिन्धि २ किलि २ चिकि २ अधिरं
 किरि २ संकल्पं कुर्यात्- अथेहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यासुक-
 गोत्रेऽसुकोऽहं दीर्घायुर्विपुल धनराज्य संपत्तिकामः सकलदुष्टा-
 रिष्टखण्डनार्थं श्री अमुकदेवता प्रीत्यर्थमसुकपशुं घातयिष्ये ।
 इति तज्जलंपशु शिरसि क्षिपेत्- यावन्नचालयेद् गात्रं नावच्छेदनं
 कारयेत् । गात्रसञ्चालनान्ते पशुं मण्डपाद्बहिरानीय पूर्वाभिमुखं
 कृत्वा तन्मुखे सैन्धवं दत्त्वा खड्ग प्रहारक उत्तराभिमुखो भूत्वा
 ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं फट् छिन्धि छिन्धि स्वाहा ॥ [अनेन मन्त्रेणैकत्र
 खड्ग प्रहारेण छिन्द्यात् । द्रोणे तद्रुधिरं पूगसैन्धवं गन्धाक्षत-
 युतं देव्या चामे स्थापयेत् । सरक्त पशु मण्डलं च देव्यग्रे स्थापयेत् ।
 एतद्रुधिर वलिं गं ह्रीं क्लीं निवेदयामि । ॐ कवोष्णं फेलिनं
 रक्तं छागकण्ठाद्विनिर्गतम् । माध्वीकं पिवर्दोक्तं परमानन्द
 हेतवे । ततो ज्वलद्वर्तिकां वलिसुंढेनिधाय हस्ते जलपृहीत्वा-
 गृह्णदेवि माहामाये मस्तकं सप्रदीपकम् । कुरुष्व मम कल्याणं
 नमस्ते शङ्करप्रिये । यावद्दहन्ति लोमानि पशोस्ते शिरः खण्डिते ।
 तावद्दर्पं सहस्राणि देवीलोके च गच्छतु । इति वर्तिकोपरि
 हस्तस्थ जलं क्षिपेत् । ततो विल्वपत्रेण रक्तामालोडयेत् । ॐ
 प्रस्फुर २ बुल २ पुल २ तल २ कुरु २ मारय २ युक् २ अंगारय २
 विद्राचय २ कंपय २ कर्मय २ पूरय २ आवेशय २ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं
 ॐ लं हः फट् मद मद ह्रीं हुः इत्यभिमन्त्र्य नैर्ऋत्यां महापुनर्नायै

नमः ॥ ॐ वां ह्रीं ह्रीं राक्षस्यै नमः । ॐ ऐशान्यां ऐं कालिकायै
 नमः । आग्नेयां ॐ विं विदायै नमः । नैर्ऋत्यां नृं नैर्ऋत्यै नमः ।
 ॐ ॐ ह्रीं श्रीं कौशिकि रुधिरैणाप्यायताम् । ॐ अमृतोपस्मरण-
 मसि स्वाहा, इत्युत्तरापोशनं दत्त्वा नतो नीराजनपुष्पाञ्जलिं दत्त्वा
 योनिमुद्रयाप्रणमेत् ॥

॥ इति छागवलिदानप्रयोग ॥

॥ अथ कुमारी पूजा पद्धतिः ॥

उक्तंचदेवीपुराणे—पितरोवसवोरुद्रा आदित्यागणलोकपाः
 सर्वेतेपूजितास्तेन कुमार्योयेनपूजिताः । पूर्वोक्तलक्षणानुसारेण नव
 कन्यानांनिमन्त्रणं कृत्वास्वगृहेआह्वयेत् । देवीपुराणे—प्रचाल्य
 पादौसर्वासां कुमारीणांचवासव । सुलिप्तेभूतलेरम्ये तत्रना
 आसनेस्थिताः । पूजयेद्गन्धपुष्पैश्च स्रग्भिश्चापिमनोहरैः । पूज-
 यित्वाविधानेन भोजनंतासुदोषयेत् । अथ कुमारीपूजनम् ।
 ध्यायेत्—मन्त्राक्षरमयींलक्ष्मीं मातृशृणारूपधारिणीम् । नवदुर्गा
 त्तिकांसाक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् । जगत्पूज्ये जगद्वन्द्येसर्व
 शक्तिस्वरूपिणि । पूजांगृहाणकौमारि जगन्मानर्नमोस्तुते ॥ अनेन
 मन्त्रेणावाह्य, ॐ कां कौमार्यै नमः । इति मन्त्रेणपाद्यादिनीरा-
 जनान्तां पूजयेत् । त्रिमूर्तिध्यायेत्—त्रिपुरांत्रिगुणाधारां त्रिवर्ग
 ज्ञानरूपिणीम् । त्रैलोक्यवन्दितांदेवीं त्रिमूर्तिपूजयाम्यहम् । ॐ
 त्रिं त्रिमूर्त्यै नमः सम्पूज्य । कल्याणिपूजयेत्—कालात्मिकां
 कलातीताम् कारुण्यहृदयांशिवाम् । कल्याणजननींनिर्थां
 कल्याणींपूजयाम्यहम् । ॐ कं कल्याण्यै नमः सम्पूज्य रोहिणीं
 पूजयेत्—अणिमादिगुणाधारा मकाराक्षरत्रात्मिकाम् । अनन्त
 शक्तिकांलक्ष्मींरोहिणींपूजयाम्यहम् । ॐ रौं रोहिण्यै नमः सं० ।
 कालिकांपूजयेत्—कामचारींशुभांकान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम् ।
 कामदंकरुणोदारां कालींसम्पूजयाम्यहम् । ॐ कालिकायै नमः ।

सं० । चण्डिकापूजयेत्—चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुखप्रभञ्जनीम् । पूजयामिसदाभक्त्या चण्डिकांचण्डविक्रमाम् । ३० चं चण्डिकायै नमः सम्पूज्य । शांभवीं पूजयेत्—सदानन्दकरीं शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम् । सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शांभवीं पूजयाम्यहम् । ३१ शां शाम्भव्यै नमः । सम्पूज्य दुर्गापूजयेत्—दुर्गमेदुस्तरेकायै भवदुःखविनाशिनीम् । पूजयामिसदाभक्त्या दुर्गादुर्गार्तनाशिनीम् । ३२ दुँ दुर्गायै नमः सं० । सुभद्रां पूजयेत्—सुन्दरीं स्वर्णभां देवीं सुग्वसौभाग्यदायिनीम् । सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम् । ३३ सुँ सुभद्रायै नमः सम्पूज्य । एवमभ्यर्चनं कुर्यात्कुमारी एांप्रयत्नतः । कंगुकैश्चैव वस्त्रैश्च गन्धपुष्पाक्षतादिभिः । नानाविधैर्भक्ष्यभोज्यैर्भांज्यैः पापशादिभिः । अर्घ्यभोजनदानेन दातुः कार्यार्थनाशनम् । परिपूर्णं भोज्येन सर्वान्कामान्मवाप्नुयात् । उक्तंचनारदीपै—प्रत्यहं भोजयेद्विप्राङ्कुमारीयांगिनीरपि । कामनाविशेषे णस्कान्दे—एकैकां पूजयेत्कन्यामेकवृद्धात्तथैवच । द्विगुणं वापि प्रत्येकं नवकं नवकं तु वा । नवभिर्लभते भूमिभैश्चर्यं द्विगुणं तु । एकवृद्ध्यालभेत्क्षेममेकैकेन श्रियं लभेत् ॥

इति कुमारी पूजनम् ॥

अथ च दशम्यां देवी विसर्जन विधिः ।

तच्च दशम्यां कार्यम् । उच्यते च कालिकापुराणे—निहत रावणे यैरे नवभ्यां यकृतं, सुरै । विज्ञेयपुत्रा दुर्गायाश्चैव लोकपितामह । तत मप्रोपिता देवी दशम्या शरदा त्ययै । ऋष्यामले— दशम्यामभिषेके च कृत्वा मुक्तिं विमर्शयेत् । दुर्गाभक्ततरंगिण्यां देवीपुराणे—तत प्रात पूजयिष्या दशम्याविधि परिक्रम् । संप्रेषणं तुरुक्तव्यं गीतवादिषु नि स्तनं । इयमेव च विजयादशमी— माच द्वितीयादिने धरण्यांगानानां प्रयागाया ॥ नवमी धेप संवृक्ता दशम्यामपरजिता । दद्याति विजयेदेवोपजिता त्रयवर्धिनी । हेमाद्रौ ब्रह्मकारणै कद्रपम् — उक्ते दशमी त्रिनिशम्पुष्पाकादशी यदि । धरण्यर्तुं यदा रात्रे साविधिविजयाभिधा अत्र विज्ञेयो धवलनिश्चये — अत्रयथादो विद्याभागं धरण्याय नवाभयेत् । संप्रेषणं तदादेव्या

पाठ पद्धतिः--अथ च पूर्वोक्त पितृविसर्जनामायादेवी
 पूजा संभारं कृत्वाततः प्रभाते आश्विन शुक्लप्रतिपदि कृतनि-
 त्यक्रियः तोरणावलि मण्डितेशुभेस्थाने गृहेवा तत्र स्वासनेप्राङ्
 मुग्धः समुपविश्य दीपं प्रज्वाल्य पूर्वोक्त पूजा पद्धत्यनुसारेणाच-
 मनं भूतोत्सादनमर्घ्यं स्थापनादिकं च कृत्वा तेनैव विधानेन
 वेदीमध्ये घट स्थापनादिकं देव्याः पूजनं च कुर्यात् । देवीयथावत्
 संपूज्य संकल्पं कुर्यात् । अद्यहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोऽह
 ममुक कामनयाचारभ्यनवमीपर्यन्तं श्री अमुकदेवता प्रीत्यर्थ
 मेकोत्तरवृद्धि चाण्डीपाठ साङ्गोपाङ्ग कर्मखिन्था चैकोत्तरवृद्ध्या
 कुमारीपूजनं ब्राह्मण भोजनं च करिष्ये । स्वयंकर्तुमशक्त श्वेदाचार्य
 ब्राह्मण द्वाराचरणद्रव्येण ब्राह्मणं वृणुयात्कारयेच्च । नतो दिग्दे-
 वीभ्यो वलिं दद्यात् । तत्रादौ पूर्वस्यां ३० कादम्बरि गजवाहने
 इहागच्छ २ इत्यावाह्य ३० कादम्बर्यै नमः पाद्यादि नीराजनांतं
 सम्पूज्य तदग्रेपत्रावल्यां घृतशर्करासहितं पायसंवा दधिभक्तमाप
 वलिं च निधाय ॐ कादम्बर्यै नमः एषने वलिं निवेदयामि वलि
 सम्पूज्य च ज्वलद्भक्तिकांवल्युपरि निधाय हस्तेजलं गृहीत्वा भोः
 कादम्बरि । एनं सदीपंपायसवलिं दध्यन्त वलिं वाग्गृहण ममवा
 मम यजमानस्य सपरिवारस्यायुष्कर्त्री जेमकर्त्री शान्ति कर्त्री
 तुष्टिदात्री पुष्टिदात्रीभव इति वल्युपरिजलंक्षिपेत् एयंसर्वत्रविधिं
 कृत्वावलीन्दद्यात् । एवमाग्नेयामुलकामजवाहनां पूर्ववत्सम्पूज्यवलिं
 दद्यात् एवंचक्षिणेमहि पारुहां करालीम् । नैर्ऋत्ये प्रेतवाहनां रक्ताक्षीं
 परिचमे मकरवाहनां श्वेनाम् । वायव्ये मृगवाहनां हरिताम् ।
 उत्तरे सिंहवाहनां यक्षिणीम् । ईशाने-वृषवाहनां कंकालीम् ।
 इन्द्रेशानयोर्मध्ये सुरज्येष्ठां हंसवाहनाम् । निर्ऋतियज्ञयोर्मध्ये-
 अहिवाहनां सर्पराज्ञीम् । स्व २ स्थानेषुप्रथक् २ सम्पूज्य वलि-
 दत्त्वा प्राक्स्थापित कुम्भोपरि महाकर्मिं समावाह्य नानाविध
 रूपचारै र्भ्यर्च्य तदग्रे प्राग्वत्सरहस्य ग्रयं आच्यन्तं नवार्णव
 मंत्राष्टोत्तरशतसहित मेहासनेन देवीमहात्म्यं चरितत्रयं पठित्वा

कुमारीमेकामेकं विप्रंचसम्पूज्य भोजयित्वा ताम्बूलदक्षिणा नम-
स्कारादिभिः संतोषयेत् । एवंप्रतिपदा यामेकावृत्तिं पाठं कृत्वैकां
कुमारीमेकं ब्राह्मणं च भोजयेत् । एवंद्वितीयायामेकोत्तर वृद्ध्या
द्विरावृत्तिं पाठंकृत्वा द्वे कुमारी द्वौ ब्राह्मणौ च भोजयेत् । एवं
तृतीयायां त्रिगुणमिति क्रमेण नवम्यां नवगुणं यथाभवतितथापूजा
चंडीपाठकुमारी ब्राह्मणभोजनादिकं च यथाविभवविस्तारं नव-
म्यन्तं प्रतिपदपेक्षया नवगुणं कुर्यात् । अत्राप्येकाहार व्रतिको
नियमः कर्तव्यः । ततो नवमेदिने पूर्वाक्त होमपद्धत्य
नुसारेण कृतचण्डिका पाठदशांशेन प्रागुक्तद्रव्यैर्होमं कृत्वा-
सर्वविधिवत्कुर्यात् ॥ ततो दशम्यां पूर्णाहुतिंदत्वा देवीविसर्जन
पद्धत्, क्तप्रकारेणाशिषं गृहीत्वा देवीं संप्राथ्यविसर्जयेत् । यथा-
चार्यद्वाराकारयति तदाचाचार्याय वित्तं शाठ्यरहितां विपुलां
दक्षिणां च दत्त्वा प्रणम्य संतोषयेत् । एवं विधिनाकृते सर्वेणमो-
रथाः प्रपद्यन्ते ॥

॥ इति नवरात्र महोत्सवैकोत्तरवृद्धि चंडी पाठ पद्धतिः ॥

॥ अथ शतचण्डी परिभाषा ॥

उक्तं च रद्रयामले— शतचण्डी विधानं च प्रोच्यमानं शृणुष्वतत्र । सर्वोपद्रव
नाशार्थं शतचण्डी समारभेत । सुधीरायामनावृष्टया भूकम्पे च सुदारुणे । पर चक्रमये तीव्रे
क्षयरीग उपस्थिते । राजदादादि नायपु आप्तु सुतज्जमनि । महोपघातनाशायपं च विशति
यांजने । देशे सर्वत्र शांत्याय शतचण्डी निमां जपेत । शिवाभ्यासेसमे देशे चतुर्द्वारं सुतोरणम् ।
पताङ्गावृत्तं पुष्यांम्गण्डय वेदिभूपितम् । तत्र कुण्डप्रकर्तव्यमुक्तलक्षणमस्युतम् । सदाचार
सुलीनाथे हीमन्त, सत्यनादिन । अगिडकापाठ विपुला दद्यावन्तो जितेन्द्रियाः । दशविप्रान्सम-
प्यर्च्य महालक्ष्मी स्वरविण । मधुपर्कं विधानेन ब्राह्मणाश्चैव पूजयेत् । सप्तविशतिदंभांसां
विष्टरो ग्रन्थिभूपित । विष्टरे सर्वयज्ञेषु लक्षणपारिशीतम् । सुनीणां दक्षमंयुक्ता पाथार्थं
तत्रभगिडका । शंखध्वजप्रदानाय गंधपुष्पफलान्वित । साचमनीयानि वैदयार्थचपात्राण्य
व्रत) मधुपर्काय कात्यादि दधिभवाच्यपरितम् । महाहामिन दद्याथि मुद्रिसाभूषणानि च ।

दशम्यां तु पुनर्दिवा । दिनद्वये दशमीसत्वे पूर्वदशम्यां श्रवणान्तभागयोगे तत्रैव विसर्जनं कार्यम् । तत्र तद्योगा भावे तु परदशम्यामेव तत्-परदिने दशम्यभावे तु पूर्वदशम्यां नक्षत्रयं गेसति-असति वा कार्यम् ॥ राजमातण्डे—निर्मात्यं तु श्रवणदशमी पामरान्ते तु जपदा । इत्यनेन देवीविसर्जनं दशम्यामेवोपलक्ष्यते । सांच विजयादशमी श्रवणक्षयुता एकादशीसहिता परं हि तदैव देवी विसर्जनम् । श्रवणयोगा भावे तु प्रदोषकाल व्यापिनी नवमीयुता विजयादशमी प्रशस्ता तत्रैव देवी विसर्जनं मुक्तामिति दिक् ।

॥ अथ दशम्यां देवी विसर्जन पद्धतिः ॥

ततो दशम्यांप्रातःस्नात्वा देवीपूजामण्डपमागत्य नित्यकर्म विधाय देवीपूर्ववत्सम्पूज्य—ततो होमकुण्डमागत्य होमग्निं प्रज्वाल्य पूर्वाक्तप्रकारेण पूर्णाहुतिं हुत्वा मार्जन तर्पणानि च विधाय च न्हि विभ्रज्य पूजास्थलमागत्य सपारदारो यजमानो देवीं सम्पूज्य प्रणम्य च कृतांजलिं देवीं भक्त्येक्ष्यमाणं स्तुदग्रतस्तिष्ठन्स्तुवीति—
ॐ दुर्गाशिवांशान्तिकरीं ब्रह्मणीं ब्रह्मणः प्रियाम् । सर्वलोकभयापहाम् । हीं काररूपिणीं देवीं नमामि भुवनेश्वरीम् । सुन्दरीं लोकजननीं सर्वकल्याणदाग्निनीम् । त्रिपुरासुन्दरीं देवीं प्रणमामि मुहुर्मुहुः । विन्ध्यस्थां विन्ध्यनिलयां विन्ध्यस्थाननिवासिनीम् । योगिनीं योगमायां च त्रिष्टकां प्रणमाम्यहम् । रक्तास्यारं रक्तजिह्वां च सुरटमालासुशोभिनीम् । रक्ताक्षीं मभयानायां कालिकां प्रणम्याम्यहम् । महामायां महादेवीं शुम्भासुरविनाशिनीम् । त्रैलोक्यबुद्धिरूपां च प्रणमामि सगश्वरीम् । ईशानमातरं देवीं मीश्वरीं मीश्वरप्रियाम् ॥ प्रणतो ऽ रिमसदा दुर्गा संसाराण्यवतारिणीम् । इति पुण्यांजलिं दत्त्वा नीराजनानि कर्म विधाय द्वापनं कुर्यात्—विधिहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं यदाजितम् । पूर्णभयानुत्सर्गं त्यक्त्वा सादात्सुरेश्वरि । मातः ? क्षमयेत्युक्त्वा, नत ईशान्यां पद्ममाणमन्त्रकथनान् ईशान्या मेकपुण्यनित्येण विसर्जयेत् । ३० उत्तिष्ठ देवि

चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च । कुरुष्वममकल्याण मष्टाभिः शक्तिभिः सह । गच्छुगच्छुपरंस्थानं स्वस्थाने देवि चण्डिके । ब्रजस्रोतोजले वृध्यैतिष्ठेगृहे च भूमये । ॐ दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छु पूजिते । कल्याणाय यथाकालं पुनरागमनं कुरु । इति घण्टावाद्यित्वा पुष्पमीशान्यां क्षिप्त्वा देवीं विमूज्य ततो ब्राह्मणाः स्थापित कलशोदकेन पूर्वांक्तसुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु, इत्यादि पौराणिकै वैदिकमन्त्रैरभिषिञ्चयेयुः । ततस्तिलकं कृत्वा देव्युपभुक्तनिर्मालं यवांकुरादींश्च (हरियालीनिप्रसिद्धा) फलान्यपि च दत्त्वा नवरात्र्यनुष्ठान सिद्धयर्थं ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा प्रतिपदमारभ्य नियमान् विस्मृज्य विप्रान् भोजयित्वा स्वयमपि व्रतीबन्धुभिः सह भुञ्जीत । यद्दिने विसर्जनं तत्रैव नियमत्यागस्योचितत्वात् विसर्जनोत्तरं तद्दिनपत्रपारणां कार्यम् । शुक्लप्रतिपदारभ्य यावत्स्यान्नवमी तिथिः तावद्ब्रतं प्रकुर्वीत दशभ्यां पारणां चरेत् । इति विसर्जनान्त नवरात्रपद्धतिः । ॐ दुर्गायै नमः ।

अथ अश्विनी वृद्धि नवरात्र चण्डीपाठ विधिः—उक्तं चाखिल मार्कण्डेये—शरहताविषेमासि शुक्लपक्षे नृपोत्तम । प्रतिपत्ति शिमारभ्य यावच्चनवमी तिथिः । तोरणाद्व्येशुभेस्थाने सुविता-नाद्यलंकृते । पूर्वादिकसयोगेन दिग्देवीभ्यो वलिं हरेत् । कलशं पंचरत्नाढ्यं हेमवस्त्रादिकान्वितम् । संप्रतिष्ठाप्य संपूज्य चण्डिका र्धनमारभेत् । कृत्वान्यत्पूर्ववत्सर्वं जपेदेकाग्रमानसः । सकृद्द्रहस्य संयुक्तं चण्डिकाचरितत्रयम् । एकासनेन चरित सरहस्यत्रयं पठेत् । यदाद्यदिवसे कुर्याच्चण्डिका पूजनादिकम् । द्विगुणं तद्वितीयेऽन्दि त्रिगुणं नत्परेऽहनि । नवमीमिथि पर्यन्तं वृध्या पूजाजपादिकम् । अत्र जपग्रहणात्पाठस्यापि वृद्धिः एकवारं व्रती कुर्यात्सत्यादिनियमैर्भुतः । कृत्वा होमादिकं सर्वं पाठस्य दशमांशकम् । अपत्रो लभते पुत्रान्नधनः सधनो भवेत् । व्याधयः संक्षयं यान्ति शत्रवश्च सुदाहणाः । न तस्यास्ति भयं किंचिद्वाजचोराग्निवारिजम् । शेषप्रयोगे संपद्यम् अश्विनी वृद्धि चंडी

मयूरपद्मद्वाराणि विचित्रारयामनाग्निः । पादुका आहरेत्तत्र तामभूपणभूषिता । अग्नेर्भ्रा-
 मधुपर्करय विप्रेभ्योयत्रपूजनम् । तस्माद्विगुणितं दद्यादाचार्यायतुपूजनं । यजमानं सप्तनेत्रं
 सुतपन्धु समन्वितम् । उपवेश्यामनेपूजयैः कुशाग्रैरुपभूषितैः । वेदमंत्राक्षरैः पूर्णं कुर्युस्ते स्वमि-
 पाचनम् । कृतस्वस्त्ययनं विप्रैः पंद्यादिभ्रजिः स्वनैः । नगिडका मंडपंयाया त्परिवारविभूषित ।
 पश्चिमद्वारमार्गणं प्रविश्य कृतुमण्डपम् । ददाति पूजनंऽनुज्ञां देशिकाय कृताञ्जलिः । देशिक-
 थाचार्यैः । देशिकः सर्प मंत्रज्ञो नवभिः ब्राह्मणैः सह । अग्नयं दीपकदेव्याः प्रोतये पंचरात्रकम् ।
 गणनाथं ग्रहांश्चैवदिग्देवी लोकपालकान् । दिशापालांश्च सम्पूज्य घटं नस्थाप्य पूजयेत् ।
 मंडपस्य चतुर्दिक्षु दत्त्वाभूत वलिं बहिः । मण्डपे कलशेद्वोच ॥ द्वारिद्वौ च निवेशयेत् । गङ्गादि-
 तीय सम्पूर्णं स्थापयेत्पल्लवाम्बितौ ॥ कस्तूरी कुंकुमीपेतं सकर्पूरसचन्दनम् । पलद्रव्ययुतं सर्वमनु-
 लेपनमाहरेत् । दिव्य बल मलंकारं हेमगद्याणकरत्रयम् । लक्षपुत्र चतुर्धांशुगुणं च पलद्रव्यम् ।
 दीपानां विशतिश्चाष्टीमण्डपे जपसाधनम् । कुड्यौ द्वौ हविष्याभं नैवेद्यं सरम शुचिः ।
 नवचण्डि विधानोक्तं महालक्ष्मीपूजनम् । नवभिः ब्राह्मणैः साधे कृत्वाचार्यां द्विजोत्तम ।
 कार्यं जप्या प्रसिद्धार्धमनुज्ञां मानपूर्वकम् । ततोऽनुज्ञा मनुप्राप्य वेद्यामाचार्यं संनिधौ ॥
 मृद्वासनेषु संतुष्टा उपविष्टाः मुनिश्चलाः । न्यासध्यानममायुक्ताः नासात्रस्यावबोधिनि । सुगन्धि-
 पुष्पा मालाढपाश्चण्डिका चरितत्रयम् । सरहस्यमृषिश्छन्दो देवता शक्ति संयुतं । वीजतत्त्व-
 समोपेतं मुपांशुगणमंयुतम् जपे । नुरूपमैकैकं मौन्निररत्नकमन्तरा । पाठान्ते च नमुत्थायतत-
 कुर्युः प्रदक्षिणाम् । चण्डिकां तु नमस्कारैः परितोष्य पुनः पुनः । उपवेश्यासने पूक्तैः श्लोकै-
 सवार्धसाधनैः । प्रार्थयेयुः प्रार्थयंफलं महालक्ष्मीं दृष्टवती । कुमायां दशसंख्याता भोज्या-
 विप्रा दशोत्तमा । महाकाली महालक्ष्मी सरस्वला जप जपन् । ततो पन्धुसमानुष्पी भुञ्जीया-
 ल्यङ्कृतपुमात् । सत्कथाभिः सुगीतैश्च सर्ववादिभ्र निःस्वनैः । पूजनैः प्रेक्षणैश्चैववेदपाठानंशा-
 नयेत् । द्वितीये दिवसे स्नात्वा विधिवत्ते द्विजा दश । चण्डिका सर्पणं कुर्यु सम्पूर्णं ध्यान-
 पूर्वकम् । सर्वप्रथमप्रथमश्रुत्वा दिग्देवी पूजनादिकम् । बहिर्भूतवलिदत्त्वा कृत्वादेव्या प्रदक्षिणम् ।
 पुष्पागारे महारम्ये स्वस्वमाननमास्थिता । जयन्ती जयचण्डोति यावद्बुधं गौंप्रपूजनम् ।
 पूर्वस्मात्पूजनां त्र्युवाङ्गिगुणं पूजनं क्रमात् । आचार्यं सुस्थितः शान्तं चण्डिकायारव-
 तोषणम् कृतेतुपूजने विप्रा जपेयुर्द्विगुणं जपम् । द्विगुणं तु प्रकतेव्यं कुमारो द्विजतोषणम् ।
 कार्यश्च जागरो रात्र्युक्तैः सर्वैर्भहोन्गयैः । चण्डिकापूजनं जाप्यं कुमारो द्विजभोजनम् चृतीयेऽ-
 हनि कर्तव्यं त्रिगुणं चमजागरम् । चतुर्थेदिवसे सर्वसम्पत्पार्थं चतुर्गुणम् । महानामर्गापिते होमः-
 स्यात्पंचमेऽहनि होमविधिः—पायससर्पितेयुक्तं तिलैः शुभ्रैर्वैमिश्रितम् । जुहुयाद्भुक्तिपिना-
 दशाशेनतृपोतम् । मन्त्राचार्यतथाहोमो तन्त्रेणैवेनमाच्यते चण्डोत्तमभोज्याये होममन्त्रोत्तमः

वधिनः पूजनं ध्यायेत्तेन ह्योमो भवेद्दिह । नमोऽर्घ्यं च स्मृतां म्रथवायं भवं ह्योमः श्लोकैस्तोत्रनि-
 हपितैः । जपहोमेतुसम्पूर्णं दिग्बेदीनां शतं शतं । होमव्यं नाम मन्त्रैश्च हविषानेन गाद्वरम् । एक
 वृद्धिप्रयोगोक्त दिग्बेदीनां नाम मन्त्रैः, ग्रहेभ्योपेदिकैर्मन्त्रैः फलेषु पंचशतं शतं । होमसम्पूर्णतां प्राप्ते
 नमस्कृत्यैष्टयेवताम् । चण्डिकायेववेपाना मृणीर्णाविन्दितामपराम् । रत्नमन्त्रयैश्चुवंकृत्वा यज-
 मानः स्फलेकृतः । पृतकुम्भदशमिन् दद्यात्पूर्णाहुतिस्वयम् ।” मूर्धानं मन्त्रपाठेन नवाक्षरमयेन च
 प्राग्नेमार्जनं च यं नवदुर्गाविधानम् । जपं हुतं मये चण्डिकार्यमनोरथान् । ब्रह्मणे निष्कपट्कं
 च दद्याद्गोमिथुनद्वयम् । यस्याः प्रभावमतुषारलोकमुंक्त्वा कृताजलिः । दद्याद्गोमिथुनान्यथा
 पाचार्याय च भक्तिमान् । चतुर्विंशति संवत्सरे ह्येकं मन्त्राण्येकं सह । एकैकमन्त्रविभेभ्यो दद्याद्
 गोमिथुनं समम् । निष्कपय मन्त्रयुक्तं वक्षालङ्कारभूषितम् । सुस्थितं स्वासने शान्तं यजमानं महो-
 त्तयम् । कुंकुमाक्लान्नादूर्वासुगन्धं चन्दनं दधि ॥ षडाक्षरादायतं विना आचार्याश्च मुपजिनः
 श्लोकान्नाशां चतुर्णामुमहालक्ष्मीपरायणाः । एकैकं श्लोकसु स्यात्तदयुराशिपसु तमम् । मन्त्रैः
 समुतः पूर्णो लक्ष्मीशोभां ददात्तमम् । रत्नपुष्पांजलिं दद्यात्तद्विष्णुवैश्विर्मन्त्रेण । भूरिदानं न तोषया-
 म्पुण्ययादिभिरनिः स्वैः प्रविशेच्छान्तिपाठैश्च तोरणात्स्वस्वमालयम् । शतचण्डिपिबानस्य कृनेन
 सुकृतेन हि । महालक्ष्मीतदात्मैर्लोकत्रयसु समुत्तमम् । वद्याचार्यं समुच्चिश्य क्रियते शतशतचण्डिका
 तत्पतस्य महालक्ष्मी सन्ध्यामाशुप्रयच्छति । इति शतचण्डीविधिः । नानाविधि चण्डी
 पाठ काम्यप्रयोग विधयः ।

अतः परं मार्कण्डेयोक्तं चण्डिपाठक मन्त्रद्वयं- चरितत्रयजापस्य चण्डिकाया
 श्रुत्यात्तम । मरहस्वस्वनामानि ब्रह्मोक्तानि दद्यात्स्यहम् । महाविद्यामहा मन्त्रश्चण्डीसप्तमतीति च
 मृतमंजीवनीनाम चतुर्थपरिकल्पितं म पञ्चमं च महाचण्डी चतुःपष्टीपरीपरा । स्पचण्डोपरादुर्गा
 कश्चितां देवपारुम् । महाविद्यामसप्तमं मरुतं देवपुगोपिता । अथ नवमं अचरितं महा मन्त्रमुदीरि-
 तम् । आदिमध्वान्तचरितं कमाचण्डीमहा मन्त्र । मध्यासाद्यन्तचरितं कमान्मसप्तशतीस्मृता । मध्य-
 मन्तचरितं मृतसंजीवनीस्मृता । अन्यादिमध्यचरितं महाचण्डीनिकथ्यते । योगिनीनां चतुः
 पाष्टयोगास्तप्तशतीमनो । चतुःपष्टिप्रदोपांक्ता योगिदिप्रदायिनी । हपदंहीतियांमिन हपचण्डी-
 निस्तस्मृता । परायोजमयायोगात्परचण्डीनिकथ्यते । एतानियां विज्ञानातिनामानि नृपन्दन ?
 जपविना भविचण्डी वरदास्यानुगवेदा । पाठमेदकलैराद्भृष्टपुत्रत्ताम्यनुकमा । महाविद्यां च
 शान्त्यर्थे पठेच्च शततं नर । चण्डीपाठं हेगजेन्द्र पुष्ट्यर्थे च मदाजपेन । मोहनार्थे मसप्ततीपाठं भवति
 निष्ठितम् । त्रिपरोगाक्षपमृत्युघ्नपाठं मंजीवनीकम् । स्तंभने च महाचण्डीमत्ततं सिद्धिदायिनी ।
 तर्धनमारुणेश्यामहाचण्डी चण्डिका । उन्नतनेच विद्रेषं कृत्वा शास्त्रादिभिरमणि । स्पचण्डो शुभ-

करीपरत्यगण्डीचमोक्षदा । शतमागीशतचान्ते जपे मन्त्रगणाक्षरम् । चण्डीमत्तशतीमभ्य सम्पुष्टा
 ऽ यमुदाहृत । रामाम सम्पुष्टोजाप्य विष्णाम सम्पुष्टं विना । एतद्गोप्यतरंतत्व चण्डिनाप
 निदिष्टम् । इति चण्डीकाम्यप्रयोगविधि ॥

— ❦ —

॥ अथ शत चण्डी प्रयोग पद्धतिः ॥

— ❦ —

तत्रानावृष्ट्या अखिल विध्युक्त दुरितोपशान्त्यर्थं राज्यावा
 प्त्यादि सकल कामना सिद्ध्यर्थं च पूर्वोक्त लक्षणसम्पन्नो यज-
 मानः शिवालय समीपे वा देवीप्रसिद्ध मन्दिर सन्निधौ समेभूतले
 यथोक्त लक्षणषोडश हस्तात्मकं मण्डपं चतुर्द्वारयुतं सुतोरणाढ्यं
 पताकालंकृतमध्ये चतुर्हस्तायत दैर्घ्यविस्तृतां यथोक्तलक्षणं वेदिं
 च निर्माय मध्येवेद्यां पट्कोणाष्टदलभृपुरात्मकं यंत्रं विलिख्य
 मध्ये ऐं ह्रीं क्लीं बीजान्यालिख्य तस्याईशानकोणे त्रिकोणं चतु-
 रस्रं यथोक्तलक्षणं सपादहस्तं कुंडं वेदिं वानिर्मायविध्युक्त लक्ष-
 णान्नवब्राह्मणान् दशममाचार्य दान्तं शान्तं देवीतत्वज्ञं, एवं दश-
 ब्राह्मणान् पूर्वोक्त मधुपर्कादि विधानेनाचार्य ब्रह्माङ्गकृष्णकृष्ण
 पूर्वकर्मचयित्वा इतरब्राह्मणापेक्षया चाचार्याय द्विगुणं वरण
 सामग्रीं च दत्वा तदनुज्ञया सपत्नीको यजमानः शुभासने समुप-
 विष्टो ब्राह्मणैः कृतस्वस्त्ययनः सुतवन्धुसुहृद्ब्रूतो वेदघोष नाना
 ध्वनि पृथक् ब्राह्मणैः सह महालक्ष्मीमण्डपंगत्वा पश्चिमद्वारमा-
 श्रित्य आसने समुपविश्य द्वारपूजां कुर्यात्—आचम्य भूमौ जलेन
 त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलमालिख्य सम्पूज्य च ॐ ह्रीं द्वारा-
 र्घ्यमण्डलाय नमः । इत्यर्घपात्रसंस्थाप्य सगन्धजलेनापूर्य तत्रा
 कुंशमुद्रया तीर्थमावाह्य गंगेति धेनुमुद्रांप्रदर्यमूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य
 तज्जलेन तत्त्वत्रयेणाचमेत्—ॐ आत्मतत्त्वाय स्वाहा १ ॐ

विद्यातत्त्वाय स्वाहा २ ॐ शिवतत्त्वाय स्वाहा ३ इत्यानम्य द्वार-
स्योर्ध्वशाखायां दक्षे ॐ धात्रेणमः गन्धाक्षतपुष्पादिभिः सम्पूज्य
एवं सर्वत्र । ततो वामे ॐ विधात्रेणमः सं० । अधः शाखायां दक्षे
ॐ गंगायै नमः सं० वामे । ॐ यमुनायै नमः सं० । उर्ध्वोर्दुम्बरे ॐ
द्वारश्रियै नमः सं० । अधः ॐ देहलयै नमः सं० । वामांगसंकोचेना-
न्तः प्रविश्य आग्नेयकोणे ॐ वास्तुपुरुषाय नमः, गन्धाक्षतैः
सम्पूज्यासनभूमौ रक्तवन्दनेन चतुरस्रं विलिख्य तत्र षूँ पृथि-
व्यै नमः, इति मण्डलं सम्पूज्य तत्रासनमास्तीर्थं पृथ्वीनि मन्त्रेण
सम्प्राथर्योपविश्य मूलमन्त्रेण शिखां बध्वा तत्र त्रयेणाचमं कृत्वा
महालक्ष्मीतत्त्वेन प्राणायामं विधाय स्वदक्षे हरिं वामे ईश्वरं सप्र-
णव नाममन्त्रेण सम्पूज्य प्राङ्मुखोपविशेत् । तत्र संकल्पं कुर्यात्-
ॐ अद्य हेत्यादि० अमुको S हं शतचण्डीपाठ कर्मणि-अमुक
कामनासिद्धये तत्रादौ निविध्नता सिद्ध्यर्थं गणेशादिपंचांगदेवता
पूजनं नान्दीश्राद्धकलश स्थापन पुण्याह वाचनादि कर्मकरिष्ये ।
तत्र कचिन्मनोहरपीठं लिखित्वा गणेशपूजनं मातृका पूजनाभ्यु-
दयिक कलशस्थापनं पुण्याहवाचनं नवग्रहादि पूजनं पूर्वाक्तानु-
सारेण कृत्वा स्तंभ पूजाप्रकारेण स्तंभान्सम्पूज्य दिक्पालवलिं
क्षेत्रपालवलिं च दत्त्वा वेद्या ईशाने अखंडित रक्षादीपं प्रज्वाल्य
सम्पूज्य च चतुर्दिकोणेषु सर्वतोभद्र पूजोक्त प्रकारेण तोरणानि
सम्पूज्य वक्ष्यमाण पूजासामग्रीं स्वसन्निधौ कुर्यात्माद्येयम्—
अस्सीति गुंजामिनाकस्तूरी, तावन्मात्रं कुङ्कुमं, केशरं च सकर्पूरं
तावन्मात्रं पतच्चतुष्टयं पलमात्रं चन्दनेन सहघर्षयित्वा संगृही-
यात् । पलप्रमाणं त्रिंशत्युतर त्रिंशतगुंजामितम् । अनेन पलद्वय
मनुलेपनं भवति । स्त्रीजन परिधानयोग्यं कौशेयवस्त्रं गद्याण
कत्रय हेमनिर्मितमलंकरणम् (सार्द्धं रौप्यकनौलकम्) पंचविंशति
सहस्राणि पुष्पाणि विल्वदलसहितानि (प्रतिदिनं पंचसहस्र
नियमेन) धूपार्थं पलद्वयं गुग्गुलुः । वेद्यां त्रिंशतिर्दीपाभृतपूरिता
यावत्पाठप्रदीप्ताः । कुडबद्वयमात्रं हविष्यान्नं नैवेद्यम् (द्रोणमात्रं

तदभावेप्रस्थद्वयम्) शतद्वयं नागवल्लीदलम् । पूगफलंखादिरसारं च
तदनुयोग्यं ग्राह्यम् । इत्थंपूजासामग्रीं च सम्पाद्य तत्र वेद्यां प्रागुक्त
कलशस्थापन विधिना प्रधानकुंभं संस्थाप्य नवरात्रविधान
पौराणिक पूजापद्धत्या घटे महालक्ष्मीमावाह्य सम्पूज्य च मण्ड-
पस्य पूर्वादि द्वारचतुष्टये प्रतिद्वारं पूर्वोक्त कलश स्थापन विधिना
द्वौ द्वौ कलशौ गालिनोदकपूर्णौ स्थापयेत् । दुर्गापूजा
पद्धत्यनुसारेणाचार्यो यजमानतो वेद्यां पूजनं कारयेत् । अशक्तश्चे-
द्यजमान आचार्येण कारयेत् । तत्र ॐ कारपीठाय नमः इत्यारभ्य
ॐ सिंहाय नमः, इत्यन्तं पूजां कृत्वा यथालाभोपचारैः
सम्पूज्य संतर्प्य च यन्त्राग्नेवेद्यां सर्वोत्तमपीठं संस्थाप्य तत्र रक्त-
वस्त्रं कौशेयमास्तीर्य तन्मध्ये श्रीयन्त्रं वा भुवनेश्वरी यन्त्रं वा
सुवर्णप्रतिमां वा मूर्तिं संस्थाप्य हस्तेषु पुष्पं धृत्वा योगमुद्रया श्री
महालक्ष्मीं मध्यबीजे ह्रीं इति चिरंध्यात्वा तथा मण्डलस्थ सर्व
शक्तिभिरैक्यं विभाव्य मण्डलात्पीठे समाह्वयेत् । विंशतिदीपा-
ः प्रज्वाल्य तेनैव तत्रोक्त प्रकारेण पूर्वोक्त सामग्रीभिर् महालक्ष्मीं
श्रीं पूजयेत् । अत्र यावच्छ्रीदेव्याः पूजनं भवति तावत्सर्वे ब्राह्मणाः
जय चण्डीति ब्रुवन्तस्नां ध्यायेयुः । तत्र आचार्यसहिताः सर्वे
ब्राह्मणाः आसनान्यास्तीर्य स्वम्वासनेषु पविश्य तत्र त्रयेणाचमनं
कृत्वा भृतोत्सादनं विधाय ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै हृदयाय नमः ॐ
ह्रीं म० शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रीं म० शिखायै वषट् ॐ ह्रीं म०
कवचाय हुँ ॐ ह्रीं म० नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ ह्रीं म० शस्त्राय फट्
एवं यदंगन्यासं कृत्वा ॐ अक्षयिणीमन्त्रेण महालक्ष्मीं
ध्यात्वा ॐ ऐं ह्रीं ल्कीं चामुण्ड्यै विच्चै श्री महालक्ष्मीरतृप्प-
ताम् । इति मन्त्रेण श्री महालक्ष्मीं सुगन्धिजलेन दुग्धमिश्रिते
नाष्टोत्तरशतं संतर्प्य ॐ महालक्ष्मी च विघ्ने दिष्णुपत्नी च
धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयान् । इति गायत्रीं यथाशक्ति
जपित्वा प्राणायाम एवैकं जपं श्री देव्यै समर्पयेयुः । तत्र आचार्यो
ब्राह्मणेभ्यो ब्रुवमानपुरः सरसं प्लवनी पाठाभमाज्ञां दध्यात् ।

स्वयमप्याचार्यो ब्राह्मणः सह श्री महालक्ष्म्या ध्यानपूर्वकं विधि-
वञ्चरितत्रयं सरहस्यं जपित्वा तथा प्रदक्षिणा नमस्कारैः पुनः
पुनः परितोष्यासने समुपविश्य प्रार्थनाश्लोकान् पठित्वा यजमा-
नस्याभिष्टानि फलानि पुनः पुनः प्रार्थयेयुः । ततो यजमानो
मुलक्षणाः, दशकुमारीः पूर्वोक्त कुमारी पूजाविधिना सम्पूज्य
संभोज्यचान्यत्तमान्दशविप्रांश्च जापकान्यान् संभोजयेत् । ता-
म्बूल दक्षिणादिभिः संतोषयेत् । ततः पश्चादाचार्यादि दशब्राह्म-
णां स्तत्रैव भोजयित्वा दक्षिणादिभिः परितोष्य वन्धुभिः सार्धं
स्वयमपि भुक्त्वा नृत्यावादित्रनिःस्वनैर्वेदधोषैः सत्कथामिरच-
रात्रिनयेत् । इति विधिना प्रथम दिवसे दशावति पाठं कुर्यात् ।
ततो द्वितीयदिवसे आचार्यादयः स्नात्वा नित्यक्रियां निवर्त्य ध्यान
पूर्वकं दिग्देवीपूजनं वहिर्भूतं याल च दत्त्वा श्री देवीं प्रदक्षिणी
कृत्य प्रणम्य च पूजामण्डपे स्वे २ आसने समुपविश्य ३० जय
महालक्ष्मीनि जपन्तोयावद्देव्याः पूजनं भवति नावत्तिष्ठेयुः तत
आचार्योऽपि पूर्वं पठत्यनुसारेण पूर्वदिवसापेक्षया यजमानेन
संपादिनैर्द्विगुणवन्त्राभरणागन्धपुष्पादि समस्तपूजाद्रव्यै विशेष-
पनः पूजां कृत्वा द्विगुणं परितोषणं भगवत्याः कुर्यात् । ततः
पूजान्ते पूर्वोक्त षडंगन्यासं कृत्वा तेनैव मंत्रेण विधिना द्विगुणं
पूर्वापेक्षया कृत्वा द्विगुणं गायत्रीमन्त्रं च जपित्वा पूर्वोक्त
विधानेन पूर्वापेक्षया द्विगुणं सप्तसतीपाठं कृत्वा देवीं प्रार्थयेयुः
ततो यजमानो द्विगुणितानां कुमारीणां ब्राह्मणानां च पूजाभोजनं
च कारयित्वा पूर्ववत्स्वयमपि भुक्त्वा जागरणमपि कुर्यात् एवं
तृतीये दिवसे त्रिगुणपूजा जपपाठं कुमारीब्राह्मण भोजनादि
विधेयम् । एवं चतुर्थ दिवसेऽपि चतुर्गुणां सर्वं कुर्यात् एवं क्रमेण
चतुर्थदिवसे शनावृत्तिश्चंडीपाठो भवति । ततः पंचमेदिने होम
पठत्यनुसारेण पूर्वनिर्मितकुंडे वामण्डपे विधिनाग्निं संस्थाप्य तत्र
घृतनिलपायसेन वायनिलालयेन जपदशांसेन सरहस्यचरितत्रयस्य
प्रति श्लोकेन चानमो देव्यै महादेव्यै इति श्लोकेन वा पूजाप्रकरणोक्तेन

नवार्णव मंत्रेण होमकृत्वा दिग्देवीनां नाममन्त्रेण प्रत्येकं तन्नाम
मन्त्रेण शनं २ ग्वहया तद्द्रव्येणै व हुत्वा नवग्रहाणां वेदोक्तन
मन्त्रेणतस्य तस्योक्त समिद्धिर्घृतेरचरुभिरच शतं शनमेकैकस्य
ग्रहस्यहुत्वा इत्थंहोमं सम्पाद्य श्री महालक्ष्मी प्रणम्य ननो यज
मानास्तंभद्रयो परिस्रुवंनिधाय घृतकुंभदशांशेन घृतेन” ३० मूर्द्धा
नमित्यस्य भारद्वाज ऋषिः त्रिष्टुब्धुन्दो वैश्वानरोदेवतापूर्णाहुति
होमेविनियोगः । ३० मूर्द्धानंदिवो ऽ अरनि पृथिव्या वैश्वानर
सूत ऽ आजानमग्निम् । कवि टं० सम्राजमतिथि जनानामासना
पात्रंजनयन्तदेवाः स्वाहा ॥ इत्यवच्छिन्नधारया पूर्णाहुतिजुहुयात् ।
अथवा नवाक्षरेण मन्त्रेण जुहुयात् । होमदशांशं नवाक्षर
मन्त्रेण नर्षणं कृत्वा तर्षणं दशमांशं तेनैवमार्जयेत् । शेषं
होमपद्धत्युक्त प्रकारेण कुर्यात् । ततः शान्त्यर्थं गौदानानि
कृत्वा संस्रवप्राशनं प्रणीतामार्जनं च कृत्वा जपंहुतं च श्रीमहा
लक्ष्म्यै निवेद्य मनोरथंप्रार्थयित्वा यजमानो ब्रह्मणेनिष्कपट्टक
हेमसहित सर्वालकारयुक्तं गोमिथुनद्वयंदत्त्वा ॐ यस्याः प्रभा
मतुलमिति श्लोकंकृत्वाजलिः पठित्वा” आचार्याय द्विगुणनिष्क
पट्टक हेमसहितं पूर्वोक्त लक्षणंगोमिथुनाष्टकं दद्यात् । अष्टांश-
गभ्यश्चैकैक निष्कपट्टक हेमसहितंचैकैकं गोमिथुनंदद्यात् । दरिद्रो
ऽ पि ऋत्विग्भ्यो २८ अष्टाविंशति रजनमुद्राण्कंगोमिथुनं
चावश्यमेवदद्यात् । ब्रह्मणे द्विगुणम् । आचार्यायचतुर्गुणमिति ।
ततो यजमानं सपरिवार सुखासने समुपविश्याचार्यां ऋत्विजश्च
कलशजलेन पूर्वोक्ताभिषेकविधिना सर्वानभिषिच्य निलकं
कृत्वा, वैदिक पौराणिक मन्त्रैराशिपंदत्युः॥ ननो लब्धाशीर्जमानः
श्रीमहालक्ष्मी परायणो रत्नपुष्पांजलिंदत्त्वा देवीविसर्जन पठत्य
नुसारेण देवीविम्रज्य ब्राह्मणेभ्यो दानंदत्त्वा यादिन्नवेदध्यनिपुरः
सरंस्वगृहंप्रविशेत् । ननो ब्राह्मणान्भोजयेत् ॥ इति शिवम् ॥

॥ अथ सहस्र चण्डी परिभाषा ॥

उक्तं च इन्द्रायाम् नरस्य चण्डी विधिप्रणुणु विष्णा महात्मा । रात्र्यनष्टे महापाते
जनमारो महाभयं ॥ गजमारभमारोश्च परचक्र भय तथा । इत्यादि विविध दुःख चयरोमादिर्ज
भय । सहस्र चण्डिका पाठ सुखाद्वापारयत्तथा । जापमास्तु शतशोडश विशदस्तत्र मण्डपम् ।
भोज्या महस्र चिन्त्रेन्द्रा शो शत दक्षिणादिशेत । गुरुरद्विगुण देवशम्यादान तर्पयत् । गणधान्य
च भूदान श्वेताश्व च मनोहरम् । पशुनिष्कमिता मूर्ति कर्तव्या वार्षमानत । अष्टादश
शुचाग्नी श्रवणोद्युध विभूषिता । अगारिनापदातव्य महस्रप्र यत् प्रभो ? शतवानिचताहारः
पय पानेन वर्तयत् । एवं यत्रागिडरा पाठ महस्र तुममाचरत् । तस्यस्या नार्यनिक्षिस्तु
नात्रकार्या विचारणा । अत्र महस्र चण्डी यज्ञस्यापि विधान शतचण्डी वार्षभ ज्ञेयम् ।
विशेषस्त्रेतायान्, जपकर्त्तारो प्राप्सुणा शनम् । मण्डपं विशदस्त्नाभक्तम् । तुम रीणां शन
शेषं शतचण्डी वारारयत् ॥

॥ इति सहस्र चण्डी विधी ॥



॥ अथ सार्द्धं नव चण्डी परिभाषा ॥

उक्तं च वाराही तन्त्रे इन्द्रायाम्—नवसाधे जपेद्यस्तु मुक्त प्राणान्तकाद् भयात् । रात्र्यं
धियच्च सम्पत्तिं सदान्कामानप्राप्नुयात् । प्रयोगोऽय महासुख देवानामपि दुर्लभ । तत्सेह
सप्रवक्ष्यामि नावधानोऽवधारय । मधुरैः शब्दाश च महिषासुर घातनम् ॥ शक्रादिस्तुतिरेवाता
व्योसूक्तं पुनस्तथा । नारायणी स्तुतिर्नैव फलानुकीर्तन तथा । ततो वरप्रदानत्र श्रधंपाठोऽ
यमुच्यते । श्रधंपाठत्रयं प्राक् सर्वकाम फलप्रद । श्रधंपाठेन गहित ननुपाठफलमिति ।
अ श्रधंपाठक्रमश्च मावशि सूर्यतनय द्वारभ्य शक्रादिस्तुतिश्च पञ्चमाध्यायी । देवा उचु
नमो देव्यै, द्वारभ्य क्रपिस्वारितिपर्यन्तमिति नारायणी स्तुतिरेवाऽदशा यावद्वादश त्रयोदशा
वर्षयायी । श्रधमार्गपाठ । ब्राह्मणा स्वप्नप्रवामे एकादशा । तेषुनवब्राह्मणा गपूर्णं सप्तमती
पाठ कर्त्तार एकादशपाठकता एकीयलुवदीय पदगन्त्राशाध्यायी पाठकता, पञ्चमेकादश
ब्राह्मणान्वृणुयात् ॥ ॥ इति सार्द्धं नव चण्डी परिभाषा ॥

अथ सार्धनवचण्टी अनुष्ठानपद्धतिः ॥ तत्र कर्ताशुभेमुहूर्ते
 अथवा कृष्णाष्टमी नवमी चतुर्दशीनामन्यतमेदिवसे यथोक्तल-
 क्षणांकुमारीमानीय, यजमानः सपत्नीकस्नात्वाशुक्लः धौते
 वाससीपरिधायैकां कुमारीं पुरांक्त विधिना सम्पूज्य संभोज्य
 चदक्षिणादिभिः परितोप्यानुष्ठानार्थं कुमारीं प्रार्थयेत् । भोमाते-
 श्वरि ! कुमारी ! महं सार्धनवचण्टीमहोत्सवं कर्तुमाजां देहि ।
 कुमारीवदेत्—प्रसन्नतया कुरुते यथेष्टं भवतु” इत्याजां गृहीत्वा
 पूजास्थानमागत्य—गोमयोपलिप्तायां भूमौ स्वासने—उपविश्य स्वे-
 ष्ठदेवं स्मृत्वा दीपं प्रज्वाल्य आचम्य स्वस्तिवाचनान्ते गणेशादि
 पंचांगपूजनं कृत्वा संकल्पं कुर्यात् ॥ ३० तत्सदये हेत्यादि देशका-
 लौ संकल्पार्थमुकगोत्रो ऽ ह्रममुकशर्मा श्री भवानीशंकरप्रसन्नता
 पूर्वकं जाताजात निम्बिल पातकोपपानक निरसनपूर्वकं कालिकरा
 जतो—व्यवहारपूर्वकं श्री वृद्धिकामः सकुडुम्बसपरिवारस्थात्मनः
 शरीरारोग्यकामश्च वामुककार्यं सिद्धयर्थमेकादश ब्राह्मणद्वारा
 यजुर्वेदीय पंडगैकपाठसहित चण्टी चरित्रस्य श्री महाकाली
 महालक्ष्मी महा सरस्वती देवतस्य सार्धनवकरूप पुरश्चरणमहं
 कारयिष्ये—यतो ब्राह्मणान्वृणुयात्—पाद्यगंधादिभिः संपूज्य
 वरणद्रव्यमुभाभ्यां हस्ताभ्यामङ्गलौनिधाय संकल्पं कुर्यात् । ३०
 अथपूर्वांघारित, अमुकगोत्रो ऽ मुक शर्माहं पूर्वांक्तमिद्धिकामः
 एभिर्वरण द्रव्यै रेकपंडेगसहित साधनवक चण्टीपाठानकर्तुमेका
 दशब्राह्मणानमुकामुक गोत्रानमुकामुक शर्मणोऽहं वृणेततः प्रदक्षिण
 क्रमेण प्रत्येकं ब्राह्मणंतद्रव्येण वृणुयात् । करवामइति ब्राह्मणाद्भूयुः ।
 तत आचार्यांघ्राविधि क्वचिन्मनोहरपीठे कलशसंस्थाप्यतत्र
 भवानीमहितं शङ्करमावाह्य पोडशोपचारेण सम्पूज्य देवीं ध्यात्वा
 नमस्कृत्य पुस्तकं गन्धादिभिः पूजयेत् । तत्रादौ पुस्तकोपरि पंडेग
 पाठाधिष्ठात्रिदेवते भवानीशंकरौ नाममात्रेण पूजयेत् । यथाएनानि
 पाद्यानि श्री भवानीशंकराभ्यां नमः । एवं गन्धादिनैवैद्यान्तं सम्पू-
 ज्यैवं समसनीपुस्तकमपि पूजयेत् । सर्वे ब्राह्मणाः स्वासनेषूपविश्य

प्रथक् प्रथक् पाठसङ्कल्पं कुर्यात् । ३० तत्संदेशकालौ संकीर्त्या मुकुं-
 गोत्रो ऽ ह्यमुकशर्मा मकुगोत्रस्यामकुनाम्नो यजमानस्यामुक
 कामनासिद्धयर्थ- जनाद्यन्ताष्टोत्तरशतनवार्णवजप पूर्वकचण्डी
 चरित्रस्यै कपाठमहं करिष्यामि । एवं नवब्राह्मणैः । दशमे न च,
 अथ पूर्वांचारितामुको ऽ हं० चण्डीचरित्रस्यार्धपाठमहं करिष्यामि
 एकादशेन पडङ्गपाठं करिष्यामि—अर्धचण्डीपाठकः पूर्वांक्तानु-
 सारेणार्धपाठं कुर्यात् । एवं पाठान्ते अष्टोत्तरशतनवार्णवमन्त्रं जप्त्वा
 श्रीदेव्यै समर्प्य पूर्वांक्तविधना वेद्यामग्निस्थापनं विधाय घृतपाय
 सनिलैरेकावृत्तिसप्तशतीपाठमन्त्रैर्द्रोमं कृत्वानवार्णवमन्त्रेण पूर्णा
 हुतिं दत्त्वा ॥ तेनैव तद्दशांशतर्पणमार्जनादिकं विधाय कुमारीपूजनं
 कृत्वा चार्यादिब्राह्मणभ्यो दक्षिणां दद्यात् । आचार्याय द्विगुणं,
 गौदानं च कृत्वा कलशजलेन सपत्नि पुत्रपरिवारं यजमानं पूर्वांक्त
 मन्त्रैरभिषिच्य शीर्षादं दत्त्वा श्रीदेवीं पूर्वांक्तप्रकारेण विसृज्य
 ब्रह्माण्डभोजयित्वा स्वयमपि भुञ्जीत ३० शिवमिति, इति सार्द्धं
 नवचण्डीप्रयोगविधिः ।

अथ चण्डीदीपदानप्रयोगपद्धतिः—अथ चसाधकः कृतनित्य
 क्रियोयागमण्डपे गोमयोपलिप्ते समेशुद्धभूमौ स्वासनमास्तीर्य
 तत्रोपविश्य सुपवित्रमृदाहस्तमात्रांचतुरस्रां चतुरंगुलोज्जतां वेदीं
 निर्माय तद्द्वितीयां वेदीमपि निर्मापयेत् । प्रथमवेदिकायां कलश
 स्थापनविधिना कलशं स्थापयेदादौ गणेशादि पञ्चाङ्गपूजनं कृत्वा
 वेद्युपरिकलशे पूर्वांक्तविधिना देवीमावाहयेत् । द्वितीयवेद्यां
 सिंदूररजसा त्रिकोणपट्कोणष्टदलचतुरस्रं यन्त्रं निर्माय यथा
 कामनया सङ्कल्पं कृत्वा स्वर्णरजतताम्राद्यन्यतमंपात्रं गोघृतादि
 पूरितं रक्तवर्तिकायुतं कृत्वा यन्त्रपूजामारभेत् । भूपुराद्बहिः पूर्वादि
 वामावर्तेन । ३० ह्रीं ग्लां ग्लीं ग्लूं गणपतये नमः उत्तरे—३० ह्रीं
 ज्ञां ज्ञीं ज्ञूं क्षेत्रपालाय नमः । पश्चिमे—३० ह्रीं तीक्ष्णसिंहाय
 महिषाय नमः । दक्षिणे—ह्रीं वनस्पतिपुत्राय सिंहाय नमः इति
 पूर्वादिदक्षिणान्तं वामावर्त्तपूजनम् ॥ ३० ह्रीं समस्तगुरुपादुका-

भ्यो नमः । स्वाग्रेपूजयेत्—त्रिकोणाग्रकोणे ॐ ह्रीं-विष्णु
 लक्ष्मीभ्यां नमः । दक्षकोणे ॐ ह्रीं रुद्रगौरीभ्यां नमः । वाम-
 कोणे ॐ ब्रह्मवागीश्वरीभ्यां नमः । इति सम्पूज्य पद्कोणे ५
 प्रकोणमारभ्य दक्षावर्तेन ॐ ह्रीं नन्दायै नमः ! ॐ ह्रीं रक्तदंतिका
 यै नमः । ॐ ह्रीं शाकंभर्यै नमः । ॐ ह्रीं भीमायै नमः । ॐ ह्रीं
 भ्रामर्यै नमः ॐ ह्रीं शिवदृत्यै नमः । इति पद्कोणदेवीः सम्पूज्य
 अष्टदले ५ ग्रदलमारभ्य दक्षावर्तेन ॐ ह्रीं ब्राह्म्यै नमः । ॐ ह्रीं
 माहेश्वर्यै नमः । ॐ ह्रीं कौमार्यै नमः । ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमः । ॐ
 ह्रीं वाराह्यै नमः । ॐ ह्रीं नारसिंहायै नमः । ॐ ह्रीं ऐन्द्र्यै नमः । ॐ
 ह्रीं चामुण्डायै नमः । इति पत्रमूले—अथ पत्राग्रे पूर्वादि प्राद-
 क्षिण्येन पूजयेत् । ॐ ह्रीं असितांग भैरवाय नमः । ॐ ह्रीं रुद्र
 भैरवाय नमः । ॐ ह्रीं चण्डभैरवाय नमः । ॐ ह्रीं क्रोधभैरवाय
 नमः । ॐ ह्रीं उन्मत्त भैरवाय नमः । ॐ ह्रीं कपालीभैरवाय नमः ।
 ॐ ह्रीं भीषणभैरवाय नमः । ॐ ह्रीं संहारभैरवाय नमः । इति
 सम्पूज्य ततो भूपुरान्तः पूर्वादिदिक्षु—ॐ ह्रीं इन्द्राय नमः । ॐ
 ह्रीं अग्नये नमः । ॐ ह्रीं यमाय नमः ॐ ह्रीं निर्ऋतये नमः । ॐ
 ह्रीं वरुणाय नमः । ॐ ह्रीं वायवे नमः । ॐ ह्रीं कुबेराय नमः ।
 ॐ ह्रीं ईशानाय नमः । पूर्वैशानमध्ये ह्रीं ब्रह्मणे नमः । निर्ऋति
 पश्चिममध्ये ह्रीं अनन्ताय नमः इति दिक्षूपालान्यथास्थानं संपूज्य,
 भूपुराद्बहिरिन्द्रादि समीपे ॐ ह्रीं चक्राय नमः । ॐ ह्रीं शक्तये-
 नमः । ॐ ह्रीं खड्गाय नमः । ॐ ह्रीं पाशाय नमः । ॐ ह्रीं ध्वजा
 य नमः । ॐ ह्रीं गदायै नमः । ॐ ह्रीं त्रिशूलाय नमः । ॐ ह्रीं
 पद्माय नमः । ॐ ह्रीं चक्राय नमः । इति सम्पूज्य रक्तचन्दन
 मिश्रिताक्षतान् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विञ्चै, अनेन मन्त्रेण
 दीपंप्रज्वाल्य यंत्रमध्ये स्थापयित्वा तस्मिन्दीपे यथोक्तरूपां महाकालीं
 महालक्ष्मीं महासरस्वतीं नाम्मध्ये यथेष्टां देवीमावाह्यपूर्वां क्तदेवीपूजा
 विधिना षोडशोपचारेण सम्पूज्य वक्ष्यमाणमन्त्रैः पुष्पांजलिं दद्या
 त । ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं ० १ सुरासुरैः पूर्वमभीष्टं ० २

यासाम्प्रतं चोद्धत० ३ माहेश्वरिमहामाये० ४ याचस्मृता तत्क्षण
मेव० ५ सर्वायाथाप्रसमनं० ६ सृष्टिस्थिति विनाशानां० ७ शर
णागत दीनार्तं० ८ सर्वस्वरूपे सर्वेशो० ९ एभिर्नवमन्त्रैः पुष्पां
जलिं दत्त्वा ऽथ तुनवार्णवमन्त्रं जप्त्वा तद्दशांशं जुहुयात् । प्रयो
गानन्तरं श्लोकैः । कटुर्तलयुतेनाथ रक्तचन्दन राजिकाः । सहस्रा
हुतिमात्रेण राजानं वशमानयेत् । मधुचाशोक पुष्पं च रात्रौ
हुत्वा च पूर्ववत् ॥ चक्रवर्ती भवेद्दशरथचण्डी मन्त्र प्रभावतः ।
अन्ते शतं ब्राह्मणारं च सुवासिन्यश्च भोजयेत् । प्रयोगो ऽयं
महादेवि देवानामपि दुर्लभः । गुह्यं च मम सर्वस्वं कलाविष्टार्थं
सिद्धिदम् । एवं विधिना प्रयोगानुसारेण हुत्वा देव्याः प्रसादं
संगृह्य ब्राह्मण सुवासिनि वटुक कुमारीदिपूजां पूर्वाक्त विधिना
कुर्यात् । ॐ शिवमस्तु ।

इति प्रयोगान्तरे चण्डी दीपदान पद्धतिः ॥

- - ० - -

॥ अथ कालिका पूजा प्रयोग विधिः ॥

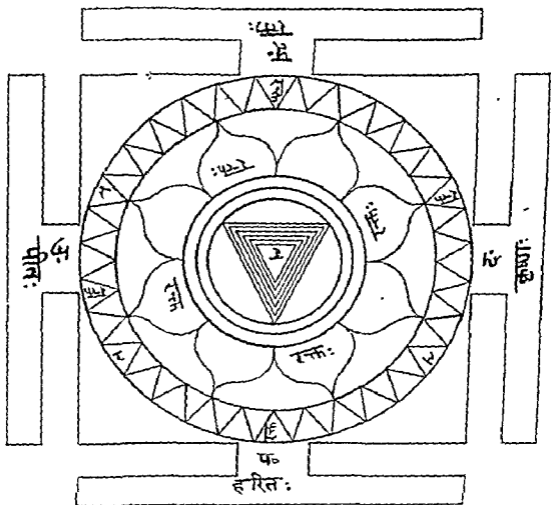
अथ दक्षिणकाली यन्त्रोच्चारणे प्रयोगविधिं वक्ष्ये—तत्रादौ यन्त्रोच्चारः—

शादी त्रिकोणमालिख्य त्रिकोणतद्वहिल्लिखेत् । ततोर्नैविलिखेन्मन्त्री त्रिकोणत्रयसुक्तमम् ।
तत्रक्षिणीणमालिख्य लिखेदष्टदलंतत । वृत्तविलिख्यविधिवहिल्लिखेद्भूपुरमेकम् । वृत्तत्रय
संगुक्तं प्रकुर्यात्त्रिकोणकम् । ततः कुर्यात्प्रदलेन दशाष्टकमलंशुभम् । सिन्दूरेणसुसंसज्य तद्व-
हिर्मण्डलिलिखेत् । तत त्र्यंगुलविस्तीर्णं पुनर्मण्डलमालिखेत् । तत्रमानेनवैकुर्याच्चतुःपञ्चत्रिकोण
कान् । वक्ष्यमाणेनविधिना योगिनीस्तत्रस्थापयेत् । तद्वाह्येयज्ञतोमन्त्री चतुर्द्वाराणिकल्पयेत् ।
यन्त्रवाङ्मेषुकोणेषु त्रिशूलानिप्रक्षपयेत् । दशाष्टद्विस्तुशोभार्थं स्वेच्छारंगंप्रकल्पयेत् । एवंचत-
त्रिलिख्यादींश्चत्तः । मध्येयान्याकालिकांच सम्पूज्यस्थापयेत्सुधीः । तत्रध्यावरणा
येवीवामावर्त्तनस्थापयेत् । कालीवाह्यत्रिकोणस्य सम्मुखेस्थापयेत्ततः । तत्रैवोर्ध्ववामकोणे स्थाप
येत्सुकपालनीम् । तत्रदेव्यादक्षकोणकुक्कादेवीचस्थापयेत् । तस्मादाभ्यन्तरेकोणं कुरुकुक्कांच
गम्मुखे । तत्रदेव्यावामकोणस्थापयेत्सुविरोधिनीम् । तत्रदक्षेविप्रचित्तां द्वितीयेतुत्रिकोणके ।
तस्मादाभ्यन्तरे ऽ उर्ध्वाम्मुखेचत्रिकोणके । उग्रप्रभातामभागे त्रिकोणेतत्रस्थापयेत् । तत्रदेव्या

दक्षभागे दीर्घतातिष्ठपुत्रान्निष्ठु ॥ गोलान्तमन्सुमेकाण तस्मादाभ्य तरन्निवे । घर्नावामवलकां
 दनेतातुर्धकत्रिके । ताव्यात्पथममकाणे मात्राणि तुस्तम्पुत्रा चामदशैकमत्तैः सुत्रादि चिन्स्थापयत्
 मन्वेत्याभ्य तरन्नागे कालिकास्थापितापुरा । तत्रैव्यादक्षभागे महाकालस्थापयत् । तत्र
 देव्यास्त्रेभ्यो दद्यात्त्रयमिमांशुनाम् । तत्र पूर्वादिभाग्न दद्यात्तर्कमण्डलम् । अष्टावैष्वष्ठ
 शक्तीनास्थापनकथयाम्यहम् । पूजस्वादिजिज्ञासा मन्त्रीनारायणापुरा । मादश्वरीदक्षिणस्था
 श्री चामुण्डाचर्चनेऽर्चते । पश्चिमैतत्तमीरी तत्र वेत्तपरानिताम् । उत्तरस्यातुत्ताराही मीगन
 नारसिंहिकाम् । कमलात्रेतान्तो भैरवानष्टाङ्गुभान् । मन्मल न्यनरैश्च पूवादिकमता
 न्ययेत् । शमितागोत्रगण्डो श्रीभोमती तत्तरी । त्रयोभीपण्डित महारश्वाष्टभैरवा ॥
 तत्रवेवाम माण्ड्य भैरवी पूजा क्रमात् । तत्रामात्रिण गवन्दे स्थापयत् प्रमण्ड
 श्री भैरवीच पश्चिमश्रीशान्तभैरवीम् । उत्तरमिहाम्नीय तत्रैव धूम्रभैरवीम् । पश्चि
 भीमरपाचं ह्युत्तमत्त चैर्चयेत् । दक्षिणच पर्यायैर्च मन्माहात् भैरवीम् । तत् स्वन्मुत्ता
 मन्त्री वामान्तन वाग्निनी ॥ पूवाक्त मन्त्रव्यस्थापयद्भक्तिभाषत । तत्रि मन्तातुत्तारेण कथिता
 पशुवातन । नन्त्या कालिकाच नित्यपूजा विधायया ॥ यागिनी नामानि हेमाद्रौ—
 दिव्यश्वरी महाम्पा सिद्धेश्वरी तवय च । गणेश्वर च त्रताक्षी लाम्बिनी च कालिका ॥
 ॐ कारी रुद्रवेतानी कालर त्री निशाचरो ह्यकारीभूतटावयुष्वचशीरुद्राक्षिणी ॥ शुभादी
 न्भोच भराडीवीरभाद्रका । रक्षणी घोररक्षाक्षी विरूपाच भयकरी ॥ भासुरी रुद्रताली
 धरणी तपुरात्तका । भराध्वमिनीचैव त्रिविन्दुमुग्नी तया । त्रेतवाही कटकी च त्राम्नी
 यमदूतनी । तराल चैव चैवमत्प्राची द्वाधलम्बाष्टिनातथा । कालाग्नि गृहिणी चर्चो मालिनी
 मन्त्रवाग्निनी । वृत्राक्षी फलताच काली सुवपेश्वरी स्फाराक्षी कामुकीचैव लौकिकी कार
 दक्षिका भक्तग्यवासुमतीचैव प्रेरणी चैव व्याघ्रिका । कर्कशी त्रेतमन्त्रोच वीर कामारिनातथा
 चत्तचैव वराही च तवच सुध धारिणी कामाक्षीचैव उद्गाणी त्रानवरीच योनिनी । महातन्मी
 रचतु षष्ठीयोगिनी काथत त्रैव । नाममन्त्रचतु य तैः प्रणवनममन्त्रिणैः । पूजनाया प्रयत्न
 पाद्यधूपार्दिभिस्तथा । चन्त्या लोकापला निद्रादीस्थापयत्तत् । तनीकनादि शस्त्राणि
 स्थापयद्द्वार रक्षणा । पूवादन विनमन यत्र देवाश्चस्थापयेत् । तत्रमथैभ्य अकृष्ण पूजा
 पद्धतिरुत्तमा । दीक्षितानां ग्यानाय देवा ल्पन वीमता । कान्तिमन्त्रच सवन्दे तनाङ्गीश
 विधानत ॥ कालोवीचत्रयप्रोक्तया स जावीजद्रयत्तत । ह्यकारीड्वी तत् पश्चादक्षिणैः
 त्रिकाता । कालीवीच त्रयतस्मान् त्रयोचद्रयपठन् । द्वीग्याहात त्रकारा कालामत्र
 दाहन् ॥ ११ पत्रा । स्पष्टम् ॥

॥ इति कालिकायज्ञोद्धारविधिः ॥

॥ दक्षिण कालिका यंत्रोद्धारः ॥



॥ अथ कालिका यंत्रपूजापद्धतिः ॥

अथ चोपासकः प्रातर्नित्यक्रियां कृत्वा ऽ नुष्टानविधौ श्री देव्यामंदिरे ऽ थवा यत्रकुत्र चिद्यंत्रं पर्वोक्त विधिना शुद्धायां भूमौ गौमयमृदोपलिप्य ॥ तत्र यंत्रोद्धारानुसारेणाद्यायंत्रं निर्माय- पूजामारभेत्—ततोयंत्रसमीपं कीयद्दूर मागत्य गुरुं प्रणम्यआचान्तः कुशहस्तोमौनीभूत्वा पापप्रशमनार्थं देवींप्रार्थयेत् । ॐ देवित्वत्प्रकृतंचित्तं पापाकान्तमभून्मम । तत्रिस्सरतु चित्तान्मे पापं हूँफद्चतेनमः । सूर्यसोमोयमः कालोमहाभूतानि

पंचत्र । एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नवसाक्षिणः । इति संप्राथ्यं
 यंत्रसन्निधौ गत्वा, ॐ श्रीं कालिकायै नमः, इति मंत्रेण चम्य, ॐ
 मणिधारिणि वज्रिणि शिखरिणि सर्वलोक वशं करि हूं फट् स्वाहा
 इति शिखां वध्या । ॐ वज्रेदके हूं फट् स्वाहा-इति जलंगृहीत्वा-
 ॐ हूं स्वाहा इति करे आदाय- ॐ ह्रीं विशुद्धसर्वपापानि शमय,
 अक्षोप विकल्पमपनय हूं फट् स्वाहा-इति पादौ प्रक्षाल्य ॥ ॐ
 कालिकायै नमः । ॐ कपालिन्यै नमः । इति दशकरांगुलिभिरोष्ठौ
 द्विरुन्मूष्य । ॐ कुवलायै नमः । इति हस्तौ प्रक्षाल्य । ॐ श्रीं
 कालिकायै नमः इति मंत्रेण, संकुचिनांगुलिभिर्मुग्धं-नर्जन्यंगुष्ठा-
 भ्यां नासिकां, अनामिकागुष्ठाभ्यां कण्ठौ, अंगुष्ठाकनिष्ठाभ्यां नाभिम्
 पाणितलेन हृदयम् । सर्वांगुलिभिर्मस्तकम् । भुजौ च स्पृशेत्,
 ततो ललाटादिद्वादशांगेषु रक्तचन्दनेन त्रिपुंड्राकृतिद्वादश
 निलकानि कुर्यात् ततः ॐ पवित्र वज्र भूमे हूं फट्
 स्वाहा इति भूमिर्मभिमंथ्य, ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलास-
 नाय नमः, इति जलेनाभ्युक्ष्य त्रिकोणां विलिख्य, ॐ आसुरेखे वज्र-
 रेखे, इति मंडलं कृत्वा । तन्मध्ये त्रिकोणे ह्रस्रां, प्रेनवीजं विलिख्य,
 ह्रीं आधारशक्ति कमलासनाय नमः, इत्यासनं संपूज्य- ॐ
 अनन्ताय नमः, ॐ विमलासनाय नमः, ॐ पद्मासनाय नमः,
 इति मंत्रैः कुशानास्नीयं, तदुपरि च्याघ्राजिनं कम्बलासनं वा प्रक-
 ल्पय तत्रासने- ॐ श्रीं कालिकायै नमः, इत्युक्त्वा वामोरुपरि
 दक्षिणपादं कृत्वा पूर्याभिमुख उत्तराभि मुखो वा भूत्वा, ॐ आस-
 नमंत्रस्य मेरुपृष्ठं ऋषिः सुतलं छंदः क्रमो देवता आसनपरिग्रहे
 विनियोगः- ॐ पृथ्वीत्वया धृता० । ततो देव्या वामे त्रिकोणां
 विलिख्य मध्यै रमिति वन्हिवीजं विलिख्य तत्र दीपपात्रं संस्थाप्य
 तैलेनापूर्य रक्तचतुर्वर्तिकायुतं कृत्वा रमिति प्रज्वाल्य अत्र गृह्ण
 मुद्रधावगुंठय, सकलीकरण मुद्रया सकलीकृत्य, ॐ हूं दीपनाथ
 भैरवाय नमः इति पाद्यादिभिः संपूज्य, ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय०
 इति संप्रार्थ्य । ततोर्घ्यं स्थापयेत्-ततः स्ववामे त्रिकोणं वृत्तभू-

पुरात्मकं मण्डलं विलिख्य—ॐ आं आधारशक्तिभ्योनमः इति
 पुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य, ॐ ह्रः पूजार्घस्थापयामि इतितत्र त्रिपादिकां
 निधाय, ॐ फट् इतिप्रक्षालितार्घं त्रिपादिकोपरिनिधाय ॐ क्रीं
 नमः इति जलेनापूर्य,, ॐ गंगेचयमुनेचैव० । क्रीं कालिकायै नमः
 इति गंधाक्षतपुष्पकुशैरभ्यर्च्य, ततोऽर्घजलेन—ॐ क्रीं दक्षिणका-
 ल्यै नमः, इति पूजा सामग्रीमभिषिञ्च्य, ॐ ह्रँफट्—इति चतु-
 दिक्षुक्रोधदृष्ट्यानिरिध्य गौरसर्पपानादाय ॐ अपसर्पन्तुतेभूता
 येभूताभूमि संस्थिताः । येचात्र विप्रकर्त्तारस्तेनश्यन्तु शिवाज्ञया,
 इत्युक्त्वासर्षपांश्चतुर्दिक्षुक्षिपेत् । ततोवामे ॐ सर्वेभ्योगुरुभ्यो
 नमः—इतिप्रणमेत्, दक्षिणे ॐ गणेशाय नमः—पुरतः ॐ
 दक्षिणकालिकायै नमः— प्रणमेत् । ततो रक्तचंदन पुष्पाक्षतानादाय
 ॐ ह्रँ इति मंत्रेण कराभ्यामर्दयित्वा ॐ क्लीं इति दक्षिणहस्तेन
 समृज्य—ॐ तत्सत्—इति वामहस्तेनाघाय । ॐ ह्रीं—इत्यैशान्यां
 नाराच मुद्रयापरित्यक्त्वा पठेत्—ॐ तेसर्वेविलयंयान्तुयेमां हिंस-
 न्ति हिंसकाः । मृत्युरोगभयक्रोधाः पतन्तुरिपुमस्तके । अधात्मनि
 षडंगन्यासं कुर्यात्—ॐ क्रां हृदयाय नमः । ॐ क्रीं शिरसेस्वाहा
 ॐ क्लूं शिखायैवपट् । ॐ क्रीं कवचाय हुम् । ॐ क्रीं नेत्रत्रयाय
 वौपट् । क्रः स्त्रायफट् । इति तालत्रयं दत्वा ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां
 नमः । ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ क्लूं मध्यमाभ्यां नमः ।
 ॐ क्रीं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ क्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ क्रः
 करतलकरपृष्ठाभ्यां वौपट् । तत यंत्रोपरि हस्तंक्षिपेत्—ॐ आः
 सुरेखेवञ्जरेखे ह्रँफट् स्वाहा । इतिस्पृष्ट्वा ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं
 ह्रँ ह्रँ दक्षिणकालिकायै नमः इति पंचगव्येन संप्रोक्ष्य, ॐ अस्य
 श्रीदक्षिणकालिका यंत्र प्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्माविष्णु रुद्राकृपयः
 ऋग्यजुः सामानिल्लुन्दांसि अग्निवायुसूर्यस्तत्वानि प्राणप्रख्या
 पराशक्तिश्चैतन्य रूपिणी देवता आं बीजं ह्रीं शक्तिः क्रीं कीलकं
 चातुर्वर्गफलाप्तये श्रीस्वेष्टदेवता दक्षिणकालिका यंत्रप्राण प्रतिष्ठापने

विनियोगः तत्र यंत्रोपरि हस्तनिधायन्यासं कुर्यात्—ॐ श्रीं ब्रह्म
विष्णु ऋषिभ्योनमः शिरसि ॐ श्रीं ऋग्यजुः सामर्हृन्दो भ्योनमः
रुद्रमुखे । ॐ श्रीं चैतन्यरूपिणी प्राणारूपापराशक्ति देवतायै नमः
हृदये । ॐ ऐं वीजाय नमः गुह्ये । ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयो ।
ॐ लकीं कीलकाय नमः सर्वाङ्गो । एवं न्यासं यंत्रे विधाय वक्ष्यमाण
मूलमंत्रमष्टोत्तर शतं जपेत्—ॐ आं ह्रीं क्रीं यं रं लं वं शं पं सं
हो ॐ लं सं हं सं ह्रीं ॐ हंसः श्रीमदक्षिणकालिकायाः पद्
त्रिकोणाष्टदल भूपुरात्मक यंत्रस्य सजीव वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रघ्राण
प्राणः सर्वेन्द्रियाणि चेहागत्य मुखंचिरं तिष्ठंतु स्वाहा । ॐ यंत्र-
राजाय विद्महे महायंत्राय धीमहि । तन्नो यंत्रः प्रचोदयात् ।
इति दशवारं जप्त्वा । रक्त चन्दनालोडिताक्षत पुष्पैराधार
शक्त्यादि पूजनं कुर्यात्—ॐ ह्रीं आधारशक्तिभ्योनमः ॥ ततः
पीठशक्तीः पूजयेत्—ॐ जयायै नमः । ॐ विजयायै नमः । ॐ
अजितायै नमः । ॐ अपराजितायै नमः । ॐ नित्यायै नमः । ॐ
विलासिन्यै नमः । ॐ दोग्ध्यै नमः । ॐ अघोरायै नमः । ॐ
मंगलायै नमः । ॐ ह्रीं कालिकायोग पीठात्मने नमः । ॐ ह्रीं
सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः । एवं यंत्रं प्रतिष्ठाप्य,
आचार्यं वृणुयात्—वरणद्रव्यमाचार्यं च संपूज्य संकल्पं कुर्यात्—
ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्या मुकराशिरमुकगोत्र प्रवरान्वि-
तोऽमुकोऽहं चातुर्वर्गं फलाप्तये श्रीःस्वेष्टदेव्या दक्षिण कालिकाया
यंत्र पूजानार्थमाचार्यत्वेन त्वां वृणो वरणद्रव्यं दत्त्वा प्रार्थयेत् ॥
ॐ आचार्यस्तु यथास्वर्गे ० । तत आचार्यो यजमान द्वारां पूजनं
कारयेद्वा स्वयं कुर्यात् । ततहस्ते रक्ताक्षत पुष्पाद्यादाय मध्य
त्रिकोणे कालीं ध्यायेत्—ॐ श्रीं कराल वदनां घोरां मुक्तकेशीं
चतुर्भुजां कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुंडमालाविभूषिताम् । शव-
रूप महादेव हृदयोपरिसंस्थिताम् । शिवाभिर्घोर रूपाभि
श्च दिक्षु समन्विताम् । आवाहनम्—आत्मसंस्थामजां शुद्धां त्यामह
म्परमेश्वरीम् । आरण्यामिव हृदयांशं यंत्रं यावाहयाम्यहम् । ॐ

कीं कीं कीं हीं हीं ह्रीं ह्रीं—दक्षिणकालिकायै नमः । भगवति दक्षिण
 कालिके सावरण शक्तिसहिते इहागच्छेहतिष्ठ तिष्ठ । ३० देवेशि
 भक्ति सुलभे परिवारसमन्विते । यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं
 सुस्थिराभव ॥ इति संस्थाप्य,, पुष्पासनम्—ॐ अस्मिन्वरासने
 देविसुखासीना ऽ चरात्मिका । प्रतिष्ठिता भवेः सात्त्वं प्रसीद
 परमेश्वरि ॥ ॐ एहिभगवति दक्षिण कालिके इहप्रतिष्ठिताभव,
 इहसन्निधेहिच इहसन्निरंधस्व ॥ ॐ कीं भगवति दक्षिणकालि-
 के, इह सम्मुखीभव । ॐ ह्रीं भगवनि० इह अवगुंठिताभव ३०
 दशपीयूष वपिण्या पूरयेयज्ञविष्टरम् । मूर्त्तीवा यज्ञसंपूर्त्तांस्थिरा
 भवमहेश्वरि ॥ ॐ कीं कीं कीं हीं हीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिकायै
 नमः,, इत्यंजलिमुद्रया स्थिरी करणं कृत्वा देवतागिवद्द्यमाण
 पङ्गन्यासेन सकलीकरणं कुर्यात्—तद्यथा—क्रौं हृदयाय नमः,
 कीं शिरसेस्वाहा, क्लृं शिखायैवपद्, क्रैं कवचायहुम्, क्रौं नेत्रत्र-
 यायवौपद्, क्रः अस्त्रायफद् ॥ ततोयंत्रे-वद्द्यमाण लेलिहान
 मुद्रया प्राणस्थापनंकुर्यात्—तद्यथा—(तर्जनी मध्यमानां समां
 कुर्यादधोमुखीम् । अनामायां निपेद्भ्रुवांऋतुं कृत्वाकनिष्ठिकाम् ।
 लेलिहानात्ममुद्रेयं जीवन्त्यासे प्रकीर्तिता) ॐ अस्यश्री दक्षिण
 कालिका प्राणस्थापन मंत्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः ऋग्यजुः
 सामानि छन्दांसिअग्निर्वायुः सूर्यस्तत्वानि प्राण प्रख्यापराशक्तिः
 चैतन्यरूपिणीदेवता आं वीजं हीं शक्तिः क्रौं कीलकं चातुर्वर्गं
 फलाप्तये श्री स्वेष्टदेवता दक्षिण कालिकाः प्राणस्थापने विनि-
 योगः ॥ ततो यंत्रोपरि-लेलिहानां मुद्रांकृत्वा पठेत्—ॐ आं
 हीं क्रौं यै रँ लँ वँ शँ पँ सँ हौं ॐ जँसँहँसः हीं ॐ हँसः श्री
 महदक्षिणकालिकायाः प्राणाः इह प्राणाः ॥ ॐ आं हीं क्रौं यै रँ
 लँ वँ शँ पँ सँ हौं ॐ जँसँहँसः हीं ॐ हँसः श्री महदक्षिण
 कालिकाया जीवइहस्थितः,, ३० आं हीं क्रौं गँ रँ लँ वँ शँ पँ सँ
 हौं ३० जँसँहँसः हीं ॐ हँसः, श्रीमहदक्षिणकालिकायाः, वाङ्-

मनश्चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणाः सर्वेन्द्रियाणिइहागत्य सुग्वंचिरं तिष्ठ
 न्तुस्वाहा । ततोवारत्रयं मूलमंत्रेणाघोदकेन प्रोक्षणं कुर्यात्—
 ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हीं हीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिकायै नमः, इति यंत्रं
 संप्रोक्ष्य,,—ॐ ऐं—इति मंत्रेण महायोनिमुद्रां दर्शयित्वा-खड्ग
 मुद्रां दर्शयेत्—ततः पुष्पांजलिंदद्यात्—ऐं पादयोः, ऐं जानुनि,
 ऐं नाभौ, ऐं हृदये, ऐं शिरशि,, ततः पाद्यम्—ॐ यद्भक्ति लेश
 संपर्कात्परमानन्द संभवः । तस्मै ते चरणवजाय पाद्यं शुद्धाय
 कल्पये ॥ (३० क्रीं ३ हीं २ ह्रीं २ दक्षिणकालिकायै नमः इदं पाद्यं
 निवेदयामि ॥ इति मूल मंत्रान्ते सर्वत्रसपर्या निवेदनं कुर्यात्)
 आचमनम्—ॐ वेदानामपि वेदाय देवानां देवतात्मने आचमं
 कल्पयामीशे शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥मू०॥ मधुपर्कम्—सर्वकालुष्य
 हीनायै परिपूर्णसुखात्मने । मधुपर्कं मिदं देवि कल्पयामि प्रसीद मे
 ॥मू०॥ पुनराचमनीयम्—३० उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापियस्याः स्म-
 रणमात्रतः । शुद्धिमाप्नोति तस्यै ते पुनराचमनीयकम् ॥ अर्घ्यम्—
 ॐ तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्द लक्षणम् । तापत्रयं विनिर्मुक्तं
 तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् । ततः सतैल हरिद्राद्युद्धर्त्तनम्—३० गृहाण
 मातः स्नेहेन गात्रोद्धर्त्तन हेतुकम् । हरिद्रामिश्रितं तैलं ददामि
 स्नेहमुत्तमम् । स्नानीयम्—ॐ परमानन्द बोधाब्धि निमग्न निज
 मूर्त्तये । सांगोपांगमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश्वरि । वस्त्रम्—
 ॐ मयाचित्र पटच्छन्नं निजगुह्योरु तेजसे । नियारणाय विज्ञा
 न वासस्ते कल्पयाम्यहम् । भूषणानि—ॐ स्वभाव सुन्दरांगायै
 नाना शक्त्याश्रितेशुभे । भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरा-
 चित्ते ॥ चन्दनम्—३० नानागंध समायुक्तं केशरेण सुरंजितम् ।
 गृहाण चन्दनं मातः सर्वशक्तिसमन्विते । सिन्दूरं-सिन्दूरं परमं
 दिव्यं भालशोभा करंपरम् । परमानन्द सौभाग्ये गृहाण त्वंच
 कालिके ॥ अक्षतम्—ॐ अक्षतान्धवलान्देवि सर्वसौभाग्यदा
 यिनि । चन्दनोपरिशोभाय गृहाण परमेश्वरि । पुष्पं—ॐ देवोपवन
 संभूतं नानावर्णमनोहरम् । अमंद सौरभं पुष्पं गृह्यतां जगदंबिके

धूपम्--ॐ वनस्पति रसोत्पन्नं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । आधेय
सर्व देवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ दीपम्--सुप्रकाशो महाज्योतिः
सर्वतस्तिमिरा पहः । सवाहाभ्यन्तर ज्योतिर्दीपो ऽ यं प्रतिगृह्य-
ताम् ॥ ततो नाना व्यंजनयुतं नैवेद्यं सत्पात्रे निधाय, भूमौर्गंधेन
त्रिकोण चतुरस्रमण्डलं कृत्वा तदुपरि तन्नैवेद्यपूरितंपात्रं नि-
धाय,, ॐ कद्,, इति मंत्रेण द्वादशवारं जप्त्वाभिरक्ष्य,, ॐ
यै,, इतिवायुर्वाजेन संशोष्य, वामकरतलेदक्षिणहस्तपृष्ठं कृत्वा,,
ॐ रँ, इति वह्निर्वाजेन द्वादशवार जप्तेन सन्दह्य, दक्षिणह-
स्ताग्रेण संस्पृश्य,, ॐ वँ,, इति सुधावीजेन धेनुमुद्रयाऽऽमृती-
कृत्य, ॐ श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं दक्षिणकालिकायै नमः ॥
इति मंत्रेणकराभ्यां संस्पृश्याष्ट वारमभिमन्त्र्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य
गन्धपुष्पैः समभ्यर्च्यतत्त्वारुष्य मुद्रया देव्यै नैवेद्यं निवेदयेत् ।
ततः सजलशंखहस्तेनिधाय तज्जलेन मूलमन्त्रेणाभिषिच्य, ॐ
सत्पात्रसिद्धं सहविधिंविधानेकभक्षणम् । निवेदयामिदेवेशि
कृपयात्वंगृहाणतत् । ततो त्रासमुद्रांप्रदर्श्य शंखोदकेननिवेदयेत् ।
ॐ अखण्डानन्दसम्पूर्णं गृहाणजलमुत्तमम् । समस्तदेवदेवेशि
सर्वावाप्तिकरंपरम् ॥ ततः पंचप्राणादिमुद्राभिः--ॐ प्राणाय
स्वाहा, ॐ पानायस्वाहा, ॐ समानायस्वाहा, ॐ उदानाय
स्वाहा, ॐ व्यानायस्वाहा, जलनिधाय--ॐ श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रूं ह्रूं दक्षिणकालिकायै नमः, ईदंनैवेद्यं निवेदयामिनमः, इदानीं
मद्यपैः सुरादेया, नतुब्राह्मणैः, मन्त्रः--ॐ द्राक्षादिपरमं दिव्य
मासवंतृप्तिकारकम् ॥ गृहाणपरयाप्रीत्या कालिकेयुद्धदुर्मदे ॥
जलम्--नैवेद्यान्तेजलमातः करास्यपादशोधनम् ॥ प्राणतृप्तिकरं
त्रैव गृहाणजगदम्बिके ॥ ततो नैवेद्यवत्तामूलमभिमन्त्र्यवामकर
तले उक्तानदक्षिणहस्ते, पूगीफलमैलालवङ्गखादिरयुतं नागवल्ली
दलंचनिधाय,--ॐ एलालवङ्गकूर्परनागवल्लीदलैर्युतम् । पूगभागे
रितं देवि ताम्मूलंगृह्यतां नमः, पूर्वधन्मूलमन्त्रेण निवेदयेत् ॥ उपा-
यनम्--उपायनीभूतमिन्द्रं देविददाम्यहम् । गृहाणकालिके

मातः सर्वारिष्टनिवारय, ततो मुखप्रदेशे तत्त्वमुद्रांप्रदर्श्य हस्ते पुष्पं
निधाय—३० सविन्मये परेशानि परामृते चरुप्रिये, अनुज्ञां कालि
के देहि परिवारार्चनायमे । तत आवरणपूजामारभेत्—पुष्पं धृत्वा
ध्यायेत्— ३० सर्वाः श्यामा असिकरा मुखमाला विभूषिताः ।
तर्जनीं वामहस्तेन धारयन्त्यश्च सम्मिताः ॥ ततो बाह्यषट्त्रिकोण
स्थाधःकोणे—ॐ क्रीं कालीं स्थापयामिनमः, ततस्तत्रिके देव्या वाम
कोणे—ॐ क्रं कपालिन्यैनमः स्था० । तत्रदक्षिणभागे ॐ कूं
कुल्लायैनमः स्था० । एवं सर्वत्र वामावर्त्तेन स्थापयेत्—ततो बाह्या-
द्वितीयाभ्यंतरत्रिकोणस्थाधःप्रदेशे—ॐ कूं कुरुकुल्लायैनमः स्था०
तत्रदेव्या वामे—ॐ विं विरोधिन्यैनमः स्था० । तत्रदक्षे—ॐ
विं विप्रचित्तायैनमः स्था० । ततो बाह्यातृतीयत्रिकोणाधःप्रदेशे—
ॐ उं उग्रायैनमः स्थापयामि । तत्रदेव्या वामे—ॐ उं उग्रप्रभा-
यैनमः स्था० । तत्रदक्षे—ॐ दीं दीप्तायैनमः स्था० । ततो
बाह्याचतुर्थत्रिकोणाधःप्रदेशे—ॐ नीं नीलायैनमः स्था० । वामे—
ॐ वं घनायैनमः स्था० । तत्रदक्षे—ॐ वं बलाकायैनमः । स्था०
ततो बाह्यात्पंचम त्रिकोणस्थाधः प्रदेशे—ॐ मां मात्रायैनमः ।
वामे—ॐ सुं मुद्रायैनमः । दक्षे—ॐ मि मित्रायैनमः स्थाप-
यामि ॥ ततो मध्यत्रिकोणे देव्या दक्षिणभागे महाकालं ध्यायेत्—
पुष्पम्—ॐ अञ्जनाद्रिनिभं देवं पिङ्गकेशं द्विबाहुकम् । आशांवरं
सर्पभूषा भृषितं प्रणमाम्यहम्, इति ध्यात्वा । ॐ ह्रीं नीं हूं
महाकालाय ह्रीं महादेवाय क्रीं कालिकायै ह्रीं । इति मन्त्रेण
पाद्यादिभिः सम्पूज्य । ३० कालिकादि पंचदशत्रिकोणस्थ शक्ति
भ्योनमः, इति सम्पूज्य, ततो जलंगृहीत्वा—ॐ अभीष्टसिद्धिं
मे देहि शरणागतपालिके । भक्त्या समर्पयेतुभ्य मिदमावरणार्चनम्
इति शंखोदकेन देव्या वामहस्ते आवरणार्चनं समर्पयेत् ॥ ततो ऽ
ष्टदलरुमलेपूर्वादि दक्षिणावर्त्तिक्रमेण प्रशक्तीरावाहयेत्—पूर्वदले—
दुःखाक्षतैः—ॐ दसदं क्रमदं तुं पश्चादक्षसुत्रं महाभयम् । विभ्रतीं
कनकच्छायां ब्राह्मीमावाह्याम्यहम् ॥ ३० श्रीं ब्रह्मायैनमः ।

प्रचुरभयकरांसुकुक्किणीं लेलिहत्तं, ॐ ॐ ॐ कृष्णदेहं कुटिलनग्व
 मुग्वं चंडसंज्ञमहोयम् । ॐ ॐ ॐ रुडमालं व्यपगतवसनं ताअने-
 त्रंकरालं, ॐ ॐ ॐ कालदंतं करधृतकवचं भैरवं स्थापयामि । ऐं
 हीं ॐ चण्डभैरवायनमः स्था० पू० । नैऋते—ॐ ॐ ॐ ॐ
 ग्वङ्गहस्तं खग्वग्व वदतंक्रोधसंज्ञचलंतं, ॐ ॐ ॐ हस्तिहस्तं त्रिभु-
 वन निलयंकरमलंभीमरूपम् । ॐ ॐ ॐ भूतनाथं भवभयभवनं
 रक्तनेत्रंकरालं, ॐ ॐ ॐ उग्रदंष्ट्रं स्वजनभयहरं भैरवं स्थापयामि ।
 ऐं हीं ॐ क्रोधभैरवायनमः स्था० पू० । परिचमे—ॐ ॐ ॐ ॐ
 शंखहस्तं भूवनविजयिनं दीर्घजिह्वंविशालं, ॐ ॐ ॐ स्वेदश्विन्नंश-
 शधरधवलं भीममुन्मत्तसंज्ञं । ॐ ॐ ॐ भव्यभूर्तिकिलकिलकगिनं
 गेहगेहेललंतं, ॐ ॐ ॐ वारुणान्त्राकलितकरयुगं भैरवं स्थापयामि
 ऐं हीं ॐ उन्मत्त भैरवायनमः स्थापयामि पूजयामि । वायव्ये
 ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ विपविपममना कालकालंकरालं, ॐ ॐ ॐ
 वायुवेगं बहुविधगमनं, कोटिज्योतिः प्रकाशं । ॐ ॐ ॐ कारनादं
 भुवनभयहरं गर्जनं रौद्ररावं, कापालंधारयंतं निजकरयुगले भैरवं
 स्थापयामि । ऐं हीं ऐं कपाली भैरवायनमः स्था० पू० । उत्तरे
 ॐ यों यों यों योगिराजं सकलगुणमयं भीषणारव्यंदयालं,
 ॐ ॐ ॐ शूलहस्तं डमकरवयुतं डिण्डिमं वादयंतम् । ॐ ॐ ॐ रुद्र
 रूपं भुवनभयहरं मुंडमालंस्त्रिनेत्रं, ऐं ऐं ऐं ऐश्वर्यनाथं स्वभिमत
 वरदं भैरवं स्थापयामि । ऐं हीं ॐ भीषण भैरवायनमः स्था०
 पू० । ईशाने— ॐ ॐ ॐ हारूप मदनिवहुविधं द्वादशार्कप्रकशम्,
 ॐ ॐ ॐ भस्मदेहं कपिलवर जटाजूटविस्तीर्णं केशम् । ई ई ईशान
 रूपं त्रिभुवनदहनेकोप कोपाग्निरूपं चन्देहंभूतनाथं सकलभवहरं
 भैरवं स्थापयामि ऐं हीं ॐ संहार भैरवायनमः, स्था० पू० ।
 पाद्यादिभिः संपूज्य जलं गृहीत्वा ॐ अभीष्ट सिद्धिमेदेहि
 शरणागतपालिके । मरुत्यासमर्पयेतुभ्य मिदमावरणा चनम् ।
 तत्रैवपूर्वादितोवामावर्त्तनाष्टौ भैरवीः स्थापयेत्—ध्यायेत् ॐ
 भैरव्योष्टौ महामायाः किंकिणीजालमंडिनाः । सायुधावरदास्सर्वा

स्थापयामीह भक्तितः । पूर्वं ॐ श्री भैरव्यैनमः स्थापयामि
 पूजयामिः । एवंसर्वत्र ईशाने ॐ महाभैरव्यैनमः० । उत्तरे-ॐ
 सिंहभैरव्यैनमः । वायव्यै- ॐ धूम्रभैरव्यैनमः । पश्चिमे-ॐ
 ॐ भीमभैरव्यैनमः । नैर्ऋते ॐ उन्मत्ताभैरव्यैनमः । दक्षिणे--
 ॐ वशीकरणभैरव्यै० । आग्नेये-ॐ मोहनभैरव्यैनमः । इति
 सम्पूज्य जलंगृहीत्वा ॐ अभीष्ट सिद्धिमेदेहि शरणागतपालिके
 भक्त्या समर्पयेत्तुभ्य मिदमावरणार्चनम् । इति जलदेव्यावाम-
 हस्ते समर्पयेत् (ततो महिषवलि प्रयोगेकैश्चिच्चतुः पष्ठि योगि-
 नीनामपि स्थापनमुक्तम् नित्यपूजा प्रयोगादौतुनासौविधिः ।
 तत्स्थापन क्रमस्तु पूर्वादितोवामावर्त्तेन मंडलाद्बहिरुपमंडलंचतुः
 पष्ठि त्रिकोणात्मकमाभ्यन्तर मंडल संबलग्नं कृत्वा स्थापयेत् ।
 तद्बहिर्द्वारपालस्थापनमितिदिक्) नाममंत्रै योंगिनीनां पूजनस्था-
 पनं च कुर्यात्—ध्यानम् ॐ युधोन्मत्ता महादेवीः सर्व सौभा-
 ग्यदायिनीः । पूजार्थं च चतुःपष्टीयोंगिनीः स्थापयाम्यहम् ॥
 ततो रक्ताक्षतपूषैः । ऐं दिव्येश्यैनमः स्थापयामि पूजयामि । एवं
 सर्वत्र— ऐं महारूपायैनमः० । ऐं सिध्वैश्वर्यै० । ऐं गणेश्वर्यै० ।
 प्रेताक्ष्यै० । ऐं डाकिन्यै० । ऐं कालिकायै० । ऐं अंकायैनमः । ऐं रुद्रवे-
 ताल्यै० । ऐं कालरात्र्यै० । ऐं निशाचर्यै० । ऐं ह्रींकार्यै० । ऐं भूतडांबर्यै०
 ऐं ऊर्ध्वकेशिन्यै० । ऐं विरूपाक्ष्यै० । ऐं शुष्कांग्यै० । ऐं नरभो-
 जनायै० । ऐं भरोडवैनमः । ऐं वीर भद्रायै० । ऐं राक्षस्यै० । ऐं
 घोररक्ताक्ष्यै० । ऐं विरूपायै० । ऐं भयंकर्यै० । ऐं भासुर्यै० ।
 ऐं रुद्रवेतालयै० । ऐं श्रीपर्यै० । ऐं त्रिपुरान्तकायै० । ऐं भैरव्यै
 नमः । ऐं ध्वंसिन्यै० । ऐं क्रोधिन्यै० । ऐं दुर्मुख्यै० । ऐं प्रेतवाहि-
 न्यै० । ऐं कंटक्यैनमः । ऐं त्रोटक्यैनमः । ऐं यमदृत्यैनमः । ऐं
 कराल्यै० । ऐं खड्वायै० । ऐं दीर्घलंबोष्ठिकायै० । ऐं कालाग्नि
 गृह्ण्यै० । ऐं चक्रायै० । ऐं मालिन्यै० । ऐं मंत्रयोगिन्यै० । ऐं
 धूम्रायै० । ऐं कलह प्रियायै० । ऐं कंकाल्यै० । ऐं भुवनेश्वर्यै० ।
 ऐं स्फाराक्ष्यै० । ऐं कार्मुक्ष्यै० । ऐं लौबि वधै० । ऐं काकद्रुप्यै० । ऐं

भक्तियै० । ऐं अधोमुख्यै० । ऐं प्रेरण्यै० । ऐं व्याध्र्यै० । ऐं कंकण्यै०
 नमः । ऐं प्रेतभक्ष्यै० । ऐं वीर कौमारिकायै० । ऐं चण्डायै० ।
 ऐं वाराह्यै० । ऐं मुंडधारिण्यै० । ऐं कामाक्ष्यै० । ऐं उड्डायै० । ऐं
 जातार्धयै० । ऐं महालक्ष्म्यै नमः ॥ इति स्थापयित्वा—ॐ ऐं ह्रीं
 क्लीं दिव्येश्वरीमारभ्य महालक्ष्मी पर्यन्त चतुःहृष्टियोगिनिभ्यो
 नमः ॥ इति पाद्यादिभिः संपूज्य, हस्तेजलं गृहीत्वा—ॐ अभीष्ट
 सिद्धिमेदेहि शरणागत पालिके ॥ भक्त्यासमर्पयेतुभ्यमिदमा
 वरणार्चनम् ॥ ततोयंत्र वहिरष्टदिक्चन्द्रादि लोकपालानावाहयेत्
 पूर्वं—ॐ लं इन्द्राय नमः । आग्नेये—ॐ वन्ह्ये नमः । दक्षिणे—
 ॐ यं यमाय नमः । नैऋते—ॐ नैऋते नमः । पश्चिमे—ॐ
 वं वरुणाय नमः । वायव्ये—ॐ यं वायवे नमः । उत्तरे—ॐ ईं
 कुबेराय नमः । ईशाने—ॐ ह्रीं ईशानाय नमः । यंत्रोपर्याकाशे—
 ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः । यंत्राधोमूले—ॐ ॐ अनन्ताय नमः ॥ ॐ
 इन्द्रादि दशदिक्पालेभ्यो नमः, इतिसंपूज्य, ततः पूर्वादि
 क्रमेणैवास्त्राणि स्थापयेत्—पूर्वं—ॐ वं वज्राय नमः ।
 आग्नेये— ॐ शं शक्तये नमः । द० ॐ दं दण्डाय नमः । नै० ॐ
 खं खड्गाय नमः । प० ॐ पं पाशाय नमः । वायव्ये—ॐ ॐ अंकुशाय
 नमः । उ०—ॐ गंगदायै नमः । ई०—ॐ शं शूलाय नमः । यंत्रोप-
 र्याकाशे— ॐ पं पद्माय नमः । यंत्रमूले—ॐ वं चक्राय नमः । ॐ
 वज्रादिशस्त्रेभ्यो नमः । इति सम्पूज्य जलंगृहीत्वा—ॐ अभीष्ट
 सिद्धिमेदेहि शरणागतपालिके । भक्त्यासमर्पयेतुभ्यमिदमावरा
 णार्चनम् ततस्त्रिकोणमध्ये देव्यावमोर्ध्वहस्ते ॐ ॐ खं खड्गनाथा-
 य नमः । सम्पूज्य, तदधः—ॐ मुं मुं टय नमः, सं० । दक्षोर्ध्वहस्ते
 ॐ ॐ अभयाय नमः । सं० । तदधः—ॐ वं वराय नमः सम्पूज्य
 ॐ अभीष्ट सिद्धिमेदेहि शरणागतपालिके भक्त्यासमर्पयेतु
 भ्यमिदमावराणार्चनम् । इति सर्वावरणार्चनं देव्यावामकरे
 समर्पयेत् ततः पाद्यादि नीराजनान्तां संपूजां कृत्वा, वक्ष्यमाण
 मंत्रपुष्पांजलिदेव्याः पादयोर्निवेदयेत्—ॐ नमंत्रानोयंत्रं तदपि

च नजानेस्तुानमहो । नचाहानंध्यानं तदपिच नजानेस्तुनिकथाः ॥
नजानेमुद्रास्ते तदपि चनजाने विलपनं । परंजानेमात स्त्वदनुशर-
णं क्लेशहरणम् । १। द्वितीयाम्—३० विधेरज्ञानेन द्रविणविरहे
णालसतया । विधेया शक्यत्वा त्वचरणयोर्याच्युतिरभूत् ।
तदेतत्तन्तव्यं जननिसकलोद्धारिणि शिवे । कुपुत्रोजायेतकचिदपि
कुमातानभवति । २। तृतीयाम्—३० जगन्मातर्मात स्त्वचरण
सेवानरचिता । नवादत्तं देविद्रविण मपिभूयस्तवमया । तथापित्वं
स्नेहं मयिनिरुपमं यत्प्रकुरुषे । कुपुत्रो जायेतकचिदपि कुमाता न
भवति । ३। इतिवार त्रयं देव्याः पादयोः समर्प्य, ततोदेव्यैगे
षडंगन्यासं कुर्यात्—३० क्रौं हृदयायनमः, ॐ क्रौं शिरसेस्वाहा,
ॐ क्रौं शिखायैवौषट्, ॐ क्रौं कवचागहुम् । ३० क्रौं नेत्रत्रयाय
वौषट्, ३० क्रः अस्त्रायफट्, एवंन्यासं विधाय पात्रेमधुकर्पूर
मिश्रित जलं कृत्वादेवीं तर्पयेत्—३० क्रौं क्रौं क्रौं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं,
श्री दक्षिण कालीदेवीं तर्पयामि,, नमः ॥ इति द्वादशवारं-संत-
र्प्यं घंटां वादयित्वा जयकाली त्यक्तं हूयात् ॥ अथवलिप्रयोगः
ततोयंत्र वामे भूमौत्रिकोण चतुरस्र मंडलं कृत्वा, तदुपरि पात्रं
संस्थाप्य तस्मिन्मांस मापान्न शाकाज्य पायसापूपकाद्यन्यतमं
वलिं संस्थाप्य,, ह्रीं फट्,, इतिजलेनसंप्रोक्ष्य, क्रौंनमः,, इति गंध
पुष्पैरभ्यर्च्य, यं, इतिवायु वीजेनद्वादशवार जप्तेन संशोष्य
वामकरतलोपरि दक्षिण हस्तपृष्ठं कृत्वा, रं, इति वन्हिबीजेन
षोडशवार जप्तेन धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, ह्रीं, इत्यवगुंघ्य योनिधे
नुमुद्रे प्रदर्शयित्वा तत्त्वमुद्रांच प्रदर्श्य, ॐ क्रौं श्रीं भगवति
दक्षिणकालिकार्यै स्वाहा एषवलिर्नमः । इतिवत्युपरिजलंक्षिप्त्वा
नैर्कृत्यां स्थापयेत् ॥ कालरात्री वलिप्रयोगः—यदि कालरात्री
पूजाचेद्रात्रीं ह्यागोचन्यतम काम्यवलिर्देयः, तत्र ह्यागपूजापद्ध
त्या ह्यागसंपूज्यधातयित्वा तेनैवप्रकारेण देव्यैनिवेद्य, तत्रान्य
तमवलिं वलिप्रयोगोक्तप्रकारेण संरक्ष्य, तत्रयंत्रः—पं-पञ्चे

पद्मे महापद्मे पद्मावति कालरात्रे महायक्षाधिपेभ्योपनीतमिमं
 वलिं गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय, मम सर्वारिष्ठ शान्तिं कुरुकुरु
 डाकिनीशाकिनी भूतप्रेतादि कृत महाव्यथामहामारींच निवारय
 निवारय, परविद्यां चाकृष्या कृष्य छिन्धिछिन्धि, भिन्धिभिन्धि
 खड्गेन निरयंकृत निरयंकृत मम सर्वापराधान्क्षमस्व । हीं ह्रीं
 स्वाहा । इतिमंत्रेण, वलिंचतृष्पथे वानैर्ऋत्ये क्षिपेत्, महिषवलि
 प्रयोगे यंत्रादतिरिक्तं यंत्रदृष्टिगतस्थाने कीयद्दूरे महिषपूजनार्थं
 चतुरस्रं स्थानंकृत्वा तत्र महिषमानीय महिषपूजापद्धत्या सम्पू-
 ण्य तत्रैव, एकप्रहारेण महिषस्यशिरश्छित्त्वादेव्यग्रे दृष्टिपथेभूमौ
 निधाय, पूजोक्तपद्धत्यनुसारतः समर्पणं कुर्यात् । विस्मृत्यापि
 यंत्रमध्येदेव्युपरिमहापशुछेदनंनकुर्यात् । उक्तं च देवीभागवते-
 देव्यग्रे निहतायान्ति पशवः स्वर्गमव्ययम् ॥ नहिंसा पशुजातत्र
 निघ्नतां तत्कृते नद्य ॥ मांसाशनं येकुर्वन्ति तैः कार्यपशुहिंसन
 म् । अहिंसा याज्ञिकीप्रोक्ता सर्वशास्त्र विनिर्णये, अत्राग्रशब्द
 स्यार्थः स्पष्टः देव्यग्रेपशुघातनं नतुयंत्रोपरि ॥ कालिकापुराणे—
 यंत्रं देव्या शरीरंच नयंत्रेपशुघातनम् । दंभात्कुर्वन्ति येमूढास्तेपां
 नाशो भवेद्ध्रुवम् ॥ यंत्रं तु देव्याः शरीरं नतुपशुघातनार्थं माधा-
 रम् । एतत्पशुहिंसनन्तु ब्राह्मणेतर क्षत्रियादीनामुक्तम् ॥ मांसा
 शनं येकुर्वन्तीति—ब्राह्मणस्य कालिका पुराणादिषु साक्षाद्बलिदा
 नस्य निषेधकथनात्क्षत्रियादि विषयक एवायंविधिरितिबो
 ध्यम् ॥ उक्तं च शारदातिलके—ब्राह्मणो नियतः शुद्धः सात्वि
 कं बलिमाहरेत्, हिंसायुक्तो बलिस्त्वाद्य वर्णहित्वा प्रशस्यते ।
 आश्वयणं ब्राह्मण वर्णत्यक्त्वे त्यर्थः ॥ कालिकापुराणे—सिंहव्या
 घ्रादिकं दत्त्वा चात्मवध्यामवाप्नुयात् । मध्यं दत्त्वा ब्राह्मणस्तु
 ब्राह्मण्यादेवहीयते, अग्रयं विहितोयत्र बलिस्तत्र द्विजः पुनः ।
 पिष्ठेनापि घृतेनापि निमित्तं तु समर्पयेत् ॥ छान्दोग्य श्रुतिरपि—
 अहिंसनसर्वभूतान्यन्यत्रतीर्थेभ्यः । नहिंस्यात्सर्वभूतानीत्यपि,
 इत्यादिवह्निप्रमाणानिशास्त्रेषुसन्ति, ततोदेव्यायामे हस्तमांशं

त्रिकोणं चतुरस्रं वा स्थण्डिलं निर्माय पूर्वाक्त होम पद्धत्यनु-
सारतो ऽग्निं स्थापनं कृत्वा मूलमंत्रेण होमविधाय,, कुमारी
पूजनविधिना कुमारीः संपूज्य गोदानादिकं कृत्वा आचार्यादि-
भ्यो दक्षिणां दत्त्वा यंत्रपूजास्थलं मागत्य कालिकायंत्रस्योत्तराङ्ग
पूजनं कृत्वा देवीं रक्ताक्षतापुष्पैर्विसृजेत्—३० गच्छुगच्छुमहमाये
स्थाने मणिपुरे शुभे । इष्ट कामसमृद्धयर्थं पुनरागमनं कुरु ॥ इति
विसृज्याचार्यो यंत्रोपरितः पत्रपुष्पादिकं गृहीत्वा पूर्वाक्ताभिपेक
पद्धत्युक्त प्रकारेण यजमान मभिपिच्य मंत्रतिलकं कृत्वा शीर्द-
यात्ततो ब्राह्मणान्भोजयित्वा यथासुखं विहरेत् ॥

इति दक्षिण कालिका यंत्रपूजा पद्धतिः ।

॥ अथ महिषपूजापद्धतिः ॥

तत्रादौ कर्त्ता पूर्वाक्त विधिना यंत्रं संपूज्य यंत्रं वामभागे
कंचिद्ब्राह्मणं दैत्यसंहार स्तवराजपाठार्थं कृत्वा स च ब्राह्मणो
वीररसेणोच्च स्वरेण दैत्यसंहार स्तवराजं महिषे
दनावधि पठित्वा कालिकां प्रार्थयेत्,, ततो महिषेदनार्थं यंत्रं
हृदिगनपथे—कीयद्दूरे चतुरस्रं स्थानं कृत्वा, तत्रमंडलोत्तरभा-
गे ह्रं काण्टस्तम्भमुच्छ्रित्य स्वयं पूर्वाभिमुखः ॥ तत्र आचम्य
भूतोत्सादनादिकं कृत्वा स्वस्तिवाचनं पठित्वा महापशुं महिषमान-
येत्—३० स्वस्ति न ऽ इन्द्रो बृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषाञ्चि वशवे
दाः ॥ स्वस्ति नमनादर्यो ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।
३० यौः शान्ति रन्तरिक्षं ऽ शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः
शान्ति रोपधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्दिग्देवाः शान्तिर्ब्र-
ह्म शान्तिः सर्वं ऽ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि,
३० शान्तिः ३सुशान्तिर्भवतु । ततो महिषायस्तम्भसंनिधाने कीयद्दूरे
पाद्यार्घ्याचमनीयं दद्यात् ॥ अर्घपात्रे गंधाक्षत पुष्प जलमेकी

कृत्य, महिषायनमः, एतत्पाद्यार्घ्या चमनीय जलं समर्पयामि ॥
 ततोमहिषं सर्वांगस्नापयेत्, तत्रमन्त्राः—३० आपोहिष्टामयो
 भुवस्तान ऽ ऊर्जदधातनमहेरणायचक्ष्पे योवः शिवतमोरसस्त
 स्यभाजयतेहनः उशतीरिवमातर स्तस्मा ऽ अरद्गमामवोयस्य
 क्षयाय जिन्वथ ऽ आपोजनयथाचनः । महिषायनमः, इदंस्ना-
 नीयं जलंसमर्पयामि, ततोमहिषोपरि सत्स्रधारताम्रपात्रंकृत्वा
 तत्सहस्रधाराभिःस्नापयेत्—३० व्वसोःपवित्रमसिशतधारंव्वसोः
 पवित्रमसिसहस्रधारं । वसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्ष्वः
 ततःपंचसुगन्धमिश्रितजलेन—३० गन्धद्वारांदुराधर्पां नित्यपुष्टां
 करीषिणीम् । ईश्वरीसर्वभूतानां तामिहोपहृयेश्रियम् ॥ ततः
 पुष्पोदकेन—३० श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्रा-
 णिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥ इष्टंनिपाणामुम्मईषाणः सर्वलोकम्म
 ईषाणः । पुनरनैवमन्त्रेणनदीजलेनस्नापयेत्—नदीजलाभावेघटे
 ३० गंगेयमुनेचैव० इत्यभिमन्त्र्यस्नापयेत्—ततोहरिद्रा रंजितलम्ब
 चीरेमहिषग्रीवायां विष्ववृक्षशाखांवध्नीयात् ततोललाटेकज्जलमि
 श्रितसिन्दूरंगन्धपुष्पाणिचदद्यात् ततःकंठेत्रिसूत्रंवध्नीयात्—मंत्रः-
 ३०—अवभृथानिचुंपुण निचेरुरसि निचुम्पुणः । अवदेवैर्देव कृत्नमेनो
 याशिपमव मर्त्यैर्भृत्यकृतं पुररात्रो देवरिपस्पाहि ॥ वृषदादिव
 मुमुक्षानः स्वन्न स्नातो भलादिव पूतं पवित्रेण वाज्यमापः
 शंघन्तुमैनसः ॥ पुष्पमालाम्—३० अम्बे अंबिके अंबालिके नमा
 नयतिकरचनः । सस्वत्य श्वकःसुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् । ततो
 गंधद्वारेति मंत्रेण शृंगान्तरेअर्धचन्द्रकारं रक्तगन्धेन कुर्यात्—
 रक्तवस्त्रम्—३० युवासुवासा परिवीत आगात्सउ श्रेयान्भवसि
 जायमानः । तन्धीरासः कवचऽउन्नयन्त स्वापोमनसादेवयन्तः ॥
 ३० श्रीश्चनेति मंत्रेण रक्त वस्त्राच्छादित महिषोपरि पुष्पाणि-
 चिकिरेत् ॥ श्वेतसर्पपानादाय रक्षाबन्धनं कुर्यात्—३० ह्रीं दुर्गे
 दुर्गे रक्षिणि स्वाहा ॥ इति महिषोपरि आमयित्वा चतुर्दिक्षुक्षि-
 पेत ॥ ततः पुष्पाक्षतैः प्रार्थयेत्—३० महिषायनमः, ३० यम-

वाहनायनमः,, ततो महिषस्य दक्षिण कर्णे मंत्रराजं दशवारं जपेत्-
 मंत्रः- ॐ ह्रीं दुर्गे दुर्गे रक्षिणि ऐं स्वाहा,, ततः पंचगव्येन
 प्रोक्षयेत्-हां नेत्रभ्यां वौषट्,, ततः स्तंभं पूजयेत्- ॐ शिव-
 स्वरूपिणे महास्तंभायनमः,, इति मंत्रेण पाद्यादि नीराजनान्तं
 संपूज्य सतैल सिन्दूरेणानुलिप्यचान्तपुष्पैः प्रार्थयेत्-ॐ स्तं-
 भत्वं शंभुरूपोऽस ब्रह्मणा निर्मितःपुरा । अतस्त्वां पूजयिष्यामि
 पशुबन्धनहेतवे ॥ यथाचलोगिरिमैक हिमवांश्चाशलोच्चयः ॥
 सर्वदासिद्धितत्वेनस्तंभराज नमोस्तुते ॥ ततः पाशपूजामारभेत्-
 ॐ महापशुबन्धपाशायनमः ॥ इति मंत्रेण पाद्यादिभिः संपूज्य
 सतैल सिन्दूरेण पाशमनुलिप्यच । प्रार्थयेत्-ॐ महिषोऽसि-
 महाकायो भीमरूपी महाबलः । एतस्य बन्धनार्थाय पाशतुभ्यं
 नमोनमः ॥ ॐ वरुणस्य महास्त्राय जंतुबन्धन कारिणे ॥ तुभ्य-
 न्नमोस्तुपाशाय सारथ्यकठिनत्वचे । ततः कुशपुंजुलिनाङ्गिः पशु
 प्रोक्षणं कुर्यात्- ॐ अग्निः पशुरासीत्तेनायजन्तसऽएतं ल्लोक
 मजयद्यस्मिन्नग्निः सतेलोको भविष्यति तंजेप्यसि पिवेताऽ
 अपः ॥ ॐ वायुः पशुरासीत्तेनाय जन्तसऽएतंल्लोक मजयद्य
 स्मिन्वायुः सतेलोको भविष्यति तंजेप्यसि पिवेताऽअपः । ॐ
 सूर्यः पशुरासीत्तेनायजन्तसऽएतंल्लोक मजयद्यस्मिन्सूर्यः सते
 लोको भविष्यति तंजेप्यसिपिवेताऽअपः ॥ ॐ वाचन्ते शुन्धामि
 ॐ प्राणन्ते शुन्धामि, ॐ चक्षुस्ते शुन्धामि, ॐ श्रोत्रंते शुन्धामि,
 ॐ घ्राणंते शुन्धामि, ॐ नाभिन्ते शुन्धामि, ॐ भेदून्ते शुन्धामि,
 ॐ पायुंते शुन्धामि, ॐ चरित्रांस्ते शुन्धामि, ततः पञ्चमंत्रैश्च-
 ॐ शिरस्तऽआप्यायतां ॐ वाक्स्तऽआप्यायताम्, ॐ प्राणस्तऽ
 आप्यायतां, ॐ चक्षुस्तऽआप्यायताम्, ॐ श्रोत्रन्तऽआप्यायताम्,
 ॐ यत्तेऽशूरं यदास्थितन्तत्तऽआप्यायतां, ॐ निष्टयायतांतत्ते-
 शुद्ध्यतु, ॐ शमहोभ्यः शुद्ध्यतु, ततोऽन्तपुष्पैः पशुगात्रस्थदेवा-
 न्विसृजेत्, ॐ शृंगेऽष्टे ललाटे च पादयो जघयोस्तथा । उदरे
 सर्वगात्राणि मुञ्चन्तुपशुदेवताः ॥ ॐ पशोऽशृंगं गृहीतोसि पशुत्वं

हीयतां द्रुतम् ॥ उपयोगस्त्रयाकार्यो देवीपूजाविधौ सदा ॥ एवं
संप्रोक्ष्य, वस्त्रेणाच्छाद्य पाशेन बध्वा विल्वफल मालया सुसज्य
ललाटे सिंदूरं दत्वा तद्वामकर्णेजपेत्—मंत्रः—ॐ लिहि लिहि बहु-
रूप धारायै कालिकायै ह्रीं ह्रीं इमंप्रदर्शय, भक्तिं नियोजय
नियोजय स्वाहा, तनोमहिषं नमस्कुर्यात्—ॐ नमस्ते बलिरूपाय
सर्वपाप क्षयाय च । सर्वशत्रु विनाशाय पशुगज नमोस्तुते ॥ इति
महिषं नमस्कृत्य पुनरङ्घ्रिभ्युक्ष्य, ॐ महिषाय नमः इति मंत्रेण
पंचोपचारेण संपूज्यान्त्यग्रासं दद्यात्—ॐ पशोस्त्वं बलिरूपेण
मम भाग्या दुपस्थितः ॥ अंत्यग्रासं मया दत्तं गृहाण महिष
प्रभो ॐ श्रीं, अंत्यग्रासं निवेदयामि ॥ ततः स्तम्भसमीपमा-
नीय पुनः स्तम्भं पंचोपचारेण संपूज्य प्रार्थयेत्—३० स्तंभत्वं
शंभुरूपोऽसि पार्वत्यानन्द बध्नः । भक्तितः पूजयामित्वां पशु
बन्धनहेतवे ॥ सर्वशत्रुविनाशार्थं सर्वाभीष्टार्थं सिद्धये । चंडिका
प्रीतिहेत्वर्थं पशुबन्धयबन्धय ॥ स्तंभत्वं धर्मरूपोऽसि महिषं
चोत्तमं पशुं ॥ बलिदानं मुमाप्रीनौ निबिधनेनापि बन्धय, ॐ ह्रां
ह्रां फट् स्वाहा, इति महिषं स्तंभे बध्नीयात् ॥ तनो बृहज्जलघटे
हरिद्राचूर्णं निक्षिप्य तन्मंत्रैः पूजयेत्—३० श्रीं ब्रह्माण्डाय नमः, ३०
मां माहेश्वर्यै नमः, ॐ कौं कौमार्यै नमः, ३० वैं वैष्णव्यै नमः, ॐ
वां वायव्यै नमः । ॐ ईं इन्द्रायै नमः, घटवामे—ॐ उं उग्र-
चण्डायै नमः, इति घटं पंचोपचारैः संपूज्य, तेन जलेन बद्धमाणा
मंत्रेण महिषं पुनः स्नापयेत्,—ॐ ऐं ऐं कालि कालि पापक्षयाय
ब्रह्म राजस्वपाय दिव्य भौमाय नमः, इति सर्वांगं महिषं
संस्नाप्य घटशेषं जलं बद्धमाणा मंत्रेण नैर्ऋत्ये क्षिपेत्—ॐ
अमृतासवं विद्महे स्वधाकाराय धीमहि ॐ संवर्त्तकः प्रचोदयान्,
ततः पीतवस्त्रं महिषस्य वामशृंगे वेष्टयेत्—ॐ नरसिंहाय नमः,
इति बन्धयित्वा पशोरङ्गानि स्पृशेत्—ॐ शिं शिरसि, ॐ त्रं मुखे,
ॐ ईं नेत्रयोः ३० उं कर्णयोः ३ॐ अं ईं उं अं लूं पं ३० दुर्गे दुर्गे
रक्षिणि स्वाहा इति सर्वाङ्गं स्पृश्यापञ्च न्यासं कुर्यात्, ॐ ह्रां

ह्रां वाहोः, ॐ अ पादयोः ॐ ह्रूं मुखे, ॐ ह्रीं नेत्रयोः, ॐ ह्रीं पुच्छे, इति स्पृष्ट्वाऽजतैर्महिषं प्रबोधयेत्—ॐ महिषस्त्वं पुरादेव्य बहुदुःखप्रदायकः । अतो निहत्य दातव्यस्तृप्तयेवरदोभव ॥ देवासुररणैर्देव्या बहुदुःख प्रदोसिभत् । त्वयानिस्तारिताः सर्वे आखण्डल मुन्नासुराः । सूर्या चन्द्रमसोर्वायो राधिपत्यं धयेतव । न्याये नानेन रौद्रेण मातृके नानुलोमतः । हित्वापशुत्वंदुर्गाया गणतांत्वंगमिष्यसि । पशुगोनौप्रसृतोऽसि वलियज्ञस्य-सिद्धये । तुष्टाभवत् सादेवी ममांशै रुधिरैस्तव ॥ ततो दान्निष्कणै पशुगायत्री सुपदिशेत्—ॐ ऐं पशुपाशाय विद्महेशिरश्छेदायधीमहि । तन्नः पशुः प्रचोदयात् । तनःकौशिक मन्त्रेणकुशर्पुञ्जलिना ऽ द्विः पशुत्वंनिःसारयेत् । ॐ ह्रीं हां महा कौशिकायनमः, इतिसम्भार्यमहिषपृष्टेस्वदक्षिणकरतलं संस्थाप्य वक्ष्यमाणमन्त्रैरमृतीकरणंकुर्यात्—ॐ प्रस्फुर २ ॐ चर्वय २ ॐ भ्रामय २ ॐ मारय २ ॐ कामय २ ॐ कम्पय २ ॐ प्रापय २ ॐ कर्मय २ ॐ आवेशय २ ॐ मोहय २ ॐ हासय २ ॐ हां ह्रीं ह्रूं ह्रूं ह्रूं ॐ वचय २ ॐ मद्द्रेष्टय २ ॐ हः स्त्रां ह्रीं महिषरुधिर मिदममृतंस्थाहा, इत्यमृतीकरणंकृत्वा पुनर्महिषंप्रार्थयेत्—ॐ महिषत्वं महावीरधर्भराजस्यवाहनः । भक्तिनः पूजयाःमित्वां सर्वकामार्थासिद्धये । ॐ ह्रीं पशुनांपतये नमः ॥ इति पुष्पं समर्पयामि, ॐ श्रीं धूपंनमः ॥ ॐ ह्रीं दीपंनमः ॥ इति महिषंसम्पूज्य,, पुरतःखड्गं संस्थाप्यपूजयेत्—ततःखड्ग मध्ये ऐं वीजंविलिख्य, ॐ ह्रीं कालिवज्रेश्वर लोहखड्गाय नमः, इत्यभिमन्त्र्यध्यायेत्—ॐ कृष्णंपिनाकपाणिंच कालरात्रिस्वरूपिणम् । उग्रंरक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनं । रक्ताम्बरधरंचैव पाशहस्तंकुट्टुम्बिनम् ॥ दिवमानंचरुधिरं भुज्जानंक्रव्यसंचयं ॥ रसनात्वंकालिकायाः सुरलोकप्रसादक । ॐ कालि २ वज्रेश्वरि लोहपूर्णचैनमः, इत्यभिमन्त्र्य । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कद् लोहदण्डाय तीक्ष्णधाराय श्वझायनमः, इति मन्त्रेणखड्गम्पाद्यगन्धधूपादिभिः

सम्पूज्यप्रार्थयेत् । ३० पुरादेवासुरेयुद्धे निर्मितो ऽ सिजयप्रदः ।
तेजोरूपापखङ्गायजयप्रदनमोस्तुते । आसेर्विशनसःखङ्गस्तीक्ष्ण-
धारोदुरासदः । श्रीगर्भोविजयश्चैव धर्मपालनमोस्तुते ॥ पुनः
खङ्गमन्त्रयेत्—३० ऐं कालिवज्रेश्वरि लोहदण्डायनमः स्वाहा ।
ततो वक्ष्यमाणमन्त्रेण खङ्गमहिषस्कन्धेस्पर्शयेत्— ३० ह्रीं कालि
२ विकटदंष्ट्रोऽग्रे क्रं क्रं कारिखादय २ सर्वान्दुष्टान्मारय २ खड्गे
नष्टिन्धि २ किरि २ किलि २ रुधिरं पिव २ छों कालिकायै नमः,
ततो महिषहननार्थमन्यपुष्पस्य वरणंकुर्यात्—ततस्तंक्रोधभैरव
रूपिणं गुरुपमग्रतःकृत्वा, ॐ क्रोधभैरवस्वरूपिणे ऽ मुकायनमः
पाद्यादिभिः सम्पूज्य तस्यदक्षिणहस्ते त्रिकोणयन्त्रंलिखित्वा
शिरसिसिन्दूरेणत्रिपुरङ्गं विदुयुनं कृत्वा गन्धाक्षतपुष्पमालादिभिः
सम्पूज्य सङ्कल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्यामुको ऽ हं
करिष्यमाणासुकदेवताप्रीत्यर्थं महिषवलिकर्मणि महिषछेदनार्थं
क्रोधभैरवरूपिणमसुकगोत्रमसुकवर्माणंत्वामहंवृणेवृतो ऽ स्मीनि
प्रतिवचनम्, ततःप्रार्थयेत्—यथादेवासुरेयुद्धे मारितोमहिषासुरः ।
हे क्रोधभैरवत्वंहि महिषंजहिसत्वरम् ॥ ततः स्तम्भान्महिषंमोच
यित्वा सङ्कल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यासुकगोत्रो
ऽ मुकराशिरसुकवर्माणं करिष्यमाणासुककामनासिद्धये तथाच
सकृदुन्मस्य सपरिवारस्य सर्वापच्छान्तिदीर्घायुस्त्व धनधान्या-
द्यविच्छिन्न चातुर्वर्गार्थसिद्धये श्रीः १ अमुकीदेव्याः प्रीत्यर्थमि
मंसुपूजितममृतीकृतंमहिषं यमदेवतंवलिरूपंघातयिष्ये । इति
महिषाशरसि लिप्त्वादेव्यग्रे पुनस्त्वेवस्वरेणप्रार्थयेत्—ॐ जल-
दसदृशवर्णं चारुविस्तीर्णकणं । धरणिधरसमांगं दीर्घतीक्ष्णायता-
क्षम् ॥ बलिमिममुपनीतं देविप्रीत्यागृहाण । भगवन्मयिनित्यं
राजलक्ष्मीनिधेहि ॥१॥ कुरुममरिपुनाशंश्याधिपीडादिदुःखं । हर
सकलविकारं दुर्गतिंशत्रुभीनिम् । भवशुवनवरेण्या मङ्गलन्तव्यं
विवेदि भगवनिवरात्वंसर्वसिद्धिप्रदेदि ॥२॥ ततो महिषंघात-
नार्थंप्रार्थयेत्—३० महिषत्वंमहावीर सर्वाभीष्टप्रसाधकः ।

दुर्गातत्रैवपापानि सर्वशत्रुक्षयंकुरु । यज्ञार्थंपशवःसृष्टाःस्वयमेव
स्वयंभुया । अतस्त्वांधानयिष्यामि तस्माद्यज्ञेवधो ऽ वधः । ततः
क्रोधभैरयंप्रचारयेत् रक्ताक्षतपूषैः—सचोत्थितःखड्गमुत्थाप्य ॐ
ऐं ह्रीं श्रीं ह्रस खक्रं ह्रसो ह्रीं ह्रसो श्रीं क्रोधमार्त्तण्डभैरवाय
ह्रसो ह्रीं ह्रस खक्रं श्रीं ह्रीं ऐं, भोक्रोधभैरव, एनं महिपंखड्गे
नभिनन्ध २ छिन्धि २ निरयंकुरु २ ततः क्रोधभैरवोदक्षिणहस्ते
खड्गमुत्थाप्यमहतातेजोमय क्रोधेन, ऐं ह्रीं कालिकायैनमः, इत्यु-
क्त्वा, एकप्रहारेणमहिपशिरश्छेदनंकुर्यात् । यथा—हन्यादेक
प्रहारेण महासिद्धिमवप्नुयात् । अन्यथाविघ्नमायाति कर्त्ता
सम्यत्सरावधि । ततोमहिपमुण्डयन्त्रात्कीयद्दूरे देव्यग्रेभूमौ
त्रिकोणोपरिनिधाय—पुष्पंचृत्वा—ऐं कवोरुणंफेनिलंरक्तं पशुकंठा
द्विनिर्गतम् ॥ माध्वीकंपिवदेवित्वं परमानन्दहेतवे ॥ घोरदंष्ट्रे
करालास्येमधुमांसवलिप्रिये । वलिं गृहाणभोदेवि विपक्षक्षय-
कारणि ॥ ततो महिपशिरसि ज्वलद्वर्त्तिकां दीपयित्वाहस्तेजलं
गृहीत्वा—ऐं यायद्दहतिलोमानि वर्त्तिकाशिरसः पशोः । ताव
द्वर्षसहस्राणिदेवीलोकेसगच्छतु । शेषंपूजोक्तपद्धत्यनुसारेणकुर्यात्
ॐ कालिकायैनमः ॥

इति महिपवलिपद्धति ॥

अथ नरक चतुर्दशी परिभाषा ।

कार्तिकशुक्ल चतुर्दशी नरकचतुर्दशी—साचोषसिचन्द्रादय व्यापिनीपायासकं
च मदनरनेभद्रिये कार्तिकेचन्द्रशुक्लपक्षे चतुर्दश्याविधुदये । तिलतैलेनसर्तव्यं स्नाननरकभोदभिः
।१। अत्र चन्द्रादयस्नानासभवेपूर्वादयऽपि चतुर्दश्यां प्रातः काली गीष्पत्वेनविधीयते । अत्र
स्नानमध्येतुम्ही अणामागंधमण कर्त्तव्यम् । तन्मंत्रा । सीतालोष्ठसमायुक्तसकटकदलान्वित ।
द्वरपापमपामार्गधाम्यमाद्यः पुन पुन ।२। ततोयमतर्पण कुर्यात् ॐ यमायनम, इत्यादिमंत्रैः ।
जीवत्पितापितृवर्त्तितर्पणं यमभोऽमयो ।३। अत्र ऋत्विष्वत्प्रदेशे ऽस्यांगवां पूजनादिकगपि
कुर्वन्ति । तत्र मनीचीनमस्ति । पूर्वसर्पिभस्तु गोवत्सद्वादशीमारभ्यबलिदानपर्यन्तमेतदुक्तम्
उक्तं च हेमाद्रौभवित्य सक्तमातुन्यवर्णां च शालिनीगोपयस्विनीम् । चन्दनादिभि रालिप्य

पुष्पमालाभिरर्चयेत् । ४। दीपावलिदानमुक्तस्कान्दे । ततः प्रदोषसमयेदोषान्दद्यान्मनोहरान् ।
 ब्रह्मविष्णुशिवादीनां भवनेपुमठेषु च । ५। अत्रैव रात्रीदीपावलयनन्तरमुत्कादानंविहितम् । उक्तं
 च ज्योतिर्निवन्धे । तुलासंस्थेसहस्रांशोप्रदोषभूतिदर्शयोः । उल्काहस्तानरः कुयुः पितृणामार्गद-
 र्शनात् । ६। अत्र चतुर्दश्यांखण्डतिथौ कदाकर्मकर्तव्यम् । अत्रप्रातः कालस्य गौणत्वप्रापक
 श्चन्द्रोदयकालांमुत्थयः यत्तुः कृष्ण चतुर्दश्यांरात्रिशेषे चतुर्घटिपुभवति । तन्मुथयः कालः ।
 पूर्वत्रैव चतुर्दश्यां तद्व्याप्ती तत्रैवाभ्यंगादि दीपदानांतंनिर्निवादम् । तदंगकर्मकालेषु तिथि
 सत्वात् । परत्र तद्व्याप्ती तत्रैवाभ्यंगादि । असत्यामपि चतुर्दश्यां काले दीपदानं कार्यम् ।
 स्नानादिनप्रदोषे तिथ्यनपेक्ष्ये तद्विधानात् । सूर्योदये तिथ्यनुवृत्तौ । यातिथि समनुप्राप्ययास्-
 स्तंपद्मिनोपतिः । सातिथिस्तदिने प्रोक्तात्रिसुहृर्तंवयाभवेत् । ७। नरकं च चतुर्दश्यामिन्दुक्षय-
 तिधावपि । उजादींस्वातिर्गंगोमे तदादोषावलोभवेत् । ८। ज्योतिर्निवंधोदाहृत नारदवाक्येऽपि
 शब्देनचतुर्दशीस्थानेऽमाया अनुकल्पत्वेन विधेरीदृश विषयपदप्रवृत्तौ चिन्त्यात् । स्वातियोगस्तु
 प्राशस्त्यार्थः । दीपावलीशब्दोऽभ्यंग स्नानपरः । अमुनैवाशयेनसर्वज्ञनारायणेन चतुर्थयामे
 चतुर्दशी सन्ध्याभ्यंग प्रयोजकत्वेनोक्तम् । तथा कृष्ण चतुर्दश्यामाश्विनोऽकौदयानपुरा यामिन्याः
 परिचये यामंतैलाभ्यंगो विशिष्यते । ९। इत्यादिप्रमाण वाच्यैस्त्रयोदशी युक्तायानरक चतुर्दश्यां
 कदापिदीपावली यथावत् , नभवतीति सर्वसम्मतिः ।

अथ नरक चतुर्दशी कर्म पद्धतिः ॥

अथच उदयव्यापिन्यां चतुर्दश्यामुपः कालेसूर्योदयात्पूर्वं
 नरक मीरुभिस्तिलतैलेनस्नात्वा तदैव ३० यमायनमः, इत्यादि
 चतुर्दशनामभिस्तर्पणानिदत्त्वा पितृश्चनपि सम्पूज्य मध्यान्हात्पूर्वं
 गोष्ठेगवां पूजनमारभेत् । अर्घ्यम्—रुद्राणीचैवयामाता वसूनां
 दुहिताभ्या । आदित्यानां च भगिनी सानःशान्तिप्रयच्छतु । १।
 गन्धाक्षत पूजनमंत्रः । नमोगोमतीभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य
 एवच । नमोर्धर्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्योनमोनमः ॥२॥ इति
 गंधाक्षतमालादिभिः सम्पूज्य गोत्रासंदद्यत्—सुरभी वैष्णवी
 मातानित्यं विष्णुपदेस्थिता । प्रतिगृह्णातु मेग्रासंसुरभीमे प्रसीदतु
 । २। इति गोभ्योदेशरीत्यानुसारतोयथेष्टान्नं दत्त्वा प्रार्थयेत् ।
 गावोमेऽग्रतः सन्तुगावोमे सन्तुष्टुष्टनः । गावोमेहृदये सन्तुगवां

मध्येवसाम्यहम् । ३। मावियोगोऽस्तु मे पुत्रैर्भर्त्रा च सहवान्धवैः
 त्वत्प्रसादेन भक्तिः स्यान्निश्चलागौः सदात्वयि । ४। ततो गृहमाग-
 त्यं ब्राह्मणैर्वान्धवैः सहभुंजीत । ततः प्रदोष समयेदीपावलिं
 दद्यात् । अथ दीपमंत्रः अग्निज्योतिरविज्योतिश्चन्द्रोज्योतिस्तथैव
 च उत्तमो ज्योतियां ज्योतिर्दीपोऽयं प्रति गृहताम् । ५। दीपान्दत्त्वा
 भोजनात्पूर्वं मुल्कापूजनं विदध्यात् । गोमयोपलिप्तायांभूमावुल्कां
 संस्थाप्य तत्र दीपंप्रज्वाल्य सम्पूज्य च ॐ पितृमार्गप्रदर्शन्यु-
 ल्कायै नमः गंधादिभिः सम्पूज्य ततो मंत्रेण दीपयेत् ॐ शस्त्रा-
 शस्त्रहनानां च भूतानां भूतदर्शयोः । उज्वल ज्योतिपादेहं दहेयं
 ज्योमवन्दिना । ६। यमलोकागतानां च सर्वेषां स्वर्गगामिनाम् ।
 मार्गादशां पितृभूणां च उत्कांसदीपयाम्यहम् । ७। उत्कां दीपयि-
 त्वा दक्षिणाभिमुखो भूत्वा भ्रामयेत् । अत्र देशप्रथा वाजित्रैः
 सह कीयद्दूरं सर्वे ग्राम निवासिनः समारोहेण गच्छन्ति ततः
 समागत्य तदैव पाण्डवोत्सवमपि कुर्वन्ति । उक्तं च प्राच्यनिबंधे
 ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम । उज्वलज्योतिपा
 दग्धास्ते यान्तु परमांगतिम् । ८। यमलोकं परित्यज्य चागनाये महा-
 पथे । उज्वलज्योतिपा वत्सं प्रपश्यन्तो वज्रन्तुते । ९। इति उत्कां
 शांतयित्वा ब्राह्मणैः सवान्धवेश्चमुञ्जीत । अत्र प्रभाते चन्द्रोदय-
 कालीन कर्म परिभापोक्त विधिना कुर्यात् ।

अथ लक्ष्मी पूजा परिभाषा

अथ कार्तिक कृष्णामायां शो क्रोडनदीपदान लक्ष्मीपूजाविधिं वक्ष्ये ॥ उक्तं
 च कालादर्शं—प्रत्युप आश्वयुगदर्शं कृताभ्यंगदिभंगल । भवत्याप्रपूजयं देवीमलक्ष्मीविनो-
 दृतये ॥ १॥ उक्तचब्राह्मे—इयंभूते च दर्शं च कार्तिकप्रथमे दिने । यदास्वास्तिस्तदाभ्यंग
 स्नानं कुर्याद्विनोदये ॥ २॥ मात्स्ये—दीपैर्नाराजनादत्र सैपाक्षीपावलोऽस्मृता । अत्र विशेषो
 हेमाद्रौ भविष्ये—दिवानत्र न भोक्तव्यमृतेवालालुराजनात् । प्रदोष समये लक्ष्मीं पूजयित्वा
 ततः कमात् ॥ ३॥ दीपदृष्ट्वाश्च दातव्याः शक्यावेव गृहेषु च ॥ तत्रैवाभ्यंगमभिधाय—पूर्वं
 प्रभाते समये त्वमावास्यानराधिप । कृत्वा तु पार्वण्यंधादेः दधिद्वीरघृतादिभिः ॥ ४॥ दीपान्दत्त्वा
 प्रदोषे तु लक्ष्मीपूज्य यथाविधिः । स्वर्लोकने न भोक्तव्यं मितवस्त्रां प शोभिना ॥ ५॥ इयं प्रदोष

व्यापिनी ग्राह्या । तुलासंस्थे सहस्रांशी प्रदोषभूत दर्शयोः । उल्काहस्ता नर कुमुं पितृणां
 मार्गे दर्शनम् ॥६॥ दिन द्वये सत्विपर । दगडैकरजनीयोगे दर्शस्यातुपरेऽहनि । तदा विहाय
 पूर्वगुपरेऽह्नि सुखरात्रिके ॥७॥ अपराह्णेच कर्त्तव्यं धादं पितृपण्यस्यैः । प्रदोष समये राजन् ?
 कर्त्तव्या दीपमालिका ॥८॥ इति क्रमः । ससम्पूर्णतिथावेव प्राप्तेरगुवादी न विधि । तत्त-
 त्कर्मकाल व्याप्ते बलवत्वात्सम्पूर्णतिथौ प्राप्त्या संद तिथावप्राप्त्या विध्यनुवाद विरोधाच्चे-
 त्युक्तम् ॥ अत्रैव परा । त्री दर्शऽलक्ष्मी, 'दरिद्रा' नि सारणसुक्तम्, मदन रत्ने भविष्ये—
 एवंगने निशीधेतु जमेनिर्वाधि लोचमे । तावन्नगर नारीभि र्पडिडिगवादाने । निष्काप्यते
 ग्रहशभि र्दरिद्रास्व ग्राहांगणत । अत्रप्रति नवमे वर्षे अमायाग्रहण संप्राप्तिर्भवती त्याशंक्वम् ।
 तदोदय व्यापिन्याममायादिने ग्रहण युताया गौरजनपितृत्वेनं रात्रीच प्राप्तस्ते एतानि
 कर्माणिभवन्ति नवेतिद्वेषोभूते किंकर्तव्यमितितदाह—यैरेतासु तिथिषेतानि कर्माण्युक्तानि
 सप्तितै पूर्वस्मृतिनिर्णय कारिस्तु ग्रन्थेषु पूर्वोक्तकर्म कर्त्तव्यविषय किमपि नखितितमस्ति,
 अननैव स्पष्टमिति । तैस्तु ग्रहणेपितृ धादन्नाक्षणमोजन होम दानादीनि नानाकर्मण्युक्तानि ।
 तान्याह—अत्र धादन्नाह ऋष्यशृंग । चन्द्र सूर्य ग्रहेयस्तु धादंनिधिवदाचरेत् । तेनैव सकला
 पृथ्वीदत्ताविप्रस्यवे कर ११०। पायवीयोक्त । मैटिके योयदासूर्ये अस्ते पर्व संधिषु । गजच्छा-
 यानु ताप्रोक्ता तस्यां धादंप्रकरपयेत् १११। घृतेन भोजयेद्विप्रा न्यूतंभूमौ मसुंसजे । राहु
 दर्शन दत्तहि धादन्नाचन्द्र तारम् ११२। आमश्राद्धं प्रकुर्वति हेम धादन्मथापिवा । उक्तच
 भारते—सर्वे स्वेनापि कर्त्तव्यं धादं वे राहु दर्शने । अक्रुशस्तु नास्तिकया त्वे गीरिव
 सीदति ११३। विश्वानेश्वरोप्याह—ग्रहणश्राधे भौ नतुर्दीपोदातुस्त्व स्युदय । यो ब्राह्मण-
 मृतक सूतके भुक्ते न तन्ध्यापराग भोजन निषेधक कञ्चनविधि संहाराह्वणत्वात् । यत्कलं
 मृतक सूतकान्न भोजने तदेव ग्रहणेऽपि । उक्तं चापस्तम्बेन—सदांके मृतके भुक्ते गृहीते
 शशिभास्करं । छयया हस्तिनश्चैव न भूयः पुरुषोभवंत् ११४। गौदानाद्दि विषयमाह—
 उक्त च पृथ्वी चन्द्रोदये प्रभास स्वएहं—गावो नागास्तिलाधान्यं रत्नानि कनकं महीम् ।
 यो ददाति ग्रहे मध्ये नपुनर्जन्म मालभेत् ११५। गो पजने निर्णायामते लिखितमस्ति—
 वा कुट्ट प्रतिपन्निथा तत्रणा पूजये नृप । पूजना त्रीणि च्चन्देन्ते प्रजागावो महीपति ११६।
 प्रति पदशं सयांगेकोदन्तु यथामतम् । परविधेपुय, क्यो सुत्रदार धनस्य ११७। इति
 केनल यच्च गत—द्वानांवेव ग्रहणास्य संगवाभवति । एपविषयस्तु बलि पूजा विधीनित्वायने
 यत्र दीपाययमायां ग्रहणे भवति सैवप्रतिपद्विद्धाभवति । उदयव्यापिन्यमायां रात्रीदीपावलि
 रणिकायां उक्तं पुनराणमराष्टये—त्रियानिका र्शनिविभेपेत्तेत्वाग्ने त्रियामाप्रतिपदिशुदी ।
 शोभन्तेमुनिभिः पदिष्टे अतोऽग्यापूर्वकुविधे ॥१८॥ दत्ताश्रिमांगभोजनरदिनं मयैर्भ
 भारी गृहगदिने ऽपि दीपागो (रत्नाकर) भवतीतिशास्त्र्यमिति । इति ॥

अथचकार्तिककृष्ण अमायां लक्ष्मीपूजा पद्धतिः।

लक्ष्मीपूजायां कार्तिक कृष्णामावस्या सायंकालप्रदोष व्यापिनी ग्राह्या, उभयोर्मध्येद्वितीयदिने दण्डैकरजनी व्याप्ता ग्राह्या नतुभूतविद्धा । अन्येद्युर्दण्डैकरजनी योगरहिता चेच्चतुर्दशी युता याममायां दीपावली लक्ष्मीपूजा कर्तव्या । अपरे ऽ न्हि सार्धत्रि यामव्यापिन्याममायामपि गौपूजनं रात्रौदीपावल्यादि कर्म करणे कापिन्नतिर्नास्ति, इति सर्वनिर्णयसम्मतिरस्तीति दिक् । विशेषः पूर्वमुक्तः । अथ पूजापद्धतिः । तत्रादौ स्वासने उपविश्याचम्याधारं पूजयित्वा रक्षाविधानंकृत्वाप्राणायामत्रयं विधाय श्रीगणेशप्रणमेत् । हस्तेषुष्पाक्षतंनिधाय—३० सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलोगजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटोविघ्ननाशो गणाधिपः ॥१॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । शुक्लांबरधरदेवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नो पशान्तये ॥२॥ सर्वं मंगलमंगल्ये शिवेसर्वार्थं साधिके । शरण्येऽथम्यकेगौरी नारायणिनमो ऽ स्तुते ॥३॥ इति प्रणम्य । अथ च कृतोपवासः कर्ता स्वगृहे दीपावल्यादि दीपवृक्षांश्च निर्मायादौ वक्ष्यमाण मंत्रेण दीपावलिं दीपयेत् । ३० अग्निज्योतिर्रविज्योतिश्चन्द्रोज्योतिस्तथैव च । उत्तमो ज्योतिषांज्योतिर्दीपो ऽ यं प्रतिगृह्यताम् ॥४॥ पाद्यगंधादिभिःसम्पूज्य प्रार्थयेत्—,दीपावलिं गृह्णाणत्वं सर्वसौख्यप्रदाभव । प्रदोषरूपिणि शिवेमहालक्ष्मि नमो ऽ स्तुते ॥५॥ ततः स्वासने पूजास्थलमेत्य पूर्वाक्तकलशस्थापन पूजाविधिना कलशं संस्थाप्य सम्पूज्यच तत्रकचिन्मनोहरे पीठे सिंहासनेवा स्वेष्टदेवीयंत्रं प्रतिमांवा संस्थाप्य श्री महालक्ष्मी पूजनमारभेत् । ततो रक्तगंधा लोडितपुष्पैर्ध्यायेत् । यासा पद्मासनस्था, विपुलकटि तटी पद्मपत्रायताक्षी । गंभीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया । या लक्ष्मीदिव्य रूपैर्मणिगणरचितैः स्नापिता हेम कुम्भैःसानित्यं पद्महस्तामम वसतुगृहेसर्व

मांगल्ययुक्ता ॥६॥ इति ध्यात्वावाहयेत् । सर्वलोकस्य जननी
 पद्मस्थां चारुभूषणाम् । सर्वदेवमयीमीशां लक्ष्मीमावाहयाम्य
 हम् ॥७॥ ततः पुष्पासनम्—अमलेकमले देविरक्ताम्बर विचित्र
 कम् । सपुष्पकं परं दिव्य मासनं प्रतिगृह्यताम् ॥८॥ ततः पाद्यम्—
 लाजा कुंकुमपुष्पैश्च तरङ्गुलौषधि भिर्युतम् । पाद्यं गृहाण देवेशि
 महालक्ष्मि नमो ऽ स्तुते ॥९॥ अर्घ्यम्—नाना गंधसमायुक्तं
 दिव्यपात्रस्थकंपरम् । अर्घ्यं गृहाण महतं महालक्ष्म्यै नमोनमः
 ॥१०॥ ततः आचमनम्—सर्वशक्ति स्वरूपायै संसारार्णवतारिके ।
 ददाम्याचमनंतस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम् ॥११॥ स्नानीयम्—पंचाश्रुत
 समायुक्तं गंगाजलमनोहरम् । गृहाण विश्वजननि स्नानार्थं
 भक्तवत्सले ॥१२॥ वस्त्रम्—दिव्याम्बरं नूतनं च कौशेयं सुमनोहरम् ।
 दीयमानं पयादेवि गृहाण परमेश्वरि ॥१३॥ मधुपर्कम् कापि-
 लंदधिकुन्देन्दुधवलं मधुनायुतम् । गृहाण मधुपर्कत्वं क्षीरसागर
 कन्यके ॥१४॥ भूषणार्थं पुष्पम्—सागरोद्भव रत्नानां भूषणानि
 त्वया धृता । अतो देवि महालक्ष्मि तुभ्यं पुष्पं ददाम्यहम् ॥१५॥
 ततरचन्दनम्—चन्दनं चसकपूरं मृगनाभि समन्वितम् । गृहाण
 भाल शोभार्थं नमो ऽ स्तुभक्तवत्सले ॥१६॥ सिन्दूरम्—चन्दनो
 परि शोभार्थं सिन्दूरं तिलकप्रिये । भक्त्या दत्तं मया लक्ष्मि सिन्दूरं
 प्रतिगृह्यताम् ॥१७॥ सौभाग्य द्रव्यम्—स्वयं सोभाग्यदे देवि ?
 महालक्ष्मि हरिप्रिये । चूर्णकुंकुमकं पीतददामिसुभगायते ॥१८॥
 ततः सुगन्धिद्रव्यम् । तैलानि च सुगन्धीनि पुष्पसारयुतानि च ।
 मया दत्तानि कान्त्यर्थं गृहाण जगदम्बिके ॥१९॥ पुष्पाणि—ऋतु-
 जानि सुरम्याणि पुष्पपत्रादिकानि च । सुरभीणि विचित्राणि
 गृहाण परमेश्वरि ॥२०॥ पुष्पमालाम्—नाना पुष्प समायुक्तां
 ग्रथितां सुमनोहराम् । मालां गृहाण भोलक्ष्मि ममसौग्यं विवर्धय
 ॥२१॥ ततोद्गावरेण पूजनं पुष्पाक्षतैः कुर्यात् । ॐ चपलायै नमः
 पादौ पूजयामि ॐ चंचलायै नमो जानुनीजयामि । ॐ रुमलायै
 नमः कटि ० ॐ कात्यायै नमो नाभयै ० ॐ जगन्मात्रे नमोजठरं

पू० ७० विश्ववह्नभायैनमो वक्षस्थलं ० ७० कमलवासिन्यैनमो नेत्र
त्रयं पू० । ७० त्रियैनमः शिरः पू० । इत्यंग पूजनम् अथ-पूर्वादि
दक्षा वर्तेनाष्टसिद्धीः पूजयेत् । तत्र पूर्वं, ७० अग्निम्नेनमः । ७०
महिम्नेनमः । ७० गरिम्णेनमः । ७० लघिम्नेनमः । ७० प्राप्त्यै-
नमः । ७० प्रकाम्यायैनमः । ७० ईडितायैनमः । ७० वशितायै
नमः । अथ चपूर्वादि क्रमेणाष्टलक्ष्मी पूजनम् । पूर्वं, ७० आद्य
लक्ष्म्यनमः । ७० विद्यालक्ष्म्यै नमः । ७० सौभाग्य लक्ष्म्यै नमः ।
७० अमृतलक्ष्म्यै नमः । ७० कामलक्ष्म्यै नमः । ७०
सत्यलक्ष्म्यै नमः । ७० भोगलक्ष्म्यै नमः । ७० योग
लक्ष्म्यै नमः । इति सम्पूज्य धूपंकुर्यात् । वनस्पति रसोत्पन्नो
गंधाढ्यः सुमनोहरः । आध्रेयः सर्व देवानां धूपो ऽ यंप्रतिगृह्यता-
म् ॥२२॥ दीपम्-चतुर्वर्तिसुसंपन्नं घृत युक्तं मनोहरम् । तमो
नाशकरं दीपं गृहाण भुवनेश्वरि ॥२३॥ नैवेद्यम्-नैवेद्यं गृह्यतां देवि
भक्ष्यभोज्य समन्वितम् । पद्मसैरन्वितं दिव्यं महालक्ष्मि तमो
ऽ स्तुते ॥२४॥ नैवेद्यान्तचमनीयम्-शीतलं निर्मिलं तोयं कर्पूरेण
सुवासितम् । आचम्यतां ममजलं प्रसीदत्वं महेश्वरि ॥२५॥
ताम्बूलम्-एलालवंगरवदिर नागवह्नि दलान्वितम् । पूगीफलेन
संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥२६॥ त्वत्फलात्फलितं सर्वत्रैलोक्य
सचराचरम् । तस्मात्फल प्रदानेन पूर्णान्कुरु मनोरथान् ॥२७॥
दक्षिणाम्-हिरण्य गर्भगर्भस्थं हेमवीजं विभावसोः । अनन्त
पुण्य फलदमतः शान्तिं प्रयच्छमे ॥२८॥ कर्पूरनीराजनम्-कदली
गर्भं संभृतं दीपितं सुमनोहरम् । आरातिं कथं गृहाण त्वं प्रशान्ना
भव सर्वदा । ॥२९॥ प्रदक्षिणा-यानि यानि च पापानि जन्मान्तर
कृतानि च । तानितानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदेपदे ॥३॥ पुष्पां-
जलिम्-गुलाब सिरताजैश्च कुसुमैर्ऋतुजैः शुभैः । पुष्पाञ्जलिर्मया
दत्ता तव प्रीत्यै नमोऽस्तुते ॥३॥ ततः प्रार्थयेत्-सुरा
सुरेन्द्रादि किरीट मौक्तिकैर्युक्तं सदायत्तवपाद पंकजम् ।
परावरं पातुवरं सुमंगलं नमामि भक्त्या तव काम सिद्धये

। ३२ । भुवनेश्वरि कल्याणि सर्व संपत्प्रदायिनि । सुपूजिता प्रशन्नास्यान्म हालदिम नमो ऽ स्तुते । ३३ । अथमसीपात्र 'दवात' पूजनम् । तत्रादौ ध्यायेत् । सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरंविभ्रतीम् घोरास्या शिरसास्त्रजंसुरुचिरामुन्मुक्तकेशवलिम् । सृक्कासृक्प्रवहां रमशान निलयां श्रुत्योः शवालंकृतिंश्यामांडीकृतमेखलां शयकरेदेवींभजेत्कालिकाम् ॥ ३४ ॥ ॐ महाकल्पै नमः, इति पाद्यगंधादि भिः सम्पूज्यावरण पूजनं विदध्यात् । ॐ काल्यै नमः । ॐ कपालिन्यै नमः । ॐ फुल्लायै नमः । ॐ कुरकुल्लायै नमः । ॐ विरोधिन्यै नमः । ॐ विप्रचिन्तायै नमः । ॐ उग्रप्रदत्तायै नमः । ॐ दीव्यायै नमः । ॐ नीलायै नमः । ॐ घनायै नमः । ॐ बलाकायै नमः । ॐ मात्रायै नमः । ॐ मुद्रायै नमः । ऐतैर्नाममंत्रै रगंधाक्षता दिभिः सम्पूज्य लेखनीं पूजयत् । कृष्णाननेद्विजिह्वेचचित्रगुप्तकरस्थिते । सदक्षराणांपत्रेत्वलेख्यंकुरु सदा मम ॥ ३५ ॥ ॐ प्रणोदेवीसरस्वतीवाजेभिर्वाजिनीवती । यजं वष्टुधियावसु ॥ ॐ सरस्वतीस्वरूपायैलेखन्यै नमः । पाद्यादिभिः सम्पूज्यप्रार्थयेत्—याकुन्देन्दुतुपारहारधवला याशुन्नवम्बावृता । यावीणावरदण्डमण्डितकरा याश्वेतपद्मानना । या ब्रह्माच्युत शङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदावन्दिता, सामांपातुसरस्वतीभगवती निःश्लेषजात्यापहा ॥ ३६ ॥ ततोद्भ्यनिधिस्थाने धनाध्यक्षंकुबेरं पूजयेत् । ॐ कुबेराय नमः कुबेरमावाहयामिस्थापयामि—इत्यावाह्यगन्धपुष्पाक्षत धूपदीपनैवेद्यादिभिः सम्पूज्यप्रार्थयेत् । धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपाय च । भवन्तुत्वत्प्रसादान्मे धनधान्यादिसम्पन्दः ततस्तुला (तराजू) पूजनम्—ध्यायेत्—नमस्तेसर्व देवानांशक्तित्वेसत्यमाश्रिता । साक्षीभूताजगद्धात्री निर्मितायिस्व योनिना ॥ ३७ ॥ ॐ तुलायै नमः इतिपूर्ववत्सम्पूज्यनीराजनंकुर्यात् अग्निज्यांतीरविज्यांतिश्चन्द्रोज्योतिस्नधैव च । उतमः सर्वतेजस्तु दीपो ऽ यं प्रतिगृह्यताम् ॥ ३८ ॥ प्रार्थयेत्—मातात्वंप्राणिमाघ्राणां देवानांमृष्टिसम्भवे । आग्याताभृतलेदेवी महालक्ष्मिनमो ऽ

स्तुते ॥३६॥ धनंधान्यमहीर्हर्षमायुः कीर्तिशः श्रियम् । सर्वदा
 देहिमेद्रव्यं महालक्ष्मिनमो ऽ स्तुते ॥४०॥ ततः प्रसादंगृहीत्वा
 पूर्वोक्तविधिना पितृवृणां मार्गदर्शनायोत्कांदीपयित्वा तैर्मागं
 सन्दर्श्य विप्रान्भोजयित्वासवान्धवैः स्वयमपिभुंजीत । ततो
 निशायांवादित्र संगीतादिगायनैर्जागरणंकुर्यात्-तत्रैत्रनिद्रार्ध
 मीलितलोचनेरात्रिचतुर्थयामेनार्यः सूर्पडिंडिमवादनैर्ग्रहाद्ग्रहां-
 गणवह्निर्दरिद्रां निष्कारायेयुः । तत्रमंत्रः—ग्रहाद्ग्रहांगणाच्चैव
 दरिद्रेगच्छुस्तवरम् । विस्मृत्यामपिदुष्टदेवंमात्रपादार्पणंकुरु ॥४१॥
 इतिदरिद्रानिष्कारय हस्तौपादौप्रक्षालयनिवसेयुः ।

इति दीशवर्ला महालक्ष्मीपूजापद्धतिः ।

॥ बलिराजकृत्यम् ॥

अथ च बलिराजप्रतिपदमाविद्धाग्राह्या, द्वितियाचन्द्रदर्शन
 विद्वान कदापिग्राह्या तत्रप्रतिपदिप्रातःकाले सर्वतैलाभ्यङ्गस्नानं
 कुर्युः । ततः स्त्रियोभित्तौद्वारेपुरङ्गरञ्जित चित्राणिकुर्वन्तु । अत्र
 दिनेगोवधर्दनपूजनंगौकीडनादिकमपिभवति । इतिशिवम् ॥

अथैकादशी निर्णयः ॥

तत्रैकादश्युपवासोद्वेया निषेधपरिपालनात्मको व्रतहपश्च । तत्राथ.—नगंखेनपिषे-
 तोयंनरादेत्कर्मसूत्ररी । अग्निपुराणे—ग्रहस्थो ब्रह्मचारीवा आहिताग्निस्तथेवच एकाद-
 श्यान भुञ्जीतपक्षयोद्यमयोरपि उक्त च शिवप्रमांके—वैष्णवोवाध शैवोनाकुचदिकादशीव्रतम् ।
 उक्तंचकालादशौ । विधनायाग्नस्थस्थ यतेश्वेनादशीद्वये । उपवासोग्रहस्थस्य शुक्लायामेवपुत्रिण,
 भुजेनिषेध, कृष्णाय सिद्धिस्तस्य ततो व्रते । अथैकादश्यादशमीविधाद्विवा तत्रादृणोदयवैध
 सयौदयवैधश्च उक्तचाद्योवैधोगारुहे—दशमीवैधसंतुजो यदिस्यादरणोदय । नैवोपौष्यं
 वैष्णवेन तद्विनैकादशीव्रतम् । उक्तंचब्रह्मवैवर्ते—चनष्वापटिना प्रातररुणोदयनिश्चयः

चतुष्टयविभागीत्रैवेधादीनां किलोदितः । अरुणोदयवेधस्यात् सार्धतुष्टिकात्रयम् । अतिवेधोद्वि-
 टिकः प्रभासंदर्शनाद्रवेः महावेधोऽपितत्रैवदृश्यतेकौनदृश्यते । तुरीयरतत्र विहितोयोगः
 सूर्योदयवृषैः । उक्तंच मदनरत्ने—अन्यस्तदयवेधः अतिवेधादयः सर्वेयेनेधास्तिथिपुस्मृताः
 सर्वेप्यवेधाविज्ञेयावेधाः सूर्योदयेमतः । गृहस्थस्मार्तैस्तुस सूर्योदया दशमीविद्वावर्ष्या अन्याप्राह्या
 च वैष्णवैस्तुपट्टंचाराशङ्कादिमकार्यादशम्यां सत्यायाविद्वावर्ष्या । एकादशीद्वादशीचेत्युभयं
 वर्धतेयदा । तदापूर्वदिनंत्याज्यंस्मार्तैर्प्राह्यंपरंदिनम् अरुणोदयवेधोऽत्रवेधः सूर्योदयेतथा ।
 उक्तीद्वादशमीवेधो वैष्णवस्मार्तयोः क्रमात् । ब्रह्मर्ष्यैर्दत्तकपालधेयउक्तः—अर्धरात्रौतुकेपाचि-
 श्शम्यां वेधउच्यते । कपालत्रेधइत्याहु राचायविहरिप्रियाः उक्तंच हैमाद्रिणा दशम्या.संगदोपेण
 अर्धरात्रात्परेणतु । वर्जयेच्चतुरोयामान् संकल्पार्चनयोगदा । एतन्तु वैष्णवैर्वर्ष्यम् उक्तंचमाधवेन
 एकादशी द्वादशी चेत्युभयंवर्धतेयदा । तदा पूर्वदिनं त्याज्यंस्मार्तैर्प्राह्यंपरंदिनम् उपवासा ऽ
 सामर्थ्यंतु मार्कण्डेयकौर्मयो एकभक्तेननक्तेन तथैयायाचितेन च । उपवासेदानेन ननिद्वादशिको-
 भवेत् । नक्तकालमाह—दिवसस्याष्टमेभागे मन्दीभूते दिवाकरे । तत्रनक्तंविजानीयात्तनक्तं
 निशिभोजनम् । उपवासेपारणमाह—संकटेविपमे प्राप्ते द्वादस्यां पारयेत्कथम् । अद्विस्तु
 पारणकृत्यात्पुनस्तुक्तं दोषकृत् । संकटे त्रयोदशीं श्राद्धप्रदोपादौ-द्वादस्यां च प्रथमपाद-
 मतिक्रम्य पारणकार्यम् द्वादस्याः प्रथमपादोहरिवासर संज्ञितः तमतिक्रम्य कुर्वीतपारणं
 विष्णुतत्परः प्रणवविस्तारभया दलम् विशेषो निर्णय ग्रन्थेषुदृष्टव्यः । इत्येकादशी निर्णयः

अथैकादशी व्रतोद्यापन विधि.—उक्तं ब्रह्मवैवर्ते नाराद नारायण संवादे-
 नागद उवाच—अधुना ध्रुवु मिच्छामि सर्वंपाचिप्तितं मम । एकादशी व्रतस्यास्य विधानं
 वद निश्चितम् ॥ अहो ध्रुवोऽश्रुतं किं चिन्मतमेदाप्रनिश्चितम् ॥ ध्रुवीनांकारण मुखाच्छ्रुतं
 कौतूहलमन ॥ नारायण उवाच—एकादशी व्रतमिदं व्रताना दुर्लभंवरम् । श्रीकृष्ण
 प्रीतिजनकं तप. श्रेष्ठं तपस्विनाम् ॥ एकादशी व्रतमिदं व्रतानां च परं तथा । कर्त्तव्यं च
 चतुर्णां च वर्षाणां नित्यमेवच । यतीनां वैष्णवानां च विप्राणां च विशेषतः । कृत्वा दृविष्यं
 पूजाहणेन च सुक्ते पुनर्जलम् । एकाको कुश शयायां नक्तंशयनमा चरेत् । ब्राह्मे शुद्धं उतथाय
 प्रातः कृत्यं विधाय च । नित्यकृत्यं विधायथ तत. स्नानं समाचरेत् । व्रतोपवास संकल्पं
 धी कृष्ण प्रीति पूर्ववम् । कृत्वा संध्यां तर्पणं च विद्यायान्दिक माचरेत् । नित्य पूजां दिने कृत्वा
 व्रतद्रव्यं समा हरेत् । षोडशोचारं प्रकृष्टं विधि बोधितम् ॥ आचम्य धीहरिस्मृत्वास्वस्ति
 वाचन मारभेत् ॥ देवपूजं समावाह्य पृथक्धानैः समर्चयेत् ॥ पूजा पंचोपचारेण प्रकृष्टेन
 दिवक्षण ॥ गणेश्वरं दिनकरं वन्दि विष्णुं शिवं शिवाम् ॥ सम्पूज्यतान्प्रणम्याथ व्रतं कुर्याद्
 रिस्मरन् । नारायणेषुपदं च यदि कर्ममाचरेत् । निर्धनैमित्तिकं तस्य सर्वं तन्निफलंभवेत् ॥

आरोप्य मङ्गलपटं भद्रोपरि शुभेक्षणे ॥ घटाधः कंठिकायां च भ्वादि लोकां चस्थापयेत् ॥
घटोपरिन्यसेत्तत्र पार्श्वं तण्डुलपूरितम् ॥प्रतिमां स्थापयेत्तत्रसुवर्णा विष्णु रूपिणीम् ॥ पूर्वदले
मध्यभागे रुद्रिमणी सखिसंयुक्ताम् । तथादक्षिणभागे च सत्य भामां च स्थापयेत् । जाम्बवती
पश्चिमं च काहिन्दी मुत्तरेकमात् । सहस्राणां चतुर्भिस्ता दासीनां स्थापयेद्गती ॥ देलाभ्यन्तर
भागेषु क्रमेणैताश्चस्थापयेत् ॥ शंखं चक्रं गदां पद्ममाग्नेया दिपुस्थापयेत् ॥ पुरतः पक्षिराजं च
वाहनं सर्पं मङ्गलम् ॥ परितः स्थापयेद्धोमां ल्लोकपालांश्च रत्नकम् ॥ कुर्यादाराधनं विष्णोः
शक्त्या भक्त्या जगद्गुरोः । देवालये नदीतीरे शुचांदेशेऽथवागृहे । सम्पूज्य विधिवद्देवं
स्तुत्वास्तौत्रैः प्रसन्नधीः । रात्री जागरणं कुर्यान्महात्म्य श्रवणादिभिः ॥ एकनिमेष भाषेन गीत
मृत्यादिभिःसह । प्रभातायान्तु शर्व्यां कृत्वाचावश्यकं विधिम् ॥ अग्निं संस्थाप्य विधिवत्पयसि-
धपयेच्चक्षुः । पीरुषेणसक्तौ प्रत्यृचं जुहुयादृतम् ततो होमाचसामि च गामरोर्गापयस्विनोम् ।
दद्याद्धोमस्य पुर्यर्थं आचार्याय सदक्षिणम् । शक्यादादि भूपणानि वामासि विविधानि च ॥
आचार्याय प्रदेयानि पदकानि च दक्षिणा । यदीच्छेद्दात्मनः श्रेयोव्रतस्या विफलफलम् । तैवा-
चार्यं प्रयत्नेन सन्तोष्योऽथनसंसयः शुजायाश्चैव प्री त्यर्थं ब्राह्मणम् द्वादशान्युभाग् ॥
कृष्णायाश्चापि प्रीत्यर्थं तथा द्वादश ब्राह्मणान् ॥ सम्पूज्य विधिवत्तत्र वैशवादिकनामभिः ।
वस्त्रोपवीत भूपादुचैरलं कृत्य प्रपूजयेत् ॥ पववात्र पूरितान् कुम्भान्सामानाश्च सदक्षिणान् ॥
ततः सौपस्करपीठ साचार्याय निवेदयेत् ॥ भुञ्जीत तदनुवातः स्वेष्यन्धुजनैःसह ॥ इत्याहं
भगवान् व्यासः पुराणि ब्रह्मसंहिते ॥

इत्येकादशी व्रत विधिः

॥ अथैकादशीव्रतोद्यापनपद्धतिः ॥

अथचैकादशयुद्यापनंतु प्रबोधिण्यांवाभीष्मैकादशयामथवा
माघेवैशाखेवित्तसमृद्धौवाकुर्यात्—तत्रादौ पूर्वदिनेदशम्यांकृत
नित्यक्रियएकवारं हविष्यंसुक्त्वा रात्रौभूमौसुखेनोपविशेत् ।
द्वितीयदिनेएकादश्यां गङ्गादौगृहेवा स्नानंकृत्वा नित्यनैमित्तिकं
विधायपितृभूतसन्तर्प्यच निराहारं व्रतंकुर्यात् । व्रतकर्तुमसक्तंरचे
द्ब्राह्मणद्वारानिष्क्रयंदत्त्वाकारयेत् । ततःपूर्वोक्तविधानेनस्वेच्छ्या
नुसारतरश्चतुर्हस्तायतविस्तृतं सपादहस्तविस्तृतं वा सर्वतोभद्र

मण्डपंसमुच्छिनक्तदलीस्तम्भनिर्माय रेखादिभिर्विरच्यच नाना प्रकारेणवस्त्र मालादिभिरलंकृत्यपूजोपचारसामग्रीं सम्पाद्य हस्तौ पादौप्रक्षाल्यच निशामुखेदीपंप्रज्वालयासनउपविश्याचम्य रक्षां विधायप्राणायामत्रयंकृत्वा संकल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रप्रवरो ऽ हं करिष्यमाणैकादशी व्रतोद्यापन शान्तिकर्मणि ममाश्विलपापक्षयपूर्वकं चातुर्वर्गफलप्राप्तये श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं मद्यावध्याचरितैकादशीव्रतानामुद्यापनंच-तत्रा-दौनिर्विघ्नतासिद्धयेगणपत्यादि नवग्रहान्तपूजनञ्चकरिष्ये । तत आचार्यब्राह्मणंसम्पूज्य वरणद्रव्यंहस्तेकृत्वा सङ्कल्पंकुर्यात्—अथ पूर्वोच्चारिते गुणविशिष्टायामेकादश्या मेकादशीव्रतोद्यापनकर्मण्य मुकगोत्र प्रवरामुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्धरणद्रव्यै राचार्यकर्मकर्तुं त्वामहंवृणे ॥ हस्तेदत्त्वाप्रार्थयेत्—ॐ आचार्यस्तुयथास्वर्गं देवानां चबृहस्पतिः । तथात्वंममयज्ञे ऽ स्मिनाचार्यांभवसुव्रत ॥ प्रत्युक्तिः भवानीति-आचार्योब्रूयात् ॥ ततआचार्यः स्फुरितवाचनंपठि-त्वाचपूर्वोक्त विधिनागणेशादिदेवानां पूजनंकृत्वा सर्वतोभद्र पूजापद्धत्यनुसारेण सर्वतोभद्रमण्डले देवान्नावाहःसम्पूज्यच ततः कच्चिन्मनोहरं ताम्रकलशंपञ्चपल्लवयुतं जलपूर्णवेद्यां संस्थाप्य वक्ष्यमाणेन विधिनापूजामारभेत् ॥ तत्रादौकणिकायां पुष्पं गृहीत्वा ऽऽ वाहयेत् ॥ ॐ भूः पुरुषमावाहयामि । ॐ भुवः पुरुषमावाहयामि । ॐ स्वः पुरुषमावाहयामि ध्यायेत् । ॐ आगच्छदेवदेवेश जगद्योनेरमापते । शुद्धेहस्मिन्नधिष्ठाने सन्निधेहिऋषां कुरु ॥ ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ सभूमि र्तं सर्वतस्पृत्वा ऽ त्यतिष्ठद्दशांगुलम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीयुतंपुरुषं मध्ये प्रतिमायामावाहयामि स्थापयामिपूजयामि । ततः प्रति-मायाः परितः ॐ अग्नयेनमः आ० स्था० ॐ इन्द्रायनमः आ० स्था० ॐ प्रजापतयेनमः आ० स्था० ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः आ० स्था० । ॐ ब्रह्मणेनमः आ० ॐ वसुदेवायनमः० ॐ रामा यनमः० ॐ अश्विनमः० । इत्यावाहैवंसर्वत्र । ततःकमलपूर्वदलस्य

मध्यभागे रुक्मिणीमा०--आयातुरुक्मिणीदेवी श्रीकृष्णप्राण-
वल्लभा । कमले ऽ न्तःपूर्वदले ससखीगणमण्डिता ॥ ३० रुक्मि-
ण्यैनमः स्था० । जामवन्तीम् ।-आगच्छागच्छकल्याणि जाम्ब-
वन्तिहरिप्रिये । कमले ऽ न्तर्दक्षदले ससखीवृन्दवन्दिते ॥ ३०
३०जाम्बवत्यैनमः आ० स्था० ॥ आगच्छदेविकालिन्दि रासेश
प्राणवल्लभे । पंकजे ऽ न्तः परदलेससखीगणशोभिते ॥ ३० कालि-
न्द्यैनमः आ० स्था० । ततः सत्यभामासुत्तरे-आवाहयामिदेवेशीं ।
सत्यभामाहरिप्रियाम् । उदकूपकज्जपत्रान्नः सखीगणसुमण्डिते ।
३० सत्यभामायैनमः आ० स्था० । तत आग्नेये ३० पांचजन्या-
यनमः आ० स्था० । नैऋत्ये ३० सुदर्शनायनमः आ० स्था० ।
वाव्ये-३० कौमोदक्यैनमः ईशाने-३० महापद्मायनमः आ० स्था-
पू० ॥ पुरतः ३० सामध्वनिशरीरस्त्वं वाहनंकेशवस्यच । विप-
पापहरोनित्यमतः शान्तिप्रयच्छुमे ॥ ३० वैनतेयायनमः आ०
स्था० । ततः पूर्वादिपुकमतो लोकपालान्नावाहयेत् । पूर्वे-३०
इन्द्रायनमः आ० स्था० एवंसर्वत्र ३० अग्नयेनमः ० ३० यमाय-
नमः ३० निर्ऋतयेनमः ० ३० वरुणायनमः ० ३० वायवेनमः ० ३०
३० सोमायनमः ० ३० ईशानायनमः एवं नाममन्त्रैरावाह । ३०
एतन्तेदेवसवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतयेब्रह्मणे ॥ तेनयज्ञमवतेनयज्ञ-
पतिन्तेनमामव ॥ मनोज्ञातिर्जुपता भाज्यस्यवृहस्पतिर्यज्ञमिमन्त-
नो त्वरिष्टंयज्ञर्तं समिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवास ऽ इहमादयन्ता-
मोऽंशः प्रतिष्ठ ॥ इतिप्रतिष्ठाप्यपूजयेत् पुष्पं धृत्वाध्यायेत्-३०
नवीननीरदोह्लासश्यामसुन्दरविग्रहम् ॥ शरत्पार्वणचन्द्राभानव
द्यास्यमधुत्तमम् ॥ ध्यानगम्यंदुराराध्यं ब्रह्मादीनांबवन्दितम् ॥
आवाहयामिदेवेशं हरिमेकादशीप्रियम्-अर्घ्यम्-इदमर्घ्यपवित्रं
मेशङ्गतोयसमन्वितम् । पुष्पदूर्वाचन्दनाक्तं गृह्यतांभक्तवत्सल ॥
पाद्यम्-पादप्रक्षालनार्हतत्सुवर्णपात्रसंस्थितम् । सुवासितंशीतलं
चगृह्यतां राधिकापते ॥ आसनम्-आसनंपरमं दिव्यं रत्नसार
परिच्छदम् । नानावर्णविचित्राह्यंगृह्यतांपरमेश्वर ॥ पंचामृतम्-

दधिदुग्धघृतक्षौद्रशर्करामिश्रितंपरम् ॥ पंचामृतंगृह्णत्वंहरे चैका
 दशीप्रिय ॥ स्नानीयम्—पवित्रंतीर्थजंदिव्यं स्नानीयंमद्गलात्म-
 कम् । गृहाणपरयाभक्त्या सत्यभामापतेप्रभो ॥ स्नानान्नाचम-
 नीयं समर्पयामि—यजोपवीतम्—सावित्रीग्रन्थिसंयुक्तं स्वर्णतन्तु
 विनिर्मितम् । गृह्णतांदेवदेवेशरचितंचाम्कामणा । वस्त्रम्—वस्त्रं
 क्षौमंविशुद्धाभंनिर्मितंविश्वकर्मणा । कल्पितंपरयाप्रीत्या गृह्णतां
 राधिकापते । चन्दनम्—प्रधानादरणीयश्च सर्वमंगलकर्मणि ।
 प्रह्वयतांदीनवन्धो गन्धो ऽयं मंगलप्रदः ॥ पुष्पम्—जातीचम्प
 कपुष्पाणितुलसीमिश्रितानिच । गृहाणदीनवन्धोत्वं सत्यभामा
 प्रियप्रभो ॥ (अत्रकतिचित्पुराणेष्वंगपूजोक्तासेयम्) ॐ दामोदरा
 यनमःपादौपूजयामि । ॐ माधवायनमःज्ञानुनीपूज० । ॐ कामपत
 येनमःगुह्यं० ॐ वामनायनमःकटिं० ॐ पद्मनाभायनमःनाभि
 पू० ॐ विश्वमूर्तयेनमःउदरं० ॐ ज्ञानगम्यायनमःहृदयं पूज० ।
 ॐ श्री कण्ठायनमः कण्ठं पू० । ॐ सहस्रबाह्वेनमः बाहू पू० ।
 ॐ ध्यानगम्यायनमः चक्षुषीपू० । ॐ उरगायनमः ललाटं पू० ।
 नाकसुरेश्वरायनमः नासां पू० ॥ श्रवणेशायनमः श्रवणे पू० ।
 ॐ सर्वकामदायनमः शिखां पू० । ॐ सहस्रशीर्ष्णं नमः शिरः
 पू० । ॐ सर्वस्वरूपिणेनमः सर्वांगंपूजयामि । धूपम्—रसोवृक्ष
 विशेषस्य नानाद्रव्य समन्वितः । सुगन्धयुक्तः सुखदोषृपो ऽयं
 प्रतिगृह्यताम् ॥ दीपम्—दिवानिशं सुप्रदीप्तो रत्नसार विनिर्मि
 तः । घनध्वान्त विनाशाय दीपो ऽयं गृह्णतांहरे ॥ मधुपर्कम्—
 सर्वेषां प्रीतिजनकं सचृतं मधुरंमधु, पात्रस्थंमधुपर्कं यद्गृहाण
 रुक्मिणी पते ॥ नैवेद्यम्—एकादशयुथापने चतुर्विंशति संख्यकानि
 नैवेद्यानि दद्यात् ।—मोदकां लड्डुकांश्चापि घृतपूरकमंडकान् ।
 सोहोलिकादिकंसार सेवासक्तुफलानि च । वटकानपायसं दुग्धं
 शालिदध्योदनंतथा । इंडिरकाः पूरिकाश्चापूपान् गुडमोदकान् ॥
 तिलपिष्टं खण्डपिष्टं लाजादुग्धं सशर्करम् । रम्भाफलंच सचृतंमुद्ग
 चूर्णं गुडौदनम् । नैवेद्यंगृह्ण श्रीकृष्ण उच्चापनविधौ हरे ॥ आच-

मनम्—निर्मलं जान्हवीतीयं सपवित्रं सुवासितम् । पुनराचमनी
यं च गृह्यतां मधुसूदन । ताम्बूलम्—एलाग्यादिर संयुक्तं कर्पूरादि
सुवासितम् ॥ मया निवेदितं नाथ ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् । उपाय-
नम्—उपानीत मिदं द्रव्यं यावच्छुक्तिं प्रकल्पितम् । गृहाणानाथ
नाथत्वं हरेचैकादशीप्रिय ॥ पुष्पमालां हस्ताभ्यां दर्शयित्वा च ।
नानाप्रकार पुष्पैश्च ग्रथितं सूक्ष्मतन्तुना ॥ प्रवरं भूषणानां च मातुषं
मेप्रतिगृह्यताम् ॥ मंत्रपुष्पांजलिम्—हे कृष्ण राधिकानाथ करुणा
सागरप्रभो ! संसार सागरे घोरेमां समुद्धरमाधव । शत जन्म
गतायाता दुद्विग्नस्य ममप्रभो ॥ स्वकर्मपाशनिगडै र्वन्धस्य मो
क्षं कुरु । प्रणतंपादपद्मेते पश्यमां शरणगतम् ॥ मार्तण्डतनयाद्
भीतिं पाहिमां भक्तवत्सल । भक्तिहीनं क्रियाहीनं विधिहीनञ्च
वेदतः । वस्तुमंत्रं विहीनं यत्तत्सम्पूर्णं कुरुप्रभो । वेदोक्तविहिता
ज्ञानात्स्वांग हीनेचकर्मणि ॥ त्वन्नामोच्चारणेनैव सर्वपूर्णं भवेद्ध
रे ॥ ततः सफलाद्यर्घ्यामेकरे कृत्वोपरितोदक्षिणहस्तमुतानंन्यस्य
हे कृष्ण द्वारिकावासिहृदमी कांतदयानिधे । गृहाणार्घ्यं मयादत्तं
व्रत संपूर्तिं हेतवे ॥ फलं पुरतो निधायाद्यर्घ्यं जलेन देवं स्नापयेत् ॥
ततः कथाश्रवणार्थमाचार्यं व्यासत्वेन वृणुयात् । व्यास स्वरूपिणं
ब्राह्मणं संपूज्य वरणं द्रव्यं करे कृत्वा ॐ श्रद्धेहेत्यादि देशकालौ
सकीर्त्याद्यैकादश्यां शुभपुण्यतिथौ—अमुकगोत्र प्रवरो ऽ ह्यमुक
शर्माकर्तव्यैकादश्युद्यापन कर्मणि देवपूजनानन्तरमद्यानिशायां ।
शङ्खशतैकादशी माहात्म्यपारायण श्रवणं कर्तुमेभिर्वासांगुलीय
धौतवस्त्रादि वरणद्रव्यैरमुक शर्माणं ब्राह्मणं कथावाचनार्थं व्या-
सत्वेन त्वामहं वृणे । इति वरणद्रव्यं दत्त्वा करवाणीतिप्रत्युक्तिः ॥
ततेरात्रौ माहात्म्य श्रवणादिभिर्जागरणं कृत्वा द्वितीयदिने नित्य
कर्मविधायाचार्यावाहितदेवताः । संपूज्य होमार्थं मंडपनि-
र्मायाग्निस्थापनपद्धत्यनुसारेण पंचभूसंस्कारान्कृत्वा तेनैव
पद्धत्या घृतोक्तद्वादशाहुत्यनंतरंप्रधानहोमंपायसेन कुर्यादभावे
यवनिल घृतादिभिः कुर्यात्-ततः क्षीरमानीय तस्मात्पायसात् ।

ॐ पवित्रंतेविततम् । इति मंत्रेण किञ्चित्पृथग्धृत्यपात्रान्तरे
स्थापयेत् । तदुक्तं व्रतराजेपायसाद्घृतं किञ्चित्प्रापणं तत्प्रकीर्ति-
तम् । एतदेवप्रापणमग्रे देवाय च निवेदयेत् । तत्रादौ घृतेन—ॐ
सहस्रशीर्षा० १६ ऋक् ॐ अग्नये स्वाहा ॐ इन्द्राय स्वा० ॐ
प्रजापतये स्वा० । ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वा० ॐ ब्रह्मणे स्वाहा
ततो घृताक्तपायसेन ॐ वसुदेवाय स्वाहा ॐ रामाय० ॐ
श्रियै० ॐ विष्णवे० ॐ विष्णोनुकमिति तिस्रणादीर्घतमा ऋषि
स्त्रिष्टुच्छन्दः विष्णुर्देवता होमे विनियोगः । ॐ विष्णोर्नुकंवी-
र्याणि प्रवोचंयः पार्थिवानि विममेरजासि स्वाहा । ॐ तद-
स्यप्रियं स्वा० ॐ प्रतद्विष्णुस्तवतेवीर्येण मृगोनभीमः कुचरो
गिरिष्ठाः । यस्योरुपु त्रिपुविक्रमणेष्वाधिच्छियन्ति भुवनानि विश्वा
स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा ॐ भुवः स्वा० ॐ स्वः स्वा० ॐ भूर्भुवः
स्वः स्वा० ॐ केशवाय नमः स्वा० ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय०
ॐ गोविन्दाय० ॐ विष्णवे मधुसूदनाय० ॐ त्रिविक्रमाय० ॐ
धामनाय० ॐ श्रीधराय० ॐ हृषीकेशाय० ॐ पद्मनाभाय० ॐ
दामोदराय० ततो घृतेन—ॐ स्त्रीचतुः सहस्रपरिवृतायै राक्मण्यै
स्वाहा ॐ स्त्रीचतुः सहस्र० सत्यभामायै स्वाहा । ॐ स्त्रीचतुः
सहस्र० जाम्बवत्यै स्वाहा ॐ स्त्रीचतुः सहस्र० कालिन्यै स्वाहा ।
ॐ शंखाय० ॐ चक्राय० ॐ गदायै० ॐ पद्माय० ॐ वैनते-
याय० ॐ इन्द्राय० ॐ अग्नये० ॐ यमाय० ॐ निर्ऋतये० ॐ
वरुणाय० ॐ वायवे० ॐ सोमाय० ॐ ईशानाय० । ततः सर्व-
तोभद्रस्थ ब्रह्मादिमंडलदेवतास्तत्तन्मंत्रैर्वा नाममंत्रैर्यवाज्य
तिलैर्होमयेत् । ततः स्विष्टकृद्धोमं कृत्वा पूर्णाहुत्यर्थं यजमानः
घृताक्तं श्रीफलं निधायोतिष्ठन्सन्—ॐ पूर्णादर्वीत्यस्यौर्णनाभ
ऋषिरनुष्टुच्छन्दः इन्द्रो देवता पूर्णाहुतिहोमे विनियोगः । ॐ
पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहा ऽ इपमूर्ज
दं० शतक्रतोः स्वाहा । ततः पृथक्स्थापितपायसं घृताभ्यक्तं पात्रे
धृत्वा चक्ष्यमाणं मंत्रेण निवेदयेत्—ॐ त्वामेकमाद्यं पुरुषं पुराणं

नारायणं विश्वसृजयजामः । त्वयैषभागो विहितो विधेयो गृहा
एहव्यंजगतामधीश । ततो ऽ ग्निचतुर्वारं प्रदक्षिणीकृत्य ॐ
भिदि विश्वाअपद्विषः । इतिमंत्रेण धरण्यां जानुनीनिपात्यधु-
व सूक्तं पुरुषसूक्तंवापठित्वा अष्टौपदानि प्रतिदिशं वक्ष्यमाणमंत्रै
स्त्यक्त्वा गच्छेत् । मन्त्राः ३० कृष्णाय वासुदेवाय हरयेपरमात्मने
शरण्यायाप्रमेधाय गोविन्दायनमोनमः । नमः स्थूलाय सूक्ष्माय
व्यापकाव्यापकाय च । अनन्ताय जगद्धात्रे ब्रह्मणे ऽ नन्तमूर्तये ।
अव्यक्तायाखिलेशाय चिद्रूपायगुणात्मने । नमोमूर्तायसिद्धायपरा
यपरमात्मने । देवदेवायवंध्याय परायपरमेष्ठिने । कर्त्रे विश्वस्य
गोप्त्रे च तत्संहर्त्रेचतेनमः । ततो देवायनिवेदितं पायसमानीय
शिरसिधृत्वा केवैष्णवाः केवैष्णवाः केवैष्णवाः । इत्युच्चैर्घोषयेत्
ततः समानाः प्रतिवदेयुः । वयं वैष्णवाः इति वारत्रयंघोषयेयुः
ततस्तेभ्योहविर्दत्त्वा स्वयमनेन मंत्रेण प्राशयेत् ॐ नमोभगवते
वासुदेवय, इदममृतमहं प्राशामि इतिप्रारभ्य—आचम्य—प्राणा-
नायम्य यजमान आचार्योवापुनर्होम समीपमागत्य ॐ सिद्धये
स्वाहा इत्यग्नावाज्यं जुहुयान्—ततः ३० यतइन्द्रभयामहेततोनीऽ
अभयंकुरुशत्रुः कुरुप्रजाभ्योभयंनः पशुभ्यः इत्यात्मानमभिमंत्र-
येत् । ततो यजमानः सांगतासिद्धयर्थं माचार्यादीन् विध्युक्तप्र-
कारेण सम्पूज्य दक्षिणादिभिः प्रतोप्याचार्याय सालंकारां सव-
त्सांगां च दद्यात् । ततश्चतुर्विंशदामान्नानि सयज्ञोपवीत पूगीफल
दक्षिणानि सम्पूज्य संकल्पं कुर्यात्—अद्यहेत्यादि संकीर्त्यामुको
ऽहं कर्तव्यैकादशी प्रतोद्यापनकर्मणः सांगतासिद्धये शुक्लैकादशी
निमित्तं केशवादि नाममंत्रोच्चारणेन तथा कृष्णैकादशी निमित्तं
शंकर्यणादि नाममंत्रोच्चारणेन चतुर्विंशति ब्राह्मणेभ्यो
नानागोत्रेभ्योदास्ये—३०तत्सत्कृष्णार्पणमस्तु नममवक्ष्यमाणमत्रैः
प्रत्येकायदद्यात्—ॐ केशवायनमः १ ॐ नारायणायनमः २ ॐ
साधवायनमः ३ ॐ गोविन्दायनमः ४ ॐ विष्णवेनमः ५ मधुसू-

दनायनमः ६ ॐ त्रिविक्रमायनमः ७ ॐ वामनायनमः ८ ॐ
 श्रीधरायनमः ९ ॐ हृषीकेशायनमः १० ॐ दामोदरायनमः ११
 इतिशु० ॐ संकर्षणायनमः १ ॐ वासुदेवायनमः २ ॐ प्रद्युम्ना-
 यनमः ३ ॐ अनिरुद्धायनमः ४ ॐ पुरुषोत्तमायनमः ५ ॐ अधो-
 क्षजायनमः ६ ॐ नारसिंहायनमः ७ ॐ अच्युतायनमः ८ ॐ
 जनार्दनायनमः ९ ॐ उपेन्द्रायनमः १० ॐ हरयेनमः ११ ॐ
 श्री कृष्णायनमः । एवं नाममंत्रेण सम्पूज्य ब्राह्मणेभ्योदद्यात्—
 प्रार्थयेत्—हविष्यान्नद्रोणपात्रे ससूनं च सदक्षिणम् । ददामि
 द्विजवर्याय केशवः प्रीयतामिति । इत्यत्रकेशवपदस्थाने पूर्वोक्त
 देवनाम्ना मूहः कार्यः ततः सोपस्करं देव प्रतिमापीठादिकमुत्तरांग
 पूजनं विधायाचार्याय देयं प्रार्थयेच्च ॐ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या
 तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णातांयान्तु सद्यो वंदेत मच्युतम् ।
 ततः कलशजलं पात्रान्तरे कृत्वा यज्ञशालामागत्याचार्यः
 पूर्वोक्तविधिना सुरस्त्वामभिषिचन्तु० इत्यादिभिरभिषिचेत्
 निलकं कृत्वा देवोपसृक्त निर्माल्यं दद्यात् अग्निं विसृजेत् ॐ गच्छ-
 २ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छहुता-
 शन । ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् । इष्टकाम
 समृद्धयर्थं पुनरागमनं कुरु । अचेत्यादि० कृतस्य कर्मणः सांगता
 सिद्धयर्थं नाना नामगोत्रान्ब्राह्मणान्—अहं भोजयिष्ये तेभ्यो
 दक्षिणां च दास्ये । ततो व्रतं सम्पूर्णातां वाचयेत् । ॐ जपच्छिद्रं
 तपश्छिद्रं यश्छिद्रं व्रतकर्मणि । सर्वं भवत्वच्छिद्रं मे ब्राह्मणानां
 प्रसादतः ॥ ततो ब्राह्मणान्मस्कृत्येष्टजनैः सह भुञ्जीत ॥

॥ इति एकादशी व्रतोद्यापन पद्धतिः ॥

अथ भीष्मपंचक परिभाषा

अथच कातिक शुक्लैकादशीमारभ्य-परिणवान्तं भीष्मपञ्चकव्रतम् ॥—

अत्रैकादशी शब्देनप्रसिद्धव्रतदिनग्रहणम् । प्रकारान्तरेण लक्षणायां प्रमाणाभावात् ॥ त्रिदश
युगमात्रया द्वादशीविद्वैद्यग्रह्या ॥ दिक्पञ्चदशभिस्तत्तद्व्युक्तधर्मस्यैवद्रूपकत्वम् । एवं च
दशम्यविद्वैकादशीमारभ्यपंचदिनात्मकं व्रतं चतुर्दशविद्वै पूर्णमास्यां चैतत्समाप्यते नैवाप्रसन्नदेहः ॥
त्रिदशयवशेन नैवं घटते चेत्तद्विद्यायामप्यारम्भः प्रधानप्रता नुरोधेनांगतिधियुक्तस्य परविद्व-
त्वाद्ये रनादरणीयत्वात् ॥ एवमविद्वैकादश्यामारभ्य । परविद्वै पूर्णमास्यामिमांसेन यदि त्रिदि-
वृद्धवशेन पञ्चदिनापत्तिस्तदा चतुर्दशविद्वैपूर्णमास्यां समाप्तिः । उपक्रमसमाप्तयो रजतवाग
विशेषेऽपि मुख्यंवेदितन्यायेननोपक्रम धर्मस्यैव बलवत्वात्-विशेषो धर्मशास्त्रादिपुद्गल्यः ।
उक्तं च भीष्मपञ्चकव्रतं मदन रत्ने देवी पुराणे ॥ एकादश्यान्तु गृह्णीयाद्भृतं पञ्चदिनात्मकं ।
प्रातः स्नात्वाविधानेन मय्यान्हेच तथाव्रती ॥ यथा निर्गन्तव्यां समालभ्यच गोमयम् ॥
यवत्रीहितिलैःसम्यक्पितृन्सर्तपथैःकमात् ॥ स्नात्वामीनं नरः कृत्वाधीश वासा दृढ व्रतः ॥
ततः सम्पूजयेद्देवं सर्वपापहरं हरीम् ॥ स्नापयेच्चच्युतंभक्त्या मधुक्षीरधृतेनच तथैव पञ्चगव्येन
गन्ध चन्दन कारिणा ॥ धूप दीपेन पुष्पेण नैवेद्य दक्षिणादिभिः ॥ पूजयेद्वासुदेवंच ७० नमो
वासुदेवेति मंत्रतः ॥ दीपकं च दिवारात्रीदद्यात्पंचदिनानिच ॥ ७० नमोवासुदेवेति जपेदष्टोत्तरं
शतं ॥ जुहुयाच्चपूताभ्यक्त तिलव्रीहियवान्ब्रती ॥ पञ्चदशेण मन्त्रेण स्वाहाकारन्वितेनच ।
उपास्य पथिमां संध्या प्रणम्य गरुडभुजं ॥ जपित्वा पूर्ववन्मंत्रं क्षितिशायोभवेन्नरः ॥ सर्व
मेत द्विधानेच कार्यं पञ्चदिनेष्वपि ॥ विशेषोक्तं व्रतेचासीद्य दन्यूनं शृणुष्वतत् ॥ प्रथमंन्दिहरेः
पादौ पूजयेत्कनलैर्नरः ॥ द्वितीये विल्वपत्रेण जाजुर्वेशं समर्चयेत् ॥ पूजयेत्तृतीयेन्दि नाभि-
भृंगारवेणतु ॥ वाणविल्वजपाभिश्चततः स्कन्धीसमर्चयेत् ॥ ततस्तु पूजयेच्छीर्षं मालिना चक
पाणिनः । पादुमेतु—भीष्मायोदकदानेच अर्घ्यैव प्रयत्नतः । पूजाभीष्मस्य कर्त्तव्या दानं
दद्यात्प्रयत्नतः । त्रि.प्राश्यगोमयं सम्यगेकादश्या सुपावसेत् ॥ गोमूर्धं मंत्रं वद्भूयो द्वादश्यां
प्राशयेद्ब्रती ॥ क्षीरं चैव त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां तथादधि ॥ संप्राश्यकायशुद्ध्यर्थं लंपनीयं चतुर्दिनां
पञ्चमं दिवमे स्नात्वा विधिपूर्वपूजयेत्शयं ॥ भोजयेद्वाहाणान्भक्त्या ततो दद्याच्च दक्षिणाम् । ततो
नक्तं समश्नोयात्पंच गव्यं पुरःसरम् ॥ भविष्योत्तरे—स्त्रीभिर्वाच्येन कर्त्तव्यं स्वपत्न्युः
पुण्यवर्धनम् ॥ विधयाभिस्तु कर्त्तव्यं पुत्राणां शुभद्वये ॥ सर्वकामममृद्ध्यर्थं मीक्षार्थं चैवपांडव ॥
वैश्वदेवस्तु कर्त्तव्यो—विशुध्युत्थानपरायणैः । पापस्यप्रतिमा कार्यां रोद्रवक्त्रातिभीषणा खड्ग
दस्ताति विकृता लीहैर्द्रुकरालिनी ॥ तिलप्रस्थोपरिस्थाप्या कृष्णवस्त्राभिर्वेष्टिता ॥ रक्त वस्त्रं
कृता पीडा ज्वलन्कांचन कुंडला ॥ सम्पूज्य परयाभक्त्या धर्मराजस्थनमाभिः शेषं प्रयोगेऽहम् ॥

॥ अथ भीष्म पंचक प्रयोग पूजापद्धतिः ॥

अथ च भीष्मपंचकव्रतं कर्ताप्रातः स्नात्वासंध्यामुपास्य-पूर्वाङ्कितै
 कादश्यां मध्याह्नेवा प्रभाते गंगासमीपे वानडागे कूपेनिर्भरे वा
 यथालब्ध जलाशये समागम्य हस्तौपादौ प्रक्षालयताम्रपात्रमादा
 योदङ्मुखः पवित्रपाणिराचम्य संकल्पंकुर्यात् अन्वेहेत्यादि देश
 कालौसंकीर्त्यामुकगोत्रप्रचरो ऽ मुकशर्माहं,, अथैकादशीमार-
 भ्यपौष्णिमा पर्यन्त जन्माजित समस्तप्रायश्चित्त दूरीकरणार्थ
 ष्वातुर्वर्गफलावाप्तये श्रीकृष्णप्रीत्यर्थ भीष्मपंचक व्रतं करिष्ये ।
 ततो गोमयस्नानम्,, गोमयमानीयमंत्रयेत्-ॐ अग्रमग्रं चरन्ती
 नामौषधीनां वने वने ॥ तासामृषभपन्नीनां, पवित्रं काय
 शोधनम् ॥ तन्मेरोगांश्चशोकार्चनुदगोमय सर्वदा । इत्यभिमन्त्र्य ।
 ॐ मानस्योक्त इतिमंत्रस्य कृत्स्नऋषिः । रुद्रोदेवता जगतीछन्दः
 अंगानुलेपने विनियोगः ॥ ॐ मानस्योक्तेनयेमान ऽ आयुपिमानो
 गोषुमानोऽश्वेषुरीरिपः मानोवीरान् रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः
 सदा मित्वाहवामहे । इतिसोदकं गोमयमुभाभ्यां हस्ताभ्यांसूर्याय-
 दर्शयित्वा वारत्रयं ललाटादिपादतलपर्यन्तान्यंगान्यनुलिप्य प्रक्षाल-
 येत् ॥ ततो वारत्रयं निमज्ज्योन्मज्ज्यस्नात्वा तीरमागत्य, तर्प-
 णोक्त विधिना पितृभूतसंतर्प्य ॥ तदुपरिहरिपूजासमाप्तिपर्यन्तं
 हृद्मौनीभवेत् ॥ तर्पणान्ते पुनःस्नात्वा-धौतंवासः परिधाय
 तिलकं कृत्वोदकोक्तमंत्रेण गंधपुष्पादि युतमर्घ्यं भीष्माय दद्यात्
 तन्मंत्रः ॥ अर्घ्यनिधाय-ॐ सत्यव्रताय शुचये गांगेयाय महा-
 त्मने ॥ भीष्माय च ददाम्यर्घ्यमाजन्म ब्रह्मचारिणे ॥ वसूनाम-
 वनाराय शंतनोरात्मजाय च अर्घ्यं ददामि भीष्माय सोमवंशो-
 वृध्वाय च । इति पंचधार्घ्यदत्त्वा ॥ ततो जीवित्पितृकोपि अपस-
 च्येन पितृतीर्थं न दक्षिणजान्वाच्य-तिलोदकं दद्यात् ॥ सतिलज
 लमंजलीनिधाय-मंत्रः-वैयाघ्रपादगोत्राय सांस्कृत्यप्रचरा यच्च ॥
 गंगापुत्राय भीष्माय प्रदास्ये हंतिलोदकम् ॥ अपुत्राय ददाम्यै

तत्सलिलं भीष्म वर्मणे ॥ इति पंचधासलिलं दत्त्वा ॥ ततो
 लक्ष्मी वासुदेव सहितं भीष्मं ॥ ३० लक्ष्मीवासुदेवयुत भीष्माय
 नमः ॥ इतिमंत्रेण पंचोपचार-पाद्य स्नान गंध धूप दीप नैवेद्या
 दिभिर्जलेसंपूज्य-पंचरत्नानि ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ ३० अथेहेत्यादि
 अमुकोहं भीष्मपंचक व्रतनिविधनता सिध्दये इदानीं सकलकिष्किम
 पदूरीकरणार्थं श्री लक्ष्मी वासुदेव सहितं भीष्म प्रीत्यर्थं पंचरत्न
 दानंकरिष्ये ॥ इतिब्राह्मणायदत्त्वा ॥ वारिपूर्णताम्रकलशंकृत्वा
 नग्न पादो वा काष्ठ पादुकारूढो भूत्वा गृहमागत्य पाणिपादौ
 प्रक्षाल्य पूजास्थलमागत्य । आचम्य-भूतोत्सादनंकृत्वा दीपं
 दद्यात् ॥ सचदीपोऽवच्छिन्नतयायथा पंचसुदिवसेषु भवेत् तथैव
 रक्षयेत् ॥ संपूज्य च-ततः प्राणायामान्ते आवाहनाद्युपचारान्
 जलेनाभ्युक्ष्य सुवर्णं प्रतिमां लक्ष्मीसहितां वा शालिगरामं पुरतः
 संस्थाप्य संकल्पं कुर्यात् ॥ देशकालौ संकीर्त्याद्य कार्तिक शुक्लै
 कादर्यांभीष्मपंचक व्रताप्तये-श्री लक्ष्मी सहितं हरिं यथा
 लक्ष्मोपचारेणाहं पूजयिष्ये ॥ पुष्पंगृहीत्वाध्यायेत् ॥ ध्यानासाध्यं
 दुरारारथं ब्रह्मादीनां च वंदितम् ॥ हरिंध्यायामि मनसा पंच
 भीष्म व्रताप्तये । पाद्यम्-पादप्रक्षालनार्थतद्दिव्यंवारि सुनिर्मलम् ॥
 हरेगृहाण-पाद्यं त्वं पंचभीष्मव्रताप्तये ॥ आसनम्-आसनार्थमि-
 दं वस्त्रं पुष्पं वा गृह्यतां हरे । भक्तवत्सलहेकृष्ण पंच भीष्मव्रताप्तये ॥
 अर्घ्यम्-इदमर्घ्यं पवित्रं च शङ्खलोयमसमन्वितं ॥ पुष्पदूर्वाचन्द-
 नाक्तं गृहाण कमलाप्रिय ॥ स्नानीयम्-गंगादि तीर्थजं दिव्यं
 स्नानीयं जलमुत्तमम् ॥ हरेगृहाण-परमं-पंचभीष्म व्रताप्तये ॥
 चन्दनम्-चन्दनागर्ज्जस्तूरी-संयुतं निर्मलं शुभम् ॥ हरेगृहाण गंध
 त्वंपंचभीष्मव्रताप्तये ॥ धूपम्-रसो वृक्षविशेषस्य नानाद्रव्य-
 समन्वितः । सुगन्धयुक्तः सुखदो धूपोयं प्रतिगृह्यताम् । दीपम्-
 दिवानिशंसुप्रदीप्तो रत्नसारविनिमितः ॥ उत्तमोज्योतिर्पांज्योति
 र्दीपोयंगृह्यतां हरे ॥ नैवेद्यम्-नानाविधानिद्रव्याणि स्वादुनिम्धु-
 राणि च ॥ चोष्यादीनिपत्रिन्नाणि स्वात्मारामप्रगृह्यताम् ॥ मधु-

पर्कम्—देवानां प्रीतिजनकं सघृतमधुरमधु ॥ हरे
 गृहाण सुप्रीत्या पंचभीष्मव्रताप्तये ॥ पंचामृतम्—सुस्वादु-
 मधुरं पेयं हुग्धं मिष्टान्नसंयुतम् ॥ पंचामृतं च गोविन्द गृहाण त्वं व्रता-
 प्तये ॥ पुनराचमनम्—निर्मलं जान्हवीतोयं भोज्यान्ते तृप्तिदाय-
 कम् ॥ पुनराचमनीयं च गृह्णतां मधुसूदन ॥ दक्षिणाम्—हिरण्यं राजतं
 द्रव्यं वित्तशास्त्रविद्यजितितम् ॥ उपायनीभूतमिदं गृह्णतां कमला
 पते ॥ ततः पुष्पांजलिम्—नानाप्रकारपुष्पैश्च ग्रन्थितं सूक्ष्मतंतुना ।
 प्रवरं भूषणानां च माल्यं च गृह्णतां हरे ॥ चक्रिन् श्रीनाथ भक्तेश भीष्म
 प्रणसुरक्षक ॥ संसारसागरे घोरे मामुद्धर भयानके ॥ शतजन्म-
 गतायातादुद्विग्नस्य मम प्रभो ॥ स्वकर्मपाशनिगडैर्वन्धस्य मोक्षणं
 कुरु । प्रणतं पादपद्मेते पश्य मां शरणागतम् ॥ मार्त्तण्डतनयाद्भीतिं
 पाहि मां भक्तवत्सल । भक्तिहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च वेदतः ॥
 वस्तुमन्त्रयिहीनं यत् तत्सम्पूर्णं कुरु प्रभो ॥ वेदोक्तविहिताजानात्
 स्वांगहीने च कर्मणि ॥ त्वन्नामोच्चारणैर्नैव सर्वपूर्णं भवेद्धरे । एभि
 र्मंत्रैः प्रथमेन्द्रिकादश्यां कमलपुष्पपादौ निधाय पादौ गन्धाक्षता-
 दिभिः पूजयेत् ॥ तन्मन्त्रः । ३० हरये नमः ॥ इति मन्त्रेण कमल
 पुष्पैस्तदभावे अन्यपुष्पैः पूजयेत् । ततो वक्ष्यमाणमन्त्रमष्टोत्तर
 शतं जपेत् ॥ ३० हरये नमः १०८ वारं जप्त्वा । प्रादेशमात्रं चतुरस्र
 कुण्डं बामण्डपं विधाय पूर्वाक्तहोमपद्धति प्रकारेणाग्निप्रतिष्ठो
 पनादिकं कृत्वा घृताभ्यक्ततिलवीहियवान् ३० हरये नमः स्वाहा,
 इति अष्टोत्तरशतं हुत्वा, सुवर्णदक्षिणां ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ ततः
 कायशोधनार्थं गोमयं प्राशयेत् । तन्मन्त्रः—३० गन्धद्वारां दुरा-
 धर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपहृये-
 श्रियम् ॥ इति वारत्रयं प्राशयेत् ॥ ततः पंचदिनात्मकोपावासं
 कर्तुमशक्तश्चेत्तन्नीवारफलमूलशाकादिकं भक्षयेन्नत्वन्नम् ततः
 सायंकाले पूजास्थलमागत्य सायं सन्ध्यामुपास्य विष्णुं प्रणम्य-धृपा-
 तिक्यादिकं कृत्वा ॥ ३० हरये नमः । इति १०८ वारजप्त्वा-रात्रौ
 भूमिशायी भवेत् ॥ एवं पंचस्वपिदिने पुकुर्यात् । इत्येकादशीदिन

कृत्यम् । एवंद्वादश्यामपिपूर्वांक्तविधिनासर्वकृत्यंकृत्वा । ३०
पूर्वांक्तपुष्पांजलिमन्त्रैर्विल्वपत्रैर्जानुनी-पूजयेत् । ततो गौमूत्रं
गायत्रीमन्त्रेणाभिमन्त्र्य-वारत्रयंप्राशयेत् । ततस्तृतीयदिनेभृङ्ग-राज
पत्रपुष्पाभ्यांनाभिंपूजयेत् ॥ ततः ३० पयसाशुक्रममृतंजनित्र
दं० सुरयामुन्त्रांजनयन्तरेतः । अपामतिर्दुर्मतिंवाधमानाउवर्धय
वात दं० सर्वन्तदारात् ॥ इति मन्त्रेण-वारत्रयंदुग्धं-प्राशयेत् ।
चतुर्थदिनेवाणविल्वजपाभिः । स्कन्धंपूजयेत् । ततः ३० दधिक्रा-
व्णोऽअकारिपंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः सुरभिर्नोमुखाकरत्प्रणआयू
ॐ पितारिपत् ॥ इतिमन्त्रेणवारत्रयंदधिप्राशनीयात् ॥ ततः पंच
मेन्हि-प्रथमदिनोक्तं सर्वकर्मकृत्वामालतीपुष्पेणशिरः पूजयेत् ॥
उक्तलक्षणां-लोहींप्रतिमां पापपुरुषस्यकृत्वा एकप्रस्थतिलोपरि
संस्थाप्यवक्ष्यमाणमन्त्रैःपूजयेत् । ३० यम,यनमः आवाहनं । ३०
धर्मराजायनमः स्थापनं । ३० मृत्यवेनमः प्रतिष्ठापनं । ३० अन्त-
कायनमः स्नानम् । ३० वैश्वतायनमः चन्दनं । ३० कालायनमः
तिलाक्षतान् ३० सर्वभूतायनमः पुष्पं । ३० औदुम्बरायनमः
धूपं । ३० दध्नायनमः दीपं । ३० नीलायनमः नैवेद्यं । ३० परमे-
ष्ठिनेनमः पुनराचमनम्-३० वृकोदरायनमः उपायनमं । ३० चित्रा
नमः सफलार्घ्यम् । ३० चित्रगुप्तायनमः मन्त्रपुष्पांजलिमादाय
३० यदन्यजन्मनिकृतमिहजन्मनिवापुनः । पापंप्रशममायातुतव-
पादप्रसादतः । अद्यहेत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकोहं यन्मया
भीष्मपंचकव्रतकर्मणि जन्मार्जितसमस्तपापदूरीकरणार्थं श्रुतिस्मृ
तिपुराणोक्तफलावाप्तये श्रीकृष्णप्रीत्यर्थमिमां पापप्रतिमांधमामे
प्रीयतामिति निश्चलाभक्त्या मुकगोत्राया मुकशर्मणेविप्रायतुभ्य
महंसन्दास्ये भूमिदेवायदत्त्वा-अद्ये० पापपुरुषप्रतिमादानप्रतिष्ठार्थं
सपादमासमात्रमुवर्णचाहंदास्ये । विप्रोब्रूयात्—निश्चलोधर्मस्ते
प्रीयताम् । ततः शायंकालेपूर्ववत्कर्मकृत्वा रात्रौपञ्चगव्योक्त
मन्त्रैः पञ्चगव्यमभिमन्त्र्यचगायत्र्यावारत्रयंप्राशनीयात् । यदिपञ्च
भीष्मव्रतोद्यापनंचेदिदानीं श्रीसत्यनारायणपद्धत्युक्तप्रकारेणसर्व

कर्मकृत्वा रात्रौ कथाश्रवणादि नृत्यगानादिभिर्जागरणं कृत्वा परे
ऽग्निह शान्त्यर्थं गौदानहवनादिकं समाप्य विप्रान्श्च भोजयेत् । तेभ्यो
दक्षिणांश्च दद्यात् । उक्तदानाभावपक्षे ब्राह्मणभोजनादि स्त्रीशुद्रा-
णां पञ्चगव्यदानं तत्प्राशनं चामन्त्रकम् । जपहोमावप्रणवौ द्विती-
यादिदिनेषु वस्त्रं गौघृतं पायसं श्वेतकृष्णतिलयुतं वस्त्रं च सुवर्णस्थाने
क्रमेण देयानि । ताम्बूलाभ्यंगवर्जनसत्यवचनादिनियमयुक्तः पंच
दिनेषु भवेत् ।

इति पञ्चमीपत्रतोद्यापः पदतिः

॥ अथ तुलसीविवाह विधिः ॥

अथ तुलसी विवाह विधिः,—उक्तंच विष्णु यामले—आदावेवाथ तुलसी
वनेवाख्यं गृहेपि वा । आसन्नसेण संवर्धा ततो यजन मारभेत् । सौम्यायने प्रकर्तव्यं शुरु शुक्रोदये
तथा ॥ अथवा कार्तिके मासि भीष्मपञ्च दिनेषु वा । वैवाहिकेषु ऋक्षेषु पूर्णिमायां विशेषतः ।
मण्डपं कारयेत्तत्र कुण्डवेदी विवाहवत् ॥ ब्रह्मण्यश्च शुचिं स्नातां न्निद्वेदांग पारगान् ।
ब्राह्मणं दैशिकं चैव चतुरश्च तथा विजः । ग्रहयज्ञपुरःकृत्वा मातुर्णां यजनं तथा । कृत्वा
नान्दीमुखं श्राद्धं सौवर्णं स्थापयेद्दरिम् । कृत्वा च रौप्यां तुलसी लग्नं त्वस्तमिते रवी ॥ संपूज्या
सेकृतां तांच प्रदद्याद्विधिना हरेः (पृथो चतुर्थ्यर्थं) वासः शतेन मन्त्रेण पञ्चयुगेन वैश्र्येण ।
यदावभेति मंत्रेण कङ्कणं पाणिपल्लव ॥ कोदादिति च मंत्रेण करग्रहो विधीयते । कर्तव्यश्च
ततो होमो विशेषाद्विधि पूर्वकम् । आचार्यां वेदिका कुण्डं जुहुयाच्च तथा हुतीः ॥ ॐ नमो
भगवते शेषाय नमः स्वाहा, इत्यादि चतुर्विंशति नामभिर्जुहुयात् । यजमानः सपत्नीकः
सहामात्यैश्च गोत्रजैः । प्रदक्षिणाः प्रकुर्वीत च तस्यो विष्णुना सह । पठेयुः शान्तिका ध्यायांस्तथा
वैष्णव संहिताम् गायन्तो मङ्गलं नार्थानि री तूयांदिभिः स्वरैः ॥ गापदंच तथा शश्यामार्चायां
प्रज्ञापयेत् ॥ ऋत्विग्भ्यो दापयेद्ब्रह्मण्यभ्येयां चैव दक्षिणाम् । ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्सर्पिः
क्षीरैः सशर्करैः । एवं प्रतिष्ठितां देव्यो विष्णुना च समर्पयेत् ॥ आजन्मो पाजितं पापं दर्शनेन
प्रणश्यति ॥

॥ इति तुलसी विवाह परिभाषा ॥

धर्म सिन्धुमारे काशीनाथ मततु— तुलसी विवाहस्य नवम्यादि दिनत्रये, एकादश्यादि पूर्णिमान्ते यत्र चापिदिने कार्तिक शुक्लान्तर्गत विवाह नक्षत्रेषु वा विधाना दनेक कालं च तथापि पराखण्डे प्रबोधोत्सव कर्मणस्तद् तत्रतयैव सर्वत्रानुष्ठेयते इति सोऽपि पारखण्डे पूर्वादि कार्यः । गोधोत्सवात्पृथक् विकीर्णया कालन्तरे यानाय ॥

— ३१३ —

अथ तुलसी विवाह पद्धतिः

अथच तुलसीविवाहो विष्णुनासहानेकधा भवति तत्रादौ सुवर्णगोपालमूर्तिनासह,, यथा मानुषीकन्यायाः पाणिग्रहणे वाग्दानमुहूर्त्तपट्टाकरणादि वरगृहात्कन्यागृहे, यथा विभय विस्तारेणमानुषाः समायान्ति, तद्वत्तुलसीविवाहकर्त्ता कस्यचित्कुटुंबीविद्वद्ब्राह्मणस्य, पूजा स्थापितंगोपालं वृत्वा तुलस्या विवाहं करोति,, तत्रतु वाग्दानं धूल्यर्घं विवाहकर्मच सर्वकृत्यं, लौकिकवद्भवति विवाहमण्डपे होमवेद्यां जयादिहोमोऽस्मारोहणादिकर्माणितु वक्ष्यमाणपद्धत्यानुसारेण भवन्ति, अत्रापि ग्रहयागः पूर्ववानुष्ठीयः, यौतकादि सर्वं लौकिकाचारेण विज्ञानुसारंदेयम्, द्वितीय विवाहस्तु विष्णुप्रतिमारूपारवत्थेन सह भवतिसचादौ, अश्वत्थवृत्तं कतिचिद्वर्षैरारोप्य पोषयित्वाच तदनंतरं पूर्वोक्त परिभाषानुसारेण गुरुशुक्रास्तबालवार्द्धक्यादि दोषरहिते विवाहोक्तचन्द्रनारानुकूले सुमुहूर्ते, उत्तरायणेवा कार्तिक शुक्लनवमीतः पूर्णिमान्ततिथिषु, मध्ये प्रबोधोत्सवेच कार्यः, तस्मिन्ऽर्पे स्वगृहे तुलस्याः वृत्तं आषाढहरिशयन्यावा शुभदिने काचिन्नृत्नायां वंशपेटिकायामारोप्य जलदानादिना वर्द्धयित्वा पूर्वोक्तज्ञानंपरीक्षेत ॥ अथ कर्मपद्धतिः—तत्रादौ, अश्वत्थतुलसीविवाहकर्त्ता, अश्वत्थसमीपे षोडशहस्तपरिमितं चतुस्रं मंडपंकृत्या तत्र मंडपेशाने एकोनविंशति रेखात्मकं सर्वतो

भद्रं पूर्वं ग्रहयागभद्रं, आग्रये मातृकाभद्रं, नैर्ऋते, वास्तुभद्रं, वायव्येक्षेत्रपालभद्रंचविरच्य, मध्येग्रहयागार्थं कुंडं वा हस्तमात्रं स्थंडिलंकृत्वा, शुभदिनेचन्द्रतारानुकूले त्रिपलनवमितं विवाह दिनंत्यत्कृत्वा प्रातर्नित्यक्रियांसमाप्य सुमूहृतं तोरणपूजां कृत्वा पद्धत्यनुसारेण तोरणपूजांकृत्वा दिगीशध्वजानुच्छ्रित्य तोरणोर्ध्व लिखितपट्टेशंखचक्रगदापद्मचिन्हानां पूजनंकृत्वा, परिचमद्वारेणमंडपेगत्वा, ग्रहयागवेदीसन्निधौपट्टे लिखितगणेशादि पंचांगपूजनं कृत्वा, ग्रहयागोक्त विधिना ग्रहान्संपूज्य, सर्वतोभद्रपद्धत्यनुसारेण भद्रं सम्पूज्य, तत्रमद्धे यथावित्तं सुवर्णप्रतिमां दामोदररूपिणीं, तुलसीरूपां सुवर्णप्रतिमां वारजतप्रतिमां च अग्न्युत्तारणपूर्विकां तत्र संस्थाप्य पुरुषसूक्तेन सम्पूज्य, मातृकाभद्रं वास्तुभद्रं क्षेत्रपालभद्रं च सम्पूज्याचार्यगंधादिना सम्पूज्य वृणुयात्— अथेत्यादिसंकीर्त्यामुकोऽहं कर्त्तव्याश्वत्थतुलसी विवाह कर्मणि ब्रह्मकर्म कर्त्तुमेभिर्वरणद्रव्यै रमुकगोत्रप्रवरान्वितममुकशर्मणं त्वामहंवृणे, तस्मैवरणद्रव्यंदत्वा—३० आचार्यस्तु यथा० इति प्रार्थ्यभवानीति प्रत्युक्तिः ततो जपार्थंचतुरोऽष्टौवा ब्राह्मणान्विभवानुसारेण जपार्थंवृणुयात्—सम्पूज्य—संकल्पः—अथेत्यादिसंकीर्त्यामुकोऽहं कर्त्तव्याश्वत्थतुलसीविवाहकर्मणो निर्विघ्नतासिद्धये गणेशादिनवग्रहनारायणाष्टाक्षरादिमंत्राणां जपकर्त्तुमेभिर्वरणद्रव्यै रमुकामुकगोत्रप्रवरान्वितानमुकामुकशर्मणो यथासंख्यकान्बाह्मणान्वृणे द्रव्यंदत्वा, कर्मकुरु, करिष्यामः यथावित्तानुसारेण जपंकारयित्वा, ततो प्रातर्विवाहदिने स्वगृहाभ्यंतरे, पट्टे गणेशादि पंचांगदैवतान्विरच्य स्नात्वा शुद्धेधौतेवाससीपरिधाय पूजास्थलमागत्य रक्षाबंधनादि कर्मकृत्वा संकल्पं कुर्यात्— अथेत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं ममाखिलविविधपातक प्रशमनपूर्वकाभीष्ट सिद्धिद्वारा श्रीपरेश्वरेण विष्णुरूपिणा, श्वत्थे नसह तुलसीविवाहकर्मणि सकलोपद्रवशांत्यर्थं स्वस्तिवाचनपूर्वकगणेशपूजनं कलशस्थापनं पुण्याहवाचनं नान्दीश्राद्धं मातृका

पूजनं वसोर्धारानिपातनं नवग्रहाणांपूजनंच करिष्ये । ततस्तत्तत्प-
 ङ्ख्यासम्पूज्य । गृहांगणेषु जित्रैः सहसुवासिनीद्वारा सुरक्षितां
 तुलसीपेटिकायुतां काष्ठपीठेषुत्वा मंगलस्नानसमये गायन्त्यः
 सौभाग्यवत्यः हरिद्रादधितैलादि पिष्टकादिसुगन्धिद्रव्यमिश्रत
 चूर्णेन तैलादिलापनं पञ्चसंख्याभिः, मंगलस्नानं सम्मार्जनरीत्या
 चकुर्युः ॥ वस्त्रयुग्मेनतुलसीसम्बेष्ट्य, गणेशपूजास्थलेनीत्वातत्र
 तुलसीनिमित्तंगणेशपूजनं स्वयमेवयजमानःपुनःकृत्वा, भूपणैवि-
 भूष्य, ३० यदावधनंदाक्षायणा हिरप्य १० शतानीकायसुमनस्य
 मानाः तन्म ५ आवधनामिशतशारदायुष्मान् जरदष्टिर्यथा ५५
 सम्, इतिमन्त्रेण (रत्नावन्धन पोटलिकां) कङ्कणंवामहस्ते (वाम
 भागशाखायां) वध्नीयात् ॥ तुलसीतत्रैवगणेशसन्निधौरक्ष्येत,
 ततोवरपक्षिण्यःसौभाग्यवत्यो वाजित्रैःसहगायन्त्यो ५ श्वत्थ
 वृक्षंमंगलद्रव्येणानुलिप्योष्णोदकेनसंस्नाप्य, तत्राचार्यान्तत्प्रति-
 निधिर्भू वागणेशादिपूजनान्ते पूर्वोक्तमन्त्रेणपिप्पलदक्षिणशाखा-
 यांकङ्कणंवध्नीयात्, ततस्तुलसीविवाहकर्त्ता, नदिनेविवाहात्पूर्वं
 तत्रमण्डपमध्ये, होमपङ्क्त्यनुसारेण पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमाग्नि
 संस्थाप्याधारावाज्यभागौचहुत्वा नवग्रहाणांनत्तत्समिद्धिस्तिल-
 यवाज्यैर्वा जपदशमांशहोमंहुत्वा ततोभारायणाष्टाक्षरमन्त्रजपस्य
 दशमांशंतिलयवाज्यैर्हुत्वा ततःस्विष्टकृतंहुत्वाप्रायश्चित्तहोमंकृत्या
 पूर्णाहुत्यन्तंकर्मविधाय, तद्दशांशमार्जनतर्पणश्चकृत्वा गृहप्रत्याग-
 च्छेत् ॥ ततःसांयकालेगौधूल्यां आचार्यःशुक्तिविगादयो ५ न्येपि
 गोपालमूर्त्तिविवाहपक्षे श्रीगोपालमूर्त्ति सिंहासनस्थांशिवकोपरि
 वोढयित्वावाजित्रैःसहसमारोहेण तुलसीविवाहकर्त्तुर्गृहप्रत्यागच्छ-
 न्त्वेवमश्वत्थेनसहविवाहेप्यागच्छन्तु कर्त्ताचसन्मानार्थंगृहसमीपं
 गत्वा श्रीगोपालयानंस्वजनैर्बोढयित्वास्वांगणेशापयित्वासिष्टा-
 चारपुरःसरेणसम्पूज्यतत्रागतानपिगन्धारोपणादिकंकृत्वा (टीका
 भेटगन्धात्) उपायनंस्वधित्तानुसारंदत्त्वा पूगीफलतांमूलादिकं
 दद्यात्—(ततो गोपालविवाहपक्षे वक्ष्यमाणेनैवविधिनावाक्-

दानधूल्यर्घ्यविवाहं च कुर्यात्) अश्वत्थविवाहपक्षे,—तदैवायसरे श्रीतुलसीं सपेटिकां शिविकायांस्थापयित्वा शिविकारंरक्तवस्त्रेण सम्वेष्ट्य (डोलायां) स्ववन्धुवर्गैः सह तैर्वरपत्नीयाचार्यादिभिरचवाजित्र शंखघंटाभैर्यादिध्वनिपुरः सरंकृत्वाश्वत्थसन्निधौमंडपं प्रत्यागच्छन्तु ॥ तत्र सर्वतोभद्रमण्डपे सपेटिकांश्रीतुलसीदेवीं संस्थाप्य चाचम्य भूतोत्सादनादिकंविधाय गणेशादीन्नमस्कृत्य,, वाग्दानंकुर्यात् ॥

॥ अथ तुलसीविवाहेवाग्दान पद्धतिः ॥

अत्राश्वत्थपक्षेकर्त्ताआचार्यएवास्ति तत्रआचार्यैः सर्वतोभद्रतःसुवर्णप्रतिमां विष्णुरूपिणीमुत्थाप्याश्वत्थवृक्षमूले नूतनकाष्ठपीठोपरिउत्तरमुखेनस्थापयेत् ततः तुलसीविवाहकर्त्तापूर्वाभिमुखेनोपविश्याचम्यप्राणायामंविधाय, वरपत्नीयाचार्यवृणुयान्—ब्राह्मणमाचार्यं वरणद्रव्यधोतोत्तरीयादिकंचसम्पूज्य—सङ्कल्पः—अथेत्यादिसंकीर्त्या ऽ मुकोहंतुलसीविवाहांगभूतवाग्दानकर्मणि, कर्मकर्तुमेभिर्धरणद्रव्यै रमुकगोत्रप्रवरान्वितममुकशर्माणंवरपत्नीयंब्राह्मणंत्वांवृणे—द्रव्यंदत्वा, कर्मकुरु, करवाणीतिप्रत्युक्तिः ७० आचार्यस्तु० इतिसंप्रार्थ्य,, ततोवाग्दानसामग्रीं पंचहरिद्राखण्डयुतांतण्डुलपूरितां श्रीफलजोषवीतदक्षिणादिपरियुतां स्थाल्यामिन्द्राणींपूजयेत्—७० इन्द्रण्यैनमः, इतिसम्पूज्य,, गोत्रोच्चारणंकुर्यात्—आचार्योवृणुयान्—पाणिग्रहेपर्वतराजपुण्याः पादाम्बुजं पाणिसरोरुहाभ्यां । अश्मानमारोपयतः स्मारेर्मन्दस्मितमंगलमात्मनोतु ॥ नतः कर्त्तावाग्दानपात्रं हस्तेगृहीत्वा—व्याघ्रपदगोत्रोत्पत्तय वैश्याघ्रपदगार्ग्य वसिष्ठेतित्रिप्रवराय, देवमीढवर्मणः प्रपौत्राय, सूरसेनवर्मणः पौत्राय, वसुदेववर्मणःपुत्राय, अनेककोटिब्रह्मांडनायकाय, श्रीकृष्णाय, गोपालाय, श्रीधरायवराय आलम्बायनदेवलगौतमेति त्रिप्रवरांविश्वकर्मणः प्रपौत्रींप्रजापतेः

पात्रीईश्वरस्यपुत्रीं तुलसीकन्यां ज्योतिर्विदादिष्टे मुहूर्त्तंदास्ये,
इतिस्थालीस्थद्रव्यमाचार्यायदद्यात्-ततःप्रार्थयेत्-३० वाचावृन्दा
मयादत्ता आत्मार्थस्वीकृतात्वया ॥ वृन्दावलोकनविधौ निश्चित-
त्वंसुग्वाभव ॥ ततोब्राह्मणाः-३० भद्रंकरुणैभिरिनिपठेयुः ॥ ततो
नीराजनादिदक्षिणादानंचकुर्यात् ॥

अथ तुलसी विवाहे धूल्यर्घ पद्धतिः ॥

ततः कर्त्ता तत्रैवाश्वत्थ मूले-पूर्वाभिमुखोभूत्वा नूतन
काष्ठपीठोपरि विष्णुप्रतिमा मुत्ताराभिमुखीं स्थापायत्वा,
आचम्य प्राणायामंकृत्वा-संकल्पंकुर्यात्-अथेत्यादि संकीर्त्या-
मुकोऽहं करिष्यमाण तुलसी विवाह कर्मणि तुलसीदान प्रति
ग्रहार्थं मश्वत्थं विष्णुरूपिणं वरं (गोपालं) विष्टरादि मधुपर्कान्तै-
रर्चयिष्ये-तत आचार्यवृत्वा, ततः काष्ठपीठासने पुष्पै रावाहयेत्-
ॐ अश्वत्थ रूपिणं देवं श्रीकृष्णं तुलसी प्रियम् ॥ आवाहयामि
पूजार्थं वरत्वेनार्चयाम्यहम् ॥ ॐ नमो भगवते केशवाय नमोऽ
स्मिन्पीठे आस्तामर्चयिष्यामो भवन्तम् । इत्युक्त्वा सुवर्णप्रतिमां
तत्रस्थापयेत्, अर्चकः । ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः इत्युक्त्वा-
ॐ नारायण्यनमः विष्टरः प्रतिगृह्यताम् ॥ प्रतिगृह्यामीत्याचार्यो
वदेत् सर्वत्र ॥ इति विष्टरंसमर्प्य, ॐ पादम् ३ ॐ माधवायनमः
पादंसमर्पयामिप्रतिगृ० आ० व० । अर्घ्यम्-ततोऽर्घं दधिदुग्ध
बदरीतंडुलगंध-मिश्रितंजलंकृत्वा ५ घों ५ घों ५ घः पठित्वा-३०
गावन्दायनमः, अर्घं प्रतिगृह्यताम्, आ० प्रतिगृह्यामि ॥
आचमनीयम् ३ ॥ ३० विष्णवेनमः, आचमनीयंसमर्पयामि ।
आ० प्रतिगृह्यामि ॥ मधुपर्कः ३ । ॐ मधुसूदनायनमः, मधुपर्क
पातगृह्यताम् ॥ आ० प्रतिगृह्यामि ॥ ततः पुरुषसूक्तेनाश्वत्थ
प्रांतमयोः पूजनंनीराजनान्तंकृत्वा, सय्या परिधेयवस्त्र भूषणा
सनादि भांडपरियुतं द्रव्यं पाश्यादिभिः सस्पृज्य संकल्पः-अथे-

त्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं करिष्यमाण तुलसीविवाहाकर्मणि,
 व्याघ्र पदगोत्रस्य वैय्याघ्रपद गार्ग्य वसिष्ठेति त्रिप्रवरस्य देव-
 मीढवर्मणः प्रपौत्रं शूरसेन वर्मणः पुत्रं (गोपालं) दामोदर
 मश्वत्थरूपिणं तुलस्यावार्धिनं, एभिः कटकालंकरणादि शय्यासन
 भांडादिद्रव्यै, स्त्वांबुणे । इतिहस्तस्थ जलं प्रतिमोपरिच्छिपेत—
 तत आचार्यो भूपणादि वस्त्राणि परिधाप्य, बृणोमीतिब्रूयात्-
 ततः पार्थिवेत्-अशुन्यं शयनं नित्यमशुन्यामुन्नतिंश्रियम् ।
 सौभाग्यं देहिमेनित्यं शय्यादानेन केशव । यानिकानिचपापानि,
 अथावधि कृनानिच ताभ्रादि पात्रदानेन तानिनश्यन्तु केशव ॥

॥ इति धूल्यर्थ पद्धतिः ॥

अथ तुलसीविवाहपद्धतिः ॥

तत आचार्यस्तत्रैव प्रादेशमात्रां वेदीं कृत्वा होमपद्धत्यनु-
 सारेण पञ्चभूसंस्कार पूर्वक मग्निं संस्थाप्य, ततः सर्वतो भद्र
 मण्डपात्सपेटिकां वस्त्रभूषणभूषितां तुलसीं नीत्वा, प्रतिमा
 तुलस्योरंतरालेऽन्तर्पटं कृत्वा, यजमानः पूर्वोभिमुखेनोपविश्य,
 स्वभार्या दक्षिणभागे कृत्वा भ्रातृपुत्रादीन्वामे, उपवेशयित्वा
 तुलसीपेटिकां ऋद्धे धारयित्वा, श्री सूक्तेन वा पुरुषसूक्तेन
 तुलसीं सम्पूज्य तत आचार्यो यजमानदत्तवस्त्रेभ्यो वस्त्रद्वयं
 तुलस्यै,—३० युवासुवासाः परिवीत आगात्सउश्रेयान्भवति
 जायमानस्तं धीरासः । कवथऽउन्नयन्ति साध्यो मनसा देवयंतः ॥
 इति मन्त्रेण दत्त्वा सौभाग्यं द्रव्यं, ३० सौभाग्यं जनकं दिव्यं
 रक्षा मन्त्रेण वेष्टितम् । सौभाग्यमस्तु ते देवि जीवत्वं विष्णुवह्यमे ॥
 इति मन्त्रेण सौभाग्यपुटकमालवालेषु बध्नीयत् ॥ ततः प्रतिष्ठा
 पत्रेण—३० मनोजूर्तिर्जुपता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो
 त्वरिष्टं यज्ञं दंतं समिमं दधातु । विश्वेदेवासऽइहमा दधंतामों
 प्रतिष्ठ ३० भूर्भुवस्वस्तुलस्याइहजीवः इहप्राणाः सन्तु सुप्रतिष्ठिता

वरदाभवन्तु ॥ ततो यजमानस्तुलस्यश्वत्थयोः (गोपालस्य)
परस्परं समंजति, ३० समंजन्तु विश्वेदेवाः समापोहृदयानिनौ ।
सम्मातरिश्वा सन्धाता समुद्रेष्टी दधातनौ ॥ इत्यंतर्पटं पृथक्
कृत्वा तुलस्यश्वत्थयोः सम्मुखीकरणंकृत्वा प्रार्थयेत्—शङ्खचूडे
हृतेयेन तुलसी छलमोहिता, सत्वं निरीक्ष्य तुलसीं प्रसन्नोऽस्तु
सदाहरे, ततो मङ्गलाष्टकं पठित्वा गोत्रोच्चारणं कुर्यात्—वृन्दा
ख्येतपनतनया नीर वा नीर कुंजे, गुञ्जन्मञ्जुभ्रमर पटली काकली
केलिभाजि । आभीराणां मधुर मुरली नादसमोहितानां, मध्ये
क्रीडन्नयतु नियतं नन्दगोपालवालः, वरस्य—व्याघ्रपद्गोत्रस्य
वैद्याघ्रपद्गार्ग्य वसिष्ठेति त्रिप्रवरस्य देवमीढ वर्मणः प्रपौत्राय,
व्याघ्रपद् गोत्र० शूरसेन वर्मणः पौत्राय, व्याघ्रपद्गो० वासुदेव
वर्मणः पुत्राय, श्रीगोपालाय तुलस्यार्थिने वरायाश्वत्थायवा ।
एवं त्रिरुच्चार्य, कन्या पक्षे—वृन्दा वृन्दावनी देवी नन्दिनी
विश्वपावनी, सदाऽवतु महा दिव्या तुलसी कृष्णजीवनी ॥
आलंवायन गोत्रस्यालंवायन दैवल गौतमेति त्रिप्रवरस्य विश्व-
कर्मणः प्रपौत्रीं आलंवायन गो० प्रजापतेःपौत्रीं, आलंवायन
गोत्रस्य० ईश्वरस्यपुत्रीं तुलसीनाम्नीं वरार्थिनीं, संकल्पं
पठेत् ॥ ततः शंखे सुवर्णं वदरीपत्रं तिलादींश्च संक्षिप्य—
देशकालौ स्मृत्वाऽमुकोहं मम जन्म प्रभृत्युपाजितकायिक
वाचिक मानसिक त्रिविध पापक्षयपूर्वक समस्त
पितृशृणां निरतिशयानन्द ब्रह्मलोका वाप्त्यादि कन्यादान
फलपुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसंततिलदमीप्राप्त्यादि तुलाकल्पोक्त
फलसिद्धि चैकविंशति पुरुषोद्धरण वैकुण्ठभुवनगमन
तत्रत्यविपुलभोगोपभुक्त्यनन्तरं विष्णुसायुज्यता प्राप्त्यर्थं श्री
परमेश्वरप्रीतये व्याघ्रपद्गोत्रस्य वैद्याघ्रपद् गार्ग्यवसिष्ठेति
त्रिप्रवरस्य देवमीढवर्मणः प्रपौत्राय शूरसेनवर्मणः पौत्राय, वसुदेव
वर्मणः पुत्राय, व्याघ्रपद् गोत्राय वैद्याघ्रपद् गार्ग्यवसिष्ठेति
त्रिप्रवराय, अनेककोटि ब्रह्मांडनायकायानन्तनाम्ने, गोपाल

कृष्णाय अश्वत्थस्वरूपिणे वराय च, आलंवाय न देयल गोतमेति
 त्रिप्रवेरां मया कन्यात्वेन संवर्धितां इमां तुलसीनाम्नीं कन्यां वरा-
 धिनीं यथा शक्त्यलंकृतां यथाशक्त्युपकल्पितयौतकयुतां प्रजापति
 दैवतां देवाग्निगुरुब्राह्मणसन्निधौ अग्न्यादि साक्षिकतया सह धर्मा
 चरणाय भार्यात्वेन तुभ्यमहंसंप्रददे, प्रतिगृह्णातु भवान् इति
 सकुशजलं तुलस्या दक्षिणहस्तं (शाखां) सुवर्णप्रतिमायाः (वागो-
 लमूर्त्तः) दक्षिणहस्ते दद्यात्, आचार्यः—३० द्यौस्त्वा ददातुष्ट-
 धिवीत्वा प्रतिगृह्णातु ३० कोऽदात्कस्मां ऽ दात्कामो दात्कमायादात्
 कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते इति पठित्वा, ततो यजमानो
 बद्धांजलिः पठेत्—३० वृन्दे ममाग्रतो भूर्या वृन्दे मे देवि पार्श्वयोः
 वृन्दे मेष्टतो भूर्यास्त्वहानान्मोक्षमाप्नुयाम् ॥ वृन्दांकनकसम्पन्नां
 कनकाभरणैर्युताम् । दास्यामि विष्णवे तुभ्यं ब्रह्मलोकजिगीषया ॥
 मम शुद्धगृहे जाता पालिता वत्सरत्रयम् । तुभ्यं कृष्णमया दत्ता धर्म-
 ज्ञानविवर्धिनी ॥ इति प्रार्थ्य दानप्रतिष्ठां कुर्यात्—३० अद्येत्यादि
 संकीर्त्या मुकोहं कन्यात्वेन तुलसीदानप्रतिष्ठार्थमिदं सुवर्णमग्नि-
 दैवतं श्रीगोपालायाश्चत्थरूपिणे वराय तुभ्यंसम्प्रददे नमम, इति
 प्रतिमादक्षिणहस्ते दत्वा, शिष्टाचारादंचलग्रंथिवेधनं कुर्यात् ॥ तत
 स्तत्र विवाहवेद्यां ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्ते—३० नमो नारायणा
 यस्वाहा, इति मन्त्रेण नवाहुतीर्जुहुयात् ॥ ततो महान्याहृतयः, सर्व
 प्रायश्चित्तं ॥ ततराष्टभृद्धोमं कुर्यात् तत आचार्यः—घृतेन—३०
 नमो भगवते केशवाय नमः स्वाहा । ३० नारायणाय नमः ० ३०
 माधवाय नमः । ३० गोविन्दाय ० । ३० विष्णवे ० । ३० मधुसूद-
 नाय ० । ३० त्रिविक्रमाय नमः स्वाहा । ३० वामनाय ० । ३० हृषी
 केशाय ० । ३० पद्मनाभाय ० ३० दामोदराय ० ३० उपेन्द्राय नमः ०
 ३० वासुदेवाय ० । ३० अनिरुद्राय ० । ३० अच्युताय ० । ३० अन-
 न्ताय ० । ३० गदिने ० । ३० चक्रिणे ० ३० विष्वक्सेनाय ० । ३०
 वैकुण्ठाय ० । ३० जनार्दनाय ० ३० मुकुन्दाय ० । ३० अधोलजाय नमः
 स्वाहा । इति चतुर्विंशतिनाममंत्रैर्हृत्वा एवं जथाहोममू आभ्यातान

होमं च लाजाहोमं च प्रत्येकं चतुर्विंशतिनाममंत्रैः कुर्यात् नारमा-
रोहणादिसप्तपदीस्थाने यजमानेनशांतिकाध्यायं पठित्वाचतस्रः
प्रदक्षिणाः कार्याः ततो होमपद्धत्युक्तविधिना प्राजापत्यहोमंस्विष्ट
कृद्धोमं पूर्णाहुतिसंस्त्रवप्राशनं प्रणीताविमोकान्तं कृत्वा गौदाना-
दीन्कृत्वा भूयसीदानं च कुर्यात् । नात्रचतुर्थीकर्म, इति तुलसी
विवाहं कृत्वा, आचार्यं ऋत्विग्ं जापकेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा, आशी-
र्वादं गृहीत्वा, ब्राह्मणान् संभोजयित्वा स्वयमपि च भुंजीयात्, ततः
शिष्टाचारादाचार्यः गोपालं वा सुवर्णं प्रनिमां तुलसीं च शिबिकादिषु
संस्थाप्य ब्राह्मणं पुरंध्रीसहितं मंगलवाद्यपुरः सरं स्वगृहं नयेत् ततः
स्वगृहे नृत्यगीतवाद्यपुरःसरं यथाविभवपोडशोपचारेण सम्पूज्य
ब्राह्मणादीनां प गंधाजतैः संपूज्य यथाशक्ति ब्राह्मणान् संभोज्य
आशीर्वादं गृहणीयात् ।

इति तुलसी विवाह पद्धतिः ।

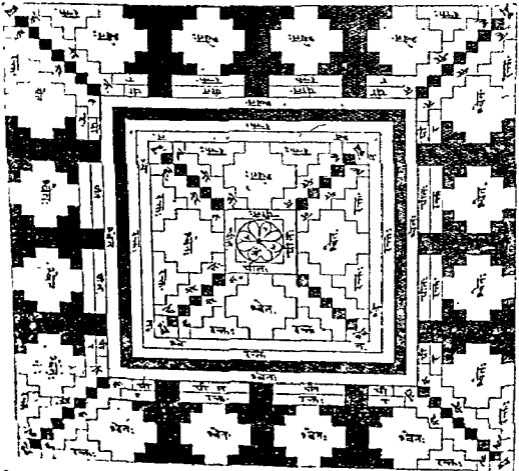
द्वादश लिंगतो भद्र परिभाषा ।

मध्य द्वादश लिंगतो भद्र परिभाषा, उक्तं च हेमाद्रौ कालादर्शो—त्रिकाया
त्रिशद्रेवार्थे प्राणुदीची करोः यथ । रंभेन्दु त्रिपद कोणे मंडलासप्तमि पदे । पंचदशपदा
बन्नी भद्रतुनयमि पदे । त्रयीतिज्ञान्तरेवापि चतुर्विंशतिमि पदे । लिङ्गस्यासत्रचेरास्य, सप्त-
विंशतिमि पदे ॥ लिंगं स्यात्पार्श्वतो वापी वाप्यलिंगं तत परम् । एववाप्य रचतस्रस्युल्लिङ्गानां
मध्यतस्त्रिषु । मध्येस्यात्सर्वतोभद्रे सत्वरजस्तमोवृत्तं । मृह्णलापि त्रलावापी ऊर्ध्वे पीतेन पूरयेत् ।
वापीपीता तराले तु रक्षावर्णं पूरयेत् । कृष्णपायेन द्वाणां लिङ्गाश्चैव प्रपूरयेत् । श्वेतेन्दु
मंडलाकृष्ण वल्गो नीलेन पूरयेत् । नद्वाण्यो सितान् च परिधि पीतवर्णकैः । मध्ये षोडशमि
कोष्ठे पद्ममण्डललिखेत् । वायोत्तरदले श्वेताकारिका पीतवर्णिका । परिध्यावेष्टित पद्मं वायो-
त्तरं रजस्तम । सितारुणेन कृष्णेन सरवादीध प्रपूरयेत् । लिङ्गस्फुटान्तरालेषु पीतवर्णैश्च
पूरयेत् । रमेश्वरपूरयेद्रेता सख्येन्द्रियुणपाडशान् ॥ भण्डलद्वादशलिंगं स्यात्तल्लिङ्गोद्भवतया ॥
शिवमते ममुद्रिं मर्त्यसिद्धिकर परम् ॥ इति हरिहर मङ्गलतमक द्वादश लिंगतो

भद्रोद्धारः ॥ अथ पूजा विधिः—चत्रव—आचार्यवरयेतत्र अश्विग्भिः सहितं शुचिः । शिव-
रूपास्तथाविप्राः पूज्याश्चन्दन पुष्पैः । अनुहातधतैर्विप्रेः शिवपूजासमारभेत् । अत्रर्णं सजलं
कुम्भतस्यापरितुविन्यसेत् । सौवर्ण्यराजतंताम्रं मृगमयंवापिकारयेत् । कुम्भोपरिन्यसेद्देवं उभया
सहितं शिवम् । सौवर्ण्यप्यथवारीप्ये मृपभे संस्थितं शुभे, रत्नालङ्कारैर्हामिरलंकृत्याच पूजयेत् ।
यत्प्रयुग्मेन संवेष्ट्य विस्वपत्रैः प्रपूजयेत् । पङ्कनवातदधेन तदधेनाथवा पुनः ॥ उमाभद्रेश्वरी
मूर्ति पूजयेद्दृष्ट्यभस्त्रिताम् । अतः परंरुजाविधानस्य पूजापद्धती स्पष्टत्वाद्ग्रंथ
विस्ताराभियालम् ।

इतिद्वादश लिंगतोम्र परिभाषा

अथ हरिहरमंडलात्मकद्वादशलिंगतोम्रोद्धारः



॥ अथ भस्मधारणविधिः ॥

भस्मधारणविधिः । तत्रमन्त्राः—३० सद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजा
 त्तायवैनमोनमः । भवे भवेनातिभवेभवस्वमांभवोद्भवायनमः । ३०
 वामदेवायनमोज्येष्टायनमःश्रेष्ठायनमोऋद्रायनमः । कालायनमःक
 लविकरणायनमोवलनिकरणायनमो वलायनमोवलप्रमथनायनमः
 सर्वभूतदमनायनमोमनोन्मनायनमः । ३० अघोरेभ्योथघोरेभ्यो
 घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्योनमस्ते ऽ अस्तुरुद्ररूपेभ्यः
 ३० तत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहितन्नोरुद्रःप्रचोदयात् ।
 ३० ईशानःसर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् । ब्रह्माधिपति
 ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवोमे ऽ अस्तुसदाशिवोम् ॥ इति मन्त्रैर्भ-
 स्मगृहीत्वा,, मन्त्रयेत्—३० अग्निरितिभस्म वायुरितिभस्म जल
 मितिभस्मव्योमेतिभस्म सर्वं ई० हवा ऽ इदंभस्ममन ऽ इत्येता-
 निचक्षुं ॐ पिभस्मानि, इति त्रिरभिमन्त्र्य,, ३० आपोज्योतिरसो
 ऽ मृतं ब्रह्मभूर्भुवस्वरोमिति तस्मिन्नपश्चासिच्य । ३० मानस्तोके
 तनयेनान ऽ आयुषिमानोगोपुमानो ऽ अश्वेपुरीरिषः । मानोव्वी
 रानरुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे । इतिसंक्षुभ्य
 ३० ईशानः सर्वविद्यानाम्० इति शिरउध्दृत्य,, ३० तत्पुरुषाय
 विद्महे० इतिमुच्यंदर्शयित्वा । ३० अघोरेभ्यो० इति, हृदये ॥ ३०
 वामदेवाय० गुह्ये । ३० सद्योजातं० पादयोः । ३० त्र्यम्बकंयजा-
 महे सुगन्धिपुष्टिवर्धनं ॥ उर्ध्वारुकमिचवन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमा
 मृतात् ॥ इत्यभिमन्त्र्य । ३० नमः शिवाय, इतिध्यायन्—३०
 त्र्यायुषंजमदग्नेः कस्यपस्यत्र्यायुषम् । यद्देवेषुत्र्यायुषंतन्नो ऽ अस्तु
 त्र्यायुषम् ॥ इति मन्त्रेणद्वाभ्यामृग्भ्यां मध्यमांगुलीभिरनुलोमं
 कृत्वा शिरोललाटवक्षः स्कन्धेषुतिर्यक्तिस्रोरेखाःप्रकुर्वीत । मध्य
 रेखां विलोमांगुष्टेनकृत्वा ऽ नुलीमामनामातर्जनीभ्यां रेखाद्द्वयम्वा
 तिस्रोरेखाणधंचाकुर्वीत । नोधूलनम् ॥ नेत्रयुग्मप्रमाणास्ताः ।

रुद्रजपहोमार्चनेषु, अन्यचापिचेतन्नित्यम् ॥ शास्त्रभवंत्रतमेतत्सर्वेषु
वेदेषुवेदवादिभिरुक्तम् । मुमुक्षुरपुनर्भवाय तत्समाचरेत् ।

इति भस्मधारण विधि.

अथ रुद्राक्षधारणम्—रुद्राक्षान्कंठदेशेदशनपरिमितान्मस्तके
विंशतिद्वेषट्षट्कर्णप्रदेशे करयुगलकृतेद्वादशद्वादशैव । बाहोरिंदो
कलाभिर्नयनयुगकृते एकमेकंशिखायां वक्षस्यष्टाधिकंयः कलयति
शतकंसस्वयंनीलकण्ठः ३० नमः, इतिप्रत्येकरुद्राक्षं अष्टोत्तरशतं
जपित्वा, ३० नमः शिवाय, इतिरुद्राक्षान्प्रक्षाल्य पूर्वोक्तांगेषु
धारयेत् ॥ फलमाह—योधारयति रुद्राक्षान्द्रवत्सोपिपूज्यते । रुद्र-
लोकमवाप्नोति शिवेनसहमोदते ॥ अधृत्वाभस्मरुद्राक्षान्योशिवं
पूजयेन्नरः । न पूजाफलमाप्नोति नरकंयानिरोरवम् । तस्मान्मृदा-
पिकर्त्तव्यं लयाटेतुत्रिपुण्ड्रकम् ॥ इत्याग्नेयपुराणोक्तिः ॥

इति रुद्राक्षधारणम् ।

अथ हरिहरमण्डलात्मक, द्वादशलिंगतोभद्रः पूजा पद्धतिः ॥

अथलिङ्गतोभद्रदेवता स्थापनकर्मवक्ष्ये—कर्त्ताउषसिनित्य
कर्मविधाय, पूर्वोदितगणपत्यादिपूजनंकृत्वा, परिचमद्दारेणमंडपे
समागत्यमण्डपदेवान्सम्पूज्य पूर्वोक्तमण्डपपरिभाषोक्त यथास्था
नेषु ग्रहवेदीवास्तुवेदीमातृकावेदीं क्षेपालवेदींचनिर्मायपूजयित्वा
बाह्यम्य, प्राणायामकृत्वा, सङ्कल्पंकुर्यान्—अथेत्यादिदेशकालौ
संकीर्त्य, अमुकोहं, अमुकशिवानुष्ठानकर्मणि त्रिचत्वारिंशद्वेत्वा-
त्मक, हरिहरमण्डलात्मकद्वादशलिङ्गतोभद्रेलिंगेषु पूर्वादिक्रमेण
द्वादशलिंगेषु लिङ्गदेवतास्थापनावाहनपूजनंकरिष्ये—पुष्पाक्षतह-
स्तः, व्याहृत्यावानामन्त्रै रावाहनंस्थापनंच कुर्यान्—तत्रादौपूर्वं
लिंगेषु—३० वीरभद्रायनमः वीरभद्रमावाहयामिस्थापयामि,, ३०

भूर्भुवःस्वः वीरभद्रेहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितोवरदोभव । ॐ
 वीरभद्रायनमः, सम्पूजयेदेवंसर्वत्रबोधयम् ॥ ३० शम्भवेनमः
 शम्भुमावाहयामि स्था० । ॐ भू० शम्भो इहा० सुप्र० । ॐ
 शम्भवेनमः, सं० ॥२॥ ॐ अजैकपादायनमः, आ० स्था० । ॐ
 भू० अजैकपादइहा० सुप्र० । ॐ अजैकपादायनमः सं० ॥३॥ ततो
 दक्षिणलिङ्गेषु—ॐ अहिर्बुध्न्यायनमः आ० स्था० । ॐ भू० अहि-
 र्बुध्न्येहाग० सुप्र० । ॐ अहिर्बुध्न्यायनमः सं० ॥१॥ ॐ पिनाकि-
 नेनमः, आ० स्था० । ॐ भू० पिनाकिनइहाग० सुप्र० । ॐ पिना
 किने नमः पू० ॥२॥ ॐ शूलपाणयेनमः, आ० स्था० । ॐ भू०
 शूलपाणे, इहाग० सुप्र० । ॐ शूलपाणयेनमः । पू० ॥३॥ पश्चिम
 लिङ्गेषु—ॐ भुवनाधीश्वरायनमः, आ० स्था० ॐ भू० भुवनाधी
 श्वरइहाग० सुप्र० । ॐ भुवनाधीश्वरायनमः पूजयेत्—॥१॥
 ॐ कपिलायनमः आ० स्था० । ॐ भू० कपिल, इहाग० ति०
 सुप्र० । ॐ कपिलायनमः पू० ॥२॥ ॐ दिवस्पतयेनमः आ० स्था०
 ॐ भू० दिवस्पते इ० तिष्ठ सुप्र० । ॐ दिवस्पतयेनमः पू० ॥३॥
 उत्तरलिङ्गेषु—ॐ रुद्रायनमः आ० स्था० । ॐ भू० रुद्र, इ० सु०
 व० । ॐ रुद्रायनमः पू० । ॐ शिवायनमः आ० स्था० । ॐ भू०
 शिव, इ० सु० । ॐ शिवायनमः पू० । ॐ महेश्वरायनमः आ०
 स्था० । ॐ भू० महेश्वर, इहा० ति० सु० । ॐ महेश्वरायनमः
 पूजयेत् ॥ ततः पूर्वाद्यष्टदिग्बध्नों भैरवान्स्थापयेत्—पूर्वे—ॐ
 असितांग भैरवायनमः स्थापयामि, पूजयामि । आग्नेये—ॐ
 क्रूरभैरवायनमः । आ० स्था० । दक्षिणे—ॐ चण्डभैरवायनमः ।
 आ० स्था० । नैर्ऋत्ये—ॐ क्रोधभैरवायनमः । आ० स्था० ।
 पश्चिमे—ॐ उन्मत्तभैरवायनमः । स्था० पू० । वायव्ये—ॐ
 कपालभैरवायनमः । आ० स्था० उत्तरे—ॐ भीषणभैरवायनमः ।
 आ० स्था० । ईशाने—ॐ संहारभैरवायनमः । आ० स्था० । ततः
 पूर्वादिक्रमेण चतुर्विंशतिदेवताःस्थापनीयाः । पूर्वे—ॐ भवाय
 नमः । आ० स्था० । ॐ सर्वायनमः आ० । ॐ रुद्रायनमः

आ० आग्नेये-ॐ पशुपतयेनमः आ० । ॐ महतेनमः
 आ० । ॐ भीमायनमः आ० दक्षिणे-ॐ ईशानायनमः
 आ० । ॐ अनन्तायनमः । आ० ॐ तक्षकायनमः आ० ।
 नैर्ऋत्ये-ॐ वासुकयेनमः आ० । ॐ कुलिशाय नमः
 आ० स्था० ॐ कर्कोटकायनमः आ० । पश्चिमे-ॐ शंखपालायनमः
 आ० । ॐ कंठलायनमः आ० । ॐ अश्वतरायनमः । आ० वायव्ये
 ॐ शूलिनेनमः आ० । ॐ चन्द्रमौलयेनमः आ० । चन्द्रमसेनमः
 आ० । उत्तरे-वृषभध्वजायनमः आ० । ॐ त्रिलोचनायनमः
 आ० । ॐ शक्तिधरायनमः आ० । ईशाने-ॐ महेश्वरायनमः
 आ० ॐ शूलधारिणेनमः आ० । ॐ स्थाणवेनमः आ० पू० ।

॥ इति लिंगदेवता स्थापनक्रमः ॥

ततो भद्रे ब्रह्मादिदेवता स्थापनक्रमं वक्ष्ये—तत्रादौ मध्येक-
 णिकायाम्—ॐ ब्रह्मयज्ञानमिति मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टु-
 ष्ण्डः आदित्यो देवता ब्रह्मावाहने विनियोगः । ॐ ब्रह्मयज्ञानं
 प्रथमं पुरस्ता द्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽत्रायः । सवुध्न्याऽउपमा ऽ
 अस्यन्विष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चन्विषवः ॐ भूर्भूवः स्वः
 ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि, प्रति० ॐ एतन्तेतिप्रतिष्ठाप्य,
 ॐ ब्रह्मणेनमः संप्रजयेत् । तत उदीचीमारभ्य वायुकोणपर्यन्तमष्ट
 लोकपालान्स्थापयेत्—तत्रादौ उत्तरलिंगस्थापः—ॐ वय ई०
 सोममित्येतस्य वन्धुऋषिर्गायत्रीऋन्दः सोमोदेवता सोमावाहने
 स्थापने च वि० । ॐ वय ई० सोमव्रते तवमनस्तनृपुचिभृतः
 प्रजावन्तः सचेमहि । ॐ सोमायनमः आ० स्था० । ईशाने—ॐ
 तमीशानमित्यस्य गोतमऋषिर्जगतीऋन्दो विश्वेदेवादेवताः,
 ईशानावाहने स्थापने वि० । ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं
 धियंजिन्वमनसेहमहेन्द्रयम् । पूपानोयथाव्वेद सामसद्वृधेरृचिता
 पायुरदब्धःस्यस्तये । ॐ ईशानायनमः आ० पू० । पूर्वलिंगस्थापः—
 ॐ आतारमिति मंत्रस्य गर्गऋषिस्त्रिष्टुः ऋन्दः, इन्द्रोदेवता इन्द्रा
 वाहने स्था० वि० । ॐ आतारमिन्द्र मविनारमिन्द्र ई० व्वेह्वे

सुहव ष्टौ शूरमिन्द्रम् । हयामिशक्रं पुरुहनमिन्द्र ष्टौ स्वस्तिनो
मघवाधात्विन्द्रः ३० इन्द्रायनमः । तत आग्नेय्याम्—ॐ त्वन्नो
अग्ने इत्यस्य आंगिरस हिरण्यस्तृपऋषिर्जगतीञ्छन्दः, अग्निर्देवता
ग्न्यावाहने स्था० वि० ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य
हेडोऽ अवयासिशिष्टा । यजिष्ठो बन्धितमः सोशुचानोऽविश्वारोहो
ऋषिर्मुमुग्ध्यस्मन् । ३० अग्नयेनमः० । ततो दक्षिणलिङ्गस्याधः
ॐ यमायत्वेत्यस्यदध्यङ्गुडाथर्वण ऋषिर्धर्मादेवता यमावाहने
स्था० वि० । ॐ यमायत्वाद्गिरस्वते पितृमते स्वाहा स्वाहा घर्माय
स्वाहा घर्मः पित्रे । ३० यमायनमः आ० स्था० पू० । ततो
नैर्ऋत्यां—३० असुन्वन्त मित्यस्य प्रजापति ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो
निर्ऋतिर्देवता निर्ऋत्या वाहने स्था० वि० ३० असुन्वन्तमयज-
मान मिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्म दिच्छसात
ऽ इत्या नमोदेवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु । ॐ निर्ऋतयेनमः । परिच-
लिङ्गस्याधः—ॐ तत्वायामीत्यस्यशुनः शोक ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः,
वरुणोदेवता वरुणावाहने स्था० वि० ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा
वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहविर्भिः अहेडमानो वरुणोहवोऽधु-
न्श ष्टौ सामान ऽआयुः प्रमोषीः । ॐ वरुणायनमः ततोवायव्ये
ॐ आनोनियुद्धिरित्यस्य प्राजातिर्ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो वायुर्देवता
वाय्वावाहने स्था० वि० । अनोनियुद्धिः शतनीभिरध्वर ष्टौ सह-
स्रिणीभिःरूपयाहियज्ञम् । वायोऽअस्मिन्सदनमादयस्वयूयंपातः
स्वस्तिभिः सदानः । ३० वायवेनमः । ततो वायुसोममध्ये भद्रे—
ॐ सुगावो देवाइत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो देवादेवताःअष्ट
वसुस्थापने वि० ॐ सुगावोदेवाः सदानाऽकर्मज ऽआजग्मेद ष्टौ
सवनंजुपाणाः । भरमाणा व्वहमानाहवी ऋषिर्द्व्यस्मेधस्तव्वसव्वो
व्वसूनि स्वाहा,, नाममंत्रैश्चस्थापयेत्—३० ध्रुवायनमः आ०
स्था० । ३० अध्वरायनमः० । ३० सोमायनमः० । ३० अद्भ्यो
नमः० । ३० अनिलायनमः० । ३० अनलायनमः० । ३० प्रत्यु-
पायनमः० । ३० प्रभापायनमः० । ततःसोमेशानमध्ये भद्रे—

रुद्रान्—ॐ रुद्राःस र्दं सृजेत्यस्यप्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः
 रुद्रोदेवता, एकादशरुद्रावाहने स्थापनेच वि० ॥ ॐ रुद्राःस र्दं
 सृज्य पृथिवीवृहज्योतिः समीधरे । तेषांभानुरजस्रऽहच्छुक्रोदेवेषु
 रोचते । नाममंत्रैश्च—ॐ वीरभद्रायनमः आ० स्था० । ॐ
 शंभवेनमः० । ॐ गिरीशायनमः० । ॐ अजैकपादायनमः० ।
 ॐ अहिर्बुध्न्यायनमः० । ॐ पिनाकिनेनमः० । ॐ भुवनाधी-
 रश्वरायनमः० । ॐ कपालिनेनमः० । ॐ दिक्पतयेनमः० । ॐ
 स्थाणवेनमः० । ॐ रुद्रायनमः० ॥ ततः पूर्वशानमध्ये भद्रेद्वाद-
 शादित्यान्—ॐ यज्ञोदेवानामित्यस्य कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः,
 आदित्योदेवता द्वादशादित्यावाहने स्थापने विनियोग । ॐ
 यज्ञोदेवानांप्रत्येतिसुम्नमादित्यासोभवतामृडयन्तः । आषोर्वा-
 षी सुमतिर्बृहत्याद र्दं होश्चिद्यान्वरिवो वित्तरासदादित्येभ्य-
 स्त्वा । नाममंत्रैश्च—ॐ भगायनमः आवाहयामि स्थापयामि ।
 ॐ बह्णायनमः० । ॐ सूर्यायनमः० । ॐ वेदांगायनमः० ।
 ॐ भानवेनमः० । ॐ रवयेनमः० । ॐ गभस्तयेनमः० । ॐ
 हिरण्यरेतसेनमः० । ॐ दिवाकरायनमः० । ॐ मित्रायनमः० ।
 ॐ आदित्यायनमः० । ॐ विष्णवेनमः० । ततःइन्द्राग्निमध्ये
 भद्रे—अश्विनौ—ॐ याषांकजोत्पस्य मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्री-
 छन्दः, अश्विनौदेवते अश्विनाव हने स्थापने विनियोग ।
 याषांकशामधुमत्य श्विनासृन्तावतीतयायज्ञं मिमिक्षतम् । उप-
 यामगृहीतो स्यश्विभ्यांतवैपते योनिर्माध्वीभ्यान्त्वा । ॐ अश्वि-
 भ्यांनमः आ० स्था० । ततोऽग्नियममध्ये भद्रे ॐ ओमासरश्चर्ष-
 णी धृतइत्स्यमधुरल्लुन्दा ऋषिर्गायत्रीछन्दः विरबेदेवा देवता
 विरबेदेवावाहने स्थापने विनियोग । ॐ ओमासश्चर्षणी
 धृतो विरबेदेवासऽआगत । दारवा ॐ सोदाशुषः सुतम् ।
 ॐ विरबेभ्योदेवेभ्योनमः,, आवाहयामि स्थापयामि । यमनिर्ऋ-
 तिमध्ये भद्रे—ॐ अमित्यं देवमित्यस्य प्रजापतीर्ऋषिरष्टिछन्दः
 सवितादेवता सप्तयज्ञावाहने स्थापनेच विनियोगः । ॐ अमित्यं

देव ट० सवितारमोरयोः ऋचिक्रतु मर्चामिसत्यसव ट० रत्नधा-
 मभिः प्रियंमतिकविम् ॥ ऊर्ध्वायस्या मतिर्भा अदिव्युत्तत्सवी
 मनिहिरण्य पाणीरमिमीत सुक्रतुः कृपास्वः ॥ ७० सप्तयक्षे-
 भ्योनमः० । निर्ऋतिवरुणामध्ये भद्रे-३० नमोस्तुसर्पेभ्यःऽइत्यस्य
 प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सर्पादेवताः सर्पावाहने स्थापने च
 विनियोगः । ३० नमोस्तुसर्पेभ्योयेकेच पृथिवी मनु । ये ऽअन्त-
 रिक्षे येदिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः ॥ ३० सर्पेभ्योनमः० । तत्रैव-
 ३० भूतेभ्योनमः आ० स्था० । वरुणवायुमध्ये भद्रे-३० ऋतापा-
 डित्यस्य देवाऋषयोगायत्रीछन्दः गंधर्वाप्सरसोदेवता गन्धर्वा
 पसरसामावाहने स्थापने च विनियोगः ३० ऋतापाडृतधामा-
 ग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदोनाम । सनऽइदं ब्रह्मक्षत्रं
 पालुतस्मै स्वाहा वाट्नाभ्यः ॥ ३० गन्धर्वाप्सरोभ्योनमः० ।
 तत उत्तरलिंगस्याधः-३० यदक्रन्देत्यस्य जमदग्निर्दीर्घतमा
 वृषी त्रिष्टुप्छन्दः स्कन्दो देवता स्कंदावाहने स्थापनेच वि० । ३०
 यदक्रन्दः प्रथमंजायमानः उच्यन्तसमुद्रा दुतवा पुरीपात् । श्येन
 स्यपक्षाहरिणस्य वाहृउपस्तुत्यं महिजातन्ते ऽअर्धन् । ३० स्कन्दो
 यनमः । तत्रैवनाममंत्रैः ३० नन्दिनेमः आवाहयामि । स्थापयामि
 ३० ईश्वरायनमः । ३० शूलायनमः ३० महाकालायनमः । ततोब्रह्मे-
 शानमध्ये शृंखलावह्निपु-३० अदितिद्यौरित्यस्य गौतमऋषि
 त्रिष्टुप्छन्दः विश्वेदेवादेवताः दक्षादिसप्तकावाहने स्थापने च वि०
 अदितिद्यौरदति रंतरिक्तमदितिर्मातासपितासपुत्रः । विश्वेदेवा
 ऽअदितिः पंचजनाऽअदिनिर्जातमदितिर्जनित्वम् । ३० दक्षादि-
 सप्तकेभ्योनमः । पूर्वलिङ्गस्याधः-३० अम्बे ऽ अम्बिके ऽम्बालिके
 त्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः अश्वोदेवता दुर्गावाहने स्थापने
 च वि० । ३० अम्बे ऽ अम्बिके ऽम्बालिके नमानयनिकश्चनः ।
 ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम् । ३० दुर्गायैनमः० ।
 तत्रैव-३० उदंदिष्णारत्यस्य मेधानधिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दो

विष्णुदेवता विष्णुवावाहने स्थापनेच वि० । ३० इदंविष्णुविचक्रमे
 त्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपा ॐ सुरेस्वाहा । ३० विष्णुवेनमः
 ततो ब्रह्माग्निमध्ये शृंगलावलिपु—३० पितृभ्यइत्यस्यप्रजापत्य
 शिवसरस्वत्यऋषयः सप्तयजुंपिछुन्दांसिपितरो देवता स्वधा
 वाहने स्थापनेच वि० । ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः
 पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः
 स्वधानमः । अक्षन्पितरोमीमदन्तपितरो तीतृपंतः पितरः पितरः
 शुन्धध्वम् । ३० स्वधायैनमः० । ततोदक्षिणलिंगस्याधः—३०
 परंमृत्यो, इत्यस्यसंकसुकऋषि त्रिष्टुप्छन्दो मृत्युदेवता मृत्योरा
 वाहने स्थापने च वि० । ३० परंमृत्योऽअनुपरेहिपथां यस्तेऽअन्य-
 ऽइतरोदेवयानात् । चक्षुष्मतेशृण्वते तेब्रवीमिमानः प्रजाॐरीरि-
 योमोतञ्जीरान् । ॐ मृत्यवेनमः । ततो ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये शृंग-
 लावलिपु—३० गणोनान्तवेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषि यजुश्छन्दो
 गणपतिर्देवता गणपत्यावाहने स्थापनेच वि० । ॐ गणोनान्त्वा
 गणपतिं ई० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिं ई० हवामहे निधी-
 नान्त्वा निधिपतिं ई० हवामहे व्वसोमम । आहमजानिगभर्भध-
 मात्वमजा सिगभर्भधम् । ३० गणपतयेनमः ततः पश्चिमांलग-
 स्याधः—३०शन्नोदेवीति मंत्रस्यदध्यङ्ङाधर्वणऋषिर्गायत्रीछन्दः
 आपोदेवताः अपामावाहने स्थापनेच वि० । ३० शन्नोदेवीरभिष्टग
 ऽआपोभवन्तुपीतयेशंयोरभिश्चवंतुनः । ३० अद्भ्योनमः० ॥
 ब्रह्मवायुमध्ये शृंगलावल्लीपु—३० मरुतोयस्य गौतम ऋषिर्गायत्री
 छन्दः मरुतोदेवत मरुतामावाहनेस्थापनेच वि० । ३० मरुतोयस्यहि-
 क्षयेपाधादिवो त्विमहसः । ससुगोपातमोजनः मरुद्भ्योनमः ।
 पद्मस्यकणिकाधः—३० स्योनापृथ्वीत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिर्गाय
 त्रीछन्दः पृथ्वीदेवता पृथिव्यावाहने स्थापनेच वि० । ३० स्योना
 पृथिविनो भावानृत्तरानिवेशनी । यच्छ्यानः शर्मसप्रथाः । ॐ
 पृथिव्येनमः० । तत्रैव—ॐ पंचनद्यइत्यस्य, आदित्ययाज्ञवल्क्या
 ऋषी, अनुष्टुप्छन्दः सरस्वतीनदीदेवता गंगादिनद्यावाहने स्थापने

च वि० । ॐ पंचनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्रोतसः । सरस्वती
 तुपंचधासोदेशे भवत्सरित् । ३० गंगादिसरिद्भ्योनमः० नत्रैव
 ३० समुद्रायेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, वृहतीच्छंदः समुद्रोदेवताः
 सप्तसागरावाहने स्थापने च वि० । ॐ समुद्राय शिशुमारानाल-
 भते पर्जन्यायमण्डकानद्भ्यो मत्स्थान्मित्रायकुलीपयान्वरुणाय
 नाक्रान् ३० सप्तसागरेभ्योनमः० ततः कर्णिकोपरि—३० प्रपर्व-
 तस्येति देवरातऋषि स्त्रिष्टुष्टुन्दो मेरुदेवता मेरुवाहने स्थापने
 वि० । ॐ प्रपर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्तिस्वसिचऽइयानः
 ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताऽअर्हिर्धुध्न्यमनुरीयमाणाः । त्रिष्णोर्वि-
 क्रमणमसि त्रिष्णो विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि । ३०
 मेरवेनमः० ततउदीच्यालिंगे ॐ सद्योजातइत्यस्य जमदग्निऋषिः
 त्रिष्टुष्टुन्दः अग्निदेवता सद्योजातावाहने स्थापनेच वि० । ॐ
 सद्योजातो व्यमिमीतयज्ञमग्नि देवानामभवत्पुरोगाः कस्यहेतुः
 प्रददिस्यूतस्यव्वाचि स्वाहा कृत ई० हविरदन्तु देवाः
 ॐ सद्योजातायनमः । पूजयेत् प्राच्यालिंगे—
 ३० वाममित्यस्य भरद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुष्टुन्दो वामदेवोदेवता
 वामदेवावाहने स्थापने वि० । ॐ वाममद्य सवितर्वाम मुश्वो
 दिवेदिवे व्वाममस्मभ्य ई० सावीः । व्वामस्यहिच्यस्य देवभूरे
 रयाधिया व्वामभाजःस्याम ॥ दक्षिणस्यालिंगे—ॐ अघोरइत्य-
 स्य अघोरऋषिः, अनुष्टुष्टुन्दः, रुद्रोदेवता अघोरावाहने स्थापनेच
 वि० । ३० अघोरेभ्यो अघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्व
 वैसभ्यो नमस्तेऽअस्तुरुद्ररूपेभ्यः । ३० अघोरायनमः । ततः
 प्रतीच्यालिंगे—३० तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुषऋषिः, गायत्रीछन्दः
 रुद्रोदेवता तत्पुरुषावाहने स्थापनेच वि० । ३० तत्पुरुषाय विद्महे
 महादेवाय धीमहि । तन्नोऋद्रः प्रचोदयात् ॥ ३० तत्पुरुषायनमः ।
 ततःकार्णिकार्यामेरोरपरि—३० तमीशान मित्यस्य गौतम ऋषि-
 र्जगतीछन्द ईशानोदेवतेशानावाहनेस्थापने वि० । ३० तमीशानं
 जगतस्नस्थुषस्पति धियंजिन्वमवसेहमहेव्यन् । पूयानोयथाव्वेद

साम सद्बृधेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये ॥ ३० ईशानायनमः० । ततः
परिधौ—३० त्वयाहिनइत्यस्य शङ्खःश्रापस्त्रिष्टुप्छन्दः पितरोदेव-
तापरिध्यावाहनेस्थापनेच वि० । ३० त्वयाहिनःपितरः सोमपूर्वं
कर्माणिक्रुः पत्रमानधीराः । वन्वन्वव्वातः परिधीं १ रपोर्ण
वीरेभिरश्वैर्मघवाभवानः ॥ ३० परिधैनमः ॥ ततोमेरोःपरिधिं
समन्ताल्लिंगानांस्कन्धे विंशतिकोष्टेषुचतुःपुर्यः—३० चतुःपुरीभ्यो
नमः । आवाहयामिस्थापयामि ॥ तत आग्नेयकोणेशृङ्खलाशिरसि
पदत्रये—३० अग्निमीलइत्यस्यमधुरछन्दा ऋषिर्गायत्रीछन्दो ऽ
ग्निदेवता ऋग्वेदावाहनेस्थापनेच वि० । ३० अग्निमीलेपुरोहितं
यज्ञस्यदेवभृत्वजम् । होतारंरत्नधातमम् । ३० ऋग्वेदायनमः
पूजयामि ॥ ततो नैऋत्ये—शृङ्खलाशिरसिपदत्रये—३० इषेत्वेत्य-
स्यपरमेष्ठीर्ऋषिर्देव्यनुछन्दः शाखादेवता यजुर्वेदावाहनेस्थापने
च वि० । ३० इषेत्वे, उज्जैत्वाव्यायवस्थदेवोवः सविताप्रार्थयतुः
श्रेष्ठतमायकर्मण ऽ आप्यायध्वमन्ध्या ऽ इन्द्रायभागंप्रजावतीर
नमीवा ऽ अयक्षमामावस्तेन ऽ ईशतमाघश र्द० सोध्रुवा ऽ अस्मि
न्गोपतौस्यातवह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि । ॐ यजुर्वेदायनमः ॥
ततो वायुकोणो शंखला शिरसि पदत्रये—ॐ अग्न आयाहीत्यस्य
भरद्वाज ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निदेवता सामवेदावाहने स्थापनेच
विनियोगः । ॐ अग्नऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
निहोता सत्सिर्वहिषि । ३० सामवेदायनमः० । तत ईशानेशंखला
शिरसि पदत्रये—ॐ शन्नोदेवीरित्यस्य दध्यङ्गार्थवणऋषिः,
गायत्रीछन्दः, आपोदेवताः, अथर्ववेदावाहने स्थापने वि० । ३०
शन्नोदेवीरभिष्टयऽ आपोभवन्तुपीतये । संयोरभिभवन्तुनः ॥
३० अथर्ववेदायनमः० । तत उत्तरमध्यलिङ्गस्य वामवाप्याम्— ३०
महत्तेनमः । महान्तमावाहयामिस्थापयामि, एवंसर्वत्र ॥ ततो
दक्षिणवाप्याम्—३० भवायनमः—भव० । पूर्वमध्य लिंगवाम-
वाप्याम्—३० शर्वायनमः—शर्व० । दक्षिणे—ॐ पशुपतयेनमः—
पशुपति० । ततो दक्षिणेमध्यलिंगस्य वामवाप्यां—३० ईशानाय

नमः-ईशानं० । दक्षिणवाप्यां-३० उग्रायनमः-उग्रं० । ततः
 पश्चिमे मध्यलिंगस्य वामवाप्यां-रुद्रायनमः रुद्रं० । दक्षिणवा-
 प्याम्-३० भीमायनमः भीमं आ० स्था० ॥ तत
 उत्तरवायव्यान्तराल वाप्याम्-३० महत्स्यैनमः-महतीं० आ० स्था० ।
 तत उत्तरेशानेन्तरालवाप्याम्-३० भवान्यैनमः भवानीं० ॥ ततः
 ईशानपूर्वान्तरालवाप्याम्-३० शर्वाण्यैनमः-शर्वाणीं० । ततः
 पूर्वाग्नेयान्तरालवाप्यां-३० पशुपत्यैनमः-पशुपतीं० । तत आग्नेय
 दक्षिणाऽन्तराले-३० ईशान्यैनमः-ईशानीं० । ततो दक्षिणैर्ऋत्या
 न्तराल वाप्याम्-३० उग्रायैनमः-उग्रां० । ततो नैर्ऋत्यपश्चिमा-
 न्तराल कोण वाप्याम्-३० रुद्रायैनमः रुद्राणीम्० । ततः
 पश्चिमवायव्यान्तराल कोणवाप्यां-३० भीमायैनमः-भीमा
 मावाह्याभि स्थापयामि । ततो वाह्यपरिधौ दिगीशसनिधौ-
 तत्रादौ उत्तरे-सोमसन्निधौ- ३० गदयैनमः-गदां
 आवाहयामि स्थापयामि ॥ ईशाने-ईशसनिधौ-३० त्रिशूलाय
 नमः-त्रिशूलं० । पूर्वैर्ऋन्द्रं-३० वज्रायममः-वज्रं० ॥ आग्नेये-अग्निं०
 ३० शक्त्येनमः-शक्तिं० । दक्षिणेयम० । ३० दण्डायनमः-दण्डं०
 नैर्ऋत्येनिर्ऋतिं० ३० ग्वाहायनमः-ग्वहं० । पश्चिमेवरुणं ३० पाशा
 यनमः-पाशं० । वायव्येवायुं । ३० अंकुशायनमः-अंकुशम् ।
 आ० स्था० । तद्वाह्येऽत्तरे-३० गौतमायनमः-गौतमं आ० स्था०
 ईशाने-३० भरद्वाजायनमः । भरद्वाजं० । पूर्वे-३० विश्वामित्रा
 यनमः-विश्वामित्रं० आग्नेये-३० कश्यपायनमः कश्यपं० । दक्षिणे
 ३० जमदग्नेयैनमः-जमदग्निं० नैर्ऋत्ये-३० वशिष्ठायनमः-
 वशिष्ठं० । पश्चिमे-३० अत्रयैनमः-अत्रिं० । वायव्ये-३० अरुन्ध
 त्यैनमः अरुन्धतीम्० ॥ तद्वाह्येपूर्वाद्यष्टदिक्षु-३० ऐन्द्वैनमः-ऐन्द्रीं०
 ३० कौमार्यैनमः-कौमारीं० । ३० ब्राह्मण्यैनमः ब्राह्मीं० ३० वारा-
 ह्यैनमः-वाराह्यं० । ३० चामुण्डायैनमः-चामुण्डाम्० । ३० वैष्ण
 व्यैनमः-वैष्णवीं । ३० कौबेर्यैनमः-कौबेरीं । ३० वैनायक्यैनमः
 वैनायकीम्० । इति हरिहर्मगण्डलद्वादशलिंगतोभद्रदेवता स्थापनक्रमः ।

अथैतेषांसंलग्नपूजापद्धतिवक्ष्ये—पुष्पाक्षतः—ध्यायेत्—३०
 ब्रह्माद्यान्विनियुक्तांस्तान्वैनायक्यन्तगान्सुरान् । ध्यायााममनसा
 भक्त्यालिंगतोभद्रदेवतान् ॥ आवाहनम्—मन्दस्मेराननान्सौम्या
 न्ब्रह्मदीनसगणायुधान । आवाहयाम्यहं भक्त्यालिंगतोभद्रदेव-
 तान् ॥ आसनम्—शुभ्रंवारंजितं वस्त्रं कार्पासादिविनिमित्तम् ।
 आसनं प्रतिगृह्णन्तुलिंगतोभद्रदेवताः । स्थापनम्—आव्रजन्तिवहति-
 ष्णन्तुब्राह्म्यान्त्रिदिवौकसः । स्थापयामिचपूजार्थं लिङ्गतोभद्र-
 मण्डले ॥ पाद्यम्—सुनिर्मलंसुगन्धोष्णंच पवित्रं तीर्थजञ्जलम् । पाद्यं
 गृह्णन्तुतेसर्वे लिङ्गतोभद्रदेवताः ॥ अर्घ्यम्—ताम्रादिपात्रगंशुद्धं सुग-
 न्धेनसुवासितम् । अर्घ्यं गृह्णन्तुतेसर्वे लिङ्गतोभद्रदेवताः ॥ पंचामृ-
 तम्—पयोदधिघृतक्षौद्रशर्करामिश्रितं शुभम् । पंचामृतं प्रगृह्णन्तुलिङ्ग-
 तोभद्रदेवताः ॥ आचमनम्—पवित्रंनिर्मलनीरं कर्पूरादिसुवासितम्
 आचम्यंच प्रगृह्णन्तु लिंगतोभद्रदेवताः । स्नानीयम्—पवित्रंनिर्मलं
 दिव्यं स्वर्णद्यादिगतंपरम् । जलं गृह्णन्तुस्नानार्थं लिंगतोभद्रदेवताः
 यज्ञोपवीतम्—नवतन्तुसमायुक्तं ब्रह्मग्रन्थिनियोजितम् । उप-
 वीतं प्रगृह्णन्तु लिङ्गतोभद्रदेवताः । वस्त्रम्—ऊर्णाकार्पासकौशेय
 मङ्गाच्छादनमाहृतम् । वस्त्रपुंजंप्रगृह्णन्तु लिङ्गतोभद्रदेवताः । भूष-
 णम्—भूषणानिविचित्राणि कुण्डलादीनियानिवै । मयादत्तानि
 गृह्णन्तुलिङ्गतोभद्रदेवताः । चन्दनम्—मलयाचलजं दिव्यं केशरादि
 विमिश्रितम् । गृह्णन्तुभालशोभार्थं लिंगतोभद्रदेवताः । सौभा-
 ग्यद्रव्यम्—चन्दनोपरिशोभार्थं भृकुट्योरन्तरङ्गतं । सिन्दूरादि
 प्रगृह्णन्तुलिङ्गतोभद्रदेवताः । अक्षताः—तंडुलांश्वेतवर्णाभानक्षता
 न्मंगलप्रदान् । सगन्धान्प्रतिगृह्णन्तु लिङ्गतोभद्रदेवताः । पुष्पाणि
 ऋतुजानिसुगन्धीनि दूर्वापत्रादिकानिच । पुष्पाणिप्रतिगृह्णन्तु
 लिंगतोभद्रदेवताः । विल्वपत्राणि—येशैवाशिशवभक्ताश्च सशि-
 वारचशिवप्रियाः । विल्वपत्राणिगृह्णन्तु लिंगतोभद्रदेवताः ।
 नयनांजनम्—स्निग्धं दिव्यंपवित्रंच नयनानन्दनंपरम् । अंजनं
 प्रतिगृह्णन्तु लिंगतोभद्रदेवताः । धूपः—गुग्गुलादिसमायुक्तं गंधा

द्वयंसुमनोहरम् । गृह्णन्तु धूपमाघेयं लिङ्गतो भद्र देवताः ।
 दीपः—साःयं सद्भक्तिकाभिरच ज्वलितं सुप्रकाशकम् । आरार्तिं
 कथं प्रगृह्णन्तु लिङ्गतो भद्रदेवताः । नैवेद्यम्—अन्नं फलं घृतं-
 दुग्धं नैवेद्यं तृप्तिदायकम् । यथालब्धं प्रगृह्णन्तु लिङ्गतो भद्र देवताः
 नैवेद्यान्तेजालम्—कराननविशुद्ध्यर्थमेलाचूर्णं समन्वितम् जलं गृह्णन्तु
 महर्षिं लिङ्गतो भद्रदेवताः । ताम्बूलं—सगन्धचूर्णं ताम्बूलं नागवल्ली
 दलान्वितम् । गृह्णन्तु परयाप्रीत्या लिङ्गतो भद्रदेवताः । ततः प्रार्थ-
 येत्—आवाहनं न जानामि न जानामि वि सर्जनम् । पूजां चैव न जानामि
 त्वद्गतिं परमेश्वराः । न्यूनातिरिक्तं पूजायां यद्यत्पाद्यादिभिर्भवेत्
 तत्सर्वं चाम्यतां देवाः प्रसीदन्तु सुरेश्वराः । ये ये लिङ्गे पुदेवास्तदनुम-
 तिगता ये च ये दक्षवामे, नागाधीशाः सुरेशा विविधसुरगणा मातृका
 भैरवाश्च । ब्रह्माद्यालोकपाला ऋषिगणसहिता भास्कराद्याग्रहाश्च
 ते सर्वे पान्तु देवाः सकलभयहरा लिङ्गतो भद्रदेवाः । ततः पूजापद्धत्युक्त
 प्रकारेण लिङ्गतो भद्रदेवैर्म्यस्तत्तन्मंत्रैर्नाममंत्रैर्वा दशदश, ययति
 लाहुतिभिरैकैकया ज्याहुत्या वा जुहुयात् । ततो नाममंत्रैर्वा वैदिक
 मंत्रैः, पायसवल्लिदद्यात् । कार्यान्ते देवविस्मर्जनम्— यान्तु शैवगणा
 सर्वे यान्तु ब्रह्मादिदेवताः । यान्तु भैरवभूतादि पुनरागमनाय च ।
 ततो यजमानमभिषिञ्चयाशीर्दद्यात् ।

इति लिङ्गतो भद्र संघपूजा पद्धतिः

एवं लिङ्गतो भद्रस्य देवान्सम्पूज्य कारुणिकार्यां वक्ष्यमाण विधानेन
 त्रिवर्षं कुर्वीत अथ चादौ पार्थिवलिङ्ग निर्माण प्रकारमाह-
 उक्तं च नन्दि पुराणे—आयुष्मान्बलवान् श्रीमान् पुत्र बांधव-
 वान्सुखी । वरमिष्टं लभेद्भिङ्गं पार्थिवं यः समर्चयेत् ॥ तस्मात्तु
 पार्थिवलिङ्गं ज्ञेयं सर्वार्थ साधकम् । भविष्य पुराणे—मृद्भस्मनोः
 सकृत्पिण्डं ताम्रकांस्यमयं तथा । कृत्वा लिङ्गं सकृत्पूज्य वसे-
 त्कल्पायुषं दिवि । तिथितत्वे—अक्षादल्प परिमाणं नलिङ्गं
 कुत्रचिन्नरः । कुर्वीतां गुप्ततो ह्रस्वं न कदाचित्समाचरेत् । देवी-

पुराणे—सुदाहरण संघट्ट प्रतिष्ठा ह्यानमेवन । स्नपनं पूजनंचैव
 विसर्जनमतः परम् । हरोमहेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाक
 धृक् । पशुपतिः शिवश्चैव महादेव इति क्रामात् - ॥
 पार्थिवलिंग निर्माणार्थं मंत्रः-ॐ हरोयनमः-अनेनमृत्तिका
 ग्रहणं कुर्यात् । ॐ महेश्वरायनमः । इति लिंग
 निर्माणं कु० । ॐ शूलपाणयेनमः, इति प्रतिष्ठां कु० । ॐ
 ध्यायेन्नित्यं महेशं० । इति ध्यानं-ॐ पिनाकधृगेनमः । ॐ भूर्भुव
 स्वः पिनाकधृगिहागच्छेहृतिष्ठ सुप्र० । ॐ पशुपतये नमः,
 पाद्यम्-ॐ नमः शिवाय इति सामान्यपूजनम्-ततोवामावर्त्तन
 पूर्वाद्याग्नेयान्तमष्टमूर्त्तिं स्थापनं पूजनं च कुर्यात्-पूर्वं-सर्वायत्ति
 मूर्त्तयेनमः स्थापयामि पूजयामि । एवं सर्वत्र ईशाने-ॐ भवाय
 जलमूर्त्तयेनमः स्था० पू० । उत्तरे-ॐ रुद्राय अग्निमूर्त्तयेनमः ।
 स्था० पू० । वायव्ये-ॐ उग्राय वायुमूर्त्तयेनमः । पश्चिमे-ॐ
 भीमायाकाशमूर्त्तयेनमः स्था० । दक्षिणे-ॐ महादेवाय सोम-
 मूर्त्तयेनमः स्था० । आग्नेये-ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तयेनमः स्था० पू०
 नत उत्तरांगपूजान्ते-ॐ महादेवाय नमः जमस्व इति संहारमुद्रया
 विसर्जयेत् ॥

इति पार्थिव पूजापद्धतिः—

वेदोक्तं शिवार्चन पद्धतिः

ॐ नमः शिवाय अथ चकर्त्ता प्रातर्नित्यक्रियांकृत्वा शिवाल-
 पेवास्यगृहेवाद्द्वादश लिंगतोभद्रे यत्रानुमतिर्भवेत्तत्र हस्तौपादौ
 प्रक्षाल्यस्वासने, उपविश्याचम्य प्रोणायामंविधाय, ॐ नमः
 शिवायेति त्रिरुच्चार्य भस्मधारणोक्त विधिना भस्मत्रिपुट्टं धृत्वा
 ग्नाक्षांश्चसंधार्य, पूजा संकल्पं कुर्यात् अथेत्यादि देशकालौ
 संकीर्त्या मुक्तोऽहं करिष्यमाणामुक्त कर्मनिमित्तक समस्तदुष्टारिष्ठ

दूरीकरणार्थं समस्तशुफलप्राप्त्यर्थं वा अमुककामना सिध्यर्थं च
 अमुकशिवलिंगोपरिवेदोक्तविधिना गथालब्धोपचारद्रव्यैरद्रन्या-
 स पूर्वकंपोडशोपचारेण पूजनमहंकरिष्ये । तत आचार्यवृणुयात्-
 ब्राह्मणं चरणद्रव्यं च सम्पूज्य संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि संकी-
 र्त्यामुकोहं करिष्यमाणामुककर्मनिमित्तक, शिवाराधनविधौ;
 अमुकशर्माणं ब्राह्मणमाचार्यत्वेन वृणे । चरणद्रव्यंतस्मै दत्त्वा,
 आचार्यस्त्विति संप्रार्थ्य,, भवानीति प्रत्युक्तिः । ततः शान्तिपाठं
 कृत्वा पूजनमारभेत, तत्रादौ नन्दीश्वरं पूजयेत्—हस्ताक्षतपुष्पः
 ध्यायेत्—ॐ आद्यंगौः पृथिनरकमीदसदन्मातरंपुरः पितरंचप्रय-
 न्त्स्वः । ॐ भूर्भुवः स्वः, नन्दीश्वरेहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो
 वरदोभव, ॐ नन्दीश्वरायनमः, पाद्यादिभिः संपूज्य प्रार्थयेत्
 ॐ चत्वारिशृंगा त्रायोऽअस्यपादाद्वेशीर्षे सप्तहस्तासोऽस्य ।
 त्रिधावद्धो वृषभोरोरवीति महोदेवो मर्त्या ३॥ आधवेश ।
 ततो वीरभद्रमावाहयेत्—ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रं
 पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाग्ँसस्तनूभिर्व्यजेमहिदे-
 वंहितं यदायुः । ॐ भू० वीरभद्र, इहा० । ॐ वीरभद्रायनमः,
 सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ भद्रो नोऽअग्निराहुतो भद्रारातिः सुभग-
 भद्रोऽअध्वरः । भद्राऽउतप्रशस्तयः । ततः कार्तिकेयमावा० ॐ
 यदकंदः प्रथमं जायमानऽ उद्यन्तसमुद्रादुतवापुरीपात् । श्येनस्य
 पक्षाहरिणस्यवाहऽ उपस्तुत्यं महिजातन्तेऽअर्ध्वन् । ॐ भू०
 कार्तिकेय० । ॐ कार्तिकेयायनमः सम्पूज्य प्रा०—ॐ यत्रवाणाः
 संपतन्ति कुमारान्त्रिशिखाऽइव । तन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिरदितिः ।
 शर्मयच्छतुर्विश्वाहा शर्मयच्छतु । ततः कुबेरमा०—ॐ व्वय
 टं० सोमव्रते तव मनस्तनूपुविभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि । ॐ भू०
 कुबेरइ० । ॐ कुबेरायनमः सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ कुविदङ्ग
 यवमन्तोयवंचिगधादात्यनु पूर्वन्वियूय । इहेहैपांकृणुहि भोज
 नानियेवहिपोनमऽ उक्तियजन्ति । ततः कीर्तिमुखं० ॐ इत्कृति-

नमवोमाताथोयूय ई० स्थनिष्कृतीः सीराः पतत्रिणीस्थनयदा
 मयति निष्कृथ । ॐ भू० कीर्तिमुखह० । ॐ कीर्तिमुखायनमः
 सं० प्रा० ३० नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे, उभाभ्यामुत-
 तेनमः बाहुभ्यान्तवधन्वने । अधचार्यकः वक्ष्यमाण विधिना,
 अदौस्वात्मनि, अंगन्यासं विधायपुनः शिवलिंगोपरि कुर्यात्
 हस्तेन अंगानिस्पृशेत् । शिवलिंगे—शिखायाम् ॐ यातेरुद्रशिवा-
 तनू रघोरापापकाशिनी । तयानस्तन्वा शंनमयागिरिशन्ताभि-
 चाकाशीहि । शिरशि—ॐ अस्मिन्महत्यर्णवेन्तरिक्षेभवाऽअधि ।
 तेषाँसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि । ततो ललाटे-असंख्याता
 सहस्राण्येरुद्राऽअधिभूम्याम् । तेषाँसहस्रयोजनेवधन्वानि
 तन्मसि । भ्रुवोर्मध्ये—३० व्यय ई० सोमव्रते तवमनस्तनू पुविञ्चतः
 प्रजावन्तः सचेमहि । नेत्रयोः ३० अंबकं यजामहेसुगन्धिपुष्टिव-
 र्द्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् । तृतीयनेत्रे
 ॐ अग्निज्योति ज्योतिरग्निःस्वाहा सूर्योज्योतिज्योतिः सूर्यः
 स्वाहा । अग्निर्व्वर्चोज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा सूर्योर्व्वर्चोज्योतिर्व्वर्चः
 स्वाहा ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा । कर्णयोः—३० नमः
 श्रुत्यायचपत्थायच नमःकाट्यायचनीप्यायच नमःकुल्यायच
 सरस्यायच नमोनादेयायच वैशन्तायच । नासिकयोः—३०मान-
 स्तोकेतनयेमानऽआयुपिमानो गोषुमानोऽअश्वेपुरीरिषः । मानो-
 व्वीरान्नुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तः सद्रमित्वाहवामहे । मुखे—३०
 अवनत्यधनुर्ध्व ई० सहिस्राक्षशतेषुधे । निशीर्घ्यशल्यानां मुग्धा-
 शिवोनः सुमनाभव । ग्रीवायाम्—३० नमोवंचतेपरिवंचते
 स्तायूतांपतयेनमोनमो निषंगिण ऽ इषुधिमते तस्कराणांपतये
 नमोनमः । कंठदेशे—ॐ नीलग्रीवाः शितिकंठादिव ई० रुद्राऽउप-
 श्रिनाः । तेषाँसहस्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि । उभयोर्वाहोः-
 ॐ नमस्तऽआयुधाया नाततायधृष्णवे । उभाभ्यामुततेनमो
 बाहुभ्यान्तवधन्वने । हसनयोः—३० येतीर्थानि प्रचरन्तिस्काहस्ता

निपंगिणः । तेषाँसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि । अंगुलीषु ३०
 नमोजपेष्टायच कनिष्ठायच नमःपूर्वजायचापरजायच । नमोमध्य-
 मायच पगलभायच नमोजघन्यायच बुध्न्यायच । हृदये-३० नमः
 पर्णायच पर्णशदायच नमःउद्गुरमाणायचा भिघ्नतेचनमःऽआ-
 खिदतेच प्रखिदतेच नमःऽइषुकृद्भ्यो धनुषकृद्भ्यश्चवोनमोनमोवः
 किरिकेभ्योदेवानाँँहृदयेभ्योनमो विचिन्वत्केभ्योनमो विच्छि-
 णत्केभ्योनमःऽआनिर्हतेभ्यः । पृष्ठे-३० नमोगणेभ्यो गणपति
 भ्यश्चवोनमोनमो व्रातेभ्योव्रातपतिभ्यश्चवोनमोनमो गृत्सेभ्यो
 गृत्सपतिभ्यश्चवोनमोनमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्चवोनमः
 उदरे-३० विचिरिद्रिविलोहितनमस्तेऽअस्तुभगवः यास्तेसहस्र
 र्दं० हेतयोन्यमस्मिन्निवपन्तुताः । दक्षिणकुक्षौ ३० नमः शंभवा-
 यचमयोभवायचनमः शंकरायचमयस्करायचनमः शिवायच
 शिवंतरायच । वामकुक्षौ ॐ द्रापेऽअन्धसस्पते दरिद्रनीललोहितः
 आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनां मामेमारोङ्मोचनः किंचनाममत् ।
 नाभौ-ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्नेभूतस्पजातः पतिरेकऽआसीत्
 सदाधारपृथिवीन्या मुतेमांकस्मैदेवाय हविपाविधेम । कव्याम्
 ॐ मीढुष्टमशिवतमशिवोनः सुमनाभव परमेवृत्तऽआयुधन्निधाय
 कृत्तिंस्वसानऽआचरपिनाकं विभ्रदागहि-लिंगे ॐ शिवोनामासि
 स्वधितिस्ते पितानमस्तेऽअस्तुमामा हि र्दं० सीः ॥ निवर्त्त-
 याम्यायुपेन्नाथायप्रजननाय रायस्पोपाय सुप्रजास्त्वायसुवी-
 र्याय । गुह्ये-३० इमारुद्रायतव-सेकपदिने क्ष्यद्वीरायप्रभरामहे
 मतीः । यथासमसद्विपदे चतुष्पदेचिरवं पुष्टंग्रामे ऽ अस्मिन्नतु-
 रम् ॥ वृषणयोः-३० इषेत्वोर्ज्जत्वाञ्चायवस्थदेवोवः सविता
 प्रार्पयतुः श्रेष्ठतमायकर्मण ऽ आप्यायध्वमग्न्या ऽ इन्द्रायभागं
 प्रजावतीरनमीवा ऽ अयदमामावस्तेन ऽ ईशतमाघश र्दं० सो
 ध्रुवा ऽ अस्मिन्गोपतौस्यातवहीर्य्यजमानस्यपशून्पाहि ॥ ऊर्वोः-
 ३० मानोमहान्तमुतमानो ऽ अर्भकस्मान ऽ उच्यन्तमुतमान ऽ

उक्षितम् । मानोवधीः पितरंमोतमातरम्मानः प्रियास्तन्वोरुद्रीरिपः ॥ जान्वोः—३० एपतेरुद्रभागः सहस्वस्त्राम्बिकयातंजुपस्व स्वाहैपते रुद्रभाग ऽ आखुस्तेपशुः ॥ जङ्घयोः—३० नमोज्येष्ठाय च कनिष्ठायचनमः पूर्वजायंचापरजायच । नमोमध्यमायचा पग लभायच नमो जघन्यायच बुध्न्यायच । गुल्फयोः—३० नमोहस्वा यच वामनायच नमोवृद्धायच सवृधेच नमो ऽ श्यायच प्रथमायच । पादयोः—३० येषथांपधिरक्ष्यणेलवृदा ऽ आयुर्युधः । तेषां ॐ सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि । अस्त्रे—३० अध्वबोचद धिवक्ता प्रथमोदैव्योभिपक् । अर्हीश्चसर्वाम्भुभयन्त सर्वाश्च यातुधान्योधराचीः परासुव कवचे—३० नमोविल्मिनेच कवचिनेच नमोव्वमिणेच व्वरूथिनेच नमः श्रुतायच श्रुतसेनायच । नमो दुन्दुभ्यायचाहनन्यायच । धनुषि—३० विज्यंधनुःकपदिनो विश्वयोवाणवा २॥३उत । अनेशन्नस्यया ऽ इपव ऽ आभुरस्यनिषं गधिः ॥ वाणे—३० यत्रवाणाः सम्पतन्तिकुमाराव्विशिषाइव । तन्न ऽ इन्द्रोवृहस्पतिरदितिः शर्मयच्छतु । त्विरवाहाशर्मयच्छतु खङ्गे—३० त्विकिरिद्रव्विलोहितनमस्ते ऽ अस्तुभगवः । यास्ते-सहस्र षं हेतयोन्यमस्मिन्नवपन्तुताः । ततो ऽ क्षतैर्दिग्बन्धनं कुर्यात्—३० यएतावन्तरचभूया ॐ सरचदिशोरुद्राव्वितस्थिरे । तेषां ॐ सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ (एवंन्यासविधिं—कृत्वाशिवोहमितिभावयेत् ॥ ततःशिवलिंगोपर्यप्येवंन्यासविधिं कृत्वा पूजासमारभेत्—) अक्षतपुष्पोध्यायेत्—३० ध्यायेन्नित्यं महेशंरजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसंरत्नाकल्पोज्वलांगं परशुमृग बराभीतिहस्तंप्रसन्नम् । पद्मासीनंसमन्तात्स्तुतममरग णैर्व्याघ्र कृत्तिवसानं विश्वाद्यंविश्ववंद्यं निखिलभयहरंपंचवक्रंत्रिनेत्रम् । आवाहनम्—३० मानोमहान्तमुतमानो ऽ अर्भकंमान ऽ उक्षन्त मुतमान ऽ उक्षितम् । मानोवधीः पितरंमोतमातरंमानः प्रियास्तन्वोरुद्रीरिपः ॥ प्रत्युपचारम्—३० यातेरुद्रशिवाननुरयोरा

पापकाशिनी । तयानस्तन्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ।
 पाद्यम्—३० यामिधुंगारिशन्तहस्ते विभर्ष्यस्तवे । शिवांगिरिभ्र-
 तांकुरुमाहि र्दं० सीः पुरुषंजगत् । अर्घ्यम्—३० शिवेनव्वचसात्वा
 गिरिशाच्छ्राव्वदामसि । यथानः सर्वमिज्जगदयत्तम र्दं० सुमना
 ऽ असत् । आचमनम्—३० अर्धवोचदधिवक्ता प्रथमोदैव्योभि-
 पक् । अर्हीश्चसर्वाजम्भयन्त्सर्वाश्चयातुधान्योधराचीःपरासुव ।
 स्नानम्—३० असौजस्ताम्रो ऽ अरुण ऽ उतबभ्रुःसुमङ्गलः येचैन
 र्दं० रुद्रा ऽ अभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोवैषा ॐ हेडईमहे ॥ पयः
 स्नानम्—३० पयः पृथिव्याम्पय ऽ औपधीपुपयोदिव्यन्तरिक्षे
 पयोधाः । पयःस्वतीःप्रदिशः सन्तुमहम् ॥ दधिक्षानम्—
 ३० दधिकावणो ऽ अकारिपंजिष्णोरश्वस्यव्याजिनः । सुर-
 भिनोमुखा करत्प्रणऽआयू—ॐ पितारिपत् ॥ घृतस्ना नम्
 घृतंघृतपावानः पिवतव्वसां व्वसापावानः पिवतान्त-
 रिक्षस्य हविरसिस्वाहा । दिशःप्रदिश ऽ आदिशोवि-
 दिश ऽ उद्दिशोदिभ्यःस्वाहा । मधुस्नानम्—३० मधु-
 व्वाता ऽ ऋतायतेमधुत्तरन्तिस्निधवः । माध्वीर्निः सन्त्वोपधीः ।
 शर्करास्नानम्—३० स्वादुःपवस्वदिव्याय जन्मनेस्वादुरिःद्राय
 सुहवीतुनाम्ने स्वादुभिन्नायव्वरुणायव्वायवे बृहस्पतयेमधुमा र्दं॥
 अदाभ्यः । ततः शुध्वोदकस्नानम्—३० असौजस्ताम्रो ऽ अरुण ऽ
 उतबभ्रुः सुमङ्गलः । येचैन र्दं० रुद्रा ऽ भितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशो
 वैषा ॐ हेडईमहे ॥ ३० देवस्यत्वासवितुः प्रसवेरियनोर्वाहुभ्यां
 पूष्णोहस्ताभ्याम् ॥ पुनराचमनीयम्—३० अर्धवोचदधिवक्ता
 प्रथमोदैव्योभिपक् ॥ अर्हीश्चसर्वाजम्भयन्त्सर्वाश्चयातुधान्यो
 धराचीः परासुव । बन्ध्रेणकटिघन्धनम्—३० असौयोवसर्पति
 नीलग्रीवोन्विलोहितः । उतैनंगोपा ऽ अदश्रन्नदश्रन्नुदहार्यः सह-
 ष्ठोमृडयातिनः । यज्ञोपवीतम्—३० नमोस्तुनीलग्रीवाय सहस्रा
 ज्ञायमीदुपे । अथोत्रे ऽ अस्यसन्वानो हन्तेभ्योकरन्नमः ॥ चन्द-

नम्—३० प्रसुं च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम् ॥ याश्च ते हस्तऽ
इषवः पराता भगवो व्यवप । अक्षतान्—३० अक्षन्नमीमदन्त ह्यव
प्रियाऽ अधूपत । अस्तोपतस्वभानवो विप्रानविष्टयामती योजान्वि
न्द्रते हरिः । पुष्पाणि—विज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्यो वाणवा २ ॥
उत । अनेशन्नस्ययाऽ इषवऽ आभुरस्यनिषंगधिः । ३० याः
फलीनीर्याऽ अफलाऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः वृहस्पतिप्रसूता
स्तानो मुञ्चन्त्वर्दं हसः ॥ विल्वपत्राणि—३० नमो विल्मिने च
कवचिने च नमोऽवमिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च
नमो दुंदुभ्याय च हनन्याय च । -गृहाण विल्वपत्राणिस-
पुष्पाणि महेश्वर । सुगन्धीनि नवानीश शिवस्त्वं कुसुमप्रिय ।
धूपम्—३० याते हेतीर्माहुष्टमहस्तेऽभूवते धनुः । तयास्मान्वि-
श्वतस्त्वमप्यमया परिभुज । ३० धुरसिधूर्व धूर्वन्तन्धूर्वते
योस्मान्धूर्वतित धूर्वजं वयं धूर्वामः । देवानामसि वन्हितमर्दं
सस्मितमं पप्रितमं जुष्टमन्देवदृतमम् ॥ दीपम्—३० परिते
धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः । अथोऽइपुधिस्तवारऽ
अस्मन्निधेहितम् । ३० अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो
ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । अग्निर्वर्चोर्ज्योतिर्वर्चः स्वाहा
सूर्योर्वर्चोर्ज्योतिर्वर्चः स्वाहा । ज्योतिः सूर्यः सूर्योर्ज्योतिः
स्वाहा । नैवेद्यम्—* ३० अवतत्यधनिर्ध्वर्दं सहस्राक्षशतेषु धे ।

टि० * — नैवेद्य भक्षण विचार — पात्रे — द्रव्यमन्न फलं तोय शिखर
स्पृशे त्वच्चित् ॥ लघये श्रेय निर्मात्य कृते सर्वं परित्यजेन् । शिवनारदरावादे—
घाणलिंगे तु चण्डानं च निर्भाय करपना । सर्वं वाण रितं प्राह्य शम्भा भक्तं शब्द-
मान्यश । गायत्र्या गहा विचारो । - घाणलिंगं न प्रियते अर्द्धनमगर्द्धय पत्रपुष्पफल
जलम् । शालग्राम शिलात्मकं सर्वं याति परित्यजताम् नैवेद्यमेनोभुक्त्वा
शुची चाऽत्रागण नरेन् ।

निशीर्ष्यशल्यानां सुखाशिवोनः सुमनाभव ॥ ३० अन्नपतेन्नस्यनो
 देहानमीवस्य शुष्मिणः । प्रप्रदातारंतरापि ऽ अर्ज्जुन्नोधेहि द्विपदे
 चतुष्पदे । नैवेद्यान्तमाचमनीयम्-३० अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो
 दैव्योभिषक् । अहीश्चसर्वाङ्गम्भयन्त्सर्वाश्चयातुधान्योधराचीः
 परासुव ॥ सुखवासम्-३० नमस्तऽआयुधायानातताय पुष्णेवे ।
 उभाभ्यामुततेनमो बाहुभ्यान्तवधन्वने ॥ दक्षिणाम्-३० हिरण्य
 गर्भः समवर्त्त ताग्रेभूतस्य जातः पतिरेक ऽ आसीत् । सदाधार
 पृथिवीन्ध्या मुतेमां कस्मै देवाय हविपात्रिधेम ॥ पुनर्ध्यायेत्—
 सर्वव्यापिनमीशानंशिवं वैधिश्वरूपिणम् । वंदे सदा शिवं देवं
 वरदाभयहस्तकम् । गौरीं चतुर्भुजां चण्डीं त्रिनेत्रां मुकुटोज्ज्वलाम् ।
 प्रसन्नवदनां ध्यायेच्छिवोत्संगेतु वामतः ॥ ततो ऽन्नाभिषेकं
 कुर्यात्-अत्र शिवलिंगोपरि गव्यपायसं - शिवलिंगाद्ब्रह्मिः
 पुरुषसूक्तेन, वानीलसूक्तेनोपलिप्य, अन्नमयं लिङ्गविधायैवं
 वक्ष्यमाणविधिना पूजयेत् ॥ अन्नाभिषेकविधिमेनमकृत्वापि-
 वक्ष्यमाणेनैवच पूजयेत्-तत्रादौ पुष्पोदकेनतर्पयेत्-३० भवं देवं
 तर्पयामि । ३० शर्वदेवं तर्पयामि । ३० ईशानंदेवं तर्पयामि । ३०
 पशुपतिंदेवं तर्पयामि । ३० रुद्रंदेवं तर्पयामि । ३० उग्रंदेवं तर्प-
 यामि । ३० भीमंदेवं तर्पयामि । ३० महान्तंदेवं तर्पयामि । ३०
 देवदेवं तर्पयामि । ३० ज्येष्ठायनमः पुनराचमनीयं सपर्पयामि
 नमः । ३० श्रेष्ठायनमः मधुपर्कं सम० । ३० कालायनमःगन्धंस०
 ३० कलविकरणायनमः पुष्पाणिस० । ३० सर्वभूतदमनायनमः
 धूपं० । ३० मनोन्मनायनमः दीपम्० ३० भवोद्भवायनमः ॥
 नैवेद्यंसमर्पयामि* । ततोऽष्टौपुष्पांजलीन्दद्यात्- ३० भवायदेवा-
 यनमः पुष्पांजलिसमर्पयामि । ३० शर्वायदेवायनमः पु० ३०
 ईशानायदेवायनमः पु० । ३० पशुपतयेदेवायनमः पु० । ३० रुद्रा-
 यदेवायनमः पु० । ३० उग्रायदेवायनमः पुष्पां० । ३० भीमाय
 देवायनमः पुष्पां० । ३० महतेदेवायनमः पुष्पां० ततः शक्तिपूज-

नम्—ॐ भवस्यदेवस्यपत्न्यैनमः पूजयामि, इतिपाद्यादिभिः
 पूजयेत् । ॐ सर्वस्यदेवस्यपत्न्यैनमः पू० ॐ ईशानस्यदेवस्य
 पत्न्यैनमः पू० । ॐ पशुपतेर्देवस्यपत्न्यैनमः पू० । ॐ रुद्रस्यपत्न्यै
 नमः पू० । ॐ अघोरेभ्यो थघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः
 सर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॐ नत्पुरुषायविद्महेमहादेवाय
 धीमहि । तन्नोरुद्रः प्रचोदयात्,, ततः पुष्पाक्षतैः—
 ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तयेनमः । ॐ भवायजलमूर्त्तयेनमः ॐ
 ॐ रुद्रायग्निमूर्त्तयेनमः । ॐ उग्रायवायुमूर्त्तयेनमः । ॐ भीमा
 याकाशमूर्त्तयेनमः । ॐ पशुपतयेजमानमूर्त्तयेनमः । ॐ महा-
 देवायसोममूर्त्तयेनमः । ॐ ईशानायसूर्यमूर्त्तयेनमः ॥ इतिदेवं
 सम्पूज्य, ततस्त्रिपादिकायां सच्छिद्रघटंसंस्थाप्य, सम्पूज्यच । तत्र
 सदुग्धजलंप्रपूर्यशिवोपरि जलधारांदद्यात् ॥ परिचर्यावसानेप्रद-
 क्षिणांकुर्यात्❀, मन्त्रपुष्पांजलिंदद्यात्—ॐ हिरण्यगर्भः सम-
 वर्तताग्रेभूतस्यजतः पतिरेकऽ आसीत् । सदाधारपृथिवींद्यामुते-
 मांकस्मैदेवायहविषाद्विधेम । आरात्रिःपार्थिव ई० रजःपितरः
 प्रायिधानभिः । दिवःसदा ॐ सि बृहतीविनिष्ठसऽ आत्वेपंवर्त-
 तेतमः । यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवा स्तानिधर्माणिप्रथमान्यासन् ।
 तेहनाकंमहिमानः सचन्तयत्रपूर्वेसाध्याः संतिदेवाः । ॐ राजा-
 धिराजायप्रसह्यसाहिने नमोवयंवैश्रवणाय कुर्महेसमेकामान्काम
 कामायमह्यं कामेश्वरोवैश्रवणोददातु, कुबेरायवैश्रवणाय महा-
 राजायनमः,, ॐ शान्तिः॥३॥ ॐ नमःशिवाय, तत आचार्यादयो
 यजमानायाशीदर्युः ॥ इति वेदोक्तशिवार्चन पद्धतिः ॥

टि० * —शिव स्यार्धं प्रदक्षिणा—पृथ्वेर्दंडं पृथ्वेयं सोमसूर्यं पुनर्पृथ्वम् । चण्डं च
 गोमसूर्यं पुनश्चंडं पुनर्पृथ्वम् ॥ अथमर्च्यं यतीनान्तु सग्यन्तु मद्गचारिणाम् । सग्यापतन्व्यं श्रुष्टिणा
 मेव गंगो प्रदक्षिणा ।

अथ शिवानुष्ठादि परीभाषा

अथ शिवानुष्ठादिपरीभाषां वक्ष्ये—तत्रादौ रुद्राभिषेकादौ रुद्रैकादशिन्यादि प्रकाशंश्च-उक्तं च महाकरपेनदिकेश्यत् सतानन्द सन्वादे-भृशुभगोमहा प्राज्ञ हृदमेदान्धामिते । रुद्रा.पंचविधाः प्रोक्ताः शिक्करोत्तरम् । सांगस्त्वयोहृषपायः शशीर्षोद्दुर्ध्वयते । एकादशगुणैस्तद्वदुद्रासंज्ञोद्वितीयकः । एकादशभिरेनाभिसृत्तीवोलुपुद्रकः । लघ्वेकादशभिः प्रोक्तो महाकरदचतुर्थकः । पंचमस्यान्महाकरैरेकादशभिरन्तिमः । अतिरुद्रः समाप्त्यातः सर्वेश्वो ह्युत्तमोत्तमः । (स्फुरः १ रुद्री २ रुद्रः ३ महारुद्रः ४ अतिरुद्रः ५ एवं पंचभेदाभवन्ति) तत्र सांगस्त्वुक्तीतदंगान्यपि तत्रैवोक्तानि, अथ च—शिरसंरूपं हृदयंसूक्तं स्यात्पौरुषशिरः । प्राहुर्नारायणं चैव शिखातस्योत्तरामिदाम् । आशुः शिशानः कवचंनेत्रं विभ्राहृहृहृत्सृष्टम् । शतरुद्रद्वीपमस्त्रस्यात्पटंगः क्रमैरितः । ततः शतरुद्रीयसंज्ञा रुद्राध्यायस्य पौडशमंत्राभिर्निरुद्धिः संज्ञा । सांगरुद्रपाठ क्रमोपि महारुद्रपद्योक्तः पूर्वमंगानि संजप्य रुद्राध्यायं ततो जपेत् । आदावनेच सौकारं सौकारं व्याहृतित्रयम् । अष्टप्रणवसंयुक्तं रुद्राध्यायं सकृजपेत् । तदन्ते सप्तमंत्राश्वयच ई० सौशिरोजपेत् । उपश्वेति सप्तमंत्राजटा मंत्राजपेत् । ततोऽष्टानुवाकरुद्रांगच मन्त्राध्यायमाचरेत् । जपेदन्ते ऋचंवाचं संकल्पध्यायमेव च । ततोऽथी शान्तिरिति च कंडिकाजपमाचरेत् । शान्तिः शान्तिः शान्तिरिति चान्तेऽनुचारणं सदा । पञ्चमुक्तं क्रमणैपसकृदावत्तेनं पुर्षैः । सांगस्त्वयोहृषपायः शशीर्षोद्दुर्ध्वयते । रुद्रैः प्रथमाध्यायस्य पञ्चमंत्राहृदयम् । पौरुषसूक्तं शिरो द्वितीयाध्यायस्य पौडशमंत्रा । तत्र द्वितीयाध्यायस्योत्तरनारायणा नाराकस्याद्भृद्, इति पणमंत्राः शिखा । आशु शिशानेखादि तृतीयाध्यायस्य सप्तदशमंत्रा-कपचम् । विभ्राहृत्त्यादि चतुर्थाध्यायस्य सप्तदशमंत्रा, नेत्रत्रयम् । रीद्राध्यायस्य पञ्चमाध्यायस्य, प्रथमानुवाकस्य पौडशमंत्राः, अहम् ॥ एवं क्रमेण अह्रान्तं पठित्वा, ततः ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः इति प्रणवत्रयमुच्चार्य, पुनः पञ्चमाध्यायस्यादिर्मंत्र, (ॐ नमस्ते रुद्राभ्यव) ततः, जम्मेदधम्, इत्यन्तान्पदपठिमंत्रान्पठित्वा, ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ ॥ इत्यष्ट प्रणवयुक्तः पञ्चमाध्ययः शिरः । ततो रुद्रैः सप्तमाध्याये जटा । तत्रश्चमकाध्यायः शान्त्याध्यायः शान्तिरागिडकाः पठित्वान्ते वारत्रयं ॐ शान्ति ३ इति रूपकं स्वरूपम् ॥ एक मेकावति रुद्रोपाठस्य रूपकेति संज्ञा, एकावृत्तिमात्रं त्रेत्रं कुयोदन्यथाभ्रष्टाभवन्तीति शास्त्रसम्मतः ॥ इत्येकावृत्तिविधिः ॥ अथैकादशिनी-विधिं वक्ष्ये—उक्तं च प्रयोग दर्शने—एकादशोर्ध्वपाणिं त्वङ्गानि च सकृजपेत् । अंगान्यादौ शिरश्चान्ते रुद्रैकादशिनीस्मृता ॥ अत्रानुक्तसमुच्चयार्थेन चकारेण जटायाश्चपि, आक्षेपत्वात्, तथाचादीपडङ्गानि जपत्वा मध्ये गुरुद्राध्याय मेकादशवारं जप्त्वा-

न्ते शिरोजटाञ्च जप्यते यदातदासाम्प्रोति भवति । इति प्रथमः पक्षः ॥ अत्रवेचित्तु—
 सागमाय जपेद्ब्रह्म वैजानिनवांतर । सांग सशोपकं चयं निरक्त मितिचेचन ।
 इत्युक्तं तत्र प्रधानभूत रुद्रस्यैकादशा यत्तनाभागादय परपरा मूलस्तया नादत्तं व्यम् ।
 इतिपूर्व पक्षस्यैवसाधीय स्यम् । अत्र प्रथमपक्षे— एकादशिनी प्रयोग— अष्टमाध्याय-
 चमकरूपस्याष्टानुवाकमयस्यैकादश यावत्तनेपुपाठस्य प्रथमद्वयम् । तत्राजधमेचतस्यस्यु
 सत्यवेतिचतुष्टयम् । ऊर्ध्ववेतिचतस्र स्युरश्मातिप्रयंतत । अग्निश्चमेधतिस्य सु
 रनुवाकाद्भेमता । अनुवाकप्रथस्याथ पठशैरचपठेद्बुध । तत्रा षं शुधतिस्य स्युरग्निश्चवेति
 द्वयतत । एकाचमेततश्चैकामथैकाचचतस्रधमे । ततस्ययिश्चमेद्बुधवायस्वाहेतिद्वयम् । सटा
 न्येनादशैतानिकमाथेकादशेषुच । रुद्रस्यावत्तनेष्वेव पठेच्चयनवद्बुध । इति ॥ अत्रवेचिद्वदन्ति
 रुद्रस्यैकादशावत्तने पुननुवाकानामभ्यैकादशस्यैवोचितत्वाद्वाष्टावत्तने षष्टानुवाकाना मनुवृत्ती,
 शेषेष्वपित्रयेष्वन्तिमानुवाकस्य सामभेनो वृद्धौचान्तिमगन्त्रानुवर्त्तवत् पाठस्योचितत्वमिति ।
 तन्मते— अ षं शुभेतिपंचस्युस्ततश्चैकाचतुष्टयम् । याजायस्वाहेतिद्वयमष्टमाथेपुयोजयेत् ।
 इतिविक्षेप । तत्रान्यतरकमणावृत्तीअन्यत्सर्वपूर्वांक्तसकृदावत्तनयत् । मत्सम्मत्यानुपूर्वपक्षस्य
 मुष्टुरोस्ति—सच—अज्ञान्यादौशिरधान्तेतिदिक् । इति रुद्रैकादशिनीप्रयोगविधिः ॥
 अथलघुरद्रस्वरूपवक्ष्ये— रुद्रैकादशिनीत्वपासर्वसामफलप्रदा । एकादशगुणासैव रुद्रइत्यभि
 कीयते । महारुद्रस्वरूपम्— रुद्रैकादशगुणोपहानित्वभिधीयते । अतिरुद्रस्वरूपम्—
 महानैकादशगुणस्त्वतिरुद्रइहोच्यते । रुद्रकल्पानुसारेण रुद्रभेदानिरूपिता । देवानभ्येनपिदुपा
 तेनतुष्यतुशर । प्रतिअतत्रहोमस्याद्दशाशोमुग्यपक्षत । शतांशहोमोपि क्वचित्केचिदिच्छन्ति
 नापरे । तत्रफलीविशेषेण रुद्रैस्त्रयानामुपयोगमाह — रुद्रैसायाफलवेनिष्टगुणवदत्ता
 मम । एकावृत्त्यादिपाठाना यथावत्कथयामि ॥ रुद्रैस्त्रयानामुपयोगमाह — रुद्रैसायाफलवेनिष्टगुणवदत्ता
 स्नात्वापश्चात्तेनैवध्यानपूर्वशिवस्मरेत् । बालप्रहोपशान्त्यर्थं मेकावृत्तिसमाचरेत् । उपसर्गापशा,
 न्यर्थे त्रिरावृत्तिपठेत् । प्रहोपशान्त्यैरुतांवा पश्चावृत्तिर्वरानने । महाभयेसमुत्पन्ने सप्तावृत्ति
 मुदोरयेत् ॥ नवावृत्त्याभवेच्छान्तिर्वाच्येयफललभेत् । राजवश्येविभूत्यैव रुद्रावृत्तिमुदोरयेत् ॥
 रुद्रोत्तुर्द्र — रुद्रैस्त्रिभिः काममिद्धिर्वैरिहानिश्चजायते । रुद्रै पञ्चभिःशुभ तथास्त्रीवशतामियात्
 रुद्रैसप्तभिः सौख्यं स्याच्छिष्यमाप्नोतिमानव । नवरुद्रै पुत्रपौत्रधनवान्यसमन्वित । राजभीति
 विनाशायवैरस्योच्चाटनायच धर्मार्थे काममोक्षाया साधनायतत.परम् । अष्टदशस्युविनाशाय
 तथारज्ययश प्रियै ॥ राजवृद्धिप्रदेयाय महारुद्रैकसत्पया । त्रिभिश्चैवमहारुद्रैरसाध्यसाधन
 भवेत् । पञ्चभिश्चमहारुद्रै राजनाम प्रसाध्यते । सप्तभिश्चमहारुद्रै सप्तलोकावयोभवेत् । नवभि
 श्चमहारुद्रै पुनर्जन्मनजायते । अतिरुद्रैकसत्पयन देवत्वप्राप्तुयाचर ।

इति रुद्रातिरुद्र परिभाषा ।

अथ महामृत्युंजय जपविधिः ॥

अथ महामृत्युंजय जपविधिः । संकल्पः—अद्येत्यादि पूर्वा
 चचारितएवंगुणविशेषेण विशिष्टायांशुभपुण्यतिथौममआत्मनः
 श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं वायजमानस्य शरीरेऽमुकग्रहपीडा
 निरासद्गारासद्यः आरोग्यप्राप्त्यर्थं, अमुकसंख्यात्मकं श्रीमहा
 मृत्युंजयदेवताप्रीत्यर्थं श्रीमहामृत्युंजयमंत्रजपमहंकरिष्ये, विनि-
 योगः—ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजयमंत्रस्य वशिष्ठऋषिः श्रीमहा
 मृत्युंजयरुद्रो देवता अनुष्टुप्छन्दः ह्रीं वीजंशक्तिः सः कीलकं
 सर्वाऋष्टनिर्वृत्यर्थं मृत्युंजयप्रीत्यर्थं जपेविनियोगः—न्यासाः—
 ॐ वशिष्ठऋषयेनमः शिरसि, ॐ अनुष्टुप्छन्दसेनमः मुखे, ॐ
 श्रीमहामृत्युंजयरुद्रदेवतायैनमः हृदये, ॐ ह्रीं वीजायनमः गुह्ये,
 ॐ श्रुं शक्तयेनमः पादयोः ॐ सः कीलकायनमः सर्वाङ्गेषु,
 करन्यासः—ॐ त्र्यम्बकं अंगुष्ठाभ्यांनमः ॐ यजामहेतर्जनीभ्यां
 नमः ॐ सुगन्धिपुष्टिवर्द्धनमध्यमाभ्यांनमः, ॐ उर्वारुकमिवव-
 न्धनात् । अनामिकाभ्यांनमः ॐ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यांनम
 ॐ मामृतात्करतलकरपृष्ठाभ्यां, ध्यानम्—ॐ चन्द्रोद्भासित
 मूर्द्धजंसुरपतिं पीयूषपात्रमहृद्गस्ताब्जेनदधन्सु दिव्यममलं हास्या-
 स्यपंकेरुहम् । सूर्येन्द्रग्निलोकानं करतलैः पाशाक्षस्रत्रांकुशां
 भोजं विभ्रतमक्षयंपशुपतिं मृत्युंजयंतस्मरे । ततो मानसोपचारेण
 पूजयेत्—ॐ ह्रीं पृथिव्यात्मकं गंधंसमर्पयामि । ॐ ह्रीं आकाशा-
 त्मकं पुष्पंसमर्पयामि । ॐ ह्रीं वाय्वात्मकंधूपं स० । ॐ ह्रीं तैज-
 सात्मकं दीपं स० । ॐ ह्रीं अमृतात्मकं नैवेद्यंसमर्पयामि । ॐ ह्रीं
 सर्वात्मकं मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि । मंत्रोद्धारः—ॐ ह्रीं ॐ
 श्रुं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ—त्र्यम्बकंयजामहे
 सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिववन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृ-
 तत् ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ श्रुं ॐ ह्रीं ॐ जपान्ते
 पूर्ववदुत्तरन्यासंकृत्या । ॐ गुह्यातिगुह्यागोप्तात्वं गृहाणास्म

कृतंजपम्, सिद्धिर्भवतुमेदेवत्वत्प्रसादान्महेश्वर, मृत्युंजय महा-
 रुद्र त्राहिमां शरणागतम् । कर्मभोगजरोगैश्च पीडितंयजमानकम् ।
 अनेनमहामृत्युंजयजपागव्येनकर्मण श्री सदाशिवो महामृत्युंजयः
 प्रीयतांनमम, इतिनिवेदयेत्—इत्यष्टप्रणव संपुटितमहामृत्युंजय
 मंत्रः । अथ षड्प्रणवयुक्तो महामृत्युंजयमंत्रः—पूर्ववत्संकल्पादिकं
 कृत्वा मंत्रराजंजपेत्—ॐ हौं जूं सः ॐ भूः भुवः स्वः ॐ इयं वक्रं
 यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो
 मुञ्चीथमामतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ अर्पणदिकं
 पूर्ववत् । एवं जपानन्तरं देवं सम्पूज्यप्रार्थयेत् । मृत्युंजय महादेव
 त्राहिमांशरणागतम् कामनाहोमद्रव्यंचवक्ष्ये—पुत्रार्थेशालि वीजे-
 नधनार्थं विद्वपत्रकैः । दूर्वाभिरायुष्कामस्तु पुष्टिकामस्तुवेतसैः
 विद्याकामस्तु पालारुदंशांजेनतुहोमयेत् ॥ तिलैरारोग्यकामस्तु
 ब्रीहिभिः सुग्वमश्नुते । धान्यकामोयवैश्चैव गुग्गुलेनरिपुक्षये ।

इति मृत्युंजय मंत्र सपुटीकरण विधि ।

वैकुण्ठ चतुर्दशी-परिभाषा

अथच त्रेकुण्ठ चतुर्दशी कार्तिक शुक्ल—गारात्रिव्यापिनो ग्राह्या दिनद्वयत
 व्याप्तौ निशीथ-प्रदोषोभयव्यापिनो ग्रन्था । उषतच सन्तकुमार संहितायाम्—शुक्ल
 पञ्चतुदश्या मरुणाभ्युदयं प्रतिमहादेव तिवो प्राक्षेभूत मरिक्कणिके । स्नात्वाविश्वरुदोदेव्या
 विश्वेश्वरस्य पूजयत् । प्रदोषसमवेत्कुयाङ्गती प्रयत्तमानम् । पूजन दीपदानच शिवलिमांचनविधौ ।
 शतत्रय वतिकाना कुयां पद्युत्तरंचतत । स्थापयेद्दीपने सर्वं प्रत्यहं निगन्धना । रुद्रभवन
 विभिना दीपकानधनाभयेत् । सम्पूज्य विधिनादीपान्प्रदाप दीपयेद्गती । स्मृत्यन्तरे—रात्री
 जागरणं कुयाद्गीतयायादि मग्नै । सुखंवाति कां कृत्वा राजतं दीपक शुभम् । गव्यनचयुता
 सुतफुण्डामप्यवतिकाम् । पुत्रार्थिनोच यानारो सोत्थाया शिवसन्निधौ । उभयाहंस्तयोर्मध्ये दीपं
 पूजा प्रयत्न निविज्जगतात्तारानि शकुनयेत्सुभंगसम् ॥ प्रभाते दीपकृतच ब्राह्मणाय निवेदयेत् ।
 ततोऽहमोदये जाते स्नानकुयाङ्गतीनर । संघ्रासमाप्य विश्वेश नामभ्यर्च्य यथाविधि ॥
 मद्रघान्माचयित्वाच ब्राह्मणान्भोजयत्तत । मतिथी सितभार्तिवयायोनर, पूजयेच्चमा ।
 वदाम्यहं मतिप्रोत्थायावार्त्तिकामाश्वतनरम् ॥ ॥ इति ॥

॥ अथ वैकुण्ठ चतुर्दशी दीपदान पद्धतिः ॥

अथचवैकुण्ठ चतुर्दश्यां शिवभक्ति युतोन्नरः प्रातर्नद्यादौ वायस्निन्कस्मिन् जलाशये स्नात्वा नित्यकर्मकृत्वाद्दमाचरेत् ॥ सायंकाळे शिवालये तदभावे नदीतीरेवा धूर्वाक्तपार्थिव लिंगविधानेन पार्थिवलिंगं निर्मायतेनैव विधिना-सम्पूज्यच दीपान्वह्यमाण विधानेन संदीपयेत् । स्वासने, उपविश्याचम्यभूतोत्सादनं कृत्वा प्रणम्यच ३० नमः शिवायेति त्रिर्जप्य, सुमुखेत्यादिना गणेश-संप्रार्थ्य-संकल्पं कुर्यात् अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्या मुकोऽहम्, आत्मनः सर्वपाप क्षय पूर्वकामुककामनया, अद्यवैकुण्ठ चतुर्दश्याममुक शिवलिंगार्चन विधौ प्रतिसांवत्सरारव्य नियमानुकूलतया दीपदान विधौ संवत्सरप्रतिदिवसैकैक वनिका नियमेन आशुतोष सदाशिवप्रीत्यर्थ, अमुकसंख्यकान्दीपानहं-दीपयिष्ये ॥ पूजनंचकरिष्ये ॥ ततः पूर्वाक्त विधानेनवा, पुरुषसूक्तेनच, सर्वाभावे ३० नमः शिवाय, इतिमंत्रेण पाद्यादि नीराजानान्तं शिवं संपूज्य दीपावलीमपिपूज्यच । पूर्ववत्संकल्पं कृत्वा दीपान्प्रज्वालयेत्-मंत्रः-३० अग्नेनयसुपथारायेऽअस्मान्विश्वानि देव ब्ययुनानि विद्वान् । युयो ध्यस्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठान्ते-नमः ५ उक्तिं विधेम ॥ इति पूज्यब्राह्मणाय व्रतपूर्त्यर्थमामान्नं सदक्षिणं दद्यात्-अद्येत्यादि० अमुकोहमद्यवैकुण्ठ चतुर्दश्यां यन्मया शिव प्रीत्यर्थदीपदानं कृतं तत्प्रतिष्ठार्थं मिदमामान्नं सदक्षिणममुक शर्मणे ब्राह्मणाय दास्ये, परिपूर्णमस्त्वर्चनम् ॥-

अथ हस्त धृतोत्थिताखंडदीपकपद्धतिः-

अथ सपत्निकः संतानकामः पुरुषो वैकुण्ठचतुर्दश्यांवा महाशिवरात्रौ-प्रातर्नद्यादौ-स्नात्वा आचार्येण मह शिवालये गत्वा स्वासने उपविश्य दीपंप्रज्वाल्य गणेशादिपंचांग पूजनं कृत्वा-नान्दीश्राद्धं चसंपाद्य, आचार्यवृणुयात् अद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्या मुकरा-

शिः सपत्नीकोहं अथवैकुण्ठ चतुर्दश्यां वा महा शिवरात्रौ
 अमुक शिवलिंग सन्निधौ संततिकामोऽद्यनिशायां पत्नीहस्त धृत
 प्रज्वलित दीपविधि परिपूर्णतासिध्यर्थ, अमुकशर्माणंत्राह्मणवेदोक्त
 विधानेन पूजाचतुष्टयसम्पादनार्थं तथापडंगरुद्रीपाठैकाशिन्यादि
 कर्मकर्तुञ्चाचार्यत्वेन वा पाठकत्वेनत्वांवृणे ॥ वरणद्रव्यदत्त्वा
 प्रार्थयेत् । आचार्यस्तु० ॥ तत्रआचार्यांशिवलिंगपूर्वांक्तवैदिकपूजा
 पद्धत्यापूजयित्वा । स्वयंचपाठकैः सहपडंगरुद्रीपाठंमृत्युंजया
 दिजपञ्चकुर्यात् ॥ प्रदोषेपितेनैवविधिनापुनःसम्पूज्य,, रजतदीपं
 ससुवर्णात्फुल्लकार्पासवर्तिकायुक्तं गवाज्यपूरितंच शिवसन्निधौ
 संस्थाप्य, सम्पूज्यच, प्रार्थयेत्—३० परमार्थैरूपायनमस्तेपर-
 मात्मने ॥ स्वेच्छ्राविभासितासत्य भेदभिन्नायशम्भवे । त्रिगुण-
 ग्रन्थिदुर्भेदभवन्धविभेदिने । भवभीतिपराभृतः सन्तानार्थी
 च त्वामिह । शरण्यंशरणयातो व्रतभक्तिगृहाणमे ॥ ३० अग्नेनये
 त्यस्यागस्त्यऋषिस्त्रिष्टुष्टुन्दो ऽग्निदेवता दीपप्रज्वालने विनि-
 योगः । ३० अग्नेनयसुपथाराये ऽस्मान्विश्वानिदेवव्ययुनानि
 विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयष्टान्तेनम ऽउक्तिविधेम ।
 इति दीपंप्रज्वाल्य ॥ विनियोगः—३० अग्नेव्रतपाहृत्यस्यागस्त्य
 ऋषिस्त्रिष्टुष्टुन्दो ऽग्निदेवतादीपांजलिग्रहणेविनियोगः । ३०
 अग्ने व्रतपास्तेव्रतपायातव तनृर्मज्जभूदेपा सात्वयिसामतनृस्त्व
 व्यभूदिय ई० सामधि । यथायथन्नोव्रतपते व्रतान्यनुमेदीक्ष्वाण्दी
 क्षापतिरम ई० स्तानुतपस्तपस्पतिः ॥ इति मन्त्रेण यजमानपत्नी
 प्रज्वलितंदीपमजलौनिधाय ॥ वि०—३० आनइत्यस्यप्रजापति
 ऋषिरुष्णिक्शुन्दो ऽग्निदेवताकर्म्मनुष्ठाने विनियोगः । ३०
 अग्नेव्रतपतेव्रतंचरिष्यामि तच्छ्लेकेयन्तन्मेराध्यताम् । इदमहमनृ-
 तात्सत्यमुपेमि । ३० देवस्यत्वासवितुः प्रसवेश्विनोर्वाहुभ्यांपूष्णे
 हस्ताभ्याम् ॥ इति मन्त्रैर्दीपमंजलौगृहीत्वा यथावकाशमुत्तिष्ठेत्,
 विनियोगः—३० भूरसित्यस्या त्रिदिराऋषिः पंक्तिश्छन्दः पृथि-
 वीदेताभूमिप्रार्थने विनियोगः । ३० भूरसिभूमिरस्य दितिरसि

त्रिंशत्स्य भुवनस्यधत्री । पृथिवीयच्छुपृथिवीहृष्टं हृ पृथिवीं
माहिष्टं सीः इति संप्रार्थ्य । ३० पृथिव्यैनमः सम्पूज्यतत्रैवो
तिष्ठेत् ॥ शक्तिश्चेत्—३० नमः शिवाय,, इति मन्त्रंपुरुषोजप्त्वा
स्वयमपिस्थाणुवद्दीपरक्षांकुर्यात् ॥ ततश्चाचार्योरात्रौ पूजाचतुष्टयं
स्वयंकुर्यात् ॥ ततः प्रभातेसंजाते—शिवसमीपेसमागत्य—३०
अग्नेव्रतपतइत्यस्यप्रजापतिर्ऋषिःपंक्तिश्छन्दो ऽ गिनदं वताशिवो
पासनाव्रतविसर्जने विनियोगः ॥ ३० अग्नेव्रतपतेव्रतमचारिपं
तदशकंतन्मेराधीदमहंभ्य ऽ एवास्मिसो ऽ स्मि ॥ इति तूष्णीं दीपं
शिवसन्निधौ संस्थाप्यसुरक्षयेत् ॥ ततः स्नात्वानित्यकर्मसमाप्य
पुनः शिवसम्पूज्य, पाठजपादि शान्त्यर्थकुशकण्डिकोक्तप्रकारेण-
गिं संस्थाप्यप्रज्वाल्यसम्पूज्यच । जपपाठ दशमासंचरुणाहुत्वा
तदशांशतर्पणंमार्जनंच विधाय ३० अग्नेनयसुपथा० ॥ इति पूर्वो
क्तमन्त्रेणकृत्वा । दीपदानंकुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्या मुक-
राशिरमुकोहंकरिष्यमाणपूर्वेन्दि पुत्रकामनयाकृतस्य श्री सदा-
शिवप्रीत्यर्थ वैकुण्ठचतुर्दशारात्रौ अंजलिस्थदीपधारणकर्मणः
शान्त्यर्थमिमंसुवर्णवर्तिकासहितं दीपंतरजतदीपममुकशर्मणेतुभ्य
महंसम्प्रददे । प्रार्थयेत्—प्रदीपंतरौप्यदीपंच हैमवर्तिसतन्वितम् ।
सदाशिवनिमित्तंच ददामिव्रतपूर्तये ॥ ततः शिवलिङ्गपूर्वाक्तपूजा
पद्धत्युक्तप्रकारेण,, ३० भवंदेवंतर्पयामीत्यादिमन्त्रैर्दुग्धजलेन
तर्पयित्वा गोदानतिलपात्रंवाकृत्वा सपत्नीकंयजमानंपूर्वाक्त
विधिनाभिपिचयाशीर्दद्यात् । ततः शैवान्ब्राह्मणान्वाभोजयेत् ॥

इति हस्तधृतोत्थितासंडदीपदानपद्धतिः—

अथ शिवलक्षवर्ति दीपदान पद्धतिः ।

अथ च व्रतीगणेशादि पंचांग पूजनंकृत्वा शिवालयेगत्वा
पूर्वाक्तविधानेन शिवार्चनंकृत्वा, चापूर्वाक्त प्रकारेणद्वादशलिंगतो
भद्रं निर्माय पूजापद्धत्युक्त प्रकारेण भद्रस्थ देवान्सम्पूज्य,
आचार्यवृत्वा संकल्पः—अद्येत्यादि तिथ्यादिकं संकीर्त्यममाखिल

दुरितनाशोभीष्ट सिद्धिपूर्वकं सांवसदाशिव प्रीत्यर्थं आचरितं
 रूद्रलक्षवर्तिव्रतस्योद्यापनं करिष्ये, ततो लिंगतोभद्रे ताम्रकलशो-
 परिहैमंसांबरुद्रं श्यंवकमंत्रेण प्रतिष्ठाप्य शिवार्चन पद्धत्युक्त
 प्रकारेण सम्पूज्य भद्रस्य वाशिवलिंगस्य सन्निधौ, वार्त्तिकान्संस्था-
 प्म, मध्ये रजततीपं हैमीवर्तिकोपेतं संस्थाप्य गव्येनाज्येनापूर्य,
 ॐ शिवलक्षवर्तिकाभ्योनमः सम्पूज्य शिवं ध्यात्वा-ॐ अग्नेनय
 इत्यस्यागस्त्यञ्चपि स्त्रिष्टुष्ट्युन्दोऽग्निर्देवता लक्षवर्तिप्रदीपने विनि-
 योगः ॐ अग्नेनयसुपथाराधे ऽ अस्मान्विश्वानि देवन्वयुनानि
 त्विद्वान् ॥ युयोध्यस्मज्जुहुराण मेनोभूयिष्टान्तेनम ऽ उक्तिविवेम
 इति वार्त्तिकान्संदीप्य, ततो होमपद्धत्युक्तप्रकारेण प्रायश्चिन्तान्तं
 होमंकृत्वा । ॐ नमः शिवायेति मंत्रेण, घृतपायसं दशसहस्रा
 हुतिभिः लिंगतोभद्रदेवताश्चैकैकायाज्याहुत्याहुत्वा, ॐ अग्ने-
 नय० इतिमंत्रेण होमदशांसतर्पणं तर्पणदशांशमार्जनं सदुग्धजडेन
 कृत्वा उत्तराङ्ग पूर्णाहुतिंहुत्वा, गोदानंकृत्वा आचार्य ऋत्विग्भ्यो
 दक्षिणां दत्वा आचार्यो यजमानं कलशजलेनाभिषिच्यार्त्तिर्दे-
 यान् । ततो ब्राह्मणान्भोजयेत् ।

इति शिवलक्षवर्ति तीपदान पद्धतिः

नवाश्वनवभूवर्षे वैक्रमीयेदिने शुभे । ज्येष्ठे मासि सितेपक्षे दशम्यां
 चन्द्रहस्तयोः ॥१॥ आदित्यनामकेयंत्रे इन्द्रप्रस्थेशुभेपुरे । मुद्रितो-
 ऽसौ शुभः कर्मकांड रत्नाकरो मया ॥२॥ देवानन्देन विदुषा
 डिम्बरग्रामवासिना । समाप्तिमगमत्तस्य पूजाखंडोयथेष्टदः ॥३॥

इति कर्मकांड रत्नाकरस्य पूजाखंडः ।



श्री गणेशायनमः ।

अथ कर्मकांडरत्नाकरस्य, द्वितीयः संस्कारखंडः प्रारभ्यते ।

—*—*—*—

तत्रादौ विवाहसूत्रव्याख्यां वक्ष्ये—

एष विवाहोपयोगविषयाणि । अथातः संस्कारप्रकरणव्याख्यास्ये तत्र संस्कारो नाम
आत्मशरीरान्यतरनिष्ठो विहितक्रियाजन्यो ऽ तिशयविशेषः ॥ गर्भाधानादौ साक्षणिकं च
संस्कारपदम् ॥ स च संस्कारो द्विविधः—ब्राह्मोदेवथ ॥ गर्भाधानादिः स्मार्तब्राह्मणः ॥ पारयज्ञा
हविर्यज्ञाः सौम्याश्चदेवः । गीम्याः सोमयागाग्निष्टोमादयः ॥ स्मार्तब्राह्मणस्तु—उत्पत्तदृशिन
मात्रनाशकः । यथा—वीजगर्भममुद्भवैतौ निर्वर्णो जातकर्मोदिजन्व । स च पौडशधा
(तथाचजातूकर्ण्यः) आधानपुंगुमन्तजातनामात्तनीलता ॥ मौजीवतानिगोदान समा-
पत्तविवाहकाः ॥ अन्ये चैतानि क्रमांस्त्रिप्रोत्र्येनेर्षादशेषतु ॥ शद्राणाचैवभापतिविवाहान्त्वकर्मच ।
याज्ञवल्क्यः—ब्रह्मज्ञविश शद्रा षण्णस्त्रिंशद्यौ द्विजाः ॥ निषेकाद्याः समशानान्तास्तेषां
पैमन्त्रतः क्रिया ॥ मातुर्यदग्रे जायन्ते द्वितीयं मौजीवन्धनात् ॥ ब्राह्मणज्ञानियदिशस्तस्मादेत
द्विजाः स्मृताः ॥ याज्ञवल्क्यः—तृणोमेता क्रिया स्त्रीणां विवाहस्तु गमन्त्रक ॥ तृणोमन्त्र
रहितं ॥ एता क्रियानिवेकादिक्रिया ॥ विवाहमात्रसंस्कारं शरीरविक्रमतामदा ॥ अतः स्त्रीशद्र-
यो विवाहएववर, उपनयनस्थानविधानात् ॥ मनु—त्रैवाहिको विधिः स्त्रीणां मौपनायनिक
स्मृतः । याचस्पतिमिथादयस्तुत्रैवाहिकपुरुषम्याप्यायो विवाहसंस्कारएवेत्याहुः ॥ नेचित्तु उप-
नयनान्ते विवाहसंस्कारमाहुः गर्भाधानादिन्यायस्यात् ॥ यद्यपि पौडशसंस्काराणां मध्ये गर्भा-
धानस्यैव प्राथम्यं बहुपुत्राभ्येषु दृश्यते ॥ तथापि गर्भाधाना उपनयनान्तसंस्काराभ्येषु क्रियैव भवेति
विवाहसंस्कारस्तु गमन्त्रोक्तथातुर्णस्य न्यायात् श्रेष्ठत्वम् ॥ गृष्टपुत्रतावदिशत रूपं गृष्टो विवाहएव
प्रथममभूदतो न गर्भाधानाद्युपनयनान्तानां संस्काराणां प्राथम्यम् । यतोऽरसं पदं विना गभौ गु-

नादिरसंभवात् गृहस्थालीपाकानां वासम्भवात् ॥ पारस्कराचार्येण्यजुः शारथोयानां गृह्यसूत्रे
 विवाहएवपूर्वमुद्दिष्ट ॥ अतोमयादिअत्रकर्मकाण्डरत्नाकरप्रथमे षोडशसंस्कारादौ विवाहसंस्कार
 एकमंग्रहोतः । सच विवाहो ऽ ष्ठांभवति ॥ **उक्तंचमनुना**— ब्राह्मोद्द्वैयस्तथैवार्वाः प्राजापत्यस्त
 धामुरः । गान्धर्वारात्तसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोधम ॥ **तल्लक्षणानि याज्ञवल्क्योक्तानि**—
 ब्राह्मोविवाहश्चाह्वय दीयतेशम्यलंक्रुता ॥ तजः पुनात्युभयतः पुरुषानेकविशतिम् ॥ यज्ञस्थक-
 त्विलेदेय आदायार्पस्तुगोद्वयम् ॥ चतुर्दशःप्रथमजः पुनात्युत्तरजश्चपट् ॥ इत्युक्त्वाचरतां
 धर्मं सहयादीयतेर्धिमि ॥ सहायः पावयेत्तजः पट्पट्त्वंश्यान्समात्मना ॥ आसुरोद्विषादानाद्
 गान्धर्वः समयामिन्धः राक्षसोयुद्धहरणात्पैशाचः कन्यकाद्यलात् ॥ **आदौअनाधमीप्रायश्चि-
 त्तम्**—अनाधमीनतिष्ठेन द्विनमैकमपिद्विजः ॥ आधमेणविनातिष्ठ त्प्रायश्चित्तोयतेयतः ॥
उक्तञ्जमिताक्षरायाम्—अनाधमीसम्यत्सरंप्राजापत्यंकुच्छ्रंचरित्वा आधममुपेयात्, द्वितीये ऽ
 निकुच्छ्रम्, तृतीयेकुच्छ्रातिकुच्छ्रम् ॥ अतऊर्ध्वचान्द्रायणम् ॥ **अथ विवाहावसरः**—गुरधेतु
 वरंदत्वा म्नायोततदनुज्ञया । वैदव्रतानिवापारंनोत्वाह्युभयमेववा ॥ **अविप्लुतब्रह्मचर्यो
 लक्षणंस्त्रियमुद्वहेत्**—अनन्यपूर्विकोकान्ता मसपिण्डायवोयसोम् ॥ अरोगिणींभ्रातृमती
 गममानापरगोभ्रजाम् ॥ समावर्तनानन्तरंविवाहावसरः । **आदौकुलपरीक्षाआश्वलायनसूत्रे**—
 कुलमभेपरीक्षेतथेमावृतः पितृतश्चेतियथोक्तं पुरस्तादिति । **गदाधरभाष्येयमः**—कुलवंशीलं
 च वपुर्वयधवित्तं च पिशाचसनाथतां च । एतान्गुणान्तपरोक्ष्यद्वेष्याकन्यावुधैः शेषमचिन्तनीयम्
मनुरपि—महान्यपितृमृदानिगोऽजाऽविधनधान्यतः । स्त्रीसंव्येदशैतानि कुलानिपरिवर्जयेत्
 हीनेक्रियंनिष्पुण्यं निरुद्धंदोरोमशाशंसम् । क्षयामयाव्यपस्मारि शिवत्रिकुष्ठिवुलानिच । कुलाउ-
 ष्पाप्रजाः संभवंतोनिहारीतांक्ति । **अथ कत्यायनोक्तवरदोषा**—उन्मत्तः पतितः कुश्रिपंड-
 र्शैवस्वगोपाजः । चक्षु श्रंघ्रविहीनश्च तयापस्मारदूषितः । वरदोषाः स्मृताश्चेतिकन्यादोषा
 प्रकीर्तिताः । तत्रैववारदोक्ति —अपत्याधेस्त्रियः गृष्टा स्त्रीक्षेत्रंवोजिनोरराः । क्षेत्रंजीजवतेदेशे
 नाऽवीजीक्षेत्रमहति । **कन्यशुक्लक्षणःन्याहमनुः**—अव्यक्ताहो सीम्यनाम्नोहंसवारणगामि-
 नोम् । तगुलाम्भेशदंतां गृह्णते मुद्वहेस्त्रियम् । **अयोग्यकन्या लक्षणंन्याह**—जोद्वहे-
 ररपिला कन्यानाधिकार्गी नरोगिमशीम्, नालोमिदंनानितीमान्नाचाटो नपिगलाम् । विगलां
 फुराक्षीम् । नक्षत्रचन्दनदीनम्नो नान्यपर्यतनामिकाम् । नषद्यहिप्रेष्यनाम्नीनच भीषणनामि-
 काम् । **मयच मापिण्डयलक्षणम्**—अरोगिणींभ्रातृमतीं गमानगोत्रार्पहीनांचयगविहीनाम् ।
 विभ्रुजन्त्याथ गपिडतायामुक्तंयत् षुंस्वपरोक्षितः मन् । **उक्तंचधर्मनीकायाम्**—पुनः स्त्रिय-
 शुभरजोशनीन समन्यो वैशगरम्पारम् । गापिणामाह किलनेचिदन्वेषिण्डान्यसिन्वं गलुदै-

वतेषयात् । पितृव्यमातुलसहोदर मातुलान्यादीनास्ति चेतदितिमाभवतातुवाच्यम् । श्रद्धेयतो
 भवति देवगणोदयमेपां स्त्रीणां तुपिड्यकरणेपतिना सहैश्यात् । सापिड्यमेतदिह सप्तमपूरुपायन्तं
 गोर्ध्वमेवेत्तदपिमातृकुले पितुश्च । पुत्रादिषुत्स्वथच तातपितामहादि पदस्त्वैव नोपरि
 तथा हरिदत्तकस्तु ॥ कूटस्थमारभ्य वधूर्वरोर्वाचिदष्टमस्तात कुलं तदानीम् ॥ पशोभनेग्मातृ
 कुले द्वितीया दिकां वधूर्मूलत उद्वहेत्सः ॥ नैतच्छिष्टा आद्रियन्ते ततो ऽत्र मूलतपशो वाष्टमो
 मूलपशो ॥ मूलान्तद्वशाष्टमो चोद्वहेत्सः पक्षः धेयामास्ति पूर्वां परियान् ॥ मातृ वन्धुप्रयात्ताव
 वन्धुत्रितयतः क्रमात् ॥ पञ्चमी सप्तमी कन्या न विवाहा द्विजैः सदा ॥ अथान्तो वन्धु-
 प्रयनिरूपणम्—मातुः पितृव्यसुः पुत्राः मातृमातृव्यसुः सुताः ॥ मातृमातुल पुत्राय विनेया
 मातृवान्धवाः ॥ पितुः पितृ पितृव्यसुः पुत्राः पितृमातृव्यसुः सुताः ॥ पितृमातुलपुत्राश्च विनेयाः
 पितृवान्धवाः ॥ याज्ञवल्क्यः—पथमांस्सप्त मादूर्ध्वं मातृतः पितृतस्तथा मातृपक्षे पथमा
 रिपितृपक्षे सप्तमादूर्ध्वं सापिड्यं निवर्तते इति ॥ कूटस्थमारभ्य गणनाकार्या—गदाधर
 भाष्ये—वधाचरस्य वातात कूटस्थाद्यदि सप्तमः ॥ पञ्चमी चेतयोमाता तत्सापिड्यनिवर्तते ॥
 कूटस्थो मूलपुरुषोयतः सैतानभेदः ॥ असमानार्पे गोत्रजां श्रवैरिदं मार्पम् । गोत्रप्रवर्तकस्य
 मुनेव्यावर्तकप्रवरइत्यर्थः । गोत्रं वेश परंपरा प्रसिद्धम् । स्वसमाने आर्पे गोत्रस्य तस्मा
 ज्ञाता नभवतिताम् । यास्क वाधूल मौनमूकानां भिन्न गोत्राणमपि भार्गव वैतहव्यसावतसेति
 प्रपैरैवय मस्ति तत्र विवाहो माभूदिति असमानार्पजा मिन्युक्तम् । अगस्त्याष्टम सप्तम्यन्यत
 मापत्यं साक्षात्परंपराजातं गोत्रम् जमदग्निभैरद्वाजो विश्वामित्रान्नि गीतमाः । वशिष्ठ कश्यपा-
 रास्या मुनयो गोत्रकारिणः ॥ एतेषां यान्वपत्यानि तानि गोत्राणि मन्यते ॥ गोत्रकारिणो
 गोत्रप्रवर्तकाः । तत्रश्रीधायनः—गोत्राणान्तुसहस्राणि प्रयुतान्याहुर्दानिच । जनपथाश
 वैर्षा प्रवरा ऋषिदर्शनात् ॥ यथा—अथत्रिधाकाश्यप जातवर्गस्तं नैधुत्रा साङ्गिलरेभसंज्ञाः ॥
 गोत्रैक्यतां न्योन्यमनन्वयाः स्युः कुर्वन्तु सर्वमममुप्रभातम् । नैधुत्राणांत्रयः—कश्यपावत्सार
 सशाङ्गिल्येति । काश्यपावत्सार देवलेतिषा । काश्यप आवत्सार आसितेतिषा । काश्यप आसित
 देवलेतिषां । द्वौ वा देवलासितेति । रैभ्याणांत्रयः—कश्यपावत्साररैभ्येति नैधुवादि रैभ्यन्तानां
 सथे काश्यपानामविवाहः । एवं सर्वत्र बोध्यम् ॥ प्रवरैक्य विरोपमाह श्रीधायन—पञ्चानां
 त्रिषु सामान्याद विवाहं छिपुद्वयोः । शृग्वगिरीगणेश्वेव शेषेषु कोपि वारयेत् ॥ विवाहं मिति
 शेषः ॥ अथ समानार्पजागोत्र विवाहे प्रायश्चित्तम्—समान प्रवरा कन्या
 मेक गोत्रा मधापिवा ॥ विवाहयति यो मूढस्तस्य वक्ष्यामि निष्कृतिम् ॥
 उत्सृज्यतां ततो भायां मातृवरपरिपालयेत् ॥ इति शातातपस्मृतेः ॥

समान प्रवरस्वरूपचधौघायनेनोक्तम्—एक एकप्रपियान्तप्रवरधनुवर्तते । तावत्समान
 गान्त्रिक मृतेभ्युवगिरोगणा ॥ समानगोनत्वसमानप्रवरत्वामत्वर्थ ॥ स्वगोत्रप्रवरगहानेनि
 श्य स्वगोत्रप्रवरगहानविबुराणांतयेवच । ब्राह्मणानामथाचार्य्य प्रवरगणामिगिस्मृति ॥
 पाचायगात्रप्रवरानमितस्तुद्विज स्वयम् । दत्तात्मानतुक्स्मेचित्तद्गोत्रप्रवरोभवत् । यद्वा
 स्वगात्रप्रवरविज्ञानरहित पुमान् । जनदग्निगात्रप्रवरै स्वनायहिसमाचरेत् । अथचसापन्न
 मातृकुले माण्ड्यनिशय—यापन्नमातामहकुले ऽ प्यातिदेशिकात्सापिञ्जादविवाह ।
 तथाचमुमन्तु—पितृपत्न्य सदीमानरस्तदध्यातरापतुलाम्यद्रुगिन्यो मातृपसरस्तद्बुद्धित
 रणभगि शस्तदपत्यानिभागिनेयानि । अथयामस्मारकारिग्य स्यु । अत्रयावद्वचनवाचिकम्
 इति न्यायनपरिगणतानवातिदेशिक सापिञ्जम नतुपञ्चमसप्तमपर्यन्तमितिलक्षण्या त्रिपुरप
 सापिञ्जय १३३३हनिधायारधीयत इतिदिन ॥ अथदत्तकृसापिपत्यम्—सापिञ्जमुक्तखलुदत्त
 प्रस्यस्वतातवधोपिचमातृवध ॥ तत्तद्भनपलकतातमातृवरेकमात्सप्तमपवमात्तम् ॥ विरञ्च
 सम्वधोपिचिवाहेवज्य उत्तकधर्मनोकायाम्—त्राभ्याविरञ्चापिच सर्वयलासापन्नमातृ
 भागनोतनयाचतस्या पितृव्यपलिभगिनीतनयाच तस्या । उक्तञ्चगृह्यपरिशिष्टे—दम्पत्यो
 मिव पितृमातृगाम्यत्रिरदसम्ब वा यथ भायांस्सुर्हिताशालिनापुत्री । पितृव्यपत्नीस्वमा-
 ण्ति । षेचित्तु गुरारचक्षि यम्यचक्रयकापुत्याभ्या तव श्वेष्टमहोदरस्य ॥ भायांसापिञ्जसुता
 च न्यागायत्रिकात्रापवेष्टुम् ॥ धमणवन्पादिप्रतागताय स्नहेनक्वादिप्रतागताय ॥
 कस्यापुतपानकदापि नायात्रिरुध्दम्व वामद्वदन्ति ॥ अथच सापिञ्जविवरणम्—वध्वा
 वरस्ययातान कृन्थयादसप्तम । पचमीनत्तयोमाता तत्सापिञ्जयन्यतन । इति शखवान्य
 मातृशब्दानस्त्रजननीम् प्रवाचका ऽ पितु—तिष्ठ पूज्या पितुपत्ने तिष्ठोमातामहत्या । इत्यता
 मातर पूज्या सर्वेशावभिनर्णयात् । इति मातामहादिष्वपिमातृशब्दवाधकात् पितामहादि
 साधारण ॥ तथाचकूटस्यामातरिपचन्याचतुर्ध्यापितामर्था तृतीयायांप्रपितामर्था द्वितीयायां
 ष्टु प्रपितामर्थापिचकूटस्व सापिञ्जतामिधते ॥ एवगात्राणिप्रवराश्च सक्षेपणनिदिक्ष्यएतयां
 पेशारम्परया अयात्तरभेधेनबहुमुलानिजातानि । तपानवापिप्रवरा गोत्रप्रवरैवयपिप्राम
 परकजातिभेदात् गात्रप्रवरया मन्त्राचकृत्वा परपरागवधापि मन्त्रेण विवताभवति । तदुक्त्वा
 नपुत्रिणामि—यस्तुशान्तुण्यणुसुलमाण्चाव्वहेत् । त्रियसव्याहार्य्य स्याद्विदायैत प्र
 तीयते । यस्मिन्व्ययआचार परम्पध्यकमागत । यणानांनैतसंयान सदाचारउच्यते । तत्रै-
 भृगु — यस्मिन्वशेषुप्रामैत्रैविद्येनगरेऽपिना । योग्यविहितोधर्मस्तधर्मनविचालया । उक्तं च
 धमस्तिधौ—उदयरे गत्तमादुर्षे तद्भानेनुसप्तमीम् । पचमीनदभावनु पितृपत्न्ययत्रिधि

सप्तमी च तथापत्रोपंचमी च तथै च । एवमुद्वाहयेत्यन्या नद्याः शाकटायन । तृतीयाया
 तुर्प्यापापक्षयोहभयारपि । विवाहयन्मनु प्राहपारशर्यायमाहिरा । मरुदेक्षानुपणक्तिबुला
 चारादाचरन्तितेपां सार्पिष्यसकाशेन विवाहो नदापायभवतीति पूर्वमस्मति । येनास्यपितरो-
 यातायनयाया पितामहा । येनयाया सती मार्गतेनगन्धमदुप्यति । पथं दाक्षिणात्येषु
 मातुलकन्या परिणयनेऽपि—मातुलस्थसुतामूढया मातृगोत्रांतयेव च । समानप्रवराचैव
 त्यक्त्वा चान्द्रायणचरेत् । गोत्रान्मातु सरिडाथ विवाहो गोवधस्तथा । उक्तं च मत्रलिङ्गे-
 तृप्ताजहुमातुलस्यैवयापाभागस्ते पितृष्वसयीषपामिव । १ यादिमातुलकन्यापरिणयनस्य
 निषेधत्वादपि यपासुक्तं मातुलकन्यापरिणया नुगतस्तथा दापायनभवति । परपरारहितानातु
 दोषाय भवति । अथवाग्दानार्थं कन्यादातारः—पिता पितामहा भ्राता
 सकुन्याजननी तथा । कन्याप्रद पूर्वनाशेप्रकृतिस्थ पर पर । अप्रयच्छ न्समानाति
 श्लेषहत्यामृतादृता । गन्धत्वभावदातृणा ययासुतास्त्वयवरम् । नारदोऽपि—
 तस्यामप्रकृतिस्थार्यो कन्यादशु स्वजातय । यदातुनैव कश्चित्साकन्या राजानमावजेत् ।
 गन्धवादिष्वपिपतिभावात् पश्चाद्दामादि सप्तपदीपर्यन्तकार्यम् । गांधर्वासुरपैशाचा विवाहा
 राजसधय । पूर्वपरिग्रहस्तपु पश्चाद्दामा विधीयत । होमाद्यभावेवरान्तराय देयासेतिवैधा
 यनब्राह्म—यलादपहता कन्यामत्रेयदिनं सस्कृता । अन्यस्मैविधिवद्देया यथाकन्यातयेवता ।
 इति गदाधरभाष्य परिशिष्टात् अथवाक्दानविधि विवाहादि क्रियाशालं तत्क्रिया
 सिद्धिकारणम् य प्रयत्नं प्रति वमनं सोऽश्वमधफललभत । इति चोक्त्वा—अन्यद्ग पतिन
 वल बद्धशदीपविजित । इमाव यो प्रदास्यामि वधामिन्द्रिजमनिधी । वाचायतामयाकन्या
 पुनार्थं स्वीकृतायवया । कन्यावलोकनविधि निश्चितत्वसुखीभव । वरपिताच दृश्या । वाचादत्ता ॥
 त्वया कन्या पुनार्थं स्वीकृतामया । वरावलाकनदिपौ निश्चितत्व सुखीभव । अथच वाग्दानो
 स्तर वरमरणे विशेष —अद्भिर्वाचा च दत्ताया म्रियेतीर्ध्वरोयदि । नचमधोपनीतास्या
 कुमारीपितुरेयासा । वशिष्ठ —कुलशीलवेहोन्स्य पढादिपतितस्य च । अपस्मारि विधर्मस्य
 रोगिणा वपयारिणाम् । दत्तामपिहरेःकन्यास गोत्रोदातयेव च । अथातो विवाहार्थं मधुपर्क
 सूत्रव्याख्या—(पड्यर्था भवति १) पत्रपुरा अप्थोभवति अघाहाभवतीतिशेष ।
 पूजनीयाइ यथ । क त—(आचार्य ऋत्विग्देवाहो राजाम्रिय स्नातक इति २)
 तानाह—आचार्य उपनयनपूर्वकवेदाध्यापक । ऋत्विग धीतस्मात्तदिक्रमार्थवृत्तो ब्रह्मादि ।
 पैवायाजामाता । राजाअभिषेकादिगुणपान् प्रजापालनेऽधिकृत , क्षत्रिय, प्रिय उत्कृष्टज
 विदो यमाननाति गम्वागा । स्नानको ब्रह्मचर्या समावृत्त । आचार्यस्यैवार्थान्तायस्य । उक्तं

च मनुना । तंप्रतीतं स्वपमंण मद्रदायहरंपितुः सगिणं नन्यमागोनमनंदेः प्रथमंगना । (प्रति-
 संवत्तमगनहर्षेयु. ३) प्रतिमंवरगरागतनेतानानाचारो न अप्यंणपूजनेयुनांवाक् । (यद्म-
 मणास्त्वृदिजः ४) यद्यमाशावहंरिष्यन्तोयजमानाः, प्रतिजांयाज गन्तुपुनः अर्हंयु-
 द्दत्तुपंगोनप्रति मंवरनियमः । (आमनमाद्याहं साधुभवानास्तामचेयिष्यामी
 भवन्तमिति ५) आगनेवाहणादिदारुमयंपीडादि आहार्यश्चुनरंरानाद्य आहृमोतिअर्च-
 क्रिमिति । एवं । कथंनान्पूष्व. गाधुगुंगयथाभवति तथास्तानिष्ठु पूजविष्यामी भवन्तम-
 नोर्ययावत, अर्चविष्याम इति बहुषचने नपरिवारापेक्षं यप्रवा अहंनान्च्छति
 गर्भे गृणाद्य वै तत्र धेयमि इति धुः ॥ (आहरन्तिविष्टरं पाद्य
 पादार्थं मुदकमर्धमाचमनीयं मधुपपर्कं दधिमधु घृतमपिहितं
 का ११ स्यं कः ११ स्यं ६)— आहरन्ति आनयन्ति यजमान पुरुषाः विष्टरादि
 मधुपर्कं पर्यन्तान्यहंसां पकरणां ॥ तत्र विष्टरं पराशिसति दर्भेनहणमयं साममनन्तं कूर्चम् ॥
 पंच विंशति दभाणा धेयमे प्रथिभूयिता ॥ विष्टरं सर्वं यजेतु लक्ष्यं परिकीर्तताः । इति हरि
 हर. ॥ प्रादेश मात्रं त्रित्तं कीधेया चारनिमित्तमिति रेणुः ॥ पंचाशद्धिर्भेदश्च ब्रह्मा
 तदधेनतु विष्टरः ॥ इति परि शिष्टाव ॥ पाद्यं पदभ्यामाक्रमणीयं मुक्तलक्ष्यं द्वितीयविष्टरम् ॥
 पादार्थमुदकं पादप्रक्षालनार्थं ताम्रादिपात्रस्यैजलंमुखाप्लवम् ॥ अर्धगन्धपुपाक्षनपुशतिलशुभ्र
 सर्पपदधिदूवांनितंमुवणादिपात्रस्थं तदभावेशंयस्त्ववाजलम् । आचमनायमाचमनार्थं कमण्डलु
 सम्भृतंजलम् । मधुपर्कंदधिमधुघृतंकास्यपात्रेकृतम् । अपरेणान्यपात्रेणाच्छादितम् । मधु
 पर्कंदध्यामे पयोजलंनानप्रतिनिधिर्मध्यलामेघृतं गुडोपन्याश्वलायन. । (अन्ये खिखिः प्राह
 विष्टरादीनि ७) अन्यो ऽ चंकादपरः । विष्टरो विष्टरो विष्टरः । इत्येवमेकैवात्रि खिस्त्रीस्त्री
 न्वारानूयाव । विष्टरादीनिविष्टरप्रभृतीनिपद्यपादार्थांदिपात्राचमनीयमधुपर्कान् ॥ (विष्टरं प्रति
 गृह्णाति ८) प्रयद्सुखेन यजमानेनतिष्ठनादत्तं आगनात्पदिचमेप्राटमुसन्निष्ठमर्धः पूवाक
 लक्ष्यंविष्टरंत्पणां पाणिभ्यामुदगप्रभादत्ते । (यमोस्मिसमानाना मुद्यतामिवसूर्यः ।
 इमंतमभितिष्ठामिपोमाकश्चाभिदासति । इत्येनमभ्युपविशति ६) यमोस्मिइति
 भन्त्रान्तेपुंविष्टरमुदगप्रसासेन निधायाम्युपविशति ॥ (पादयोरन्यं विष्टरमासीनाय १०)
 आसीनायाभ्यांन्यं विष्टरंयजसान. पूर्ववद्दत्तानि, सचतंपूर्ववत्प्रतिगृह्यप्रक्षालितयो पादयोरन्य-
 स्तावयमो ऽ स्मीत्यनेनमन्त्रेणनिदधाति ॥ (सव्यंपादंप्रक्षालयदक्षिणं प्रक्षालयति ११)
 ततो ऽ न्येनपाद्यमितित्रिरुक्तैयजमानापित पाद्योदकमादाय वामंचरणं प्रक्षालयइतरं प्र-
 प्रक्षालयति, क्षत्रियादिरर्धं ॥ (ब्राह्मणश्चेदक्षिणं प्रथमम् १२) यदि ब्राह्मणोऽर्धः ३

स्यात्तदा प्रथमं दक्षिणं प्रक्षाल्य वामं प्रक्षालयति ॥ (विराजोदोहोऽसि विराजो दोहो मशीय मयि पाद्यायै विराजो दोह इति १३) विराजो दोहोसि इत्यावृतेन मंत्रेण ॥ (अर्घं पति गृह्णाति, आपस्थयुष्माभिः सर्वान्कामानवाप्तवानिति १४) ततोऽर्घ्यं इत्येतत्त्रिरुक्ते यत्रमानदत्तमर्घम् । आपस्थयुष्माभिरित्यनेन मंत्रेण प्रतिगृह्णाति । (निनयन्न- भिमंत्रयतेसमुद्रंयः प्रहृणोमि स्वायोनिमभिगच्छत । अरिष्टाअस्माकंविरामा परोसेचिमत्पय इति । १५) प्रतिगृहीतमर्घं शिरसाभिवन्द्यनिनयन्भूमौ प्रवाहयन् अभि- मंत्रयते समुद्रंयः इति मंत्रेण । अभिमंत्रणं अनामिकाप्रेणस्पर्शनं अयलोकनंवा ॥ (आचामत्या मागन्यशसा स ॐ सृजवर्चसा । तंमाकुरुमियं प्रजानामधिपतिं पशुनामरिष्टिं तनू- नामिति । १६) तत् आचमनीयमिति त्रिरन्योक्ते यजमानेनदत्तमाचमनीये प्रतिगृह्य, आमागन्यशसा इति मंत्रेणाचामतिसकृत् प्रार्शनातिजलम् । ततः स्नातचमनं करोति । एवंस- वंश्र (मित्रस्यत्वा इति मधुपर्कं प्रतीक्षते १७) । ततोमधुपर्कं इति त्रिरन्येनोक्ते यजमान इदं गतमुद्पादितंमधुपर्कं मित्रस्यत्वेति मंत्रेणप्रतीक्षतेपश्यति । (देवस्यत्वेति प्रतिगृह्णाति १८) देवस्यत्वा इति मंत्रेण यजमानदत्तं मधुपर्कं दक्षिणहस्तेन प्रतिगृह्णाति । (सव्ये पाणौकृत्वा दक्षिणस्थानामिकयात्रिः प्रयौतिनमः श्यावास्यायान्नशने यत् अग्निदं तत्ते निष्क्रन्तमिति । १९) तंमधुपर्कं वामहस्ते निधायदक्षिणस्यपाणेः अनामिकागुत्या त्रिवारमालोडयति । नमः । श्यावास्य इति मंत्रेण । (अनामिकाङ्गुष्ठेन च त्रिर्निरुक्षे- यति २०) अनामिका च अङ्गुष्ठश्च इत्यनमिकाङ्गुष्ठौ, अनयोः समाहरः अनामिकाङ्गुष्ठेनत्रिवार निरुक्षयति पात्रादपहिनिंगमयति प्रक्षिपति चक्रात्प्रतिसंयपनेनिरुक्षणम् ॥ (तस्यत्रिः प्रार्शनाति यन्मधुनौसध्वयपरम ॐ रूपमन्नाद्यम् । तेनाहं मधुनो मध्वयेन परमेणरूपेणात्राद्येन परमो मध्वव्योश्चादोमानोति । २१) तस्यमधुपर्कस्य एकवेशमा- दाय "यन्मधुनोमध्वयम्., इत्यादिनामंत्रेण सकृत्प्रार्थय पुनरनेनैव मंत्रेणउच्छिष्ट एवं द्वितीयं प्रार्थयतद्वन्मर्त्रं चिद्धं तृतीयंप्रार्शनानि । उच्छिष्टस्यैव मंत्रोच्चारणम्—(ताम्बूलेनुफलेचैव शुक्रस्नेहाहुलेपने मधुपर्कं च सोमं च नोच्छिष्टं मनुर प्रवोत् । (मधुपत्नीभिर्वा प्रसृचम् । २२) मधुवाता इत्यादि तिसृभिः अग्निभिः प्रसृचं प्रतिमंत्रंवा पूर्ववद्विः प्रार्शनाति ॥ (पुत्रायान्ते वासिनेवोत्तगत आसीनायोच्छिष्टं दद्यात् - ३ ।) मधुपर्कस्य शेषः प्रतिपत्तिमाह—पुत्राय सृजवेअन्तेवासिने उपनयनप्रभृति विशाधित्वेन आचार्यैकुलवांसिने शिष्यायवाकथं भूतायउत्तरत आयोनायउच्छिष्टं प्रार्शितशेषंमधुपर्कप्रयच्छेत् । (सर्वंवा प्रार्शनीयात् । २४) । अथवासवे भैक्षयेत्, । (प्राग्वासंचरे निनयेत् । २५) यद्वाप्राक्पूर्वस्थादिशि अथचरे जनसंचारवर्जिते

दक्षिणैवेत् । अत्र पूर्वापूर्वासंभवे उत्तरोत्तरां प्रतिपत्तिं कुर्यात् । आचम्य प्राणान्तसंमृशति
 'चाङ्गमन्मास्येनसोः प्राणोऽदणोश्चक्षुः कर्णयोः श्रोत्रं वाहर्षलमूर्वांरोजोरिष्टानि
 मेऽङ्गानि तनूस्तन्वामेसहेति २६ ।) आचम्यप्राणानिद्रियाणि गमृशतिसजलमालभते ।
 तद्यथा वाद्मन्मास्ये इति मुपंकरामेण । नमोभंप्राण स्तजन्व्यद् गुह्याभ्यां युगपत्तनुषी ।
 कर्णयोर्मश्रोत्रमस्तु पाहोभं यलमस्तु, ऊर्वांमं श्रोत्रोस्तु, अरिष्टानिमेऽङ्गानि, तनूस्तन्वामं सहसन्तु,
 इति शिरः प्रसृतीनि पादान्तानि सर्वांगयंगानि उभान्यां हस्ताभ्यामालभनं अथ गवालंभनम्
 आचान्तोदकाय शासमादाय गौरितित्रिः प्राह २७) आचान्तमुदकंयेनत आचान्तोदकः
 रमस्मैध्याय शांस्सङ्गं गृहीन्वा यजमानः—गौर्गौर्गौः आलभ्यतामिति प्राहश्रवोति ।
 (ततोऽर्घ्यः प्रत्याह माता रुद्राणां दुहिता वसूना ॐ स्वसादित्यानो
 ममृतस्पनाभिः । प्रनुवोचं चिकित्तेषु जनाय मागमनागामदिति वधिष्ठ ।
 ममचा मुप्यच पाप्मानं ॐ हनो मीति यद्यालभेत ॥ २८ ॥) ततोऽर्घ्यः—माता
 रुद्राणा मित्यादि वधिष्ठेत्यन्तं मंत्रं पठित्वा, मम चामुक शर्मणो यजमानस्यच पाप्मानं
 हनोमीति पठिति यदि गामालभेत ॥ (अथ यद्युत्सिद्यत्तेन्मम चामुप्यच पाप्माहत्,
 ३^० उत्सृजत तृणान्यत्त्विति ब्रूयात् ॥ २६ ॥) अथवा अर्घ्यो यदि गामुत्सृष्टु मिच्छेत् ।
 तदा मम चामुक शर्मणो यजमानस्यच पाप्माहत् । ३^० उत्सृजत तृणान्यनु इति ब्रूयात्
 इत्यन्त मुच्चैः पठेत् ॥ (नत्वेवामा ॐ सोर्धः स्यात् ॥ ३० ॥) तु शब्द पत्तुत्वावृत्ती ।
 अर्धः अमास परवालम्भवजितो नैवभवेत् । अत्र यद्यालभेत—यद्युत्सिद्यत्तेत् इत्यनेन सूत्रेण
 गवालंभस्य विवलाय विधाय, नत्वेवामा ॐ सह, इत्यनेन गवालंभनमर्ध पात्रे नियमेन विधत्ते,
 तथाच सति द्वयोः स्मृतयो विरोधे अप्रामाण्ये प्राप्तं व्यवस्था माह—(अधियज्ञमधि
 विवाहं कुरुतेत्येव ब्रूयात् ॥ ३१ ॥) अधियज्ञं यज्ञे अधि विवाहं विवादे । कुरुत विदधत
 गवालंभं पाप्मानं हनो मीत्यस्यान्ते इत्येवं वदेत्, अन्यत्र पाप्माहत् इति पाप्मानं ॐ हनोमि,
 इतिवा विकल्पो नान्यत्रेतिभाव । यद्यप्येवं मधुपर्कं गवालम्भ आचार्येणोक्तं स्तथापि अस्वर्ग्य-
 स्त्वाहलोक विद्विष्टत्वाच्च कलौ न विधेयः । अस्वर्ग्यं लोकाविद्विष्टं धर्ममप्याचरेन्नतु । इति याज्ञ-
 वल्क्यादि स्मृतिषु निषेध दर्शनात् ॥ इति हरिहरः ॥ यज्ञाधानं गवानंभं सन्यासं पलपैतुक्म ।
 देवराच्च सुतोत्पत्तिः कलौ पंच विवर्जयेत् ॥ इति पाशाङ्ग स्मृतेः ॥ अतश्च गवालंभस्य
 कलौ निषिद्धत्वा दुत्सर्गस्यच यज्ञ विवाहयो रप्राप्तत्वाद् गौरित्युच्चारणादि यज्ञ विवाहयो कलौ
 न प्रवर्तते । यज्ञ विवाहयो रन्यत्र दुत्सर्गं पक्ष एव कलौ इति गदाधरः । (यद्यप्य सृष्टस्त्वं
 पत्सरस्य स्तोमेन यजते कृताध्यां पवैनं याजलेयुर्ना कृताध्यां इति श्रुतेः ॥ ३२ ॥)

यद्यपि असकृत्पुन पुनः संपत्तरस्यसंपत्तरैसांमेन ज्योतिष्टोमादिनायजेत । तथापि एनं सोमयाजिनं कृतमर्थ्यकृतोऽधंविपाते कृताध्यागपंगन्तः । याजयेगुर्मंत्रंकारथेयुः नश्रकृताध्यां याजगेगुरिति धुंसातागत ।

इति मधुपर्क सूत्र व्याख्या समाप्ता ।

अथ विवाहसूत्रव्याख्या ।

अथ विवाहसूत्रव्याख्या (सत्वारः पकयथाः हुतोऽहुतः प्रहुत प्राशित इति ॥१॥) पच्यतेअच्यतेओदनादिषु मस्तिन्नितिपाकोगृह्याग्नि स्तस्मिन्पाने नान्यत्रेतिभावः पाथेयज्ञा पाकयज्ञा । यत — वैवाहिकेऽग्नीवृत्तं गार्थंरुर्म यथाविधि । पंचयज्ञविधानं च पक्कि चान्वाहिकीगृहो । इति मनुनादेर्नदिनपाको गृह्येऽग्नीन्मर्यते । तेचत्वारधतुर्विधाभवन्तिप्रथम् — हुतोऽहुतः प्रहुत प्राशित इति ॥ तत्रहुत होममात्रम्, यथापार्यंप्रातर्होमः । अहुत होमयत्तिरहितंकर्म, यथा सस्तरारोहणम्, प्रहुत यत्रहोमोयत्तिरुर्म भक्षणं च, यथा पक्षातिकर्म । प्राशित यत्रप्राशनमात्रम्, नहोमोयत्ति, यथा—गर्वासांगत्रापयसिपायसश्रपशानन्तरं ब्राह्मण भोजनम्, इति चतुर्विधा ॥ (पंचसुवह्नि शालायां विव ह चूडाकरण उपनयने केशान्ती सीमन्तोन्नयने इति ॥२॥) पंचगुप्तस्काररमेणु वह्निः शालायागृहाद्बहिर्भेडपभवति तस्याग्ने भवति । यथा विवाहे चूडाकरणेउपनयने अतयंधेवेशान्ते गोदानकर्मणि सोमन्तोन्नयने गर्भनस्कारे । एतेषुपंचसुवह्नि शालायामनुष्ठानम् । अन्यत्रगृहान्तरे सुरशालायामेव । मंडपश्च सुहृत्तन्दिन्तीभर्तुः—हस्तं, ग्याधेदहस्तै समन्तात्तुल्याधेदी सद्मनोपामभागे । युग्मेचसेषष्टहनेच पंचसुवह्नि स्थानमंडपोद्वात्सर्गतात् । विवाहपटले—मंगलेषुच सर्गुमंडपो गृहनामन कार्य षोडशहस्तोवा द्विषष्टहस्तोदशाविधि । स्तम्भेधतुर्धरेपात्रवेदी मध्ये प्रनिष्ठिता । शोभिता चित्रिताकुम्भैरासंमन्ताच्चतुर्दिशम् । द्वारपिद्धावली पिद्धाद्वयद्वयधास्तथा न कार्यावेदिनात्पत्रैः शुभमंगलकर्मेषु । अतदन्ते संस्कार्यत्वाद्द्वयद्वकहस्तेनवेदीनिमित्ति । विवाहेतु कन्यागृहे एषु वरपूजनस्योक्तत्वाद् गृहस्थाधमस्य तदायत्तत्वाच्च कन्याहस्तेनैववेदीनिमित्ति । उक्तं च वशिष्टेन—षोडश रत्निकाकुयच्चतुर्द्वारोपशोभिताम् । मंडपंतोरणैयुक्तं तत्रवेदीप्रकल्पयेत् । अष्टहस्तं च रचयेन्मंडपंवा द्विषष्टरम् । उत्तमः षोडशहस्तो मध्यमोद्वादशहस्तो ऽपमोऽष्टहस्त उक्तं च नारदेन—समां तथा चतुर्दिक्षुसोपानै रतिशोभिताम् । प्राहुदरप्रवशा रम्भास्तंभर्हंसशुभादिभि । पर्वविधामारुहोन्मिपुनं सामिनेदिवाम । वेदीपट्रेमुत्तिष्ठते च चतुर्विशाच्चतुल्युता । वेदीवेवाहिनी मायां चतुरंगुलमुत्तिष्ठता ।

ताशत्रोनेव लिप्येतनयंध्याविधवेस्त्रिषो । पतिपुत्रपती नारीगैवतामुपलेपयेत् । मंडप
 प्रतिष्ठान्धिः रेणुकारिकायाम्—मंडपस्थापनं पुन्यात्स्वस्तिवाचनपूर्वकम् । चतुरां ब्राह्मणां
 स्तत्र पूजयेद्दक्षिणादिभिः । नंदिनीनलिनोमैत्राउमा च पशुपतिनो । मंडपस्थापनेयोऽग्न्याः स्त-
 म्भेमात्रा. प्रकानिताः । विवाहोत्तरं मंडपोद्वासनं देवकोस्थापनं चाहनारदः—समेतुदियते
 कुर्याद्देवकोस्थापनमुधः । पठंचविषमं नेष्टमुक्त्या पंचमसप्तमी । समेपुपष्टंविषमेषुच पंचम
 सप्तमन्यतिरिचं दिने नेष्टमित्यर्थः । (उपलिप्त उद्धताधोक्षितेऽग्निमुपसमाधाय ।२।
 उपलिप्ते गोमयोदकेन, उद्धतेस्त्वेनउल्लिखितेनेति तिमृभिः रेखाभिः श्रयोक्षिते उद्वेनाभ्युक्षिते
 वहिः शालावृहयो रन्यतरस्मिन्प्रदेशे अग्निमुपसमाधाय । अग्निर्लौकिकमायसध्यं वा उपसमा-
 धाय स्थापयित्वा । अयंच लेपनादि विधिनापूर्वं. अपितुपरिसमुह्य (पा० ४० कां० १ कं० १
 सू० २) इत्यादि पूर्वोक्तास्यैवानुयाद' तत श्रानुक्तमपि परिसमूहनमुद्धरणश्च सर्वप्रभवति ।
 (एष एव विधि र्यत्रषवच्छिद्धोम.) (पा० ४० कां० १ कं० १ सू० ५) इति यच-
 नात् । (निर्मन्ध्यमेके विवाहे ।२। विवाह इति दारपरिग्रह कर्मणोनामधेयम् । एकेश्राचायाः
 विवाहे पाणिग्रहणे निर्मन्ध्यम् आरणेयार्गिं वैवाहिकहोमाधिकरणमिच्छन्ति, अन्येलौकिकमि-
 च्छन्ति । (उदगयन्महापूर्यमाण पक्षेपुण्याहे ।५।) (कुमार्याः पाणिगृह्णीयात् ।६।
 उदगयनेमकरादिनाशिपट्कस्थितेरवौ आपूर्यमाणपक्षे शुक्लपुण्याहे ज्योतिः शास्त्रोक्तविध्या-
 दिदोपरहितेकुमार्या अनन्यपूर्विकायाः कन्यायाः अक्षतयोन्या विवाहात्पूर्वं अधर्षितायाः । ननु
 विवाहोत्तर पतिमरणपेक्षया अक्षतयोन्याः निधवाया । वक्षमाणविधिना विवाहंकुर्यात् ।
 विशतिप्रसूतास्त्रीपुदासार्थे कुमारीग्रहणं स्मर्यतेहि तस्या पुनर्विवाहः पत्यासह भवतीति
 नत्यन्येनपुरुषेण सह पुनर्विवाहः । उदगयन आपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे श्युक्त्वात्कालप्रसंगाच्च
 स्मृत्यंतरोक्त संवत्सरादि कन्या विवाहकालोऽनिश्चयते तत्र ज्योतिर्निवन्धे—पटव्दमध्ये
 नोद्याह्या कन्यावर्षद्वयंततः । सोमोभुक्तेततस्तद्वद्वगन्धर्वश्च तथानल । तथायम—सप्तस
 वत्सरगूर्ध्वविवाहः सार्ववर्षिकः । कन्याया शस्यतेराजप्राप्त्यधर्मगर्हितः । तत्रयुग्मायुग्मवर्ष-
 विचारः राजमार्तृरहे—अयुग्मेदुर्भगानारी युग्मेतु विधया भवेत् । तस्माद् गर्भान्विते युग्मे
 विवाहेसा पतिमता । मासत्रयाद्गूर्ध्वमयुग्मवर्षं युग्मेऽपिमासत्रयमेवयावत् । विवाहशुद्धिं प्रयद-
 न्तिसन्तो पात्स्यादय स्त्री जनिजन्यमासीत् । कन्याविवाहकालमाह—अष्टवर्षाभवेद्गौरी
 नववर्षातुरोहिणी । दशावर्षाभवेत्कन्या ऋत ऊर्ध्वरजस्वला । दशमेनाग्निका वा स्याद्द्वादशे
 वृषलोऽस्मृता । अंपरावृषलीश्या कुमारीधारजस्वला । प्राप्तेतु द्वादशेवर्षयः कन्यानप्रयच्छति ।
 मासिमासिरजस्तस्याः पितापितिशोणितम् । तस्मादुद्याहवेत्कन्या यावर्षतुमतीभवेत् । प्रदानं

प्राप्तोरस्तस्या ऊर्ध्वकुर्वन्सदाभार । वरैरिक्तगुणाभाया मुद्वहेत्त्रिगुण स्वयम् त्रिंशदवर्षा
 दशब्दां च भार्यावि-दतिनामिनकाम् । १५श्रीप्राता पितामाता दृष्टवान्यारजस्तलाम् । त्र्यपांशेय
 त्रयस्तेनरकयान्ति स्वयमित्यत्रबोधम यस्तांविवाहयत्कन्यां ब्राह्मणीमदमाहित ह्यसंभाष्यो
 सप्रिभ्रुवृत्तोपति वृत्तली सप्रहीतायो, तद्वरणोमदमाहित सत्तत्तत्कृतस्य ब्रह्महत्यादिनदिने
 विनुर्गृहेतुयाक-यारज पर्यत्यमस्तृता । भृशहत्यापिनुस्तास्या साकन्यावृत्तलीस्मृता दद्यात्
 गुणभेदेकन्यां नमिनीं ब्रह्मचारिणीम् । अपिवा गुणहीनाय नोपरुन्व्याद्रवन्त्वलाम् ।
 च्छुभोनराणामुभयोश्चत्रिगुद्वितोविवाह ॥ वदुःकन्याजन्मराशे स्त्रिकोणायद्विसप्तग । श्रेष्ठं
 गुरु सपदश्यायेपूजयान्धर्मादत्त ॥ यदाहगुरु — श्रीणांगुरुवलनैवविवाह शोभनस्मृत
 परस्याङ्गवलप्राप्त्ये-दवन्त्वभयोरपि ॥ देवल — नशा मजाधनवतोविधवाकुशीला, पुत्रान्विता
 हतधवासुभगाविपुत्रा । स्वामिप्रियाविगतपुत्रधवाधनाया भवत्सुरगुरुरीकमशोभिचन्म ॥ गर्ग -
 जन्मत्रिदशमारिस्थ पूजयाशुभतोगुरु । विवाह ऽ वचतुःश्याद्विद्वादशस्थोमृतिप्रद ॥ आस्याप-
 याद् — सर्वनापिशुभदद्याद् द्वादशाब्दात्परगुरु । पक्षपञ्चदशोरथ शुभगाचरतामता ॥
 रजस्त्रलाप्रतिविशेषमाह — रज स्वलया कन्याया गुरुशुद्धिदिनचिन्तयत् । अष्टमऽपिप्रक
 र्तव्यो विवाहस्त्रिगुणाचनेनात् ॥ अर्कगुणविलगौश्यां रोहित्यकयलास्तृता । कन्याचन्द्रवलाप्राहा
 वृत्तलीसन्तोवला । वृत्तलीरजोवतीकन्या ॥ बृहस्पति — स्वचापकुणोरस्थो जीवो ऽ प्य
 शुभगाचर । अतिशोभनतांद्याद्विवाहोपनयादिषु ॥ क्षय शुचोदित्यादिफलमाह — गुणां
 द्वियेव्यतोपात वक्रातीवारगेगुरी । नष्टेशशिनिशुक्लेवा बालवृद्धेभवागुरी ॥ पान्थेचन्ने ऽ धवपां
 सुशरधधिकमासके । वत्सदगमनिरशे ऽ कं सिंहस्थ ऽ मरमन्त्रशि ॥ विवाहमतयाप्रादिपुनहर्म्य
 गृहादिकम् । क्षीरविधापविद्यांचयन्नत परिवर्जयेत् ॥ लङ्ग — अतिचारगतोनीवस्तराशिनति
 चेत्युन । लुप्तसम्पत्सरोनेय सर्वकर्मवह्निहृत ॥ सुहृत्चिन्तामणी — योत्रात्यकुम्भेतरर्गात्
 चारगो नीपूर्वराशिगुहरेतियकत । तदाविलुप्तान्दशहातिनिन्दित शुभेपुरेवासुरनिम्नगाग्रते ॥
 अतिचारगतेगुरीतुवज्यादीन्याहवशिष्ट — अतिचारगतेनीववर्जयत्तदनतरम् । विवाहा-
 दिपुकार्येषु अष्टाविंशतिवासरान् । अयसिंहमकरस्थगुरुनिर्णय — सुहृत्चिन्तामणी —
 सिंहेगुरीसिंहलक्षेत्रिशामण ० ॥ मवादि० ॥ मषे ऽ कंसद० ॥ रसापूर्व० ॥ उक्तचम्योतिनि-
 चये रात्रमातंरवचिच — सिंहराशौतुसिंहान्नायदाभवतियापति । सर्वदेशेष्वेत्याशयो दम्पत्यो
 निवनप्रद ॥ विशेषमाहवशिष्ट — सिंहेसिंहाशक्तोव कलिगेगीडगुर्भरे । कालमृत्युरययोगो
 दम्पत्यानिधनप्रद ॥ देशविभागमाहवशिष्ट — विवाहोदक्षिणेकृते गोतम्यानेतरत्रतु । भागी
 रथ्युत्तरेकृते गौतम्यादक्षिणेतथा ॥ विवाहोत्रतवग्थ सिंहस्थेष्वनदुष्यति । मृगश्रसस्थिते

जीव मध्यदेशकरवटः ॥ मृत्युयोगोमृत्युदः स्याद्वपत्योः पञ्चवर्षतः ॥ अथमागीरथीगौतम्यी
 मध्यप्रदेशे, ज्योतिर्निघन्त्रे—सिंहगतेमुरमन्त्रिण्णन्या मपगततपनेपरिणीता । भूपणरत्न
 युताचशुशोला, सत्यवती, सुतकीर्तिममता ॥ मकरस्थगुणनिर्णयः—तदुक्तं लालेन—नर्मदा
 पूर्वभागे तुसोणस्योत्तरदक्षिणे । गरुडक्या, पश्चिमभागे मकरस्थोनदीपभाक् ॥ अर्थादन्यदेशेषु
 निषिद्धः ॥ उक्तञ्चैवज्ञानदीहरे—नामयोगीश्वरेशैच सिन्धुदेशैचकांक्षणे । प्रतंबूडविवाहं च
 वर्जयेन्मकरं गुरी ॥ व्यवहारचण्डेश्वरेतुविशेषः—नीचराशिगतोजीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु ।
 नीचांशगतस्त्वयाज्यो यस्मादंशेषुनीचता ॥ वामनपुराणे—धापीकूपतडागादिनिषिद्धं सिंहो
 गुरी । मकरस्थे ऽ पितरकार्यनदीपः काललोपतः ॥ काललोपीकालनिषेधः महहनास्ति, निषेध
 वायस्यश्वेशपरत्वाद्दशपरत्वाच्चेतिभावः । सर्वत्रगुरुवलाभांशौनकोक्ताः शान्तिः कायां, साचमया
 प्रयोगेनेत्तनोया, दानशान्तिपरिशिष्टेऽष्टव्या ॥ अथविवाहमासाः मुहूर्तेचिन्तामणौ—मिथुन
 कुम्भमृगालिङ्गाजगमिथुनगे ऽ पिरवीत्रिलवैशुचेः । अलिमृगाजगते करपोढनंभवति कार्तिकपीप
 मनुष्ये ॥ मिथुनेस्त्रिवेत्सूयं ऽ पिशुचेरापाढस्यत्रिलनेत्रितोयाशे आपाडशुक्रप्रतिपदारभ्य
 दशमीपर्यन्तं करपीडनं विवाहो भवति । तदुक्तं केशवाक्रेण—प्रायः सौरमानमिष्टविवाहे
 तत्किञ्चान्द्रमानमाहु भूलेन । तस्मान्प्रसम्भ्रूतत्कालसिस्तदैवये सौरोमास, केवल, किञ्चिद्वनः ॥
 कश्यपादिभिः भौराएवमासा रक्ताः तेषांच प्राशस्त्वमूचिवाहादौ स्त्वतः सौरोयज्ञादौ सावनोमतः ।
 नारदः— माघ-फल्गुन, वैशाख, जेष्ठमासाः शुभावहाः ॥ कार्तिको मागशीर्षश्च मध्यमीनिन्दि-
 ता परं ॥ पीपे ऽ पिकुर्वाण्मकरस्थिते ऽ के चैत्रभस्मेपगतोयदाम्यात । प्रशस्तमापादकृतं
 त्रिहाहवदन्तिगमा मिथुनदिवते ऽ के ॥ माघमासितथाश्वेष्टेक्षौरं परिणयं व्रतम् । श्वेष्टुत्रदुहितो
 स्तुयन्नेनपरिवर्जयेत् ॥ जन्ममासजन्मदिनवर्ज्यमूरत्तप्रकाशे—जन्मक्षेत्रजन्मदिवतेजन्ममासे
 शुभं न्यजेत् ॥ राजमातंडे—जातंदिनं दूषयन्नेवशिष्टोक्षष्टीचमगांनियतं दर्शात् ॥ जातश्चपदं
 त्रिलभासुरिधनेषा प्रशस्ताः खलुजन्ममासि ॥ जन्ममासतथोमेच विपरीतदलेसति । कार्यं
 गत्रतमिन्याहुर्गर्भभार्गवशोदयाः ॥ पराशरस्मृतं, विशेषः—श्वेष्टस्यश्वेष्टकन्यायाः विवाहो
 गप्रशस्यते । तयोः न्यतरेश्वेष्टं दुषेष्टोमास, प्रशस्यते ॥ द्वौ श्वेष्टीमन्यमौ प्रोक्तावेत्तदुषेष्टं शुभावहम्
 श्वेष्टप्रयंनसुवाविवाहाद्येवगम्मतम् ॥ (त्रिपुत्रिपूतगदिपु १, ७॥) (स्यात्तौमृगशिरसि
 रौहिण्यम् ॥ ८, १) नक्षत्रनिवममाहसूत्रारः—उत्तराआदिद्विं पातन्नुत्तरादनिनेषु कतिपु
 । त्रिपुत्रि । तथापि—उत्तराफाल्गुनीहस्तचित्राश्रित्रीणि । उत्तरापाढ धरण्यधियाश्रित्रीणि ।
 उत्तराभ द्रपदार्येयदिव्यदतित्रीणि । स्यात्तौमृगशिरसिरोहिकर्षासा । एतेषां नक्षत्राणामन्यतमे
 र्गम् ॥ उत्तान्गुः तंचिन्तामणौ—निबंधः शशिकरमूलमेवपि न्यासाया ह्योत्तरपवमेशुभी

विवाहः । रिक्तामपहिततिथीशुभेद्विवैरप्रस्त्याग्निधुतिविधिभागती ऽ भिजितस्यात् ॥ तिथि
 पथ्यमाहवशिष्टः—शुक्रद्वितीयादित एव कृष्णेपक्षेदशम्यन्तगताः प्रशस्ताः वाराः प्रशस्ताः शुभमे
 चराणास्यर्याकंवारीखलुमध्यमीती ॥ त्याज्यः सदाभूमिसुतस्यवारः कामार्कतिथ्योरपिती
 प्रदावी । वैधमाहनारदः—तीर्थकूपवोर्धगाः पत्ररेवेद्वेद्वेचकोणयोः । द्वितीयशम्भुकोणे ऽ
 गिर्नाधिपथ्यचक्रेचविन्यमेत् ॥ भान्यतः साभिजित्येकैरेत्काणेचविद्धर्मम् । पत्रशलकाचक्रे एक
 रेसास्थितेनविद्धम् ॥ क्रूरैर्विध्वंसर्वधिप्रायेविवर्ष्यतांम्यैर्विध्वं नासिलंदोपएव ॥ क्रूराकान्तादि
 नत्तत्रदोपमाहसापवादम्—अद्याणिकूरविध्वानिकूरमुक्तादिकानिच । भुक्त्वास्वन्द्रेणमुक्तानि
 शुभाहाणिप्रचक्षते । उक्तंचनारदेन—ग्रहणात्पातभंत्वायं मङ्गलेपुष्पानुत्तयम् । यावन्नरिणा
 भुक्त्वा भुक्तंद्भवकाष्टयन् ॥ लतादीपमाह—राहुपुष्पं दुमिताः स्वपृष्ठंभंसप्तगोजातिशरै
 र्मितं हि । संलक्षयंतै करानीज्यभीमाः सर्वाष्टतकाग्निमित्तपुरस्तात् ॥ पातदोपमाह—हर्षण
 वैद्युति साय्य व्यतीपात गण्डशूलयांगानाम् । अन्ते यज्ञचक्रं पातेन निपातितं स्यात् ।
 राजमार्तण्डे—राहुप्रस्ते तथा युद्धे पितृणां प्राणमंशये । अतिप्रोक्ष च या कन्या चन्द्रलान-
 वलेनतु ॥ यद्वा तदा सुरादि विवाह विषयम् । तथा च गृह्यपरिशिष्टं—धर्म्यं
 विवाहेषु कालवरीक्षणम्, नाधर्म्यं । नारद...यात्राया शुभकार्येषु घातचन्द्रं विवर्जयेत् ॥
 ज्योतिर्निवन्धे—विवाह चीलव्रतवन्धयज्ञे महाभिषेके च तथैव राज्ञाम् । सीमन्तयात्रासु
 तथैव जाते नीचिन्तनीयः खलुघातचन्द्रः ॥ अकालवृष्टि लललेनोक्तम्—पीपादिचतुरोमा-
 सान् प्रोक्ताष्टिरकालज्ञा । निघातिक्षिति चलने ग्रहयुद्धेराहुदर्शनेचैव ॥ आपंचदिनात्कन्या
 परिणीता नाशमुपयाति । उल्कापातेन्द्रचाप प्रवलपनरजोभूमनिघातविशूद्रदृष्टिप्रत्यकर्दोपादिषु
 सकलवृधैस्त्राय्यमैरैकरान्त्रम् ॥ दु स्वप्ने दुर्निमिते ह्यशुभतरदशे दुर्मनोभ्रान्तयुद्धैः, चीले-
 मोंजीनिकने परिणयनविधी सर्वदा त्याजमेव ॥ संक्रान्तिदोपमाह ज्योतिःप्रकाशे—
 अवाक शोडशनाप्य संक्रान्तेः पुण्यदापरतः । उपनयन व्रतयात्रापरिणयनादीविवर्ज्यास्ताः ॥
 गर्गः—दिग्दाहे दिन मेरुचण्डहे सप्तदिनाणि च । यज्ञपाते चैकदिनं वर्जयेत्सर्वकर्मसु ॥ दर्श-
 नादर्शनाद्राहुवेत्तोः सप्तदिनं लजेत् । यावत्केतूद्गमस्तावदशुभः समयोभवेत् ॥ अद्भुत-
 सागरे अस्यापवादमाह—अथयदि दिवसत्रयमध्ये सृदुपानीयं सदा भवति । उरपातदोप-
 शमनं तदैवश प्राहुराक्षाण्याः सम्बन्धतत्पेच भूकम्पादेर्नंदोरोऽस्ति वृद्धिभाधे कृतेगति ॥
 अथातः प्रतिकूलादिनिर्णयमाह—मेवातिथिः—बध्व्वरार्थं घटिते सुनिधिने वरस्यगेह-
 प्यधरुण्यकाया । मृत्युर्यद्विस्थान्मनुजस्यकस्यचित्तदानकार्यं खलुमंगलंबुधैः ॥ मंगलेविवाहः ।
 इतिचन्द्रिकायाग्—कृतेनुधिधोपथान्मृत्युर्भक्ति कस्यपि । तदानीं मंगले कार्येनारी

वैधव्यदं भुवम् ॥ भृशु — वाग्दानानन्तरं यत्र कुलयोः पत्यनिगृह्णति । तदोद्धारानैवकार्यः स्वर्गशास्त्रयोः ॥ **शौनहः**—वरमभ्योः पितामाता पितृव्यश्च सहोदरः । एतेषां प्रति-कूलं हि महाविघ्नप्रदं भवेत् ॥ पितापितामहश्चैव माताचैव पितामहो । पितृव्य स्त्रीगुतोभ्राता भगिनीचाविवाहिता ॥ एभिरप्रविपन्नैश्च प्रतिकूलं युधे स्मृतम् । अन्यैरपि विपन्नैस्तु केचिद्-चुर्नतद्भवेत् ॥ **स्मृतिरलायल्याम्**—पितुरस्यमशौचव्याप्तादर्धमातुरेवच । मासत्रयंतु भाया-यास्तदर्धं भ्रातृपुत्रयोः ॥ अन्येषांतु सपिडानामाशीचं मागभीरितम् । तदन्ते शान्तिकं कृत्वा ततोत्तमंविधीयते ॥ **ज्योति प्रकाशे**—प्रतिमूलंऽपि कर्तव्यो विवाहोमागतः पर । शान्ति विधाययादत्त्वा वाग्दानादिचरेत्पुन ॥ शान्तिरत्नेविनायकशान्ति । तथाचमेधातिथिः— संकटे सममुप्राप्ते याज्ञवल्केन योगिना । शान्तिहस्ता गणेशस्य कृत्या तांशुभमाचरेत् ॥ **ज्योति सागरेऽपि**—दुर्भिक्षराष्ट्रभंगे च पित्रोर्वाप्राणसंसये । प्रोक्ष्यामपि वन्यायां नातुकूल्यं प्रतोचयेत् ॥ **मेधातिथि**—पुरुषत्रयपर्यन्तं प्रतिकूलं स्वर्गोत्तिष्ठाम् । प्रवेशनिर्गमस्तद्गतथा मुण्डनमंडन ॥ प्रेतकर्मण्यनिर्वर्त्य चरनाभ्युदयक्रियाम् । आचतुर्थतत पुंसि पचये शुभदं भवेत् ॥ **मासिकविषये शाब्दायनि**—प्रेतश्राद्धानि सर्वाणि सपिडोत्तरं तथा । अप-कृप्यापि कुर्वीत कतुनान्दोमुग्धद्विज ॥ मामिक कुम्भदानानि चापकृष्येति कृत्वा ततो नान्दी-प्रादं कुर्यात् ॥ **वृध्यभावे अपकर्षेदोषमाहोशनाः**—वृद्धिश्राद्धविहीनस्तुप्रेतश्राद्धानियश्चरेत् सप्राद्धानरक्षेधोरेपितृभि सहमज्जति । **अप्रविशेर्ष**—अथ माता पिता पितृव्यश्च सहोदरश्च पितामहश्चैव पितामहोच पितृव्यपत्नी सुतवान्धवश्च । अन्वृद्धित स्वसूतरोऽपि करिचन्मृतो महाविघ्नकरोभवेत्स । संवत्सरानन्तरमेवकार्याजातेविवाह प्रतिकूलवेत्तु । पितुर्जनन्या स्वसु-तस्यमातु भ्रातु सुतस्येतरगोत्रजस्य । वर्षतदर्धमाधैकमास क्रमश्चमासम् । हिरवागणेशस्यच शान्तिमादीकृत्वा विवाहं प्रकरोत्यद्वा । ततोपिकृते समुपस्थितेतु मासोत्तरशान्तिपुर सरंच । करोतुत्तमं दशराष्ट्रभंगे पित्रोर्मृते कालउपागतेच । वन्यातिकालं समुपस्थितेवासुतासपिण्डीहरणोत्तरंतत । लग्नमितिशेष शान्तिस्तु सर्वत्र स्वर्गोत्तिष्ठान्तु त्रिपुरुषान्तं प्रतिकूलमेतत् । **अथ मंग-लेमातूरजसि**—वधवावरस्यवा मातूरजोदोते ह्युपस्थित विवाहो नैवकर्तव्यो व्रतवन्नेसमीति-तम् । प्रारम्भात्प्राग्विवाहस्य यदिमाता रजस्वला । निवृत्तिस्तस्यकर्तव्या सहत्वश्रुतिचोदनात् । विवाहव्रतचूडास्तु माता यदि रजस्वला तदानमगतार्थांशुभेऽप्युभि । **मेधातिथि**—चौलव व्रतवन्धेच विवाहेयज्ञकर्मणि भायांरजस्वला यस्य प्रायस्तस्यनशोभनम् । **वृहस्पति** वैधव्यच विवाहेस्याजडत्वं व्रतवन्ने । चूडायाच शिशामृत्यु विघ्नयात्राप्रवशयो आभ्युदयिक आदीत्तरंतु कपर्दिकारिकास्तु विशेष — सृतिकोदनयो शुद्धै गार्ध्याधोमपूर्वकम् प्राप्ते

कर्मणि शुद्धिः स्यादितरस्मिन्नशुद्धति ॥ आलभेत्सुहृतेस्य रजोदोषं गंगते । श्रियंसम्पूज्य
 तत्कृत्यां त्पाणिग्रहणमंगलम् । हेर्मापमितापद्मां श्रीशूक्तविधिनार्चयेत् । प्रात्यृचं पायसंहुत्वा
 अभिषेकसमाचरेत् । इति अथ कन्या विवाहकालेऽनुमतीचेत्तत्र यज्ञपाशयै—विवाहे
 विततेतंत्रे होमकालेऽपस्थिते । कन्यामृतमतीं दृष्ट्वा कथं कुर्वन्तियाक्षिकाः स्नापयित्वा तुतां
 कन्यामर्चयित्वा यथाविधिः । युंजानामाहुतिदत्त्वा ततः कर्मणियोजयेत् । युंजानः प्रथमम् ।
 इत्पनेनमंत्रेणाहुतिहुत्वैत्यर्थः अथवा—पितामृतःस्वपुत्र्यास्तुगणयेदादितः सुधीः । दद्यात्त-
 द्दतुसंख्यागाः शक्तः कन्या पिता यदि । दातव्येकापिनिः स्वेनदानेतरयथा विधि ॥ अथ
 विवाहे आशीचनिर्णयः—विधिवत्कृतंकन्यावरणे त्रिरात्रादि मतसमाप्तिपर्यन्तम्, मध्ये
 आशीच प्राप्तीतदपोशसद्यः शीचचन्द्रिकाकार आह—दाने विवाहेयज्ञेच संप्राप्ते देशविप्लवे
 आपयद्यपिच काष्ठायांसयः शीचंविधीयतेदानुर्चरभ्यकन्यायाश्चसद्यः शीचमाहृहृस्पतिः—
 विवाहोत्सवयज्ञेषु त्वन्तरामृतशूक्ते । पूर्वसंकल्पिताथंपुनदोषः परिकीर्तितः । पट्टंशिश्रमते-
 व्रतयज्ञविवाहेपुधाध्ये होमोऽर्चनेऽपे । प्रारब्धेसूतकंनस्यादनारब्धेतुं सूतकम् । प्रारम्भश्चतं
 नैवोक्तः—प्रारम्भोवरणयज्ञे संकल्पो व्रतसधयोः नान्दीमुखं विवाहादौ धादेपाकपरिक्रिया ।
 परणमितिमधुपर्कपरम् उक्तं च ब्राह्मे—गृहीतमधुपर्केऽथ यजमानाच्च ऋत्विजः पश्चादशीचि
 पतितेनभवेदिति निश्चयः मधुपर्कात्तु पूर्वभवत्येव । इति रामांडारभाष्ये नान्दीमुखविधि
 रचावश्यकत्वेऽधिकउक्तः एकविंशत्यहयज्ञे विवाहेदशाबासराः त्रिषट्चीलोपनयने नान्दीधाध्दं
 विधीयते नान्दीधादमिदं चोद्वाहे पिता कुर्यात् द्वितीयादौ वर एव
 तथा च स्मृतौ—नान्दीधादे पिता कुर्यादाद्ये पाणिग्रहे पुनः । अतउर्ध्वं
 प्रकुर्यात् स्वयमेवतु नान्दिकम् ॥ पितुरभादे—अगंस्कृतास्तु संस्कारां भ्रातृभिः
 पूर्वसंस्कृतः ॥ कन्यागृहे—इत्थं बधूपिता कृत्योद्वाहारम्भनिमित्तकम् । नान्दीधाध्दं त्रयंकुर्या-
 त्स्मिन्नहनिर्गयत् ॥ (तिस्रोब्राह्मणस्य वर्णानुपूर्व्येण ॥६॥) (द्वेराजन्यस्य ॥१०॥
 (एकावैश्यस्य ॥११॥) ब्राह्मणस्य द्विजाग्न्यस्य वर्णानुपूर्व्येण वर्षक्रमेण तिस्रः—ब्राह्मणी,
 क्षत्रिया, वैश्या, विद्याया भवन्ति । द्वेक्षत्रिय वैश्य राजनस्य विवाद्ये भवतः । एकावैश्यैव
 विवाह्या भवति ॥ वर्णानुपूर्व्यग्रहणात् स्युत्कर्मोनिपिजः ॥ (सर्वेषांशुश्रद्धाध्येके मन्त्र
 चर्ज्यम् ॥१२॥) ब्राह्मणक्षत्रियविशां श्रद्धाध्येके विवाद्यां मन्त्यन् ॥ तत्रविशेषः—मन्त्रवर्ज्यं
 मंत्ररहितं यथा भवति तथा । अत्रद्विजातीनामपि श्रद्धापरिणयने आचार्येण मंत्रवत्क्रिया
 निषेधात् । अतः—श्रद्धस्य श्रद्धापरिणयने मंत्रवत्क्रियानास्ति किन्तु मंत्ररहितंक्रियामात्र-
 मितिगम्यते । ततश्च श्रद्धस्य श्रद्धापरिणयने यन्मंत्रवन्दोमादि कर्मकुर्वन्ति तदशास्त्रीयम् ॥

एतेन मन्यन्ते शूद्राविवाहम् । कुत — शूद्रायाधर्मतायप्यनधिकारात् । कुतोऽपि नार इति चेत्—
 रामारमण्याद्यौपयन्ते न धर्माय, कृष्णजातीया । इति निरुक्तवार यारराचार्यवचनात् ॥
 अतोरसणार्थं शूद्रापरिणयनपक्ष ॥ एवमिति एवमागदीक्षागन तरम् । शग्निचित्वाप्रभग
 नरामामुपेयात् ॥ २११ निपर उपपद्यो । प्राप्तेति प्रतिषेधनिषेध । यदि रत्नागस्याधदा
 अग्निचित कथ तत् प्रथमगगन प्रतिषिध्यते । तन्मा शूद्रापरिणयनं भोगार्थमिच्छया कुर्वती न
 शास्त्रातिमम् ॥ धर्मप्रजारत्नवाहि विवाह । इत्युद्वाहादिनिर्णय — कन्याद्वयैर्नरराय-
 द्याद्भ्रातृर्द्वयोश्चापि न कन्यथे द्वे । नर्ये तयैवोद्भवद्वेभितान तयैकदा मु उन्नतद्वयस्यात् ॥
 यथा रामदत्त सुताहरिदत्त पुत्राय दीयो । हरिदत्तमुता रामदत्तपुत्राय दीयते । एवमिया
 विवाह सर्वपणानामशुभप्रदो भवति ॥ अथेनांवात् परिधापयति (जरांगन्ध परिध
 स्त्र वासोभवाकृष्टीनामभिश्चस्ति प.वाशतंच जीवशरद सुवर्चरयिच पुत्रानमु-
 संव्ययस्त्रायुष्मतीर्द परिधस्त्रवास इति ॥१३॥) अयमिन् स्थापनानन्तर एतादुमारो-
 वात् अहत सदशंसस्त्र परिधापयति परिहितं कारयतिपर । जरांगन्ध इत्यादि मत्र पठित्वा
 कुमारी च स्वय परिधत्ते ॥ (अथोत्तरीयम्याङ्कृतन्मन्त्रयया अत्स्वन्, याश्च
 देवीस्नन्तूनमितो ततन्थ । तारत्वादेवी जंसे सव्ययस्त्रायुष्मन्तं च परिधस्त्रवास
 इति ॥१४॥) अथ चस्त्रपरिधानानन्तर उत्तरीयवाय “याश्चस्त्रत्, इत्यादिमत्रमुत्वा
 वर परिधापयति । परिधापयतीति शिञ्जन्तस्य कारितार्थत्वात् “परि र स्वयात्, इति मत्र
 स्वापितदर्थत्वात्परिधापयितान्य इत्यवगम्यते, सचात्रपर एवनाभ्यर्थु । स्मात्तपु कर्ममु
 अ यथा कर्तृत्वयोगाभावत् । अत्रपरोपि समाचाराद्रासनी परिधत्ते, ‘परिधास्ये,, “यशामा,
 इति मत्राभ्याम् ॥ (अथेनीसमजयति समजः पुविशेदेवा. मम.पोहृदयानिनी । संमा
 तरिश्वा सन्धाता समुदेष्टी दधातुनौ इति ।१५॥) अत्र चस्त्रपरिधानानन्तर “पर
 स्त्र समजयधाम्, इति पेषण ऋषिपिता एनीव्यूवरी समजयति सम्मुखीरुति ।
 अत्रविशेषमाह ऋष्यशृंगः—वरगोत्र समुच्चार्ये अथितामह पूर्व्वम् । नामसजोतयङ्गिद्वा
 न्नन्यायाश्चैवमवहि ॥ तत्रपर — समजन्तु विश्वदेवा,, इत्यादि मत्र कया
 सम्मुखीभूत पठति । अनोत्तरत पित्राद्भक्तम्, इति सूत्रदर्शनात् अत्रैव कन्यादानम्—तत्तुप
 द्रतीवक्ष्ये । पित्राप्रतामादाय गृहीत्वा निष्कामत्तिकरोत्वित्यसौ इति ।१६।) पित्रा
 जनकेनतदभावे वक्ष्यमाणे प्रतासन्प्यदत्तां यादायप्रतिग्रहविधिना पतिगृह्यगृहीत्वाहोतृना
 निष्कामति गृहमध्यामण्डपात्वाग्निं समीपम् तुम् यदैवैदिमनसा इत्यादिन मंत्राय ‘करोत्वमुक्त्वि
 वेत्ति,, इत्यनेन मंत्रपठत् । कन्यादाने पितुरभावे अन्वेषामप्यधिकारमाह यापय य पित्ता

पितामहो भ्रता सकुल्यो जननीतथा । कन्याप्रदः पूर्वनाशे प्रकृतिस्थ परः परः । नारदः—माता
 महो मातुलश्च सकुल्यो वान्धवस्तथा । तस्याम प्रकृतिस्थायां कन्यादद्युः स्त्रजातयः विशेषः
 पूर्वदृष्टव्योवादानप्रयोगे । (अर्थेनौसमीक्षयति अधोरचक्षुरपतिध्वेधि शिवापशुभ्यः
 सुमनाः सुवर्चाः । वीरसूदैवकामा स्योनाशंनोभव द्विपदेशं चतुष्पदे । १। सोमः
 प्रथमोत्विविदेगंधर्वो द्विविदउत्तरः । तृतीयोऽग्निष्ठे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः । २।
 सोमोऽद्दद्गंधर्वाय गंधर्वोऽद्दददग्नये । रयिश्चपुत्रांप्रचाद्वाग्नि मेहामयो
 इमाम् । ३। मानः पूषाशिवतमामैरयस्तानऽऊरूउशतीविहर । यस्यामुशन्तः प्रहराम
 शेपं यस्यामुकामावहवो निविष्टयाऽइति । ४। १७। अथ निष्कर्मणानन्तरं एनीमध्वरो
 गमीक्षाम् प्रैषेणकन्या पिता समीक्षयति समीक्षणंकारयति । तत्र समीक्षमाणोवरः “अधोर
 चक्षुः”, इत्यादीश्चतुरो मंत्रान्यठति । इति चतुर्थं कंडिकासमाप्ता । (प्रदक्षिणमग्निं
 पर्याशीमकै । १।) एकै आचार्याः अग्नेः प्रदक्षिणं फारयित्वावास परिधानं समंजनं समीक्षणं
 च मन्यन्ते । एकै न मन्यन्ते ततो विकल्पः । (पश्चादग्नेस्तेजनीं कटंवा दक्षिणपादेन
 प्रवृत्योपविशति ॥२॥ समीक्षणानन्तरं अग्निं प्रदक्षिणोक्त्य अग्नेः पश्चिमतः प्राटुमुल
 उपविशति स्मृत्यन्तराद्वरस्य दक्षिणतः कन्या उपविशति । सावधू दक्षिणपादेन तेजनीं तृण-
 प्लिकं कटं तृणमयंस्तं (चटाई) वा प्रवृत्यप्रकृत्य उल्लेख्यउभयोः संस्कार्यत्वात्सर्वरोवा ।
 (अन्वारस्थ आघारावाज्यभागौ महाव्याहृतयः सर्वप्रायश्चित्तं प्रजापत्य ५। स्वि-
 ष्टकृच्च । ३।) अत्रवैवाहिक होमप्रसंगेन सर्वकर्मसाधारणी परिभाषां करोत्याचार्यः, “अन्वा-
 रत्न इति पूर्ववत्कर्तव्यः । (पत्तश्रित्य टं० सर्वत्र । ३।) एतदाघारादिस्विष्ट कृद्वसानं
 सर्वत्रयप्रयत्नं होमस्तत्रभवति । यत्रहोमाभावस्तत्रनास्ति यथा सस्तरारोहणलागलयोजनं
 पापमन्त्राक्षणभोजनेषु । (प्राङ् महाव्याहृतिभ्यः स्विष्टकृदन्यञ्चेदाव्यादविः ॥३॥
 महाव्याहृतिभ्यः प्राक् पूर्वं स्विष्टकृद्यागोभवति चेददिआव्यात्मकाशादन्यदपि चरुप्रभृति हवि-
 र्भवति । केवलाय्यभागे सकाहुति शेषे भवति । सर्वप्रायश्चित्तं प्राजापत्यान्तरमेतदावा-
 पस्यानविवाहे । ६।) “त्वन्नोअग्ने, सत्वन्नोअग्ने “अयाश्चामे,, “येतेशतम्,, “उदुत्तमम्,
 इत्याहुति पंचकं सर्वप्रायश्चित्तम् । प्राजापत्य. प्राजापत्याहुति एतयोर्नन्तरं विवाहेआवापस्थानं
 आवापश्च अन्यत्र विहितस्य होमस्यजपादे. कर्मणः कर्मान्तर प्रक्षेपः आवापस्य आगन्तुक
 न्तेनश्नन्तेनिशेयुक्तः न्यायात्तन्निवृत्त्यर्थे (राष्ट्रवृत् इच्छंजयाभ्यासानांश्चजानन् ॥७॥)
 (येनकर्मणोत्सर्वद्वितिवचनात् ॥८॥) विवाहे वैवाहिकहोमकर्मणि राष्ट्रसंज्ञका । आहुती.

आपपेदित्यप्याहार । जयाभ्यातानांश्च आपपेत् त्रिकुर्नश्च्यन् राष्ट्रभृजयाभ्यातानानां होम-
 फल कामायन् किप्रमाणमितिषेद् । धेनवमंशा अस्मिन्कर्मणि ओप्यतेननयत्फलं भयतीति
 जानन्विदन् तरस्मिन्कर्मणि तस्मिन्कर्मणि तत्कर्म आपपेदिति पचनात् ध्रुतेरित्यर्थं तत्र
 राष्ट्रभृतो यथा श्रुतापादृतधामाग्निर्गन्धर्व इत्यादिद्वादशमंत्रा राष्ट्रभृत्संज्ञका तां प्रयोगेपद्ये ।
 (चित्तंचचित्तिश्चाकृतं चाकृतिश्चविज्ञातंच विज्ञातिश्च मनश्चशुक्करीश्च
 दर्शश्च पौर्णमासंच वृहच्चरथन्तरं च प्रजापतिर्जयान्द्राय वृष्णे प्रायच्छद्रुद्र-
 पृतनाजयेषु । तस्मैविश समनमःतसर्वा स उग्र. स इहव्योवभूव स्याहा इति । १।
 ऐतन्नयोदशमंत्रा जयाइत्युच्यन्ते । चित्तंचित्तयेपमादीनांपदनां चतुर्थ्यन्तानां वैचिदित्यन्ति तदस-
 म्मतम् । कृतं नखेतानि देयतापदानि किन्तु मन्त्राएतेमंत्राश्चएते यथाग्नातएष प्रयुज्यन्ते
 (अग्निर्भूत, नामधिपति समाऽवतिन्द्रो ज्येष्ठानाम् । यम पृथिव्या वायुरन्तरिक्ष-
 स्य, सूर्यो दिव, चन्द्रमानसत्राणाम्, वृहस्पतिर्ब्रह्मणोमित्र सत्यानाम्, वरुणोऽ
 पा ँ साम्राज्यानामधिपतिस्तन्माप्रतु सोमचोपधीना ँ सविताप्रासवाना, ँ,
 रुद्र, पशूनाम्, त्वष्टारूपाणाम्, विष्णु पर्वतानाम् मरुतो गणानाम् अधिपतयस्ते
 मान्नुपितरः पितामहा परेवरैततास्तमहाः इह भावन्त्वस्मिन्प्रलययस्मिन् क्षत्रे
 ऽस्थामा शिष्यस्याम् पुरो गायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहृत्या ँ स्याहेति सर्वत्रानु-
 पजति । २०।) अग्निर्भूतानामित्यादिपुपितर पिता महा. इत्येतेष्वष्टादशसु मंत्रेषुप्रतिमंत्रं
 यथातिम यथावचनं समावत्त्वित्यादि देवहृत्या ँ स्याहेत्यन्त वाक्यैकदेशं अनुपजति सयुनक्ति
 तन्चपद्धतो प्रदर्शयिष्यामि । अग्निरैतुप्रथमोदेवताना ँ सोऽर्यैप्रजां मुंचतु सृत्युपशात्
 तद्यथैराजा वरुणोऽनुमन्यतांयथेयथैर्ह्यौ पौत्रमघचरोदात्स्याहा । १। इमामग्निस्त्रा-
 यतां गार्हपत्य प्रजामस्यैनयतुदीर्घमायु अश-योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमा-
 नन्दममि विवृष्यतामिय ँ स्याहा २ स्वस्तिनो अग्नेदिव आपृथिव्या विश्वानि
 धेह्यथायजत्र । यदस्यांमहिदिविजातं प्रशस्ततदस्मासुद्रविण धेह्विचित्र ँ स्या०
 १३। सुगन्धप्रभ्यां प्रदिशन्नर्हि ज्योतिष्मज्जेह्यजरन्नमायु अपैतुश्च्युरमृतत्र आगाङ्गै-
 वस्वतो नोभ्रमर्षं कृणोतु स्वाहा ॥ ३॥ इति । ११। परमृत्यावित्तिचैके प्राशानान्ते ॥ ३॥
 १२।) अग्निरैतु इत्यादिक परमृत्योरित्यन्ता पचमंत्रा परमृत्यवित्तिच जुहुयात् । एके
 आचाया परमृत्यविति एतामाहुतिं प्राशानान्ते सध्रव प्राशानान्ते जुहुयादिति च्युन्ति । अत्रोद-
 वस्वरा इति पचमी कडिका (कुमार्या भ्राता शमीपलाशमिथो ज्ञाजान
 जलिनाजलाचोवपति ॥ १ ॥ कुमार्या कन्याया भ्राताशमीपलाशमिथान् शमीपत्र-

युक्तान् लाजान् भ्रष्टानि धान्यानि अञ्जलिना कृत्वा कन्यायाः अञ्जली आवपति ॥ (तान् जुहोति स ँ हतेन तिष्ठति ॥ अर्घ्यमणं देवं कन्याग्निमयक्षत । सनोऽं अर्घ्यमादेवः प्रेतोमुच्यते मापतेः स्वाहा ॥२॥ इयंनार्युपव्रूते लाजानावपत्तिका । आंयुष्मानस्तुमेपतिरेधन्तां सातयो मम स्वाहा ॥२॥ इमांल्लाजानावपाङ्गनी समृद्धिकरणंतव । गमत्तुभ्यंच संवन्तं तदग्निरनुमन्यता मियं ँ स्वाहा ॥३॥ तान् अञ्जलित्याजान् लाजान् तिष्ठंतीऊर्वा स ँ हतेन मिलितेन अञ्जलिनाजुहोति विवाहाग्नौ प्रक्षिपति, तत्रैकैकेन मंत्रेण हस्तप्रक्षिप्तलाजानां तृतीयांशं तृतीयांशं जुहोति । अर्घ्यमणं देवमित्यादि प्रथमम् इयंनार्युपव्रूते, इत्यादि द्विइमांल्लाजानां इत्यादि तृ० (अथास्यै दक्षिणं हस्तं गृह्णाति सांगुष्ठम् । गृह्णामिते सौभगाय हस्तं मयापत्या जल्पिष्यथाऽऽसः । भगोर्यमासविता पुरधर्महंरा दुर्गाहंपत्याय देवाः ॥ अमोहमस्मि सात्व ँ सात्वमस्यमौऽहम् । सांसाहमस्मि ऋक्त्वं चौरहं पृथिवीत्वम् ॥ तावेवविद्यद्वावहै सहरेतोदधावहै, प्रजां प्रजनेयावहै पुत्रान् विन्द्यावहै वहन् ते सन्तु जरदृष्टयः संप्रियो रोचिष्यं सुमेदस्यमानौ पश्येम शरदः शतं जीवेमशरदः शतं ँ शृणुयाम शरदः शतमिति ॥३॥६॥) अथलाजाहोमानन्तरम्—अस्यै अस्याः (आर्षत्वादपष्ठधंचतुर्वा) कुमायाः दक्षिणं सांगुष्ठप्रहितं हस्तं गृह्णाति वरः स्वहस्तेनादत्ते ॥ गृह्णामिते इत्यादि शरदः शतमिति यावत् पठित्वा (इति पञ्जीकंडिका) ॥ (अथैनामशमानमारोहयत्पुरतोऽग्नेर्दक्षिणपादेन—आरोहेममशमानमश्मेव त्व ँ० स्विरामव । अभितिष्ठ पृतन्वतोऽथगभ्रस्वपृतम्यतः इति ॥१॥) अथ पाणिग्रहणानन्तरं एनायभूं अशमानं हृदयं उत्तरतोऽग्नेर्द्विगणं दक्षिणपादेन कृत्वा आरोहयति, आरोहेम इत्यादि पृतनायत्त इत्यादि मंत्रेणा गत्वोभावुत्तरेणाग्निं तस्याः सन्धेत्तरं करम् सन्धेनादाय हस्तेन वधूपार्दंतु दक्षिणं शिलामारोहयेदग्रागायतं दक्षिणपाणिना । मंत्रपाठश्च वरस्य न कुमायाः (अथ गायां गायति—सरस्वति प्रेदमत्र सुभगे प्राजिनीयती । यांत्वाविश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः । यस्यांभूतं ँ समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत् । तामद्य गाथां गास्यामि यास्त्रीणामुत्तमं यथाः इति ॥२॥) अशमारोहणानन्तरं सरस्वति इत्यादि उत्तमं यथाः इत्यन्तां गाथां गायति ॥ (अथ परिक्रामतः—तुभ्यमग्रेपरिवहन्सूर्यावहतुनासह । पुनः पतिभ्योजार्यां दाग्ने प्रजया सहेति ॥३॥ धधूषरी अग्नेः परिक्रमणं कुरुतः । (एवं द्विरपरं लाजादि ॥४॥) एवमुक्तप्रकारेण द्विःवारद्वयमपरं पुनरपि लाजादि कुमायां प्रातेरथारभ्य परिक्रमणान्तं कर्मभवति । एवं

भिस्तिष्ठति. ऋग्भिः अग्निर्विचति चकारादनुपच्यते । (अथैना ऽ सूर्य-
मुदीक्षयति तच्चक्षुरिति ॥७॥) अथभिषंकादुपरि सूर्यं मुदीक्षयत्येति प्रपेण सूर्य एनां
वधूं वरः उदीक्षयति, सूर्यस्य निरीक्षणं कारयतीत्यर्थः साचवरप्रेविता सती-तच्चक्षुरित्यादि
मंत्रेण स्वयं पठितेन सूर्यं निरीक्षते दिवाविवाह पक्षे इति हरिहरः । सूर्यांश्चक्षणान्यथाऽनुपपत्त्या
अस्तमिते ध्रुवं दर्शयति । इत्यत्रास्तमित महणाच पारस्करगृथानुसारिणां दिवैव विवाह
ह्युच्यते ॥ (अथास्यै दक्षिणां ११ समन्विहृदयमालभ्यते-ममप्रते हृदयं दधामि,
मम चित्त मनुचित्तंते अस्तु, मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिंऽवा नियुक्तु
महाम इति ॥ ८ ॥) आ सूर्यो दीक्षणान्तरं अस्यै इति पष्ठयथे चतुर्थी, अस्या वक्त्वा
दक्षिणसमधि दक्षिणस्य स्कन्धापरि हस्तवीरवा तस्या हृदयमालभतेवरः, स्पृशति-ममप्रतेति
मंत्रेण ॥ (अथैनामभिमंत्रयते-सुमङ्गलीरियं वधूरिमा ११ समेत पश्यत सौभाग्य-
मस्यैदत्त्वा याथास्तं त्रिपरेतन इति ॥९॥) अथ हृदयालम्भनान्तरं एनां वधूं वरोऽभि
मंत्रयते-सुमङ्गली रित्यादिना मंत्रेण ॥ अत्र शिष्टाचारात् “उत्तरत अथतनाहि स्त्री” उत्तर
शब्दो वामवचनः । इति श्रुतिलिगाच्च वधूंवरस्य वामभागे उपवेशयति । गदाधेर मतेतु-
अत्राचारः धनसः स्त्रियो मङ्गले कुर्वन्ति । उक्तंच कारिकायाम्—पतिपुत्रान्विता भव्या
धतसः सुमागाअपि । सीभाग्यमस्यै दद्युस्तां मङ्गलाचार पूर्वकम् ॥ (तां दृढ पुरुष
उन्मथ्य प्राग्बोदग्वाऽनुगुप्त अगार आनु उहरोहिते चर्मण्युपवेशयति इह गावो
निपीदन्ति हास्वा इह पूरुपाः । इहो सहस्रदक्षिणो यज्ञ इह पूपानिपीदतु इति
॥१०॥) ततस्तां वधूं दृढ पुरुष. बलवान् कत्रित्पुमानुन्मथ्य उत्थाप्य प्रर्वस्यां दिशि उदक्
उदीच्या या दिशि पूर्वकल्पिते अनुगुप्ते सर्वत. परिश्रुते आगारे, गृहे तत्र च पूर्वमास्तीर्थं
आनुडुहे आप्रभे रोहिते लोहितवर्णं चर्मणि, अग्निप्राग्ग्रीवे उत्तरलोमिन् उपवेशयति । इहगाव
इत्यादिना निपीदन्तिवति मंत्रस्य पाठान्ते केचन जामातैव दृढपुरुषमिलाहः ॥ ग्रामवचनंकुर्युः
॥११॥ अत्र विवाहे ग्रामशब्द वाच्यानां स्वकुलतृद्धानां स्त्रीणां शमशाने च वामयं कुर्युः ।
अंकेरार्पेण हरिद्राक्षतचन्दनादि धर्मप्रतिपादकम् ॥ (विवाह श्रमशानयो ग्रामं प्राविशता-
दिति वचनात् ॥ १२ ॥) (तस्मात्तयोर्ग्रामः प्रमाणमिति श्रुतेः ॥१३॥) विवाहे
शमशाने च स्वकुलतृद्धानां स्त्रीणां वचनं वामयं कुर्युः । यथा सूत्रेऽनुपविद्धमपि वधूंवरयो
मंगल सूत्रं (कङ्कणं) गले मालाधारणं वरागमने नासिकाभूषण धारणम् । कन्यादानान्तरं
अंचलमन्य धन्वनम् । कतिचिद्देशेषु छोलिकाभरणम्, न्यामोधपुटिका, सीभाम्पुटिकाधारणम् ।
वर हृदये दध्यादिलपनादि, ताश्चयस्मरन्ति तदपि कर्तव्यमित्यर्थः । च शब्दादेशाचारोऽपि,

ग्रामशब्देन स्वकुलवृद्धाः स्त्रियोऽभिधीयन्ते । ताहि पूर्वपुरुषैरनुष्ठीयमानं सदाचारं स्मरन्ति ।
 ग्रामवचनं लोकवचनं इति भर्तृययज्ञः । वृद्धानां स्त्रीणां वचनं कार्यं मिति कुत इत्यत आह-
 ग्राममिति धृतः ग्रामं वृद्धानां स्त्रीणामाचारं प्राविशतादिति स्मृति वचनात् ॥ आचार्याय वरं
 ददाति ॥१४॥ (गौर्माह्वणस्य वरः ॥१३॥) (ग्रामोराज्यन्यस्य ॥१६॥) (अश्वो
 वैश्यस्य ॥१७॥) ततो वर आचार्याय स्वकीयाय वरं ददाति । वरशब्दार्थं व्याख्यानं
 करोति । ब्राह्मणश्चैत्परिणेत तदा गां वरं ददाति, क्षत्रियश्चैद्वरस्तदा ग्रामं वरं ददाति,
 वैश्यश्चैद्वरस्तदाश्वं वरं ददाति । एते परा विवाहे एव प्रकरणात् ॥ (अधिरथ ११ शतं
 दुहितुमते ॥ १८ ॥) दुहितुमांश्च यस्य दुहितर एव न पुत्राः तस्मै दुहितुमते रथेनाधिकं
 गोशतं दत्त्वा तस्यवन्यामुद्वहेत् । मनुः—यस्यास्तु नभयेज्जातानविहायेत वा पिता ।
 नोपयच्छततां कन्यापुत्रिकधर्मशङ्कया ॥ (अस्तमिते धुवं दर्शयति—ध्रुवमसि ध्रुवंत्वा
 पश्यामि ध्रुवेधि षोऽथेमयि । (मह्यंत्वंदाद् बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती संजीव
 शब्दः शतमिति ॥१६॥) (सायदिन पश्येत्पश्यामीत्येव ब्रूयात् ॥२०॥) अस्तमिते
 सूर्यं बधूं ध्रुवसंज्ञकं नक्षत्रं दर्शयति । ध्रुवमसि—इत्यादिना मंत्रेण । सावधूः यद्विधुवंनेक्षत
 तथापि पश्यामीत्येवं वदेत् । नविपरीतम् । (त्रिरात्रंमक्षारालवणाश्विनोऽस्यातामधः
 शायीयाता १० संवत्सरंनमिथुनमुपेयाताम्, द्वादशरात्रं १० पञ्चरात्रं त्रिरात्रमन्ततः
 ॥२१॥) विवाह दिनमारभ्य त्रिरात्रं प्रीण्यहोरात्राणि अक्षर लक्षणाश्विनोऽस्याता भवेताम् ।
 अधः अस्तृतःभूमौन खट्वायां शयीयाता स्वपेताम् । संवत्सरं वर्षपर्यन्तम् । मिथुनं अभि-
 गमनं नोपयेताम्, नोपगच्छेयाताम् । अथवा द्वादशरात्रम्, अथवापञ्चरात्रम्, यद्वात्रिरात्रमन्ततः ।
 संवत्सरादिपक्षादि शक्ती त्रिरात्रपक्षाथयेऽपि चतुर्थी कर्मोन्तरं पञ्चमादि रात्राभिगमनम् ।
 चतुर्थी कर्मणः प्राक्तस्या भाव्यत्वमेव न संबृत्तं विवाहैक देशत्वाच्चतुर्थीकर्मणः इति सूत्रार्थः ॥
 ॥ इति विवाह सूत्रव्याख्या ॥

— . ० : —

अथ चतुर्थी कर्मसूत्रव्याख्या ॥

(चतुर्थ्यां मपररात्रंऽभ्यःततोऽग्निमुपसमाधाय । दक्षिणतो ब्रह्माणमुपवेश्यो-
 च्छरतः उद्पात्रं प्रतिष्ठाप्य स्थालीपाकं ० अथपित्वा आज्यमागाविष्ट्वाऽऽज्याहुति
 जुहोति ॥१॥) (अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्ते रसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽ

उपधावामि याऽस्यै प्रजापती तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा ॥६॥) (सूर्ये प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामियाऽस्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा ॥३॥) (चंद्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामियाऽस्यै गृहघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा ॥ ४ ॥) (गंधर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामियाऽस्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा ॥ ५ ॥) ॥ २ ॥ } चतुर्थ्या तिथी विवाहतिथिमारभ्य आपररात्रेः पश्चिमेयामेकान्यन्तरतः गृहस्यमध्ये अग्निं वैवाहिक-मुपसमाधाय पंचभूसंस्कारान्कृत्वा स्थापयित्वा दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तोर्यं तत्रपूर्ववद् ब्रह्माणमुपविश्य उत्तरत उदपात्रं प्रतिष्ठाप्य प्रणोतास्थानादुत्तरतो जलपूर्णं ताम्रादिपात्रं स्थापयित्वा, स्थालीपाकं च वंद्ययित्वा, आभ्यभागाविश्वेऽऽन्याहुतिर्जुहोति । आभ्येन “अग्ने प्रायश्चित्, इत्यादिभिः पंचभिर्मन्त्रैः पंचाहुती जुहोति, चतुर्थीकर्मणो विवाहांगत्वाद्बहिः शाल्या-माभूदित्वाभ्यंतरप्रदृष्टम् । स्थालीपाकस्य जुहोति प्रजापतये स्वाहा इति । १३ स्थालीपाकस्य चरोः प्रजापतये स्वाहा, इत्येकामाहुतिं जुहोति । (हुत्वाहुत्वैता सामाहुती मुदपात्रे स र्त्तं स्रवान् समवनीय अग्ने प्रायश्चित्तं — इत्यादीनां मंत्राणां प्रजापत्यन्तानांप्रणोतामाहुतीनां प्रत्येकं हुत्वा संस्रवान् हुतशेषान् उदपात्रे समवनीय प्रक्षिप्य (तत एनां मूर्धन्यभिषिचति यातेपतिघ्नी, प्रजाघ्नी, पशुघ्नी, गृहघ्नी, यशोघ्नी, निदितातनूजारघ्नी तत एनां करोतिसा जीयेत्वंमयासहासाविति । ४) तत स्तस्मादुदपात्रात् उदरमादाय एनां वधूं वरोमूर्धन्यभिषिचति यातेपतिघ्नी इत्यादिनामंत्रेण । अत्रैककतिचिद्देशेषु भार्यायाः पतिं स्वनामसंवर्धनामकरोति । यथा यज्ञदत्तमुन्दरी, असावित्यत्र वधूनामप्रदृष्टात् । (अथैनां ऽ स्थालीपाकं प्राशयति प्राशैस्तेप्राणः संस्रद्धाम्यात्सिधिमिरस्थीनिमा ऽ सर्मा ऽ सानित्वात्त्वचम् ॥५॥ अथाभिषेकानन्तरं एनां वधूं स्थालीपाकं च दशोपम् प्राशैस्ते, इत्यादिनाथरः प्राशयति । वधूं संस्कारोऽयं ननु द्रव्यप्रतिपत्तिः । अतो द्रव्यस्य नाशोपादाय न्यद्रव्येण प्राशनं कर्तव्यम् । तदुक्तं कारिकायाम्— वधूं संस्कार एवायं प्रतिपत्तिरियं ननु । अतो द्रव्यविनाशादी तुल्यन्ते प्रतिपत्तयः । अत्र समाचाराद्वरोऽपि द्विवासह भोजनं करोति । हेमाद्रीशालनः— एकयानसमारोह एकपात्रेच भोजनम् । विवाहे पश्चि यात्रायां कृत्वा विप्रोनदोपाभाक् । (तस्मादेवं विद्वोत्रियस्य दारेण नोपहासमिच्छेदुत-त्वेर्वावत्परो भवति । ६) यतोऽग्नेन च दशेपप्राशनकर्मणां भर्त्रासहैर्कर्मप्राप्तदारा स्तस्मातेषु वित्तुदपः धोत्रियस्य विदुषः दारेण भार्यायामह उपहासं मेद्युनं नैच्छेत् न कामयेत् हियस्मादेवं विदुषि धोत्रियस्य परशत्रुर्भवति इति चतुर्थीकर्म परिभाषा ।

* अथातो वरवध्वोर्गृहागमनपरिभाषा *

वरवध्वो कन्यागृहाद्वरगृहंयावत्प्रस्थानपरिभाषा । उक्तं च मानवगृहगृहेषु १ संख
 १३ (पुण्याहं सुदंके ११) युंजति प्रथममिति द्वाभ्यां युज्यमानमनुमं प्रयतीदक्षिण मधोत्तरम् ॥२॥
 (अहतेन याससादर्भं वारधं गमाष्टि ॥३॥) (अंकन्यं भावमितोरथं येष्वान्ता याता अग्नि-
 मभियेसंचरति । इरंहेति पतनी वाजिनीनांस्ते नोऽग्नय पप्रय पालयन्तु इति चक्रेऽभिमं प्र-
 यते ॥४॥ ब्यनस्पने षीड्वच्च इत्यविष्टानम् ॥५॥ सुक्तिशुंशानमलो निश्रन्यं हिरण्यवर्षो सुवृत्तं
 सुचक्रम् । आरौह सुदर्थं अमृतस्य लोभं स्यांनं पत्येवहंतु कृष्ण्य इयारोहयति ॥६॥ अनुमा-
 यन्तु देवता अनुब्रह्म सुवीर्यम् । अनुज्ञन्तु यद्वलमनुमामैतु ययश इति प्रादभिप्रयाय
 प्रदक्षिणामावर्तयति ॥७॥ प्रतिमायन्तु देवताः प्रतिब्रह्मसुवीर्यम् । प्रतिज्ञन्तु यद्वलं प्रतिमा-
 मैतु ययश इति यथास्तं यन्तमनुमं प्रयते ॥८॥ अमंगल्यं चेदतिकामति । भद्रं कर्षं भिरित्वादि
 जपति ॥९॥ नमो रुद्राय प्रामसद्, इति प्रामे इमारुद्रायैति च ॥१०॥ नमो रुद्रायैकवृत्तसद् इत्येक-
 रुक्षे । येवृक्षेषु शर्णिजरा इति ॥११॥ नमो रुद्राय रमशान सद् इति रमशाने । ये भूतानाम-
 धिपतय इति च ॥१२॥ नमो रुद्राय चतुष्पथसद् इति चतुष्पथे । येषां पथिरक्षय इति च ॥१३॥
 नमो रुद्राय तीर्थमद इति तीर्थे । ये तीर्थानि प्रचरन्ति इति च ॥१४॥ यत्रापस्त रितव्या
 आसीदिति । ससुद्राय वैष्णवेसिन्धूनां पतये नम । नमोनदीनां रातोसापत्ये । विश्राहा जुपतां
 विश्वकर्मणाभिर्दंष्ट्रि इव स्वाहेत्यस्सूद्रकाजलीनिनयति । अपृत्तं वा आस्ये जुहोम्यायु प्राणो-
 ऽप्यमृत ब्रह्मणांसहसृत्तुं तरति । प्रामहादिति रिष्टिरिति सुक्षीयमाण सर्वभयं
 नुदस्व स्वाहेति त्रि परिष्टृप्तात्पामति ॥१५॥ यदिनावातरेत्सुनामाणमिति जपेत् ॥१६॥
 यदिरथाच्च शम्याषो वा रिप्येतान्यद्वारयागं तथैवाग्निमुपसमाधाय जपप्रभृतिभिर्हुंत्वा सुम-
 गली रिथं वधूरिति जपेत् । वषामह, वरुंमभेत पश्यत ॥१७॥ व्युत्कामपंथा जरितां जनेन ।
 शिवेन वैश्वानर इडयास्यामत । आचाया येन येन प्रयाति तेन तेन सह । इत्युभावेव व्युत्-
 कामत ॥१८॥ गोभि सहास्तमिते प्रामं प्रविशेति ब्राह्मणवचनाद्वा ॥१९॥ इति त्रयोदश-
 खण्डम् अपरस्मिन्नहं सन्वो गृहान्प्रपादयोत् ॥१॥ प्रतिब्रह्मनिति प्रत्यवरोहति ॥२॥
 खंडम् । भंगलानि प्रादुर्भवति ॥३॥ गोशतमेतत्सुखपराजि नृणाति ॥४॥
 रयादधोपासनात्, येषु ध्येति प्रसवनेषु सौमनसं महत् । तेनोपह्वयागहे तेनाजानन्दयागतम् ।
 इतितयाभ्युपैति । ५। गृहानहंसुमनस प्रपथे वीरं हि वीरयत सुशेना । इरावहन्ती घृतमुक्षमाण
 स्तेष्वहंसुसना संवसाम । इत्यभ्याहितार्गिं सोदकनीषधमावसथप्रपथे रोहिण्यामुलेनता यद्वापु
 ययोक्तम् । ६। इति वरवध्वोरथ गृहागमनेमार्गरेखापरिभाषा ।



अथ वाग्दानपद्धतिः ॥

—:०.—

अथ ज्योतिः शास्त्रोक्ते शुभे लग्ने द्वौ चत्वारः अष्टौ वा प्रशस्तवेपाः पुरुषाः वरपित्रादिना सहिताः शकुनदर्शन पूर्वकं (अग्रतो दधियवपूरितपात्रसहितम्) कन्यागृहमेत्य तत्र कन्यापिता गृहसमन्तात् वाजित्रादिमङ्गलध्वनिपूर्वकं तान्गृहमानाय्य गंधाक्षतादिभिः सत्कृत्य जनवासं दद्यात् ॥ ततः कन्यापिता ज्योतिर्विंदादिष्टे सल्लग्न्ये गणेशादिपञ्चांगपूजनं कृत्वा वरपितरं वाततस्नेहिपुरुषमाह्वय, सच वरपिता कन्यापितरं प्रति प्रार्थयेत् ॥ तत्रमंत्रः—मत्पुत्रार्थं प्रयच्छ त्वं स्वकन्यां स्नेहपालिताम् । भार्याद्यनुमतिं कृत्वा वाग्दानं देहि सत्वरम् ॥ अथदाता ब्रूयात्—भार्यानुद्यमसहितोऽहं दास्यामीतिचोच्चे ब्रूयात् ॥ ततः कन्या दाता प्रांसुख उपविश्याचम्य देशकालौ स्मृत्वा करिष्यमाण विवाहांगभूतं वाग्दानमहं करिष्ये तदंगं गणपत्यादि पंचांग पूजनं च करिष्ये ॥ एवं गणेशादि पंचांगपूजनंकृत्वा, तत्र वरपितरं तत्प्रतिनिधिया प्रांसुखं उपविश्य, तं गन्धाक्षतादिभिः संपूज्य, किञ्चिन्मनोहरं जलपात्रं जलेनापूर्य स्थाल्यां हरिद्राग्वंड पंचकं दृढ़पूगीफलानि घञोपवीतंच प्रस्थमात्र तंडुलोपरिस्थापयित्वा मनोहरवस्त्रेणाच्छाद्य अग्रतः संस्थाप्य तत्र इन्द्राणीं सदासौभाग्यवतीं पूजयेत् ॥ ध्यानम्—इन्द्राणीं मिन्द्रगृहिणीं सदासौभाग्यवह्निनीम् । ध्यायामि मनसादेवीं कन्या सौभाग्यहेतवे ॥ आवाहनम्—आगच्छागच्छ कल्याणि देवेन्द्रप्राणवल्लभे । यावत्पूजां करिष्यामि तावत्वं सुस्थिराभव ॥ ऋक्—३० आदित्यैराण्या सीन्द्राण्याऽउष्णीषः पूपासि धर्मायदीप्वः ॥ ३० भूर्भुवः स्वः, इन्द्राणीहागच्छेहतिष्ठ, एतन्तेति प्रतिष्ठाप्य, ३० ई इन्द्रायै नमः इति मंत्रेण पाद्यादिभिः संपूज्य प्रार्थयेत्—देवीद्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्र प्रियभामिनि । सौभाग्यमायुरारोग्यं मत्कन्यायै

प्रयच्छुवै ॥ धनधान्यं पशून्देहि जगन्तसमसन्ततिम् । यशोदेहि
सुखं देहि सर्वसिद्धिं प्रदा भव ॥ इति संप्राथम्यं आचार्य्यः मङ्गलपुरः
सरं वारत्रयं गोत्रोच्चारणं गुप्यात् । अत्र कन्यापत्नीयाचार्याय,
वरपिता दक्षिणां बहुमूल्यवस्त्रं (पर्वतीय देशेषु भृगुलीति)
तन्निष्कयीभूतं द्रव्यं स्वशक्तितो दद्यात् । ततः कन्यापिता
पूर्वोक्तां स्थालीं हस्ते निधाय—३० वाचा दत्ता मया
कन्या पुत्रार्थं स्वीकृता त्वया । कन्यावलोकनविधौ निश्चितत्वं
सुखी भव ॥ पंडो व्यंगः पंक्तिवज्र्यो रोगी चेद्विजित्तवर्जितः । दत्ता
ममां न दास्यामि तव पुत्राय कन्यकाम् ॥ अव्यंगे पतिते
क्लीवे दशदोष विवर्जिते । इमां कन्यां प्रदास्यामि देवाग्निं द्विज
सन्निधौ ॥ इति चोक्त्वा स्थालीजलपात्रसहितं द्रव्यं वरपित्रे
दद्यात् । स्वस्तिइति प्रतिवचनम् ॥ वरपित्रोक्तिः—आविवाहाच्चते
कन्यां रोगिणीं च कुचारिणीम् । दत्तामपिच त्यद्यामि कन्याते
निश्चयादहम् ॥ ततो वरगृहागतं कण्ठाभरणादिभूषणम् सौभा-
ग्यवती द्वारा मङ्गलवाद्यवेदध्वनिपुरस्सरं कन्यायै परिधापयेत् ॥
ततो भूयसीं दक्षिणां दत्त्वा, मंत्रतिलकपुरस्सरं आशीर्वादं
गृह्णीयात् ॥

॥ इति विवाहातिरिक्तसमयोक्त वाग्दानपद्धतिः ॥

अथ गृहागतवरं प्रति वाग्दानधूल्यर्घपद्धतिः ॥

अथ च कन्या पिता वरं मार्गागतं श्रुत्वा वाग्दान सामग्रीं
संपाद्य सुलिप्तायां भूभौ उपविश्य त्रिराचम्य दीपं प्रज्वाल्य
गणेशमातृकाश्च संपूज्य कलशमपि वरुणविधिना संस्थाप्य
संपूज्य च वरागमनंप्रतीचेत् ॥ ततः कन्यापिता कियदूरं समा-
जसहागतं वरं विलोक्य स्वगृहान्नग्नपादः सन् स्वजनैर्वंधुपुत्रादि

भृत्यवर्गैसहः पंचघोष पूर्वकं कतिचित्पदानि गत्वा वरयानं स्व-
जनीपरिवाहयित्वा द्वारमानाय्य द्वारसमीपे यथाशक्ति स्वयमपि
चोद्वावरं यानादवतार्य्य वरो मंत्रं पठन् श्रीफलं हस्ते निधाय,
३० भद्रमस्तु शिवंचास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु । रत्नतुत्वांसुराः
सर्वे संपदः सुस्थिराभव ॥ इति मंत्रेण कन्यापितृहस्ते दद्यात् ॥
सच तं सादरं हस्ताभ्यां गृहीयात् । ततो मनोहरे क्वचित्पीठे
पूर्वाभिमुखं वरमाश्वासयेत् ॥ ततः कन्यापिता तत्र पूर्वोक्तस्थले
उत्तराभिमुख आचम्य प्राणायामत्रयं विधाय रक्षावन्धनं कृत्वा
आचार्यवरणार्थं बृहत्स्थालीपात्रं ताम्रादिघटं यथावित्तं कमंडलुं
वा धौतचम्रंच संपाद्य, वरपत्नीयं ब्राह्मणमाह्वय पादप्रक्षालनं
कुर्यात्—आपद्धनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितर्थापणकाम-
धेनवः । अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥
ततो गंधम्—“गन्धद्वारामित्यादि” अक्षतपुष्पमालादिभिः आचार्यं
सम्पूज्य प्रार्थयेत्—३० आर्चायस्तु यथास्वर्गे शकादीनां बृहस्पतिः ।
तथात्वं मम कार्येऽस्मिन्नाचार्य्यो भव सुव्रत ॥ ततः पूर्वोक्तां
वरणसामग्रीसम्मुखीकृत्य संकल्पं कुर्यात्—अद्यहेत्यादि देश
कालौ संकीर्त्य अमुकराशिरमुकशर्माहं करिष्यमाण कन्यादानां-
गत्वेन तत्रादौ वाग्दानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्र
प्रवरान्वितममुकशर्माणं ब्राह्मणं वाग्दानादि विवाहावधि
कर्मकर्तुमाचार्यत्वेनत्वामहं वृणे इति तद्द्रव्यं आचार्यं हस्ते दत्त्वा
कर्म कुरु ब्रूयात्—करवाणीति ज्ञाचार्य्यो ब्रूयात् ॥ ततो वरस्य
पाद प्रक्षालनं कुर्यात्—३० नमोस्त्यनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्र
पादाक्षिशिरोरुवाचहे । सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटी
युगधारिणेनमः ॥ इति पादौ प्रक्षाल्य “गन्धद्वारेत्यादिना” तिलकं
कृत्वा अक्षतपुष्पमालादिभिरलं कृत्वा, हरिद्रारंजिततंडुलैः
स्थालीमापूर्य्य तदुपरिपञ्चपूरीफलानिश्रीफलं हरिद्रापञ्चवर्णं
यज्ञोपवीतानि यथावित्तद्रव्यंच संस्थाप्य कौशेयपीतवस्त्रेणा
छाद्य सम्मुखीकृत्य इन्द्राणीं पूजयेत् । आवाहनम्—आगच्छागच्छ

कल्याणि शचीन्द्रप्राणवल्लभे । यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं
 सुस्थाभव ॥ ३० आदित्यै राष्णासीन्द्राण्यै उष्णीषः पूपासि
 धर्मायदीप्त्वः, इत्यावाह्य ३० एतन्तेति प्रतिष्ठाप्य ३० इन्द्राण्यै
 नमः इति मंत्रेण पंचोपचारादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्--शचीदेवि
 नमस्तुभ्यं त्रैलोक्यैश्वर्य्यं वंदिते । सौभाग्यमायुरारोग्यं मत्कन्यार्थं
 प्रयच्छत्वम् ॥ ततो वारत्रयं गोत्रोच्चारणं कृत्वा संकल्पं कुर्यात्-
 अचेहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्य--अमुकराशिरमुकशर्माहं करिष्य
 माण कन्यादानांगत्वेन वाग्दानकर्मणि अमुकगोत्रस्यामुक-
 प्रवरस्यामुकशास्त्रिनोऽमुकवेदाध्यायिनोऽमुकशर्मणः प्रपौत्रीं,
 अमुकशर्मणः पौत्रीं, अमुकशर्मणः पुत्रीं, अमुकनाम्नीं श्री
 स्वरूपिणीं वराधिनीं कन्यां ज्योतिषिदादिष्टे सुसुहृते तुभ्यं दास्ये
 इति वाचांसंप्रददे । ततः स्थालीं द्रव्यसहितां वरहस्ते दद्यात् । स्व-
 स्तीतिवरो ब्रूयात् । ततो वरः कंठाभरणादिकं सौभाग्यद्रव्यं
 सुवासिनीद्वारा मंगलवाद्यवेदध्वनिपुरस्सरं कन्यायै परिधापयेत् ।
 (कचिद्देशेषु इदानीं कन्याहस्तेन इन्द्राणीपूजनं भवति तदपि देशाचा-
 रतः समीचीनम्) इति गृहागतवरं प्रतिवाग्दानविधिः ।

अथ धूल्यर्घमधुपर्कपद्धतिः ।

ततः कन्यापिता धूल्यर्घसामग्रीं सम्पाद्या चम्य प्राणायामत्रयं
 विधाय भूतोत्सादनं कृत्वा संकल्पं कुर्यात्--अचेहेत्यादि देशकालौ
 संकीर्त्य अमुकशर्माहं ममास्याः कन्याया वीजगर्भसद्भवै नो निवर्हण
 पूर्वककन्यादानप्रतिग्रहार्थं गृहागतं स्नातकं वरं विष्टरादि मधुप-
 कान्तै रर्चयिष्ये । संलग्नवाग्दानां भावे आचार्यवृणुयात् । वरप-
 क्षीयमाचामार्यमाह्वय आपद्धन० इत्यादिना पादप्रक्षालनम्,
 गन्धद्वारेति तिलकं अक्षतपुष्पमालादिभिरलंकृत्य वासांगु-
 लीयधौतवस्त्रादिवरणसामग्रीं हस्ते निधाय अचेहेत्यादि
 संकीर्त्य० अमुकराशिरमुकगोवप्रत्रोऽहं करिष्यमाणकन्या-
 दानकर्मणि कर्मकर्तुमेभिर्वरणद्रव्यै रमुकगोत्रममुक

शर्म्माणं ब्राह्मणमाचार्यत्वेनाहंवृणे । घृतोऽस्मीति प्रत्युक्तिः
 आचार्यस्तु इति प्रार्थयेत् । अथ कन्या पिता वारणादि
 याज्ञीयकाष्टमयं हरिद्रादिरंजितं नूतनचतुष्पादमासनं (पीढा)
 दर्भास्तीर्णं पीठासनमाहार्याह साधुभवानास्तामर्चयिष्यामो
 भवन्तमित्युक्त्वा पूर्वाभिमुखं वरंकाष्टपीठोपरि स्थापयेत् ।
 अर्चय इति यरोद्भूयात् ततोऽर्चकादन्य आचार्यो विष्टरोविष्टरो
 विष्टर इति वारत्रयं वदेत्, एवं सर्वत्र । तत उत्तराभिमुखोऽर्चको
 विष्टरमादयविष्टरः प्रतिगृह्यतामिति वदेत् । वरश्च ३० प्रतिगृह्
 णामीति वदेत् । उदगग्रंविष्टरं तूष्णीमादाय—३० वषमोऽस्मीत्यथ-
 र्वणऋषिरनुष्टुब्धो विष्टरो देवता उपवेशने विनियोगः । ३०
 वषमोऽस्मि समानामुद्यतामिवसूर्यः । इमंतमभितिष्ठांमियोमां
 कश्चाभिदासति । अनेन मंत्रेण विष्टरमुदग्रमासने निधाय तदुपरि
 उपविशति । ततः तप्तोदकेन पाद्यं पाद्यं पाद्यमित्यन्येन श्राविते,
 पाद्यं प्रतिगृह्यतामिति यजमानो वदेत् ३० प्रतिगृह्णामीत्युक्त्वा
 तत्पात्रं भूमौ निधाय, ३० विराजो दोहोसीति प्रजापतिर्ऋषि
 र्भुजश्छन्दः आपो देवताः दक्षिणपादं प्रक्षालने विनियोगः (क्षत्रि-
 यादेः सन्धपादमादौ प्रक्षालयेत्) अंजलौ जलमादाय ३० विराजो
 दोहोसि विराजो दोहमशीयमयि पाद्यायै विराजो दोहः । इति
 ब्राह्मणस्यादौ दक्षिणपादं प्रक्षाल्य, अनेनैव मंत्रेण वामपादं प्रक्षाल-
 येत् पुनर्द्वितीयविष्टरमादाय अन्येन श्राविते विष्टरो विष्टरो
 विष्टरः, विष्टरं प्रतिगृह्यतामिति यजमानोक्तिः । वरः ३०
 प्रतिगृह्णामीति वदेत् । ३० वषमोऽस्मीति अथर्वणऋषिः अनुष्टु-
 ष्ठन्दो विष्टरो देवता श्रणाधः स्थापने विनियोगः । तन्मंत्रः ३०
 वषमोऽस्मि समानामुद्यतामिवसूर्यः इमंतमभितिष्ठांमियोमा-
 कश्चाभिदासति । इति मंत्रेण आसने उदगग्रं पादघोरधस्ताद्भिद-
 धाति ॥ ततो ऽर्घ्यकरणम् ❀ एवं सदर्भमष्टांगमर्घ्यं हस्ते निधाय

५ टि० जलदधि घृतं क्षारं वदी तडुलास्तिलाः । सिद्धार्थकास्तथादर्भा
 अर्घ्योऽष्टांगं प्रकीर्तित । नागौहस्ते प्रदातव्यं स्कन्धेशिरसि वत्कने । जानुनीशचो-
 दरे दाशष्टाङ्गार्घ्यो वर पूजने ।

यजमानोवरस्य वक्ष्यमाणश्रंगेषुदद्यात् । ततःश्रघांऽघांऽर्घ्यः इत्यन्येन
 आवितेअर्घ्यं प्रतिगृह्यतामिति यजमानोवदेत् ३० आगतोसिचर
 श्रेष्ठः सर्वकामार्थसिद्धये । प्रतिग्रहसमर्थोसि गृहाणार्घ्यं नामोस्तुते
 वरः ३० प्रतिगृह्णामीति वदेत् ततो वरः ३० आपस्थ
 हति प्रजापति ऋषिर्पिर्जुरल्लन्द आपो देवता अर्घ्यं ग्रहणे
 विनियोगः । ३० आपःस्थ युष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नु-
 वानि । इत्यर्थं पाणिभ्यां प्रतिगृह्य मूर्ध्दपर्यन्तमानीय । ३० समु-
 द्रं व इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्पिर्जुरल्लन्द आपोदेवता अर्घ्याभिमंत्रणे
 विनियोगः । ३० समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वांघोनिमभिगच्छत ।
 अरिष्टास्माकंवीरामापरा सेचिमत्पयः ॥ इत्यनेन मंत्रेण ऐशान्यां
 निनयन्नभिमंत्रयतेवरः ॥ अथान्येनाचमनीयम् आचमनीयं,
 आचमनीयमित्युक्ते, आचमनीयं प्रतिगृह्यतामिति यजमानो
 वदेत्, वरः ३० प्रतिगृह्णामीत्युक्त्वा यजमानदत्तामाचमनीयं
 प्रतिगृह्य, ३० आमागच्छामिति परमेष्ठी ऋषिर्वृहतील्लन्द आपो-
 देवता आचमने विनियोगः । ३० आमागन्यशसामास ॐ सृज
 वर्चसा । तंमाकुरुप्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टि तनूनाम् ।
 इतिवरः सकृदाचम्य तृष्णी स्मार्तमाचमनीयं कुर्यात् वारत्रयम् ।
 (अत्रकतिचित्पुस्तकेषु “असौजस्ताम्रो० असौषोवसर्पति०”
 मंत्रयोरध्ययनं लिखितं तत्सूत्रअनुक्तत्वादप्रमाणम्) ततोदधि-
 मधुघृतं कांस्यपात्रस्थापितं द्वितीयकांस्यपात्रेणपिहितमादाय
 ३० मधुपर्कमधुपर्कमधुपर्कः इत्यन्येनआविते यजमानः प्रति-
 गृह्यतामित्युक्त्वा, वरश्च-३० प्रतिगृह्णामीत्युक्त्वा, यजमान
 हस्तस्थितमुद्घादितं मधुपर्कं वक्ष्यमाणमंत्रेण प्रतीक्षते—३०
 मित्रस्यत्वेति बृहस्पति ऋषिर्पिर्जुरल्लन्दो मित्रोदेवतादातृ करस्थ-
 मधुपर्कं प्रतीक्षणे विनियोगः । ३० मित्रस्यत्वा चक्षुषा प्रतीक्षे,
 इतिप्रतीक्ष्य, ३० देवस्यत्वेति बृहस्पति रांगिरसःऋषिर्पिर्जुरल्लन्दः
 सविता देवता मधुपर्कं ग्रहणे विनियोगः । ३० देवस्यत्वा
 सवितुः प्रसवेऽश्विनो धाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि ।

इति मधुपर्कं दातृहस्तात्संगृह्य सन्ध्येपाणौकृत्वा दक्षिणहस्ता-
नामिकया त्रिःप्रयौति मिश्रयति । ७० नमःश्यावेति प्रजापति
ऋषिर्यजुश्छन्दः सवितादेवता स्वहस्तस्थमधुपर्कविक्षेपे विनि-
योगः । ७० नमःश्यावास्यायात्रशनेघत्त अविध्वं तत्तेनिष्कृतामि ।
इति मंत्रेण मधुपर्कं सकृत्प्रदक्षिणमालोड्य, अंगुष्ठाऽनामिकाभ्यां
सकृत्क्षणीं मधुपर्कं किञ्चिद्भूमौ क्षिपेत् । एवं पुनर्द्विवारमालो-
टनं निरुक्ष्येणं च कृत्वा, ७० यन्मधुन इति कुत्सऋषिर्जगतीछन्दो
मधुपर्कं देवता मधुपर्कं प्राशने विनियोगः । ७० यन्मधुनो मध-
व्यं परम ॐ रूपमन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणा-
द्वाद्येन परमोमधव्योऽन्नादोऽसानि । इति मंत्रेणानामिकया वार-
त्रयंपुनः पुनर्मंत्रमुक्त्वा वरो प्राशनीयान्, उच्छिष्टस्यैव पुनर्मंत्रव-
त्प्राशने कोऽपिदोषोनास्ति ॥ सर्वभुक्त्वावा प्राशितशेषं पूर्वस्यां-
मसंचरे क्षिपेत् ॐ तत आचमनम् ७० ऋग्वेदा स्वाहा । द्विःस्मार्त्वा-
चमनं कृत्वाजलं स्पृष्ट्वा वक्ष्यमाण मंत्रेणांगान्यालभेत, वरः
सजलम्—सुगंधं कराग्रेण बाहुम् आस्ये अस्तु, तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां—
नसोमं प्राणःअस्तु, युगपदक्षिणादिनासारंध्रयोः, अनामिका-
गुष्ठाभ्यां युगपच्चक्षुषी अक्षणोमं चक्षुरस्तु, मध्यमांगुष्ठाभ्यां दक्षि-
णकर्ण—७०कर्णयोमं श्रोत्रमस्तु, अनेनैव वामकर्णम् । कराग्रेण
दक्षिणबाहुम्—७० बाहोमं यलमस्तु, एवं वामबाहुम् । युगपद्ध-
स्तेनोरु—७० उद्योमं ओजोऽस्तु ॥ ततः शिरःप्रभृति पादान्तानि
सर्वाङ्गानि उभाभ्यां हस्ताभ्यामालभते । ७० अरिष्ठानिमेऽङ्गानि
तनूस्तन्वामे सहसन्तु । ततो द्विराचमेत् ॥ (इदानीं सूत्रकारेण
गवालंभनविधिरुक्तः सचकलियुगे वर्ज्यः—अस्वर्ग्यं लोकवि-
द्विधं धर्ममप्याचरेन्नतु ॥ इति याज्ञवल्क्यादिस्मृतिषु दर्शनात् ।
यज्ञाधानं गवालंभं संन्यासं पलपैतृकम् । देवराचं च सुतोत्पत्तिः
कलौपंचविचर्जयेत् ॥ इति पाराशरस्मृतेः । अतश्च मयाप्यस्मि-

* टिप्पणी—ताम्बूलक्षुफलैश्च भुक्त्वास्तेह्यलु लेपने । मधुपर्कं च सोमं च
नोच्छिष्टं मनुगमयीत् ॥

न्पद्धतौ गवालंभस्य कलौनिपिद्धत्वा द्रुत्सर्गस्यच यज्ञविवाह-
 योरप्राप्तत्वाद् गौरित्युच्चारणादि यज्ञविवाहयोः कलौनप्रवर्तते—
 अतोगवालंभं न लिखितम्) (गौरालभश्च कलिवर्जितेकाले
 भवतीतिदिक्) ॥ ततः समाचारादाचार्यप्रमुखाः वरपत्नीया
 एतद्ब्राह्मणकंटिकासप्तकमुच्चैःपठेयुः ॥ मंत्राः—३० अथवरं
 वृणीतेव्यलवद्धवैदेवाऽएतस्य ग्रहस्यहोमं प्रेषंसतितेऽस्माऽएतंवरं ॐ
 समर्द्धयन्ति क्षिप्रेनऽइमंग्रहं जुहवदिति तस्माद्द्वरं वृणीते ॥१॥
 अथवरं वृणीतेय ॐ हवैकंच सुपुवाणोव्वरं वृणीते सोऽस्मैसर्वः
 समृद्ध्यते तस्माद्द्वरं वृणीते ॥२॥ अथ चाराह्याऽउपानहाऽउपसं-
 चते । अग्नौहवैदेवा घृतकुम्भं प्रवेशयाश्चक्रुः स्ततोव्वराहः संव-
 भूव तस्माद्द्वरोहो मेदुरोघृताद्धि संभूतस्तस्माद्द्वराहेगावः संजा-
 नते । स्वमेवैतद्रसमभिसंजानते । तत्पशूनामेवैतद्रसे प्रतिति-
 ष्ठति । तस्माद्द्वाराह्याऽउपानहाऽउपसंचते ॥३॥ सऽआजगाम
 गौतमोयत्र प्रवाहणस्य जैवले रास । तस्माऽआसनमाहोर्ध्वोदक-
 माहारयांचकाराथहास्माऽअर्धचकार ॥ ४ ॥ सहोवाच
 व्वरंभवतेगौनमायददमइति । सहोवाच प्रतिज्ञातोमऽएपवरोयांतु
 कुमारस्यान्ते वाचमभापथास्तामेवृहीति ।५। सहोवाचदैवेषुवै
 गौतमतद्वरेपमानुपाणां वृहीति ।६। सहोवाचविज्ञायतेहास्ति
 हिरण्यस्यापात्तं गोऽन्नस्थानांदासीनां प्रवाराणां परिधानानांमानो
 भवान् बहोरनन्तस्यापर्यन्तस्याभ्यवदान्योभूदिति । सर्वगौतम-
 तीर्थनाच्छ्लासाऽइति । उपैम्यहंभवन्तमिति । वाचाहस्मैव पूर्व
 उपयन्ति ।७। इति पठित्वासहस्रशीर्षेति० पुरुषसूक्तेनवा ३०
 नमोस्त्यनन्तयसहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोधरायते । सहस्र-
 नाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणेनमः । इति गंधाक्षत
 पुष्पमालादिभिः वरं सम्पूज्य अवेहेत्यादि० अमुकराशिरमुकोऽहं
 करिष्यमाण कन्यादानकर्मणिभिः स्वर्णागुलीयवासोभिरग्नि
 बृहस्पतिदैवतैः कन्यादानप्रतिग्रहार्थं अमुकगोत्रंअमुकप्रवरं अमु-
 कवेदाध्यायिनं, अमुकशाखिनं, अमुकशर्माणं विष्णुस्वरूपिणं

कन्याधिने वरत्वेनत्वामहंवृणे । वरणसामग्रीं वरोगृहीत्वा ३०
 वृतोऽस्मीतिब्रूयात्— ३० कोदात्कस्माऽत्रदात्कामोऽत्रदात्
 कामायादात् कामोदाताकामः प्रतिगृहीताकामैतत्ते । ततो
 वस्त्रपरिधानं वक्ष्यमाणमंत्रैः कुर्यात् । ३० जरांगच्छेति प्रजापति
 ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वासोदेवतावासः परिधानेविनियोगः । ३०
 जरांगच्छपरिधत्स्ववासो भवाकृष्टीनामभिशस्तिपावा । शतं च
 जीवशरदः सुवर्चारयिंच पुत्राननुसंख्यस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व-
 वासः ॥ इत्यंगवस्त्रम् । ३० यात्रकृन्तन्न इति प्रजापतिऋषिस्त्रि-
 ष्टुप्छन्दो वासोदेवता उत्तरीयवस्त्र परिधाने विनियोगः । ३०
 यात्रकृन्तन्नवयंय्यात्रवतन्वत । यश्चदेवीस्ततृनभितोततंथ तास्त्वा-
 देवीर्जरसे संख्यस्वायुष्मतीदं परिधत्स्ववासः ॥ इत्युत्तरीयम् ।
 परिधास्यैइत्यथर्वणऋषिः पंक्तिश्छन्दो वासोदेवता अधोवस्त्रप-
 रिधाने विनियोगः ३० परिधास्यैयशोधास्यै दीर्घायुत्वायजरद-
 ष्टिरस्मि । शतं च जीवामिशरदः पुरुचीरायस्पोषमभिसंख्ययि ष्ये
 इत्यधोवस्त्रम् । अथोष्णीपम् (पगड़ी) ३० युवासुवासा इति
 विश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो यूपोदेवता उष्णीपपरिधानेविनि-
 योगः ॥ ३० युवासुवासाः परिवीतत्रागात्सउश्रेयान्भवतिजाय
 मानस्तंधीरासः कवयउन्नयन्ति साध्योमनसादेवयंतः । इति
 शिरोवस्त्रं परिधापयेत् । ततोवरायालंकरणानिदद्यात् । हिरण्यग-
 भिसंभूतंपवित्रंचांगुलीयकम् । श्रेयस्करंपवित्रंच प्रीणालुकमलापतिः
 कुंडलादिकान्— कुंडलैकद्वयेद्वेहारं च मणिसंयुतम् । प्रीत्या
 तुभ्यंप्रदास्यामि गृहाणविष्णुरूपिणे ततः । शय्यादानम्— ३०
 खट्वास्थापितं सवस्त्रायैसालंकारायैशय्यायैनमः । पाद्यगंधादिभिः
 सम्पूज्य—अद्येहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यंश्रमुकराशिगोत्रप्रवरोऽहं
 गृहागतवरार्चनविधौ इमांसालंकारां सवस्त्रांपरितः पानीयपाक
 ताम्रकांस्यलोहादि भांडयुतांसल्लजोपानहपादुकादिभिः परियुतां
 शय्यांश्रमुकगोत्रप्रवरान्विताय कन्याधिने ऽमुकराश्र्मणे वरायतु-
 भ्यंसंप्रददे । इति शय्योपरिच्छिपेत् । अथपूर्वांबारि० श्रमुकोऽहं

शय्यादान प्रतिष्ठार्थं हिरण्यरजतमुद्रांवा अमुकशर्मणेवरायसंप्रददे
इति प्रतिष्ठाद्रव्यं वरहस्तेदत्वाप्रार्थयेत् । अशून्यंशयनं नित्यमशू-
न्यामुन्नतिश्रियम् । सौभाग्यंदेहिमेनित्यं शय्यादानेनकेशव ।
यानिकानिचपापानि अथावधिकृतानि च । ताम्रादिपात्रदानेन
तानिनश्यन्तुकेशव । ततश्चाचार्यादिभ्यो दक्षिणांदत्त्वा वरान्म-
न्त्राशिपं गृह्णीयात् । ततो यजमानस्यतिलकम्—३० भद्रमस्तु
शिवंचास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु । रक्षन्तुत्वांसुराः सर्वंसंपदः ।
सुस्थिराभव । इति कृत्वा सफलपुष्पंवरोहस्तेभृत्वा आचार्योपठेत्
मंत्राः—३० अग्नयेत्वामह्यं वरुणोददातु सोऽमृतत्वमशीयायुर्दात्र
ऽएधिमयोमह्यंप्रतिग्रहीत्रे । १। ३० रुद्रायत्वामह्यंवरुणो ददातुसो
ऽमृतत्वमशीयप्राणोदात्रऽएधिव्वयोमह्यं प्रतिग्रहीत्रे ॥२॥ ३०
बृहस्पतयेत्वामह्यंवरुणो ददातुसोऽमृतत्वमशीयत्वग्दात्रऽएधि
मयोमह्यंप्रतिग्रहीत्रे ॥३॥ ३० यमायत्वामह्यं वरुणोदातुसोऽमृत-
त्वमशीयहयोदात्रऽएधि व्वयोमह्यंप्रतिग्रहीत्रे ॥४॥३० कोऽदात्
कस्माऽअदात् कामोऽदात् कामायादात् । कामोदानाकामः प्रतिग्र-
हीताकामैतत्ते । इति मंत्राशिपं प्रतिगृह्यसमाचाराद्वरस्य महानी-
राजनं कुर्यात् । (कतिचित्पर्वतीयप्रान्तेषु वरवरणविधि वराग-
मनसमयेकुर्वन्ति, अत्रप्रान्ते मधुपर्कान्तेकुर्वन्ति, पारंपार्यत्वा
न्मयापीदानीं संगृहीतः) ततो वरपत्नीय आचार्यो विवाहाग्नि
सस्कारवेद्यांगत्वा तत्र बृहद्वेदीमध्ये हस्तमात्रां वेदींकुशैः परिस-
मुह्यतान्कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य जलेनाभ्यु-
क्ष्य सुवसुलेन प्रागग्रास्तिस्त्रोरेखा विलिख्य उल्लेखनक्रमेणाना-
मिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य पुनर्जलेनाभ्युक्ष्य तृष्णीं कांस्यपात्रोप
नीतं अग्निं स्वाभिसुम्बवेद्यां स्थापयेत् ॐ नत्वेवामां इति बृह-
स्पतिर्हृदि यजुस्सुन्दोऽग्निदेवता अग्न्यावाहने विनियोगः । ३०
नत्वेवामां सोर्धः स्यादधियज्ञमधिविवाहं कुरुतेवैश्वानर मह
मायाहयिष्ये । ३० भूः स्वः अग्ने इहागच्छेत्तिष्ठ । ॐ प्रसीदयहे
सप्तार्षे कृशानोहव्यवाहन । अग्नेपावकशुभार्यनामाष्टकनमोस्तुते

इति अग्निप्राथ्व्यतद्रक्षणार्थं तत्र काष्ठादिकं दत्त्वावेदीशाने दीपं प्रज्वाल्य तत्र कंचित्पुरुषंरक्षार्थं नियुजेत् । इति धूल्यर्घपद्धतिः ॥

अथ विवाहपद्धतिः ॥

—:0:—

अग्निमुपसमाधायपाणिं गृह्णीयात् । इति पारस्करसूत्राद् धूल्यर्घान्ते कन्यापाणिं ग्रहणात्पूर्वमेव । शालायामग्निं स्थापनंभवति । तच्च पूर्वोक्तविधिना अवश्यमेव कर्तव्यम् । कतिचिद्देशनिवासि ब्राह्मणाः पाणिग्रहणान्ते शालां गत्वाग्निस्थापनं कुर्वन्ति । तच्च सूत्रव्यत्ययंकर्म । अथकन्यापित्रादयः सुसज्जितां कन्यांगणेशादिपूजास्थानं नीत्वाकान्यादानसामग्रींसपाद्य परिचमाभिमुखीकन्यांमातुः क्रोद्धे समुपवेशयित्वा उत्तराभिमुखोदातां स्वदक्षिणतः पत्नीपुत्रवांधवादिकान्कृत्वा । समुपविशेत् । ॐततो विवाहलग्नात्पूर्वं वरपत्नीया वान्धवादयः कन्यापरितोषिकार्थमानीतं वस्त्रभूषणादि बहुमूल्यहारवेशरादि सौभाग्यद्रव्यं काश्मीरोद्भवद्राक्षाफलनारिकेलादि मिष्टान्नदार्धान् सौभाग्यपेटिकांच प्रथक् प्रथक् कतिपयपात्रेषु संस्थाप्य (वरडाह्णी) इति स्वाग्रतः कृत्वा स्वस्तिवाचनादि पंचवाद्यघोषपुरः सरंस्वमपिच वरस्तस्मिन्कन्यादानगृहस्थलेगत्वा स्वानीतं कन्यासम्मुखी कृत्यतत्रैवस्थापयेत् । कन्यापि प्रसन्नमनसातानिवस्तूनि हस्तेन स्पृष्ट्वास्वीकरोतु ततोवरःपूर्वाभिमुखो भूत्वा उपविशेत् ततः कन्यापिता तान्वरेणसहागतान्पुरुषान्गंधाक्षतादिभिरलंकृत्य संतोष्यचविसृजेत् । ततो वरकन्ययोरन्तराले-३० समं-

*उक्तं च प्रयोगदर्पणे सर्वत्रप्राङ्मुखोदाता प्रतिग्राहीउदङ्मुखः अप्य एव विधिर्नित्यः कन्यादाने विगम्यः । उक्तं च स्मृतिसंग्रहे—व्रतवन्धे विवाहे च चतुर्थ्यां सहभोजने । व्रतदानेमन्त्रे श्राद्धेपत्नीतिष्ठति दक्षिणे । प्रादाने मधुपर्कस्य पत्न्यादाने तथैवच । कर्मस्वतेषु वैभार्यां दक्षिणेत्पवेशयेत् । इति धर्म प्रवृत्ती ।

जंत्विति भार्गवऋषि रनुष्टुप्छन्दः सूर्यां देवनान्तर पट करणे
विनियोगः । ३० समंजन्तु विश्वेदेवाः समाणेहृदयानिनौ ।
संमातरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधातनौ ॥ इतिवरः पठित्वा
अन्तर्पटं दद्यात् ॥ ततःकन्यापिता पुनर्वराय वस्त्रयुग्मं कन्यापरि
धानार्थं वस्त्रयुग्मं वरपरिधानार्थं वस्त्रचतुष्टयं च दद्यात् । अथे-
हेत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकोऽहं कन्यादान कर्मणः पूर्वाङ्ग-
त्वेन अमुकशर्मणे वराय सद्रव्यं वस्त्रचतुष्टयं संप्रददे इति
दद्यात् । वरश्च ३० स्वस्तीत्युक्त्वा प्रतिगृह्यतेपुवस्त्रद्वयं कन्यायै
परिधानार्थं प्रयच्छति । वस्त्रद्वयं स्वयं परिधत्ते । वरः स्वानीत
वस्त्राभ्यां कन्या परिधानं कारयेत् । ३० जरांगच्छेति प्रजापति
ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वासोदेवता अधोवस्त्रपरिधाने विनियोगः ।
३० जरांगच्छ परिधत्स्ववासो भवाकृष्टी नामभिशस्तिपावा ।
शतं च जीवशरदः सुवर्चारयि च पुत्राननुसंव्ययस्वायुष्मतीदं
परिधत्स्ववासः ॥ इत्यधोवस्त्रपरिधत्ते । अथोत्तरीयं (शाटकाम्)
३० याऽअकृन्तन्निति प्रजापतिऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वासो देवता
उत्तरीयशाटकापरिधाने विनियोगः । ३० याऽअकृन्तन्नवयन्या-
ऽअतन्वत-। याश्चदेवीस्तन्तूनभितो ततन्थ । तास्त्वादेवीर्जरसे
संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः ॥ ततोवरः स्वानीताभूषणं
दद्यात्—हिरण्यगर्भसंभूतमाभूषणमनोहरम् । भद्रप्रदं प्रदा-
स्यामि गृहाणप्रीतिवर्धकम् ॥ ततः कन्यापत्नीयाचार्यां वरानीत
सौभाग्यद्रव्यसिन्दुरादिभिः कन्यामलंकृत्य सौभाग्यपुटकं
(सुहागपूड़ा) वक्ष्यमाणमन्त्रेण कन्याशिरसि संधारयेत्—३०
सौभाग्यजनकं द्रव्यं रक्षासूत्रेण वेष्टितम् । सौभाग्यमस्तु ते
कन्ये धारणाच्छरदःशतम् ॥ इतिमन्त्रेण केपेपु वध्नीयात् ॥
अथवरः कन्यापित्रादत्तं वस्त्रद्वयं स्वयं परिधत्ते—३० परिधास्यै
इत्याथर्वणऋषिः पंक्तिश्छन्दो वासो देवता वस्त्रपरिधाने विनि-
योगः ३० परिधास्यै यशोधस्यै दीर्घायुत्वा जरदष्टिरस्मि । शतं-
च जीवामि शरदः पुरुची रायस्पोप मभिसंव्ययिष्ये ॥ अथोत्तरी-

यम्—३० यशसामेत्या धर्षणऋषिः पंक्तिरञ्जन्दो लिंगोक्ता देवता उत्तरीय परिधाने विनियोगः । ३० यशसामाद्यावापृथिवी यशसेन्द्रा बृहस्पतिः । यशो भगश्च माऽविन्दयशो मा प्रतिपद्यताम् ॥ अथ कन्यापिता एनौ परिहिताहतसदशवस्त्रौ कन्यावरौ समंजयति । परस्परं समंजयेथामिति प्रैषेण । ततो वरः कन्यासम्मुखो भूत्वा, ३० समंजन्वित्याधर्षण ऋषि रनुष्टुप्छन्दो लिंगोक्ता देवता परस्परसमंजने विनियोगः । ३० समंजन्तु विश्वेदेवाः समापौ हृदयानिनौ । सम्मातरिश्वा सन्धाता समुदेष्टी दधातुनौ ॥ इति सम्मुखी कृत्य, ततः कन्यावरयोर्हस्तेन देशाच्चाद्गणेशादि पञ्चाङ्ग देवतानां पूजनं कारयितव्यम् । इदानीमेव वरः कन्यापत्नीयायाचार्याय कलशद्रव्यं बहुधनं वित्तशाठ्यरहितं हस्ते धृत्वा संकल्पं कुर्यात्—३० अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकराशिरमुकोऽहं आवयोर्वरकन्ययोः ज्योतिशास्त्रानुकूलोऽष्ट भूकूटादिसंमेलने न्यूनातिरिक्तवैधव्यादिदाराहयोगानां मनिष्ठ निरसनार्थं तथाच दशायामन्तर्दशायां गोचरेऽष्टकवर्गैर्नार्याणे चर्पफलेऽपिवा यत्रकुत्र स्थानस्थितानां आदित्यादिनवग्रहाणां दुष्टानां दुष्टदोषो पशान्यर्थं शुभानां शुभफलाधिक्यं प्राप्तये इदं सुवर्णं सुवर्णनिष्कयी भूतं रजतद्रव्यं वा कन्यापत्नीय पुरोहिताय अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संपददे । ततो ब्राह्मण आशीर्वादं दद्यात् । अथच वंशगोत्रसापिंड्यनिश्चयार्थं गोत्राद्युच्चारःकर्तव्यः (तत्रक्रममाह—ऋष्यशृङ्गः—वरगोत्रसमुच्चार्यं प्रपितामहं पूर्वकम् । नामसंकीर्तयेद्विद्वान्कन्यायाश्चैवमेवहि ॥ कारिकाकारश्च—उच्चारः प्रातिलोम्येनपितृत्रीणां सर्वकर्मसु । कन्यादाने यज्ञवृत्ता वातुलोम्येन सस्मृतः ॥) तत्रादौ कन्यापत्नीयाचार्या मंगलाचरणपठनपूर्वकं वरस्य गोत्रप्रवरादिकं पृच्छेत्—अविरलमदधाराधौतकुम्भः शरण्यः फणिवरवृत्तगात्रः सिद्धसाध्यादिवन्धः । त्रिभुवनजनविघ्नध्वान्तविध्वंसदक्षोवितरतुंगजवक्रः संततं मंगलं वः ॥ किंगोत्रस्य किंप्रवरस्य किंशाखिनः किं

वेदाध्यायिनः किं शर्मणः प्रपौत्राय, किंशर्मणः पौत्राय, किं शर्मणः पुत्राय आयुष्मते कन्यार्थिने विष्णुस्वरूपिणे वराय ॥ ततो वराचार्यो मङ्गलपठित्वोत्तरयति—दोर्घांतद्गन्तखंडः सकलसुरगणाडम्बरेपुप्रचण्डः, सिन्दूराकीर्णगंडः प्रकटितविलसच्चौरुचान्द्रीयखंडः । गंडस्थानन्तघंडः स्मर हरतनयः कुण्डलीभूतशुंडो विघ्नानां कालदंडः स भवतु भवतां भूतये वक्रतुण्डः ॥ अमुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुकवेदाध्यायिनः अमुकशर्मणः प्रपौत्राय, अमुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुकवेदाध्यायिनः अमुकशर्मणः पौत्राय, अमुकगोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुक वेदाध्यायिनः अमुकशर्मणः पुत्राय, आयुष्मते विष्णुस्वरूपिणे कन्यार्थिने अमुकनाम्नेवराय । पृच्छेत्—किंगोत्रस्य किंप्रवरस्य किंशाखिनः किंवेदाध्यायिनः किंशर्मणः प्रपौत्रीं किंशर्मणः पौत्रीं किंशर्मणः पुत्रीं आयुष्मतीं श्रीस्वरूपिणीं वराधिनीं किंनाम्नीं कन्याम् । अथ कन्यापत्नीयान्चार्यो मंगलं पठित्वा प्रत्युत्तरं ददाति—शैवालश्रेणिशोभां दधतिहरजटावल्लयो हस्तयस्यास्तद्धासोल्लासवेल्लद्वरशकरतुलां यत्रधत्तेकलावान् ॥ उन्मीलद्भोगिभोगावलिस्तुभगसिताम्भोजसंभावितात्मा गद्गानंगारिसंगा महतितवविधौमंगलान्यातनोतु ॥ अमुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुकवेदाध्यायिनः अमुकशर्मणः प्रपौत्रीम्, एवं अमुकशर्मणः पौत्रीम्, अमुकशर्मणः पुत्रीं आयुष्मतीं श्रीस्वरूपिणीं वराधिनीं अमुक नाम्नीं कन्याम् ॥ पृच्छेत्—किंगोत्रस्य किंप्रवरस्य किंशाखिनः किंवेदाध्यायिनः किंशर्मणः प्रपौत्राय, किंशर्मणः पौत्राय, किंशर्मणः पुत्राय आयुष्मते विष्णुस्वरूपिणे कन्यार्थिने किंनाम्ने वराय ॥ अथ वराचार्यो पुनः मङ्गलं पठित्वा उत्तरयेत्पृच्छेत्—सकलभुवनवन्धोर्वैरमिन्दोः सरोजैरनुचितमितिमत्वा गःस्पदादारविन्दम् । घटयितुमिधमायी यो जयत्याननेन्द्रो वटदलपटशायी मङ्गलं वो ददातु ॥ अमुकगोत्रस्य

अमुकप्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुकवेदाध्यायिनः अमुकशर्माणः
 प्रपौत्राय, एवं पौत्राय, एवं पुत्राय आ० वि० कन्या० अमुक
 शर्माणे वराय । किंगो० किंप्र० किंशा० किं वेदा० किंशर्माणः
 प्रपौत्रीं, पौत्रीं पुत्रीं आ० श्रीस्थ० वरा० किनाम्नीं कन्याम् ।
 कन्यापत्नीयाचार्यः पठित्वोत्तरयेत्—कस्त्वं ब्रह्मन्नपूर्वः क्वचतव-
 वसतिर्याखिला ब्रह्मसृष्टिः कस्तेनाथोहानाथः क्वचतव जनको
 नैवतातं स्मरामि । किन्ते भीष्टं ददामि त्रिपदपरिमिताभूमि
 रत्नकिमेतस्त्रैलोक्यं भावगर्भं बलिमिदमवदद्दामनो वःसपा-
 यात् ॥ अमुकगोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुकवेदा-
 ध्यायिनः अमुकशर्माणः प्रपौत्रीं, पौत्रीं, पुत्रीं आयुष्मतीं श्री-
 स्वरूपिणीं वरार्थिनीं अमुकनाम्नीं कन्याम् । पृच्छेच्च—किंगो०
 किंप्र० किंशा० किंवेदा० किंशर्माणः प्रपौत्राय, किंश० पौत्राय,
 किंश० पुत्राय आ० वि० कन्या० अमुकनाम्ने वराय ॥ वरप-
 क्षीयः—उत्तुंगस्तनमंडलोपरिलसत्प्रालम्बसुक्तामणे रन्तर्विम्बि-
 तमिन्द्रनीलनिकरच्छायानुकारियुतिः । लज्जाव्याजमुपेत्यनम्रवदना-
 स्पष्टमुरारेवपुः पश्यन्तीमुदितामुदेऽस्तु भवतां लक्ष्मीविवाहोत्सवे
 अमुक गोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुकशर्माणः प्रपौत्राय
 अमुकप्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुकशर्माणः पौत्राय अमुकगोत्रस्य
 अमुकशर्माणः पुत्राय आयुष्मते विश्वरूपिणे कन्यार्थि-
 नेवराय । पृच्छेत् किं गो० किं प्र० किं शा० किं वेदा० किं शर्माणः ।
 प्रपौत्रीम् एवं किंगो० किंप्र० किंशा० किंवेदा० किं शर्माणः पौत्रीम्
 एवंपुत्रीं आयुष्मतीं श्रीस्वरूपिणीं वरार्थिनीं किनाम्नीं कन्याम् ।
 ततः कन्यापत्नीयाचार्यो ब्रूयात्—प्रत्यासन्नविवाहमंगलविधौ
 देवार्चनव्यग्रयादृष्ट्याग्रे परिणेतुरेवलिखितां गंगाधरस्याकृतिम् ।
 उन्मादस्मितरोषलज्जितधिया गौर्यार्कथंचिचिचारद् वृद्धस्त्रीवच-
 नात्प्रियेविनिहितः पुष्पांजलिः पातुवः । अमुकगोत्रस्य अमुक
 प्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुकवेदाध्यायिनः अमुकशर्माणः प्रपौ-
 त्रीम् एवं अमुकशर्माणः पौत्रीम्, अमुकशर्माणः पुत्रीं आयुष्मतीं

श्रीस्वरूपिणीं वरार्थिनीं अमुकनाम्नींकन्याम् । एवंवारत्रयं गोत्रो
 चचारं कृत्वा उभयपत्नीयौ आचार्यौ आशीर्वादंपठेताम् । यंशैवाः
 समुपासते शिव इति ब्रह्मेतिवेदान्तिनो बौद्धाबुद्ध इति प्रमाणप-
 टवाकर्त्तितिनैय्यायिकाः । अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेतिमीमां-
 सकाःसौर्यंबोविदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथोहरिः । यादृग्जा-
 नासि जाम्बूनदगिरिशिखरे कान्तिमिन्दोः कलानामित्यौत्सुक्येन
 पत्यौस्मितमधुर मुखाम्भोरूहंभाषमाणे । लीलांदोलायमानश्रुति
 कमलमिलद् भृंगसंगीतसाक्षी पायादम्भोधिजायाः कुसुमशरकला
 नाट्यनान्दीनकारः ततः कन्यापिता ददानि ददानिददानीति
 ब्रूयात् । ततो गोत्रोच्चारणदक्षिणांदद्यात् ततो लग्ने समायाते
 ग्रहदानानिकुर्यात् । वरः अद्येहामुकोऽहं विवाहकर्मणि इदानीं
 अमुकलग्नावधिकानां यत्रकुत्रचित्स्थानस्थितानां दुष्टग्रहाणां दुष्ट
 फल निरासपूर्वकं शुभग्रहाणां शुभफलप्राप्तये इदंसुवर्णं तन्निष्क-
 र्णीभूतं द्रव्यंवा अमुकगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यंदास्ये ॐ तसन्नम
 ततः सुलग्नेसमायाते इदानींकन्यां नासिकाभूषणाभ्यामलंकृतां
 कुर्यात् मंत्रः ॐ भद्रंकरेणभिरित्यादि मंत्रे भूषयित्वा पाद्यगंधा-
 क्षतपुष्पमालादिभिः वक्ष्यमाणमंत्रैर्वा श्रीसूक्तेनतांपूजयेत् ॐ
 श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावाहोरात्रे पारर्वेनक्षत्राणिरूप मशिवनौ
 व्याचाम् इष्णन्निपाणासुंम्मऽइषाण सर्वलोकंम्मऽइषाण ॥१॥ ॐ
 अम्बे अभिवके ऽअम्बालिके नमानयतिकरचन । ससस्त्यश्वकः
 सुभद्रिकां कम्पीलवासिनीम् ॥२॥ ॐ समख्ये देव्याधिया सन्द-
 क्षिणयोरुचक्षसा । ममआयुः प्रमोपीमोऽअहं तवञ्चीरं त्विदेय
 तवदेविसन्दृशि ॥३॥ इति मंत्रैः कन्यां सम्पूजयेत्

अथ कन्यादानसंकल्पः ।

।अथ कन्यापिता सुवर्णजलतिलतुलसी कुशचन्दनाक्षत
 बदरीपुत्रद्वीदिभिः पूरितंशंखं स्वदक्षिणहस्ते निधाय तदुपरि

प्रत्यङ्मुखोपविष्टायाः कन्यायादक्षिणांशुष्टंगृहीत्वा कांस्यपात्रोपरि
 कृत्वा साच कन्यामाता स्वंपतिदक्षिणस्थाऽविच्छिन्नां चारिभारां
 तत्र दद्यात्—३० स्वस्ति, इनिवरोद्ध्यात् (३० स्वस्तीतिधरो
 ऋयाद्धर्मचेति वधूपितेति संस्कारगणपतौ) । श्री गणेशाय नमः,,
 श्रीस्वेष्टदेवतायै नमः, ३० पितृभ्यो नमः, ३० नमः श्रीपुराणपुरुषो
 त्तमाय, संकल्पः—३० नमः परमात्मने श्रीमुकुन्दसच्चिन्दानन्दस्य
 ब्रह्मणोऽनिर्वाच्यमायाशक्तिविजृम्भितामायायोगान् । कालकर्म
 स्वभावाधिर्भूतमहत्तस्वोदिताऽहङ्कारोद्भूत वियद्वादिपञ्चमहा-
 भूतेन्द्रियदेवतानिर्मितेऽण्डकटाहेचतुर्दशलोकात्मके लोके लीलया
 तन्मध्यवर्त्तिभगवतः श्रीनारायणस्यब्रह्मणः सृष्टिकुर्वतस्तदुद्धर-
 णाय प्रजापतिप्रार्थितस्याच्युतानन्तवीर्यस्य श्रीमद्भगवतो
 महापुरुषस्यमहाजलौघमध्ये, परिभ्रममाणानामनेककोटिब्रह्मा-
 ण्डानामेकतमे अच्यक्तमहदहङ्कारपृथिव्यप्तेजोवाग्वाकाशाद्याव-
 रणैरावृते, अस्मिन्महनिब्रह्मांडांघडे, आधारशक्तिश्रीमदादि
 चाराहदंष्ट्राप्रविराजिते, कर्म्माऽनन्तवासुकि तत्तककुलिकककॉटक
 पञ्चमहापद्मशंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे, गेरावतपुंढरीकवामन्
 कुमुदांजनपुष्पदंत सार्वभौमसुप्रतीकाष्टदिग्गजप्रतिष्ठितानामनल-
 वितलसुतलनलानलरसातलमहातलपानाललोकानामुपरिप्रतिष्ठिते,
 भूर्लोकभुवर्लोक स्वर्लोकमहर्लोक जनोलोकतपोलोकसत्य लोकाग्न्य
 सप्तलोकानामधोभागे, चक्रवालशैल महावलयनागमध्यवर्त्तिनो
 महाकालमहाफणिराजशेषस्य, सहस्रफणानांमणिमंडलमंडिते,
 दिग्दन्तिशुंडोत्तम्भिते, अमरावच्यशोकवती भोगवतीसिद्धवती
 गान्धर्ववती काञ्च्यवन्त्यलकावती यशोवतीतिपुराणपुरीप्रतिष्ठिते
 इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायु कुबेरेशानाष्टदिक्पालप्रतिष्ठिते,
 धरध्रुवाधरसोमयाप्रभंजनानल प्रत्युपप्रभासाख्याष्ट वसुभिवि-
 राजिते, हरज्यंभकरुद्र सृगन्याभापराजित कपालीभैरव शम्भुक-
 पर्दिष्टृषाकपिवहुरुपाग्न्यैकादशगन्धैः संशोभिते, मद्रोपेन्द्रसवितृ
 धातृत्वष्टूर्धमेन्द्रेशानभगमित्रपपाग्न्य द्वादशादित्यप्रकाशिते,, १०

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहार धारणाध्यान समाध्यष्टाङ्गयोग-
 निरतवशिष्टवालखिल्य विश्वामित्र दक्षकात्यायनकौण्डिन्य
 गौत्तमाङ्गिरस पाराशर्यव्यासवाल्मीकिशुकशौनक भरद्वाजसनक
 सनन्दनसनातनसनत्कुमारनारदादि मुख्यमुनिभिः पवित्रिते,
 लोकालोकाचलवलपिते, लवणेक्षुरससुरासर्पिर्दधि क्षीरोदकयुक्त
 सप्ताण्वपरिवृते, जम्बू-प्लक्ष शाल्मलिकुशक्रौंच शाकपुष्करारव्य
 सप्तद्वीपयुते, इन्द्रकांस्यनाम्रग मस्तिनागसौम्यगन्धर्वचारणभार-
 तेति नवग्वंढमंडिते, सुवर्णगिरिकर्णिकोपेत महासरोरूहाकार
 पञ्चाशत्कोटियोजनविस्तीर्णं भूमंडले, अयोध्यामथुरामाया काशी
 काञ्च्यवन्तिकाद्वारावतीतिसप्तपुरीप्रतिष्ठिते, महामुक्तिप्रदस्थले,
 शालग्रामशंभलंनन्दिग्रामेतिग्रामत्रयविराजिते, चम्पकारण्यवदरि-
 कारण्यदंडकारण्यार्बुदारण्यधर्मारण्य पद्मारण्यगुहारण्यजम्बुका-
 रण्य, विन्ध्यारण्यद्राक्षारण्यनहुवारण्यकाम्यारण्य द्वैतारण्यनैमि-
 पारण्यदीनांमध्ये, सुमेरुनिपधकूट शुभ्रकूट श्रीकूट हेमकूट रजत
 कूट चित्रकूट किष्किंधारश्वेताद्रिकूट हिमविन्धाचलानां, हरिवर्ष
 किंपुरुषवर्षयोश्चदक्षिणे, नवसहस्रयोजनविस्तीर्णं भरतग्वंढे, ।
 मलयाचलसह्याचलविन्धाचलानामुत्तरेण, स्वर्णप्रस्थचंडप्रस्थसू-
 क्तिक आवन्तकरमणक महारमणकपांचजन्य सिंहललङ्काऽशोकव-
 त्यलकावती सिद्धवती गांधर्ववत्यादि पुण्यपुरीविराजिते, नवग्वं
 टोपद्वीपमंडिते दक्षिणावस्थितरेणुकाद्रघसूकर काशीकाञ्ची
 कालिकावटेश्वर कालङ्गर महाकालेनिनवोत्वरयुते, द्वादशज्योति-
 र्हिङ्ग भागीरथी गौमती क्षिप्रायमुना सरस्वती नर्मदा तापीपयो-
 णीचन्द्रभागा कावेरी मन्दाकिनी प्रवराकृष्णावेण्याभीमरथी
 तुङ्गभद्रामलापहा कूनमालाताम्रपर्णी विशालाक्षीचंचुला चर्मण्य-
 तीवेत्रवतीभोगवती विशोकाकौशिकीगंडकीसरयू सर्वपापहा-
 रिणी शोणाभवनाशिनीत्यनेक पुण्यनदीभिर्विलसिते ब्रह्मपुत्र
 सिन्धुनदादि परमपवित्रजलविराजिते, हिमवन्मेरु गोवर्धनकौ-
 शचित्रकूट महेन्द्रमलय सहोन्द्रकील पारियात्राद्यनेक पर्वतसम

न्विते, मतंगमाल्यकिष्किन्ध ऋष्यशृङ्गेति महानगसमन्विते, ।
 श्रंगवंगकलिंग काश्मीरकांचोजसौवीर सौराष्ट्र महाराष्ट्रमगधने
 पालकेरल चोरलपांचालगौड मालवमलयसिंहलद्रविडकर्नाटक
 ललाटकरहाटवरहाटपानाट पाण्ड्यनिपधमागध आन्ध्रदशार्णव
 भोजकुम्भगान्धारविदर्भ विदेहवाल्हीकवर्षरकेकेय कोशलचिराट
 शूरसेनकोङ्कणकैकट मत्स्यभद्रपारसिक खर्जूरयावनम्लेच्छजाळंधरे-
 ति सिद्धवत्यन्यदेश विशेषभाषा भूमिपालविचित्रिते, इलाष्टनकुम्भ-
 भद्राश्वकेतुमाल किंपुरुपरमणक हिरण्ययादि नववर्षाणांमध्ये
 भरतखण्डे, कोकनहिरण्यशृङ्गकुब्जावृद्धमणिकर्णिवट शालग्राम
 सूकरमथुरागया निष्क्रमण लोहार्गलपोतस्वामि प्रभासवदरीति
 चतुर्दशगुहाविलसिते जम्बूद्वीपे कुम्भेन्द्रादि समभूमध्यरेखायाः
 पूर्वदिग्विभागेकुलमेरोर्दक्षिण दिग्विभागे, विन्ध्यस्योत्तरभागे
 गंगाद्वारतोत्तरदिग्विभागे—कर्मभूमौ त्र्यासवसिष्ठादि परमभा-
 गवतमुनिवराश्रमानुपवित्रिते हिमवत्पर्वतैकदेशे, (अलकनन्दा
 भागीरथी यमुनासरस्वती मंदाकिनी क्षीरगंगा स्वर्गरोहिणी
 ऋषिगंगा कांचनगंगा गरुडगंगा धवलापिंडरगंगा, तथाकेदारक्षे-
 त्रांतर्गत वैष्णवी मंदाकिनी कालीगंगा भिलंगनाद्यनेक सुरधुनी
 सहस्रपुण्यधाराप्रविलसिते, मायापुरीगंगाद्वारकुब्जाम्रतपोवनश्री
 क्षेत्रादि नानाक्षेत्रसंशोभिते, देवप्रयाग रुद्रप्रयाग स्कन्दप्रयाग क-
 ष्यशश्रमप्रयागविष्णुप्रयागगणेशप्रयागेति महाप्रयागनानान्दीनद
 संगमजनितोपप्रयागसंवलितेकेदारखण्डे केदारनाथ गदमहेश्वर वि-
 श्वनाथतंगनाथरुद्रनाथ कल्पनाथकमलनाथ भिल्लेश्वराद्यनेकशिव-
 लिंगालंकृते उर्वशी नवदुर्गानन्दाराजराजेश्वरी, भुवनेश्वरी, वाला-
 त्रिपुरसुन्दरी, त्रिण्डिकाष्ठिन्नमस्तां, मार्गदायी कालिकामहिषम-
 दिनीगौरीउमामाहेश्वर्यादि शक्त्याधृते, श्रीनरनारायणक्षेत्रेवदरी,
 श्वरनरनारायण कुबेरोध्वज नारदगरुड घण्टाकर्ण कैलासवृत्तसिंह
 योगेश्वर केदार ब्रह्मरूपालशिला नारदशिला वाराहशिला वृत्तसिंह
 शिला मार्कण्डेयशिला संगतक्षेत्राग्निनारदीय प्रह्लादकर्म वसो-

धारादि परमपावनतीर्थ विलसितेचदिरिक(श्रमे,, अलकनन्दाया
 वामकूले दक्षिणकूले वा पिंडरनद्यारचोत्तरकूले दक्षिणकूले वा
 अलकनन्दा भांगीरध्वोरंतराले अमुक स्थाने (ग्रामे) मत्स्यकर्म
 वराहवृत्सिंहः धामन परशुराम रामकृष्णबुध्दकल्कीनिदशावतारा-
 णांमध्ये चौध्दावनारे,, नानादेवतीर्थसरिद्धिः पाविनेनवसहस्र-
 योजनविस्तीर्णभारतवर्षे,, निम्बिलजन पावन परमभागवतोत्तम
 शौनकादि निशासिते नैमिपारगये आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक-
 देशे, सूर्यान्वयभूभृत्प्रनिष्ठिते श्रीमन्नारायण नाभिकमलोद्भूत-
 सकलजगत्प्रपुः परार्ध्वद्वयजीविनोन्नमणोद्वितीयपार्धे, एक-
 पंचाशत्तमवर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिसे अद्भुतोद्वितीययामे
 तृतीयेमुहूर्त्तंतरादि-द्वात्रिंशत्कल्पानांमध्येऽष्टमे श्रीश्वेतवाराह-
 कल्पे,, स्वायंभुयादि चतुर्दशमन्वन्तराणांमध्ये सप्तमेवैवस्वत-
 मन्वन्तरे,, कृत्तत्रेनाद्वापरकल्कसंज्ञकानांचतुर्णां युगानांमध्ये,,
 वर्त्तमाने अष्टात्रिंशतितमेकलियुगे प्रथमचरणे, श्रीमन्वृषविक्रमा-
 कायथ,संख्यागमेन चांद्रसौरनाक्षत्रादि प्रकारेणागतानांप्रभवा-
 दिपष्टि सम्बत्सराणांमध्ये, अमुकनाम्निसम्बत्सरे,, उत्तर (वाद-
 क्षिण) गोलावलंबिनि श्रीमात्तडमंडले, अमुकतौ, अमुकमासे,
 अमुरुपक्षे, अमुकनिथौ, अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे,
 अमुककरणे, अमुकराशिस्थेसूर्ये, चन्द्रे, भौमे, बुधे, गुरौ, भृगौ,
 शनौ, राहौ, केतौ,, यथायथा स्थानस्थितेषुसत्सु, एवंगुणविशो-
 षेण विशिष्टायां शुभपुण्यनिथौ,, अमुकगोत्रप्रवरोऽमुकराशिः
 सपत्नीपुत्रपौत्रादिपरिवारयुतोऽमुकशर्माहं, (वा वर्मा, वा
 गुप्तोऽहम्) मम—(महापापोपपायाभ्यां नानायोनिपुयत्कृतम् ।
 बालभावेनयत्पापं लुप्तुर्ध्वं चयत्कृतम् ॥ आत्मार्थैवयत्पापंपरा-
 र्थैवयत्कृतम् ॥ तीर्थेषुचैवयत्पापंगुर्वैवजांकृतंचयत् ॥ रागद्वे-
 षादिजनितकामक्रोधेनयत्कृतम् ॥ हिंसानिद्रादिजंपापं भेददष्टधा-
 चयन्मया । देहाभिमानजंपापं सर्वेदायन्मयाकृतम् । भृतंभव्यं-
 चयत्पापं भविष्यंचैवयत्कृतम् ॥ शुष्कमार्द्रचयत्पापं जानता-

जानताकृतम् ॥ महत्त्वद्युचयत्पापं तन्मेत्तिप्रं प्रणयति ॥ ब्रह्महा-
 मद्यपस्तेयी तथैवगुरुनल्पगः । महापापानिचत्वारितत्संसर्गांतु-
 पंचमः ॥ अनाहिताग्नितापस्य विक्रयःपरिवेदनम् । इन्धनार्थ-
 द्रुमच्छेदःस्त्रीहिंसौपधि जीवनम् ॥ कृमिकीटादिहननंयत्किञ्चि-
 त्प्राणिहिंसनम् । मातापित्रोरशुश्रूयातद्वाक्याकरणंतथा ॥ परका-
 र्यापहरणं परद्रव्योपजीविनम् । ततोऽज्ञानकृतंवापि कायिकंवा-
 चिकंतथा । मानसंत्रिविधंपापंप्रायश्चित्तरनाशिनम् । तत्सर्वना-
 शयेःक्षिप्रंकन्यादानेन केशव ॥ (स्त्रीणांविशेषः)—पाणिग्रहण-
 मारभ्य स्वकर्मापरिपालनम् ॥ इन्द्रियाभिरतिःपुंसु नानायोनि-
 युयाभवेत् । कृमिकीटादिहननं पंक्तिभेदादिकं तथा । स्पृष्टास्पृष्ट-
 मनाचारं मनसादोषकल्पनम् । तत्सर्वनाशयेः क्षिप्रंकन्यादाने न-
 केशव) । इत्यादि प्रकीर्णपातकानां एतत्कालपर्यन्तं संचितानां-
 लघु स्थूलसूक्ष्माणां च निःशेषपरिहारार्थं, तथाच—आध्यात्मि-
 काधिभौतिकाधिदैविकनापत्रयनिराकरणाय,, जाताजातमनोवा-
 क्कायकर्मजनिताखिलपापापनोदनाय च कन्यारोमसमसंख्यक-
 शनसहस्रगुणितदिव्यवर्षनिरतिशयसानन्दगोलोकावाप्तयेऽनेन -
 यरेणास्यांकन्यायामुत्पादयिष्यमाणसन्नत्या आत्मनोमातृपितृ-
 वंशजान्द्रादशपूर्वान्द्रादशपरान् आत्मनश्चपवित्रीकर्तृकामः
 कन्यादानकल्पोक्तज्योतिष्टोमातिरात्रसमफलावाप्तिकामः श्रुति-
 स्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तये श्रीधर्मस्वरूपीस्वेष्टदेवताप्रीतयेच,,
 अमुक गोत्रस्यत्र अमुकप्रवरस्य अमुकशाग्निः,अमुकवेदाध्यायिनो
 ऽमुकशर्मणःप्रपौत्राय ॥ अमुकगोत्रस्यअमुकप्रवरस्यअमुकशा-
 ग्विनोऽमुकवेदाध्यायिनो ऽमुकशर्मणःप्रपौत्राय । अमुकगोत्रस्या
 अमुकप्रवरस्या अमुकशाग्निनोऽमुकवेदाध्यायिनो ऽमुकशर्मणःपुत्राय
 आयुष्मते विष्णुस्वरूपिणे कन्याधिने, अमुकगोत्रायामुकप्रवराय
 ऽमुकवेदाध्यायिने अमुकशर्मणे वराय,,—अमुकगोत्रस्यअमुक-
 प्रवरस्य,अमुकशाग्निनोऽमुकवेदाध्यायिनोऽमुकशर्मणःप्रपौत्री ।
 अमुकगोत्रस्यअमुकप्रवरस्य अमुकशाग्निनो ऽमुकवेदाध्यायिनः ।

अमुकशर्माणः पौत्रीम् । अमुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशास्त्रिनो ऽमुकवेदाध्यायिनो ऽमुकशर्माणः पुत्रीं आयुष्मतीं श्रीरूपिणीं वराधिनीं, अमुकीनाम्नीमिमांकन्यां यथाशक्यत्वं कृतां यथा शक्युपकल्पित यौतकयुतां प्रजापतिदेवतां, देवाग्निगुरुब्राह्मणसन्निधौ, अग्न्यादिसाक्षिकतया सह धर्माचरणाय तुभ्यमहं संप्रददे, प्रतिगृह्णातु भवान् ॥ इति दाता उत्थाय ॐ सकृदा तु लसीदलसुवर्णयुतं शंखं कन्यादक्षिणांगुष्ठं वरदक्षिणहस्ते समर्पयेत्, सच कन्यांगुष्ठमंचलग्रंथिकरणात्पूर्वनमुञ्चेत्, दातोत्थायैव दानवाक्यानि पठेत्—३० कन्यांकनकसंपन्नामनेकाभरणैर्गुताम् । दास्यामि विष्णवे तुभ्यं ब्रह्मलोक जिगीषया । विश्वम्भरः सर्वभृताः साक्षिण्यः सर्वदेवताः ॥ इमांकन्यांप्रदास्यामि पितृणां तारणाय च ॥ ततः प्रार्थयेत्—गौरींकन्या मिमांविप्रयथाशक्तिं विभूषिताम् ॥ गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्तां विप्रसमाश्रय । कन्यालक्ष्मीः समाख्याता वरो नारायणः स्मृतः । तस्मात्कन्या प्रदानेन कृष्णो मे प्रीयतामिनि ॥ ततो वरकन्ययोर्लक्ष्मीनारायणनिमित्तकं पूजनमप्याचरन्ति केचित् ॥ इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्—३० नारायण महा बाहो लक्ष्म्या सह दयानिधे, कन्यादानेन सुप्रीतः सदाशान्तिं प्रयच्छस्व मे, ततः कन्यां प्रार्थयेत्—कन्ये ममाग्रतो भूयाः कन्ये मे देवि पार्श्वयोः कन्ये मे पृष्ठतो भूयास्त्वहानान्मोक्षामां पुयाम्, ततो वरः पठेत् ३० देवस्य त्वासवितुः प्रसवेशिवनो र्बाहुभ्यां पूरणो हस्ताभ्याम् ३० प्रजापतये कन्यां प्रतिगृह्णामि—ॐ यौस्त्वा ददातु पृथिवीत्वा प्रतिगृह्णातु । ३० स्वस्ति इत्युक्त्वा कामस्तुतिं पठेत्—३० कोऽदात्कस्मो ऽग्रदात्कामो ऽदात्कामाया दान्, कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामं तत्ते । ततो दाता वद्धांजलिः पुनः पठेत्—कन्यो मम गृहे जातापालिता वत्सराष्टकम् । तुभ्यं विप्रमया दत्ता पुत्रपौत्रविधिनी । धर्मं चार्थं

*टि.—विद्य नगरि ज.ते—वृहस्पतिः—चतुर्धादं गृहं कन्यां दामोद्विप्रस्यं तरुम् तिष्ठन्तेनाग्निजोदया हृभृथादीनुपविश्य च,,

च कामेच नातिरितव्यात्प्रयेयम् ततोवरः—नातिचरामीति
 द्र्यात्, ततः कन्यादाताउपविश्य कन्यादानप्रतिष्ठांकुर्यात्, ततः
 सुवर्णं यथावित्तं हस्ते गृहीत्वा निलकुशयवजलान्यादाय ३० तत्स-
 दयेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोहं कन्यादानकर्मणः सांगफलावा-
 प्तये प्रतिष्ठार्थमिदं सुवर्णमग्निदैवतं अमुकगोत्रायामुकशर्मणैवराय
 तुभ्यंसंप्रददे इतिदत्त्वा वरश्च ३० स्वस्ति इतिवदेत् । ❀ अत्राचा-
 रादन्यदपि यौतकत्वेन सुवर्णरजतताम्रगोमहिष्यश्वग्रामादिकन्या
 पितायथासंभवंददति, अन्येऽपि चान्धवादयो यथाधित्तं यौतकं
 प्रयच्छन्ति केचन होमान्ते गोदानसमये प्रयच्छन्ति, अत्र देशाचारतो
 व्यवस्था, ततः शिष्टाचारात्पुरोहितादिः द्रव्यपूगीफलसर्पपाक्षत
 हरिद्राभिः संमिलितमंगलपदार्थैर्वरकन्ययो र्वस्त्रांचलग्रन्थि ३०
 भद्रं कर्णेभिरिति पठित्वा, दृढं वध्वा, एतन्ते देव० इति प्रतिष्ठाप्य, ३०
 भूर्भुवः स्वः अंचलग्रन्थे सुप्रतिष्ठितो भव, तंचतुर्थी कर्मपर्यन्तं
 नमोचयेत् । ततो वरो वध्वा अंगुष्ठं त्यजेत्, ततः कन्यापिता कन्यादान-
 साद्गुणयार्थं भूयसीदानं कुर्यात्—ततः स्ववित्तानुसारं द्रव्यं हस्ते नि-
 धाय संकल्पः अद्येत्यादिदेशकलौ संकीर्त्यामुकराशिरमुकशर्मा
 सपत्निकोहं कन्यादानकर्मणः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तसांगफलावाप्तये
 श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीत्येद्मां भूयसीदक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो
 ब्राह्मणेभ्यो नटनर्तकेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च विभज्य दास्ये ३०
 तत्सन्नमम, ।

❀ अथ च देशाचाराच्छोलिकाभरणम् ❀

जीवितपतिपुत्रवतीस्त्रियमाह्वय एकस्मिन्कास्यपात्रे शुक्लं
 तन्दुललडुकफलेक्षुदंतद्रव्याणि कदलीफलद्राक्षापूगीफल जाती
 फल जम्भीरीफल बीजपूरफलनिम्बफल आम्रफल अक्षौटकफल

* टि०—कन्यादानमारभ्य चतुर्थी कर्मपर्यन्तं विवाहशब्देनोच्यते तन्मध्ये
 कन्यया स्वपित्रादिभ्यो यजनं प्राप्तं तर्थात्कर्मिणि जयगाम एगिहरी ।

नारिकेलफलानि कांस्यपात्रस्थितानि जातमात्र जीवितपुत्रपति
 वती स्त्रीहस्तेन, (तदभावेकन्याहस्तेन) ब्राह्मणायदद्यात् । तत्र
 मंत्रः—३० याः फलीनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः। वृहस्प-
 तिप्रसृतास्तानोमुचन्त्य ई० हसः । इतिप्रथमम् । अथद्वितीयम्—
 कर्पूरलासुवासितशर्कराघृतमिश्रितानि भोदकशकुली सुहालिका
 फेणीसर्वपक्वानि सुवर्णरौप्यकांस्यपात्रस्थितानिपतिपुत्रवती
 स्त्रीहस्तेन गृहीत्वा ब्राह्मणायप्रयच्छेत्—मंत्रः—३१ अन्नपतेन्नस्य
 नोदेहानमीवस्यशुष्मिणः । प्रप्रदातारं तारिपऽऊर्जन्नो धेहिद्विपदे
 शंचतुष्पदे ॥२॥ ततस्तृतीयम् ततोवासांसि हरितपीतश्वेतरक्त
 नीलमंजिष्टकौसुम्भकाशमीरादि नानादिग्देशजातानि बहुमूल्यानि
 दुकलोत्तरीयकंचुकादीनिकांस्यादिपात्रोपरिस्थापितानिकुमारीहस्तेन
 सौभाग्यवत्प्रदद्यात् मंत्रः—३२ यदश्वोयच्चासऽउपसृणंत्यधीवासं
 या हिरण्यान्यस्मैसन्धानमर्चन्तं पट्वीशंप्रियादेवे प्वायामयन्ति
 इतिदत्त्वा । ततश्चतुर्थम्—मणिमौक्तिक हीरक गारुत्मत मरकतपु-
 ष्परागादि विविधोपशोभितस्वर्णरचित कटककेयूर पदांगुलीयक
 कांचीहार ग्रैवेयक नासिकाभरणादि विविधाभरणानि सुवर्ण-
 रौप्य कांस्यादि पात्रस्थितानि कन्यायै प्रयच्छेत्३३ हिरण्यगर्भः
 समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् । सदाधार पृथ्वीं
 द्यामुतेमांकस्मै देवायहविपाञ्चिधेम ॥ ३४ रूपेण वोरूपमभ्या
 गांतुथोवोविश्ववेदाविभजतु । ऋतस्यपंथाःप्रेतचन्द्रदग्निणाविश्वः
 पशद्यंतरिजं यतस्वदस्यै । इतिश्लोकिकाभरणम् । अध्वरः पित्रा-
 प्रत्तामादाय स्वदक्षिणहस्तेनकन्यायाः वामहस्तेन गृहीत्वातामग्रतः
 कृत्वादानगृहादवेद्यामग्निसमीपे गन्तुंनिष्कामयेत् । ३५ यदैपीत्या
 ध्वेणऋपिरनुष्टुप्छन्दोलिंगोक्ता देवता निष्कामणे विनियोगः ३६
 यदैपिमनसादूरंदिशोनुपवमानोवा हिरण्यपणोविकर्णः सत्त्वा
 मन्मनसां करोतु हे ! श्रीअमुकदेविमयासहाग्रतो गच्छ । ततोऽग्रतः
 कश्चिद्ब्राह्मणेजलपूर्णकलशंस्कन्धेनिधायगच्छेत् ॥ ततः कन्यावरौ
 अग्निसमीपं गच्छन्तौ कन्यापितापरस्परं समीक्षथामितिप्रैवेण

ॐ अघोरचक्षुरित्यादीनां चतुर्णांमंत्राणांप्रजापति ऋषिरायन्तयो
 स्त्रिष्टुवमध्ययोरनुष्टुप्छन्दः कुमारीदेवता परस्परसमीक्षणे विनि-
 योगः । ॐ अघोरचक्षुरपतिघ्नेधि शिवापशुभ्यः सुमनाः सुवर्चा
 वीरसूद्वेवकामास्योनाशन्नोभवद्विपदे शंचतुष्पदे ॥१॥ सोमः—
 प्रथमो द्विविदेगन्धर्वोद्विविदऽउत्तरः । तृतीयोऽग्निष्टेपतिस्तु-
 रीयस्तेमनुष्यजाः ॥२॥ सोमोऽदददग्ंधर्वाय गंधर्वोऽदददग्नये
 रयिंचपुत्रांश्वादादग्निर्महामर्थोऽइम्माम् ॥३॥ सानः पूषाशिव
 तमामैरयसानऽऊरुऽउशतीव्विहर । यस्यामुशन्तः प्रहरामशेषं
 यस्यामुक्तामवहवोनिविष्ठवै ॥४॥ इतिमिथः समीक्षणंकुरुतः ।
 सचस्कन्धकलशीयो ब्राह्मणआमृद्धीभिषेकात्तं जलपूर्णकुम्भंस्कन्धे
 धृत्वावाग्यतो दक्षिणतस्त्रिण्डेत् । अथच वरोवभूंअग्रतः कृत्वा
 अग्निप्रदक्षिणीकृत्य वभूंस्वदक्षिणतः कृत्वा दक्षिणपादेनकटं
 (चटाई) उल्लंघ्य दक्षिणपादनग्रतः कृत्वा उपविशेत् । ततोवर
 त्त्रिराचम्य प्राणायामत्रयं विधायवभूंदक्षिणपार्श्वे उपवेश्यअर्घं
 संस्थाप्य प्रधानं संकलंकुर्यात्—अद्यहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्य
 अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं चातुर्वर्गकलाप्तये श्री परमेश्वरप्रीतये
 पितृप्रत्तामिमांगौरीं कन्यां ब्राह्मविधिना विवाहयिष्ये । तत्पूर्वा-
 गतया विवाहहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणादि ब्रह्मकर्मकर्तृब्रह्मणः
 पूजनपूर्वकं वरणंकरिष्ये इतिदक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्थं ब्राह्मणं
 गंधाक्षतादिभिः सम्पूज्य वरणसामग्रीं सम्पूज्य च करेधृत्वा
 अद्यहेत्यादि संकीर्त्य अमुकराशिरमुकशर्माहं एभिर्गन्धाक्षतगुण्य
 पूगीफलद्रव्यवासोभिः विवाहहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणादि
 ब्रह्मकर्मकर्तुं अमुकशर्माणं ब्रह्मत्वेनत्वामहंवृणे, ॐ धृतोस्मीति
 ब्रह्माध्यायात् । यथा चतुर्भुवो ब्रह्मा स्वर्गेपञ्चनिरीक्षकः । तथात्वं
 मम यजेऽस्मिन् ब्रह्माभव द्विजोत्तमः । इति प्रार्थ्य, अग्नेरुत्तरा-
 सने ब्रह्माणंवृत्वा, ततो ब्रह्माणमग्निं प्रदक्षिणक्रमेणानीय अग्ने
 र्दक्षिणतः कल्पितासने उदङ्मुखं ब्रह्माणमुपवेशयेत् । तत आचा-
 र्यस्यासनं परकन्ययोश्चासनं अग्नेःपश्चात्प्रागग्रकुशैः संपाद्यतत्रो-

पविश्य, प्रणीतापात्रंसव्ये पाणौकृत्वा दक्षिणहस्तेन पात्रस्थजले-
 नापूर्य दधैराल्हाद्य ब्रह्ममुवमवलोक्य अग्नेरुत्तरतः कुशोपरिनिद-
 ध्यात् । ततः परिस्तरणम् । वह्निर्मुष्टिमादाय ईशानादिप्राग्गैर्वाह्नि-
 भिरुदकसंस्थमग्नेः परिस्तरणं कृत्वा अर्थवद्वस्तून्यासाद्य परिच-
 मदिशि पवित्रछेदनानि त्रीणिकुशानि, द्वेपवित्रे, प्रोक्षणीपात्रं,
 आज्यस्थाली, संमार्जनकुशाःपंच, उपयमनकुशास्त्रयोदश, समि-
 धस्तित्रः । सुवः आज्ये, पूर्णपात्रं कर्मोपयोगिनीदक्षिणा एतानि
 वस्तूनिअग्नेः पश्चात्स्थापयेत् तत्र पात्राणिप्राग्विलान्युदग्राणि
 स्थापयेत् । तत्रैवशमीपलाशमिश्राः लाजाः पालाशपत्रद्वयम् अख-
 डारमा, कुमारीध्राना, तदभावेसजातीयोवा, नवीनंशुर्पं, दधिमा-
 पाभ्यक्ततंडुलाः कार्पासवर्तिकाघृताक्ताः, दधिमोदकाः, कटुतैलं,
 दर्पणः चूडिका, कज्जलं, सिन्दूरं, विंदिकादिसौभाग्यद्रव्याणि ।
 ततः पवित्रछेदनार्थं स्त्रिभिर्दधैः प्रादेशमात्रेद्वेपवित्रेच्छित्वा, प्रो-
 क्षणीपात्रंप्रणीतासन्निधौ पुरतः कृत्वा तस्मिन्प्रणीतौदकं मासिच्य
 पवित्राभ्यां तज्जलमुत्क्षिप्य, पवित्रेप्रोक्षण्यानिधाय, दक्षिणहस्ते-
 न प्रोक्षणीपात्रमुत्थाय वामहस्तेघृत्वा तदुदकस्य दक्षिणहस्तस्य
 मध्यमाज्नामिकांगुल्योर्मध्यपर्वाभ्यामुच्छ्रालनंकृत्वा प्रणीतोद-
 केन तज्जलंप्रोक्षेत् । प्रोक्षण्युदकेन पवित्राभ्यांआज्यस्थाल्यादीनि
 वस्तूनि प्रोक्षेत् । आज्यस्थाल्यामाज्यं निरूप्याधिश्चित्त्यज्वलत्तृ-
 णेन प्रदक्षिणक्रमेण हविर्वेष्टयित्वा तद्गृहौप्रक्षिपेत् । दक्षिणहस्तेन
 श्रुवमधोमुखंप्रतप्य, सव्येहस्तेकृत्वा संमार्जनपंचकुशैर्भूलं, मध्यै
 र्मध्यं अग्रैरग्रंसंमार्ज्यतान्कुशान् वह्नौ प्रक्षिपेत् । ततः प्रणीतो
 दकेन श्रुवमभ्युक्ष्य पुनःप्रतप्यस्वदक्षिणतः कुशोपरि निदध्यात्,
 आज्यमग्नेरवतार्य अंगुष्ठानामिकाभ्यां गृहीतपवित्राभ्यां आज्यमु-
 त्क्षिप्य अवेक्ष्य अपद्रव्यनिरसनंकृत्वा प्रोक्षणीवत्पवित्राभ्यामु-
 त्क्षिप्य तत्रपवित्रेनिदध्यात् । उपयमनत्रयोदशकुशान् । दक्षिण
 हस्तेनादाय वामेकृत्वोत्तिष्ठन् घृताक्तास्तित्रस्समिधस्तूष्णीमग्नौ
 प्रक्षिपेत् । ततःपवित्रेण प्रोक्षणीजलेन ईशानादुत्तरपर्यन्तं सम्प्रो-

क्षय पवित्रेप्रणीतायां निदध्यात् । संस्रवधारणार्थं प्रोज्जणीपात्रं
 प्रणीताग्न्योर्मध्ये निदध्यात् । ततोऽग्नेः पूजनम् । अग्निं परिज्व
 लय-३० एतन्तेदेव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणेतेनयज्ञमव-
 तेनयज्ञपतितेनमामव । मनोजूति जुपतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ
 मिमन्तनोत्वरिष्ठंयज्ञं ई० समिमंदधातुविश्वेदेवासऽहहमादयन्ता
 मोंप्रतिष्ठ । ॐ भूर्भुवःस्वः योजकनामाग्ने सुप्रतिष्ठितोवरदोभव
 इत्यग्निंप्रतिष्ठाप्य, (विवाहेयोजकोवह्निः) ३० अग्निंप्रज्वलितं
 वंदेजातवेदंहुताशनम् । सुवर्णवर्णमनघमनन्तं विश्वतोमुखम् । सर्वतः
 पाणिपादश्चसर्वतोक्षिशिरोमुखम् । विश्वरूपोमहानग्निः प्रणीतः
 सर्वकर्मसु । इति संप्रार्थ्य ॐ चत्वारिशृङ्गात्रयोऽस्यपादाद्वेशीर्षं
 सप्तहस्तासोऽग्रस्य । त्रिधावद्धो वृषभोरोरवीति महोदेवोमर्त्यां
 २॥ आविवेश । इति मंत्रेणाग्निं पाद्यगन्धादिभिः नैवेद्यान्तं
 सम्पूज्य, ३० ब्रह्मणेनमः प्रथमरेखां पूजयेत् ॐ विष्णवेनमः इति
 मध्यमरेखां ॐ महेश्वरायनमः इति तृ० रे० । आश्वाने जिह्वा-
 नांपूजनम् ३० कराल्यैनमः ३० धूमिन्यैनमः ३० श्वेतायैनमः ३०
 लोहितायैनमः ३० महालोहितायैनमः ३० सुवर्णायैनमः, ३०
 पद्मरागायैनमः । इति सप्तजिह्वाश्चसम्पूज्य । इतिकर्म आचार्य
 द्वारास्वयंवाकृत्वा वरःसंकल्पपूर्वकं देवताभिध्यानं करोति,
 अद्येत्यादिसवधूकोऽहं विवाहकर्मणायक्ष्ये, तत्र प्रजापतिं इन्द्रं,
 अग्निं, सोमं, अग्निं, वातुं, सूर्यम्, अग्नीवरुणौ, अग्निं, च्वरु-
 णंसवितारं विष्णुं त्रिश्वान्देवान् । मरुत, स्वर्कान्, च्वरुणम् । १२।
 ऋतासाहम्, ऋतधामानम्, अग्निं गन्धर्वम् ओषधीरप्सरसोमुदः ।
 स' ई० हितं त्रिश्वसामानं, सूर्यगन्धर्वं मरीचीरप्सरसऽआयुवः,
 सुधुम्णं ई० सूर्यरश्मिं, चन्द्रमसंगंधर्वं अपोऽप्सरऽज्ज्जः, भुज्युः
 सुपर्णं, यज्ञं, गन्धर्वं, दक्षिणऽप्सरसस्तावाः प्रजापतिं विश्वकर्माणं
 मनोगंधर्वम् ऋक्सामान्यप्सरसऽएश्रीः । १२। चित्तं चित्तिं, आकृतं
 आकृतिं, विजातः विजातिं मनः शकरीः दशं, पौर्णमासं, बृहन्-
 रथन्तरम् प्रजापतिम् । १३। अग्निभूतानामधिपतिं, इन्द्रं ज्येष्ठानां-

मधिपतिं, यमपृथिव्याअधिपतिं वायुमन्तरिक्षस्याधिपतिं सूर्य
दिवोऽधिपतिं, चन्द्रमसंनक्षत्राणामधिपतिं, बृहस्पतिं ब्रह्मणो
ऽधिपतिं, मित्रं दे० सत्यानामधिपतिं वरुणमपामधिपतिम् समुद्र
ॐ स्रोत्यानामधिपतिं, अन्नं ॐ साम्राज्यानामधिपतिंसोममोपधी
नामधिपतिं, सविनारंप्रसवानामधिपतिं रुद्रंपशूनामधिपतिं त्वष्टारं दे
रूपाणामधिपतिं, विश्वं पर्वतानामधिपतिं, मरुतोगणानामधिप-
तीन् पिशुन्, परान्, अवरान्- नवान् तनामहान् १८। अग्नि,
अग्निं, अग्निं वैवस्वतं मुत्सुं ॥१५॥ चाज्येनाहंयत्पेऽदानीं
क्रव्या देवता भिध्यानं करोति, अर्थमणं अग्निं, अग्निं अर्थमणं
अग्निं, अग्निं अर्थमणं, अग्निं, अग्निं भयं, च लाजै
रहंयद्दे पुनर्धरः। प्रजापतिं, अग्निं ॐ स्विष्टकृतं, चाज्येनाहंयत्पे,,
(एवंद्रव्य देवतेभिध्यानमात्रं कृत्वा, विराह होमस्य यजमान
एव कर्तृक त्वेन विवाहस्ये प्रत्याहुत्वन्ते नमस्तेत्यागं कुर्यात्)
ततः पातितदक्षिणजानुः कुक्षेन ब्रह्मणान्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नौ
स्रवेणाज्याहुतिर्देयात् ॥ तत्राघारादारभ्य द्वादशाहुतिपर्यन्तं
स्रवावशिष्टं हुनशेषं घृतपात्रे प्राशनार्थं प्रक्षिपेत् ॥ होममंत्राः—
ॐ प्रजापत्यादि चतुर्णां मंत्राणां प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्स्त्वन्दो
मंत्रोक्ता देवता आज्यहोमे विनियोगः । ॐ प्रजापतये स्वाहा
इदं प्रजापतये नमम । इति पूजापति मनसाध्यात्वा, ॐ इन्द्राय
स्वाहा इदमिन्द्राय नमम । इत्याधारौ हुत्वा, ॐ अग्रये स्वाहा
इदमग्रये नमम, ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय नमम इत्या-
ज्यभागौ । ततो महाव्याहृतिहोमः । महाव्याहृतीनां प्रजापति-
र्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्स्त्वन्दांसे अग्नि वायु सूर्या देवता
व्याहृतिहोमे विनियोगः । ॐ भूः स्वाहा इदमग्रये नमम, ॐ
भुवः स्वाहा इदंवायवे नमम, ॐ स्वःस्वाहा इदंसूर्याय नमम ॥—
ॐ त्वन्नो अग्ने इति चामदेव ऋषि स्त्रिष्टुप्स्त्वन्दः अग्नीवरुणौ
देवते सधंप्रायश्चित्तहोमे विनियोगः । ॐ त्वन्नोऽग्ने वरुणस्य
विष्वान्देवस्यहेडोऽथवयासिसीष्टाः । यजिष्ठो वहितमः शोशु-

चानोद्विश्वाद्देवा ॐ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणा
 भ्यां नमम । ३० सत्त्वन्नऽअग्न इति वामदेव ऋषिं स्त्रिण्डुप्लुन्दोऽ
 ग्नीवरुणौ देवते सर्वप्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ३० सत्त्वन्नोऽ
 अग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्टोऽअस्याऽउपसोऽव्युष्टौ । अथ यत्त्वनोऽव्य-
 रूण र्दं० रराणोऽवीहिमृडी रु र्दं० सुहवोन एधि स्वाहा ॥ इदमग्नी
 वरुणाभ्यां नमम ॥ ३० आयाश्चाग्न इति वामदेव ऋषिं स्त्रिण्डु-
 प्लुन्दोऽग्निर्देवता सर्वप्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ३० आयाश्चा-
 ग्नेऽस्थनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयाऽअसि । अयानो यज्ञं
 ब्रह्मास्यमानो धेहि भेषज ॐ स्वाहा । इदमग्ने नमम ॥ ३० येते
 शतमिनि वामदेव ऋषिं स्त्रिण्डुप्लुन्दो वरुणः सविता विष्णुर्विश्वे
 देवामरुतः स्वर्काश्च देवताः प्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ३०
 येते शतं व्यरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशाञ्चिततामहान्तः । तेभि-
 नोऽअद्य सवितो न विष्णुर्विश्वेभ्यो मन्त्रन्तु मरुतः स्वर्काः ॥ इदं वरुणाय
 सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यो नमम ।
 ३० उदुत्तममिति शुनः शोफ ऋषिं स्त्रिण्डुप्लुन्दो वरुणो देवता
 सर्वप्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ३० उदुत्तमं वरुणपाशमस्म
 द्वाधमं द्विमध्यम ॐ अथाय । अथा व्ययमादित्यव्रते तवानाग
 सोऽअदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणाय नमम । इति सर्वप्राय-
 श्चित्त होमः । अत्र प्रणीतोदकं स्पृष्ट्वा प्रायश्चित्त होम शान्त्य-
 र्थं यथा चित्तनिलपात्रादि दक्षिणादानं कुर्यात् ॥

अथ राष्ट्रभृद्भोमः ॥

३० ऋतापाडिति प्रजापतिर्ऋषिर्धनुश्छन्दः । ऋतापाड् ऋत-
 धामाग्निर्गंधर्वा देवता होमे विनियोगः । ३० ऋतापाड् ऋतधा-
 माग्निर्गन्धर्वः स न ऽ इदं ब्रह्मच्छत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इदं
 मृतासाहे ऋतधामाग्ने गंधर्वाय नमम ॥ ३० ऋतापाडिति
 प्रजापतिर्ऋषिर्धनुश्छन्दः ओषधयोमुदोऽप्सरसो देवता होमे
 विनियोगः । ३० ऋतापाड् ऋतधामाग्निर्गन्धर्व स्तस्योषधयोऽ

प्सरसोमुदोनाम ताभ्यः स्वाहा । इदमोषधीभ्योऽप्सरोभ्यो सुद्-
 भ्यो न मम ॥ ३० स ६० हित इति प्रजापतिर्ऋषिर्धनुश्छन्दः स
 ६० हितो विश्वसामा सूर्य्यो गन्धर्वो देवता होमे विनियोगः ।
 ३० स ६० हितो विश्वसामा सूर्य्यो गन्धर्वः स न ऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं
 पातु तस्मै स्वाहा वाद् ॥ इदं स ६० हिताया विश्वसाम्ने सूर्या
 य गन्धर्वाय न मम ॥ ३० स ६० हित इति प्रजापति ऋषिर्धनु-
 श्छन्दो मरीचयोऽप्सरस आयुवो देवताः होमे विनियोगः । ३०
 स ६० हितो विश्वसामा सूर्य्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरसऽ
 आयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा । इदंमरीचिभ्योऽप्सरोभ्यऽआयुभ्यो
 न मम ॥ ३० सुषुम्ण इति प्रजापतिर्ऋषिर्धनुश्छन्दः सुषुम्णः
 सूर्य्यरश्मिश्चन्द्रमाः गन्धर्वो देवता होमे विनियोगः ३० सुषुम्णः
 सूर्य्यरश्मिश्चन्द्रमाः गन्धर्वः स न ऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै
 स्वाहा वाद् । इदंसुषुम्णाय सूर्य्यरश्मयेचन्द्रमसे गन्धर्वाय नमम ॥
 ३० सुषुम्ण इति प्रजापतिर्ऋषिर्धनुश्छन्दो नक्षत्राण्यप्सरसोभे-
 कुरयो देवताः होमे विनियोगः । ३० सुषुम्णः सूर्य्यरश्मिश्चन्द्रमा
 गन्धर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरियो नाम ताभ्यः स्वाहा ॥
 इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरसोभ्यो भेकुरिभ्यो न मम ॥ ३० इषिर इति
 प्रजापतिर्ऋषिर्धनुश्छन्दः इषिरो विश्वव्यचा व्वातो गन्धर्वो देव
 ता होमे विनियोगः । ३० इषिरो विश्वव्यचा व्वातो गन्धर्वः
 स न ऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाद् ॥ इदमिषिराय
 विश्वव्यचसे व्वाताय गन्धर्वाय न मम ॥ ३० इषिर इति प्रजा-
 पतिर्ऋषिर्धनुश्छन्दः आपोऽप्सरस ऊर्जोदेवताः होमे विनियोगः ॥
 ३० इषिरो विश्वव्यचाव्वातो गन्धर्वस्तस्यापोऽप्सरसऽऊर्जो
 नाम ताभ्यः स्वाहा ॥ इदमद्भ्योऽप्सरोभ्यऽऊर्भ्यो न मम ॥
 ३० भुज्युरिति प्रजापतिर्ऋषिर्धनुश्छन्दः भुज्युः सुपर्णा यज्ञो
 गन्धर्वो देवता होमे विनियोगः ॥ ३० भुज्युः सुपर्णा यज्ञो गन्धर्वः
 स न ऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाद् ॥ इदं भुज्यवे सुप-
 र्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय न मम ॥ ३० भुज्युरिति प्रजापतिर्ऋषि-

यजुश्छन्दो दक्षिणाऽप्सरसस्तावा देवता होमे विनियोगः ॥ ३०
 भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणाऽप्सरसस्तावा नाम
 ताभ्यः स्वाहा ॥ इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यस्तावाभ्यो न मम ॥
 ३० प्रजापतिरिति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः प्रजापतिर्विश्वकर्मा
 मनोगन्धर्वो देवता होमे विनियोगः ॥ ३० प्रजापतिर्विश्वकर्मा
 मनोगन्धर्वः सनऽइदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाद् ॥ इदं
 प्रजापतये विश्वकर्मेणे मनसे गन्धर्वाय न मम ॥ ३० प्रजापति
 रिति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः ऋक् सामान्यप्सरसऽऽष्टयो
 देवता होमेविनियोगः ॥ ३० प्रजापति विश्वकर्मा मनो गन्धर्व-
 स्तस्यऽऋक्सामान्यप्सरसऽऽष्टयो नाम ॥ ताभ्यः स्वाहा ॥ इदं
 ऋक्सामेभ्योऽप्सरोभ्यऽऽष्टिभ्यो न मम ॥ १२ ॥ राष्ट्रभृद्धोम
 शान्त्यर्थं दक्षिणांदात्वा मंत्रं पठेत् ॥ गन्धर्वाप्सरश्चैव प्रयच्छन्तु
 यशः श्रियम् । दीर्घायुर्धनमारोग्यमुभयोः स्त्री कुमारयोः ॥

॥ इति राष्ट्रभृद्धोमः ॥

अथ जय होमः

३० चित्तं चेत्यादीनां द्वादशमंत्राणां परमेष्ठी ऋषिर्ऋषि-
 चित्तादयोमंत्र लिङ्गोक्तादेवताः होमे विनियोगः ॥ ३० चित्तं च
 स्वाहा, इदं चित्ताय न मम ॥ ३० चित्तिश्च स्वाहा, इदं चित्त्यै न
 मम ॥ ३० आकृतंच स्वाहा, इदं अकृताय नमम ॥ ३० आकृति-
 श्च स्वाहा, इदमाकृत्यै नमम ॥ ३० विज्ञातंच स्वाहा, इदंविज्ञा-
 तायनमम ॥ ३० विज्ञातिश्च स्वाहा, इदंविज्ञातयेनममः ॥ ३० मनश्च
 स्वाहा, इदं मनसे नमम ॥ ३० शकरीश्च स्वाहा, इदं शकरीभ्यो
 न० । ३० दर्शश्च स्वाहा, इदं दर्शाय नमम ॥ ३० पौर्णमासं च
 स्वाहा, इदं पौर्णमासाय नमम ॥ ३० बृहन्च स्वाहा इदं
 बृहते नमम ॥ ३० रथन्तरंच स्वाहा, इदं रथन्तराय न
 मम ॥ ३० प्रजापतिरिति मंत्रस्यपरमेष्ठी ऋषिर्ऋ-
 ष्टुच्छन्दः प्रजापतिर्देवताजयहोमे विनियोगः ॥ ३० प्रजा-

पतिर्जयानिन्द्राय वृष्णेः प्रायच्छुद्रुग्रः पृतनाजयेषु । तस्मै विशाः सम-
नमन्ता सर्वाः सऽउग्रः सऽइहृद्यो वभूवस्वाहा । इदं प्रजापतये नमः ॥
१३॥ अत्रोदकं स्पर्शः ॥ जयहोमशान्त्यर्थं दक्षिणादानम् ॥
दीर्घायुर्प्रयच्छन्तु जय होमस्थ देवताः । शान्तिरस्तु शिवंचास्तु
उभयोर्वरकन्ययोः ॥

॥ इति जयहोमः ॥

॥ अथाभ्यातान होमः ॥

ॐ अग्निभूतानामधिपति रित्यादीनां पतरः पितामहाः
इत्यन्तानामष्टादशमंत्राणां प्रजापतिर्ऋषिः पंक्तिरलुन्दो मंत्र
लिङ्गोक्ता अग्न्यादिदेवताः प्रतिमंत्रहोमे धिनियोगः ॥ ॐ अग्नि
भूतानामधिपतिः समाऽ त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे ऽ स्यामा
शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यादेवहृत्या ॐ स्वाहा । इदम-
ग्नयेभूतानामधिपतये नमः ॥ ॐ इन्द्रो ज्येष्ठानां मधिपतिः
समाऽ वन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे ऽ स्यामा शिष्यस्यांपुरोधा
यामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्या ॐ स्वाहा ॥ इदमिन्द्रायज्येष्ठाना-
मधिपतये नमः ॥ ॐ यमः पृथिव्या ऽ अधिपतिः समावन्त्वस्मिन्
क्षत्रे ऽ स्यामांशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्या
ॐ स्वाहा ॥ इदं वायवे अन्तरिक्षस्याधिपतये नमः ॥ ॐ सूर्यो
दिवोऽधिपतिः समावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे ऽ स्यामा शिष्य-
स्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्या ॐ स्वाहा ॥ इदं ॐ
सूर्यायदिवोऽधिपतये नमः ॥ ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः
समावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽ स्यामा शिष्यस्यां पुरोधाय-
मस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्या ॐ स्वाहा । इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणां
अधिपतये नमः । ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मणो ऽधिपतिः समावन्त्व-
स्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रे ऽ स्यामा शिष्यस्यांपुरोधायामस्मि-
न् कर्मण्यस्यां देवहृत्या ॐ स्वाहा इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये नमः
ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः समावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽ

स्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्या ॐ
 स्वाहा । इदं मित्राय सत्यानामधिपतयेनमम ३० व्वरुणोऽभ्या-
 मधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां
 पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्या ॐ स्वाहा । इदं व्वरुणाया-
 पामधिपये नमम ॥ ॐ समुद्रः स्त्रोत्यानामधिपतिः समाव-
 त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन्
 कर्मण्यस्यां देवहृत्या ॐ स्वाहा । इदं समुद्राय स्त्रोत्यानामधिपतये
 नमम । ३० अन्नं ॐ साम्राज्यानामधिपतिः तन्माऽवत्वस्मिन् ब्रह्म-
 रायस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां
 देवहृत्या ॐ स्वाहा । इदमन्नाय साम्राज्यानामधिपतयेनमम । ३०
 सोमोऽप्योपधीनामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्या
 माशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्या ॐ स्वाहा ।
 इदं सोमायौपधीनामधिपतयेनमम । ३० सविताप्रसवानामधि-
 पतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरो-
 धायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्या ॐ स्वाहा । इदं सवित्रे प्रसवाना
 मधिपतयेनमम । ३० रुद्रः पशूनामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्म
 ण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां
 देवहृत्या ॐ स्वाहा । इदं रुद्राय पशूनामधिपतयेनमम । १४ प्रणी-
 तोदकः स्पर्शः । ३० त्वष्टारूपाणामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्म
 ण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां
 देवहृत्या ॐ स्वाहा । इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतयेनमम । ३०
 मरुतो गणानामधिपतयस्ते समावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽ
 स्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्या ॐ स्वाहा
 इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्योनमम । ३० पितरः पितामहाः
 परेऽवरे ततास्ततामहाः इहमावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा
 शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहृत्या ॐ स्वाहा । इदं
 पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्योनमम

॥१६॥ अत्रोदकस्पर्शः । दक्षिणादानम् । अभ्यातानेचयेदेवाः प्रय-
च्छतुशुभांमतिम् । धनंयशस्यं पुत्रांश्चएतयोर्वरकन्ययोः
इत्यभ्यास्तानहोमः ॥

अथ अग्न्यादि पंचकहोमः ।

३० अग्निरैत्वित्यादीनांचतुर्णामंत्राणां प्रजापतिर्ऋषिः
त्रिष्टुप्छन्दोलिंगोक्ता देवता आज्यहोमे विनियोगः । ३० अग्नि-
रैतुप्रथमोदेवताना ॐ सोऽस्यै प्रजांसंचतुमृत्युपाशात् । तदय ६०
राजाव्वरुणोऽनुमन्यनां तथेय ॐ स्त्री पौत्रमघन्नरोदात्स्वाहा ॥
इदमग्नयेनमम । ३० इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यैनयतु
दीर्धमायुः । अशून्योपस्थाजीवतामस्तु माता पौत्रमानन्दमभि
विबुध्यतामिय ॐ स्वाहा । इदमग्नयेनमम । स्वस्तिनोऽअग्नेदिव
ऽआपृथिव्या त्विश्वानिधेह्यथायजत्र । यदस्यामहिदिविजातं
प्रशस्तंतदस्मासुद्रविण्णधेहिचित्र ॐ स्वाहा । इदमग्नयेनमम ।
३० सुगंतुपंथां प्रदिशन्नऽएहि ज्योतिष्मध्येह्यजरत्तऽआयुः । अर्पंतु
मृत्यु रमृतन्नऽआगाद्वैवश्वतोऽनुऽअभयंकृणोतु स्वाहा । इदं वैव-
श्वतायनमम । (रौद्रीपैत्रीं तथामृत्योः इति कारिकोक्तदोषत्वात्
संस्कार भास्करे दोषश्रवणात् । बधूं वस्त्रेणाच्छाद्य भंगं मनसिप-
ठन् जुहुयात् ।) ३० परं मृत्यविति संकसुक ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो
मृत्युर्देवता होमे विनियोगः । ३० परं मृत्योऽअनुपरेहिपंथांपस्ते
ऽअन्यऽइतरो देवयानात् । चतुष्मते शृण्वतेतेव्रवीमिमानः प्रजा
ॐ रीरिषीभोतव्वीरान् स्वाहा । इदंमृत्यवेनमम । अत्र प्रणीतोदकः
स्पर्शः । अत्रापिदक्षिणादानम् । मंत्रः—अग्निवैवश्वतोदैवः कीर्ति-
श्चायु प्रयच्छतांम् । नैरुज्यं धनसंपत्तिरेतयोर्वरकन्ययोः ।

अथ लाजाहोमः—

अथ च कुमार्या आता ज्येष्ठः कनिष्ठो वोपकल्पितान् शमी
पत्रपलाशपत्र मिश्रितानलाजान् घृतेनाभिधाय नूतनेसूर्पंचतुर्धा
विभज्य ततस्त्वेकं भागमादौ कुमार्याः (स्वभगिन्याः) अजलौ

दद्यात् । साच कुमारी तांबलाजान् अंजलौ गृहीत्वा प्राङ्मुखी
तिष्ठन्ती वरश्चानुष्टंभपरिक्रम्योत्तराभिमुखोवध्वादक्षिणतस्तिष्ठन्
वध्वा अंजलिदेशप्रथानुसारतउभाभ्यां हस्तभ्यां आलभेत । साच-
वधूमंत्रपठन्तीलाजान् जुहुयात् । (अत्रकन्यायाएवहस्तेनहोम प्रा-
धान्यतानतुवरहस्तेन । आयुष्मानस्तुमेपतिः इतिमंत्रप्रमाणात् ॥)
ॐ अर्थमणमित्यादिमंत्राणामथर्वणऋषिरनुष्टुप्छन्दो लिंगोक्ता
देवता लाजाहोमेविनियोगः ॐ अर्थमणदेवकन्याऽअग्निमयर्क्षत
सनोऽअर्थमादेवः प्रेतोमुंचतुमापतेः स्वाहा । ॐ इदमर्थम्णेनमम
इति वरोच्ययात् (इत्यंजलिस्थलाजानांतृतीयांशं अंजलि वामभागेन
जुहोति, स्त्रीणां वामांगं प्राधान्यात्) ॐ इयं नार्थुपचूतेलाजानाव-
पन्तिका ॥ आयुष्मानस्तुमेपतिरेधन्तांज्ञातयोमम स्वाहा । ॐ
इदमग्नयेनमम । इत्यर्धजुहोति । ॐ इमांल्लाजानावपाम्यग्नौ
समृद्धिकरणंतव । मम तुभ्यंच संवननं तदग्नि रनुमन्यतामिय
ॐ स्वाहा । ॐ इदमग्नयेनमम । इत्यंजलिस्थान् सर्वान् जुहोति
अथच वरोवध्वा सांगुष्टमुत्तानंदक्षिणहस्तंगृह्णाति । ॐ गृभ्णामी-
ति चतुर्णामंत्राणांयाज्ञवल्क भारद्वाजाथर्वण प्रजापतयऋषयः
त्रिष्टुबुष्णिगनुष्टुबयजूषिच्छन्दांसि भगार्थमसवितृपुरंध्रयोदेवताः
वधूपाणिग्रहणे विनियोगः । ॐ गृभ्णमितेसौ भगत्वायहस्तंमया-
पत्याजरदष्टिर्यथासः भगोऽअर्थमासविता पुरंध्रिर्मह्यन्त्वाऽदुर्गाहं
पत्यायदेवाः ॥१॥ अमोहमस्मिसात्व ष्टं सात्वमस्यमोऽअहम् ।
सामाहमस्मि ऋकृत्वंग्यौरहंपृथिवीत्वम् ॥२॥ तावैवन्विवहावहै
सहरेतोदधावहै । प्रजांप्रजनयावहै पुत्रान्प्रजनयावहै पुत्रान्बिन्दा-
यहैवहृन् ॥३॥ तेसन्तुजरदष्टयः संप्रियौरोचिष्णुसुमनस्यमानौ
पश्येमशरदः शतंजीवेमशरदः शत ष्टं शृणुयाम शरदः शतम् ॥४
अथैनामश्मानमारोहयति अग्नेरुत्तरतः स्थापितेऽश्मनि वरोवध्वा
दक्षिणपादं स्वदक्षिणहस्तेनगृहीत्वा वक्ष्यमाणमंत्रेणस्थापयेत् ।
कतिचिन् पुस्तकेषु वरोस्ववामहस्तंवध्वा वामस्कंधे धृत्वा दक्षिणह-
स्तेनवध्वादक्षिणपादं स्पृशन् इति लिखितमस्ति देशाचारतः ।

कुर्यात् ॐ आरोहेममित्यस्याथर्वण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो बभूदेयता
 ऋमारोहणेविनियोगः ॐ आरोहेमामरमानमरमेवत्व ॐ स्थि-
 राभव । अभितिष्टृतन्यतोऽथवाधस्वपृतनायतः । इति वधुमारम
 न्यारोप्यवरस्तस्याःशिरसिहस्तं धृत्यागाथांगायति । ॐ सरस्वति
 प्रेदमिति विश्वावसु ऋषि रनुष्टुप्छन्दः सरस्वती देवता गाथागाने
 विनियोगः । ॐ सरस्वतिप्रेदमवसुभगेव्वाजिनीवति । यांत्वा
 विश्वस्यभूतस्य प्रजाया मस्याग्रतः ॥१॥ यस्याभूत् १०
 समभवद्यस्यां विश्वमिदंजगत् । तामथ गाथांगस्यामियास्त्री-
 णामुत्तमंशशः ॥२॥ ततोऽग्नेः परिक्रमणार्थं वधुवरौ गच्छेताम् ।
 ॐ तुभ्यमग्रइत्याथर्वण ऋषिरनुष्टुप्छन्दोऽग्निदेवता परिक्रमणे
 विनियोः ॥ ॐ तुभ्यमग्रे पर्यवहन्त्सूर्य्यांश्चहनुनासह । पुनः
 पतिभ्योजायांदाग्ने प्रजयासह ॥ (अग्रेतु शुभदापत्नीमांगल्ये सर्व
 कर्मणि) इति प्रमाणतः ॥ एवं पुनर्वारद्वयं पूर्ववह्नाजाहोम पाणि-
 ग्रहणारमारोहण गाथागान परिक्रमणानितेनैव विधिनाकर्तव्यम् ॥
 ततस्तृतीय लाजाहोमादि परिक्रमणान्ते कुमार्या भ्राता सूर्पकोणेन
 सर्वांल्लाजान् कुमार्यजलौददाति ॥ सा च पूर्ववत्तिष्ठन्ती अंजलि-
 नैव जुहुयात्) । कतिचित् पुस्तकेषु सूर्पकोणेनैवसर्वां जुहुयात्-
 इति लिखितमस्ति । स च सूत्रप्रमाण रहितो विधिः) ॥ ॐ भगा-
 पेति मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो भगोदेवता लाजाहोमे
 विनियोगः । ॐ भगायस्वाहा ॐ इदं भगायनमम इति वरः ॥
 (ततश्चतुर्थं परिक्रमणं कुर्वन्तौवधुवरौ ब्रह्माण्योर्मध्ये नगच्छेताम्
 किन्तु ब्रह्माणमपिमध्ये कृत्वा परिक्रामयेनाम्) ॥ तूष्णीं चतुर्थं
 परिक्रमणंकृत्वा पूर्वस्थान मागत्योपविश्यच ॐ प्रजापतय इति
 प्रजापतिर्ऋषिःस्त्रिष्टुप्छन्दः प्रजापतिदेवता उत्तरांग होमे विनि-
 योगः ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमम ॥ इतिमनसा
 प्रजापतिं ध्यात्वाहुत्वा (अत्रैव कतिचित् पुस्तकेषु पचमपटं परि-
 क्रमणं च लिखितमस्ति सूत्रादतिरिक्तोऽयं विधिः) यथा समा-
 चारस्तथा कर्तव्यः । अथसप्तपदी—ततोवर एनां वधुसुदीचीं सप्त

पदानि प्रकामयति, तद्यथासमाचारात्—(कश्चिद्देशेषु शिलायां
हस्तमात्रायतायामेव सप्तपदी भवति । स च विधिनिर्णयकः ।
सप्तपदी शब्दस्यार्थः सप्तपद, गमनमस्ति न तु शिलायाम् . हस्त-
मात्रायतायाम् ॥) श्वेततण्डुलान् दधिमिश्रितान्कृत्वा कन्या
सप्तपादायतांतराल भूमौ सप्त पुंजानि कृत्वा प्रत्येक पुंजोपरि
एकैकां वृत्तिकां प्रज्वलय्य वधूस्तदुपरि दक्षिण पादं धृत्वैभिरेव
मंत्रैः षड्वृत्तिकानिर्वाप्य सप्तमीं ज्वलन्तीमेव स्थापयेत् ॥ सा च
वधू वामपादेन दक्षिणपादं नांति प्रकामति । धरश्च तदनुगच्छेत् ।
एकैकं मंत्रं समुच्चार्य सप्तपदानि दापयेदुत्तरोत्तरं दक्षिणपादेन ॥
ॐ एकमिषे इत्यादीनां सप्तानां मंत्राणां प्रजापतिर्ऋषिर्यजुरल्लुन्दः
लिंगोक्तादेवताः सप्तपदीकरणे विनियोगः ॥ ॐ एकमिषे विष्णु
स्त्वानयतु, इति वरेणोक्तस्य मंत्रस्यान्ते वधूर्दक्षिणं पादमुदग्द-
धाति । तदनन्तरं वाम पादम् । ॐ द्वेऽऊर्जे विष्णुस्त्वानयतु ।
ॐ त्रिणि रायस्पोषाग विष्णुस्त्वानयतु ॥ ॐ चत्वारि मायो
भवाय विष्णुस्त्वानयतु ॥ ॐ पञ्चपशुभ्यो विष्णुस्त्वानयतु ॥ ॐ
षड्भ्यो विष्णुस्त्वानयतु ॥ ॐ सत्वे सप्तपदाभवसामा-
मनुवता भवविष्णुस्त्वानयतु ॥ ततः सदीपं तंडुल पुंजं ज्वलन्तमेव
स्थापयेत् ॥ ततः परिक्रमणं कृत्वा पूर्वसने उपविश्य पुरुष स्कन्ध
स्थित कुम्भोदकादाभ्रपल्लवैर्दूर्वापिंजूलेन वा वरो वक्ष्यमाणमंत्रै
वधूसूर्धन्यभिपिंचति ॥ ॐ आपः शिवा इति प्रजापतिर्ऋषिः-
यजुरल्लुन्द. आपोदेवताः वधूसूर्धन्यभिषेचने विनियोगः ॥ ॐ
आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु
भेषजम् ॥ ॐ आपो हिष्टेति तिस्ऋणां सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री
ल्लुन्दः आपोदेवताः वधूसूर्धन्यभिषेके विनियोगः ॥ ॐ आपो
हिष्टा मयो भुव स्तान्ऽऊर्जेदधातन । महेरणाय चक्षसे ॥१॥
योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः । उशतीरिब मात्ररः ॥१॥
तस्माऽअरंगमामवोयस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जन यथा चनः
॥१॥ दिवाविवाहे । ततो वरो वधूं सूर्यमुदीक्ष्यस्वेति वदेत्—

ॐ तच्चतुरिति दध्यङ्गाथर्वणमृपिर्ब्राह्मी त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता
 सूर्योदीक्षणेविनियोगः । ॐ तच्चतुर्दं वहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।
 पश्येमशरदः शतं जीवेमशरदः शतं १० शृणुयाम शरदः शतं
 प्रवचाम शरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतं भूयश्च शरदः
 शतान् ॥ अथ वरो वध्वादक्षिणांशोपरि स्पदक्षिणं करं धृत्वा तस्याः
 हृदयं आलभेत ॥ ॐ मम व्रत इति प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः
 प्रजापतिर्देवता वधु हृदयालंभने विनियोगः । ॐ मम व्रतेते
 हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं तेऽग्रस्तु । ममव्याचमेरु मना
 जुपस्व प्रजापतिं पूवा नियुनक्तुमहम् ॥ अथ वरो वधु शिरसि हस्तं
 नीत्वा भिमंत्रयते ॥ ॐ सुमङ्गलीरिति प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दो
 लिंगोक्ता देवता वध्वभिमंत्रणे विनियोगः । ॐ सुमङ्गलीरियं
 वधूरिमा ॐ समेत पश्यता सौभाग्यमस्यैदत्त्वा यथास्तं त्रिपरै-
 तन ॥ अत्र शिष्टाचारान् वधुं वरस्य वामभागे उपवेशयन्ति ।
 तस्याः सीमन्ते धोण सिन्दूरं च दापयन्ति वृद्धाः । देशाचारतो
 वधुवरौ परस्परं तैलाभ्यंग केशसम्मार्जन चूटिका कज्जलधारण
 आदर्शादर्शनं दधिप्राशनान्तानिकर्माणि कुरुतः अन्यदपि ग्राम-
 वृद्धवचनानि देशरीत्याच, विवाहशमशानयोर्ग्रामवचन मिति
 प्रमाणात् ॥ अथाग्नेः प्रागुदग्वा गृहे (कलावनडुह चर्म वर्जित-
 त्यात्) रक्तवस्त्रे हृद्गुणोवरणवत्वा वधुमुत्थाप्यो पवेशयन्ति ॥
 ॐ इह गाव इति प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दो लिंगोक्ता देवता
 वधुपवेशने विनियोगः ॥ ॐ इह गावो निषीदन्ति वहाश्वा ऽ इह
 पूरुषाः । इहो सहस्रदक्षिणो यज्ञ ऽ इह पूषा निषीदतु ॥ ततो
 वरस्तस्मात्स्थानादागत्य यथास्थानमुपविश्य स्वयं चोपविशेत् ॥
 कतिचित्सुदेशेष्विदानीं ग्रामवचनं पूर्वोक्त कर्माणि स्वकुलवृद्ध
 स्त्रीणां वचनानि कुर्वन्ति ॥ ततो हस्तौ पादौ प्रक्षालयाचमनं
 कृत्वा ब्रह्मणान्वारब्धः ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा ॥ इदमग्नये
 स्विष्टकृते नमः ॥ इति स्विष्टकृदोमंकृत्वा, संस्रवधुतं प्रारथायघ्रा
 यवा । जलेन पवित्राभ्यां मुग्वं समाह्वयं पवित्रप्रतिपत्तिः, - ॐ

अधः खेद्वा रहिते भूभागे आस्तृते शयीयातां त्रिरात्रमेव,,
 अत्र त्रिरात्रपक्षाश्रयणं चतुर्थ्युत्तरकालः । हेतुस्तु पूर्वव्याख्याने
 विहितः । सूत्रोक्तिस्तु चतुर्थ्यामपररात्रेऽभ्यन्तरतोऽग्निमुपसमा-
 धायेति चतुर्थी कर्मणो विधिः । स च चतुर्थ्यां तिथौ विवाह
 तिथिमारभ्यापररात्रेः रात्रेः पश्चिमे यामेऽभ्यन्तरतो गृहस्यमध्ये
 ऽग्निं वैवाहिकमुपसमाधाय पंचभूसंकारान् कृत्वा स्थापयित्वा
 च कुशकंडिकोक्त विधिना सर्वकर्म भवति । समीचीनोऽसौ सू-
 त्रोक्त विधिः ॥ परंच कतिचित् पर्वतीयग्रान्तेषु विघ्नवाधा संको-
 चेन-सूत्रे (ग्राम वचनं च कुर्युः) अत्र विवाहे ग्राम शब्दवाच्यानां
 स्वकुलवृद्धानामाचार्याणां वाक्यं पारं पर्यानुगतमर्यादानां पा-
 लनं च कुर्वन्ति । यथा अंकुरार्पण हरिद्रोक्षतकंकणमुकुटधारणा-
 दिधर्मप्रतिपादकमस्ति ॥ तद्वद् चतुर्दिनानामपकर्षं कृत्वा विवाह
 वेद्यामपि चतुर्थीकर्म कुर्वन्ति-तदनुमयापि देशरीत्या विवाह
 वेद्यां चतुर्थीकर्मणो विधिस्तादृहः ॥

अथ चतुर्थीकर्मपद्धतिः ॥

ततः पूर्वोक्तध्रुवदर्शनान्तरं विवाह वेद्या उत्तर भागे हस्त-
 मात्रां वेदीं कृत्वा सामग्रीं संपाद्यात्तम्य प्राणायाम त्रयंविधाय
 यधूं स्वदक्षिणतः कृत्वा संकल्पं कुर्यात्-अथेत्यादि० अमुकशर्मा
 हं करिष्यमाणं चतुर्थीकर्मगृहोमकर्मणितत्रादौ निर्विघ्नतासिद्धये
 गणेशवरुणपूजनमहं करिष्ये । ततः पूर्वोक्तविधिना गणेशसंपूज्य
 होमवेदीशानकोणैकलशंवरुणविधिना संस्थाप्य संपूज्य च पुण्याह
 वाचनं वा गान्तिमूक्तपाठं कृत्वा कुशकंडिकाविधिना वेदीसंस्कारं
 कुर्यात् ॥ तद्यथा-कुशैर्हस्तमात्रमिनां वेदीं परिसमूह्य तान् पूर्व-
 स्यां क्षिपेत् । गोमयोदकेनोपलिप्य श्रुवमूलकेन यथोत्तरं त्रिस्रो-
 रेखा बिलिख्योखिलख्यक्रमेणानामिकांगुष्टकाभ्यां मृदमुद्भृत्पथ
 जलेनाभ्युक्ष्य तत्र विवाहाग्निं कांस्यपात्रे स्वाभिमुखीकृत्य स्था-
 पेत् । ततो ब्रह्माणं गन्धाक्षतादिभिः संपूज्य, अथेत्यादि० अमु-

कोऽहं कर्तव्यचतुर्थी होमकर्मगङ्गाकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूप ब्रह्म
 कर्मकर्तुमैतर्वासौगुलीये बृहस्पतिदेवतेरमुकगोत्रमामुक शर्माणं
 ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेनत्वामहंवृणे वृतोऽस्मीतिप्रत्युक्तिः यथा विहितं
 कर्मकुरु । करवाणीति प्रत्युक्तिः । अग्नेर्दक्षिणतः कुशानारतीर्यासनं
 दत्त्वा ब्रह्माणंमग्निप्रदक्षिणं कारयित्वाकल्पितासनेउदङ्मुखमुप-
 वेशयेत् । अस्मिन्कर्मणित्वंमेब्रह्माभव, भवानीतिप्रत्युक्तिः । प्रणी-
 तापात्रंपुरतः कृत्वावारिणापूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणोमुखमवलो-
 क्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरिनिदध्यात् । ततः पूर्वादारभ्य कुशांस्तरणं
 कुर्यात् । ततोऽग्नेः पश्चात् पवित्रछेदनार्थं साग्रमनन्तंकुशपत्रत्रयं
 पवित्रार्थसाग्रमनन्तगर्भं कुशपत्रद्वयंस्थापयेत् । प्रोक्षणीपात्रं
 आज्यस्थाली चरुस्थाली संमार्जनकुशाःपंच वैष्णीरूपकुशाःसप्त
 पालाशसमिधस्तिष्ठः श्रुवस्नण्डुलपूर्णपात्रमेतानिवस्तूनि पवित्रछे-
 दनकुशानां पूर्वपूर्वं क्रमेणासादनीयानि । पवित्रछेदनकुशैर्द्वैपवित्रे
 छित्वा प्रोक्षणीपात्रेजलंत्रिरुत्क्षिप्यप्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणं
 कृत्वा प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तूनि, सिक्त्वा अग्निप्रणीतयोर्म-
 ध्येप्रोक्षणीपात्रंनिदध्यात् । आज्यस्थाल्यामाज्यं चरुस्थाल्यां चरुं
 चांग्नौयुगपदारोप्य यथाविधिअपयित्वाज्वलत्तूणेन हविवेष्टयित्वा
 वह्नौप्रक्षिपेत् । सुवमधोमुखंप्रतप्य संमार्जनकुशानामग्नैरन्तरतो
 मूलैर्वाह्यतः संसृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्यपुनः प्रतप्य स्वदक्षिणतः
 कुशोपरिनिदध्यात् । तत आज्यंचरुश्चाग्नेरवतार्यावेद्यापद्रव्यं
 निरस्योपयमन कुशानादाय वारत्रयं तदाज्यमुत्पूयचामहस्तेकृत्वा
 तनोघृताक्तास्तिष्ठः समिधः उतिष्ठन मनसाप्रजापतिंध्यात्वातृ-
 ष्णीमग्नौजुहुयात् । अग्नि पर्युक्ष्योपविश्य ततोऽग्नेः पूजनम्-
 (चतुर्थींतुशिखीनामेतिवचनान्) ३० भूर्भुवः स्वः शिखीनामाग्ने-
 इहागच्छेहतिष्ठसुप्रतिष्ठितोवरदोभव ३० एतन्तेतिप्रतिष्ठाप्य ३०
 अग्निप्रज्वलितंवन्दे हुनाशंजातवेदसम्, सुवर्णवर्णमनलंसमिद्धं
 सर्वतोमुखम् । ३० चत्वारिशृङ्गा० ३० शिखिनामाग्नयेनमः इति
 नामंत्रेणपाद्यादि नीराजनान्तंसम्पूज्य ३० रेन्वाभ्योनमः । ३०

सप्तजिह्वाभ्योनमः सम्पूज्यब्रह्मणान्वारब्धआधारादिजुहुयान्
 ॐ प्रजापत्यादिचतुर्णीमंत्राणां प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो मंत्रो
 क्तादेवता आज्यहोमे विनियोगः । मनसाप्रजापतिं ध्यात्वा, ॐ
 प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये नमः । ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदं
 मिन्द्राय नमः, इत्याधारौ, ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय नमः
 ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये नमः, इत्याज्यभागौ, (पारस्करगृह्य
 सूत्रानुसारात् आज्यभागानन्तरं अग्नेप्रायश्चित्ते, इत्यादिभिः
 पंचाहुतीः पंचभिर्मंत्रैर्हुत्वा ततोऽग्नौ स्विष्टकृते हुत्वाऽऽज्येन महा
 व्याहृत्यादि प्राजापत्यान्तानवाहुतीर्वाजुहोति । इति प्रमाणादादौ
 अन्वारम्भंत्यक्त्वा आज्येन प्रधानहोमं कुर्यात्) ॐ अग्ने प्रायश्चित्
 इत्यादीनां पंचानामंत्राणां परमेष्ठी ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो लिंगोक्ता
 देवताः चतुर्थीकर्मांजाज्यहोमे विनियोगः । ॐ अग्ने प्रायश्चित्-
 त्त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वानाथकामऽउपधावामि
 यास्यैर्पतिघ्नी तनूस्तामस्यैनाशयस्वाहा । इदमग्नये नमः । इत्यादि
 षडाहुतीनां संस्रवमुदपात्रे पृथक्प्रक्षेपः । ॐ वायो प्रायश्चित्त्वं
 देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वानाथकाम उपधावामियास्यै प्र-
 जाघ्नी तनूस्तामस्यैनाशय स्वाहा । ॥२॥ इदं वाये नमः ॐ सूर्य
 प्रायश्चित्त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वानाथकाम उपधा-
 वामियास्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यैनाशयस्वाहा इदं सूर्याय नमः
 ॥३॥ ॐ चन्द्रप्रायश्चित्त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा-
 नाथकीमऽउपधावामियास्यै ग्रहघ्नी तनूस्तामस्यैनाशय स्वाहा, इदं
 चन्द्रमसे नमः ॥४॥ ॐ गन्धर्वप्रायश्चित्त्वं देवानां प्रायश्चित्ति
 रसि ब्राह्मणस्त्वानाथकामऽउपधावामियास्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै
 नाशयस्वाहा, इदं गन्धर्वाय नमः ॥५॥ ततः स्थालीपाकमाज्येना
 भिघार्यं सुवेणादाय प्रजापतिं मनासा ध्यात्वा । ॐ प्रजापतये
 स्वाहा इदं प्रजापतये नमः ॥ ६ ॥ इत्यन्तं उदपात्रे संस्रवप्रक्षेपः
 (ततश्चरुणा अग्नये स्विष्टकृते हुत्वा पश्चादाज्येन महाव्याहृत्यादि
 प्राजापत्यान्तानवाहुतीर्जुहुयान्, इति प्रमाणात्) ॐ अग्नये

स्विष्टकृतेस्वाहा इदमग्नयेस्विष्टकृतेनमम । ततो ब्रह्माण्वारब्धः
 ॐ महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि
 अग्निवायुसूर्यादेवताः प्रायश्चित्तहोमे विनियोगः । ॐ भूः स्वा०
 इदमग्नयेनमम । संखवधारणम् । ॐ भूवः स्वाहा इदंवायवेनमम
 ॐ स्वः स्वाहा इदंॐ सूर्यायनमम । ॐ त्वन्नोऽअग्ने इत्यस्य वाम
 देवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्नीवरुणौदेवते प्रायश्चित्तहोमेविनियोगः
 ॐ त्वन्नोऽअग्नेव्वरुणस्यविद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः ।
 यजिष्ठोवन्हितमः शोशुचानोऽद्विरवाह्वेपाँसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्
 स्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम ॐ सत्वन्नइतिवामदेव ऋषि
 स्त्रिष्टुप्छन्दः अग्नीवरुणौदेवते प्रायश्चित्त होमेविनियोगः । ॐ
 सत्वन्नोऽअग्नेवमो भवोतीनेहिष्ठोऽअस्याऽउपसोव्युष्टौ । अवय-
 द्वनोव्वरुण ई० रणोव्वीहिमृडीक ई० सुहवोनऽएधि । स्वाहा
 इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम ॐ अयाश्चाग्र इति वामदेवऋषिस्त्रिष्टु-
 न्छन्दोऽअग्निदेवता प्रायश्चित्त होमेविनियोगः । ॐ अयाश्चा-
 ग्नेऽस्यनभिश्चित् पाश्चसत्यमित्त्वमयाऽसि । अपानोयज्ञंव्वहा-
 स्यपानोवेहिभेषजं स्वाहा । इदमग्नयेनमम । ॐ येतेशतमिति
 वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोव्वरुणः सविता विष्णुर्विश्वेमरुतः स्व-
 कार्क्षदेवताः प्रायश्चित्त होमे विनियोगः ॐ येतेशतंव्वरुणंये स-
 हस्रंयज्ञियाः पाशाद्विरततामहान्तः तेभिन्नोऽयस्यसवितोत् विष्णु
 विश्वेमुचन्तुमरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदंव्वरुणायसवित्रेविष्णवे
 विश्वेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्चनमम । ॐ उदुत्तममितिशुनः
 शेफऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोव्वरुणोदेवता प्रायश्चित्तहोमे विनियोगः ।
 ॐ उदुत्तमव्वरुणपाशमस्मदवाधमंविमध्यमं अथाय ।
 अथाव्वयमादित्यव्व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा ।
 इदंव्वरुणाय नमम ॥ मनसा-ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदंप्रजापतये
 नमम । ततोवर्हिर्होमः । ततः संभ्रवं प्राश्य पवित्रेऽग्नौ प्रक्षिप्य
 परिचमतः प्रणीताविमोक्तं कृत्वा पूर्णपात्रदानं कुर्यात् । पूर्णपात्रं
 सम्पूज्य ब्रह्मणे नमः । अद्येत्यादि० अमुकोऽहं ममास्या वध्वाः

सोमाद्युप भुक्ति परिहारार्थं चतुर्थी कर्माङ्ग होम कर्मणः सांगता
सिद्धये इदं सद्रव्यं पूर्णपात्रं अमुकशर्मणे ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे ।
इति पूर्णपात्रं ब्रह्मणे दद्यात् ॥ ३० अकृन् कर्म कर्मकृतः सहन्वा-
चा मयो भुवा ॥ देवेभ्यः कर्मकृत्वार्तं प्रेतसचा भुवः इत्याशिषं
पठित्वा प्रथमस्थापिताद्बुदपात्राद्बुदकमानीय वरो वक्ष्यमाण-
मंत्रेण वधूर्मूर्धन्यभिषिञ्चति ॥ ३० यातऽइति प्रजापतिर्ऋषि स्त्रि-
ष्टुष्टुन्दोवधूर्देवता अभिषेचने विनियोगः ॥ ३० यातेपतिघ्नी
प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दिता तनूः । जारघ्नी
ततःपानां करोमि । साजीर्यत्वं मयासह अमुकिदेवि ? (इत्यत्र
कतिचित्सु ग्रान्तेषु पनि नामाद्य वर्णाक्षरान्वितं सुन्दरीनि पदा
न्तं वध्वाः पुनर्नामकरणं कुर्वन्ति समाचारतः समीचीनासौ
विधिः) अथ वरो वधूं हुतशेषस्थालीपाकं प्राशयति ॥ ३० प्राणे-
स्त इति प्रजापतिर्ऋषिर्षुष्टुन्दो वधूर्देवता वध्वाः स्थालीपाक
प्राशने विनियोगः ॥ ३० प्राणस्ते प्राणान्संदधाम्यस्तिभिरस्थी
निमा ॐ सैर्मा ॐ सानि त्वन्वात्वचम् ॥ देशाचाराद्वरः स्वहस्ते
नैवग्रासपञ्चकं वधूं प्राशयेत् ॥ अतः परंपत्नी शब्दः प्रयोक्तव्यः ।
अत्र देशाचारतो वरोऽपि वन्याहस्तेन भोजनं करोति ॥ इति
गदाधरोक्तिः ॥ इदानीमेव वरः स्वपत्न्या दक्षिणस्कन्धो परि
स्वदक्षिण करतलं निधाय मंत्रं पठन् हृदयमालभेत ॥ ३० यत्त
इति प्रजापतिर्ऋषि स्त्रिष्टुष्टुन्दो हृदयं देवता हृदयालंभने विनि-
योगः ॥ ३० यत्तेसुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम् ध्वेदाहं
तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतंजीवेम शरदः शतं १० शृणुयाम
शरदः शतम् ॥ ततो वेद्याः कलश सहितं सपत्नीकोवरः पत्नी
मग्रतः कृत्वा प्रदक्षिणा चतुष्टयं कुर्यात् ॥ ततो देशाचारतो वरः
स्वभार्यायाः अभिनव कंकतिकया सीमन्तोन्नयनं कृत्वा तन्मध्ये
सिन्दूरं दापयित्वा भालमध्ये विन्दिकया अलं करोति ततो वरो
वाध्वा, वधूर्श्च वरस्य अञ्जलग्रन्थि कङ्कण मोचनं परस्परं कुरुतः
कङ्कण मोचन मंत्रः—३० कङ्कणं मोचयाम्यचरत्सोन्न रक्षणंमम ।

मयि रक्षां स्थिरां कृत्वा स्वस्थानं गच्छ कङ्कण ॥ ततो दक्षिणा
संकल्पं कुर्यात् । अथेत्यादि देशकालौ संकीर्त्य सपत्नीकोऽमुकोऽ
हं कृतस्यास्य चतुर्था कर्मणः सांगता सिध्यर्थमिमां दक्षिणामाचा-
र्यायान्येभ्यो नाना नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्यचदास्ये ।
एवं ब्राह्मण भोजनस्यापि संकल्पं कृत्वोत्तरांग भूतमग्निपूजनं
विधाय (अत्रापि चतुर्था कर्मणो विवाहांगत्वात् पूर्णाहुतिः)
वह्निं विसृजेत् ॥ ३० गच्छत्वं भवन्नग्नेः स्वस्थानं कुण्ड मध्यतः
इष्टकाम समृध्यर्थं पुनरागमनंकुरु ॥ ततस्त्र्यायुपं कृत्वा वरवध्वो
मंगलाभिषेक तिलकंच कृत्वाऽऽशीर्दद्यात् ॥ इति चतुर्था
कर्मपद्धतिः ॥

विवाहोत्तरांगकर्मपद्धतिः

कतिपय प्रदेशेषु—अधुना कन्यापिता वान्धवैः सह पूर्व
दिवसे स्थापितानां गणेशादि पंचांग-देवताना मुत्तरांग पूजनं
विधाय, ३० यांतुदेवगणः सर्वे पूजामादायमामकीम् ॥ इष्टकाम
समृध्यर्थं पुनरागमनंकुरु इति विसृज्यकलशजलं वेद्यामानीय तदा-
गोदान विधिना सवत्सां गां सम्पूज्य स्वपितृभ्यः पुच्छतोयेन
संतर्प्य च वरवधूयभ्यां दत्त्वा ताभ्यां कलशजलेनाभिषेकादि मंत्र
तिलकं पुरः सर माशीर्याचते ॥ तौ वरवध्वौ सकुटम्ब यजमान
माशीर्दत्त्वा ततः पंच घोषपूर्वकं सपत्नीकोवरः विवाह मंडपात्
स्वसुरगृहाभ्यन्तरं गत्वा तत्रपट्ट लिखित सप्तजीव मात्राणां
पूजनं कुर्यात् ॥ तत्राभ्यन्तरे सपत्नीकोवरः स्वासन उपविश्या-
चम्य भूतोत्सादनं कृत्वा प्राणायामत्रयं विधाय संकल्पं कुर्यात् ।
अथेत्यादि सपत्नीकोऽहं सर्वसौभाग्यप्राप्तयेपट्टलिखितानां कल्या
ण्यादिजीवमात्राणां पूजनं करिष्ये । ३० भूर्भुवः स्वः कल्याण्यादि
जीवमातरः, इहा गच्छन्तु, इह तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु-इति
प्रतिष्ठाप्य ध्यायेत्—ॐ कल्याणी मंगला भद्रा पुण्यापुण्यमुखी-
तथा ॥ जया च विजया चैव रक्षन्तु जीवमातरः ॥ इति ध्यात्वा
नाममंत्रैः पाद्यादि नीराजनान्तं पूजनं कुर्यात् ॥ तथा—ॐ

कल्याण्यै नमः, ॐ मंगलायै नमः, ॐ भद्रायै नमः, ॐ पुण्यायै नमः, ॐ पुण्यमुख्ये नमः, ॐ जयायै नमः, ॐ विजयायै नमः इति मन्त्रैर्नैवेद्यान्तं संप्रज्योपायनं समर्प्य पुष्पांजलिं दद्यात् । ॐ कल्याणि देहि कल्याणं मंगलं चैव मंगले ॥ भद्रे त्वं देहि नो भद्रं पुण्ये पुण्यप्रदा भव । पुण्योद्गमं पुण्यमुविजये देहि जयं च नः विजयं विजये मातः शत्रुभ्यः कुरु सर्वदा ॥ इति संप्रार्थ्य-ततः पुन्यन्वितं वरं चतुष्पात्काष्ठपीठे धृत्वा श्वश्रूनयोः पादौ पात्रे प्रक्षाल्य तिलकं कृत्वा सुवासिनी द्वारा स्वयंवा महानीराजनं कुर्यात् ततो वरः स्ववित्तानुसारं धनं श्वश्रुचरणयो धृत्वा भो श्वश्रु ! अमुकनामाहं तव जामाता त्वामभिवादेयम् । ततः श्वश्रोः प्रत्युक्तिः आयुष्मानस्तु सौम्य ! ततोऽन्यासामपि चरणाभिवन्दनं कृत्वा सुखेनोपविशेत् । ततः श्वश्रु आदौ पुत्रीजामातरौ दधि प्राशनं कारयित्वा ततः पिष्टाहूपमोदकपदार्थानि दद्यात् । ततो भोज्यपदार्थान् भुक्त्वा यथा सुखं विहरेत् । इति जीवमातृपूजनश्वश्रु सम्मेलन विधिः ।

वरवध्वोर्गमने मार्गरक्षाविधिः ।

— ० —

“कतिचित्प्रदेशेषु वरवध्वो र्गमनतः पूर्वकन्यापिता उपवासं विदधातीति देशाचारोऽयम्, ततो द्वितीयदिवसे तद्दिनेवा श्वशुरदत्तयौतकमाप्तपुरुषद्वारा स्वगृहं प्रति संप्रैष्य सवधूवरः श्वश्रु श्वशुरयोश्चरणौ-अभिवन्दनार्थं गृहाभ्यन्तरं व्रजेत् । तत्र स्वास्तीर्णं कम्लादाद्युपविश्य कन्यापिता वरपत्नीयसंबन्धीनप्याह्यास्तीर्णं उपवेशयित्वा वरवध्वासहताम् गन्धाक्षतादिभिः संपुज्य स्ववित्तानुसारतुपायनेन संतोष्य ममन्यूनातिरिक्त संपर्ण्य स्वीकृत्य भवन्तो गृहं प्रति प्रसन्नतया गच्छन्तु, इति विसृजेत् ततोऽग्रतः सवधूको वर उत्थाय तत्रस्थान्नेहिजनानभिबन्ध कन्यामाता तदुपरि सुमंगलार्थं लाजा तण्डुलादिमिश्रितसद्रूपवृष्टिं

विधाय वहिरागत्य श्रेष्ठद्वारदेहलीगणेशसन्निधौ वधूदेहलीगणेश-
 पूजनं कुर्यात् ॥ आचम्य पाद्यगन्धादिभिर्देहलीम् ३५ देहल्यै-
 नमः इतिमंत्रेण संपूज्य प्रार्थयेत् ॥ ॐ आवयोर्देहि सौभाग्यमा-
 युरारोग्यतांच वै ॥ अत्रस्थाः सुखिनः सन्तु मातर्देहलि तेनमः ॥
 इति देहल्यां गन्धाक्षत पुष्पाणि संस्थाप्योभाभ्यां हस्ताभ्यां चार-
 त्रयमभिवादयेत् । अथ देहली वन्दनानन्तरं शुभदिने वरः स्वभा-
 र्यां स्वगृहमानयितुं शिवकां रथंवाऽऽनाय्य तदा शिविकावन्धने-
 वारथेऽश्वादि नियोजने, दक्ष्यमाणमंत्रंपठेद्वापाठयेत्-मंत्रः-ॐ
 युजन्ति ब्रध्नमरुपश्चरन्तम्परितरथुषः । रोचन्ते रोचनादिव । ततः
 शिविकां वा रथं नूतनवस्त्रेणाच्छादयेत् । संमार्जयित्वा चाभि-
 मंत्रयेत् ॐ अंकून्यंकावभितोरथये ध्वान्ता वाता अग्निमभि-
 येसंचरन्ति दूरेहेतिः पतत्रीवाजिनीवां स्तेनोऽग्नयः प्रप्रयः
 पालयन्तु । तन आसनमभिमंत्रयेत्-३५ व्वनस्पतेव्वीड्वंङ्गोऽ
 हिभूयाऽअस्मत्सखाप्रतरणः सुवीरः । गोभिः सन्नध्वोऽअसिञ्ची-
 ड्यस्वास्थातातेजयतुजेत्वानि । शिविकारोहणमंत्रः-सुकिंशुकं
 शल्मलिंविश्वरूपं हिरण्यवर्णसुव्रतंसुचक्रम् । आरोहसूर्येऽमृतस्य
 लोकंस्योनंपत्येवहंतुकृणुस्य । अतःपरमाचार्यः प्रतिमंत्रान्ते रक्षो-
 प्रद्रव्यं वरवध्वोरुपरि भ्रामयित्वा चतुर्दिक्षुप्रक्षिपेत् । ततोवरोऽपि-
 शिविकाया सुपविश्या अतोवभूकृत्वा वादित्रवादकान्बोधयेत् ।
 मंत्रः ३७ उपश्वासयपृथिवीमुतय्याम्पुरुत्रातेमनुतां ङ्विष्टितंजगत्
 सदुंदुभेसजूरिन्द्रेणदेवैर्दूराद्दर्वीयोऽअपसेधशत्रून् । इतिमंत्रेण दुंदु-
 भ्यादिवाद्यध्वनिं कारयेत् । ततो रथंशिविकांवावक्ष्यमाणमंत्रंपठन्
 पूर्ववाहयित्वा प्रादक्षिण्येनग्राममार्गप्रत्यागच्छेत् नदामंत्रंपठति,
 ३७ प्रतिमायन्तुदेवताः प्रतिब्रह्मसुवीर्यम् प्रतिक्षत्रयद्वलं प्रतिमा-
 मैतियद्यशः । यदिमार्गंअमंगलवस्तून्यालोकयति, तदामंत्रः-भद्रं
 कर्णेभिः शृणुयामदेवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुभूया
 ३७ संस्तुभिव्यंसेमहिदेवहितंयदायुः । मार्गंग्रामश्चेत्तदामंत्रंपठेत्
 ३७ इमान्द्रायतवंसेकपर्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमतीः । यथाशम

सद्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टग्रामेऽस्मिन्ननातुरम् । मार्गं वृक्षसन्निधौ
जपनीयो मंत्रः ३० नमो रुद्रायैकवृक्षसदे ३० ये वृक्षेषु शर्पिजरा नील-
ग्रीवा विलोहिताः । तेषां ॐ सहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि । मार्गं
श्मशानं श्वेत्तत्र जपनीयो मंत्रः—३० नमो रुद्राय श्मशानं सदः ॥
ॐ ये भूतानामधिपतयो द्विशिम्वासः कपर्दिनः तेषां ॐ सहस्र
योजने वधन्वानि तन्मसि ॥ मार्गं चतुष्पथे जपेत्—३० नमो रुद्राय
चतुष्पथसदे ॥ ३० ये पथांपथिरक्ष्य ग्ल वृदा ऽ आयुर्गुधः ।
तेषां ॐ सहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि । मार्गं तीर्थमापतति
श्वेत्तत्र जपेत् । ३० नमो रुद्राय तीर्थसदे । ३० ये तीर्थानि प्रचरन्ति
सृकाहस्तानिपंगिणः । तेषां ॐ सहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि ।
मार्गं सुप्रतरानदी समापतति चेत्—वरोऽज्जलौजलमादाय पठेत्
३० समुद्राय वैष्णवे सिन्धुनांपतये नमः नमोनदीनां सर्वासां पत्ये
विश्वाहाजुपतां विश्वकर्मणा मिदं हविः स्वः स्वाहा । इत्यंजलिस्थं
जलं नयामेव हुत्वा । वारत्रयं मार्जनं कृत्वा, मंत्रं पठित्वा—३० अमृतं
वा आस्थेजुहोम्यायुः प्राणोऽप्यमृतं ब्रह्मणा सह मृत्युं नारात् । प्रस-
हादिति रिष्टिरिति सुक्तिरिति सुक्षीयमाणः सर्वभयं नुदस्व स्वाहा ।
इति वारत्रयमाचमनं कुर्यात् । यदि सेतुनौभ्यां सुप्रतरणीयान् नद्या-
पतति सेतौ नाविवा मंत्रं जपेत् ॐ सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेह स-
र्दं सुशर्माणमदिति र्दं सुपूणीतिम् । देवीनां वैष्णवैः स्वरित्रामनागस-
मस्रवन्ती भारुहेमास्वस्तये । ततो गोधूल्यां ब्राह्मणाज्ञया समुहृतं च
स्वनगरे प्रविशेत् । ततो गृहाङ्गणे गत्वा वरो वधूमग्रतः कृत्वा
तत्रस्थाभ्यां युग्मकलशाभ्यां जलमात्रादिपल्लवैः शिरस्थ-
भिषिच्य कलशयोरभ्यन्तरे वित्तानुसारं द्रव्यं क्षिप्त्वा स्वास्ती-
र्ण उपविश्या चम्य गणेशं संपूज्य मंगलतिलकं च कृत्वा ब्राह्मणादारी-
र्वादिं गृहीत्वा ततो ज्योतिः शास्त्रोक्ते सल्लग्ने समायाते समुह-
रतं सपत्नीको वरः गृह्णेत्र द्वारसंनिधौ गत्वा तत्र वधूं स्यात्सने
स्ववामभागे, उपवेशयित्वा ऽऽचम्य प्राणायामत्रयं विधाय संक-
लं कुर्यात् अद्येत्यादि सं० अमुकराशिः सपत्नीकोऽहं करिष्य-

माण विवाहोत्तरांग नूतनवधूपवेशकर्मणःपूर्वाङ्गत्वेनद्वारमात्करणां
 पूजनं करिष्ये ध्यायेत्—ॐ कुमारी धनदानन्दा विपुला मंगला-
 घला ॥ पद्मा चैवेतु सप्तैता ध्यायामि द्वारमातरः । ॐ भूर्भुवःस्वः
 कुमर्यादि सप्तद्वारमातर इहागच्छन्तिवह तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता
 वरदा भवन्तु ॥ एतन्तेति प्रतिष्ठाप्यावाहयेत् ॐ आवाहयामि
 देवेशीद्वारमात्करःसुमंगलाः। वधूपवेशनार्थवः पूजयामीहभक्तितः
 ततोनाममंत्रैः पाद्यादि नीराजनान्तं पूजयेत् । तत्रादौ दक्षिणद्वारे
 ॐ कुमार्यैनमः ॐ धनदायैनमः ॐ नन्दायैनमः, ततो वामद्वारे
 ॐ विपुलायैनमः ॐ मंगलायैनमः ॐ अचलायैनमः, द्वारोर्ध्व-
 प्रदेशे—ॐ पद्मायैनमः, अधः प्रदेशे ॐ देहल्यैनमः, इति संपू-
 ज्य प्रार्थयेत् । ॐ धनं देहियशो देहिसौभाग्यं शरदः शतम् । पुण्यं
 पुत्रांश्च मे देहि मातर्वेहलितेनमः इति मंत्रेणाक्षत गन्धपुष्पान्वित
 पुंजं देहल्यं निधायोभाभ्यां हस्ताभ्यां चारत्रयमभिवंद्य ततो
 लग्नसामयिकदानानि कुर्यात्—अथेहासुक राशिस्सपत्नीकोऽहं
 करिष्यमाणस्वगृहेनूतनवध्वासह गृहपवेशकर्मणो लग्नसामयिका-
 यत्रकुत्र स्थानस्थानामादित्यादि नयग्रहाणांमध्ये शुभानां शुभफ-
 लाप्तयेऋणां दुष्टफलोपशान्ति पूर्वकशुभफलाप्तये, इदं द्रव्यं
 अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं संप्रददे ॥ ॐ नत्सन्नम । वा गणे-
 शादि पूजनसमये कुर्यात् । ततः स्वस्तिवाचनं वाचयित्वा वधू
 मग्रतोनिवायादौ वधूदेहल्यं वामपादं ततो दक्षिणपादं संचालयेत्
 ततः पूर्वपूजितगणेशपूजास्थलमागत्य स्वासन उपविश्य पत्नीं स्व-
 वामभागे उपवेश्य गणेशादि पूजनं पुण्याह वाचनं कृत्वा क्वचित्फल-
 केसप्तकोष्ठानिकृत्वा रंगवल्यादिभिः सुसज्यसप्तजीवमात्करणां
 पूजनं कुर्यात् । अथ हेत्यादि० सपत्नीकोऽहं सर्वसौभाग्यप्राप्तये
 वधू पवेशसामयिकपद्धतिवितानां जीवमात्करणां पूजनं करिष्ये ।
 ॐ भूर्भुवः स्वः कल्याण्यादिसप्तजीवमानर इहागच्छन्तिवहेति-
 ष्ठन्तु सुप्रतिष्ठितावरदाभवन्तु । ॐ एतन्तेति प्रतिष्ठाप्यध्यायेत्—

ॐ कल्याणीमंगलाभद्रा पुण्यापुण्यमुन्वी तथा । जयाच विजया
 चैवरक्षन्तुजीवमातरः । इति ध्यात्वा पात्रादिनीराजनान्तं संपूज्य
 तद्यथा—ॐ कल्याण्यैनमः, ॐ मंगलायैनमः ॐ भद्रायैनमः,
 ॐ पुण्यायैनमः ॐ पुण्यमुख्यैनमः ॐ जयायैनमः, ॐ विजया-
 यैनमः । इति नैवेद्यान्तं सम्पूज्य दक्षिणांसमर्थं पुष्पांजलिदद्यात्
 ॐ कल्याणिदेहिकल्याणं मंगलंचैवमंगले । भद्रेत्वं देहिनोभद्रे
 पुण्येत्वं पुण्यदाभव । पुण्योद्गमं पुण्यमुखि जघेदेहिजयंचवः ।
 विजयंविजयेमातःशत्रुभ्यः कुरुसर्वदा ॥ इति संप्रार्थं तिलपात्र
 दानंकृत्वाऽऽशीर्वादंगृहीत्वा वधूश्वश्रूचरण प्रक्षालनंकृत्वा गन्धा-
 क्षतादिभिः सम्पूज्य स्वपितृदत्तधने वक्ष्यमाणमंत्रेण चरणयोर्निद-
 ध्यात् । मत्पित्रातवपुत्राय भार्यार्थं संस्कृतास्म्यहम् । उपायनं
 गृह्णाणेदंश्वश्रुमारक्षपुत्रवत् । इत्युक्त्वा श्वश्रूचरणयोः शिरसाभि
 वंद्यतेद्द्रव्यं चरणयोर्निदध्यात् । ततः श्वश्रूवधूशिरसिहस्तंनीत्वा-
 सर्वदोत्वंसुपोष्यामे मानृवद् विद्धिमांचयु । सर्वसौभाग्यसंपन्ने
 जीवत्वंशरदांशतम् । इदानींश्वश्रूवधूसुखं दृष्ट्वा स्ववित्तानुसारा-
 भूपणंददाति । ततो वरपिता वा अन्योयेनगणेशादि पूजनंकृतं
 स गणेशादीनामुत्तरांगंपूजनंविधाय । ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजा-
 मादायमामकीम् । इष्टकामससृध्यर्थं कुर्वन्तु पुनरागमम् । इति ।
 विसृज्य तिलपात्रदानंकृत्वा पूर्वस्थापित कलशजलेन पूर्वोक्त सुरा-
 स्वामभिषिचंतिवति मंत्राभ्यामभिषिच्य मंत्रतिलकंकृत्वादेवोप-
 भुक्त निर्माल्यंदत्वा कंचिच्छ्रीकलादिफलं वधूदत्वा यथासुखं
 विहरेत् । इतिवधूपवेशकर्म पद्धतिः ।

अथ वधूजलाशयपूजापद्धतिः ।

ततो वधूपवेशानन्तरं वरमातो स्वयंनूतनेवाससीपरिधाय
 स्वाभरणानिसुसज्य परिवारस्त्रीभिः सहनानाविधिमिष्टान्नपिष्टा-
 पूष गन्धाक्षतादिपूजासामग्रींसंपात्राग्रतः सुवासिन्यो गीतगायन्त्यो
 मंगलतूर्यादिवाजित्रैः सह च मात्रिकाफलकं सौ भाग्यवत्या शिर

स्याग्रतः कृत्वा धृतमुकुटादि भूपणै र्वधूयरीवाप्यादिजलाशयं
 गमयित्वा तत्ररक्तगन्धेनाचार्यो जलमात्त्रद्विदित्ख्यपूजयेत् । संक-
 ल्पः—अथेत्यादि० वधूसहितोऽमुकोऽं करिष्यमाण नूतनवध्वांसह
 जलमात्त्रद्व्यां पूजनं करिष्ये—आवाहनम्—आवाह्यामिदेवेशीजिल-
 मात्त्रद्वः सुमंगलाः । सदासौभाग्यदायिन्यः पूजार्थं स्थापयाम्यहम्
 ॐ एतन्तेतिप्रनिष्ठाप्य चतुर्थ्यन्तै र्नाममंत्रैः पंचोपचारादि पूज-
 नंकुर्यात् । तद्यथा—ॐ मात्स्यै नमः ॐ कूर्म्यै नमः, ॐ चाराह्यै
 नमः ॐ कुवकुट्ट्यै नमः ॐ नङ्क्यै नमः ॐ जलूक्यै नमः ॐ सोमा
 यै नमः । इति सम्पूज्यनैवैद्यं निवेदयित्वा जलचरेभ्योजलेक्षिप्त्वा
 प्रार्थयेत्, मात्सीकौर्भीचवाराही कुक्कुटी मंडुकी तथा । जलूकींचैव
 सोमांच सौभाग्यार्थनमास्यहम् । ततः सर्वे नैवैद्यं जलचरजंतुभ्यो
 जलाशयेक्षिप्त्वा भक्षयित्वा च जलाशयान्मनोहरेपात्रेजलं नीत्वा
 वधूशिरसितत्पूर्णकलशं निधाय समाचारतो ग्रामदेवता स्थानं प्रति-
 गच्छेत, तत्रदेवताधारचतुर्थ्यन्त नाममंत्रेण पाद्यादिनीराजनान्तां
 पूजांकृत्वोपासनं निवेदयेत् । ततः प्रार्थयेत्—यत्रयोदेवस्तस्य ध्याने
 न प्रार्थयेत् (वा) ॐ ग्रामदेवनमस्तुभ्यं सर्वेदामंगलंकुरु । प्रसीद
 देवदेवेशशरणागतवत्सल । ततो प्रदक्षिणांकृत्वा तेन पूरितकलशेन
 सह वधूमग्रतः कृत्वा गृहमागच्छेत् । कतिचिद्देशेष्विदानीं गृहांग-
 णेश्यामादेवीपूजनमिभवति । देशाचारतो यस्य देशस्य यथाचारः
 सः सर्वदासेव्यो भवतीति शास्त्रसम्मतिः । आचारः प्रथमो धर्मः,

इति वधूजलाशयपूजा

एवं विधिना द्विरागमनमपि कुर्यात् संकल्पस्यैव पृथक्त्वं
 अथक्त्वं समानम् । अथ वधूप्रवेश द्विरागमनयोर्विशेषः—देवको-
 त्यापन मंडपोद्गासनविधिः—तत्रकालः—समेचदिवसे कुर्याद्देवको-
 त्यापनं बुधःपष्टं च विपमेनेष्टमुक्त्वा सप्तमपंचमौ समेषु पष्टं विपमेपंच-
 मसप्तमानिरिक्त दिनं नात्रेष्टमित्यर्थः । अथ वध्वाः प्रथमगृहप्रवेशवि-
 चारः—नृहर्त्तं चिन्तामणीं—समाद्विपंचांगदिने विवाहाद्बधूप्रवेशो-

ष्टिदिनान्तराले । शुभः परस्नाद्विपमाब्दमासदिनेक्षिर्गान् परतो यथेष्टम् । उक्तं च सारसंग्रहे—विवाहमारभ्य बभूववेशोयुग्मेदिने पोडशवासरान्तः । अतः परंविवाहपटले—बभूववेशः प्रथमेत्रवर्षे तथातृतीयेप्यथपंचमेवा । सूयेंन्दुदेवेज्यवलेनकुर्यात् पुंसोमुनिगौ- तम आहसत्यम् ! सममासचर्षयोदोपमाहनारदः—समेवंपंसमे मासेषदिनारीगृहं व्रजेत् । आयुष्यंहरतेभर्तुः सानारीमरणं व्रजेत् गुरुशुक्रयोर्विचारमाहलङ्घ—स्वभवनपुरप्रवेशेदेशानां विप्लवेय- थोद्वाहे । नववध्वागृहागमनेप्रतिशुक्र विचारणानास्ति । नित्यया- नेगृहेजीर्णं प्रार्शनान्तेपुसप्तसु । बभूववेशमांगल्येनमौढ्यंगुरुशु- क्रयोः । गर्गः—व्यतीराते च संक्रान्तौग्रहणेवैधृतावपि । आर्द्धं विनाशुभंनैव प्राप्तकालेऽपिमानयः । मूर्हतंभार्तण्डे—उद्वाहात्प्रथमे शुचौषदिवसेद्गृहेकन्यका हन्यात्तज्जनींक्षयेनिजतनुंज्येष्टपतिर्ज्ये- ष्टकम् । पौषेचरवसुरंपतिच मलिनेचैत्रेस्वपित्रालये तिष्ठन्तीपितरं निहन्तिनभयंतेषामभावेभवेत् । अथ द्विरागमनेविशेषमाह— वादरायणः—अस्तंगतेभृगोः पुत्रेतथासम्भुग्वमागते । नष्टेजीवे निरंशोवानैवसंचालयेद्बध्म् । मूर्हतं वि०—वरेदथोजहायने घटा- लिभेपगेरवौरवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्पयासरे । नृयुगममीनक- न्यका तुलाधृपंचिलग्नकेद्विरागमंलघुध्रुवेचरेस्त्रपेमृद्भूमिः (नवोढा- यास्तुवैध्वयंयदुक्तंसम्मुखेभृगौ । तदैवविवुधैर्जेयम्, केवलंतद्वि- रागमे । आवाश्यकेविशेषमाहपराशरः—पोष्णादिवन्हिभाद्यधियाव- त्तिष्टतिचन्द्रमाः । तावच्छुक्रोभवेदधः समुखेगमनंहितम् । केचि- द्दीपोत्सव प्रतिपदिनक्षत्रादिनियमंविनेत्रवभूववेशं द्विरागमंचवां- छन्ति । अस्तंगतेगुरोशुभे सिंहस्थेवावृहस्पतौ । दीपोत्सववलेनैववधू- भर्तृगृहं विशेत् । कतिचित्सु प्रान्तेपुपारं पर्यटयान्नक्षत्रादिनियमंवि- नैव (प्रामचचनम्) इति प्रमाणान्—नव दिवसान्तराले आवि- याहाद्विरागमनं कुर्वन्तीति दिक् ।

इति द्विरागमन पद्धति

अथ विवाहोत्तरवर्जवर्जात्रिपयाणि—एकमातृजयोरेक वरतरे पुण्यस्त्रयोः ।
 न्यनाल कुर्या कुर्यान्मातृभेदेविधीयते । ११। नारदः—पुत्रीद्वाहातरं पुत्री विवाहोन श्रुतुत्रये । न तयो
 व्रतमुद्राहंनराडनापि मुण्डनम् । चराहः—विवाहस्त्वेक जातानां परमासम्भन्तरे यदि । अशान्दं
 त्रिभिर्वयंस्तत्रैकविधवा भवेत् । वसिष्ठः त्पुत्रोद्वाहोर्ध्वगृतुत्रयेऽपि विवाह कार्यं दुहितुः प्रकृयात् ।
 नमण्डनात्वापि हि मुण्डनं च । गोत्रेकतायां यदित्वावर्भेदः ॥ अत्र गोत्र शब्दोत्पत्तिव्यजनकः—
 एको दरभ्रातृविवाह कृत्यं स्वमुनेराणि प्रदद्यां विधेम् । परासदप्ये सुनयः समूचूर्नमुण्डनं मण्डनतो
 ऽपि कर्यम् ॥ एतदपवादमाह—श्रुतुत्र-स्यन्ध्ये चेदन्वावस्य प्रवेरानम् । ततःखेनोदस्यापि
 विवाहस्तुप्रतस्यते । साएवहेयाम्—कालपुने चैत्रासितु पुत्रीद्वाहोपनयनं । मेदावस्य कुर्यात्
 नर्तत्रय विलवनम् ॥ संदिताप्रदीपे—ॐ विवाहस्तत्रस्यैव, कर्वाविवाहो दुहितुः सपार्थम् ।
 अत्र एकदा स्वसुगलयं च त्रुं प्रवेशया त्स्वगृहंनवादी । वशिष्ठः—द्विशोभनंत्वेकगृहेतिनेष्टं शुभं
 तुश्चात्रवभिदिनेस्तु । अवरयकं शोभनमुत्पयो वा द्विथय, चर्थ विभेत्तोवा । त्रिमंगलं नेष्टमाह—
 एरोदा सूना नामिनाथयंभवेत् । मित्रोदर सूना नेतिनात तपोत्रयीत् । ज्योतिर्निकषेमात्यायन—
 दुलेश्रुतुयाददाए मंजात्रतुमुण्डनम् । प्रवेशान्निगमोनेष्टो नकुदान्मंगलम् । पुत्रीद्वाहः प्रवेशाव्यः
 क योद्वाहस्तुनिः । मुण्डनंचौलमित्तुक्तं व्रतोद्वाहोतुभंगलम् । चौलं मुण्डनमेवोक्तं वर्जयेन्मण्ड-
 नराम् । मौजीवोभयतः कर्वा यतो मौजीनमुण्डनम् । संकटेविशेषः कर्वाकिकिसु—एह ह पुत्री
 न तित किध्यापुत्रज्जस्योद्वहनंकराणि यावत्तुर्ध दिनत्रपूर्वं सत्र प्यव, योद्वहनंविद्वात् । कश्यः -
 मौजीवधस्तथोद्वाह, परासां कर्त्त ऽपिवा । पुत्रीद्वाहं कुर्यात् विभक्तानं न दोषकृत् । गायः
 मातृदुगे स्वसुदुगे अतृस्तसुदुगे तथा । न कुर्या मंगलकिञ्चिदेकसम्भरण्डपेऽपि । ज्योतिर्विकरणेजा-
 वादः—एकोत्रयोद्वेयोरिकदिनोद्वहनेभवेत्ताना । न्य त त्वेकदिनंकेऽप्यगृह संकटेचशुभम् । एवविवाहा-
 च्छुभदोनस्य नरीविवाहो न श्रुतुत्रयेऽप्यात् । नारी विवाहात्तदरेऽपिशस्तं नस्त्राणिप्रह्माहुरायाः
 मित्रभ्रातृज्योस्तु एकसरे विवाहवाहमेध विधि—पृथङ् मातृजयो कर्वाविवाहस्त्वेकतासरे एकहिम-
 म्भंडपेऽप्यः पृथक वेदिकयोस्तथा । पुण्ड्रिकयोः कार्यं दर्शनं न शिरस्यो भगिर्न भ्रासुभ्रंदां च
 यादस्तत्पदीभवेत् । यमलयोस्तु विशेषी गौर्यं—एकस्मिन्वासरे प्राप्तेकुर्यात्तलजातयोः ॥
 चौं चैव विवाहं च मौजीवधनमेव च । भट्टकारिकायम्—कर्त्तव्यंमंगलं स्वसो भ्रात्रोर्भ्रमलजातयोः
 अथ कन्या गृहे भोजनतिषेधः आदित्यपुराणेः—विष्णुंजासातरंनये तस्त्रोपंतंराग्येत् ।
 अत्रजायां कर्वायां नरनीयात्तस्य वैगृहे । यदि सुप्रीनमोहाद्वापूयाशं नाकं प्रजेत् । मदनरत्ने भवि-
 ध्ये—दौहित्य मुहा दृष्ट्वा किर्त्तयन्नुशोचति दौहित्ययान्यापुत्रस्य । अथ नान्दीश्राद्धोत्तरंधर्माः
 निर्णयदीपेगौर्यं—नान्दीश्राद्धेकृतेऽप्यव्यवमातृ विपर्जनम् । दर्शनाध्वं जयभ्राध्वंस्नानं शीतोदनेन
 च अन्वये स्वधकारं नित्यध्वं तृषैवच । प्रह्लादां चध्वयं । नदीमोमाहितंनघनम् । उंयु सव्रतं चैव
 श्राद्धभोजनमेव च नैवकुप्ये, सिसडाश्व मण्योद्वाप्यनावधिः ज्योतिषे—स्नानंनचै न तिलश्रकर्म प्रेतासु-
 यानं कन्यारदनम् अपूर्वीतीयां मरुदशं च विजर्जयेन्मंगलतोऽभ्येमात् । त्रिगृहेऽवकन्यम् ॥ मासपकृष्टं
 विवाहाद् व्रतारंभणं च । जीर्णभाण्डादि न स्वाभ्यंगुत्संगंवाजिनं तथा । ऊर्ध्वं विवदत्पुत्रस्य तथा
 च व्रत कथनात् । मदनो मुण्डनंनैववर्षे वर्षादिमेवच अभ्यंगेस्तुचै चैव विवाहे पुत्र जन्मनि मांगल्येषु
 च सर्वेषुत्रार्थं गोपिवरम् । गृहस्पतिः—तीर्थं विवाहे यात्रादीनां प्राप्ते देशदिपु, वे । नगरप्रमदं च

स्पृगस्पृष्टिर्मुष्यति । योगियाज्ञ उक्त्यः—नृणाथदुस्त्वेषे तीतेमंगलं विनित्यं च अनुग्रह्य छहृद्वधू
 चाचिदित्तेदेवताम् । हेवाद्गौरभूल्य तरे—विनाहृत चूडागु वर्षाःधरेतर्धकरु पिएडदनामृश नां न
 कुत्तिलतर्पणम् । सूतौ—जाडये म्यथाधे ज्ञातागो जये हनि, कृतोद्द होऽपि कुर्वीत निखडनि-
 वंशतु ।

अथ विवाहपरिभाषा—

अथ कुम्भविवाहपरिभाषा ।

अथारिहाय कन्यावैधव्ययोगेनूच्यत मारुण्डेयपुराणे—यत्तवैधव्ययोगेन
 कुम्भेपुत्रनिर्वादिभि । कृत्य लग्नं ततः पश्चत्कन्योद्द हेतित्चरे । तत्र पुनर्भूदोपाभावे उक्तो
 निमानलएडे—स्वर्णाम्बुनिपाखना च प्रतिपात्रिणुकरिणी । तथापह विव हेतुपुनर्भूतवनजायते ।
 सूर्यारणस राडे—विप हात्पूर्वमाले च चन्द्रतारवमन्त्रिते । विव हाको च मन्यथा कुम्भेनपहचोद्दहेव
 सूणे वष्टेत्तश्च हात्नुविचन । कुकुत्ततंदे, तयारेकनागिरे । तत कुम्भेचनेः सर्थप्रम-
 ञ्चनलिलारणे । ततोऽभिषेकं कुम्भेत्तवत्तवग्निभि । कुम्भपर्यन्तं तत्रैवोक्ता—वर्णा
 स्वरूपं जन्मनामजा । पतिं जानन्त्येकशिवर पु सुत कुम्भ । वेदिनिष्णेवरदेव कन्यामलय
 दुखन । ततोऽनन्तरंस्वर्गि वयस्त्रितास्येत् । इत्यनरोवेण्यु । तत्रैव सूर्तिदानमप्युक्तम्
 ब्रह्मणमधुनामन् समूत्रिविचरह्ये । तस्मात्तद्विवाज विष्णुर्भूत्तुर्भुजम् । शुद्धवर्ण
 सुवर्णवित्ततद्व्यभिर्वात्म् । निर्वाचा शय गदा चक्रवत्तयुताम् । दधन वाम्यापोतेकुमुदोतन-
 मालिनम् । तल्लिणा च तं यन्मन्त्रेनपुदोरथेत् । भंत्र — नृणागानि ज्जुवित् नृत्तमस्तिनायम् ।
 विनोपविनस्त्र येहृतीव नैविकथा । प्राणमनसहपोरधत सौहृधनम् । वैधव्यवादिः
 खौनजस्यसु सन्वधये । बहुसोभय लवसौ च पर्यागोरीमातनुम् । सर्वोक्तिं ज्ञात्वा तथा तुभ्यसत्र-
 द्देद्विज । अनन्तथाइस्मीति निराजपरिति । एतस्तिरिति तस्योक्त्यहोत्तस्यहृदिसत् । ततो
 वैमदिक कुम्भेधि तसृगीहृत ।

॥ अथ कुम्भविवाहपद्धतिः ॥

अथच कन्यापिता ऽन्योवा—एकान्त स्थाने विष्णुमन्दिरादौ
 गत्वासनेप्राङ्मुखमुपविश्याचम्यप्राणायामत्रयं विधाय भूतो-
 त्सादनं कृत्वा स्वदक्षिणतः कन्यामुपविश्य स्वस्तिवाचनं पठित्वा
 संकल्पं कुर्यात् । अथेहेत्यादि देशकालसंकीर्तनान्ते ममास्याः
 कन्याया नक्षत्रादि योगेन ग्रहयोगेनच पुनर्भूदोपाभावेन विपा-
 ख्य योगसंभव वैधव्यारिष्ट परिहारार्थं श्रीपरमेस्वरप्रीत्यर्थं कुम्भ
 विवाहं करिष्ये,, तत्पूर्वांगत्वेन गणेशादिपंचांगपूजनं नान्दीश्राद्धं
 चाहं करिष्ये,, ततो गणेशादि पूजनं कृत्वा । आचार्यं घृणुयात् ॥
 ब्राह्मणं सम्पूज्य यरण सामग्रीं हस्तेनीत्वा—अथेत्यादि संकीर्त्या
 सुकोऽङ् ममास्याः कन्यायावैधव्य दोषपरिहारार्थं करिष्यमाण

वक्ष्यमाणमन्त्रेणान्तः पटं कुर्यात् । विवाहोक्तगोत्रोच्चारण विधौ
 मंगलपद्याष्टकं पठित्वा कन्याया वस्त्राणिपरिधाप्योत्तरतो वक्ष्य
 माणमन्त्रेणान्तः पटमपसार्य समीक्षणं कुर्यात् । मंत्रः ३० समं
 जन्तु विश्वेदेवाः समाणे हृदयानिनौ ॥ समातरिस्वा संधाता
 समुदेष्ट्री दधाननौ । इतिपरस्पर कुम्भकन्ययोः समीक्षणं कृत्वा ।
 कन्यां पाद्यगंधादिभिः संपूज्यसंकल्पं कुर्यात् । ३० विष्णुः ३ इति
 त्रिराचम्याद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य ममास्याः कन्याया वैधव्य
 दोष परिहारद्वारा श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं श्री विष्णुवरुण स्वरूपिणे
 कुम्भायैमां वरार्थनी श्रीस्वरूपिणीं कन्यां संप्रददे । दान वाक्य
 पठेत्- गौरीं कन्यामिमां श्लक्ष्णां यथाशक्ति विभूषितां । ददामि
 विष्णवे तुभ्यं सौभाग्यं देहि सर्वदा । इति दत्त्वा वक्ष्यमाण
 मन्त्रेण दशतन्तुकेन सूत्रेण कन्यांकुम्भं च मंत्रावृत्त्या दशधावेष्टयेत् ।
 ३० परिस्वेत्यस्य मधुश्छ दाक्षपीरनुष्टुब्धः कुम्भविवाहे कन्या
 कुम्भेनसहवेष्टने विनियोगः । ३० परित्वागिर्वणोगिरिऽइमामवन्तु
 विश्वतः वृद्धायु मनुवृद्धयो जुष्टाभवन्तुजुष्टयः । इति मन्त्रेण
 दशावृत्त्या वेष्टयेत् । ततःकन्यांप्रार्थयेत् । ३० यन्मयाप्राचि जनुपि
 त्यक्त्वा पति समागमम् । त्रिपोपधिपशस्त्राद्येर्हेतोधानि विरक्तया
 प्राप्यमानं महाघोर यशःसौख्य धनापहम् । वैधव्याद्यति दुःखौ
 घ नाशाय प्रार्थयाम्यहम् । विष्णोस्त्व देहि सौभाग्य कुरु वैध-
 व्यनाशनम् । इति सम्प्रार्थ्य ततोवेष्टितसूत्रात्कुम्भं निःसार्य जला
 शयेप्रसारयेत् । ततः पञ्चपल्लवसहितेन पूजाप्रकरणोक्त समुद्रज्येष्ठा
 इत्यादि मन्त्रैस्तत्रोक्तैर्वैदिकैश्च कन्यामभिपिच्यान्यडासांसि परि
 धाप्यप्रतिमादानं कुर्यात् । अद्येहेत्यादि संकीर्त्यामुकराशे रमुक क-
 न्यायाः करिष्यमाण वैधव्य दोषोपशमनार्थं कुम्भ विवाह कर्मणि
 आजन्म सौभाग्य फलप्राप्तये इमेसुपूजिते विष्णु वरुणप्रतिमे वै-
 याहावस्त्रसहिते चासुक शर्मणेआचार्याय दास्ये तथा चान्येभ्यो
 ब्राह्मणेभ्यो भूयसी दक्षिणां विभज्य दास्ये तथा च ब्राह्मणान्भो

जयिष्ये—इत्याचार्याय प्रतिमां दत्त्वा प्रार्थयेत्—३७ बहुसौभाग्य
लब्धौ च महाविष्णो रिमां तनुम् । सौवर्णि निर्मितिं शक्त्यातुभ्यं
संप्रददेद्विज । ३७ अनघाहमस्मि, इति चारत्रयंकन्याप्रार्थयेत् एवम-
स्तु, इति चारत्रयमाचार्यो ब्रूयात् । ततो गणेशादीनामुत्तरांग
पूजनंकृत्वा यान्तुदेवेति विस्त्रज्याभिपेकमन्त्रतिलकं कृत्वा यथा
शक्तिब्राह्मणान्भोजयित्वा ततः कन्याविवाहं कुर्यात् । एवंविधि
कृते सतिशुभं भवेत् इति कुंभविवाह पद्धतिः ।

अथ प्रतिमाविवाहपद्धतिः ।

—*:*—

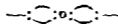
अथच कन्याया जन्मकालीन ग्रहादिसूचितवैधव्य परिहारार्थं
पूर्वं विष्णुप्रति मया सह विवाहं कृत्वा तदन्तरं विवाहमाचरेत् ।
उक्तंच विधानखण्डे—स्वर्णाम्बुपिप्पलानां च प्रतिमाविष्णुरूपिणीं
तयासहविवाहेतुपुनर्भूत्वांनजायते । संस्कारप्रकाशेऽपि—विष्णु
प्रतिमा विवाहप्रकारोऽऽप्यभिहितः । तत्र कर्ता स्नात्वास्वासनमु-
पविश्य प्राङ्मुखः आचम्य भूतोत्सादनंकृत्वा दीपंपूज्वालयसंक-
ल्पं कुर्यात् । अथेत्यादि० अमुकीकन्यायावैधव्यदोषपरिहारार्थं
करिष्यमाणं विष्णुप्रतिमयासह विवाहकर्मणि निर्विघ्नतासिद्धये
तत्रादौ गणेशादि पंचांग देवतानां पूजनपूर्वकं प्रतिमा विवाहं च
करिष्ये । ततः कन्या संस्नाप्य शुद्धेनूतने वाससी परिधाप्य
स्व दक्षिणभागे समुपवेश्य स्वस्तिवाचनं पठित्वा गणेशादिपूजनं
कृत्वा प्रधानसंकल्पं कुर्यात् । अथेत्यादि० इदानीममुकगोत्राया-
मुकराक्षरस्याः कन्याया अमुकस्थानस्थितदुष्टग्रहसूचित वैधव्य
दोषोपशान्तिद्वारा श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं सौभाग्य प्राप्त्यर्थं च
विष्णुप्रतिमयासहविवाहं शरिष्ये ॥ कन्या हस्तेन प्रतिमा
दानंच करिष्ये । तत आचार्यवरुणं कृत्वा । संप्रार्थ्य च, ततः
सपादपलस्वर्णं निर्मितां चतुर्भुजां विष्णुप्रतिमां शंखचक्रगदायुतां
पूर्वोक्त विधिनाऽऽग्न्युत्तारणं कृत्वा पञ्चाश्रुतेन संस्नाप्य, तण्डुलपुरित

ताम्रपात्रोपरि संस्थाप्य ३० एतन्तेति पठित्वा ३० मूर्धुवः स्वः
 भो विष्णोप्रतिमायामिहा गच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठतो वरदोभव
 इति प्रतिष्ठाप्य अग्नेहेत्यादि० अमुकगोत्रायाममास्याः कन्याया
 जन्मलग्नावधिकैवैधव्य संभावनाजनितग्रहैवैधव्यदोष निवृत्तये-
 आजन्म भविष्यत्पतिना सह सौभाग्य प्राप्तये श्रीपरमेश्वर
 प्रीतये सुवर्णप्रतिमायां श्री विष्णोः षोडशोपचार पूजनं करिष्ये
 ध्यानम्- ३० निर्मितां रुचिरां शम्भुगदाचक्राब्जसंयुताम् । दधानां
 वाससीपीतेध्यायामि विष्णुरूपिणीम् । इति ध्यात्वः पुरुष सूक्ते-
 नवा वक्ष्यमाणमन्त्रेः षोडशोपचारेण प्रतिमापूजनं कुर्यात् । ३०
 तद्विष्णोरित्यादिमन्त्रत्रयाणां मेधातिथि-र्याज्ञवल्क्यऋषिर्गायत्री
 छन्दो विष्णुर्देवता प्रतिमाविवाहे प्रतिमा पूजने विनियोगः । ३०
 तद्विष्णोः परमं पद र्तं० सदापश्यन्ति सूरयः दिर्वावचक्षुराततम् ।
 ३० त्रिणिपदाविचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदाभ्यः । अतो धर्माणि
 धारयन् । ३० तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवा ॐ सः समिन्धते ।
 विष्णोर्यत्परम्पदम् । इति मन्त्रैः सम्पूज्य ३० विष्णवे नमः । प्रा-
 धयेत् । ३० श्री विष्णो जगतां नाथ जगन्मंगल कारक । वैधव्ययोग
 शान्तिं त्वं मत्कन्यायाः कुरु प्रभो ॥ ३० देहि विष्णो वरं देव
 कन्यां पालय दुःखतः । पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्रसुखं कुरु ।
 इति संप्रार्थ्य मधुपर्कं दद्यात् । ३० प्रतिमारूपिणे तुभ्यं मधुपर्कं
 ददाम्यहम् ॥ विष्णवे कुरु सौभाग्यं कन्यायाश्चैव सर्वदा ॥
 कन्याप्रतिमा ऽन्तरालेऽन्तः पटंकृत्वा मङ्गलपथं पठेत् । ब्रह्मादक्षः
 कुबेरोयमवरुण मरुद्वन्हि चन्द्रेन्द्ररुदाः शैलानद्यः समुद्राग्रहगण-
 मनुजादैत्यगंधर्वनागाः । सिद्धा नक्षत्रतारारविवसुमुनयो व्योम-
 भूरशिवनौच संलीनायस्यदेहे सहरतु भगवान्सर्ववैधव्यदोषान्
 ततोऽन्तः पटमपसार्थं वक्ष्यमाणमन्त्रेण समंजनं
 कुर्यात् । ॐ कन्यावैधव्य योगाश्च तव हृष्टि निपातनात् ॥
 सर्वेनश्यन्तुविष्णोत्वं कन्यांपश्यहृद्व्रत ॥ इति कन्याप्रतीक्षणं
 कृत्वा कन्यां गंधाक्षतादिभिः सम्पूज्यदानसंकल्पं कुर्यात् । अथे-

त्यादि संकीर्त्यामुकोहंममास्याः कन्यायाः जनुषिकूरग्रहजनित
 वैधव्यदोषपरिहारार्थं सौभाग्याप्तये इमाममुकीनाम्नीं कन्यां वि-
 ष्णुवेतुभ्यंसमर्पयामि । इति कन्याहस्तं प्रतिमोपरिस्पर्शं कारयित्वा
 दानप्रतिष्ठां कुर्यात् । अथैतद्वैधव्यदोषपरिहारार्थं कन्यादानक-
 र्मणः सांगतासिद्धये-इदं सुवर्णं विष्णुवेतुभ्यंसंप्रददे । इति दत्त्वा ।
 दशतन्तुसंमिलितसुत्रेण कन्यां प्रतिमया सहवेष्टयेत् । ३० परित्वे-
 त्यस्यमधुश्च्छुन्दा ऋषिरनुष्टुप्छुन्दो विष्णुप्रतिमा विवाहे कन्या-
 प्रतिमया सह वेष्टनेविनियोगः । ३० परित्वागिर्वर्णो गिरऽहमाभवन्तु
 त्रिवशतः । वृद्धायुमनुवृद्धयो जुष्टाभवन्तु जुष्टयः । इति मन्त्रावृ-
 त्त्या परिवेष्टयत्तुं विरमेत् । ततः कन्याविष्णुं प्रार्थयेत् । जन्माजि-
 तानां पापानां फलाद्वैधव्ययोगजाम् । निः सरयत्वं वैधव्यान्मां च
 विद्धि स्वर्गिकरीम् । यशोदेहि धनं देहि देहि मे विपुलं सुखम् । पत्या
 च सहसौभाग्यं देहि त्वं शरदांशतम् । ततः प्रतिमां निः सार्थकन्या
 प्रतिमादानं कुर्यात् । गंधाक्षतादिभिस्तरांगपूजनं विधाय अथे-
 त्यादि० अमुक्यहं स्ववैधव्यदोष निवृत्तिं द्वारा श्रीपरमेश्वर
 प्रीत्यर्थं कृतस्य विष्णुप्रतिमाविवाहकर्मणः सांगतासिद्धये इमां वि-
 ष्णुप्रतिमां जनुषि लग्नादौ स्थितैर्ग्रहैः संसूचयिष्यमाणवैधव्यादि-
 दोषनिवृत्तये सकलेश्वर्यं सौभाग्यप्राप्तये श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं—
 इमां सुपूजितां सौवर्णीं विष्णुप्रतिमां सर्वोपस्करयुतामिदानीं स्वगा-
 त्रपरिधेयवस्त्रांश्चामुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय
 तुभ्यमहं सम्प्रददे ३० तत्सन्नमम् । दानवाक्यंपठेत् । यन्मया प्राचि-
 नुषिघ्नंत्या पतिसमागमम् । विषोपविषशस्त्रांर्वेहतो वातिविरक्त
 या । १ । प्राप्यमाणं महाघोरं यशःसौख्यधनापहम् वैधव्याश्रितिदुःखौ
 घंतत्राऽशयसुखात्तयो । १ । बहुसौभाग्यलब्धये च महाविष्णोरिमां तनुम्
 सौवर्णीं निर्भिनां शक्त्या तुभ्यंसम्प्रददे द्विज ॥ ३॥ इति ब्राह्मणहस्ते
 प्रतिमां दत्त्वा कन्यावदेत् । ३० अनघाहमस्मि, इति चारत्रयंब्रूयात्
 ब्राह्मणस्तु-३० यौस्त्वाददातु पृथिवीत्वा प्रतिगृह्णानु । ३० स्वस्ति
 इति प्रतिगृह्य ३० कोदात्कस्माद्भदात्० इति पठित्वा ३० अनघा-

गन्धसंयुक्तं पूयेच्छीतजलम् । प्रतिकुम्भं नद्याचिप्लुं सम्पूज्य परं श्याम् । पयःप्यादिर्निघ्नन्तं कुशी-
 प्राम्नैव मन्त्रविदः ॥ अत्र होमप्रकारः सौनकेन प्रदर्शितः—अर्कं तन्निधिमाप्स्य तद्स्वस्त्वादि-
 वचयेत् । नान्दीश्राद्धं प्रवृत्तं स्थरेडलंच न्वहयेत् । अर्कं न्यर्च्य सौयाच गन्धपुष्पाक्षतादिभिः ।
 स्वयंचलं द्रुतं तद्बद्धं वरजपाल्यादिभिः शुभैः । अर्कं योत्तरदेशे तु सन्नरवधएतया ॥ एतथाकन्यया ।
 उल्लेखनादिकं कुशीश्राद्धं रान्तमतः परम् । अत्र याहुतिं च्छुहुयात् सांगोभिरन्यैवया । यस्मैत्वकम-
 कामायेत्येतवर्षापरः परम् । व्यस्तमिधमस्नाभिस्तदश्वस्विष्टकृद्भूदेत् । परिपेक्ष्य पर्यंतं मयारचेत्या-
 दिकं कषात् । अत्र पंचमदिने कर्तव्यमुक्तं ब्रह्मपुराणे—चतुर्थदिनेऽनीते पूर्वदत्तं पूज्य च विष्टय
 होमगर्गनवविधिना नानुर्षापरम् । उद्वहेदयथानैव पुनर्षी-दिद्विद्विनाम् । न्यश्रुत्तचमिवाणि मङ्गलं-
 नैगच्छति । ऐवमेतद्विनःश्रेष्ठ विधिनसम्पुद्गहेत् । धनधान्यसखद्विश्व-इच्छाशक्तिपरधच । ततो
 वैशातिसूक्तानि जप्त्वा न्तं विष्णोः पुनः । गोयुग्मं दक्षिणादयं दत्तं तस्यैव भक्तिः । इतरेभ्योऽपि वि-
 प्रेभ्यो दक्षिणां च भिक्षुक्रियः । तत्सर्वं पुण्ये वादन्ते पुराणहर्षचरेत् । देवप्रयोगेऽपि ॥

अथार्कविवाहपद्धतिः



अथ च क्रियमाणतृतीयविवाहात्प्राक् चतुष्टय दिनाधिक
 व्यवहिते । रविवारे शनिवारे वा हस्तर्क्षे वा चन्द्रतारानुकूलेऽ-
 न्यसिंमशुभनक्षत्रे शुभे दिने ग्रामात्प्राच्यां वा सुपुष्पफलान्वितस्यार्क
 वृक्षस्य सन्निधौ गत्वानस्याधः प्रदेशे समनात्सपादहस्तवेदिकां चतु-
 रखांकृत्वाऽर्कस्य पश्चिम उपविशेत् । तत्रार्कविवाहसामग्रीं स-
 म्पाद्यात्चम्पदीपं प्रज्वाल्य भूतोत्सादनादिकर्म कृत्वा आनोभद्रे-
 तिस्त्रस्तित्वाचनं कृत्वा संकल्पं कुर्यात् । अथेत्यादि देशकालौ संकी-
 र्त्वा मुकराशिरमुकोऽहं करिष्यमाणार्कविवाहकर्मणि निर्विघ्नतासि-
 ङ्घे भगवतः श्रीगणेश्वरस्य पूजनं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धादि
 नवग्रहान्तं पंचांगपूजनं च करिष्ये (तत्र नान्दीश्राद्धं सपाद माष-
 सुवर्णं कुर्यात्) इति गणेशादि पंचांगपूजनं विधायान्चार्यवृणुयान्
 पाद्यादिभिर्याज्यं सम्पूज्य चरणसामग्रीं हस्ते कृत्वा अथेत्या-
 द्यमुकोऽहं करिष्यमाणार्कविवाहकर्मणि कर्मापदेशार्थमेभिर्द्रव्यैर-

मुकगोत्रममुक शर्माणं ब्राह्मणमाचार्यत्वेन त्वामहं वृणे,, वरणं
दत्त्वा प्रार्थयेत् । आचार्यस्तु० कर्म० कर० ॥ ततोऽर्ककन्यापूजा
नार्थमन्यब्राह्मणं वृणुयात् । पाद्यादिभिस्तं सम्पूज्य वरण
सामग्रीं करे कृत्वा, अथे० अनुकोहमेभिर्वरणद्रव्यैर्गन्धा-
क्षतादिभिरर्कं कन्यादानार्थममुक शर्माणं त्वा महं वृणे ।
वरणं दत्त्वा प्रार्थयेत् । कन्यापितायथा सूर्यो देवानां च पूजा-
पतिः । तथात्वमर्कदानार्थं मा वार्दत्वां कुरु द्विज ? यावत्तु मम
माप्स्येत तावत्स्वसन्निधौ भव । ततो दानाचार्यो वरं पाद्यादि मधु-
पर्कान्तं कर्म कृत्वा यजोपवीतालंकारादिभिः पूजयेत् । ॐ साधु
भवानास्नां पूजयामि ॐ अर्चय ॐ विराजो दोह० पाद्यम् ।
विष्टरं च दत्त्वा मधुपर्कान्ते वस्त्रालंकारादीनि वरणसामग्रीं करे
कृत्वा । अथे० एभिर्गन्धाक्षत वरणद्रव्यैरमुकगोत्रमर्कं कन्यापरि-
ग्रहार्थं त्वामहं वृणे इति वरं वृत्वा सचवरोऽर्कस्य परतस्तिष्ठन् ।
सूर्यं प्रार्थयेत् । हस्ते गन्धाक्षतपुष्पं निधाय—ॐ त्रिलोक वासिन्
सप्ताश्व ह्याययासहितो रवे । तृतीयोद्वाहजं दोषं निवारय सुखं
कुरु । ततोऽर्काधः कलशं संस्थाप्य कलशपूजाविधिना सम्पूज्य
नतः सौवर्णि सुवर्णं प्रतिमामग्रतः कृत्वाऽन्युत्तारणादि पञ्चगव्य
स्नानान्नं कृत्वा कलशोपरि गोब्रूमान्नश्रितताम्रपात्रं निधाय तत्र-
पूतिमां संस्थाप्य “आकृष्णेति विनियोगपुरः सरं मन्त्रेण पूतिमां
कलशोपरिसंस्थाप्य “एतन्तेति पूतिष्ठाप्य ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु
सौम्य मित्याद्यष्टा दशमंत्रं सूर्यसूक्तं वा “आकृष्णेति मन्त्रेणार्क
ह्यायासहितं सम्पूज्य श्वेतवस्त्र सूत्राभ्यामर्कमावेष्टय च ” ॐ
आपोहिष्टेत्यादिभिस्त्रिभिर्मन्त्रैर्कर्मभिर्पित्य नैवेद्यार्थं गुडौदनं
ताम्रूलं च निवेद्य ततः प्रदक्षिणां कुर्वन् प्रार्थत्—ॐ ममप्रीति-
करायैयं मया सृष्टा पुरातनी । अर्कजा ब्रह्मणा सृष्टा ह्यस्माकं परि-
रक्षतु । पुनरपि चक्ष्यमाणमंत्रं जप्ताप्रदक्षिणां कुर्यात् । ॐ नमस्ते
मंगले देवि नमः सवितुरात्मजे । त्राहिमां कृपया देविपत्नी त्वं
म हरागता । अर्कत्वं ब्रह्मणा सृष्टः सर्वप्राणिहिताय च । वृक्षा-

णामादिभूतस्त्वं देवानां प्रीति वर्द्धनः । तृतीयोद्गाहजं दोषं मृत्युं
 चाशु विनाशय । ततोऽर्कवेद्या उत्तरतो होमार्थं प्रादेशमात्रं
 स्थण्डिलं कृत्वा पंचभूसंस्कारपूर्वकं तैजसे पात्रे-अग्निं स्वाभि-
 मुखीकृत्यसंस्थाप्यप्रतिष्ठाप्य च तद्गच्छार्थमिन्धनंनियुज्य, वरः
 प्राङ्मुखो भूत्वाऽर्कसमीपे तिष्ठेत् । ततो वरार्कयोरन्तरालेऽन्तः
 पटं धृत्वा वक्ष्यमाणं मंगलपत्रं पठेत् । सिन्दूरं स्पृहया स्पृहन्ति
 करिणां कुंभस्थ माधोरणं भिल्लीपह्लव शंकयाविचिनुते सान्द्र
 द्रुमद्रोणिषु । कान्ताः कुंकुम शंकया करतलेमृद्गन्ति लगनं चयत्
 तत्तेजः प्रथमोद्भवं भ्रमकरं सौरं चिरंपातु वः । अद्यहेत्यादि०
 काश्यपगोत्रः काश्यपावत्सार नैध्रुवेतित्रिप्रवरान्वितादित्यप्रपौत्रीं
 सवितुः पौत्रीं ममार्कस्यपुत्रीमिमां कन्यां “अमुकगोत्रायामुक-
 प्रवरायामुकप्रपौत्रायामुकगोत्रायामुकपुत्रायामुक नाम्ने वराय”
 इति गोत्रोच्चारं कृत्वान्तःपटमपसार्य ततः कन्यां निरीक्ष्य स्वस्ति-
 वाचनंपठित्वा आशिषं दद्यात् । ततो दानाचार्यः—भक्तिः प्रहाय
 दातुं कुमुल पुट कुटी कोटरकोडलीनां, लक्ष्मीमाकष्टुकामा इव
 कमल वनोद्घाटनं कुर्वतेषु कालाकारान्धकाराननपतितजगत्सा-
 ध्वसाध्वंसकल्पाः, कल्याणं वः क्रियासुकिसलयरुचयस्तेकरा
 भास्करस्य । अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य काश्यपगोत्रां काश्य-
 पावत्सार नैध्रुवत्रिप्रवरान्वितामादित्यस्यप्रपौत्रीं सवितुः पौत्रीं
 ममार्कस्यपुत्रीं “आर्की नाम्नीमिमां कन्यां अमुकप्रपौत्रायामुक-
 पौत्रायामुकपुत्रायामुकगोत्रायामुकप्रवरायामुकशाखिनेऽमुकवेदा-
 ध्यायिनेऽमुक नाम्ने वराय तुभ्यमहंसंप्रददे” इति वर हस्ते जलं
 दत्त्वा दानं वाक्यं पठेत् । ॐ अर्ककन्यामिमां दिप्र यथाशक्ति
 विभूषिताम् । गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्तां विपू समाश्रय । अद्येत
 दानप्रतिष्ठार्थं सुवर्णं तुभ्यमहं सम्प्रददे । स्वस्तीति वरो वृथात् ।
 ततो वरः गंधाक्षत पुष्पयुतोदक पूर्णास्त्रीनजलीनकोपरि दद्यात् ॥
 तत्रमंत्राः—ॐ यज्ञो मे कामः समृद्धयतां १ ॐ धर्मो मे कामः
 समृद्धयतां २ ॐ यशो मे कामः समृद्धयताम् ३ इत्यंजलित्रयं

दत्त्वा ततो गायत्री मन्त्रेण वा ॐपरित्वागिर्वणोगिरऽहर्मा
भवन्तुद्विवरवतः । वृद्धायु मनुवृद्धयो जुष्टाभवन्तु जुष्टयः । इति
पंचवारमर्कवृक्षोपरिसूत्रमावेष्ट्य तत्सूत्रं पुनः पंचगुणं कृत्वाऽर्क-
स्यदक्षिणस्कन्धे वध्वा वृहत्सामेतिरक्षांकुर्यात् । ॐ वृहत्साम
क्षत्र भृद्वृद्ध वृष्यं त्रिष्टुभोजः सुभित सुगवीरम् । इन्द्रस्तो-
मेनपंचदशेनमध्यमिदं धातेन सगरेण रक्ष । ततोऽर्कस्याष्टदिक्षु
अष्टदलेषु अष्टौ कुं भान्संस्थाप्य वज्रैराच्छाद्य त्रिसूत्र्या कुंभ गलं
संवेष्ट्य च हरिद्रागंधादिकं जलं आभ्यन्तरे क्षिप्त्वा तेषु कलशेषु
सुवर्णं प्रतिमासु महाविष्णुमावाह्य पुरुष सूक्तेन वा इदं विष्णु-
रितिमन्त्रेण षोडशोपचारैः पूजयेत् । ॐ इदं विष्णुविचक्रमेत्रे-
धानिदधेपदम् । समूढमस्यपा ॐ सुरे । ततः स्थण्डिले पंचभू-
संस्कारपूर्वकं (वरदः शान्तिकर्मणि) इतिवरद नामाग्निंसंस्थाप्य
एतन्तेतिप्रतिष्ठाप्य ॐ वरदनामाग्नये नमः इतिमन्त्रेणावाहा-
सस्पृज्य च ॥ अद्येत्यादि० अर्कं विवाह कर्मणि कृताकृतावेक्षणार्थं
अमुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोऽस्मीति ॥
ततः पूर्वोक्त कुशकण्डिकाविधिना कर्मकृत्वा पर्युक्षणान्तेऽथे-
त्यादि—अमकोहं करिष्यमाणार्कं विवाह कर्मणि—आज्येनाहं यक्ष्ये
ततोदक्षिणं जान्वाकुंच्य ॐ पूजापतये स्वाहा, इदं पूजापतये
नमम । एवंसर्वत्र ॐ इन्द्रायस्वाहा इदं० । ॐ अग्नये स्वाहा०
ॐ सोमाय स्वाहा० इत्याज्यभागान्ते ॐ संगोभिरित्यस्यांगिरा
ऋषिस्त्रिष्टुच्छन्दो वृहस्पतिर्देवता ऽऽ ज्य होमे विनियोगः । ॐ
संगोभि रांगिरसो नक्षमाणो भगदवे दर्यं मणंन्निनाय । जने
मित्रो न दम्पती अनक्ति वृहस्पतये वाजयाशूं रिवाजौ स्वाहा ।
इदं वृहस्पतये नमम । ॐ यस्मैत्वेति वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुच्छन्दो
ऽग्निर्देवताऽज्यहोमे विनियोगः । ॐ यस्मैत्वाकामकामायवयं
सम्राज्यजामहे । तमस्मभ्यं कामं दत्वाथेदंघृतंपिव स्वाहा ॥ इदं
मग्नयेनमम । ॐ व्यस्तसमस्त व्यहृतीनांप्रजापतिर्ऋषिर्गणेशश्च
ऋषिगणुष्टुच्छन्दांसि अग्निमुवायुसृष्टं पूजापतयो देवता आज्य

होमेविनियोगः ३० भूः स्वाहा इदमग्नयेनमम । ३० भुवः स्वाहा इदं वायवे नमम ३० स्वः स्वाहा इदं सूर्याय नमम । ३० भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदं प्रजापतयेनमम । ३० व्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णि गनुष्टुप्छन्दोऽग्निवरुणौ देवताः प्रायश्चित्तहोमेविनियोगः । ३० भूः स्वाहा इदमग्नयेन० । ३० भुवः स्वाहा इदं वायवे० ३० स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । ३० त्वन्नो अग्नेऽइति वामदेवर्षिर्गनुष्टुप्छन्दोऽग्निवरुणौ देवते प्रायश्चित्तहोमेविनियोगः ३० त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्टाः । यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो च्चिश्वा द्वे पाँसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यां नमम । ३० सत्त्वन्नो अग्ने इति वामदेव ऋषिर्गनुष्टुप्छन्दोऽग्निवरुणौ देवते प्रायश्चित्तहोमेविनियोगः । ३० सत्त्वन्नोऽअग्नेऽवमोभवतीनेदिष्टोऽस्याऽउपसोव्युष्टौ अवयध्वनोऽववृण ई० रराणोऽवीहिमडीक ई० सुहवोनऽएधि स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यां नमम । ३० आयाश्चाग्ने इति प्रजापतिर्ऋषिर्विराड्छन्दोऽग्निदेवता प्रायश्चित्तहोमेविनियोगः । ३० अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि । अयानो यज्ञं ब्रह्मास्पयानो वेहिभेषजं स्वाहा । इदमग्नयेनमम । ३० येतेशतमिति शुनः शोफः ऋषिर्गनुष्टुप्छन्दो मंत्रलिंगोक्ता देवता । प्रायश्चित्तहोमेविनियोगः । ३० येतेशतं ब्रह्मण्ये सहस्रं व्यजियाः पाशाच्चिततामहान्तः । तेभिर्नोऽअवसवितोत विष्णुर्विश्वेभ्योऽनुमरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमम । ३० उदुत्तममिति शुनः शोफः ऋषिर्गनुष्टुप्छन्दो वरुणो देवता प्रायश्चित्तहोमेविनियोगः । ३० उदुत्तमं ब्रह्मण्ये पाशमस्म दवाधमं च्चि मध्यमं अथाय । अथावयमादित्यत्र तेतवानागसोऽअदित्येश्याम स्वाहा । इदं वरुणाय दित्याय नममः । मनसाँ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमम ३० अग्नयेऽस्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नयेऽस्विष्टकृते नमम । ततो वहिर्होमः । ३० स्वाहा प्रजापतये नमम । ततः संस्रवप्राशनं कृत्वा

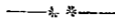
ॐ स्वहा पवित्रप्रतिपत्तिकुर्यात् । ततो ब्रह्मणेपूर्णपात्रदानम् ।
 अथेहेत्यादि अमुकोऽहं कर्तव्यार्कविवाहहोमकर्मणि तत्सांगता
 सिद्धये ऽपूर्णपूर्णार्थमिदंपूर्णपात्रंसदक्षिणं ब्रह्मणेतुभ्यमहं सम्प्रददे
 'तत्सन्नमम, तत आचार्यः कुम्भोदकैः पूर्वोक्त विधिना वरमभि-
 पिचयेत् । ततो वरः पुनरर्कप्रदक्षिणी कृत्यप्रार्थयेत् । ॐ मयाकृ-
 तमिदं कर्मस्थावरेषुजरायुणा । अर्कापत्यानिमेदेहितत्सर्वं क्षन्तुम-
 हंसि । इति संप्रार्थ्य सूर्यसूक्तंपठित्वा ॐ विश्राड् षृह० इत्यादि
 सूर्यविसृज्यगौदानाविधिनाचार्याय सवत्सांगादत्वान्येभ्योऽपि
 दक्षिणादत्त्वा पूजासामग्रीं वरपरिधेयवस्त्राणि चआचार्याय दत्त्वा
 पुण्याहं वाचयेत् दिन चतुष्टयमर्कमग्नि कुम्भांश्चसंरक्ष्य पंचमे-
 हनिपूर्वोक्तप्रकारेण सम्पूज्यपूर्णाहुतिं कृत्वा त्र्यायुपकरणमन्त्र-
 पाठं कृत्वा ब्राह्मणैराशीर्वादं गृहीत्वा ऽन्यर्कादीन्विसृज्य ततो
 मानुपीविवाहं कुर्यात् । ॐइति अर्कविवाह पद्धतिःॐ

अथ रजोदर्शनादि परिभाषा ।

अथरजोदर्शनादि विख्यानाह 'तामुदुह्यथतु प्रवेशन्म्'—इतिस्त्रोक्तिः । एषयो-
 क्तेनहरेण तावमुदुह्यधियादियदिपह वसेण भयात्वंसां यदधतुप्रशानं ऋतुकाल रजोदर्शक ल
 प्रवेानपभिगान कुर्तिरेप ॥ याज्ञवल्क्य —पे इगतुंशिश स्त्रीणां तामुपुरनाहुतविशेत ॥
 ब्रह्मचर्यपर्यणयावश्चतस्रधर्मेयत । वर्ज्यतिथय —चतुर्दशमीचेव अग्नावास्याचपूर्णमा ।
 चरयैतन्निषवाणैर्दित्वाकृतिवच ॥ मनु — ब्रह्मचरीभवेमित्यम्पृत्तैस्नातके द्विज । तपामद्य
 धतस्त्रातुनेदिते कदगीतयः । प्रयोदर्शाचे पा तु प्रशस्तदत्तत्रय । ऋतुस्नानदिनशुद्धि-
 माह—शुद्धाभर्तधतुपेऽन्दिस्त्वा नस्त्रीनरकला । दैवकर्मणि शिष्येचपन्मेऽन्दिद्वयति । रजसो-
 ऽन्दिर्हतीनिषेधमाहमनु —रजसुर्दरतेतापीस्त्वनेन स्त्रीत्त वला ॥ इतिऽत्रऽप्युचरोत्तरा
 प्रशस्ता —भ्यास —रात्रौचतुर्थ्यां पुत्र स्यादन्यदुर्धनचित । पञ्चदापुत्रिणीनारी षट्दापुत्रस्तु-
 मायन । एतन्ममप्रेज योपिश्यम्यमीश्वरपुमान् । कश्चासुभगा ऽन्दिस्त्राप्रपरशुत । एका-
 दरमपनीस्त्री द्वादशपुत्रयोतम । प्रयोदर्शासुतपाम यणीऽहक'रिणी । धर्मशकृत्तय अत
 मदीदत्त । प्रजापरचतुर्दशी पक्षशपतिप्रता । अथद'संभूत' । दोदर्शाशपरेपुमान् ।

तच्चैकस्यां रात्रौ सशुद्धैव मैथुनं कार्यम् । ऋतावगमने दोषमादरराशरः—ऋतास्तर्ता-
 ह्युभयां सन्निधौ नोपगच्छति । घोरार्थां लूणद्वयायां युक्तेनात्र संशयः । अस्यापवादमाहमदत्त-
 रत्ने—ऋतुकलसनिरीणां भूणद्वयाप्रमुच्यते । वृद्धावन्व्यमसद्वृत्तामृता पत्यामुष्णिणांम् । कर्मां च-
 व पुत्रां च वर्जयेन्मुच्यते भयान् । ऋतुगामिनः स्नानमाह—ऋती तु गर्भसंक्रिये त्स्नानं मैथुनिनः स्मृ-
 तम् । ऋतौ तु यदा गच्छेत्तद्वै च मूर्ध्नि पुरीषवत् । मैथुनान्ते तु स्त्रीणां स्नानमुक्तम्—उभावप्युच्ये
 स्यात्तादमतीसयनंगतौ । शयनदुस्थिता नारी शुचिः स्यादशुचिः पुमान् । रोगजेतुपरिजातके—
 रेणेण्यद्रजः प्रीणाण्यहं हिरवर्तते । नाशुचिस्तु भवेत्तेन दस्त्राद्वैकारिकं मतम् । भविष्यपुराणे—
 रजोदर्शनेन पूर्ववत् स्त्रीसर्गमाचोत् । सर्गमप्रदिकुर्यात्तन्कारिपच्यते ॥ ननु—कश्चिदजोदर्शनकितानि गर्भ-
 सम्भवो ददते । क्वचित्तु स्त्रादिरजसि गर्भानुपलभ इति । नैपदोषः—गर्भधारणं हिरजोदर्शनकितान भव-
 तीत्येषा व्याप्तिः । तच्च कश्चित्प्रकृतं कश्चिदप्रकृतं नन्तीवलिष्ठेति । तत्र प्रकृतोऽभिरजसं नन्तीवतरजः रता-
 दर्भधारणमभवत् । अतः प्रमुक्तदोषाभावः—तदुक्तं कश्यपसंहितायाम्—वर्षेद्वदशवाद्दूर्य-
 दशिसुपं वदिर्नहि । अन्तःपुषं भवत्येव पनसोदुवरदिक्र । यन्तुमन्धभिजसि गर्भधारणं नददते तन्पुष-
 वीजक्षेत्रादिदोषः प्रशब्दाः ॥ अथ रजोवती धर्मानाहसदनपरिजातं च लिष्टः—सनां व्याघ्रभ्यं-
 ष्यः प्राप्सुस्तयादधः शयीतमदिवसुष्पान्तरञ्जुं सजेत् ननायनस्नीयान्प्रहर्षिरेत् नदस्तेन किंचिद-
 चोत् अखर्वेण गत्रेण पित्रेदंजलिनावापत्रेण लोहितायसेन वेति खर्वां नाम इस्तः । स्नानविधिमाह-
 पराशरः—स्नानेनैमित्तिके प्राप्ते नारी यदिरजस्वला । पत्रं न्तरितनोयेन स्नानं कृत्वा नतं चरेत् । सिक्त-
 गः प्रभवं शङ्कः सांगोषंगवर्धयत् । न वस्त्रपीडनं नुर्यान् न्प्रद्वारथधारयेत् । अथ च योतिः शास्त्रोक्त-
 प्रथमरजोदर्शनशुभाय भफडस्त्वकपाह । स्मृतिचन्द्रिकायाम्—वैश्वेस्यत्प्रथमतो तु नरो वैश्वर-
 भाग्निनी । वैशाखे धनुष्युत्था ज्येष्ठे रोमांश्चित्ता तथा । शुक्ली मृतप्रजं प्रोक्ता अयत्ते धनधन्यदा ॥
 नभस्येदुर्भगा क्लिष्टा—आश्विने च तपस्विनी । ऊर्जे शायुष्मती नारी मार्गशौषे वपुप्रजा । पौषितुपुंरजो-
 नारी माषेपुत्र सुखान्विता । फाल्गुने श्रीपतीनाध्वी, कामाभासफ नः स्मृतम् । पक्षफलांतत्रेव—रज-
 पक्षे इशोलास्यारुह्ये सुकुलटा भवेत् । कृष्णस्य दामायावमध्यमं फलमादिशेत् । चारमाहकश्यपः—
 रोमिणीरिवानेतु सोमवापेतिवता । दुरितार्तभै मवारेत्तु बुद्धे सौभग्यसंयुता । श्रीसंयुतशुरोर्विपति-
 भक्ता भूमीदिने मलिना संवारेतुराश्रयविदयेवच । लग्नमाहनारदः—कुभोरपचापचय्य मृत्कृत्वा-
 तुलाधरः । शययः पुभदाज्ञेया नरीणां प्रथमार्तवे । फालमाह स्मृत्यंतरे—प्रतः कलेतुसधना-
 सायान्हे सर्वभोगिनी । मध्याह्ने च भवेद्देश निरोधे विना भवेत् । नक्षत्राण्यहमुहुर्तां धिता मणी—
 स्मृतित्रयमृत्तुत्रिप्रभुवस्त्रातीप्तिः म्बो । मध्ये च मूलार्थिते मेषितुं धिरे स्वसत् ॥ वस्त्रपरिधान-
 माहवशिष्टः—सुभगा श्वेतवस्त्रास्यादृष्टं पतिमता । क्षीमवः प्रक्षितोशास्या द्रव्यस्यासुखान्विता ।
 दुर्भगा र्जाण्यस्त्रास्याद्रोमिणी रक्तासता । नीलम्बरधनारो विषयपुष्पतायदि । अन्यच्च—

स पार्जनकपृष्ठग्निसूपान् हस्ते दधाना कुलटा तदस्यात् । तल्पोऽभोगररसिस्थितचेदृष्टं रजो-
 भक्षयती तदस्यात् । एष्टरजसादि विषयं तच्छातिच शान्तिप्रकरणे वचनामि । 'यथ कर्मावांशमः
 भावि' नितो सम्भवमेति वचन तर्ह्येस्त्रियां कर्ममततिकर्म्यरथाकामं तन्दास्तीति यथाकामीवा-
 भं ननु ऋतुकालभिगमन निद्रमः । कामंस्वेच्छया आविजानितोऽप्राप्तसवात् सम्भवाम, भर्त्रा-
 सहसम्भवेति स्त्रीणाभिन्द्रद्वरप्रथनावचनात् । प्रापतेरिति केषित । अत्रयद्यपि श्वर्तुप्रधानमिति
 समन्येनेकं तर्थापस्मृत्यंतरोत्पत्तादि निषेधरालनं कुर्वति । सच दैवकथितः (अथःस्यदक्षिणां
 समधिहृदयमालभतेयत्ते सुमीमेऽन्यदिविच प्रमसिध्रिम् । वेदहृत्तन्ना तद्विद्यात्पश्येय शरद शतंजीवेम
 शरद शतं शृगुयामरग्द शतमिति षेअथाभिगमनानन्त्रम्-इत्ये इत्यःभायाया दक्षिणां
 दक्षिणस्त्रन्धमधिपरि दक्षिण हस्तं न त्वा हृदयमालभते, हृदयदक्ष, अलभतेस्पृशति । श्ते-
 सुमीमे, इत्यादि म त्रेण (एवमतः श्वम्=१०।११) एवमेवैव प्रकारेणान्तोऽन्तरमृतावृत्तौ
 प्रवेशनं यथा मंत्रेति हसिहर । गदाधरमते वतिगर्भा मन्सूत्रवादा ॥



अथगर्भाधानपद्धतिः ।

नत्र रजोदर्शनाच्चतुर्थं दिने प्रातः पुरुषोऽभ्यंगपूर्वकं स्नात्वा
 ततः स्त्रियंसर्वोपधिपंचपल्लवयुतेन वारिणा संस्नाप्य-अहते
 वाससीपरिधाय गृहात्पूर्वप्रदेशे भूमौ गोमयेनोपलिप्य गंधाक्षत
 पुष्पदुग्ध धूप दीप नैवेद्य सामग्रीं संपाद्य-आसने उपविश्य वभूं
 दक्षिणतो विधायान्तर्य, अद्येत्यादि० अमुक्तोऽहं ममास्या
 भार्यायाः प्रथमरजोदर्शनेकरिष्यमाण गर्भाधान कर्मणि तत्रादौ
 कर्म साक्षिणं सूर्यं सम्पूज्य पत्न्या सहदर्शयिष्ये-ॐ आकृष्णेन०
 पाद्यगंधादि नैवेद्यान्तमर्कं सम्पूज्यार्घ्यं च दत्त्वा ॥ वक्ष्यमाण-
 मंत्रेण सूर्यमुद्रयापश्येताम् । ॐ आदित्यमित्यस्य विरूपायि स्त्रिपु-
 ष्ण्डः सूर्यादेवता गर्भाधान कर्मणि सूर्यावेक्षणे विनियोगः ।
 ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समंश्रि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम् ।
 परिवृद्धि हरसामाभिम षं स्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः ।
 इतिदर्शयित्वाप्रणम्य ॥ यथा विहरेत् । ततः सोयान्हे सुमुहूर्ते
 हस्तौ पादौप्रक्षाल्य शुद्धे वाससी परिधाय, आसने-उपविश्य

दीपं प्रज्वाल्य गणेशमातृकाकलश नान्दीमुख पुण्याहवाचन
 नवग्रहादिपंचांगपूजनं कृत्वा 'नान्दी आज्ञं स्वयं कुर्यात्—येभ्य
 एव पिता दद्यात्तेभ्यो दद्यात्स्वयं सुतः ॥ इति वचनात्, आशिपं
 गृहीत्वा, ततो भर्ता वक्ष्यमाण मंत्रेण नारिकेल फल प्रदानं करोति
 सा बधू वस्त्रे गृह्णाति । मंत्रः—ॐ याफली इत्यस्य भिषगृदिर-
 नुष्टुच्छन्दः फलदेवता गर्भाधान कर्मणि फलदाने विनियोगः ।
 ॐ याः फली नीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः । बृहस्पति-
 प्रसूता स्तानोमुंचन्त्व ई० हसः । इति दत्त्वा, ततश्चन्द्रतारानुकूले-
 सङ्गने रात्रिपूर्वाण्हे शयनागारेगत्वाभर्ता आचम्य प्राणाना-
 यम्य ॐ लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रियः । अविघ्नंकुरुमे
 देव सर्वकार्येषुसर्वदा । इतिध्यात्वा संकल्पं कुर्यात्—देशकालौ-
 स्मृत्वामुकोऽहं—अस्या मम भार्यायाः प्रतिगर्भसंस्कारातिशयं-
 द्वारा अस्यां जनिष्यमाणसर्वं गर्भाणां बीजगर्भसमुद्भवेनोनि-
 वर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वरं प्रीत्यर्थं गर्भाधानाख्यं कर्म करिष्ये ।
 ततोऽनुरागीभर्ता—अनुरागिणींभार्या शय्यायां प्रसार्य स्वदक्षिणे-
 नपाणिना भगं तूष्णीमभिस्पृश्यमंत्रं जपेत्—ॐ पूषाभगमिति-
 मंत्रद्वययोः प्रजापति ऋषिरनुष्टुच्छन्दो भगो देवताभगाभिमंत्रणे
 विनियोगः । ॐ पूषाभग ई० सविता मे ददातु रुद्रः कल्पयतु
 ललामगुं विष्णुयोनिं कल्पयतु त्वष्टारूपाणिपि ई० शतु । आसिं-
 चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातुते । ॐ गर्भं देहि सिनीवाली
 गर्भं देहिष्टुष्टुके । गर्भं ते अश्विनौ देवा वाधत्तां पुष्करस्रजौ ।
 ॐ ब्रह्मा गर्भं दधातुते । इत्यभिमंत्र्य । ततः प्राङ्मुखो बोद्ध-
 मुखो भूत्वा । उपस्थे प्रजनन्द्रियंप्रविश्य पठेत् । ॐ रेत इत्यस्य-
 प्रजापति ऋषिस्त्रिष्टुच्छन्दो रेतो देवता वीर्याधाने विनियोगः ।
 ॐ रेतो मूत्रं विजहाति योनिंप्रविशदिन्द्रियंगर्भो जरायुणांभृत
 उद्वं जहाति जन्मना । ऋतेन सत्यमिन्द्रियंन्विषान ई० शुक्रमं-
 धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतमधु । ततः संभोगानन्तरमुत्थाय
 स्नानं कृत्वा वक्ष्यमाणमंत्रेण तिष्ठन्त्या वध्वादक्षिण स्कन्धस्योपरि

दक्षिण हस्तं नीत्वा तदग्र करतलेन तस्या हृदयं स्पृशति । ॐ
 यत इतिप्रजापति ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दश्चन्द्रमा देवता हृदयालम्भने
 विनियोगः । ॐ यत्ते मुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसिश्चितम् ।
 वेदोहन्तन्मां तद्विद्यात् परयेम शरदः शतंजीवेम शरदः शतं १०
 शृणुयाम शरदः शतम् । ततो यथासुखं शयीत सकृदेवमैथुनं
 कुर्यान्नतु वारद्वयम् । इति याज्ञवल्क्यः । ततः प्रभाते संजाते
 स्नात्वा नित्यकर्म समाप्य रात्रि पूजित पश्चांगदेवताः संपूज्य
 यस्य स्मृत्येति पठित्वा० देवताविसृज्याशिर्वाद्यं गृह्णीयान् । गर्भा-
 धान संस्कारोऽयं प्रथमर्तौ मलमास शुक्रास्तादावपि कार्यः ।
 पारस्करेण तु हृदयालम्भनमात्रमुक्तमन्यत्कर्म-अमत्रकं परं च
 संस्कार भास्करादौ पारस्कर गृह्य सूत्रादतिरिक्त प्रक्षिप्तमंत्राणां
 प्रयोगदर्शनान्मयापि प्रत्यक्ष श्रुति मूलत्वात्प्रदर्शितः, अतो
 विद्वद्भिर्ग्राह्य इतिदिक् । इति गर्भाधानम् ॥

अथ पुंसवन सूत्रव्याख्या

गर्भे त्राणीपायमाह—'सावदिगर्भं न दधीति सि १० ह्या. श्वेत पुण्या
 उपोष्य पुष्येण मूलमुत्थाप्य चतुर्थेऽहनि स्नातायां निशायामुदपेयं पिष्ट्वा दक्षि-
 णस्यां नासिकायां सांसिचति ॥ ॐ इयमोषधीं प्रायमाणां सहमाना सरस्वती ।
 मस्या अहं वृंहत्या पुत्र. पितुस्त्वि नाम जघ्नमिति ॥१।१३।) सि १० ह्या कंड कारि-
 काया. कर्षभूतायाः श्वेतपुण्यास्तथा उपोष्यापवासे कृत्वा पुष्य नक्षत्रेणमूलंशिकमुत्थाप्य उपोष्य
 त्रयोऽंशचतुर्थेऽहनि स्नातायाभायां रात्रौ तन्मूलमुदनेन पिष्ट्वाद्वीभावमाणा बध्नादक्षिण नासां
 पुटे—आंसिचति प्रक्षिपति मता । इयमोषधीं प्रायमाणा, इतिसूत्रोक्तमंत्रेण अथ पुंसवम् (सूत्र
 व्याख्या अथपुंसवनम्) अथावसत्प्राप्तं पुंसजाराख्य गर्भसंस्कारकं कर्मव्यवधारयते ।
 (पुराम्पदंत इतिमासे द्वितीये तृतीयेवा ।६।) पुण-अप्रेष्यन्ते चक्षिष्यति (यावदुरानि-
 पातयोरैत्र) इति पुरायोगे भविष्ये वर्तमान प्रयोग इति हेतोः गर्भं प्राण्य क लाद् द्वितीये तृतीये
 वा मासे प्रथमे मासि वा यथागं (यदहपुष्टेमा नक्षत्रेणचन्द्रमा युज्येत तदह रूप-
 वास्यासव्याइते वाससी परिधाप्य न्यग्रोधा बरोहां बुक्काश्चनिशाया मुदपेयं-

पिष्ट्वापूर्वयदासेचनं हिरण्यगर्भोऽद्भ्यः संभृत इत्येताभ्यां । ३।) यस्मिन्नहनिष्या
 पुमाननन्तरेण पुष्यादिना मन्त्रेण चन्द्रमण्डकोभवति । तद्ग्रहतरिमन्दिने गर्भिणीमुखात्पु—भ्रानशयित्वा
 आह्लाव्यनाशयित्वा—महते वामती परिधाप्य च न्यप्रोधो वटतरयोवरोहान्—मधोनायमानाश्रुगान्त-
 दमपल्लवान्मुकुलाकरांश्च उभयं रात्रौ पूर्ववद्गर्भधारणार्थंचवत् पिष्ट्वा पूर्ववदेव सेचनंभर्तुर्दक्षिण
 नारात्रे हिरण्यगर्भ—अद्भ्यः संभृतः । इत्येत भ्याग्भ्याम् ॥ (कुशकंटकसोमासोमलता-
 चैके । ३।) एके—आवाथी न्यप्रोधा वरोह शुंगेडुपिस्त्रजालेषु कुशस्य कंटकं मूलं सोमासुसोमलता-
 खंडं च प्रक्षिपन्ति । तत्रैते द्रव्यं चतुष्टयपेक्षणम् ॥ (कूर्मपित्तंम चोपस्थे कृत्वा सयदि
 कामयेत वीर्यवानस्यादिति विहृत्यैनमभिमंत्रयते सुपर्णोऽसिन्तिप्राग्विष्णुक्रमेभ्यः । ५)
 सभर्तायदि कामयेत—भयं गर्भोवीर्यवन्—शक्तिमत्याभाक्षीया उपरये अके कूर्मं पित्तं जलपूर्णं
 शरावं विधाय विहृत्या विहृतिं छन्द स्काया सुपर्णोऽसि—इत्यनया—कृत्वा स्व.पते इत्यन्तयैनं गर्भ-
 भिमंत्रयते हस्तैः न गभशयं सृष्ट्यामंत्रं जपतीत्यर्थः ॥—कारत्यायनः—स्वृत्वात्प्राग्विष्णुप्रेण
 वचिदातोक्तमपि । मनुमंत्राणीयं सर्वत्र सदैव मनुमंत्रयेत् ।

अथ पुंसवनकर्मपद्धतिः ।

गर्भमास प्रभृतिद्वितीये तृतीयेचामासि रिक्तारहिततिथौ
 यस्मिन्दिनेचन्द्रमाः पुन्रक्षत्रेषुपुनर्वसुपुष्यहस्त श्रवणमृगसिरादिषु
 शुक्रचन्द्र बुधगुरु वासरेषु विष्ट्यादिदोषरहिते चन्द्रतारांनुकुले
 पर्वणिवर्जिते दैवज्ञोक्ते संज्ञग्ने पुंस्सवनं कुर्यात् । तद्दिनेगर्भिणीं
 स्नापयित्वातद्भर्ता च स्नात्वाशुद्धवाससी परिधाप्य, भर्ता
 गर्भिन्या सह तद्दिन उपवासं कृत्वा अस्तमयेरात्रौ गणेशमात्-
 काभ्युदयादि पंचागपूजनंविधायतेभ्यो मंत्रपुष्पांजलिं दत्त्वासंक-
 लपंकुर्यात् । अथेत्यादिस्मृत्वा अमुकोहं ममास्यांभार्यायांउत्पत्स्य
 मानगर्भापत्यस्यवैजिक गार्भिकदोषपरिहार सुरूपता ज्ञानोदय
 प्रतिरोधिपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं पुंसवनारख्यंकर्मकरिष्ये
 तत आनीतयटवृक्षस्यावरोहान्नधोभागे जायमानान्नंकुराञ्जुगा
 न्नप्रपल्लवान्मुकुलाकरांश्च केचिन्मतानुसारात् कुशकंटकङ्कुशस्य-
 मूलंसोमलताखण्डञ्च एकीकृत्यजलेनपिष्ट्वातदुकरकं सूक्ष्मवस्त्रेण
 पावितंकृत्वा तद्रसंगर्भिन्या दक्षिणनासापुटेदद्यात् । मंत्रः ॐ
 हिरण्यगर्भ अद्भ्यः संभृत इत्यनयोहिरण्यगर्भनारायणौ ऋषी
 त्रिष्टुप्छन्दः प्रजापत्यादित्यौ देवतेपुंसवने नासकायां वटशुंगर-

सासेके विनियोगः । ३० हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रेभूनस्यजातः पतिरेक आसीत् । सदाभार पृथिवीं व्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेमा १ । ३० अद्भ्यः संभूतः पृथिव्यै रसाच्चित्रं श्वकर्मणः समवर्तताग्रे तस्यत्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे । इति मंत्राभ्यारसं कंठादुदरं प्राप्तिमात्रं क्षिपेत् । सद्यदिकामयेत वीर्यवान्स्यादयंगर्भस्तदा गर्भिण्या उत्संगे उदरे जलपूर्णशरावं निधाय दक्षिणा नामिकाग्रेण गर्भाशयं स्पृष्ट्वा ॐ सुपर्णोऽसित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्धृतिश्छन्दो गरुत्मान् देवता गर्भाभिर्मंत्रणे विनियोगः ३० सुपर्णोऽसि गरुत्मां स्त्रिवृत्ते शिरो गायत्र्यं चतुर्बृहद्रथंतरेपक्षौ । स्तोमऽत्रात्मा छन्दा ॐ स्यंगानियजू ॐ षिनाम । सामतेन तनूर्वामदेव्यं यज्ञाय ज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः । सुपर्णोऽसि गरुत्मान् दिवं गच्छस्वः पतः । इति जप्त्वा ततो दक्षिणा संकल्पं विधाय यथा शक्तिं ब्राह्मणान् भोजयित्वा ततो मंत्राभिपेकं तिलकादिकं कारयेत् ।

इति पुंसवन पद्धतिः ।

अथसमीमन्तोन्नयन सूत्रव्याख्या ।

(अथ समीमन्तोन्नयनम् । १ । पु ॐ सवनयत् । २ ।) अथ पुंसवनानन्तरं मम-

प्राप्तं समीमन्तोन्नयनगर्भं संकारकं कर्मव्यख्यास्यते ॥ तत्र पुंसवनवपुःप्रचने भवति (तिलमुद्गमिश्रं ॐ स्थालीपाकं ॐ अययित्वा प्रजापते हुंत्वा पश्चाद्गने भर्द्रपं ट उपविष्टायां युग्मेन सटालु प्रपसेनौ दुम्बरेण त्रिभिश्चदर्भं पिञ्जूलैश्चेत्यासलत्या धं रतर शंकुना पूर्णं चाग्नेण च समीमन्तमूर्ध्वं विनयति भूर्भुवः स्वरिति १४ ।) तत्र विशेषमाह—तिलैर्मुद्गैर्गमिभस्तिलमुद्गमिश्रं स्थालीपाकं नोदनं चरुं अययित्वा—अन्यमागते प्रजापतये स्वहा—इत्येका माहुति हुत्वा स्विष्टकृशदि प्राशनान्नं दद्यात् । अग्नेः पश्चिमतो भर्तुं क्षिणतो मृद्धासने—आसीनायां गर्भिण्यां सत्याम् । ततो भर्ता—श्रौदुम्बरेणोदुम्बरं वृत्तं द्भवेन युग्मेन आदिदुग्मं पलवता सटालुप्रपसेन पक्वफले कस्तुरकनिन्देन त्रिभिश्च दर्भैर्पिञ्जूलैश्चिभिर्दंभं पवित्रैश्च ध्येयया त्रिपुस्थनेषु स्वेतत्रेष्वां तथा ध्येयया शलन्या सत्ययाश्चन्द्रं न वीरं तर शकुनासरेषाकया आध्वयेनवा शकुना पूर्णं चाग्नेश्च सूत्रेण पूर्णं चाग्रं सूत्रकर्तव्यं साधनं,—तर्कुरितियवत्, तेन लोहकीलेन च, अतश्चैदुम्बरा गुमादिभिः सर्वैः पुंजीह्वने, समीमन्तं स्त्रिया—ऊर्ध्वं विनयति, पृथक् करोति, ललाट्यं तर माभ्यं केशा-

निद्राकारोति, भूर्भुवः स्वर्गिनयाभि । इत्येतावता मन्त्रेण गुरुवेव । प्रतिमहाव्याहृति वा । ५)
 पदान्तमाद—अस्या प्रतिमहाव्याहृतिभिर्निनयति यथा—भूर्भुवः स्वर्गिनयाभि, स्वर्गिनयाभि ।
 (त्रिष्टुतमावध्यति—(अयमूर्जावतो वृद्ध उज्ज्वीव फलिनिभवेति । ६) त्रितं वेद्योःति—
 अथ यति—पुत्रीकृतमीदुम्बरादि पञ्चक वेण्यां विन्दुगच्छति । अयमूर्जावत, इत्यनेन मन्त्रेण ॥
 (अथाह—वीणागाथिनौराजः न ऽ संगायेता योवाप्यन्यो धीरतर इति ॥ ७ ॥)
 अथौदुम्बरदि पञ्चस्य वेणी यन्तन्नामाह—प्रयीति, किंनर । हेवीणागिनी राजानं
 भूर्भुवः स्वर्गिनयाभि राजर्णनत्तद्ध्रुवादि रूपेण दुवांयम्पणयेनम् । अथा योःयोऽति
 राजर्ण क्तिनरः प्रष्टुष्टेवीरः शररत रगायेतारिः त्र्युगः ॥ (त्रिुक्ताभादेगाथा-
 सुपोदाहन्ति) सोमनयनो ज्येष्ठमागुपी. ११ । अयिमुक्तक अय. रंस्तारे १० मर्गै—इति ६)
 एके—आचक्षते त्रिुक्तांगाने विहिताभायाः प्रष्टुष्टेदाहन्ति—इति । अयिसमुच्च—यतयि, तस्ये-
 गजवीर ते योग्यत्र लं गथन नवसमुच्चितं भवति । पदान्तरे राजवीरत योग्य-
 तस्य नंग थागनं ॥ गथानु, मोदष्टे तिसृष्टेस्पष्टम् । (यांनदीमुपावसिताभवति तस्यानाम
 गृह्णति ॥ ६ ॥) ततो गमिणीं नदीमुपागीषे—अ वासिताहिस्ताभवति तस्याथा आसाविति
 गं ॥ १० मुने त्वेवं प्रथमं नाम गृह्णति । 'ततोत्र ह्यणभोजनम्' १० 'स्पष्ट धम्' इत्यभोजनप्रादक्षि-
 ण्यमुक्तं पराशरमात्रीयेधौ म्येन— ब्रह्मी. ने. मोमेव सीम तोम्यने तथा । जलवर्मनयध द्वेभुषवा-
 च्छ्राययेचोत् । इदं चक्रांगं ब्र ह्यणभोजनपिष म् । नर्विष्टकुडुन्व दिभोजन नियमितिनुगामि । ॥



अथ सीमन्तोन्नयनपद्धतिः

अथच प्रथमे गर्भे गर्भधारण प्रभृतिपष्टे ५ ष्टमे मासि
 पुंसवनवन्नक्षत्रतिथिवारादिषु, चन्द्रनारातुकूले दिवसे गर्भिणीं
 मङ्गलद्रव्येण स्नातां परिहितप्रावृताहनवासो युगलामले कृतां
 पत्नीं स्वदक्षिणत उपवेश्या चम्य प्राणायामत्रयं विधाय, भूतो-
 त्सादनं विधाय रक्षादीपं प्रज्वलय्य संपूज्यच स्वस्तिवाचनं
 पठित्वा प्रधानं संकल्पं कुर्यात्—अव्येत्यादिदेशकालौ संक्रीत्यामुक्तो
 ५ हं ममास्यां भार्यायां गर्भाभिवृद्धिपरिपन्थिपिशित, अलक्ष्मी
 भूतराक्षसीगण दूरनिरसन क्षम सकलसौभाग्य निदान भूत
 महालक्ष्मी समावेशन द्वारा प्रतिगर्भं वीजगर्भसमुद्भवौ

निवर्हण जनकातिशयद्वाग च श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थ स्त्री संस्काररूपं सीमन्तोन्नयनार्थं कर्म करिष्ये-तत्पूर्वागत्वेन गणपति सहित गौर्यादि षोडशमात्मृणां पूजनं कलश स्थापनं नान्दीश्राद्धं पुण्याहवाचनं नवग्रह स्थापनपूजनं च करिष्ये एवं गणेशादि पंचाग देवतानां पूजनं विधाय (जीवित मानृ पितृकोऽ पिना न्दी श्राद्धं स्वयं पितामहादिभ्यः कुर्यात्) अत्र पुण्याह वाचनान्ते धाताप्रीयन्ता मित्यूह ॥ ततोवह्निः शालायां हस्नमात्रां चतुरन्त्रां भूमिं कुशत्रयेण परिसमूह्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्तुव मूलेन तिस्रो रेखोदक संस्थाः स्थंडिल प्रमाणाः कृत्वा, अनामिकागुण्ठाभ्यां लेखाभ्यः पांशुनुद्धृत्य मणिकाङ्गिरभिपिच्य कर्मसाधनभूतमग्निं तेजसेपात्रे स्वाभिमुखं वेद्यां स्थापयित्वा, अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य । ततो ब्रह्मवरणम्—अद्येत्यादि० अमुकोऽहं कर्तव्यसीमन्तोन्नयन कर्मणि ब्रह्मकर्मकर्तुमेभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहंवृणे । वृतोऽस्मीति ब्रह्माब्रूयात् । प्रार्थयेत्—यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा० कर्म-कुरु, करवाणीतिप्रत्युक्तिः । ततः कल्पितासनेऽग्नेरुत्तरतः प्रदक्षिणी कृत्योपवेशयेत् । प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्यावारिणा प्रपूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणोमुग्वमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरिनिदध्यात् । ततः कुशपिंजुलिकामादायाग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तं, अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रसार्य । ततोऽग्नेरुत्तरतः परिचमदिशि पवित्रछेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तगर्भं कुशद्वयं, उपयमनकुशाः सप्त, संमार्जनकुशाश्च प्रादेशमितपालाशसमिधस्त्रिभ्यः प्रोक्षणीपात्रं श्रुवः, आज्यस्थाली आज्यं परिमितपात्रं तिलमुद्गतगडुलारश्चैतानि वस्तूनि क्रमेण पूर्वं पूर्वं आसादनीयानि ॥ तदुत्तरतो वीणागाधिनौ विशेषोपकरणनीयानि—मृदुपीठमापस्वाह्यादि फलवती—श्रौदुम्बरसमित पवित्र लक्षणास्त्रिभ्यो शललीत्रेणी अश्वत्थशंकुर्वा, शरपीता दर्भपिंजुल्यः सूत्रपूर्णं सूत्रकर्तन साधनं चेति । ततः पवित्र

छेदनार्थं त्रिभिकुशैर्द्वेषवित्रे प्रादेशमात्रेच्छित्वा दक्षिणहस्तेन
 पवित्राभ्यां त्रिः प्रणीतोदकमासिच्य पवित्राभ्यामुत्पूय पवित्रे
 प्रोक्षणीपात्रे निधाय प्रोक्षणीपात्रं दक्षिणेनहस्तेन वामेनिधाय
 मध्यमानामिकामध्यपर्वाभ्यां तज्जल मुच्छ्याल्य प्रणीतोदकेन
 पवित्राभ्यां तज्जलं प्रोक्ष्य तेन जलेन प्रत्येकंद्रव्यं प्रोक्ष्य,, तिल
 तण्डुलमुद्गांश्च प्रत्येकं वारत्रयं प्रक्षाल्य, आज्यस्थाल्यामाज्य-
 मग्नावधिश्रित्य चरुस्थल्यां प्रणीतोदकमासिच्य तत्रादौ मुद्गान्
 प्रक्षिप्याग्नौ संस्थाप्य, ईषत्पक्वेषु मुद्गेषु तिल तण्डुलांश्च प्रक्षि-
 प्य, अर्धश्राणेचरौ ज्वलद्गुलमुकमाज्यस्योपरिचरोश्चोपरिसम-
 न्ताद्भ्रामयित्वा वन्हौ प्रक्षिपेत् । उदकं स्पृष्ट्वा प्राङ्मुखं सुबं
 प्रतप्य संमार्ज्जनदमैरुत्तानं श्रुवंमूलतोऽन्नपर्यन्तं सूलेरधोऽगतौ
 संमार्ज्याभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य सजलपाणितलेन संमार्ज्यं दक्षिण-
 तो निधायार्यं चरोः पूर्वेणनीत्वा—अग्नेरुत्तरतः संस्थाप्य चरु-
 माज्यस्य परिचमतोनीत्वा—आज्यस्योत्तरतः संस्थाप्य । तत
 आज्यमग्नेः पश्चान्निधाय तदुत्तरतरश्चरुं निधाय आज्यमुत्पूयावेक्ष्य
 प्रोक्षणीश्चोत्पूय पवित्रे तत्र निधाय, उपयमनकुशानादायो-
 त्थाय प्रजापतिं मनसाध्यात्वा घृताक्तास्तिस्त्रः समिधोऽग्नौ-
 स्तूष्णीं प्रक्षिप्योपविश्य च प्रोक्षणीजलेनेशानादुत्तरपर्यन्त-
 मभ्युक्ष्य पवित्रे प्रणीतायां निधाय प्रोक्षणीपात्रं संस्त्रवधारणार्थं
 मग्निप्रणीतयोर्मध्ये निदध्यात् । ब्रह्मणान्वारब्धः पातित दक्षिण
 जानुराज्येन जुहुयात् । ततः प्रत्याहुत्यनन्तरं सुब्रसंलग्नशेष
 घृतस्य संस्त्रवधारणार्थं प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ३० मङ्गल नामाग्नये
 नमः । इत्यग्निं संपूज्य ततः समिद्धतमेऽग्नौ ३० प्रजापत्यादि
 चतुर्णां मन्त्राणां प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुब्धुन्द्रो मन्त्रोक्ता देवता
 आज्य होमे विनियोगः । ३० प्रजापतये स्वाहा मनसेदं प्रजापतये
 नमम । ३० इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय नमम । इत्याधारौ ३०
 अग्नये स्वाहा इदमग्नये नमम । ३० सोमाय स्वाहा इदं सोमाय
 नमम इत्याज्यभागौ । ततोऽन्वारब्धः स्थायीपाकेनाज्यमिश्रितेन

होमः । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमम । ॐ अग्नये
स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते नमम । ॐ भूरादि व्याह
ति त्रयस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्णुन्दांसि—अग्निं वायु-
सूर्या देवता व्याहृतिहोमे विनियोगः । ॐ भूः स्वाहा इदम-
ग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० । ॐ स्वः स्वाहा इदं
सूर्याय नमम । ॐ त्वन्नो अग्ने मन्त्र द्वयस्य वामदेव ऋषि-
स्त्रिष्टुप्छन्दोग्नि वरुणौ देवते सर्व प्रायश्चित्त होमे विनियोगः ।
ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽअययांसिसीष्टाः ।
यजिष्ठो वन्हितमः । शोशुचानो विश्वाद्वेपाँसि प्रमुमुध्यस्मत
स्वाहा । इदमग्नये नमम । ॐ सत्वन्नोऽअग्नेवमोभवो तीने-
दिष्टोऽअस्याऽउपसोऽ्युष्टौ । अवयव्वनोव्यरुणँरराणो व्वीहिमृ-
डीकँ सुहवोनऽएधि स्वाहा इदं वरुणाय नमम ॥ ॐ अयाश्चाग्ने
मन्त्रस्य विराड्ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता सर्वप्रायश्चित्त
होमे विनियोगः । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्य
मयाऽअसि । अयानो यज्ञ वहास्ययानोवेहि भेषजँ स्वाहा ।
इदमग्नये नमम । ॐ येतेशतमिति मन्त्रस्य शुनःशेफ ऋषिस्त्रि-
ष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता सर्वप्रायश्चित्त होमे विनियोगः ।
ॐ येतेशतं वरुण ये सहस्रं जज्ञियाः पाशा च्वितता-
महान्तः । तेभिर्नाऽअद्य सवितोतविष्णुर्विश्वेमुंचन्तु मरुतः
स्वर्काः स्वाहा । इहं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्योमरुद्भ्यः
स्वर्केभ्यरचनमम । ॐ उदुत्तममिति मन्त्रस्यशुनः शेफऋषिस्त्रि-
ष्टुप्छन्दो वरुणोदेवता सर्वप्रायश्चित्त होमे विनियोगः । उदुत्तमं
वरुणपाशमस्मदवाधमंन्विमध्यमँअधाय । अधावयमादित्यव्रते
तवानागसोऽअदिनयेस्याम स्वाहा । इदं वरुणायादितयेनमम ।
ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतयेनमम । ततः संस्रवंप्राशयित्वा
आचम्य, अथ सीमान्तोज्ञयन कर्मणि ब्रह्मकर्मणः प्रतिष्ठार्थमिदं
पूर्णपात्रममुकगोत्राय ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहंसंप्रददे । ॐ स्वस्ति
ब्रह्मानूपात्—ततो ब्रह्मग्रंथि विमोकः । ॐ सुमित्रियानमन्त्रस्य

दध्यंगाथर्धणऋपिरापो देवाताः शिरः प्रोक्षणे विनियोगः । ॐ
सुमित्रियानऽत्रापऽत्रौपधयः सन्तु । इति पवित्राभ्यां प्रणीताज
लेन शिरः संप्रोक्ष्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोस्मान्द्वेष्टियंचवयं
द्विष्मः । इति प्रणीताविमोकं कृत्वा ॐ देवागात्वितिमंत्रस्यात्रिर्ऋ-
पिरुष्णिक् ह्यन्दो मनसस्पति देवतावर्हिर्होमे विनियोगः । ॐ
देवागातु विदोगातुं वित्वागातुमित मनसस्पत इमं देवयज ऌं स्वाहा
वातेधाः । इति चन्हौप्रक्षिपेत् । ततोऽग्नेः पश्चाद् भर्तुर्वामतोभ-
द्रपीठोपरि मृद्धासनेस्थितायाः स्त्रियाः सीतन्तेऽपक्वौदुम्बर फल-
युग्मवत्यासमिधातिशुभिर्दर्भपिंजलीभिस्त्रेणया सलरपाशरंपी-
कया सूत्रपूर्णलोहकीलेन च ललाटान्तरमारभ्यवक्ष्यमाण मंत्रेण
भर्तामंत्रः न्पठन् सीमन्तं द्विधाकरोति । ॐ भूरादिव्याहृति त्रयसं-
युक्त मंत्राणां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुऽदुष्ण्डांसि—अग्नि
वायु सूर्या देवता विनयने विनियोगः ॥ ॐ भूर्विनयामि । ॐ
भुवर्विनयामि ॐ स्वर्विनयामि । इति वार त्रयं विनयनं कृत्वा
तत औदुम्बरादि पञ्चकं पुञ्जीकृतं तस्यां वेण्यामावध्नाति ।
मंत्रः—ॐ अयमूर्जावत इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्ण्डः फलिनी
देवता वेणीवन्धने विनियोगः । ॐ अयमूर्जावतो वृक्षऽउज्जीव
फलिनीभव । इति वेण्यां त्रिवृत्कृत्वा वध्नीयात् । अथ वीणा
गाथिनोप्रेषयति (सोम ॐ राजानं गायताम्) इति तौ च प्रेषितौ
वीणामादाय । ॐ सोममित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री ह्यन्दः
सोमो देवता गाने विनियोगः । ॐ सोमऽएवनोराजेमाः मानुषी
प्रजा । अवि मुक्त चक्रऽआसीरं स्तीरे तुभ्यम् । इति गायतः,
अथ च गर्भिणीग्रामसमीप वतिन्यावा देश प्रयाहिन्या नद्या नाम
संबुद्धच्यन्तं गृहीयात् यथा 'गंगे' अलके, इत्यादि । इति हरिहर-
भाष्यकारोक्तिः । गर्भाधानादित्वात्पूर्णहृतिः । ॐ त्र्यायुष-
मिति नारायण ऋषिरुष्णिक् ह्यन्दः शिवो देवता त्र्यायुष करणे
विनियोगः । ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः, इति ललाटे ॥ कस्यपस्य
त्र्यायुषं, ग्रीवायाम् । यद्देवेषु त्र्यायुषं, दक्षिणबाहुमूले । तन्नो

अस्तुन्यायुषंहृदि । एवं गर्भिण्या अपि । ततो दक्षिणा संकल्पः ।
अद्येत्यादि, अमुकराशेरमुकोऽहंममास्याभार्यायाः सीमन्तोन्नयन-
कर्मणः सांगतार्थ, इमां दक्षिणामाचार्यादिब्राह्मणेभ्यो विभज्य
दास्ये दशवा वित्तानुसारतो ब्राह्मणान्भोजयिष्ये । ततो मंत्रा
भिषेकतिलक रक्षासूत्र बंधनं कारयेत् । ब्राह्मणान्भोजयित्वा
स्वयमपि च भुंजीत ॥

इति सीमन्तोन्नयनसंस्कारपद्धतिः ।

॥ अथच गर्भिणीधर्मपरिभाषा ॥

प्रसगवशाद्गर्भिणीधर्मास्तत्पतिधर्माश्च उक्तचकारिकायाम् — अतारमस्तदिक
प लुल्लोशूरे दिवे पूर्वा शे नारी । मं लूल्ल वेदपदा दिवसम त्रुषा न्तथे पदिश । नोनंती
गोयम पिए कदी मूनपुरोप शयन च कुरात् । नोउक्तकेशीप्रमिताथवास्य द्भुकेनसन् वावलेन
शेते । नामगलरान्यमुदी येनसा शूयालय वृत्तन्त न ययात् । प्रयोगपारिजातके—गर्भिणी
कुनराशदि शैनहृम्यादिरोहणम् । वाशम शीघ्रगमन शकरोदेष यञ्त् । शाकरक्तविमोक्षं च
साधस कुहुताम्नम् । वद्वयाय दिवस्वपगत्र जगरण चजेत् । चराह — सामिपमशनयनात्
मा पतिं नयदत्त प्रथति । सनाशभेज म् । मदनरत्नेसेव्यविषयानाह—हरिद्रा कुकुदचैव
सिद्धर वज्जल त् । कूर्पांक च लाम्बुल मागं याभरण शुभम् । केरस कर कवरी कण्ड कर्ण
निभूषणम् । गुरायुष्यदिच्छन्ति नयेगर्भिण नहि । बृहस्पति — चतुथम सिपष्ठे वायुष्टमे
गर्भिणी गत्र । यत्रानिय विषम्य रयादापादेतुविशपत् । रुद्रत्यन्तरे—उम्रौपय तथाक्षार मैथुन
भा वाह म् । वृत्तुक्त्वनचैव गर्भिणी परिचयत् । गर्भं क्षासदाक्य नित्य शौचनिषेवणात् । इति ।
अथगर्भिणापतिधर्मान्वच्य—गर्भिणी वाद्वितद्वन्व तस्येददधदस्थान्पित्तम् । सुतविरायुष
पुत्रसंख्या दोषमर्हति । यास्तुल्लम्य — दोदरगादननगर्भा दोषमवप्नुयात् । वैरुयमरण
यापि रक्षा नर्थप्रियस्त्रिया ।—अश्वलायन — इन मैथुन तीर्थ वर्णयार्णभिणीपति । अश्व-
सप्तममासादृषं चा यमदरवि । श्राद्धद्रोमिमिनि—रत्नसंग्रहे— दहन वपन चैवचौल दैमि
पिरोहणम् । नावमारोहणचप वर्णददगर्भिणीपति । प्रयुक्त गम पतिविध्यामृत्तस्याह क्षुरकर्म
सांगम् । शुद्धिदपणेदत्त —उत्तरिण्डदान च प्रतकर्म तथैव । न तानपितृष्ट—इयं द्गर्भिणी
पतिवत् ॥ चपनप्रेतनि शोनापवाद्माहतप्रैय—चौरनेदित्तक युयापिप शक्यपिभूयम् । पित्रो
प्रतदिधानव गर्भिणीपतिवैव सतमयादधर्मपिभयति । कालविधाने—चौरशशगुगमन्त
भूंसनव सुदाय सुनरख रतितूरयान् । शूद्रगीपयता जलध्वंमृहनायुलवोभयतिगर्भिणं का
पनीनाम् इदिव ॥ इतिगर्भतोमयनपद्धति ॥

॥ अथजातकर्मसूत्रव्याख्या ॥

'सोऽपत्रीमद्भिरभ्युक्षति—एजतुदशमास्य, इति प्राग्यस्यैतदिति । १। सोऽपत्रीं प्रग-
 श्लवतींश्चित्रंभवाद्भिरजलेनभ्युक्षतिप्रसिञ्चति । एजतु दशमास्य इत्येतया प्राग्यस्येतदिति प्राकृतितयाश्रयं,
 अश्वसानयाविशद् जपत्या । १। (अथावरावपत्तनम् । अथैतुष्टुशिवशेषलाचलपँशुने ऊरा-
 स्यन्तचे । नैत्राशँसेनपीषाँनिकस्मिन्श्चनायतन मवजरायुपद्यतामिति । २।) अथायुञ्ज-
 णानन्तरमवरावपत्तनम् । अवरमुच्यं जरायुवेति गर्भवेष्टं, आशुचोऽभयः पत्न्येन जप्ते नित्यवगव
 पत्नोमन्त्रहोमीसमीपे चोपविश्यभर्त्सजपति । यथा—अथैतुष्टुशिवशेषलाचलपँशुने जरायुपद्यतामिति
 न्तम् । अथावपत्तनमन्त्रोभर्त्सजपः । २। व श्रेष्ठः—दुष्टाजातं गितायुञ्जं सर्वलंस्नानमाचरेत् । हेमाद्रौ-
 जन्मतोऽनन्तरं कार्यजातकं यथाविधि । दैवादनीत्ककते चेदीतेस्तु क्रेभवेत् । कारिकायाम्—जातेपु-
 षेसर्वलंस्यात्स्नानं नैमित्तिकं भित्तु । तच्छरीतेनराश्यांशयेवं जायालिरत्रपीत । दिवाहृतेन तोयेन स्वर्णयुषेण
 । स्नापयेत् । इतिसांत्त्यायनः प्राहः—रात्रावतिल संमिधौ । अन्दिहन्नाञ्चां कर्तव्यंश्चाद्दस्नानानन्तरम् ।
 आमद्रव्येणतस्कार्यवचतुप्रजापते, हिरण्येन भवेत्कृद्वाद्दं आमद्रव्येणैव न चेत् । इति व्यासवचः प्रीकं
 पक्वात्र सनिपेधति । पुत्र जन्मनिश्रायां शर्वर्यादृत्तमक्षयम् । जै मितिः—यावच्चन्द्रिदस्तेनाले
 तावनाम्नोतिसूतकम् । चिद्धनेनाले ततः पश्चात्सूतकन्दुविधीयते । व्यासः—नैमित्तिकं तु कुशीस्नानं
 दानं च रात्रिषु । प्ररणोद्वाह टंक्र न्तियत्रादौ प्रसवेषु च । दाननैमित्तिकं ज्ञेयमत्रापि नुप्यति ॥
 (जातस्य कुमारस्याच्छिन्नायांनाड्यां मेधाजननायुष्येकरोति । ३।) ततो जातस्योत्प-
 न्तस्य कुमारस्य पुत्रस्याच्छिन्नायांनाड्यां नालामरवसिञ्जे नलेसतिमेधाजननाद्युष्येते कौलितिता । ३। (अना-
 मिकया सुवर्णांस्तद्विदयामजुष्टे प्राशयति धृतं वा भूस्तद्विदधामि भुवस्त्वयिदधामि
 स्वस्त्वयिदधामि भुञ्चः स्वः सर्वत्वयिदधामि ॥ ६ ॥) मेधाजननं तादादाह क्रान्तिकर्त्यादु-
 ल्या (सुवर्णेनाच्छादितायामधुचरुत चमधुपुष्टेन्द्रममासामाभ्यधिकोऽष्टेष्टं वा वेत्) कुमारस्य प्राशयति
 कुमारस्य जिह्वायां निमार्ष्टि, भूरत्वयिदधामि तद्विदधामि त्वयिदधामि इत्येतेन नवधैवत्वावेकमत्रत्वम्
 इति हरिहरीनवचतत्राः (अथास्यायुष्यं करोमि । ५। अथमेधाजननं करोमि अथ वृमास्यायुष्य
 मायुषे हितं जीवन्मर्दनं करोमि ॥ (नाभ्यां दक्षिणे वा हरेजपति अग्निरायुष्मात्स्व
 वनस्पतिभिरायुष्मांस्तेनत्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि । देवा आयुष्मन्तस्तेऽमृतेनायु-
 ष्मन्तस्ते देवाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि अथ वृमायुष्मन्तस्ते वृतेरायुष्मन्तस्तेनत्वा
 ऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि) पितर आयुष्मन्तस्ते स्वधामिरायुष्मन्तस्तेनत्वाऽऽयुषाऽऽ-
 युष्मन्तं करोमि । यथा आयुष्मां सदक्षिणामि रायुष्मांस्तेनत्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं क-
 रोमि । समुद्र आयुष्मान्त्सन्नवन्तोभिरायुष्मांस्तेनत्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ।

इतित्रिः ॥६॥ रायथा नाभिदेशेदक्षिणे वा श्रद्धेनाभिसमीपे दक्षिणं कर्णसमीपेवा । अग्निरादुष्याग्नि-
 त्यादिंकाप्रष्टौ मन्त्रास्त्रिजपति । श्रीनृगाराणुंशुपठित । अग्निजोषप्रह्लादेव ऋषिपितृयज्ञ समुद्रक्षयन्त नृ-
 ष्यायुषमितिच ॥७॥ श्यायुषं जमकनेरियादि तत्रोच्चरतुश्यायुषामेत्यन्तंच । इन्द्रातद्वयजपति ।
 इदं चाुष्य कर्णकालातिक्रमेऽकिंते । मेशजन्तुमुह्यकालातिक्रमात्रिष्वर्तते । तस्मात्कुमारं जानं
 घृतंशैवाग्ने प्रतिहेहृत्रिज.तन वनुषामयन्तीति । जातमात्रस्य कुमारस्फुट्यामेधाजननंपदेशात् ।
 (सद्यदि कामयेत सर्वमायुरियादिति वात्सप्रेणैतमभिसमृशेत् ॥२॥) सन्निवद्यदीच्येत्
 अयंकुमाः सर्वं सम्पूर्णमायुः जोषितमिथ द्याप्नुयात् इत्येवंतदवात्सप्रेण वरसदस्य भालवेनदृष्टेनानुव.केन
 दिवस्परीत्यादि द्वादशवंदैनंकुमारमभिषंन्ततः सर्वशरीरमालभेत । तत्रवेरेपमाह । (दिवस्परीत्ये-
 तस्वानुवाष्यथोत्तमामृचंपरिशिनष्टि ॥६॥) दिवस्परीत्यादिकेद्वादशवोऽनुवाको वात्सप्रेण
 श्योत्तमादस्यांद्वादशीं अस्ताप्यग्निस्तियेतामृचंरिक्वित्छिद्युदस्यतितां परित्यज्यैकदशभिर्घ्नोभिरभिमृरे दि-
 रन्धः । (प्रतिदिशं पंचव्राह्मणानवस्थाप्य ब्रूयादिमनुप्राणिनेतिः १०) पूर्वांब्रूयात्प्राणे-
 तिध्यानंदिदक्षिणः अपानेत्यपरः उदानेत्युत्तरः समानेतिपंचमं उपरिष्टादवेद्युमाणोब्रू-
 यात् ॥२१॥ स्वयंवाकुर्यादनुपरिकाममिद्यमानेषु ॥२२॥ कुमारेष्वप्रतिदिशंदिशं प्रति
 चतस्रुदिशुमध्येचयश्चक्रं पंचव्राह्मणावस्थाप्य संनिवेशकुमाराभिमुखान् तान्प्रतिक्मि इममनुप्राणि-
 तेतिदमंकुमारं नुप्राणितानु लनी कृतप्राणेत्यादि मूढहति ग्रैषः ततः प्रेषिताव्राह्मणः पूर्वादिर्कोण
 प्राण इति कुमारं लक्ष्मीं कृतपूर्वां ब्रूयात्, व्रजेति दक्षिणीं ब्राह्मणः, अगानेतिशिवाः, उदानेत्युत्तरः
 समानेति पंचतः, उपरिष्टादूर्ध्वमवेद्यमणः । अविद्यामानेषु—असत्सु ह्यणेषु । स्वयं वा स्वयमे-
 वानुप्राणनं कुर्यात् । कथम् । अनुपरि कामंपरिक्रम्य, परिक्रम्य पूर्वादिषु दिशो प्रणेत्य दि—अनु-
 परिक्रमेतिणमुलन्तमस्मिन्क्षैरैषाभाषः ॥१०॥११॥२॥ (सद्यश्चिन्ददेशे जातो भवेति तमभि-
 मंत्रयतेपदे ते भूमि हृदयं द्वित्रि चन्द्रमसि स्थितम् । वेदहं तन्मां तद्विद्यात्पश्यं
 शरदः शतं १२२२याम शरदः शतमिति १३) स कुमारो यस्मिन्देशे भूभागे उत्पन्नः
 पतति तं देशमभिमन्त्रयते । इस्तेन स्पृशति वेद ते भूमि इत्यादि शरदः शतमित्य-
 न्तेनमंत्रेण १३ । (अथैनमभिसमृत्यस्मा भवपरशुर्भवहिरण्यमहर्षिभवं । आत्मैय
 पुत्रनामासि सजीव शरदः शतमिति । १४) अथ उन्मदेशाभिमन्त्रणतत्संनं कुमारे
 भित्तिभिमृशति समंस्तः स्वेशरिस्पृशति । अस्मां भव इत्यादिना सजीव शरदः शतमित्यन्तेन-
 मंत्रेण ॥ पत्न्याभिमर्शनादि, एतदभिमर्शनांत कालव्यतिक्रमेरि नियते संस्कार धर्मत्वात्. १४)
 (अथास्यमातरमभिमन्त्रयते, इडास्मिन्ना वरुणी वीरेवीरमजीजन्थाः । सात्वं वीर-
 पती भययाऽस्मान्धीमनोऽकरदिति १५) कथं कुमाराभिमर्शनान्तत्परय कुमारेण जननी-

मभिभ्रयतेऽभि ललो कृत्य—“इति श्यादिना योरपतोऽहरिद्विल्यन्ते” ११० (अथास्यै
 दक्षिणं स्तनं प्रक्षाल्य प्रयच्छति मध्यं स्तनमिति १५) ऋषामिभ्रयं कृत्वा-भ्रयै-भ्रया-
 मातुर्दक्षिण स्तनं प्रक्षाल्य धावयित्वा कुमाराय वदति, इमर्षं स्तनम्, इत्येतदर्चा ॥ यरते स्तन इत्युत्तर
 ग्लेश्याम् १७) तत उत्तरं व. मं स्तनं प्रक्षाल्य प्रयच्छति, यरते स्तन, इमर्षं स्तनम्, इत्येताभ्यां गृभ्याम्,
 ११६।१७। (उदपात्रं शिरस्तो निदधात्पापो देवेषु जाग्रथ । एवमस्यार्षं सूतिकाया र्षं-
 सपुत्रिकायां जाग्रथेति १८) उदपात्रं जलपूर्णं प्रमिरस्त. शिरः प्रवेशे कुमारस्य निदधाति .
 स्थापयति । भापो देवेष्वित्यादिना जाग्रथेत्यन्तेन मन्त्रेण, ॥११॥ (कारदेशे सूतिकाग्निमुपसमाधा-
 योत्थानात्संधिदेलयोः फलीकरण मिथ्याः सर्पपात्रनावावपति—शंडामर्का उपवीरः
 शौडिकेय उल्लूखलः । मलिम्लुचो द्रोणासश्चपवनोनश्यतादित. स्वाहा । आलिखन्न-
 निमिपः किम्बदन उपश्रुतिर्हृद्यः कुम्भीशत्रुः पाप्रपाणिर्नृमणिर्हन्त्रीमुखः सर्वया-
 दणश्च्यनोनश्यतादितः स्वाहा इति १६) ततः पंच भू संस्कार पूर्वकं द्वारवेशे
 सूतिकग्रहस्य सूतिकाग्निं स्थापयित्वा—उत्थानादुत्थान यावत्—संधिदेलयो. सार्यप्रात. फलीकरण-
 मिथ्याः फलीकरणैस्तुलवयौमिथा गृह्णान् सर्पपास्तस्मिन्ननावावपति उहोति द्वे, माहती-शंडामर्का,
 इति, आलिखन्ननिमिप, इति द्वाभ्यां मन्त्राभ्यां—अवपनोपदेशाद्—होमेति कर्तव्यता निर्वृति. ॥१६॥
 (यदि कुमार उग्रवेज्जालेन प्रच्छाद्योत्तरीरेण वा पिताङ्ग आधाय जपति—कुर्कुरः
 सुकुरुर. कुरुरो बाल वधन । चेच्छेच्छुनकसृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेता-
 पःहरः । १। तत्सत्यं यत्ते देवा धरमदहुः सत्वं कुमारमेव वा वृणाथाः ॥ चेच्छेच्छुन-
 कसृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापःहरः । २। तत्सत्यं यत्सेसरे मा माता सीसरः
 पिताश्यामशचलीभ्रातरौ । चेच्छेच्छुनकसृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापःहर
 इति ॥२०॥) नैमित्तिकमह—यदि चेत्कुमारो बालप्रवृत्तं बालमुपद्रवेत्—अभिभवेत्-तदा त व लं-
 जालेन मरुत्प्र प्रदणम घनेन तदलाभे—उत्तरीयेण वा वाससा प्रच्छाद्या ह्यादयित्वावे—उत्तरे निधाय
 पुरवा कुरुर इत्यादिकं अण्वे इत्यन्त मंत्रप्रयं जपति १२०। (अभिमृशति-ननामयति-नह-
 दति न हृष्यति न रलायति यत्र वयं यदा मो यत्र चाभिमृशामति, इति ॥२१॥ ६
 जज्ञान्ते कुमारस्य सर्वाङ्गमभिमृशति ननामयतीत्यादि यत्र चाभिमृशाममोरगन्तेन मन्त्रेण ॥२१।)

इति जत कर्म सूत्र व्याख्या ।



अथ जातकर्मपद्धतिः ।



अथचसुखप्रसवार्थं सोप्यन्तीकर्म-वक्ष्ये-(सोप्यन्तीं प्रसूति वायुना शूलवतींप्रसवोन्मुखीम्) त्रियमद्भिरभ्युक्षति । ३०. एज-
त्विति-अत्रिर्ऋषिर्महापंक्तिरञ्जन्दो गर्भोदेवतागर्भाभ्युक्षणेविनि-
योगः । ॐ एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणासह । यथायं द्वायुरे-
जतियथासमुद्रऽएजति । एवायं दशमास्योऽ अस्त्रजरायुणासह ।
इत्यभ्युक्ष-ॐ अत्रैत्वितिप्रजापतिर्ऋषि र्भृहतीञ्जन्दोऽग्निदेवताग-
र्भावपाते विनियोगः । ३० अत्रैतु पृश्निशैवल ॐ शुनेजरायव-
त्तवे । नैनमाँ सेन पीवरी । न कस्मिंश्चनायतमव जरायुपय-
ताम् । एतद् गर्भं विमोक्षणमात्र एव कार्यम् ।

अथच पितापुत्रे जातेपुत्रस्यसुखमवलोक्य स्वर्णयुक्तेनगृहा-
नीतेन जलेनाग्निसमीपे वानघादौ गत्वा रात्रावपि शीघ्रं सवस्त्रं
स्नानमाचरेत् । अद्यहेत्यादि० अमुकोऽहंपुत्रजन्मनिमित्तकं सचैल
स्नानमहं करिष्ये । स्नात्वा शुद्धेधौते वाससी परिधाय प्राङ्-
मुखोपविश्याचभ्य दीपं प्रज्वाल्यशान्तिपाठं पठित्वा गणेशादि
मातृका पूजनादिकं कुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौस्मृत्वामुकोऽहं
ममास्य कुमारस्य गर्भावुपानजनित सवल दोष निवर्हणायुर्मेधा-
भिष्टुद्धिर्विजगर्भसमुद्भवैनोनिवर्हणद्वारा परमेश्वर प्रीत्यर्थं जात-
कर्माहं करिष्ये । तदंगत्वेन-गणेश पूजनं गौर्यादि मातृकापूजनं
नान्दी आर्द्धं कलश स्थापनं पुण्याहवाचनं वसोर्धारापातनं नव-
ग्रहपूजनं च करिष्ये—इति पूर्वोक्त प्रकारेण पूजनं विधायनान्दी
आर्द्धं सुवर्णेनवाद्भिगुणामान्नेन विदध्यात् 'पुत्र जन्मनि कुर्वीत
आर्द्धहेम्नैव बुद्धिमान्' ततः सुवर्णादि पात्रे मधुघृते चैकीकृत्य
केवलं घृतं वा सुवर्णान्तिहितया अनामिकया आदाय जातं शिशुं
सकृत्प्राशयति । कुमारस्यजिह्वायां नुमार्ष्टीत्यर्थः । ॐ भूरादि
व्याहृति त्रयाणां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्भृहतीञ्जन्दांसि

अग्निवायुसूर्यपूजापतयो देवताः प्राशने विनियोगः । ॐ भूस्त्वयि
 दधामि ॐ भुवस्त्वयि दधामि ॐ स्वस्त्वयि दधामि ॐ भूर्भुवः
 स्वः सर्वं त्वयि दधामि । इति मेधाजननम् । अथायुष्करणम्—
 जातस्य पुत्रस्य नाभिसमीपे वा दक्षिण कर्ण समीपे मंत्रोपदेश-
 वज्रपेत् । ॐ अग्निरायुष्मानित्यादिनामष्टानामंत्राणांपूजापति-
 ऋषिर्गायत्रीछन्दो लिंगोक्तादेवता आयुष्करणे विनियोगः । ॐ
 अग्निरायुष्मान्त्स व्वनस्पतीभिरायुष्मांस्तेनत्वाऽयुपाऽयुष्मन्तं क-
 रोमि ॥१॥ ॐ सोमऽत्रायुष्मान्त्स औपधीभिरायुष्मांस्तेनत्वाऽऽयु-
 पाऽऽयुष्मन्तं करोमि ॥२॥ ॐ ब्रह्मायुष्मत्तद् ब्राह्मणैरायुष्मत्,
 तेनत्वाऽऽयुपाऽऽयुष्मन्तं करोमि ॥३॥ ॐ देवाऽत्रायुष्मन्तस्तेऽमृते-
 नायुष्मन्त स्तेनत्वाऽऽयुपाऽऽयुष्मन्तं करोमि ॥४॥ ॐ ऋषयऽत्रायु-
 ष्मन्तस्ते व्रतैरायुष्मन्तस्तेनत्वाऽऽयुवाऽऽयुष्मन्तं करोमि ॥५॥ ॐ पित-
 रऽत्रायुष्मन्तस्ते स्वधाभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुपाऽऽयुष्मन्तं करोमि
 ॥६॥ ॐ याज्ञऽत्रायुष्मान्त्स दक्षिणाभिरायुष्मांस्तेनत्वाऽऽयुपाऽऽयु-
 ष्मन्तं करोमि ॥७॥ ॐ समुद्रऽत्रायुष्मान्त्स स्रवन्तीभिरायुष्मां स्तेन-
 त्वाऽऽयुपाऽऽयुष्मन्तं करोमि ॥८॥ ॐ व्यायुषमित्यस्य नारायण-
 ऋषिरुष्णिक् छन्दः शिवो देवताऽत्रायुष्करणे विनियोगः । ॐ
 व्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य व्यायुषम् । यद्देवेषु व्यायुषं तन्नोऽ-
 अस्तुऽत्रायुषम् । इति त्रिजपेत् । सकृद्वा । (गदिकुमारस्य पिताका-
 मयतेऽयं कुमारः शतवर्षमायुर्ज्जीवितमिषात्स्यात् तदा दिवस्परी-
 त्येकादशभिर्मंत्रैः कुमारं सर्वांगहस्तेनाभिमृशत्) एतदत्रायुष्करणम्
 ॐ दिवस्परि—इत्येकादशमंत्राणां वत्सप्रीऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽष्टमं
 अस्थपंक्तिरछन्द रुक्माग्निदेवते जाताभिमर्शने विनियोगः । ॐ
 दिवस्परि प्रथमं जज्ञेऽग्निराणद्वतीग परिजात वेदाः । तृतीयं मप्सु
 नृम्णाऽअजस्रमिन्धानऽएनं जरतेस्वाधीः ॥१॥ ॐ विद्वातेऽअग्ने
 त्रेधा त्रयाणिविद्वातेधामविभृतापुरुत्रा । विद्वाते नाम परमं गुहा
 यद्विमांतमुत्संयतऽत्राजगन्धः ॥२॥ ॐ समुद्रेत्वा नृम्णाऽअप्सवन्त-
 नृचक्षाऽईधे दिवोऽअग्नऽऊधन् ॥—तृतीयेत्वारजसि तस्थिवा

ॐ समपासुपस्थं मरिपाऽबद्धं ॥३॥ ॐ अक्रन्ददग्निस्तनयत्रिव-
 द्यौः क्षामारेरिहृद्वीरुधः समंजन् । सद्यो जज्ञानो व्वीहिमिद्धोऽत्र-
 ख्यदा रोदसी भानुनाभाल्यन्तः ॥४॥ ॐ श्रीणामुदारोध-
 हणोरधीणां मनीषाणाम्प्रार्पणः सोमगोपाः । व्वसुः सूनुः
 सहसो ऽ अशुराजा विभाल्यग्नऽउषसाभिधानः ॥५॥ ॐ
 विश्वस्यकेतुर्भुवनस्यगर्भऽआरोदसीऽअपृणा जायमानः ।
 व्वीडं चिदद्रिमभिनत्परा धंजनाय्वदग्निमयजन्तपञ्च । ६। ॐ उशि-
 कपावकोऽअरतिः सुमेधामर्त्तंष्वग्निरमृतोनिधायि इयतिधूममरि-
 पंभरिभ्रदुच्छुकेणशोचिपाद्यामिनत्तन् ॥७॥ ॐ हशानोरुकमऽ
 उदर्पाव्यद्यौर्दुर्भर्षमायुः अथैरुचानः । अग्निरमृतोऽअभवद्वयोभि-
 र्धहेनन्यौरजनयत्सुरेताः । ८। ॐ यस्तेऽअद्यकृणवद्भद्रशोचेपूप-
 न्देऽघृतवन्तमग्ने । प्रतन्नयप्रतरं वस्योऽअच्छामिसुम्नं देवभक्तंय
 विष्ट । ९। आतंभजसौ अवसेश्वग्नऽउक्थ ऽउक्थ आभजशस्यमाने
 प्रियः शूर्येप्रियोऽअग्नाभवात्युज्जातेनभिनदुज्जन्तवैः । १०।
 ॐ त्वामग्नेयजमानाऽअनुकून्विश्वशोव्वसुदधिरेव्वार्याणि । त्वया
 सहद्रविणमिच्छमानाव्रजंगोमन्तमुशिजोव्विववह्नु । ११। ('दिवस्प
 रीत्येतस्ययात्सानुवाकस्य अस्तोव्यग्निरित्येतामृचं परिशिनष्टिव-
 र्जयेदित्यर्थः) अथ कुमारस्य पूर्वादिचतसृपुदिक्षुचतुरो ब्राह्मणान्नेकं
 मध्येचावस्थाप्य, इममनुप्राणीत, तान्ब्राह्मणानितिप्रेषं पिता ब्रूयात्
 तत्रादौ पूर्वदिकस्थितोब्राह्मणः कुमारंलक्ष्मीकृत्य ॐ प्राणः । दक्षिण
 स्थः ॐ व्यानः । परिचमस्थः ॐ अपानः । उत्तरस्थः ॐ उदानः ।
 पंचमोमध्यमस्थऽपपिष्ठादवेक्ष्यमाणः सन् ॐ समानः ।
 ब्राह्मणाभावेपितास्वयमेव पूर्वादिकमनस्त्रनत्रगत्या कुमारा-
 भिसुखंस्थित्वा प्राणेत्यादिव्रूयात् । अस्मिन्पक्षेप्रैषाभावः ।
 ततोयस्मिदेशेकुमारोजातोभवति । तंदेशंदक्षिणहस्तानामिकयास्पृ-
 शन् वक्ष्यमाण मंत्रंपठति । ॐ वेदतेभूमि इति मंत्रस्यप्रजापति
 ऋषिरनुष्टुप्छन्दः पृथ्वीदेवता जन्ममृग्यभिमंत्रणे विर्नियोगः ।
 ॐ वेदतेभूमिहृदयंदिविचन्द्रमसिभ्रितम् । व्वेदाहंतन्मां तद्विद्या-

त्पश्येमशरदः शतंजीवेमशरदः शतं ६० शृणुयामशरदः शतम् ।
 ततः कुमारंसर्वशरीरेस्पृशतिमंत्रेण ३० अश्माभवेत्पश्यमंत्रस्य
 प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दोऽङ्गोक्तादेवता अभिमर्शणे विनियोगः
 ॐ अश्माभवपरशुर्भव हिरण्यमश्रुतंभव । आत्मावैपुत्रनामासि
 सजीवशरदः शतम् । (वात्सप्रभिमर्शनादि एतदभिमर्शानन्तं कर्म
 कालव्यतिक्रमेऽपिक्रियते संस्कारकर्मत्वाच्चतुर्दशसूत्रस्यव्याख्या-
 यांस्पष्टम् । मेधाजननंतुमुख्यकालतिक्रमान्भवतीति सप्तमसूत्र
 व्याख्यानात्) ततः कुमारमातरंलक्ष्मीकृत्याभिमंत्रयेत् । ॐ इडा-
 सीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दःइडादेवता अभिमंत्रणे विनि-
 योगः । ॐ इडासिमैत्रावरुणीव्यीरे व्यीरमजीजनथाः । सात्वं
 व्यीरवतीभवयास्मान्वीरवतोऽकरत् । अथमातुर्दक्षिणंस्तनंप्रक्षाल्य
 कुमारायप्रच्छति । ३० इमंस्तन भित्तस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टु-
 प्छन्दोऽग्निर्देवता दक्षस्तन प्रदाने विनियोगः । ३० इमंस्तन
 मूर्जस्वनंधयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्यमध्ये । उत्संजुपस्वमधु-
 मन्तमर्ब्वन्तसमुद्रिय ६० सदनमाविशस्व । ततो वामंस्तनंप्रक्षाल्य
 च ३० यस्तेस्तन इति दीर्घतमाऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोवाग्देवता वाम-
 स्तनदाने विनियोगः ॐ यस्तेस्तनशशयोयोमयोभूष्यो रत्नधा-
 व्वसुविद्यः सुदत्र । येन त्विश्वापुष्पमिद्वार्याणि सरस्वति तमि-
 हधातवेकः । ३० इमंस्तनमितिच द्वाभ्यां वामंप्रच्छति । ततः
 सूतिकाया शिरप्रदेशेभूमौजलपूर्णं कुम्भं दशदिनपर्यन्तं निधाय
 संरक्षयेत् ३० आपोदेवेष्टित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो
 देवताः सूतिकायाः शिरप्रदेशेरक्षानिमित्तमुदककुम्भं स्थापनेवि-
 नियोगः ३० आपो देवेषुजाग्रथथादेवेषु जाग्रथ एवमस्यांस्तूति-
 काया षंसपुत्रिकायाऽ जाग्रथ । ततः सूतिकागृहस्यद्वारदेशे (कति-
 चिच्छ्रीतव्याप्तदेशेषुसूतिका संनिधावेवाग्निस्थापनं कुर्वन्ति) यथा
 देशप्रथानुकूलेन कर्तव्यम्—तत्रवेदीं कृत्वापंचभूसंस्कार पूर्वक
 मग्निस्थापयित्वा एषणवविधिर्यत्र कचिद्धोमः एतंतेतिप्रणीता
 प्रणयनादयोनभवन्ति ततः स्थापिताग्निं एतंतेतिप्रतिष्ठाप्य प्रग

लभोजातकर्मणि) इति वचनात् ३० भूर्भुवः स्वः प्रगल्भनामाग्ने
 इहागच्छेतिष्ठ सुप्रतिष्ठितोवरदोभवः ३० प्रगल्भनाग्नेनमः ।
 इति मंत्रेणपाद्यदिभिः संपूज्य तंडुलमिश्रितान्स्वेतसर्षपान्गृहीत्वा
 दशदिवसपर्यन्तं प्रतिदिवसंसायं प्रात वैद्यमाण
 मंत्राभ्यामाहुतिद्वयं होमं कुर्यात् । यावत्सूतिकोत्था-
 नम् । तत्रमंत्रः—ॐ शंडामर्का इति प्रजापतिर्ऋषि रनुष्टुप्छन्दो
 ऽग्निर्देवता सूतिकाग्नौ तंडुल मिश्र सर्षपहोमे विनि-
 योगः । ॐ शंडामर्काऽउपवीरः शौण्डिकेयऽउलूलः मलिम्बु-
 चोद्रोणासश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहा । इदमग्नये नमम । १।
 आलिखन्नितिप्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता सूतिकाग्नौ
 तण्डुलमिश्र सर्षपहोमे विनियोगः । ॐ आलिखन्ननिमिषः क
 वदन्तऽउपश्रुतिः हर्यक्षः कुम्भीशत्रुः पात्रपाणिर्दमणिः हंत्रीमुखः
 सर्षपाकृणश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहा—इदमग्नये नमम ।
 इत्युभयत्र त्यागः । अथ च कुमार नामको बालग्रहो बालकं
 प्रत्युपद्रवं रोदन मूर्च्छादिकं कुर्यात् । तदातदुपद्रव शान्तये तं
 जातं शिशुं मत्स्य जाल खण्डेन वा उत्तरीयेण वस्त्रेणाच्छाद्य अंके
 गृहीत्वा पिता वक्ष्यमाण मंत्रैर्रक्षां कुर्याज्जपेच्च । ॐ कूर्कुर इत्या
 दिनां मंत्राणांप्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः शुनको देवता ग्रह वाधा
 दूरी करणार्थं जपे विनियोगः । ॐ कृक्कुर सुकृक्कुरः कृक्कुरो
 बाल बंधनः । चेच्चेच्छुनक सृज नमस्तेऽग्रस्तु सीसरो लपेता-
 पवहर । १। ॐ तत्सत्यंयत्ते देवान्वरमददुः कुमारमेववाऽवृणीथाः ।
 चेच्चेच्छुनक सृज नमस्तेऽग्रस्तु सीसरो लपेता पवहर । २। ॐ
 तत्सत्यं यत्तेसरमामाता सीसरः पिता श्यामसवलीं भ्रातरौ ।
 चेच्चेच्छुनकसृजनमस्तेऽग्रस्तु सीसरो लपेता पवहर । ३। इति
 जप्त्वा बालकमभिमृशति । ॐ ननामयतीत्यस्यप्रजापतिर्ऋषिर-
 नुष्टुप्छन्दो वायुर्देवता ग्रहवाधा दूरी करणार्थं पुत्राभिमर्शने विनि-
 योगः । ॐ न नामयति न रुदति न हृष्यति न ग्लायति । यत्र
 व्ययंभवदामो यत्रचाभिमृशामसि ॥ इति मंत्रेणाभिमृश्यततो

दक्षिणादिकं ब्राह्मणेभ्यो दत्त्वा ततो नालमष्टांगुलं नाभौशेषं
कृत्वाकर्त्तनेन क्षुरेण वा छेदयेत् । ततो ब्राह्मण भोजनं सूतकान्ते
कुर्यान् (पुत्र जन्मनि यात्रायां शर्वर्या दत्तमक्षमम् । प्रथमेऽन्दि
तथापष्टे दातानापनोतिसूतकम् । इति वचनात्-स्नानदान प्रति
ग्रहेषु दोषो न भवति । इति जातकर्म पद्धतिः ।

—:०:—

॥ अथषष्ठीपूजामहोत्सवपरिभाषा ॥

नचानौविधिः।।रस्करश्वसूत्रोक्तः। परंचमृतिपुराणोदितरादवश्यमेव कर्तव्योऽयंविधिः । मिता-
क्षयांमार्कण्डेयः—रक्षणीयातथापष्टो निशातर्वापिरोत्त । रात्रौजागरणंकार्यं जन्मदानातथा-
बलिः । पुरुषाश च हस्तारच नृदगीतरचयोपितः । व्यासः—सूतिकावासनिलया जन्मदानाम-
देवताः । तासांयागनिर्मित्तु शुद्धिर्जन्मनिकीर्त्तिता । प्रथमदिवसेपष्टे दशमंचैपसर्वदा । श्रित्वेतेषुन-
कुर्वीत सूतकंपुत्रं३३नि । अपरार्के—कन्याश्चतस्रोऽकाथा वातप्लीगैवपंचमी । कीटनाभांचया-
सानां पष्टोचशिशुरक्षिणी । खड्गेतुपूजनीयाः।।ब्राह्मणैश्चद्विजातिभिः । राकानुमितिः।।मिनीराली कु-
रितिवत्तत्र कन्याः । श्रीकृष्णमुधिष्ठिरस्वादिभारते—मुधिष्ठिरउवाच—पुनर्जन्मनिकन्याया
वत्सवकोविधियते । किंरनंकयपूजाच तन्मेह्रिजनार्दन ? । श्रीकृष्णउवाच—शृणुपाश्रययत्मेन-
मुतोत्पत्तिमहोत्सवम् । जन्मपृदिनेऽप्यं पृष्ठीनञ्जीविशूलिनी । पीठेपराश्रममयेगोपयोप्रतिमा-
त्तित्वेत् । कर्पाशकाप्रदातव्याश्रयगे चामेविशेषतः । कर्णयो कुण्डलेवेयेद्वर्षपञ्चशौभिते । दिव्यसम्-
परीधानां तावेवोपूजयेतातः । अग्नेदीपकयेयं नैवेद्यैर्विधिःशुभैः । नारिकेलदिन्तद्वत्-देवकलो-
द्भवैःफलैः । बलांस्वापयेत्तत्र—अग्रतःपल्लवाः३३तम् । द्विजन्मानंसारत्रीवमन्त्राचरमन्त्रितम् । श्राद्धय-
कारयेत्स्वास्तयोऽङ्गुलैःपुञ्जम् । गुल्य पीतविनोदेन वःशेनचमुधिष्ठिर ? । रात्रौजागरणंकार्यं दैवज्ञेन-
द्विनैःसह । वटकपृथमालाभिर्यद्भ्रमोवमजासुतम् । पुनःपुनर्महाशयं कःरयेत्कर्णताडनात् । डाक्षियो-
दातुधानाश्च भूतप्रेतपिशाचका ॥ पालमहाश्वनश्च्यन्ति तच्छन्दः।।वर्षेनाध्नुवम् । तत्रशान्तिविधानि-
ब्राह्मणेभ्योविशेषतः । प्रथमेऽन्दिपष्टेवादात्तानापनोतिसूतकम् । दानंप्रतिग्रहं तत्रथाद्वक्त्रिपतेयतः ॥
प्रभातेदोयतेदान तटनर्कगायथान् । स्त्रियःसभर्तृका शूक्षा वस्त्रः।।लेकरणादिभिः । अनेनविधिनयस्तु
पृष्ठीवेवोपपूजयेत् । अयुर्वृद्धिभवेत्तास्यसंततैः।।विण्ण्डव ? पुत्रेजादेव्यतीपातिप्रदेशेचन्द्रसूर्ययोः पितुः-
सम्बत्सदिनेदानं कोटिगुणंभवेत् । अत्रप्रदुम्नस्कन्धपट्टकृत्तनादीनां पूजनंभारंपर्यंद्देशे रीत्यादीर्षा-
युपांपूजनं—हुमरस्वदीर्घंयुपनिमित्तंपूर्वःचार्यंनिरूपितं । वतिचिरसुखदतिपुत्रेशाच रतोधनुर्वायेन-
राहुवैधनमस्ति । तद्विदियाचार । मनुर्विदेम् ॥ इतिपृष्ठीमहोत्सवविधिः ॥

अथ षष्ठीमहोत्सवपूजापद्धतिः ।

अथ च जातकजन्मदिवसात्पष्टेऽन्हि पिता प्रातस्तथाय
 शुचिः स्रौतस्मार्तकियापरं सपत्नीकं ब्राह्मणं विनियेनोपसृत्य ।
 अथपुत्रस्य कन्याया वाषष्ठीमहोत्सवार्थं युवामहं निमन्त्रये,
 इत्युक्त्वा तथास्त्विति तौ व्रूयास्ताम् । ततः स्वगृहमागच्छेत् ।
 तद्दिने ब्राह्मणः सपत्नीकः श्चोपोपितस्तिष्ठेत् । ताभ्यां षष्ठी
 महोत्सवं कारयेत् अथवोपवासपूर्वकः स्वयमेव पिता वा अन्यः
 कुर्यात्—ततोऽपराह् समये ब्राह्मणो गोमयेन सूतिकागारभित्तौ
 मध्ये षष्ठीदेव्याः पार्श्वयोः स्कन्ध प्रद्युम्नयोरेवंतिष्ठः प्रतिमाः
 कृत्वा, वा काष्ठपीठे पिष्टेन लिखित्वा तंडुलैर्यवै र्वा पूरयित्वा,
 षष्ठीदेव्याः कर्णयोर्द्वारपद्मैः कुण्डले सर्वाङ्गे षोडशकपर्दिकाः
 सुसज्जेत् । ततोऽन्यद्वस्त्रादिभिस्तिष्ठः प्रतिमाः विदध्यात् ।
 ततः प्रदोष समये जातकस्य पिता स्नात्वानित्यकर्म विधाय पूजा
 सामग्रीं संपाद्य सूतिका गृहद्वार सधीपमागत्य द्वारमातृ पूजनं
 कुर्यात् । आचम्यार्घं संस्थाप्य भूतोत्सादनं कृत्वा संकल्पः—
 अथेत्यादि० अमुकराशिरमुकोऽहममुकराशेः पुत्रस्य कन्याया वा
 करिष्यमाण षष्ठीमहोत्सव कर्मणि तत्रादौ द्वार मातृश्राणां पूजनं
 करिष्ये । एतन्ते० इति० ॐ भूर्भुवः स्वः द्वारमातर इहागच्छन्तु-
 इतिष्टन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु । इति प्रतिष्ठाप्य, ध्यानम्—
 ॐ कुमारीधनदानदाविपुला मगलाचला । पद्माचैव तु नाम्नोक्ताः
 सप्तैदा द्वारमातरः । इति ध्यात्वा नाममंत्रैः पूजनं कुर्यात् । ॐ
 कुमारेणमः ॐ धनदायै० ॐ नन्दायै० ॐ विपुलायै० ॐ मंग-
 लायै० ॐ अचलायै० ॐ पद्मायै नमः इतिमंत्रैः पाद्यगंधधूपा
 दिभिः संगृह्य दक्षिणां दत्वा स्वस्ति वाचनं कुर्वन्—आभ्यन्तरं-
 गच्छेत् । तत्रादौ सर्पपसैन्धवसर्प कचुलिका निम्बपत्रघृतमिश्रितैः
 सूतिकासन्निधौ धूपदत्वा । ततो गणेशादि पंचांग पूजनं कृत्वा
 ततः स्कन्दप्रद्युम्न जन्मदाषष्ठी देवीनां पूजनं कुर्यात् । आचम्यार्घं

संस्थाप्य संकल्पः । अद्येत्यादि देशकालौ स्मृत्याऽमुकोऽहं जातस्य-
 शिशोरायुरायोग्य सकलारिष्ट शान्ति द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थ
 गोमयप्रतिमोपरिस्कन्दप्रद्युम्नयोः पूजनं करिष्ये । (कतिचित्सु
 पुस्तकेष्वदौ प्रद्युम्न पूजाविधिरुक्तः—परञ्च जन्मदापण्ठी देवी-
 भ्यामादौ स्कन्द एवरक्षितोऽत्रापि बालस्य रक्षार्थं—पौराणका-
 चार्यैस्तेषां पूजाविधिरुक्तः प्रद्युम्नस्य जन्मनः पूर्वमेवस्कन्दस्य
 पूजायांप्राथम्यतोमयापि—आदौ स्कन्द पूजाविधिरुक्तः) तत्रादौ
 स्कन्दं ध्यायेत् । ॐ वराभयकरः साक्षाद्द्विभुजः शिखिवाहनः ।
 किरीटीकुण्डली देवो दिव्याभरण भूषितः । ॐ ध्यायामि वरदं
 देवं मयूर वर वाहनम् । स्कन्द सेनापतिं वीरं बालरक्षण हेतवे ।
 ॐ स्कन्दाय नमः । ॐ द्रप्सश्चेति मन्त्रस्य देवश्चवाक्त्रपिस्त्रि-
 ष्टुप्लुन्दः स्कन्दो देवता स्कन्दावाहने पूजने विनियोगः । ॐ
 द्रप्सश्चस्कन्दशुभिवीमनुद्यामिमं च योनिमनुयश्च पूर्वः । समानं-
 योनि मनुसंचरन्तन्द्रप्सं जुहोम्यनुसप्तहोत्राः । इति मंत्राभ्यां
 पाद्य गंधादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत् । ॐ नमः कुमाराय महा
 प्रभायस्कन्दायते स्कन्दितदानवाय । नवार्कविंशत्युतये नमोऽस्तु
 नमोस्त्वमोघोद्यतशक्तिपाणये । नमो विशालाय विचारिणेऽस्तु
 नमोऽस्तुते पण्डुव कामरूपिणे । गुहायगुहाभरणायधर्त्रे नमोऽस्तुते
 दानव दारणाय । नमोऽस्तुतेर्क प्रतिमप्रभाय नमोऽस्तुगुहायगुहाय
 तुभ्यम् । नमोस्तु ते लोक भयापहाय । नमोऽस्तु ते बालपराक-
 माय ॥ नमो विशालायतलोचनाय नमो विशालायमहा व्रताय
 नमो नमस्तेऽस्तु मनोरमाय । नमो नमस्तेऽस्तुकरोत्कराय ॥ नमो
 मयूरज्ज्वल वाहनाय नमो धृतोदग्रपताकिनेऽस्तु । नमोऽस्तु केयूर
 धराय तुभ्यं । नमः प्रभायप्रणताय तुभ्यम् ॥ सेनानये पावकिने
 नमोऽस्तु । क्रियां परीतामद्यदिव्य मूर्तये । कृपामयो यज इंचामल-
 स्त्वं नमोऽस्तु पण्ठीश नमो नमस्ते । इति द्वात्रिंशन्नामभिः पुष्पां-
 जलिनासंप्रार्थ्य—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषः परुषस्परि ।
 एवानो दुर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च । इतिमंत्रेणस्कन्दोपरि दुर्वां

समर्पयेत् । ततः प्रद्युम्नंध्यायेत्—ॐ प्रद्युम्नस्तु चतुर्बाहुः शंख
चक्र गदाधरः । रतिनारक्षितो देवो वनमाला विभूषितः । ततः
प्रद्युम्नमावाहयेत्—ॐ कामदेव धरं रूपं प्रद्युम्नंरुक्मिणी सुतम् ।
आवाहयामिदेवेशं शिशुकल्याणहेतवे । ॐ प्रद्युम्नाय नमः
इतिमंत्रेणपाद्यादि नैवेद्यान्तं संपूज्यप्रार्थयेत्—(ॐ कृष्णाय वासु-
देवाय देवकीनन्दनाय च । प्रद्युम्नायानिरुद्धाय नमः शंकर्पणाय
ष्व । शंवरारे ? नमस्तेऽस्तु नमस्ते रतिवल्लभ ? नमस्ते रुक्मिणी
पुत्र ? नमस्तेशिशु रक्षक ? । भोप्रद्युम्नमहावाहो लक्ष्मी हृदय-
नन्दन । कुमारं रक्षमे भीतेः प्रद्युम्नाय नमोनमः । इति संप्रार्थ्य
ततः षट् कृत्तिकाः पूजयेत्—अद्येत्यादि० देश कलौ स्मृत्वा
ममास्य जातस्य षष्ठीमहोत्सव कर्मणिसर्वापद्रवशान्त्यर्थं दध्य-
क्षत पुंजेषु षट् कृत्तिकानां पूजनं करिष्ये—ध्यायेत् ॐ स्कन्दमास्त्र
जगद्धास्त्रवर्चालरक्षण तत्पराः । ध्यायामिमनसा देवीः कृत्तिकाः
शिशु पालिकाः ॐ एतन्ते इति प्रतिष्ठाप्य ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्द-
मातरः ॥ इहागच्छन्निवह तिष्ठंतु । सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु
।१। ॐ भू० संभूते इ०।२। ॐ भू० सन्निते इ०।३। ॐ भू० प्रीते इ०।४।
ॐ भू० अनसूये० इ० ।५। ॐ भू० क्षमे इ० ।६। इति प्रतिष्ठाप्य
नाममंत्रैर्गन्धाक्षतादिभिः संपूजयेत् । ॐ शिवायै नमः । ॐ
संभूत्यै नमः । ॐ सप्तत्यै नमः । ॐ प्रीत्यै नमः ॐ अनसूयायै
नमः । ॐ क्षमायै नमः । इतिसंपूज्य प्रार्थयेत् । ॐ जगन्मातर्ज-
गद्धात्रि जगदानन्दकारिणि ! नमस्ते देवि कल्याणि प्रसीद मयि
कृत्तिके ॥ ॐ कार्तिकेयाय नमः ॐ कार्तिकेय महावाहो गौरी
हृदयनन्दन । कुमारं रक्षमे भीतेः कार्तिकेय नमोस्तु ते । ॐ
प्रद्युम्नाय नमः । ॐ कृष्णात्मज नमस्तेऽस्तु नमस्ते कामरूपिणे ।
सयालांसूतिहाररक्ष प्रद्युम्नाय नमो नमः । ॐ त्वद्वाय नमः ।
ॐ शंखाय नमः । ॐ मंथनाय नमः । ॐ वंशाय नमः । इति
त्वद्वायुधानि संपूज्य मध्येमहाषष्ठीं पूजयेत् । तत्रादावर्घ्यं
संस्थाप्याथम्य प्राणायामत्रयं विधाय दीपाष्टकादि पूजा सामग्रीं

संपाद्य संकल्पः अद्येत्यादि० अमुकराशिरमुकशर्माहममुकराशे
 र्जातिस्यपुत्रस्य कन्याया वा दीर्घायुरारोग्यावाप्तये सर्वोपद्रव
 शान्त्यर्थं श्रीपरमेश्वर प्रीतये गोमयप्रतिमायांपष्ठीदेव्याः षोडशो-
 पचारैः पूजने करिष्ये--ॐ एतन्ते० पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः
 गोमयप्रतिमायां पष्ठीदेवि ! इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितावरदा
 भव । ॐ आँ ह्रीं क्रीं यँ रँ लँ वँ शँ षँ हँ सं सोहं पष्ठी-
 देव्याः प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु जीवद्दहतिष्ठन्तु सर्वे
 न्द्रियाणीह तिष्ठन्तु वरदा भवन्त्विति प्राण प्रतिष्ठां कृत्वा-
 आत्मनि देवे च न्यासं कुर्यात् । ॐ पाँ हृदयाय नमः ॐ पीं
 शिरसेस्वाहा ॐ धूँ शिखायै वषट् ॐ पैँ कवचाय हुम् । ॐ पाँ
 नेत्राभ्यां वौषट् ॐ पः, अस्त्रायफट् न्यासं कृत्वा ध्यायेत् । ॐ
 चतुर्भुजां सौम्यरूपां पीन्नोन्नत पयोधराम् । रक्तवस्त्रां चारु
 हासां मयूर वर वाहनाम् । दिव्यरूपां दिव्यनेत्रां शिवार्धाशन
 संस्थिताम् । शक्तिशूलवराभीति हस्तां ध्यायेन्महेश्वरीम्
 दक्षिणे वंशमंथानं वामे नीलोत्पलं शुभम् । स्कन्दप्रद्युम्न
 मध्यस्थां महापष्ठीं विचिन्तये । आघाहनम्--आघाहि वरदे
 देवि पष्ठीदेवीति विश्रुते । शक्तिभिःसह मेपुत्रं रक्ष-
 जागर वासरे । ॐ अम्बेऽअम्बिके ऽअम्बालिके नमानयतिकश्चन
 ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् । आसनम्--आसनं
 परमं दिव्यं कौशेयं च मनोहरम् । पष्ठीदेवि गृहाण त्वं सपुत्रारत्रसू-
 त्तिकाम् । पाद्यम्--गंधाक्षतसमायुक्तं शीतलं निर्मलं जलम् । पाद्यं
 गृहाण सुमुखि पष्ठीदेव्यै नमोनमः । अर्घ्यम्--गन्ध पुष्पाक्षताढ्यं
 च गांगवारिसुनिर्मलम् । अर्घ्यं गृहाण देवेशि महापष्ठीनमोनमः ।
 आचमनीयम्--कर्पूरैलालवंगैश्च वासितं जलमुत्तमम् । गृहाणा-
 चमने देवि महापष्ठीनमोनमः । पंचामृतम्--पंचामृतं गृहाणेदं
 पयोदधिघृतं मधु । शर्करासहितं मातर्भहापष्ठीनमोनमः । स्नानीयम्
 गंगादि तीर्थसंभूतं दिव्यगन्धयुतं जलम् । स्नानार्थं ते प्रदास्यामि महा
 पष्ठीनमोनमः । वस्त्रम् । कौशेयं मृदुलं देवि नानारंगैर्भनोरमम् ।

वस्त्रंगृहाण जननि महापष्ठ्यैः । भूपणानि-नानारत्नमयं दिव्यं
 मुक्ताहारादिकंपरम् । गृहाणभूपणंशुद्धं महापष्ठ्यैः । चन्दनम्
 कर्पूरागरुकस्तूरी केशरेण समन्वितम् । गृहाणचन्दनंदेवि महाप-
 ष्ठ्यैः । सिन्दूरम्-चन्दनोपरि शौभार्थद्रव्यं सौभाग्यसूचकम् ।
 सिन्दूरंगृह्यसुभगे महाप० । अक्षताः-सुक्षालितैरक्षितैश्चतण्डुलैः
 शशिसंनिभैः । द्योतयामिजगन्मातर्महाप० । पुष्पाणि—ऋतुजानि
 सुपुष्पाणि तथा दूर्वाङ्कुराणि च । निवेदयामितेप्रीत्यामहापष्ठ्यैः
 धूपम्-वनस्पत्युद्भवं धूपं गंधाढ्यं सुमनोहरम् । गृहाणांघ्र्यकंदि-
 व्यं महापष्ठ्यैः दीपम्-आज्यं वर्तिकृतं देविवन्हिदीप्तंप्रभान्वितम्
 आरातिक्यंगृहाणेशिमहापष्ठ्यैः । नैवेद्यम् नानाविधंच नैवेद्यं
 भक्तिभावसमन्वितम् । सगणैर्भुक्त्वकल्याणि महापष्ठ्यैः । आचम-
 नीयम् करास्यपादशुद्ध्यर्थपानार्थं च शुभंजलम् । गृहाणविश्व
 जननिमहापष्ठ्यैः । उपायनम्-सुवर्णराजतंद्रव्यंचित्तशाठ्य विवर्जि-
 तम् । उपायनीभूतमिदं गृहाणजगदंविके । ततोदीपाष्टकंपष्ठीदेव्या
 अग्रतोदीपयेत् ॐ घृतेनपूरितान्दीपानष्टवार्तिसमन्वितान् । दीप-
 यामि हितार्थतेमहापष्ठिनमोऽस्तुते । ततो गन्धाक्षतादिभिः पूज-
 यित्वा द्वारप्रदेशेवटकाष्टकमालां अजापुत्रस्यगलेवध्वा भूतादिवि-
 द्रावणार्थं कर्णताडनेन पुनः पुनः शब्दंकारयेत् । ततोनीराजनं
 कुर्यात्-ॐ अन्तस्तेजोवहिस्तेजएकीकृत्यामितप्रभम् । आरातिक
 मिदंदेवि गृहाणपरमेश्वरी । नमस्कारः ॐ जयदेवि जगन्मात
 र्जगदानन्दकारिणि । प्रसीदमम कल्याणि महापष्ठिनमोऽस्तुते ।
 ततः पुष्पान्गृहीत्वाप्रार्थेत्-देवानांचऋषीणांच मनुष्याणांच वत्स
 ले । असुंममसुतरंज पष्ठिदेविनमोऽस्तुते । पुरादेवैः पूजितासि
 ब्रह्मविष्णु शिवादिभिः । आवाभ्यामपि देवित्वंपूज्यसे भक्तिपूर्व-
 कम् । देहस्यबालकस्यायुर्दार्घ्यतुभ्यंनमोऽस्तुते । ततः पिता बालक-
 स्यपष्ठीदेव्याः पुरःस्थितः । वध्वांजलिर्भक्तिनम्रवाक्यमुच्चारयेदि-
 दम् । ॐ त्वंदेवमातादितिरधिजातवं गौरीत्वमेवासिघृतिः क्षमा
 त्यम् । कीर्तिः समृद्धिर्भुवनस्यधात्रीत्वमेवदेविप्रणतोऽस्मितुभ्यम्

त्वं सृष्टिराद्याभृजसिप्रजात्वम् । स्थितिस्तथैताः सकलाविभक्तिः ।
 त्वामेववाचामनसा च कर्मणा समर्चयाम्यस्तु शिशुरिचरायुः ।
 स्वस्तिमेऽस्तु गृहेनित्यं त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि । पुत्रोत्सवमहंनित्यं
 पश्येमं त्वदनुग्रहात् । ततोऽर्भकस्यजननीप्रार्थयेत् । तवप्रसादात्तन-
 स्यवकृत्रं ह्ये मयादेवि नमोऽस्तुतुभ्यम् । सौभाग्यमारोग्यमभीष्टसि
 द्विदेहिप्रजात्वं चिरजीवितं च । गौर्याः पुत्रो यथास्कन्दः शिशुः संर-
 क्षितस्त्वया । तथाममाप्ययं बालोरक्ष्यतां पण्डिकेनमः । पण्डिदेवि
 नमस्तुभ्यं सूतिका गृहवासिनि । पूजितासिमया भक्त्या सवालां
 रक्षसूतिकाम् । अथ तद्वान्धवाः सर्वे स्वस्तिवाक्यपुरःसरम् सवालां
 कामयंतोऽर्भकस्यायुः प्रार्थयन्तः सयोपितः सपुष्पाक्षतहस्ता सर्वे
 एकस्वरेण लूयुर्वारत्रयं ॐ स्वस्ति ॥३॥ मन्त्रः—ॐ जननी सर्व
 सौख्यानां बद्धिनी कुलसम्पादाम् । साधनी सर्वसिद्धीनां जन्मदेत्वां
 नतावयम् । पुनः पिताप्रार्थयेत्—जननीं सर्वभूतानां बालानां च विशे-
 षतः । नारायणि स्वरूपेण बालं मे रक्ष सर्वतः । शक्तिस्त्वं सर्वदेवानां
 लोकानां हितकारिणि । मातृवद्रक्ष मे बालं महापण्डिनमोऽस्तुते । अमुं
 मम कुलोत्पन्नं रक्ष त्वं देवि बालकम् । पूजितासिमहाभागे चिरंजी-
 वतु बालकः । रक्षोभूतपिशाचेषु डाकिनीशाकिनीषु च । मातेवरक्ष मे
 बालं पन्नगश्वापदेषु च । त्वमेव वैष्णवी देवी ब्रह्माणी च व्यवस्थिता
 रुद्रशक्ति समाख्याता महापण्डिनमोऽस्तुते । धात्रीत्वं कार्तिकेय
 स्य स्त्रीरूपामदनस्य च । त्वत्प्रसादधिघ्नेन जिरंजीवतु मे सुतः
 ततो भूमौ गोमयेनोपलिप्यमातुः सकाशाद्बालकमानाय्य बालकं
 यत्नेन तत्र निधाय पिता हस्तेन स्पृश्यात् त्वं वैदोक्तां रक्षां पठेत् ।
 ॐ कृत्यानां परिक्षार्थं तथा रक्षोभयस्य च । रक्षा कर्म करिष्यामि
 ब्रह्मातदनु मन्यताम् । नागः पिशाचागन्धर्वाः पितरोयक्षराक्षसाः
 पृथिव्यामन्तरिक्षे च ये चरन्ति निशाचराः । विदित्तु दिक्षुषे चान्येया-
 न्तुत्वांतेनमस्कृताः । पान्तुत्वाभृपयो ब्रह्मादिव्याराजर्षयस्तथा ।
 पर्वतारक्षैव नद्यश्च तथा सर्वे च सागराः । जग्नीरक्षतुते जिह्वांप्राणा-
 न् रक्षन्तु वायवः । सोमोऽयानमपानन्तु पर्जन्यः परिरक्षतु । उदानं-

विद्युतःपान्तुसमानंस्तनयित्नवः । वल्लभिस्तेवलंपातुवाचंवाच-
 स्पतिस्तथा । कामंतेपान्तुगन्धर्वाःसत्यमिन्द्रोऽभिरक्षतु । प्रजांच
 वरुणोराजासमुद्रोनाभिमण्डलम् । चक्षुःसूर्योदिशःश्रोत्रंचन्द्रमा-
 वतुतेमनः । रेतस्तेपान्त्वमात्रापोरोमाण्यौपधयस्तथा । आकाशं
 तेनिशापातुदेहंतवयसुन्धरा । वैश्वानरस्तवजिरःपातुविष्णुःपरा-
 क्रमम् । पौरुषंपुरुषश्रेष्ठोब्रह्मापातुभ्रुवौतव । देहंदेहविशेषेणतवपातु-
 वसुंधरा । एतैर्वेदात्मकैर्मन्त्रैः कृत्वाव्याधिविनाशिनी । मयैवं कृत-
 रक्षस्त्वंदीर्घमायुरवाप्नुहि । ब्रवीतुप्यस्तितेब्रह्माविष्णुरुद्रौनधै-
 वच । स्वस्तिवायुस्तथासूर्यः स्वस्तिदेवामहोरगाः । नारदश्चतथा-
 स्वस्ति कुर्वन्त्वायुःसदैवहि । इतिरक्षांपठित्वाजातकं वस्त्रभूषणा-
 दिभिविभूष्यस्वाकिनिधायसपत्नीकमाचार्यसम्पूज्यदक्षिणा संक-
 ल्पं विदध्यात्—ग्रदेत्यादिदेशकालौ, संकीर्त्यामुकराशिरमुको
 ऽहममुकराशेःकुमारस्य कन्याया वा करिष्यमाण पष्ठीमहोत्सव-
 कर्मणः साद्गुण्यार्थंजातस्य दीर्घायुरारोग्यावाप्तयेपष्ठीदेव्याः
 प्रीतयेचेमां दक्षिणाममुकगोत्रायसपत्नीकाय तुभ्यमहंदास्ये ।
 ॐ तत्सन्नमम । अथपूर्वांचचारित०अमुकोऽहंपूर्वपूजित देवतानां-
 साद्गुण्यार्थं न्यूनातिरिक्तदोषपरिहाराय चेमांभूयसींदक्षिणां
 नानानामगोत्रेभ्यो विप्रेभ्योनटनर्तकगायकेभ्योविभज्यचदास्ये ।
 तथाचब्राह्मणान्भोजयिष्ये । (कतिचिद्देशेषुपष्ठीदेव्या यामचतु-
 चतुष्टयपूजामपिकुर्वन्ति । धनुर्वाणेनपोटलिकायां राहुवेधनंचकुर्व-
 न्ति वस्त्रभूषणधारणकाले बालाकस्यनासरंध्रयोर्नस्यंदत्वाच्छिकां
 कारयन्तिलौकिकाप्रथेया) ततःसूतिकागारे सुराहिकृतिनिर्गुडी
 वचाकुष्ठंचसर्षपाः । विल्वपत्रमयोधूपः कुमारायुःप्रपोषकः । एवं-
 गवाज्येनसहधूपंकृत्वायजमानकुमारयोर्महानीराजनं विधाय
 बालकंमातुरंकैसमर्पयेत् । ततोद्वारप्रदेशेपूर्वोक्तल्ल्यांगरक्षकाश्चस्था-
 पयित्वा रात्रौ जगरणं कुर्यात् । प्रभातेजातेचोत्तरांगपूजनंविधाय
 देवान् विसृज्यमंगलतिलाकाशीर्वादादिकंच गृह्णीयात् । ततो
 ब्राह्मणेभ्योनटनर्तकादिभ्योदक्षिणापारितोषिकंचदद्यात् । इतिप०

अथ नामकरणसूत्र व्याख्या ।



दशम्यामुत्थाप्य ब्राह्मणान्भोजयित्वा पितानामकरोति । १ । प्रसवदिनमारभ्यदशम्यां रज्या-
मतीतायामेकदशेऽग्नि सूतिकागृहस्मृतिना—उत्थाप्य धाद्व्यतिक्रमेण त्रीन् ब्राह्मणान्भोजयित्वा
पिता बुभुक्षुस्य नाम सज्ञां संवत्सहाराधे—ररोति 'अस्तिन्नपि संस्कारे त्रिपुरेयोत्सर्गात्तृकृतं इह गितु-
र्भ्रष्टादन्यन्नपि नियमोऽगम्यते । "मदनरत्ने नारदीये"—सूतकां ते नामकर्म विवेकं स्तुक्तो-
चितं ॥ गोभिल सूत्रे —(दशरात्रे व्युष्टे नाम करणम्) याग्यवल्क्यः—अह-येन दशे नाम ॥
मदनरत्ने—द्वादशे दशमे वापि जन्मतोपि त्रयोदशे षोडशे विंशतीचेव द्वाविंशे—वर्णतः क्रमात् ॥
कारिकायाम्—एक दशे द्वादशेवा मासे पूर्णं मकारे ॥ अष्टादशेऽहहृदि तथा वदत्यग्रे मनीषिणः
शतरात्रे व्यतीते वा पूर्णं संक्रमोश्चत ॥ "उद्योतिर्निवन्धे गमं"—अमाङ्कानि विष्टयादौ सनिका-
लेपि नाचरेत् ॥ सु व्यकृ ले नामकरणाक्षकी स्मृत्यरोक्त कालमह कारिकायां—मुख्यकले यदाना-
मवेय कर्तुं न शक्यते ॥ उक्तानामन्यतरस्मिन्दिने स्यात्तु गुणान्युते ॥ कश्यप उक्तकाले-प्रकर्तव्या
द्विजानामखिला क्रिया । अतीतेषु च कालेषु कर्तव्याश्चोत्तरायणे ॥ सुरेभ्येऽप्यसुरेभ्ये वा न स्तमेन
च वार्द्धके । शुभ लग्ने शुभरो च शुभेऽह्नि शुभकारे । चन्द्रतारः पलोपेते नैधनोदय वर्जिते ।
पूर्वाह्ने क्षिप्र नक्षत्रे चस्थिरमृदुदुषु ॥ नात्रमङ्गल घे पेशच रहस्यं वक्षिण ध्रुवौ । प्रयोजनं च हर्यते
नामाखिलस्य व्यपहार हेतुः शुभावह कर्मभुभा यहेतु । नाम्नेन कर्त्तुं लभते मनुष्यस्तन प्रशस्तं खलु
नामकर्म ॥ द्वारक्षर चतुर्धरं वा घोत्रदाय-तरन्त थं दीर्घमिच्छानं कृत कुर्वान्नदिनाम् ॥ द्वेऽजरे
यस्य द्वयनर अरि-प्रक्षरणि यस्य तच्चतुरवरमनयोत्रिकल्प । किंच धोपवदादि धोपवदाक्षमादी
यस्यतनाम्नस्तदुधोषदादि । धोपवन्ति चाक्षरणि—घघट । जमज । डण । दधन । वभमह ।
इ येतानि—अन्तर्गतस्मन्तर्मध्येऽन्तस्था यस्य तरुतरुतस्वम् । अन्तस्थाः—यक्लाः । दीर्घा-
भिनिष्टं दीर्घमहस्वम् । अभिनिष्ठम् अन्तं यस्य तद्दीर्घाभिनिष्ठानम् । कृतं कृ-प्रत्ययान्तं कुमारस्य
नामधेयं कुर्यात् । पक्षान्तरे कृतम् पितामहादि नाम तरकुर्यात्—। न तद्धितं तद्धितप्रत्ययान्तं न
कुर्यात्—(अनुजाक्षरमकारानुषं स्त्रियै तद्धितम् । ३) स्त्रिय नाम्नि विधेयमाह-अनुजाक्षरमनुजानि
विपमाणि इषान्द्विचक्षरणि यस्मिनाम्नि तदनुजाक्षरम् । यावाराण्तमाकारोऽन्ते यस्य तदाकारान्तं
तद्धितं तद्धितप्रत्ययान्तं स्त्रियै स्थिया नाम कुर्यादित्युपसंग । (शर्मब्राह्मणस्य वर्मं क्षत्रियस्य
गुप्तेति वैश्यस्य ४) ब्राह्मणस्य त्रिस्य पूर्वोक्तं लक्षणं नामा ते शर्मति । क्षत्रियस्य वर्मेति
वेश्यस्य शुनोति पदम् । तदुक्तंशंखेन-कुलदेवता न क्षत्रादि मासबंधं नाम पिता वा कुर्याद्-
न्योऽपि वा कुलशुद्ध-। अत्रकेचिन्-जन्मनाम तु गोपयेत् ॥ इति सरखाज्जन्मनक्षत्रसंबन्धिनाम

शुभत सस्त्राप्य व्यवहारार्थमन्य न म कुय दिलाहु । मासनामानि वशिष्टेनोक्तानि- वृणोऽनन्तो
 ऽन्युतश्चक्री वैकुण्ठोऽन जन देन उपे द्रो यज्ञपुत्रा चापुत्रस्तथा हरि । योगोत्त पुण्डरीकोमा-
 सनामाप्यनुकमात् । अत्र यथाच र चैत्र दिमार्गशीपदिशोत्तम । इति नम० व्याख्या ॥

॥ अथनामकरणपद्धति ॥

अत्रपारस्करसूत्रमादौनिर्दिष्टम्—सूतक्रान्ते नामकर्मविधेयमिति-
 नारदीये ॥ तत्रसूतकं दशाहमेव सर्ववर्णानां-लोकाचाराद् भवति ।
 अत्रपक्षे सर्ववर्णानामेकादशेहनि-एवनामकर्मभवति । तस्येयं
 पद्धतिः । ततोनामकर्मदिनेसवालांसूतिकांसंस्नाप्याहतेवाससी
 परिधायपंचगव्येनाभिपिच्यपावयित्वाच सूतिकाग्रहाद्वालंमा-
 तुरंके—उत्थाप्याग्रतः पंचवाद्यपुरः सरंजलपूर्णकुंभं सौभाग्य-
 वत्यावाकन्यायाः शिरसिधृत्वावालंपूजास्थलेआनीय ततःपितावा-
 न्यःकार्यकर्तापूर्वोक्तक्रमेणगणेशादि पंचागदेवतानांपूजनं कुर्यात् ॥
 संकल्पः अचेत्यादि० अमुकशर्माहं ममास्य जातस्य पुत्रस्य पौत्रस्य
 वा वीजगर्भसमुद्भवैनो निर्वहणाय करिष्यमाणनामकर्मकर्मणि
 निर्विघ्नतासिध्यर्थं गणेशादि पंचाग देवतानां पूजनं करिष्ये ।
 इतिपूजयित्वा—ततोहोमकर्मवेदीविधायार्धवरणम्-अचेत्यादि०
 अमुकोऽहममुकगणेशः पुत्रस्य कन्याया वा करिष्यमाण नामकरण
 कर्मणि कर्मकर्तुमाचार्यत्वेनत्वामहंवृणे—संप्राथम्यंचकुशकण्डिका
 विधिकुर्यात्—त्रिभिःकुशैर्हस्तमात्रमितांभूमिंपरिसमुद्दगोमयो-
 दकेनउपलिप्यस्फेनवासुवेणोदकसांस्थाः स्थण्डिलप्रमाणास्तिस्रो-
 रेखाः कृत्वाअनामिकांगुप्राभ्यां लेखाभ्यः पांशुधृत्यमणिकां
 अद्भिरभिपिच्यतेजसेपात्रेऽग्निमात्माभिसुखंस्थापयित्वा—अग्ने-
 र्दक्षिणतोब्रह्मासनमास्तीर्यकुशैस्तीर्त्वावरणद्रव्यंब्राह्मणंचसम्पूज्य
 अयेहकर्तव्यनामकरणाख्य संस्कारकर्मणि प्रायश्चित्ताख्यपंचग
 व्यहोमेब्रह्मकर्मकर्तुंमेभिर्वरणद्रव्यैर्ब्रह्मत्वेनत्वामहंवृणे—इतिब्रह्मा-
 णंकृत्वासंप्राथम्यंच । वृत्तोऽस्मीतिप्रत्युक्तिः । यथाविहितं कर्मकुरु,

करवाणितिब्रह्माभूयात्-। ततोऽग्नेःप्रदक्षिणांविधाय कल्पिताश-
 नेउपवेशयित्वाकर्मकुरु, कवाणीतिब्रह्मणःप्रत्युक्तिः । तत्रतदंग-
 सेया त्रीन्ब्राह्मणान्भोजयिष्येऽथवाभोजनपर्याप्तमामान्वातन्नि-
 प्कर्याभूतद्रव्यदास्ये-। ततःप्रणीतापात्रंपुरतः कृत्वाङ्गिरापूर्ध्व-
 कुशैराच्छाद्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरिनिदध्यात् । वर्हिमुष्टिमादाये-
 शानादिप्रागग्रैर्वाह्नुदक्स्संस्थमग्नेःपरिरतरणंकृत्वाअग्नेः पश्चिमतः
 पवित्रछेदनानित्रीणिकुशतरुणि पवित्रकरणार्थसाग्रमनन्तगर्भेद्वे-
 कुशतरुणे, प्रोक्षणीपात्रम्, आज्यस्थाली, पंचगव्यपात्रम्, सम्मार्ज-
 नकुशास्त्रयः, उपयमनकुशाःसप्तः, प्रादेशमितपालाशसमिध-
 स्तिस्त्रयः, स्त्रुवः, आज्यं, पूर्णपात्रम्, क्रमेणैतान्यासदनीयानि
 यथापूर्वम् । ततःपवित्रछेदनकुशैर्द्वंपवित्रेच्छित्वा प्रोक्षणीपात्रं
 प्रणितासन्निधौनिधाय प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य पवित्राभ्यांप्रणीतो-
 दकमुत्पूय पवित्रेप्रोक्षणीपुनिधाय दक्षिणेनहस्तेनप्रोक्षणीपात्र-
 मुत्थाप्य सव्येकरेधृत्वा तदुदकं मध्यमानामिकाभ्यांमध्यपर्वाभ्या
 मुच्चाल्य प्रणीतोदकेन पुनःप्रोक्ष्यचाज्यस्थाल्यादीनि पूर्णपात्र-
 पर्धन्तानिवस्तृनिप्रोक्षणीजलेन क्रमेणैकैकशः पवित्राभ्यांसंप्रोक्ष्य
 प्रणीताग्न्योरन्तरालेप्रोक्षणीपात्रेनिदध्यात् । तत्राज्यस्थाल्या-
 माज्यंनिरूप्यतत्रैवाग्नौआज्यंब्रह्माधिभ्रयति तत्रज्वलदुल्मुकंप्र-
 दक्षिणमाज्यस्य समन्ताद्भ्रामयित्वादक्षिणेनहस्तेनप्रांचमधोमुखं-
 श्रुवमग्नौ तापयित्वा सव्येपाणौकृत्वादक्षिणेनहस्तेनसम्मार्जन
 कुशाग्रैर्मूलतोऽग्रपर्यन्तंमूलैरग्रमारभ्याधस्थान्मूलपर्यन्तंप्रणीतोदके
 नाभिषिच्यपुनः प्रतप्यदक्षिणतोनिदध्यात् । आज्यमुत्थाप्यतत्रा-
 ज्यमग्नेः पश्चादानीयपूर्वपवित्राभ्यामुत्पूय-अवेक्ष्यचतस्मादपद्र-
 व्यनिरसनंकृत्वा पवित्राभ्यांप्रोक्षणीश्चपूर्ध्ववदुत्पूय-उपयमन-
 कुशानादाय सव्येकृत्वासमिधोऽभ्याधायोतिष्ठन् तिम्रोधृताक्ताः
 समिधस्तृष्णीमग्नौप्रक्षिपेत् । ततःसपवित्रेणप्रोक्ष्युदकेनदक्षिण
 चुलकेनाग्निमीशानादि-उ तरपर्यन्तंसम्प्रोक्ष्यपवित्रेप्रणितायांनि-
 दध्यात् । संव्रवधारणार्थंप्रोक्षणीपात्रंप्रणीताग्न्योरन्तरालेनिद-

ध्यात् । इतिपर्शुक्षणान्तकर्मसमाप्यपूर्वांक्तविधिनापंचगव्यंकृत्वा
 (अत्रबहुपुस्तकेपुनामकरणकर्मणिपार्थिवाग्नेःपूजनमस्ति) पार्थि-
 वोनामकरणे) विधानपरिजातोक्त्यात्) परंचपारस्कराचार्येण-
 नामकर्मणिहोमानुदेशात् । कतमोऽग्निर्ग्राह इतिद्वेधीभूतेकिंत्वत्र
 सूतिकाशुद्धयर्थं पूर्वाचार्यैःपञ्चगव्य पानंहोमंचैवविहितं-इत्याकां-
 क्षायां कस्याग्नेःस्थापनंपूजनंचयथेष्टम् । इति । (अत्रपंचगव्य-
 होमपानयोस्तुसूतिकायाःप्रायश्चित्त शुद्धयर्थनिमित्तकविधिरस्तु
 (प्रायश्चित्तेविधिशैव) इतिवचनात् । अत्रविधिनामाग्नेरावाहनं
 पूजनंचयथेष्टंनतुपार्थिवाग्नेः ॥ विद्वांसोविचारयन्तु) ॐभूर्भुवः
 स्वः, विधिनामाग्ने-इहागच्छेदितिष्टसुप्रतिष्ठितोवरदोभव ॥ ॐ
 तवेवाग्नि स्तदादित्यस्तद्वायुस्तदुचन्द्रमाः । तदेवशुक्रंतद्व्रह्मताऽ-
 आपःसप्रजापतिः ॥ ॐ विधिनामाग्नयेनमः । इतिमन्त्रेणपाद्या-
 दिनीराजनान्तंसम्पूज्य दक्षिणजान्वाकुंच्यब्रह्मणान्वारब्धोजुहु-
 यात् । ॐ प्रजापतयेस्वाहा, इदंप्रजापतयेनमम । मनसा—ॐ
 इन्द्रायस्वाहा-इदमिन्द्राय० । ॐ अग्नयेस्वाहा-इदमग्नये० । ॐ
 सोमायस्वाहा-इदंसोमाय० । इत्याधारावाज्यभागौचहुत्वा—
 अन्वारंभंत्यक्त्वा सप्ताधिककुशपिंजूलिना पंचगव्यहोमंकुर्वात् ।
 तन्मन्त्राः—ॐ इरावतीत्यस्य वसिष्ठमृषिस्त्रिष्टुब्धुन्दो विष्णु-
 देवतापंचगव्यहोमे विनियोगः । ॐ इरायतीधेनुमतीहिभृतं
 सूयवसिनीमनवेदशस्या । व्यस्कभारोदसी विष्णवेतेदाधर्तं पृथि-
 वीमभितोमयूरवैःस्वाहा । इदंविष्णवेनमम । ॐ इदंविष्णुरित्यस्य
 मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीलुन्दो विष्णुर्देवतापंचगव्यहोमेविनियोगः ।
 ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपाँसुरेस्वाहा ।
 इदंविष्णवेनमम । ॐ मानस्तोकेइत्यस्यपरमेष्ठीमृषिर्जगतीलुन्दो
 रुद्रोदेवता पंचगव्यहोमे विनियोगः । ॐ मानस्तोके तनयेमान
 ऽआयुपिमानो गोपुमानोऽअश्वेपुरीरिपः । मानोव्वीरान्द्रभामि
 नोवधीर्ऋषिन्तः सदमित्वाह्वामहे स्वाहा । इदंरुद्रायनममः ।
 अत्रप्रणीतोदकं बालकस्योपर्यपिअभिर्पिंचयेत् । ॐ शन्नोदेवी-

रित्यस्यदध्यङ्गाधर्वण ऋषिर्गायत्रीछन्दः सवितादेता पंगव्यहोमे विनियोगः । ३० शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये । संद्यो रभिश्चवन्तुनः स्वाहा इदमद्भ्योनमम । ३० तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सवितादेता पंचगव्यहोमे विनियोगः । ३० भूर्भुवःस्वः, तत्सवितु० स्वाहा । इदंॐसवित्रेनमम । ३० प्रजापतेनत्वेत्यस्य हिरण्यगर्भ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः प्रजापति देवतापंचगव्यहोमे विनियोगः । ३० प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो- विवश्वारूपाणिपरितावभूव । यत्कामास्तेजुहुगस्तन्नोऽश्रस्तुव्वय ॐश्यामपतयोरयीणांॐस्वाहा । इदंप्रजापतयेनमम । इतिपंचगव्य होमंकृत्वा ब्रह्मणान्वारब्धभूरादिनचाहुतिपर्यन्तंजुहुयात् । ३० भूरादिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि- अग्निवायुसूर्यादेवताःप्रायश्चित्तहोमे विनियोगः । ३० भूःस्वाहा इदमग्रयेनमम । ३० भुवःस्वाहा इदंवायवे० । ३० स्वःस्वाहा इदं सूर्याय० । ३० त्वन्नोअग्ने इतिचामदेवऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्नि- वरुणौ देवतेप्रायश्चित्तहोमे विनियोगः । ३० त्वन्नोअग्नेव्वरुण- स्यविद्वानदेवस्यहेडोऽश्रवयासिसीष्टाः । यजिष्टोवन्हितमः शोशु- चानोविवश्वाद्देवाॐसिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां नमम । ३० सत्वन्नोऽअग्ने इतिचामदेवऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्नि- देवताप्रायश्चित्तहोमेविनि० । ३० सत्वन्नोऽअग्नेऽअवमोभवोती नेदिष्टोऽअस्याऽउपसौ व्युष्टौ । अवयद्वनोव्वरुणॐ रराणो व्वीहिमृडीकॐसुहवोनऽग्निस्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम ॥ ॐ अयाश्चाग्नेऽइति प्रजापतिर्ऋषि विराट् छन्दोऽग्निदेवता प्राय- श्चित्त होमेविनियोगः । ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नमिशस्तिवाश्च सत्यमित्त्व मयाऽअसि । अयानो यज्ञं व्वहास्ययानोधेहि भेषज ॐस्वाहा इदमग्नये नमम । ३० येतेशतमिति शुनः शोफ ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणः सविता विष्णु विश्वेदेवामरुतः स्वर्काश्चदेवाः सर्व प्रायश्चित्त होमेविनियोगः । ३० येते शतंवरुणं येसहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नोऽअद्यसवितोत विष्णु-

विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमः । ॐ उदुत्तममिति
 शुनः शोफ ऋषि स्त्रिष्टुच्छन्दो वरुणो देवता प्रायश्चित्तहोमे विनि-
 योगः । ॐ उदुत्तमं वरुणपाश मस्मदवा धमं त्विमध्यमं श्र-
 थाय । अथाव्ययमादित्य व्रते तवा नागसोऽदितये स्याम-स्वाहा-
 इदं वरुणादित्याभ्यां नमः । इत्यन्वारब्धं कृत्वा पंचगव्यमिच्छितेन
 घृतेन स्विष्ट कृद्धोमं कुर्यात् । ॐ प्रजापतये स्वाहा-इदं प्रजापतये
 नमः । ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते नमः । ततः
 संस्रवं प्राश्याचम्य अद्येत्यादि० अमुकोऽहं ममुकराशोर्बालकस्य
 नामकरण निमित्तक होमकर्मणः सांगफलावापतये इदं पूर्णपात्रं-
 प्रजापतिदेवतममुक शर्मणे ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ तत्स-
 न्नमः ॥ ॐ स्वस्तीति ब्रह्मा इयात् । ॐ सुमित्रियान मंत्रस्य
 ध्यं गाथर्वण ऋषी रापो देवता नृच्छृत्प्राजापत्या गयत्री छन्दः
 शिरः प्रोक्षण प्रणीता विमोके विनियोगः । ॐ सुमित्रियानऽ-
 थापऽश्रौषधयः सन्तु । इति पवित्राभ्यां प्रणीता जलेन शिरः
 संप्रोक्ष्य । ॐ दुर्मित्रियारतस्मै सन्तु योस्मान्द्वेष्टियं च वयं द्विष्मः ॥
 इति प्रणीता जलं ईशान्यां विमोकं कुर्यात् । ॐ देवागात्विति
 अत्रि ऋषि रुषिणच्छन्दो मनसस्पतिर्देवता वहिर् होमे विनि-
 योगः । ॐ देवा गातु विदो गातुं वित्वा गातुमित मनस्पत इमं
 देव यज्जं स्वाहा वातेधाः स्वाहा इति वहिर् होमः पूर्णाहुतिस्तु
 न भवति । ततो हुतशेषं पंचगव्यं सूतिकायै पावयित्वा, सूतिका
 गृहं च तेनैव पंचगव्येन शुद्धयर्थं संप्रोक्ष्य, ततः सूतिकां तत्रा
 नयति सा च वालकमंके कृत्वा अग्नेः प्रदक्षिणां कृत्वा भूर्वामे
 उपविशेत् । आचम्य गणेशादीन्नमस्कृत्य पुष्पांजलिदत्त्वा ततः
 संलग्ने—आचार्यो वा कुमारस्य जनकः पूर्वोक्त प्रकारेण पंचना-
 मानि—अष्टगन्ध द्रव्येणाश्वत्थपत्रेषु वा श्वेतवस्त्रे वक्ष्यमाण प्रमा
 णेन सुवर्णसलाकया लिखेत् । (प्रमाणानिसूत्रव्याख्यायां निर्दि-
 ष्टानि) तदनुसारादादौ कुलदेवता संबन्धं प्रथमं नाम यथा

“वदरीशदत्त शर्मा” ? द्वितीयं जन्ममास देवताक संबन्धं नाम यथा वा तन्मासनामचत् यथा “माधवानन्द शर्मा चैत्रादिः” तृतीयं नाक्षत्र नाम “अमरदेव शर्मा” चतुर्थं नाम घोषवदादीति गृह्यसूत्रानुसारतो हकारं वर्गं तृतीयचतुर्थं यरलव मध्यं चतुरक्षरं तद्धितान्तरहितं कृदन्तान्तं-यथा “जीवानन्द शर्मा” पंचमं नाम स्वकुलानुसाराद्द्व्यावहारिकं कुर्यात्-यथा “रामकृष्ण शर्मा” । एवं पंच नामानि बालकस्य लिखित्वातंडुलपूर्णं पात्रेनिधाय-३० एतन्ते० ॥ ३० भूर्भुवः स्वः, बालकस्य नामानि सुप्रतिष्ठितानि भवन्तु-इतिप्रतिष्ठाप्य । ततः आदित्यादि नवग्रहाणां सर्वेषां दानानि क्रमशः कुर्यात् । ततो लग्न दानानि कृत्वा ततो लिखित नामानि सद्रव्यं शंख मध्ये धृत्वा स्वष्टदेवं प्रणम्य “पिता स्वयं वा आचार्यः आवयेत् । ततः शंखंस्व मुखे कृत्वा बालकस्य दक्षिण कर्णसमीपे शंखाग्रभागं नीत्वा तदग्रद्वाराभो कुमार ? त्वं अमुक शर्मा, अमुक वर्मा, अमुक गुप्त इति नामासि दीर्घायुर्भव ततो नामकर्ता नाम आवयित्वा ब्राह्मणान्प्रतिब्रूयात् । भो ब्राह्मणाः ? अमुकनामायं भवन्तोऽभिवादयते । आयुष्मान्भव-अमुक । इति ब्राह्मणा वदेयुः । इति क्रमेण पंचनामानि आवयेत् । शर्मान्तं विप्रस्य वर्मान्तं क्षत्रियस्य, गुप्तान्तं वैश्यस्य । दासान्तं शूद्रस्य नाम कुर्यात् । कुमार्या अपि नामकरणं-आकारान्तं विपमाक्षर-धृतं तद्धितान्तं नामसमन्त्रकं कुर्यात् । तत आचार्याय दक्षिणा-दानम् अथेत्यादि-अमुकराशे रमुकबालकस्य वैजिक गार्भिक, दुरितोपशान्तये नाम कर्माख्य संस्कार कर्मणः साद् गुण्यार्थं माचार्यायेमां दक्षिणां तथा च न्यूनातिरिक्त दोषपरिहारार्थं नाना नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नटनर्तक गायकादिभ्यश्च विभज्य दास्ये । ॐ तत्सन्नमम । तथा च ब्राह्मणान्भोजयिष्ये । ततोऽग्ने-रुत्तरांग पूजनं कृत्वा ध्यायुषं कृत्वा स्थापितदेवता अग्निं च विसृज्य कलशजलेन मंत्राभिषेकादिकं कुर्यात् ॥ इति नाम-करण पद्धतिः ।

अथ खट्वारोहणम् ।

इदानीमेव नामकरणोत्तरं । खट्वारोहस्तु कर्तव्यो दशमे द्वादशेऽपि वा । इतिप्रयोगपारिजातके ज्योतिर्निबन्धे । आन्दोला शयेनपुंसो द्वादशे दिवसे शुभः । त्रयोदशस्तु कन्यायां न नक्षत्र विचारणा । गदाधर पारस्करसूत्र द्वितीय भाष्य कारेणनामकरण दिने षोडशदिने द्वात्रिंशद्दिनेऽपि ज्योतिर्विदादिष्टेमुहुर्तेऽप्युक्तः । ततः श्वेष्ट देवता समीपंगत्वा शिशुं प्रणामयित्वा उपायनं समर्प्य ततो हरिद्रारंजित पर्यंक सनीषे शिशुमानीयमाता वा सौभाग्य-वती स्त्री हस्तेषुष्पं निधायशेषशायिनंप्रार्थयेत् । ३० शेष शायि-न्यथा शेषशय्यायां सुग्वितोसित्वम् । तथायं मम बालोऽपि शय्यायां सुग्वमाप्नुयान् । इत्युक्त्वा बालकंपूर्वं शिरसं शय्यायां संस्थाप्य यज्ञोदां प्रार्थयेत्—मातर्यगोदेहि त्वया श्रीकृष्णपरि-रक्षितः । तथा त्वंमम बालं च सर्वदा रक्ष दुःखतः । इतिखट्वां चालयेत् । इतिखट्वारोहणम्—

अथ निष्क्रमणसूत्रव्याख्या—

(चतुर्थमासि निष्क्रमणिका ॥१॥) कुमारस्य जन्मचतुर्थमासि निष्क्रमणिका गृह्णाद्वर्तिनिष्क्रमणं करोति पिता —(सूर्यमुदीक्षय-निगच्छचुरिनि ६) अथ तच्छर्तुर्देवहितम्, इत्यादिनाभ्यश्चशरदः शानात् । इत्यन्तेनमंत्रेण सूर्यभगवन्तं रश्मिमालिनमुदीक्षयति कुमारंप्रदर्शयति पिता । ज्योतिर्निबन्धे—तृतीये वा चतुर्थे वा मासि निष्क्रमणं भवेत् । तनस्तृतीये कर्तव्यं मासिसूर्यस्यदर्शनम् । विष्णु-धर्मोत्तरे संस्कारप्रकरणे—मासे चतुर्थे कर्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणं गृह्णात् । द्विगीशानां दिशांशैव तथाचन्द्राकयोर्द्विजः । पूजनं वासुदेवस्य गग-नस्य च कारयेत् ॥ भविष्योत्तरे—द्वादशेऽहनिराजेन्द्र शिशोर्निष्क्र-मणं गृह्णात् । इत्यादि बहुमनसम्मत्यापकृष्य विशेषतः शीतव्याप्त देशेषु प्रायः समाचाराच्चनामकर्म दिवसएवसूर्यायलोकनं चान-रन्नीनिदेशाचारादि बहुमनसम्मतिः ।

अथ सूर्यावलोकननिष्क्रमणपद्धतिः

ततो नाम कर्मदिनेवा चतुर्थमासि चन्द्रतारानुकूले दिनेऽलंकृतं शिशुं सूतिकां च सूर्यमुदीक्षयति । तत्रादौ गृहांगणे पूर्वस्यां दिशि भूमौ गोमयेनोपलिप्य तत्र यवैस्तद्भुलैर्वाऽष्टदलं कमलं विलिख्य सिन्दूरेण प्रपूर्य ततः गन्धपुष्पाक्षत धूपदीप नैवेद्यादि पूजासामग्रीं च सम्पाद्य, स्वासन उपविश्या च म्यप्राणायामत्रयं विधाय पिताऽन्यो वा संकल्पं कुर्यात् । अद्येत्यादि० अमुकशर्माहममुकराशेर-मुकशर्मणोऽस्य बालकस्य करिष्यमाण गृहान्निष्क्रमणकर्मणि सूर्यावलोकन विधौ सर्वारिष्टनिर्वृत्तये कलशे दिगीशानां दिशां चन्द्रस्य सूर्यस्य वासुदेवस्य गगनस्य च पूर्वागतया पूजनं करिष्ये । तत्रादावष्टदले कलशपूजोक्त विधिना कलशं संस्थाप्य सम्पूज्य च ध्यायेत् । आगच्छन्तु महाभागादिगीशाद्यादिवौकसः । समाविशन्तु कलशेरक्षार्थं बालकस्य मे । ३० एतन्ते० ३० भूभूवः स्वः, दिगीशादि गगनपर्यन्ता देवताः अस्मिन्कलशं समागच्छन्तु तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिना वरदा भवन्तु, इति प्रतिष्ठाप्य । अक्षतैः कलशे वक्ष्यमाण नाममन्त्रैः—३० दिगिशेभ्यो नमः ३० दिग्भ्यो नमः ३० चन्द्राय नमः ३० सूर्याय नमः ३० वासुदेवाय नमः । ३० गगनाय नमः । इत्यावाह्यपाद्यादिभिः सम्पूज्य च प्रार्थयेत्—अप्रमत्तं प्रमत्तं वा दिवारात्रमथापि वा रक्षन्तु सततं सर्वे देवाः शक्रपुरोगमा । इति संप्रार्थ्य अथ च शंखघंटादि नादपूर्वकं शान्तिपाठपूर्वकं बालकं मातुः श्रोत्रे धृत्वा बहिरानीय सूर्यं भगवन्तं पूजयेत् सूतिकायै आचमनं करयित्वा ताम्रपात्रे रक्तचन्दनेन सूर्यविम्बं लिखित्वाऽग्रे संस्थाप्य सजलदुग्धमर्घार्थं पुटके निधाय । संकल्पः—अद्येत्यादि० अमुकराशेरमुकबालस्य वैजिकगार्भाधिक दोषोपशान्तये आदित्यस्य पूजनं करिष्ये । ध्यानम् ३० पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरंगवाहः । दिवाकरो लोकगुरुः किरीटीमयि प्रसादं विदधातु देवः । ३० आकृष्णे नरजसावर्त्तमानो विवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता

रथेनदेवोयाति भुवनानिपश्यन् । इतिमन्त्रेण वा ३० सूर्यायनमः
 अनेन च पाद्यदिनीराजनान्तं संसृज्य सफलजलयुतं दुग्धमञ्जलीं ।
 पूरयित्वा ३० एहिसूर्य सहस्रांशोतेजोराशेजगत्पते । अनुकम्पयमां
 भक्त्या पृहाणार्घ्यंदिवाकर । इति वारत्रयमर्घ्यं दत्त्वा सूर्यप्रदर्श
 येत् ३० तच्चक्षुरितिदध्यङ्ङाधर्वण ऋषिरुष्णिक्छन्दः सूर्योदेवता
 सूर्योदीक्षणे विनियोगः । ३० तच्चक्षुर्देवर्हितं पुरस्ताच्छुक् मुचरत् ।
 पश्येमशरदः शतंजीवेमशरदः शत १० शृणुयामशरदः शतं प्रव्ववाम
 शरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतंभूयश्चशरदः शतात् । इति
 मन्त्रेणवालकं सूर्यप्रदर्शप्रार्थयेत् ३० हरितहृयश्चदिवाकरंकनक
 मयाम्बुजरेणुपिञ्जरम् । प्रतिदिनमुदये नवंनवंशरणमुपैमि हिरण्य
 रेतसम् । दक्षिणासंकल्पः—अथेत्यादि संकीर्त्यामुकराशेरमुकवाल
 स्य कृतस्मनिष्क्रमणारव्य संस्कारकर्माणःसूर्यावलोकनस्यच सांग
 तासिद्धयर्थमिदंद्रव्यं अमुकशर्माणे आचार्यायदास्ये । यथासंख्य
 कान् विप्रांश्च भोजयिष्ये ततःकलशजलेन ससृतिका वालकमभि
 पिच्यतिलकंकृत्वाशीर्वादं दद्यात् ।

इति सूर्यावलोकन निष्क्रमण पद्धतिः

अथ सूतिका जल पूजाकर्मा—अथ च नामकर्मोत्तरेऽपिसूति-
 कायादैवे पित्रेकर्मणिनाधिकारः । धर्मसिन्धुसारे—अथ सूतिका-
 शुद्धिःदशाहान्तेमूतकाया अस्पृश्यत्वनिवृत्तिर्नामकर्मजातकर्मादि
 प्राप्तकर्माधिकारश्च । जातोष्टि विवाहोपनयनादिकर्मसुतु पुत्रप्र-
 सूतानांविंशतिरात्रान्तेऽधिकारः । कन्याप्रसूनां मासान्तेऽधिकारः
 उक्तंच मुहुर्तचिन्तामणौ—कवीज्यास्त चैत्राधिमासेनपौषेजलंपूज-
 येत्सूतिकामासपूर्ता । बुधेद्विज्यवारे विरिक्तेतिथौहिश्रादितीर्द्वर्क
 नैर्ऋत्यमैत्रैः । इति । अथ जलपूजा सूतिका कर्म पद्धतिः

अथ च सूतिका जलपूजनं पुत्रप्रसववत्या एकविंशति दिनादा
 राभ्य कन्याजनन्यामोसोत्तरंपूर्वाक्त चन्द्रतारानुकूलसद्वासरे जल
 पूजा कर्तव्या ततः प्रातर्जल पूजार्थिनीं संस्नाप्य पंचगव्यमभि-
 पिच्यपंचवारं चुलुकेनपावयित्वा चगणेश पूजास्थलमागत्याचम्यः

रक्षां विधाय ३० अथेत्यादि० देशकालौ संतीर्त्वा मुकराशिरमुक्ती
नाम्नीदेव्यहममुकाराशेर्वालकस्य वैजिक गार्भिक दुरितोपशान्त-
ये आत्मनः समस्त देवपित्रादि कर्माधिकार प्राप्तये गणेशादि
जलमात्स्वृणां पूजनमहं करिष्ये - ततो गणेशं सम्पूज्य कलश पू
जोक्त विधिना कलशं संस्थाप्य तत्रजल मात्स्वृः, आवाहयेत्-ॐ
आवाहयामि देवेशीर्जलमात्स्वृः सुमंगलाः । आयुसंतानदात्स्वृ-
श्च पूजार्थं स्थापयाम्यहम् ॥ ॐ एतन्ते । ॐ भूर्भुवःस्वः, मत्स्यादि
सप्तजलमातर इहागच्छन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु । इति प्रति-
ष्ठाप्य वक्ष्यमाण नाममंत्रैः पूजयेत् - ॐ मत्स्यै नमः । ॐ कृम्यै-
नमः । ॐ चाराह्यै नमः । ॐ कुक्कुट्यै नमः । ॐ मण्डूक्यै नमः ।
ॐ जलूक्यै नमः । ॐ सोमायै नमः । इति सम्पूज्य नैवेद्यं निवेदयित्वा
दक्षिणांसमर्घ्यं (कतिचित्प्रदेशेषु जलपूजनं नद्यादौ जलाशये वा
कुर्वन्ति समाचारात्कुर्यात्) ततः प्रार्थयेत् - ॐ नमस्तेभ्योजलेशि-
भ्यो मातृभ्यश्च नमाम्यहम् । दीर्घायुर्पुत्रयच्छन्तु जातकाय शुभाय
मे । इति सम्प्रार्थ्य सूतिकागृह शुद्धयर्थं तत्र गृहे प्रादेशमात्रं स्थंडिलं
कृत्वा पंचभूसंस्कार पूर्वकमग्निं संस्थाप्य नवग्रहमन्त्रैर्यथा संख्यकं
हुत्वा तत्र सूतिका तिलपात्रं कृत्वा त्र्यायुषं कृत्वा कलशजलेनाभि-
पेकं कृत्वा मंत्राशिषंदद्यात् । ततो ब्राह्मणं भोजयित्वा दक्षिणां दत्त्वा
च यथासुखं विहरेत् । इति सूतिकाजल पूजापद्धतिः

अथ दुग्धपानम्-एकत्रिंशद्दिने चैवपयःशंखेन पाययेत् । अन्न-
प्राशन नक्षत्रे दिवसोदयराशिषु । अथ दुग्धपानपद्धतिः ॥ अथ
चैकत्रिंशद्दिने कुमारस्य कन्याया वा जन्म दिवसगणनया विना
चन्द्रतारानुकूलेऽपि स्वेष्ट देवतां सम्पूज्य शर्करायुतं दुग्धं शंखे
संस्थाप्य-ॐ आपायस्व समेतुते विश्वतः सोम वृष्यमम् । भवा-
न्वाजस्यसंगथे । इति मन्त्रेण सोमन्ध्यायन्नभिमन्त्रयित्वा माता
अन्या वा सुभगा शंखेनैव वालकं पाचयेत् । अन्यस्मिन्दिनेऽपि-
अन्नप्राशनोक्त नक्षत्रे चन्द्रतारानुकूलेऽग्निह-अनेनैव विधानापाययेत् ।

अथ-अन्नप्राशनसूत्रव्याख्या

(पष्ठे नामेऽन्नप्राशनम् ११) तन्मत पठ माते कुमारस्यान्नप्राशनं कर्मशुचयः ॥११॥

नारद — जन्मतो मासि पष्ठे स्यात्प्राणैरेणाप्राशनं ११म् । तद्भावे एव मासि नवमे दशमपि वा । द्वादशे वासि शुभे त प्रथमान्नाशनं परम् । सम्यग्वा वा सम्पूर्णं केचिद्विद्विति पत्तिता । पष्ठे वाप्य-
 दम मासि पुस्तां ग्रीष्मां तु पथमे । सप्तमे मासि वा कार्यं नवाग्रप्राणं शुभम् । रिक्तो दिनचयनगर्भो
 द्वादशो मध्यमी मसम् । त्यक्तवायतिथयः पोक्ता स्तिनीयह्वयगमा । चन्द्रवारं प्रशंसति शृण्वे चान-
 ल्यत्रिके विना । श्रीधर — आदित्य तिथ्यवसुगौत्र्य करानिलारिष पिधान निष्णु धरणात्तरपैष्ण-
 मिना । बालाप्रभोजनविधौ दशमे विद्युधेः । विरेपो मुहूर्तं ग्रन्थेषु शृण्व्य । (स्थालीपाकस्य
 आपयित्वाऽऽज्यभागाविष्ट्वा ज्याहुतिर्जुहोति देवीं वाचमज्जनयन्त देवास्ताविष्ट्व
 रूपा पशुवदन्ति शानोमन्त्रेण मूर्जं हुहानाधेनुर्वागमाजुपसुष्टु ते तु स्वाहेति ।
 वाजिनो अथेति च द्वितीयायाम् । २) अन्नप्राशनस्यति कर्तव्यता । विशेषमाह—स्थालीपाक
 चरु वधाविधि श्रयित्वा अघ्राणवच्यभागी हुता द्वे-आहुति जुहोति ॥ देवीं वाचमित्तापि वा
 जोनो अथेति च द्वितीयाम् । इत्यन्त सूत्र-आश्रयेन ' देवीं वाच, इत्यादि वयार्च—एकामाहुतिं
 जुह्यात् । इदं वाचे इति त्याग विधाय चकाराः पुनर्देवीं वचमित्येतरयन्ते वाजिन । २ध देवीं
 वचमिति वाजिनो अथेति च द्वाभ्यामभ्या द्वितीयमाज्याहुतिं हुत्वा ' इदं वाचे वाजय च,, इति
 त्यागं कुर्यात् ॥ २ ॥ (स्थालीपाकस्य जुहोति प्राणैनाक्षमशीय स्वाहाऽऽपानेन गन्धा-
 शीय स्वाहा, चक्षुषा रूपाण्यशीय स्वाहा श्रोत्रेण यशोशीय स्वाहेति । ३ ।)
 स्थालीपाकस्य चरो प्राणैनाक्षमशीयेत्यादिभिश्चतुर्भिर्गैश्चतस्र आहुती जुहोति । ३ । (प्रा-
 शनान्ते सर्वांस्तान्सर्वमन्त्रमेकतो दृत्वाथैन प्राशयेन् । तृष्णीश्च हन्तेति वा ह-तकार
 मनुष्या इति श्रुत । ४) तत स्विष्ट कृदादि प्राशनं त विधय मगोत्रमानरदुमधुरतिलकपायादीन्
 सर्वमन्न भक्ष्यभोज्यलक्ष्यपेयवोष्यादि एकत एकस्मिन् पत्रे—उत्पैतृहीकृत्याथान तन्मन कुमार प्रा-
 शयेत् । तृष्णीं मन्त्ररहितं हत इति वति मन्त्रेण श्रुत, ह तकार मनुष्या इति श्रुते । ह-तकार
 मनुष्या उ-जोवति—इति श्रवणत् । 'मार्कण्डेय — देवत पुतरतस्य धा-युतसगगतस्य च ।
 मल कृतस्य द तव्यमन पत्रे स वाचनम् । (भारट्टाजामार्कण्डेन वाक् प्रसारकामस्य ५)
 (कर्पिं जलमार्कण्डे सेनाप्रद्यकामस्य ६) (मत्स्यैर्जजनकामस्य ७) (कृकपायाऽश्वा-
 युष्कामस्य ८) आर्य्या ब्रह्मधचस कामस्य ९) (सर्वं सबकामस्य १०) भगवा
 ज्या पक्षिण्या मासेन कुमारस्य प्राशनं कारयितव्यम् । इदीय कामना भवति । अथ कुमारो वग्मी
 स्यादिति कामयेत् । यदि उमारोऽन्नाद स्यादिति कामयेत्तदा लपिजलमाश प्राशयेत् । कर्पिजल

करंड्यो मयूरः केचित्कित्तरो वेति । यदि कुमारीऽयं जवनः शीघ्रगामीत्यात्तदा यवालेष्वंधं कृत्या-
 न्प्राशयेत् । स यदि कुमारो दीर्घयुः स्यादिति कण्ठयेत्तदा वृकपायाः मांसं प्राशयेत् । यदि कुमारो
 ब्रह्मवर्चसो स्यादिति कामयेत्तदा—भाटपाः मांसं प्राशयेत् यदि वाक्प्रसारादीनि ब्रह्मवर्चसान्तानि
 सर्वान्कामान्काणयेत् सर्वानि पूर्वोक्तानिमांसानि कर्मण प्राशयेत् । एकोऽथ वा प्राशयेदिति भर्तृयज्ञः
 ४ । १० । (अन्नपर्याय वा ततो ग्राहण भोजनभ्रममयाय वा ततो ग्राहणभोजनम् ।
 ११ अन्नपरिपात्र्या वा—अक्षेहीकृत्य प्राशयेदित्यर्थः । ततः कर्म समाप्तविकस्य ग्राहणस्य
 भोजनं करयितव्यम् । अन्न वंडिकापरिसमाप्तौ द्विरुक्तिः । व्यासः—अन्नप्राशन कालेऽपि भूमौ
 बालं समाविरोत् । वाराहं पूजयेद्भवं पृथिवीं च तथाग्रहन् । बालकस्य जीविका परिरक्षार्थं
 तदुक्तं कारिकायाम्—कृतप्राशनमुत्संगा बालो बाले समुत्सजेत् । कर्ष्यं तस्य परिज्ञानं जीविकाया
 अन्नतम् । वेवताग्रेऽथद्विन्यस्य शिल्पभाण्डानि सर्वशः । शास्त्राणि चैव शःप्राणि ततः परथेत्
 लक्षणम् । प्रथमं यत्पुण्ड्रेऽलस्ततो भरणं स्वयं तथा । जीविना तस्य बालस्य तेनेवेति भविष्यति ।
 गर्भधानादिका अन्नप्राशनान्ता मलिम्बुचे । आकर्णवेधा, ऽपु. क्रियाः नान्या त्त्वाहम.करः ।
 इति अन्नप्राशन सूत्र व्याख्या ।

॥ अथअन्नप्राशनकर्मपद्धतिः ॥

अथचान्नप्राशनं कर्म जन्मतःषष्ठेऽष्टमे दशमेद्वादशेमासि पूर्णसंय-
 त्सरेवापुरुपाणांकुर्यात् । स्त्रीणांतु—आपंचमादयुग्मेमासिसम्बत्सरे
 पूर्णवातचज्योतिर्विंदादिष्टे शुभेऽन्निहसर्वारंभकर्मकृत्वचान्नप्राशनदिने
 कर्त्तानित्यक्तियः शुचिधौतेवाससी परिधायपूजाकर्मस्थलमागत्य
 सामग्रींसम्पाद्यस्वासने—उपविश्याचम्यदीपं प्रज्वलय्यभूतोत्सा
 दनंकृत्वप्राणायामत्रयंविधायस्वस्तिवाचनंपठित्वापूजार्थंसंस्थाप्य
 संकल्पंकुर्यात्—अद्यहेत्यादिदेशकालौ संक्रीत्यामुकोऽहं ममासु-
 कराशेरमुकनाम्नः पुत्रस्य (कन्यायावा) मातृगर्भमलप्राशन शुध्य
 ज्ञाद्यब्रह्मवर्चस तेजइन्द्रियायुर्लक्षण फलसिद्धिबीजगर्भसमुद्भवानो
 निवर्हणद्वाराश्रीपरमेश्वर प्रीतयेऽन्नप्राशनाख्यं कर्म करिष्ये—तत्पू-
 र्वाङ्गतयागणेशादि पंचागदेवतानांपूजनं नान्दीआर्द्धपुण्याहवाचनं
 च करिष्ये ।—इति संकल्पपूर्वोक्त गणेशादिपंचांगपूजाविधाय तत्रैव
 गृहाभ्यन्तरे होमार्थं वेदीकृत्वा तत्रापंचभूसंस्कारपूर्वकमग्निं संस्था-

प्य चरणद्रव्यविप्रंचसम्पूज्य—अद्येत्यादिसंकीर्त्यामुकोऽहममुक-
राशोः पुत्रस्यान्नप्राशनांगहोमकर्मणिकृता कृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म
वर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्वरणद्रव्यैर्ब्रह्मत्वेनत्वां-
वृणे । कर्मकुरु, करवाणीतिप्रत्युक्तिः । यथाचतुर्मुखोब्रह्मा०प्रार्थ्य-
स्वयंकर्मकर्तुमशक्तश्चेत्तदाचार्यमपिवृणुयात् । ततोहोमवेदीशाने
कलशंसंस्थाप्य सम्पूज्यचरत्तासूत्रमभिमन्त्र्य तत्रैवस्थापयेत् ।
कुशकंडिकांकुर्यात् । तत्राग्नेर्दक्षिणतोब्रह्मणेत्रिभिः कुशैराशनंदत्वा
तत्राग्नेःपूर्वतः परिक्राम्यब्रह्माणमुपवेशयेत् । ततोऽग्नेरुत्तरतश्चास
नद्वयंप्रणीताप्रोक्ष्यगौराधारार्थं कल्पयित्वाप्रणितापात्रंसव्येपाणौ-
कृत्वा जलेनापूर्यकुशैराच्छ्राव्य ब्रह्ममुखमवलोक्यपश्चिमासनेनि-
धात्रालभ्यपूर्वासनेनिदध्यात् । ततःपरिस्तरणार्थंकुशमुष्टिमादाय
पूर्वपरिचमयोरुत्तरार्धैर्दक्षिणोत्तरयोः पूर्वार्धैःकुशैःपरिस्तरणंकृत्वा
त्रीणि कुशतरुणानिद्वेषवित्रेप्रोक्षणीपात्रंमाज्यस्थालींचरुस्थालीम्
पंचसंमार्जनकुशान्, सप्त-उपयमनकुशान्, तिस्रःसमिधः, सुव-
माज्यं, तण्डुलान्, सदक्षिणं, पूर्णपानं, कर्मदक्षिणां, चैतानि,
वस्तूनिप्राक्संस्थान्युदगग्राणि—अग्नेरुत्तरतःस्थापयेत् । अन्नप्राश-
नार्थवस्तून्पिकल्पनीयानि । उद्धरणपात्रंसौवर्णराजतंवा, मधु-
रादिसर्वरसान्, सर्वमन्नं, घृतं, मधु, दधि, दुग्धं, च, वेदपुस्तकं,
शस्त्रलेखनी, शिल्पभाण्डानिच, भारद्वाजादि, मांसानिचवस्त्रं,
सुवर्णं, रजतं, चस्थापयेत् । तत्रिभिःकुशैर्द्वेषवित्रेप्रच्छिद्यप्रोक्ष-
णीपात्रं प्रणीतातउत्तरतोनिधागप्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य तज्जलंपवि-
त्राभ्यामुत्पूयपवित्रेप्रोक्ष्यगानिधाय तत्प्रोक्षणीपात्रंसव्येकरेकृत्वा
तद्दुकंदक्षिणानामिकांगुष्ठाभ्यामुच्छ्राव्य, प्रणीतोदकेनप्रोक्ष्य,
तत्प्रोक्ष्युदकेनाज्यस्थाल्यादीनिसमस्त वस्तूनिप्रोक्षयेत् । तत
आज्यस्थाल्यामाज्यंप्रक्षिप्य, चरुस्थाल्यांप्रणितोदकमासिन्धुं, त्रिः
प्रक्षालितांस्तण्डुलांस्तत्रप्रक्षिप्य, युगपदग्नावारोपयेत् । प्रोक्षणी-
पात्रमग्निप्रणीतयोर्मध्येनिदध्यात् । आज्यंब्रह्माश्रावयेत्-चंस्व-
यमाचार्योवापाचयेत् । ज्वलदुल्बुकमादायाज्योत्तरतउभयोःसम

न्ताद्भ्रामयित्वाप्रक्षिपेत् ॥ उदकस्पर्शः, श्रुवमधोमुखंप्रतप्योप-
 स्पृश्यकुशाग्रैर्मूलतोऽग्रपर्यन्तंकुशमूर्त्तैरग्रतोमूलपर्यन्तंसंमाज्याभ्यु-
 द्यपुनः प्रतप्योपस्पृश्यदक्षिणतः कुशोपरिनिदध्यात् । आजमुत्था-
 प्यचरोः पूर्वेणनीत्वोत्तरतः संस्थाप्य, चरमुत्थाप्याज्यस्यपश्चि-
 मतोनीत्वोत्तरतः संस्थाप्याज्यमग्नेः पश्चादानीयचरुंचानीयाज्य-
 स्योत्तरतःसंस्थाप्य, पवित्राभ्यामाज्यमुत्पूयप्रोक्षणींचोत्पूयोपयम-
 मनकुशान्सव्येहस्तेकृत्वोतिष्ठन्-घृताक्ताः ममिधः स्तृष्णीमग्नौ
 प्रक्षिप्य, प्रोक्षय्युदकेन-ईशानाद्युत्तरपर्यन्तंपर्धुद्वयपवित्रेप्रणीतार्या
 निधाय प्रोक्षणीपात्रंसंभवधारणार्थमग्निप्रणीतयोर्मध्येनिधाय
 संकल्पंकुर्यात्-अथेत्यादिसंकीर्त्यामुकोऽहं ममास्य बालकस्य
 (कन्यायार्या) अन्नप्राशनविधौहोमकर्मणायक्ष्ये-ततःशुचिनामग्निं
 संस्थाप्य, ॐ एतन्ते० पठित्वा, ॐ भूभुवःस्वः, शुचिनामग्ने ?
 इहागच्छेहतिष्ठसुप्रतिष्ठितोवरदोभवेतिप्रतिष्ठाप्य ॐ तदेवाग्नि-
 स्तदादित्यस्तद्वायुस्तद्बुचन्द्रमाः । तदेवशुक्रंतद्ब्रह्मताऽआपःसप्र-
 जापतिः । इतिध्यात्वा ॐ शुचिनामग्नेनमः । इतिनाममंत्रेण
 आवाहनादि नीराजनान्तंसम्पूज्य ॥ जिह्वापूजनंकुर्यात् ॐ
 करालयैनमः ॐ धूमिन्यैनमः ॐ श्वेतायैनमः ॐ लोहितायैनमः
 ॐ महालोहितायैनमः ॐ सुवर्णायैनमः ॐ पद्मारागायैनमः
 सम्पूज्य ॐ ब्रह्मणेनमः ॐ विष्णवेनमः । ॐ रुद्राय
 नमः, इति रेखाश्च सम्पूज्य, दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्म-
 णान्वारब्धो जुहुयात् । ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये
 नममेति मनसास्मरेत् । ॐ इन्द्रायस्वाहा, इदमिन्द्रायन० ॐ
 अग्नेये स्वाहा, इदमग्नेये नमम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमा-
 यन० । अन्वारंभं त्यक्त्वाग्ने आज्याहुतीर्जुहोति । ॐ देवीं वाच-
 मिति भार्गव ऋषिस्त्रिष्टुष्टन्दो वाग्देवता-आज्यहोमे विनि-
 योगः । ॐ देवीं वाचमजनघन्त देवास्तां त्विश्वरूपाः पशवो
 वदन्ति ॥ सानोमन्द्रेपमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुष सुष्टुतैतु-
 स्वाहा, इदं वाचेनमम । ॐ व्याजो न इति देवा ऋषयस्त्रिष्टु-

प्लुन्दोऽन्नं देवताआज्यहोमे विनियोगः । ॐ देवीं व्वाचमज
 नयन्तः देवास्तां विश्वरूपाः पशवोवदन्ति । सानो मन्द्रेपमृज्जं
 दुहाना धेनुर्धागस्मानुपसुष्टु तैतु स्वाहा । ॐ व्वाजो नोऽब्रव
 प्रसुवातिदानं व्वाजो देवाँ ॥२॥ ऋतुभिः कल्पयाति । व्वाजो
 हिमासर्वव्वीरं जजान विश्वाऽआशाव्याजपतिर्जयेयम् स्वाहा ।
 इदं वाचे व्वाजाय च नमस । ततः श्रुवेण चरुमभिघार्याज्यमिश्रि-
 तेन स्थालीपाकेन जुहोति-३० प्राणेनेत्यादिनां चतुर्णां मन्त्राणां
 प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्चन्द्रोऽन्नं देवताहोमे विनियोगः । ॐ प्राणे-
 नात्रमशीयस्वाहा, इदं प्राणाय नमस । ॐ अपानेन गन्धानशीय
 स्वाहा, इदमपानाय न० । ॐ चक्षुपा रूपाण्यशीयस्वाहा, इदं
 चक्षुपे० ३० श्रोत्रेण यशोऽशीयस्वाहा, इदं श्रोत्राय० । ततः
 स्थालीपाकेनैव स्विष्टकृतं जुहुयात् ॥ ३० अग्नये स्विष्ट कृते-
 स्वाहा, इदमग्नये० । ततो महा व्याहृत्यादि प्रजापत्यान्तानवा-
 हुतीराज्येन जुहुयात् । ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न० । ॐ
 भुवः स्वाहा इदंवायवे० ३० स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० । ३०
 त्वन्नोऽअग्ने ३० सत्वन्नोऽअग्ने, अनयो वामदेवपिस्त्रिष्टुप्लुन्दोऽ-
 ग्निरुणोदेवतेप्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ३० त्वन्नोऽअग्ने
 व्वरुणस्य द्विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्टाः । यजिष्ठो वन्दि
 तमः शोशुचानो विश्वाह्वेषाँसि प्रसुमुग्ध्य स्मत् स्वाहा-इद-
 मग्नीवरुणाभ्यां नमस । ३० सत्वन्नोऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्टोऽ-
 अस्याऽउपसौ व्युष्टौ । अघयद्वनो व्वरुणँरराणो व्वीहिमृडी-
 कँसुहवोनऽएधि स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यां नमस । ॐ
 अयाश्चाग्ने, इत्यस्य वामदेवपि स्त्रिष्टुप्लुन्दोऽग्निदेवता प्राय-
 श्चित्त होमेविनियोगः । ३० अयाश्चाग्ने ह्यनभिसस्तिपाश्च
 सत्यमित्वमयाऽअसि । अयानो यजं वहास्ययानो धेहि भेपजँ
 स्वाहा इदमग्नये० । ॐ येतेशतमित्यस्य वामदेवपिस्त्रिष्टुप्लुन्दो
 वरुणः सविता विष्णुर्विश्वेदेवाः मरुतः स्वर्कारच देवताः प्रायश्चित्त
 होमे विनियोगः । ॐ येते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा

द्वितता महान्तः । तेभिन्नोऽत्र सवितो त विष्णुर्विश्वेमुंचन्तु
मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो
देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमः । ३० उद्दुत्तममित्यस्य शुनः
शोफपिस्त्रिष्टुब्धन्दो वरुणो देवता प्रायश्चित्त होमे विनियोगः ।
ॐ उद्दुत्तमं ववरुपाशमस्म दवाधमं द्विमध्यमं श्रथाय । अथा
द्वयमादित्य व्रते तवानागसोऽत्रदितये स्पाम स्वाहा “इदं वरु-
णाय न० । ॐ अग्नये प्रजापतये स्वाहा—इदमग्नये प्रजापतये
च नमः । ततः संस्रवप्राशनं, पवित्रप्रतिपत्तिः, पूर्वस्यां प्रणीता
विमोकः । पूर्णपात्रं सम्पूज्याद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं ममासुक-
नक्षत्रोपलक्षितस्यासुकनाम्नः पुत्रस्यान्नप्रासनांगहोम कर्मणः
सांग फलाप्तयेऽपूर्णपूरणार्थं चेदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं तुभ्यं ब्रह्मणे
संप्रददे । ब्रह्मा गृहीत्वा ॐ अक्रन्कर्म कर्मकृतः सहवाचा मयो
भुवा । देवेभ्यः कर्मकृत्वास्तं प्रेत सचाभुवः । ॐ स्वस्ति (पूर्णहुति-
र्नात्रगोमिल वचनात्) ततो कृतमंगल स्नानसुवस्त्रपरिधानं शिशुं
माता स्वयं चोत्संगे धृत्वा तन्नानीय पूर्वाभिमुखेन स्वासन उप-
विश्यः चम्यगणेशादि देवान्सम्पूज्यप्रणम्य च सल्लग्ने समायाते
लग्नदानानि प्रथक्पृथक्, वा तद्द्रव्यमेकीकृत्य कुर्यात् । द्रव्यं ब्राह्म-
णांश्चसम्पूज्याद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्यामुकोऽहं ममुकराशे
र्ममपुत्रस्यान्नप्राशनकर्मणि सामयिकलग्नाद्यधिकेन यत्रकुत्र स्थिता
नामादित्यादि नवग्रहाणां कुराणामनिष्ट फल शान्त्यर्थं शुभानां शुभ
फलाधिक्यप्राप्तये—इदंमुच्यते तन्निष्कयीभूतंद्रव्यं वा ज्योतिर्विदे
ऽमुकशर्मणे ब्राह्मणायदास्ये । ३० तत्सन्नमम । ततो बालकंनवीन
वस्त्रभूषणादिभिः समलंकृत्य ततः सर्वान्तरसान्सर्वमन्नंसव्यंजनं
चैकस्मिन्सुवर्णादिपात्रेकृत्वा, भारद्वाजादि पक्षिविशेषाणां सूत्र-
व्याख्या मीमांसोक्तानिमांसानि वागादिकामनार्थं यथा संभवं-
समानीय, पात्रे एकीकृत्य वा मांसानि पृथक् पृथक् स्थापयेत् ।
ततो ऽन्नमेकीकृत्य सुवर्णान्तार्हृतया, अनामिकाया, ३० हन्त,, ।
इति मंत्रेण पंचवारं प्राशयेत् कन्यांतु तृष्णीं प्राशयेत् । ततो मांसा-

निच प्राशयेत् । जलेन हस्तौपादौ प्रक्षाल्य ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणांदद्यात् । ततःसमाचारा त्सुसंस्कृतायां भूमौसुवस्त्रमास्तीर्यतत्र श्वेततण्डुलैर्वा वर्णद्रव्येण वाराहकृत्तियन्त्रं लिखित्वा, तदुपरिपार्थिवं वस्त्रमास्तीर्य, ३० एन्ततेपठित्वा ३० भूर्भुवः स्वः पृथिव्येदेवि, इहागच्छेहतिष्टेत्यावाहनादिभिः ३० पृथिव्यैनमः इति मंत्रेणपंचोपचारैःसम्पूज्य ततोऽधस्ताद्यन्त्रे ३० दंष्ट्रौधृतवसुन्धरा यवाराहायनमः, इति मंत्रेण सम्पूज्य स्वेष्टदेवताभ्योनमस्कृत्यमांगलिकं वा च यित्वापट्टसूत्रनिमित्तं कटिसूत्रं कटिप्रदेशवध्वा, हस्तेपुष्पंगृहीत्वा प्रार्थयेत् ३० रक्षेन्नं वसुधेदेवि सदासर्वगतेशुभे आयुःप्रमाणंनिखिलं निक्षिपस्व हरिप्रिये । अचिरादायुपस्तस्यये केचित्परिपन्थिनः जीवितारोग्यवित्तेपुनिर्दहस्वाचिरेणतान् । धारिण्यशेषभूतानां मातस्त्रमधिकाहसि । अजर चाप्रमेया च सर्वभूतनमस्कृते । कुमारं पाहिमातस्त्वं ब्रह्मातदनुमन्यताम् । तत्र शंभुघंटादिकं मांगलिकध्वनौक्रियमाणेशिशुमुपवेशयेत् । ततो विप्रान्पूजयित्वा दक्षिणां च दत्त्वाऽऽशिपो वाचयित्वा नीराजनं कुर्यात् । ततस्तदग्रे पुस्तकं, वस्त्रं, लेम्बनी, सुवर्णादिकमुद्रां शिल्पकृत्य भाण्डानि च, संस्थाप्य, तदासवालको प्रथमंयद् गृह्णाति तेन तस्य जीविकाभवेदिति ज्ञातव्यम् । तिलपात्रदानंकृत्वा ततः आचार्यादि दक्षिणा संकल्पः अथैत्यादि संकीर्त्यामुकराशेर्मम पुत्रस्य होमसहितान्नप्राशनकर्मणः सांगफलप्राप्तये इमां दक्षिणा माचार्यविप्रायदास्ये, तथाचेमांभूयसीं दक्षिणां नानागोत्रेभ्यो विप्रेभ्यश्चविभज्यदास्ये तथा यथा संख्यकान्ब्राह्मणान्श्च भोजयिष्ये । ततो ऽग्न्यादींश्च सम्पूज्यविसृज्यच न्यायुपंकृत्वाआचार्यः कलशजलेन यजमानमभिषिच्य मंगलतिलकमाशिपं च दत्त्वा यजमानः ३० यस्यस्मृत्वेति कर्मसमापनं कृत्वा विप्रान्भोजयित्वा स्वयंभुञ्जीत । इत्यन्नप्राशन कटि सूत्रबंधन कर्म पद्धतिः ।

अथवर्धापन (जन्मदिवस) पूजाविधिः ।

उक्तं चादित्य पुराणे-सर्वेश्व जन्मदिने स्नातैर्मङ्गल वारिभिः । शुद्ध देवगि विप्रांश्च पत्र-
नीया प्रयत्नत । स्वनक्षत्र च पितृस्तत्र देवप्रजापति । प्रति स्वर्गार यत्तद्वर्तभ्यश्च महोत्स ।
गणेश कुलदेवश्च प्रजाशैवविशेषतः । गौरधामातृकार्शैवपत्नी च जन्मत्रां शुभाम् । दीपं युष्मानु-
नीन्तान्मार्कण्डेयादिवारंशुभान् । सुमन्तजामदभ्यं दिगीशांश्च हतायुधम् । एतन्तति प्रतिप्लप्य
चतुर्ध्वनैश्च नामभि । पाद्यादिभि पूजयित्वा शैवरात्रतुषर्शयत ॥ शेषं प्रयोगेस्वष्टत ।

— : ० :: —

अथ प्रतिवर्षजन्मोत्सवकर्म पद्धतिः

इदं कर्मोपनयनात्पूर्वं बालकस्य पिता कुर्यात् । उपनयनान-
न्तरंतु स्वयं कुर्वीत । एतदुत्सवस्य जन्मदिवसगणनाकतिचिद्देशेषु
चन्द्रमासगणनया जन्मतिथावद्द प्रवेशे कुर्वन्ति । कतिचित्सु सौर
प्रमाणतः सौरांशक गणनयाद्दप्रपेशदिने जन्मोत्सवं कुर्वन्ति ।
यथादेश समाचार स्तथाकर्तव्यः । ततः कर्त्ता प्रतिसाम्बत्सरिक
जन्मतिथौ वा सौरांशक जन्मदिवसे प्रातस्तिलतैलमिश्रहरिद्रादि
मंगलद्रव्यैः स्नानं कृत्वा नूतनयस्त्रं परिधाय पूजास्थलमागत्य स्वा-
सने चोपविश्याचम्य दीपं प्रज्वाल्य सम्पूज्य भूतोत्सादनं कृत्वा
निंब, गुग्गुल, हरिद्रा कृर्वा, गौरसर्षप, पूगीफलान्वितां पोटलिकां
पीतकौशेय वस्त्रोपरि कृत्वा रत्नोच्चमंत्रै रभिमन्त्र्य ३० एतन्ते ०
प्रतिष्ठाप्य ३० यदावधनन्दाचायणा हिरण्यर्धं ० शतानीकाय सुमन-
स्यमानाः । तन्मऽआवधनामिशतशरदायायुष्मांजरदष्टिर्ध्यासम् ।
इतिपोटलिकां वध्वा शान्तिपाठं कृत्वा गणेशादिपंचागपूजनं विधाय
तत्रकलशेश्वेतवस्त्रैवद्यमाणप्रकारेण देवता स्थापनं पूजनं च
कुर्यात् । तत्र अर्घसंस्थाप्य प्रधानसंकल्पं कुर्यात् । अद्येत्यादिदेश-
कालौ संकीर्त्या मुकराशिरमुकगोत्रप्रचरो ऽमुको ऽहमद्यमदीय
जन्मदिने अथवाममपुत्रस्य जन्मदिने आयुरारोग्यादिवृद्धये वर्ष-
वृद्धिकर्मकरिष्ये तदंगत्वेन दध्यक्षतपुंजेषु कुलदेवतादीनां गुर्वादीनां
मार्कण्डेयादीनां च पूजनं करिष्ये— ३० दुर्गायै नमः । ३० भुवनेश्व-

यैनमः । ॐ कुलदेवतायैनमः । ॐ गुरुभ्योनमः । ॐ पितृभ्यो-
नमः । ॐ मातृभ्यो० । ॐ अग्नये० । ॐ विप्रेभ्यो० । ॐ देव-
ताभ्यो० । ॐ सूर्याय० । ॐ चन्द्राय० । ॐ भौमाय० । ॐ
बुधाय० । ॐ बृहस्पतये० । ॐ शुक्राय० । ॐ शनैश्चराय० ।
ॐ राहवेनमः । ॐ केतवे० । ॐ नवग्रहादिदेवताभ्योनमः ।
ॐ नवग्रहप्रत्यधिदेवताभ्योनमः । ॐ पंचभूतेभ्योः० ॐ कालाय० ।
ॐ युगाय० । ॐ सम्बत्सराय० । ॐ जन्ममासाय० । ॐ पक्षाय० ।
अस्मज्जन्मतिथयेनमः । अस्मज्जन्मनक्षत्राय० । अस्मज्जन्मरा-
शये० । ॐ शिवायै० । ॐ सप्तभूतयै० । ॐ प्रीतयै० । ॐ संततयै० ।
ॐ अन्नये० । ॐ अनुसूयायै० । ॐ द्दमायै० । ॐ विष्णवे० ।
ॐ भद्रायै० । ॐ इन्द्राय० । ॐ अग्नये० । ॐ यमाय० । ॐ
निर्ऋतयेनमः । ॐ वरुणायनमः । ॐ वायवेनमः । ॐ धनदाय
नमः । ॐ ईशानायनमः । ॐ अनन्तायनमः । ॐ ब्रह्मणेनमः ।
इतिनाम भञ्जैरावाह्य “एतन्तेति” प्रतिष्ठाप्य ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ
दुर्गादिब्रह्मान्तदेवताभ्योनमः । सुप्रतिष्ठावरदाभवन्तु—अने-
नैवपात्रगंधाक्षतधूपदीपादिभिःसंपूज्य ॐ पृथिवीदेविइहागच्छेह-
तिष्ठेत्यावाह्य ॐ पृथ्वीनमः इतिपाद्यादिकंदत्त्वा ॐ जगन्मातर्ज-
गद्धात्रि जगदानन्दकारिणि । प्रसीदममकल्याणिमहापठिनमोऽ-
स्तुते । इतिमंत्रेणपुष्पांजलित्रयेणगंधादिभिः संपूज्यहस्तेपुष्पं-
धृत्वावरंप्रार्थयेत् । ॐ रूपं देहि यशो देहि कल्याणं देवि ? देहि मे ।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामान् रच देहि मे । इतिवरंपात्र्यप्रणम्यतत्र-
श्वेतवस्त्रेचन्दनेनाष्टदलंकृतवाक्षतानादाय ॐ भगवन्मार्कण्डेय-
हागच्छेहतिष्ठेत्यावाह्यस्थापयित्वा ॐ मार्कण्डेयायनमः, इति
मंत्रेणपाद्यादिकंदत्त्वा—इदमनुलेपनं चंदनपुष्पादिभिःसंपूज्य ॐ
आयुःप्रदमहाभागसोमवंशसमुद्भवः । महातपसुनिश्चिष्टमार्कण्डेय-
नमोऽस्तुते । इतिपुष्पाञ्जलित्रयेणगन्धपुष्पादिभिरभ्यर्च्यवरंप्रार्थ-
येत्—ॐ मार्कण्डेयायसुनयेनमस्तेमहदायुषे । चिरजीवीयथात्वं-
वैभविष्यामितभासुने ? । मार्कण्डेयमहाभागसप्तकल्पान्तजीवन ।

आयुरारोग्यसिद्धयर्थमस्माकंवरदोभव । नराणामायुरारोग्यैश्वर्य-
 सौख्यैःसुखप्रदः । सौम्यमूर्तेनमस्तुभ्यंदीर्घायुष्यंप्रयच्छुमे । मार्क-
 ण्डेयमहाभागपार्थिवेत्वांकृनाञ्जलिः । चिरजीवीयथात्वंभोभवि-
 प्येऽहंतथामुने ? । इतिवरंप्रार्थ्यप्रणम्यतत्रैवाष्टदलमध्येपुपूर्वादि-
 क्रमतः । ॐ अश्वत्थाम्नेनमः, आवाहयामि स्थापयामि । पूज-
 याम्येवमग्रेवोध्यम् । ॐ चलयेनमः । ॐ व्यासायनमः । ॐ
 हनुमतेनमः । ॐ विभीषणायनमः । ॐ कृपायनमः । ॐ पर-
 शुरामायनमः । ॐ कार्तिकेयायनमः । ततःक्रमलान्तरालेदित्तु
 ॐ जन्मदेवतायैनमः । ॐ स्थानदेवतायैनमः । ॐ प्रत्यक्षदेव-
 तायैनमः । ॐ वासुदेवायनमः । ॐ क्षेत्रपालायनमः । ॐ
 पृथिव्यैनमः । ॐ अद्भ्योनमः । ॐ तेजसेनमः । ॐ वायवेनमः ।
 अन्तरिक्षायनमः । ॐ आकाशायनमः, ऊर्ध्वमितिमंत्रैर्गन्धाक्ष-
 तादिभिः सम्पूज्यप्रार्थयेत् । प्रीयंतां देवताः सर्वाः पूजां गृह्णन्तुतामम ।
 प्रयच्छन्त्वायुरारोग्ययशःसौख्यंचसंपदः । मन्त्रहीनं भक्तिहीनं
 क्रियाहीनंमहामुने । यदचित्तंमयादेवपरिपूर्णतदस्तुमे । इतिपठि-
 त्वा ततोवर्षफलंदेवज्ञोवाचयित्वादुष्टस्थानस्थग्रहाणांदानसामग्रीं
 सम्मुखीकृत्यसम्पूज्यब्राह्मणांश्चपाद्यगेधादिभिः सम्पूज्यसंकल्पं-
 कुर्यात्—ॐ अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रप्रवरोऽमुक
 नक्षत्रोपलक्षितो ऽमुकराशिरमुकोऽहं जन्मकालतोऽद्य यथा
 संख्यकाब्दप्रवेशसमये ऽमुकलग्नावधिकेनादित्यादि नवग्रहाणां
 यथास्थानस्थितानां क्रूरग्रहाणां दुष्टदोषोपशान्त्यर्थं शुभानां शुभ-
 फलाधिक्य प्राप्तये दशायामन्तर्दशायां गोचरेष्टकवर्गं सर्वतोभद्रं
 नैर्घाणे च शुभफलप्राप्तये, एतद्द्रव्यंग्रहाणां प्रीत्यर्थं ब्राह्मणेभ्यो
 विभज्यदास्ये । इति दत्त्वा ततस्तिलपात्रं पुरतःकृत्वा सम्पूज्यविप्रं
 च पूजयित्वा कुशत्रय तिल जलान्यादाय देशकालौ संकीर्त्यामुको
 ऽहमदीय जन्मदिने दीर्घायुष्यकाम, एतांस्तिलान्स्सोमदेवत्यान्-
 यथानाम गोत्राय द्विजाग दातुमहमुत्सृजे । इति दद्यात् । ॐ
 सर्वभूतेभ्योनमः वल्लित्वा ततस्तंडुलदानंकृत्वा घृतच्छायादानं

च कृत्वा सतिल गुडमिश्रितं दुग्धं कर्त्ता स्वांजलौपूरयित्वा र्ध
 मार्कण्डेयाय निवेद्य तदर्धाञ्जलिपयो वक्ष्यमाण मन्त्रेण त्रिवारं
 सकृद्वापिवेत् । मंत्रः— ॐ अंजल्यर्धमितं क्षीरं सतिलं गुडमिश्रि-
 तम् । मार्कण्डेय वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुष्य हेतवे । इति पीत्वा-
 चम्य ॐ मार्कण्डेयाय नमः । ॐ गोभ्यो नमः । ॐ ब्राह्मणेभ्यो
 नमः । इति प्रणम्य मार्कण्डेय क्षमस्वेति विसृज्य ॐ अश्वत्थामा
 बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः । कृपः परशुरामश्च सप्तैते
 चिरजीविनः । सप्तैतांश्च स्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम् । जीवे
 हर्षशतंसाग्रमपमृत्युविवर्जितः । इत्यष्टौ स्मृत्वा ब्राह्मणेभ्य आशीषं
 गृह्णीयात् । विप्रेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा भोजयित्वा च यथा सुखं
 विहरेत् । इदं च वर्द्धापनं यदि जन्ममासो ऽसंक्रान्तस्तदा शुद्ध
 मास एव तत्तिथौ कार्यं नत्वधिके । इदं वर्द्धापनं यावद्बाल्यं पित्रा-
 दिभिः कार्यम् । पश्चादुपनयनोत्तरं स्वयमेवेतिस्कन्दपुराणे -
 खंडनं नखकेशानां मैथुनाध्वगमौ तथा । आभिषं कलहं हिंसां
 यर्षं वृद्धौ विवर्जयेत् ॥ इति ॥ इति वर्द्धापन [जन्मोत्स] कर्म
 पद्धतिः ।

अथ चूडाकरणकेशान्तसूत्रव्याख्या ।

(साम्प्रतस्मिन् चूडाकरणम् ?) इत्य चूडाकरण केशान्ते तन्नेण सूत्रयति ।
 सम्प्रतस्मिन् मन्त्रेण सम्प्रतश्च तस्य उमास्य च । इमं कुर्यात् । (तृतीये धाऽप्रतिहते)
 मृतीय वा सम्प्रसं ऽतिहत्तन्नावशिष्टे (यथा मङ्गल वा सर्वेषाम् ३) यथा यद्वा मंगलक्या-
 उलाकारं सर्वां दणानां व्यदश्यन्तर्ध । यस्य तुल्यगाम् चरितं य चूडाकर्म क्रियते तस्य सांस्मरि-
 कस्य यस्य तृतीये ऽव्ये तस्य ऽति व्यदश्या । यस्य कुण्डलं स्ति नियमस्तरयददच्छया विकल्प ।
 अन्य तु यथा मङ्गल कालधर्मं श छन्तर विहित कालन्तरोप लक्षणपाहु — अतश्च सर्वां तुल्य
 विहन्त । चूडास्ति तृतीये ऽव्ये विशो र्गभञ्जसुतो वा विरेपत । पथम सप्तमे चापि क्रिया
 सुतोऽपि वगमम् । प्रयोग पारिजाते— आन्ते कुण्डले केचित्पामेऽव्ये द्वितीये । तानीत्या-
 सांस्मरि विकल्प इत्य धर्मत कारिक ग्राम्— सम्भव युद्धयने इत्येव विरेपत यं, रश

वर्षस्यवेशान्तः ४) पोष्य दवाण्यतीतानि यस्ससौ पांडप वर्षः तस्य सप्तदश वर्षं वेशान्तः
 केशान्ताख्यः संस्कारो भवति ४ । (ब्राह्मणान्भोजयित्वा माता कुमारमादायप्लाव्याहृते
 वाससी परिधाप्यांक आधायपरच्चादग्नेरुपविशति ५) चूडा करणागतया त्रींब्राह्म-
 णान्भोजयित्वा माता जननी कुमारं पुत्रं चूडाकरणाहं मादाय गृहीत्वा माह्वय-स्नापयित्वा-
 अहृते नवे सृष्टौते वाससो द्वे वने परिधाप्य परिहिते पारयित्वा-अन्तरीयोत्तरीयत्वेनकि-रत्सुमे-
 आभय स्यापयित्वा पश्चादग्नेः पश्चित उपविशति-आरते ॥५॥ मतरि रजस्वलायां तु विंशपः—
 घृहस्पतिः—प्राप्तममुद्यय धादं पुत्र रंस्कार कर्णि । पत्नी रजस्वला चेत्यत्र कुयात्तत्
 पिता तदा ॥ विवाहोत्सव यज्ञेषु माता यदि रजस्वा । अनसस्तुमप्येति पंचमं दिवसं दिना ।
 सुमुहूर्त्तालाभे वापय सारि शान्तिः—इलामे सुमुहूर्त्तस्य रजो दोष उपरिधते । धियं सम्पूज्य
 विधिदत्तनोमं लमाचरेत् । मदनरत्ने—सूतोमातरि गर्भिण्यां चूडाकर्म न कारयेत् । पंचमत्प्राक्
 तद्वध्वं तु गरिष्यामि कारयेत् । सदीपनीत्याकुयांचेत्तदा दोषो न विद्यते । गर्भं मातुः कुमारस्य
 न कुयाच्चीलकर्म तु । पंचमासान्ध. कुयादत्त उर्ध्वं न कारयेत् । (अन्वारब्ध आउयाहुती-
 हुत्वा प्राशनान्ते शोतास्वप्सूण्या आशिचति उप्येन वाय उदके नेहादितं केशान्त्र-
 पेति ६) तत आधारणी वक्रशा उपसृष्ट-आजाहुती, आषादि सिष्ट कृन्तत्तुर्दानात्त्वा
 संस्रव प्राशनान्ते सीतस्वप्सु-उष्या रूप आसिचतिप्रक्षिपति वचनमाणमेण । अन्वारब्धप्रहृयेननि-
 त्य व्याहुति होमो नियम मे । (केशप्रश्नश्चि त च वेशान्ते ७) वेशान्ते पुनस्प्येन वायुदकेने-
 होदिते केशरभु वपेति विशेष । (अथात्र नवनीत पिंड घृत पिंड दध्नी वा प्राश्यति ८)
 तत उष्योदक शैकानन्तरमप्रास्थसु नवनीत त्रिसं घृतपिंडं वानां वा पितृवं प्राश्यति 'आसुक्तेपणे'
 प्रक्षिपति ॥ (तत आदाय दक्षिणं गोदानमुन्दति-स्त्रिंशत्प्रसूतादैव्या आप उन्दन्तु
 ते तनूं दर्धाद्युत्वाय चर्चस इति ९) ततस्ताभ्यांऽद्भ्य हलुकेनैवधेरमादाय दक्षिणं गोदानं
 शिरसो दक्षिणप्रदेशस्य गोदानं केशसमूहमुन्दति चलेदयति । आग्रं करोतीत्यर्थः । वेनमेण सविता
 प्रसूता इत्यादिना क्षीर्नाद्युत्वावर्चसे इत्यनेन (त्रेण्या शलदया चिनीय त्राणि क्लृशतरुणान्य-
 न्तर्द्धाति-श्लोपधइनि १०) त्रेण्या त्रिरदेतया शलदया शलयवपक्षकटकेन चिनीय पृथक्कृत्य
 पूर् विनाधिवाशित। केश लर्किं तस्या अन्तर्मध्येऽन्तरा त्राणि त्रिसंयकानि कुशतरुणानि दर्भपत्राणि-
 दधाति धरयति ओषधे प्रायस्व इति मंत्रेण ॥ (शिवोनामेति लोहक्षुरमादाय नियतयामी-
 तिप्रवपति ११) ततः शिवोनामेत्यनेन मन्त्रेण लोहक्षुर ताप्रारिष्टतमायमं क्षुरमादाय गृहीत्वा
 दक्षिण करेण नियतयामी त्यनेन मंत्रेण प्रवपति नं क्षुरं कुशतरुणान्दमिनिदधाति ।
 (येना वपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राजी वरणस्य विद्वान् । तेन प्रहाणो वपते दम-
 यायुष्यं जरद प्रियथास्यादिति सवेशानि प्रच्छिद्यमानहहे गोमयपिरुडे प्रास्युत्त-

रतो ध्रियमाणे १२) येनावधिति मन्त्रेण केशसहितानिकुशतरुणानि प्रच्छिद्य खरिडत्वाऽग्नेत्तरतो
 भूभागे ध्रियमाणे स्नान्यमाने—अ नडुह—आर्षमे गोम विण्डे प्राःरति प्रक्षिपति । (एव द्विरपर
 तूर्णी १३) एवमुक्तेन प्रका ण द्वि, द्विर सुन्दनादि गोमयविण्डे निधानात् मपर कर्षट्णी मत्र
 रहित कुर्यात् । इतरयोश्चोदनादि १४) इतरयो पश्चिमोत्तरयोगोदान यो रुदन रिक्लेदत
 प्रथतिकर्म चरारसकृमत्रक द्विरन्त्रक भवति । (अथपञ्चात्न्यायुपमिति १५)
 अथ दक्षिण गोदानस्य त्रिरुनादि प्रच्छेदनन्तर पश्चाद्गो दानेविशेषमाह—
 ष्ययुपमिति न्य युपजमदग्ने इत्यग्निः मन्त्रेणसकेशानि कुशतरुणानि सकृत्प्रक्षिप्य
 वृणां द्वि प्रच्छिद्यमा मदपिण्डास्यति । (अथोत्तरतोयन भूरिश्चरादिःयोक् च पश्चाद्धि
 सूर्यम् । तेनतेवपाभि ब्रह्मणा जीयातवेजी म्नाय सुशोभ्यायस्वस्तय इति १६)
 अधानन्मुत्तरतोशने उदनाग्निोमय विण्डे निधानेतिदयमाह—दनभूषि रा इति स्वस्तय इय
 न्तमन्त्रणमकृत्तशांना कुशतरुणा ना न्दुदनद्विरूर्णी (त्रिः क्षुरणशिर प्रदक्षिण पश्चि
 समुखकेशान्ते यत्क्षुरणमजयता सुपेशसावत्ता ऽऽवपतिकेशाग्निं ह्यन्धि शिरोमा ऽ
 रयायु प्रमोर्षा मुष्मिति च केशान् १७) त्रि जानारन् क्षुरणशिरमूढान प्रवक्षिण
 यथा भवति तथा परिहृतिशिरम रमन्तात्प्रदक्षिण क्षुरभ्रममतीत्ये न सत्क्षुरेण, इत्यादिमा
 प्यायु प्रमोषारिखन्त कशनेमुखमहितशिर पहिति मने बेशन्ते च मुखमितिपदं प्रतिपत् ।
 अ वपेत् । अत्र पिण्डमन्त्राद्विरुत्तणामिति हर्षिह (ताभिरइभि शिरः समुद्य नापिताय
 क्षुरप्रयच्छति अद्युएवन्परिवपेति १८) ताभि शीतोष्णाभिरद्धि उमारस्यदिर स्मुयार्दे
 विधायनापिताय क्षौरकनाति विनेपायदुःमक्षरणन्परिवपेति मन्त्रेण प्रयच्छति । (यथामगल
 केशशेष करणम् १९) देश ना रेक्षरुण शिरस्वपन केशरापकृष्ण यथामगल बुलावार प्यव
 स्थापनतिक्रम्यभवति कुलाचारस्य वधुधा—उक्त च कारिकायाम् । वेदागप तत बुदीद्वयस्मिन्
 गात्र यथोचितम् । व शिष्ट दक्षिणभाग ष्मयत्रापि वदयता शिरातुर्वेत्तपिण्ड शिष्यभि पद्यभिर्युता
 परित पेक्षययवमुण्ड रव ष्यगोमता बुर्ध्-यन्देशिणामभ्रमत्रल धर्मिदरक्षित् । चशिष्ठोक्ते
 गदस्यानियता वेतवशा पाद्मेतु—नन्निनीनोपनातीत्या प्रापरत्तवस्तानिधम् । (अनुगुप्तमत
 षं सपेशनामय विगडनिनायगोष्ठे पत्तलउदकान्ते वा २०) अतुगुप्तमावृत्तम गमय
 विण्डेत्तेशा देशेगनिनायय स्थापयित्वा गात्रगच्छात्र पञ्चमन्त्रोदकेम ति उदकात् वेदकस्य
 समापय । (आचार्यायवददाति २१) एताया चयगव गाचयमिभिरितेद्रव ददति
 (मन्त्रसंमल्लक्ष्यम यरा च कशाने २२) द्वादशरात्र टं पदूराता त्रिगमन्त २४
 पृथग्उक्तमन्तर । यत्तुगुप्तमन्त्रस्य भवत्त मन्त्रः । देशे त द्वाप्यवृत्तम तत केशा त
 कर्मन्तरं यथाश्रीमन्मन्त्र च विहितमप्यनिरुदेण । विहितं यत्न च. गशायाभाक्का सेत्र

मातापित्रोरुरोमृते । आधाने सोमपाने च वपनसप्तस्फुटम् । मुण्डनचौत्वात्सर्वं सर्वं तार्थिन्यं
विधिः गर्जयित्वाङ्कुरक्षेत्रे विनर्त्ता विभ्रवांगयाम् प्रयागे च यं पुनःत् गयया विगट पातनम् ।
दानं दद्यत्तुरुक्षेत्रे वागणस्यां तनुरयनेत् विष्णुः—प्रयाग तीर्थेयत्रयां त्रिभुवनविद्येगतः ।
कचानं वपनं कर्मापुत्रान् विनोभनेत् । इति निषेऽपि (नीचं केशोविग्रः स्यात् इति नीच
केशत्व विघ्नाकर्तृनाकिना हस्तत्वंगमाञ्जनीयम् । गदाधरः मुण्डनस्य निषेऽपि कर्तृन् तुविधीरते
इति वृहस्पतिवचनात् भारते प्रादुर्भूतः कश्चिन्मणि कारयित्तमाहितः उन्मुण्डोत्कृष्ट्वा तथा
युन्दितेमहान् । तदुक्तंकारिकायाम् । जातकर्मदिषा र्त्रीणां वृद्धकर्पितकाः क्रियाः । दृष्टी
होमेतु मन्त्रस्वदितिगोभिलभार्त्तम् । वृद्धश्रातातपः प्राक् वृद्धाङ्गद्वालः प्रागन्न प्राशनाञ्जितुः
कुमारस्तुसन्निवोयात्समौजीविन्धम् । गौतमः—मुण्डनत्वात्वा मन्त्रव्यादमजाः । सर्वमसं
म ह्यणोऽपि ज्ञेयत । उच्छिष्टादावाश्रयतानस्तुः । महापातकपञ्चम् ।

११। चूड़ाकरणकेशान्त सूत्र व्याख्या ।

तत्रादौ केशाधिवासन विधिः, । अथ च समाचारात्पूर्वस्यां
रात्रौ चूड़ाकरणत्पूर्वं रात्रौ तद्दिने वा केशाधिवासनं वक्ष्यमाण
विधिना कुर्यात् । तत्रादौ गणेश पूजनार्थं संकल्पः — अथेत्यादि
संकीर्त्यामुकशर्माहममुकराशे रमुकशर्मणो ऽस्य कुमारस्य करि-
ष्यमाण केशाधिवासन कर्मणि निविघ्नता सिद्धये श्रीगणेश्वरस्य
पूजनं करिष्ये — एवं महागणपतिं सम्पूज्य केशाधिवासन सामग्रीं
संपादयेत् । तत्रादौ नूतनपीतकौशेय वस्त्रस्यचतुरंगुलायत चतु-
रस्र द्वादश खडानिकृत्वा पृथक् पृथक् पात्रे संस्थाप्य प्रत्येकस्यो-
परि गन्धान् न हरितदुर्वा हरिद्रासिद्धये द्रव्यं गौरसर्पपाणि
च प्रक्षिप्य रक्त त्रिगुणित सूत्रेण द्वादश फोटालिकावध्या पूर्वोक्त
गणाधिपेत्यादि रक्षामूत्रेणाभिमन्त्र्य संकल्पं कुर्यात्—अथेहामुक
शर्माहममुकराशेरमुकशर्मणोऽस्य कुमारस्य श्वः करिष्यमाण
चूड़ाकरणकर्म सिद्धयेऽथरात्रौ केशाधिवासनं करिष्ये—इति संक-
ल्पं कुमारं मातुः क्रोडे कृत्वा—एकां फोटलिकामादायादौ कुमा-
रस्य शिखां स्वाचारानुसारं मध्ये वर्तुलाकारं निर्माय तस्यां दृढ
तरं बध्वा तल उत्तराभिमुखस्य पूर्वस्यां शिरो दक्षिण भागे

तिस्रस्तिस्त्रो जूटिका स्त्रेण्या सलल्या कृत्वा प्रतिजूटिकायां
प्रत्येकां पोटलिकां बध्वा सपोटलिकाभि स्त्रिमृभिस्त्रिसृभिर्जुटिका-
भि रेकैकं गोदानं सम्पाद्यैवं पश्चिमोत्तरयोरपि सम्पाद्याचारादे-
कां पोटलिकां जुरे—एकां कर्तरे च बध्वा ॐ एतन्तेति प्रतिष्ठा-
प्य सपोटलिस्थान्केशान्पीतोष्णीपादिना बध्वा सयत्नं रक्षयेत् ।
अत्र केशाधि वासनविधौ कतिचित्पद्धतौ समन्त्रको विधिरुक्तः।
सच प्रमाण रहितः । तत स्नाम्रपात्रेऽनट्टुहमद्रवमपर्गुपितम् ।
गोमयंगन्धं घृतं नवनीतं दधिवा त्रिगुणित सित सूत्र वेष्टितं
ताम्रपरिष्कृतं तिग्मधारं लोहसुरं त्रेणी त्रिस्वेता मन्वण्डं शल्य-
ककंदकीम् । कुशपत्रत्रय निर्मितानि त्रिगुण सितसूत्र वेष्टितानि
नव कुशतरुण त्रिकाणि च स्थापयेत् । तत आचारादक्षिणा संक-
ल्पः । अद्येत्यादि संकीर्त्यामुक शर्माहममुकशर्मणेऽस्य कुमारस्य
चूड़ा करण कर्म पूर्वाह्नस्य कृतस्यास्य केशाधि वासन कर्मणः
सांगता सिधै इमां दक्षिणाममुकशर्मणे ब्राह्मणाय दास्ये ।

इति केशाधि वासनम् ॥

अथ च चूड़ाकरणपद्धतिः

अथ च चूड़ाकरणकर्म दिने पिता प्रातस्तथाय स्नानादिकं नित्य
कर्मकृत्वा वहिः शालायां पत्नीकुमार सहितः पश्चिमद्वारेण भंग
लवाय ध्वनिसहितस्तत्रस्नासने उपविश्य पत्नीं वामतः कृत्वा
तस्यांके कुमारमुपवेश्य - आचम्य भूतोत्सादनादिकं विधाय तत्र
स्थान् सर्वतोभद्रादिदेवान् प्रणम्य — पूजयित्वा च कर्मारभेत्
वहिः शालायां चूड़ाकरणे अशक्तश्चेद् गृहाभ्यन्तरे गणेशादि पंचा-
ङ्गदेवताः सम्पूज्य नान्दी आर्द्धविधाय ततः कुमारहस्तेनापिपुनः
गणेशादीन् पूजयित्वा कर्मार्थं हस्तमात्रां वेदिकां निर्माय-आचम्य
प्राणायामत्रयं कृत्वा संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि अमुकोहं
अमुकराशेरमुक माणवकस्य ममास्यपुत्रस्य वीजगर्भं समुद्भवै-
नोनिवर्हण पूर्वक मायुर्वलाभि वृद्धये चूड़ाकरण कर्माहं करिष्ये,

ततः पितास्वयं कर्मकर्तुमशक्तरचेत्तदाचार्यं वृणुयात्—आचार्यं
 ब्राह्मणंपाद्यगंधादिभिः सम्पूज्यवरणं सामग्रीं करेकृत्वा गन्धाक्ष-
 तान् क्षिप्त्वा संकल्पः—अथे० अमुकोऽहं ममास्य माणवकस्य
 करिष्यमाणं चोत्तमं कर्मणि—आचार्यं कर्म कर्तुमेभिर्वरणद्रव्यैरमुक-
 गोत्रं—अमुक शर्माणं ब्राह्मणमाचार्यत्वेन त्वामहं वृणे—वृतोऽ-
 स्मीति—आचार्योक्तिः आचार्यस्तु यथास्वर्गे० इति संप्राथम्यं ततो
 हस्तमात्रां भूमिं कुशैः परिसमूह्य गोमयोदकेनोपलिप्य श्रुवमूले
 नोत्तरोत्तरस्तिष्ठोरेत्वा विलिख्यउल्लेखनक्रमेण अनांमिकांगुष्ठा-
 म्यामृदमुद्धृत्यपूर्वं क्षिप्त्वा जलेनाभ्युक्ष्य पाद्यगंधादिभिः
 पीठं सम्पूज्य तेजसेपात्रे अग्निमादायस्वाभिमुखंवेद्यां
 स्थापयेत् ततः ब्रह्माणंवृणुयात्—ततः अग्नेरुत्तरतः
 कल्पितासनोपरि ब्राह्मणंपाद्यादिभिः सम्पूज्यवरणसामग्रींकरे
 धृत्वा अथेत्या० अमुकोऽहं ममास्यमाणवकस्य करिष्यमाणं चूडा
 कर्मणः कृताकृतावेक्षरुपं ब्रह्मकर्मकर्तुमेभिर्वरणद्रव्यैरमुकशर्माणं
 ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेनत्वामहंवृणे वरणद्रव्यंदत्वाप्रार्थयेत् । यथा चतु-
 भूखो० वृतोऽस्मीतिप्रत्युक्तिः यथाविहितं कर्मकुरु करवाणीति
 प्रतिवचनम् । ततोऽग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मणेत्रिभिः कुशैरासनंदत्वा ।
 तत्र ब्रह्माणंपूर्वतोऽग्नेः परिक्राम्यकल्पिताशने उपवेशयेत् । ततो
 ऽग्नेरुत्तरत आसनद्वयं प्रणीताप्रोक्षणयोराधार्यकुशैःकल्पयित्वा
 प्रणीतापात्रं दक्षिणहस्तेनादायसव्येपाणौकृत्वा जलेनापूर्य कुशै-
 राच्छाद्यब्रह्ममुखमवलोक्य पश्चिमासने निधायालभ्यपूर्वासने
 निदध्यात् । ततः कुशमुष्टिमादाय पूर्वपश्चिमयोरुत्तराग्नेर्दक्षिणो-
 त्तरयोः पूर्वत्रैः कुशैः परिस्तरणंकृत्वा । ततस्त्रीणिकुशतरुणानि
 द्वेषवित्रेप्रोक्षणी पात्रमाज्यस्थालीं चरुस्थालीं पंचसंमार्जनकुशान्
 सप्तोपयमनकुशान्, तिस्रः समिधः सुवमाज्यं सदक्षिणं पूर्णपा-
 त्रम्, कर्मदक्षिणां चैतानिवस्तृनिप्राक्संस्थानि उदगग्राणि—अग्ने-
 रुत्तरतः स्थापयेत् । ततः कुमारस्यमाता सुखोष्णजलेन कुमारं
 संस्नाप्यतस्मै अहतेवाससीपरिधाप्यतमंके आधायोऽग्नेः पश्चिमतः—

भर्तृर्धामभागे उपविशति । ततस्त्रिभिः कुशेर्द्वे पवित्रेप्रच्छिद्य
 प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतातः उत्तरतो निधाय प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्य तज्जलं
 पवित्राभ्यामुत्पूय पवित्रे प्रोक्षणानिधाय तत्प्रोक्षणीपात्रं सव्येकरे
 कृत्वा तदुदकं दक्षिणानामिकांगुष्ठाभ्यामुच्छ्राल्य प्रणीतोदकेन प्रोक्ष्य
 तत्प्रोक्षण्युदकेनाज्यस्थाल्यादीनि समस्तवस्तूनि प्रोक्षयेत् । ततः
 आज्यस्थाल्यामाज्यं प्रक्षिप्य ब्रह्मातमग्नाचारोप्य श्रावयित्वा प्रो
 क्षणीपात्रमग्निप्रणीतयोर्मध्ये निदध्यात् । ब्रह्माज्यमवतार्य ज्वल-
 दुल्मुकमादायाज्योत्तरतः समन्ताद्भ्रामयित्वा प्रक्षिपेत् । प्रणीतो
 दकःस्पर्शः । श्रुवमादायाधोमुखं प्रतप्योपस्पर्श्य पंचसंमार्जन कुशा
 ग्रैर्मूलतोऽग्रपर्यन्तं कुशमुलैरग्रतो मूलपर्यन्तं संमार्ज्याभ्युक्ष्य च पुनः
 प्रतप्योपस्पृश्य स्वदक्षिणतः कुशोपरिनिदध्यात् । आज्यमुत्था-
 प्याग्नेः पश्चादानीय पवित्राभ्यामाज्यमुत्पूय प्रोक्षणीं चोत्पूय सप्त
 उपयमनकुशान् सव्येहस्ते कृत्वोतिष्ठन् घृताक्ताः समिधस्तूष्णी
 मग्नौ प्रक्षिप्य प्रोक्षण्युदकेन ईशानाद्युत्तरपर्यन्तं पर्युक्ष्य पवित्रेप्र-
 णीतायां निधाय प्रोक्षणीपात्रं संखवधाराणार्थं अग्निप्रणीतयो-
 र्मध्ये निधाय पाद्यादिभिः सभ्यनामाग्निं ३० सभ्यनामाग्ने नमः,
 इति मंत्रेणावाह्य ३० एतन्ते० पठित्वा ३० भूर्भुवः स्वः सभ्यनामा-
 ग्ने, इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भवेति प्रतिष्ठाप्य ३० तदे
 वाग्निस्तदादित्य स्तद्वायुस्तदुचन्द्रमाः । तदेवशुक्रं तदब्रह्मताऽ-
 ध्यापः सप्रजापतिः । इति ध्यात्वा चत्वारिशृंगा० इति च पठित्वा
 ३० सभ्यनामाग्ने नमः, इति मंत्रेणासनपाद्यादि नीराजनान्तं स-
 म्पूज्य रेखापूजनं, ३० संसत्वाय नमः ३० रंरजसे नमः ३० तं नमसे
 नमः ३० जिह्वाभ्यो नमः जिह्वापूजनं च कृत्वा दक्षिणं जान्वाच्य
 ब्रह्मणान्वारब्धो जुहुयात् । तत्र प्रत्याहुत्यन्तरं सुवावस्थित हुतशे
 पशृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः कार्यः । ३० प्रजापतये स्वाहा इदं
 प्रजापतये नमः इति मनसा ३० इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय नमः ।
 ३० अग्नये स्वाहा इदमग्ने नमः । स्वाहा इत्याधारावाज्यभागौ
 च हुत्वा भूरादिहोमं कुर्यात् । ३० भूरादिव्याहृतीनां प्रजापति

ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोऽसि अग्निवायुसूर्या देवताश्चूडाकर-
 णांग होमे विनियोगः । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नयेनमम । ॐ भुवः
 स्वाहा इदं वायवेनमम , ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्यायनमम । ॐ
 त्वन्नोऽअग्न इति वामदेवर्षिं स्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निवरुणौदेवते चूडा-
 करणांग होमे विनियोगः ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान्देव-
 स्पहेडोऽअवचासिसीष्ठाः यजिष्ठो बन्हितमः शोशुचानो विश्वा
 द्वेषा ॐ सिप्रमुग्धयस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम । ॐ
 सत्वन्न इति वामदेवर्षिंस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निवरुणौदेवते चूडाकरणांग
 होमे विनियोगः । ॐ सत्वन्नोऽअग्ने ऽअवमोभवो तीनेदिष्ठो
 ऽअस्या ऽउपसोव्युष्टौ । अवयत्वनोव्वरुणं ऀ० रराणोव्वीहिमृ-
 डीकं ऀ० सुहवोनऽएधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम । ॐ
 अयाश्चाग्न इति वामदेवर्षिंस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता चूडाकरणांग
 होमे विनियोगः ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्चसत्यमि
 त्वमयाऽअसि । अयानोयज्ञं वहस्ययानोधेहिभेषजं ॐ स्वाहा
 इदमग्नयेनमम । ॐ येते शतमिति वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः
 व्वरुणःसविता विष्णुर्विश्वेदेवामरुतः स्वर्काश्चदेवताः
 चूडाकरणांगहोमेविनियोगः । ॐ येतेशतंवरुणंयेसहस्रंयज्ञियाः
 पाशाद्विवततामहान्तः । तेभिर्नाऽअचसवितोतविष्णुर्विश्वेमुचन्तु
 मरुतःस्वर्काःस्वहा—इदंवरुणाय सवित्रे,विष्णवे, विश्वेभ्यो मरु
 द्भ्यः स्वर्केभ्यश्चनमम ॥ ॐ उदुत्तममितिशुनःशोकं ऋषिस्त्रिष्टु-
 प्छन्दो वरुणोदेवता चूडाकरणाङ्गहोमेविनियोगः । ॐ उदुत्तमं
 व्वरुणपाशमस्मध्वाधमंविमध्यमं ॐ अथाथ । अथाव्वयमादित्य-
 व्रतेतवानागसोऽअदितयेश्यामस्वाहा—इदंव्वरुणाद्यादितयेनमम ।
 ॐ प्रजापतयेस्वाहा—इदंप्रजापतयेनमम । ॐ अग्नयेस्विष्टकृते
 स्वाहा—इदंअग्नयेस्विष्टकृतेनमम । इत्याज्याहुतिहोमं विधाय-
 संस्रवंप्राशयेत् । ततःप्रणीतोदकेनसंमार्जनेकृत्वापवित्रप्रतिपत्तिं
 विधाय प्रणीतांविमोकं कृत्वा पूर्णपात्रंसम्पूज्यब्रह्मणोदद्यात् । तत्र
 संकल्पः—अद्येत्यादि ममास्याभिकस्यामुक राशेरमुफनाम्नः कृनैत-

चूडाकरणकर्माङ्गीभूतहोमकर्मणःसांगतासिद्धयै-इदंसदक्षिणंपूर्ण
 पात्रं ब्रह्मणे तुभ्यं सम्प्रददे । ३० तत्सन्नमम इति दत्त्वा । लग्नदानानि-
 कुर्यात्-संकल्पः । अद्येत्यादि० अमुकोऽहं ममास्यामुकराशैः
 कुमारस्य चूडाकरण सामयिकलग्नावधिकेनामुकलग्नेन सूर्यादिनव
 ग्रहाणां क्रूरणांदुष्टदोषोपशान्त्यैशुभानां शुभफलाभिवृद्धयै, इदं
 सुवर्णरजतादिद्रव्यममुकदैवतं-अन्यद्दान्यादिद्रव्यं वा-अमुकशर्मणे
 देवजायाचार्याय वा दास्ये । ३० तत्सन्नमम । ततश्चूडाकरणसामग्रीं
 कल्पयेत् । ततस्ताम्रस्य कुण्डिकाद्वयं सुगोष्णशीतलं च जलम् । पूर्वो-
 क्तस्थापितवस्तूनि आनडुहगोमयगव्यनवनीतादिपिण्डानि कर्तृर
 लुशशललीकंडकेन वसंख्याककुशतरुणत्रिकाणि नूतनं कांस्यपात्रं
 नापितश्चेमान्युपकल्प्य-कांस्यपात्रे आनडुहगोमयस्य वर्तुलाकृ-
 तिमध्यन्वातपुष्करं कृत्वा तन्मध्ये दधिदुग्धनवनीतहरित दूर्वाहरि
 द्रादीनि मंगलवस्तूनि धृत्वा कुमारं मातुरं केधृत्वा कर्मवेद्याउत्तरभागे
 पूर्वाभिमुखो भूत्वा स्वस्तिवाचनादिकं सैरन्ध्रद्वारा प्रथानुसारं मंग-
 लगीतध्वनिवाजित्रादिपुरःसरमुपकल्पिते पात्रे वक्ष्यमाणमंत्रेण
 शीतास्वप्सु-उष्णाअपत्रासिचति । ३० उष्णेनेति परमेष्ठिऋषिः
 प्रतिष्ठाञ्छन्दो लिङ्गोक्ता देवता-उष्णोदकाशेके विनियोगः । ३० उष्णे
 नव्यायऽउदकेनेह्यदिते केशान्वप । ततश्तृष्णीं दधिघृतनवनीतपिण्डा
 न्यप्सु प्रक्षिपेत् । ततः पितावाकर्माचार्यो वक्ष्यमाणमंत्रेण जलमा-
 दायस्ववामभागस्थितागामातुर्दक्षिणभागे स्थितस्य पूर्वाभिमुखस्य-
 कुमारस्यादौ मूलभागे दक्षिणपार्श्वस्य गोदानाधः स्थितामेकांजुष्टि-
 कामार्द्रां करोति । ३० सवित्रेति प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽप्यो-
 देवताकलेदने विनियोगः । ३० सवित्राप्रसूता देव्याऽप्युदन्तुते-
 तनम् । दीर्घायुत्वाय वर्धसे । ततस्त्रेण्या (त्रिश्वेतया) शलल्या
 (शलकीकंडकेन) तृष्णीं केशान् विरलान् कृत्वोर्ध्वमूलानि जुष्टिका
 संलग्नाग्नित्रीणि कुशतरुणान्यन्तर्दधानि वक्ष्यमाणमंत्रेण-३०
 ओषधे-इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्घृष्टुश्रुन्द ओषधिर्देवता कुशान्तर्धाने
 विनियोगः । ३० ओषधेऽत्राय च स्वधिते मैनर्दं हिर्दंसीः । ततः

सकुशकेशान् पितासव्येनहस्तेनगृहीत्वा दक्षिणकरेणवक्ष्यमाण
मन्त्रेणक्षुरंगृह्णाति । ३० शिवोनामेत्यस्यप्रजापतिर्ऋषिर्धनुश्छन्दः
क्षुरोदेवताक्षुरग्रहणेविनियोगः । ३० शिवोनामासिस्वधितिस्ते
पितानमस्ते अस्तुमामाहिर्दृ०सीः । ततोवक्ष्यमाणमन्त्रेण ताम्र-
परिष्कृतमायसं क्षुरमादायसकुशकेशेषुनिदधातिसंलग्नं करोती-
त्यर्थः । ३० निर्वर्तयामीत्यस्यप्रजापतिर्ऋषिर्धनुश्छन्दः क्षुरोदेवता
पूर्वगोदानस्थप्रथमजूटिकायां क्षुरनिधानेविनियोगः । ३० निर्वर्त-
याम्यायुपेऽन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोपायसुप्रजास्त्वायसुवीर्याय ।
ततोवक्ष्यमाणमन्त्रेण सकुशप्रथमकेशजूटिकां क्षुरेणप्रच्छिनत्ति ।
३० येनावपत्सविताक्षुरेणसोमस्यराजोव्वरुणस्यविव्वान् । तेन-
ब्रह्माणोव्वपत्तेवमस्यायुष्यंजरदष्टिर्थासत् । ततरिच्छन्नसकुशकेश-
जूटिकां पिताप्रागग्राणिशिशुमालुर्हस्तेदधात् । साचस्ववामपार्श्व
स्थापित् कांस्यपात्रमध्येथानटुहगोमयपुस्करेनिदधाति । अत्र-
जलस्पर्शकुर्यात् । एवमेवविधिनेतरजूटिका द्वयस्यापिप्रत्येकजूटि-
कायाः पूर्वोक्तरीत्या-आर्द्रीकरणं-शलल्याप्रथक्करणम्-कुशत्रि-
कान्तर्धानं-क्षुरग्रहणं-जूटिकोपरिक्षुरसंलग्नीकरणं-सकुशकेशप्र-
च्छेदनं- छिन्नकेशानांमातृहस्तेदानंतथा- आनुडुहगोमयपिण्ड-
निधानान्तं च मन्त्र रहितं द्विवारं कुर्यात् । इति दक्षिण
गोदानम् । ततः पश्चिम गोदाने पूर्ववदक्षिणभाग
जूटिकायाः—ॐ सवित्रा प्रसूता० द्विवारं चेति मन्त्रेण क्लेदनम् ।
तृष्णीं शलल्या विरली करणम् । ॐ ओषधे त्रायष्व० इति
मन्त्रेण कुशत्रिकान्तर्धानम् । क्षुरस्यतु सकृद् ग्रहणात्पुनर्मन्त्र
संस्कारः । (एक द्रव्ये कर्मावृत्तौ सकृन्मन्त्र वचनम्) इति कात्या-
यनोक्तः । ३० निर्वर्तयामीनिमन्त्रेण केशेषु क्षुर संलग्नं । छेदने
विशेषः—३० व्यायुपमित्यस्य नारायणपि रुष्टिण्क् छन्दोऽग्नि-
देवता पश्चिम गोदानस्थ प्रथमजूटिका छेदने विनियोगः । ॐ
व्यायुपं जमदग्नेः कश्यपस्य व्यायुपम् । यद्देवेषु व्यायुपं तन्नोऽ-
अस्तु व्यायुपम् । इतिक्षित्वापूर्ववद् गोमयपुष्करे निदध्यात् ।

जलस्पर्शः । पश्चिमगोदानस्थ शेषजूटिकयोरपि-उन्दनादि गोमय
 पिण्ड निधानानि तूष्णीं वारद्वयं कुर्यात् । जलस्पर्शश्च ॥ इति-
 पश्चिमगोदानम् । अथचोत्तरगोदाने प्रथम जूटिकायाः ३० सवित्रा
 प्रसूता० इति क्लेदनम् । शलह्या तूष्णीं विरली करणम् । ॐ
 ओपधे त्र्यायुष्व० कुशान्तर्धानम् । तूष्णीं क्षुरादानम् । ३० निवर्त्त-
 यामि क्षुरनिधानं च कुर्यात् । छेदनमात्रस्यैव प्रथकमंत्रः । ३०
 यनेति वामदेवपिं र्यञ्जुश्छन्दः क्षुरोदेवता उतरस्थजूटिकाकेश
 छेदने विनियोगः । ३० यनेभूरिश्वरा दिवं ज्योक् च पश्चाद्धि
 सूर्यम् । तेन ते व्वयामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लो-
 क्यायस्वस्तये । इति छित्त्वापूर्ववद् कुमारमाता गोमय पुष्करे
 प्राशयेत् । जलस्पर्शः । एवमुत्तर गोदानस्थेतरजूटिकयोरपि
 क्लेदनं विनयनं कुशान्तर्धानं-क्षुरादानं-क्षुरनिधानं-छेदनं गोमय
 पिण्डप्राशनं च तूष्णीं कुर्यात् । जलस्पर्शः । ततो वक्ष्यमाण
 मंत्रेण सकृत्कुर्यात् ॐ यत्क्षुरेणेति वामदेवऋषिर्धञ्जुश्छन्दः
 क्षुरोदेवता शिरसिक्षुर परिहरणेविनियोगः । ॐ यत्क्षुरेणमज्जयता
 मुपेशसाव्वप्ला वाव्वपति केशाँश्छिन्धि शिरोमाऽस्यायुः प्रमोषीः ।
 इतिवारमेकं क्षुरं शिरसिभ्रामयित्वा वारद्वयं तूष्णीं भ्रामयेत् ।
 ततो नापितमाह्वय नापितस्तच्छेषजलेन सुखवपनार्थं सर्व शिर
 आद्री कृत्य वक्ष्यमाणमंत्रेण नापिताय क्षुरंप्रयच्छेत् । ॐ अक्ष-
 वन्नित्यस्य वामदेवऋषिर्धञ्जुश्छन्दः क्षुरोदेवता नापिताय क्षुर
 प्रदाने विनियोगः । ॐ अक्षवन् दरिषप । इति नापितहस्ते
 क्षुरंदत्त्वा परिधपामीति नापितो द्रूयात् । ततो नापितोऽपि
 शलह्या 'पूर्वशिखं-उदकशिखं, मध्यशिखं वा यथा कुलाचारं
 वर्तुलाकारं कृत्वा सूत्रेणवेष्टयित्वा शिखावर्ज्यं केश वपनंविधाय
 माता पूर्ववद् गोमयपुष्करेप्रासयेत् । मातृका विसर्जनान्ते स्वल्प-
 जलाशयेतदभावे गोष्ठेवानिधापयेत् । ततः पर्युप्तशिरसं सुस्नातं
 कुमारं पुष्पमालावस्त्रादिभिरलं कृत्य होमवेदी समीपमानीय-
 अग्नेः पश्चादुपवेशयेत् । आचार्याय वरं गोदानं वा तिलपात्र

दानं वा तन्निष्कयीभूतद्रव्यं हस्तेधृत्वा अथेत्यादि० अमुकराशे-
रमुकनाम्नः पुत्रस्य चूडाकरणकर्मणः सांगफलावाप्तये साद्-
गुण्यार्थमिमांस्त्रिणाममुकशर्मणे-आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्र-
ददे । नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां च दास्ये
सांगतासिद्धयर्थं दशब्राह्मणान् वा यथासंख्यकान्भोजयिष्ये । इति
संकल्प्य सभ्यनामाग्निं सम्पूज्य हस्तेऽक्षतानादाय ॐ गच्छुगच्छु
सुरश्रेष्ठ स्वस्थानेहृद्यवाहन । इष्टकाम समृद्धयर्थं पुनरागमनं कुरु ।
(पूर्णाहुतिर्न भवति) ततस्त्र्यायुपकरणं कृत्वा गणेशादि पंचाग
देवता विसृज्याचार्यो मङ्गलाभिषेकतिलकमंत्राशिपं च दद्यात् ।

इति चूडाकरणपद्धतिः ।

अथ कर्णवेधपद्धतिः ।

अथच कर्णवेधो देशाचार कुलाचारतो व्रतबन्धात्पूर्वं मेघ
तृतीये पंचमे सप्तमे चवपे ज्योतिः शास्त्रोक्त चन्द्रताराकुक्ले
संलग्ने शुभेऽहि पिता स्वकीयं प्रातः कृत्यंनिवर्त्य गणेशादि-
पञ्चागदेवतानां पूजनं कुर्यात्—तत्र स्वासन उपविश्याक्षम्य दीपं
प्रज्वाल्यार्घ्यं संस्थाप्य संकल्पः—अथेहेत्यादि-अमुकोऽहममुक-
राशेः पुत्रस्य करिष्यमाण कर्ण वेध कर्मणि निर्विघ्नताप्राप्तये
पूर्वांगत्वेनगणपति पूजनं करिष्ये तदंगतया गौर्यादिषोडशमाश्रा-
णांपूजन कलशस्थापनं पुण्याहवाचनं नान्दीश्राद्धं वसोर्धारा पातनं
नवग्रहपूजनं च करिष्ये—इति पूर्वोक्त प्रकारेणसम्पूज्य ततः कलशे
केशवादि देवानां पूजनं कुर्यात् । सङ्कल्पः—अथेहेत्यादि संकी-
र्त्यामुकोऽहमामुकराशेरमुकनाम्नः पुत्रस्य वीजगर्भं समुदभवन्नो
निवर्हण द्वारा पुष्ट्यायुः श्री विवृद्धये च कर्णवेध कर्मणि कलशे
केशवादि देवानां पूजनं करिष्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः केशवादि देवा
अस्मिन्कलशेसमागच्छन्तु तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदाभवन्तु ॐ

एतन्ते० प्रतिष्ठाप्य ॐ केशवायनमः । ॐ हरायनमः । ॐ
 ब्रह्मणे नमः । ॐ चन्द्राय नमः । ॐ सूर्याय नमः । ॐ दिगी-
 शेभ्यो नमः । ॐ नासत्याभ्यां नमः । ॐ वायवे नमः । ॐ सर-
 खत्यै नमः । ॐ स्वेष्ट देवतायै नमः । ॐ ब्राह्मणेभ्यो नमः ।
 ॐ गवे नमः । ॐ गुरुभ्यो नमः । इति नाम मंत्रैः पाद्यादिभिः
 सम्पूज्य स्वेष्टदेवं ब्राह्मणान् भिषक्वरं सौचिकं च नमस्कृत्य ततो
 माता भूपण वस्त्रादिभिरलंकृतं बालकं प्राङ्मुखं गुडमोदकादि-
 भुञ्जानं स्वोत्संगे धृत्वा अचेहेत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहममुकराशे
 रस्यममबालकस्यकर्णवेधे लग्नाद्यत्रकुत्र स्थानस्थितदुष्टग्रहैः सूचि-
 तारिष्ट निर्धूल्यर्घ्यग्राणां प्रीतये-इमालग्नदान दक्षिणा ममुकशर्मणे
 विप्राय दास्ये-इति लग्न दानं कृत्वा शुभेलगने पितायान्यो सौचिको
 ब्राह्मणस्य सुवर्णशलाकया रजतशलाकया वापुरुपस्यादौ दक्षिण
 कर्णमभिमन्त्र्यवेधयेत् मंत्रः-ॐ भद्रं कर्णेभिरिति प्रजापतिर्ऋषि-
 स्त्रिषष्टुष्टुन्दो लिङ्गोक्तादेवता दक्षिणाकर्णाभिमन्त्रणे विनियोगः
 ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवाभद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरं-
 गैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्धसेमहि देवहितं यदायुः । इति दक्षिणा
 कर्ण वेधयित्वा वाममभिमन्त्रयेत् — ॐ वक्ष्यन्ती वेदेति प्रजापति
 ऋषिस्त्रिषष्टुष्टुन्दो लिङ्गोक्तादेवता वामकर्णाभिमन्त्रणे विनियोगः
 ॐ वक्ष्यन्तीवेदागनीगन्ति कर्णं प्रिय र्दं० सखायं परिपस्वजा ।
 योषेधसिंक्ते त्वितताधिधन्वन् ज्याइय र्दं० समनेपारयन्ती ।
 इति वामकर्णं वेधयेत् ❀ कन्यकाया मन्त्ररहितमादौ वामकर्णं
 वेधयित्वा ततो दक्षिणाकर्णवेधनानन्तरम् वामनासापुटमपि वेध-
 येत् । अद्येत्यादि संकीर्त्य अमुकोऽहं मामास्य बालकस्य कर्णवेध

* टि०—(कन्यायाः ज्योति शास्त्रप्रभारोने—कन्यायाग्राणवेधे स्यात्सद्वारे
 विषमेऽङ्के । आद्ययामे सिते पक्षे मैत्रक्षिप्रोत्तराचरे ॥ वामोर्गं चैरस्त्रीभाग्यं नारीणां
 शास्त्रमपितम् । सव्य कर्णं द्वेषयित्वा यश्चाहदक्षिणं चिरेत् ॥ वामनासापुटं चैव
 चक्षेदयेत्तु ग्रामत्रम् ।

कर्मणः सांगतासिद्धयै—ह्रमां भृगसींदक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो
विप्रेभ्यो विभज्यदास्ये तथा च ब्राह्मणान्भोजयिष्ये । इतिदत्त्वो-
त्तरांगपूजनं कृत्वाभिषेकनिलकमन्त्राशिपं दद्यात् ।

इति कर्णवेधपद्धतिः ।

अथाक्षर स्वीकार विद्यारंभ परिभाषा ।

अथ च—अक्षरारंभः, धर्म नीकायाम्—विद्यारंभः पंचमेऽब्दे शुभः स्यात्तस्मिन् हित्वा
सौम्यसंज्ञेयनेऽर्कं । हरतादित्ये वायुमित्रे च शके पीपे दक्षे त्वाद् दिष्णी शुभः सः । मन्दःरत्नमंश
दिनं विहाय राशीरिधरे कृष्ण दिग्भूतमेव । रिषाष्टमीऽष्टमस्तं विहायशुद्धेऽष्टमे चाक्षरस्वीकृतिः स्यात् ।
संस्कार प्रकाशे माकांशुद्धेयः—अभ्यंगस्नानपूर्वं तुगंध, वैश्व च विभूषितः । शुद्ध वस्त्रं समास्तीर्थ
तण्डुलोपरिपूजयेत् । पूजयित्वा हरिं लक्ष्मीं देवीं चैव गरस्वतीम् । स्वविद्या सूक्तकाण्डश्च स्वविद्या-
श्चविशेषतः । एतेपामेवदेव, नानाम्नाच-द्वयादूच्यते । दक्षिणाभिर्द्विवाग्याणां कर्तव्यं च, अपूजन्तम् ।
प्राङ्मुखोऽगुरुभोनोत्तरांग शासुत्तशिशुम् । अभ्याययौतप्रथमं द्विजार्शुभिः प्रपूजितम् । पश्चिप्रतिपदिचैव
वर्जयित्वातथष्टमीम् । रिक्षापद्धतशीचैवसौरिभीमदिनंतथः । एवमुजिश्चिते काले विद्यारम्भं कुर्यात् ।
विशेषोऽर्थोति, शास्त्रेषुऽष्टव्य । इति० विद्यारंभपरिभाषा ॥

॥ अथअक्षरस्वीकारविद्यारम्भपद्धतिः ॥

— ० : ० : ० : ० : —

अथचकुमारपितानित्यकर्मविधाय पूजास्थलमागत्य दीपंप्रज्वाल्य
भूतोत्सादनादिकर्मकृत्वा तत्रादौशान्तिपाठंकृत्वा अर्घसंस्थाप्य-
तज्जलेनात्मानंपूजासामग्रीं च संप्रोक्ष्य प्राणानायम्यगणेशादि-
पंचांगदेवान्पूर्वोक्तपद्धत्यनुसारेणसंपूजयेत् संकल्पंकुर्यात्—अथे-
त्यादिसंकीर्त्यामुकोऽहं, अमुकराशेरमुकशर्मणोऽस्यपुत्रस्यसकल
विद्यापारंगत्वप्राप्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं, अक्षरारंभविद्या-

रंभंचकरिष्ये,, नत्पूर्वाङ्गतयागणेशादिवरुणपूजनं पुण्याहवाचनं-
 मातृकापूजनं वसोर्धारानिपातनंनादीश्राद्धं-नवग्रहार्चनंचकरि-
 ष्ये,, ततस्तत्तत्कर्मकृत्वा,, कच्चिन्मनोहर काष्ठपीठोपरिनवंश्वेत-
 चस्त्रंप्रसार्यतत्रदध्यक्षतपुंजेषुवक्ष्यमाणंविधिना वक्ष्यमाणदेवामा-
 वाहयेत्-संकल्पः-अथेत्यादि० असुकोऽहं अमुकराशे रस्यमम
 पुत्रस्याक्षरस्वीकार विद्यारम्भकर्मणोःपूर्वागत्वेनदध्यक्षतपुंजेपु
 गणेशादिशैनिकान्त देवानां वेदादि प्रवर्त्तकानां ब्रह्माद्याचार्याणां,
 वेदादि विद्यानां च, आवाहन पूर्वकं नाममंत्रैः पूजनं करिष्ये,
 तत्रादौमध्ये-ॐ भूर्भुवः स्वः, गणेश, इहागच्छेहतिष्ठ, पूजार्थमा-
 वाहयामि, एवंसर्वत्र-ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहा० । ॐ
 भू० लक्ष्मि, इ० । ॐ भू० कुलदेवि इ० । ॐ भू० सरस्वति० ।
 ॐ भू० ब्रह्मिहा० । ॐ भू० व्यास इ० । ॐ भू० गौतम इ० ।
 ॐ भू० जैमिने० इ० । ॐ भू० मनो इ० । ॐ भू० पाणिने इ० ।
 ॐ भू० कात्यायन इ० । ॐ भू० पातञ्जले इ० । ॐ भू० गास्क
 इ० । ॐ भू० पिंगल इहा० । ॐ भू० गर्ग इहा० । ॐ भू० कपिल
 इ० । ॐ भू० वाल्मीके० इ० । ॐ भू० कणाद इ० । ॐ भू०
 धन्वन्तरे इ० । ॐ भू० वामन इ० । ॐ भू० कृशाश्व इ० । ॐ
 भू० भरत इ० । ॐ भू० नकुल इहा० । ॐ भू० गोभिल इ० । ॐ
 भू० यजुर्वेद इ० । ॐ भू० ऋग्वेद इ० । ॐ भू० सामवेद इ० । ॐ
 भू० अथर्ववेद इ० । ॐ भूर्भुवः स्वः, अष्टादश पुराणानि, इहा-
 गच्छन्त्वित्तिष्ठन्तु पूजार्थमावाहयामि । ॐ भू० न्याय इ० । ॐ
 भू० मीमांसे इ० । ॐ भू० धर्म शास्त्र इ० । ॐ भू० शिल्पे इ०
 ॐ भू० कल्प० । ॐ भू० व्याकरण इ० । ॐ भू० निरुक्त इ० ।
 ॐ भू० छन्दांसि, इहागच्छन्त्वित्तिष्ठन्तु, ॐ भू० ज्योतिष इ० ।
 ॐ भू० वेदान्त इ० । ॐ भू० सांख्य इ० । ॐ भू० पातञ्जल इ० ।
 ॐ भू० काव्य इ० । ॐ भू० अलंकार इ० । ॐ भू० वैद्यक इ० ।
 ॐ भू० धनुर्वेद इ० । ॐ भू० गांधर्ववेद इ० । ॐ भू० शिल्प-
 शास्त्र इ० । ॐ भू० पालकाप्य इ० । ॐ भू० शालिहोत्र इ० ।

ॐ भू० पालकाचार्य इ० । ॐ भू० विश्वकर्मन् इ० । ॐ भू०
 श्यैनिक इ० इतिमंत्रैरावाह्य ॐ एतन्तेति प्रतिष्ठाय, ॐ भूर्भुवः
 स्वः गणेशाद्यावाहितदेवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ अत्र
 गणेशादीनामावाहने पूजने च विशेषः—ततः प्रादेशमात्रां भूमिं
 गोमयेनोपलिप्य पालाश दंडोद्धृतांमृद मानीय सैक तं स्थंडिल-
 निर्माय तस्योपरितया मृदा पंचकोणं पट्कोणं वा सरस्वती
 यंत्रं कृत्वा सरस्वतीमावाहयेत्—ॐ भूर्भुवः स्वः, भुवनमांतः
 सर्ववाङ्मय रूपेसरस्वति, इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ एतन्तेति पठित्वा
 ॐ भू० अस्मिन्यंत्रे सरस्वतिसुप्रतिष्ठितावरदाभव इतिप्रतिष्ठाप्य
 तत्रादौ गणेशंध्यायेत्—अविरलमदधारा धौत कुंभः शरण्यः,
 फणिवरवृतगात्रः सिद्धसाध्यादिवंशः त्रिभुवनजनविघ्न ध्वान्त
 विध्वंसदक्षो, वितरतुगजवत्क्र संततं मंगलं वः ॥ ततोविष्णुं—
 उच्चत्कोटि दिवाकराभ मनिशं शंखं गदां पद्मजं, चक्रं विभ्रन
 म्बिरा वसुमती संशोभि पार्श्वद्वयम् । कोटीराङ्गद हार कुंडल
 धरं पीताम्बरं कौस्तुभोदीपनं विश्वधरं स्वचक्षुसि लसच्छ्रीवत्स
 चिन्हं भजे ॥ ततो लक्ष्मीं—कान्त्या कांचन सन्निभां हिमिगिर
 प्रणयेश्चतुर्भुजैः । हस्तोत्क्षिप्त हिरण्यमयांमृतघटै रादिच्यमानां
 श्रियम् ॥ विभ्राणां वरमञ्ज युग्ममभयं हस्तेः किरीटोज्ज्वलां,
 लोमायुद्ध नितम्ब विश्व ललिनां वन्वेऽरविन्द स्थिताम्—ततो
 देवीं—अध्यारूढां मृगेन्द्रं सजल जलधर श्यामलां हस्तपद्मैः,
 शूलं वाणं कृपाणं त्वरि जलजगदा चाप वाणान्वहन्तीम् ॥ चन्द्रो
 त्तंसांत्रिनेत्रां चतसृभिरभिनः खेटकंविभ्रतीभिः, कन्याभिः सेव्य-
 मानां प्रतिभट भयदां शूलिनीं भावयामि ॥ ततः सरस्व
 तीम्—या कुन्देन्दु तुषार हार धवलाया शुभ्रवस्त्रा वृता या
 वीणा वर दंड मंडित करा या श्वेत पद्मासना । या
 ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता सामांपातु
 सरस्वती भगवनी निःशेष जात्या पहा ॥ इति ध्यात्वा—
 वक्ष्यमाणमंत्रैः सर्वेषांपूजनंकुर्यात्—ॐ गणानान्त्वा० । ॐ वि-

षण्णोरण्ट० ३० श्रीश्चते० । ३० सरस्वतीयोन्त्यांगर्भमंतररिवभ्यां
 पत्नीसुकृतंविभक्ति । आया ॐ रसेनञ्चरुणेनसाम्नेन्द्र ॐश्रियैज-
 नयन्नप्सुराजा । वापूर्वावाहितदेवेभ्योनमः इति मंत्रेण पाद्यादिभिः
 पंचोपचार पूजनंकृत्वा । ततो वेद्यांपंचभूसंस्कारपूर्वकमग्निं सं-
 स्थाप्य, आचार्यब्रह्मणोर्वरणपूर्वक ब्रह्मोपवेशनादि पर्युक्षणान्तं
 कर्मकृत्वा पूर्वोक्तस्थापनक्रमेण नामद्वितीयान्तमंत्रैर्द्रव्यदेव-
 ताभिर्ध्यानंकुर्यात् संकल्पः—अद्येत्यादि० अमुकोऽहं अमुकराशे-
 रमुकवालकस्याक्षरारम्भ विद्यारम्भ होमकर्मणा, प्रजापत्यादि
 श्यैनिकान्तान् तथा भूरादि प्रजापत्यन्तान् देवान् अग्निं ॐस्विष्टकृतं
 चा ज्येनयद्ये, इति तत्तद्देवताभ्यो मयापरित्यक्तं यथादैवतमस्तु न
 मम । ३० भूर्भुवः स्वः पुष्टिवर्द्धननामाग्ने इहागच्छेहतिष्ठ, ३०
 एतन्तेति प्रतिष्ठाप्य, ३० पुष्टिवर्द्धननामाग्नयेनमः इति सम्पूज्य,
 जिह्वा पूजनं रेखापूजनंकृत्वा आचार्य ब्रह्मणोर्वरणंकृत्वा ३० प्रजा
 पतयेस्वाहा इदं प्रजापतयेनममः । ३० इन्द्रायस्वा० इदमिन्द्रायनमम
 ३० अग्नयेस्वाहा इदमग्नयेनमम । ३० सोमायस्वाहा इदंसोमाय
 नमम । इत्याचारावाज्यभागौ हुत्वा पूर्वस्थापनक्रमेण चतुर्थ्यन्तैर्ना
 ममंत्रै रेकैकामाज्याहुति गणेशादि श्यैनिकान्तेभ्योजुहुयात् ॐ
 गणेशायस्वाहा, ३० विष्णवेस्वाहेत्यादि हुत्वा भूरादिनवाहुतिहोमं
 सिष्टकृद्धोमं च समाप्यपूर्णपात्रदानान्तं कृत्वा, आचार्यादिभ्यो
 होमनिमित्तरुदक्षिणां दत्वा, तत अभ्यंगस्नान पूर्वक वस्त्रालङ्कारा
 दिभिर्भूषितं कुमारंगणेशादि देवान्प्रणमय्य, लग्नसामयिकदानं
 कुर्यात् दानसामग्रीं ब्राह्मणं च सम्पूज्य संकल्पंकुर्यात्—अद्येत्या-
 दिदेशकालौ संकीर्त्या मुकोऽहं करिष्यमाणाक्षरस्वीकार विद्यार-
 म्भ लग्नाद्यत्रकुत्र स्थानस्थितानां सूर्यादि ग्रहाणां शुभानां शुभ-
 फलाभिवृद्धये भूराणां दुष्टकलनिवारणार्थं मिदंसुवर्णरजनादिद्रव्यं
 यथानाम दैवत्यमसुरु शर्मणे ब्राह्मणायदास्ये, ३० तत्सन्नमम,,
 ततो गुम्ब्रणुगान् वस्त्रालंकरणदि ररणासामग्रीं सम्पूज्यगुरुं च—
 अद्येत्यादिसंकीर्त्यामुकोऽहं करिष्यमाणाक्षर स्वीकार विद्यारंभकर्म-

णिभिर्वरणद्रव्यै रमुकशर्माणं ब्राह्मणं गुरुत्वेनवृणु—इतिसामग्रीं
 तस्मैदत्त्वा,, ब्राह्मणः-ॐ अक्रन्कर्म० इति पठित्वा,, कुमारो गुरुं
 प्रार्थयेत्-पुण्यहस्तः-ॐ गुरुर्ब्रह्मागुरुर्विष्णु शुभुर्देवोमहेश्वरः । गुरुः
 साक्षात्परब्रह्मस्तस्मै श्रीगुरवे नमः,, ततो गुरुः पालाशदण्डोद्धृत
 धूलिसंयुतेमनोहरे शुभकाष्ठ पीठेसुवर्णशलाकया पंचकोणं सरस्व-
 तीयंत्र विलिख्य,, गुरुःपूर्वाभिमुखो भूत्वापश्चिमाभिमुखं कुमारं
 कृत्वा,, कुमारः पुष्पहस्त आदौगणेशंप्रणम्य ततोयंत्र सरस्वतिमा-
 वाहयेत्-ॐ भूर्भुवःस्वःविद्यामातः सर्ववाङ्मयरूपे सरस्वति, इहा
 गच्छेदितिष्ट इत्यावाह्य,, ॐ एतन्तेति पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः,
 अस्मिन्त्रेसरस्वति सुप्रतिष्ठितावरदाभव,, ॐ सरस्वतीयोन्वां
 गर्भमन्तर शिवभ्यांपत्नी सुकृतंविभर्ति । अपा ॐ रसेनञ्चक्रुणेन
 साम्नेन्द्र ॐ श्रियैजनयत्रप्पुराजा,, इतिमंत्रेणपाद्यादि नीराजना-
 न्तं संपूज्य,, वित्तानुसारं हिरण्यपरजतादि द्रव्य मुपायनं समर्पयि-
 त्वा प्रार्थयेत्—ॐ सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि । विश्व-
 वन्द्ये विशालाक्षि विद्यान्देहिनमोस्तुते ,, ततो गुरुंप्रणमेत्—ॐ
 अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाकया । चक्षुरुन्मीलितं येन त
 स्मैश्रीगुरवे नमः ॥ ततो गुरुः सुवर्णशलाकयारजतशलाकयावा,
 अकारादिक्षकारान्तान्वर्णानलिखित्वासंपूज्य चकुमारं ग्राहयेत्,,
 यथा—ॐ नमःसिद्धे,, अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृ ए ऐ औ
 औं अः ॥ क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द
 ध न, प फ व भ म, य र ल व, श ष स ह क्ष,, इति लेखयि-
 त्वा—पुनःकुमारंप्राङ्मुखकृत्वा अक्षराणित्रिवारंवाचयित्वा ततो
 विद्यारंभंकारयेत्,, ॐ नारायणं नमस्कृत्य नरंचैव नरोत्तमम् ॥
 देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जगमुदीरयेत् ॥ वागर्थाविवसंपृक्तौ
 वागर्थप्रतिपत्तये । जगतःपितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ । येनाक्षर
 समाप्नाय मधिगम्य महेश्वरात् । कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पा-
 णिनये नमः । वृद्धिरादै च । गौरीश्रयःकेतकपत्रभंगं० । यस्य ज्ञान-
 दयासिन्धोः एवं गुरुमुखाच्छ्रुत्वा कुमारः पठेत् । ततो गुरुचरणयो

हस्ताभ्यां हस्ताभ्यां वादधित्वा गुरुदक्षिणां च निवेद्यप्रणम्य च
 मूयसींसकल्पयेत्—अथेत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं अमुकराशोः
 कुमारस्य अक्षरस्वीकार विद्यारम्भ कर्मणोरङ्गत्वेन अक्षतपुंजेषु
 गणेशादिदेवतानां पूजनस्य होमकर्मणश्च साद्गुरुव्यार्थमिमांसेक्षणं
 नाना नामगोत्रेभ्यो विभज्यदास्ये, ३० तत्सन्नमम यथासंपादि-
 तान्नेन ब्रह्मणांश्च भोजयिष्ये, ततः पूर्वपूजित देवानग्निचविसृज्य
 मन्त्राशिपंगृहीयात् ।

इत्यक्षरस्वीकारविद्यारम्भपद्धतिः



अथ उपनयनसूत्रव्याख्या ।

अथ उपनयनविस्तरणम्—(अष्टमर्षं ब्राह्मणमुपनयत् ।१। गर्भाष्टमे वा ।२। ऋषीं
 वर्षाणि अतीतानि यस्य ऋतो अष्टापर्यन्तं ब्रह्मण द्विजात्तममुत्पन्नयत् उपनयनाय यत्र रश्मि-
 रण मस्तु १ ॥ गर्भाष्टमेषु व गभ गर्भाष्टं चरिता द अष्टमो यथा ताणि गर्भाष्टमानि तेषु
 उपनयत् । तत्तत्र जन्मतो न्यगऽश्रम वा उपनयदित्यथ — (एकादशवर्षपर्यन्तं ३)
 एकादशवर्षाण्यतीतानि यस्य मौ एकदशवर्षस्त जन्मतो ह्य श वष इत्यर्थं सज व क्षत्रियमुप-
 नयत् इत्युच्यते । (द्वादशवर्षं वषणम् ६ । द्वादश वर्षाण्यतिवृत्तानि यस्य स तथा तं जन्मत-
 स्योदग वनेशमुपनयत् ॥ (यथा गन्तो वा मर्षेणाम् ५) पक्षात्प्रातः—अथ वा सर्षपा
 प्रातः क्षत्रियनि । यथा भयल यथा कुवधर्मं, यद्वा २३ म गत्वा न रगुत्सन्नरोक्त पंचमदि-
 वत्तमप्रद — मनु — द्वात्रिंशत् काम्ये मथ विप्रस्यपचम ॥ तावापिन एष्ट वैश्यस्यहाथिनो
 ऽ म ॥ (द्वारप्रत्यायनं गभाष्टं षट्ममो ऽप नमनामऽपि ।। द्विजेषु प्रातुयाद्विपानर्षेणान्दृष्ट ॥
 मासस्तुला महानाष्टं तावत्तं मतोपमगु वा पुनर्ब्रह्मणोऽथवाशैत्रवदंदागाम ॥
 र्शावधनमात्रं सास्त्रप्रियाविराट् ॥ उपनीत कुतश्च शस्त्रविधि विदार — गर्ग — वि।।
 स्त्रविधिप विद्वदर्थेयपना तपति विरध्या ॥ पक्षमाह दृष्टवति — शुभलभ शुभ प्रोक
 वृष्णशस्त्रविधिपिना । जन्ममासविचार — राजमासं एष्ट — ३ दिने द्वागद्विषोऽष्टौ
 मगनियतद्वारि ॥ जात्ये प न क्रिभागुरिश्च सपा प्रतएव मनुष्ममावि गुरुशुक्तिमाह
 षट्मति पापमपुत्रोयथा नीरोयगुना ॥ १ । अतिशोभनां दग्द्विकारापरायि ॥ शारिका-
 याम्—अथ षडन पुत्रं मग वि निति वर ॥ १ । अतो दुष्टगुणं पूष्ये विद्विः १ ।

पुगवाना वृत्तमन्वयं रत्नानि सैवैरे मन्त्रिचमयु शुभगो-यद् रया ॥ त्रिथिमाहराजमात्तं एड
 वृत्तीकैः शो मया पयमी दशमी तथा, । द्वितीयायां चमन तामन्वयवलयित — सिद्धामर्धद्वानि
 स्नाततीर्थमस्या त्वेवचप्रतिपद्य पि तापम्या कुतसुद्धिनि शक्य ॥ वृष्णपत्न तदुर्थी व सप्तम्यादि
 द्विपय ययोदशी चतुष्क ७ ऋष १ गलगता ॥ प्रदोष दिग्मपिउच्यमुक्त गाभिलेन—
 दशं च द्वादश, चैव अर्द्धराशौ न तािका प्र- गमिह वती ॥ वृतागा स्नानानि ॥ बृहद्गाम्य
 वचनम् ॥ अत्रायोग प्रमु रीत यस्तु नैमित्तिको भवत सप्तमा माघ शुभे तु तृतीया चक्षया ता
 पुत्र तन्तु वागशर इस्तापि प्रतप ॥ ॥ ज्योतिर्नित्र- उनारद् — शायातिपति वा ७७ शा
 स्वाधिपयत्न ता ॥ श स नि तिलग ७ तु ॥ ताय मा स्वप्रदे— स्व श्रवणाम जुपाधिवा गु
 मोम्य भौममिता । तातो त्रिशाणां क्षत्रियग ७ षण गुर्पिशां तद्र ॥ ४४ ॥ नक्षत्राणि मद्र
 नपरिजात— इत्यत्र देव पुत्रय ७ शो-दु पुत्राश्रितियागेषु तपुष्टुर्क ई वृ स्पती ।
 तिवुव धी त्रिनय वि ध ॥ राजनार्नएडस्तु पुनर्वसुं निपय्यति पुर्णो वृ त्रि
 पुन गतारमहनि फाहिनक्षत्रेषु वे त्रिदिद्यास्यात्यास्तुक्त दी पिनाया कर्षणे निग
 च व्रत पुगवन्त ॥ ॥ प्र जो ७ य तूडय द्दिमृच परेऽभ ॥ स्त्रोदय शुभ भो य ता
 कना विन प मरुण १ पुभा- मपु तायपु वर्णनाय गय ना ॥ सामा यता तपशुद्धिगद् ॥
 मुहूर्त चिन्तामणौ प्रतप धप्रत् रिपर्वन्त श भन ७ भ रिप ७ गला पूण गोर्णस्वो
 विस्तनो ॥ उत्प तानहल ल व्रतेऽति प्रथम याया त्रिदो यदि गर्वति तनि रय-दनध्यायो
 व्र तत्र विचये ॥ ना दा ध ७ इत वे स्नाद् वायव्यवर्क नि तदोपनर्न कार्य वैारभ न
 कारयामदनरत्ननारद् विनतीगा व-तनदृणपजे ग प्रह ॥ अर ह्मने पनोत्प पुन ररकारमदति
 सक् टेनुचडेणर दाहदिश चव धरात्रप वन्नपत्थ वि ७ ७ ७ वतीतर्धे-र-दुवणप्रपते-यह
 न बुयाद्भवतमगल नि । रिप याति शास्त्रद्रव्य (ब्राह्मणाभोजयत्त च) त्रिन्ब्राह्मणान्
 भोजयेत् ब्राह्मणैत तचकार अपन-तगाश्चदिति (चमोणानु-यते) (६युप्तदि समल इतमा
 नयति ७) परिसृष्ट उप-भुक्तिशिरोर्यस्त्र-स्युप्तसिर स्तम-इत यथा स भन रततदुर्णनिमित्तै
 कुलघलकारै आनयति अ-त-पुरया आचय समा अ च यपिनवकर्ता । त-कममाह वृत्त
 गर्ग पिता पितामहो अ ता शान्योग त्र जानना । प-नोवक-रीस्यात पूर्व भाष पर पर
 तथा पितेपोः येऽन्न-दमाव-ितु पिता तदम-न-तु-न ता तदभ-वतुमोदर-पितिविप्र पर न
 क्षत्रिय वैश्यया त्योस्तु पुरीहित एवउपनर-एदृष्टथ वा । त्योस्त्वध्याानदनभिरारत आचार्य
 लक्षणयमनोक्तम्—सयवक वृत्तिमान्-स्ता-सवभूतद्वयपर आस्तिदो वदनिरत शुचियार्थउच्यते
 देदाभनसम्पन वृत्तिमनविनिर्तीद्रय न यानयत्-तिगा-गुण-चनत शुभ २॥ पञ्चादग्न

स्वस्थाप्य ब्रह्मचर्यमागामिनिवाचयति ।।) तत्र आचार्यांमाण वक्ष्यन्ते पश्चिमतः अत्तमनो
दक्षिणतः अत्रस्थाप्य अत्रहितं कृत्वा ब्रह्मचर्यमागामिनिवृद्धि, इति प्रेष्युः कृत्वा माण्यकं ब्रह्मचर्यं
मागामिनि वाचयति (ब्रह्मचार्यसानीतिच ६) ब्रह्मचार्यगानि इत्याचार्यां माण्यकं प्रेषयति
प्रेषितश्चमाण्यको ब्रह्मचर्यं नि इति वदते । अथैतन्वासः परित्रापयति, येनेन्द्राय वृहस्पति
वांसः पर्यदधत्तमृतन्तेनत्वापरिदधाम्यायु वेदोर्घागुहायबलाय चर्चसइति १०)
अथ याचनन्तर एतन्कुमारमाचार्यः वक्ष्यमाण लक्षणं पाणादिव्रतं परिव्यापयति परिहृतकारयति
येनेन्द्रादि इत्यादिमंत्रपठित्वा ।। मेघनां च धनीते) इन्दुलोकं परित्राधमना चर्चपवित्रं त्पुनीत्र
आणात् । प्राणापानाभ्या वचनाददना स्वर्ग्यादेवी सुभगामेवलेदम् इति ११ ततः मेघनां मौज्या
दिकां प्रन्याण लक्षणां चवनोते कट्टिपदेशे त्रिवृतांप्रचर रंग्याप्रविभुतां प्रादक्षिण्येन वेष्टयति
इत्युक्तइत्यादिना मेखलेयम् इत्यन्तेनमंत्रेणमाण्यक पठितेन इति हरिहरः ।
आचार्यस्येति गदाधर । युवामुपसा परिवीत आगत्य उभेयान् भवति जायमान त धीरामः
वचयन्नयति स्वाध्मी मनसा वेपयन्त इति वा । १२ । तृष्णीं वा १३ । इति मंत्रेण वा तृष्णीं
वा मेखला वधनीते ॥ अत्र यद्यपि सूत्रकारेण यज्ञोपवीतधारणं न सूत्रितं तथापि एक वस्त्राः
प्राचीना वीति 'न' इति प्रेतोदक्रमे प्राचीना वीतिष्व विधानात्, द्वाजिनोपवीतानि मेखलां चैव
धारयेत् ॥ इति याज्ञवल्क्येन ब्रह्मचरिण उपवीतधारणस्वरणान् । तथा सदोपवीतिनाभाव्यं सदा
बद्धसिन्धेन च, विशिखोपवीतश्च यत्करोति न तत्कृतम् ॥ इति हरिहः—अस्मिन्नत्रयो समाचार-
योपवीताजिगे भवत, इति भर्तृयज्ञ व्यतिरिक्तवासुदेवादि सर्वग्रन्थेषु कर्काच.यस्त्वो-
तमेवलिखितं तत्र चबिरोधोपवीते शास्त्ररंयो मेवो ग्राह्य । यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते-
र्यज्ञज्ञं पुस्तकं अयुष्म सं इति उच्यते यज्ञोपवीतं बलं मत्तु तेजः इति वासुदेवः "यज्ञोप-
वीतलक्षणं स्मृत्यर्थं सारं, कर्णसलौम गोबाल शाण्वकं तृणादिकम्, यथासंभ्रती धार्यमु-
वीते द्विजातिभिः ॥ तन्निर्माणं प्रकारमाह-शुचौ देशे शुचिः कृत्रसहताहुलिसूलके, अवेष्टय परद
वर्त्म तस्त्रिणुणो कृत्य यत्नत ॥ अवलिगनेस्त्रिभि सम्यक् । प्रक्षाल्योर्ध्वं वृत्तं तु तत् । अप्रदक्षिणमावृत्त
सन्निध्या त्रिणुणो कृतम् ॥ अथ प्रदक्षिणं वृत्तं समं यानवसूत्रक त्रिरावित्य द्बवध्वाहरिद्वेषश्चरामेत् ।
यज्ञोपवीतमिति च मन्त्रेणानेनगरयेत् । सूत्रं सलौमकं चेतस्य तत उक्त्वाः सलौमकं । सान्निध्या व्यावृत्वा-
ऽद्भिर्मंत्रिताभिरनुसृजेत् ॥ विच्छिन्नं वा यथोयातिभुक्तवानिर्मितसुखजेत् । दृष्टं चोचनभ्यां च वृत्तं द्वि-
दत्तेकट्टिम् । तद्धार्यमुपवीतं स्यानाति लंपेन चोच्छ्रितम् । स्तनादूर्ध्वं मधोनामैर्धायतारकं यंचन । ब्रह्मचा-
रिणमेतन्म्यात्स्नातस्य द्वेवहृनिच ॥ तृतीयमुपवीतं यथावस्त्रम धेचतुर्थकः ब्रह्मसूत्रं तु सव्यं शैस्थिते-
यज्ञोपवीतव ॥ प्राचीना वीतिताश्व्य कंडस्थे हिनोतिता, वरं यज्ञोपवीतार्थं त्रिजसूत्रं चरुं मु ।

पुत्रांजबालतन्नुत्प्रावापनंतन्नुषु ॥ यशोपरीततन्नुदेवता — ३० वा, प्रथमेतत्तीक्ष्णोयेमिन् तु-
 धेवच । तृतीयेनागदैवत्यं वतुर्थं सोमदेवता । पंचमेपितृदैवत्यं षष्ठ्यै प्रजापति । सप्तमे मातृश्वे । अग्रे
 सूर्यदेवता । सर्वेषां स्तुतनमस्त्येतास्तंतुदेवता । ब्रह्माण्डे स्थादिते सृष्टमूर्ध्विष्णुना ध्रिगुणीष्टमू—रुद्रेण-
 दत्ताग्रन्विकेणाविष्वाचाभिभ्रितं । वृत्तैपद्ममयं सृष्टमूर्ध्वैतत्पावनमोदभयं द्वपरं गजतपोष कर्मापसि
 सम्भवम् । यशोपवीताभिभ्रमन्त्रणविधिः—सकृत्पमादौ संकीर्त्य इदं चिच्छ्रियचक्रमे । मन्त्रेणानेन-
 पत्रोपात्तव्याये द्विष्णुगुणारम्भम् । भ्रपे द्विष्टेति तिलिभि क्ष लयेद्ब्रह्मसुभ्रं । गायत्र्यादशभिर्वरं
 मन्त्रयेदुपवीतधम् । देवतानतन्नुनां क्रमेण परिकल्पयेत् । ३० अं प्रथमेतन्नुं अग्निं च द्वितीयं ।
 अग्निं दत्तपुरोऽनेन त्रितोयं चाभिभ्रमन्त्रयेत् । नमोस्तु संप्रदेवेतेन चतुर्थं गोमदैवत । षष्ठ्यं श्रीमदनेन च-
 पंचमं पितृदैवत । उदीरितेति मन्त्रेण षष्ठ्यं प्रजापति । प्रापतेन स्वमन्त्रात्सप्तमे निजमाहयेत् आतो-
 निष्पुद्गिमन्त्रेण षष्ठ्यं मेयममाह्वयेत् । सुगवो देवा मदाना इति मन्त्रेण मन्त्रयेत् । विश्वादेवाश्चैत्रमने-
 त्पित्र्ये देवा मन्त्रत । ब्रह्माण्डमद्यप्रथीयन्निष्पुच्चैव द्वितीयके । त्रितोयेष्वंश्चैव तन्मन्त्रैश्च स्थापेत् ॥
 एतन्तत्तमन्त्रेण प्रतिष्ठां रिक्ल्पयेत् । श्रुत्यादिविनयोगं शच प्रयोगे कल्पयाम्यहम् ॥ नययतोपवीतानि
 श्रुवा जीर्णानि संत्यजेत् ॥ जीर्णानोपवीतानि शिरोमांसेण स यजेत् ॥ (अथाजिनं प्रयच्छति)
 मित्रस्य चक्षुर्दरुणं च लीयस्तेजो यशस्वी रथविरुं समिद्धम् आहन्त्यं वसनं जरिष्णु-
 परीदं पाशयजिनं दधेहमिति वद् ।) इत्यनेन मन्त्रेणा निभ्रमणम् । तृतीया (दंडं प्रयच्छति)
 तं प्रति श्रद्धाति । योमे दंडं पगपत्तद्विहायगेऽधिभूम्भम् ॥ तमह पुनगददं आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्च-
 सयेति । १४ । अत्रा र्णे माणवकाय वक्ष्यमाण लक्षणं दं प्रयच्छति तृष्णीं माणवकश्च तं दंडं
 दक्षिणहस्तेन प्रतिश्रद्धाति—यो मे दंड इति मन्त्रेण दटाश्च पाल शर्वतोऽम्बराः, माहायज्ञा य-
 विशां यथार्च्यं ज्ञेया । मन च शाखान्तरोयं प्रह्वम् । वैशसम्मितो ब्रह्मणस्य दंडो ललट
 सम्मित क्षत्रियस्य प्राणतम्मितो वैशस्य इति । (दीप वदेकेर्दीर्घसप्रमुपैतीति वचनात्)
 । १० । एके आचार्या दीक्षायां यथा दण्डप्रदाने सोमे तथेषु चित्त तत्र उच्यते वनस्त इत्यादिना
 यज्ञस्योह च इत्यन्तेन मन्त्रेण यजमानो दंड उच्यते । तद्वदन्न ब्रह्मचारी केन हेतुना दीर्घसप्रवा
 एव उपैति यो ब्रह्मचर्यमुपैति, इत्यारभ्य ब्रह्मचर्यस्य दीर्घसप्र सम्पत्प्रतिभादानात् । अयोस्याद्-
 भिरक्षलिनाञ्जलिं पूरयत्यापोहिष्टेति तिसृभिः । १६ ।) अत्र दण्डप्रदानान्तर आचर्य अस्य
 माणवकस्याञ्जलिं स्त्रीयाञ्जलिस्थाभिरदुमि आपोहिष्टेतीत्यादिकाभिस्तिसृभि ऋग्भि पूरयति ॥
 अर्धेन च सूर्यमुदीक्षति तच्चक्षुरिति १७ ।) अथ अनन्तरं एन माणवकं सूर्यमुदीक्षस्व
 इत्यव प्रेष्य सूर्यमादित्य उदीक्षयति अथ लोकेन कारयति, स च प्रेषित त्वचक्षुः, इत्यादिना भूय-
 रच क्षय शतान् इत्यनेन मन्त्रेण सूर्यमुदीक्षते (अथास्य दक्षिणां सप्तमि हृदयमालभत,

मम व्रतेते हृदय दधामि ममचित्तमनुचित्तं त अस्तु मम वाचमकमना जुपस्व वृह-
 स्पतिष्ठा नियुक्तमह्यमिति । १८ ।) अथ सूर्य दर्शनानन्तर आचार्योऽभ्य माणवकस्य दक्षि-
 णां समधि दक्षिणस्कंधस्योपरि स्व दक्षिण हस्त नीत्वा हृदयं वक्ष्य मम व्रतेते इत्यादिना नियुक्त-
 ममह्यम्, इत्यन्तेन मन्त्रेण ब्रह्मभते स्पृशति ॥ (अथास्य दक्षिणर्धहस्तं गृहीत्वाऽऽह को
 नामासिति १९ ।) अथहृदयालभ नान्तर, आचार्य अस्य माणवकस्य स्वकीयेन दक्षिणहस्तेन
 दक्षिण हस्त गृहीत्वा को नामासिति आह ब्रवीति ॥ असावहं भोऽ इति प्रत्याह २० ।)
 एव पृष्ठे माणवक —असौ अमुकशर्महं भोऽ इति प्रत्याह प्रतिवचन दद्यात् (अथैनमा-
 हकस्य ब्रह्मचार्यसीति २१ ।) भवत् इत्युच्यमान इद्रस्य ब्रह्मचार्यस्यामिराचार्यस्तवाहमाचार्य-
 स्तवासाविति २२ ।) अथ प्रतिवचना नन्तर आचार्य एन माणवक कस्य ब्रह्मचार्यमि इत्याह पृच्छति
 भवत् इति माणवकेनोच्यमाने इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्यमिराचार्यस्तवहमाचार्यस्तव अमुकशर्ममिति
 (अथैनं भूतेभ्यः परिददाति प्रजापतये त्वा परिददामि देवाय त्वा सवित्रे परिददा-
 म्यद्भ्यस्त्वौपधीभ्यः परिददामि धावा पृथ्वीभ्यस्तन्वापरिददामि, विश्वेभ्यस्वादेवे-
 भ्यः परिददामि सर्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददाम्यरिष्ट्या इति ॥ २३ ॥ २) इति द्वि-
 तीयाकडिका ॥ अथ अनन्तरम् एनं कुमाह आचार्यं भूतेभ्यः प्रजापतिप्रश्रुतिभ्यः प्रतिरक्षितुं ददाति
 प्रयच्छति । मन्त्र — प्रजापतये त्वा इत्यादि अरिष्ट्या इत्यतः ; अथ तृतीया कडिका—(प्रदक्षि-
 णमग्निपरीत्योपविशति । १ ।) एव ब्रह्मणादिभिराचार्येण संस्कृतो माणवकोऽग्निं दक्षि-
 ण परिक्रम्य अग्ने परचादाचार्यस्य उत्तरत उपविशति इति जयरामहरिहरौ । आचार्यस्य दक्षिणत
 इति गगं पठते । आचार्यर्योत्तरत इति वासुदेव । अग्नेरुत्तरत इति गदाधर (अन्वारब्ध
 आज्याहुतीहुत्वा प्राशनान्तेऽथैनं सद्यः शक्ति ब्रह्मचार्यस्योपाशनकर्मं बुरु मादिनासु
 पुण्या याच यच्छ समिधमापेक्ष्योपाशनेति २) तत ब्रह्मणान्वारब्ध आचार्य
 आपागदि स्निग्धकृतारचतुर्दशाहुतीहुत्वा ससवप्राशनाते, अत्र पुनरन्वारभासुयाद चतुर्दशाहुति
 होमन्यतिरिक्त्वा होमप्रतिपधार्थं ॥ अथ अन्तर्माचार्यं, एन माणवक कशास्ति चिच्छयति,
 कथं मन्त्रचरी अस्ति ? असानीतिमाणवकन प्रत्युक्, अथ अशान पिव इति । अशानीति
 प्रत्युक् कर्म स्नानादिक, स्वर्णाश्रम विहितवुर विधेहि, करवाणि, इति प्रत्युक् मादिवा सुपुण्या
 र्वाप्यीरिति । नस्वपामीति प्रत्युक् । वाच गिरदच्छ नियमय यच्छानोतिप्रत्युक् । समिध
 कच्यमाणकशाभदि अग्नौप्रक्षिपेति आपाशानति पूर्ववत् ॥ (अथास्मै सावित्रीमन्वाहो
 चरतोऽग्ने प्रत्यङ्मुखायोपविष्टायोप रुद्राय समीक्षमाणाय समीक्षिताय । ३।
 दक्षिणतस्तिष्ठत आसीनायवेके । ४। पच्छोऽर्द्धं च सर्वे च तृतीयेन सहानुवर्तयन्

।५।) अस्मै ब्रह्मवाणि सावित्रीं सवितृ देवत्यां गायत्री छंदस्कां विस्वामित्र दृष्टां ऋचं ब्रह्मवाह
उदिशति । कथं भूताय प्रत्यङ् मुखाय, पश्चिम मिमुखाय पुनः पश्चं भूताय उपविशाय क,
अनेरुत्तरस्यां दिशि । तथेपरमायपादोप रंग्रहणादिना भजमानाय, तथा समीक्षमाणाय
सम्यक् भावार्थमवलोकयते, तथा आचार्येण सम्य ग्यलोकिताय पत्तान्तरमाह दक्षिणतः अनेर्द-
क्षिणस्यां दिशितिष्ठते उद्धाय उद्ध्वीं भूताय वा आसीनाय उपविशाय इत्येके आचार्याः सावित्री-
प्रदानमन्यते । कथमन्वाह पच्छः पादं पादं, अर्द्धचंसः तदनु अर्द्धचर्मर्द्धचर्मम् तदनु च सर्वा
तृतीयेनवारेण सम्मिलित्वा आवर्तयन्पठन् ॥ (सम्बत्सरे परमासे चतुर्विंशत्यहेद्वादशाहे-
पडहेऽपहेवा ।६।) सद्यस्त्वे गायत्रीं ब्राह्मणायानुब्रूयादानेयोवै ब्राह्मण—इतिध्रुतेः । ७। त्रिष्टु-
भर्षेराजन्यस्य । ८। जगतीदेश्यस्येष्टे । ९। सर्वेषां वा गायत्रीं । १०। सावित्रीप्रदानस्यकाल-
वदल्पानाह—सम्बत्सरे उपनयनमारभ्य पूर्वोपवेष्टमासिपडवेमासाः पशुवास्यं, (स्वाधेप्यन्)
“तद्धितश्छान्दसोऽर्द्धिलोकाः । छन्दोवदसूत्राणि भवन्ति इतिवचनात् । तस्मिन् पशुमास्ये, चतुर्विंश-
शल्यहे, चतुर्विंशत्या अहोभिः रूपलक्षिते । कालश्चतुर्विंशत्यह, तस्मिन् द्वादशाहे द्वादशभि-
रहंभिः रूपलक्षितः कालोद्वादशाह एतस्मिन् । पडहेपड्भिरहोभिरूपलक्षितः कालः पडहस्तस्मिन् ।
अपहं त्रिभिरहोभिरूपलक्षितः कालः अहस्तस्मिन् । वा शब्दः सर्वेषु सम्बत्सरादिषु संबध्यते ॥
एतेकालविकल्पाः । आचार्यस्य श्रुत्वादिशिष्यगण तारतम्यापेक्षाः एवं सामान्येन सावित्री प्रदा-
नस्यकालविकल्पा नभिधया धुना ब्राह्मणस्य विशेषमाह । तु शब्दः पत्तः व्यावृत्ती, ब्राह्मणस्य
नैतेकाल विकल्पाः किन्तु क्षत्रियवैश्ययोः ब्राह्मणस्य सद्य एव गायत्रीमनु ब्रूयात् । कुतः आनेयोवै
ब्राह्मण, इति ध्रुते । आनेयः अग्नि देवत्यः ब्राह्मणः इति वेदवचनात् । त्रिष्टुभर्षेराजन्यस्य जगतीं
वैश्यस्य, सर्वेषां वा गायत्रीं, राजन्यस्य क्षत्रियस्य त्रिष्टुभम्, द्विष्टुच्छन्दो यस्याः साविष्टुपतां
किन्तुभम्, जगती छन्दो यस्याः ऋचः सा जगती तां “जगताम्” । वैश्यस्यशिवः सावित्रीं मनु-
ब्रूयादित्युपज्यते । सर्वेषां वा गायत्रीं, सर्वेषां ब्राह्मणक्षत्रियविशाम् गायत्रीमेव गायत्रीछन्दस्कामेव
सावित्रीम् । सवितृदेवताकां, तत्सवितुः इति सकलवैश्याखान्मतां ऋचमनुब्रूयात्—इति तृतीया-
कंडिका । देवीं भागवते गायत्रीं निर्णये व्यासः—ॐ कारं पूर्वं मुञ्चार्थं भूर्भुवः स्वस्तर्धैव
च ॥ चतुर्विंशलक्षरारं च गायत्रीं प्रोच्यतेततः । शतानुरारं च गायत्रीं सङ्कदावर्तयेत्सुधीः ॥ चतुर्वि-
ंशलक्षगणि “गायत्र्या” कीर्तितानिहि जातवेद गन्तान्नीं च ऋचमुच्चारयेत् । त्र्यंबक्यार्चमा-
वृत्त्य गायत्रीं सतवर्णं क ॥ भवर्तायं महापुण्या सङ्ख्याप्या लुषेरियम्, संपुष्टैकपडोकारा गायत्री
विविधामता ॥ पद्य प्रणव संयुक्ता जपेक्षियनुशासनम् ॥ जपसंख्याष्ट भागान्ते पादो जाच्यस्तुरी-
यकः । सद्भिः परमोज्ञेयः परंसायुज्यमाणुयात् । संपुष्टैका पडोकारा भवैसा उपर्वतेतसाम् । पृद्धस्थी

ब्रह्मचारी वा मोक्षार्थं तुरीयां जपेत् ॥ तुरीयपादो गायत्र्या परो रजसे सावदोम तद्वैक प्रणवा-
 ग्राह्याः गृहस्थैर्ब्रह्मवादिभिः—अत्रसमिदाधानम्—अत्र सावित्री प्रदानोत्तरकाले समिधां आधानं
 प्रक्षेपः ब्रह्मचारिणो भवति । अत्राग्नौ विधिं “भास्वकारः” अत्राक्सारस्य पाठादेवसिद्धेः पाणिना निपरि-
 समूहति) अने सुधुवः सुधुवदंमाकुरु यथा त्वमग्ने सुधुवः सुधुवा असि एवमात्सुधुवः सौधुव-
 संकुरु, यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिषा असि एवमहं मसुधुवाणां वदस्य निधिषो भूयासमिति ।
 १२) पाणिना दक्षिण हस्तेन अग्निं प्रकृतहोमाधिकरणं परिसमूहति संघुक्षयति इन्वन
 प्रक्षेपेण चक्षुः मारुः पंच भर्मिन्त्रैः करिकया विशेषः प्रति मंत्रं त्रिभिः
 काष्ठैरग्ने सुधुव आदिभिः । अग्ने सुधुव इत्येकं यथा त्वं स्याद्वितीयकम् यथा त्व-
 मग्ने देवानां मंत्रेणपि तृतीयकम् । कृत्वा पशुक्षयं वहेत्स्थाय समिदाहुतिः । समिल्लक्षणाद्वन्दोग
 परिशिष्टे—नाड्युग्रादधिकाकार्या समित्स्थूलतया क्वचित् न विद्युक्तात्त्वचाचैवनसकीटा च पाटिता ।
 प्रदेशानाधिकन्यूनान तथ स्याद्विशाखिका न सपर्णा न निर्वयां हंगे तु विज्ञानता । ग्रहपुराणे—
 पाजानाशक्तद्वन्द्वमंध प्लक्षवैकं कोद्धवाः । अश्वत्थोऽम्बरं निवश्वरचक्षुः सरलस्तथा । शालश्च देवदा-
 रश्चक्षुरिश्वेनिशक्तिः (प्रदक्षिणमग्निं गृह्योत्तिष्ठन्समिधमादधाति अग्नये समिध-
 माहापर्ववृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधासमिध्वहऽएवमहमायुषा मेधया
 वर्चासाप्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्ने जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहम् सामसा-
 न्यनिराकरिष्युर्द्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यन्नादो, भूयास टं स्वाहेति ॥३॥)
 एवं द्वितीयां तथा तृतीयाम् ॥३॥) एषात् इति वा ॥३॥) समुच्चये वा ॥६॥) ततः
 प्रदक्षिणं यथा भवति तं अग्निं पर्युष्य दक्षिणहस्त गृहीतोदवेन परिपिच्यतया उर्ध्वं भूय
 प्राङ्मुखोऽसिष्ठन् समिधं समिध्वते दीप्यते अग्निस्तथेति समिध् तसमिधं आदधाति प्रक्षिपति । केन
 मंत्रेण, अग्नये समिधमाहापर्वमित्यादि भूयास टं स्वाहा इत्येतेन ३—एवमग्नेर्मेव मंत्रेण द्वितीयां
 समिधमादधाति । तथा एतेनैव मंत्रेण तृतीययाम्, अत्रिकल्पमाह एषते अग्नेः प्रक्षिपित इत्यादि
 भास्वपासिपीनदि, इत्यन्तेन वा मंत्रेण कथना अग्नये समिधं इति एषते इति द्वयोर्मंत्रयोः समिदा-
 धने समुपयः एक्यम्, ततश्च मंत्रद्वया ते सन्निधेयः इति मंत्रो मंत्र विकल्पः पूर्ववत् परिसमू-
 हनं पर्युषणे ॥३॥) पूर्ववत् अग्ने सुधुव इत्यादिभिः पंचभिर्मन्त्रैः परिसमूहनं पशुक्षयमपि
 पूर्ववत् कार । (पाणिप्रतप्य मुखं विनृष्टे दन्तूग अग्नेऽसितन्त्रं मेवाहि मायुहाऽग्ने
 ऽस्थायुर्मेदेहि । वर्चांदाऽग्नेसि वर्चांमेदेहि । अग्नेयन्वातन्वा ऊनतन्मऽआपृणमयां
 मदेवः सधिता । मेधांमेदेवी सस्वतो मेधामश्विनी देवा यायत्तां पुष्कर स्रजः-
 चिति । ॥३॥) एषात् इति तप्य दण्डं मग्नी कर्षयित्वा तन्तूग अग्नेधि— इत्यादिभिः सप्तभि-

मन्त्रे प्रतिमन्त्राणिभ्यामुक्त विमृश्लक्ष्णादि विदुक्ता प्रोचति । इत्र मेधामन्त्रं सविता । मन्त्र-
 देवो सरस्वती अनयोराद्वयस्वित्यध्यहार अत्रशिष्टाचारप्राप्ता वैचाण्ड्यादि लिखन्त—तत्रागनि
 च मन्त्रध्यायन्ता, वाकशाणश्चक्षु श्रेत्रयसोपलमितिअगनि च मइत्यननम त्रेणशि प्रभृतीनि
 पदान्तानि अगन्यालभेत एववक् इत्यनन मुप, प्राण इत्यनननासिक, चक्षुस्त्रियनेन
 रक्षुपी श्रेत्र मित्यने श्रवणे, यशोवलिन्दस्य पाठमात्रम् ॥ त्रयुपाणि कुरते मस्मना
 ललाट मीत्रायां दक्षिणेश्चैते हृदि च, त्रयुपमिति प्रति मन्त्रम्, त्रयुपम् इत्येतैश्चतुर्भिर्मन्त्रादै
 अग्निका श्रुतीन मस्मना ललाट मीवा दक्षिणा सहदयेषु प्रतिशब्द त्रयुप णि कुरते । इत्र त्रयुपायु
 पक ण सूत्रकारानुक्तमभि प्रसिद्धत्वात् शिष्टपरम चरित्वात् कियते । ततो ब्रह्मचरी सध्या
 मुपायाग्निकार्यं कृत्वः शुष्पसप्रहणं कृदेतष्वभिवादनं कृत्वा नमस्कारं कुर्यात्पय यणः इत्यस्य
 रोकमभिवादनलिखते—ततोऽभिवादनं कृत्वा नमस्कारं कुर्यात्पय यणः इत्यस्य
 डिश ॥ (अत्रभिवाच्यार्चणम् ११) इत्र सरसिज्ञाचर्यानुगमम् । (भवत्पूर्वाग्नाहणो
 भिद्येत १२) मन्त्रमध्यमार्चणम् १३) मन्त्रदन्त्याशेष्य १४) भैरवश्च पूर्वोयस्या सा
 भवत्पूर्वाग्नाहणं द्विचोक्तमाभिज्ञेतेयाचते । तथैवमन्त्रदन्त्यामध्ययस्या साभवनमध्याता
 राचन्यं क्षत्रियोभिज्ञेतेत्यनुपम । मन्त्रदन्त्यामध्ययस्या साभवनमध्यातावैश्यं तृतायोवर्णं भिज्ञा-
 भिज्ञेतेत्यनुवर्तते । उक्तचमनुना—प्रतिगृह्येत्सितदण्डमुपस्थाय चमास्कारम् ॥ प्रददिशांरीत्या
 र्गिनचरेद्भक्षययप विधिः । (त्रिंशोऽप्रत्याख्यायिन्य १५) पञ्चदशोऽपरिमितावा
 १६) मातृप्रथमामके १७) भिज्ञेत्ततोऽद्विंशतत्वाद् द्वितीयकम हतिसइति । तिस्रश्चिन्त्रोभिज्ञा
 भिज्ञतकामभूता अस्याख्यायिन्य प्रत्याख्यायिनिराकर्तुंशीलयासाता प्रत्याख्यायिन्य नप्रत्याखा
 यि यः अस्याख्यायिन्य ता अस्याख्यायिनो । द्वितीयाधप्रथमा, पञ्चाशिय, द्वादशवा, अर
 रिभिता । वा असत्याता । वा सिन्त्रोभिज्ञेत आहारापय पयपक्षया एव आचाय मातरस्वजननीं
 प्रथमभिज्ञेत्त्याहु । अयच-थमाहधर्मः । इतिक्व । याह्वात्क्व —ब्राह्मणपुत्रेद् भैच्य-
 मनिर्वाचामवृत्तय ॥ एतद्वाङ्मणविषयम् । अतएवव्यास —ब्राह्मणश्चित्रविशरचवेयुर्भैरव व
 हम् । सजातीयगृहधेनसार्चवर्णाकमववा (आचार्यार्थभैरवनिवेदयित्वाद्योग्यतोऽह शेषतिष्ठे
 दित्यक् १८) आचार्यायपुरवर्षे च लब्धाभिज्ञानिवदित्वा इयभिज्ञामशालावेतिसमर्प्यवा यतामौनी
 अह शब्दभिज्ञानिवेदनं चारती यावद्वरतमयतिष्ठेद्योपनिषत्तत्र शशीतगातइत्येकेसूत्रकारा
 षन्तिव तु अनियममन्यामह तत्रश्चविकल्पः । अहिदू सधरण्यात्
 समिध आहृत्य तन्मन्त्रमौ पुर्व्वदाधाय याच त्रिसृज्यत (९)
 अर्हसन् अहिदन्त्यय भ नाइत्यर्थे अण्याममामत् समिधं सलक्षणा आहृत्य आनीयस्तस्मिन्नौ

यत्र उपनयनागोम कृत स्तस्मिन्पूर्ववत् परिसमूहनादि चायुष्करणन्त यावदाधाय हुत्वा वाचं
 विस्तृजतेभौनं त्यजति वा यमपक्षे (अथ शय्य चारालवशाशीस्यात् । १०) (दंडधार-
 णमग्नि परिचरणं गुरुशुश्रुषाभिक्षाचर्या । ११ ॥) मधुमाट्० समंज्जेमां पर्यासनखी
 गमना नृता दतादानानि वर्जयेत् । १२ ॥ अत ऊर्ध्वं ब्रह्मचारिणा रमनियमानाह—अथ शयि-
 तुंशो लमस्य असावव शायीस्यात् तथा अक्षारमलनयं चरनातीत्येवं शीलोऽक्षारलक्षणशी भवेत् ।
 दंडधारणदण्डस्य स्व वर्णविहितस्यधारणं कुर्यात् । दंडानिनीपवीतानिमेखलाचैत्रधारयेत् । इत्ये-
 तदुपलक्षणस्यैवसदानिहिरूपकुक्षीत् । अग्ने परिचरणंसायप्रातः परिसमूहनपूर्वंचायुष्य कारणं नैनसमि-
 दाधानम् ॥ गुरुशुश्रुषापुरो शुश्रुषापरिचरिताकुर्यात् । भिक्षार्थंचयामिक्षाचयामैक्षारणभित्तियावत्-
 मधुंक्षीद्र, मां पललमञ्जनंनधाद्वाप्लवग्म्, स्नानंनृद्वतोद्वेकउपरिखटवादीआसनमुपवेशनम् ।
 आगनसोपरिससृक्वासासेवा स्त्रीगमनस्त्रीणामध्येभवस्याम्, अग्निगमनस्योपरिवक्ष्यमाणत्वात्,
 अत्रामसत्यनदनमन्तानापद—व्याणा आदानं ग्रहणं स्तेयमित्यर्थं एतानिमग्धादीनिवर्जयेत्
 (अष्टाचत्वरिदंशद्वयर्पाणि वेदब्रह्मचर्यं चरेत् । १३ ॥) अग्निरधिकानि
 चत्वारिंशत् अष्टाचत्वारिंशत् तानि र्पाणि ब्रह्मद्वानि वद ब्रह्मचर्यं वेदं ग्रहणाथं
 ब्रह्मचर्यमुत्तलक्षणम् चरेत् अमुदिष्टेन अस्मिन्पक्षे चतुर्णामपि वदानामेवैव व्रतादेश ॥ सर्वं
 वदा हुति होमश्च । (द्वादस द्वादश वा प्रतिवेदम् । १४ ॥ यावदुग्रहणं वा । १५ ॥)
 अनुत्तपमाह—वात दुक्तौ द्वादश द्वादश यपणि प्रति वदम् वदे वदे ब्रह्मचर्यं चोदित्यनुवर्तते ।
 तत्राप्यशतौ यावद् ग्रहणम् यावद् वेदस्य वेदयो वदानावाग्रहणं । आचार्यात्पाठतोऽर्थतश्च
 स्वाकरणं तावद् वा ब्रह्मचर्यं चरेत् । (वासाँसि शाण्यं क्षौमाविजानि । १६ ॥) वर्णव्य-
 वस्थया परिधानवच्छायाह—त्राक्षण्यं क्षत्रिय विशा ब्रह्मचरिणां यथा सव्यं शाण्यं क्षौमा
 विकानि वस्त्राणि परिधेयानि भवन्ति—क्षत्र गणमय शाण्यं क्षौमं क्षौमा अतसी तद्विकारमयं-
 क्षौमं आत्रिकं अर्धमंस्य विकारः आत्रिकम् ऊर्णामयमित्यर्थः । (ऐश्वर्यमजिनमुत्तरीयं ब्राह्म-
 णस्य । १७ ॥) एणी धरिणी तस्याः इदं एणीयं अजिनं कृत्तिः उत्तरीयं भवति ब्राह्मणस्य ब्रह्म
 चारिणः ॥ (रौरवधेराजन्त्यस्य । १८ ॥) इदमृगं विशयं चिगमृगः इति प्रसिद्धं तथैदमजिनं
 रौरवन् ॥ राजन्त्यं चत्रियस्यात्तरीयं भवति—(अथ आज गच्यं वा वैश्यम् । १९ ॥)
 अजिनं गच्यं वा वैश्यं इदमजिनम्—अजिनं कृत्ति अथवा गच्यं वा इदं गच्यं अजिनं वैश्यस्योत्त-
 रीयं भवति (सर्वेषां वा गच्यमहति प्रधानत्वात् । २० ॥) पञ्चमः माह—सर्वेषां
 क्षत्रियं क्षत्रियं विशा गच्यमजिनं वा उत्तरीयं भवति वदा—भगवति गुण्यं अथियमन्, कुन्।
 प्रसन्नयत् ॥ गच्यंदि अजिनानां प्रधानम्, ऐश्वर्यमजिनप्रभृतीनाम्नेयादीनां गोः प्राधान्यं यत्.

प्रदूषा गव्यस्य चर्मणः । पुरुष सं वधित्वेन प्रधानत्वात्, तथा च धृतिः । तदेच्छायं पुष्पं गव्येतां
 त्यचमन्त्रैः इति ॥ (मौंजी रशना ब्राह्मणस्य ।२१।) (धनुज्यां राजन्यस्य ।२२।)
 (मौर्वी वैश्यस्य ।२३।) (हुलाभावे कुशाश्मन्तक वत्त्वजानाम् ।२४।) मौंजी मुंजः
 वृणविरुपः लम्बयी मौंजी रशना मेखला ब्राह्मणस्य ब्रह्मचारिणो भवति धनुज्यां वापश्यज्या
 गुणाः रसना राजन्यस्य ब्रह्मचारिणः मौर्वी वृण विशेषस्तन्मयी रशना वैश्यस्य भवति । मुंजस्या-
 भावेऽल्ले भ्राह्मणस्य कुशानां कुशमयी रशना भवति । धनुज्यां श्रभने क्षत्रियस्य अश्मन्तक
 मयी भवति । मौर्व्यभावे वत्त्वजी वैश्यस्य मुंजाभ वत्त्वदोष धनुज्यां मौर्व्य भावोऽल्लेकार्थः ।
 (पालाशो ब्राह्मणस्यदण्डः ।२५।) (वैश्वोरोजःदण्डः ।२६।) औदुम्बरोवैश्यस्य ।२७।
 (सर्वे वा सर्वेषाम् ।२८।) सच वेश संमितः षादादि वेश मूलावधि प्रमाणकः पालाशदंडो
 ब्राह्मणस्य । वैश्वः विश्ववृद्धोद्भवः क्षत्रियस्यदण्डलाट संमितः ललाटावधि प्रमाणोभू मध्यावधि
 रित्यर्थः । उदुम्बर वृकोद्भवो वैश्यस्य ब्रह्मचारिणो मुख संमितः । औष्ठपुटावधिः दण्डः । २८
 या सर्वेषां ब्राह्मण क्षत्रिय विशां ब्रह्मचारिणां सर्वं पालाश वैश्वोदुम्बराः अग्निदमेन दंडाभवन्ति,
 नियमोऽत्र नास्ति सुत्यालामे द्यःलाभ मुपादेयम् । (आचार्येणाहृत उत्थाय प्रति शृणु-
 यात् ।२९।) आचार्येण गुरुरा आहूतः आकारितः उत्थाय उर्ध्वोभूत्वा प्रति शृणुयात् प्रति
 वचनं दद्यात् ब्रह्मचारी । (शयानं चेदासीन आसीनं चेत्तिष्ठान्ते तिष्ठत चेदभिक्रामन्तं
 चेदभिधायन् ।३०।) चेद्विद्यमानं स्वप्नं ब्रह्मचारिणं गुरुराह्वयति तदासीन उपविष्ट सन्
 प्रति वचनं दद्यात् । असौ मुपविष्ट चेदाह्वयति तदा तिष्ठन् तिष्ठत यदि निदन्मुदिदमाह्वयति तदा
 अभि क्रामन् गुरुमभिमुखं दृष्ट्वन् प्रति शृणुयात् । अभिवादान्तमभिमुखमागच्छत्तमाचार्यः ब्रह्म-
 चारिण यदि आह्वयति तदा स ब्रह्मचारी अभिमुखं धावन् सन् ऽतिशृणुयात् (स पयं वर्त-
 मानोऽदमुप्राद्य वसतीति ।३१।) स ब्रह्मचारी एवमुपेक्षमाणेण ब्रह्मचर्ये वर्तमानस्तिदन्
 असुन स्वर्गं अथ इदं विद्वत् सन् वसति तिष्ठति । द्विरुक्तिः । ३१ ॥ (तस्यस्नातकस्य
 कीर्तिर्भवति ।३२।) तस्य ब्रह्मचारिणः स्नातकस्य समावृत्तस्य कीर्तिर्विशो भवति । (प्रयः स्ना-
 तकाः भवन्ति विद्यास्नातको व्रतस्नातको विद्याव्रत स्नातकः, इति ।३३।) त्रयः
 त्रिप्रकाराः स्नातकाः भवन्ति कथं एको विद्यस्नातकः अपरो व्रतस्नातक अन्यो विद्याव्रत
 स्नातकः (समाप्य वेदमसमाप्य व्रतं यः समावर्त्तते स विद्यास्नातकः ।३४।)
 (समाप्य व्रतं असमाप्य वेदम्यः समावर्त्तते स व्रतस्नातकः ।३५।) (उभयर्षं
 समाप्य यः समावर्त्तते स विद्याव्रत स्नातकः, इति ।३६।) समाप्य समाप्तिपठतोऽर्थ-
 तस्य अवसाननीत्या वेदं वेदम्य मत्र ब्राह्मणस्मिकामेव शारदां य समावर्त्तते स्नाति स ब्रह्मचारी

विद्याज्ञातका भवति एव समाप्य व्रत द्वादश वारिकादिक ब्रह्मचर्य असमाप्य असम्पूर्णमधील
 वेदं एकां शाखायां ब्रह्मचारी समावर्त्तते स्नान करोति स व्रतनातको भवति । उभय वेदं ब्रह्म-
 चर्यं च समाप्य अन्तनीत्या य स्नति स विद्याव्रत क्रातको भवति । (अ०पोडपात् वर्षा
 दुग्माद्यणस्यानतीतः कालो भवति । ३७ ।) (अ०ग्राह्याविर्त्तं श्राद्धाजन्मस्य । ३८ ।) (अ०अ-
 तुर्विर्त्तं श्राद्धैश्वर्यस्य । ३९) उपनयनकालस्य परमावधिमाह आपोऽशात् षोडशतवर्षात् प्राक्
 ब्राह्मणस्थविप्रस्यानतीत नश्रतीत उपनयनस्य काल समयो भवति । ब्राह्मणशितद्वाविंशतद्ब्रह्म-
 पूर्वचन्द्रियस्य, अक्षतुविंशत, चतुर्विंशतिवर्षादवर्षात् वैश्वस्य उपनयनकाल अनतीतो भवति भव-
 तीति सर्वैर्ग्रसम्ब यते (अत ऊर्ध्वं पतितसावित्रीका भवन्ति । ४० ।) अत पचदशात् एकविंश-
 तशतात् त्रयोविंशतशतवर्षादनुपनीता ब्राह्मणक्षत्रियवैश्या यथासक्यं पतितसावित्रीका पतिता-
 स्खलिता अथिकारभवात्त्रिंशत् सावित्री गायत्री येनैव तैपतितसावित्रीका भवन्ति सम्पद्यन्ते-
 नैना उपनयेयुर्नाभ्यापयेयुर्नयाजयेयुर्नचैभिर्ब्रह्महारेषु ४१) सतानुपतितसावित्रीकानुपनयेयु
 उपनयन सस्कारेण न सस्कृत्तुं शिष्या । कैश्चिदति क्रांत निषैवै रुपनी तानपि न अव्यापयेयु
 न वेद पाठ्यायेषु । तथा न याजयेयु । कैश्चिदति क्रांत निषैवै वैद मध्यापितानपि न याजयेयु
 न यज्ञं कारयेयु । एभि पतित सावित्रीकै अनुपनीतै रुपनीतैर्वा सह न व्यवहरेयु ॥ न व्यय
 हेतु (स्नानाशयनभोजनविवाहादिभि कर्मभिर्न व्यवहारं कुर्यु ॥—कालातिक्रमे-
 नियतवत् । ४२ ।) गर्भावातादीनि उपनयनान्तानि कर्माणि नियतकालान्यभिहितानि यदि देववशादा-
 स्तुरुषापरधाद्वा दोषाद्वा तैर्नियतस्य कालस्याति कर्मो भवति । तदा त्रिंशत् वर्षमिति मन्वह निर्णयमाह—
 पालातिक्रमेण सस्कारकर्मैश्च शस्त्रे नियमितेयं काल तस्यातिक्रमे लघने नियतवत् नित्ये-
 श्वीतकल्पेनित्येषु यद्विहितं तद्वत् अनादिष्ट प्रायश्चित्तं भवति । तत कृतप्रायश्चित्तस्य तिस्रस्तले-
 संस्कारकर्मैश्चिकार सम्पद्यते । अनादिष्ट प्रायश्चित्तेपि कालव्यत्ययं चमकडिकान्तेरुच्यते । अत्रका-
 लातिक्रमश्चतुषलक्षणम् अत अन्वेषामपिकर्मणां नाग्नेद्मनादिष्टमेव सर्वप्रायश्चित्तं श्लक्ष्णकारेण प्रायश्चि-
 तान्तम्यानुपदिष्टवत् । किंतु श्रौतनामतिदेशे प्राप्ते अविज्ञाते प्रतिमहाव्याहृतिभि सर्वभिरुच्यते सर्व-
 प्रायश्चित्तचेत्यस्यैव कालातिमनियतवदित्यनेनातिदेश कृतो ननु देशे श्लक्ष्णकारेण तत्राविज्ञानप्रत्यक्ष-
 धुनिमूलम् । विमिदमार्थं दिग्मसामैदिकयाजुर्वेदिकं चैत्यनिश्चि रमार्त्तवर्त्तयत्रेथे श्रौतकरपेव्याहृति
 चतुष्षट्पत्रं पारण होम प्रायश्चित्त मुदिष्टमत्र शृणुषुः श्लोका कर्मणामपि स्मार्त्तवत्तत्तद्भेदे
 तस्यै वाति पशो युको न पुन प्रत्यन धेद मूल कर्म भेदादिष्टानाम्—फाल्गुन्याम्—मु-य
 फालेनरै कर्म कर्तुं यदि न शक्यते, गौणकालेषु कर्तव्यं तदनादिष्टं कर्म ॥ (त्रिपुष्य पतित
 सावित्री पाणामपत्य स ७० स्कारो ना ध्वपां च । ४३ ।) इदानीं पतित सावित्री नित्ये

संस्कार प्रति प्रथममाह त्रिपुर्यं नीन् पुर्यान् यान् वे परित्तमाविश्रीकाः पितृ पुत्र पीनः तेषाम-
पत्ये पुत्रे संस्कारः उपनयन भवति, न पुनश्चतुर्थदीनम् । तेषां च उपनीतानामपि, अध्यापनं न
भवति, निषिद्धस्य पुनरनुशापनं प्रति प्रसव इति । उपनयनस्यैव प्रति प्रसवात् ॥ (तेषां च स चं
स्कारेषु प्रात्य स्तोमि नेष्ट्वा काममधीयीरन्वावहार्या भवन्तीति वचनात् ६४॥)

तेषां सावित्री काणामध्ययः संस्कारयितुं कामः स ताल्य स्तोमिन यत् विशेषण इष्ट्वा प्रात्य रतोमं
यत् कृत्वा ध्यवहार्यो भवति उपनयनादि संस्कार योऽथो भवति, तस्मात् काममिच्छया प्रात्यस्तोमि
जेठवा अधीयीतन् वेदं पठेत्, व्यवहार्याः लोके दिष्टाना मध्यापनादिषु कर्मसु योग्याः भवन्तीति
वचनात् ध्रुतेः । इति पंचमी ऋषिडका । अध्वेदानी मंडःकार्यः पश्चि सावित्रीक ।

विषय प्रसंगात्-स्मृत्यं तरीका अपि असंस्कारा लिखन्ते ॥ पं-अध्वधिरस्तव्यं जटग्द्ग्द पंशु
कुञ्ज वामन रोगार्तं दुष्कागिदिनलाङ्गिषु ॥ प्रयोग परिजायते—ब्राह्मणया ब्राह्मण्यतो ब्राह्मणः
स इति श्रुतिः तस्माच्च पंड्यधिरकुञ्ज वामनपंशु जटग्द्ग्द रोगार्तं शुष्वाण विषलागिषु ।

मत्तोन्मत्तेषु मूयेषु शदनस्थे निरिन्द्रिये । ध्वस पुंस्त्वेषु चैतेषु संस्काराः स्तुर्यधोचितम्—मत्ते-
न्मत्तो न संस्कारां विति वेचितप्रचक्षते । कर्मस्वन धिकारश्च पतित्यं नास्ति चेतयोः ॥
तदपत्यं च संस्कार्यमपरस्वाहुरन्यथा ॥ संस्कार भद्रहोमादीन् करोतुकार्यं एवु आनीरामि समीपं
वा सावित्रीं स्पृश्य या जपेत् ॥ कन्यास्विकरणादयत्तत्वं विप्रेण कारयेत् । एवमेव द्विजैजितौ-
सेकार्यौ बुशडोलो ॥ इमूत्तथसारंवेचम् आपरतमयः—शुभ्राण मष्ट वर्मणासुनयम् ॥ इदं

च श्व कारस्याप नयनम् तस्य च मातामही द्वास्वं श्त्वं अष्ट कर्मया रचयानादि महितामिति
दिष्णु — नापरंक्षितं याजयेत् अध्यायेनोपनयेत् । अत्र शौनवः—अ रभ्यायान गाचौलत्क लेड-
तीतिष्ठु कर्मणम् आहृत्यात्थं सुसंस्कृत्य दुत्तवर्षं २५५ क्रमम् ॥ एतंकेके खोपेत् पाद कुच्छं
समाचरेत्—बृढाया अर्द्धं कुच्छं स्यादापदीत्येव गौरतम्—अनापादि तु सर्वत्र द्विषुं त्रिषुषं
चरेत् ॥ लुपते कर्मणि सर्वत्र प्रादक्षिण्यं विधीते । प्रादक्षिते कृते पथात् ल्लुपं कर्म समाचरेत् ।

आश्वलायन कारिकायान्—प्रायश्चित्तेश्चेत्तीतं कर्म कृतावृत्तमित्युचम्—प्रायश्चित्ते कृते पथादती-
तमपि कर्मये ॥ कार्यभिरत्येके, आचार्याः नेत्यन्येत् विपश्चितः—मंडनस्तु कालातीतिषु सर्वेषु प्राप्त
वस्वपेषु च कालातीतानि वृत्तैश्च विदध्या दुत्तराणि तु—अथ पुनरुपनयनमाह—मनुः अज्ञाना-

त्वाय विष्णु मूर्त्तं मुरा संछमेव च । पुनः संस्कार मर्हति त्रयो दणां द्विजातयः । “चंद्रिकायां
श्रीचायनः” मित्नु सौ वोर सौ राश्रन् तथा इत्यन्तवासिनः, अयंन कलिगांध गत्या संस्कार-
मर्हति—हेमाद्रौ पादो—प्रेत शय्याप्रति ग्राही पुनः संस्कारमर्हति वृद्धमनु—जीवन् यदि
गमगच्छेद् दृष्ट पुम्भे निमच्य च । उच्यते स्थापयित्वास्य जात कर्मादि कारयेत्—मिताक्षरा-

यां पराशरः—यः प्रत्यवासतो विप्रः प्रव्रज्यातो विनिर्गतः—अनाशकनिवृत्तधर्माहंस्थं चैविकीर्षितं—
 राचरे त्रीणि कृच्छ्राणि त्रीणि चान्द्रायणानि च । जातकर्मादिभिः सर्वैः संस्कृतः शुद्धिमाप्नुयात्—
 शतातपः—लगुणं गृह्णन् जग्ध्वापलाडुं च तथा शुनं ॥ उष्ट्रं मानुषं के भक्ष्यं रासभी क्षीरं भोज-
 नात् उपासनं पुनः कुपंरिप्तं कृच्छ्रं चरेत्सुहुः । विश्रथली सेती—कर्म नाया जलरक्षितं
 करतोया विलंघनात् ॥ गंडकीवाहु तरणात् पुनः संस्कारमर्हति—इति पुनरुपनयनम् ।

अथ वेदारम्भ सूत्र व्याख्या ।

सूत्र क्रमेण ब्रह्मचर्यवर्तिव्रत निरूपणप्रकरणे (अष्टा चत्वारिंशद्वर्षाणि वेदब्रह्म-
 चर्यं चरेत्) कां० २ कं० ५ सू० १३ पा० ४० (द्वादश द्वादश वा प्रति वेदम् । १६)
 वेदभ्यामे नैव ब्रह्मचर्यं चरेदिति निरूपितम् । वेदारम्भ कर्मणः पृथक् काल कर्मणि बोधे
 उपनयन निरूपणा नंतरं समावर्तन कर्मैव सूत्रितम् । वेदसंस्माप्य स्नायात् कां० २
 कं० ६ । पा० ४० सू० ॥ अत्र सूत्रे वेद समार्पितं किनासमावर्तनस्यावधिकारः सम्पद्यते—अतः
 उपनयनान्तरमेव वेदारम्भ कालोऽथ गम्यते अतः उपनीय रुद्रः शिष्यं महाध्या हृतिपूर्वकम् ॥
 वेदमध्यापयेदेनं शौचा चारथिं द्दिक्षयेत् ॥ अथ्यदनारंभरतु प्रथमं एव वेदस्यैव कार्यः—
 उक्तं च संस्कार प्रज्ञाशे वशिष्टः—यच्छास्त्रीयैरु संस्कारैः संस्कृतो ब्राह्मणो भवेत् । तच्छास्त्रा
 ध्यानं धर्ममन्यथापतितो भवेत् । अधीत्यशास्त्रामरगीयां परशाखां ततः पठेत् । पारपयगनो वेधावेदः
 सपदिबृंहणः । तच्छास्त्रं कर्मकुर्वीत तच्छास्त्राध्ययने तथा । सर्वमध्ययनं कुर्वन् ब्रह्मसत्युच्यमानोऽप्युच्यते—
 एतदेव व्रतवैशालं विस्मयं । इति उपाकर्म होमादिदेशाद्वादेशनेवेदारम्भे प्राप्नोति । इति गुरोः
 उपादनान्तरं देदाध्यापन विधानाच्च उपनयनोत्तरं बालं पुण्येदंनि मातृपूजापूर्वकं वेदारम्भं नितित्तमाभ्यु-
 द्धि कं प्रादुर्भावाद्यो विधाय उपादान्तरं संस्कारेण वा पंचमं संस्कारपूर्वकं लौकिकानिर्वाहापरित्या-
 गब्रह्मचारिणमाह्वय—अग्नेः पश्चात् स्वस्वोत्तरतः उपवेश्य ब्रह्मोपवेशनाय अथ भागान्तं हुत्वा, यदि-
 सिद्धेदमारभते तदापृथिव्यै स्वाहा भूतये स्वाहा इति द्वेभ्याम्याहुती हुत्वा—ब्रह्मणे हृन्दोभ्य इत्याद्यानवा-
 हुती हुत्वा शेषं समाधेत यदियदुपैदं तदाज्यभागान्तरं अन्तरिक्षाय स्वाहा, वायवे स्वाहेति विशेषः । मदा-
 समवेदं तदाभ्य भागान्तरं दिदे स्वाहा सूर्यय स्वाहेति विशेषः । यदापयवेदं तदाज्यभागान्ते, दिग्भ्यः
 स्वाहा—यन्द्रक्षेत्रे स्वाहेति विशेषः एतेषु च सर्वेष्वेदारम्भ स्वदाभ्यभागान्तरं ब्रह्मणे प्रतिवेदं धदाहुति
 द्वयं द्वयं हुत्वा ब्रह्मणे हृन्दोभ्यः इत्याहुतिद्वयं च हुत्वा । प्रजापतये इत्याद्याः गममन्त्रेण जुहुयात् ।
 अन्तरं महाप्याहृदि सिद्धेदं तदा दशाहुती हुत्वा प्राशान्विधाय पूर्णपत्रपरयोग्यन्तरं ब्रह्मणे

देवा अंशचारिणे यथाविधिवेद मथावधितुवारभते । शेषाद्दत्तोस्त्वष्टम् । इति वेदारम्भ मतवत्
नित्यंणम् । अत्र गदाधर भयकारेण ब्रह्मपरि मतलांवे प्रायश्चित्तम् आग्नेयं शुक्तिवम्, अंश-
निवर्दं । शीलभं । गोदानंवेति पच व्रत ऋत्विजानि ग्रन्थविस्तार भयादिह नोच्यन्ते तत एवजातव्यानि ।

(अथ समावर्तन सूत्रव्याख्या)

—*—

(वेद ऽं० समाप्यस्नायात् ॥१॥) ब्रह्मचर्यं वा ऽष्टाचत्वारि ऽं० शकम् ॥२॥
वेद मंत्रब्राह्मणात्मक समाप्यसम्यक् पाठितोर्थश्चान्तं नीत्यास्नायाद्दत्तय माण्डनविधिना स्नानं
कुर्यात् अथवा ब्रह्मचर्यं व्रतं अष्टाचत्वारि ऽं० शकं अष्टाचत्वारिंशद् वर्षं निवर्त्य समाप्यश्रवसानं
प्राप्य गुरुणानुमतः स्नागादिनि सम्बन्धः (द्वादशकैप्यके ॥३॥) एकं सूत्रकारः द्वादशकैपि
द्वादशवर्षं समाप्येऽपि स्ते, चरिते स्नायन्त्यनुषज्यते । (गुरुणानुशातः ॥४॥) अशसूचित्त
मपि उभयवेदं व्रतं च वसन्त्य स्नायन्त्यनुषज्यते यतः पूर्वं क्लृप्तकश्चिद्विद्युक्तम् (विधि-
विधेयस्तर्कश्चवेदः ॥५॥ वेद ऽं० समाप्य स्नायात् इत्युक्तं तत्रैव शब्देनैकमुच्यते इत्यतःब्राह्म
विद्यते इति विधीयते इतिवाविधिः दर्शपूर्णमासाभ्यां यजेत् । अग्निहोत्रं जुहुयात् इत्यादि विधायक
ब्राह्मणमन्त्रम् । विधयितेविनियुज्यते ब्राह्मण वाक्येन कर्मागतवेनेति विधयो मंत्रः इत्येवाः तर्क-
शब्देनार्थवादोऽभिधीयते यथाशक्ताः शर्करा उपदधातितेजीवैरुतम्, इति अञ्जने तैलवसादिनापि
संभवति, तत्र तेजोर्वृतमित्तिषुत संस्तवात्तवर्षते घृताक्ताः इति तेनविष्यर्थः कादमत्रा त्रिदशब्देना-
भिधीयन्ते इत्युक्तम् तर्करूपभागमितिभर्तुयज्ञः । तर्कमीमांसितिकल्पतदः च शब्दाप्रामथेयसंग्रह
इति हरिहरः (पडंगमंके. ॥६॥) एकं सूत्रकारः पडंगवेदं समाप्यस्नायादित्याहुः । परं जिज्ञां
कल्प व्याकरणं निरुक्तः जीतिपद्धन्दास्यंगानियत्यवेदस्यपंगः तेषडंगम् । (नकल्पमात्रे) कल्प-
मात्रे अथमात्रे मन्त्रे वा ब्राह्मणे वा अथोते न स्नानमिच्छन्ति । कल्पमात्राध्यनस्य अनुपानायो-य-
त्वंत् । यतः अथातोऽधिकार अथातोधर्मजिज्ञासा, अथातोब्रह्मजिज्ञासा, इत्यादिभिरधिकारसूत्रैः
अथोतस्फुल्लवदस्याजि होत्रादिकर्मस्त्वधिकार, इत्याचोर्ध्वैर्यते (कामानुयायिकस्य ॥७॥)
हुशब्दः पञ्चव्याहृतौ । काममिच्छया यत्किञ्चिद्व्यस्य अथवर्षवादिद्यज्ञ विद्याकर्मकुशलस्य स्नानमिच्छन्ति
अथमर्थः मंत्रब्राह्मणात्मकवेदमन्त्रोत्थं अवबुध्यच स्नायादित्येकः पक्षः सांगं वेदमधीत्यानुष्य च
स्नायादिति द्वितीयः अथमन्त्रमध्यधीत्य यं प्रियां चाभ्यास्य स्नायादिति तृतीयः, यज्ञविधाविर-
हेणमन्त्रमात्रे अत्रोते न स्नायादितिनिर्देशः । यतोवेदाध्ययन वेदविहितमिहोत्रादि कर्मायुक्तान
प्रयोजनम् । (उासंगृह्य गुरु ऽं०समि त्रोऽभ्याधायापरिधितस्तयोतरतः कुशेपुप्रागमेपु
स्थित्वा अष्टाना मुदकुम्भानांयं अष्टयन्तरानयः प्रविश्यागोहृद्यउपगोहृथीमयूक्षौ

सोमीराजायमागमत् । सममुपमप्रमादयतेयशसाचभगेनचइति । १२१) ततोऽधि-
 तिलानमन्त्यतत—प्राश्यमाशित्वाऽत्राश्च लोमानिच नराग्नियजटालोम नगान्तिभि संख्येष्ट्यर्थ
 चापधित्तेत्यर्थ । (संख्येति षिचो लोपेष्ट्या-व्य) स्वयसंहर्तुमवत्त्वत् । औदुम्भेणद्वादशाहुत
 सम्मितेन कनिष्ठिकाप्रयत्स्युत्तेनउदुम्बरका तेन अत्राय यवपू-धमितिःपन्नेण वन्तावययेत्प्रचारायेत् ।
 प्रज्ञाणोद्वादशाहुतेन, राजन्योदश हुलेन, वैश्योऽष्ट हुलेन, इति विशेष इत्रजटा तांम नरा तपन
 निमित्ता हुत्तरधनु एनादेति—पुन शब्दयामभ्यांश्चस्नात्माप्यते । अतोऽभानन्तरंस्नानाचमन विधाय
 द्वात्रिंशत्पञ्चदशविंशतिस्त्रिंशत् । (उत्साद्यपुनःस्नात्वाऽनुलेपनम् नामिजयोमुत्तरस्यचोप-
 गृहीते । प्राणापानौमेतर्पयच्चर्षेतर्पयश्चोर्जमेतर्पय इति । १२३) उत्साद्युगन्धिद्रव्यस्य
 शरी मुद्गवर्त्यपुनर्भूय रनातासिर प्र-तीक्ष्णानिप्रक्षाल्य अनुल्बनंचन्दनदि मुरानाधिकोश्चउप-
 गृह्णति । मुग्गनामिर्जावाऽनुलिप्यति । प्राणापानौमेतर्पयत्याग्नि । धामेतर्पयदित्फन्तेनन्त्रेण ।
 पितर शु-ध्वयमितिपारथोरवनेजवं दक्षिणांनिषिच्यानुलिप्यजपेत् सुनक्षाअहमर्हो
 भ्यांभूयासर्तंहुवर्चांमुर्गे सुशुक्लांभ्यांभूयासमिति १२४) तत पाण्योरवनेजम्—
 हन्त्यो प्रक्षालनमुर्कंतिपु-वयन्तिवन्तेनन्त्रेण प्रार्थनातीती दक्षिणाभिमुखो-भूया । दक्षि-
 णस्यादिति निषिच्यप्रतिपद्य यत्रोऽधीतीभूया पितृर्मर्कणनिमित्तं नदवस्पर्शविधाय चंदनार्ना-
 सुग्निद्रव्यस्य ग प्राणदनुलिप्य । कुचक्ष अहमजीभ्यामिवादि भूयासमिति—अन्तं मन्त्रं जपेत् ।
 (अहत्तंवासांधीतमूषमौनेणाच्छादयीत—परिधास्यै यशोधस्यै दीर्घात्वाय जरद-
 ष्टिस्मि । शनचर्जावामिशरद पुरुचीरायस्पोपममिसंख्ययिष्य इति । १२५) ततः
 अ-तंनवेम-शपवित्रेव स वसनम्, आ-च्छादयीतपदिधीत । तन्लाभेअमा-त्रेण अरजवेणधीतंक्षालितं ।
 परिध्र स्याद्व्यादिनाअभिमन्वयिष्य—इत्यन्तेनन्त्रेण (अर्थांसरीदम्—यशसामाधावापृथिवी
 यशशे-द्रावृहस्पती । यशोभगस्वमादिन्द्रशंामाप्रतिपद्यतामिति । १२६) अथपरिषेय
 पन्धनन्तर ताङ्गमेव, त्तयवास यशमरेत्यादि यशोपाप्रतिपद्यता मित्यन्तेनमन्त्रेण अच्छादयीत
 पूरणसम्भव । (एकंचेत्पूर्वस्यांसारवर्गेणप्रच्छादयीत । १२७) चेद्यदिपूर्वमेववासोभवति
 तदपूर्वमेव परिधानीयस्वव सम उत्तरवर्गेणउत्तरभागे प्रच्छान्तीयत पूर्वतिनैवमन्त्रेण । (सुमनस-
 प्रतिगृह्णति—याद्वाहुरजामदग्निः अजायै मयायै कामादन्द्रियाय ताअहंप्रतिगृह्-
 णामि यशसाचभगेनचेति । १२८) सुमनस पुपाकिप्रतिष्ठाणाति अन्धनरसन्त्यात्तेया
 आहर नित्यादि ग्जमाच भजेन येत्यन्तेन मन्त्रेण । (अथवा यधुनंते
 यद्यसोपरमा मिन्द्रश्चकार विपुर्न पृथु तेन सप्रयिता सुमन
 सः मावभ्रामि यशो मयीति । १२९) अथता प्रति गृह्य अथवर्णाततिरिति वध्नाति, यद्यशोऽ-

मरसा मिति मन्त्रेण (उष्णापेण शिरोवेष्टते-युवासुवासेति ।२०।) उष्णीषेण पूर्वाक्त लक्षणेन तृतीयेनवससा शिरो मूर्द्धनं वेष्टयते । युवा युवारा इत्यादि कथा देवयन्त इत्यन्तयत्वा ॥ (अलंकरण मस्ति भूयोऽलंकरणं भूयादिति कर्णवेष्टनौ ।२१।) अलकरणमसीति मन्त्रेण दक्षिणे त्तरी कर्णयो वेष्टनौ भूदणे प्रति मंत्र प्रति मुचते परिवृत्ते । (वृत्ररयेत्यङ्के िक्षणि ।२२।) अस्तेत्याग्निा चक्षुमवेहि इत्यन्तेन मन्त्रेणद्वाकम् दक्षिणव मे मन्नात्त्या अक्षिणी अक्ते सौवीराननेनगस्त्रोति ॥ (रोचिष्णु रसीत्यात्मानमादर्शं प्रेक्षते ।२३।) रोचिष्णु रमि इत्यन्तेन मन्त्रेण आत्मान मुख प्रमृति शरीर-आदश-दर्पणे प्रक्षते पश्यति । (छत्रं प्रति गृह्णाति-वृहस्पते ष्टुदिरसि पाप्मनो मामन्त धेहि तेजस्ये यशसो मा-तर्धेहीति । २४।) छत्रमातपत्र वृहस्पतेऽष्टुदिरसि, इति मन्त्रेण पठिष्यति ॥(प्रतिष्ठेस्थो विश्वतो मापात मित्युपानहौप्रति मुञ्चते । २५।) प्रतिष्ठेस्थो, इति मन्त्रेण उप नहीं पाद तणी पादयो प्रति मुचते मंत्रस्य द्वित्रचन्द्रत्वात् परिधातु शशस्त्वाच्च युगपत्पादयो प्रतिमुचते ॥ (विश्वाभ्योमा नाष्टा भ्यस्परिपाहि मंत्रं इति वैमानाष्टाभ्यस्परिपाहि सर्वत इति दण्डं दंडमादत्ते ।२६।) विश्वभ्य, इत्यनेन मन्त्रेण वैश्वं, वरामय दण्डयष्टि आसते त चोत्त-यायेन पूर्वदण्डं त्यस्तैव, इदमभिपन्न प्रथमि दण्डप्रदण्ण त, कर्मन्त स्तन कर्ता करोतिनाचार्य (दन्तप्रक्षाल-नाद्रीनि रित्यमधिवाम ष्टुजोपानहञ्जापूर्वाणि चेन्मन्त्र । २७। ६] दन्तप्रक्षालन-मद्री वेपां पुष्पादीनां तानि दन्तप्रक्षालन दीनि नित्यमपि सर्वदा मनयन्ति स्त ताप्य भवति, वससोच ह्यं च उपनही च व सगृहोपानहं चक्ररादण्डेपि सतानि चेद्यदि अपूव णि नूतनानि ध्रियन्ते गृह्यन्ते तदा मन्त्रो भवति तद् ग्रहणे । २७। इति पृष्ठी कण्डिका ॥

अग्रे सप्त यशयो बंक्षियो आच यण स्नातक नियमनित्वां कृतं सूत्र व्यत्या प्रसतात्तेष-मपि—अत्रसग्रहो भवितुमर्हति परञ्च समापर्तनपद्धतौ एनातकं छ प्रति आचार्यस्योप देशत्वात् रिष्ठेयशंमत्वा ग्रन्थविस्तार भणाय स्नातकस्य नियमान् प्रयोगे वक्ष्ये ॥

॥ इति समापर्तन सूत्र व्या या ॥

—*—

॥ अथ उपनयनसंस्कारपद्धतिः ॥

तत्रब्राह्मणस्याष्टवापिकस्य क्षत्रियस्यैकादश वापिकस्य वैश्यस्य द्वादशवापिकस्यवा मङ्गलसंन्यासुपनयनम् । अथोत्तरायणे पूर्वोक्त पुण्येहनि गणेशादि पञ्चांगपूजापूर्वकमाभ्युदधिकंश्राद्धं कृत्वायथा-

शक्त्या—ब्राह्मणान्गायत्रीनवग्रहादीनां जपकरणार्थवृत्तावह्निः
पूर्वाक्तांपोडशस्तम्भनिर्मितांशालांसम्पाद्यतत्र सर्वतोभद्र, ग्रह-
यागभद्र वास्तुभद्रादींश्चनिर्माय सम्पूज्यच उपनयनात्पूर्वंऽन्हि
ग्रहमखंभृत्वाहोमं समाप्ययदिकुमारः पूर्वाक्तसूत्रोक्तवर्षेभ्य उप-
नयनप्रारम्भ्यतीतकालोवा पतितसावित्रीको वाजन्मादिचूडाकरणा
न्तसंस्कारहीनश्चेत्तदा अनादिष्टसंज्ञकं प्रायश्चित्तमाचरेत्, तस्या
यंप्रयोगः—अथ अनादिष्टप्रायश्चित्तपद्धतिः—अथाचार्यः उपन-
यनात्पूर्वाहेवदुनासह गणेशादिपूजास्थलमागत्य—आचम्यप्राणा-
नायम्यप्रणम्यच—संकल्पंकुर्यात्—अथेत्यादिदेशकालौसंकीर्त्य—
अमुकोहंममास्या मुकराशेरमुककुमारस्य, गर्भाधानपुंसवन सीम-
न्तजातकर्म नामकरण निष्क्रमणाभ्रप्राशन चौलकर्मन्तानां संस्का-
राणां कालातिपत्तिदोषनिवृत्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अनादिष्ट
प्रायश्चित्तहोमंकरिष्ये ततः पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निं स्थापयित्वा
कुशकंडिकाविधिनासमित्प्रक्षेपणान्तं कर्मकृत्वा नवाहुतीर्जुहोति—
ॐभूःस्वाहाॐभुवःस्वाहाॐस्वःस्वाहाॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहा त्व-
न्नोअग्ने सत्वन्नोअग्ने६अगारवाग्ने ७येतेशातं८उदुत्तमं९इतिनवा-
हेति होमात्मकं प्रायश्चित्तंकुर्यात् । चौलातिरिक्त संस्काराणां प्रमा-
दादकरणेप्रत्येकं पादकृच्छ्रं तस्मिन्नेवाग्नौ प्रतिसंस्कार नवाहुति
होमं पृथक् पृथक् संकल्पं कृत्वा सकृदाचरेत् । चौलाकरणे कृच्छ्रं
वदुनाकारयेत् । अशक्तौतत्प्रत्याम्नायत्वेन दशसहस्रगायत्री जपः
जपदशांश तिलाज्याहुतिहोमं गौदानं द्वादश ब्राह्मण भुक्त्यादि
प्वेकं प्रायश्चित्तं कारयित्वा अतीनजातकर्मादीनि कृत्वोपनयन
तंत्रं समाचरेत् । अथोपनयनेनसह चौलकरणविधिः । यदि उप-
नयनेनसह । चौलकरणं चेत्तदापूर्वेषुः संस्कार द्वयंसंकीर्त्य युगपत्
स्वस्तिवाचन ग्रहयज्ञ नान्दी श्राद्धादीनि कृत्वा तद्दिनेरात्रौ पूर्वां
क्तकेशाधि यासनविधिना केशजूदिकागोदानान कृत्वा परेषुः
पूर्वांक्तं चौलप्रयोगं विधियत्सर्वकृत्वा तत्रश्चौलान्त संस्कारान्ते
कुमारस्य उपनयनानिमित्तकं वपनं कृत्वा वक्ष्यमाणविधिना उप-
नयन संस्कारमाचरेत् । इत्युपनयनेनसहचौलकरणम् ।

अथोपनयनपद्धतिः

अथच शुभेहिजोतिर्विदादिष्टेप्रातःकुमारस्यवपनंकारयित्वा मंगल
 स्नानंहरिद्रादिभिःकारयित्वागणेशसन्निधायुपगम्य,आचम्य प्रणम्य
 च पूर्वदिने अकृतप्रायश्चित्तश्चेत्तदा कुमारेणापि कामाचार कामा
 वादकामभक्षणादिदोषापनोदनार्थं प्रत्याम्नायीभूतंकृच्छ्रत्रयं कार-
 येत्ततः कृच्छ्रत्रय प्रत्याम्नायी भूतानि त्रीणि सुवर्णग्वण्डानिवा
 प्रत्याम्नायीभूत द्रव्यं तिलोपरि पात्रे धृत्वा गंधादिना सम्पूज्य
 ब्राह्मणं च सम्पूज्य संकल्पं कुर्यात् । अथेत्यादि अमुकराशिर-
 मुक शर्माहं कामाचार कामवाद कामभक्षणादि दोषानुपत्तये
 स्वस्य च उपनेयत्व सिद्धये कृच्छ्रत्रय, गोत्रय, निष्कयी भूतानि
 सतिलानि सुवर्णग्वंडानि वरजित मुद्रिकाः अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय
 दास्ये । ३० तत्सन्नममेति दद्यात् । शक्तश्चेद् गोदान त्रयमेकं
 वा कुर्यात्—अथेत्यादि संकीर्त्यह्यमुकोहं—ममास्य कुमारस्यो
 पनयनकर्मणि तत्पूर्वागतयात्रीन्ब्राह्मणानहं भोजयिष्ये—तत्पंक्तौ
 वटुं च पयसादिना भोजयेत् । भोजनोत्तरं वटुं स्नापयित्वा-
 अथाचार्यः पिता (क्षत्रियवैश्ययोस्तु पुरोहितादयः) उपनयन
 वेदीसमीपमागत्य उपनयन सामग्रीं सम्पाद्य उपनयन वेद्यां
 दक्षिण हस्तेन कुशैः परिसमुह्यपूर्वं क्षिप्त्वा गोमयोदकेनोपलिप्य
 सुवमूलेन प्रागग्रास्त्रिंशो रेखा विलिरय, उल्लेख्यन क्रमेण नामि-
 कांगुष्ठाभ्यामृदुमुध्दल जलेनाभुक्ष्य तैजसपात्रोपनीतमग्निं वेद्यां
 स्वाभिमुखे संस्थाप्य तदरक्षार्थं द्रव्यं नियुज्य अग्नेः पश्चान्
 स्वासने उपविश्य ततः पर्युक्त शिरसमलं कृतं कुमारं वाद्यध्वनि
 मंगलपाठ पुरः सरं मण्डपस्य पश्चिम द्वारेणशालायां प्रदक्षिण
 मग्निं परिक्रममाणं आचार्यसमीपमानयति । तत आचार्यः कुमारं
 स्वदक्षिणभागोऽग्नेः पश्चान्दुदङ्मुग्य मुपवेशयेत्—संकल्पं कुर्यादा-
 चार्यः अथेत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकोहं ममास्य पुत्रस्य
 (शिष्यस्य) वा बीजगर्भं समुद्भवैनोनिवर्तणं पूर्वक श्रौतस्मार्त

कर्मानुष्ठान सिद्धि द्वारा, ब्रह्मवर्चाभि वृद्धये श्रीपरमेश्वर प्रीतये
 षोडश संस्कारान्तर्गतोपनयन संस्कारं करिष्ये—ततो माणवकः
 स्मार्त्ताचमनं कृत्वा उदङ्मुखेन वद्धांजलिः सन्नाचार्यं प्रेक्षते ।
 ततः आचार्यो वद्धांजलिकुमारं प्रति ब्रूयात् । ब्रह्मचर्यं मागाम्,—
 इतिप्रेषयति, ततो वटुः ब्रह्मचर्यमागाम्—इति वदेत् ॥ पुनरा-
 चार्यः, ब्रह्मचार्यसानीति पृच्छेत् वटुः—ब्रह्मचार्यसानीतिब्रूयात् ॥
 अथैनंवासः परिधापयत्याचार्यः । नन्नाचार्यः पठेत् ॐ येनेन्द्रा
 येत्यंगिरा ऋषिर्बृहती छन्दोवृहस्पति देवता वासः परिधाने
 विनियोगः ॥ ॐ येनेन्द्रायवृहस्पतिर्वासः पर्यर्द्धधादमृतम् ॥
 तेनत्वापरिर्द्धधाम्यायुषे, दीर्घायुत्वायवलाय चर्चसे, माणवकाय
 द्विराचमनं कारयेत्, अमन्त्रकम् ॥ ॐ ततो माणवकस्य कटि प्रदेशे
 सूत्रोक्तां मेखलां मौज्यादिकां आचार्यो बन्धीते, माणवकस्यैव
 मंत्रपाठः । इयं दुरुक्तमिति वामदेव, ऋषि ऋषुप्लुन्दो मेखला
 देवता मेखलाबन्धने विनियोगः ॥ ॐ इयं दुरुक्तं परिधापमाना
 वर्णपवित्रं पुनतीमऽद्यागात् ॥ प्राणापानाभ्यां बलमादधानारवसा
 देवीसुभगामेखलेयम् ॥ इति कटिप्रदेशे मेखलां त्रिरावेष्ट्य प्रवर
 संख्ययाग्रंथीः करोत्याचार्यः । युवासुवासः इतिमंत्रेण मेखला
 बन्धनम् तृष्णीं वा (अत्र सूत्रकारेण शिखा बन्धनं नोक्तम्—परंच
 सदोपवीतिनाभाद्यंसदावद्भुशिखेन च इतिकात्यायनः । स्मृत्वां-
 कारंचगायत्रीं निवध्नीयाच्छिखां ततः इतिनागदेवः इत्याचार्यो
 गायत्री मंत्रेण वटोः शिखाबन्धनं करोति ॥ अत्रावसरे सूत्रकारेण-
 यज्ञोपवीताजिनधारणेनोक्ते, तथापि दंडाजिनोपवीतानिमेखलां
 चैवधारयेत्, याज्ञवल्क्यः—विभृयादंड कौपीनोपवीताजिनमेखलाः
 इति व्यासः । इति प्रमाणाभ्यां तेकार्ये) अथ यज्ञोपवीतधारण
 प्रयोगः (उक्तंचलुन्दोगपिरिशिष्टे—संकल्पः अथेत्यादिदेशकालौ-

* मेखला एतद्दृष्टास्या द्जिनं तु द्विहस्तकं । पहिताम् अंगुलं च संकेतं वा त्रिसंख्यम् ।
 त्रिवृता मेखला कार्या त्रि रंस्यात्समायुता । तद्मध्यस्यैव कार्या पंध्यासप्तवा पुन ॥
 अत्र प्रवरगंग्या नियम इति वृत्तः ।

संकीर्त्य अमुकोऽहं ममास्यपुत्रस्य शिष्यस्य वा श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठान सिद्ध्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीतये उपनयन संस्कारकर्मणि वज्रोपवीताभिमंत्रणं करिष्ये ततः पूर्वोक्त प्रकारनिमित्त यज्ञोपवीतसूत्रे आदाय ३० इदं विष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिः विष्णुर्देवता गायत्रीछन्दः सूत्र त्रिगुणीकरणे विनियोगः ३० इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रे धानिदधेपदम् । समूढमस्यपाँसुरे स्वाहा इति मन्त्रेण एकं ब्रह्मजालेन एकं त्रिगुणं कुर्यात् । एवं द्वितीयमपि, प्रक्षालनम् ३० आपोहिष्ठेति तिस्त्राणां सिन्धुद्वीप ऋषिः आपोदेवता गायत्री छन्दः यज्ञोपवीत प्रक्षालने विनियोगः ३० अपोहिष्ठामथोभ्रुवस्तान उज्जैदधातनः महेरणाय चक्षसे । योवःशिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिवमातरः । तस्माऽअरंगमामवोयस्यक्षयाय जिन्वथ आपो जनयथाधनः तनः प्रक्षालनादनन्तरं दशगायत्री मन्त्रैरभिमन्त्रय नवतन्तु देवता आवाहयेत् प्रथमतन्तौ ३० कारमावहयामि, द्वितीयतन्तौ ३० अग्निदत्तं पुरोदधेहृद्वययाहृत्पुष्वृवे देवां रऽ॥ आसादयादिह ३० अग्निमावाहयामि, तृ० ३० नमोस्तु सप्तेभ्यो येके च पृथिवीमनु । येऽअन्तरिक्षे येदिवितेभ्यः सप्तेभ्योनमः ३० सर्पानावाहयामि, च० ॐ द्वय र्दं सोमवृते तव मनस्तनूपुविभृतः प्रजावन्तः सचेमहि । सोमं आवाहयामि, पं०— ३० उदीरतामवरऽउत्परासऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासऽअसुंय्य र्द्वयुरवृक्काऽऋतजास्तेनोवन्तुपितरो हवेषु । पंचमतंतौ पितृनावाहयामि, पं० ॐ प्रजापतेन त्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता वभूव । यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नो ऽअस्तुद्वय र्दं स्यामपतयोरयीणाम् । पूजापतिमावाहयामि, सप्तमतन्तौ ॐ आनोनियुदामिः शतनीभिरध्वर र्दं सहस्रिणीभि रूपयाहियज्ञम् । व्यायोऽअस्मिन्त्सदने मादश्रस्वयूयम्पातःस्वस्तिभिःसदानः । अनिलमावाहयामि । अ० ३० सुगावो देवाः सदनाय आजग्मेद र्दं सवनं जुपाणः भरमाणा ब्वहमानाहव्वी र्दं प्यरमैधत्तव्वसवोव्वस्सुनिस्वाहा । यममावाहयामि । नवतन्तौ ॐ त्विश्वेदेवास ऽआगत श्रृणुतामऽइम र्दं

हवम् । एवं वाहिर्निपीदत । विश्वान्देवानावाहयामि यज्ञोपवीत
 ग्रन्थिदेवता आवाहनम् -प्र- ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विंसी-
 मतः सुरुचोव्वेनऽद्यावः । सव्वुध्न्याऽऽपमाऽअस्यव्विष्ठाः सत-
 रचयोनि मसतरचविवः । द्वि० ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे, त्रेधानिद-
 धेपदम् । समुद्रमस्यपा ॐ सुरेस्वाहा । तृ० ॐ इयं कंस्यजामहे
 सुगान्ध पुण्डिबर्धनम् । उर्वास्त्वमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृ-
 तात । ग्रन्थिदेवताभ्योनमः ॥ प्रणवाद्यावाहितदेवताभ्योनमः यथास्था
 नमहं न्यसामिसंपूज्यध्यायेत् ॐ प्रजापतेर्यत्सहजंपवित्रंकार्पास-
 सूत्रोद्भवद्ब्रह्मसूत्रम् । ब्रह्मत्वसिधैचयशः प्रकाशंजपस्यसिद्धिंकुरु
 ब्रह्मसूत्र ॥) ततः कलशोपरिधृत्वा ॐ यज्ञोपवीतावाहितदे-
 वेभ्यो नमः ॐ एतन्तेतिप्रतिष्ठाप्य संपूज्य च ॐ आकृष्णेन-
 इतिपठित्वा सूर्याय दर्शयित्वा एवं संस्कृतं यज्ञोपवीतं ।
 शाश्वान्तरीय वक्ष्यमाण मंत्रेण धारयेत् ॥ ततः आचार्यः—ॐ
 यज्ञोपवीतमिति परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः लिंगोक्ता देवताः
 श्रौतस्मार्त कर्मानुष्ठान सिध्दये यज्ञोपवीत परिधाने विनियोगः
 ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ॥ आयु-
 ष्यमग्रं प्रतिमुञ्च शुभं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ ॐ यज्ञोप-
 वीतमसि यज्ञस्यत्या यज्ञोपवीतेनोपनहामि ॥ इति मंत्रं पठन्सन्
 वदोर्दक्षिण बाहुमुधृत्य वामस्कन्धोपरि निदध्यात् ॐ अत्रापिमाण
 वक् आचमनद्वयं कुर्यादमन्त्रकम् ततः स्व स्व वर्णांक्त मेणेषाद्य-
 जिनं वह्निलोमं यज्ञोपवीतवत्परिदध्यात् ॥ ॐ मित्रस्य चलुरिति
 वामदेव ऋषि त्रिष्टुप्छन्दः अजिनं देवता अजिन धारणे विनि-
 योगः—॥-ॐ मित्रस्य चलुर्धरुणं वलीयस्तेजो यशस्वि स्थविर
 र्तं समृद्धम् । अनाहनस्यं व्वसनं जग्निष्णुः परीदं व्याज्यजिनं
 दधेहम् ॥ अध्याचार्यः वक्ष्यमाणदंडं पादादिशिखातं ललाट संमितं
 घ्राण प्रमाणं च त्रैवर्णिकं पालाश वैश्वोदुम्बरजम् । तत्तद्वर्ण

द्वि० भृगु — उपवीत वदोरक हेतथेतरयोस्मृते । छंदोगपरिष्टे ब्रह्मचारिण्य
 एकस्यत्स्नातस्य द्वेवह्निवा ॥

वदवे तृष्णीं समंत्रकं वा वक्ष्यमाण मंत्रेण प्रयच्छति ॥ ७० यो
 मे दण्ड इति प्रजापति ऋषि र्यजुश्छन्दो दण्डो देवता दंडग्रहणे
 विनियोगः । ७० यो मे दंडः परापतद्वैहायसोऽधि भूम्याम् तमहं
 पुनरादद ऽआयुपेत्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय ॥ इति वदुः प्रगृह्य वक्ष्य-
 माण मन्त्रेणोच्छ्रयति । ७० उच्छ्रयस्वेति प्रजापति ऋषि र्यजुश्छ-
 न्दः दण्डो देवता दण्डोच्छ्रयणे विनियोगः ॥ ७० उच्छ्रयस्व
 व्वनस्पतऽऊर्ध्वोमापाह्व ई० हसः आस्य यजस्योद्वचः ॥ ततः
 आचार्यः स्वमंजलिमद्भिरापर्य्य तेनेव माणवकांजलिमापूरयति
 वक्ष्यमाणमंत्रैः ॥ ७० आपोहिष्टेत्यादि त्रयाणां मंत्राणां सिन्धु-
 द्वीपऋषिर्गायत्रीछन्दः आपो देवता माणवकांजलिपूरणे विनि-
 योगः ॥ ७० आपो हिष्टामयो भुवस्तानऽऊर्जे दधातन महेरणाय
 चक्षसे । १ । योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः उशतीरिव
 मातरः २ तस्माऽअरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथऽआपोजन
 यथाचनः । ३ । इति माणवकांजलि मद्भिः पूरयित्वा एनं सूर्य-
 मुदीक्षस्व इति प्रैपं ददाति ततो माणवक सूर्यमुदीक्षमाणः सन्नं
 जलिस्थं जलंतृष्णीं सूर्याय प्रक्षिप्योर्ध्वबाहुरादित्य मुपतिष्ठते
 वक्ष्यमाणमंत्रेण । ७० तच्चक्षुरिति दध्यंज्ञार्ध्वेण ऋषिर्वाग्मी
 त्रिष्टुब्धः सविता देवता सूर्यो दीक्षणे विनियोगः ७०
 तच्चक्षुर्द्वैवहितं पुरस्ताच्छुक्र मुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जी
 वेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः
 शतमवीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ अथाचा-
 र्यो माणवकस्य दक्षिणांसस्योपरि स्व दक्षिण हस्तं नीत्वा वक्ष्य-
 माणमंत्रेण हृदयमालभते—७० मम व्रतेन इति प्रजापतिऋषिस्त्रि-
 ष्टुप् छन्दो बृहस्पतिर्देवता हृदयालंभने—विनियोगः ॥ ७० मम
 व्रतेते हृदयं दधामि मम चित्तं मनुचित्तं तेऽस्तु मम स्वाच
 मेकमना जुपस्व बृहस्पतिं पृथा नियुक्तमहाम् ॥ अथाचार्यो मा
 णवकस्य सांगुष्ठं दक्षिणं हस्तं गृहीत्वा को नामासीत्याह एनं
 पृष्टो ब्रह्मचारी अमुकशर्माहं भोऽ इति प्रत्याह । पुनराचार्योमाण

वकं पृच्छतिकस्य ब्रह्मचार्यसीति माणवको ब्रूते भवनः इति माण
वकेनोच्यमाने ॐ इन्द्रस्येति प्रजापतिर्ऋषिः लिंगोक्ता देवताः
आचार्यपाठे विनियोगः । इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्यग्निराचार्यस्तवा-
हमाचार्यस्तव अमुक शर्मन् । अमुक शर्मन्त्रित्यत्र अमुक स्थाने,
श्री.....शर्मन् इति बहुनामान्तं पठेत ॥ अथैनं भूतेभ्यः परि
ददाति मन्त्रेण—ॐ प्रजापतयेत्वेति प्रजापतिर्ऋषिः लिंगोक्ताः
देवताः बहुरक्षाकरणे विनियोगः ॐ प्रजापतये त्वा परिददामि
देवायत्वासवित्रेपरिददाम्यदृभ्यस्त्वौपधीभ्यः परिददामिद्याचापृ-
थिवीभ्यान्त्वापरिददामिप्रिश्वेभ्यस्त्वाभूतेभ्यःपरिददामिसर्वेभ्य-
स्त्वाभूतेभ्यः परिददाम्यरिष्ट्यै ॥ ततःकुमारोऽग्निप्रदक्षिणीकृत्य
आचार्यस्योत्तरतः (वामभागेपूर्वाभिमुखोभूत्वा) उपविशति ।
अथ ब्रह्मवरणार्थमासनमग्नेर्दक्षिणतः कल्पयित्वापाद्यादिभिः ।
वरणद्रव्यंब्राह्मणंचसम्पूज्य—अथेत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुको-
हंममास्यवद्योः उदयनकर्मणि तदंगीभूतहवनकर्मणिकृताकृता
वेक्षणरूपब्रह्मकर्मकर्त्तृमनेन वरणद्रव्येणासुकगोत्र ममुकशर्मणं
ब्राह्मणंब्रह्मत्वेनत्वामहंशृणे । वृत्तोस्मीनिब्रह्माज्ञयान् । यथा-
विहितं कर्मकुरु वरवाणीनिब्रह्मणोक्तिः ततो ब्रह्माणमग्नेः ।
प्रदक्षिणं कारयित्वा कल्पितासने उदङ्मुखमुपवेशयेन् । ततोग्ने
रुत्तरतः प्रागग्रैः कुशैरासन द्वयं कल्पयित्वा-प्रणीतापात्रं सव्ये
करेकृत्वा दक्षिणहस्तोद्धृत घृतपात्रस्थोदकेन पूरयित्वा परिच-
मासने निधाय हस्तेनालभ्य पूर्वासने स्थापयित्वा ॥ वर्द्धिर्मुष्टिमा-
दाय (यावद्भिः प्रयोजनं) ईशानादिप्रागग्रै र्वर्द्धिर्भिरुदक्
संस्थमग्ने रुत्तरतः पश्चाद् वा परिस्तरणं कृत्वा । पवित्रं छेद-
नानित्रीणि कुशतरुणानि ॥ पवित्रेसाग्रे अनन्तगर्भेद्वे कुश तरुणे ।
प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली तैजसी चम्स्थाली, सम्मार्जन कुशास्त्र
यः उपयमनकुशा स्त्रिप्रभृतयः पंच सप्त वासमिधस्तिस्रः प्रादेश
माग्यः सुवः गव्यमाज्यं, पूर्णपात्रं, दक्षिणा, वरोवा, यथावदा-
साय, नतस्त्रिभिः कुशतरुणैः द्वेकुशतरुणे प्रच्छिद्य संस्थाप्य

प्रोक्षणी पात्रं प्रणीता सन्निधौ निधाय तत्रहस्तेन प्रणीतोदक
 मासिच्य, पवित्राभ्यामुत्पूय पवित्रेप्रोक्षणी पात्रे निधाय दक्षिण
 हस्तेन प्रोक्षणी पात्रमुत्थाय सव्ये पाणौ कृत्वा तदुदकं दक्षिणा
 नामिकांगुष्ठाभ्या मुच्चाल्य प्रणीतोदकेन प्रोक्ष्य आज्यस्थाल्या-
 दीनि पूर्णपात्रपर्यन्तानि प्रोक्षणी जलेन रासादनक्रमेणैकैकशः
 प्रोक्ष्य प्रणीतःगन्योरंतराले प्रोक्षणीपात्रं निधाय, आसादित्माज्य
 माज्यस्थाल्यां पश्चादग्ने निर्हृतायां प्रक्षिप्य प्रणीतोदकमासिच्य
 तत्राज्यं ब्रह्माधिश्रयति ज्वलदुल्मुकमादाय आज्योपरिस
 मन्तात् प्रदक्षिण क्रमेण भ्रामयित्वा, दक्षिण हस्तेन श्रुवमादाय
 प्रांचमधोमुखं तापयित्वा सव्ये पाणौकृत्वा, दक्षिणेन सम्मार्जन
 कुशाग्रै मूलतोऽग्रपर्यन्तं मूलैरग्रतो मूल पर्यन्तंसमूज्य तान्
 कुशानग्नौप्रक्षिपेत्, प्रणीतोदकेन संप्रोक्ष्य पुनः पृथ्वत्प्रतप्यरव
 दक्षिणतो निदध्यान्, आज्यमग्नेः पश्चादानीय पूर्वं पवित्रा
 भ्यामुत्पूय अवेक्ष्यापद्मव्य निरसनंकृत्वा प्रोक्षणी जलेन पवित्रा-
 भ्यां संप्रोक्ष्य । उपयमन कुशान् दक्षिणाहस्तेनादाय वामे कृत्वो-
 तिष्ठन्तिस्रः समिधः अग्नौ प्रक्षिप्य प्रोक्षण्युदकं दक्षिण तुलुके
 कृत्वा ईशानादि उदगान्तमग्निं प्रदक्षिण क्रमेण संप्रोक्ष्य पवित्रे
 प्रणीतापात्रेनिधायआघारादीन् जुहुयात् संसवधारणार्थं प्रोक्षणी
 पात्रं प्रणीताऽन्यो मध्येनिदध्यान् ॥ ततः समुद्भव नामाग्नि,
 मावाहयेत् । ॐ एतन्ते इति ॐ भूर्भुवः स्वः समुद्भव नामाग्ने
 इहागच्छेदितिष्ठसुप्रतिष्ठितो वरदोभव ॥ चत्वारि श्रृंगा इति
 ध्यात्वा गंधादिभिः सम्पूज्य रेखा पूजनं जिह्वा पूजनं च कृत्वा ।
 तत आघारावाश्चतुर्वंशाहुतीः ब्रह्मणान्वारंधो जुहुयात् । हुत शेषं
 घृतं संस्रव प्राशनार्थं प्रोक्षणी पात्रे क्षिपेत् । ॐ प्रजापतये स्वाहा
 इदंप्रजापतयेनमम ॐ इन्द्रायस्वाहा इदमिन्द्राय० ॐ अग्नयेस्वाहा
 इदमग्नये० ॐ सोमायस्वाहाइदंसोमाय० । इत्याघारावाज्यभागौ
 हुत्वा ॐ भूरादिव्याहृतीनांप्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुब्धन्दः अग्निवायु-
 सूर्यादेवताउपनयनांग होमोवीनियोगः । ॐ भूःस्वाहाइदमग्ने-

नमम ३० भुवःस्वाहा इदंवायवेन० । ३० स्वःस्वाहा इदंसूर्याय० ।
 ३० त्वन्नोऽअग्ने सत्वन्नोऽग्ने इत्यनयोर्वामदेव ऋषिन्त्रिष्टुप्छन्दः
 अग्निवरुणोदेवते उपनयनांगहोमे विनियोगः । ३० त्वन्नोऽग्ने
 वरुणस्य विद्वान् देवस्यहेडोऽअवयासिसीषाः । यजिष्ठोवहि-
 तमः शोशुचानोऽद्विश्वाह्वेषाँसिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नी-
 वरुणाम्यांनमम ३० सत्वन्नोऽअग्नेऽअवमोभवोत्तीनेदिष्ठोऽअस्या
 उपसोव्युष्टौ अवयद्वनोऽवरुणर्ते०रराणौ वीहिमृडीकर्त०सुह
 वोनऽएधिस्वाहा । इदमग्नीवरुणाम्यांनमम—३० अयाश्चाग्ने
 इतिवामदेवऋषिन्त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता उपनयनांगहोमेवि० ।
 ३० अयाश्चाग्नेहानभिशस्तिपाश्च सत्प्रमित्वमयाऽअसि । अया
 नोयञ्ज्वहास्ययानोधेहिभेषजँस्वाहा इदमग्नयेनमम । ३० येते-
 शतमितिवामदेवऋषिन्त्रिष्टुप्छन्दोऽवरुणः सविताद्विष्णुर्देवता
 विश्वेदेवामस्तः स्वर्काश्चदेवताः उपनयनांगहोमेविनियोगः ।
 ३० येतेशतंवरुणंयेसहस्रंयजियाः पाशाब्जिनतामहान्तः तेभि-
 न्नोऽअद्यसवितोतविष्णुर्विश्वेसुचन्तुमस्तः स्वाङ्गीःस्वाहा इदंवरु-
 णाय, सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्योमरुदभ्यः स्वर्केभ्यःनमम ॥ ३०
 उदुत्तममितिशुनः शोफऋषिन्त्रिष्टुप्छन्दः वरुणोदेवता उपनय-
 नांगहोमेविनियोगः । ३० उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदनाधमं चि-
 मभ्यमँअथाय । अथाव्यमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितये
 स्यामस्वाहा । इदंवरुणाय० । ३० प्रजापतयेस्वाहा इदंप्रजापतये०
 ३० अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा—इदमग्नयेस्विष्टकृतेनमम—इतिहोमं-
 विधायसंस्त्रयंप्राश्य, पवित्राभ्यां प्रणीताजलेन संमार्ज्यं,
 पवित्रप्रतिपत्तिः प्रणीताविमोकं च कृत्वा ब्रह्मणे
 पूर्णपात्र दानम्—अथेह अमुक शर्माहं अमुकशर्मणो-
 ऽस्य वयोः उपनयनांग होम कर्मणः सत्पुण्यार्थं अपूर्ण
 पूरणार्थं च इदं सदक्षिणं पूर्णपात्रं ब्रह्मणे तुभ्यं संप्रददे इति
 दद्यात् । ३० स्वस्ति ब्रह्मा ग्यान् । तत आचार्यो वटुं शिष्यति
 ब्रह्मचार्यासि, इति वदेदाचार्यः—असानि, आचार्यः—अपोशान,

अश्नानि इति वटुः, आचार्यः—रुर्मकुरु, वटुः, करवाणि, आचार्यः
मादिवासुपुष्पाः ॥ वटुः, न स्वपानि, आचार्यः—वाचं यच्छ, वटुः
यच्छानि, आचार्यः समिधमाधेहि, वटुः, आदधानि, आचार्यः पुनः
अपोऽशान ॥ वटुः, अश्नानि, ततो ज्योतिर्विदादिष्टेलग्नदानं कुर्यात् ।
ततः सद्रव्यदानसामग्रीं संपात्य संप्रोक्ष्य च संकल्पः—अद्येत्यादि
देशकालौसंकीर्त्य अमुकराशिरमुकशर्माहं ममेदानीं सावित्रीग्रहणे
ऽमुकलग्नावधिकैरमुक स्थानस्थितादित्यादिनवग्रहैः सृचितारिष्ट
निर्वृत्तिद्वारा शुभफलप्राप्तये ग्रहाणांसन्तुष्टयर्थं इदं सुवर्णतन्निष्क
यीभृतं द्रव्यं वा अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय अन्येभ्यश्च वा दास्ये ।
तन् सन्नमम (पितातिरिक्तो गुम्श्चेत्तस्य वरणं कुर्यात् पितुस्तु प्रजन
मात्रं) ततो गुरुवरणद्रव्यं गुरुं च सम्पूज्य, संकल्पः, अद्येत्यादि
संकीर्त्य अमुकराशेर्मम सावित्र्युपदेशद्वारा द्विजत्वसिद्धये, एतेन
वरणद्रव्येण अमुकगोत्रममुक शर्माणं ब्राह्मणं गुरुत्वेनत्वामहंवृणे
इति दत्त्वा, वृतोस्मीति गुरुर्भूयान् । अथ च गुरुः अग्नेश्चरतः
स्वदक्षिणपार्श्वे पश्चिमाभिमुखं वटुमुपविश्य स्वयं पूर्वाभिमुखो
भूत्वा वक्ष्यमाण प्रकारेण सावित्र्युपदेशकरोति, ततो वटुः कर्णौ
स्पृष्ट्वा अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं, अभिवादयेइत्युक्त्वा दक्षिणहस्तेन
दक्षिणपादस्पृष्ट्वा सव्येन सव्यपादं स्पृष्ट्वा चरणयोः शिरोधृत्वा नमेत्
तत्र प्रथमवारमैकैकं पादं श्रावयेत् ॥ ३० ॥ प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिर्देवी गायत्री
छन्दः परमात्मा देवता व्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुभ-
श्छन्दांसि अग्नि वायु सूर्या देवता । तत्सवितुरित्यस्य विश्वाभिन्न
ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता माणवकोपदेशने विनियोगः
अथ च शुभे लग्ने शंखादिरवे जायमाने, वाससाऽऽच्छादनं कृत्वा गुरुः
दक्षिणकर्णं ३० भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् । इति प्रथमपादं
श्रावयित्वा वाचयेत् । द्वितीयपादम् । भर्गो देवस्य धीमहि इति
श्रावयित्वा वाचयेत् । तृतीयपादम् धियो यो नः प्रचोदयात् इति
श्रावयित्वा वाचयेत् च ततो द्वितीयवारं अर्धैर्वाचयेत् ॥ ३० ॥ भूर्भुवः
स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । इति द्वितीय-

मर्द्धर्चं श्रावयित्वावाचयेत् ततस्तृतीयवारं सम्पूर्णं ३० भूर्भुवाः
 स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।
 इति सर्वां श्रावयित्वावाचयेच्चवटुम्— क्षत्रियाय, ३० देवसवितुः
 प्रसुवयज्ञं प्रसुवयज्ञपतिं भगाय । दिव्यो गंधर्वः केनपूः केनन्नः
 पुनातु वाचस्पतिर्वाजनाः स्वदतु । वैश्याय-३० विश्वारूपाणि प्रति
 मुंचते कविः प्रासावीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे, विनाक्रमरुपत्सविता
 वरेण्योऽनुप्रयाण मुपसोव्विराजति । सर्वेषां वा ब्रह्मगायत्री मुप-
 दिशेदित्यपरोपक्षः । ततो वित्तशास्त्रवर्जितां गुरवेवरं (ब्राह्मणस्य
 गौर्वर राजन्यस्य भूमिः वैश्यस्य अश्वम्, सर्वेषां वा गौर्वरम्)
 वराभावे सुवर्णादि दक्षिणां दद्यात् ॥ संकल्पः— अथेह अमुकराशिर-
 मुकशर्मा—(वर्मा गुप्तो वा) अहं कृतैतत्सवित्री ग्रहणकर्मणः
 साद्गुणार्थं इदं सुवर्णमग्नि दैवतं रजतं चन्द्रदैवतं वा वर निष्कयी-
 भूतं गुरवेतुभ्यमहंसंप्रददे ततो गुरोश्चरणयोः प्रणिपत्य समर्पयेत्
 आयुष्मान्भवसौम्य, इति गुरुर्वदेत् ततो ब्रह्मचारी तत्कालिकां म-
 ध्यान्ह संध्यांचोपासीत । अथ उपनयनाग्नौ समिधाधानं कुर्यात्
 ततः प्रादेशमात्रं शुक्रकाण्डं वा गोमयोपलं, तत्र पंचधा विभक्तं
 संधुक्षणां पृथुक्षणां मुदकं । समिधस्तिष्ठः संस्थाप्य ब्रह्मचारी
 अग्नेः पश्चादुपविश्यादौ वक्ष्यमाणैः पंचभिर्मंत्रैः अग्निं हस्तेन
 परिसमृहयति संधुक्षयतीत्यर्थः हस्ताभ्यां सन्धुक्षणप्रसिद्धिरस्ती-
 तिहरिहरः । ३० सुश्रव इत्यादीनां पंचानां मंत्राणां ब्रह्माऋषिः
 यजुश्छन्दः अग्निर्देवता अग्नाविधन प्रक्षेपणे विनियोगः ॥ ॐ
 अग्ने सुश्रवः सुश्रवसम्मोक्षुरु । इति मंत्रेण एकमिधनमेकशुक्रमु-
 पलं वा ऽग्नौ प्रक्षिप्य, द्वितीयमाददे ३० यथात्वमग्ने सुश्रवः सुश्र-
 वाऽअसि । इति प्रक्षिप्य तृतीयमाददे— ३० एवम्मा ॐ सुश्रवः
 सौश्रवसंकुरु ॥ इति प्रक्षिप्य चतुर्थमाददे— ३० यथात्वमग्ने देवानां
 यजस्य निधिपाऽसि । इति प्रक्षिप्य पंचममाददे, ३० एवमहं मनु-
 ष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् । इति पंचमं प्रक्षिपेत् इति अग्निं
 उभाभ्यां हस्ताभ्यां सन्धुक्ष्य प्रज्वलितं कृत्वा दक्षिणहस्तं ललाके

जलं गृहीत्वा, ईशानादुत्तर पर्यन्तं प्रदक्षिण क्रमेणपर्युदय, ततो
 ब्रह्मचारीउत्थाय, दक्ष्यमाण मंत्रेणसमिधमादधाति-३० अग्नय
 इति प्रजापतिर्ऋषिराकृतिच्छन्दः समिधेवता समिदाधानेविनियोगः
 ततो घृताक्तामेकां गृहीत्वा ३० अग्नये समिधमाहार्पवृहते जात-
 वेदसे, यथात्वमग्ने समिधा समिध्यसऽएवमहमायुषामेधयात्र-
 र्चसा प्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनसम्पिन्धे, जीवपुत्रोममाचार्यो
 मेधान्यहमसान्य निराकरिष्णुर्गशस्त्री तेजस्वी ब्रह्मर्चस्यान्नादौ
 भूयास ॐ स्वाहा, इत्यनेनवै द्वितीयां तृतीयांकेतुगः जुहोति ॥
 [अत्र सन्निप्रक्षेपणेनत्र द्वयोर्विकल्पः-अग्नयेसमिध० १ एपाते
 अग्ने,] इतिवासमुच्चयेन ततस्तृष्णी सुपविश्य पूर्ववत् अग्नेः सुश्र-
 वत्पादि पंचभिर्भन्त्रैः उन्धनप्रक्षेपण परिसम्पन्नं भुञ्जणम्, अद्-
 भिरग्नेः प्रदक्षिणं पर्युञ्जणं च कुर्यात् । ततस्तृष्णीमग्नौ हस्तौप्रन-
 प्य सुखंविमार्ष्टि ललाटादि चिबुकान्तं वक्ष्यमाणैः सप्तभिर्भन्त्रैः
 प्रौच्छति । ३० तनूपाऽअग्ने इत्यादीनां सप्तमंत्राणां आवत्सार
 ऋपि स्त्रिष्टुच्छन्दः अग्निर्देवता अग्न्या लभ्यते विनियोगः-३०
 तनूपाऽअग्नेऽसितन्वंमेपादि । ३० आयुर्दाऽअग्नेऽप्यायुर्मेदेहि ॥२॥
 ३० व्वर्चोदाऽअग्नेऽसि व्वर्चो मेदेहि ॥३॥ ३० अग्नेयन्धेतन्वाऽ
 उनतन्मऽआपृण ॥४॥ ३० मेधामेदेवः सविता त्रादधातु ॥५॥ ३०
 मेधामेदेवी सरस्वती त्रादधातु ॥६॥ ३० मेधामश्विनौदेवावाधत्तां
 पुष्कर स्रजौ ॥७॥ (अत्रशिष्टाचारप्राप्ताः केचित्पदार्थाःलिख्यन्ते ।
 हरिहर.)ततः उभाभ्यां हस्ताभ्यां गिरस आपद् सर्वाङ्गमालभ्य
 जपति-३० अंगानि च मऽआप्यायताम् ॥ सर्वाङ्ग स्पृशेत
 मुखे-३० वाक्चमऽआप्यायताम् ॥नासिकारंभ्रयोः,-
 ३० प्राणश्चमऽआप्यायताम् ॥ नेत्रयोः,-३० चक्षुरश्चम
 ऽआप्यायताम् । कर्णयोः-श्रोत्रं चमऽआप्यायताम् । बाह्वो -३०
 यशोवलं चमऽआप्यायताम् ततःहस्तौमलाल्य ॥ ततः सुपमूढे
 नभ्रमंगृहीत्वा,तेनभस्मनाललाटादिषु न्यायुपं करोति ॥ दक्षिणा
 नाभिक्रया ३० न्यायुपमितिनारायणऋषिरुष्णिक्छन्दः-अग्निर्दं

वता ध्यायुपकरणेविनियोगः ॥ ध्यायुपंजमदग्नेः—इति ललाटे,
 ३० कस्यपस्यध्यायुपम्—ग्रीशायाम्, ॥ ३० पदेवेपुध्यायुपम्—दक्षि
 णांसे,—३० ततोऽअस्तुध्यायुपम्—इतिहृदि,—अथाग्नेरभिवादनम्—
 अमुकगोत्रो ऽमुकप्रवंशोयजुर्वेदान्गता मुकशाखाध्यायी अमुक
 शर्माहंभोः ३ अग्नेत्वामभिवादये । इत्युभाभ्यां हस्ताभ्यां कणै-
 स्पृष्ट्वा शिरसानमेत्—ततोऽगुणं कणौ स्पृष्ट्वा दक्षिणहस्तेन गुरो-
 र्दक्षिणपादं स्पृष्ट्वा सव्येन सव्यं स्पृष्ट्वा शिरोऽध्वनमनंकृत्वा पूर्व-
 वदुक्त्वाभोः ३ गुरोस्त्वामभिवादये अभिवादितोगुरुश्चभोः ३
 अमुकशर्मन् ध्यायुष्मान्भवसौम्य । इत्याशिषंदव्यात् ततः स्म-
 त्युक्तानप्यभिवादयेत् ॥ (याज्ञवल्क्यः)—ततोऽभिवादये-
 वृध्दानसावहसितिब्रुवत ॥ अभिवादनप्रकारमाहमनुः—भोशब्द-
 कीर्तयेदन्ते स्वस्यनाम्नोभिवादाने । नाम्नास्वरूपभावोहिभोशब्दे
 ऋषिभिःस्मृतः । ध्यायुष्मान्भव सौम्येनिवाच्योविप्रोभिवादाने ॥
 अकारश्चास्यनाम्नोन्तेवाच्यः पूर्वाक्षरःप्लुनः ॥ उत्थायमातापि-
 तरौ पूर्वमेवाभिवादयेत् । आचार्यश्च ततोऽनित्यमभिवाच्योविजा-
 नता । मनुः—अभिवादनशीलस्य नित्यं ब्रह्मोपसेविनः चत्वारि
 तस्यवर्धन्ते प्रायुः प्रजायशोयलम् । अथानर्हानभिवादनात्—मनुः—
 योनवेत्यभिवादस्यविप्रः प्रत्यभिवादनं ॥ नाभिवाच्यःसविदुषा
 यथाशूद्रस्तथैवसः ॥ शातानपः—उदक्यांसृत्तिकांनारीं भर्तृवनीं गर्भ-
 पातिनीं । पाग्वण्डपनित्रातयं महापातकिनंशठम् । नास्तिक्कि-
 तबंधस्नेनं कृत्नघ्नं नाभिवादयेत् । बृहस्पतिस्तु—जपयज्ञजलस्यं च-
 समित् पुष्पकुशान्तिलान् । उद्पात्रार्धभेदान्नं ब्रह्मन्तं नाभिवाद-
 येत् । अभिवाच्यद्विजश्चैतानहोरात्रेणशुध्यति ॥

(अथातोऽभिवाचरणम्—यदुक्तं याज्ञवल्क्येन—दंडाजिनो
 पवीतानि मेघलां चैव धारयेत् । सूत्रं च—भवत्पूर्वां ब्राह्मणो
 भिक्षेत् ॥ भवन्मध्यमार्धराजन्यो, भवदन्त्या वैश्यः) तत्रादौ
 मातरम् ॥—तत आचार्यो नूतन वस्त्रनिर्मितां भोलिकां कल्-
 लंविनीं सद्रव्यां सफलां ब्रह्मचारिणो दक्षिणस्कन्धे निधाय

(भो अमुकशर्मन् भिक्षार्थं गच्छ) ततो ब्रह्मचारी सलक्षण-
 मुत्थाय प्रथममातरं याचेत्—भवति भिक्षां देहि मातः ।
 पुरुषं प्रति भिक्षणे—भवन् भिक्षां देहि—इति ब्राह्मणोवदेत्—
 चत्रियस्तु भिक्षां भवति देहि मानः, पुरुषं प्रति भिक्षां भवान्
 ददातु, वैश्यस्तु—मातर्देहि भिक्षां भवति ? पुरुषंप्रति भिक्षां ददातु
 भवान् ॥ अग्यांप्रति भिक्षणे मातः, इतिशब्दो न वाच्यः । भवति
 भिक्षां देहीति वाच्यम् ॥ ततो ब्रह्मचारीमातामंडपात् कीयदूरे
 वस्त्रभूषणादिभिरलंकृता कुटुम्बस्त्री परिजनैः सह तिष्ठन्ती,
 मनोहरे पात्रे सफल, मिष्टान्न मोदकादिपक्वान्नसहित सुवर्ण रजत
 सुद्रारत्नादि सहित हरिद्रा रंजिततंडुलान् गृहीत्वा भिक्षार्थमा-
 गतं ब्रह्मचारिणं दद्यात् ॥ ततो ब्रह्मचारी भिक्षां लब्ध्वा ॐ
 स्वस्ति इतिवदेत् । ततः—अन्ये भ्योपिगृहीयात् ॥ तत आचार्य
 समीपमागत्य, भोगुरोइयं भिक्षा मया लब्धा, इति निवेद्य प्रणम्य
 च, गुरोरनुज्ञया आत्मभोजनार्थं वा स्वीकुर्यात् । यदि गुरुः
 पिता चेत्तल्लब्ध भैक्ष्यं द्रव्यादिकं ब्राह्मणेभ्योदद्यात् । अन्यश्चेत्
 स्वयंस्वीकुर्यादिति समाचारः, इति भिक्षाचरणम् ॥ तत आचार्यो
 ब्रह्मचारिणेनिघमान् आवयेत्, अधः शयीत । अन्तार लवणाशी
 स्यात् । दंडधारणं कर्तव्यम्—अरण्यात्स्वयं प्रशीर्णाः समिध आह-
 र्त्तव्या सायं प्रातः संध्योपासन पूर्वक मग्निपरि चरणं कर्तव्यम् ॥
 स्वाध्यायाविरोधेन गुरुशुश्रूषा च कर्तव्या । सायंप्रातर्भिक्षा चर्या
 कर्तव्या मधुमांसाशनं न कर्तव्यम् ॥ नद्यादौमज्जनंनकर्त्तव्यम्
 उद्धतोदकेन स्नायादित्यर्थः । कुशासनोपरिमसूरिका व्युपधानं
 कृत्वा नोपविशेत्—स्त्रीभिः सह गमनं तन्मध्ये अवस्थानं च
 वर्जयेत् । अनृतं न वदेत् । अदत्तादानं चौर्यं न कुर्यात् । स्मृत्यं
 तरोक्ता यमनियमाश्चानुष्ठेयाः ॥ अष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि वेद
 ब्रह्मचर्यं चरेत् । द्वादश द्वादश वा प्रतिवदेत् । यावद्ग्रहणं
 वा शयानश्चेदाचार्येणाहृत उत्थाय प्रतिशृणुयात्, आसीन
 श्वेत्तिष्ठन्, तिष्ठं श्वेदधिकामन्, अधिकामंश्चेदभिधावन् ।

स एवं वर्त्तमानो मुत्राद्यवसत्यमुत्राद्य वसतीति । यएवंविद्यामानस्तस्य स्नातकस्य कीर्तिर्भवति ॥ तत आचार्याय-वरदानम्, अचेत्यादि संकीर्त्य, अमुकोहं अमुकराज्ञोः पुत्रस्य-उपनयनांग होमकर्मणः सांगतार्थेदंद्रव्यंगांचवा वरप्रत्या-म्नायीभूतं अमुक शर्मणे आचार्याय तुभ्यं सम्प्रददे ॥ ३०॥ तत्सन्न-मम ब्राह्मण भोजन संकल्पम्, भूयसी संकल्पं च कृत्वा [अत्रापि न पूर्णाहुतिः] ततः समुद्भवनामाग्ने रुतरांगपूजनंकृत्वा अक्षतान् गृहीत्वा विसृजेत् ॥ ३०॥ गच्छुगच्छु सुरश्रेष्ठस्वस्थाने त्वंसमुद्भव इष्टकाम समृद्ध्यर्थं पुन रागमनं कुरु ॥

॥ इत्युपनयनपद्धतिः ॥

अथवेदारम्भपद्धतिः ।

अथाचार्यां ब्रह्मचारिणासह वेदारम्भ वेदीसमीपमागत्य स्वासने उपविश्यआचम्य गणेशादीन्नमस्कृत्य, वेदारम्भ वेद्यां पंचभूसंस्कारान्कुर्यात् दक्षिणहस्तेन कुशैः परिसमूह्य पूर्वे, क्षिप्त्वा गोमयोदकेनोपलिप्य, सुवमूलेन प्रागग्रास्तिस्त्रो रेग्वा विलिख्य, उल्लेख्यन क्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यां मृदुमुदधृत्य, जलेनाभ्युक्ष्य, तैजसपात्रोपनीतमग्निं वेद्यां स्वाभिमुखे संस्थाप्य तद्रक्षार्थं मिथनं नियुज्य, संकल्पः—अचेत्यादि देशकालोसंकीर्त्यामुकोहं अमुकराज्ञोरमुक वदोर्यजुर्वेदादि क्रमेण वेदारम्भ कर्मणि प्रजापतिं, इन्द्रं, अग्निं, सोमं, अन्तरिक्षं वायुं, ब्रह्माणं, ह्यःदाँँसि पृथ्वी-मग्निं ब्रह्माणं, ह्यःदाँँसिदिवंसूर्यं ब्रह्माणं, ह्यःदाँँसि, दिश-श्चन्द्रमसम् ब्रह्माणंह्यःदाँँसि प्रजापतिं देवान् ऋषीन्, अर्द्धां, मेधां, सदसस्पतिं, अनुमतिं, अग्निं, वायुं, सूर्यं, अग्नीवरुणौ, अग्नीवरुणौ, अग्निं, स्वर्णं, सवितारं, विष्णुंविश्वान्, मरुतः, स्वर्कान्. स्वर्णं, प्रजापतिं श्विष्टकृतं चाज्येनाहं यक्ष्ये, ततो ब्रह्मवरणम्--अचेत्यादि० कर्तव्य वेदारम्भांगी भूतहवन कर्मणि,

ब्रह्मकर्भकर्त्तमनेनवरणद्रव्येण अमुकगोत्रममुकशर्माणंब्राह्मणं,
 ब्रह्मत्वैनाहंवृणे, घृतोस्मीति ब्रह्मावृणान् । यथाविहितं कर्मकुरु,
 करवाणि, ततोऽग्निपरिक्रमणं कारयित्वा, अग्नेर्दक्षिणतः कुशासने
 उपवेशयेत् ॥ ततोऽग्नेरुत्तरतः प्रागग्रकुशैरासनद्वयं कल्पयित्वा,
 प्रणीतापात्रं सव्येहरतेकृत्वा दक्षिण हस्तोद्धृतघृतपात्रस्थोदकेन-
 पूरयित्वा, पश्चिमासनेनिधाय हस्तेनालभ्य, पूर्वासनेस्थापयित्वा
 वह्निर्भुण्डिमादाय ईशानादिप्रागग्रै वह्निर्भिरुदक् संस्थमग्ने रत्तरतः
 पश्चाद्वापरिस्तरणं कृत्वा पवित्रद्येदनानि त्रीणि कुशातरुणानि,
 पवित्रेसाग्रेअनन्तगर्भं कुशातरुणे, आज्यस्थाली, तैजसी सम्मा-
 र्जनकुशास्त्रयः, उपयमनकुशास्त्रिप्रभृतिपंचसप्तवा, समिधस्त्रिः
 प्रादेशमाज्यः, सुवः, गव्यमाज्यं, सदक्षिणं, पूर्णपात्रं, दाक्षिणा
 वरोवा, यथायदासाय ततन्त्रिभिः कुशैर्द्वंद्वं कुशातरुणे पृच्छिद्यपृथक्
 संस्थाप्य, प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतासन्निधौनिधाय, दक्षिणहस्तेनप्रणी-
 तोदकमासिच्य, पवित्राभ्यामुत्पृथ्य, पवित्रप्रोक्षणीपात्रे निधाय-
 दक्षिणहस्तेनप्रोक्षणीपात्रमुत्थाप्य सव्येपाणैकृत्वा तदुदकंदक्षिणा
 नामिकांगुष्ठाभ्यामुच्छ्राल्य, प्रणीतोदकेन, प्रोक्ष्य, प्रणीताग्न्योरंत-
 राले निदध्यात्, आसादितमाज्यं, आज्यस्थाल्यां पश्चादग्नेर्नि-
 हितायांप्रक्षिप्य, प्रणीतोदकेनासिच्य, तत्राग्नौ ब्रह्माआज्यमभि
 श्रयति ॥ उवलदुल्मुकमादाय, आज्योपरिसमन्तात्पृदक्षिणक्रमेण
 भ्रामयित्वा दक्षिणहस्तेन श्रुवमादाय प्रांचमथोमुग्धं तापयित्वा
 सव्ये पाणौ कृत्वादक्षिणेन सम्मार्जनं कुशाग्रैर्मूलतोऽग्रपर्यन्तं,
 मूलैरग्रतोमूलपर्यन्तंसमृज्य, तान्कुशानग्नौप्रक्षिपेत् । प्रणीतोदके
 नाभिपिच्यपुनः पूर्ववत्प्रनप्यस्व दक्षिणतोनिदध्यात् ॥ आज्य
 मग्नेःपश्चादानीय, पूर्वपवित्राभ्यामुत्पृथ्यअवेद्य, अपद्रव्यनिरसनं
 कृत्वा । प्रोक्षणीजलेनपवित्राभ्यामपिच्य, उपयमनकुशान् दक्षिण
 हस्तेनादाय सव्येकृत्योत्तिष्ठनघृताक्ताः तिस्रःसमिधः अग्नौप्रक्षि-
 प्य, प्रोक्षणपुदकंदक्षिणचुलुकेगृहीत्वा । ईशानाद्युदगान्नमग्निं प्रद-
 क्षिणक्रमेणपरिपिच्य, पवित्रेप्रणीतापात्रेनिधाय, आघारादीन्जहु

यात, संस्रवधारणार्थं प्रोक्षणीपात्रं प्रणीताग्नयोर्मध्येनिदध्यात्, ॥
 आचार्यस्यहोमकर्तृत्वेपित्रादिः—इदमाज्यंतत्तद्वेवतायैमया परि-
 त्यक्तंयथादेवत्तमस्तुनमम । ३० एतन्तेदेव० पठित्वा ३० भूर्भुवः
 स्व', हरिनामाग्ने सुप्रतिष्ठितोवरदोभव, इतिप्रतिष्ठाप्य ॥ ३० अग्ने
 नयसुपथाराये ऽअस्मानन्विश्वानिदेव व्युनानिविद्वान् । युषोध्य-
 स्मञ्जुहराणमेनोभृयिष्ठान्तेनमऽउक्तिविधेम ॥ इतिमन्त्रेणपाद्यादि
 नीराजनान्तंहरिनामार्गिनं सम्पूज्यरेग्वापूजनं जिह्वापूजनंचकृत्वा ।
 ब्रह्मचारिणमग्नेः पश्चान्स्वस्योत्तरनः समुपवेश्य । दक्षिणंजान्वा-
 च्यब्रह्मणान्वारब्धोजुहुयात् । ३० प्रजापतेस्वाहा, इदंप्रजापतयेन-
 ममइतिमनसा, ॥ हुनशेषघृतंसंस्त्रवधारणार्थं प्रोक्षण्यांक्षिपेत् ॥
 ३० इन्द्रायस्वाहा—इदमिन्द्रायनमम ३० अग्नयेस्वाहा इदमग्नये
 नमम । ३० सोमायस्वाहा—इदंसोमायनमम । इदानीमन्वारंभंत्य-
 कृत्वावेदाहुतीर्जुहोति—आदौस्वशांवीयवेदाहुतिर्जुहोति, अथयजु-
 र्वेदाहुतयः—३० अन्तरिक्षायस्वाहा—इदमन्तरिक्षायनमम । ३०
 द्वायवेस्वाहा—इदंद्वायवे० ॥ ३० ब्रह्मणेस्वाहा इदंब्रह्मणे० ३०
 छन्दोभ्यःस्वाहा इदंछन्दोभ्यः ॥ ऋग्वेदाहुतयः ३० पृथिव्यैस्वाहा
 इदंपृथिव्यैनमम ॥ ३० अग्नयेस्वाहा इदमग्नयेनमम ३० ब्रह्मणे-
 स्वाहा इदंब्रह्मणेनमम । ३० छन्दोभ्यःस्वाहा इदंछन्दोभ्योनमम ।
 सामवेदाहुतयः ३० दिवेस्वाहा इदंदिवेनमम । ३० सूर्यायस्वाहा
 इदंसूर्यायनमम । ३० ब्रह्मणेस्वाहा इदंब्रह्मणेनमम । ३० छन्दोभ्यः
 स्वाहा इदंछन्दोभ्योनमम० । अथर्ववेदाहुतयः—३० दिग्भ्यःस्वा०
 इदंदिग्भ्योनमम । ३० चन्द्रमसेस्वाहा इदंचन्द्रमसेनमम । ३०
 ब्रह्मणेस्वाहाइदमब्रह्मणेनमम । ३०छन्दोभ्यःस्वाहाइदंछन्दोभ्यो
 नमम । सर्वसामान्याहुतयः—३० प्रजापतयेस्वाहा इदंप्रजापतये
 नमम ॥ ३० देवेभ्यःस्वाहा इदंदेवेभ्योनमम । ३० ऋषिभ्यःस्वा०
 इदंऋषिभ्योनमम । ३० अध्दायैस्वाहा इदंअध्दायैनमम । ३० संधा
 यैस्वाहा इदंसंधायैनमम । ३० सदसस्पतयेस्वाहा इदंसदसस्पतये
 नमम । ३० अनुमतयेस्वाहा इदमनुमतयेनमम । ततोब्रह्मणाऽन्वा-

रव्यः ॥ ३० भूरादिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टु-
 भल्लन्दांसि, अग्निवायुसूर्यादेवताः वेदारम्भाङ्गहोमेविनियोगः ॥
 ३० भू स्वाहा इदमग्नयेनमम । ३० भुवःस्वाहा इदंवायवेनमम ।
 ३० स्वःस्वाहाइदं सूर्यायनमम ॥ ३० त्वन्नोऽअग्नेसत्वंन्नोऽअग्ने
 इत्यनयोर्चामदेवऋषिःत्रिष्टुप्छन्दःअग्नीवरुणोदेवते वेदारम्भाङ्ग-
 होमेविनियोगः ॥ ३० त्वन्नोऽअग्नेञ्चरुणस्यविद्वान्देवस्यहेडोऽअव-
 यासिसीष्टाः । यजिष्ठोवहितमः शोशुचानो विश्वाहेपाँसिप्रमु-
 मुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम । ॐ सत्त्वन्नोऽग्नेऽवमो
 भवोतिनेदिष्ठोऽअस्याऽउपसोव्युष्टौ अवयद्वनोच्चरुण ई० रराणो
 व्वीहिमृडीक ई० सुहवोनऽएधि स्वाहा इदमग्नी चरुणाभ्यां न
 मम । ३० अयाश्चाग्ने इति चामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता
 वेदारम्भाङ्ग होमेविनियोगः ३० अयाश्चाग्नेहव्यनमिशस्तिपाश्च
 सत्पमित्वमयाऽअसि । अयानोयज्ञं च्वाहास्यानोवेहिभेपज ँ
 स्वाहा । इदमग्नयेनमम ॥ ३० येतेशतमिति चामदेवऋषिस्त्रिष्टु-
 प्छन्दो चरुणः सविता विष्णुर्विश्वेदेवामगतः स्वर्काश्चदेवता
 वेदारम्भाङ्ग होमे विनियोगः । ३० येतेशतं च्चरुणं येसहस्रं यजियाः
 पाशाञ्चिततामहान्तः । तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंच-
 न्तुमरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदं च्चरुणाय सवित्रेविष्णवेविश्वेभ्यो
 देवेभ्योमरुद्भ्यः स्वर्कैर्भ्यश्चनमम । ३० उदुत्तममितिशुनः शैफ
 ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः च्चरुणोदेवता वेदारम्भाङ्गहोमेविनियोगः । ३०
 उदुत्तमं च्चरुणपाश मस्मधवातमं च्चिबमध्यम ँ स्रथाय । अथा
 च्चयमोदित्यत्रतेतवानागसो अदिनयेस्याम, स्वाहा । इदं च्चरुणाय
 नमम । ३० प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतयेनमम-३० अग्नेये
 स्थिष्ठकृते स्वाहा इदमग्नेये स्थिष्ठकृते नमम । संस्रवप्राशनं पवित्रा
 म्पांमार्जनं पवित्रप्रतिपत्तिः अग्नेः पश्चिमं प्रणीता विमोकः ।
 ब्रह्मणेपूर्णपात्रदानमसंकल्पः अद्येत्यादिसंकीर्त्यअमुकराशिरम्कोहं
 ममैतद्देवारम्भाङ्ग हवनकर्म्मणः सांगफलप्राप्तये अपूर्णपूरणार्थं
 इदंसदक्षिणंपूर्णपात्रम् ब्रह्मणेतुभ्यंसम्प्रददे—इतिदद्यात्—३० अक्र-

न्कर्मकर्मकृतः सहज्वाचामयोभुवा । देवेभ्यः कर्मकृत्वाऽस्तं प्रेत
 सचाभुवः । ३० स्याद्वा । इति वहिर्होमं कृत्वा—ततो ब्रह्मचारी विघ्नेशं
 सरस्वतीं हरिं लक्ष्मीं स्वविद्याम्, (वेदसंहितां) च पूजयेत् इति-
 गदाधरः ॥ मनुः—ब्रह्मरम्भेऽवसाने च पादौ ग्राहौ गुरोः सदा । व्य-
 त्यस्तपाणिनाकार्यं मुपसंग्रहणं गुरोः । प्राणायामैस्त्रिभिः पूतस्तत
 ३० कारमर्हति । ३० कारं व्याहृतिस्त्रिभिः सपूर्वात्रिपदांततः ॥
 उक्तवारम्भे च घृतान्तमन्वहं गौतमो ब्रवीत् । कुलपरंपरागत वेद-
 मादौ अध्यापयेत्—वसिष्ठः—पारंपर्यागतो ये पां विदः सपरिवृंहणः ।
 तच्छ्रावकं कर्म कुर्वीत तच्छ्राव्याध्ययनंतथा ॥ गुरुपूजांततः कृत्वा
 विद्याः सर्वाः समारम्भन्त ॥) ततो ब्रह्मचारी संकल्पं कुर्यात् अथे-
 त्यादि० अमुकराशिरमुकोहं, करिष्यमाण वेदारम्भकर्मणः
 पूर्वांगत्वेन गणेश सरस्वती हरि लक्ष्मी स्ववेदसंहितादीनां यथा-
 लब्धोपचारेण पूजनं करिष्ये ॥ ततः पट्टेनाम्नादिस्थात्वाद्यं ध्यतपुंजो-
 परिचा, ३० भूर्भुवः स्वः गणेशमावाहयामि पूजार्थं स्थापयामि च एवं
 सर्वात्र ॥ ३० भू० सरस्वतीम् ० ३० भू० लक्ष्मीम् ० । ३० भू० विष्णुं ०
 ३० भूर्भुवः स्वः स्वविद्याम्—आवाहयामि पूजार्थं स्थापयामि ततो
 चक्षमाणनाममन्त्रैः पृथक् पृथक्, पंचोपचारदक्षिणादिभिः सम्पू-
 जयेत् ३० गणेशाय नमः । ३० सरस्वत्यै नमः । ३० हरये नमः । ३०
 ३० लक्ष्म्यै नमः । ३० ब्रह्मविद्यायै नमः । इति मन्त्रैः सम्पूज्य ततो गन्ध
 मालावस्त्रादिभिः । गुरुं सम्पूज्य—पूर्ववत्पादोपसंग्रहणं कुर्यात् । यदि
 पितुरतिरिक्तं ग्राह्यमणश्चेत्तदा वासांगुलिभिर्गुरुवरणं कुर्यात्वरण
 द्रव्यं सम्पूज्य अथेत्यादि० अमुकराशिरमुकोहं करिष्यमाणवेदारम्भ
 कर्मणि गभिरर्धरणद्रव्येण अमुकगोत्रप्रवरं अमुकशर्माणं वेदज्ञं गुरु-
 त्वेनत्वामहंवृणे वरणद्रव्यं दत्त्वा प्रार्थयेत्—३० गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरु-
 र्देवो महेश्वरः गुरुः साक्षात्परब्रह्मस्तस्मै श्रीगुरवे नमः । ततो गुरुः
 ब्रह्मचारिणं अग्नेरुत्तरतः उदङ्मुखं प्राङ्मुखं वा प्रागग्रेपुकुशोपपवि-
 श्यस्मार्ता चमनं कृत्वा प्राणायामं विधाय ब्रह्मांजलिं कार-
 यित्वा स प्रणवव्याहृतिपूर्वां गायत्रीं पाठयित्वा स्ववेदारम्भं

कुर्यात् । ३० इपेत्वादिग्वंघ्राह्यान्त्यस्य माध्यंदिनीयकस्य, वाजसने
 यस्य यजुर्वेदस्य विचस्वानृषिर्गायत्र्यादीनिह्यन्दांसिलिंगोक्ताः
 देवता वेदारम्भकर्मण्यध्ययने विनियोगः ॥ हस्तंफणाकृतिंकृत्वा
 वामहस्तकरतलोपरि दक्षिणवाहुमूलंदक्षिण जघनोपरिविन्यस्य
 उदात्तादिस्वरसहितं हस्तंचालयित्वा, आरभेत्-हरिः३०-३०
 भूर्भुवःस्यः तत्सवितुः० ३० इपेत्त्वोऽर्जेत्वा च्वायव्वश्वदेवोवः-
 सविताप्रार्पयतु श्रेष्ठतमायकर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय-
 भागम् ॥ प्रजावतीरनमीवाऽअग्रदमा सावस्तेनऽईशतमाघशर्दं०
 सोध्रुवाऽअस्मिन्गोपतीत्यातद्दीर्घ्यजमानस्य पशून्पाहि । (१)
 च्वसोः,पवित्रम् । अलंस्वत्पारंभोक्षेमकरः ॥ अथऋग्वेदः-३०
 ऋग्वेदस्य-अग्निमीठे इत्यस्यमन्त्रस्य, मधुरह्यन्दा ऋषिर्गायत्री
 ह्यन्दाःअग्निर्देवता वेदारम्भकर्मणि ऋग्वेदारम्भकरणेविनियोगः ।
 ३० अग्निमीलेपुरोहितं यजुस्यदेवमृत्विजम् । होतारंरत्नधात-
 मम् । इतिऋग्वेदारम्भः । अथसामवेदारम्भः ॥ ३० अग्नेआया-
 हीति सामवेदादिमन्त्रस्य, गौतमऋषिर्गायत्रीह्यन्दोऽग्निर्देवता
 वेदारम्भकर्मणि सामवेदाध्ययने विनियोगः ॥ ३० अग्नेआया-
 हिषीतयगृणानोहृव्यदातये । निहोतासत्सिबर्हिषि ॥-इतिसाम
 वेदारम्भः-३० शन्नोदेवीरिति अथर्ववेदस्यादिमन्त्रस्य दध्यङ्गा-
 थर्वण ऋषिर्गायत्रीह्यन्दाः अग्निर्देवता वेदारम्भकर्मणि अथर्ववे-
 दाध्ययनेविनियोगः-३० शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥
 शंयोरभिस्रवन्तुनः ॥ पुनःपूर्ववत्प्रणवव्याहृतिपूर्विकांगायत्री-
 पठित्वा ॥ ३० विरामोऽस्तु ॥-इतिवेदानधीत्य, ब्रह्मचारीपूर्व-
 वद् गुरुपादावभिवंद्य प्रणम्यचगुरुदक्षिणासंकल्पंकुर्यात्-अथेत्या
 दिअमुकोर्दं, मयाकृतस्य वेदाध्ययनकर्मणः सांगफलावाप्तये
 गोवरप्रत्याम्नायीभृतमिदंद्रव्यं, गुरवेतुभ्यमहंसम्प्रददे, इतिगुरु-
 चरणयोर्धृत्यापूर्ववत्प्रणमेत्-३० आयुष्मान्भवसौम्य, विद्यावा-
 न्भवसौम्य तत्त्रायुषकरणंकृत्वा अथचलोकावाराद् ब्रह्मचारी
 काश्यांविद्याध्ययनार्थं तीर्थपर्यटनार्थंवागच्छति ॥ तदावाजिज्ञैः

सहस्रह्रमचारीदण्डादिभिः परियुतःसन्, अग्रतो गच्छेत्तदनुयायि
नोपि गच्छन्तु । ततः पूर्वस्पांदिशि वा ग्रामदेवता सन्निधौ गत्या तत्र
देवं संपूज्य प्रणम्य परिक्रमणचतुष्टयं कृत्वा ततो माता वा पिता
सगोत्रिणः तत्र गच्छन्ति, ततो ब्रह्चारिणं प्रबोधयन्ति, भो ब्रह्मचा-
रिन्त्यां गृहे पाठयिष्यामः ततो ब्रह्मचारी ॐ तदस्तु ॥ इत्युक्त्वा
ततस्तं ब्रह्चारिणं, दृढपुरुषस्य स्कन्धारूढं कृत्वा वेदारम्भवेदीसमीप
मानयन्ति, ॐ ध्यायुपंजमदग्नेरिति ललाटे करघपस्य ध्यायुपमिति
ग्रीवायां यद्देवेषु ध्यायुपमिति दक्षिणांसे । तन्नोऽथस्तु ध्यायुपमिति
हृदि ॥ ततो वेदाध्ययनसांगतार्थं गौदानं वा तिलपात्रं कुर्यात्-अथे-
त्यादि० अमुकराशिरमुकशर्मर्माहं करिष्यमाण वेदारम्भकर्मणिवेदा
ध्ययनस्य सांगतसिद्धयर्थं सिद्धं द्रव्यं गोप्रत्याम्नायीभूत ममुकशर्मणे
कर्मोपदेशक्रायाचार्याय तुभ्यं सम्प्रददेत्ततो दशब्राह्मणान् भोजयेत्

अथ समावर्तनपद्धतिः ।

— ०१० —

अथ समावर्तन संस्कार पद्धतिः—अथ च ब्रह्मचारी गुरुमर्थदानेन
संपूज्य (याज्ञवल्क्यः गुरुवे तु वरं दत्त्वा स्नायीत तदनुज्ञया ॥ वेद
व्रतानि वा पारं नीत्वा ह्युभयमेव वा ॥ इति प्रमाणात् समावर्तन
करणाधिकारार्थं स्व गायत्री गुरुवे वरं (ब्राह्मणस्य गौर्वरः) वा
गो प्रत्याम्नायी भूतं द्रव्यं दद्यात्-तत्र संकल्पः-गां वा द्रव्यं
संपूज्य—ॐ अथेत्यादि संकीर्त्य-अमुकोहं समावर्तन स्नाना-
धिकार सिद्धये इमां गां गोनिष्कयीभूतं सुवर्णं रजतं वा गुरुवे
तुभ्यंमहं सम्प्रददे ॥ पितुर्गुरुत्वे पुरोहिताय दद्यात् ॥ इति दत्त्वा
आयुष्मान् भव सौम्य, इत्याशिषं लब्ध्वा गुरुं प्रार्थयेत् ॥ भोगुरो
अहं स्नास्यामि । इति प्रार्थ्य-स्नाहि गुरुर्वदेत् इति लब्धानुज्ञो
ब्रह्मचारी वक्ष्यमाण विधिना स्नायात् । तत आचार्यः समावर्तन

वेदी समीपमागत्यप्राङ् मुग्धमुपविश्य, स्व दक्षिणत उदङ्मुखं
 ब्रह्मचारिणमुपवेश्य आचम्य प्राणायाम त्रयंविधाय, गणेशादी-
 न्प्रणम्य प्रतिज्ञा संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्य अमुकोह
 ममुक नाम्नोऽस्यवदोः ब्रह्मचर्यं समापन पूर्वक स्नातकत्वसिद्धये
 समावर्तनं कर्म करिष्ये । ततो वेद्यां कुशकं डिकामारभेत ॥ ततो
 दक्षिणाहरतेनकुशैः समावर्तनं वेदीं परिसमुहकुशान्पूर्वं क्षिप्त्वा
 गोमयोदकेनोपलिप्य, सुवसृटेन प्रागग्रास्तिस्रो रेग्वा विलिख्य
 उल्लेखन क्रमेणानामिकां गुष्ठाभ्यां मृदुमुध्दल्य, जलेनाभ्युक्ष्य,
 तैजसपात्रोपनीतमग्निं वेद्यां स्वाभिमुखं संस्थाप्य, तद्रक्षार्थद्रव्यं
 नियुज्य ब्रह्मवरणं कुर्यात्—ब्राह्मणं सम्पूज्यद्रव्यं च, अद्येत्यादि-
 अमुकनाम्नो वदोः समावर्तनांगहोमकर्मणि, वृता वृता वेक्षण-
 रूप ब्रह्मकर्म कर्तुमनेन वरणद्रव्येण अमुक शर्माणंत्वां ब्रह्मत्वेन
 वृणे । इतिदत्त्वावृत्तोस्मीतिव्रयान् । कर्मकुरु, करवाणीतिप्रत्युक्तिः ॥
 ततोऽग्नेः प्रदक्षिणं कारयित्वा अग्नेर्दाक्षिणः कुशैः कल्पितासनो
 पर्युपवेशयेत् ॥ ततोऽग्नेरुत्तरतः प्रागग्रकुशैरासनद्वयं कल्पयित्वा
 प्रणीतापात्रं सव्यहस्तेधृत्वा दक्षिणहस्तोद्धत घृतपात्रोदकेन पूर-
 यित्वा, पश्चिमासने निधाय हस्तेनालभ्य पूर्वासने स्थापयित्वा,
 वह्निर्मुष्टिमादाय ईशानादि प्रागग्रैर्वाहीभिर्दक्षसंस्थमग्नेरुत्तरतः
 पश्चाद्वा परिस्तरणं कृत्वा, पवित्र छेदनानित्रीणि कुशतरुणानि,
 पवित्रे साधे अनन्त गर्भेद्वे कुशतरुणे प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली
 तैजसी चरुस्थाली सम्मार्जन कुशास्त्रयः, उपयमन कुशास्त्रि-
 प्रभृतयः पंचसप्तवा, समिधस्तिष्ठः प्रादेशमात्र्यः, सुवः गव्य-
 माज्यं, पूर्णपात्रं दक्षिणावरोवा यथायदासाद्य, विशेषोपकल्पनी
 यानि वस्तूनि—डंधनं पृथक् पृथक् दशधा विभक्तं, पर्युक्षणार्थं
 जलं समिधस्तिष्ठः हरिताः कुशाः स्नानार्थं सर्वोपधि मिश्रित
 तीर्थजल पूर्णा अण्टी कलशाः । सहस्रधारां ताम्रमयी, सूर्योप-
 स्थानार्थं वस्त्रं, भोजनार्थं दधितिलानि, नापितः स्नानार्थं शीतलं
 जलं, औदुम्बरं दन्तधावनं वर्षाप्रमाणकं, उद्धर्तनं स्नानार्थं मुष्ण-

मुदकं, चन्दनं नूनने वाससी यज्ञोपवीतं पुष्पाणि माला च, शिरो-
 वेष्टनम्—उत्तरीयं, परिधानवस्त्राणि कुण्डले, अंजनं दर्पणं, छत्रं
 उपानहौवैणवो दण्डश्चेति संगृह्य कर्मारभेत् ॥ ततस्त्रिभिः कुण्ड-
 तरुणैः द्वे कुशतरुण्ये प्रक्षिप्य पृथक् संस्थाप्य प्रोक्षणीपात्रं प्रणीता-
 सन्निधौ निधाय तत्र हस्तेन प्रणीतोदकमापिच्य, पवित्राभ्या-
 मुत्पूय पवित्रे प्रोक्षणीषु निधाय, दक्षिणहस्तेन प्रोक्षणीपात्र
 मुत्थाप्य सव्ये करे कृत्या तदुदकं दक्षिणा नामिकां गुष्टाभ्या-
 मुच्छ्राव्य प्रणीतोदकेन प्रोक्ष्य आज्यस्थाल्यादीनिपूर्णपात्र पर्य-
 न्तानि प्रोक्षणी जलेनआसादन क्रमेणैकैकशः प्रोक्ष्य, प्रणीताग्न्यो
 रंतरालेप्रोक्षणी पात्रं निधाय, आसादितमाज्यं, आज्यस्थाल्यां,
 पश्चादग्नेर्निहितायांप्रक्षिप्य, प्रणीतोदकमापिच्यतत्राज्यं ब्रह्माधि-
 श्रयति, ज्वलद्बुलमुकमादाय, आज्योपरि समन्तात् प्रदक्षिण क्रमेण
 भ्रामयित्वा, दक्षिण हस्तेन श्रुवमादाय, प्रांचमधोमुखं तापयित्वा
 सव्येपाणौकृत्वा दक्षिणहस्तेन संम्मार्जनं कुशाग्रैर्मूलतोऽग्रपर्यन्तं,
 मूलैरग्रतो मूलपर्यन्तं संम्मार्ज्यं कुशानग्नौप्रक्षिप्य प्रणीतोदकेना
 भिषिच्य, पुनः पूर्ववत्प्रतप्य स्व दक्षिणतोनिदध्यात् ॥ आज्यमग्रे
 पश्चादानीय, पवित्राभ्यामुत्पूय, अवेद्यापद्रव्यं निरसनं कृत्वा,
 प्रोक्षणी जलेन पवित्राभ्यामापिच्य उपयमनकुशान दक्षिणहस्ते-
 नादाय, सव्येकृत्वा उत्तिष्ठन् दक्षिणहस्तेन घृणाक्तास्तिस्रः समिध
 आदाय तूष्णीमग्नौ प्रक्षिप्य, प्रोक्ष्यमुदकम् दक्षिणचतुर्भुके गृहीत्वा,
 ईशनादि उदगान्तमग्निं प्रदक्षिण क्रमेण परिपिच्य पवित्रे प्रणीतां
 पात्रे निधाय, आघारादीन् जुहुयात् ॥ संस्रव धारणार्थं प्रोक्षणी-
 पात्रं प्रणीताग्न्यो रंतराले निदध्यात् ॥ द्रव्यदेवताभि ध्यानं
 कुर्यात् ॥ अथेत्यादि संकीर्त्य—अमुक नाम्नोऽस्य वटोः समावर्तन
 कर्मणि तत्रप्रजापतिं, इन्द्रम्, अग्निम्, सोमम्, अंतरिक्षम्, वायुम्,
 ब्रह्माणम्, छन्दाँसि, दिवं, सूर्यं, ब्रह्माणं, छन्दाँसिप्रजापतिम्,
 देवान्, ऋषीन्, अर्द्धां, मेधां, सदसस्पतिं अनुमतिं, अग्निं, वायुं,
 सूर्यं, अग्नीवरुणौ, अग्नीवरुणौ, अग्निं, द्यवरणँसवितारं, विष्णुं,

विश्वेदेवान् भरुनः, स्वर्कान्, द्यवरूपां, प्रजापतिं, स्थिष्ठकृतं चाज्ये-
 नाहं यक्ष्ये (आचार्यस्य होमकर्तृत्वे, पित्रादिः, इदमाज्यं तत्तदे-
 वतायै मया परित्यक्तं यथा दैवतमस्तु न मम ॥) ततः
 (व्रतान्ते राजपुत्रकः) इति स्मरणान् राजपुत्रनामानमग्नि
 मावाहयेत् ३० भूर्भुवः स्वः राजपुत्रनामाग्ने । इहागच्छेहनिष्ठ,
 ३० एतन्ते० इति प्रतिष्ठाप्य ३० तदेवाग्नि० इति मंत्रेण वा ३०
 राजपुत्रनामाग्नये नमः इति मंत्रेण सम्पूज्य, दक्षिणं जान्वाचग,
 ब्रह्मणान्वारब्धो जुहुयात्-स्रुवेण-३० प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजा-
 पतये नमः । ३० इन्द्राय स्वाहा-इदमिन्द्राय नमः । ३० अग्नये
 स्वाहा इदमग्नये नमः । इत्याचाराज्यभागो हुत्वा, अन्यारंभत्य-
 क्त्वा, समावर्तनांग होमस्य प्रधानाहुती जुहुयात् । तत्रादौ यजु-
 र्येदाहुतयः—३० अन्नरिचाय स्वाहा इदमन्नरिचाय नमः । ३०
 वायवे स्वाहा इदं वायवे० ३० । ब्रह्मणे स्वाहा-इदं ब्रह्मणे । ३०
 छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः०—अथ ऋग्वेदाहुतयः ३० पृथिव्यै
 स्वाहा इदं पृथिव्यै नमः । ३० अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ३०
 ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे० ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः ।
 सामवेदाहुतयः ३० दिवे स्वाहा इदं दिवे नमः ३० सूर्याय स्वाहा
 इदं सूर्याय० ३० ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे० ३० छन्दोभ्यः स्वाहा
 इदं छन्दोभ्यः० अथर्ववेदाहुतयः—ॐ दिग्भ्यः स्वाहा इदं दिग्भ्यो
 नमः । ३० चन्द्रमसे स्वाहा-इदं चन्द्रमसे० — ब्रह्मणे स्वाहा
 इदं ब्रह्मणे० ३० छन्दोभ्यः स्वाहा-इदं छन्दोभ्यः । अथ संतलग्न
 सामान्याहुतयः—ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमः । ॐ
 देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यः० । ३० ऋषिभ्यः स्वाहा इदं ऋषिभ्यः० ।
 ॐ अद्वायै स्वाहा इदं अद्वायै० । ३० मेधायै स्वाहा-इदं मेधायै०
 ३० सदसस्पतये स्वाहा-इदं सदसस्पतये० । ३० अनुमतये स्वाहा
 इदमनुमतये नमः । इति कर्माङ्गा हुतयो हुत्वा ब्रह्मणान्वारब्धो जु-
 हुयात् ॐ भूराद्रिभ्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री-उशिषग-
 नुप्पुभ्रुंदांसि अग्नि वायु सूर्या देवताः समावर्तनांग होमेचिनि-

योगः (३० भूः स्वाहा इदमग्नयेनमम ३० भुवः स्वाहा इदं वाय-
 वे० ३० स्वः स्वाहा इदं सूर्याय० ३० त्वन्नोऽग्ने सत्वन्नोऽग्ने
 इत्यनयोर्वाग्देव ऋषिस्त्रिष्टुष्टुन्दः अग्नीवरुणौ देवते समावर्तनां
 गहोमे विनियोगः । ३० त्वन्नोऽग्ने व्वरुणस्य द्विवद्वान् देवस्यद्देहो
 ऽथवासिसीष्टाः यजिष्ठोवन्हितमः शोशुचानोव्विश्वाद्देपाँसि
 प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम ३० सत्वन्नोऽग्ने
 ऽवमोभवोतीनेदिष्टोऽन्नस्याऽउपसोव्युष्टौ । अथवद्वनोव्वरुण ई०
 रराणोव्वीहिमृडीक ई० सुहवोनऽग्निस्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यां
 ३० अयारचाग्ने इति वामदेवऋषिस्त्रिष्टुष्टुन्दः अग्निर्देवता समा-
 वर्तनांग होमेदिनियोगः—३० अयारचाग्नेयानभिशस्यिपाश्च सत्य
 मित्त्वमयाऽअसि अयानोयज्ञं व्वहास्पयानोधेहिभेपज ँ स्वाहा
 इदमग्नये—३० येतेशतमिति वामदेवऋषिस्त्रिष्टुष्टुन्दो व्वरुणः
 सविताविष्णुर्विश्वेदेवानरुनः स्वर्काश्चदेवताः समावर्तनांग होमे
 विनियोगः ३० येतेशतंवरुण्येसहस्रंयजियाः पाशाद्वितनामहान्तः
 तेभिर्नोऽअथसवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तुमरुनः स्कर्काःस्वाहा
 इदं व्वरुणाय सवित्रे विष्णवेविश्वेभ्यो देवेभ्योमरुद्भ्यःस्वर्केभ्य-
 रचनमम । ३० उदुत्तममितिशुनः श्रेफऋषिस्त्रिष्टुष्टुन्दः व्वरुणो
 देवतासमावर्तनांग होमेविनियोगः ३० उदुत्तमंव्वरुणपाश मस्म-
 दनाभमं विमध्यमँश्रथांग, अथाव्वयमादित्यव्रते तवानांगसोऽ
 अदिनयेत्याम स्वाहा० इदं व्वरुणायनमम, ३० प्रजापतये स्वाहा
 इदं प्रजापतयेनमम । ३० अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नयेस्वि
 ष्टकृतेनमम संस्रवंप्रारथ, प्रणीनाजलेन पवित्राभ्यां मुवंसंमार्द्ध
 अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः अग्नि परिचभे प्रणीनाविमोकं कृत्वा ब्रह्-
 मणेपूर्णपात्रंदद्यात्—अथेत्यादि० अमुकोऽहंमसमावर्तनांगहोम
 कर्मणःसांगकलवाप्यये अपूर्णपूर्णार्थं इदं सदक्षिणं पूर्णपात्रं ब्रह्म
 णे तुभ्यंसंप्रददे ३० स्वस्तीति ब्रह्माब्रूयात् । ततोब्रह्मचारी गुरुम-
 भिवन्ध,वक्ष्यमाणमन्त्रैःप्रतिमन्त्रैकमिन्धनमग्नौप्रक्षिपेत् तत्रमन्त्रः
 ३० अग्नेसु अथ इत्यादीनां पंचानां मन्त्राणां ब्रह्मऋषिर्यजुरक्षुन्दः

अग्निर्देवता समिन्धने विनियोगः—३० अग्ने सुश्रवः सुश्रवसंमा-
 कुरु ॥१॥ इत्येकं शुश्रुमिन्धनमग्नौ प्राक्षिपेत् । ३० यथात्वमग्ने
 सुश्रवः सुश्रवाऽसि । द्वितीयं क्षिपेत् । ३० एवं माँ सुश्रवः सौश्र-
 वसंकुरु । तृतीयं ३० यथात्वमग्ने देवनां यज्ञस्य निधिपाऽसि, चतुर्थं
 ३० एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् इति पंचमं प्राक्षि-
 पेत् । एवं हस्ताभ्यां धुंक्ष्य वन्हिमुत्तेजितं कृत्वा जलेन ईशाना बुदगंत
 प्रदक्षिणक्रमेण वन्हिसंमार्ज्यं, ततो ब्रह्मचारी उत्थाय दक्षिण
 हस्ते घृताक्तामेकां समिधमादायोतिष्ठन् ३० अग्ने समिधमिति
 प्रजापतिर्ऋषिराकृतिश्छन्दः समिधेवता समिदाधाने विनियोगः ।
 ३० अग्ने समिधमाहार्यं बृहते जातवेदसे यथात्वमग्ने समिधा
 समिध्यसऽएव महमायुषामेधया चर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्च-
 सेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधा च ग्रहमसान्य निराकरिष्णुर्याश
 स्वीते जस्वी ब्रह्मवर्च स्थस्नादो भूयासँ स्वाहा इत्येकां ह्रुत्वा
 अनेनैव मंत्रेण द्वितीयां तृतीयां च ह्रुत्वा पुनः पूर्ववत् अग्ने सुश्रवः पंचभि-
 र्मन्त्रैः पंचन्धनप्रक्षेपणं धुंक्ष्येण अग्निपर्युक्षेणं, विधाय तूष्णीं पाणी प्रत-
 प्य सुग्वं विमार्ष्टितनूपा अग्ने रित्यादिसप्तभिर्मन्त्रैः प्रतिमंत्रेण ललाटादि
 चिबुकपर्यन्तं मुखं हस्ताभ्यां प्रोक्षति । ३० तनूपा अग्ने इत्यादिसप्तानां
 मंत्राणाम् अथत्सारऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता अग्न्यालांभने
 विनियोगः ३० तनूपा अग्नेऽसितन्वां मेपाहि ॥१॥ ३० आयुर्दाऽअग्ने
 ऽस्यायुर्मेदेहि ॥२॥ ३० व्वर्चोदाऽअग्नेऽसि व्वर्चो मेदेहि ॥३॥
 ॐ अग्ने यन्मे तन्वाऽऊनं तन्मऽ आष्टुण ॥४॥ ३० मेधां मेदेवः
 सविता आदधातु ॥५॥ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु ॥६॥ ॐ
 मेधामश्विनो देवायाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥७॥ इति प्रोच्छ्रित्वा वक्ष्य-
 माणमंत्रैराचार्यो वटोः सर्वांगं पूतप्राणिना ज्वालयेत् ॥ ॐ
 अङ्गानि च मऽऽप्यायताम् । इति सर्वांगम् ॥ ॐ वाक् च मऽऽप्या-
 प्यायताम्—इति मुखम् । ॐ प्राणश्च मऽऽप्यायताम्—इति ना-
 सारन्ध्रे ॥ ३० चक्षुरश्च मऽऽप्यायताम्—इति चक्षुषी ३० श्रोत्रं
 च मऽऽप्यायताम्—श्रोत्रे मंत्रपर्यायेण—यशोबलं च मऽऽप्या-

यताम्—इति वाह । तत हस्तौ प्रक्षालयेत् अथानामिकयाऽग्ने
भस्मगृहीत्वा वक्ष्यमाणमंत्रैः त्र्यायुषाणि कुर्यात् ।
ॐ त्र्यायुपमिति नारायणऋषिः कृष्णकृष्णः अग्निदेवता
त्र्यायुपकरणे विनियोगः । ॐ त्र्यायुपंजमदग्नेः इति ललाटे ।
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुपमिति ग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषु त्र्यायुपम्—
इति दक्षिणांसे । ॐ तन्नोऽग्रस्तु त्र्यायुपमिति—हृदि—ततो
ब्रह्मचारी व्यस्तहस्ताभ्या मग्नेरभिवादनं कुर्यात् । अमुकगोत्रो
ऽमुकप्रवरो यजुर्वेदान्तर्गतामुक शाखाध्यायी, अमुकोऽहंभो अग्ने
त्वामभिवादये ॥ इत्यग्निमभिवाच्य, ततः कर्णांस्तृप्त्वा व्यस्ताभ्यां
हस्ताभ्यां अमुकगोत्रेत्याद्युक्त्वा, भोगुरोत्वामभिवादये गुरुस्तु त्र्यायुं
पमानभवसौम्य अमुक ० । ३। ततोऽग्रेरुत्तरतः दक्षिणोत्तरश्रेणियुतानां
ताम्रादिमयानां जलपूर्णकुम्भानां पंचपल्लवावृतमुग्वानां पुरस्तात्
हरितकुशान् प्रागग्रानास्तीर्थं, तेषुकुशेषु ब्रह्मचारी उदङ् मुखेनो-
पविष्य (गणनायां दक्षिणतो वामगतिन्यायेन) प्रथमतः दक्षिणस्यै-
व भवति । तत्रादौ दक्षिणस्यादौ उदकुंभाद्दुदकं गृहीत्वा, ॐ
येऽप्स्वन्तरमिति प्रजापति ऋषिर्यजुश्छन्दः, आपो देवता अपां ग्रहणे
विनियोगः । ॐ येऽप्स्वन्तरग्नयः प्रविष्टा गोहृद्यऽ उपगोहृद्यो मयूग्वो
मनोहाससखलो ब्विरुजस्तनृदुपिरिन्द्रियहा तान् विजहामि योरो-
चनस्तमिह गृह्णामि । इति मंत्रेण प्रथमं जलकुम्भाद्दक्षिणहस्तचुलुके
जलं गृहीत्वा वक्ष्यमाण मंत्रेण आत्मानमभिपिंचति । वक्ष्यमाण
मंत्रेण तेनोदकेन ब्रह्मचारी स्वीकीयशिरसोऽभिपेकं कुर्यात् । अभि-
पेकानन्तरं शेषजलां सहस्रधारां शिरसि कृत्वा तत्र क्षिपेत् वा सर्वं
कुम्भाभिपेकान्ते सर्वेषां जलेनैकैकशः सहस्रधाराभिः स्नायात्,
ॐ तेनेति प्रजापति ऋषिर्यजुश्छन्दः अपो देवता अभिपेचने विनि-
योगः । ॐ तेन मामभिपिंचामि श्रियै यशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्च-
साय । इति मंत्रेण अभिपेकं कृत्वा, सहस्रधाराभिर्वाशिरसि जलां
क्षिपेत् । ततः पूर्वोक्तयेऽप्स्वन्तरग्नय इति मंत्रेणैव कलशाष्ट-
कानां चुलुकेन जलां ग्रहणं करोति । अभिपेकस्यैव पृथक् पृथक् मंत्राः

सन्ति । ततो द्वितीयकलशजलं येप्सवन्तरग्नयः इति चुलुकेगृहीत्वा
 ॐ येनेति प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः आपोदेवता अभिषेचने
 विनियोगः ॐ येनश्रियमकृणुतां येनावमृश्यता ॐ सुराम् । येना-
 द्याधभ्यपिंचतां यद्वां तदश्विनायशः । २। इत्यभिषिंच्य ततः
 पूर्ववद्, येऽप्सवन्तः । आपोगृ० ॥ ॐ आपोहिष्टेति सिन्धुद्वीप
 ऋषिर्गायत्रीछन्दः अपोदेवता अभिषेचने विनियोगः ॐ आपो
 हिष्टामयोभुवस्तानऽज्जेंदधातन । महेरणाय चक्षसे । इत्यभिषिंच्य
 ॥ ३। चतुर्थकुम्भात् । येऽप्सवन्तः जलमादाय ॐ योवऽ इति
 सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्रीछन्दः आपोदेवता अभिषेचने विनियोगः
 ॐ योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिवमातगः
 इत्यभिषिंच्य ॥ ४। ततः पंचमकुम्भात् । येऽप्सवन्तः इति जलं०
 ॐ तस्माऽअरंग इति सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपोदेवता
 अभिषेचने विनियोगः ॥ ॐ तस्माऽअरंगमामचो यस्य क्षयाय
 जिन्वथ । आपोजन यथा चनः ॥ इत्यभिषिंच्य, ततः षष्ठ
 सप्तम अष्टम कुम्भानां जलमैकैकशः, ॐ येऽप्सवन्तरग्नयः इति
 मंत्रेण पूर्व जल ग्रहणं, तृष्णीमभिषेचनम्-कुर्यात् पूर्ववत् (कचि-
 त्पुस्तके इदानीमभिषेकानन्तरं, अभिषेकावशिष्ट जलेन सहस्र-
 धाराभिः स्नानं निर्दिष्टम्-सूत्रकारेण शिरसोभिषेकश्चुलुके
 नोक्तः नतु सहस्रधाराभिः ॥ देशसमाचारोऽयम् ।)—वक्ष्यमाण
 मंत्रेण ब्रह्मचारीमौजींमेखलांमंत्रं पठन्स्वयमेवशिरोमार्गेण निस्तार्य
 भूमौ क्षिपेत्-ॐ उदुत्तममिति शुनः शेषऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वरुणो
 देवता मेखलोन्मोके विनियोगः ॥ ॐ उदुत्तमं ववरुणपाशमस्म-
 दवा धमंत्विमध्यमं ॐ अथाय । अथावयमादित्यन्वतेतवानागसोऽ
 अदितयेस्याम ॥ इति मेखलामुन्मुच्य तृष्णी मुदगग्रं दण्डमजिनं
 च भूमौ निधाय, उपकल्पितवासस्तृष्णीं परिधाय द्विराचम्यवक्ष्य
 माण मंत्रैः आदित्यमुपतिष्ठते । ॐ उद्यन्ध्राजभृष्णुरिति प्रजा-
 पतिर्ऋषिः शकरीछन्दः आदित्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥
 ॐ उद्यन्ध्राजभृष्णुरिन्द्रो भरद्भिरस्थात्प्रातर्यां धाभिरस्थाद्दश-

सनिरसि दशसनिं मा कुर्वाविदन्मागमय । उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो
मरुद्भिरस्थाद्विद्यायावभिरस्थाच्छत सनिरसि शत सनिंमा कुर्वा-
विदन्मागमय । उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रोमरुद्भिरस्थात्सायं यावन्भि-
रस्था त्सहस्रसनिरसि सहस्रसनिं मा कुर्वाविदन्मागमय । इति
मंत्रैः ब्रह्मचारी उत्तिष्ठन्नृध्वं वाहुः सूर्योपस्थानं कुर्यात् ॥ तत
उपकल्पितं दधि तदभावे तिलान्वा दक्षिणहस्तामध्य सोमतीर्थेन
प्राश्यजटालोमनखानां नापितद्वारा निकृन्तनं कृत्वा ॥ वपननि-
मित्तकं शीतलोदकेन स्नात्वा आचम्य ततो ब्राह्मणः द्वादशांगुल
दीर्घेण, क्षत्रियो दशांगुलेन, वैश्योऽष्टांगुलेन, कनिष्ठिकाग्रभाग-
स्थूले न उदुम्बरकाष्ठेन दन्तधावनं वक्ष्यमाणमंत्रेण कुर्यात्—३०
अन्नाद्यायेत्याथर्वण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः—सोमोदेवता दन्तधावने
विनियोगः ॥ ३० अन्नाद्याय ध्व्यृहध्वँसोमोराजाऽअयमागमत् ।
समेमुखं प्रमाद्व्यते यशसा च भगेन च ॥ ततो द्वादशगंगूपान्
कृत्वा, आचम्य सुगन्धि द्रव्येण कटुतैलमिश्रित हरिद्रापिष्ठादि-
युतेन कल्केन गात्रोद्धर्तनं कृत्वा सशिरस्कं तप्तोदकेन स्नात्वा,
ततः केशरचन्दनाद्यनुलेपनमादाय, तेन चन्दनेन उभौ हस्तावुप-
लिप्यवक्ष्यमाणमंत्रैर्वक्ष्यमाण अंगानि उपगृहीते ॐ प्राणापाना-
विति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः लिंगोक्तादेवता चन्दनोप संग्रहणे
विनियोगः ॥ आदौ—उभाभ्यां हस्ताभ्यां मुखं नासिकां च
लिम्पेत् ३० प्राणापानौ मे तर्पय । तत्तश्चक्षुषी—३० चक्षुर्मे तर्पय ॥
ततः कर्णौ—३० श्रोत्रं मे तर्पय, ततो हस्तौ प्रक्षाल्य, अपसव्यं
कृत्वा, तदवनेजनं दक्षिणाभिमुखः पितृतीर्थेन दक्षिणास्यां भूमौ
निषिंचेत् वक्ष्यमाण मंत्रेण—ॐ पितर इति प्रजापत्यशिवसरस्वत्य
ऋषयो यजुश्छन्दः पितरो देवताः निषेचने विनियोगः । ॐ
पितरः शुन्धध्वम् इति पाण्योरवनेजनं जलं भूमौ निषिं-
चेत् ॥ अत्रपित्र्यत्वात् सव्यं सूत्वोदकस्पर्शः ॥ ततोऽनुलेप-
नानन्तरं केशवादि नामभिर्द्वादशतिलकान धारयेत्—यथा
३० केशवायनमः ललाटे ? ३० नारायणायनमः उ वरे

२ ॐ माधवायनमः हृदये ३ ॐ गोविन्दायनमः कंठकूपके ४
 ॐ विष्णवेनमः दक्षिणकुक्षौ ५ ॐ मधुसूदनायनमः दक्षिणबाहौ
 ६ ॐ त्रिविक्रमायनमः कर्णमूलयोः ७ ॐ वामनायनमः वाम
 कुक्षौ ८ ॐ श्रीधरायनमः वामबाहौ ९ ॐ पद्मनाभायनमः
 पृष्ठदेशे १० दामोदरायनमः कङ्कदि ११ ॐ वासुदेवायनमः
 मूर्ध्नि १२ ललाटेवंशपत्राकृतिकं मध्यशून्यंधारयेदिति च ॥ एवं-
 तिलकान्धृत्वा वक्ष्यमाणमंत्रं जपेत्—ॐ सुवक्षाइति प्रजापति-
 ऋषि, र्यजुरञ्जन्दः सविता देवता जपे विनियोगः ॥ ॐ सुवक्षाऽह
 मन्त्रीभ्यां भूयासर्दं सुवर्चा मुखेन सुश्रुत्कर्णाभ्यां भूयासम् ॥ अथ
 वासः परिधत्ते—ॐ परिधास्यै इत्याध्वेण ऋषिः पंक्तिञ्जन्दो वासो-
 देवता अधोवस्त्रपरिधाने विनियोगः ॥ ॐ परिधास्यै यशो धास्यै,
 दीर्घायुत्वाय जरिदष्टिरस्मि । शतं च जीवामि तरदः, पुरुचीराय सपो-
 पमक्षिसंश्रयिष्ये ॥ ततो द्विराचम्य पूर्वमभिमंत्रितं यज्ञोपवीतं
 द्वितीयंधारणं कुर्यात् । (स्नातस्य द्वेवह्निना इति वचनात्) वस्त्रा-
 भावे तृतीयं उत्तरीयाभावे चतुर्थं च यथासंप्रदायः ।) ॐ यज्ञोपवी
 तमिति परमेष्ठी ऋषिः—त्रिष्टुप्छन्दो लिंगोक्ता देवताः यज्ञोपवीत
 परिधाने विनियोगः—ॐ यज्ञोपवीतं परमंपवित्रं प्रजापते र्यत्स-
 हंजपुरस्तात्, आयुष्यमग्रं प्रति संश्रुशुश्रं यज्ञोपवीतं वलमस्तु तेजः ।
 अथोत्तरीयम्—ॐ यशसामेत्य धर्षण ऋषिः पंक्तिरञ्जन्दो लिंगोक्ता
 देवता उत्तरीयपरिधाने विनियोगः ॐ यशसामाद्यावापृथिवी
 यशसेन्द्रावृहस्पती । यशो भगश्च माऽर्चिदयशोमा प्रतिपद्यताम् अने
 नैवमन्त्रेण कौशेयादिदुक्कलेनाच्छादयेत् । (एकमेव वस्त्रं चेत्तेनो-
 त्तर वगणं प्रच्छादयेत्) ततो द्विराचमनं कृत्वा पुष्पमालां गृह्णाति
 । ॐ या आहरदिति भरद्वाज ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सुमनसो देवता
 पुष्पमाला ग्रहणे विनियोगः ॥ ॐ याऽआहरज्जमदग्निः श्रद्धायै,
 मेधायै कामयेंद्रियाय । ताऽअहंप्रति गृह्णामि यशसा च भगेन च, इति
 गृहीत्वा वक्ष्यमाण मंत्रेण शिरसि वध्नाति । ॐ यद्यशोऽप्सरसा-
 मिति भरद्वाज ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सुमनसो देवताः पुष्पमाला धारणे

विनियोगः । ॐ यद्यशोऽप्सरस्तामिन्द्रश्चकार द्विपुलं पृथुतेन संग्र-
थिताः सुमनसः आचध्नामियशो मयि ॥ अथोष्णीपेण शिरोवेष्ट-
यते । ॐ युवासुवासा ऽ इति विश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः
शिरोदेवता शिरस्युष्णीप वेष्टने विनियोगः, ॐ युवासुवासा
परिवीत आगात्सऽउश्रेषान्भवति जायमानः तन्धीरासः कवयऽ
उन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः ॥ ततः क्रुण्डलादीन्यलंकाराणि
वासांसिवा—ॐ अलंकरणमिति प्रजापतिर्ऋषिर्धनुश्छन्दः अलं
करणं दैवतं वस्त्रभूषणालङ्करणं विनियोगः—ॐ अलङ्करणमसि
भूयो ऽ अलङ्करणं भूयात् । इति क्रुण्डल वस्त्रान्यद्भूषण हारा-
दिभिरलंकृत्वा वक्ष्यमाणमंत्रेण चक्षुषी अंजनेनाङ्क्ते ॥ ३० वृत्र-
स्यासि कनीनकश्चक्षुर्हाऽअसि चक्षुर्मे देहि ॥ अनेनैव दक्षिणवामौ
संस्करोति ॥ तत्र आदर्शं प्रेक्षते—३० रोचिष्णुरिति प्रजापतिर्ऋषि-
र्यजुश्छन्दः आदर्शदेवता आत्मानमादर्शं दर्शनेविनियोगः ॥ ३०
रोचिष्णुरसि ॥ इति सर्वं देहं दर्पणे पश्यति ॥ ततश्छत्रं प्रति
गृह्णाति, ३० बृहस्पतेश्छदिरिति गौतमऋषि रार्चिर्बृहतीछन्दः
छत्रं देवता छत्र ग्रहणे विनियोगः ३० बृहस्पतेश्छदिरसिपाप्म-
नो मामन्तर्धेहि तेजसो यशसोमामन्तर्धेहि ॥ ततोवक्ष्यमाणमंत्रेण
(प्रतिष्ठे) इति मंत्रस्य द्विवचनान्तत्वात् पादयोर्गुणपत्प्रतिमुंचते
परिधत्ते ॥ ३० प्रतिष्ठे इति विश्वामित्र ऋषिर्विराद्छन्दो लिंगो-
क्ता देवता उपान्तप्रतिग्रहणे विनियोगः । ३० प्रतिष्ठेस्थोद्विश्वतो
मापतम् । ततो वेणवदण्डमादत्ते—ॐ विश्वाभ्य इति याज्ञ
वल्क्य ऋषिर्यजुश्छन्दो दण्डोदेवता दंडग्रहणे विनियोगः ३०
द्विश्वाभ्योमा नाष्ट्राभ्यस्परि पाहि सर्व्वतः इति वेणव (वास)
यष्टिकां गृहीत्वा आचार्यं समीपमागत्य प्रणम्यच (धारयेद्वैणवीं
यष्टिं सोदकं च कमंडलुम् ॥ यज्ञोपवीतं वेदं च शुभे रौक्मे च
क्रुण्डले ।) तत आचार्यमुखात् स्नातको नियमान् शृणुयात्
(उक्तं च पारस्कर गृह्यसूत्रे कांड २ कांडिका ७तः) स्नातकस्य
यमान् वक्ष्याम । स्नातस्य ब्रह्मचर्यं समावृतस्य त्रेवर्णिकस्य निय-

मान् वक्षामः ॥ (कामादितरः ।२। कामादिच्छया इतरः द्विजाते-
रन्य शूद्रोपिनियमेषु-अधिक्रियते ॥ (नृत्यगीत चादित्राणि न
कुर्यान्नचगच्छेत् ३ ॥) नृत्यं तालाद्यनुकरणगात्र विक्षेपः, गीतं
पद्मजादिस्वरं ध्रुवादिरूपकः विशेष लावण्यरागध्वनिः ॥ चादित्रं
शब्दगुणात्मकं तंत्रीमृदंगादिभेदेन चतुर्विधम् ॥ एतानि स्वयं न
कुर्यात्-एतान्यन्यैः क्रियमाणानिदृष्टं श्रोतुंवान् गच्छेत् ॥ (काम-
न्तु गीतं गायति वैद्यगीते वा रमन् इति श्रुतेर्ह्यपरम् ४॥) क्षेमेनक्तं
ग्रामान्तरं न गच्छेत् । ५ ।) कुशलेसति रात्रौ अन्यग्रामं
न गच्छेत् (आपदितु नक्तमपि गच्छेत् । (न च धावेत् । ६ ।)
अकारणं शिश्रुं न गच्छेत् (उदपानावे क्षण वृक्षारोहण फलप्रपतन,
संधिसर्पणं, विवृतस्नानं, विषमलंघनं, शुक्तवदनं, संध्या
दित्यप्रेक्षणं, भिक्षणानि न कुर्यात्, न हवै स्नात्वा भिक्षेतापहवै
स्नात्वा भिक्षां जयतीति श्रुतेः । ७ । कूपस्थावेक्षणं उपरितः अधो-
मुखीभूत्वा चिरकालं कौतुकेन न कुर्यात्, वृक्षोपरिगमनं, आभ्रादि
फलानां चोटनं, संध्यायां मार्गगमनं, कुमार्गं शीघ्रगमनं, नग्न
स्नानं, पर्वतगर्तादे रुच्छालनेन लंघनम् । अश्लीलं तु त्रिविधं
लज्जाकरं, दुःश्रव्यकरं, अमंगलसूचकंचन द्रूयात् नै क्षेतादित्यमुच्यन्तं,
नास्तं यान्तं कदाचन नोपरिष्ठं न वारिस्थं न मध्यं न भसो
गतम्, पक्वान्भिक्षां, एतानि क्षेमेसति वर्जयेत् (वर्षत्यपावृतो
व्रजेद्यमेवज्रः पाप्मानमपहनदिति । ८ । देवेन्द्रे
वर्धतिसति अनाच्छादितः सन् वक्ष्यमाणमंत्रं जप्त्वा गच्छेत् ।
९० अथमेवज्रः पाप्मानमपहनन् इति । (अप्स्वात्मानं नावेक्षेत्
॥ ९॥) जैलेस्य सुप्तं न पश्येत् । (अजातलोम्नीं विपु र्दं सीर्षं
पदं च नोपहसेत् ११) भृकुटि पलकादिपुरोमरहितां कर्चाकारां
श्रोष्ठरोमजां पुरुषाकृतिंस्त्रियम् । नोपहसेत् न तथासह गच्छेत्
नपुंसकमपिनोपहसेत् । गभिणीं विजन्वेति द्रूयात् । १२ । सकुल-
मिति न कुलम् । १२ । भगालमिति रूपालम् । १३ । मणिधनुरितीन्द्र
धनुः १४ । गभिणींस्त्रियम् विजन्वा इत्येवं द्रूयात् । १५ । सकुल-

विज्ञेयम् सकुलमिति द्रूयात् । कपालं मानुषशिरः भगालमिति द्रूयात् । इन्द्रधनुः मणिधनुरिति द्रूयात् । (गांधयन्तीं परस्मैनाचक्षीत । १५) परस्य गांस्ववत्संपाययन्तीं, तत्स्वामिनेन कथयेत् ॥ (उर्ध्वरायामन्तर्हितायां भूमावुत्सर्पं ६० स्तिस्तन्न मृत्रपुरीषे कुर्यात् । १६) उर्ध्वरायां सस्यवत्यां भूमौ चहुतृणैरन्तर्हितायां च भूमौ ऊर्ध्वं तिष्ठनसन् । उत्सर्पन्नपि च मलमूत्रेण कुर्यात् । [स्वयंप्रशीर्षेण काष्ठेन गुदं प्रमुञ्जीतः । १७] स्वयं भूमौ पतितेन, अयज्ञिकेन, काष्ठखण्डेन मलोत्सर्गान्ते गुदं मलद्वारं प्रोच्छ्रयेत् (विकृतं वासोनाच्छादयेत् ॥ १८ ॥ विकृतं नीलधादीन्या रंजितम् स्वाचार विच्छ्रद्धवत्सं न परिदधीत स्मृत्युक्तकौशेयादिरक्तपीतवासांसितुपरिधेयानिसन्ति दृढव्रतो वधत्त्रः स्यात् सर्वपांमित्रमिव । १९ । दृढस्थिरं व्रतंप्रारम्भं कर्मयस्यसो दृढव्रतः स्यात् भवेत् ॥ वधात् । घातात् । आत्मानं रक्षतीति वधात्त्रः स्यात् स्वपांपरेपां च मित्रमिव हितकारी स्यात् । मैत्रोद्वाह्येण उच्यते, इति स्मरणान् इति सर्वसाधारणनियमाः अथ च समावर्त्तनान्तो द्विजा त्रिरात्रव्रतमाचरं युस्तदवद्ये तिस्रो रात्रीर्व्रतं चरेत् । १ । तिस्रः त्रिसंख्या रात्रीः अहोरात्राणि व्रतं वदयमाणं चरेत् अनुतिष्ठेत् । अमाँसाश्च मृन्मयपायी ॥ २ ॥ मांसं न भक्षयेत् । जलं मृन्मयेन पात्रेण न पिबेत् ॥ [स्त्रीशूद्रशचकृष्णशकुनिनां चादर्शनमसम्भाषाचक्षैः । ३ । स्त्री शूद्रादिभ्योऽसंभाषणं कुर्यान्न द्रूयादित्यर्थः शवो मृतशरीरं कृष्णशकुनिः श्वाकुर्कुरः एतेषामदर्शनम् नावलोक्षयेदित्यर्थः [शवशूद्रसूतकान्नि च नादद्यात् ॥ ४ ॥ शवो मृतकः तस्मिं जाते सति कीर्त्वा लब्ध्वा वायन् जातिमिरयते शूद्रस्य अवरवर्णस्य नापितादेर्भोज्यान्नस्यापि यदन्नं तच्छूद्रान्नं [हविषान्नातिरिक्तं कोद्रान्नादिकंच सूतके प्रसवाशौचे सति यत् जातीनामन्नं तत्सूतकान्नं तानि शावशूद्रसूतकानि नाव्यान्नं भक्षयेत् । मृत्रपुरीषेऽपीवनं चातपे न कुर्यात् ॥ ५ ॥ मलमूत्रोत्सर्जनं धर्मं सति न कुर्यात् । तथाऽपीवनं धृतकृत्य, मुग्धलालकफादिभिः खावं न कुर्यात् [सूर्याच्चात्मानं नान्तर्दधीत ६] छत्रवस्त्रादिभ्यः शरीरं

सूर्यात्तनगोपपेत तप्तेनोदकार्थान् कुर्यात् ।७। तप्तजलेन सौन्दा
क्रिया विदध्यात् (अथज्योत्स रात्रौभोजनम् ।२। दीपंप्रज्वालया-
त्रौभोजनम् । कुर्यात् । सत्पयदनमेववा) । ६ । सत्पयद्यात्
मिथ्या भाषणं न कुर्यात् । अमांसाशनादीन्यपिच ॥ अत्र सूत्र-
कारेण याचन्ति स्नातक व्रतान्युक्तानि न तावन्त्येवानुतिष्ठेत् ॥
अपितु मन्वादि स्मृतिप्रणी तान्यपितानि तु ततएव ज्ञेयानि अथ
च बहुः पूर्वोक्त नियमान् श्रुत्या, पूर्वदाचार्यस्य चरणौवंदयित्वा
पूर्णाहुतिजुहुयात्ततः पूर्णाहुतौ मृटनामाग्निं सम्पूज्य०-संकल्पं
कुर्यात्-अथेत्यादि संकीर्त्य अमुकोहं ममास्य वटोः समावर्त्तन
कर्मणः सांगफलावाप्तये मृटाग्नौ पूर्णाहुतिहोमं करिष्ये-ततो
घृताभ्यक्त श्रीफलं रक्तकौशेयवस्त्र वेष्टितं गंधपुष्पादिभिः सुपू-
जितं स्रुवे निधाय उत्थाय, समिद्धेऽग्नौ घृतधारया वक्ष्यमाण
मंत्रेण जुहुयात् ॥ ३० मूर्द्धानंदिव इति भरद्वाजऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः
वैश्वानरो देवता मृटनामाग्नौ पूर्णाहुति होमे विनियोगः-
ॐ मूर्द्धानं दिवोऽथरतिंपृथिव्या वैश्वानरमृतऽअजात मग्निम् ।
कविर्षसम्राजमतिथिं जनानामासन्नापात्रं जनयन्त देवाः-स्वाहा
इदमग्नये वैश्वानरायनमम ॥ इति जुहुयात् ॥ (पूर्वोक्त पूर्णाहुति
निषेधस्य समावर्त्तनेऽभावा दत्र पूर्णाहुति भवति) ततः प्रदक्षि-
णाचतुष्टयं कृत्वा, ततः स्नातकस्य पित्रादिः समावर्त्तनान्तकर्मणां
परिपूर्णार्थं गोदानं कुर्यात् ॥ पुरोहितायदत्त्वा उत्तरांगत्वेन राज
पुत्र नामाग्निं सम्पूज्य,गणेशादिग्रहयोग सर्वतोभद्र वास्तुभद्रस्य
देवताः पृथक् पृथक् सम्पूज्य-प्रतिमादान संकल्पं कुर्यात्अथे -
त्यादि अमुकोहं ममास्यपुत्रस्य उपनयन वेदारम्मसमावर्त्तनक-
र्मणि ग्रहयागस्य सर्वतोभद्रस्य वास्तुभद्रस्य इमाः सुप्रजिताः
सौवर्णीः राजतीः प्रतिमाःसवस्त्राञ्जनाः, तत्तदोचार्येभ्यो ब्राह्मणे-
भ्योदास्ये, ३० तत्सन्नमम इतिदत्त्वाजापकादिभ्योपि जपसंख्यया
दक्षिणांदद्यात् नानानामगोत्रेभ्योभूयसीमपि दद्यात् ततोब्राह्मण
भोजनसंकल्पः अथेत्यादि अमुकोहं अस्य पुत्रस्य उपनयन वेदा-

रंभ समावर्तन कर्मणां साद्गुण्यार्थं ब्राह्मणान् भोजयिष्ये ॥
 अग्न्यादिदेवान् विसृजेत् अक्षतानादाय हस्ताभ्यां क्षिपेत् ॐ
 उन्नावेत्तंधूर्पाहौयुज्वेधामनश्चूऽश्रवीरहणै ब्रह्मचोदनौ । स्वस्ति-
 यजमानस्यगृहाणि गच्छतम् । ॐ यान्तुदेवगणः सर्वे पूजामादाय
 मामकीम् । इष्टकामसमृद्धयर्थं पुनरागमनाय च । ततः कलशजले-
 नअभिषेकं कृत्वा मंत्रतिलकं कुर्यात् । ततो देवोपभुक्तनिर्माह्यं
 रक्षावन्धनसूत्रं च पूर्वोक्तमंत्रैः कुर्यात् ॥ ततः स्वगृहंगत्वा पूर्वो-
 क्तत्रिरात्रव्रतमाचरेत्स्नातकः—स्नातकस्य माता चतुर्थे अहनि
 चौलकेशानुपनयनकेशांश्च पूर्वोक्तप्रकारेणगोष्ठे जलाशये वा
 स्थापयेत् । इति समावर्तन संस्कार पद्धतिः ।

नवाष्टनवभूवर्षे, भाद्रेकृष्णदले शुभे,
 श्रीकृष्ण जन्मदिवसे जयन्त्यां बुधवासरे ॥१॥
 आदित्यनामके यंत्रे, इन्द्रप्रस्थे शुभेपुरे,
 संरच्य मुद्रितः कर्म काण्डरत्नाकरो ह्यसौ ॥२॥
 नानाग्रन्थान्समालोक्य, सप्रमाणोऽधुनामयां,
 देवानन्देन विदुषा चद्रीनाथनिवासना ॥३॥
 द्वितीय स्तस्यचैवासौ, खंडःसंस्कार कर्मणाम्,
 संपूर्णतामगाञ्चैव, गुरुपादाऽनुकम्पया ॥४॥



इति संस्कारखण्डः

श्रीगणेशायनम, सर्वभूय प्रदातारं नमामि यदरीश्वरम्, दानखंडं विषयसहं चातुर्व-
 गार्थं परम् । अथ दानपरिभाषा—तत्रादौ दानस्वरूपमाह देवल—मद्यो न मुदितं
 पात्रे, श्रद्धया प्रतिप दनम् । दान्त्विभिनिदिष्टं व्याग्यानं तस्यकथ्यते ! तथा—परस्वत्वं-
 तत्यन्तो द्रव्यत्यागोदानम्, तच्छदानं हेतुतां द्विविधम्—श्रद्धाभक्तिभेदात्, तत्र-
 श्रद्धा अस्तिदानं परलोकसाधनम् । स्नेहपूर्वक मभिध्यानं, भक्ति । तद्गीतायां
 त्रिविधमुक्तम्—दातव्य मितियद् न दीयतऽदुपकारिणे । देशक ले च पात्रे च दान सात्त्विकं
 स्मृतम् । राजसम्—यत् प्रत्युपगार्थं फल मुद्दिरयवा पुन । दीयते च परिनिशयं तद्रजस
 मुदात्तम् । तामसम्—श्रवणकाले दानमपात्रेभ्यश्चदीयते । अस्मकृतमवज्ञात तत्तमस मुदा-
 हतम् ॥ गारुडे—भर्तृवत्सु यथादिदानतत्कारिकं स्मृतम् । आतानान भयंदान मित्यतद्राचिकं
 स्मृतम् । विद्यामादाय यज्जप्य तद्य न मनस द्विधा । उक्तं च दानधर्मं—तपो धर्म,
 कृतयुगे ज्ञानं श्रेतायुग स्मृतम् । द्विपरे चाध्वरा प्रकाशं कर्तुं दान दयादम ॥ गारुडे—
 दानान मुक्त दानं विद्यादान त्रिदुर्बुधा । आत्मानस्त त्रियाना श्रियमवाधिदैवतम् । यथावरिष्ठो
 यचना विष्णु कारण पूरप । तथाविद्य प्रद श्रेष्ठो गर्वाश्च गरीयसम् ॥ दानपात्रम्—
 स्वाध्यायो तपम युक्त प्रतिग्रह विवर्जित । शूद्रास्य धनकं नाथात्तात्र श्रेष्ठमुच्यते ॥ गारुडे
 विशेष —छात्राणा भोजनभ्यक्त वरत्रभिक्षामधापिवा । दत्त्वा प्राप्नोति पुरप स्वर्कमानशतय ।
 विषकी जीवित दीर्घ धर्मक माधनाभुयात् । सर्वमेव भवदत्त छात्राणा भोजन कृत । भारत
 दानधर्मं—कुक्षी तिष्ठति यस्यात्र विद्यभ्यासन जीर्यति । गोत्राणि तारवत्स्य दश पूर्वांश
 शयदानम् । छात्राणां रक्षित दान च सर्वशक्येषु गीयते । स्वगलोकचमहीयन्ते दानवृत्ति प्रदानरा ।
 प्रथमं दान माचाय दत्त्वा श्रेष्ठमनुकमात् । ततान्यपां च विप्रणा द्यात्प्राप्तानुसरत । सन्धिषा
 वस्थितान्विप्रादीहित्र विप्रसिततथा । भगिनय वितरण तथा बन्धुगृहगतात् । नाति कामं
 नरस्वतानुमूर्खानपि भावत । अनिकम्य महारौद्र रौरव नरक त्रपत् । आचार्य लक्षणम्—
 नानाविध नि कर्माणि कर्ताकारयिताचय । सर्व धम विधिज्ञश्च सर्वमाचार्य उच्यत । वेद वदा
 शास्त्राणां पारग समदर्शन । दम्भलोभदि रहित सन्नेयो वदपारग । अप्राण्य दानानि—
 अजिन श्वतशय्याच मर्षा चाभयतो मुक्ती । कुक्षेत्रे च गृहानो नभूय पुरुषो भवत् ।
 मनु—हिरण्य भूमि मश्वगामप्रवास्तितलान्शतम् । श्रविद्वाप्रति गृहानो भस्मो भवति-
 कष्टवत् श्रविद्वा विषयसपभ्यादीन । दानकाल स्मृत्यन्तरे—दशशतशुष्य दान तदशप्त
 दिनक्षय । शतशत तच्च सकन्तो शतशत विपुत्रे तत । युगादौ तच्छतशुष्यमयमे तच्छत
 हतम् । सोमग्रह तच्छतशत तच्छतशतशतप्रहे । पौर्णमासीषु सवापुमासर्ण सहितानु च । दत्ताना

मिह दानाना फलं शतगुणं भवति । निमित्तदानकाल — ग्रहणोद्वाह सक्रान्तियात्रार्ति प्रसवेषु च । दान नैमित्तिकं ज्ञेयं शान्तावपि नदुष्यति ।

अथदानविधिः ।

सूर्यारण्य सम्वादे दानधर्म—श्रीसूर्योवाच—स्नातवानित्य क्रियां कृत्वा कर्णशुचिर-
लकृत । ब्रह्मणन्दय वस्तूनि गन्धघैरर्चयेत्सुत । दान ददेह ममुक दद्याद्विप्रसरे जलम् ।
दरस्वेति द्विजेनाक्त मितिदानविशिष्टम् । ॐ तत्सत्पूर्वमुच्चार्य गृहीत्व तुम्हे जलम् । सतिलकुशा
हस्तस्तु कालं ज्ञानं सद्गुणचरत् । प्राङ्मुखश्चोदङ्मुखोवा पत्रे याम्यमुष्णतथा । (ननुतान्दी
मुखे) धाम्न पाणिना स्पृष्ट्वा स्मरेत्तद्वस्तुदैवतम् । विप्राथमुक गोप्राया मुक्त्वामोक्षददं ।
नममेत्सुखं द्विज हस्तेजलक्षग (कन्यादानाति रिक्त दानेषु नममेत्युच्चारणम्)
स्वस्तीत्युक्तं च प्रियेणदानम क्षयता नयत् । तानमिति सत्रोक्तं मन्यन्त्याग्दितस्मृतम् । कन्या
दाने विशेष — क यादानं त्रिपुरस्य गोत्रोच्चारणं पूर्वमम् । गो, कन्या, प्रतिमा, शय्या, एकै-
कस्य प्रदपयेत् । विभज्यत्रिविना दातानतत्फलमवप्नुयात् । दानप्रतिष्ठा—प्रतिष्ठा सर्वदानानां
स्वर्गमक्षयकारकम् । नमजयतायाति सम्प्रदानतुयत्कृतम् । तीर्थादी ल्याम विधिना सम्प्रदान
सम फलम् । तावदेतुषुधनुष्य वेयत्वं प्रतिमामु च । यावद्विप्रोत्तरणीयात्स्वस्तीत्युक्ते तुतद्वदसु ॥

॥ प्रतिग्रहविधिः ॥

आपस्वयं त्रिमात्रां स्तुप्रयोक्तव्या कर्मात्मभेदुरवेश । निम्न साङ्गिस्तुर्त्तव्यामानांस्तत्त्वाय
चिन्तकं । गौतम — अन्तर्जानुजर वृत्त्या सुकृशतुतिलोदम् । फलान्यपिच सधाय प्रदद्यान्ब्रह्मया
शिवितो । बृद्धवसिष्ठ — नामोत्रेणमुच्चार्य सम्प्रदानस्य चात्मनः । सम्प्रव्य प्रयच्छति कन्या-
दानं तु पुंसप्रयम् । स्मृत्यान्तरे—सनीयं दशकलदि सुभ्यसंप्रददे इति । नममेति स्वस्वयस्य
निश्चितमपि कीर्तयत् । प्रचेता—दक्षिण हस्तमध्ये ब्राह्मणस्याग्नेय तीर्थं, आगयनं प्रति
शुद्धीया दिनि—विष्णु धर्मात्तरे—प्रातग्रही वा सावित्री सर्वत्रैवानु कीर्तयत् । ततस्तु कीर्तयेत्साधे
द्रव्येण द्रव्य देयतम् । समपयत्वात् पश्चात्कामस्तुत्या प्रतिग्रहम् । तदन्त कीर्तयत्स्वस्ति
प्रतिग्रह विधिस्वरयम् । प्रतिग्रहान्त ब्राह्मणस्य कर्त्तव्यता—आदित्य पुराणे—ॐकार-
मुक्त्वाप्राज्ञो द्रविण संशुशोदकम् । शृणुयादक्षिणेहस्तेतदन्ते स्वस्तिकीर्तयेत् । प्रतिग्रहं पठे
दुप्यं प्रतिग्रहविधिनात्मात् । मन्त्र पठेत्तु राजन्ये, उपशंशु च तथा विशि । (मन्त्र मय्यमस्वर)
मनस्यु तथा शूद्रे स्वस्ति वाचने मेवम् । गोकार ब्राह्मणकुयात् निरोकारं महीपती
द्वयोच तथा वैश्ये मनगा स्वस्ति शूद्रे ।

दाने द्रव्यपरत्वेन देवता वक्ष्ये ।

हेमाद्रौ विष्णु धर्मोत्तरे—अभयं सर्वं देवतयं भूमिर्ष्ये विष्णु देवता । कन्यादानस्तथा-
 दागो प्राजापत्या प्रसक्तिनाः ॥ अग्निपुराणं—प्राजापत्यो गज. प्रोक्तरुगो दमदैत ॥ तथा चैक
 शकं सर्वं कथितं यम देवतम् । महिपरत्तथायाम्य, उष्ट्रोऽर्धैर्नर्कृत. सृष्ट । रीद्रीधनु विनिर्दिष्टा टागयाने
 य मादिशेत् । मेवंतु कार्णं त्रियाद्वराहं देवण्य तथा । आरुणा पशव सर्वे वक्षिता वायुदेवता । जला-
 शयानि सारणि समुद्राश्च कण्ठगडलु । कुम्भश्च करं चैव वारणानि भरन्तिहि । समुद्रजानि रत्नानि वारुणानि
 प्रच्यक्षते । आनेयं वनकं प्रोक्तं सर्वं लोहानि चायस्य । प्राजापत्यानि सस्यानि पशुभानि च्यानित्रै । विद्याः
 सर्वगंधाश्च गायत्र्यै विद्वत्तृणी. दिद्या ब्राह्मी विनिर्दिष्टा दिशोप करणानि च । सारस्वतानिद्वियानि पुरतका-
 दोनि परिउते । वार्दस्पत्यं सृष्टं वसः सौम्यादेयसारतमा । पक्षिणस्तु तथासर्वे वायव्याः परिर्णीताः ।
 सर्वेया शिल्पमाड ना त्रिदशकर्म च वक्षता । दुर्माणामथ पुष्पाणां शारैर्हैरौतिरेस्थता, फलाण्य मणिर्वेषा
 वेवोद्गोरे वनपति । मस्त्रमास विनिर्दिष्टं प्राजापत्यं तैवेच । उजं कृष्णजिनं शय्या रथमास्त्रमेव च ।
 उपानहौ तथा यानं दचन्दत्प्राणि बर्जितम् । सर्वचाङ्गि रसत्वेन प्रतिद्रह्यीत मान्त्व. । शूरोपयोगिदत्सर्व
 दस्त्रमस्त्र ध्वजास्त्रम् नृरोदस्त्रं सर्वं विद्वं सर्वं दैवतम् सृत्वं कर्कवेत्यं यदनुक्तं द्विजोत्तमा. । विद्वेय
 विष्णुदेवक्यं सर्वदा विधि वदिमि । वाक्ये जलमादाय करणाय प्रतिप्रदम् । दातुर्मत्र प्रयोगान्ते ह्यमुवस्त्रे
 सुगयये । इरमो प्रतिश्रुहामि तन्ते स्वरितं कीर्तयेत् ।

अथ दानसमये प्रतिग्रह स्थानानि ।

प्रतिग्रहणीत गापुच्छे कण्ठा दस्तना करे । मूर्तिनामो मज्जैव शृष्टेऽरवतर गर्धर्भा । अरवं
 कर्णं कट्या वा दान मुद्दिरयवारयत् । शय्यासने ग्रहं क्षो ससृष्टशदाशय काचनम् । उष्ट्वं ककुदिसृष्ट्वा
 मृगाश्च महिपरिकान् । गोधामध्विधानेन पक्षे ससृष्टयपक्षिणः । हन्तुं दंडं तस्मूलं फलं सष्टह्यगौरवात् ।
 हेमाद्रौ—भूमे प्रतिग्रहं कुर्याद्भूमि कृत्वा प्रदक्षिणम् । करं गृह्येत्वा कन्याच दास दास्यौ द्विजोत्तमे ।
 आरुह्य गनस्योक्तं कर्णोधारवश्य कीर्तितं तथाचैक शपानान्तु सप्रदाय विरोपत । प्रतिग्रहणीत शृंगेजो
 पुन्ड्रकृष्णानि तथा । एक शपा शृंगिण स्तेदा शृंगएव । कर्णविपशव सर्वे प्राह्या पुन्ड्रेविदक्षणी ।
 शृद्योदानमहिषं शृङ्गे रडन्य वै पृष्ठंशत । प्रतिग्रहयोऽश्वस्य याननं चाधिरोहणात् ॥ वीजानामुष्टिमा-
 दाय रत्ना न्दादाय सर्वश । बलंदरान्तादाद्या त्परिधायामिवापुन । आरुह्यौ पानहौ मश्व मारुह्यैवच
 पादुके । धर्मध्वजौ च सृष्टयशृणीशादानत्रेविमि । अदतीर्यं च सर्वणि जलसगानानि यानिव । आयुधानि
 समादाया तथापुन्य निभूदणम् । आसुन्य वध्वैत्यर्थ । पुन्ड्रसङ्गमारोप्य प्रतिग्रहणीत ददवम् . रथंश्च
 मुवे सृष्ट्वा प्रतिग्रहणीत कूर्बरे । कूर्बरो दुगाथाकण्ठम् । दुग्ग्य काचन व खाणां नांगुक्ते प्रतिग्रहं ।

द्रव्याणामथ सर्वथा षडस्रश्रमणानर वचय जलपादाय कोणाय प्रतिग्रहम् । दान फलान्ति प्रय निस्तार
मिया न शित नि, हेमाद्रि दानखण्डतोक्तानि ।

तत्रादौ बृहद्गोदान परिभाषा ।

उक्तञ्च स्मृत्यन्तरे देशमाला — स्वघ नानन पुत्र एतकामाथ मिद्धिदम् । स्वर्गपवर्गद
चायवचय गोदानमुत्तमम् । अयने त्रिदुवपाते वैश्रुती सूयसकम । अमावास्या पौर्णमास्यां द्वा,श्या राहु
पवलि । न वादीच युगादीच जगत्पुत्रमनि । यत्परले पदोत्पाते दु रवानेऽद्भुत र्शने । श्रैयोगे
प्रतिश्रमु गवोश्चा शिव दिना । स्थानान्याह—तीथ व्वाये गाष्टे सद्भमेऽहसराडे । श लप्रामसिला-
श्रेच शिवलिंगस्य सनिधी । इत्यादि शुभशेषु स्वष्टहवापयस्विनीम् दद्यादास्तिवयदुभ्यतां महमा द्विनपुगव ।
गौदानयोग्य ब्राह्मणानाह—यद्भारते कुलीनाय सुशील यवद्वदाग्वादिने । मार्ग्येय वराचताय सागाय
प्रतरिण । सद्बृताया प्रसक्त य दान्त य कुराटन्य । को रहिता निशेनाय सदाकृपोप जीवने । सर्वदानानि
यानि निष्पुवत् विदन्वत् । गोमन्वेता आह हेमाद्रौभेदिप्ये—श्टमूले गय तिय ब्रह्मनिष्णु
समाश्रिी सुगाप्रसवतीथ नि स्थ वराणिच णिचि । सिरोमध्यमन्वेब सर्वभूतमय शिव । ललागत्रे स्थितागौरी
नासावशेष परमुय । क्वलाश्वतरौनागौ नासासुममुपाश्रितौ । वरा १२ शिनीदेवी चक्षुपा शतिभारकरी ।
दत्तपु वायव सब निहया वरण स्थित । समस्वतीच कुवार मासन्हीच गराडो सव्याद्वय तथोष्ट भ्या
श्रीपिन्द समाश्रित । रत्नामि वजाशतु सव्यारवाणि सस्थिता । चुपरसकनो धम स्वय
जपासुगस्थित । सुसमच्यतु गन्वव सुगप्रदुचानगा । सुराणापश्चिमाश्रेय ग्या अष्पसा तथा षट्त्रय
सकला शृष्ट क्वव सबिचियु । श्रोणी तस्था पितर सोमो लागूलमाश्रित । आश्रिय रश्मयाजला
शिनीभूत श्रेष्ठित साचाद्गगच गामूने गामय यमुनास्थिता । चोस्सस्वतीश्वो नमदा दक्षिसस्थिता ।
दुनासान स्वयसिं ब्रह्मणा गुरु प । अष्टावशति देवना वाचा । मसुसस्थिता । उदर श्रुतिश्रुया
सागसधस्योक्ता महभारत—दानानामिह सनया गत्रादान विसिप्यत । गव धरा पत्रिाथ पावना
जगदुत्तमा । दातसमयोक्त प्राकारश्चस्मृतिक्वीस्तुभेगये—ता सन्त्यागं प्रशुकी मवहाप्य
दातापु—उदगवर्द्धिप्य प्रास्तुवस्तिपत् । पात्रभूत वि,स्त्रैव दक्षिणा सुस्तुस्तिष्ठेत् । दत यथाशक्तिन
क्युत साश्वपात्र मादाया टनगोपु—द्वे निक्षिप्य सन्नि प्राग्न विप्रपाणी घनाक सतिल कुशापुच्छ निक्षिप्य
जलक्षिपेत् । बधिद्गापु—द्वे दधिपितृतपण वृत्वा गोदननिक्षिप्य, मपु—याचितं प्रतिष्ठापि योचं
दिश्व प्रदच्छति । तासुभी च्छत स्वय नरकु विभय । इति तपण विधान, महाभाष्याका गापतीच
प्रयाग वदामि ॥ ॥ इति गौदान परिभाषा ॥

अथ गोदानपद्धतिः ।



अथ च गोदानकर्ता सुस्नातः हस्तौपादौप्रक्षाल्य सुलिप्ता
 यांभूमौस्यासनेउपविश्य, करौसपवित्रौकृत्वा, यथोक्तलक्षणंगांपू
 र्वाभिमुखीं सवत्सामवस्थाप्य, सुलक्षणं ब्राह्मणं मुदङ्मुखंस्था-
 प्य स्वयं पूर्वाभिमुखोभूत्वा आचम्यस्वाग्रभूमौगंधेन चतुरस्रमं-
 डलंकृत्वा तत्रार्घपात्रंसंस्थाप्यजलेनापूर्य गन्धपुष्पाक्षतादींस्तृष्णीं
 निक्षिप्य, तेनजलेन गोदानसामग्रीं मात्मानं च संप्रोक्ष्य, आधारं
 सम्पूज्य, भूतोत्सादनं कृत्वा प्राणायामंविधाय ॐ सुमुखरचेति०
 गणेशसंप्राथर्यं कुश तिलयव जलान्यादाय प्रधानं संकल्पं कुर्यात् ।
 ॐ विष्णुर्विष्णु र्हरिर्हरिः ।३। ॐ श्रीमद्भगवतो महापुरुषेति
 देशकालौ संकीर्त्यामुकसंवत्सरं अमुकमासे पक्षे तिथौ चारेनक्षत्रे
 योगे, कर्णे अमुकप्रदेशे पुण्यतीर्थेऽमुककाले, अमुकगोत्रोऽमुकश-
 र्माहं श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये, अमुककर्मनिमित्तक श्री
 परमेश्वर प्रीतयेगोदानं करिष्ये, तत्प्रतिग्रहार्थं ब्राह्मणस्य पूजन-
 पूर्वकं वरणंचकरिष्ये, ततः स्वदक्षिण्येज्रीयवृक्षोद्भवासने उदङ्
 मुखं ब्राह्मणमुपवेश्य पूजयेत् ॐ विष्णुस्वरूपिणे ब्राह्मणायनमः
 इति मंत्रेणासनपात्रार्घ्यादिकंदत्वा, वक्ष्यमाणमंत्रैः पूजनंकुर्यात्
 ॐशापद्धनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितार्थर्षिणकामधेनवः । सम
 स्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्त्तयोरक्षन्तुमांब्राह्मणपाद पांसवः ।१। समस्त
 संपत्समवाप्तिहेतवः समुत्थितागः कुलधूमकेतवः । अपारसंसार
 समुद्रसेतवः पुनन्तुमांब्राह्मणपादपांसवः ।२। विप्रौघदर्शना त्क्षिप्तं
 क्षीयंते पापराशयः । वन्दनान्मंगलावाप्तिर्चनान्दक्ष्युतंपदम् ।३।
 आधिच्याधिहरं नृणांमृत्युदारिव्यूनाशनम् । श्री पुष्टिकीर्तिदंबंदे
 विप्रश्री पादपंकजम् ।४। तत्फलंकपिलादानेकार्त्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे
 तत्फलं पांडवश्रेष्ठ विप्राणां पादक्षालने ।५। इति पादौप्रक्षाल्य ।
 ॐ गन्धद्वारा मितिगंधम् । ॐ नमोस्त्वनन्तायेति पुष्पगालादिभि

रभ्यर्च, वरणसामग्रीं धौतोत्तरीय कर्मडल्वादीन्संपूज्य, संकल्पः
 अद्येत्यादिसंकीर्त्याऽमुकोऽहंकरिष्यमाणअमुककर्मणि, एभिर्गन्धा-
 क्षत पत्रपुष्प फलयजोपवीत ताम्बूलादिभिर्गोदान प्रतिग्रहार्थम-
 मुकवेदाध्यायिनममुकगोत्रममुक शर्माणं ब्राह्मणं त्वांवृणे । वृतो
 ऽस्मीति ब्राह्मणोवदेत् ततः प्रार्थयेत् यदर्चनं कृतंविप्र तवविष्णु
 स्वरूपिणःतत्सर्वममदीनस्य विष्णवेऽस्तुसमर्पणम् । ततःस्वपुरतः
 प्राङ्मुखींगामवस्थाप्य,वत्संतदुत्तरतोन्वस्य अक्षतपुष्पैःॐ आगा-
 वोऽग्रगमन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठेरणयन्त्वस्मै । प्रजावतीः
 पुररूपाइहस्युरिन्द्राय पूर्वोरूपसोदुहानाः । ॐ आवाहयाम्यहंदेवीं
 गांत्वां त्रैलोक्यमातरम् । यस्याःस्मरणमात्रेणसर्वपापैः प्रमुच्यते-
 त्वंदेवीत्वंजगन्मातात्ववैवासिवसुन्धरा । गायत्रीत्वंच सावित्री
 गंगात्वंच सरस्वती । तृणानि भक्षसेनत्य ममृतंश्रवसेप्रभो । भूत
 प्रेतपिशाचांश्च पितृदैवत मानुषान् । सर्वास्तारयसेदेविनरका
 त्पापसंकटात् । इत्यावाह्यपूजयेत् ॐ सवत्सायैगवेनमः पाद्यम्
 स्नानं समर्पयामि पुष्पाणिगृहीत्वा ॐ नमोवोविष्णुमूर्तिभ्यो
 विश्वमातृभ्यएवच । लोकाधिवासिनिभ्यश्च रोहिणीभ्योनमोनमः
 ॐ गोः अग्रपादाभ्यांनमः ॐ गोः पश्चात्पादाभ्यांनमः ॐ देह-
 स्थायाचरुद्राणां शंकरस्यसदाप्रिया धेनुरूपेणसादेवीममपापं द्य-
 पोहतु । ॐ गोमुखायनमः । ॐ विष्णोर्वैश्वसियादेवी स्वाहा
 याचविभावसोः चन्द्राऽर्कशक्र शक्तिर्यासाधेनुर्वरदास्तुमे । ॐ
 गोः शृंगाभ्यांनमः ॐ गोःकर्णाभ्यांनमः ॐचतुर्भुग्वस्ययालदमी-
 र्यालदमीर्धनदस्य च । लदमीर्यालोकपालानां साधेनुर्वरदास्तुमे ।
 ॐ गोः शृण्ठायनमः ॐ स्वधात्वं पितृमुख्यानां स्वाहा यज
 भुजां तथा ॥ सर्वपाप हरिधेनु स्तस्माच्छान्तिं प्रयच्छुमे ।
 ॐ गोः पुच्छाय नमः । चन्द्रम्-ॐ आच्छादनंमयादत्तं सम्मरु
 शुद्धांसुनिर्मलं । मुरभिर्वस्त्रदानेन प्रीयतांपरमेश्वरी ॥ गन्धम्—
 ॐ सर्वदेव प्रियंदेवि चन्दनं शशिसन्निभम् । कस्तूरी कुंकुमाद्यं च
 गौर्गन्धः प्रतिगृह्यताम् । अक्षताः पुष्पाणि च-ॐ नमोवो विश्व

मूर्तिभ्यो विश्वमातृभ्य एवच ॥ लोकाधिवासिनीभ्यश्च रोहि-
 णीभ्योनमोनमः ॥ ॐ गवेनमः पुष्पमालां समर्पयामि । धूपम्-
 ॐ आनन्दकृत्सर्वलोके देवानांचसदाप्रिये ॥ गोस्त्वंपाहि जगन्नाथे
 धूपोयंप्रतिगृह्यताम् । दीपम्—३० आनन्द दायिनि शिवे, सर्वसौ-
 भाग्यदायिने । सर्वपापं हरेमात दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । नैवेद्यम्-
 ३० सुरभिस्त्वं जगन्माता नित्यं विष्णुपदेस्थिता गोघ्रासोऽयंमया
 दत्तो नैवेद्यंप्रतिगृह्यताम् ॥ घंटाचामरमंत्रः—३० यत्तेमयार्पितं
 शुद्धं घंटाचामरमुत्तमम् । श्रैवेयं तद् गृहाणत्वं मुनित्रिदशवन्दिते ।
 ततो गोदेहे देवादीनावाहयेत्—अक्षतपुष्पैः पूजयेच्च-शृंगमूले-३०
 ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः । शृंगाग्रे-३० सर्वतीर्थभ्योनमः । शिरोमध्ये—
 ३० महादेवायनमः । ललाटे—३० गौर्य्यैनमः । नासारंध्रे—३०
 परमुवायनमः । नासापुटयोः—३० कंधलाश्वतराभ्यांनमः ।
 कर्णयोः—३० अश्विभ्यांनमः । चक्षुषोः—३० शशिभास्कराभ्यां
 नमः । दन्तेषु—३० वायुभ्योनमः । जिह्वायां—३० वरुणायनमः
 हृंकारे—३० सरस्वत्यैनमः । गंडयोः—३० मासपक्षाभ्यांनमः ।
 ओष्ठयोः—३० संध्याद्वयायनमः ॥ त्रीवायाम्—३० इन्द्रायनमः ।
 कक्षे—३० रक्षोभ्योनमः । उरसि—३० साध्येभ्योनमः । जंघासु-
 ३० धर्मायनमः । खुरमध्ये—३० गंधर्वेभ्योनमः । खुराग्रेषु—३०
 पद्मगेभ्योनमः । खुरपश्चिमाग्रेषु—३० अप्सरोगणेभ्योनमः । पृष्ठे-
 ३० एकादशरुद्रेभ्योनमः । सर्वसंधिषु । ३० वसुभ्योनमः । श्रोत्रयोः
 ॐ पितृगणेभ्योनमः । पुच्छे—३० सोमायनमः । पुच्छकेशेषु—
 सूर्यरश्मिभ्योनमः । गोमूत्रे—३० गंगायैनमः । गोमये—३० यमु-
 नायैनमः । क्षीरे—३० सरस्वत्यैनमः । दधि—ॐ नर्मदायैनमः
 घृते—३० बन्हयेनमः । रोमसु—३० अष्टाविंशतिदेवकोटिभ्यो-
 नमः ॥ उदरे—३० पृथिव्यैनमः । स्तनेषु—३० चतुःसागरेभ्योनमः ।
 इति देवांस्तीर्थांश्चावाह ॥ ततः शक्तौसत्यां रौप्यखुरां ताम्र-
 पृष्ठांस्वर्णशृंगीं, घंटाचामर विभूषितां लाङ्गूलसमर्पित रत्नमुक्ता-
 फलां सुवस्त्राच्छादितां गां संभूष्य समीपे वामभागे-कांस्यमयं

दोहन पात्रं चसंस्थाप्य-प्रार्थयेत्—३० नमोगोभ्यः श्रीमतीभ्यः
 सौरभेईभ्यएवच । नमोब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्योनमोनमः ।
 गावोममाग्रतः सन्तु गावोमेसन्तुष्टुष्टतः । गावोमेपार्श्वयोः सन्तु
 गवांमध्येवसाम्यहम् ॥ पंचगावः समुत्पन्ना मध्यमाने महोदधौ ।
 तासांमध्येतु यानन्दा-तस्यैदेव्यैनमोनमः । गवामंगेषु तिष्ठन्ति
 भुवनानि चतुर्दशा यस्मात्तस्माच्छिवं मेस्यादिहलोके परत्र च ।
 ब्रह्मादयस्तथादेवा रोहिण्यः पान्तुमातरः ॥ अथ तर्पणविधानम्
 कृशाक्षत जलैःसाध्वं गृहीत्वा पुच्छमाहृतः । कराभ्यां तर्पयेद्देवान्
 देवतीर्थेन मंत्रवित् । प्राजापत्येनमनुजान् पितृन्पित्र्येणतर्पयेत् ।
 ततः प्राङ्मुखो दाता सकुशाक्षतयवं गोपुच्छं गृहीत्वा सततजल
 धारया देवतीर्थेन देवांस्तर्पयेत्--केचित् गोपुच्छोदकेन तर्पणमि-
 च्छन्ति,, ३० यान्दिनीसुशीलाद्याः कामदाश्चैवधेनवः । ताः सर्वाः
 पुच्छतोयेन तर्पितास्तर्पयन्तुमाम् ॥ ब्रह्माविष्णुर्महादेवः कार्तिक-
 श्च गणाधिपः । पुष्पचापो महेन्द्रश्च भगवानच्युताग्रजः ॥ देवाः
 समस्ताः सगणाः सबाहन परिच्छदाः । वसवोऽथौ द्वादशार्कारुद्रा
 ऽएकादशैवतु ॥ विश्वेदेवाश्चसाध्याश्च मरुतोमातरस्तथा । गधर्वा
 शुक्लकारश्चैव सागराः सरितस्तथा । राजसायन्क्ष्वेतालाः पूतनाः
 पर्वताद्रुमाः । तीर्थाण्यप्सरसश्चैव पशवः पन्नगाखगाः । ऋक्षाणि-
 राशयोयोगामासयर्षुर्तुवासराः । अयनेचयुगाःकृत्वास्तथामन्वंतरा
 णिच । भुवनानिदिशौकाश्चतथासर्वेन्द्रियाणिच । ३० कारश्चैव
 गायत्रीछन्दांस्यंगानिचैवहि । वेदाश्चस्मृतयश्चैवपुराणानितथैवच ।
 आयुर्वेदोघनूर्वेदोगान्धर्वोमंत्रगह्वरः । औपध्योवनसम्भूताग्राम्या-
 श्चैवसुपिप्पलाःसानुगादेवता श्चैवमुनयःसगणास्तथा । ऋपयोऋ-
 पिपत्यश्चसिद्धाश्चसगणास्तथा । प्रजाःप्रजापतिश्चैव येन्येविद्म
 विनायकाः । विद्याधराश्चदैत्याश्चआचार्या गुरवस्तथा । डाकिन्यः
 चेत्रपालाश्च भैरवाश्चाष्ट संख्यकाः । श्यावराजंगमाचैव भूतग्राम-
 श्चतुर्विधिः । अक्षयेनामृतेनैव मंगलेनसुयारिणा । गोपुच्छाग्रच्युते
 नेहमहत्तेनहितेऽग्निलाः । शाश्वतीतृप्तिमायान्तु दाढर्ययुक्तवर-

प्रदाः । सूर्यःसोमः कुजः सौम्योगुरुः शुक्रः शनैश्चरः । ग्रहाश्च
 तृप्तिमायान्तु राहुकेतुसमान्विताः । इन्द्रोवन्हिर्धर्मोरत्नः पाशी-
 वायुर्धनाधिपः । ईशोनन्तस्तथाब्रह्मा सर्वैतेतर्पितामया । सावित्र्या
 सहलोकेशः सलक्ष्मीकश्चतुर्भुजः महेशश्चोमयासाध्वं तृप्तिमा-
 यान्तु शाश्वतीम् । अत्रिर्वशिष्ठो भृगुगौतमौ च । मरीचिदक्षौ
 पुलहः पुलस्त्यः । प्रचेतसः काश्यपविश्वमित्रौ भरद्वाज संज्ञो
 जमदग्निर्मुनिश्च । अन्येचसर्वे मुनिपुंगवाश्च गृह्णन्तुदत्तं जलम-
 ष्यतुष्टाः । इतिदेवतर्पणम् । ततोयज्ञोपवीतं कण्ठावलंबितंकृत्वा,
 अक्षतकुशजलैः मनुष्यतीर्थेन सनकादींस्तर्पयेत्-३० सनकःसनन्द-
 नश्चैवतृतीयश्चसनाननः । कपिलश्चासुरिश्चैव वोढुःपंचशिखस्त-
 था । तेतृप्तिमाखिला यान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः । ततोऽपसव्यं-
 कृत्वा द्विगुणितकुशतिलजलैः पितृतीर्थेन, पितृभ्यस्तर्पयेत्-३१
 कव्यवाडनलः सोमोयमश्चैवार्थमातथा । अग्निष्वात्ताः सोमपा-
 श्चतथावर्हिषदश्चये । तेसर्वेतृप्तिमायान्तुगोपुच्छोदकतर्पणैः । ततो
 यमादीन्-३२ यमायधर्मराजायमृत्यवे चान्तकाय च । वैवस्वताय-
 कालाघसर्वभूतक्षयाय च । ओदुंबरायदध्नाय नीलायपरमेष्ठिने ।
 घृकोदरायचित्रायचित्रगुण्णायवैनमः । ततः स्वपितृभ्यन् ३३ पिता
 पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः । माता पितामहीचैवतथैव प्रपि-
 तामही । मातामहःप्रमातामहोवृद्धप्रमातामहस्तथा । मातापितामही
 प्रमातामहीवृद्धप्रमातामहीतथा । अक्षय्यांतृप्तिमायान्तुगोलाङ्गु-
 लोच्युतोदकैः । त्रिकंमातामहाद्यंचमातामह्यादिकंत्रयम् । तेचतार्श्च
 प्रदत्तमेस्वीकुर्वन्तुजलमुदा । येमृतावै पितृव्याश्चमातुलाःश्वसुरा
 स्तथाआचार्यागुरुमित्राद्यातेगृह्णन्तुशुभंजलम् । येचसंबन्धिनो पुत्रा
 घन्हिदाह विवर्जिता । अपमृत्युमृताथेच तेतृप्तिं च लभन्तिवह ।
 पितृवंशोमृताथेच मातृवंशोचयेमृताः गुरुरश्वसुरबंधूनाथेचान्येवांध-
 वामृताः । येमेकुले लुप्तपिंडाः क्रियालोप गतार्श्चये । विरूपा
 आमगर्भार्श्चजाताऽजाताः कुलेभ्यः । तेसर्वेतृप्तिमायान्तु गोपु-
 च्छोदकतर्पणैः । गोत्रेमदीये विसुतामृताये गोत्रेच मातुर्भमयेवि-

पत्नाः। गभर्भच्युताश्राद्धविवर्जितार्चतेभ्यःस्वधाऽनेनजलेनकृत्वा ।
भृग्वग्नि यज्ञादि जलादिशस्त्रै र्घिपाणदंतैर्नखैर्भुजङ्गेः पंचत्व-
भावंविगताश्चयेचतेभ्यःप्रदत्तंशिवमस्तुतोयम् । धेरोरवादौनरके
निमग्नाः । क्रियाविलुप्ताश्च कृताऽपकाराः । जन्मान्तरेयेममदास
भृतास्तेष्वक्षयांतृप्ति मिहाभजन्तु । येयान्धवा अवांधवायेन्यज-
न्मनिवांधवाः। तेसर्वंतृप्तिमायान्तु गोपुच्छोत्सृष्टवारिभिः। तर्पण-
फलम्-धेनुपुच्छेकरंकृत्वा तर्पणं च करोतियः । आत्मानंतारयेद्विप्रो
दशपूर्वान्दशापरान् । प्रार्थना-सन्तर्पितामयाधेच गोपुच्छोदकतर्प-
णैः । आयुर्वृद्धिताथा तुष्टिमेधांप्रज्ञांच संततिम् । आरोग्यंधनला-
भंच संतुष्टारचददन्तुमे। इतिगोपुच्छोदकतर्पणंकृत्वा । अथसंकल्पः
३० ततः सव्येनाचम्य कांस्याज्यपात्रे घृतदिग्धं कुशसुवर्णं तिल-
युतंगोपुच्छंकरेकृत्वोदङ्मुखः ३० नमः परमात्मने पुराणपुरुषोत्त-
माथाय ब्रह्मणोन्हि द्वितीयपराध्वं श्रीष्वेतवराहकल्पेऽष्टाविंशति-
तमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखंडेऽमुकनामसंवत्सरेऽमु-
कायने मासेपक्षे नियो वारेनक्षत्रे योगेकरणे एवंविधौ पंचांगे,
अमुकोऽहं श्रुतिस्मृति फलावाप्नये सुपूजितामिमां सवत्सांगां
रुद्रदैवत्यां यथाशक्त्यलांकृतां निग्विलदुःख दौर्भाग्य दुःस्वप्नदु-
र्निमित्तामुक ग्रहवाधाशांतिपूर्वकमायुरारोग्य धनधान्य द्विपद
चतुष्पद संतति प्राप्तिद्वारा (वासुककर्मनिमित्तक) गोरोमतुल्य
वत्सरावधि सकलभोग परिपूर्ण स्वर्गलोक प्राप्तिकामः श्रीयज्ञ-
पुरुषप्रीतये ऽमुकगोत्रायअमुकवेदाध्यायिनेऽमुकशर्मणे ब्राह्मणा
यतुभ्यमहं संप्रददे । ३० तत्सन्नमम ३० यज्ञसाधनभृताया विश्व-
स्याश्विनाशिनी । विश्वरूप धरोदेवःप्रीयतामनयागवा । इत्युच्चार्य
सकुशजलतिलंगोपुच्छंब्राह्मणहस्तेदद्यात् । विप्रोपटेत्-३०द्योस्त्वा
ददानुष्टुथिर्वीत्वा प्रतिगृह्णात् । देवस्यत्वासयितुः प्रसवेश्विनोर्वाहु-
भ्यांपूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णाति । ३०स्वस्ति, इमांगोप्रतिगृह्णामि
इतिप्रगृह्ण ३०कामोदात्कामाऽयदात्कामोदात्कामायादात् । कामोदाता
कामःप्रतिगृहीताकामैवत्ते। इतिविप्रोपटेत्-३०ततो गोदानप्रतिष्ठासं

कल्पः—३० अथेत्यादिदेशकालौसंकीर्त्यामुकोऽहंकृतैतद्गोदानप्रतिष्ठा
सिद्ध्यर्थं इदं सुवर्णमग्निदैवतं (धारजतंचन्द्रदैवतम्) ब्राह्मणाय तुभ्यमहं
संप्रददे, ३० नमः ॥ ततः सत्राह्मणाधिपं कानिचित्पदान्यनुव्रज्य
महाभारतोक्तां गोमतीं जपन् गोब्राह्मणायोः प्रदक्षिणात्रयं
कुर्यात् ३० गावोमामुपतिष्ठन्तु हेमशृंग्यः पयोमुखः ।
सुरभ्यः सौरभेयश्च सरितः सागरं यथा । गावः पश्या-
म्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मांसदा । गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गाव
स्ततो वयम् । यमोक्तामपि च—गावः पवित्रं परमं गावो मंगलमुत्त-
मम् । गावः सर्वस्य लोकस्य गावो धन्याः सवाहनाः । नमो गोभ्यः
श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो
नमोनमः । ब्राह्मणश्चैव गावश्च कुलमेकं द्विधा कृतम् । एकत्र मंत्रा
स्तिष्ठन्ति हविरन्यत्र तिष्ठति । वशिष्टोक्तौ च पठेत्—घृतक्षीराद्गुधा-
मावो घृतयो न्यो घृतोद्भवत् । घृतनद्यो घृतावरा स्तामेस्सन्तु सदा-
गृहे । घृतं मे हृदये नित्यं घृतं नाभ्यां प्रतिष्ठितं । घृतं मे स सर्वत्र चैव गवां
मध्ये वसाम्यहम् । गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः कृष्णव-
च्चैव गौलेके गवां मध्ये वसाम्यहम् । इति गोमतीं पठित्वा । ततो
ब्राह्मणो गोपुच्छोदकेन यजमानमभिषिञ्चेत् ३० योः शान्ति० तत
स्तिलकंकृत्वा आशिषंदद्यात् ३० सोमो धेनुर्दं० सोमोऽर्चन्तमाशु
र्दं० सोमो वीरं कर्मण्यंददाति सादन्यं विदध्य दं० सभेयं पितृ
श्रवणं यो ददाशदस्मै ॥ तत आचार्यादिभ्योपि दक्षिणां दत्त्वा ब्राह्म
णांश्च भोजयेत् । इति गोदान पद्धतिः

—०५०—

अथोभयतोसुखी गोदान विधिः

उक्तं च सूत्रान्तरे—स्वर्णशुक्लीरोप्यसुरा मुक्तालागूलभूषिता । कास्यापरोक्षता शुभ्रसिनहा द्विजपुंगवे ।
प्रसूयमाना दोदयाध्वेनुर्द्विष्यसंयुताम् । याद्वत्सो गोनिगतो याद्वग्भिनमुचति । तावद्गौ पृथिवी ज्ञेया
ग्रेणान्ननरुन्ना । देवत —अलंकृत्योक्त विधिनायुवर्णान्पलानिर्निभम् । देयार्थं द्विजलामथ्या पलेकादक्षिणा-
धना । वरातु—सुवर्णकाक्षेत्तद्वर्द्धं च म् । सुवर्णस्यस वेणुतदध्वेनापिवापुन । तस्माप्यध्वं शत-

वापि दद्यात्ततोर्ध्वम् । यथाशक्यापि दातव्याविश्वं च विरजितेति ॥ उभयतोमुखां स्वर्णांश्चेय
दत्वा, सद्य शुभयेत्यातकेभ्यश्चन त्वं । मुदर्यानिन्दक्षिणयुतेऽग्नि, इति १९९ त्वारिं नान्यक एव ग्राह्य ।
अत्यशकौ विंशति मापकं वा दद्यात् इत्यर्थे ॥

इत्युभयमुखी धेनुदान परिभाषा—

—१०१—

॥ अथउभयमुखीधेनुदानपद्धतिः ॥

अथचोभयमुखी धेनुदानकर्ता, प्रसववतींगामवेद्य, स्नात्वादान
सामग्रीं—पूर्वांक्तांप्रकल्प्यवत्समुख योन्धंतर्गतेऽपि तांगांपूर्वांक्त-
विधानेन सम्पूज्य ब्राह्मणंच दरिद्रंबहुकुटुंबिनं वेदपारंगंशुशील
माह्वययाविभवंवस्त्रालंकारादिभिःसुसज्य तत्रसंकल्पः—अथे
त्यादि, संकीर्त्यामुकोहं करिष्यमाणोभयमुखी धेनुदानकर्मणि,
अमुकगोत्र ममुकवेदाध्यायिन ममुकशर्माणंब्राह्मणं प्रतिग्रहाथंत्वां
वृणे, वृत्तोऽस्मीतिब्राह्मणोब्रूयात्—ततोगामपिपूजयेत्—३० त्वंम-
हीमवनिविरवधेनांतुर्वीतयेप्यायत्तरंतीम् । अरंमयोमसैजदर्णः
सुतरणाम् । ३० शायंगौष्टःशिरकमीदसदन्मातरंपुरः । पितरंचप्रयं
न्तसः । इतिमन्त्राभ्यांवापूर्वांक्त प्रकारेणसालंकारैर्गांसम्पूज्य
समयंप्रतीक्षित—यदावत्समुखोयोनिनिर्गतोभवति, तदाकांस्यपात्रं
घृतपूरितं पूर्वांक्तसुवर्णयुतं सकुशतिलाम्बुसहितंपूर्वाभिमुखोभूत्वा
(गांचैवपूर्वाभिमुखीकृत्वा) दक्षिणहस्ते घृतदिग्धगोपुच्छं च
निधाय, संकल्पंकुर्यात्—३० विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अथेत्यादि देश-
कालौ संकीर्त्यामुकोऽहं यथोपशकरयुतामुभयतोमुखीं समुद्रशैल-
धनोपेतपृथ्वीदानसमफलावाप्तये धेनुवत्सरोमसंख्याकयुगदेवलो
कमहिमत्व पितृपितामहप्रपितामहकुलशतनरकोत्तारणपूर्वकघृत-
चीरवहुकुल्याकदधिपायसकदंमदेशाधिकारणकोत्तरकेप्सितकामो
ब्रह्मलोकावाप्तिकामः एकोनविंशतिकुलोत्तारणार्थंचेमांरूद्रदेवत्यां
गाममुकगोत्रायामुकवेदाध्यायिने अमुकशर्माणेतुभ्यंसम्प्रददे—नम
मेतिसघृततिलपूर्णकांस्यपात्रसुवर्णयुतं गोपुच्छंसकुशजलंतधस्ते-

दत्त्वाप्रार्थयेत्—यज्ञसाधनभूतायाविश्वस्याद्यविनाशिनी । विश्व-
रूपधरोदेवःप्रीयतामनयागवा । इमांगृहाणोभयमुखींभवात्त्राता
ममाऽस्तुवै । ममवंशयिशुद्धेश्चसदास्वस्तिकरोभव । विप्रस्तु-
३० द्यौस्त्वाददालुपृथिवीत्वाप्रतिगृह्णातु । देवस्यत्वासावतुः प्रस-
वेरिवनोर्धाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्—प्रतिगृह्णामि । इतिगोपुच्छंप्रगृह्य
पठेत्—३० कौदात्कस्माऽअदात्कामोऽदात्कामायादान् । कामो
दाताकामः प्रतिगृहीताकामैतत्ते ॥ अथचेदानींसुवर्णमुद्रासहस्रमा
रम्यपञ्चविंशति पर्यन्तसुवर्णमुद्रा हस्तेनिधाय प्रतिष्ठासंकल्पं
कुर्यात्—अथेत्यादि संकीर्त्यासुकोऽहं कृतस्योभयतोमुखीधेनुदान-
नकर्मणः प्रतिष्ठार्थमेताःसुवर्णमुद्राः, अमकगोत्रायासुकशर्मणे
ब्राह्मणायतुभ्यंसम्प्रददे ३०तत्सन्नमाम,ततोविप्रःपठेत्—३०इरावती
धेनुमती हिभूतं सूयवासिनी मनुवेदशस्या ॥ व्यस्कभारोदसी
विष्णवेतेदाधर्थे पृथिवीमभितोमयूचैः । १। ३० स्योनापृथिवीभ-
वानृत्तरानिवेशनी, यच्छानःशर्मसप्रथाः ॥ इतिमंत्रद्वयंपठित्वा
पुनर्वदेत्—३० प्रतिगृह्णन्त्विमांधेनुं कुटुम्बार्थेविशेषतः । स्वस्ति-
भवतुमेनित्यां रुद्रमातर्नमोस्तुते ॥ इतिनत्वागृहीतायार्धेनोर्दक्षि
णपाणिना योन्योन्मुखवत्ससुखांसृष्ट्वा मंत्रंपठेत्—३० गर्भेनुस-
न्तन्वेषा मवेदमहं देवानां जनिमानि विश्वाशतंमापुर । आयसीर
रक्षन्नद्यश्येनो जवसानीरदेयम् । इति वत्समाकृष्येत् । वत्से-
निष्कासिते सति कार्यान्तरमाह—ततोयजमानो हस्तोपादौप्रक्षा-
त्वा चम्प्य प्राणानायम्यच । संकल्पः—अथेत्यादि देशकालौ
संकीर्त्यासुकोऽहं कृतस्योभयतो मुखीगोदान कर्मणः सांगता-
सिद्धये वेदोक्त मंत्रै स्तपर्णं होमंच करिष्ये ततश्चाचार्यः हस्तमितं
स्थंडिलं चतुरस्रं कृत्वा तत्र होमपद्धत्युक्त प्रकारेण वरदनामाग्निं
सस्थाप्य प्रतिष्ठाप्यच समिदाधानान्तं कर्मकृत्वा । द्रव्यदेयता
भिध्यान पूर्वकं द्रव्यत्यागं कुर्यात्—संकल्पः—अथेत्यादि असुकोऽहं,
करिष्यमाणोभयतोमुखी धेनुदान कर्मणि, आचाराद्यन्वाधान
देवेभ्य आज्येन तथाच घृतेन पृथिव्यै चतस्र आहुती गौर्यैव्या-

हृतिभिश्चतुरसीत्याज्याहुतीः स्विष्टकृद्देवादिभ्यो मयापिरित्यक्तं
यथादैकतमस्तु नमम तत आधाराद्यन्वाधानान्तं कृत्वा ततःकुशा-
स्तृत भूमौ, अग्नेःपश्चात्साक्षताभिरद्भिर्वक्ष्यमाण मंत्रै देवादीं
स्तर्पयेत्-तेचमंत्राः-ॐ घेदेवासो दिव्येकादशस्थ पृथिव्यामध्ये
कादस्थ । अप्सुक्षितो महिनैकादशस्थतेदेवासो यज्जमिमं जुषध्वम् ।
देवांस्तर्पयामि, ॐ उशंतस्त्वा निधी मह्यशन्तःसमिधीमहि । उग-
न्नुशतआवह पितृन्हविषेऽअत्तवे । पितृन्स्तर्पयामि, ॐ इमम्मे
गंगेयधुने सरस्वति शुतुद्रीस्तोमं सचतापरुषण्या । असिकन्या
मरुद्बुधेवितस्तयार्जीकिये शृणु ह्यासुषोमया । सरितस्तर्पयामि ।
ॐ अद्रिभिः सुतोमतिभिश्चनोहितः । प्रचोरयन्रोदसी मातरा
शुचिः। रोमाण्यव्यासमाया विधावतिमधोर्धारा पिन्वमाना दिवे
दिवे । पर्वतांस्तर्पयामि । ॐ वनस्पते शतवल्शो विरोह सहस्र
वल्शा विचयं रुहेयम् । यन्त्वामयं स्वधितिस्तेजमानः प्रणिनाय
महतेसौभगाय । वनस्पतींस्तर्पयामि । ॐ समुद्रज्येष्ठाः सलिल
स्यमध्यात्पुनानायं त्वन्वीयमानः । इन्द्रोयावज्जीवृषभोररादस्ताऽ
आपोदेवीरिहमामवन्तु । समुद्रांस्तर्पयामि । ॐ अहिरिव भोगैः
पर्येतिवाहुं ज्यायाहेतिं परिवाधमानः । हस्तध्नो विश्वावयुनानि
विद्वान्पुमान्पुमा ॐ संपरिपातु विश्वतः । नागांस्तर्पयामि । ॐ
मधुव्वाताऋतायते मधुत्तरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नस्संत्वोपधीस्त-
र्पयामि । ततोवक्ष्यमाण मंत्रै रचतस्तस्त्राज्याहुतिर्जुहुयात्-ॐ ईले
धावापृथिवी पूर्वचित्तयेगिनं धर्मं सुरुचं यामन्निष्टये । याभिर्भरे
का रमंशाय जिन्वधस्ताभि रुपुजतिभिरश्विनागतम् स्वाहा- इदं
पृथिव्यैनमम । ॐ महीद्यौः पृथिवीच न इमं यजं भिमिक्षताम् ।
पिपृतान्नो भरीमभिः स्वाहा-इदंपृथिव्यैनमम । ॐ ऊर्वापृथिवी
बहुले दूरे अंतेऽउपवृधेनमसा यजेऽअस्मिन् । दधातेये सुभगे
सुप्रतृती यावारक्षतं पृथिवीनो ऽ अभ्यात्स्वाहा इदंपृथिव्यै
नमम । ३ । ॐ गौरीमिन्नाय सलिजा नित्तत्त्येक पदी
द्विपदी साचतृप्पदी । अष्टापदी नवपदी बभ्रुपुपी सहस्राक्षरा

परव्योमो मन्त्स्वाहा इदं गौर्यैनमम । इति चतस्रश्चाज्याहुती
 हुत्वा गायत्रीमंत्रेण चतुरशीत्याज्याहुतीः प्रजापतयेजुहुयान्-इदं
 प्रजापतयेनममेतिल्यागः । ततः स्विष्टकृदादिहोमशेषं समाप्या
 चार्यायदक्षिणां दत्त्वान्येभ्योपि भूयसीं दद्यात्ततो गामनुव्रज्य पूर्वोक्त
 गोदानपद्धत्युक्तप्रकारेण-गोमतीं पठेत्-वा ३० नमोगोभ्यः श्रीम-
 तीभ्यः सौरभेईभ्या एव च । नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्योनमो
 नमः इति गोर्वाह्यणयोः प्रदक्षिणात्रयं विधाय, स्वस्तिवाचनं पठित्वा,
 ग्निं विसृज्य, अभिपेकतिलकारोपणादिकं कृत्वा आशिपंगृहीत्वा,
 पायसादिनाद्वादश ब्राह्मणान्भोजयित्वा, तेभ्योदक्षिणां च दत्त्वा
 सुहृद्यतो भुञ्जीत । इत्युभयमुखी गोदानपद्धतिः ।

अथ च प्रसंगाद्दुभयमुखी गोप्रतिग्रह प्रायश्चित्तमाह-उक्तं च
 दानोद्योतेऽरुणस्मृतौ-कृच्छ्रत्रयप्रायश्चित्तं कुर्यात् । रहस्यप्रायश्चि-
 त्तेष्वशक्तरचेत् चतुर्विंशति सहस्रं गागर्त्रीजपेद्वा । इत्युभयमुखी
 गोदानप्रतिग्रह प्रायश्चित्तम् ॥

अथ तिल धेनू दानविधिः

अनुचिते महोष्ठ वस्त्रात्त्रिंशत्कुशात्तरे । धेतुतिलमयो कृत्वा सर्वैर्नैलकृतम् ॥ धेनुदोषेन
 कुर्वीत आत्मे ननु वामम् । स्वर्णशुभ्रगौरीपद्मसुखा गन्धद्रावणवतीतथा । कुयोश्चरवर्गं चित्वा गुं स्यामा-
 विर्वश्याम् । इक्षुपात्रं ताम्ररुष्टी शुचिसुक्ता फलेक्षणाम् । प्ररब्ध पात्र धरण फलदतमर्षो शुभम् । ह्यग्दा-
 मनुच्छा कुर्वीत वननीत रतनान्विताम् । मितवस्त्र सुच्छा प्लवाभरण भूषिताम् । ईश्वरस्य न सप्तर्षिकुर्वी
 श्रद्धासमन्वित । काश्यप दोरवा दद्यात्केशव, प्रीयतामिति । अथवा-उक्तमात्तिल धेतु स्यात्कामोर्
 चतुष्टया । कसभारेण कुर्वीत अर्धभारेण वा भवेत् । चतुर्वारेण वाक्याद्द्वयद्वित्तासुमारत । तत्र भार-
 मानमाह-तुलापल शतप्राहुर्भारं स्याद्विंशतिस्तुल । भास्तो मानाग्निमे फलाधिक्यम् ॥ तिलधेन्यादीनां
 प्रतिमाविप्रत्या तुक्तं ह्यमाद्री द्रव्यवैवत्त-दानमाले तु देवत्व प्रतिमानं प्रकीर्तितम् । धेनुनामपि धेतुत्व
 धुन्युक्त दानयोगत । दातुं वेद नराले तु धन्य परितीर्तित । निप्रय व्ययकाले तु द्रव्य तदिति विधय ।
 दान्यश्चि विप्रेण द्रव्यमागच्छेत् ॥ त सर्वं विदुपातेन विनेय स्वेच्छया विभो । कुप्य भरण कार्ये भर्षे
 वरि च सर्वत । अन्यथा नाभ्यापि येवमाह वितामह ॥

इति तिल धेनू दान विधि —

॥ अथतिलधेनुदानपद्धतिः ॥

अथचयजमानः कृतनित्यक्रियः । पूजास्थलमागत्य गणेशादिदेवान्संपूज्य, तत्रैवानुलिप्तेभूमौवस्त्रोपरिवा-एणोयाजिनोपरि, कुशानास्तीर्थं, तत्रविंशशाख्यविवर्जितभारचतुष्टयादारभ्य द्रोणपरिमितांस्तिलान्विकीर्यधेनोः प्रतिकृति,मिलुपादांगुडमुखी-शर्कराजिह्वां ताम्रपृष्ठां स्वर्णशृंगीं गंधघ्राणवतीं स्रग्दामपुच्छां प्रशस्तपात्र श्रवणाफलदंतमयींनवनीतस्तनीं सितयुग्मवस्त्राच्छादितां यष्टाभरणभूषितां, कृत्वा । तदधर्देनवत्संचैवकल्पयित्वा । आचम्यप्राणानायम्य प्रधानसंकल्पं कुर्यात्—अथेत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं सर्वपापक्षयार्थं—करिष्यमाणतिलधेनुदानकर्मणि ब्राह्मणवरणपूर्वकं गोपूजनंचकरिष्ये, ततःपूर्वांक्तगोदानपद्धत्यनुसारेण ब्राह्मणंगांचसंपूज्य, वृत्वाच ॥ पूर्वांक्तगोदानपद्धत्यनुसारेण आवाहनादिकंकृत्वा, ततःपूर्वाभिमुखोभूत्वा घृतपूरितंकांस्य पात्रं सुवर्णं तिलकुशाम्बुसहितं स्रग्दामं दक्षिणहस्तेनिधाय—संकल्पः—३० विष्णुः ३ अथेत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकोऽहं सर्वपापक्षयपूर्वकं समस्तपितृश्रेणां निरतिशयानंदगोलोकावाप्तये आत्मनश्चश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तये, इमांसवत्सांतिलधेनुममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणायतुभ्यमहं संप्रददे । ३० तत्सन्नमम, केशवार्पणमस्तु—ततःसुवर्णमुद्रांसतिलकुशाम्बुयुतां हस्तेनिधाय—संकल्पः—अथेतत्तिलधेनुदानप्रतिष्ठार्थं मिमांसुवर्णमुद्राममुकशर्मणे तुभ्यमहंसंप्रददे, ३० तत्सन्नममकेशवार्पणमस्तु—ब्राह्मणोपठेत्—३० इरावतीधेनुमतीहिभूतं सूर्यवसिन्मीमनुवेदशस्या । व्यस्कभ्नारोदसी विष्णवेतेदार्यं पृथिवीमभितोमयून्वेः । ३० स्योनापृथिविनोभयन्त्तरानिवेशनी । यच्छ्रानःशर्मसप्रथाः । इतिपठित्वायदेत्—३० प्रतिगृह्णन्त्विमाधिंनुकुटुंबार्थं विशेषतः । स्वस्तिभयतुमेनित्यं रुद्रमातर्नमोस्तुते । ततःप्रार्थयेत्—३० या लक्ष्मीः सर्वभूतानां याचदेवेष्ववस्थिता । धेनुरूपेणसादेवी मम-

पापं व्यपोह्यतु ॥ वागोदानोक्तां गोमतीं पठित्वा तिलधेनुमार्थनां-
पठेत्—३० तिलाश्चपितृदैवत्या निर्मिताश्चेहगोसवे । ब्रह्मणा त-
न्मयी धेनुर्दत्ता प्रीणा तु, केशवः ॥ ततः कलशजलेन यजमानमभि-
षिञ्चयादिषु दत्त्वा ततः केशवादिद्वादशनामैर्द्वादशब्राह्मणान्संपूज्य
क्षीरादिभिर्भोजयेत् ॥ इतितिलधेनुदानपद्धतिः ॥

अथ वृषभदान परिभाषा—

उक्तं च भविष्योत्तरे— दशधेनु समीतश्चानैकश्चैव धुरंधरः ॥ दशधेनु प्रदानाद्धि वृषभकोविदि-
ष्यते ॥ भ्रूलंकृत्य वृषभान्तं पुण्येहि समुपस्थिते ॥ रीप्यलांगूल संयुक्तं ब्राह्मणाय निवेदयेत् । मंत्रेणानेन
राजेन्द्र तंप्रदद्याद्दशमिते । धर्मस्तं वृषभेण जगदानन्द करकः । अष्टमूतं रथिष्ठान मतः पाहि रुनाशनः ।
सप्तजन कृतं पापं वाटमनः कथं संभवम् ॥ दत्तवर्षं विलयं याति वृषभानेन कर्मणा ॥ तं धर्मसं वृषभं
गायत्र्या वा प्रपूजयेत्—३० तीक्ष्णं शृंगाय दिग्गहे धर्मगायत्र्य धीरिहि तत्रोद्धृप. प्रचीदयात् ॥ इति वृष-
भदाने ॥ पाश्चान्मुखं वृषभस्थाय, दाता पूर्वमुखो भवेत् ॥ वक्रदं रपरीषित्वा च दद्यात्तं द्विजपुंशवे ॥

इति वृषभदान परिभाषा—

अथ वृषभदानपद्धतिः ।

— ०: —

अथ वृषभदान कर्ता, प्रातर्नित्यकर्म समाप्त्य, शुभेहिवा पुण्य
काले गणेशं सम्पूज्य, गोमयेनोपलिप्य, तत्पश्चिमे पूर्वाभिमुखे
नोपविश्य तत्र पश्चिमाभिमुखं वृषभमवस्थाप्य, सत्तरचे द्रौण्य-
लांगूल घण्टाचामर जुद्धघण्टिका दिभिरलंकृत्य । स्वदक्षिणभागे,
उदङ्मुखं स्वासने ब्राह्मणमुपवेश्य, आचम्य प्राणायामं कृत्वा,
गरीशं ध्यात्वा स्वस्तिवाचनं पठित्वा । संकल्पं कुर्यात्—ततः
कुश तिलयवजलान्यादाय, ॐ अद्येहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्या-
मुकोहं जन्म जन्मान्तरं कृत्वा कायिक वाचिक मानसिक त्रिविध
पापानुपत्तये वृषभरोमसम संख्य वर्षं सहस्रावधिगोलोक वासो-
त्तरं पुनर्जन्मन्यहं लोके वेदोपनिषदाजकत्वं ब्रह्मकुल जन्म

प्राप्त्यर्थ (वासुकग्रह पीडाव्यथादि समस्त दुष्टारिष्ट निर्वृत्यर्थ
 मसुकग्रहप्रीतये) श्रीपरमेश्वर प्रीतये वृषभ दानं करिष्ये-तत्प्रति
 ग्रहार्थ ब्राह्मणस्य पूजन पूर्वकं वरणं वृषभस्यपूजनंच करिष्ये-ततो
 ब्राह्मणं संपूज्य-वरणसामग्रीं हस्तेनिधाय,—३० अद्येत्यादि संकी-
 र्त्यामुकोहं करिष्यमाण वृषदानकर्मण्येभिर्गन्धात्त वस्त्रयज्ञो-
 पवीतादि द्रव्यैरमुक गोत्रप्रवरमसुक शर्माणं ब्राह्मणं वृषदान प्रति
 ग्रहार्थ त्वांवृणे -वृतोऽस्मीति ब्राह्मणोद्गृधात्-वृषंपूजयेत्-आवा-
 हनम्-३० आवाहयाम्यहं देवं धर्मपादं महावृषं , सर्व सौख्यप्रदे
 तस्मै वृषभाय नमोनमः ततः-३० तीक्ष्णशृङ्गायविद्महे धर्मपादाय
 धीमहि । तन्नोवृषः प्रचोदयात्-इतिवृषगायत्र्या पाद्यगन्धवस्त्र
 घण्टा किंकिणीजालादिभिः संभूष्य धूपदीपनैवेद्यादिभिः संपूज्य
 च, दान संकल्पं कुर्यात्-यव-कुशजलतिलान्यादाय-३० अद्ये-
 त्यादि देशकालौसंकीर्त्यामुकोहं जन्मजन्मांतरकृत कायिकवाचिक
 मानसिक त्रिविध-ज्ञाता ज्ञात सकलपापानुपत्तये वृषरोमसंख्यक
 वर्षसहस्रावधि गोलोकवासोत्तरान्य जन्मन्यहलोके वेदोपनिषद्
 पारङ्गत ब्रह्मकुल जन्मप्राप्त्यर्थ, (वासुकग्रहपीडाव्यथादि समस्त
 दुष्टारिष्ट निर्वृत्यर्थमसुकग्रह प्रीतये) श्रीपरमेश्वर प्रीतयेच यथा
 शक्त्यलंकृतं रुद्र दैवतमिमं वृषं, अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं
 संप्रददे नमम-ततो वृषककुदं हस्तेनस्पर्शयित्वा ब्राह्मणायदद्यात्-
 ३० धर्मस्त्वंवृषरूपेण पठेन्-३० कोदात्कस्मा० । ततोहस्ते सुवर्णं
 कृत्वा प्रतिष्ठासंकल्पः-अद्येत्यादि वृषदानप्रतिष्ठार्थं मिदंसुवर्णं
 शर्मणे तुभ्यमहं संप्रददे । ततोभूयसीदत्था शीर्गृहीत्वा ब्राह्मण
 भोजनं दद्यात् इति वृषदानं पद्धतिः ।

अथ महिषी दानविधिः—

उक्तं च देवदत्तौ—महिषी दानं माहात्म्यं कथयति युधिष्ठिरः । पुत्रं परिव्रजामासुषं सर्वं वामप्रदं
 तसा । अद्रुष्योपगमे च कासितयामदमेपुत्र । शुभ्रं पक्षे चतुर्दशवर्षकाती च विमेषतः । सर्वारिष्ट विन्-

शाय चित्तोद्वेग प्रशान्तये । दुःस्वप्नदर्शने चैव शनिपीडां निवारणे । प्रसूतां प्रथमां चैव एवंशेष विवि-
ताम् । सालोकृतां स्वर्णं शङ्गीं सुहृमत्तिलकालनाम् । ताम्रदोहां । रौप्यपुरां सप्तधान्योपरि स्थिताम् ॥
रत्नामाल्यां रक्तवस्त्रां धृष्टिभिः सुतोभिताम् । एवंष्टत्रय महिष्यां प्राह्मुसुती स्थापयेत्ततः । दद्याद्द्वित्रय
शान्तार्थं दक्षिण्य कुटुम्बिने दद्यात्प्रदक्षिणोत्सृजेद्ब्राह्मणं तां पयस्विनीम् । प्रतिप्रद स्यूतस्तस्याः मृष्टं शं
खयभुवा ॥
इति महिषी दानविधिः ॥

अथमहिषीदानपद्धतिः ॥

—१०३—

अथ च महिषीदान कर्त्ता-परिभाषोक्त दिने, मृद्गोमयोप
लिप्तायां भूमौ, पूर्वोक्तां सामग्रीं सुवर्णशृङ्गं, सुवर्णतिलकं, ताम्रदोह
रौप्यखुरं, सप्तधान्यं, रक्तवस्त्रं, घण्टा, क्षुद्रघण्टिका, इति धृत्वा,
यथोक्तं लक्षणं ब्राह्मणं मुदङ्मुखं कुशाशनोपरि कृष्णऊर्णासने स्व
दक्षिणत उपवेश्य, हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य, स्वासने उपवेश्या चम्य
प्राणायामं विधाय हस्ताक्षत पुष्पः सुमुखश्चेति गणेशं ध्यात्वा-
समयं प्रतीक्षन्—ततः शंकल्पं कुर्यात्—३० अद्येत्यादि देशकालौ
संकीर्त्यामुकोहं, मम सर्वा ऋष्ट निवृत्तिपूर्वकं मायुरारोग्यै स्वर्गा-
भि वृद्धयेवा अमुकराशिस्थ शनिग्रहस्थितेन तत्कृतामुकरिष्ठ प्रशा-
न्तयेच यथाशक्त्यलंकृतां महिषीं ब्राह्मणाय दास्ये, तत्पूर्वांगत्वेन
ब्राह्मणास्य पूजनपूर्वकं वरणं महिषी पूजनं च करिष्ये । ३० नमो
स्त्वनन्तायेति ब्राह्मणं पाद्यगन्धादिभिः संपूज्य । कृष्णवस्त्र
धौ तोत्तरीय परिधानवस्त्रं रजतसुद्रादियुतं करेकृत्वा । अद्येत्यादि
संकीर्त्यामुकोहं ममासुक जन्मराशिसकासादसुकस्थ शनिग्रहपीडा
निवारणार्थं महिषीदानकर्मणि, एभिर्गन्धाक्षतरक्त पुष्पमाला
घस्त्रताम्बूलादिभिर्महिषी दानप्रतिग्रहार्थं मसुकगोत्रमसुकवेदाध्या
यिनमसुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वांवृणे-वृतोऽस्मीति ब्राह्मणो ब्रूयात् ।
ततो महिषीमानीय सप्तधान्योपरिकृत्वा-पूजयेत्—३० यमस्वरूपा

यै महिष्यैनमः, इति नमस्कृत्य प्रार्थयेत्-ॐ महिषी ब्रह्मपुत्री
 च लक्ष्मीरूपेण संस्थिता । प्रार्थितासिमयादेवि यममार्गं निवारय,
 इति संप्रार्थ्य-ॐ महिषी यमरूपात्वं विश्वामित्र विनिर्मिते ।
 पूजिता हरमे पापं सर्वदान फलप्रदे । इति मंत्रमुक्त्वा-ॐ यम-
 स्वरूपायै महिष्यै नमः । इति मंत्राभ्यां, अवाहनं, आसनं, पाद्यं,
 अर्घ्यं आचमनं, स्नानं, रक्तवस्त्राच्छादनं गन्धाक्षतपुष्प रक्त-
 माल्यानि सुवर्णतिलकं च समर्प्यसुवर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां कृत्वा
 ताम्रदोहनं च वामभागे संस्थाप्य । घण्टांगलेष्वध्या लुद्रघण्टिका
 मालांच सुसज्य धूप दीप नैवेद्यादिभिः सम्पूज्य हस्ते तिल
 कुश जलनिधाय-ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकनक्षत्रोप
 लक्षितोमुकराशि, रसकोऽहं श्रुतिस्मृति पुराणोक्तफलाप्तये, तथाच
 शनेश्वरजनित समस्तव्याधि शान्त्यर्थं, इदानीममुकपर्षणि, इमां सु
 पूजितां यथाशक्यलंकृतां महिषीं यमदैवतां, असुरुगोत्राय अमुक-
 वेदाध्याधिने सुपूजिताय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यंसंप्रददे ।
 नममेति तिलकुशजलेन दक्षिणहस्तेन महिषीष्टंस्पृशन-ॐ
 इन्द्रादिलोकपालानां याराजमहिषीशुभा । महिषीदानमाहात्म्या-
 त्सास्तुमेसर्वकामदा । धर्मराजस्यसाहाय्येयस्याः पुत्रःप्रतिष्ठितः ।
 महिषासुरस्यजननी यासास्तुवरदामम । इति मंत्राभ्यां ब्राह्मण
 हस्तेदद्यात् । विप्रोऽपिमहिषीष्टंस्पृष्ट्वा । ॐ देवस्यत्वा० ।
 पठित्वा ॐ स्थस्तीतिप्रतिगृह्य । ॐ कोदात्कस्मा० इति पठित्वा
 ततोयजमानः सविप्रांमहिषीं प्रदक्षिणीकृत्य, स्वासने उपविश्य
 प्रतिष्ठासंकल्पं कुर्यात् अन्येत्यादिस्मृत्वा मुकोहं महिषीदानप्रति
 ष्ठार्थमिदं सुवर्णतुभ्यंसंप्रददे नमम ॥ ततोभूयसीविभज्याचार्याय
 दक्षिणां दत्वा स्वयंसचैलहरिद्रादि चूर्णेन स्नात्वा अन्यद्वाससी-
 परिधाय ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वयंभुंजीत ।

इति महिषीदानपद्धतिः ।

अथ अश्वदान विधिः

उक्तं च महाभारते—सर्वाङ्गणोपेतं युगान्दोषं वर्जितम् । योऽयं कदातिविप्राय स्वर्गलोके महीयते । अश्वमेधं भवत्यस्तु पत्नीन्तु न दास्यते । अश्वदान्तु तेनेह कर्त्तव्यं विधिपूर्वकम् । शकं पचाले रोष्ये, सुवर्णलंकृतं ममात् । सद्रक्षिणं सप्रभं च दद्यात्तमग्निहोत्रिणे । चन्द्रसूर्याभ्यां च, मन्त्रादिषु युगादिषु । अश्वान्दिषु पुण्येषु कलेःश्वं प्रदापयेत् ॥

इति अश्वदानविधिः

अथ अश्वदानपद्धतिः ।

→  ←

अथच सुलिप्तायांभूमौ 'पूजासामग्रीसंपाद्य, यथा शक्तिसु-
वर्णपट्ट ह्यकल किकिणीजालावृतकंठे सवस्त्राच्छादितारुढासनपृ-
ष्ठमश्वंसुसज्य, ब्राह्मणमाहृयोत्तरमुखमुपवेश्य स्वयंयजमानः
पूर्वाभिमुखः स्वाशनेउपविश्य, हस्तौपादौ प्रक्षाल्य प्राणायामं
विधाय, सुमुखश्चेतिगणेशं संप्राथ्य, संकल्पंकुर्यात्—अथेत्यादि
देशकालौ संकीर्त्यामुकोहं चातुर्वर्गार्थं कामपूर्वकाश्वरोमसमसं-
ख्यकदिव्याद्धान्सूर्यलोकं निवासार्थमश्वदानंकरिष्ये । तदंगतया
ब्राह्मणपूजनपूर्वकंवरणं । अश्वपूजनं च करिष्ये । ततो ब्राह्मणं
पाद्यगंधादिभिः संपूज्य वरणसामग्रीं हस्तयोर्निधाय, ३० अथे
त्याद्यमुकोऽहं मेभिर्गंधाक्षत सद्रव्य धौतोत्तरीय वासोभिरमुक
गोत्रं शर्माणंब्राह्मणमश्वदानं प्रतिग्रहार्थं त्वांवृणु । ३० वृतोऽस्मी-
तिब्राह्मणोक्तिः । ततः धान्योपर्यश्वमुत्थित्वा । ३० विभ्राद्बृह-
त्पिपवतु सौम्यमित्यादि सूर्यसूक्तेन, वा ३० महार्णवेसमुत्पन्नउच्चै
स्त्रवसपुत्रक । मयात्वं पूजितोवाजिन्शान्तिदोभवसर्वदा । अनेन-
मंत्रेण सुवर्णतिलकाकूनललाटं, ग्रैवैयकसुपर्याणान्वितं, रौप्यर-
त्नकटकशोभितं हीरकनेत्रं, ताम्रखुरं, चौमपुच्छं, सुवाससं, शुभ्र-
संवृतं, स्वायुधान्वितं, धान्यरत्नोपरिसुसज्जितमुत्थितमश्वं पाद्या-
दिनीराजनान्तं सम्पूज्य, संकल्पः—अथेत्यादि देशकालौसंकीर्त्य
अमुकोऽहं चातुर्वर्गार्थं कामपूर्वकाश्वरोम संख्यकदिव्याद्धान्सूर्य-
लोकं निवासकामः स्वर्गकामोवा, यमदैवतं सर्वालंकारयुतं अश्वं

सुपूजिताय ब्राह्मणाय, अमुकगोत्रप्रवराय, अमुकशर्मणे, तुभ्यमहं
संप्रददे, ॐ तत्सन्नमम, इतिसकुशतिलोदकं अश्वस्यगृहीतदक्षि-
णंकर्णं, ब्राह्मणहस्ते, ॐ उच्चैः श्रवास्त्वमश्वानां राज्ञां विजय
कारकः । सूर्यवाहनमस्तुभ्यमतः शान्तिं प्रयच्छुमे, इतिपठित्वा
दद्यात्, ब्राह्मणश्चकर्णगृहीत्वा ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेशिवनो
र्वाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम् । इति पठित्वा, ॐ स्वरितयजमान
स्यकामाः सत्याः सन्तु, ततः ॐ कोदादितिकामस्तुतिं च पठेत् ।
ततोयजमानः सत्राह्मणमश्वं प्रदक्षिणीकृत्य अश्वसप्तसप्तति
पदानियावत् शशवाग्रतो गत्वामनसि, सूर्यनारायणंध्यायन, दर्श-
यित्वाच परावृत्य, स्वासने उपविश्य दान प्रतिष्ठांकुर्यात्—अथेत्यादि
संकीर्त्यामुकोहं अश्वदानकर्मणि दानप्रतिष्ठासिध्यर्थमिदं सुवर्णं
रजतंवा, अमुकशर्मणे ब्राह्मणायतुभ्यमहं संप्रददे, ॐ तत्सन्नमम
ततो ब्राह्मणान्भोजयित्वा । स्वयमपिभुंजीत, । इत्यश्वदानम् ।

भूमि दान परिभाषा—

उक्तं च महाभारते—प्रादेशमत्रां भूमितु शोभ्यादनुभरुत्ताम् । न ससोदति वृष्ट्यै न च दुर्ग-
गुपांशुते । मुदितो राजते प्राज्ञः शक्रेण सहन्दति । यावन्ति लाल्लसुखेन रजसि भूमिर्भाषते दुदितु
रुज्जरोमनाणि । तावन्ति शंकरपुरे स्युगति तिष्ठेत् । भूमिदानं निहयः कुरुते मनुष्यः । वृष्टवसिष्ठः—
यत्किञ्चिदुस्ते पार्यं जन्म प्रभृतिमानवः । अविशोचर्ममात्रेण भूमिदानेन शुध्यति । रवदत्तां परदत्तां च
योद्देशे चमुंशाम् । -पठित्वं सदस्त्राणि विद्याया जायते वृमिः ॥ इति

अथ भूमिदान पद्धतिः

•••••

अथ च भूमिदानकर्त्ता देयभूमेर्भूतिपिंडं, ताम्रपत्रेधृत्वा गृहे
वा तीर्थादिभ्यः स्वासने उपविश्याचम्य, दीपंप्रज्वाल्य, अर्घस्था-
पनादि कर्मकृत्वा, तिलकुशजलं हस्तेनिधाय, प्रतिज्ञा संकल्पं-
कुर्यात्—अथेत्यादि संकीर्त्यं अमुकोहं करिष्यमाणं भूमिदानक-
र्मणि गणेशादिपूजनपूर्वकम् तथा च भूमिदान प्रतिग्रहार्थं ब्राह्म-
णस्य पूजनपूर्वकं चरणंकरिष्ये, ततो गणेशं सम्पूज्य ॐ शुक्ला-

म्बर धरमिति विष्णुं च स्मृत्वा, नमोस्त्वनन्तायेति मंत्रेण ब्राह्मणं पात्रगन्धादिभिः सम्पूज्य चरणद्रव्यं च हस्तेकृत्वा—अथेत्यादि अमुकोऽहं एभिर्गन्धाक्षतधौतवस्त्रादिभिः करिष्यमाण भूमिदान प्रतिग्रहार्थं अमुकगोत्रममुकशर्मणं त्वामहंवृणु इतिदत्त्वा वृतोस्मीतिप्रत्युक्तिः । ततो भूमिंपूजयेत् । ध्यानं शुक्लवर्णामहीकार्या दिव्याभरणभूषिता । चतुर्भुजासौम्य वपुश्चन्द्रांशु सदृशाम्बरा । दिङ्नांगानांचतुर्णांतुकार्यापृष्ठगतामही । सर्वौपधियुतादेवीशुक्लवर्णाततः स्मृताः । ३० भूरसिभूमिरस्यदितिरसि त्रिविश्वधाया त्रिविश्वस्थ भुवनस्यधर्त्री । पृथिवीं यच्छ पृथिवीं ह ई० ह पृथिवींमाहि ई० सीः । इति ध्यात्वा ॐ भूम्यै नमः इति मंत्रेणताम्र पात्रस्थ भूमिपिंडं, (वामभूमिमूल्यं सुवर्णादिद्रव्यम्) सम्पूज्य दान सकलं कुर्यात्—अथेत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकोऽहं पृष्टिसहस्रवर्षमित गोलाकवासकामो वा सकलपाप दूरीकरणार्थं श्रीपरमेश्वर प्रीतये इमांभूमिंविष्णुदैवतकाम्, अमुकगोत्राय, अमुकवेदाध्यायिने अमुकशर्मणे ब्राह्मणायतुभ्यंसंप्रददे, ३० तत्सन्नमम ब्राह्मण हस्तेदत्त्वा, ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेशिनोर्बाहुभ्यां पूषणोहस्ताभ्याम् । ३० कोदात् इतिकामस्तुतिं च पठित्वा, ३० विष्णवे भुवं प्रतिगृह्णामि । ३० स्वस्तीतिवदेत् दानप्रतिष्ठं कुर्यात् अथेत्यादि अमुकोऽहं कृतस्यभूमिदानकमर्णः प्रतिष्ठार्थं इदं सुवर्णमग्नि दैवतं अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय संप्रददे । ततो ब्राह्मणो यजमान मभिर्पिंच्याशीर्वादं दद्यात् । इति भूमिदान पद्धतिः

अथ गृहधर्मशालादानपरिभाष—उक्तञ्चमार्कण्डेयपुराणे— कुर्यात्प्रतिथयगृहं पथिराना हितायदम् । नित्यं गृहेऽवेशं वा साधुना यो नियोजयेत् । इत्ययंपुण्यमुद्दिष्टं तस्य स्वर्गावर्णनम् । सर्वकाममृद्धोऽती देववह्निमोदते, (प्रतिथयो धर्मशाला)—अविष्यपुराणे—प्रतिथये सुविस्तारो फारिस्ते सज्जन्वने । दानानाथ जनाथांय वरिणि कृतं भवेत् । मदनरत्ने भविष्ये—एवं संश्रुतसंभारं गृहं वा द्विजोत्तमान् । बुलशीलसमपुक्ताण्यृहन्प्यान्मित्रयेत् ॥ निराश्रतं सत्त्वा राजस् भ्योस्तु

नदाकम् । ब्रह्मवैवर्त्तपुराणे—गृहाङ्गणे वारयित्वा कुंडमेवं समेखलम् । ग्रहयज्ञं प्रसक्तं व्यस्तुष्टि-
पुष्टिकरं सदा ॥ रक्षोघ्नानि च सूक्तानि पठेयुः सदा गणेशतः । वास्तो पूजापवर्त्तव्या दिग्भालानां वलिं
क्षिपेत् । ततः पुण्याहं घोषणं द्वाह्याणां स्तेषु वैश्वसु । प्रवेत्तुं त्वां सवर्त्तारतुसर्गार्थं तु प्रवेशयेत् । यज्ञ-
मानस्तत्सनात् शुक्लाम्बरधरः शुचिः स्वस्थः विदितः पूर्वं तत्रास्मिं प्रतिगच्छेत् — मत्स्यपुराणे—
य एव सर्वमर्मानं वैष्ठं विनिवेशयेत् । फगकोटिं शतं यावद्ब्रह्मलोके महोयते । शेषं प्रयोगेऽप्युच्यते ॥

—o—

॥ अथ गृहदान (धर्मशाळा) दानपद्धतिः ॥

अथ च दाता पूर्वोक्तं गृहनिर्माणविधिनायथाशक्तिगृहं (धर्मशाळां वा)
निर्मितं कृत्वा । पूर्वोक्तगृहवास्तुस्थापनविधानेन, ग्रहयागपुरः सरं
वास्तुस्थापनान्तं कर्म कृत्वा ॥ तत्र संकल्पे विशेषोऽयम्—ततो यज-
मानः तत्र मंडपे प्रविश्य, शुभासने उपविश्या च भयं दीपं प्रज्वलय्य
शान्तिपाठं कृत्वा, प्रतिज्ञासंकल्पं कुर्यात्—अधेत्यादिदेशकालौ
संकीर्त्याऽमुकोहं गृहदानकर्मणो निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशादि
नवग्रहान्तपंचाङ्ग देवतानां पूजनपूर्वकं तत्पूर्वाङ्गतया, आचार्या-
दीनां चरणं ग्रहपूजनं, ग्रहयागहोमं शिलान्यासपूर्वकं वास्तुपूजनं
स्थापनं च करिष्ये, अत्र सर्वकृत्यं पूर्वोक्तपद्धतिभिः कुर्यात्—होमा-
न्ते यजमानो होमसांगतासिद्ध्यर्थं सर्वेषां देवानां प्रीतये, ऋत्वि-
ग्भ्यः सुवर्णं रजतान्यतरदक्षिणां आचार्याय गां च दद्यात्—ततः
आचार्यादयः सपिचारं यजमानमभिषेकं मंत्रैर्ग्रहवेदीशानस्थकलश-
जलैर्दूर्वापल्लवैर्मंगलघोषपुरस्सरमभिषिंचेयुः । तदनंतरं यजमानः
उद्धर्त्तनपूर्वकं स्नात्वा, स्नानवस्त्रं त्यक्त्वा, शुक्लवस्त्रं परिधाय गीत-
मंगलवाद्यादिभिर्गृहं, गृहप्रतिष्ठोक्तैः पूर्वोक्तैः रक्षोघ्नपावमान,
मंत्रैः त्रिसूत्र्याप्रदक्षिणकर्मणा वेष्टय, तैरेव सदुग्धजलधारां गृहस्यो
परितः पातयित्वा, गृहमध्ये गत्वा, तत्र गृहस्पदक्षिणाभागे, अष्ट
दलं कमलं लिखित्वा तदुपरि प्रस्थमात्रां स्तिलान्ताम्रपात्रे धृत्वा, तत्रो
परि उपधानादिसर्वोपकरणं सहितांशय्यां पूर्वापराग्रतां स्थापयि-
त्वा, तत्र अग्न्युत्तारणकृतां सौवर्णालक्ष्मीनारायणप्रतिमां संस्था

प्य, सम्पूज्यच, सुवस्त्रभूषणैर्भूषितं सपत्नीकंब्राह्मणं गृहदान
 प्रतिग्रहार्थंवृत्वा, तद्धस्तंकरेणगृह्णित्वा, सुलग्नेमङ्गलवाद्यादिभिः
 सह, ३० एहोहि नारायणदिव्यरूप, सर्वामरैर्वन्दितपादपद्म ।
 शुभाशुभानन्दशुचामधीश, लक्ष्म्यायुतस्त्वंहि गृहंगृहाण ॥१॥
 नमःकौस्तुभनाथायहिरण्यकवचायच, क्षीरोदारैश्चसुप्तायजग-
 ध्दात्रेणमोनमः॥२॥ नमोहिरण्यगर्भाय, विश्वगर्भायवैनमः । चरा
 चरस्यजगतोगृहभूतविदेनमः॥३॥ भूलोकप्रमुखालोकास्तवदेहेव्य-
 वस्थिताः । नन्दन्तिघावत्कल्पान्तं तथाऽस्मिन्भवनेगृही ॥४॥
 त्वत्प्रसादेनदेवेशपुत्रपौत्रैर्धृतोगृहे । पंचयज्ञक्रियायुक्तोवसेदाचन्द्र
 तारकम् ॥५॥ इतिसपत्नीकं ब्राह्मणंगृहाभ्यंतरे शय्योपरिउदङ्मु-
 खमुपवेश्य, स्वयंभूमौ आसनोपरिप्राङ्मुखउपविश्य, आचम्य-
 कुशतिलवजलान्यादाय, देशकालौसंकीर्त्य अमुकराशिरमुकोऽहं
 मम आत्मनः सकलपापक्षयपूर्वकं, कल्पकोटिशतावधिककाल
 श्रीलक्ष्मीनारायण चरणारविन्दसमीप निवासकामः । इदंसदा-
 रुजं शिलानिर्मितंयथाशक्ति संपादितकांस्यपात्रादिभाजन, सर्व
 धान्यादि, लवण, शर्करा, घृतादिपरियुतं, समञ्चतूलिकावितानादि
 सर्वापकरणसहितम् । अश्वरथदासदासीयुतं, सदीपप्रभाभिरुद्यो
 तंसर्वदेवतंगृहं, अमुकगोत्राय अमुकवेदाध्यायिने, अमुकशर्मणे
 ब्राह्मणाय, तुभ्यंसम्प्रददे, ३० तत्सन्नमम । इतिब्राह्मणहस्ते सकु-
 शजलादत्वा । ३० शैलजंपरमंदिव्यं सर्वधान्ययुतंत्विदम् । सर्वा-
 पस्करसंयुक्तंगृहंगृह्णद्विजोत्तम । ततोब्राह्मणः, ३० देवस्यत्वा०
 इतिपठित्वा, ३० प्रतिगृह्णामीत्युक्त्वा, ३० कोदात्कस्माऽअदात्०
 इतिकामस्तुतिंपठेत् । ततो गृहदानप्रतिष्ठांकुर्यात्—अथेत्यादिदेश
 कालौ संकीर्त्यामुकोऽहं कृतैतद्गृहदान प्रतिष्ठासिद्धर्थमिदंसुव-
 र्णम् । अग्निदेवतंदक्षिणां, अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यंसम्प्रददे,
 (गृहदानप्रतिष्ठानियमंतु—सहस्रसुवर्णमुद्रामारभ्यैक सुवर्णावरा-
 मिति—भारते) ततस्तस्मैपादुकोपानह ऋचामरादिकंदत्वा,
 प्रार्थयेत्—संपन्नंवाप्यसंपन्नं गृहोपस्करभूषितम् । सर्वसम्पूर्ण-

तामेतु, त्यत्प्रसादाद्विजोत्तम । ततोभूयसीदक्षिणां दत्त्वा पूर्वपूजितदेवान् विसृज्य घृतछायांकृत्वा आशीर्वादंगृहीत्वा ब्राह्मणांश्च भोजयेत् ।
इतिगृहदानपद्धतिः ॥

— १०३ —

अथ शय्यादान विधिः।

उक्तंच हेमद्री भगिष्ये—शय्यादानं प्रविष्टानि तवपाङ्कजलोद्भव । यां दत्त्वा शिवभागीस्याहिंलोके परत्र च । हसतूली प्रतिच्छन्ना शुभगण्डोपधानिकाम् । प्रच्छादनपटोयुक्तां, धूपगन्धादिवासिताम् । तस्यासंस्थापयेद्धेमं । हरिलम्बा समनित्वम् उच्छीर्षके घृतभृतकलशपरिरूपयेत् । विषय पांडव श्रेष्ठ सनिद्रामलशोभुधै । चतुष्कोणेषु संस्थाप्या, यथाशक्तियुधिष्ठिर । घृतकुम्भगोधूम पूर्णपात्रं जलस्य च । दीपकोषानहन्द्वात्र, चामरासनभाजनम् । पार्श्वेषु स्थापयेद्भक्त्या रासवाग्यानिकैश्च । शयनस्थस्य भवति यदन्यदुपकारकम् । शय्यामेवंविधा कृत्वा ब्राह्मणा योपपादयेत् । सप्तनीलायः पूज्य पूरयेत्त्रिधि पूर्ववत् । एवंशय्याप्रदाने तु । त्रिधिरेव प्रकीर्तितः स्वर्गपुरंदरगृहस्ये पुत्रालये तथा । सुखं सत्यभोजन्तु शय्यादानत्रभाजतः । पीडयन्ति न ते याम्बाः पुण्याभीषणानना कल्प विकल्परहितः स्वयं स्वर्गे निराजते ॥ इति शय्यादान विधि ॥

अथ शय्यादान पद्धतिः।

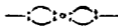
— १०४ —

अथच शय्यादानकर्ता, पुण्यकाले लिप्तायां भूमौ स्यासने प्राङ्मुख उपविश्य दीपंप्रज्वाल्य, आचम्य, हंसतृल्यादि समायुक्तां शय्यां पूर्वापरायतामास्तीर्थ शिरः प्रदेशे घृतपूर्ण ताम्रकलशं निद्रारव्यं तथा चतुष्कोणेषु, घृतकुम्भं । १ । कुम्भकुममिश्रित जलकुम्भं । गोधूमपूर्ण जलपूर्णं च कुम्भं संस्थाप्य । पादप्रदेशे चतुर्धतियुतं ज्वलन्तं दीपं संस्थाप्य । शय्याधःप्रदेशे कर्पूरादि वासितं जलपूर्णकलशं, संस्थाप्य, अन्यानि चोपस्करणानि भान्यानि भांडानि च पार्श्वयोः संस्थाप्य, शय्योपरि अग्न्युत्तारण कृत्वा लक्ष्मीनारायणसुवर्णप्रतिमां ताम्रपात्र धरिततिलोपरि

संस्थाप्य, ब्राह्मणमुदङ्मुखं सुपवेश्य, गणेशंनमस्कृत्य, अर्घ्यं संस्थाप्य विद्वाननुत्सार्यच ब्राह्मणं चरणं कुर्यात्, ब्राह्मणं चरणद्रव्यं च सम्पूज्य संकल्पं कुर्यात्—अथेत्यादि संकीर्त्य, अमुकोहं करिष्यमाणं शय्यादानं कर्मणि, एभिर्वरणद्रव्येण, अमुकगोत्रममुकशर्माणं शय्यादानप्रतिग्रहार्थं त्वांगृणे, इति ब्राह्मणं वृत्वा, शय्योपरि लक्ष्मीनारायण प्रतिमां पूजनं कुर्यात् । ततः एतन्तेतिप्रतिष्ठाप्य सहस्रशीर्षेत्यादि, पुरुषसूक्तेन पंचोपचारादिभिः प्रतिमां सम्पूज्य, पुष्पाक्षत हस्तः—३० नमः, प्रमाणैर्देव्यै । इति मंत्रेण, चतुर्दिशं शय्यां प्रदक्षिणीं कुर्वन् शय्योपर्यक्षत पुष्पाणिक्षिप्त्वा, शय्यादानसंकल्पं कुर्यात्—अथेत्यादि, देशकालौ संकीर्त्य, अमुकोहं सकलपापक्षयपूर्वकं धर्मार्थं काममोक्षप्राप्तये सर्वसुखाप्तिपूर्वकं, अप्सरोगणसेव्यमानविमानारोहणपूर्वकभूतसंप्लवकालावधिस्वर्गलोकवासकामः । श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं मिमां दानमयीं हंसतूली, गण्डोपधान, प्रह्लादनादि वस्त्रपादुकोपानच्छुभ्रचामरासनसुवर्णरजतभूषणनानाभक्ष्यभोज्यादि वाहनायुधपरिवृतां लक्ष्मीनारायणसुवर्णप्रतिमायुतां शय्यां प्रजापतिदेवतां अमुकगोत्रप्रवरायोमुकब्राह्मणाय तुभ्यंसंप्रददे । इति शय्यांस्पृष्ट्वा सकुशजलं ब्राह्मणं हस्तेदद्यात्—३० नमम इत्युक्त्वा प्रार्थयेत्—यथानकृष्णशयनं शून्यंसागरजानया । शय्याममाप्य शून्यास्तु । तथा जन्मनि जन्मनि । यस्मादशून्यं शयनं केशवस्य शिवस्य च । शय्याममाप्य शून्यस्तु तथा जन्मनि जन्मनि । ब्राह्मणश्च—३० स्वति प्रजापतिदेवतायै प्रतिगृह्णामि इत्युक्त्वा गृह्णीयात् । ३० कोदादिति च पठेत् ॥ ततो यजमानः स्वचित्तानुसारं कथमात्रं वा सुवर्णां हस्तेनिधाय—अथेत्यादि अमुकोहं कृतैतन् शय्यादानप्रतिष्ठार्थं मिदं सुवर्णां विष्णुदेवतममुकशर्मणे तुभ्यंसंप्रददे । भूयसीं दक्षिणां दत्त्वा ब्राह्मणान्भोजयेत् ।

इति शय्यादानपद्धतिः ।

अथ तुलादान परिभाषां वच्चे ।



सुद्विष्टरज्ज्वाच—भगवन्ध्रोतु मिच्छामि तुलापुरुष संज्ञकम् । कांहांमः कस्यपूजा न
 सकल्पः क्रोयधाविधिः ॥ श्रीकृष्णउवाच—प्रस्तेस्यै तथाचन्द्रे देवयान्ना सरित्तटे लक्ष्मणेन विशेष-
 शेषाश्चात्मानं तोलयेद्बुधः ॥ भूमिकम्पे तथोल्कायां निर्घातोत्पातदर्शने । तथा दुर्ग्रहं पीडा
 यामात्मानं तोलयेत्तथा । मंडपं च यथाशक्त्या उत्तमम्मध्यमंतथा । कुर्वात्पूर्वोक्त विधिना द्वाराणि
 तत्रकल्पयेत् । तन्मध्ये स्थापयेद्विद्वाग्स्तं भंदांरुमयं शुभम् । पलाशपदिरा स्वतथ देवदारु शमी-
 मयम् । पद्मरजस्यवा कुर्वाच्चतुर्हस्त प्रमाणकम् । मानहीनाधिकं कृत्वा कृतमप्य कृतंभवेत् ॥
 तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन सप्रमाणं च कारयेत् । रविसंक्रम कालेपि खांततुं परितोक्षयेत् । पीतवह्नेय
 संज्ञाय चंदनेनानुनेपयेत् । तत्रादौतुगणेशं च मातृका मंडलं तथा ॥ पूजयेद्गन्धपुष्पैश्च धूपै-
 दीपैस्तथोत्तमैः ॥ विष्णुधर्मोत्तरे—तुलादानं प्रवक्ष्यामि सर्वपापप्रणाशनम् । यद्दीयां चरितं
 पूर्वलक्ष्म्या नारायणेन च ॥ पुण्यं दिनं मथासद्य तृतीयाया विशेषतः । गोभयनात्तु लिप्ताया
 भूमी कुर्वाध्दटं शुभम् ॥ दक्षिणशुभवृत्तस्य चतुर्हस्तप्रमाणतः । सुवर्णं तत्रवध्नीत्स्वशक्त्या
 घटितं घटे ॥ सौवर्णं स्थापयेत्तत्र वासुदेवं चतुर्भुजम् । शिष्य द्वयन्दुवध्नीयात्स्थपयत्पिपटकेततः ।
 तत्रारहेत्सवस्त्रास्त्रं सवालंकार भूपितः । अभीष्टविवृतंशुभ्य स्नापयित्वा घृतादिभिः । तुलापुत्र
 दानस्य विधिरेवप्रकीर्तितः ॥ रोगपरत्वेन तत्रा शार्थं द्रव्य विशेषेण तुलादानान्युक्तानि—
 गारुडे—तुला पुत्र दानंतु शृणु मृत्युंजयोद्भवम् । अथलौहं प्रदातव्यं सर्वरोगोपशान्तये ॥
 कास्यचयचमरेद्वयं त्रपुचाक्षीं विकारके । अणुस्मारं च सीसंरयात्तान्नं कुट्टिसुदाक्षे । पित्तलंरक्त
 पित्तच रूप्यं प्रदरं महयोः । सौवर्णं सर्वरोगेषु प्रदद्यान्मृत्यु नोदनम् ॥ फलोद्भवं तथा दद्याद्
 ग्रहणाय दीर्घं दाक्षे । शुर्वभस्मक रोगेषु पौगन्तु गण्डमालके । जाह्नलं चाग्निमंथितु रोमोत्पाते
 त्रुपीपकम् । मधूद्भवं तथा देयं कासरबास जलोदरे । घृतोद्भवं तथाप्यं छर्दिरोगेषु शान्तये ।
 क्षीरं पित्तविनाशाय दाधिकं भगदारुणे । लावणं वेपनाशाय पैष्टं ददुब्बिनाशने ॥ अन्नं च सर्वं
 रोगस्य नाशनं स्मृतमेव च । आर्तो यदास्यात्पात्रंवा प्राप्नुयात्पुण्यदेशतः । नित्यं मृत्युंजय प्राप्त
 विधिना यत्प्रदीयते । तदेव सर्वशाल्यर्थं भवतीह न संशया ॥ तुलादानेकुण्ड मंडपादि—
 तत्र सुवर्णं तुलायामेवा वश्यकं मिति हेमाद्रादयः, रत्नरजतादि तुलायान्तु कृताकृतमित्युक्तं
 तत्रैव । होमाद्य शक्तौतु मण्डपादि रहितमेव कुर्यात् । नतत्रमंत्रो हांमोवा एवमेव प्रदीयते ।
 इतिमार्गस्थोक्तेः । ग्रहमंत्रा द्वारजाय मंत्राधनेत्यर्थः ॥ तुलापुरुषदानोपयोगि देवतादिमदन
 राने विध्यकर्मोक्तेः—विरोप दानं कथितं तुलादि तस्मात्तुला लक्षणं मुच्यते प्राक् ॥

णतुलाप्रमाणे रघुतमंगुलानिर्देश्यगुने पण्णविविभाषणे ॥ प्रतिद्वयेष्वंगुनपदकं २ शतांगुलाष्टोत्तमगुलानाम्
 स्युर्निर्देशनि । पच च धातुन्याबंधेष्वानवृणनिवेश्या । ईसा. शशीमास्तद्वसुध्या रयाद्वि भ्रुकर्मागुस्तराम्नी ।
 प्रजापतिविरचण्णद्विधाता पर्जन्य शम्भूरितृदेवताच सौम्यरचयमामराज मरिचनी जलेशमिध्रावरणामरदु
 पण । धनेशगंधर्व जलेश विशुद्धे चतुर्विंशतिरेव देवताः ॥ अत्र सौम्यीजुष ॥ स्यात् पंचविंशत् पुष्प
 ग एभी यस्त्रोत्पमानस्तुल्यमहात्मा । एताविधेयास्तापनीयमन्यो स्वाचिता दैवत मूर्त्तयस्ता ॥ पंडंगुल
 स्याचतुरस्रपिंड प्रतद्वये विशुण्णन्तनामा । पार्श्व द्वयं तच्चतुरंलं दयाद्वयं मया ते यथितं प्रमाणम् ॥
 मध्याशुटे श्रृंखलिकांगुलानि पचाधिका विंशतिरेव देव्यं । एकांगुलोत्थाद्भवतीद विंशत्त्रयाधिवेवः विद्व-
 वासुकि स्यात् । सद्धानुबंधं शुभकाष्टाष्टं पिंडेगुलद्वन्द्वमथोविधेयम् ॥ अथोद्वेयेभूम्यधिदेवतास्यातुला-
 न्तरे भूमिपतिनिवेश्य ॥ तुलादानेयञ्च सच वेद्यां वागोमयोंपलिप्ते समे भूमौ कर्त्तव्यः-
 तत्राचार्धं भूमौ वा वेद्या गन्ध त्रिहस्तभित् चतुरस्र व्यासं कृत्वा प्राणपरं दक्षिणोत्तर नवरेखाभिस्तच्चतु-
 षष्टिकोष्कं कुर्यात् । तत्र कोष्ठानि प्रकोष्ठानि प्रत्येकं च नभंगुलानि संघटन्ते । ततोर्ध्वदिग्गतपंक्तिपुच्छु-
 दिक्षुमध्यकोष्ठानि चत्वारि मार्जयित्वा तदुपर्युपान्यपश्चिपु पार्वयोरुत्तरयं त्रय खवत्वा प्रतिदिशं प्रति
 गन्धकोष्ठद्वयं मार्जयेत् । तच्चतुर्दिक्षु पद पद कोष्ठानि चत्वारि द्वाराणि स्थपन्ति । ततोमध्यस्थितपोष्या-
 कोष्ठानि मार्जयेत् । तत्रावहो एकैककोष्ककोष्ठं विहाय कोष्ककोष्ठद्वारपीठतरालवर्त्तन्यवदिष्टानि चर्प चको-
 ष्ठनिमार्जयेत् । तथाचमध्यचतुरस्रपीठ पादा सिध्यन्ति । ततोमध्याच्चत्परिवृत्तानिकुर्यात् । तत्राथे
 चत्पर्यंगुलानिव्यास द्वितीयेऽथौ तृतीयेचतुर्विंशति , चतुर्थेपञ्चविंशतिरिति तच्चतुरंगुलवृत्त कर्णिका-
 रूप पीठेन रजसा पूरयित्वा कर्णिकाऽधारेखा मितेन रजसा निमाय, तद्वहि र्शंगुलात्मवेदृते
 पीठरक्त मितरजोभि सपादित मूलमध्याग्निशोडशकेसराणि सपाद्य तत्पेशाराधारेखा
 सितेनैव रजसांगुलोनता रेषाद्य तच्चतुर्विंशांगुलात्मकं तद्वहिवृत्तेरजसाध्वं यथौ पत्राणि रक्षाप्राणि
 कुर्यात् । ततोदलान्तररेखां सितेनरजसा विधाय, दलान्तराणि कृष्णेनरजसा पूरयित्वा तद्वहिकर्णिका-
 गुलन्तरां वहिर्धृत्तेखां सितेनैव रजसासपाद्य वृत्तद्वयान्तरं परितोऽष्टदलायतं तन्मध्यचिह्ने शोडश
 धादिभ्य प्रतिभागयवाकारान्पोषारान्, श्यामपीठारुणश्वेतरजोभि वचयित्वा, तदंतरेण
 यथायोगरजोभि पूरयित्वा तद्वहि सित पितारुण श्यामहरिता पंचरेखा लिखेत् । तद्वहि. पीठे
 चोत्र चतुरस्रयथातोभरजोभि रक्तं कृत्वा पीठारुणरेखां सितेनरजसा चतुरस्रां रचयेत्
 द्वारक्षेत्राणि पूजावित पीठश्यामसितहरितरजोभि पूरयेत् । आग्ने- यादिकोष
 कोष्ठचतुष्टय लोहित हरितश्यामधवलै पूरयेत् । आग्नेयादिपीठचतुष्टयं पचकोष्ठा-
 त्मकंनुकमासित रक्त पीठ कृष्णरजोभि पूरयेत् । तत सितेन रजसा गुलोनतेनवहिशचतुरस्रेरेखां
 कुर्याद्विषमदनरत्नादय । इदमेव वाख्यां मण्डल जलाशयोत्सर्गादौ ज्ञेयम् । पुनस्तत्रैव—वज्रराजुत्-

तत्रसंस्थाप्य, शुद्धेर्धौतेवाससी परिधाप्य मंडपे पूर्वाभि मुखेनो
 पविश्याचम्य प्राणानायम्य, रक्षादीपं प्रज्वलय्य, प्रतिज्ञासंकल्पं
 कुर्यात्—अथेत्यादि देशकालौ संकीर्त्या मुकशर्माहंममात्मनो
 दुष्टग्रह पीडाश्रितरोगादि निवृत्तिपूर्वक दीर्घायुष्यप्राप्तये श्री
 परमेश्वर प्रीत्यर्थममुक्त तुलादान कर्मणि निर्विघ्नता सिद्धये तदंग-
 त्वेन गणेशादि पंचांगदेवतानां पूजनं आचार्यवरणंच करिष्ये ततः
 पूर्वोक्तविधिना गणेशादीन्संपूज्य, रक्षासूत्रमभिर्द्रव्यकलशोपरि
 संस्थाप्य, आचार्यवृणुयात् वरणद्रव्यमाचार्यं च सम्पूज्य वरणद्र-
 व्यहस्ते निधाय संकल्पः—अथेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुको-
 ऽहं करिष्यमाण तुलादान कर्मण्येभिर्गन्धाक्षत पुष्पपूगीफल यज्ञो
 पवीत वासोलंकरण वरणद्रव्यैः अमुक्ततुलादान प्रतिग्रहार्थं समुक्त
 गोत्रममुक्तप्रवरान्वितममुक्तवेदाध्यायिन ममुक्तशर्माणं ब्राह्मण
 माचार्यत्वेनत्वामहंब्रूणे वरणसामग्रीं तस्मैदत्त्वावृतोऽस्मीत्याचार्यो
 ब्रूयात्—कर्मकुरु करवाणीति प्रत्युक्तिः ततः प्रार्थयेत् आचार्यस्तु
 यथास्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः । तथात्वंममयज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव-
 सुव्रत । तत आचार्यो गोविन्द, मृत्युंजय, धर्मराजनांसतिसंभवे
 ईशादिचतुर्विंशति देवानां च सुवर्णप्रतिमाः स्थाल्यानिधाय अग्न्यु-
 त्तारण विधिना संस्नाप्य अग्न्युत्तारणंकृत्वा पूजयेत्—संकल्पः अथे-
 त्यादिसंकीर्त्यं, अमुकोऽहं मम दुष्टग्रहजनिताऽखिलरोग निवृत्ति
 पूर्वक दीर्घायुष्य प्राप्तिद्वारा श्रीपरमेश्वर तुलापुरुष प्रीतयेकरिष्य-
 माण तुलादानकर्मणि सुवर्णप्रतिमानामुपरि गोविन्द मृत्युंजय
 धर्मराजानां पूजनं करिष्ये—तत्रादौ गोविन्दं ध्यायेत् ३० अथश्चक्र
 गदाभूध्वंसेदक्षिणेषामयोः क्रमान् । ऊर्ध्वदेशं स्वमधः पद्मं गोविन्दः
 कपिलाङ्गकः ३० इदं विष्णुरिति मेधातिथि ऋषिर्गायत्रीछन्दः
 विष्णुर्देवता तुलादाने गोविन्दावाहने पूजने विनियोगः । ३० इदं
 विष्णुर्विचक्रमेत्रे धानिदधेपदम् । समूढमस्थपाठं सुरेस्वाहा ३०
 एतन्ते देवसवितर्यज्ञं प्राहुर्वृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञमवलेन यज्ञ
 पतिं तेन मामव । मनोजूर्तिक्षुपता भाज्यस्य वृहस्पति र्यज्ञमिमं

तनोत्वरिष्ठं यज्ञ टं० समिमंदधातु । त्विश्वेदेवासइहमादय-
न्तामोंप्रतिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः गोविन्देहागच्छेह तिष्ठ सुवर्ण
प्रतिमायां सुप्रतिष्ठितोवरदोभव इति प्रतिष्ठाप्य पुरुषसूक्तेनवा
ॐ गोविन्दायनमः इति मंत्रेण सम्पूज्य, मृत्युञ्जयं ध्यायेत्—ॐ
श्यंवकं वृषभारूढं प्रतिवत्केत्रिलोचनम् । कपाल शूलखट्वाङ्गं
चंद्रमौलिसदाशिवम् । ॐ श्यम्बकमिति वशिष्टऋषि श्यंवक
रुद्रोदेवता तुलादान कर्मणि सुवर्णप्रतिमायां मृत्युंजयावाहने
पूजनेच विनियोगः—ॐ श्यंवकं श्यजामहे सुगन्धिं
पुष्टिवर्द्धनम् । उवारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात् ॥
ॐ एतन्ते पठित्वा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः, श्यम्बके हागच्छेह तिष्ठ
सुप्रतिष्ठितो वरदोभव—ध्यायेत्—ॐ मृत्युंजयश्च देवोऽयं चतुर्बाहु
स्त्रिलोचनः । अक्षमालाधरो देवो दक्षिणेनतुपाणिना । वामेनामृत
कुण्डीच धारयन्नमृतान्विताम् । वरदाभयपाणिश्च दिव्याभरण
भूषितः । शुक्लः सुनीलवासारश्च पद्मस्योपरि संस्थितः ॐ । इति
मृत्युंजय प्रतिमां सम्पूज्य मृत्युंजय प्रतिमाया मात्मनि च न्यासं
कुर्यात्—ॐ जां हृदयायनमः, ॐ जीं शिरसे स्वाहा, ॐ जूं
शिखायैवष्ट, ॐ जैं कवचाय हुम्, ॐ जाँ नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ
जः, अस्त्रायफट् इति मृत्युञ्जय प्रतिमाया मात्मनि च न्यासं कृत्वा,
श्यंवक प्रतिमां वेदोक्त मृत्युञ्जय मंत्रेण वा नमस्ते रुद्रमन्यवेति
नीलसूक्तेन सम्पूज्य । आवरणशक्तीः पूजयेत्—ॐ जयायै नमः,
ॐ विजयायै नमः, ॐ अजितायै नमः, ॐ अपराजितायै नमः,
ॐ भद्रकाल्यै नमः, ॐ कपालिन्यै नमः, ॐ क्षेम्यायै नमः
ॐ मृत्यु पराजितायै नमः, इति नाममंत्रैर्गन्धाक्षता
दिभिः प्रादक्षिण्येन क्रमेण सम्पूज्य, पुनः प्रार्थयेत्—ॐ मृत्युञ्जय

टि० ~ लोहतुलादाने प्रतिगृहीतु शिरसि, ललाटे, जिह्वामूले, गंडयो
रुद्रे, नाभौ, गुह्ये. अष्टांगेन ॐ जूंम इति मृत्युंजयमन्त्र संस्कृत्वा सतिसंभवे
प.टपलातमरं लोहदंडं कृष्णधातुपरि कृत्वा वस्त्रेणाद्याय तुलादानान्ते संकल्प
पूर्वकं माचार्याय दद्यात् लोहतुलादाने । अयमेव विधिर्विशेष

त्रिलोकेश, दयालो भक्तवत्सल । रत्नमां देवदेवेश स्वल्प मृत्यु-
भयात्प्रमो । इति संप्रार्थ्य, केचिदत्र धर्मराज पूजनमप्याचरन्ति,
यथा चारः कर्तव्यः, प्रतिमायां धर्मराजमावाहयेत्-ॐ धर्मराजं
धर्ममूर्त्तं जगदानंदकारकं । ध्यायामि मनसादेवं धर्माधर्मस्य
साक्षिणम् । ॐ यमायत्वेतिदध्यङ्ङाथर्वण ऋषिर्यजुरच्छन्दो धर्म
राजोदेवता तुलादान कर्मणि सुवर्णप्रतिमायां धर्मराजावाहने
विनियोगः—ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा धर्मः
पित्रे । इत्यावाह्य एतन्तेति प्रतिष्ठाप्य । ॐ भूर्भुवः स्वः ।
धर्मराज इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदाभव । ॐ
धर्म राजायनमः, इति मंत्रेण धर्मराजं सम्पूज्य । ततः
पोडशारयंत्रस्य पूर्वादिदिक्षु, दशदिक् पालानां पूजनं पूर्वोक्तैः
ग्रह्यागोक्तेनविधिनाकुर्यात् वा पूर्वं-ॐ इन्द्रायनमः इद्रमावाह-
यामि स्थापयामि इति गंधाक्षताभिः सम्पूज्य, आग्नेये—ॐ
अग्नेयेनमः, दक्षिणे—ॐ यमायनमः, नैऋत्ये—ॐ निऋतयेनमः,
पश्चिमे—ॐ वरुणायनमः, वायव्ये—ॐ वायवेनमः, उत्तरे—ॐ
कुबेरायनमः ईशाने ॐ ईशायनमः इति सम्पूज्य वलयुक्त प्रकारेण
सर्वेभ्योवलीर्दत्त्वा पोडशार यंत्रमध्ये पृथ्वीमावाहयेत्—आगच्छ
सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणि तुलाधः स्थापयामित्वां सशैल
वनकानने ॥ ॐ स्योना पृथ्वीति मेधातिथि ऋषिर्गायत्रीछन्दः
पृथ्वीदेवता तुलादाने पृथिव्यावाहनेस्थापनेच विनियोगः—ॐस्यो
ना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी यच्छानः शर्मसप्रथाः ।
एतन्तेति प्रतिष्ठा ॐ भू० पृथिवि इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठिता
वरदाभव । ॐ पृथिव्यै नमः, इति सम्पूज्य, तत यज्ञवृत्तोद्भवं
तुलास्तंभं फलकं च तत्रानीय पञ्चगव्येन संप्रोक्ष्य । तुलास्तंभ
स्थापनार्थं गर्त्तं कुर्यात्—ॐ अनन्तायनमः, ॐ कूर्मायनमः
ॐ पृथिव्यैनमः, इति पोडशारु मध्ये सम्पूज्य, तत्रगर्त्तकृत्वा
तुलास्तंभ मारोपयित्वा दृढं कुर्यात् । तत फलक स्यकोणौ च
तुश्चतुरंगुलौत्यक्ता कौणयोर्मुजादिरशनां शिख्यां बध्वा दक्षिणो

त्तर लंबं फलकं रतंभोपरि निदध्यात् । ततस्तुलापूजनं कुर्यात्—
 ॐ तुलायैनमः, इति मंत्रेण तुलापंचोपचारादिभिः सम्पूज्य, रक्त
 पीतादिघस्त्रेणतुलां समाच्छाद्य, ततस्तुलायां दक्षिणकोणमारभ्यो
 त्तर वृध्या, ईशादि चतुर्विंशति, पूर्वपूजिताः प्रतिमाः सूत्रेष्वालं-
 व्य, वक्ष्यमाण नाममंत्रैः आवाह्य प्रतिष्ठाप्य पूजयेत् । ततस्त्रि
 सूच्यां प्रतिमांबध्वा, दक्षिणकेणे तुलाफलकोपर्यालंब्य, तत्र, ॐ
 ईशायनमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि एवं क्रमेण, ॐ
 शशिने नमः । २। ॐ नारुतायनमः । ३। ॐ रुद्रायनमः । ४। ॐ
 सूर्यायनमः । ५। ॐ विश्वकर्मणेनमः । ६। ॐ गुरवेनमः । ७।
 ॐ अङ्गिरोऽग्निभ्यांनमः । ८। ॐ प्रजापतयेनमः । ९। ॐ विश्वे
 भ्योदेवेभ्योनमः । १०। ॐ जगद्विधात्रेनमः । ११। ॐ पर्जन्यशं
 भुभ्यांनमः । १२। तत उत्तरफलकभागे—ॐ पितृदेवताभ्योनमः
 आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि । १३। एवं सर्वत्र—ॐ सोमाय
 नमः । १४। ॐ धर्मायनमः । १५। ॐ अमरराजायनमः । १६।
 ॐ अरिषभ्यांनमः । १७। ॐ जलेशायनमः । १८। ॐ मित्रा वरु-
 णाभ्यांनमः । १९। ॐ मरुद्गणेभ्योनमः । २०। ॐ धनेशायनमः
 । २१। ॐ गन्धर्वायनमः । २२। ॐ ललेशायनमः । २३। ॐ विष्णवे
 नमः । २४। इतिस्थापयित्वा । इतिनाममंत्रैः पंचोपचारादिभिः
 सम्पूज्य, तत स्तुला मध्य शृंग्वलायां पूर्ववत्सूत्रे सुवर्णप्रतिमां
 धध्या, ॐ वासुकयेनमः, वासुकिमावाहयामिस्थापयामि । तत
 स्तंभमूले ॐ अनन्तायनमः आ० स्था० पू० । तदुपरि—ॐ भूम्य
 धिपतयेनमः, आ० स्था० पू० शृङ्गलासु—ॐ सर्पेभ्योनमः, आ०
 स्था० पू० । ॐ तुलास्थ देवेभ्योनमः, इति पाद्यगन्धधूपदीपादि
 भिः सम्पूज्य, ततो नूतनशुक्लाम्बर धरो यजमानः हस्ते पुष्पां-
 जलिधृत्वा, चारत्रयं तुलांपरिक्रम्य वक्ष्यमाण मंत्रैरामंत्रयेत् ।
 ॐ नमस्ते सर्वदेवानां शक्तिस्त्वं सत्यमात्रिता । साजीभृता
 जगद्धात्री निर्मिता परमेष्ठिना । एकतः सर्वसत्यानि तथा नूत-
 शनानि च । धर्माधर्मकृतां मध्येस्थापितासि जगद्धिते । त्वंतुले

सर्वभूतानां प्रमाणमिहकीर्तिता । मांतोलयन्ती संसाराद्बुद्धरस्य नमो
स्तुते । योऽसौ तत्याधिपो देवः पुत्रपः पंचविंशकः । स पपोऽधिष्ठितो
देवित्वयितस्मान्नमोस्तुते । इति पुष्पाक्षतैः तुलासंप्राथर्यं, एवं तुलापुरुषं
गोविन्दं प्रार्थयेत्—३० नमो नमस्ते गोविन्द तुलापुरुषसंज्ञक । त्वं-
हरेतारयस्थास्मान्स्मात्संसारसागरात् । इत्यक्षतपुष्पाणि, तुला-
स्थगोविन्दोपर्यवकीर्य, पुनः प्रदक्षिणा चतुष्टयं गोविन्दस्य कृत्वा,
ततः—शुद्धनूतनवासांसि परिधाय, दक्षिणहस्ते लोहशस्त्रं गृहीत्वा
क्रोडेऽस्वेष्टदेवमादाय पूर्वाभिमुखस्तुलाया उत्तरभागे वस्त्रास्तृते
गृहीतकुसुमांजलिः सूत्रेण गोमयादिना चातुलायामवलंबितायाः
गोविन्दप्रतिमायाः मुखं पश्यन् सावधानतया आसीत् । ततस्तुला
यादक्षिणभागे समादधिकंतोलनीयद्रव्यं, सुवर्णं, रजितं ताम्रलौहं
वा घृतमन्नादिद्रव्यं यथाचित्तं आचार्यादिः स्थापयेत् । अल्पमृत्यु-
निवारणार्थं, वापुष्टिकामेयजमाने भूमिसंस्थं, यावता दक्षिणपिटकं-
भवति तावद्रव्यं स्थापयेत् । ततो यजमानः क्षणमात्रं तुलायां स्थि-
त्वा, पुष्पाक्षतहस्तः मन्त्रं पठेत् । ३० नमस्ते सर्वभूतानां साक्षिभू-
ते सनातनी । पितामहे न देवित्वं निर्मिता विश्वयोनिना । त्वया धृतं
जगत्सर्वं सहस्थावरजङ्गमैः । सर्वभूतात्मभूतेशे नमस्ते विश्वधा-
रिणि । इति संप्राथर्यं, अथ तीर्थं च, तोलितद्रव्यं गंधाक्षतादिभिः
सम्पूज्य, वस्त्रेणाह्वय, —संकल्पं कुर्यात्—अथेत्यादि देशकालौ-
संकीर्त्यं, अमुकोऽहं मम (अस्य बालकस्य वा) कूरग्रहजनित सर्वा
रिष्टनिवृत्तिपूर्वकदीर्घायुष्यप्राप्तिकामनया, श्रीपरमेश्वरप्रीतये
आत्मसमतोलितमिदममुकद्रव्यममुकदेवतं, अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय
आचार्याय अन्येभ्यो ज्ञाह्मणेभ्यो वा यथांशेन विभज्य दास्ये, इति
द्रव्योपरि क्षिप्त्वा, प्रतिष्ठार्थं सुवर्णं यथाचित्तद्रव्यं हस्ते निधाय—
अथेत्यादि अमुकोऽहं मम (अस्य शिशोरिति वा) अमुकद्रव्यतुलादान

दि० उक्तचक्षिष्णुधर्मोत्तरे—तत्रारहेत्सवस्थास्यः पु० गलङ्कारभूषितः । अमी-
ष्टान्देवतां गृह्यन्नापयित्वा श्रुतादिभिः ॥ इति प्रमाणात्तत्र सूर्यधर्मराजयोर्ग्रहणमि-
ति बोध्यम् ॥

कर्मणः सांगफलाप्तये, इदं कर्षमितं सुवर्णं, रजितादिद्रव्यं वा, अमुकशर्मणे आचार्याय दानप्रतिष्ठांसम्प्रददे, तथान्यूनोतिरिक्तदोषपरिहारार्थमिमांभूयसीदक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो विभज्य दास्ये, तथा—तुलादानकर्मणः साङ्गफलप्राप्त्यर्थं यथासंख्यकान्ब्राह्मणान्भोजयिष्ये, ॥ ततः पुष्पाक्षतहस्तः—३० यान्तु देवगणाः सर्वे ० हति देवान् विभज्य, आचार्याय प्रतिमादत्वा घृतछायापध्दत्यनुसारेण घृते छायां दृष्ट्वा परिधेय वस्त्राणित्यक्त्वा, हरिद्रोद्वर्तनादिभिः स्नानं कृत्वा अभिषेकादिमन्त्राशिषं गृहीत्वा, तुलाद्रव्यं तदैव ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दद्यात्, नचिरं रक्षयेत् ।

इतितुलादानपद्धतिः ।

अथ ग्रहाणां दान पद्धतिः

अथ सूर्यादिवारेषु ग्रहदोषोपशान्तये वा केवलं पुण्यवृद्धये दानानि । तत्रादौ ग्रहाणां मणिदानम् ॥ माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि गारुत्मकं पुष्पकं वज्रनीलम् ॥ गोमेदवैडूर्यकमरकताः स्यूरत्नान्यथोजस्यमुदेसुवर्णम् । दद्यादिति शेषः ॥ अथ महामृत्य रत्नदानेयस्य सामर्थ्याभावस्तदर्थं मल्पमृत्यान् रत्नान्युक्तानि । देयंतु द्रव्यविद्रुमं भौमभान्वोरूप्यं शुक्लं द्वोश्च हेमं गुरोश्च ॥ मुक्तासूरे लोहमर्कात्मजस्य लाजावर्तः कीर्तितः शेषयोश्चेति । अथ प्रत्येकग्रहस्य पृथग्द्रव्यदानानि ॥ ग्रहदानकमे वक्ष्ये सर्वसिद्धिकरं परम् । सर्वं शान्तिकरं नृणां सर्वपापप्रणाशनम् । आदौ सूर्यस्य ॥ कौसुंभवस्त्रंगुडहेमताम्रमाणिक्यगोधूम सुवर्णपद्मम् ॥ सवत्सगोदानमिति प्रणीतं सूर्यस्य तु द्रव्यैः सुमसूरिकाच ॥ द्रव्यं सम्पूज्य ब्राह्मणं च सम्पूज्य ॥ यथा कामसंकल्प्य दद्यादिति सर्वत्र बोध्यं ॥ अथ दानवाक्यम् ॥ दिवाकरः पद्मसंस्थः पद्मभृत्प्राणिवोधनः ॥ दानेनानेन संतुष्टो जायतांमिकिरीटभृत् ॥ चन्द्रस्य ॥ घृतकलशंसित वस्त्रं

दधिशंखंमौक्तिकं सुवर्णञ्च ॥ रजतं चतण्डुलान्नंतुष्टयैदद्याद्विधोः
 क्षीरम् ॥ दानवाक्यम् ॥ अमृतांशुःप्राणिजीवीकिरीटीवरदःशशी ॥
 दानेनानेनभवतुप्रसन्नोवरदोमम ॥ भौमस्य ॥ प्रवालगोधूममसूरि-
 काश्च वृषंसताम्रंकरवीरपुष्पम् ॥ आरक्तवस्त्रंशुद्धहेमधेनुं दद्याद्वि-
 धिल्लेहिकुजस्यतुष्टयै ॥ दानवाक्यम् ॥ चतुर्भुजोमेपगतः शूलरक्तां
 धरः कुजः ॥ तुष्टोभूयात्स दास्माकन्दानस्यास्यप्रभाचतः ॥ बुधस्य
 नीलवस्त्रंमुद्गदानं बुधाय रत्नंपाचींदासिकाहेमसर्पिः ॥ कांस्यदंतं
 कुञ्जरस्याथमेपोरौप्यंसस्यं पुष्पजात्यादिकश्च ॥ दानवाक्यम् ॥
 चतुर्भुजः पीतवपुः किरीटीचर्मासिभृद्दधरश्चहारी ॥ पीताम्बरः
 सोमसुतोबुधस्तुदानेनशांतिंममसंप्रयच्छतु ॥ गुरोः ॥ अश्वःसुवर्णं
 शुभपीतवस्त्रंसपीतधान्यंलवणंसपुष्पं ॥ सशर्करंरजनीभिरचयुक्तं
 दानायचोक्तंसुरारा जमंत्रिणः ॥ दानावक्यम् ॥ किरीटीपीतवदनः
 पीतवासाश्चतुर्भुजः दानेनानेनसंतुष्टो भूयाद्देवपतिर्गुरुः ॥
 शुक्रस्य—चित्रवस्त्रमपिदानवार्चितप्रीतयेमुनिवरैः प्रणोदितम् ।
 तंडुलंघृतसुवर्णरुप्यकं, वज्रकंपरिमलोहित्रीहयः ॥ दानवाक्यम्—
 दैत्यमन्त्रीचतुर्बाहुःकिरीटीशान्तिदःसदा। दानेनभूयान्मन्त्रज्ञोभा-
 र्गवः कविनायकः। शनेः—नीलकंसहिषीवस्त्रं कृष्णलोहंपयशिवनीम्
 तैलमापकुलित्थाश्च, देयाः सौरिमुदेसदा । दा०वा०—नीलद्युतिः
 शूलधरः, किरीटीगृध्रसंस्थितः । दानेनवरदोभूयाद्दानेनग्रहनायकः।
 राहोः—राहोर्दानम् कृष्णमेपोगोमेदंलोहकंवलम् । सुवर्णनाग-
 रूप्यञ्च सतिताम्रभाजनम् । दा०वा० । अर्द्धकायोनीलवपुश्च-
 न्द्रादित्यविमर्दनः । दानेनानेनवरदोभूयाच्चर्चधरस्तमः ॥के तोः॥
 केतोवेदूर्यममलैतलंमृगमदस्तथा । उर्णातिलैस्तुसांयुक्तंदद्यात्सर्वा-
 र्थसिद्धये । दानवाक्यम्धूम्रवर्णोरौप्यवक्रोगृध्रस्थस्तारकाग्रहः ।
 प्रसन्नोवरदोभूयाद्दानेनममसर्वदा । अथान्यच्चवारेषुदानद्रव्यम् ।
 भानुस्ताम्बूलदानादपहरति नृणांवैकृतंवासरोत्थंसोमः श्रीगण्ड-
 दानादवनिसुतंभवोरक्तपुष्पप्रदानान् । सौम्यःशक्रस्यमन्त्री घृत-
 दधिपयसोर्भार्गवः शुभ्रवस्त्रात्तैलात्लोहाच्च सौरिस्तिररजत

सुवर्णैश्चैव सर्वे ग्रहेन्द्राः ॥ ग्रहान्स्वर्णमयान्कृत्वा यो विप्रेभ्यः प्रयच्छति तद्दिनेषु यथाशक्त्या सर्वानकामान् सविन्दति । ॥ इति ॥

— ० —

अथ कर्मकारणहरत्नकरस्य चतुर्थः शान्ति खण्डः प्रारभ्यते,

हीं काररूपां श्रीं शक्तीं, प्रणम्य भुवनेश्वरीम्,
शान्तिखण्डं विवक्ष्येहं, सर्वं दोषप्रशांतये,

श्रीगणेशाय नमः,, अथ च प्रथम रज्जोदर्शने विद्यमानादी गति गर्भाय नस्य शान्ति पूर्वकम-
मुष्टेः शान्ति वक्तु तत्र दुष्टमासाद्यभिधीयते । उक्तं च मुहूर्त्तं विन्तामखी— भद्रा निद्रा
संभवे दर्श रिक्ता संध्यापष्टी द्वादशी वैश्वतीषु रोगेष्ट-शा चन्द्रसूया परागे पाते वद्य नो रज्जोदर्शन
शत । आय रत्न शुभमाये मार्गपक्षेय फल्गुने ॥ अथैष्ट ध्रावणयो शुक्ले स्वप्ने सक्तौदिश ॥ प्रशुभ
मासा — चैत्र ज्येष्ठापाठ भाद्रपौषा अशुभा । आश्विजौमध्यमी । रोषा शुभाशुभा । शुक्ल-
शुभ कृष्णोऽशुभ ,, तिथिषु ११ । ४ । ६ । ८ । १२ । १४ । १५ । १६ । १७ । १८ । १९ । २० । एता अशुभा । नक्ष-
त्रेषु १२ । ३ । ५ । ६ । १० । ११ । १२ । १३ । १४ । १५ । १६ । १७ । १८ । १९ । २० । २१ । अशुभान्द्वयानि शुभानि । योगेषु परिप
वेधृति ध्यतेपाता अशुभा वत्सुम् । रोषा शुभा । भद्रादि तानि कर्णनिप्रश्स्तानि । लग्नेषु
१ । २ । ४ । ६ । १० । ११ । १२ । १३ । १४ । १५ । १६ । १७ । १८ । १९ । २० । २१ । अशुभान्द्वयानि शुभानि । योगेषु परिप
मध्यम । तृतीयोनेष्ट । उभेः मध्यशुभे रात्रिरप्य शुभा । महासा निन्दिता । भर्तुर्भद्रोयथ चतुर्धाऽप्य
द्वादशस्यथद्रोनेष्ट । मरणाशौचमशुभम् ॥ रज्जो दर्शनसमयेपरिधानं वस्त्र फलम्— चोर्ण
कृष्ण नील रक्त परिहितवस्त्र गयशुभानि । शान्तिमाह नारद — निर्वर्त्तं तिथिवारेषु यि पुण्य प्रदक्षते
तत्र शान्ति प्रवर्त्तव्या घृतर्वा तिलाक्षणे । तत्प्रत्येक मष्टसतं गयस्या जहुयात्तत । स्वर्णगोभू
निन-दद्यात्सर्वादीषापनुत्तय । रोष प्रयोगे स्वम् ॥

इति दुष्ट रज्जो शान्ति परिभाषा ॥

— ० • ० —

अथ-प्रथम दुष्टरज्जो दर्शनशान्ति पद्धतिः ।

अथ च पूर्वोक्त दुष्टरज्जोदर्शन दिवसाद्यनुर्थे ऽहनि सायंकाले
गोमयेनोपलिप्तायां भूमौ यवैरष्ट दलंकमलं विरच्य ॥ तदुपरि

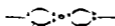
कलशस्थापन विधिना कलशं संस्थाप्य संपूज्य च । तत्रैवधूमाना-
व्यतजलेनादौ पूर्वाक्त पूजाखण्डोक्ताभिपेकमंत्रैर्देवस्यत्वेति,
सुरास्त्वामभिषिचन्वित्यादिभिर्वाद्यौः शान्तिरित्यादिभिर्मंत्रै
ब्राह्मणद्वाराऽभिपेकपूर्वकं सुखोष्णोदकेन तां वधूं स्नापयित्वा
शुद्धे वाससीपरिधाय, तद्द्वितीयदिवसे वाचन्द्रतारानुकुले दिवसे
भर्ता प्रातरभ्यङ्गपूर्वकंस्नात्वा, शुभासने उपविश्य, पत्नीदक्षिण
तउपवेश्य च रजोदर्शनात्पूर्वगमनेकृते कृच्छ्रादिप्रायश्चित्तकुर्यात्
स्वचित्तानुसारं द्रव्यं ताम्रपात्रे तिलोपरि स्थापयित्वा द्रव्यं
ब्राह्मणांच पूजित्वा संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ संकी-
र्त्यामुकराशिरमुकोऽहं सपत्निको यन्मयास्यां भार्यायां रजोदर्शना
त्पूर्वं वृथागमनं कृतं तद्दोष परिहारार्थं मिदं तिल सुवर्णं कृच्छ्र
प्रत्याम्नायी भूतं रजतंवाऽमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे
तत्सनमम । इति कृच्छ्रं विधाय । आचम्यपश्चांग पूजासामग्रीं
सम्पाद्यार्थं संस्थाप्य स्वस्तिवाचनं पठित्वा गणेशादि पञ्चाङ्ग
पूजनं कुर्यात्—तत्रसंकल्पः—अद्येत्यादि सं० अमुकराशिरमुकोऽहं
ममास्याः भार्यायाः निन्द्यमासतिथि नक्षत्र वासरेषु जात प्रथम
रजोदर्शन दोषशान्त्यर्थं करिष्ये माणे शान्ति कर्मणि, गर्भाधाना
ख्य संस्कारकर्मणिच निर्विघ्नतर सिद्धये श्रीभगवतो गणेश्वरस्य
पूजनं कलशस्थापनपूजनं पुण्याह वाचनं मातृकापूजनं नान्दी
श्राद्धं वसोर्धारा निपातनादि ग्रहपूजनं रक्षाविधानं च करिष्ये ।
इति पूर्वोक्तलिखित पद्धत्यनुसारेण पंचाङ्ग पूजांविधाय । होमार्थं
वेदिकांनिर्माय संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं
ममास्याः पत्न्याः मासर्चं तिथिवार योगकरण मुहूर्त्त कुस समय
दुर्वस्त्रादिषु यत्रकुत्रचिद्दुष्टे जात प्रथम रजोदर्शन सूचितारिष्ठ
निवृत्ति द्वारा तथाच प्रतिगर्भ संस्काराति शयद्वारा, अस्यांजनि-
ष्यमाण सर्वगर्भाणां बीजगर्भसमुद्भवैर्नोनिवर्हेणद्वाराश्रीपरमेश्वर
प्रीत्यर्थं यथाशास्त्रोक्त प्रकारेण शान्तिं करिष्ये ॥ ततो होमवेद्यां
पंचभूसंस्कार पूर्वकमग्निं संस्थाप्य । आचार्य ब्राह्मणं सम्पूज्य

वरणद्रव्यं हस्तेनिधाय संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि, अमुकोऽहं
 एभिर्गन्धाक्षत पुष्प पूगीफल वासोभिः, दुष्टरजोदर्शन शान्ति
 कर्मणि, आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे इति तस्मैदत्त्वा । ३० आचार्य
 स्त्विति प्रार्थयेत् ॥ ततो ब्रह्माणं सम्पूज्य । संकल्पः—अद्येत्यादि०
 अमुकोहं एभिर्वरणद्रव्यै दुष्टरजोदर्शन शान्ति कर्मणि, अमुक
 शर्माणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे । इतिवृत्त्वा—३० यथा चतुर्मुखो
 ब्रह्मेत्यादिना प्रार्थयेत् । ततो रुद्रीपाठार्थ, चण्डीपाठार्थ, होमार्थ
 च, ऋत्विजःपाठकांश्च वृणुयात्—ततः सुवर्णप्रतिमां अग्न्युत्तारण
 पूर्वकं पंचामृतेन संस्नाप्य । होमवेदी शाने कलशं संस्थाप्य
 सम्पूज्य च तत्र प्रतिमां संस्थाप्य गायत्री स्वरूपिणीं भुवनेश्वरी
 मावाहयेत् । ३० उच्यत्युति भिन्दु किरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्तां
 स्मेरमुर्वीं वरदाङ्कुपाशा भीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् । वा गा-
 यत्री मंत्रेणावाह्य, ३० भुवनेश्वर्यै नमः, इति मंत्रेणसम्पूज्य । ततो
 भुवनेश्वरी त उत्तरस्यां पुनः कलशं संस्थाप्य, तत्र गणेशादि नव
 ग्रह देवानावाह्य सम्पूज्यच रक्षोघ्नसूक्तेन रक्षासूत्रमभिमन्त्र्य
 तत्रैव कलशेस्थापयेत् । तत आचार्यो ब्रह्मोपवेशनादि पशुक्षणांतं
 कुशकंडिकाविधिं कृत्वा । एतन्तेति मंत्रेण तारण वरदनामाग्निं
 प्रतिष्ठाप्य ३० चत्वारि श्रृंगानि पठित्वा, ३० अग्नेनय० । इति
 मंत्रेणचा, ३० तारणवरद नामाग्नयेनमः, इत्यनेनच नीराजनान्त
 मग्निं सम्पूज्य रेखा जिह्वाश्चपूजयेत् ॥ ततो यजमानो देवता
 मिध्यानपूर्वकं द्रव्यत्यागं कुर्यात् । संकल्पः—अद्यामुकोह मादौ
 रजोदर्शन शान्तिकर्मणायद्ये—तत्र प्रजापतिं, इन्द्रं, अग्निं, सोमं,
 आज्येन, सवितृरूपांभुवनेश्वरीं आज्येनाज्याभिधारित दूर्वातिल
 यव द्रव्यैश्च, अग्निं, वरुणं सवितारं विष्णुं विश्वान्देवान्मरुतः
 स्वर्कान्, वरुणं, प्रजापतिं, अग्निं वैश्वानरं चाज्येनाहंयद्ये । इद
 माज्यमाधाराज्य भागदेवताभ्यः प्रजापतये, अग्नयेच मयापरि-
 त्यक्तं यथादेवतमस्तु- ३० तत्सन्नमम । एवं यजमानेन द्रव्यत्यागे
 कृते । आचार्यः ब्रह्मान्वारब्धः कुर्यात् । ततः संस्रवधारणार्थ

प्रोक्षणीपात्रं प्रणीताग्नेयोरंतरालेनिदध्यात् ॥ ३० प्रजापतयेस्वाहा
इदं०, इतिमनसाप्रजापतिं ध्यात्वा । ३० इन्द्रायस्वाहा, इदं० ३० अग्नये
स्वाहा, इदं० ३० सोमाय स्वाहा । इदं इत्याधारावाज्यभागो चहुत्वा
प्रधानहोमं कुर्यात् (संस्कारको स्तुभेतु सवितृत्वेन भुवनेश्वर्या एव
पूजनं चोक्तम् अतो गायत्र्या जुहुयात्) ३० गायत्रीमंत्रस्य विश्वामित्र
ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता आज्यदूर्वादि यवतिल होमेषि-
नियोगः ३० भू० तत्सवि० स्वाहा । इत्याज्यदूर्वातिल यवादिभिः
१०८ आहुतिप्रधानहोमं कृत्वा ब्रह्मणा ऽन्वारब्धः आज्यादिभिः
स्विष्टकृतं हुत्वा भूरादित्र्याह्वयति होमं सर्वप्रायश्चित्त होमं च
कुर्यात् । ततः संस्रवं प्राश्य पवित्राभ्यां मुखसंमार्ज्याग्नौ पवित्रे
क्षिप्त्वा प्रणीताविमोक्तं कुर्यात् । ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् अथेत्यादि
अमुकोहं कृतस्य दुष्टरजोदर्शन शान्तिहोमकर्मणः सत्पुण्यार्थं ।
अपूर्णपूर्णतासिद्धये समुवर्णं सदक्षिणं चेदं पूर्णपात्रं ब्रह्मणेतुभ्यं
संप्रददे । ३० अकन्कर्म० इति पठेत् ३० तनूपा अग्ने रित्यादिभि
रद्भान्यालभेत ततः पूर्णाहुतिं जुहुयात् ततस्त्यायुपं कुर्यात् । ततः
सपत्निको यजमानो गोदानं कुर्यात् । अशक्तश्चेत्तिलपात्रादि दा-
नार्थं संकल्पः—अथेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोहं ममास्याभा-
र्यायाः दुष्टरजोदर्शन सूचितारिष्ठनिवृत्तिपुरः सरंसकलसौ भा-
ग्य प्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वर प्रीतये भुवनेश्वरी शान्तिकर्मणः सांगता
सिद्धये, इदं समुवर्णं सदक्षिणं गोप्रत्याम्नायी भूतद्रव्यं, आचा-
र्याय तुभ्यं संप्रददे एवं नवावृत्ति चंडीपाठस्य स्त्रीपाठस्य होतु
अदक्षिणां तत्तदाचार्येभ्यो दद्यात् । ततः क्षेत्रपालाय बलिं दत्त्वा
अग्निसम्पूज्य विसृज्य च ततः आचार्यादयः कलशजलेन यजमा-
नमभिषिंचेयुः । तिलकं कृत्वा रत्नासूत्रं बध्वा घृतच्छायादर्शनं
कारयित्वा तद्दानं च विधाय ब्राह्मणान्भोजयेत् तस्यामेव रात्रौ
गर्भाधानं संस्कारं कुर्यात् ॥ इति दुष्टरजोदर्शनशान्तिः ।

अथ संस्कार्य मातृरजोदर्शने श्री शान्ति परिभाषा—

उक्तं च मुहूर्त्त चिन्तामणौ—शत्रुमलाः सुतिकाया सूनीश्चीलादि नाचेत्—उक्तं च प्रवेतसा—यस्यमागलिकं कृत्यं तस्यमाता रनखला । वैषण्यं जायते तत्र मृतायाः पाणिपीडने । ज्योतिर्निबन्धे गाँ — विवाहोत्तर यज्ञेषु मातायदि रजरत्ना । तदास मृतुमाप्नोति पयमं दिवसं विना वसिष्ठ — यस्यमागलिकं कृत्यं तस्यमातारजस्वला । अर्द्धतन्त्रे । तत्रैव बृहस्पति — प्राप्तमभ्युदय आर्धं पुत्रसंस्कारकर्मणि । पत्नीरजस्वलाचे स्यान्कृत्यतिहातातस । माधवीये—प्रारंभोत्तरं रजोदर्शने न कर्तव्ये इत्यर्थः ॥ प्रारंभश्च नान्दीश्राद्धम् ॥ मेधातिथि — प्रारंभोवर्णाश्रये सन्त्पान्त सत्रयो । नान्दीश्राद्ध विवाहादी श्राद्धे साकारिक्रिया ॥ मुहूर्त्त चिन्तामणौ—गान्दीश्राद्धोत्तर मातु पुत्रे लग्नातेनहि । शान्त्याचील अर्तंशान्तिप्रद कार्यान्वधानसत् ॥ बृहस्पति — वैषण्यच विवाहस्यान्तर्द्वं प्रनवयन । चूडायां च शिशोर्मृत्यु विघ्नंयात्रा प्रवेशयो । वान्यसारे तु—अलाभे सुमुहूर्त्तस्य रजोदोषे ह्युत्थितः । त्रिसंपूज्य विधित्ततो मगलनाचेत् ॥ हेर्मोन पविताः न्या धोसूक्तविधिना क्वयत् प्ररूच पायस हुताभिपिच्यद्वितमाचेत् । संग्रहे तु प्रकारान्तर मुक्तम्—संकेते सप्तपाप्ते सूक्ते सप्तपाप्ते ॥ कृष्णाङ्गीभिर्घृत हुत्वा गा च दयदायस्त्रिनीम् । चीतोपनयनोद्गाह प्रतिष्ठादिकनाचेत् । इति



॥ अथसंस्कार्यमातृरजोदर्शनश्रीशान्तिपद्धतिः ॥

अथसंस्कार्यस्यच सुतस्यकन्यायावा चूडोपनयन विवाहादिषु, मातुर्नान्दीश्राद्धोत्तरं रजोदर्शनंजातं चेत्तदा संस्कार्ययोः पिता संस्कारकर्त्तावा, शुचौदेशेगणेशसम्पूज्य, कलशस्थापनविधिना कलशसंस्थाप्य, सम्पूज्यच तत्रकलशे पूर्णपात्रोपरि ताम्रादिपात्रं स्थापयित्वा, तत्रमापमितांसुवर्णप्रतिमांश्रीस्वरूपिणीमग्न्युत्तारण पूर्विकांसंस्थाप्य, संकल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्या मुकोऽहं ममास्यामुकस्य वीजगर्भसमुद्भवैनो निबर्हणद्वाराकरिष्यमाण चूडोपनयनपाणिग्रहणादिकर्मसु (चाकन्यायाः करिष्यमाण विवाहकर्मणि) संस्कार्यस्यमातुर्नान्दीश्राद्धोत्तरं रजोदोषसं जातस्यतत्तद्दोषोपशान्त्यर्थं, शुभफलप्राप्तयेच, । श्रीशान्तिकर्मणि सुवर्णप्रतिमायांश्रीपूजनं श्रीसूक्तस्यनयावृत्तिपाठपूर्वकं सप्त-

शतीपाठंचाहं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये तच्छ्रान्त्यर्थं पायसेनहोमं
कारयित्वा गोदानंचकरिष्ये । ततश्चाचार्यवृत्त्वा पाठकांश्चवृणु-
यात्—ततः—३० हिरण्यवर्णा हरिणीयित्तिऋग्वेदोक्तश्रीसूक्तेन
पौडशोपचारैःश्रियंसम्पूज्य, श्रीसूक्तस्य नवावृत्तिपाठंकृत्वा सप्त
शतीपाठंकुर्यात्—ततःपाठावसाने, हस्तपरिमितंस्थंडिलंहोमार्थनि-
र्माय होमपद्धत्युक्तप्रकारेण समिदाधानान्तंकर्मकृत्वा । ३० वरदा
जनयेनमः इतिमन्त्रेणवरदाग्निंसम्पूज्य । आधारवाज्यभागौहु-
त्वा, चरुणापायसेन श्रीसूक्तस्यप्रत्यूचेन नवाण्यवमन्त्रेणाष्टोत्तर-
शताहुतीर्हृत्वा भूरादिनवाहुतिहोमं पूर्णाहुत्यन्तंकृत्वा । ततःपूर्वां
क्तप्रकारेण कुमारीपूजांकृत्वाभोजयित्वा ताभ्योदक्षिणांचदत्वा ।
गोदानपद्धत्युक्तप्रकारेण तद्दोषशान्त्यर्थं गोदानंकुर्यात् ॥ तत
आचार्यपाठकेभ्योदक्षिणांचदत्वा । ततश्चाचार्यउत्तराङ्गपूजनविधाय
कलशजलेनसंस्कार्य श्रीसूक्तेनाभिषिंच्य पूर्वांक्ताभिषेक मन्त्रैरपि-
षिंचेत् । ततस्तिलकारोपणादिकं कृत्वाशीर्दद्यात् ततोब्राह्मणा
न्भोजयेत् । इतिश्रीशान्तिपद्धतिः ॥

कन्या रजोदर्शन शांतिपरिभाषा ।

अथ मितृग्रहे विवाहात्पूर्वमेव कःप्रारजस्वला चैसनिर्णय शांतिश्चवदये,
उक्तं च सस्कार कौस्तुभे मदन रत्ने—वशिष्ठ —मन्स्कुलामितृग्रहे रजस्वला भवेद्दधूरचे
वृषलीमलातुम् । मातापिताश्चैष्ट रजोस्थं व्रजन्तीरी नरवप्रयोऽपि । यं वृहेन्वां वृषलीमति स्याद्य-
ग्योनपिश्ये न च यज्ञरथो । अनो न कयोद्धन्ने विद्वद्य कयोनित्रा दस्यपतोत्र । प्रतीद्व्यवर्षवयम्
प्रदत्तारजस्वलासाप्रसरोतुदुम् । कन्या रजोदोषे शांतिः—कन्यागुणमतीशुभं कृत्वा निष्कृतिमारमन
शुद्धिचकारयित्वा तामुद्ग्रहं दधुराग्ययी । मितृग्रहं चतुष्पास्तु गणयेद्वदितुमी । दानावमितृग्रहं यत्ना
त्पोलयेत्तत्रोक्त्वोम् । यथा तत्तुम्भया या शरु कन्यामिगयदि । कस्यैमिनि रवेनशन तस्यायथा-
विनि । कन्याद्वाहारेषा मिति ख रक्षिणम् ॥ कन्यामिति तुम्भयेषु बराय प्रति सत्यत् । उपाध्वयिदिनिं
कन्यापत्नीपीत्वा यथा । अदष्टरन्मेऽद्यतवन्तागैःत्तभूपणाम् । तामुद्ग्रहयति पूजायेतुदुवादिश ।
यक्षपार्श्वः—विवाहे विनित्तैवे होतकलमसिधते । कन्यागुणमतीशुभं कुर्वन्तियाक्षिका स्नापयित्वा

सुतारुथा मर्षयित्वा यथाविधि युञ्जानामाहुतिं हुत्वा तत्संज्ञप्रसूयेत् । द्यौधयनसूत्रे—अथ यदिस्त्री नो
 स्य नीनाद्योद्यमानायां रजस्वलास्पात्तभुमुमत्रयेत् पुमांसीभिन्नवस्त्रा पुमांसावशिवन युनो । पुमान्द्र-
 शक्सूर्यश्च पुमान्स्मन्धारातिविति । अथ द्वादशगजनलंकृत्या प्राशयत्नच गन्धमथशुद्धाकृतवाक्विवेत् । अथ
 च वराह पुराणात्कार्यायन विधानेन पितृगहे कन्याया रजोदर्शनांतिरित्यं सूत्रित-
 अत्र देवता गणेशसिद्धि बुद्धीन्द्राणी त्रिप्रुधिय आयान्तिमाः सम्पूज्य । अग्नि संस्थाप्य अग्निभाग-
 ते गणानान्धेतिगणेशं, अम्बे अम्बिके, इति मिन्नुद्धिं च इन्द्रदेवा, इति इन्द्रेद्र शम्भो । इदं विष्णु रिति
 विष्णु, धो श्वते इतिधिमम् । सम्पूज्य एभिरेव मन्त्रैश्च विंशति सत्यया प्रत्यकं जुहुयात् । तदैव प्रहाणां
 मन्त्रैरपि प्रत्येकपथा विंशतिसत्यया होम विनाय ततो भूरादि श्विष्टकृदन्त पृण्य इति च हुवोत्तरागत्वेन
 गणेशादी-संपूज्य दिवा लेभ्यो वल्लिश्ना विधाय आचार्याय गोवस्त्रं हिरण्यादि प्रतिमाभि सद्व्यक्त ।
 तत आशियं गृह्येत्वा ब्राह्मणान्भोजयेत् । इति कन्यारजोदर्शने शान्ति परिभाषा ॥

—१०३—

कन्या रजोदर्शनशांति पद्धतिः

अथ च कन्या पिना कन्या विवाहपूर्वं विवाहसन्निधौ घृहाभ्यं-
 तरे पूजास्थलमागत्याचम्य दीपंप्रज्वाल्य प्रधानसंकल्पं कुर्यात्-
 अथेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोहं, ममगृहेकन्यायाः जात
 प्रथमरजोदर्शनसूचित समस्तप्रायश्चित्तनिवृत्त्यर्थं वराह पुराणोक्त
 प्रकारेण शान्तिकरिष्ये, तदंगतयागणेशादि पंचांगदेवतानांपूजन
 पूर्वकं, आचार्य ब्रह्मणोर्वरणं च करिष्ये—ततो गणेशादि पूजनं
 विधाय हस्तपरिमितायां देव्यां पंचभ्रंसंस्कार पूर्वकं वरदाग्निमा-
 वाहासंस्थाप्य आचार्य ब्रह्मणोर्वरणं कृत्वा, होमवेदीशाने कलश-
 स्थापन विधिना कलशं संस्थाप्य, तत्रताम्र पात्रोपरि गणेशादीनां
 सप्तसुवर्ण प्रतिमावारजतप्रतिमाः संस्थाप्य ॐ गणानान्धा०
 इति मंत्रेण गणेशमावाहा, ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽअम्ब्यांलिकेनमा
 नयतिकश्चन । ससस्त्यश्चकः सुभद्रिकोकाम्पीलयासिनीम् । इति
 सिद्धिबुद्धिम् । ॐ इन्द्रदेवाऽऽग्रावृणानाः सुमृडीको भवतुजातवेदा
 इति इन्द्रेद्राण्यौ० । ॐ इदं विष्णुविचकमेत्रेभानिदधेपदम् । समूढ
 मस्यपापं सुरेस्वाहा । इति विष्णुम्० । ॐ श्रीश्चतेलदमीश्च० ।

इतिश्रियं० । पंचोपचारैःसंपूज्य । वरदाग्निं च सम्पूज्य, द्रव्यत्याग
संकल्पंकुर्यात्—अथेत्यादिसंकीर्त्य स्वगृहजात कन्यारजोदर्शन
शान्तिकर्मणि आधाराज्यभागावाज्येन गणेशसिद्धिवुद्धीन्द्रेन्द्राणि
विष्णुश्रियः प्रत्येकमष्टाविंशति संख्ययाज्येन सूर्यादि ग्रहांश्चता-
भिरथ संख्याभिःतत्तन्मंत्रैर्हुत्वा स्विष्टकृतं भूरादिनवाहुति होमा
न्तेचाज्येनयज्ये । इति द्रव्यत्यागंकृत्वा गणेशादीन् प्रत्येकंपूर्वांक्त
मंत्रैस्तेनैवक्रमेण प्रत्येकमष्टाविंशति संख्ययाहुत्वा तथा च नवग्र-
हान् तत्तन्मंत्रैःप्रत्येकमष्टाविंशति संख्यया च हुत्वा स्विष्टकृदन्ते
भूरादिनवाहुति होमविधाय संश्रव प्राशनादि पूर्णपात्रदानान्तं
कर्मकृत्वा पूर्णाहुतिंहुत्वा उत्तराङ्ग पूजनविधाय । आचार्यं संपूज्य
गोदानोक्तपद्धत्या सवत्सांगां सम्पूज्य संकल्पंकुर्यात् । अथेत्या-
दि० अमुकोऽहं ममगृहे कन्यायाः प्रथमरजोदर्शनजात सकलप्रा-
यश्चिन्तापरिहारार्थं वराहपुराणोक्त शान्तिकर्मणः साद्गुण्यार्थं
इमांसां वा गोप्रत्याम्नायीभूतं सुवर्णं रजतं वा आचार्यायतुभ्यं
संप्रददे ३० तत्सन्नमस इतिदत्वा घृतच्छायादिकंकृत्वाभिषेक
तिलकाशीर्ग्रहणं च कृत्वा ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वयंभुञ्जीत ।

इति पितृगृहे विवाहात्पूर्वं कन्यारजो दर्शनशान्तिः

—0—

अथगोमुख प्रसव शान्ति परिभाषा ।

तत्रादौपहुशान्त्यंगत्वाद् गोमुखप्रसवोमिधीयते, प्रयोग पारिजाते—गर्गः—अणिपत्य
रविं वक्ष्ये प्रायश्चित्त मनुस्मरन् । सर्वादिष्ट विनाशाययदुष्कं त्र्योतिरर्थावे ॥ पित्रदिष्टे सुतारिष्टे
मृद्वरिष्टे तथैव च । प्रायश्चित्तंतदा इयंततद्दोषस्यशान्तये । पूषाश्विनौ गुरुः सारि मपाचित्रेन्द्र
भूतभे । एदुक्तेषु जातस्य बुधाद्गो जननं तथा । (अत्र प्रायश्चित्तं मूलादि शान्ती
गोजननं कुर्यादित्यर्थः) जन्मसंवात्रिजन्मर्जे, शुभवारे शुभेदिने । इत्वाभ्यंगादिकं सर्वं
पृहाखंनार पूर्वमम् । गोमये नोपलियाथ गृहस्थे शान भाग्ये । पंषर्जे कर्णिका युक्तं रजाभिः
श्वेत वर्णके । ब्रह्मी स्तत्र विनिलिप्य यथा विन्तानुसारत । नय सूर्य च तन्मध्ये रक्त
वर्णं प्रसारयेत् । स्थापयित्वा शिशुं तत्र पुनः सन्नेन वेष्टयेत् । प्राट्मुखं तम व कपादं तिल

गर्भं गतं शिशुम् । गोमुखदर्शं यित्वाथ पुनर्जातं तुगोमुखारं (शिशुमभि गोमुखं दर्शं यित्वेत्यर्थं) विष्णुर्धानीनिस्सूपेन गन्धेन स्नापयेच्छिशुम् (पचगन्धेन) गवामगेषु मन्त्रेण ग्वा मगेषु सस्त्रुशेत् । विष्णो श्रेष्ठेतिमन्त्रेण गोप्रसूतुवालकम् । आचार्यस्तु समादाय पश्चान्मात्रे ददेत्तदा । ज्योतिर्निवन्धेत्—साचार्यं रतुसमादाय पश्चान्मात्रे ददेत्पितेतिपाठ ॥ माताजघन भागस्था शिशुमानीय तं मुखारं । (गोमुखात्) ततः पित्रे तुसाद्यत्ततोमात्रे सदापयेत् । वक्षे स्थाप्य पिताऽऽयाथ पुत्रस्य मुखमीक्षयेत् । गोमुत्र गामयक्षीरं दधिसपिशच सयुतम् । आपोहिष्टादिभिर्मन्त्रै रभिषिञ्चत शिशुम् । मूर्ध्निच प्रायत पुत्रं तन्मन्त्रेण तदापिता । (अगा दगात्संभवस्तीत्यनेन मन्त्रेण) मूर्ध्नि त्रित्यग्रयत शिशुं स्थापयत्ततः । पुण्याद्दं पाचयेत्सर्वा द्ब्रह्मण्यै वदपारौ । दरिद्रायाथ त्रिप्रायं तागामभ्यर्चयेत्तदापयेत् । गोवरत्र स्वर्गं रान्यानिदद्यादकां दितं क्रमारं (सूर्यादिग्रहेभ्यो दद्यात्) य राशक्तिं वनदद्याद्ब्राह्मणेभ्यरतदा पिता । ततो होमं प्रवृत्तस्वस्व शाखाकृत्तागत । उल्लेखादिकं कृत्वा आज्यभागान्तं माचरेत् । होमस्यै शानं दिग्भागं धानोपरि घटं शुभम् । पचगन्धं घटे स्थाप्य तिलांस्तत्र विनिक्षिपेत् । सौरदुमकपायांश्च पञ्चरत्नानि निक्षिपेत् । पश्चयुग्मन सञ्जाद्यं र्धादिभि रवाचयेत् । विष्णु वक्षामभ्यर्च्य प्रतिमां च विधानतः । यत इन्द्रादिभिर्मन्त्रै र्बुभस्पृश्याभिमन्त्रयेत् । (यत इन्द्रेति पडुचस्य सूक्तस्य ग्रहणम्) दधिमध्यज्यं दुक्तेन होमं वृष्यं द्विधानतः । आपो हिष्टेति तिस्रिभि रप्सुमेसोमइत्यथ त्रिषुषी परमपदं कृत्वा मिति सूक्तं । ऋग्भिराग्निं प्रत्यृचं चष्टमिषति सत्यया । अशक्तौ चाष्टरत्यं वा दधिमध्याज्यं सयुतम् । आदित्यादिग्रहाणां च होमं कुर्यात्समप्रक्रमं । आदि त्यादि ग्रहाणां च होमं दधिमध्याज्येनेत्यन्वयं अन्यथा पुनर्दध्यादि ग्रहणस्य वैयर्थ्यापत्तेः । इतिगोर्कं गोमुखं प्रसवशान्तिपरिभाषा ॥

— ० —

॥ अथगोमुखप्रसवशान्तिपद्धतिः ॥

अथपिताजातकस्य जन्मनक्षत्रदिवसेऽन्यस्मिन्शुभदिने नाम कर्मदिनेवागृहाभ्यन्तरे गोमयोपलिप्तेशुचौदेशे स्वासनेउपविश्य-
दीपंप्रज्वलय्याचम्यभूतोत्सादनदिकंकृत्वा, शान्तिपाठंकृत्वा
अर्घसंस्थाप्यगणेशंप्रणम्यप्रधानसंकरुपंकुर्यात्—अथेत्यादिदेशका-
लौसंकीर्त्यामुकोटममुकनक्षत्रोत्पत्तस्यामुकराणेरस्य शिशोरमुक-
नक्षत्रोत्पत्तिं सृचितारिष्टनिरसनपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीतये गोमुखं

प्रसवशान्तिकरिदये, तत्पूर्वागतत्वेन गणपतिपूजनं कलशस्थापनपूर्-
 धकवरुणपूजांपुण्याहवाचनाभ्युदयिकमातृकापूजनंसूर्यादीनांपूज-
 नंचकरिष्ये , ततोगणेशादीन्सम्पूज्य, आचार्यस्यपूजनपूर्वकंवरुण-
 कृत्वा, ततश्चाचार्योगोमयोपलिप्तभूमौ कर्णिकायुतंश्वेताष्टदलं
 कमलंविलिख्य तन्मध्येचित्तानुसारेण द्रोणादिपरिमितान्त्रीही-
 न्संस्थाप्य तदुपरिनवीनंशूर्पनिधाय तस्मिनरक्तवस्त्रंप्रसार्य तिल
 पूरितंकृत्वा तत्रैवतिलगर्भगतंशिशुं पूर्वशिरस्कंप्रत्यक्पादंकृत्वा
 शिशुंससूर्परक्तसूत्रेणावेष्टय शिशुसन्निधौपूर्वाभिसुग्वींगामुपस्था-
 प्य, गोसुग्वंशिशोर्भपरिकृत्वागोसुग्वत्प्रसवं, भावयित्वाशिशुंपञ्च
 गव्येन, वक्ष्यमाणशतपथोक्तेनसूक्तनस्नापयेदभ्युक्षेद्वा-मन्त्राः—
 ॐ विष्णुर्धोर्निकल्पयतु त्वष्टारूपाणिपिष्टंशतु ॥ आसिंचतुप्रजा
 पतिर्धातागर्भन्दधातुते । १। ॐ गर्भधेहिसिनीवालिगर्भन्देहि-
 ष्युष्टुके । गर्भन्तेऽअश्विनौ देवावाघतांपुष्करस्रजौ । २। ॐ
 हिरण्ययीऽअरणीयाभ्यानिर्मन्थतामश्विनौदेवौ । तन्तेगर्भदधा
 महेदशमेमासिसूतवे । ३। इतिसूक्तेन शिशुंस्नापयित्वाऽभ्युक्ष्यवा ।
 वक्ष्यमाणमन्त्रेणगोःसर्वाङ्गेषुसृशेत्—मन्त्रः—ॐ गवामंगेषुति-
 ष्टन्तिभुवनानिचतुर्दश । यस्मात्तस्माच्छिबंमेस्यादिहलोकेपरत्रच ।
 इतिगोरंगानिसृष्ट्वा । ततश्चाचार्यःतंगोसुग्वप्रसूतंवालकं वक्ष्य-
 माणमन्त्रेणशूर्पादुत्थाप्यगोजघनभागस्थायैमात्रेदद्यात्तन्मन्त्रः—
 ॐ विष्णोःश्रेष्ठेनरूपेणास्यांनार्यगिवीन्याम् ॥ पुमांसंपुत्रानाधे-
 हिदशमेमासिसूतवे । इतिमाताचतंवालकंहस्ताभ्यांगृहीत्वा ।
 गोसुग्वपर्यन्तमानीयपित्रेदद्यात् । पितातंशिशुं हस्ताभ्यांगृहीत्वा
 तदैवमात्रेदद्यात् ॥ माताचतंशिशुंनृतन वस्त्रेस्थापयेत् । ततःपिता
 नव्यवस्त्रस्थितस्य शिशोर्भुग्वंपश्येत् ततश्चाचार्योवक्ष्यमाण त्रिभि
 र्मंत्रैःपंचगव्येनाभिषिंचेत् । मन्त्राः—ॐ आपोहिष्टेति तिस्रणां सिन्धु
 द्वीपकृपिर्गायत्रीञ्जुन्दः आपोदेवतापंचगव्याभिषिंचने विनियोगः
 ॐ आपोहिष्टामयोसुव स्तानऽऊज्जेंदधातन । महेरणायचक्षसे १ ।
 ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिवमातरः । २।

ॐ तस्माऽअरङ्गमामवो यस्यक्षयार्थं जिन्वथ । आपोजन यथाच
नः । इत्यभिषिच्य वक्ष्यमाण मन्त्रेण मूर्ध्नि शिशुं त्रिरवघ्राणं
कुर्यात् । मंत्रः—ॐ अंगादंगात्संभवसि हृदयादधिजायसे ।
आत्मावै पुत्रनामासि सजीव शरदः शतम् । इति वारत्रय
मवघ्राय, मात्रे दद्यात् । ततो ब्राह्मण द्वारा पुण्याह वाचनं
वाचित्वा, तां गां दरिद्राय कुटंविने ब्राह्मणाय दद्यात्—
तत्र संकल्पः—अद्येत्यादि संकीर्त्या मुकोऽहं, अमुकराशे
रस्यशिशो रमुक कालोत्पत्ति सूचितारिष्ट दूरी करणार्थं श्रीपरमे-
श्वर प्रीतये कृतैतद्गोमुख प्रसव शान्तिकर्मणः सांगता सिध्दये,
इमांसवत्सांगारूद्रदैवतां अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं
संप्रददे । इतिदत्त्वा गोदान प्रतिष्ठार्थं सुवर्णाच दद्यात् । ततो
ग्रहाणां प्रीतये यथाशक्ति गोःभूहिरण्यवासांसिदद्यात् । ततत्रायौ
होमवदी सन्निधावागत्य, वेद्यां पंचभू संस्कार पूर्वक मग्निं संस्था-
प्य वेदीशाने कलश पूजोक्त विधिना कलशद्वय स्थापयेत् । तत्रैक-
स्मिन्कलशे ब्रह्मवरुण सहितानादित्यादि नवग्रहान्नावाह्य संपूज्य
च, द्वितीयकलशे पञ्चरत्न पञ्चपल्लवान् पंचगव्यं तिलान् क्षीरवृक्ष
त्वक्कपायांश्च निक्षिप्य युग्मवस्त्रेण संज्ञाय पूर्णपात्रोपरि ताम्रपात्रे
तिसृपुसुवर्णं प्रतिमासु, अग्न्युत्तारितासु विष्णुवरुणयक्ष्यघ्नान्स्था-
पयेत्पूजयेच्च । तत्रादौ विष्णुमन्त्रः—ॐ तद्विष्णोः परमं पद र्तं
सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीच चक्षुरानतम् । ततोवरुणम्—ॐ
तत्वायामि ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ।
शहेडमानो व्वरुणोहवोध्युक्श र्तं समानऽआयुः प्रमोषीः । ततो
यक्ष्महणम्—ॐ अक्षीभ्यान्ते नासिकाभ्यां ब्रुवुकादधि ॥ यक्ष्मं
शीर्षण्यं मस्तिष्का जिजहाया विवृहामिते । इति त्रीन्देवान्संस्था-
प्य । ॐ एतन्ते० पठित्वा, ॐ भूर्भुवः, स्वःविष्णुवरुणयक्ष्महणः,
इहागच्छन्तिवहतिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठितावरदाभवन्तु, इति प्रतिष्ठाप्य ।
पूर्वाक्त मंत्रैर्वा नाममंत्रैः सम्पूज्य—तत्कलशं स्पृष्ट्वा, वक्ष्य-
माण सूक्तं पठेत्—ॐ यत इन्द्रभयामहे ततो नोऽअभयंकृधि ।

मघवञ्छुग्धि तवतन्नऽऽतिभिर्विद्विपोविमृधोजहि ।१। त्वंहिराध-
 स्पतेराधसोमहः क्ष्यस्यासि विधतः । तंत्वावयं मघवन्निन्द्रगिर्व-
 णः सुतावन्तो हवामहे ।२। इन्द्रः स्पल्लुत वृत्रहा परस्यानो
 व्वरेण्यः । सनोरक्षिपच्चरमं समध्यमं सपश्चात्पातुनः-पुरः ।३।
 त्वंनः पश्चादधरा दुत्तरात्पुर इन्द्र निपाहि विवश्वतः । आरे
 अस्मत्कृणुहि दैव्यं भयमारे हेतीरदेवीः ।४। अद्याद्या श्वश्वइन्द्रत्रा
 स्वपरेचनः । विश्वाचनो जरितृन्सत्पते अहादिवा नक्तंच
 रक्षिपः ।५। प्रभंगीशूरो मघवातु वीमघः संमिश्रलो वीर्यायकम् ।
 उभाते वाहू वृषणाशनक्रतोनियावजं मिमिक्षतुः ।६। ततोयजमानो
 द्रव्यत्यागं कुर्यात्—ग्रयोत्थादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोहं गोमु-
 ग्व प्रसव शान्तिकर्मणि, पद्धत्युक्त विष्णवादिदेवेभ्यःपूर्वाङ्गदेवेभ्यः
 प्रधान देवताभ्यो दधिमध्वाज्यद्रव्यैः प्रत्येकमन्त्रेणाष्टाविंशति
 अष्टान्यतर संख्या हुतिभिः । उतराङ्ग देवताभ्यश्चमयापरित्यक्तं,
 तत्तद्देवतमस्तु नमस्र ॥ तत आचार्यो गिनस्थापन होमपद्धत्यनु-
 सारेण ब्रह्मोपवेशनादि पथ्युक्षणान्तं कर्मकृत्वा—३० वरदनामाग्न-
 येनमः, वरदाग्निमावाह्य ३० एतन्तेति, प्रतिष्ठाप्य, सम्पूज्यच ।
 अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं संस्थाप्य, ब्रह्मणान्वारब्धः,
 आघारावात्स्य भागौचहुत्वा अनन्वारब्धः प्रधानहोमं कुर्यात्-
 तत्रादौ—३० तद्विष्णोरिति मेधातिथि ऋषिर्गायत्रीछन्दो विष्णु
 देवता, दधिमध्वाज्य, मिश्र होमेविनियोगः । ३० तद्विष्णोः
 परमंपददं० सदापश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुरा ततम् स्वाहा ।
 इत्ति मंत्रेण विष्णुमष्टाविंशत्याहुतिभिर्जुहुयात् ॥ असक्तश्चेदष्ट
 संख्यया जुहुयादेवं सर्वत्र बोध्यम्—३० आपोहिष्टेति तिसृणां
 सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्रीछन्दऽआपोदेवता दधिमध्वाज्य मिश्र
 होमेविनियोगः ॥ ३० आपोहिष्टा मयोभुवस्तानऽऽज्ज्जं दधातन ।
 महेरणायचक्षसे स्वाहा—इदंवरुणाय । पूर्ववत् २८ संख्यया ३०
 योवः शिवतमोरस स्तस्यभाजयतेहनः उशतीरिवमातरः स्वाहा-
 इदंवरुणाय ॥ ३० तस्माऽअरङ्गमामवो यस्यक्षयाय जिन्वथ आपो

जनयधाचनः स्वाहा- इदंवरुणाय, ॐ अप्सुमे सोम इतिमेधा-
तिथिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवताः, दधिमध्वाज्य मिश्रहोमे
विनियोगः ॥ ॐ अप्सुमेसोमोऽन्नब्रवीदन्त विश्वानि भेषजा ।
अग्निं च विश्वसभुवमापश्च विश्वभेषजीः स्वाहा-इदंवरुणाय-
पूर्ववत् २८ संख्यया । ॐ अक्षीभ्यामिति पण्णां मन्त्राणां करय-
पो विवृहा ऋषिरनुष्टुप्छन्दो यक्ष्महादेवता दधिमध्वाज्य मिश्र
होमेविनियोगः । ॐ अक्षीभ्यान्ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां ब्रुवुका
दधि । यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्का जिह्वाया विवृहामिते-स्वाहा-
इदंयक्ष्मघ्ने-२८ सं० । ॐ ग्रीवाभ्यस्तऽउष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो
ऽअनृक्यात् । यक्ष्मंदौषण्यं मंसाभ्यां चाहुभ्यां विवृहामिते स्वा-
हा । इदंयक्ष्मघ्ने । ॐ अत्रिभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्टोर्हृदयादधि ।
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां यक्ष्मः प्लाशिभ्यो विवृहामिते स्वाहा-इदं
यक्ष्मघ्ने । २८ सं० ॐ ऊरूभ्यान्तेऽअष्टीवद्भ्यां पार्श्विभ्यां प्रपदा-
भ्यां । यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदाद्भंससो विवृहामिते स्वाहा-
इदंयक्ष्मघ्ने । २८ सं० । ॐ मेहनाद्वनं करणात्लोमभ्यस्तेनखेभ्यः ।
यक्ष्मंसर्वस्मा दात्मनस्त मिदं विवृहामिते स्वाहा-इदंयक्ष्मघ्ने ।
२८ सं० ॥ ॐ अद्गा दद्गा लोम्नो लोम्नो जातं पर्वणि पर्वणि ।
यक्ष्मं सर्वस्मा दात्मनस्तमिदं विवृहामिते स्वाहा-इदंयक्ष्मघ्ने । २८
सं० हुत्वा, ततःसूर्यादिनवग्रहाणां मन्त्रैश्च पूर्ववत् २८ संख्याया
नवग्रहेभ्योहुत्वा, ॐ अग्नये स्विष्टकृने स्वाहा-इदमग्नये स्विष्ट-
कृते । ततो भूरादिनवाहुति होमं पूर्णाहुत्यन्तं कुशकंडिकोक्त
रीत्या समापयित्वा । ततःकलशद्वयजलमेकीकृत्यसपत्निपुत्र यज-
मानस्याभिषेकं कृत्वा मङ्गलतिलकंच कृत्वा आशीर्वादं दद्यात् ।
ततो ब्राह्मणेभ्योकर्मनिमित्तक दक्षिणां दत्त्वा ब्राह्मणान्भोजयेत् ॥

॥ इति गर्भोक्त गोमुखप्रसव शान्ति पद्धतिः ॥

अथमूलशान्तिपरिभाषावद्वये ।

उक्तं च गृह्यते चिन्तामणी—आद्येपिता नाश मुपैतिमूल पामेद्वितीये जननी तृतीये ।
 धनंचतुर्थं च शुभोऽथशाखा सर्वात्र सत्स्या दहिभेविलोमम् ॥ मूलदृष्ट विभागो जपणार्थे—
 मूलस्तं भरतवचा शाखा पत्रंपुष्पं फलं शिष्या । घटिका विभागस्तत्रैव ॥ वेदाश्च मुनयश्चैव
 दिशाश्च यस्यैतथा । नंदावाणा रसारुद्रा मूलभेदाः प्रकीर्तिताः । फलम्—। मूले मूलविनाशः
 स्यात्स्तंभेहानिर्धनयः । त्वचिध्रात् विनाशाशशाखायांमालुविनाश कृत् । पत्रैस्तपरिवारस्य पुष्पैतु
 नृमवल्लभः । फलेषु लभतेराशय शाखायामल्प जीवितम् । मास परत्येन स्वर्गादि वासं
 भूपाल वल्लभे—वृषालि सिंहेषु घटेषु मूलदिविस्थित दुग्म तुलांगनासु । पातालगं मेघधतुः
 कुलीर नकेषु मत्थंष्विति संस्मरन्ति—फलम्—स्वर्गमूले भवेद्रज्यं प.तलिंच धनागम. । गृह्यु
 लं.कं यदा मूलं तदा शून्यं समादिशेत् ॥ वशिष्टः—नैर्श्रयभोद्भूत सुतः सुतावा क्षिप्रदवश्यं
 रघुरं दिहन्ति । अभुक्तमूल माह वशिष्टः—अथेष्टान्ते घटिकाचैका मूलादौ घटिकाद्वयम् ।
 अभुक्त मूलमित्याहुर्जातंतत्र विवर्जयेत् । वृहन्मनुनातु—अथेष्टान्तं घटिकार्धतु मूलादौ घटिका
 र्धकम् । तयोरतर्गता नाडो, अभुक्तं मूलमुच्यते । भरलाटः—अभुक्त मूलसंभवं परित्यजेतु
 बालकं ॥ समाष्टकं पिताथवा नतन्मुखं विलोकयेत् । अत्रत्याग विधाने स्वत्वस्वापायात्पातकिन
 त्यजती त्यादौ स्वजतेदानार्थत्वा गावाच्च । सिंहादि प्रसूति वनमूल प्रसूतस्यापि पीडनं भवतीति
 केचित् तत्र । त्यागविधानंपि स्वत्वापाये प्रमाणाभावात् । अतश्चात्र त्यजतिना जन्मदर्शना-
 भावो वा जन्मत्यागपक्षे समाष्टके दर्शनेवान्यद्वारा जातकमादि करणमध्ये चाकस्मिक दर्शने शान्ति
 पूर्णं स्वयंतत्करणम् । अन्तस्त्यागपक्षेपीडनादि भवत्येवेति । पुण्यंरक्षत्प अवरयत्याश्रयत्वात्
 मूलोत्पन्न प्रतिगृहीतुश्च नत्याग शान्तिकादि नप्रस्तुत्पत्तिकाले स्वभाभावेन मूलोत्पन्नपुत्रत्वभावात् ।
 तस्माच्चान्तिं प्रवृत्तं महाणां हूर चेतसामिति दिक् ॥ शत मूलानि वैवस्वमनोहरे—
 वर्हिः शिखा, हरि क्रान्ता, सहदेवी, पुनर्नवा, । शरदुंखा, वराहीच, काकजंघा, सुलज्जणा ॥८॥
 तुंविका चैव, कर्णधु, कपूरो, काकविरुधा । कर्काटिकाच, चर्वाका, श्वेताडर्को, व्याघ्र
 पत्रिका ॥१६॥ छद्मन्ती, चारवगंधाच, मुसली, गिरिकर्णिका । इन्द्रवारुण्य, पामार्ग शैलपुष्पी,
 कुमारिका ॥२४॥ शालकी, चारवगंधारी, निर्गुडी, देवदालिका । वटः, शमी, तथाप्लक्ष, पालाशो,
 श्वेतएवच ॥३३॥ वृत्, रचोदुबरो, जम्बू, नैदीवृत्तो, धवेत्तय, पुनागो, थार्डुनी, शोको,
 वज्रलो, शंभतकस्तथा ॥४३॥ शाल, स्ताल, स्तमालश्च पाटलः शतपत्रिका । मधुवध, शिरीषश्च,
 श्रीवृत्तो, वृहतीद्वयं ॥५२॥ बला, चातिबला, चैव पाय, नागपला, तथा । जातीच बृहत्तरश्च
 केतकी कदली तथा ॥६१॥ मालुलिंगी, जयन्ती च, यवानी, पुत्रिका तथा । द्रोणपुष्पा, तथाकुंभी,

श्रीपर्णा, मदनस्तथा ॥६८॥ चंपकं, पद्मकं, चैव, तथाकांचन पुष्पिका, सिद्धेश्वरी च, चदरी,
राजवृक्षो, धवस्तथा ॥७६॥ कुंदश्च, मुचकुंदश्च, गोजिह्वा, चरकंदुका । डाडिमी, बीजपूरीच,
त्राह्णी, चामलकीतथा ॥८४॥ भृंगराज, अथ पुष्पी, मत्स्याची, चाटूरूपक । तरंगिणी, गुडचीच,
निशाह्वा, शतमूलिका ॥९२॥ वाङ्गुची, काकजंघाच, बर्बरी, तुलसी तथा । कुश काशश्चेत्तुमूलं
तथासर्षप मूलकम् ॥१००॥ इति शत मूलनामानि ॥

—१०३—

उक्तं च विधानपारिजातकेः—अथात. सप्रवक्ष्यामिमूलजातहिताय वै । मातापित्रोर्धनस्यागिकुलेज्ञात
हिताय वा ॥१॥ त्यागो व मूलजातानां स्यादष्टावशतुर्दशनं भ्रमुक्तमूलजातानां पत्न्यापोविधीयते ॥२॥ अर्ध-
शान्तिवापिहितो सोऽपि तिष्ठेत्समाष्टकम् । एवं दुहितरिपोक्तं मूलजायां न त्तु पुंशुः ॥३॥ मुख्यकालं प्रवक्ष्यामि
शान्तिहोमस्य यत्नतः । जातप्यद्वा दशाहे वा जन्मक्षवाशुभे दिने ॥४॥ समष्टके द्वादशकुट्ट्रेयाच्छान्तिकमा-
दरात् । यदैव शान्तिकं कुर्यात्कर्म तत्र अचमहं । सस्कृते पुण्यदेशे तु मंत्रं अकारयेद्बुध ॥५॥ मंत्राभिमंत्रि-
तैस्तथै प्रोक्षितायाः क्षितौ ततः तत्रोदकुम्भं सुरलक्षणं कं व्रणविरहितम् ॥७॥ सुवर्तुलं च निष्णिकं
कारयेत्त्रैलोक्यभया । वस्त्रावगुण्डितकुर्यात्पूरयत्तोर्यवारिणा ॥८॥ कूर्चहमसमायुक्तं चूतपल्लवशोभितम् ।
स्वस्तिकोपरि क्विण्यस्य सत्पूरयद्रुमपल्लवम् ॥९॥ द्रोणं ब्राह्मीश्च निक्षिप्य चेशाने च निधापयेत् । पंचर-
त्नानि निक्षिप्य सर्वाधिषमन्त्रितम् ॥१०॥ अर्चिनां ध्युत्प्राथे श्रीहृदं च स्पृशन् जपेत् पठं गसहितं शान्त्यै
जपेद्द्वैहृदमस्य वा ॥११॥ बहुशुचो हृदसूक्तं हृदो गोहृदसाभिमि एकादशष्टत्रिवेकं सख्यया शक्तिनां जपेत्
॥१२॥ तत्राप्रतिरथसूक्तं शतहृदालुवाक्कम् । रत्नामंत्रं तथापुण्यं रत्नोष्णं च स्पृशन् जपेत् ॥१३॥ त्रैयम्बकं
जपेत्सम्यग् गणोत्तरसहस्रकम् । एव चारं तथा ज्ञापौ पावमाती स्पृशन् जपेत् ॥१४॥ जपस्य पंचकुंभास्पृष्टं यं
वातदलाभत धीहृदस्यै कुरुभ्य सर्वसुक्तानिततनु ॥१५॥ तथान्यं च शुभकुम्भं पूर्वाकैलक्षणे युतम् ।
चतुःप्रखण्डं कुर्यात्पंचवकं तु तद्मवेत् ॥१६॥ गजाश्वरथ्यावहमीकात्संगमाध्वरगाकुलात् । राजद्वार
प्रवेशाच्च स्पृशदानीय निक्षिपेत् ॥१७॥ कुम्भस्य नैर्ऋते देशे होमस्थानं प्रकल्पयेत् । गोमया लोहिते देशे कुर्या
रस्थडिलसुतमम् ॥१८॥ कृत्वाग्निं मुखपर्यन्तं मुल्लेखादि स्वसालतः । पूर्णं गत्रविधानान्तं हृत्वा
पूजासमारभेत् ॥१९॥ नक्षत्रं देवता ह्यं सुखानप्रशक्तं निष्कपात्रेण वार्धेन पादेनाथ स्वराग्नि ॥२०॥
प्रतिमालवणोपेनां कारदित्वा विचक्षणं यद्गामूत्सुवणस्य स्थापयित्वा प्रपूजयत् ॥२१॥ सुवर्णसर्वदेवत्यं
सर्वदेवतामकोनल सर्वदेवतामकोविम सर्वदेवमयोऽरि ॥२२॥ सर्वमंत्रिर्वातिरयामनुसुखं नरवाहनम् । रत्नो
धिं तल्लहस्तं दिग्वाभरणभूषितम् ॥२३॥ प्रतिमापूजनार्थं वस्त्रयुग्मं प्रकल्पयेत् पञ्जकारयेद्भूमौ
रंजितेर्वाहितं कुले ॥२४॥ चतुर्विंशदलोपेते शुभलेखं र्गण्यन्विताम् । तस्योपरि न्यरेतामंत्रकलशं ताम्र
गुणमयम् ॥२५॥ शुद्धकात्रेण सहाय तनमूलानि निक्षिपेत् ॥ मूलानि तनमूलानि स्वयं शुभं गदयेत्पिता ॥२६॥

भगवत्प्राश्नान्निवाश्च शोभन्त्यः कथयाम्यहम् । आर्षामूलात्प्रिययाच्यतास्तामेविशेषतः ॥२७॥ विष्णुकांता
सहस्रेषु तुलसी च दातावरी । रथापथैर्कर्णिकामध्ये बह्वगन्धांशलाकृतम् ॥२८॥ कूर्चदेम जलोपेतं कुम्भोप-
धिर्संयुतम् । कुम्भोपरि न्यसेद्विद्वान्मूलनक्षत्रदेवतम् ॥२९॥ अग्निप्रत्यग्निदेवौ च दक्षिणोत्तरदेशतः । अग्निदेवं
यज्ञेन्द्रादीष्येष्टानक्षत्र देवतम् ॥३०॥ पूर्वघाटाप्रत्यग्निव देवतं पूजयेत्ततः । उत्तरा गन्धार-०५ मनुराधान्तमर्च-
ये ॥३१॥ ऐन्द्रादीशान्तर्यन्तं पूजयेत्स्वस्वनामतः । स्वलिङ्गोक्तेषु चन्द्रैश्च प्रधानादीन् पूजयेत् ॥३२॥
पंचासृतेन संस्नाप्य आवाह्याप्यमर्चयेत् । उाचारैः षोडशभिर्वद्रापंचोपचारैः ॥३३॥ एक चन्दन
गन्धाय पुष्पैश्चैवस्निग्धैः मण्डपद्वादिधूपैश्च घृतदोषैस्तथैव च । ३४ ॥ सुसंयोजितकामान्नाथैर्वैद्यैर्बौदनादिभिः
मत्स्यमांस शुरादीनि ब्राह्मणश्चयिजयेत् ॥ ३५ ॥ शुरास्थाने प्रदातव्यं क्षीरगन्धय मिथितम् ।
पायसंलवणोपेतं मांसस्थाने प्रदापयेत् ॥ ३६ ॥ एकगन्धापलाभेतुयथालाभं मर्चयेत् । पुष्पांश-
त्यन्तमभ्यर्च्य होमकुयाद्यथोदितम् ॥ ३७ ॥ निवापश्रोत्राणादीन् चरोः कुयाद्यथाविधि । हविर्गृही-
त्वा विधिवन्नेर्ह्यैव कृचाहुवेत् ॥ ३८ ॥ शोषुणः परापरैति, यन्ते देवीति वापुनः । पायसंघृत-
सम्भिर्धनुर्वेदश्रोत्रं शतम् ॥ ३९ ॥ समिदाप्यचरुणश्च तच्छक्तितः सख्यया हुवेत् । अधिदैवत
योश्चापि जुहुयात्स्वस्वमन्त्रतः ॥ ४० ॥ चतुर्थ्यन्तैर्नान्तैश्च स्वाहन्तैश्च समन्त्रकैः । नक्षत्रदेवता
भ्यश्च पायसेन तु होमयेत् ॥ ४१ ॥ कृणुष्वेति पदशभिः जुहुयात्कृसरंततः । गायत्र्या जातवेदसे-
र्ष्वथ कर्मतिक्रमात् ॥ ४२ ॥ सीराकुञ्जितसामग्निश्चास्तोष्यत्यग्निमेव च । क्षेत्रस्य पतिना, शृणाना,
अग्निदूतं तथैव च ॥ ४३ ॥ इति मन्त्रैः कृसरं जुहुयात्) श्रीसूक्तेन तथा विद्वान्समिदाप्यचरुं क्रमात् ।
अष्टोत्तरशतैर्वापि अष्टाविंशतिभिः क्रमात् ॥ ४४ ॥ अष्टशतस्य यावापि जुयात्शक्तितो बुधः स्वनः
सोमेन जुहुयात्पायमन्तु त्रयोदश ॥ ४५ ॥ चतुर्गृहीतमान्यं च याते रद्रेति मन्त्रतः सूत्रेण जुहुया
दाथ महाव्याहृतिभिः क्रमात् ॥ ४६ ॥ हुत्वास्विष्टकृतं तं परस्वत्प्रायश्चित्ताहुतिर्हुवेत् ' आचार्यै-
यजमानो वा नही पूर्णाहुति हुवेत् । ४७ ॥ समुद्रादिति सूत्रेण प्रजापत्याकृत्तथा । पूर्णदर्वि,
सप्ततेजने एतैः पूर्णाहुति हुवेत् ॥ ४८ ॥ होमशेषं समाप्यथ वह्निमारोपयेद्बुधः । कुंभामिमन्त्रणं
कुर्याद्दक्षिणेनाभिमर्शयेत् ॥ ४९ ॥ मृत्युप्रशमनायाधजपैर्त्रयं वकंशतम् । रुद्रकुम्भोक्तमार्गोत्तरमन्त्र
स्पृशजपेत् ॥ ५० ॥ धूप दीपौ च नैवेदं कुम्भयुग्मे निवेदयेत् । (रुद्रकुम्भे निष्कृति कुम्भे च) प्रसादयेत्
तोत्रैः प्रमथयेत्कार्यमादरात् ॥ ५१ ॥ तस्मिन्काले प्रहातिभ्यं कर्त्तव्यं भूतिमिच्छना । पृथक् प्रशस्ततेनैव
नक्षत्रैश्च यासदेवता ॥ ५२ ॥ अभियेकविधिं वक्ष्ये पूर्वाचार्यैश्च दाहृतम् । भद्रासतोपविष्टस्य यजमा-
नस्य ऋत्विजः ॥ ५३ ॥ दापुत्रसमेतस्य कुर्युः सर्वेऽभिवेचनम् । अक्षीन्यामिति सूक्तेन पावमानी-
भिरैव च ॥ ५४ ॥ आपोहिष्टेति नक्षत्रभिः यत इन्द्रयेन च । सहस्राक्षं युचेनापि देवस्य त्वेति मन्त्रकैः ॥ ५५ ॥
शिवशंकरपञ्चैः षण्णवयमाद्यैश्च मन्त्रकैः । तच्छंभोरभियेकस्तु सर्वदोषशान्तिदम् ॥ ५६ ॥ सर्वकाम

प्रदिग्धमगलानां चमणलम् । वस्त्रान्तरितकुम्भान्यां पश्चात्तुम्नापयद्बुध ॥ ५७ ॥ ततः शुक्लम्बर-
धर शुक्लमाल्यानुलेपन । यजमानोदक्षिणाभिस्तोष्यादृत्विगादिकान् ॥ ५८ ॥ वृष्णापयम्धीनीद-
द्यादाचार्यायसवत्सकाम् । निकृतिप्रतिमावल्लहेमकुम्भचदायकेत् ॥ ५९ ॥ ग्रहणा प्रतिमावल्लतत्त-
ञ्जापेभ्यश्चर्पयेत् । धीश्रुद्रजातिन्दय कृष्णोन्नवान्प्रयत्नत ॥ ६० ॥ इतरेभ्योयथाशतयाचदक्षि-
णाम् । उवासाभेतथादय वाचार्यब्राह्मणकृतिजाम् ॥ ६१ ॥ तन्मन्मूल्यप्रदातव्यशस्यवावाधप्रदापयेत् ।
आचार्यायचयद्दत्तदर्वेव्रह्मणेददेत् ॥ ६२ ॥ सदस्यायव्रह्मणोर्धमृत्विग्भ्यश्चतदर्धकम् । एगहोया-
दाशियस्तेभ्य प्राणम्याथ क्षमापयेत् ॥ ६३ ॥ दद्यादत्रपायसादिब्राह्मणभोजयेच्छतम् । अलाभेस-
तिपचाशदशकतदलभत ॥ ६४ ॥ सर्वशान्तेश्चपठन ब्राह्मणैराशिपस्तत गृहीतमापयेद्विद्वान्कृति
प्रीयतामिति । विधाने चरितेहस्मिन्नुत्त शान्तिर्भवेद्बुधम् । गण्डान्तेष्वेवमेवस्यात्सापाधे वेव-
मवहि ॥ ६६ ॥ पुष्यावर्धतयैवच, इतिशातिरत्नादौ ॥ शेष प्रयोग स्पष्ट ।
इति शौनकोक्त मूल शान्ति परिभाषा ॥

— 0 —

॥ अथमूलशान्तिपद्धतिः ॥

अथचमूलनक्षत्रोत्पन्नसुतयोः पितासूतकातेचन्द्रतारानूकूले
द्वादशाहे, वा तयोर्जन्मक्षेत्राशुभेदिने, अष्टमेमासिद्वादशेमासि,
वाष्टमाब्देद्वादशेवदेवा,—मूलशान्त्यर्थं शालायांवागृहाभ्यन्तरे,
पथाशक्तिमंडपेचिरच्यस्तंभतोरणादिभिः सुसज्जपूजापटलोक्त
स्तंभमंडपपूजापद्धत्यनुसारेण सम्पूज्यच, तत्रादौगणेशादिपञ्चांग
पूजांकुर्यात् सचविधिः, सपत्निपुत्रोयजमानः प्रातःस्नात्वानित्य
क्रियांसमाप्य, मंडपेपरिचमद्वारेणसमागत्य शुभासनेउपविश्य,
रक्षादीपंप्रज्वलय्याचम्य भृतोत्सादनंकृत्वा पत्नींसपुत्रां स्वदक्षि-
णतउपवेश्य, संकल्पंकुर्यात्—अथेत्यादि देशकालौसंकीर्त्य, अमु
कगोत्रोऽमुकराशिः सपत्निपुत्रोऽमुकोर्हं मूलनक्षत्रोपलक्षितस्य-
धनुर्धरराशे रमुकबालकस्यामुकचरण लज्जनमूलनक्षत्रसूचितपितृ
मात्राग्ररिष्टनिर्घृत्तिपूर्वकं सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं शुभफलप्राप्तये श्री
परेश्वर प्रीत्यर्थं च शौनकोक्तविधानेन ग्रहयागसहितमूलशान्ति-
कर्मणि तत्पूर्वाङ्गात्वेन श्रीगणेश्वरस्यपूजनपूर्वकं कलशस्थापन,

पुण्याहवाचन, नान्दीश्राद्धनवग्रहाणां पूजनंकरिष्ये, तथाचमूल-
शान्तिकर्मसमृद्धये, आचार्यब्रह्मणोः सदस्यकृत्विजां रुद्रैकादशि
न्यादि, अप्रतिरथसूक्तादिपाठकानां तथामंहासृत्पुंजयादि जापका
नांब्राह्मणानां पूजनपूर्वकं वरणंचकरिष्ये, ततो गणेशादिपंचांगपू-
जांकृत्वा पुण्यतीर्थजलेन वापंचगव्येन, ३० आपोहिष्टा मयोभुव
स्तानऽज्जैदधातनः । महेरणाय चक्षुसे यो वः शिवतमोरसतस्य भा
जयतेहनः । उशतीरिवमातरस्तस्माऽग्ररंग मामवोयस्यक्षयाय-
जिन्वथऽध्यापोजनयथाचनः ॥ इतिमंत्रैर्मंडपशालांचाभिषिंच्य ॥
मण्डपस्यनैर्वातभागेस्थंडिले सपादहस्तांवेदिकांहोमार्थनिर्माय तत्र
होमपद्धत्युक्तप्रकारेण पंचभूसंस्कारपूर्वकमग्निमुपसमाधाय, तद्र
क्षार्थमिन्धनंनियुज्य ततोमंडपेशानभागेरुद्रकलशस्थापनार्थं द्रोण
परिमितान्त्रीहीन् निक्षिप्यतदुपरिस्वस्तिकांकारयित्वा श्वेतादि-
पंचवर्णैरंगैरापूर्ध, तत्रशुक्लं सुवर्तुलंबृहत्ताम्रकलशं । (अशक्त-
श्चेत्) रक्तवर्णमृगमयकलशं कलशपूजोक्तविधानेनसंस्थाप्य
सम्पूज्यच । तत्कलशंरक्तवस्त्रेणावेष्ट्य तदुपरितण्डुलपूरित ताम्र
पात्रंन्यस्य, तत्रवस्त्रसौवर्णीरुद्रप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकंपंचगव्य-
संस्नापितांसंस्थाप्य । आर्चार्यादिब्राह्मणानाह्वययथाक्रमेण गन्धा
दिभिःसम्पूज्य वृणुयात्—तत्रसंकल्प—अयेहेत्यादिदेशकालौ
संकीर्त्यामुकोहं, कर्त्तव्यमूलशान्तिकर्मणि । आचार्यकर्मकर्तुंब्रह्म-
कर्मकर्तुं रुद्रैकादशिन्यादिसूक्तपाठकर्मकर्तुं, एतेर्पायथासंख्यक
ब्राह्मणानांपूजनपूर्वकं । अमुकामुकब्राह्मणान, एभिर्वरणद्रव्यैः
युष्मान्बृणे, वरणद्रव्यंतेभ्योदत्वा, यजमानःसांजलिपुटःप्रार्थयेत्—
भोब्राह्मणायथाविहितं कर्मकुरुध्वम् । तेचकरवामयथामति, इति
वृ युः ॥ आर्चार्यैःस्वयंपूजनादिकर्मकुर्याद्वा, यजमानद्वाराकारयेत् ।
तत्ररुद्रपूजनम्—संकल्पः—अयेत्यादिसंकीर्त्यामुकोहं मूलशान्ति
कर्मणित्रीह्युपरिस्थापितरुद्रकलशे, सुवर्णप्रतिमायां रुद्रपूजनंकरि-
ष्ये । ३० एतन्तेतिप्रतिष्ठाप्य, पूर्वपूजापटलोक्तवेदोक्त शिवार्चन-
पद्धत्यावा ३० अंपवकं०—इतिमन्त्रेण रुद्रंसम्पूज्योपस्पृश्य, ततो

रुद्रकलशादुत्तरस्यां चतुर्दिक्षुचतुरः कलशान्—मध्येचपंचमं यथा
 विधिसंस्थाप्य तत्रचरणमावाह्य पृथक्पृथक् पूजयेत् । तत्रमध्य
 कलशे पूर्णपात्रोपरि शतमूलानि, तदलाभेविष्णुक्रान्ता सहदेवी
 तुलसीशलाचरी कुशान्संस्थाप्यवरुणंपूजयेत् । (अत्रपंचकलश-
 स्थापनमाचार्याविकल्पमाहुः) विकल्पपक्षेउत्तरस्थैकस्मिनकलशे
 शतमूलोदीनिस्थापयित्वावरुणंपूजयेत् । ततो रुद्रैकादशिन्याचार्यः—
 रुद्रकलशंस्पृष्ट्वा—पडंगन्यासपूर्वकंसांङ्गारुद्रैकादशिनींजपेत्—(सच
 विधिःपूर्वोक्तपूजापटलेरुद्रैकादशिन्यादिपरिभाषायांदृष्टव्यः) ततः
 पंचकुम्भपक्षे—अप्रतिरथादिसूक्तजापकः पूर्वकुम्भं स्पृशन् ॥ ३०
 आशुःशिशान० इत्यादि द्वादशमंत्रान् रुद्रैष्टाध्याय्यास्तृतीया
 ध्यायोक्तान् जपेद्यमेवाप्रतिरथसूक्तः (य० सं० अ० १७१ मं ३३
 तः ४४ यावत्) ततोदक्षिणकुम्भंस्पृशन्, एकादशवारं, रुद्रैष्टाध्या-
 य्याः पंचमाध्यायस्य, नमस्तेरुद्रमन्यव०, इत्यादि षोडशर्चं शत-
 रुद्रानुवाकं जपेत् ॥ ततःपरिचमकुम्भंस्पृशन्, एकादशवारंपूर्वोक्त
 पूजापटलस्थरचोघ्नसूक्तंजप्त्वा, पुनः—३० कृणुष्वपाज, इतिपञ्च-
 र्चस्य वामदेवमृपिसिन्धुपुण्ड्रन्दोऽग्निर्देवता मूलशान्तिकलशेजपे
 विनियोगः ॥ ३० कृणुष्वपाजः प्रसितिन्नपृथ्वीयाहिराजेयामवा
 २॥ इहमेनत्रिष्वीमनु प्रसितिर्द्रूणानोऽस्ताऽसिन्ध्विरक्षसस्तपिष्टैः
 ११। तवभ्रमांसऽआशुया पतन्त्यनुस्पृशधृपताशोशुचानः । तपुं
 प्यग्नेजुहापतंगानसन्दितो द्विसृजविष्वगुत्काः १२। प्रतिस्पशो
 द्विसृजत्तृणितमोभवा पायुर्विशोऽत्रस्याऽअदब्धः । योनोदूरेऽअ
 घसर्द० सोयोऽअन्त्यग्नेमाकिष्टे व्यधिरादधर्षात् १३। उदग्नेतिष्ठ
 प्रत्यातनुष्वन्यामिर्त्रां ओपनातिग्महेते । योनोऽथरातिर्द०
 समिधानचक्रे नीचातंधद्यतमं नशुक्रम् ४ ऊर्ध्वोभवप्रतिविध्या
 ध्यम्मदा विष्कृणुष्व देव्यान्त्यग्ने । अयस्थिरातनुहि यातजूनां
 जामिमजामि प्रमृणीहिशत्रून् १५। इतिएकादशवारंजपेत् ॥ तत
 उत्तरकुम्भंस्पृशन्, अष्टोत्तरसहस्रकृत्यः त्र्यंशकमन्त्रंजप्त्वा चार
 मेकंचद्यमाण पाचमानीदचजपेत् ॥ ३० पुनन्तुमापितरइत्यादि

नवमन्त्राणां प्रजापति ऋषिर्मन्त्रलिङ्गोक्तादेवताः, मूलशान्तिकल
 शेजपे विनियोगः—३० पुनन्तुमापितरः सोम्यासः पुनन्तुमापि-
 तामहाः । पुनन्तुप्रपितामहाः पवित्रेणशतायुषा ।१। पुनन्तुमापिता
 महाःपुनन्तुप्रपितामहाः । पवित्रेणशतायुषाच्चिश्चवमायुर्गर्शनर्च ।२।
 अग्नेऽआयूँ पिपवसऽआसुवोर्जमिपंचनः । आरेवाधस्वदुच्छु
 नाम् ।३। पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः । पुनन्तुविवश्वाभू-
 तानिजातवेदः पुनीहिमा ।४। पवित्रेणपुनीहिमाशुक्रेणदेवदीद्यत् ।
 अग्नेकृत्वामनूँरनु ।५। यत्तेपवित्रमच्चिष्पग्ने विवततमन्तरा ।
 ब्रह्मतेनपुनातुमा ।७। उभाभ्यांदेवसवितः पवित्रेणसवेनच । मांए-
 नीहिद्विवश्वतः ।८। वैरवदेवीपुनती देव्यागाद्यस्यामिमा वह्व्य-
 स्तन्वोव्वीतपृष्ठाः । तयामदन्तः सधमाधेपुव्वयँस्यामपतयोर
 घीणाम् ।९। ततःपंचकुम्भानामुत्तरभागे, शुद्धभूमौचतुर्विंशतिदलां
 कमलंरक्तशुक्लतंडुलैर्लिखित्या तन्मध्येकर्णिकायांसुवर्णसुवर्ण-
 कलशं, वारजतताम्रमृदन्यतमकलशंसंस्थाप्य, तत्राभ्यंतरेशतमू-
 लानितदभावे विष्णुकान्तासहदेवी शतावरीतुलसीकुशान्कुंकुमं
 पञ्चसुन्धिद्रव्यं सप्तमुदादिप्रक्षिप्य, कलशस्थापनविधिना धान्य
 पूर्णपात्रनिधानान्तंकर्मकृत्वा । तदुपरिरक्तवस्त्रे अष्टदलकमलं
 विलिख्यमध्ये कर्णिकायांनिष्कवातदर्धं चतुर्थाशप्रमाणंसुवर्णघ-
 टितां मूलनक्षत्राधिपति निर्ऋतिप्रतिमां यथोक्तलक्षणां, अग्न्यु-
 त्तराणपूर्वकं पञ्चांमृतस्नापितांसौवर्णी—३० यन्तेदेवीनिर्ऋतिरा
 वबन्धपाशं ग्रीवास्वविचृत्यम् । तंतेविद्याम्यायुपोनमध्यादथैतंपि-
 तुमध्दिप्रसूतः । इतिमन्त्रेणमध्येसंस्थाप्य, ३०एतन्तेदेव० पठित्वा
 ३० भूर्भुवःस्वः मूलर्क्षाधिपनिर्ऋते इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो
 वरदो भव ॥ इतिप्रतिमायांनिर्ऋतिप्रतिष्ठाप्य तदक्षिणभागेमूला
 धिदेवंज्येष्ठानक्षत्राधिपमिन्द्रंप्रतिमायां । ३०भू०इन्द्रेहागच्छेहतिष्ठ
 सुप्रतिष्ठितो वरदो भव, निर्ऋतियामेप्रत्यधिदेवंपूर्वापादाधिपंतोयम्—
 ३०भू०तोयइ०ति०सु०च०।एवंनाममंत्रैर्भूर्भौचतुर्विंशतिदलेपुष्पी-
 फलानिसंस्थाप्यतेपुपूर्वदलमारभ्येशानपर्यन्तंउत्तरापादाद्यनुराधाप

र्यन्ताञ्जत्रदेवताः क्रमेणस्थापयेत् ॥ तत्रायंस्थापनेक्रमः—३० भू
 र्भुवः स्वः उत्तराषाढादेवाः, विश्वेदेवा, इहागच्छन्तिवहतिष्ठन्तुसु-
 प्रतिष्ठितावरदा भवन्तु ॥ १ ३० भू० श्रवणाधिप गोविन्द इहा०
 सु० ॥२॥ ३० भू० धनिष्ठाधिपावसवः इ० सु० ॥३॥ ३० भू० शत-
 भिषग्देववरुणइ० सु० व० ॥४॥ ३० भू० पूर्वभाद्रपदाधिप, अजचरण
 —इ० ॥५॥ ३० भू० उत्तराभाद्रपदाधिप, अहिर्धुन्य, इहा० ॥६॥
 ३० भू० रेवतीनक्षत्राधिप पूषन्, इहागच्छेह तिष्ठसुप्रतिष्ठितोवर-
 दोभव ॥७॥ ३० भू० अश्विनीदेवौ, दास्यौ इहागच्छतमिहतिष्ठतं
 सुप्रतिष्ठितौवरदौ भवेतम् ॥ ३० भू० भरणीनक्षत्रदेवयम, इ० सु०
 व० ॥८॥ ३० भू० कृतिकादेव अग्नेइ० ॥९॥ ३० भू० रोहिणीदेवब्र-
 ह्मन्, इ० ॥१०॥ ३० भू० मृगशिरोधिपचन्द्र इ० ॥११॥ ३० भू० आर्द्रा-
 धिपरुद्रइ० ॥१२॥ ३० भू० पुनर्वसुदेवते अदितेइ० ॥१३॥ ३० भू० पुष्या
 धिपवाक्पते इ० ॥१४॥ ३० भू० श्लेषाधिपाः सर्पाः इहागच्छन्तिवह-
 तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठितावरदा भवन्तु ॥१५॥ ३० भू० मघादेशाः पितरः,
 इहागच्छन्तु ॥१६॥ अत्रोदकस्पर्शः ॥ ३० भू० पूर्वाफाल्गुनीदेवते
 भगइ० ॥१७॥ ३० भू० उत्तराफाल्गुनीदेवते अर्यमन्इ० ॥१८॥ ३०
 भू० हस्तदेवसूर्य इ० ॥१९॥ ३० भू० चित्रादेवत्वष्टः इ० ॥२०॥ ३० भू०
 स्वातीदेववायो इ० ॥२१॥ ३० भू० विशाखाधिपो इन्द्राग्नी इहागच्छत
 मिहतिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठितौ वरदौ भवेतम् ॥२२॥ ३० भू० भुवः स्वः अनु-
 राधादेवमित्र इहागच्छेहतिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठितौ वरदौ भव ॥२३॥ ३० एतन्ते
 पठित्वा ३० भू० विश्वान्देवानारभ्य मित्रपर्यन्ताश्चतुर्विंशतिदेवताः
 सुप्रतिष्ठितावरदा भवन्तु ॥ इति प्रतिष्ठाप्य ॥ पूजासंकल्पं कुर्यात्
 अथेत्यादिदेशकालौ संकीर्त्या मुकराशिरमुकोहं मूलनक्षत्रामुकचरण
 जातस्यामुकपुत्रस्य सूचितामुकारिष्ठ निर्धृतये शुभफलप्राप्तये च
 करिष्यमाण मूलशान्तिर्भूषण मूलाधिष्ठात्रि देवतानिर्ऋतेरधिदे-
 वता प्रत्यधिदेवता सहिनस्य च कलशोपरि—स्थापित सुवर्णप्रति-
 मासु तथाचभूमौ चतुर्विंशनिदलस्थाञ्जतप्रगीफलेपुनत्तत्प्रतिमासु
 च उत्तराषाढामारभ्यानुराधा पर्यन्तानां चतुर्विंशानिनक्षत्राणां

देवतानां पूजनं च करिष्ये तंत्रेण होमवेदीशाने कलशस्थापन नव
 ग्रहाणां स्थापनं पूजनं च करिष्ये इति संकल्पनिर्ऋतिं ध्यायेत् ,,
 गृहीताक्षतपुष्पः—ध्यायामि निर्ऋतिं कृष्णसुमुखं नरवाहनम् ।
 रक्षोधिपंग्वङ्गहस्तं नानाभरणभूषितम् ॐ यन्ते देवी निर्ऋतिराव-
 धन्ध पाशंग्रीवास्ववितृप्तम् । तंते विद्यामयायुषीनमध्यादर्धतं
 पितुमद्धिप्रसूतः । इति मंत्रेण पंचोपचारैः सम्पूज्य ॐ अधिदेव
 प्रत्यधि देवयोर्नाममंत्राभ्यां पूजनंकुर्यात्—ॐ मूलाधिदेवायेन्द्रा-
 यनः इति दक्षिणभागे ॐ मूलप्रत्यधि देवाय तोयाय नमः । इति
 संपूज्य ॐ नक्षत्रदेवेभ्योनमः इति नक्षत्रदेवानपि संपूज्य, वास-
 वेंपांपुरुषसूक्तेन पूजनंकुर्यात्, ततो होमवेदीशानकोणे कलशवि-
 धिना कलशसंस्थाप्य संपूज्य च ग्रहयागोक्तपद्धत्या तत्र साधिदे-
 वप्रत्यधिदेवा नादित्यादि ग्रहानावाहं संपूज्य च तत्र पंचाशत्कु-
 शनिभितं ब्रह्माण्डमपि संस्थाप्य संपूज्य च रक्षासुत्रमभिसेव्य
 प्रतिष्ठाप्य तत्रैव कलशे स्थापयेत् । ततो होमवेदी समीपमागत्य
 पूर्वोक्त होमपद्धत्यनुसारेण ब्रह्मोपवेशनादि, अर्थवत्प्रोक्षणान्तं
 कर्मकृत्वा । होमसामग्रीं पायसंचरुकूसरं (तिलौदनम्) श्रपयि-
 त्वापर्युक्षणान्तंकृत्वा । (शान्तिकेवरदः) इतिवरदनामाग्निं, एतन्ते
 तिप्रतिष्ठाप्य । पंचोपचारैः सम्पूज्य रेग्वाजिह्वाश्च पूजयेत् । अद्ये-
 त्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोऽहं सग्रहयाग मूलशान्तिकर्मणि
 द्रव्यदेवतामिध्यान पूर्वक मह्यदये तत्र प्रजापतिं, इन्द्रं, अग्निम्
 सोमं, आज्येन, नवग्रहानष्टसंख्याभिः समिञ्चर्वाज्यतिलाहुतिभिः
 विनायकादि पंचलोकपालानिन्द्रादि दिक्पालांश्च द्विर्द्विःसंख्याभिः
 समिदाज्याहुतिभिः निर्ऋतिं प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याहुतिभिः
 इन्द्रम् अपश्चअष्टाविंशति संख्याभिर्यृतचर्वाहुतिभि र्चविश्वेदेवा
 चारचतुर्विंशति देवता अष्टसंख्याभिः पायसाहुतिभिः ऋग्वे दोक्त-
 रक्षोघ्न कृणुष्व, इति पंचदशभिः ऋग्भिः प्रत्यक्षपष्टसंख्याभिः कृस-

टि० निर्ऋतिपूजने परिभाषोक्त ३४ श्लोकादौ—इयं श्रद्धादिभूपैश्च, इत्यादि
 विनवैद्यान्तं पूजयेत् ।

रात्राहुतिभिःसवितारंदुर्गा, न्यंबकम्बृत्विक्स्तुतिं दुर्गावास्तोष्पतिं
अग्निं चैत्राधिपतिम् मित्रावरुणौ, अग्निं, चाष्टसंख्याभिः कृसरान्ना
हुतिभिः अश्विं, हिरण्यवर्णा, इतिपंचदशभिः श्रीसूक्तऋग्भिः प्रति
मंत्रमष्टसंख्याभिर्दुर्वाहुतिभिश्चर्वाहुतिभिश्च,, रुद्रं घृताहुतिभिः,,
शेषघृतेनस्त्रिष्टकृन्मग्न्यादि प्राजापत्यान्तानाज्येनाहंयद्ये,, इदं
संपादितंचर्वादिद्रव्यं, आघाराज्यभागदेवताभ्यो नद्यग्रहदेवताभ्यो
ऽधिदेवप्रत्यधिदेवेभ्यश्च विनायकादि लोकपालेभ्य इन्द्रादिदिक्पाले-
भ्यश्च,, निर्ऋतीन्द्रतोयेभ्यस्तथा विश्वेदेवमारभ्य मित्रपर्यन्तेभ्य
श्चतुर्विंशतिनक्षत्रदेवेभ्यश्च ॥ स्त्रिष्टकृद्मग्नयेमहाव्याहृतिदेवताभ्यः
सर्वप्राश्चित्तदेवताभ्यः प्रजापतये च मयापरित्यक्तं ३० तत्त्वच-
थादैवतमस्तु नमम ॥ तत आचार्योदक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणान्वा-
रब्धोमन्सा प्रजापतिं ध्यात्वा—३० प्रजापतये स्वाहा,, इदंप्रजा-
पतयेनमम । ३० इन्द्रायस्वाहा—इदमिन्द्राय० ३० अग्नयेस्वाहा
इदमग्नये० । ३० सोमायस्वाहा इदं सो० इत्याघाराज्य भागौ च
हुत्वा आचार्योऽन्वारंभंत्यक्त्वा ऋत्विग्भिः सहादौग्रहयागोक्तरीत्या
आदित्यादि ग्रहेभ्यो समिद्धिः प्रत्येकं अष्टसंख्याभिर्हुत्वा (अत्र
केचिद्गोप्रसव शान्ति होम मप्याचरन्ति) ततो घृतेन चरुणा
पालाश ग्वादिर समिद्धिर्भृताक्तपायसेन निर्ऋतिं जुहुयात्—३०
यन्ते देवीति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुष्टुन्दो निर्ऋतिर्देवता घृतमिश्रं
समित्पायसादि द्रव्य, होमे विनियोगः ॥ ३० यन्ते देवी निर्ऋति-
राचवन्ध पाशं ग्रीवा स्वविचृत्यम् । तंते विष्याम्यायुपोन मध्य
तथैतं पितुमद्धि प्रसृतः स्वाहा । इदं निर्ऋतये नमम ॥ १०८ ॥ ततोऽ-
धिदेवमिन्द्राय—ॐ इन्द्रोऽआसामिति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुष्टुन्दोऽ
इन्द्रो देवता घृताक्त पायसादिद्रव्यहोमे विनियोगः ॥ ३० इन्द्रोऽ-
आसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरोऽणुसोमः । देवसेनानां
मभिर्भजतीनां जयतीनां मरुतो यन्त्वग्रम् स्वाहा—इदमिन्द्राय०
(२८) प्रत्यधिदेवेभ्योऽद्भ्यः—३० आपोहिष्टेति सिंधुद्वीप ऋषि-
स्त्रिष्टुष्टुन्दः आपो देवताः घृताक्त पायसादि होमे विनियोगः ।

ॐ आपोहिष्टामयो भुवस्तानऽऊर्जंदधातनः महेरणाथचक्षसेस्वाहा
इदमद्भ्योनमम (२६) तत उत्तरापाटादि देवतानां नाममंत्रै रथ
संख्याहुतिभिः प्रत्येकं घृताक्त पायसेन चतुर्विंशति देवांजुहुयात्-
ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनमः स्वाहा । इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमम । ॥
ॐ गोविन्दाय नमः स्वाहा-इदं गोविन्दाय नमम । ॐ वसुभ्यो
नमः स्वाहा । इदं वसुभ्यो नमम । ॐ वरुणाय नमः स्वाहा-
इदं वरुणाय नमम । ॐ अजचरणाय नमः स्वाहा-इदमजचरणाय
नमम । ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः स्वाहा । इदमहिर्बुध्न्याय नमम । ॐ
पूष्णे नमः स्वाहा-इदं पूष्णे नमम । ॐ दत्ताभ्यां नमः स्वाहा-
इदं दत्ताभ्यां नमम । ॐ यमाय नमः स्वाहा-इदं यमाय नमम । ॐ
अग्नेये नमः स्वाहा-इदमग्नेये नमम । ॐ धात्रे नमः स्वाहा-
इदं धात्रे । ॐ चन्द्रमसे नमः स्वाहा-इदं चन्द्रमसे । ॐ शिवाय
स्वाहा इदं शिवाय । ॐ अदितये स्वाहा-इदमदितये नमम । ॐ वा-
कपतये नमः स्वाहा-इदं वाकपतये । ॐ सपेंभ्यो नमः स्वाहा-
इदं सपेंभ्यो नमः । ॐ पितृभ्यो नमः स्वाहा-इदं पितृभ्यो । ॐ
भगाय नमः स्वाहा-इदं भगाय । ॐ अर्घ्यभ्यो नमः स्वाहा-
इदमर्घ्यभ्यो । ॐ सवित्रे नमः स्वाहा । इदं सवित्रे । ॐ त्वष्ट्रे
नमः स्वाहा । इदं त्वष्ट्रे नमम । ॐ वायवे नमः स्वाहा-इदं वायवे ।
ॐ शक्राग्निभ्यां नमः स्वाहा-इदं शक्राग्निभ्यां । ॐ मित्राय नमः
स्वाहा-इदं मित्राय नमम । इति नक्षत्र देयेभ्यो हुत्वा । रक्षोघ्न-
कृसर होमं कुर्यात्-ॐ कृष्णुष्वेति पंचदश मंत्राणां वामदेव ऋषि-
स्त्रिष्टुष्टुन्दो रक्षोहाग्निर्देवता कृसरहोमे विनियोगः ॥ ॐ
कृष्णुष्वपाजः प्रसितिलक्ष्मीं याहिराजे च्चामत्रा-२३ ॥ इमेन ।
तृष्वीमनुप्रसितिं द्रूणानो स्तासि विधरक्षसस्तपिष्टैः स्वाहा (१)-
इति अष्टवारं जुहुयात्प्रतिमंत्रेण,-ॐ तव भ्रमासऽआशुया पतन्त्य-
नुस्पृशधृपताशेशुचानः । तपूँ ष्यग्ने जिह्वापतंगान सन्दिनो-
विसृज विष्व गुल्काः स्वाहा । ८ वरम् । ॐ प्रतिस्पशो विसृज,
तृणितमो भवा पायुर्विशोऽस्याऽअदब्धः । योनौदरेऽअघशंसो,

योऽग्रन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिराकधर्षीत् स्वाहा ।३। इत्यष्टधाहुत्वा
 ।८। ३० उदग्नेतिष्ठ प्रत्यातनुष्वन्गमित्रांश्रोपतातिग्महेते । योनो
 ऽअरतिं समिधानचक्रे नीचातं धक्षत सन्न शुष्कं स्वाहा ।८। वारं०
 ३० उर्ध्वोभव प्रति विध्याध्यास्मदा विष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ।
 अथस्थिरा तनुहि यातुजनांजामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून्स्वाहा ।
 । ८। वारं । ३० सतेजातानि सुमतिं यविष्ठयईवते ब्रह्मणेगातुमैरत् ।
 विश्वान्यस्मै सुदिनानिरोयुम्नान्ययों विदुरोऽअभिवोत्-स्वाहा
 । ८। वारं । ३० सेवग्नेऽअस्तुसुभगः सुदानुर्यस्त्वा नित्येन हविषाय
 उक्थैः । पिप्रीसति स्वऽआयुपिदुरोणे विश्वेदस्मै सुदिनासा
 सदितिष्ठः स्वाहा । ८। वारं । ३० अर्चामिते सुमतिं योष्यर्वाक्संते
 वावाता जरतामियंगीः । स्वश्वास्त्वासुरथा मर्जयेमास्मे क्षत्राणि-
 धार्येरनुवून्स्वाहा । ८। वारं । ३० इहत्वा भूर्याचरेदुपत्मन् दोषा-
 वस्तदीं दिवां समनुदयन् । क्रीलन्तस्त्वा सुमनसः सपेमादियुम्ना
 तस्थिवांसो जनानाम् स्वाहा, । ८। वारं । ३० यस्त्वास्वश्वः
 सुहिरण्यो, अग्नेऽउपपातिवसुमतारथेन । तस्यत्रांताभवसि
 तस्य सखायस्तआधिथ्य मानुष्यं जुजोषत्, स्वाहा । ८। वारं ।
 ३० महोरुजामि बन्धुतावचोभिस्तन्मापितु गीतमादन्विषाय ।
 त्वंनोऽअस्य वचसश्चिकिद्धि होतर्यं विष्ठ सुकृतो दमूनाः स्वा-
 हा । ८। वारं जुहुयात् । ३० अस्वमजस्तरणायःसुशेवां अतन्द्रासो
 वृकाऽअश्रमिष्ठाः । तेषावचःसध्र्यंचोनिषद्याग्ने तवनःपान्त्वमूरः
 स्वाहा । ८। वारं० ३० येषावचोमामतेवन्ते अग्नेपश्यन्तो अन्ध-
 दुरितादरक्षन् । ररक्षतान्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्तइद्रिषवो
 नाह्वेभ्यः स्वाहाः । ८। वारं० । ३० त्वयावय स धन्यस्त्वोतास्त्वव
 प्रणीत्यश्यामवाजन् । उभाश्यासूदयसत्पतातेऽनुष्टुक्कृणुह्यह्वयाणः
 स्वाहा ८। वारं० । ३० आयतेऽअग्ने समिधाविधेम प्रतिस्तोम
 शश्यामानं गृभाय । दहाशसोरक्षसः पाण्यस्पान्द्रुहोनिदो मित्रम
 होऽअवद्यातस्वाहा । इत्यष्टवारं कृसरान्नं जुहुयात् । ३० गायत्र्या
 विश्वमिन्नऋषिः गायत्रीलुन्द सवितादेयताकृसरान्नहोमेविनियोगः

३० भुर्भुवःस्वाहा तत्सवितु० स्वाहा । ८ वारं जु० । ३० जातवेद
स्य कश्यप ऋषि स्त्रिष्टुष्टुन्दो दुर्गा देवता कृसरान्न होमे
विनियोगः । ३० जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो निद
हातिवेदः । सनः पर्पदतिं दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुदुरिता
त्यग्निः स्वाहा । ८ वारं जु० । ३० अंबकमिति वसिष्ठऋषिरनुष्टु-
ष्टुन्दः रुद्रोदेवता कृसरान्नहोमे विनियोगः । ३० अंबकंपजामहे
सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारिकमिववन्धनान्मृत्योर्मुञ्चीयमामृ-
तात् स्वाहा । ८ वारं जु० । इदं रुद्राय नमः । ७० स्पर्शः । ३०
सीरागुंजन्तीति सौम्यबुध ऋषिर्गायत्रीछन्दःऋत्विक्स्तुतिर्देवता
कृसरान्नहोमे विनियोगः । ३० सीरा गुंजन्तिकवयोर्युगा वितन्वते
पृथक् । श्रीरादेवेषु सुम्नया स्वाहा । वारं जु० ३० तामग्नि वर्णा-
मितिसौम ऋषिस्त्रिष्टुष्टुन्दो दुर्गादेवता कृसरान्नहोमे विनियोगः
३० तामग्निवर्णा तपसाञ्ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टां । दुर्गा
देवीं शरणमहंप्रपद्ये सुतरसितरसेनमः सुतरसितरसेनमः स्वाहा
८ वारं० । ३० वास्तोष्पत इत्यस्य वसिष्ठऋषि स्त्रिष्टुष्टुन्दो वास्तो
ष्पतिर्देवता कृसरान्नहोमे विनियोगः ३० वास्तोष्पते प्रतिजानी
ह्यह्मान्स्वावेशोऽन्नमीवोभयानः । यन्वेमहे प्रति तन्नो जुपस्वश-
न्नोभव द्विपदेशं चतुष्पदे स्वाहा ८ । वा० । ३० अग्निमील इत्यस्य
कण्वोमेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता कृसरान्नहोमे विनि-
योगः—३० अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं
रत्नधातमम् स्वाहा ८ । ३० क्षेत्रस्येति चामदेवऋषि रनुष्टुष्टुन्दः
क्षेत्रपालोदेवता कृसरान्नहोमे विनियोगः ३० क्षेत्रस्यपतिनावधं
हितेनेवजयामसि । गामश्वपोपयिन्त्वासनो मूलातीदृशे स्वाहा
८ वारं० । ३० गृणानेति जमदग्निर्ऋषिर्गायत्रीछन्दो मित्रावरुणौ
देवते कृसरान्नहोमे विनियोगः—३० गृणाना जमदग्निना योना
वृतस्यसीदतम् । पार्तसोम मृतावृथा स्वाहा ८ वारं जु० । ३० अग्निं
दृतमिति विरुपाक्षऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता कृसरान्न होमे
विनियोगः । ३० अग्निं दृतं पुरोदधे हव्यवाहमुपसृजे । देवांशः ।

आसादयादिह स्वाहा । इत्यष्ट वारं० इति कृसरहोमः । अधमिश्र
 होमः—ततः श्रीसूक्तं च दशमंत्रैः प्रतिमंत्राष्टसंख्याभिः समिदा-
 ज्यचरुद्रव्याणि जुहुयात्—३० हिरण्यवर्णामिति श्रीसूक्तस्य पंच-
 दशमंत्राणां आनन्दकर्मचिक्लीतेन्दिरासुतऋषयो मंत्रोक्ताश्छ-
 न्दांसि श्रीदेवता समिदाज्य चरुहोमे विनियोगः । ३० हिरण्य
 वर्णा हरिणींसुवर्णरजतस्रजाम् । चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो
 ममावह स्वाहा । एवमष्टवारं प्रतिमंत्रेण जुहुयात्—३० ताम्मऽआ-
 वहजातवेदो, लक्ष्मीमनपगामिनीम् यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं
 पुरुषानहम् स्वाहा । २। ३० अश्वपूर्वारथमध्यां हस्तिनाद् प्रवोधि-
 नीम् । श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीर्जुषताम् स्वाहा । ३। ३० कांसो
 स्मितां हिरण्यप्रकारामाद्रां ज्वलन्तीन्तृप्तां तर्प्यन्तीम् । पद्मे
 स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् स्वाहा । ४। ३० चन्द्रांप्रभासां
 यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् । तांपद्मनेमिशरण
 महं प्रपद्येऽलक्ष्मीमनश्यतां त्वांवृणोमि स्वाहा । ५। ३० आदित्य
 वर्णं तपसोऽधिजातो वनस्पति स्तवधृत्तोऽथ वित्तवः । तस्य फलानि
 तपसानुदन्तु मायाऽन्तरायारश्च बाह्याऽलक्ष्मीः स्वाहा । ६। ॐ
 उपैतुमां देवसखः कीर्तिश्च मणिनासह । प्रादुर्भूतोऽस्मिराष्ट्रेऽस्मि
 न्कीर्तिमृद्धिददातु मे स्वाहा । ७। ३० जुष्टिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं
 नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुदमेगृहान् स्वाहा ।
 ॥८॥ ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं
 सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् स्वाहा । ९। ॐ मनसः काममा-
 कृतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां-
 यशः स्वाहा । १०। ३० कर्ममेन प्रजाभूतामयिसंभवकर्म । श्रियं
 वासयमेकुले मातरं पद्ममालिनीम् । स्वाहा । ११। ३० आपः सृज-
 न्तु स्निग्धानि चिक्लीतवसमेगृहे । निचदेवीं मातरं श्रियं वासय
 मेकुले स्वाहा । १२। ३० आद्रां पुष्करिणीं पुष्टिंसुवर्णां पद्ममालिनी
 म् । चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोमऽआवह स्वाहा । १३। ३०
 आद्रायः करिणीं यष्टिंसुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यां हिरण्यमयीं

लक्ष्मीं जातवेदोमऽत्रावह स्वाह ।१४। ताम्मऽत्रावहजातवेदो
लक्ष्मी मनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यप्रभूतं गावो दास्यो ऽश्वा
न्विन्देयंपुरुषानहम् स्वाहा ।१५। इति श्रीसूक्तेन प्रतिमंत्रिणाष्टधा
पूर्वोक्तद्रव्यं हुत्वा । ततः पायसेन त्रयोदशसंख्यया सोमं चक्ष्य-
माणमंत्रेण जुहुयात् ३० त्वन्नः सोमेत्यस्यएन्द्रीविमदंऋपिः पंक्तिं
श्छन्दः सोमोदेवता पायसहोमेविनियोगः ३० त्वन्नः सोमत्रिश्व
तोगोपा । ऽअदाभ्योभव सेधराजन्नपस्त्रिधो विवोमदेमानोदुः
शंस ईशताविचक्षसे स्वाहा । इतित्रयोदशवारंहुत्वा । ततःस्रुवेण चतु
राज्यं गृहीत्वा चक्ष्यमाणेन रुद्रहोमं कुर्यात्—३० यातेरुद्रेति
प्रजापतिर्ऋपि रनुष्टुप्छन्दः एकरुद्रोदेवता आज्यहोमे विनियोगः
३० यातेरुद्रशिवातनू रघोरा ऽपापकाशिनी । तया नस्तन्वा शन्त-
मया गिरिशन्ता भिचाकशीहि स्वाहा ॥ इति रुद्रहोमं कृत्वा
अन्वारब्ध आचार्यःकुर्यात् ३० अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा । इदमग्नये
स्विष्टकृतेनमम । ततो नवाहुतिहोमः—३० भूरादिव्याहृतीनां
प्रजापतिर्ऋपिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि अग्निवायु सूर्यादे-
वताः प्रायश्चित्त होमेविनियोगः । ३० भूः स्वाहा इदमग्नयेन-
मम । ३० भुवः स्वाहा इदंवायवेनमम । ३० स्वः स्वाहा इदंसू-
र्यायनमम । ३० त्वन्नोअग्ने इत्यस्य वामदेव ऋपि स्त्रिष्टुप्छन्दः
अग्नीवरुणोदेवते प्रायश्चित्तहोमे वि० । ३० त्वन्नोऽअग्नेव्वरुणस्य
विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्टाः यजिष्टोवन्हितमः शोशुचानो
विवशाद्वेपाँ सिप्रमुमुग्ध्यस्मात्स्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम ।
३० सत्वन्नो अग्नेइत्यस्य वामदेव ऋपि स्त्रिष्टुप्छन्दः अग्नीवरु-
णोदेवते प्रायश्चित्त होमे० ३० सत्वन्नो ऽअग्ने ऽअवमोभवो
तीनेदिष्टोऽअस्या ऽउपसोव्युष्टौ । अवयदवनो व्वरुण र्तं० रणो
व्वीहिमृडीक र्तं० सुहवान ऽएधिस्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम ।
३० अयाश्चाग्ने इत्यस्यवामदेवऋपिस्त्रिष्टुप्छन्दो ऽग्निदेवता
प्रायश्चित्तहोमे० ३० अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपार्श्च सत्यमित्वमया
ऽअस्ति । अयानोयज्ञव्यहास्ययानोधेहिभेषजँस्वाहा इदमग्नये

नमम । ३० येतेशतामितिद्यामदेवऋषि त्रिष्टुप्छन्दो वरुणोदेवता
 प्रायश्चित्त० ३० येतेशतं ववरुणये सहस्रं यज्ञियाः पाशाञ्चिततामहान्तः
 तेभिर्नाऽश्रयसर्वि तो व विष्णुर्विश्वेसुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ।
 इदं ववरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्कं
 भ्यश्च नमम । ३० उदुत्तममिति शुनः शोफऋषि त्रिष्टुप्छन्दो वरुणो
 देवता प्रायश्चित्तहोमे० । ३० उदुत्तमं ववरुणपाशमस्मदवाधमं
 त्विमध्यमं श्रयाय । अथा ववपमादित्यव्रतेतवानागसोऽश्रदितये
 स्यामस्वाहा । इदं ववरुणाय नमम । ३० प्रजापतये स्वाहा—इदं प्रजाप
 तये नमम । ततो वहिर्होमः । ३० स्वाहा । संस्रवप्राशनम् । पवित्र
 प्रतिपत्तिः । प्रणीताविमोक्तः । ततो यजमानः पूर्णपात्रं ब्रह्मणे
 दद्यात्—अथेत्यादिसंकीर्त्यामुक्तोऽहं मूलशान्तिकर्मणः सांगफला
 प्तये, अपूर्णपूरणार्थं मिदंसदक्षिणं पूर्णपात्रं ब्रह्मणे तुभ्यममुक
 शर्मणे सम्प्रददे तत्सन्नमम ॥ ३० अक्रन्कर्म कर्मकृतः सहव्याचा
 मयोभुवा । देवेभ्यः कर्मकृत्वाऽस्ते प्रेतसचाभुवः । इति पठित्वा
 बलिदानं कुर्यात् । तत्रादौ पूर्वांक्तं ग्रह्यागोक्तं बलिदानपद्धत्यनुसा
 रेण नवग्रहादिभ्यो विनायकादिभ्यो दिक्पालेभ्यश्च वलीन्दत्वा ।
 ततो निर्ऋत्यादिभ्यो वलीन्द्यात्—भूमौ सदीपपायसदध्यक्षतवलिं
 वा संस्थाप्य, ३० निर्ऋतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्ति
 कायपसदीपवलिर्नमः ॥ इति सम्पूज्य ॥ इस्ते जलंगृहीत्वा—
 भोभो निर्ऋते, एतंसदीपं पायसवलिं भक्ष २ मम यजमानस्य
 सकुटुंबस्य आयुष्कर्ता क्षेमकर्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता
 भव, ३० मन्डलेशं चत्वांजात्वा मया भक्त्या निवेदितम् । इदमर्घ्यं
 मिदं पार्थदीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । इति वल्युपरि जलं विसृजेत् ॥
 एवं सर्वत्र—३० इन्द्राय नमः वलिं सम्पूज्य जलंगृहीत्वा भोभो-
 इन्द्रगते० । ३० अद्भ्यः सांगाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः
 सशक्तिकाभ्यो नमः सं० भो० आपः० ॥ ३० विश्वेभ्यो देवेभ्यो
 नमः सं० भो० विश्वेदेवा प्रमयजमानस्य आयुष्कर्तारः० । ३०
 विष्णवे नमः । भोभो विष्णो० । ३० वसुभ्यो नमः, भोभो वसवः०

द्यात्समुद्राच्छतव्रजारिपुणानावचक्षे । घृतस्यधारा अभिचाक
 तीमि हिरण्ययोव्वेतसोमध्यऽआसाम् । ५। सम्यक्स्वधन्तिसरि-
 षोन्धेनाऽअन्तर्हृदामनसापूयमानाः । एतेऽअर्षन्त्यूर्भयोघृतस्यमृगा
 ऽवक्षिपणोरीषमाणाः । ६। सिन्धोरिवप्राध्वनेशुघनासोव्वातप्रमि
 यःपतयन्तियहाः । घृतस्यधाराऽअरूपोनव्वाजीकाष्ठाभिन्दन्मूर्ति
 भिःपिन्वमानः । ७। अभिप्रवन्तसमनेवयोषाकल्याण्यः स्मयमाना
 सोऽअग्निम् । घृतस्यधारासमिधोनसन्तताजुषाणांहर्षतिजात
 वेदाः । ८। कन्याऽइवव्वहतुमेतवा ऽ उअञ्जयज्ञानाऽअभिचाकशी
 मि । यत्रसोमःसूयते यत्रयज्ञोघृतस्यधाराऽअभितत्पवन्ते । ९।
 अभ्यर्पनसुष्टुतिगव्यमाजिमस्मासुभद्राद्रविणानिधत्त । इमंयज्ञं
 नयतदेवतानोघृतस्यधारामधुमत्पवन्ते । १०। धामन्तेविश्वं भुवन
 मधिश्रितमन्तः समुद्रेहृद्यन्तरायुपि । अपामनीकेसमिथेषऽआ-
 भृथस्तमरयाम मधुमन्तंतऽऊर्भिमस्वाहा । ११। ३० प्रजापतेनत्वे
 तिहिरण्य गर्भऋषिस्त्रिष्टुष्टुन्दः प्रजापतिर्देवता पूर्णाहुतिर्होमे
 विनियोगः । ३० प्रजापतेनत्वदेनान्यन्योविश्वारूपाणिपरितावभू
 थ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुव्वयथँस्यामपतयोरयीणाम् स्वा
 हा । १। ३० पूर्णादर्वीनि, और्णनाभऋपिरनुष्टुष्टुन्दः इन्द्रोदेवतापूर्णा
 हुतिर्होमेविनियोगः । ३० पूर्णादर्विपरापतसुपूर्णापनरापत । व्व
 स्नेवविक्रीणाव्वहाऽइषमूर्जर्जर्दंशतक्रतो स्वाहा । ३० सप्ततेऽअ
 ग्नेऽइतिसप्तऋपय स्त्रिष्टुष्टुन्दोऽअग्निर्देवता पूर्णाहुतिर्होमे विनि
 योगः—३०सप्ततेऽअग्नेसमिधः सप्तजिह्वाः सप्तऽऋपयः सप्त-
 धाम प्रियाणी ॥ सप्तहोत्रोः सप्तघोत्वायजन्ति सप्तपेयानि राष्ट्रण-
 स्वघृतेनस्वहा । इतिपूर्वांक्तचतुर्दशमंत्रैरविच्छिन्नघृतधारभिरग्निं तृ
 प्त्वा, ततोघृताभिघारितं रक्तकौशेयसस्त्रवेष्टितंश्रीफलंस्रुवेकृत्वो
 त्थाय—३० मूर्ध्दानमितिभरद्वाजऋषिस्त्रिष्टुष्टुन्दः वैश्वानरोदेवता
 मृडाग्नौपूर्णाहुतिर्होमेविनियोगः । ३० मूर्ध्दानंदिवोऽअरतिंष्टुथि
 व्यावैश्वानरमृडाआजातमग्निम् । कविर्दंष्ट्रम्राजमतिर्धिजनाना
 मासन्नापात्रं जनयंतदेवाः स्वाहा—इनिपूर्णाहुतींहुत्वाऽअग्निं

मेधां प्रार्थयेत् । ॐ सदस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्यकाम्यम् ।
सनिम्मेधा मयासिप ॐ स्वाहा । १। - याम्मेधां देवगणाः
पितरश्चोपासते । तयामामद्यमेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा । २।
मेधाम्मे वरुणो ददातुमेधामग्निः प्रजापतिः मेधामिन्द्रश्च व्वायु-
श्च मेधांघाता ददातुनः स्वाहा । ३ । श्रद्धां मेधांगशाःप्रज्ञां विद्यां
पुष्टिं बलेश्रियम् । आयुष्यं द्रव्यमारोग्यं देहिमे हव्यवाहन । ४।
ततो वक्ष्यमाण मन्त्रैः प्रतिमंत्रं ललाटाच्चिबुकपर्गन्तं पाणिप्रतपन
पूर्वकं मुखं प्रोष्ठेत् । ॐ तनूपाऽअग्नेऽसि तन्वंम्मे पाहि । ॐ
आयुर्दाऽअग्नेऽस्यायुर्मेदेहि । ॐ व्वर्चोदाऽअग्नेऽसि व्वर्चोमेदेहि ।
ॐ अग्ने यन्मे तन्वाऽऊनंतन्मऽआपृण । ॐ मेधामे देवःसविता
आदधातु । ॐ मेधामे देवी सरस्वती आदधातु । ॐ मेधामश्वि
नौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ । ततो गालंभनं कुर्यात्—ॐ अंगानि
चमऽआप्यायताम् । सर्वांगान्युपस्पृशेत् । ॐ वाक्चमऽआप्याय-
तामितिमुखे । ॐ प्राणश्चमऽआप्यायताम्—नासिकायां । ॐ
चक्षुश्चमऽआप्यायताम्—नेत्रयोः । ॐ श्रोत्रं चमऽआप्यायताम्—
कर्णयोः ॥ ॐ यशोबलंचमऽआप्यायताम्—बाह्वोः ॥ अत्रोदकं
स्पृष्ट्वा तत स्त्र्यायुप करणं—ॐ श्याशुषं जमदग्नेः—इतिललाटे ।
ॐ कश्यपस्य श्यायुपम्—इतिग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेपुश्यायुपम्—
इतिदक्षिणांसे । ॐ तन्नोऽअस्तुश्यायुषम्—इतिहृदि । ततो रुद्र
कुम्भस्य मुग्धं वा दक्षिणतः स्पृष्ट्वा रुद्रैकादशिनीं, शतवारं त्र्यंबक
मंत्रं च जपेत् । ततो निश्च्यति कुम्भं रुद्रकुम्भं ग्रहादींश्च पंचोपचारैः
सम्पूज्य । शान्तिमण्डपस्योत्तरभागे, वा गृहांगणे गोमयेनोप-
लिप्य तत्र फलक पीठं संस्थाप्य तत्र श्वेतचक्रं प्रसार्य, तदुपरि
सपत्निपुत्रो यजमान उपविष्टः शङ्खवाद्यादिरवे जायमाने मङ्गलगी
तानि शृण्वन् पत्नीं वामभागे कृत्वा—संकल्पं कुर्यात्—अथेत्या
दि देशकालौ संकीर्त्य सपुत्र पत्निकोऽहं ममपुत्रस्यामुकचालकस्य
मूलनक्षत्रामुकपादजनन सूचितारिष्ट निवृत्तये शुभ फलप्राप्तये च
अभिषेकमंत्रैः शान्त्यन्त स्नानं करिष्ये—ततः सर्वोपधीभिरनु-

लिप्ताङ्गस्य नूतन वस्त्रं परिधाप्यमानस्य प्राङ्मुखो पविष्टस्य वा
 यजमानस्याचार्यादयः सर्वकलशोदकमेकीकृत्वाउत्थाय वक्ष्यमाण
 मन्त्रैरभिषेकं कुर्युः । तत्रमन्त्राः—३० अक्षीभ्यान्ते नासिकाभ्यां
 कर्णाभ्यां ह्युकादधि । यक्ष्मं शीर्षण्यंमस्तिष्काज्जिह्वाया विवृहा-
 मिते । १ । ग्रीवाभ्यस्तऽउष्णिहाभ्यः कीकसाभ्योऽअनृक्यात् ।
 यक्ष्मंदोषण्यंसाभ्यांवाहुभ्यांविवृहामिते । २ । आत्रिभ्यस्तेगुदाभ्यो
 वनिष्टोर्हृदयादधि । यक्ष्मंमतःसनाभ्यांयकनप्लाशिभ्योविवृहामिते
 । ३ । ऊरुभ्यान्तेऽअष्टीवद्भ्यां पाष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम् । यक्ष्मं
 श्रोणिभ्यां भासदाद्भंससो विवृहामिते । ४ । मेहनाद्वनं करणा
 व्लोमभ्यस्ते नखेभ्यः । यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तदिदं विवृहामिते ।
 ५ । अङ्गादङ्गाव्लोमोलोमनो जातं पर्वणि पर्वणि । यक्ष्मं सर्वस्मा-
 दात्मनस्तदिदं विवृहामिते । ६ । ततः पावमानी भिश्च ३० पुन-
 न्तुमापितरः १सोम्यासःपुनन्तुमापितामहाः । पुनन्तुप्रपितामहाः
 पवित्रेण शतायुषा । ७ । पुनन्तुमापितामहाः पुनन्तुप्रपितामहाः ।
 पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै । ८ । अग्नेऽआयुषं पिपवसऽ
 आसुवोर्जमिपंचनः । आरे वाधस्वदुच्छुनाम् । ९ । पुनन्तुमादेव
 जनाः पुनन्तु मनसाधियः । पुनन्तु त्विश्वाभूतानि जातयेदः
 पुनीहिमा । १० । पवित्रेण पुनिहिमा शुक्लेण देवदीव्यत् । अग्ने
 कृत्वा क्रतूँ २०१२ रनु । ११ । यत्तेपवित्रमर्चिष्यग्ने त्विततमन्तरा ।
 ब्रह्मतेन पुनातुमा । १२ । पवमानःसोऽअव्यनःपवित्रेण त्विचर्षणि ।
 यःपोता सपुनातुमा । १३ । उभाभ्यां देवसवितः पवित्रेण
 सवेनच । मांपुनीहित्विश्वतः । १४ । वैश्वदेवी पुनीती देव्यागा-
 यस्यामिमा बह्व्यस्तन्वो ऋषीतपृष्टाः । तयामदन्तः सधमादेपु
 ऋव्यंस्माम पतयोरपीणाम् । १५ । ३० आपोहिष्टा मयोभुव
 स्तानऽऊर्जं दधातन । महेरणाय चक्षसे । १६ । ३० योवः शिव
 भाजयते हनः । उशती रिवमातरः । १७ । तस्माऽ
 अरङ्गमाम वो यस्यक्षयाथ जिन्वथ । आपो जनयथाचनः । १८ ।
 अन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीनये । शयोरभिश्चवन्तुनः । १९ ।

ईशाना वार्याणांयक्षन्तीश्चर्षणीनाम् । आपोयाचा मिभेषजम् । २० ।
 अप्सुमेसोमोऽब्रवीदन्तविश्वानिभेषजा । अग्निं च विश्वशम्भुवम् । २१ ।
 आपःप्रणीतभेषजं व्यवस्थं तन्वे ३ मम । उयोक्चसूर्य्यहसो । २२ ।
 इदमापःप्रवहत् यक्षितं च दुरितं मयि । यद्वाहमभिदुद्रोह
 यद्वाशेषऽउताचृतम् । २३ । आपोऽअग्नान्वचारिपं रसेन समग-
 स्महि । पयस्वानग्नेऽआगहि तन्मासंसृज चर्षसा । २४ । ३० यतऽ
 इन्द्रभयामहे ततो नोऽअभयं कृधि । मद्यवल्लुग्धतव तन्नऽऽजतिभि-
 विद्विषो विमृधोजहि । २५ । त्वंहि राधस्पते राधसो महः द्यप-
 स्यासि विधतः । तंत्वा व्वयं मधवन्निन्द्रगिर्वेणःसुताषन्तो हवा-
 महे । २६ । ३० सहस्राक्षेण शतशारदेन शतायुषा हविषा हार्षमे
 नम् । शतं यथेमंशरदोन यातीन्द्रो विश्वस्य दुरितस्य पारम् । २७ ।
 शतं जीव शरदो वर्द्धमानः शतं हेमन्ताच्छतमुवसन्तान् । शत
 मिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्ददुः । २८ ।
 आहार्षन्त्वा विद्विन्त्वा पुनरागः पुनर्नव । सर्वाङ्ग सर्वते चक्षुः सर्व
 मायुश्च ते विदम् । २९ । ३० देवस्यत्वा सवितुःप्रसवेश्विनोर्वाहुभ्यां
 पूष्णो हस्ताभ्याम् । सरस्वत्यै व्वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पते
 श्रुवा साम्राज्ये नाभिषिं चामि । ३० । देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्वि-
 नोर्वाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । अश्विनो भैषज्येन तेजसे ब्रह्म-
 चर्षसायाभिषिंचामि । ३१ । देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्वाहु-
 भ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । सरस्वत्यै भैषज्येन व्वीर्यायान्नाया
 याभिषिंचामि । ३२ । देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्वाहुभ्यां
 पूष्णो हस्ताभ्याम् । इन्द्रस्येन्द्रियेण वलाय श्रियै च शसेऽभिषिंचामि
 । ३३ । ३० यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरंग-
 मंज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनःशिवसंकल्पमस्तु । ३४ । येन कर्मा
 ल्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विवदथेपुधीराः । यद पूर्वयत्न
 मन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु । ३५ । यत्प्रज्ञानमुत्
 चेतो धृतिश्च यः योतिरंतरमृतं प्रजासु । यस्मान्नऽऽकृते किंचन कर्म
 क्रियते तन्मे मनः ० । ३७ । येनेदंभूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृते

नसर्वम् । येनयजस्तायते सप्तहोता तन्मेमनः शिव० । ३८ । यस्मि-
 न्चतुः सामयजूँँपियस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभा द्विवाराः । यस्मिं
 रिचत्तर्द० सर्वमोतंप्रजानां तन्मेमनः ० । ३९ । सुपारथिरश्वानि
 धयन्मनुष्यान्नेनीयतेभी शुभिर्वाजिनऽहव । हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं
 जविष्ठं तन्मे० । ४० । ३० तच्छ्रैय्योरावृणीमहे गातुंयजपतये ।
 दैवी स्वस्तिरस्तुनः स्वस्तिर्मानुषेभ्यः । ऊर्ध्वजिगातुभेषज र्द०
 शन्नोऽअस्तुद्विपदेशं चतुस्पदे । ४१ । अतः परं शौनकोक्तं रष्टदिक्
 पाल मन्त्रैरभिषेकं कुर्यात्—३० योऽसौवज्रधरोदेवो महेन्द्रो गज
 वहानः । मूलजात शिशोर्दोषं माता पित्रोर्व्यपोहतु । १ । योसौ
 शक्ति धरोदेवो हुतभुग्मेव वाहनः । सप्तजिह्वः सदेवोऽग्निर्मूल
 दोषं व्यपोहतु । २ । योऽसौदंडधरोदेवो धर्म्मो महिष वाहनः ।
 मूलजात शिशोर्दोषं मातापित्रोर्व्यपोहतु । ३ । योऽसौखद्गधरो
 देवो निर्ऋतिराक्षसाधिपः । प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं गण्डान्त
 सम्भवम् । ४ । योऽसौपाशधरोदेवो वरुणश्चजलेश्वरः । नक्रवाहः
 प्रचेतानो मूलोत्थाऽव्यपोहतु । ५ । योऽसौदेवो जगत्प्राणो
 मास्तोमृगवाहनः । प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं बालस्य शान्तिदः । ६ ।
 यीऽसौनिधिपतिर्देवोगदाभृन्नरवाहनः । मातापित्रोः शिशोश्चैव
 मूलदोषं व्यपोहतु । ७ । योऽसाविन्दुधरोदेवः पिनाकीवृष वाहनः ।
 आश्लेषा मूल गण्डान्त दोषमाशु व्यापोहतु । ८ । विघ्नेशः क्षेत्र
 पोदुर्गा लोकपाला नवग्रहाः सर्वदोष प्रशमनं सर्वं कुर्वन्तु
 शान्तिदाः । ९ । ततोऽभिषेक विधौ पूर्वोक्तैः पौराणिकमन्त्रैः
 सुरास्त्वा मभिषिंचन्तिवत्यादिभि र्वाव्यासाष्टकेनाऽपिचाभिषिंच्य,
 ३० शांतिरस्तु पुष्टिरस्तु लुष्टिरस्तु बृद्धिरस्तु यच्छ्रैयस्नदस्तु यद्रोगः
 शोकः कष्टं दुःखं द्रारिचूं तद्द्वे प्रतिहस्तमस्तु, ३० भूर्भुवः स्वः,
 अमृताऽभिषेकोऽस्तु ॥ इत्यभिषिंच्य ततः सपत्नि पुत्रं यजमानं
 यस्त्रान्तरित कुम्भाभ्यां स्नापयित्वा, ततोयजमानः शुक्लवस्त्राणि
 परिधाप्य, पूर्वोक्त प्रकारेण घृतच्छाया दर्शनं कृत्वा स्नानवस्त्रा-
 ण्याचार्याय दद्यात् । ततो गोदानम्—गोदानपद्धत्युक्त प्रकारेणगां

सम्पूज्य देवादींस्तर्पयित्वा, आचार्यं सम्पूज्य संकल्पं कुर्यात्—
 अथेत्यादि देशकालो संकीर्त्यामुकराशिः सपत्नि पुत्रोऽहं ममास्य
 पुत्रस्य मूलक्षत्र प्रथमाद्यमुकपाद जनित सूचितारिष्ठ निर्धृति
 पूर्वक सर्वोपद्रव शान्त्यर्थं शुभफल प्राप्नयेच्च शौनकोक्त विधानेन
 कृतस्य मूलशान्तिकर्मणः साद्गुण्यार्थमिमां सवत्सां कृष्णांगां
 (गवाभावे गौनिष्कयीभूतं हिरण्यं रजतंवा) तथा मूलर्क्षदेव
 निर्ऋति सुवर्ण प्रतिमामधिदेव प्रत्यधिदेव सहितां सवस्त्र कुम्भां
 चआचार्यायामुक शर्मणेतुभ्यं संप्रददे, ततःप्रतिष्ठांकृत्वा प्रदक्षिणा
 चतुष्टयं विधाय, ततो रुद्रजापिनं ब्राह्मणं कृष्णमनड्वाहं च सम्पू-
 ज्य वृषभे चन्दनेन त्रिशूलचक्र चिन्हे कृत्वा—संकल्पः—अथेत्यादि०
 मूलशान्ति कर्मणि रुद्रैकादशिन्यादिपाठ कर्मणः साद्गुण्यार्थं श्री
 रुद्रप्रतिमां कृष्णमनड्वाहं सवस्त्रं रुद्रकुम्भंचामुकशर्मणे रुद्रजा-
 पिने सप्रतिष्ठितं तुभ्यंदास्ये, ३० तत्सन्नमम । ततःशान्तिसूक्तादिजाप-
 केभ्यो ब्राह्मणेभ्योऽपिदक्षिणांदत्या भूयसीदक्षिणा संकल्पंचकृत्वा
 यथांशविभज्य ततःआचार्यादयो यजमानस्यसपरिवारस्य पूर्वोक्त-
 पद्धत्यनुसारेण तिलकाक्षतादिरोपणं तत्तन्मंत्रै रक्षायन्धनं व्यायुष
 करणंच कृत्वाशीर्वादंदद्युः यजमानोऽपि प्रणिपत्यक्षमापयेत् ।
 ततः आवाहित देवानग्निंच सम्पूज्य—३० यान्तुदेवगणाः सर्वे
 पूजामादायमामकीम् । इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनायच । ॐ
 गच्छगच्छेति च विसृज्य, ततः पायसादि भोज्यपदार्थैः शतंपंचा-
 शद्वशवा ब्राह्मणान्यथाशक्तिभोजयेत् अनेन शान्तिकर्मणा श्री
 भगवान्यज्ञपुरुषो निर्ऋतिदेवश्च प्रीयेताम् । ततो ब्राह्मणान्भोज-
 यित्वा स्वजनैः सहसुंजीत ॥

इति मूलजनन शान्तिपद्धतिः ।



अथ आश्लेषा जनन शान्तिपरिभाषा—उक्तं च शान्तिस्तारे—आश्लेषायान्त-

जतानां शान्तिव श्याम्यत.परम् । जातस्यद्वादशाहेचरान्तिहोम समाचरेत् । मयम्भवेतुजन्मरक्षंमन्यस्मिन्वाशुभे
दिने । स्नातोभ्यगादिभिस्स्निग्धयेत्द्विजोत्तमान् । अत्रागिप्रवृत्तिरसह्यामूलवत् । विभवेदं च्छुभास्तु-
द्वयं वातश्लामतः । देवतास्थापने त्रेकमेकं रुद्राभिमंत्रणे । मूलदोषं प्रवारेण पुत्रभेनिक्षिप्य पूजयेत् । गोमया-
लेरितेदेशोत्पाद्युपरिशोभिते । एकैकं करयेत्स्वच्युतिहाद्वान्तिरतम् । तद्दुलैः कारयेद्यद्वाहृपीतसितासितैः ।
कर्णिकाशान्यसेद्वीचीन् स्थापयेत्तेपुत्रुम्भम् । आजिघ्नफलशैत्यानयाकलशस्थापनं शुभम् । इमंमंगलं मंत्रेण-
पूयेत्तीर्थवारिणा । पुत्रमंचवखण्यस्यैस्तत्समैः प्रपूजयेत् । सा.पल्लोनीरितदनयाच्छेदस्योपश्रितान् ।
कुंभोत्तरेण तत्रेण, आश्लेषाप्रतिमां दजेत् । निष्क, निष्का, पादैर्कारित्वास्त्राक्षितः । तत्पूर्वात्तरनक्षत्रे दक्षिणे-
त्तारयोर्दजेत् । रेन्द्रादीन् ज्ञानस्यन्तमित्तं च शिपूजयेत् । नक्षत्रदेवतेतिकेचिद् । मूलोत्तेन विधानेन पुत्रुम्भयोः शि-
मंत्रणम् । रद्वीहृदकुम्भे तु पूर्ववच्छेषमाचरेत् । मूलशान्तिरूपं वा मृतस्नानादिपुराणैश्चान्तमित्यर्थः । नमो-
मस्तुमर्षभ्यः पूजामन्त्रतीरितिः सर्पांश्चक्रिन्नेत्रश्चद्विभुजाः पोतवल्गवाः । फलकमिश्रास्तीक्ष्णदिव्याभूषण
भूषिताः । एतन्ध्यात्वाततोऽम्भस्यहोमं कर्म समाचरेत् । वसु, दारोच, मर्षण, आचार्यं स्थाप्याचरेत् ।
गुह्यान्तं कं निवृत्तं पदविगदाशशास्त्रतः । इदं सर्वं भ्रूोऽनुयात्साविप्रस्यधिदैवतम् । इदं हविं अष्टोत्तरशत-
वाधं अष्टाविंशतिमेव च । मूलं नक्षत्रवच्छेषहोमं कर्म समाचरेत् । पूर्णोऽस्यंस्तकर्मशिक्त्वायं पातके तथा कुम्भे-
नलंबाक्षिप्यमभिवेकमथाचरेत् । दास्युत्समेतस्य यजमानस्य पूर्ववत् । अभिर्दिचे सप्तमाचार्यं च द्विभि-
सहितस्तथा अभिनंजितकुंभाद्भिरभियेचनमारभेत् । तथा पीयूषमंत्रैश्चपत्सवैरभियेचयेत् । आश्लेषा मृष्ट-
जासस्यमातापित्रोर्नस्य च । अतुहातिकुलस्थानां दोषं सर्वव्यपीडतु । याऽसौ जगोश्चरोनाम अधिवेवेदुह-
रतिः । मातापित्रोः शिशोश्चैव गण्डान् च चन्द्रपोदतु । पितरः सर्वमूलानां चानुपितरः सदा । सन्निक्षत्र-
जातस्य वित्तं च ज्ञातिवाचनं । एवं कृतेऽभियेचे तु सर्पशांतिर्भवेद्दुष्टवम् । ततः शुक्राम्बरधरो यजमानः
सुभूषितः । दक्षिणमिस्ततो विज्ञानमूलवच्चरतोपयेत् । भुक्तवद्व्यश्चविश्रेभ्यः स्त्रीकुपाराशिरं गृही ।
इत्युत्तेन विधेनं नमदं प्रष्टुं चोपोहति । अथोत्तरांगपूजाः तत्रैसर्पांघं मन्त्रः—सर्पाधी घनमस्तु मन्नागा-
नां वगणाधिर । गृह्णाथ्यं मया दत्तं सर्वं रिष्टप्रशान्तये । मूलनक्षत्रवत्कुपत्सार्पणश्चेत्स्नानामतः ।

॥ इति शोणकोक्त आश्लेषाशान्ति विधिः ॥

॥ अथाश्लेषाशान्तिपद्धतिः ॥

अथाश्लेषोत्पन्नशिशोः पिताद्वादशाहे वाजातस्य सर्पेजन्मर्क्षं
वा चन्द्रतारानुकूले शुभदिने मूलनक्षत्रवद् मण्डपादिकं कृत्वा

मण्डपोत्तरभागेयज्ञान्तस्नानाऽभिषेकार्थंचमण्डपंविधाय, मंडपेस
 तिमंडपपूजां कृत्वा, गोमयोपलिप्तेदेशे शुभासनेउपविश्य, दीपं-
 प्रज्वलय्य, आचम्यसर्पैर्भूतोत्सादनं कृत्वा, शान्तिपाठंकृत्वा—
 संकल्पः—अद्येत्यादि देशकालौस्मृत्वा ममास्यपुत्रस्य आश्लेषा
 जन्मर्क्षसूचित पित्राथरिष्ठादि शान्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थ,
 गोमुत्रप्रसवपूर्वकं आश्लेषा शान्तिकरिष्ये, तत्पूर्वाङ्गत्वेन गणेशा
 दि पंचांगदेवतानां पूजनंचकरिष्ये ॥ ततो गणेशादीन्पूजयित्वा—
 आचार्यादीन् वृणुयात्—ततश्चतुरोया ब्राह्मणान्सम्पूज्य—संक
 ल्पः—अद्येत्यादि० अमुकोऽहं ममास्य आश्लेषानक्षत्रजातस्य,
 आश्लेषाशान्तिकर्म कर्तुंकारयितुंच आचार्यादीनां वरणंकरिष्ये—
 ततोवरणद्रव्यं, आचार्यब्रह्मासदस्य ऋत्विक् एकादशिन्यादि, अ
 प्रतिरथपाठशान्तिसूक्तादि पाठकास्कादिभ्यो दद्यात् ॥ इतिता
 न्वृत्वा—यथाविहितं कर्मकुरुध्वम्—यजमानोक्तिः ॥ ततःकरवामः—
 प्रत्युक्तिः । वापृथक्पृथक्वृणुयात्—तत्रादौगौमुखप्रसवशान्तिं पूर्वा
 ऋविधिनाकृत्वा । आचार्यो मंडपवागृहाभ्यंतरे शान्तिस्थलंपञ्च
 गव्येन वागंगादिजलेन, ३० आपोहिष्ठामयोभुवेतिऋग्भिः, भूमिं
 सम्प्रोक्ष्य मंडपेसति तत्पूजनंकृत्वा, तत्रादौनैऋत्यभागे स्थंडिले
 पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निं स्थापयित्वातद्र्चाथं द्रव्यंनियुंज्य ॥ ततो
 होमवेदीशानभागे गोमयोपलिप्तेस्थले रंगरंजितस्थलंनिर्माय—
 तत्रद्रोणप्रमाण त्रीहीन्निक्षिप्य, तदुपरिद्वरणरहितं रक्तकुम्भंसांस्था
 प्य, तत्कुम्भस्यचतुर्दिक्षुकुम्भचतुष्टयं संस्थाप्य, मध्यकलशाभ्यंतरे
 मूलपरिभाषोक्त शतमूलानितदभावे—तुलसी, सहदेवी, शतावरी,
 अपामार्ग, कुशान्निक्षिप्य, कलशस्थापनविधिना संस्थाप्यसम्पूज्य
 चतदुपरि तंडलपूर्णताम्रपात्रंस्थापयित्वा तत्ररक्तवस्त्रंप्रसार्य, ततः
 अग्न्युत्तारणपूर्वकं सुवर्णनिर्मितां श्रीरुद्रप्रतिमांसंस्थाप्यसंकल्पः—
 अद्येत्यादिसंकीर्त्य, अमुकोऽहं, आश्लेषाशान्तिकर्मणि रुद्रकलशो-
 परि, सुवर्णप्रतिमायां श्रीरुद्रस्य पूजनंकरिष्ये, ३० एतन्ते० इति
 पठित्वा, ३० भूर्भुवःस्वः, श्रीरुद्रात्रसुवर्णप्रतिमायां सुप्रतिष्ठितो

वरदोभव । इतिप्रतिष्ठाप्य, ३० ग्र्यं वक्यजामहे० । अनेनैव
वापूर्वाक्त वेदोक्त पूजापध्दत्यासम्पूज्य, तत्ररुद्रजापकःकुम्भंस्पृ
ष्ट्वा रुद्रैकादशिनीं पठेत् ॥ ततोऽष्टशतवारं ग्र्यं वकमन्त्रं, पावमा
नीश्च, ३० पुनन्तुमापितरः, इत्यादिनव, सकृज्जपेत् ॥ ततश्चप्रतीर
थादिसूक्त जापकःपूर्वाक्त मूलशान्त्युक्तप्रकारेण पूर्वादिकुम्भान्स्पृ
ष्ट्वा चतुर्भुक्कुम्भेषु तत्रोक्तानि मन्त्रसूक्तानि जपेत् ॥ (ग्रंथविस्तारा
त्रात्रसंग्रहीतानि) तत्ररुद्रकुम्भोच्चारभागेचतुर्विंशतिदलंकमलं कर्णिक
कासहितं, पिष्ठादिनाविलिख्य, रंगेन पूरयित्वा तन्मध्ये कर्णिकायां
सुश्लक्ष्णं सुवर्णकलशं वारजत, ताम्रमृदन्यतमकलशं, संस्थाप्य
तत्राभ्यन्तरे शतमूलानितदभावे, विष्णुकान्ता शतावरी सहदेवी
कुशातुलसीश्चकुम्भं पंचसुगन्धिद्रव्यं सप्तमृदादिप्रक्षिप्य, कलश
स्थापन पूजनविधिना-संस्थाप्य सम्पूज्यच, तदुपरिताम्रादिपूर्ण
पात्रेश्वेतवस्त्रोपरि, अष्टदलकमलं विलिख्य कर्णिकायां, अग्न्यु
च्चारणपूर्विकां सर्पाकृतिं, आश्लेषादेवसर्पप्रतिमां, तदक्षिणे अधिदे
वतागुरोः, तद्वामे प्रत्यधिदेवता पितृशृणांप्रतिमाः संस्थाप्य, आवा
हनं कुर्यात्-३० भूर्भुवःस्वः मध्ये सुवर्णप्रतिमायां, आश्लेषानक्षत्र
देवाः सर्पाः, इहागच्छन्ति वृहतिष्ठन्तु पूजार्थं वा आवाहयामि स्थाप
यामि । तदक्षे-३० भूर्भुवःस्वः सर्पाधिदेवपुष्पनक्षत्राधिपगुरो
इहागच्छेहृतिष्ठपूजार्थत्वां आवाहयामि स्थापयामि । तद्वामे-
३० भूर्भुवःस्वः सर्पप्रत्यधिदेवाः मयानक्षत्रेशाः पितरः, इहागच्छ
न्ति वृहतिष्ठन्तु, पूजार्थं वा आ० स्था० । ततो भूमौ चतुर्विंशतिदलेषु
पूर्वादिक्रमेण-पूगीफलानि साक्षतपुंजानि प्रतिमावासंस्थाप्य
तत्रैवक्रमेण-३० भूर्भुवःस्वः पूर्वफाल्गुनीदेवभग, इहागच्छेह
तिष्ठपूजार्थं स्थापयामि । एवं सर्वत्र-३० भू० उत्तराफाल्गुनीदेव
अर्धमन, इहा० । २ । ३० भू० हस्तदेवरवे इहा० । ३ । ३० भू०
चित्रादेवत्वष्टः इहा० । ४ । ३० भू० स्वातीदेव, वायो, इहा० । ५ ।
३० भू० विशाखादेवौ शाक्राग्नी इहागच्छतम्, इहतिष्ठतं पूजार्थं
वामावाहयामि स्था० । ६ । ३० भू० अनुराधादेवमित्र, इहा० । ७ । ३० भू०

ज्येष्ठादेवइन्द्र, इहा० । ॥८॥ ३० भू० मूलदेवनिर्ऋतेइहा० ॥९॥
उदकस्पर्शः—३० भू० पूर्वाषाढादेवतोय, इहा० ॥१०॥ ३० भू०
उत्तराषाढादेवा विश्वेदेवाः इहागच्छन्त्वितिष्ठन्तु पूजार्थं युष्मा-
न्वआवाहयामि स्थापयामि ॥११॥ ३० भू० अत्रणदेवविष्णो इहा०
॥१२॥ ३० भू० धनिष्ठादेववसवः इहागच्छन्त्वितिष्ठन्तु पूजार्थं
व आवाहयामि स्था० ॥१३॥ ३० भू० शतभिषग्देववरुण इहा०
॥१४॥ ३० भू० पूर्वाभाद्रपदादेव, अजचरण इहा० ॥१५॥ ३०
भू० उत्तराभाद्रपदादेव अहिर्बुध्न्य इहा० ॥१६॥ ३० भू० रेवती
देवपूषन्, इहा० ॥१७॥ ३० भू० अश्विनीदेवौ दस्यौ इहागच्छन्तं इह-
तिष्ठन्तं पूजार्थं युवामावाहयामि स्थापयामि ॥१८॥ ३० भू० भर-
णीदेवयम इहा० ॥१९॥ ३० भू० कृत्तिकादेव अग्ने इहा० ॥२०॥
३० रोहिणीदेव प्रजापते, इहा० ॥२१॥ ३० भू० मृगशिरसोदेव
सोम इहा० ॥२२॥ ३० भू० आर्द्रादेवशिव इहा० ॥२३॥ ३० स्प०
ॐ भू० पुनर्वसुदेव अदिते इहा० ॥२४॥ एवं नक्षत्रदेवान्संस्थाप्य
एतन्तेतिपठित्या । ३० भूर्भुवः स्वः कर्णिकामध्ये कलशोपरि
प्रतिमासु आश्लेषानक्षत्रदेवताः सर्पाः साधिदेव प्रत्यधिदेव गुरु
पितरसहिताः तथा भूमौ कमलदलेषु पूर्वाफाल्गुन्यादिचतुर्विंशति
नक्षत्रदेवताः भगाद्यदितिपर्यन्ताः इहागच्छन्त्वितिष्ठन्तु सुप्रति-
ष्ठितावरदाभवन्तु । इति प्रतिष्ठाप्य, पूजासंकल्पः—अद्येत्यादि
देशकालौ संकीर्त्या ऽमुकोहंममास्य बालकस्यामुकस्य आश्लेषान-
क्षत्रामुकपादजनित सूचितारिष्टनिरसनपूर्वकं सर्वोपद्रव शान्त्यर्थं
चतुर्विंशतिदलोपरि प्रतिमासु आवाहित सर्पाद्यदितिपर्यन्तानां
साधिदेवप्रत्यधिदेव सहितानां यथालब्धोपचारेण पूजनं करिष्ये—
तत्रादौ कलशोपरि सर्पान्ध्यायेत् ३० सर्पारक्तास्त्रिनेत्राश्च द्विभुजाः
पीतवस्त्रकाः । वरदाभयहस्ताश्च दिव्याभरणभूषिताः । तदक्षेगुरुम्
३० पीताम्बरः पीतवपुः किरीटीचतुर्भुजोदेवगुरुःप्रशान्तः । दधाति
दंडं चक्रमंडलं च तथाक्षसूत्रं चग्दोऽस्तुमह्यम् । वामेपितृन्-३०
शुक्लावराः शुक्लगन्धाःशुक्लयज्ञोपवीतिनः । आत्मनोऽभिमुग्वा-

सीना ज्ञानमुद्रानिरायुधाः । इतिध्यात्वा सर्पपूजार्थमंत्रः—ॐ
 नमोऽस्तुसर्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु । येऽन्नतरिक्षेयेदिवितेभ्यः सर्पे
 भ्योनमः । ॐ सर्पेभ्योनमः इति संपूज्य, गुरुपूजनेमंत्रः—ॐ बृह-
 स्पते ऽश्रति यददयोऽअर्हाङ्गमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदय-
 च्छुवसऽऋतप्रजात तदस्मासुद्रविणं धेहिचित्रम् । ॐ गुरवेनमः
 सम्पूज्य, पितृपूजनेमंत्रः—ॐ पुनन्तुमापितरःसोम्यासः पुनन्तुमा-
 पितामहाः पुनन्तुप्रपितामहाःपवित्रेणशतायुषा । ॐ पितृभ्योनमः
 संपूज्य अन्येषां पूर्वाफाल्गुन्यादिदेवानां नाममंत्रैर्वा पुरुषसूक्तेन
 पूजनं कुर्यात् । ततो होमस्थंडिलोत्तरे कलशस्थापन विधिना कलशं
 संस्थाप्य सम्पूज्य तत्रैवकलशे सूर्यादिनवग्रहान्साधि प्रत्यधिदेव-
 सहितान् ग्रहयागोक्तपद्धत्यनुसारेणवाञ्छ, लोकपालक्षेत्रपाला
 दींश्चावाहयेत् तेनैवविधिना संपूज्य, ततो होमवेद्यां ब्रह्मोपवेश-
 नादि अर्धवत्प्रोक्षणान्तं कर्मकृत्वा, होमद्रव्याणि, चरुपायसंश्रप-
 पित्वा कृसरान्नं च पाचयित्वा, समिदाज्यादि संपाद्यपर्युक्ष्यच,
 वरदनामाग्निं ॐ एतंते० पठित्वा ॐ भू० वरदनामाग्ने इहाग-
 च्छेहतिष्ट सुप्रतिष्ठितो वरदोभव, ॐ वरदनामाग्नयेनमः सम्पू-
 ज्य रेखाभ्योनमः ॐ जिह्वाभ्योनमः सम्पूज्य, ततोऽग्निं प्रणीत-
 योर्मध्ये संस्त्रवधारणार्थं प्रोक्षणीपात्रनिदध्यात् ततो यजमानो
 द्रव्यत्यागंकुर्यात्—संकल्पः—अथेत्यादि देशकालौ संकीर्याऽमुकोहं
 सग्रहयाग, आश्लेषा शान्तिकर्मणि तत्र प्रजापतिं, इन्द्रं, अग्निं,
 सोमं, घृताहुतिभिः समिच्चर्वाज्य तिलाहुतिभिरष्टसंख्याभि
 नैवग्रहान् तदधिदेवताः प्रत्यधिदेवताश्चताभिश्चतुःसंख्याभिराहु-
 तिभिः पंचलोकपालान्दशदिक्पालांश्चद्विद्विद्विःसंख्याभिःसमिच्चर्वा
 ज्याहुतिभिःसर्पान् प्रतिद्रव्यमष्टोत्तर शतसंख्याभिर्धृतमिश्रपायस
 अधिदेवंगुरुं प्रत्यधिदेवान्पितृभ्यश्च प्रतिद्र-
 राहुतिभिर्भगाद्याश्चतुर्विंशतिदेवता
 अष्टसंख्याभिराहुतिभिः रत्नोद्यसूक्तदेवान् पंचदशभि ऋग्भिं
 प्रत्युगष्ट संख्याभिः कृसराहुतिभिः सवितारं, दुर्गा, द्यंचक

ऋत्विक्स्तुतिं दुर्गा, वास्तोष्पतिं अग्निं क्षेत्राधिपतिं मित्रावरुणौ
 अग्निं चाष्टसंख्याभि राहुतिभिः सोमं च षोडश संख्याभिराहुतिभिः
 रुद्रं चतुर्गृहीतेनाज्येन, स्थिष्टकृन्मंत्रग्न्यादि प्राजाप्रत्यान्तांश्चाज्येना-
 हंघत्ते—इदं संपादितं द्रव्यं यथा दैवतमस्तुनमम, तत आचार्यो
 रज्जोघ्नसूक्तेन रक्षासूत्रं मभिमन्थ कलशोपरिधृत्वा, ब्रह्मणान्वार-
 रब्धो दक्षिणं जानुनिपात्याघारावाज्यभागौ च हुत्वा, अन्वारम्भं
 त्यक्त्वा ग्रहयागोक्त होमपद्धत्यनुसारेण, आदित्यादि दिक्पाला
 लान्तेभ्यो देवताभ्यो समिच्चर्वाज्यं तिलाहुतिभिर्हुत्वा, ततो
 गोप्रसवहोमं पूर्वांक्त प्रकारेण विष्णवादिभ्यो हुत्वा, ततो घृतमि-
 थ्रितेन समित्तिलपायसादिद्रव्येण प्रधानहोमं अष्टोत्तरशतं, सर्पे-
 भ्यो वक्ष्यमाणमंत्रेण कुर्यात्—३० नमोस्तुसर्पेभ्य इति प्रजापति
 ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सर्पादेवताः होमेधिनियोगः—३० नमोऽस्तुसर्पे-
 भ्योयेकेच पृथिवीमनु । येऽग्रन्तरिक्षेयेदिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः ।
 स्वाहा । इदं सर्पेभ्योनमम । इति १०८ वारं जुहुयात् । ततोऽधिदेव
 बृहस्पतये २८ वारं ३० बृहस्पते, इति गृत्समदऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो
 बृहस्पतिर्देवता होमेधिनियोगः ३० बृहस्पतेऽग्रतियदर्योऽग्रर्हाद्यु-
 मद्विभातिः क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छ्रवसः ऋतप्रजात तदस्मासुद्र-
 विण्धेहिचित्रम् स्वाहा इदंबृहस्पतयेनमम २८ वारं हुत्वा । ततः
 प्रत्यधिदेवपितृभ्यो ऽष्टाविंशतिसंख्याभि जुहुयात् । ३० पुनन्तुमा
 पितर इति प्रजापतिऋषि रनुष्टुप्छन्दः पितरो देवता होमेधिनियोगः
 ३० पुनन्तुमापितरः सोम्यासः पुनन्तुमापितामहाः पुनन्तुप्रपि-
 तामहाः पवित्रेण शतायुषा । पुनन्तुमा पितामहाः पुनन्तुप्रपिता-
 महाः ॥ पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवे स्वाहा ॥ इदंष्टु
 भ्योनमम, ७०स्प०। ततो भगादि चतुर्विंशति नक्षत्रदेवभ्यो ऽष्ट
 संख्याभिर्नाममंत्रैः पायसेन वा यवाज्यतिलै जुहुयात् । ३० भगा-
 यनमः स्वाहा० । इदं भगाय नमम, एवं सर्वत्र ३० अर्थ्यम्पेनमः
 स्वाहा० । ३० सूर्याय नमः स्वाहा० । ३० त्वष्ट्रे नमः स्वाहा० ।
 ३० वायवे नमः स्वाहा । ३० शक्राग्निभ्यां नमः स्वाहा, इदं शक्रा-

ग्निभ्यां नमः । ॐ मित्राय नमः स्वाहा० । ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा०
 ॐ निर्ऋतये नमः स्वा० उ० स्प० । ॐ तोषाय नमः स्वाहा० । ॐ
 विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः स्वाहा—इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।
 ॐ विष्णवे नमः स्वाहा० । ॐ वसुभ्यो नमः स्वाहा० । इदं वसुभ्यो
 नमः । ॐ वरुणाय नमः स्वाहा० । ॐ अजचरणाय नमः स्वाहा० ।
 ॐ अहिर्बुधनाय नमः स्वाहा० । ॐ पूष्णे नमः स्वाहा० । दम्नाभ्यां
 नमः स्वाहा० । इदं दम्नाभ्यां नमः । ॐ यमाय नमः स्वाहा० ।
 ॐ अग्नये नमः स्वाहा० । ॐ ब्रह्मणे नमः स्वाहा० । ॐ चन्द्र-
 मसे नमः स्वाहा० । ॐ रुद्राय नमः स्वाहा० । उ० स्प० । ॐ अदित्ये
 नमः स्वाहा, इदमदित्ये नमः । अनः परंप्रत्येक मंत्रेणाष्ट संख्यया
 कृष्णवंपाजेत्यारभ्य याते रुद्रेत्यन्तै मूलशांतिहोमोक्तमंत्रै जुहु-
 यात्—ग्रंथविस्तारभियाज्ञात्रसंग्रहीताः । उदकं स्पृष्ट्वा—ततः स्वष्ट
 कृतं हुत्वा ब्रह्मणान्वारब्धो भूरादिनवाहुतिभिर्हुत्वा प्रणितावि-
 मोकान्तं कृत्वा पूर्णाहुतिं कुर्यात् तद्यथा साचार्योपजमानः पूर्णा-
 हुतिं कुर्यात्—तत्र संकल्पः—अथेत्यादि देशकालौ संकीर्त्या मुकरा-
 शि रमुकोऽहं ममास्य पुत्रस्थाश्लेषा नक्षत्र जनन शान्ति होम
 कर्मणा न्यूनातिरिक्त दोषपरिहारार्थं श्रीपरमेश्वर प्रीतये मृड-
 नामाग्नौ पूर्णाहुति होमं करिष्ये, ततः श्रीफलं रक्त कौपेय वस्त्र-
 वेष्टितं पूगीफलं वासुदेविधाय, मूलशान्त्युक्त प्रकारेण, अंगालंभ
 नान्तं कर्म कृत्वा, उदकं स्पृष्ट्वा, मूलशान्तिवत् रुद्रकुंभं, सार्पकुंभं च
 संपूज्य—ॐ इयं वरकयजामहे० मंत्रेण रुद्रं, ॐ नमोस्तु सपेभ्यो धेके
 च पृथिवीमनु । येऽन्नतरिक्षे देवितेभ्यः सपेभ्यो नमः ॥ इति
 प्रसादयित्वा, ततः स्नानमण्डपे श्वेत वस्त्रं प्रसार्य तदुपरि शत
 मूलानिवा श्रीपर्णा कुशादिकान् विकीर्य, तत्र उपजमानः सपत्नि
 पुत्रः पद्मासनेनोपविशेत् तत्र संकल्पः—अथेत्यादि संकीर्त्या
 मुकराशिरमुकः सपत्निपुत्रोऽहम्—ममपुत्रस्य आश्लेषा नक्षत्रामुक
 पाद जनन सूचित मातापित्राश्चरिष्ट दोष परिहारार्थं शुभाप्तये च
 भिवेक मन्त्रैर्गजान्तस्नान महं करिष्ये, ततश्चाचार्यादयो ब्राह्मणाः

उत्थाय, पूर्वोक्त मूलशान्त्यभिषेक मंत्रैः ४१ अभिषिञ्च्य, ततोऽभिषेकपद्धत्युक्तैः सुरास्त्वामित्यादिभिरभिषिञ्च्य, वक्ष्यमाण मन्त्रैश्चाभिषेकं कुर्यात्—३० आश्लेषा ऋक्षजातस्य मातापित्रोर्धनस्य च । आतृजानि कुलस्थानां दोषं सर्वव्यपोहतु । पितरः सर्वभूतानां रक्षन्तु पितरःसदा । सर्पनक्षत्रजातस्य वित्तं च ज्ञातिवांधवान् । इत्यभिषेकं कृत्वा, सहस्रधाराभिः स्नात्वा नूतन वस्त्रपरिधानं कृत्वा घृतह्यायादर्शनं कुर्यात्, ततो गोदानादि संकल्पं कुर्यात्—ततः सवत्सांगामानास्य, गोदानपद्धत्युक्त विधिना सम्पूज्य ब्राह्मणं च, संकल्पं कुर्यात्—अथेत्यादि संकीर्त्यामुकराशिरमुकं शर्मा सपत्निपुत्रोऽहं ममास्य पुत्रस्याश्लेषानक्षत्रोत्पन्नस्य मातापित्रोःसर्वारिष्ट निवृत्तिपूर्वकं शुभफलाप्तये, कृतस्याश्लेषा शान्ति होमकर्मणः साद्गुण्यार्थं इमांसवत्सांगां आचार्याय तुभ्यंदास्ये, ३० तत्सन्नमम, ततःप्रतिष्ठांकृत्वा, ततोऽश्लेषां कृष्णमन्त्रवाहं च—संपूज्य—संकल्पः—अथे० अमुकोऽहं आश्लेषाशान्तिकर्मणः साद्गुण्यार्थं श्रीऋद्रीतये इममन्त्रवाहं ऋद्रीतं तुभ्यंदास्ये, ततःप्रतिष्ठांकृत्वा ॥ ऋत्विक्सदस्यादि ब्राह्मणान्सम्पूज्य—अथेत्यादि० अमुकोहं आश्लेषाशान्तिकर्मणःसाद्गुण्यार्थं ब्रह्मसदस्यर्त्विक्सप्तशती शान्तिकाध्याय सूक्तदिपाठकारकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो इमांश्चिष्णां यथाशंविभज्यदास्ये—तथेमांभूयसीदक्षिणांचान्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्यदास्ये, ३० तत्सन्नमम, ततश्चाचार्यादयःपूर्वोक्त प्रकारेण अभिषेकं मन्त्रतिलकाक्षतारोरणं च कृत्वा रक्षाबंधनादि आशीर्वादं दद्युः ॥ तत उत्तराङ्गपूजनं कृत्वा—ताम्रपात्रे सफलार्घ्यं गृहीत्वा—३० सर्पाधीशनमस्तुभ्यं नागानां च गणाधिप । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सर्वारिष्टप्रशांतये । इत्यर्घ्यं दत्वा—३० यान्तु देवगणाः ॥ इति देवविस्तृत्य ॥ अग्निं च विस्तृत्य, यजमानस्य महानीराजनं कारयित्वा, ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥

इत्याश्लेषाजननशान्तिपद्धतिः ॥

॥ अथयमलजनन शान्तिपरिभाषा ।

अथ कात्यायनोक्त यमलजनन शान्तिः—महातोगमलजनः प्रादशिवतविधिवा-
हगम्यागो, रसाभायागौ रंसी गद्विषो वज्रवना विकृति संन्प्रापदिवसीभन्तृपूंसंभ्राह्मण (चापराष्ट्र-
तारातुकूलेऽन्निमन्शुं दिनेऽपि) शूर्याक्षौ गृह्णाणावप. दमुभन्तृत । प्लवचतुम्बग. स्वत्यसामेवराह
गौ सर्परातेगामिभ्रान्दरेनहृषयदूर्वाकुप धान्द्रेण्टीरलतान्पूर्य, गयीवीभिस्मरतोस्त्वाधित्त, प्रादि-
ष्टेनितिष्टमि., कयानशियन, इतिद्वभा, रंभद्रेण, पंचरास्त्रेण, इन्नापः प्रवहापति, धरापनप, इतिस्त्वा-
त्वा, भलंकुरयती शंभे हृषेरपलप्रनारतं (पातोरात्रेणित्वाऽऽश्चभागादिपूद'ड. च्यादुतीजुहोति, पूर्वांके
रनानभ्रैः, स्थालीग. वस्वहोति, अमन्येस्वाहा, सोमायस्वाहा, परमान्तराहा, वाचस्वाहा, गान्धा-
दस्वाहा, मरुद्भृ. र. स्वाहा, यमाय वाहा, अन्तःप्रायस्वाहा, गृह्यवे. स्वाहा, एषाने स्वाहा, अमन्येऽपिष्टकृतेरवाहं,
श्री, एतेषामहोरातेऽभूयप्रकृताः शंभेनार्थ. प्रदिस-संभिराप्ररिद्वन्मोकमापुजालंवाप्येरादुसुम्भ
प्रभलनं, अमनरागना नभंभेगृ. वपोदिव कुननापे सीर संपेने छुप्रध्व. विनारेऽन्येपूयातेषुभूकम्पौरत्त-
भात काक सी रागम (मैतुन) प्रेक्षाणा श्वेनमेप्रद शान्तिरोक्षविधिनाकृत्वा अर्चयत्स्वदत्त ब्राह्मण-
भोजयिस्व स्वर्सापि वाऽऽतिप. प्रनिष्टयताभिर्भवेतीति ॥

अथयमलजननादिशान्तिपद्धतिः ।

अथ यजमानः प्रसवदिवसाद्दशाहोर्ध्व, नामकर्म दिवसे
वा चन्द्रतारानुकूले शुभेऽन्दि, प्रातर्नित्यकर्मसमाप्य गृह्णाभ्यंतरे
पूजास्थलमागत्य, प्लक्ष १ और्दुवर २ घट ३ अश्वत्थ ४ शमी
५ देवदारु, ६ वृक्षाणां कपायं (रसं) एकीकृत्य, अष्टौमृगमय
कलशानापूर्य तत्र गौरसर्पप हिरण्य दूर्वाकुरात्र पल्लवान्प्रक्षिप्य,
संस्थाप्य च, आचम्य भूतोत्सादनादि कर्मकृत्वा संकल्पं कुर्यात्—
अद्येत्यादि० असुकरादि सपत्निकोऽहं ममयमल जननेन सूचिता
रिष्ट निरसनद्वारा सर्वोपद्रव शान्त्यर्थ स्वस्तिवाचन गणेशादि
पंचांग देवता पूजनपूर्वकंकपायाष्टकलश स्थापनं तैः स्नानं तदनं-
त्तरं-कात्यायनोक्त विधानेन होमं गोदानंच करिष्ये ततोब्राह्मणां,
अभोजयिष्ये, ततः स्वस्तिवाचनं पठित्वा-गणेशादि पंचांगदेवा-
न्सम्पूजय, कलश स्थापन पूजन प्रकारेणाष्टौ कलशान्संस्थाप्य

संपूज्य च, आचार्यं वृणुयात्—आचार्यं ब्राह्मणं संपूज्यसंकल्पः—
अथेत्यादि० अमुकराशि रमुकः सपत्निकोऽहं कर्तव्यैतद्यमलजनन
शान्तिकर्मणि, आचार्यकर्मकर्तुमेभिर्वरणद्रव्यैरमुक शर्माणंब्राह्मण
माचार्यत्वेनत्वांवृणे, कर्मकुरु, करवाणि, ततः सपत्नीकं यजमानं
गृहांगणे पूर्वाभिमुख उपवेश्य, पत्नीं वामतः कृत्वा-आचार्यो वक्ष्य
माण मंत्रैः कलशाष्टकधारिणायथाक्रमेणाष्ट वारं, मंत्रान्पठित्वा
स्नापयेत्, तत्रमंत्राः—३० आपोहिष्टा मयोभुवस्तानऽज्ज्जैदधा-
तन । महेरणाय चक्षुषे । १। योवः शिवतमोरस स्तस्यभाजयते
हनः । उशतीरिवमातरः । २। तस्माऽअरंग मामवोयस्य क्षयाद्य
जिन्वथ । आपोजनयथा चनः । ३। ३० कयानश्चित्रऽआभुवदृती
सदावृधः सखा । कयाश चिष्टयावृता । १। कस्त्वासत्योमदानाम
र्ते० हिष्टो मत्सदन्धसः । दृढाचिदास्तेव्वसु । २। ३० त्रातारमिन्द्र
मवितारमिन्द्रर्ते० हवे हवे सुहवँशूरमिन्द्रम् । ह्यामिशकं पुरुहूत
मिन्द्रँस्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ॥ इतिपंचेन्द्रसूक्तं ॐ व्वरुण
स्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कंभसर्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋत सदन्यसि
व्वरुणस्य ऋतऽसदनमसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥ इ० पंच
वारुणसूक्तं । ३० इदमापः प्रवहता वद्यं च मलंचयत् । यच्चाभि
दुद्रोहा नृतं यच्चक्षेपेऽअभीरुणम् । आपोमातस्मा देनसः पवमानश्च
मुंचतु । ॐ अपाघमप किल्बिषमप कृत्यामपोरपः । अपामार्गत्व
मस्मदप दुस्त्वण्यर्ते० सुव । एतैर्मंत्रैर्दम्पत्योः स्नानं, अष्टकलश
जलै रष्टधा । मंत्रं पठित्वा अभिषेकं कृत्वानव्यवस्त्रैरलं कृत्य,
होमवेदी समीप मागत्य तत्र कुक्षेपूपविष्य, पत्नीं दक्षिणतः कृत्वा,
संकल्पः—अथेत्यादि संकीर्त्यामुकोहं सपत्निकः । यमलजनन होम
कर्मणि, पंचभू-संस्कारपूर्वक मग्निस्थापन महं करिष्ये, ततो होम
पद्धत्यापंचभू संस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं कुशकंडिका-विधानं ब्रह्मो
पवेश नादि कर्मकृत्वा, द्रव्यदेवताभि ध्यानपूर्वकं द्रव्यत्यागं
कुर्व्यात्—अथेत्यादि सपत्निकोऽहं-यमल जनन शान्तिकर्मणि-
कात्यायनोक्तविधानेन,—प्रजापतिं, इन्द्रं, अग्निं, सोमं, आउयेन

अपः इन्द्रं, वरुणं, अपः, अपामार्गं, आज्येन, नतः अग्न्यादी-
 न्स्वष्टकृदन्तान् स्थालीपाकेन, महाव्याहृत्यादि-प्रायश्चित्तादेवताः
 प्रजापतिं चाज्येनाहं यक्ष्ये—एतदाज्यादि द्रव्य माधाराज्य भाग
 देवताभ्यः प्रधानदेवताभ्यउत्तरांग देवताभ्यश्च मयापरित्यक्तम्-
 तत्सन्नमम—ततः संस्रव-धारणार्थ-प्रोज्जणी पात्रमग्निप्रणीतयोर्म
 मध्येधृत्या ॥ तत आचार्यो ब्रह्मणान्वारब्धः दक्षिणं जानुनिपात्य
 आचारावाज्य भागौ च हृत्वा-त्यक्त्वान्वारंभः प्रथमं, स्थाली
 पाकेन—३० आपोहिष्टेति तिस्रुणां सिन्धुद्वीपऋषिर्गायत्री छन्दः
 आपो देवताः, यमलशान्ति होमे विनियोगः ॥ ३० आपोहिष्टा
 मगो भुवस्तानऽऊर्जेदधातन । महेरणायचक्षसेस्वाहा । इदमद्भ्यो
 नमम एवं सर्वत्र ।१। ३० घोत्रः शिव तमोरस स्तस्य भाजयते
 हनः । उशतीरिवमातरः स्वाहा ।२। ३० तस्माऽअरंगमामवो यस्य
 क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथाचनः स्वाहा ।३। ३० कयान इति
 द्वयोर्वामदेव ऋषिः गायत्रीछन्दः रुद्रोदेवता यमलशान्तिहोमे० ॥
 ३० कयानश्चित्तऽआभुय दृती सदावृधः सखा । कयाश चिष्टया
 वृता स्वाहा ।१। ३० कस्त्वासत्यो मदानामर्ते०हिष्टो मत्सदंधसः ।
 ह्वाचि दारुजे व्वसु स्वाहा ।२। ३० त्रातारमिन्द्रमिति गर्गऋषि
 स्त्रिष्टुच्छन्दः, इन्द्रोदेवता यमलशान्तिहोमे वि० । ३० त्रातारमिन्द्र
 मवितारमिन्द्रर्ते०हवे हवे सुहवर्ते०शूरमिन्द्रम् । हयामि शक्रं पुरु
 हृतमिन्द्रं०स्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः स्वाहा, इतिपंचेन्द्रेण पंचा-
 हृतिर्जुहुयान् ॥ ३० वरुणस्येति प्रजापति ऋषिः पंचयजूषि वरुणो
 देवता यमलशान्ति होमे वि० । ३० व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुण
 स्यस्कंभसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋत सदन्यसि व्वरुणस्यऽऋत
 सदनमसि व्वरुणस्यऽऋत सदममासीद स्वाहा । इतिपंचवारुणे
 नापि पंचवारं० । ३० इदमाप इति प्रजापतिऋषिर्महापंक्तिश्छन्दः
 आपोदेवता यमलशान्तिहोमेवि० । ३० इदमापः प्रवहता वयं च
 मलं च यन् । यच्छामि दुद्रोहा नृतंयच्च शेपेऽग्रभीरुणम् । आपो
 मातस्मादेनसः पयमानश्च मुंचतु स्वाहा । ३० अपाघमिति शुनः

शेषऋषिर्गायत्रीछन्दः अपामार्गो देवता यमलशान्ति होमेवि० ।
 ॐ आपाघमप क्विल्वपमप कृत्यामपोरपः । अपामार्ग त्वमस्म
 दपदुस्त्वप्यर्दं सुव स्वाहा ॥ ॐ अग्नयेस्वाहा, इदमग्नयेनगम ॥
 ॐ सोमायस्वाहा इ० । ॐ पचमानायस्वाहा इ० । ॐ पावकाय
 स्वाहा इ० । ॐ मारुतायस्वाहा इ० । ॐ मरुद्भ्यःस्वाहा इ० ।
 ॐ यमायस्वाहा इ० । ॐ अन्नकायस्वाहा इदमन्नकायनमम ।
 ॐ मृत्यवेस्वाहा इ० । ॐ स्प० । ॐ ब्रह्मणेस्वाहा इ० । ॐ
 अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा इ० । ततो होमपध्दत्यनुसारेण भूरादि-
 नवाहुतिहोमानन्तरं संग्रवप्रशनादिक कुर्यात्—ततः पूर्णपात्रदा
 नादि पूर्णाहुतिग्रायुषकरणान्तं कृत्वा गोदानादि ऋत्विक्दक्षि
 णादानान्ते मन्त्राशिपंगृह्णीत्वा ब्राह्मणान्भोजयेत् ॥

इति यमलजननशान्तिपद्धतिः ॥

अथ त्रिकप्रसव शान्ति परिभाषा ।

उक्तं च शान्ति सर्वर्षे— इत्यत्र यमुक्ताच्चेत्मात्प्रदेव सुतोऽदि । माताभिर्नो कुलस्थानिभ्यः
 निष्प्रमद्भवत् । जेष्टगशोधनेहानि सुवागमद्भवत् । तत्स्यकाशात्वाद्वाशाह शुभदिने । आचार्य-
 ऋत्विजादृयाग्रहज्ञपुर मन्म् । ब्रह्मपितृ मन्त्रे द्व प्रतिमा स्वर्गात् कृता । पूजयेद्दाम्यराशिस्थ वन
 शोभिशिक्त । पवम वनशैर्द्र पूजयेद्द्रमगपम । रद्रसूक्तानिरराशि शान्तिस्सूक्तानिपर्वत । (रद्र
 गन्ध्यात्द्रसूक्तानि पेदित्वर्ष्य) आचार्या उच्यन्ते तत्र समिप्यत्तिलैश्चरुम् । अग्नोत्तरस्यैव रतया
 त्रिरातीतुरा वेत्त ॥ श्वेतुःकाभि भेषपुर सम् । ब्रह्मसिर्षि रस्यदत्तं द्रमयामद । ततः स्विष्टकृत
 ह्रवावलिपूर्णागुम्भित अभिषेक कुटुम्बग कृत्यचर्यं प्रपू यत् । हि गन्धुदेवाचमृत्विजादक्षिणतत ।
 आग्नेयशोचण कृत्वा शान्तिं तुजयेत् । इति त्रिकप्रसवशान्ति परिभाषा ।

अथ त्रिकप्रसव शान्तिपद्धतिः ।

अथ च बालकस्य पिता, पुत्रजन्मदिवसादेकादशाहेद्वादशाहे
 अन्यस्मिन् चन्द्रतारानुक्रमेण वा शुभदिने, परिभाषोक्त शान्ति
 सामग्रीसंपाद्य स्वासने उपविश्य, आचम्य दीपं प्रज्वलय्य भूलो,
 त्सादनं कृत्वा शान्तिपाठं कृत्वा अर्घ्यसंस्थाप्य—संकल्पः—अथे
 त्यादि सकीर्त्या मुराराशिरमुकोऽहं त्रिकप्रसव शान्तिकर्मणि

निर्विघ्नतासिद्धये, श्रीभगवतो गणेश्वरस्य पूजनं करिष्ये—तथाच
तत्पूर्वाङ्गत्वेन कलशस्थापन पुण्याहवाचन नान्दीश्राद्धमातृका
पूजा वसोर्द्धारानिपातन पूर्वक नवग्रहाणां पूजनं च करिष्ये ।
ततो गणेशादि पंचांगदेवतानां पूजनं विधाय, आचार्यादीनां वरणं
कुर्यात्—तत आचार्यं ब्रह्मर्षिवत्कुरुद्रसूक्तशान्तिपाठका न्संपूज्य
संकल्पः—अचेत्यादि० अमुकोऽहं त्रिकप्रसवशान्तिकर्मणि एभिर्वर
णद्रव्यैरमुकगोत्रानमुकामुक शर्मणो ब्राह्मणा आचार्यं ब्रह्मर्षिवक्
सूक्तशान्ति, कर्मकृत्त्वात् वृणे, वरणद्रव्यं यथांशं विभज्य, कर्मकुरु,
करवाणीति प्रत्युक्तिः तत आचार्यो होमवेदीं कृत्वा पंचगव्येन
संप्रोक्ष्य पंचभूसंस्कार पूर्वक मग्निं संस्थाप्य, तत्पूर्वभागे कलशं
संस्थाप्य, तत्रग्रहानावाह्य सम्पूज्य च तत्कलशस्योत्तरस्यां पंचसु
धान्यराशिषु पंचकलशानव्रणान्कलशप्रजोक्त विधिना संस्थाप्य
तत्रब्रह्म विष्णुमहेन्द्ररुद्राणां पंचदेवानां सुवर्णप्रतिमाः अग्न्युत्ता
रण पूर्वकं पंचकलशोपरि पंचप्रतिमाः संस्थाप्य,—संकल्पः—अद्ये-
त्यादि० अमुकोऽहं त्रिकप्रसव शान्तिकर्मणि कलशोपरि स्थापितासु
सुवर्णप्रतिमासु ब्रह्मादीनां पूजनं करिष्ये० ३० एतन्ते० पठित्वा, ॥
३० भूर्भुवः स्वः पंचकलशोपरि सुवर्णप्रतिमासु ब्रह्मादिपंचदेवता
सुप्रतिष्ठितावरदाभवन्तु, इति प्रतिष्ठाप्य तत्रादौ ब्रह्माणं पूर्वकल-
शोपरि पूजयेत् ३० ब्रह्मजजानं प्रथमंपुरस्ता द्विसीमतः सुरबोद्धेन
ऽआवःसबुध्न्याऽऽपमाऽअस्यद्विष्टाः सतरचयोनि मसतरचद्वित्रव
इतिमंत्रेण ब्रह्माणं संपूज्य दक्षिणे विष्णुं०—३० इदं विष्णुर्विच-
क्रमेत्रेधानिदधेपदम् समृद्धमस्यपाँसुरे । ३० विष्णवेनमः सम्पू-
ज्य पश्चिमे पहेशम् ३० तत्पुपाय विद्महेमहादेवायधीमहि ।
तन्नोरुद्रः प्रबोदयान् । ३० महेशायनमः उत्तरेइन्द्रम्—३० यतइन्द्र
भयामहेततोऽत्रभयंकृधि मघबन्धुग्धि तवतन्न ऊतिभिर्विद्विषो
विमृधोजहि । ३० इन्द्रायनमः । ततश्चतुर्णामध्ये रुद्रकलशे रुद्रं
पूजयेत्—३० नमस्तेरुद्रमन्यवऽऽतोतऽइपवेनमः । बाहुभ्यामुतते-
नमः । ३० रुद्रायनमः, इति सम्पूज्य, ततः सूक्तजापकश्च रुद्रक-

लशं स्पृशन्नेकादशवारं प्रतिमूर्त्तपठेत्-३० कद्रुद्रायेति रुद्रसूक्त
स्याष्टमंत्राणां कएवऋषिर्गायत्रीछन्दो रुद्रोदेवता पाठेचिनियोगः
३० कद्रुद्रायप्रचेतसमीदुष्टमायनव्यसे । घोचेमशप्तमहृदे ॥१॥
यथानो अदितिः करत्परश्वेनृभ्योयथागवे । यथा तोक्तायऋद्रियम्
॥२॥ यथानोमित्रोच्चरुणो यथाऋद्रश्चिकेनति । यथाविश्वेसजो-
पसः ॥३॥ गाथयतिमेधपतिरुद्रंजलाषभेजम् । तच्छृणोसुम्नमी-
महे ॥४॥ यः शुक्रडवसूर्यो हिरण्यमिवरोचते । श्रेष्ठोदेवानां वसुः
॥५॥ शंनः करत्यर्चते सुगंमेपापमेप्ये । नृभ्योनारिभ्योगवे ॥६॥
अस्मेसोमश्रियमधिनिधेहिशतस्यनृणाम् । महिश्रवस्तुविनृष्णम्
॥७॥ मानः सोमपरिवापोमाऽरातयो जुहुरंत । आनइन्द्रोवाजेभं-
ज ॥८॥ ३० यास्तेइत्यस्य कएवऋषि रनुष्टुप्छन्दः रुद्रोदेवता पाठं
चिनियोगः ३० यास्तेप्रजा अमृतस्य परस्मिन्धामन्वृतस्य । मूर्धा-
नाभासोमवेन आभूपन्तीसोमवेदः ३० इमारुद्रायेतिरुद्रसूक्तस्य
नव मंत्राणां कुत्सऋषि जैगतीछन्दः रुद्रोदेवतापाठे चिनियोगः
३० इमारुद्रायतवसेकपदिनेक्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः । यथास-
मद्विपदे चतुष्पदे विश्वंपुष्टंश्रामे अस्मन्ननातुरम् ।१। मृडानोरुद्रो
तनो मयस्कृधिक्षयाद्वीराय नमसाविधेमते यच्छृचयोश्चमनुराये
जेपिता तदश्याम तवरुद्र प्रणीतिषु ।२। अश्यामते सुमतिं देवय-
ज्ययाक्षयद्वीरस्य तवरुद्रमीद्वः सुम्नायत्त्रिद्विपो अस्माक माचरा
रिष्टवीरा जुह्वामतेहविः ।३। त्वेपंवयंरुद्रंयज्ञसाधंवङ्कुं कविमवसे
निहयामहे । आरे अस्मद्वैद्यहेडो अस्पतुसुमति मिद्वयमस्यावृणी
महे ।४। दिवोवराहमरुपं कपदिनेत्वेपंरूपंनमसानिहयामहे । हस्ते
विभ्रद्वेषजावार्याणि शर्मवर्मछुर्दिरस्मभ्यंयंसन् ।५। इदंपवित्रेमहता
मुच्यतेवचःस्वादोः स्वादीयोरुद्रायवर्धनम् । रास्वाचनो अमृत
मर्त्तभोजनं मनेतोकायतत्रयायश्रुड ।६। मानोमहान्तमुतमानो
अर्भकमानउत्तन्तमुतमानउत्तितम् । मानोवधीः पितरंमोतमात
रंमानः प्रियास्नन्वोरुद्रीरीरिपः ।७। मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषि
मानो गोपुमानोअश्वेपुरीरिपः । मानोवीरान्द्रुभामिनोवधीर्ह

येष्मन्तःसदमित्वाह्वयामहे ।८। उपतेस्तोमान्पशुपाह्वाकरं रास्वा
 पितर्मरुतांसुम्नमस्मे । भद्राहितेसुमतिर्मृडयतमाथा वयमवहत्तेषु-
 णीमहे ।९। ३० उपते, इतिरुद्रसूक्तस्य मन्त्रयोः कुत्सऋषिर्ब्रिह-
 ष्पुन्दः रुद्रोदेवता पाठेविनियोगः ॥ ३० उपतेस्तोमान्पशुपाह्वा
 करं रास्वापितर्मरुतांसुम्नमस्मे । भद्राहितेसुमतिर्मृडयतमाथा व्व-
 यमवहत्तेषुणीमहे ।१०। आरेतेगोघ्नमुतपूरुपघ्नंजगद्वीरसुम्नमस्मे
 तेअस्तु । मृडाचनोअधिचवूहिदेवाथाचनः शर्मयच्छ्विर्वर्हाः ।११।
 इतिद्वितीयः । ३० आतेपितः, इतिपञ्चदशमन्त्राणां गृत्समदऋषि-
 र्जगतीच्छ्वान्दांसि रुद्रोदेवता तृतीयरुद्रसूक्त पाठे विनियोगः । ३०
 आतेपितर्मरुतांसुम्नमेतुमानः सूर्यस्यसंहशोयुयोथाः । अभिनो
 वीरोअर्वतिक्षमेतप्रजायेमभिरुद्रः प्रजाभिः ।१। त्वाऽदतेभिरुद्रशंत
 मेभिः शतंहिमाअशीयभेपजेभिः । व्यस्मद्वेपोवितरंवांहो व्यमी
 वाश्चातयस्वाविपृचिः ।२। श्रेष्टोजातस्यरुद्रः श्रियाऽसितमस्तवस्व
 वसांवज्रवाहो । पार्ष्णिणःपारमंहसः स्वस्तिविश्वाअभीतीरपसो-
 युयोधि ।३। मात्वारुद्रञ्जुरुधामानमोभिर्मा सुष्टुतीवृषभमासहृति
 उन्नोवीराँअपर्यभेपजेभिर्भिपकृतमंत्वाभिपजांशृणोमि ।४। हवी
 मविर्हवसेयोह्वाभिरवस्तोमेभीरुद्रंदिपीथ । ऋदृदरःसुहवोमानो
 अस्यैवभ्रुः सुशिप्रोरीरधन्मनाथै ।५। उन्माममादवृषभो मरुत्वान्
 त्वक्षीयसावयसानाधमानम् । वृणीवच्छायाभरपो अशीयाविवा
 सेयंरुद्रस्यसुम्नम् ।६। कस्यतेरुद्रमृडयाकुर्हेस्तोयोअस्तिभेपजोजला
 पः । अपभर्त्तारपसोदैव्यस्यामीनुमावृषभचक्षमीथाः ।७। प्रवभ्रवे
 वृषभायविश्वतेचेमहोमहीं, सुष्टुतिमीरयाभि । नमस्याकल्मली
 किनं नमोभिर्गृणीमहि त्वेपरुद्रस्यनाम ।८। स्थिरेभिरंगैः पुरुरूप
 उग्रोवभ्रुः शुक्रेभिः पिपिशोहिरण्यैः ॥ ईशानादस्यभुवनस्यभूरेर्न
 वाउयोषद्बुद्रादसूर्धम् ।९। अर्हन्विभषिसागकानि धन्वार्हन्निष्कं
 यजतंविश्वरूपम् । अर्हन्निदंदयसेविश्वमभ्वं नवाश्रोजीयोरुद्रस्त्य
 दस्ति ।१०। स्तुहिश्रुतेगर्त्समदंयुवानं मृगंनभीममुपहन्तुमुग्रम् ।
 मृडाजरित्रेरुद्रस्तवानोऽन्यते अस्मन्निवपन्तुसेनाः ।११। कुमारश्चि

त्पितरंबन्दमानं प्रतिनानामरुद्रोपयन्तं । भूरेर्दातारंसत्पतिगृणीवे
 स्तुतस्त्वंभेषजारास्यस्मे । १२। यावोभेषजामरुतः शुचीनयासन्त
 मावृषणोयामयोभु । यानिमनुरन्नणीतापितानस्ताशंचयोश्च रुद्र
 स्थवश्मि । १३। परिणोहेतीरुद्रस्यवृज्याः परित्वेपस्यदुर्मतिर्भही
 गात् । अवस्थिरामधवद्भ्यस्तनुष्व मीह्वस्तोकायतनयाय-
 मूड । १४। एवावभ्रोवृषभचेकितानघथादेवनहृणीपेनहंसि ॥ हवन
 श्रुन्नोरुद्रहयोधि वृहद्वदेमंविदथेसुवीराः । १५। इति तृतीयसूक्तः ॥
 ३० इमारुद्रायेतिचतुर्णामन्त्राणां वशिष्ठऋषिर्जगतीन्द्रो रुद्रो-
 देवता शान्तिकर्मणिचतुर्थं रुद्रसूक्तपाठे विनियोगः ॥ ३० इमारु
 द्रायस्थिरधन्वनेगिरः क्षिप्रेषवेदेवायस्वधाग्ने । अपाद्ब्रह्मलायसह
 मानाय वेधसेतिग्मायुधाय भरताशृणोतुनः । १। सहिज्ञेणक्षम्य
 स्यजन्मनः साम्राज्येनदिव्यस्यचेनति । अवन्नवन्तीरुपनो दुरश्च
 रानमीवो रुद्रजासुनोभव । २। यातेदियुदवसृष्टा दिवस्परिदमया
 चरतिपरिसावृणक्तुनः । सहस्रंतेस्वपिवातभेषजा मानस्तोकेपुतन
 येपुरीरिषः । ३। मानोवधीरुद्रमापरादामातेभूमप्रसितौहीडितस्य,
 आनोभजवर्हिषिजीवशंसेयूयंपातः स्वस्तिभिःसदानः । ४। इति
 रुद्रसूक्तान्येकादशवारंजपित्वा, ३० ऋचंचाचम् । इति रुद्रेः सप्तमं
 शान्त्यध्यायंचपठेत् । तत आचार्योहोममेद्यां पध्वत्युक्तप्रकारेण
 पर्युक्षणांतं कर्म कृत्वा प्रोक्षणीपात्रं संस्रवधारणार्थमग्निप्रणीत
 योर्मध्येधृत्वा । ३० एतन्ते०, इति पठित्वा ३० भूर्भुवस्वः, वरदनागा
 अग्ने इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदो भवेति प्रतिष्ठाप्य, ३०
 वरदनामाग्नये नमः सम्पूज्य यजमानो द्रव्यदेवता मिथ्यानपूर्वकं
 द्रव्यत्यागं कुर्यात्-अवेत्यादि संकीर्त्य, त्रिकप्रसव शान्तिकर्मणि
 प्रजापतिमिन्द्रमग्निं सोममाज्येन, आदित्यादि ग्रहान् समिधरुधिः
 प्रत्येकमष्टसंख्यया साधिप्रत्यधिदेवांश्चतुःसंख्यया, विनायकं द्वि
 पंचलोकपालानिन्द्रादि दशदिक्पालांश्च द्विः संख्यया, त्र्यम्बिष्णुम-
 हेशेन्द्ररुद्रान् प्रधानपंचदेवा न्प्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्यया ओष-
 स्विष्टकृतम्-अग्न्यादि प्राजापत्यान्तांश्चाज्येनाद्वयद्वये, इदं

तत्तद्देवताभ्योमयापरित्यक्तं यथादेवतमस्तु, ३० त्सन्नमम । ततः
 आचार्यां ब्रह्मणाऽन्वारब्धो दक्षिणंजान्वाकुंच्या घाराज्यभागौ च
 हुत्वा अन्वारंभंत्यकृत्वा, सर्त्विक् ग्रहयागोक्तपद्धत्युक्त प्रकारेण,
 दशदिक्पालान्तान्हुत्वा ततः प्रधान देवेभ्यो ब्रह्मविष्णुमहेश्वरेन्द्र
 रुद्रेभ्यः पूर्वोक्त ब्रह्मजज्ञानमित्वादिभिः पंचभि मंत्रैः प्रत्येकं
 समित्तिलाज्य चक्रद्रव्यै रष्टोत्तरशतसंख्यं होमं हुत्वा, स्विष्टकृद्धो
 मंविधाय, आज्येन भूरादि नवाहुतिहोमं वहिर्होमंचकृत्वा, संस्र-
 वप्राशनान्तं विधाय ब्रह्मणेपूर्णपात्रं दत्वा ततो ग्रहयागोक्त वलि
 दानरीत्या ग्रहादिलोकपालन्तेभ्यो दध्यक्षतवलिं वा पायसवलिं
 निवेदयित्वा ब्रह्मादि पंचभ्यो वलिदानंविधाय क्षेत्रपालाय वलिं
 दत्वा पूर्णाहुतिहोमं कुर्यात्, ततःसपत्निपुत्रो यजमानो गोदानं
 कुर्यात्—तदभावे निष्कयीभूतं तिलपात्रादिकं च कुर्यात् संकल्पः
 अद्येत्यादि देशाकालौ संकीर्त्य सर्पात्नकोहं ममसुतत्रयानन्तरं
 सुताजननेन वा कन्यात्रयानंतरं पुत्रजननेन सूचितारिष्टनिरसन
 द्वारा शुभफलप्राप्त्यर्थं कृतस्य त्रिकप्रसवशान्तिहोमकर्मणः ।
 साद्गुण्यार्थं इमांगांवा गोप्रत्याम्नायीभूतं सुवर्णं रजतादिद्रव्यं
 तथेमाः सुपूजितारचप्रतिमाः अमुकशर्मणे आचार्याय तुभ्यंदास्ये,
 तथा सूक्तादि शान्तिपाठकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो, इमांदक्षिणां तथा
 नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसींदक्षिणां विभज्यदास्ये, तथा
 पक्वान्नेन ब्राह्मणांश्च भोजयिष्ये दक्षिणांचदास्ये, इत्याचार्यादिभ्यो
 कर्मदक्षिणांविभज्य, पूर्वावाहिताग्न्यादिदेवाना सुत्तराङ्गपूजनं
 कृत्वा विसृज्यच, पूजित षट्कलशोदकेनाभिपेक पद्धतिना सपुत्र
 पत्नीकल्पस्वस्था भिपेकमाचार्यादिभिःकारयित्वा घृतच्छायादर्शनं
 कुर्यात्—ततः शानोभद्रेति शान्तिपाठंकृत्वा तिलकाक्षतादिरो-
 पणाशीर्वादं गृह्णीयात् । ततो ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वयंचभुंजीत ।

त्रिशांतिपटलेक्तत्रिकप्रसवशान्तिपद्धतिः ।

॥ अथपित्राद्येकनक्षत्रजननशांतिपरिभाषाः ॥

अथ घृहार्गात्कैक नक्षत्र जनन शान्ति परिभाषा— उक्त च शान्तिवारे— एकस्मिन्निव नक्षत्र
 भ्राता वा पितृ पुत्रयो । प्रसूतिरश्चतयार्नेत्युर्भवत्कस्यस्थिय । भ्रात्राभ्रातृभगिन्यारिख्यं । पितृ
 पुत्रयो मातापितृनक्षत्रे पुत्रनक्षत्रोरित्यर्थः ॥ तत्र शान्तिमन्त्रायामि सर्वाङ्गमत्सु । शुभर्त्तौ शुभवारे च
 चन्द्रतारावलाङ्किते । रिष्टत्रिष्टि त्रिजतु प्राग्भद्रिमसुतो । प्राचर्यदग्ध पूर्वव तुरोथजाद्विस्तमान् । पुत्र्या
 हवाचयित्ना तु शान्तिर्कर्म सनापरत् । धनेरीशानदिभाम नजनप्रतिमा तत । तत्तद्वात्तमनख पूजय
 त्कथशादि । नक्षत्रमात्रशिष्टप्रोक्ते काल्याणनगिष्टिष्ठ उक्ता । अत्रनक्षत्र तद्देवता च पूजयत् । वत्य
 माणश्चेति विद्वन् चचनात् । रश्चरहेण शब्द दस्युमननपयत् । रवराष्टोत्तन मण्डल कुम्भिन्मुल
 ता । मानेवतुमन्त्रे नैरष्टात्तर सतम् । तत्तद्वात्तकेनत्यर्थः । प्रत्यय समिदनाद्यै प्राग्शिव मानमव च
 अभिपारत्न उर्ध्वदाताः पितृपुत्रयो । इत्यत्रपितृप्रदण्डमुपलक्ष्यम् ॥ यच्चत्रन्म तन्मद् वागस्यामि
 पन्त्य । पञ्चालकृष्णमाशिनरायणपूजयत्पुन । कर्त्ता मन्त्रे रक्षिणात्वात्मादन्य ह्युत्थम् । तद्व
 प्रतिमादान वायव्येन्द्रादिभि सह । दानदग्धामना गति द्वात्तद्दोषदरांतया भोज्यद् त्राहणन् स्वान् नित
 शयनविवर्जित ॥ एव कृत्वाभिजनतु शान्तिर्मन्त्रेति निश्चितम् ॥

॥ अथपित्राद्येकनक्षत्रजननशांतिपद्धतिः ॥

अथ च कर्त्ता नित्यकर्मसमाप्य, पूजास्थलमागत्य शुभासने
 उपविश्याचम्प, दीपं प्रज्वलद्वय भूतोत्सादनं विधाय, स्वस्तिवा-
 चनं पठित्वा संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्या
 मुकोऽहम्, अस्यरुनक्षत्रोपलक्षितस्यामुकराशिरस्यपुत्रस्य पित्राद्ये-
 कनक्षत्रजनन सृचितारिष्ट निवृत्तये शुभफलाप्तये, सर्वोपद्रव
 निरसनार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीतये चैकनक्षत्रजनन शान्तिं करिष्ये—
 तत्पूर्वाङ्गत्वेन निर्विघ्नता सिद्धये, गणपत्यादि पञ्चाङ्ग देवतानां
 पूजनं करिष्ये—तथा होमार्थं आचार्यं ब्रह्मर्त्विजं तथा सप्तशती
 शान्त्याध्याय पाठकानां च पूजनपूर्वकं वरणं करिष्ये इति सकल्प्य
 गणेशादि नवग्रहान्त पूजन विधाय (माता पितृनक्षत्रे पुत्रतन्या
 जन्मानिजाते तत्रादौ गौमुखप्रसवशान्तिं कृत्वा कर्ममारभेत्)
 भ्रातृभगिन्योर्भ्रात्रो रेकनक्षत्रोत्पन्तौ च गौप्रसवं कृत्वा वक्ष्यमाण
 विधानेन शान्तिकुर्यात्—तत आचार्यादीनां चतुर्णां वरणं कृत्वा,

आचार्यां गौरसर्पपानादाय भूतोत्सादनं कृत्वा पंचगव्येन भूमिं
 संप्रोक्ष्य, तत्र होमवेदीं निर्माय पंचभूसंस्कार पूर्वक मग्निं संस्था
 प्य, होमवेद्या ईशाने कलशविधिना कलशं संस्थाप्य तत्रनवग्रहा
 नावाह्य सम्पूज्य च तत्र ताम्रपूर्णपात्रोपरि पद्माङ्कितंश्वेतवस्त्रं प्र
 सार्य तदुपरिसौवर्णीं जन्मनक्षत्र देवता प्रतिमामग्न्युत्तारण पूर्व
 कांसंस्थाप्य ॐ एतन्तेति० पठित्वा, ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकनक्षत्र
 देवात्रसुवर्णं प्रतिमायां सुप्रतिष्ठितोवरदेभव इति प्रतिष्ठाप्य,,
 (अत्रनक्षत्रदेवता कमंत्रं मूलशान्त्युक्त नक्षत्रदेवतास्थापन विधौ
 विचार्य गृहीत्वातेन पूजनंकुर्यात्) ग्रंथविस्तारभयान्नात्रमंत्राः
 प्रदर्शिताः । एवं नक्षत्रदेवं पाद्यादिभिः सम्पूज्य रत्नासूत्रमभिमन्त्र्य
 तत्रकलशसंस्थाप्य, होमवेद्यां ब्रह्मोपवेशनादि चरुश्रपणान्तं कर्मा
 कृत्वा ततो यजमानो द्रव्यदेवता भिध्गान पूर्वकं द्रव्यत्यागं
 कुर्यात्-अचेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यैकनक्षत्रजनन शान्तिकर्माणा
 ऽह्यद्ये-तत्रादौ प्रजापतिमिन्द्रमग्निं सोममाज्येन, अमुकनक्ष
 त्रामुकदेवतां समिच्चर्वाज्यद्रव्यैण प्रत्येकमष्टोत्तर शतसंख्याहुति
 भिःशेषेणस्विष्टकृतं, अग्न्यादि प्राजापत्यन्नांश्चाज्येन यद्येतदेतद्दोम
 द्रव्यमेतद्देवताभ्यो मयापरित्यक्त यथादैवतमस्तुनमम । ततआचा
 र्यांवरदनामग्निं ॐ एतन्ते० इतिप्रतिष्ठाप्य ॐ वरदनामग्नेनमः
 सम्पूज्य रेखाभ्योनमः ॐ सप्तजिह्वाभ्योनमः सम्पूज्य च प्रोक्ष
 णीपात्रं संस्रवधारणार्थं प्रणीताग्न्योरंतराले निधाय, अन्वारब्ध
 आघारावाज्य भागौ च जुहुयात् आचार्यादयश्कृत्विक्पाठका नक्ष
 त्रदेवता मंत्रेणाष्टोत्तरशत संख्यया समिच्चर्वाज्य द्रव्यैः प्रत्येकं
 प्रधानहोमंकुर्युः एवं प्रधानहोमं कृत्वा आचार्यां ब्रह्मणान्वारब्धः
 स्विष्टकृद्धोमंत्र्याहृत्यादिनवाहुतिहोमं दिक्पालेभ्योवलिं दत्वा
 संस्रवप्राशनं कृत्वा ब्रह्मणे पूर्णपात्रं दत्त्वा वहिहोमं पूर्णाहुतिं च
 कृत्वा आचार्याय गांयान्निष्कयीभूतं द्रव्यंदत्वा, ऋत्विक् पाठका
 दिभ्योपि दक्षिणां दद्यात् ततः कलशजलेन अभिपेकं पूर्वोक्तमंत्रैः
 कृत्वा तिलकारोपण रत्नावंधनं च विधाय घृतच्छाया। दर्शनंकृत्वा

आशीर्वादं गृहीत्वान्नि देवांश्च विसृज्य, ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वयमपि च भुञ्जीत ।

इत्येकतन्त्रजननशान्तिः ।

—:—

अथ प्रथमोर्ध्वदन्तजनन तथा सदन्त जननशान्ति परिभाषा ॥ उक्तं पाद्येहमादौ विष्णुधर्मोत्तरे च शान्तिस्मार्गप्रदं—दन्तदन्तनि कालानां लक्षणं तन्निबोधमे । उपरिप्रथमं इत्य जाग्न्ते हि दिशोर्द्विजा. (दंताः) ॥ दन्तौ वा सह इत्यरथाज्जन्मभारगवततम् ॥ मातरंपितरचैव स्वादत्यात्मानमेव शान्तितत्र प्रवक्ष्यामि तामेनिगतः प्रष्टुः । गजपृष्ठस्थिवालेनौस्थवास्नापयेद् युवः । तदभावेतु धर्मज्ञ धांचनेचम्रासने । सर्वोपधैः सर्वोर्ध्वोर्ध्वैः पुष्पैकलैस्तथा । पंचगव्येनश्लैष मृत्तिकाभिःधर्मागव । स्नापये इत्य वयः ॥ स्थालीपाकेनभात रं पूजयेत्तदनन्तरम् । चतुर्ध्वन्तनाप्रासकृदाहुतिः ॥ सप्त हंचाप्रकर्त्तव्यतया ब्राह्मणभोजनम् । ऋष्टमेऽहनिविप्राणां तथदेवा च वक्षिणा ॥ कर्वां रजतं गां च भुर्वंवा धान्मेव च । अद्भुतसागरेत्वत्र पंचदशी शान्तिरुक्ता—तत्रैवैवैरतिः—वात्सानामष्टमेभानि पष्टेपास्त्रितः पुनः । र्दंतायस्यचत्रायन्ते मातावाग्निगतेपिता । बालकःपीडपतेतत्र स्वयमेवर्शमयः । वधिलौद्रष्टाचानामश्वत्थसनिधाततः । जुह्यादष्टयशतं प्राहोमत्रेण मन्त्रित । घृत्क्ष्वक्षिणां वद्यात्त. इत्यतेषुभम् । साधारणेन प्रक्षारान्तरसुकंपद्यपुगणे—सामान्येनिधिध्वेदन्त चन्मनि स साम्येगृणुस्वतपत्परम् । भद्रासनेनिवेशेनं मूर्त्निमूलफलैस्तथा । सर्वोपधैः सर्वोर्ध्वैः सर्वोर्ध्वैस्तथैव च । का।यत्पुत्रयेषथ वन्दिशोदममीरणान् पर्वतांश्च तथात्यातादेव देव च केरायम् । एतेषामेव जुह्यात्तदन्तग्नौ यथाविधि । ब्राह्मणान्पुनातव्य यथाप्राचयाचदक्षिणा । तन्त्रत्तलकृतंयालमासमेनेतुपकेरायेत् । पूज्याश्चाविध्व तार्यो ब्राह्मणा.मुहदस्तथा इति दुर्दन्तजननशान्तिविधिः ॥

—:—

अथप्रथमोर्ध्वतथासदन्तजननशान्तिपद्धतिः ।

अथच शान्तिकर्त्ता चन्द्र तारानुकूले शुभमुहूर्त्ते, शुभासने, उपविश्य दीपं प्रज्वलय्याचम्यार्घसंस्थाप्य भूतोत्सादनंकृत्वा, प्राणानायम्य-संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि० अमुकोऽहममुकराशेः अस्यबालकस्य सदन्तजनन शान्ति कर्मणि, (वा) प्रथमोर्ध्व दन्तजननशान्तिकर्मणि, (वा) निन्द्यमासादिषु दन्त जननशान्तिकर्मणि, सर्वं विघ्नोप शान्त्यर्थं—श्रीगणेश्वरादि पंचांग देवतानां पूजनं

करिष्ये—तथाच पूर्वोक्त प्रकारान्तर्गतामुक्त प्रकार प्रथम दन्त जनने सूचितारिष्टनिरसनार्थं सर्वकल्याणहेतवे श्रीपरमेश्वर प्रीतये निषिद्ध दन्तजननशान्तिं करिष्ये—ततः पूर्वोक्तप्रकारेण गणेशादि पूजनं कृत्वाहोमार्थं वेदीं निर्माय, तत्राचार्यं ब्रह्माणं च वृत्वा, ततो वृताचार्या होमवेद्यां पंचभूसंस्कार पूर्वक मग्निं संस्थाप्य- तदीशानकोणे कलशस्थापन विधिना कलशसंस्थाप्यसंपूज्य तत्र नवग्रहानावाह्य संपूज्य च, ततोहोमवेद्युत्तरे द्वितीयं बृहत्कलशं स्थापयित्वा, तत्रसर्वौषधि, सर्वधान्यबीज, सर्वगंध, पंचरत्नानि, पंचगव्यं च प्रक्षिप्य, तत्तन्मंत्रै रभिमंत्र्य संपूज्य च, बालकमा नीय, गजपृष्ठे वा नौकायां, तदभावेतु—कांचने वरासने, भद्रा सनोपविष्टं बालकं तत्सर्वौषध्यादि जलेन पूर्वोक्त मूलशान्त्युक्तः अभिषेक मंत्रैरभिषिच्य, उद्धर्तनपूर्वकं संस्नाप्य च नव्येवाससी परिधाप्य, अंके धृत्वा पूजास्थल मागत्य, ईशानकलशे तान्नपूर्ण पात्रो परिपंच सुवर्णप्रतिमाः अग्न्युत्तारण पूर्वकं बन्धिसोमवायु पर्वत केशवानां संस्थाप्य, संकल्पंकुर्यात्—अथेत्यादि संकीर्त्या मुकोहं ममास्यामुकराज्ञोर्बालकस्य निच्यदंत जनन शान्ति कर्मणि, स्थापित कलशोपरि सुवर्ण प्रतिमासु बन्धिसोमवायु पर्वत केशवा नां पूजनं तथा कलशे सर्गादि नवग्रहाणां पूजनं च करिष्ये, ततः, ॐ एतन्ते० ॐ भूर्भुवः स्वः सुवर्ण प्रतिमासुबन्धादि केशयान्ता देवाः कलशाभ्यंतरे ब्रह्मवरुण सहिना नवग्रहाश्च सुप्रतिष्ठिना वरदाभवन्तु, इति प्रतिष्ठाप्य, चतुर्थ्यनैर्नाममंत्रैः पूजयेत्—ॐ ब्रह्मवरुण सहित भास्करादि ग्रहेभ्योनमः । ॐ अग्नयेनमः, ॐ सोमाय नमः, ॐ वायवेनमः, ॐ हिमवदादि र्वतेभ्योनमः, ॐ देवदेवकेशवायनमः, होमवेदी समीपमागत्य ब्रह्मोपवेशनादि पर्युत्क्षेपान्तं कर्मकृत्वा वरदनामार्गिन, ॐ एतन्ते० इति प्रतिष्ठाप्य, ॐ वरदनामग्नेनमः संपूज्यरेग्वाजिह्वाश्च पूजयेत् ॥ प्रोक्षणी पात्रप्रणीता ग्न्योरंतराले निदध्यात् ततोयजमानः संकल्पविधिनाद्वयव्यागं कुर्यात्—संकल्पः—अथेत्यादि देशकालौसंकीर्त्या

मुकोहं ममास्यामुकराशेरमुकवालकस्य, प्रथमोर्ध्वपंक्ति दंतजनन शान्तिकर्मणि, वा सदंतजन्मजनन शां० । वा निदिनमासादौ दंत जनन शान्तिकर्मणि, वरदाग्नौ-प्रजापतिं, इन्द्रम्, अग्निं सोमं, आज्येन, वह्निंसोमंवायुं हिमवदादिपर्वतान् देवदेवंकेशवं, अष्टोत्तर संख्यया प्रत्येकं आज्येन अग्न्यादिकान् स्थिष्टकृतं चाज्येनाहंयद्ये इदमाज्यं मयापरित्यक्तं यथादैवतमस्तुनमम । ततश्चाचार्यः ब्रह्मणा ऽन्वारब्धो मनसाप्रजापतिं ध्यात्वा जुहुयात्-३० प्रजापतये स्वाहा इदंप्रजापतयेनमम, ३० इन्द्राय स्वाहा । इदमिन्द्राय नमम । ३० अग्नये स्वाहा इदमग्नयेनमम इति हुत्वा, अन्वारं भंत्पक्त्वावक्ष्यमाण मंत्रैः १०८ संख्याघृताहुतिभिः प्रत्येकं जुहुयात्-यथा-३० बन्हयेनमः स्वाहा इदंबन्हयेनमम १०८ वारं जुहुयात् एवं सर्वत्र । ३० सोमाय नमः स्वाहा इदं १०८ ३० वायवे नमः स्वाहा इदं वायवे नमम १०८ । ३० हिमवदादि पर्वतेभ्यो नमः स्वाहा, इदं हिमवदादि पर्वतेभ्यो नमम १०८ । ३० देवदेवकेशवाय नमः स्वाहा इदं देवदेवकेशवाय नमम १०८ इति प्रधान होमं हुत्वा अतः परं होमपद्धत्युक्त प्रकारेण भूरादि पृष्णाहुत्यन्तं हुत्वा न्यायुषं कृत्वा ततो यजमानो गोदानादिकं कृत्वा जापकपा ठकेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा, आचार्यः कलशजलेन पूर्वांक्ताभिषेकं मंत्रैः अभिषिच्य मंत्रतिलकं कृत्वा रक्षासूत्रं च ध्वा मंत्रपाठं कृत्वा शिपं दंवात् ततो घृतच्छायां हृष्ट्वा, आवाहितदेवानग्निं च विमुञ्ज्य ब्राह्मणान् भोजयित्वा स्वयं भुञ्जीत ।

इति निच्यदंतजनन शान्ति पद्धतिः ।

॥ अथसहजननशान्तिविधिः ॥

अथशान्तिविधिं प्रोक्तपरमासानैकद्विनेगणं पूजयेदादौ पूर्वागहेमातृकाग्रहान् । प्रतिमा कारयेद्देव्या स्पर्शरौप्यादिधातुजाम् । तस्यासिपूजयेद्देवी श्यामावामाङ्गपासिनीम् । भवत्यभीति हरणीं सर्वादिप्रणेशिनीम् । रुद्राणां दक्षजादक्षा शिपवामाङ्गपासिनीम् । भद्रदां भद्रकालीं च त्रिपुरासुरनाशिनीम् । कामदां मोक्षदां चायाम् उवैटभमदिनीम् । इत्यां सुन्दरमुखां सुनैत्राचारुभूषणाम् । त्रिनेत्रां बहुनेत्रां च रुद्राय लक्षोभिताम् । शिवाशिषं प्रियारम्बाम् रामदु सप्रणेशिनीम् । पुराणां पुण्यदां

पुत्र्यामंभिः श्यामां प्रपूजयेत् । प्रणवादिनमोन्तैः सुश्रापि शक्तिभिस्ततः । पूजयेच्छक्तितोष्यो ५ न्ने
 पेंदिकताप्रिकैः । गंधैः पुष्पैस्तथाधूपैर्दूर्वापनैद्यथायसे । बलिदानैस्तु संतोष्य दक्षिणाभिरचतोपयेत् ।
 सुवासिन्यो धगायन्त्योगृहान्गणविभूषणैः । अर्द्धराशौ तयोर्मध्ये बालक्रीमातृसंयुतौ । परस्परकि
 विन्यस्य मीनेनैव विधानवित् । परस्परोपायनं च पूर्ववत्सप्रस्तवयेत् । दक्षिणाभिस्तथा वस्त्रैः परस्प
 रोपपाणिषु । मोदकानि विचित्राणि देयानि च तथा क्रमात् । अन्योन्यवीक्षणं युयांश्लक्ष्णेभ्यो धमातृभिः ।
 र्त्तैः रघुभवनं विश्यागीतवादिप्रनिस्वने । श्यामं पुनः पूजयन् हेशत्तर्पिणीकामप्रदादुःखनुतां शिवं ६ ।
 त्कारि हर्न्नां प्रसवयनाशिनीं दिव्यादिविस्वां परितोपमानम् । इति कृत्वा विनश्येत् सहप्रसवसंभवः ।
 १७८५ इति जेचान्यद्वय्यामिषु समाहितः ॥१४॥ इति

—३३३—

॥ अथ सहजननशांतिपद्धतिः ॥

अथ च प्रथमप्रसववत्या जलपूजाभ्यन्तरे एकस्मिन् गृहे, यथा
 एकस्यैव पुरुषस्योभेभार्ये, वापितापुत्रस्य भार्ये वा सहोवरयोर्भार्ये,
 सहप्रसववत्यौ चेत्तदा शांतिः कार्या सा च—पणमासान्ते कुहूदिने अ
 मावास्यायां पृथक् पृथक् कर्त्तव्या ॥ अथ च कर्त्ता आमावास्यायां
 प्रातर्नित्यं कर्म समाप्य, गणेशेन मस्कृत्य स्वस्तिवाचनं पठित्वा प्रधा
 नसंकल्पं कुर्यात्—अथेत्यादि देशकालौ संकीर्त्या सुकराशिरमुको
 ह मद्यकुहूदिने असुकराशे रमुकजातस्य सहजननदोषोपशान्त्यर्थं
 मायुरारोग्यादि चातुर्वर्गार्थसिद्धये, गणपत्यादि पंचांगदेवतानां,
 पूर्वाङ्गत्वेन पूजनं करिष्ये—तथा च शान्त्यर्थं हरवामाङ्गवासिनीं श्या
 मादेवीं च पूजयिष्ये, ततो गणेशादि पूजनं कृत्वा, कलशोपरिताम्र
 पात्रे सुवर्णप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्विकां संस्थाप्य श्यामादेवीमावाह
 येत्—३० आवाहयाम्यहं देवीं, श्यामां दक्षसुतां शुभाम् । भवस्य
 भीतिहरणीं सर्वारिष्ठनिवारणीम् ॥ ३० एतन्ते ० पठित्वा, ३०
 भूर्भुवः स्वः शिववामाङ्गवासिनि, श्यामादेवि, इहा गच्छे हतिष्ठ
 सुप्रतिष्ठिता वरदा भव ॥ इति प्रतिष्ठाप्य—३० श्यामादेव्यै नमः,
 इति मन्त्रेण वा श्रीसूक्तेन पाद्यादि नीराजनान्तं देवीं सम्पूज्य उपा
 यनं निवेद्य चक्षमाणमन्त्रैः पुष्पांजलिप्रतिमन्त्रेण समर्पयेत्—३०

श्यामादेव्यैनमः । ३० वामांगवासिन्यै० । ३० भवमीतिहरण्यै
 नमः । ३० सर्वारिष्टप्रणाशिन्यै० । ३० रुद्रारण्यैनमः । ३० दत्तजा
 यै० । ३० दत्तायै० । ३० भववामांगवासिन्यै० । ३० भद्रदायै० ।
 ३० भद्रकाल्यै० । ३० त्रिपुरासुरनाशिन्यै० । ३० कामदायै० ।
 ३० मोक्षदायै० । ३० आद्यायै० । ३० मधुकैटभमदिन्यै० । ३०
 सुरूपायैनमः । ३० सुमुख्यै० । ३० सुनेत्रायै० । ३० चारुभूषणा
 यै० । ३० त्रिनेत्रायै० । ३० बहुनेत्रायै० । ३० चारुकुण्डलशोभि
 तायै० । ३० शिवायै० । ३० शिवप्रियायै० । ३० रम्यायैनमः ।
 ३० रामदुःखप्रणाशिन्यैनमः । ३० पुण्यदायै० । ३० पुण्यायैनमः
 इत्यष्टाविंशतिमन्त्रैरभ्यर्च्य, पुनर्भूषणीपवत्यादिभिः संतोष्यपूजा
 स्थलंगत्नेन संरक्ष्य, अर्धरात्रसमये गृहांगणेषु वासिनीभिर्गीतादि
 गीयमाने सति । तयोः प्रसूत्योर्मध्ये बालकौ परस्परांकेतूष्णीं विन्य
 स्य परस्परोपायनं भूषणमोदकादीनि च दत्त्वा अन्योन्यवीक्षणं कृ
 त्वा बालकयोश्च ततः स्वस्वं बालकं गृहीत्वा गीतवादित्रनिःस्वनैः
 सह स्वस्वं गृहं प्रविश्य पूजास्थलमागत्य, पुनः पूर्ववत् श्यामादेवीं संपु
 ञ्य । ततः सफलाघर्षदत्त्वा, प्रार्थयेत्— ३० अयुर्विंशं सुतं देवि देहि
 सौभाग्यनिश्चलम् । कल्याणदायिनि शिवे श्यामादेवि नमोस्तुते ।
 उत्तरांगपूजनं कृत्वा कलशजलेन सपत्निपुत्रयजमानमभिषिञ्चया
 शिषंदद्यात् ॥ इति सहजननशान्तिपद्धतिः ॥

— १०५ —

अथ आमावास्या जनन शान्तिपरिभाषा ।

— १०६ —

उक्तं च शान्तिसारं नास्ति— अथातो दर्शनात्मानं मानाविप्रोर्दिरिद्रता । सहजापरिहारार्थं
 शान्तिं वक्ष्यामि ते पदा । पुण्यपादं वाचयित्वा, कित्तु संकल्पं पूर्ववत् । कुंडला स्थलिलकुत्रांशदेशे स्यापयेद्
 पटम् (तद्देशे तस्मिन्नेषे) तत्कुंभे निक्षिपेद्द्रव्यं दधिचीरतृतादिकम् । (आदिशब्दाद्गोमूत्रगोमये)
 म्यप्रोद्योदुम्बराश्वत्याः संचूला निम्बकस्तथा । एतेषां वृजमूलानां शशादीनि ललनांस्तथा । पंचतानि
 निक्षिप्य बल्लभुगमेषु त्रेष्टये ॥ सर्वं समुद्रं सरितस्तीर्णं निजलदानशः । आशान्तुयजमानं यं दुरितक्षयका

रका । आपोहिष्ठा न्युचेनाथ कथान शिवशक्तवृषा । यत्किंचेदगृचाचैव समुद्रज्येष्ठ इत्युवा । अभिमन्त्रोद-
 करशरदग्नेः पूर्वदेशके । हृदिरेत्कं चैव वृष्णेश्वरं च नीलरम् एतेषां तण्डुले चैव सर्वतोभद्रमुदरेत्
 कुम्भत पश्चादग्ने श्यपूर्वतो हृद्विरगरकैस्त्रंडुले सर्वतोभद्रमुद्रादित्यर्थ । दर्शस्यदेवतापारचमोमसूर्य
 स्वस्वम् । प्रतिमा स्वर्णजनित्यं राजनीताम्रजातम् । (पितृरूपाया दर्शश्चैवतायाः सोमसूर्य
 योश्चस्वरूपं प्रतिमारूपं स्थापये दित्यर्थः । इति प्रयोग पारिजातः । सर्वतोभद्रमध्ये च
 स्थाभ्येदर्श देवताम् । प्रदक्षणे मन्त्रपुगे तद्वर्णं गन्धपुष्पम् । आप्यायन्वेति मंत्रेण सक्रियपश्चात्तथैवच
 उपचारैः सनागन्ध ततो होमचोरुयो । कृत्वा बन्धुप्रतिष्ठायां क्रतुमकल्पमीदृशम् । आयुरारोग्य मि-
 सर्वरिष्ट प्रशांतये । पुनस्यदर्शं ननंतस्यक्षोप निरहंणम् । मातापित्रोः कुमारस्य सर्वारिष्टप्रशान्तये । तेषा
 मायुः श्रियैश्चैव शानिहोमंकोम्यहम् । (आयुरारोग्येनिश्लोकृद्धयेन क्रतुसंकल्पं कृत्वेत्यर्थः)
 समिभश्चवहृद्वं कमेण तुह्याद् गृहो । हुनेत्यन्त्रमन्त्रेण योगोवेनुं च मंत्रनः एतेश्चप्रत्येकं हुनेऽष्टोत्तरं
 शतम् (एतेरिति बहुवचनानां त्रितृहोमोप्यष्टोत्तरं शतमिति प्रयोगपारिजातः) दर्शस्य
 देवताहोम अष्टविंशति माश्रया । होमैरनु कृत्यादविदध्याचामिमेकम् । श्री सूक्तमनुसूक्तसमुद्रज्येष्ठा
 इत्युवा एतेमन्त्रैरभिकं मातापिने त्रिशीस्तम् । तत्र त्रिषुः कृत्वादिस्वाहोमिणेष समापयेत् । त्रिष्वैरजत
 चैव कृष्णविनुंसरक्षिणां । अग्नेभ्योऽभियवाशक्ति दंतव्यादक्षिणा तथा । ब्रह्मणोभोपयेत्तत्रारयं
 स्त्री तत्रचन्म् । इति नारदोक्त दर्शशान्ति परिभाषा ।

— १० —

अथआमावाश्याजननशांतिपद्धतिः ।

— — — * — — —

अथच कर्त्ता नित्यकर्म समाप्य—गृहाभ्यंतरे पूर्वदिक्षु एकोन-
 विंशति रेखात्मकं सर्वतोभद्रं विरच्य स्वासने उपविश्या चम्य
 प्राणानायम्यः दीपं सम्पूज्यसंकल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ
 संकीर्त्यामुकोहं ममास्य जातस्य दर्शजनन सूचितस्य मातापित्रोः
 कुमारस्य च सर्वारिष्ट प्रशांतये, आयुरारोग्य सिध्दये च श्रीपर-
 मेश्वर प्रीत्यर्थं, दर्शजननशान्ति कर्मणि, निविध्नता सिद्धये—
 गणपतिपूजन कलशस्थापन पुण्याहवाचन मातृका पूजन नान्दी
 श्राद्ध ग्रहपूजन पूर्वकमाचार्यत्विर्गवरणानिच करिष्ये ॥ ततो गणे-
 शादीन्संपूज्य, सर्वतो भद्रे मंडलदेवानावाहासंपूज्य च—तत्र

मध्ये-ताम्रकलश-संस्थाप्य, तत्र संगमजलं पंचगव्यं न्यग्रोधो
दुम्बरोश्वत्थचूतनिवेवृक्षाणामूलत्वचःपल्लवांश्चपंचरत्नानिनिक्षिप्य
घञ्चयुग्मेन संवेष्ट्य कलशपूजोक्त विधिना संस्थाप्य संपूज्य च ।
तत आपोहिष्टेत्युचेन, कथानश्चित्र० इतिवा पूर्वाक्त समुद्रज्येष्ठा
इतिसूक्तेनोदकमभिमन्त्र्य ॥ तदुपरिताम्रपूर्णपात्रं तंडुलपूरितं
विन्यस्यतत्र वरुणं संपूज्य, तत्र पूर्णपात्रोपरि मध्ये सुवर्णप्रति-
मांदर्शदैवतात्मकपितृरूपां, ३० येचेह पितरो येचने ह्यँश्च
द्विद्वया २॥ ॥३३चनप्रविद्य । त्वंवेत्थ यतितेजातवेदः स्वधाभि-
र्थजर्द० सुकृतं जुपस्व ॥ इतिमंत्रेण संस्थाप्य—तद्वक्षिणेसोमं रजत
प्रतिमाया मावाहयेत्-मंत्रः—३० आप्यायस्व समेतुतेद्विरवतः
सोम वृष्यम् । भवाव्वाजस्य संगथे । इतिसोमंसंस्थाप्य, पितृ-
वामे-सवितारमावाहयेत्-मंत्रः३०सवितात्वासवानाँँसुवतामग्नि
र्गृहपतीनाम् । इति संस्थाप्यैभिर्मंत्रैः संपूज्य; ततः कुंभात्पश्चिम
दिशि, होमवेदीं कल्पयित्वा होमपद्धत्युक्त विधानेन पंचभू-
संस्कार पूर्वकं प्रोक्षणान्तं कर्मकृत्वा संस्रवधारणार्थ-प्रोक्षणीपात्र
मग्निप्रणीतयोर्मध्ये धृत्वा ततोवरदनामग्निं संपूज्य द्रव्यत्यागं
कुर्यात्-अवेत्यादि० अमुकोऽहं ममास्यजातस्य दर्शनजनसूचिता-
रिष्ट निरसनपूर्वकं दर्शशान्तिकर्मणायक्ष्ये तत्राघाराज्य भागदेव
ताभ्यो नवग्रहदेवताभ्योऽष्टसंख्याभि स्तथा पितृसोम सवितृ
देवेभ्योऽष्टोत्तरशताहुतिभिः प्रत्येकं । वाष्ट्रविंशत्यान्यतम संख्या-
भिर्हुत्वा खिष्टकृदादि भूरादिनवाहुतिहोमं घृतेन, तत्तद्देवताभ्यो
परित्यक्तं यथादैवतमस्तु नमम ॥ ३० प्रजापतये स्वाहा । ३०
इन्द्रायस्वाहा । ३० अग्नयेस्वाहा । ३० सोमायस्वाहा । इत्याघारा
वाज्यभागौहुत्वा प्रधानहोमंकुर्यात्—तत्रादौ नवग्रहाणामंत्रैः
प्रत्येकं २८ विंशत्याहुतिभिर्हुत्वा । ३० येचेह पितरः ०१०८ । ३०
आप्यायस्व० १०८ ३०सवितात्वा०१०८ततः—३०अग्नये स्विष्ट
कृतेस्वाहा । ततो भूरादि नवाहुत्याज्यहोमं हुत्वा । सर्वतोभद्रस्थ
कलशजलेन पूर्वाक्ताभिपेक मंत्रैः श्रीसूक्तेन च सपत्निपुत्रयज

मानमभिषिञ्च्य, ततोवलिदानान्ते पूर्णाहुतिंकृत्वा, आचार्यायवरं
कृष्णांसवत्सांगांदत्त्वाशेषं समाप्य ऋत्विगाचार्यादिभ्यो दक्षिणां
दत्त्वा आचाहित देवान्संपूज्याग्निं विसृज्य यजमानं तिलकारोप-
णेनाशिपं दत्त्वा ब्राह्मणाभोजयित्वा शान्तीः पाठयित्वा स्वस्ति
वाचनंकुर्यात् ॥ इत्यमावास्या जनन शान्ति पद्धतिः ॥

अथ ग्रहणजनन शान्तिविधिः ।

अथ शौनकोक ग्रहणजनन शान्तिविधिवक्ष्ये—ग्रहणेचन्द्रसूर्यस्य प्रसूतिर्दियायते ।
व्याधिपीडातदास्त्रीणामादौ ऋतुं शनात् । इत्थसपायतेयस्तु तस्यमृत्युनसंशय व्याधि पडा च
दारिद्र्यशोकश्चरुलहोभवेत् । शान्तिंतेपंप्रवद्यामिनराणां हितकाम्यया । यस्मिन्नृत्वेविशेषेण ग्रह-
ण्यदिजायते । तनलनाधिपरुषं सुपणाप्ररुपयेत् । (अन्नाधिपस्यरूपमित्यर्थ) यथशचयनुसा-
रेण त्रित्तशोधनकारयेत् । सूर्यग्रहेसूर्यरूप हिरण्येन दशशक्तित । चंद्रग्रहेधूमज्जतेन विशेषत
रादोरूप प्रकुर्वीत नागनैवविचक्षण (नागनसोमवेन) शुचीदरेप्रयत्नेन गोमयनीपलेपयेत् । तस्यो
परिन्यसद्दीमानववहसुरोभनम् । प्रयाणाचैवहाणा स्थापन तत्रक रयेत् । रक्षाक्षत, रक्षाधरक-
पुष्पावरणि च सूर्यग्रहे प्रदत्तव्य सूर्यरीतिस्तराय च । श्वेतवस्त्रश्वेतमात्य श्वेतगंधानुलेपनम्
चंद्रग्रहे प्रदातव्य चन्द्रप्रीति कराय च । राहव्यैवदातव्य कृष्णपुष्पावरणि च । दद्यात्सुप्रनाथाय
राहुरीतिकराय च । सूर्य सम्पूजयेद्दीमानकृष्णेनतिमत्रत । चन्द्रग्रहे तथा सम्पूजयेद्वैवेतिमत्रत ।
क्यानश्चित्रमणेराराहुयत्नेनपूजयेत् । एवंपूजयेद्दीमान्समिद्धिरचकं सभयै । (सूर्यग्रहइत्यर्थ)
चन्द्रग्रहेच पालश समिद्धिर्दुह्यात्त । दूरीभिर्दुह्याद्दीमाजहो । सप्रीणनाय च । समिद्धिर्द्वंद्वा
शृङ्गस्य नक्षत्रेशायवेत् । आग्नेनचरुणाचैव तिलेशचजुह्यात्तत । त्रिभ्यइत्यर्थ । पंचगव्यै
पवरत्नै पचत्वनपचपल्लवै । जलैरघधकलैश्चसहितै कलशोदकै अभिषेक प्रकुर्वीतयजमानस्य
मनस मन्त्रेवाद्य सभूतै रपाहिषादिभिस्त्रिभि । इन्मैगमे इत्यादितत्वायामोति मन्त्रै अभिषेके
निवृत्तेतुयजमान समाहित आचार्य पूजयैत्तरचत्तुशान्तो विजितेद्रिय । तस्मैदद्यात्प्रयत्नन भक्त्या
प्रतिकृतिप्रयम् । एतच्च दक्षिणा दद्याद्यजमन समाहित इत्थग्रहण जातानां सर्वादिष्ट विनाशनम्
कथितं भागवतेद शौनकाप्रमहत्तमे ।

इति ग्रहणजात शान्तिविधिः सरलरामप्रयोगोदर्शित ॥

अथ कार्तिकवाराहदंपूजाजननशांतिपरिभाषा ।

—:०:—

स्मृत्यादिषु— दिनषट्कंकन्यकायाः— सप्ताहानिचकार्तिके । वाराहदंपूजिविधेया यजयेत्सप्त
 कर्मसु । इति केचिन्नमतम्— वैद्यशास्त्रे तु कार्तिकस्य दिनान्यष्टापथी चैवाग्रहायणे । यमदंपू
 समाख्याता स्वपादारः सजीवति (ग्रन्थान्तरे) लोही ताम्नी च रौप्यो तदनुखलु—महा राजती
 कालदंपूजा कर्जमासे मुनीन्द्रा रित्रदशदिवसवैमानिमाधुषतासम् । आर.स्यां ततन.शो निजकुलविरति
 स्ताम्रयाना तथैव राजत्याद्वयहानि भवति च नियते स्वर्णयावे शुभानि ॥ ज्योतिषार्णवे तु—
 तुलार्कतमिच्छिदिनेशजोह ताम्रौय रौप्यानिजयामदंपूजाः इहप्रजातस्यसमश्लिष्टान् चान्याशुभोदशभ-
 वाधवास्त्री ॥ स्मृत्यन्तरे— विद्यापादेतृतीये च यदाभानुःप्रजायते । तदारभ्यार्धमासे च विद्या
 कालदंपूजाः ॥ इत्यादि प्रमाण वाच्यैस्तुलार्कत एव पूर्वोक्त दंपूजां मानं नतु चान्द्रमानतो गणना
 भवतीति शास्त्रसम्मतः ॥ सर्वं सम्मत्या तु— दंपूजाप्रभगे भगवान्धरित्री प्रयोदशाहे ऽष्टकार्ति-
 कस्य । तस्मिन्ननुयाद् व्रतगेहवास्तुविद्याहयात्रा शुभमंगलानि । तत्रशान्तिः प्रकर्त्तव्यादंपूजादंप
 निवारिका धेनुंपयःस्विनीदद्यात्सर्वदोषोपशान्तये । गर्गमते तु— गर्ग उवाच—अध्यात.संप्रवक्ष्यामि
 दंपूजां जननेफलम् । सिंह सर्पन्तथाश्वानस्रयोदशव्यवस्थिताः प्रथमेत्यात्मनाशाय पितृनाशोद्धिती
 यके । तृतीयेमातृनाशाय चतुर्थेयशनाशानम् । पंचमेध्रातरंहन्ति पष्टेगोत्रजयोभवेत् । सप्तमेमातुलं
 हन्ति सर्वस्वचाग्नेतथा । नवमेद्विण्णहन्ति दशमस्वामिनंतथा । श्वधूमिकादशेहन्तिद्वादशे श्वसुरंतथा
 अयोदशेशुभंविधात् दंपूजाफलमौदशम् ॥ मर्त्ये स्वर्गे च पाताले— चत्वारिदिनसंख्या । फलं
 वक्ष्यामि लोकेषु दंपूजाद्वादशके तथा । स्वर्गलोकेमवेत्सौव्यंमर्त्यलोकेमहद्दरम् । पातालेचभवेत्स भो
 दंपूजायास्तुष्ववस्थितः । तत्रशान्तिप्रवक्ष्यामि साचार्यमतेनतु । ब्राह्मणान्वृष्यात्पूर्वे कुलीनावेद
 परगान् । प्रतिमांकारयेद्विष्णो निष्कनिष्कार्पादत्तः । मंडलंकारयेत्तत्र रक्षाब्जप्रीहितंङ्कुलेः ।
 तत्रैककलशंस्थाप्यपंचभद्रमंयुतम् । शशीपधानिनिक्षिप्यसर्वौषधियुनानि च ॥ (शशीपधानिशतमूलानि
 मूलशान्तिपरिभाषायामुक्तानि) वेदोषेनविधानेनकलशस्थापयेत् कुपः । तत्रोपरिन्त्येत्पात्रस्वर्णवा
 रोभ्यतासकम् । तन्मध्येप्रतिमांस्थाप्य, पीताम्बरधरांशुभम् । विशोररुष्टमंत्रेणप्रतिमांपूजयेत्
 सुधीः । उपचारैःपेडशभिः क्रियापंथोपचारकैः । तस्मात्तु नैर्ऋते देशे स्थंडिलेर्नप्रकलयेत् । स्व
 स्वशाखोक्तविधिना कुयदिग्निमुखंततः ॥ त्रिमध्यकै स्तितेर्विद्वान्होम कुयत्स्वशक्तितः । निर्वर्त्य
 चाज्यहोमान्तमभिषेकं समाचरेत् । दारपुत्रसमेतस्यजमानस्यसर्विजः । मत्नीभ्यामितिसकैत्त
 पावमानीभिरेव च । त्रिंशो रराटमंत्रेणशिवसंकल्पमंत्रैः । तत शुभांवरःसुभगोधाक्षेपनः ।
 यजमानो दक्षिणामिस्तोप वेदस्विगादिकान् । धेनुंपयस्विनीं तद्भ्रमतिमां वस्त्रतंदुताम् । सुप्रमथमनां

भूत्वाश्नानार्थाद्यप्रदापयेत् । अन्धेभ्योदक्षिणादथात्तथात्रित्तानुमारत । भूयमीदक्षिणादयान्नाह्वणं च
भोजयेद्दत्त । एवकार्तिकदश्या शान्तिं कुरुतेनर । सर्वान्नेमान्बन्धोति जीवेद्वर्षशतमुधी । व्रत
वधेभवेत्कुण्डीदीक्षाचापि सुनिष्फला । विशदेचापिवेधोपदश्या फलमीदृशम् । इति—

— ० —

अथ कार्तिकवाराहदंष्ट्राजननशांतिपद्धतिः ।

— ३०३३ —

अथ च शान्तिकर्ता पूजा स्थलमागत्य स्वासने उपविश्य
आचम्य, प्रतिज्ञा संकल्पं कुर्यात्—अथेत्यादि देशकालौ संकीर्त्या
मुकराशिरमुकोहं कर्त्तव्या मुकं बालकस्य कन्यायार्वा दंष्ट्रा जनन
शान्तिकर्मणि निर्विघ्नतासिद्धये गणपत्यादि पंचाङ्ग देवतानां
पूजन पूर्वकं गर्गोक्त विधानेन वाराहदंष्ट्रा जनन शांतिचक्रिष्ये,
ततः पंचाङ्ग देवताः सम्पूज्य, तत्र तंडुलै रष्टदल कमलं विरच्य
सिंदूरेणापूर्य तन्मध्ये ताम्रकलशं मृगमय कलशं वा संस्थाप्य,
जलेनापूर्य पंचपल्लव शतमूलानि तत्रनिक्षिप्य आचार्यं वृणुयात्—
वरणं द्रव्यं ब्राह्मणं च संपूज्य, वरणद्रव्यं हस्तेनिधाय संकल्पः—
अथेत्यादि संकीर्त्या, अमुकोऽहं ममास्य बालकस्य गर्गोक्तविधिना
दंष्ट्राजनन शान्तिकर्मणि, एभिर्वेणुद्रव्येणामुक शर्माणं ब्राह्मण
माचार्यत्वेनाहं वृणे, वरणद्रव्यं दत्त्वा, वृतोऽस्मीति ब्राह्मणो
वृथात् । कर्मकुरु कर वाणीति प्रत्युक्तिः । ३० आचार्यं स्त्विति
प्रार्थयित्वा, तत आचार्यः कलशं पूजयित्वा, ततस्तदुपरि तंडुल
पूरितं ताम्रपात्रं—३० पूर्णादिवि परापत सुपूर्णापुनरापत । वस्नेव
द्विक्रीणा बहाऽऽपमूर्जं दंशतक्रतो । इतिपूर्णपात्रं संस्थाप्य तदु-
परि निष्क निष्कार्दं वा यथावित्तं सुवर्णं प्रतिमां महाविदशो
रग्न्युत्तारण पूर्विकां संस्थाप्य सौवर्णीं दंष्ट्रामपि च स्थापयित्वा,
संकल्पः— अथेत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं ममास्य बालकस्यतुलाकं
वाराह दंष्ट्रासु जननत्वान्मातापित्रोर्वा स्वस्य च समस्तदुःखदो
र्भाग्यादि दोषानुपत्तये शुभफल प्राप्तये च गर्गोक्त विधिना

कलशोपरिसुवर्ण प्रतिमायां महाविष्णोः पूजनं करिष्ये—३० विष्णो
 राटमसि विष्णोः शनप्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि
 वैष्णव मसिविष्णवेत्वा ॥ इति मंत्रेण वा पुन्य सूक्तेन षोडशो
 पचारेण संपूज्य, ततस्नन्मंडलस्य कीयद्दूरे नैर्ऋत्यभागे हस्तपरि
 मितस्थंडिलं कृत्वा कुशकण्डिकोक्त विधिना पञ्च भूसंस्कार पूर्व
 कमग्निं संस्थाप्य, कुशास्तीर्णादि प्रोक्षणी निधानान्तं कर्मकृत्वा—
 ३० वरदाग्ने इहागच्छेह तिष्ठ, ३० एतन्ते देव० इति पठित्वा ३०
 भूर्भुवः स्वः वरदाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भवेति प्रतिष्ठाप्य ३०
 अग्निं दूतं पुरोधे हव्यवाह सुप वृषे ॥ देवाँ २॥ऽआसादयादिह ॥
 इति मंत्रेण संपूज्य ब्रह्माणं वृणुयात्—ब्रह्माणं संपूज्य वरण
 द्रव्यं हस्तेनिधाय, संकल्पः—अद्येत्यादि अमुकोऽहं करिष्यमाण
 वराहं दंष्ट्रा जननशान्ति कर्मणि कृता कृतावेक्षणादि ब्रह्मकर्म
 कर्तुं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे वृतोऽस्मीति कर्मकुरु करवाणीति
 प्रत्युक्तिः ॥ तत आधारावाज्यभागौ हुत्वा (नान्वारंभः) मधु
 गुडं शर्कराघृतमिश्रिततिलैः प्रधानहोमं कुर्यात्—विष्णोरराट
 मिति प्रजापतिर्ऋषि र्यजुश्छन्दो विष्णुर्देवता दंष्ट्रा जनन होम
 कर्मणिविष्णुप्रीतयेत्रिमध्वत्त तिलहोमेविनियोगः—३० विष्णोर
 राटमसि विष्णोः शनप्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि
 वैष्णवमसि विष्णवेत्वा, इति मंत्रेण सहस्राहुतीर्हुत्वा, ततः ३०
 अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते नमम, ततोभूरादि
 नवाहुति पाथश्चित्त होमं कृत्वा पूर्णपात्र दानान्ते संस्रवप्राशनं
 प्रणीता विमोकं पूर्णाहुतिं च कृत्वा, मंडपोत्तर देशे सपत्निपुत्रं
 यजमानं भद्रासनस्थं, स्थापित शतमूलादि गर्भित कुम्भजलेन
 मूल शान्त्युक्त विधिना श्वेत वस्त्रोपर्युपवेशयित्वा पत्नीं वामतः
 कृत्वा संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्या मुकराशिः सपत्नि
 पुत्रो ऽहममुकराशे रमुक बालकस्य, वराहं दंष्ट्रा जनन सूचिता
 रिष्ट निवृत्तये शुभफल प्राप्नयेच अभिषेकमंत्रैः शान्तिस्नानं
 करिष्ये,, ततो हरिद्रादि सतैल सवैपधि-लिप्ताङ्गानां त्रयाणां

प्राङ्मुखानांमाचार्यो मूलशान्त्युक्तमंत्रैः ॐ अस्त्रिभ्यांते इत्यादि
तत्रोक्तं द्विपदे शंघुत्पपदे, इत्यन्तैरेकचत्वारिंशन्मंत्रैरभिषिच्य ।
ततः—३० योऽसौ वज्र धरो देवो महेन्द्रो गजवाहनः दंष्ट्रा जात
शिशोर्दोषं मातापित्रो व्यपोहतु । १ । योऽसौ शक्तिधरोदेवो
हुतभुग्मेषवाहनः । सप्त जिह्वः सदेवोग्नि दंष्ट्रादोषं व्यपोहतु
। २ । योऽसौ दंडधरोदेवो यमो वह्निपवाहनः । दंष्ट्राजात
शिशोर्दोषं मातापित्रो व्यपोहतु । ३ । योऽसौखड्गधरोदेवो
निर्ऋतिरक्षसाधिपः । प्रशामयतु दंष्ट्रोत्थंदोषं गण्डान्तसम्भ-
वम् । ४ । योऽसौ पाशधरोदेवो वरुणश्च जलेश्वरः नक्रवाहः
प्रचेतानो दंष्ट्रोत्थाऽधं व्यपोहतु । ५ । योऽसौदेवो जगतप्राणो
मारुतो मृगवाहनः । प्रशामयतु दंष्ट्रोत्थंदोषं बालस्य शान्तिदः
। ६ । योऽसौ निधिपतिर्देवो गदाभृन्नर वाहनः । मात्रा पित्रोः
शिशोश्चैव दंष्ट्रादोषं व्यपोहतु । ७ । योऽसाविन्दुधरोदेवः
पिनाकी वृषवाहनः । वराह दंष्ट्रजनितं दोषमाशुव्यपोहतु ॥ ८ ॥
ॐ विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा लोकपालानवग्रहाः । सर्वदोष प्रशम-
नं सर्वकुर्वन्तु मंगलम् । ९ । ततःसपत्निपुत्रं यजमानं वस्त्रान्त-
रित कुम्भाभ्यां स्नापयित्वा, शुक्ल वस्त्राणि परिधाप्य धृतच्छा-
या दर्शनं कृत्वास्नानवस्त्राण्याचार्यायदद्यात् ततो गोदान पद्धत्यु-
क्तप्रकारेण गांसंपूज्य देवादींस्तर्पयित्वा—संकल्पः—अद्येत्यादि
देशकालौ संकीर्त्यामुकराशिः सपत्निपुत्रोऽहंममास्यपुत्रस्य
(३०) तुलार्कवराहदंष्ट्राजननसूचितारिष्टनिर्वृत्तिपूर्वकसर्वो-
पद्रव शान्तिपूर्वक दंष्ट्राजननशांति कर्मणः साद्गुण्यार्थमिमां-
सवत्सां गां तथा विष्णुप्रतिमां हैमीं वराहदंष्ट्रां सकुम्भाश्वा
थ्याचार्यायामुक्शर्मणेत्तुभ्यंसंप्रददे। ३० तत्सन्नमम, ततःप्रतिष्ठांकृत्वा
प्रदक्षिणा चतुष्टयविधाय कलशजलेन यजमानमभिषिच्य रक्षा-
सूत्रं च ध्यामन्त्रतिलकाशीर्वादत्वा देवान्यसृज्य दशब्राह्मणा
न्भोजयेत् ।

अथ सिंहगवादि प्रसव शांतिपरिभाषा ।

— ❧ —

इयं सिंहादिप्रसूतगवादिशांतिः नय -- मन्वृशुतसागन्तार -- भर्तृमिदृते चैव यगी सप्तसूक्ते । मण्यतस्तन्निदिष्ट पृथ्विर्मर्सेर्नः इयं प्रसूततच्छणाव्यव तांगविप्रापदापयेत् । ततो दोमस्तद्वर्तन घृताक्त मधुपर्षये । आत्तोर्नाघृताक्तनाममुत सुदुयात्तत (व्याहृतिभिर्जोना) सोमगत प्ररत्नेनखाद्विषाय दक्षिणा । वस्त्रयुग्म च गर्ध्वं सुश्रेयं च प्रदापयेत् । इष्टदेवामध्रेण तत शान्तिं र्भिव्रति । प्रयवंपद परिशिष्टोक्तशान्ति -- मधेयुव च महिर्प्रात्रेवडवादिना । सिंहगाव प्रसूयन्ते र्पायिनीमृत्पुत्रागमा । विधानात्रकर्तव्यनोणद्वितमिच्छत । गीरे सूक्ते प्रकृतव्योहो न सूत्यत्प्रये । प्रायानित्यत्परिषत पायसशर्कर सुतम् । सत्सत्त्वा प्रोक्तशान्तिपद्यौ यथाविधि । प्रयुच्यपायस्युत्तम (सूर्यमध्रेण) तानां विप्राप्रदापयेत् । ततोष्ठान निदापयेत् -- तिलनाह द्विस्य । च यथासलवण्यया । सान्त्वान्यत्त्रिभिर्गव एवैव । क्व स्पृष्टम् -- रत्न र्शानि रत्नप्रकणतो ष्टुशानि ।

इति सिंहादि प्रसूतगवादि शान्ति विधि सरलत्व्याजप्रयोगो दर्शित ।

अथ सीतामृत सर्पशान्ति विधिः ।

उक्तं च नंदीपुराणे -- यानिकेयवतः ह्यनरुहपय फालनास्त्राणितोरः । श्रियतयंय मत्तैरयक्षेत्रेत्तत्रमद्वभम् । मन्वेत्तच्छुभतेर्मुद्दिक्षागन्तया । तत्रशान्तिं प्रकृत्याकृतिरुच्येनचोदिता । श्रीदौगणेशप्रभूय जेभान्तवैभव । मृत्पुत्रयस्य प्रतिपा बलेणशालेनयद्वुत्त तस्मिं सर्वेश्वरोलेख्य कर्त्तव्यरुण्यम् । त्रिनेत्र द्विभुजपीत वस्त्रेणाक्त शिखुम् । व्यवकेणैवभर्णेण पूजयद्विधिः त्रिय । मृत्पुत्रयस्य सर्पधन कठेचैव प्रपूजयेत् । नमोऽस्तुभिरभ्यासेनहान् प्रकृत्यधरे । चरुपुत्रेण तथा ह्यभिष्टत ह्यभिपकथेत् । दसपुत्रसमतस्य यन्मानस्यभवा । इतिशान्तिः नय । केचिन्मत -- वृषभील जलीपती सिद्धय च प्रदापयेत् । मू यंशान्तिदर्शना तद्वधवाप्रदापयेत् । गीदानात्कथं यद्विचेत्सिद्धिमिच्छति ।

इयसीतामृत सर्पशान्तिः ।

अथ सर्पयुग्म दर्शनशान्तिः

ईश्वर उवाच -- सपुत्रमयदापश्यतशहानि प्रजायते । सर्पद्विर्भवत्स्यशरीरे व्यभिपि-
दम् तत्रव शोक्तव्यत सुदुयात्तच्छुभते । नमोऽस्तुभिर इतिपुत्रो तुषयाविधि । मृत्पुत्रयस्य प्रतिपा
व्यवकति प्रपूजयेत् ।

इति सर्पयुग्म दर्शन शान्ति

अथ काकविष्टापतन शान्तिः ।

अथकथोपनाशो विष्टासपयतेयदि । क्षीरवृत्तस्मारहा स्तस्यशिक्षितकम । सुम्पृच्छसम्हो
विष्टासपयतेयदि । त यलक्ष्मी क्षणशान्तिभिर्मिम संनशयय निशलन्वोयदाशको विष्टासम्पयते यदि ।

सिरसिपतितिस्यारणमासात्स्य मृत्पुङ्गवः । रक्त्वेवाहयवापृष्ठे विष्टपततिदस्यचेत् । भ्रातृकण्ठभवेत्तस्य,
 भ्रयवादेदनाशनम् बाहोः । पततिदिष्टतुमिदंशोभवेत्तदा । कुक्षीपुष्पाभिरन्तद्यु, उदररोगमादिरेत् ।
 शुभ्रपततिदस्यैष पुशनाशोभवेत्तदा । उर्वोर्वाजाटुमार्थस्य, कायदिष्टप्रपद्यते । तद्वाहनस्त्रनाशः रयादुभयै
 वातः सक्त्रातः । चरखेप्रपतेदस्य, देशत्यागोभवेत्तदा । निगलभ्वोयदाकाको विष्टाश्वेताङ्करोतिचेत् ।
 उच्चारत्पुर्वमायाति शत्रुन शोभवेत्तदा । याम्पातः परदिशंयाति कृगण्णविष्टांप्रपद्यते । मन्त्रशम्यतरतोमृत्युः
 सर्वनाशोभवेत्तदा । इति काकविष्ठापतनफलम् । अथशांतिः—यस्यांगप्रपतेद्विष्टा,
 सचैलंस्नानमचरेत् । वस्त्रत्यागोभवेत्तस्यस्यः शान्तिकरोद्विष्टः । धेतुकेचरातन्प्रासर्वांलंकारशांभिता ।
 पंचरत्नं च दातव्यं दक्षिणाचैवतकितः । सतितैर्मधुभिर्हानमटोत्तरदातंवेत् ।

— :: :: —

अथकाकविष्ठापतनशान्तिपद्धतिः ।

अथचकर्त्ता काकविष्ठा पतन क्षणेजलाशये गत्वा—संकल्पः—
 अथेत्यादि० अमुकोहं ममामुकांगे काकविष्ठापतन जनितदुर्दोषोप
 शान्त्यर्थं, सचैलं स्नानं करिष्ये, इतिसचैलंस्नात्वा परिधेय स्नान
 वस्त्राणि परित्यज्यान्ववासः परिधाय स्थंडिलेग्निसुपसमाधाय ।
 धरदाग्निमावाह्य, तदीशाने कलशं संस्थाप्य, तत्रग्रहानावाह्य,
 ब्रह्मोपवेशनादि पर्युत्क्षणान्तं कर्मकृत्वा, आधारा वाज्यभागौ
 हृत्वा । मधुतिलसर्पिर्भिर्गायत्री मंत्रेण वा श्यंवरक मंत्रेणे,
 न्द्रमंत्रेणचाष्टोत्तर शतंहोमविधाय उत्तरतंत्रं समाप्य स्वशक्त्या-
 दक्षिणां दद्यात् । होमा शक्तौतु—सचैलंस्नात्वातिलपात्रेण सह
 मापान्न दानं घृतच्छायां कुर्यात् वासपत्तशती पाठं कुर्यात्कारये
 द्वासर्धदोषपरिहारार्थं गोदानं पंचरत्नदानंच कुर्यात् ॥

इतिकाकविष्ठापतनशांतिपद्धतिः ।

अथ काकमैथुनदर्शनशांतिविधिः ।

हेमाद्रीगर्गः—श्वेतकाकमैथुनदर्शनं मेवानिष्ठावहम् । काको मैथुनयुक्तरचैत्तद्वैतः
 सपदिदृश्यते । नारदसंहितायान्तु—दिवावायदिवाराश्रयः पश्येत्काकमैथुनम् ॥ सनरोमृत्यु
 भाग्नोतिष्ठयदा स्थाननाशम् । तद्दीपशामनायेतं शान्तिकर्मसमाचरेत् ॥ यहस्वेषानभागेतु होम-

स्थानं प्रदत्तयेत् । स्वगृहोक्त विधयेन तत्रस्थाप्य हुतस्थानम् । मयान्ते समिदन्नाभ्यर्हुनेदष्टोत्तरं शतम् । प्रतिमन्त्रत्र्यंशकेण अपमृत्युद्वयेनच । व्याहृतिभिर्त्रोहि तिलैर्जपघ्नन्तं प्रकल्पयेत् । पूर्णाहुतिं च जुहुय त्कर्त्ता सुचिरलं वृतः । स्वर्वाभृतीं रौप्यपुरां कृष्णाधिभुं पयस्विनांम् । वज्रालं-कारसहितानिष्क द्वादशसंयुताम् । तदर्धेन तद्द्वार्द्धेनवायुताम् । यथावितानुसन्निगतन्म्यूनाधिक कल्पना । आचार्ययथोत्रियायताभिर्दद्यात्कुटुम्बिने । ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चत्स्यस्तिवाचनपूर्वकम् । एवंयः कुरुतेसम्यग्गतद्वोपात्प्रमुच्यते ।

। इति काकमैथुनदर्शनशान्ति विधिः ।

अथ पल्लीपतनशरठारोहणशान्तिः ।

उक्तं च वशिष्ठे संहितायाम्—कुञ्जगेमस्तक शोणे, पतिते फलमुद्धते । मस्तके राज्य-लाभस्यद्भालेकशेष भूषणम् । नेत्रयोर्भिन्नलाभस्यात्पुगंधनासिकोपरि । मुनेसुभोजनंकरकै स्त्रीलाभः स्तुभेयोर्जयः । शंसैते गोविद्भिःरया दर्धवृद्धिःकरद्वयम् । वक्षस्थलेतुसौभग्यं हृदिप्रीति विवर्धनम् । पुत्रलभस्तु कुत्रौस्यान्नाभौप्रीतिविवर्धनम् । अर्थलाभस्तुपृष्ठेया पार्श्वयोः सुहृदागमः । कटिस्थाने वक्षलाभो गुणस्थाने समागमः । गुददेशे विनशस्या दूरुजान्वे श्चवाहनम् । जंघयोः पादयोश्चैव सदागमनमादिशेत् ॥ पादतश्चोर्ध्वामनं कुर्यादामस्तकाद्यदि । गात्रेप्रदण्डिणेचापि राज्यलाभोभवेत्तदा । मस्तकात्पादपर्यन्तं यदिगच्छेदधोऽपिवा । भवेद्युश्चतकतस्य कुटुम्ब फलहामयाः । सरटीपतनधेय सचैतं स्नानमाचरेत् ॥ यामपादेतु गमनं स्त्रीणाव्यक्तं फलेवदेत् ॥ मारदसंहितायाम्—फलप्ररोहणैचैव सरटस्य प्रचरतः । सर्वान्गेष्यशुभं विद्याच्छान्तिं कुर्यात्स्व-शक्तितः । शुभस्थाने शुभावाप्तिरशुभेदोपशान्तये । तत्स्वरूपं सुवर्णं रत्नरूपं तथैवच । मृत्युं-जयेन मन्त्रेण वक्ष्प्रदिभिरधार्चयेत् । अग्निं तत्रप्रतिष्ठाप्यजुहुयात्तिलपायसैः । आचार्यो वाक्षीः सूक्तैःकुत्रात्राभिषेचनम् । आभ्यासलोकनं वृत्त्या शनस्या ब्राह्मण भोजनम् । गणेशक्षेत्रपालार्क जुगोक्षोण्यंगदेवता । तासांप्रीत्यै जप कार्यं शेषं पूर्ववदाचरेत् । ऋत्विग्भ्योदक्षिणां दद्यात्पोदशेश्यः स्वशक्तितः ॥

। इति पल्लीपतन शरठारोहणशान्तिः ॥

अथ विनायकशान्ति परिभाषा—तत्रादीप्रतिह्लादिनिर्णयः—स्मृतिचंद्रिकायांश्रुगुः कामशान्तिं तदंश्रुगुलधो, कस्यचिन्मृति तदोद्वाशोनेनकार्यः कृतोयैक्यमोप्नुयात् । शौनका—पितापिता-महश्चैव मातश्चैव पितामहो । नितुर्व्यस्त्रीपुत्राध्याता भगिनीवाविवाहिता । एभिर्त्रविपन्नैश्च प्रतिकूलं पुधेस्मृतम् । पित्रादिमरणेतु विशेषमाह शौनकाः—वरदक्षी पितामाता नितुर्व्यश्चमोदः एतेषांप्रतिकूलं च महाविघ्नप्रदंभवेत् । मांडव्यः—नितुराशीच मवःस्यात्तार्धं मातुरेवहि । मासदन्तंभाम-

यथास्तदर्थं भ्रातृपुत्रयोः देवज्ञमतोहरं विशेषः—प्रतिकूलेर्वाऽऽपनासमेकं विवर्जयेत् मेधातिथिः
 प्रेतकर्मप्रत्यनिर्दोषं चरेन्नाभ्युदयक्रियम् । ज्यांतिः प्रकाशः—प्रतिकूलेपिवर्त्तय्यो विवाहोनासमंता ।
 दुर्मिश्रेणाम्रभंगेन पित्रोर्वाप्राणप्रणयं । प्रोऽयामभिन्वयायां प्रतिकूलं न भुषति । मेधातिथिः प्राचतुर्धततः
 मुंसंपंचमे शुभदं भवेत् । दोषरोगाभिभूतस्य दूरदेशस्थितस्य च उदासवर्त्तितानश्चैव प्रतिकूलमविद्यते । संकटे
 सन्नुप्राप्त्यात्तत्र चक्रेन योनिना । शातिहतागणैः स्य कृत्वातां शुभमाचरेत् । अयुस्यां शातिक्रियस्तु निषेधे
 सतिदाहरे । यः करोति शुभं ताव द्विष्टं तस्य पदेपदे । विशेषो निर्णयप्रत्येकुरष्टयः ।

अथ विनायकशान्तिविधिः ।

उक्तं च लोके— ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैर्वासिद्धिक्लृप्तैः । कर्मनिर्विघ्नसिद्ध्यर्थमुपुत्र-
 स्तु गजाननः । महार्णवे— यजमानस्तु शूद्रश्चेद्विधिभिस्ता नियोजयेत् ॥ स्नपनं तस्य कर्त्तव्यं
 पुण्येहि विधिपूर्वकम् । शुक्लैश्चतुर्ध्याचकारेण धिपणस्य च । तिथ्ये च वीरनक्षत्रे तस्यैव
 पुरतो वृषेऽपराकं भविष्ये ॥ दृष्ट्वा काम स्नपनपरम् । धिपणस्यगुरोः । तस्य विनायकस्य ।
 तत्रादौ देवता पूजोक्ता पराकं भविष्ये—व्योमकेशं सु सम्पूज्य पार्वतीं भीमजं तथा,
 कृष्णस्य पितरं तत्त्वर्कमारसितं तथा । धिषणं बलेद पुत्रं च कोणं लक्ष्मच भारत, वि-
 वाहुर्यं नन्द कस्य च धारणं ॥ व्योमकेशः शिवः । भीमजो गणेशः । आरो भीमः सितः
 युक्तः । बलेदपुत्रोऽयः । कोणः शनैश्चरः । लक्ष्मचन्द्राश्चन्द्रः । वाहुल्यः स्कन्दः । यज्ञवल्क्यः ।
 गौरसर्पकल्बेन सायं नोत्सादितस्य च ॥ सर्वोपधेः सर्वधेः विलिप्त शिरसस्तथा । भद्रासनोप-
 विष्टस्य स्वस्तिवाच्याद्विजैः शुभैः । उत्सादितस्य उद्धर्त्तितानस्य, सर्वोपधानि मात्स्ये—सह
 धेवी वचा व्याघ्री वजा चातिवसा तथा । शरदुष्णी तथासिही चाऽमीतु सुवर्त्तुला । महोपच्युर्क
 वेत्तमहाशान्तं योजयेत् । महार्णवे तस्य चतुर्ध्याचकारेण—पुराणांसी कथा कुटुं कृत्वा रजनी-
 द्वयम् । शट् चंपक मुस्ता च सर्वोपधिण रमृतः । याज्ञवल्क्यः—अश्वस्थानाद्गजस्थानां
 द्वयोः कान्तं गमाद्द्रवात् । मृत्तिकां रोचनं गंधं गुग्गुलं च विनिक्षिपेत् । या आहता एक वरुणश्चतुर्भिः
 कलशैर्दात् ॥ कलशैराहतास्वस्त्येपिदित्यर्थः । अत्र विशेषो वैजवापगृह्ये—चतुः प्रसवये-
 १) अश्व कुम्भानाहृत्य तेषु सर्वोपधीः सर्वगंधान् हिरण्यव्रीहि यवगुग्गुलून् । मृदमाखत्करमिति
 प्रक्षिपेदिति शेषः ॥ याज्ञवल्क्यः—चर्मण्यामुद्धरेत्के स्थान्य भद्रासनंततः । मंत्राः—ॐ
 साहस्रानं शतधारमृषिभिः पापनं कृतम् । तेनत्वामभिषिं चामि पावनायः पुनन्दुते । ॐ भगवते
 पराणो राजा भगमिन्द्रोद्गृहस्पतिः । भगमिन्द्रश्च पायुश्च भग सप्तपयोददु । ॐ यत्तेशेषु
 दौर्गायं दौमतेयचमूर्दनि । सलाटेकेऽन्योरक्षणां तापस्तदुपंतु सर्वदा । पूर्वादि बलशत्रये एकेकी
 मंत्रान्तुभं मन्त्रमिति विधानं श्वरः । सर्वं बलशेषु मन्त्रप्रयमित्यपराकं । युक्तं येतदेव विनिगमका

भावात् । ज्ञातस्य सार्धप तैले सुषेणीडुम्बरेणतु । जुहुयामूर्द्धनि कुशान् सुब्ये नपरिगृह्य च ।
 मितश्च संनिशरैवतथा शातकटकटी । कूर्मांडो राजपुत्रश्चेत्यन्तेस्वाहासमन्वितैः ॥ आरांस्तु
 शालकट्टे कटः । कूर्मांडो राजपुत्रश्चेति पाठः मूर्द्धनिदोमः । नामभिर्वलि भंशैश्च मनस्कार
 समन्वितैः । पूर्वोक्त पण्यमभि स्तैलंत्वा च शेषेणं श्चदि नामभि र्वलिदद्यात् । इतिविज्ञाने-
 श्वरः । अपरांकेतु—पूर्वोक्त चतुर्नामभिस्तेलंत्वा तैरेव नामभिः कृता कृतादि वलिदयः
 चरुहोमस्तु नास्त्येवेत्युक्तम् ॥ दद्याच्चतुर्धेशूर्पं कुशानास्तीर्यगर्वतः । कृताकृतां स्तंडुलाश्च पल
 लीदन मेवच । मत्स्यापकां स्तथाचांयमांसमेतायदेवतु । मांसंमत्स्यभिर्न । एतावदितिपद्म
 मपद्मंवेत्यर्थः । तिलपिष्ट मिथ ओदनः । पललीदनः । पुष्पं चित्रं मुगंधंच सुरांच त्रिविधामपि
 मूलकं पूरिका पूर्णां स्तथेवोडेरवसजः । द्धन्नं पायसंचैव गुडमिथ समोदकम् ॥ ब्राह्मणैः कापि
 सुरांग्राह्या । क्षत्रियदेश्याभ्यान्तु पैथी नमालेखन्नमूलं मृगयम् । मूलकं प्रसिद्धग्राह्य भित्तिमहाण्ये ॥
 तदाकारः पिष्टविकारः, इतिविज्ञानेश्वरः । उडेरवसजः क्षुद्रापूर्वा श्लारारारः । महाराष्ट्रितु—
 वर्तुलैश्चतुरस्रैश्च दीर्घैः पिष्टविकारकैः । निर्मिताः स्रजन्वयन्ते उडेरक समाख्यया । गुडमिथ
 पिष्ट मित्यर्थः । मोदका लड्डिकाः बृहतरा शरणं सुवमापाः फलानि चैत्यधिकं मुक्तम् । एतत्सर्वा
 मेरुस्मिन्मूर्धं निधाय, सहस्रिदयेदित्यर्थः ॥ एता सर्वास्तुपाहृत्य भूपौ कृत्वाततः शिरः विनायकरय
 जननी सुपतिष्ठेत्ततोन्मिकाम् । दूर्वासार्धप पुष्पाणां दत्वाध्वं पूर्णमंजलिम् । दूर्वादि पूर्णमंजलि
 सजले विनायकायाम्बिकायवाध्वं दत्त्वोपतिष्ठे दित्यर्थः । मंत्रः—ॐ रूपदेहि यशोदेहि
 भगं भगवति देहिमे । पुत्रं देहि धनं देहि सर्वान्क मांशुदेहिमे । विनायकोपस्थाने भगवतिः पूज्य
 इति विज्ञानेश्वरः । इतः शुक्राम्बरधरः शुक्र मत्स्याजुलेपनः ब्रह्मणान्मोजयेत्तत्त्वद्वन्द्वदुग्धं
 गुरोरपि । एवं विनायकः पूजे ब्रह्मशैव विधन्तः । कर्मणाफल माप्नोति धियं प्राप्नोत्यनुत्त-
 माम् ॥ आगमेतु विनायकां विक्रयोः पीठे यिरोप उक्तः—आदीं पद्मोणस्कृत्वा पद्म
 मण्डलं ततः । केशरैः शोभितं तत्र चतुरस्रततोभवेत् । आसनं कल्पयित्वा तु प्रखवेनयथाविधि ।
 कर्णिकाया न्यसेद्देव गणेश चाम्बिका तथा । आदित्यं च तथान्यस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ।
 न्यसेत्तपीठमध्ये चपद्मत्रेपुमितादिकं न् । मातृकध्वेशरा त्रेषु पूर्वोदिषु पूजयेत् । तत् शचाष्ट दलेन
 श्रेपुजयेद्देवतास्तथा । कौमारं पूर्वदिग्भागे चाम्बिकां कृपाकम् । दक्षिणेशेनमित्युक्तं नैर्ऋत्ये
 कौशिकं तथा । अपस्वारं चक्रुणे च विशाच वायुगोचरे । कौबेर्धौ विन्मतेत्सर्वं मीशपत्रे
 ऽमेयकम् । पूर्वादि पद्मत्रेच । सोमादीश्व ब्रह्मण्यं त् । ततः—इन्द्राग्नी पूर्वपत्रे च रत्नानेयांच
 कुमारिका । ब्रह्माणीदक्षिणैश्च वाराही नैर्ऋतेतथा । वैष्णवो परिचमं पूज्या चांजुडा पायनेतथा ।
 मातरश्चोत्तरे पूज्या ईशकोणे महेश्वरी । इन्द्रादीन्ऋतान्पूर्वादि क्रमशः न्यसेत् । शचीस्वहा च

वाराही खड्गिनी वारुणी तथा । मृगा हडा च कौपारी शुलिनोच तथा छर्मा वनू शर्कि दड खड्ग
पाशाकुश गदा अर्प । त्रिशूल लोक पालाना मायुधानिकमाखिलवेत् । एरावत तय मेप महिप
प्रेत सङ्गर । मकरच मृगचैव नरचवृषभ तथा ॥

एरावत पुञ्जीकोवामन कुमुदोजन । पुष्पादन सार्वभौम सुप्रतीकरवृद्धिगजा ॐ । कारादिनमो-तेश्व
पूजनीया प्रयत्नत पीतवस्त्रयुगच्छत्र कनश ननपूरित मञ्जलात्पूर्वभागेतु सहिरण्यपलान्कितम् । गणाना-
न्वेतिमन्त्रेण सङ्घचाष्टसयुक्तम् । भद्रासनस्थाष्टदल देवताराहनमप्युक्तम् तत्रैव — भय्यकूमा-
डनामाने पूर्वशत्रे प्रमेयकम् । दक्षिणस्यां विशाख च पश्चिमेदक्षमेव उत्तरेण पुत्रतुचेतने जृम्भक तथा ।
भ्रामरेयां यज्ञवित्तेप विरूपाक्षचनेश्वरे । वायव्यपुत्रसस्थाप्य सर्वाविष्टर मेवचेति । बलिदाने विशेषस्तत्रैव ।
चतुस्रधमत्वा चतुर्विंशतिदेवेभ्योर्बलिं शयायाविधि । विमु-व्यश्च तथा श्येनस्य बकोदक्षएवच । कूर्वाडी
भेरवश्चेति पूर्वस्य द्विती संस्थिता । बलिगृहगन्तुमेवमयादत्तयथा विधि । विनायकरवृक्षाडोरागु-स्त
थैव यज्ञवित्ते । करचैव कुलगायै नमोनन भ्रामारी दक्षिणस्या पूजनीया प्रयत्नत शर्पेशी शूर्पकोडीहै-
पेतश्चतुर्भुज विरूपाक्षो लोहितान्त पश्चिमस्यां दिशि स्थिता उत्तरस्यां प्रवक्ष्यामि देवतामुनिसत्तम ।
विनायक क्षेत्रपालो वैश्रवणस्तत परम् । महासेना महादेवो महाराजा सुकीर्तिता । एतेषां पूजनकृत्वा
बलिदान तत परमिति ।

इति विनायक शान्ति परिभाषा ।



अथप्रतिकूलविनायकशांतिपद्धतिः ।

अथच प्रतिकूलशान्तिकर्त्ता परिभाषोक्तसापिंड्यादि त्रिपुरुषीं
विचार्यप्रेतरथ सर्पिंडीश्राद्धान्ते यावद्वापिंकुंभदानादि कर्मसमा-
पयित्वा, भासोत्तरेवाभ्यंतरेज्योतिः शास्त्रोक्तशुभदिने प्रातर्नैत्य
कर्मसमाप्य, स्वासने उपविश्य रत्नादीपंपञ्चलस्य, सम्पूज्यचशांति
पाठंकृत्वा, प्रधानसंकल्पंकुर्यात्—अथेत्यादि देशकालौ संकीर्त्या
मुकोऽहं ममास्यामुकराशेरमुकस्य धीजगभहमुद्भवैनौ निवर्हण
द्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीतयेकरिण्यमाणा मुकसंस्कारकर्मणि, स्वत्रिपुरुषा
भ्यन्तरेनिश्चयोत्तरं प्रतिकूलत्वात्तद्दोषपरिहारार्थं शुभसौभाग्यै-
श्वर्याभिसिद्धये विनायकशान्तिकरिष्ये, ततो गणेशादि ग्रहपूजा
न्तं पंचाङ्गपूजनंकृत्वा, अत्रकेचिद्दृष्टिश्राद्धमपीच्छन्ति ॥ ततश्चा-
चार्यो गृहाभ्यंतरे वा गथावकाशस्थाने गोमयोपलिप्ते, भूमौ, भद्रा

सनार्थं पञ्चवर्णरंगैरंजयित्वा तत्रैकं स्वस्तिकं कृत्वा, तस्य पूर्वादिदिक्षु
 चतुरः स्वस्तिकान् ऋत्विग्भिः कारयित्वा, (मध्यस्वरितकेरक्तमालु
 दुहं चर्मोत्तरलोमप्राचीनग्रीवंसंस्थाप्य) कलिवर्ज्यत्यानास्योपरि
 श्रीपर्णीपीठं (पीढा) संस्थाप्य श्वेतवस्त्रेणाच्छादयेत् ॥ ततश्चाचा
 र्यवरणं कृत्वा चतुरोवाह्वर्णां ऋत्विजश्च घृत्वा, ते च ऋत्विजः पूर्वा
 दिक्रमेण चतुर्दिक्षु चतुर्षु स्वस्तिकेषु चतुरः कलशान्धान्यराशिषु न्यदा
 मवेष्टितकंठाग्रवाहतवस्त्रभूषितान् संस्थाप्य, नदीसंगमोदकेन वाह
 दोदकेनापूर्य, तेषु (अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्ब्रह्मीकात्संगमात्तद्द्वान्मु
 त्तिकांनीत्वा) ३० उध्वनासिचराहेण कृष्णेन शतवाहुना । मृत्तिकेहर
 मेषापंग्यन्मया दुष्कृतं कृत्वा । इति चतुर्षु पंचमृदः प्रक्षिप्य । ३० गंध
 द्वारा मिति चन्दनागरुकस्तूरीकपूरादीनां गन्धान्गोरोचनं गुग्गुलं चा
 क्षिप्य पूर्वोक्तसहदेव्यादिमहौपध्यष्टकं क्षिप्यत्वा कलशस्थापनं आ
 जिघ्र्येत्यारभ्य प्रसन्नो भवेत्स चर्द्धंत्यन्तं कलशपूजोक्त विधिना प्रत्ये
 कं संस्थाप्य सम्पूजयेत् ॥ केचित्तु—ईशाने रुद्रकलशमपीच्छन्ति ॥
 तेनैव प्रकारेण स्थापयित्वा ॥ तत्र पूर्वस्य ऋत्विगघस्तेन पूर्वकलशं स्पृश
 वा ॥ ३० हिरण्यवर्णाहरिणीमिति श्रीसूक्तनाभिमन्त्रयेत् ॥ एवं
 दक्षिणस्थ ऋत्विगदक्षिणकलशं स्पृश्व ॥ ३० महित्रीणामवोस्तु शुक्ल
 म्मिन्नस्यार्थमणः । दुराधर्षं च वरुणस्य ॥ ११ न हितेषाममाचननाद्
 सुचारणेपु । ईशरिपुरघशर्दंसः । २। तेहिपुत्रासोऽश्रुदितेः प्रजीवसे
 मर्त्याय । ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम् । ३। कदाचनस्तरीरसिनेन्द्रसश्च
 सिदाशुषे । उपोपेन्नुमघबन्धुय इन्नुतेदानन्देवस्य पृच्यते । ४। तत्स
 वितुर्वरेण्यं भर्गो ॥ ५। ३० परितेद्दृढभोरथोस्मा २० अशनोतु विश्वनः ।
 येन रक्षसिदाशुषः । ६। भृशुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्यात्सुवीरो
 वीरैः सुषोपः पोषैः । नर्थ्यप्रजाम्मेपाहि श ० स्यपशून्मेपाह्यथर्थ
 पितुम्मेपाहि । ७। आगन्मद्विश्ववेदसमस्मभ्यं च्वसुवित्तमम् ।
 अग्नेसम्प्राडभिसहऽआयच्छस्व । ८। अयमग्निर्गृहपतिर्गार्हपत्यः
 प्रजयन्वसुवित्तमः । अग्नेर्गृहपतेभ्युन्नमभिसहऽआयच्छस्व । ९।
 अयमग्निः पुरीषयोरयिमान्पुष्टिवर्धनः । अग्नेपुरीष्याभ्युन्नमभि

सहस्रायच्छुस्व ।१०। गृहामाविविभीतमावेपध्वदमूर्जम्बिभ्रतऽए
मसि । ऊर्जम्बिभ्रद्वःसुमनःसुमेधागृहानैमिमनसामोदमानः ।११।
येपामध्येतिप्रवसन्न्येपुसौमनसोदहुः । गृहानुपहयामहे तेनोजा
नन्तुजानतः ।१२। उपहृताऽइहगावऽउपहृताऽअजावयः । अथोऽ
अन्नस्यकीलासऽउपहृतोगृहेपुनः । क्षेमायवः शान्त्यैप्रपद्यैशिवर्त०
शग्मर्त०शंययोःशंययोः ।१३। ३० शान्तिः ३ । ततःपश्चिमकलशं
स्पृष्ट्वा-३० इमम्मेववरुणश्रुधीहवमद्याचमृडयत्वामवस्युराचके ।१।
तत्वायामिद्रह्यणाध्वन्द मानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः । अहेड
मानोव्वरुणेहवोध्युरुशर्द०समानऽआयुःप्रमोषीः ।२। त्वन्नोऽअग्ने
व्वरुणस्यद्विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्टाः । यजिष्ठोचन्हितमः
शोशुचानोविश्वाद्रेषाँँँसिप्रमुमुग्ध्यस्मत ।३। सत्वन्नोऽअग्नेवमो
भवोतीनेदिष्टोऽअस्याऽउपसोव्युष्टौ । अवयद्वनोव्वरुणर्द०रराणी
द्वीहिमृडीकर्द०सुहवोनऽएधि ।४। महीभूषुमातरर्द०सुव्रतानामृत
स्यपत्नी मधसेहुवेमतुविच्छत्रा मजरन्तीमुरूचीँँ सुशर्माण
मदितिर्द०सुप्रणीतिम् ।५। सुत्रामाणं पृथिवींथामनेहस र्द०
सुशर्माण मदितिर्द० सुप्रणीतिम् । देवीत्रावँँँ स्वरित्रा
मनागसमस्रवन्तीमारुहेमा स्वस्तये ।६। सुनावमारुहेय मस्रवन्ती
मनागसम् । शतारित्राँँँ स्वस्तये ।७। आनोमित्राव्वरुणा घृतैर्ग-
व्युति मुत्तनम् । मध्वारजाँँँसिसुक्रतू ।८। प्रवाहद्वासिसृतंजीव-
सेनऽआनोगव्युतिमुत्ततंघृतेन । आमाजने अययतंयुवानाश्रुतम्मे
मित्राव्वरुणाहवेमा ॥९॥ शन्नोभवन्तुव्वाजेनोहवेपुदेवताता
मितद्रवः स्वर्काः जम्भयन्तोहिंवृक र्द० रत्ताँँँसिसनेम्यरमद्य-
घत्तमीवा ।१०। ३० व्वाजेव्वाजेव्वतव्वाजिनोनोधनेपुविप्राऽअमृ-
ताऽऽकृतजाः । अस्ममध्वः पिपतमादयध्वदन्तृप्ता यात पथिमिर्दे-
वयानैः ॥११॥ इतिवारुणसूक्तेनाभिमन्त्र्य तत उत्तरकलशंस्पृष्ट्वा,
३० सहस्रशीर्षापुरुषः इत्यादिपुरुषसूक्तेनाभिमन्त्र्य, ततः पंचमंरुद्र
कलशं, ३० नमस्तेरुद्रमन्त्र्यवः । इत्यादिरुद्रसूक्तेनाभिमन्त्र्य सम्पूज्य
न्य तत आचार्यो भद्रासनस्योत्तरभागे मनोहरंकाष्ठपीठं संस्थाप्य

तत्र पिष्टेनपट्टकोणं यंत्रं सवर्तुलं तद्वाह्ये, अष्टदलं कमलं सवर्तुलं च कमलवाह्ये अंगुलद्वय विस्तराद्बहिश्चतुरस्रं ग्रहस्था पनार्थमष्ट र्वडंकृत्वा यन्नेक्त रंगैरापूर्व्य, तत्र चक्ष्यमाण देवानावाहयेत् । तत्रादीं मध्ये अग्न्युत्तारण पूर्वकं विनायकाधिकृतयोः प्रतिमाद्वयं संस्थाप्य । गणेशमावाहयेत्—३० एकदन्ताय विद्महे वक्रं नुडाय धीमहितन्नोदतिः प्रचोदयात् ३० भूर्भुवः स्वः विनायकमावाहयामि स्थापयामि । एवं सर्वत्र, ततोऽम्बिकाम्—३० सुभगायै विद्महे काममालिन्यधीमहि, तन्नो गौरी प्रचोदयात् ॥ ३० भू० गौरीं ० ३० आदित्याय नमः ० । ३० ब्रह्मणे नमः ० । ३० विष्णवे नमः ० । ३० महेश्वराय नमः ० । ततः पट्टकोणेषु—३० मिताय नमः ० । ३० सप्तिताय नमः ० । ३० शालकाय नमः ० । ३० कटकदाय नमः ० । ३० कृष्मांडाय नमः ० । ३० राजपुत्राय नमः ० । ततः पट्टकोणान्तरालेषु—३० व्योमकेशाय नमः ० । ३० पार्वत्यै नमः ० । ३० भीमजाय नमः ० । ३० स्कंदाय नमः ० । ३० वसुदेवाय नमः ० । ३० विष्णवे नमः ० । पट्टकोणवर्तुले पूर्वादिक्रमेण मातृवृत्तः—३० भू० कीर्त्यादित्रयोदश गृहमातृभ्यो नमः ० ॥ ततः कमलाष्टदलेषु पूर्वादिक्रमेण—३० भू० कौमाराय नमः ० । ३० कुमाराय नमः ० । ३० श्वेताय नमः ० । ३० कौशिकाय नमः ० । ३० अपस्माराय नमः ० । ३० विशालाय नमः ० । ३० स्कंदाय नमः ० । ३० प्रमेयकाय नमः ० । ततस्तेनैव क्रमेण पद्मान्तरालाष्टभागेषु—३० इन्द्राय नमः ० । ३० कुमारिकाय नमः ० । ३० ब्रह्माय नमः ० । ३० वाराह्यै नमः ० । ३० वैष्णव्यै नमः ० । ३० चासुंडाय नमः ० । ३० धृत्यादिमातृभ्यो नमः ० । ३० माहेश्वर्यै नमः ० । ततः पूर्वादिक्रमेण ग्रहान्—पूर्व—३० शुक्राय नमः ० । ३० चन्द्राय नमः ० । ३० भौमाय नमः ० । ३० राहवे नमः ० । शनिश्चराय नमः ० । ३० केनवे नमः ० । ३० गुरवे नमः ० । ३० बुधाय नमः ० । ततश्चतुरस्राद्बहिः पूर्वादिक्रमेण लोकपालान्—३० इन्द्राय नमः ० । ३० अग्नये नमः ० । ३० यमाय नमः ० । ३० निर्ऋतये नमः ० । ३० वरुणाय नमः ० । ३० चायवे नमः ० । ३० सोमाय नमः ० । ३० ईशा-

नायनमः० । तत्सन्निधौ—३० शक्यै नमः० । स्वाहायै नमः० । ३०
 धाराहैनमः० । ३० स्वद्विन्यै नमः० । ३० वासुदेयै नमः० । ३० सृष्ट्यै
 नमः० । ३० कौमार्यै नमः० । ३० शूलिन्यै नमः० । तत्रैव दिक्पाला
 न्दक्षिणे—३० वज्राय नमः० । ३० शक्त्ये नमः० । ३० दंडाय नमः० ।
 ३० खड्गाय नमः० । ३० पाशाय नमः० । ३० अंकुशाय नमः० । ३०
 शंखायै नमः० । ३० त्रिशूलाय नमः० । तत्रैव वाहनानि—३० एराव
 ताय नमः० । ३० मेढ्राय नमः० । ३० महिषाय नमः० । ३० प्रेताय
 नमः० । ३० मकराय नमः० । ३० मृगाय नमः । ३० नराय नमः० ।
 ३० वृषभाय नमः० । तद्वह्निस्तेनैव क्रमेण दिग्गजान्—३० एरावता
 य नमः० । ३० पुंडरीकाय नमः० । ३० चामनाय नमः० । ३० कुमुदा
 य नमः० । ३० अजनाय नमः० । ३० पुष्पदन्ताय नमः० । ३० सार्व
 भौमाय नमः० । ३० सुप्रतीकाय नमः० । ततो वह्निस्तेनैव क्रमेण ष्ट
 भैरवान्—३० प्रमेयकभैरवाय नमः० । ३० यज्ञत्रिक्षेपकभैरवाय
 नमः० । ३० विशाखभैरवाय नमः० । ३० विरूपाक्षभैरवाय नमः० ।
 ३० यक्षभैरवाय नमः० । ३० सूर्यकोटरभैरवाय नमः० । ३० राज
 पुत्रकभैरवाय नमः० । ३० जृम्भकभैरवाय नमः० ॥—इति संस्थाप्य
 सम्पूज्य च—ततश्चाचार्यः—३० गणानान्त्वा० । इति गणपतिमन्त्रे
 ण अष्टोत्तरसहस्रमन्त्रैः प्रतिमंत्रेणैकैकं मोदकं युग्मद्वर्वाङ्कुरयुतं
 गणेशाय निविप्रतासिध्वये निवेदयेत् ॥ असक्तश्चेदष्टोत्तरशतं निवेद
 येत् ॥ तत आचार्यो गृहोक्त विधिना प्रादेशमात्रां होमवेदीं निर्माय,
 पञ्चभूषंस्कारपूर्वकमग्निं संस्थाप्य, वरदनामाग्निं सम्पूज्य, आचा
 र्यब्रह्मणोर्वरणं कृत्वा । घृतसंस्कारं कृत्वा तदैव चरुमग्नावारोप्य
 संस्कृत्य च ॥ ब्रह्मातत्रेवाग्निं समीपे तिष्ठेत् ॥ तत यजमानो गवाज्य
 द्रवितेन गौरसर्पसर्वापभक्ष्यैश्चन्दनागरु कस्तूरिकादिभिश्चोद्भ
 न्तिं सर्वाद्गोवतुणां कुभानां मध्ये पूर्वनिमित्ते भद्रासने उपविश्य स्व
 गृहोक्तमार्गेण स्वस्तिवाचनं कुर्वीत, तत्र सकल्पः—अद्येत्यादिदेशका
 लौ संकीर्त्यामुकोटं करिष्यमाणप्रतिकूलविनायकशांतिकर्मणि सर्वो
 पद्रवशांतये, कल्याणहेतवसौ भाग्यवती भिश्चतुःप्रसन्नवर्णकुंभजलैर्मग

लाभिपेकंकारयिष्ये, ततो जीवत्पतिपुत्राभिश्च तिसृभिः स्त्रीभिः कुशै
रभिपेकंकारयेत्-ततः पूर्वकलशमादाय-३० सहस्राक्षं शतधारमृषि
भिः पावनं कृतम् । तेन त्वामभिषिंचामि पावमान्यः पुनन्तुते । तं कल-
शं तत्रैव पूर्वं स्थापयेत् सर्वत्र । दक्षिणकलशेन-३० भगंते च्चरुणो राजा
भगं सूर्यो बृहस्पतिः । भगमिदं श्च वायुश्च भगं सप्तर्षयो ददुः ॥
पश्चिमकलशेन-३० यत्ते केशोपुदौर्भाग्यं सीमन्ते यच्च मूर्द्धनि ।
ललाटे कर्णयोरक्षणे रापस्तद्धनन्तु सर्वदा । तत उत्तरकलशमादाय
पूर्वाक्षै स्त्रिभिर्मन्त्रैरभिषिंच्य कलशं पूर्ववत्स्थापयित्वा तत ईशा-
नकलशं जलंगृहीत्वा यजमानशिरसि सहस्रच्छिद्रं ताम्रपात्रं सहस्र-
धारमुपरितः कृत्वा-बृहत्पाराशरोक्तं मन्त्रैरभिषिंचेत् ३० एतद्वै पाव-
मानं सहस्राक्षरं स्मृतम् । तेन त्वां शतधारेण पावमान्यः पुनन्त्विमाः
।१। शक्रादिदशदिक्पाला ब्रह्मेशाः केशवादयः । आपस्ते घनन्तु दौ-
र्भाग्यं शांतिं ददतु सर्वदा ।२। ३० सुमित्रियाणऽप्रापऽप्रापधयः
सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान् द्वेष्टियंचव्ययं द्विषमः । समुद्रा
गिरयो नद्यो मुनयश्च पतिव्रताः । दौर्भाग्यं घनन्तुते सर्वं शान्तियं-
च्छन्तु सर्वदा ।४। पादगुल्फोरुजंघासु नितम्बोदरनाभिषु । स्तनो-
रुवाहुहस्ताग्र ग्रीवास्वंसांगसन्धिषु ।५। नासाललाटे कर्णभ्रूकेशा-
न्तेषु च यत्स्थितं । तदापो घनन्तु दौर्भाग्यं शान्तियं च्छन्तु सर्वदा ।६।
एवमभिषिंच्य, तत आचार्यो यजमानस्य पश्चात् तिष्ठन्सव्यपाणि
गृहीतकुशांतरिते यजमानस्य मूर्द्धनिसार्धपतैल मौदुम्बरेण सुवेण
जुहुयात् । मंत्राः-३० मिनाय स्वाहा । ३० संमिनाय स्वाहा ।
३० शाल, यस्वाहा । ॐ कटंकटाय स्वाहा । ३० कूपमांडाय स्वाहा ।
३० राजपुत्राय स्वाहा । ततो यजमानस्तथैव होमवेदीसन्निधावुपा-
गल्य स्वासने उपविश्य, देवताभिध्यानपूर्वकं द्रव्यत्यागं कुर्यात् ॥
अद्येत्यादि कृतमंगलाभिपेकोऽमुकोहं प्रतिकूल विनायकशांतिक-
र्मणि, घृतेनाधाराज्यभाग देवतास्ततश्चरुणा प्रधानदेवान्-मितं
संमितं, शालं, कटंकटं, कूपमांडं, राजपुत्रं, हुत्वा-ततश्चाज्येन स्विष्ट-
कृतं हुत्वा-ततो भूरादिनवाहुतिहोमं पद्धत्यनुसारेण यच्चे । एतद्द्र-

व्यंतत्तद्देवताभ्योमयापरित्यक्तं यथादेवतमस्तुनमम । इतित्यागं
विधाय होमपद्धत्यनुसारेण समिधाधानंकृत्वा आघाराज्यभागौ
हुत्वा, (नान्वारंभः) चरुणाप्रधानहोमं कुर्यात्—३० मिनाय
स्वाहाइदं ३० संमितायस्वहाइदं ३० शालायस्वाहाइदं ३० कटंकटाय
स्वाहाइदं ३० कूष्मांडायस्वाहाइदं ३० राजपुत्रायस्वाहाइदं ३० इति
प्रत्येकमष्टाविंशति, संख्याभिर्हुत्वा, अष्टोत्तरशतसंख्याभिः—३०
गणानन्त्वा० इतिचहुत्वाॐ श्रीश्चतेति० अंशिकां चाष्टविंशतिसंख्य-
याहुत्व, वा एकैकसंख्ययाश्चतुर्थ्यन्तेर्नाममंत्रैः यंत्रस्थापित देवा-
नपिचहुत्वा । ३० अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा इतिस्विष्टकृतं विधाय
होमपद्धत्युक्तप्रकारेण भूरादिप्रायश्चित्तहोमं विधाय पूर्णाहुत्यन्तं
कर्मकृत्वा । ततो यजमानश्चरुदोषेणयामाषौदनेन, अभिषेकशा-
लागंचैन्मूत्रादिदिक्षु, लोकपालेभ्यो बलीन्दद्यात्, बलिप्रकारश्चपूर्-
वोक्तः । तत्रक्रमः—इन्द्राय० अग्नये० यमाय० निर्ऋतये० वरुणाय
वायवे० सोमाय० ईशानाय० ब्रह्मणे० अनंताय० क्षत्रपालाय० ।
इतिबलीन्दत्वा, ततोयजमानः उष्णोदकेन स्नात्वा शुक्लमाल्यां-
वरधर आचार्येणसहितः पूजास्थल मागत्य ३० एकदन्ताय विद्महे
वक्रतुण्डायधीमहि तन्नोदंतिः प्रचोदयात् । इति मंत्रेण पुनर्गणेश
उपायनान्तं सम्पूज्य, अंशिकांपूजयेत्—३० सुभगागे विद्महे
काममालिन्यधीमहि । तन्नोगौरी प्रचीदयात् । इतिसंपूज्य ततः
कृत्वाकृतं तदुल तिलयुक्तौदनं पक्वापक्वमांस, त्रिविधिसुरा
(मद्यमांसानि विप्रवाजितानि) मूलकापूप पूरिर्कोडेरकदध्यन्नपापस
सगुह मिश्रपिष्टलद्दुक कुल्मापफलानि । पूर्वोक्त पूजामंत्राभ्यां-
सविनायकाभिवकाद्यैश्च तमुपहारं शिरसाभूमौ प्रणम्य ततोऽर्घ्य-
पात्रं सजलगन्धाक्षत पुष्पदूर्वाफलयुतं अर्घ्यवामहस्ते धृत्वाउत्ता-
नंदक्षिण हस्तमुपरि कृत्वा—३० विनायक नमस्तेस्तु विघ्नसंघनि-
वारक, गृहाणपरयाप्रीत्यासफलाद्यंसुरेश्वर ततोवारिणादेवं
संस्तवाप्य फलमग्नेनिवेदयेत् ततोऽभिवकाम् ३० गौरिदेविनमस्तुभ्य,
मंशिके विघ्ननाशिनि । गृहाणपरयाप्रीत्या सफलाद्यंमहेश्वरि । तथैव ।

फलमग्रेनिवेदयेत् । ततो गणेशं पुष्पाक्षतहस्तः प्रार्थयेत् ॐ रूपं देहि-
 यो देहि भगं भगवन्देहि मे । पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे,
 ततो म्बिकाम् ॐ रूपं देहि यो देहि भगं भगवति देहि मे । पुत्रान् देहि
 धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे । ततो नृत्तनशूर्पं कुशानास्तीर्थपूर्वाप-
 हारशेषं कृत्वा कृततंडुलादिकं तत्र निधाय, चतुर्गन्धं (चतुर्मागि-
 पथं) गत्वा—वक्ष्यमाणप्रकारेण देवान्संपूज्य बलीन्दद्यात्—तत्रादौ
 पूर्वं, ॐ विमुख्यादिपद्देवेभ्यो नमः इति संपूज्य शूर्पस्थद्रव्यं
 चतुर्धा कृत्वेकभागमादाय बल्युपरि दीपं प्रज्यलरय—ॐ विमुख्य
 रचतथारथेन स्थवकोयत्तपत्र च कृष्मांडो भेरवश्चेति पूर्वस्यां दि-
 शिसंस्थिताः बलिं गृह्णन्तु ते सर्वे मया दत्तं यथाविधिः । इति बल्युपरि
 जलक्षिप्त्वा पूर्वस्यां प्रक्षिपेत्—एवं सर्वत्र ततो दक्षिणे ॐ विनायका
 दिपद्देवेभ्यो नमः संपूज्य द्वितीयभागमादाय—ॐ विनायकश्च
 कृष्मांडो राजपुत्रस्तथैव च । यज्ञविक्षेपकश्चैव कुलंगायेन मोनमः ।
 अपामारी दक्षिणस्यां प्रजयामि प्रयत्नतः । बलिं गृह्णन्तु ते सर्वे मया दत्तं
 यथाविधिः दक्षिणे प्रक्षिपेत् । ततः पश्चिमेशूर्पकेश्यादिपद्देवेभ्यो
 नमः संपूज्य—ॐ शूर्पकेशी शूर्पकोडी है प्रपेतश्च कुम्भकः विरू-
 पाक्षो लोहिनाक्षः पश्चिमस्यां दिशि स्थिताः बलिं गृह्णन्तु ते सर्वे मया द-
 त्तं यथाविधिः । तत उत्तरे ॐ विनायकादिपद्देवेभ्यो नमः संपूज्य
 ॐ विनायकः क्षेत्रपालो वैश्रवणस्ततः परम् । महासेनो महादेवो
 महाराजः सुकीर्तिताः । बलिं गृह्णन्तु ते सर्वे मया दत्तं यथाविधिः तत
 हस्तौ पादौ प्रक्षाल्या चम्य, पूजास्थल मागत्याचार्याय वस्त्रद्रव्यं
 गोदानं च दत्त्वा ऋत्विग्भ्योऽन्वेभ्यश्च दक्षिणां दत्त्वा विनायकां
 विकार्यो रत्तराङ्ग पूजनं कृत्वा विसृज्य आचार्याय कलशजलेन यजमानं
 सकुटुम्ब मभिपिचयाशीर्दत्त्वा शान्तिपाठं कृत्वा कर्मेश्वरार्पणं कुर्यात्
 ततो ब्राह्मणान्भोजयेत् ।

इति प्रतिकूल विनायक शान्तिपद्धतिः ॥

अथगुर्वर्कशान्तिपरिभाषा ।

मुहूर्त्तं चिन्तामणौ—वटुकन्या जन्मराशे शिके, षायद्विसप्ततः । श्रेष्ठे गुरुः खपटश्याये
 पूजयान्यत्र निहितः । उषोतिर्निवन्धेर्गर्गः—स्त्रीणां शुभलं श्रेष्ठं पुरपाणारवेर्बलम् । जन्म
 प्रिदशमारिस्थः पूजया शुभदेःगुरुः । विवाहेषु चतुर्थाष्ट द्व दशरथो मृतिप्रदः । देवलः—
 नशरमजा धनवती विधवा वृशोला पुत्रापिता हतधवा दुभगा विदुषा । स्वामिद्रिया-विगतपुष
 धवा धनान्वया पन्थ्याभवेत्सुरगुरो, व्रमशोभिजन्मा । गर्गः—सर्वत्र पि शुभंदिवाद्वादशाब्दा-
 त्परं गुरुः । पंचपद्मव्योरेव दुभगोचरतामता । रजस्वलायाः कन्याया गुस्तुद्धि नचिन्तयेत् ।
 अष्टमेपि प्रकर्त्तव्यो विवहं स्त्रिगुणार्चनत् । अर्कं गुर्वोर्बलं गौयां रोहिरयर्कं बलांस्मृता ।
 कन्याचन्द्र बलाप्रोक्ता वृषली लनंतोबला, अत्र्यवां भवेद्गौरी नधवपांच रोहिणी । द्रुवपां
 भवेत्कन्या अतऊर्ध्वे रजस्वला । अथगुरुपूजाविधिः मंदरत्ने स्कान्दे—कन्या, विवाह
 काले तु शुद्धिर्यस्या नविद्यते । ब्रह्मणस्योपनयने यस्यस्याद्बुद्धिः स्थितामताः । एभिः पूजा गुरोः
 कार्या विधियद् भक्ति भाषितैः । मदन्ती कामपुष्पणि पत्रं पालश सर्पपाः । कामोदकनपत्रः ।
 गुह्रची चाप्यामार्गं विठेनं शंखिनी पचा । सहदेवो विष्णुक्रान्ता सर्वोर्ध्वः शतावरी कुहूमांसी
 हरिरेद्वे मुरा शैलिय चन्दनम् । पचाकचोर मुक्चच सर्पोर्ध्वः प्रकीर्तिताः । तथैवापवधभंगध
 पंच गव्यं जलं तथा । नूतनं सोदकुंभं च पीतवस्त्र समन्वितं । पंचरत्नैः समायुक्तं मीशान्या
 स्थाप्यचानलात् । याऽऽश्रीपथोति मंत्रेण सर्वोत्तवस्मिन्निचिपेत् । कुंभस्योपरिभागे तु रथापयि-
 त्वाद्बृहस्पतिम् । सुवर्णपत्रेसीवर्ण प्रतिमां मासंस्मिताम् । कारयेत्सुयधाराक्तिवित्तवाढ्यविवर्जितः ।
 पीतवस्त्रयुगच्छमंत्रैः तयशोपयौतितम् । पूजयेद्गन्धपुष्पाद्यैः ततः होमं समाचरेत् । समिधैः स्वस्थं ।
 अस्य होम्या अष्टोत्तर शतम् । शिववीह्वि यय उर्ध्वं च होतव्यं च यथापमम् । बृहस्पतिमंत्रेण
 श्रयिश्चक्षुसमन्वितम् । जपं कुर्याद्गुरोः स्वैवशान्त्यर्थं भक्तिभावतः । एकोनविंशत्सहस्रं होतव्यं शुभमिच्छ
 ता । नर्त्तनीच होतव्यं चरुणादितादिभिः । ततो होमावमाने दुपुत्रमेव बृहस्पतिम् । पीतगन्धस्थापुर्व-
 भूर्पदोपेव भजितः । दध्योदने च नैर्घं फलेताम्बूलगंतुतम् । नमस्ते गिरसायथ पावयतेथ बृहस्पते ।
 कृत्वा श्रेष्ठोदितानाममृतायत्नमोदनः । पूजित्वा युशचार्यपरब्राह्मणे निवेदयेत् । गम्भीरहृदं र्पां-
 दिभ्येभ्यमुमतिप्रभां । नमस्तेवावा तेशातशरणार्थ्यं बृहस्पते । अर्चयेत्सु गुरेश य जपहोमं समाचरेत् ।
 मन्वापनेस्नाचये होमपूजादिमत्कृतम् । तस्य गृहाण्यग्नयर्थं बृहस्पते नमो नमः । मन्त्रेण नैत-
 र्गन्धप्यपरचरणप्रार्थये वृत् । जोषो बृहस्पतिः सृष्टिचार्यां सुस्त्रिगिराः । प.च.पतिदेवमन्त्रो शुभं बुद्ध्या
 तदात्म । एतौ चार गेमुक्तां प्रतीमां तं युधिष्ठिर । प्राकम्य च गय युक्ता माचर्याय निवेदयेत् ।
 अथाचर्यां तु नियतो पदं वेदां चरणः । यजमानं मन्त्रेण दक्षिणं जितेन्द्रियम् । कुम्भोदकं गृह्णीत्वा
 तु मन्त्रैः प्रार्थयेत् । इदमापोपमन्त्रेण मन्त्रिः स्रुतया । सा मी.पथोर रथवती कुम्भांश्च भिदेवयेत् ।
 परचर्यां भोत्रये द्विप्रान्दपचक्रि दुधिष्ठिर । संस्तवापिकान्ते यतपास्वभ्युदयेषु च सुर्वे सूरपतेः
 पूजामर्षेण पत्रमाऽनुपात् । यैकान्तो गुरगं व्रजन्ती । इति गुर्वर्कं पूजा विधिः ।

॥ अथप्रतिकूलगुरुशांतिपद्धतिः ॥

अथचपूर्वोक्त परिभाषानुसारेण वदुकन्याजन्मराशिभ्यां देव
 गुरुः जन्मराशिस्थ तृतीयस्थ पष्ठस्थ दशमस्थ गोचरस्थानेषु सामा
 न्यपूजामपेक्षते चतुरष्टमद्वादशस्थ गोचरस्थानेषु द्विगुणपूजामपे
 क्षते, तद्विषयपरिहारार्थं वक्ष्यमाणपध्दत्यनुसारेण गुरुपूजनं कुर्यात्—
 अथचकर्त्ता प्रातर्नित्यकर्मसमाप्त्य शुचौदेशेषु भासने उपविश्या
 चम्य रत्नादीपंप्रज्वलस्य गणेशादिपंचांगपूजनंकृत्वा, तदीशान
 भागे नूतनंमृगमयकुम्भं, तीर्थजलपूरितं पीतचम्पंचचरुनैःसमा
 युक्तं, सर्वोपधिअश्वत्थसमिद्धं पंचपल्लवपंचगव्यादिकानिच
 तत्रप्रक्षिप्य, कलशपूजोक्तविधिनाकलशंसम्पूज्य ॥ नम्रपूर्णपात्रौ
 परि सुवर्णपात्रंरजतताम्रादिपात्रंवासंस्थाप्य तत्रसौवर्णीगुरुप
 तिमामग्न्युत्तारण पूर्विकांसंस्थाप्य, पीतचम्पेणाल्हाद्य षोडशोपचा
 रपूजने पीतयज्ञोपवीतंचसमर्प्य, पीतगुण्यपीतचन्दनादिभिः सम्पू
 ज्य दध्योदनंपीतौदनं चणकात्रलद्हुकादीनैवैद्यं दत्त्वा ततःप्रार्थ
 येत्—३० नमस्तेङ्गिरसानाथवाक्पतेथवृहस्पते । क्रूरग्रहेपीडिताना
 ममृतायनमोनमः । इतिसफलपुण्यांजलिनिवेद्य, तत्रआचार्यजापकं
 च वृत्वा—संकल्पंकुर्यात्—अथेत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकोहं,
 ममास्यवटोः (कन्यायावा) वीजगर्भं मसुद्भवैनो निर्वहणद्वारा
 करिष्यमाण चौलोपनयन संस्काराख्यकर्मणि—(वाकरिष्यमाणा
 मुक्तीकन्यायाविवाह संस्काराख्यकर्मणि) अमुकनक्षत्रोपलक्षित
 स्यवटोः अमुकराशिसकासात्, गोचराष्टकवर्गाभ्या ममुकदुश्चि
 क्य स्थानस्य गुरुग्रहस्य दुर्दोषोपशान्तये शुभफलप्राप्तयेच वेदोक्त
 विधानेनैकोनविंशति सहस्र मन्त्रजापकार्थं—अमुकगोत्र अमुक
 शर्माणं ब्राह्मण मेभिर्वरणद्रव्यैः जापकत्वेन त्वामहंवृणे । इतिवरण
 द्रव्यंदत्त्वा । वृतोस्मीतिकर्मकुरु, कर्याणीतिप्रत्युक्तिः (अमुकन
 क्षत्रोपलक्षितायाः कन्यायाः अमुकराशिसकासात्, गोचराष्टकव
 र्गाभ्या ममुकदुश्चिक्य स्थानस्य गुरुग्रहस्य दुर्दोषोपशान्तये शुभ

फलप्राप्तये वैश्वदेवादि दोषोपशान्तयेच, वेदोक्तविधानेनैकोनविंशति सहस्रजपकर्मकर्तुं मेभिर्वरणद्रव्यै रमुकगोत्र ममुकशर्माणं ब्राह्मणं जापकृत्वेन त्वामहंवृणु) इतिब्राह्मणं वृत्वा—सचब्राह्मणो ममयजमानस्येति संकल्पविधिना वेदोक्तमन्त्रं गुरोर्जपेत् ॥—ततो जपान्तेहस्तमात्रांस्थंडिलं होमार्थनिर्माय होमपध्दत्यनुसारेण पंच भूसंस्कारादि ब्रह्मोपवेशनान्तं कर्मकृत्वा, वरदनामाग्निं सम्पूज्य, द्रव्यदेवताभिधानपूर्वकं द्रव्यत्यागं कृत्वा, आधाराज्यभागौ हुत्वा,— ३० बृहस्पतइत्यस्य गृत्समदृष्टिस्त्रिपुण्ड्रो बृहस्पतिर्देवना, श्वत्थसमिधोमे (वायवाज्यतिलहोमे) विनियोगः ॥ ३० बृहस्पते० इतिमन्त्रेणाष्टोत्तरशान्तसमिधोमं कृत्वा ततोयवाज्यतिलैर्जप दश मांश होमविधाय ॥ होमपध्दत्युक्तप्रकारेण भूरादिहोमादारभ्य पूर्णाहुत्यन्तं कर्मकृत्वा । ततःपीतगंधपुष्पादिभिः ३० बृहस्पते० इतिमन्त्रेण सम्पूज्य । सफलार्घ्यं निवेदयेत् मन्त्रः—३० गम्भीर इह रूपंग दिव्येज्यसुमतिप्रभो । नमस्तेवाक्रयते शान्त गृहाणार्घ्यं बृहस्पते । अर्घ्यधारिणा गुरुप्रतिमांसं स्नाप्य, फलमग्रेनिधाय, ततो जपहोमंसमर्पयेत्—३० भक्त्याथते सुराचार्यं जपहोमादिसत्कृतम् । तत्त्वं गृहाण शान्त्यर्थं बृहस्पतेन मोनमः । ततःपुष्पाक्षतहस्तः प्रार्थयेत्—३० जीवो बृहस्पतिः सूरिराचार्यो गुरुरगिरः । वाचस्पतिर्देव मन्त्री शुभं कुर्यात् सद्रामम । तत उत्तराङ्गप्रजनं कृत्वा देवं विमृज्य, गांचसम्पूज्य गोदानोक्तविधिना प्रतिमासहितंगामाचार्याय दत्वा । ततः कुम्भोदकेन सपरिवारं संस्कार्य च वद्यमः णमन्त्रैरभिषिचेत्— ३० इदमापः प्रवहता वयं च मलचयन् । यच्चाभिदुद्रोहान् नृणं यच्च शेषेऽश्वभीरणम् । आपो मातस्मादेनसः पवमानश्च मुंचतु । १। ३० तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्ती वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टां । दुर्गादेवीं शरणमहंप्रपद्ये । २। ३० यात्रोपधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगपुरा । मनैनुवभूणामहर्दंशतं धामानि सप्तच । ३। ३० अश्वावतीं सोमा यतीं जपन्ती मुदोजसम् । आचिन्तिसर्वाऽत्रोपधीरस्माऽश्नरिष्ठ तानपे । ४। ३० सप्तत्राक्षं शतधारमृषिभिः पावनं कृतम् । तेन त्वाम

।१। ॐ नमो भगवते तुभ्यं नमस्ते जानवेदसे । दत्तमर्घ्यमया भानो
 त्वंगृहाण नमोस्तुते । ।२। ॐ एहिसूर्य सहस्रांशो तेजो रागो जगत्पते
 अनुकंपय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते । ततो जापकः पूवाक्त^मकारेण
 संकल्पं कृत्वा त्रिनियोगः पूर्वकं सप्तसहस्रमंत्रं, ॐ आकृष्णेनेति जपेत्
 ततः आचार्या दीन्वृत्वा, आधारावाज्यभागौ हुत्वा, अर्कसमिद्भिर
 प्रोत्तरशतं तमिद्धोमं विधाय पायसेन जपदशांशं होमं कृत्वा, होमप-
 ष्ट्युक्तप्रकारेणान्वाधानादि पूर्णाहुत्यन्तं कर्म कृत्वाः पूजास्थलमाग-
 त्य पूर्वाक्तमंत्रैर्वारत्रयं सफलार्घ्यदत्त्वा प्रार्थयेत् ॐ सर्वदेवाधिदेवाय
 आधिद्याधिदिनाशिने । पूजांगृहाण मे देव सर्वव्याधि विनश्यतु ।
 ततो जपादिकं समर्पयेत्—ॐ सूर्याय सांगाय सपरिवाराय,
 मया यत्कृतं तन्निवेदयामि । ॐ इमः सूर्याय शान्ताय सर्वरोगवि-
 नाशिने । ममेप्सितं फलं दत्त्वा प्रसीद परमेश्वर, तत उत्तरांगपूजनं
 विधाय देवं विमृज्य गोदानोक्तविधिना रक्तवर्णागां प्रतिमायुतामा-
 चार्याय दद्यात् तत आचार्यः कलशजलेन गुरुपूजोक्तमंत्रैर्वा अभि-
 षेकं मंत्रैर्धजमानमभिषिच्य शीर्षादं दद्यात् ततो ब्राह्मणान्भो-
 षायेत् ।

इति प्रतिकृतार्क शान्तिपद्धतिः ।

— १६ : —

अथ प्रतिशुक्रशान्ति परिभाषा ।

प्रतिशुक्रदीपमाह मुहूर्त्तचिन्तामणी—वेद्यैश्याद्यभिमुखदक्षिणैर्दिश्या द्गच्छंशु-
 रिशुक्रं नरोटा । बालश्चेद्भजते विपश्येन्नरोटाचेद्दन्ध्या भवति च गमिणोरवगमां ।
 पदाद्वयादरायणः— अस्तं गते भृगो पुत्रे तमायं गुग्ममागते । नष्टे जीधे निरशीयानैव गंचलं येदुधुमं ।
 १— अस्तं गते गुरोः शुक्रं तिहस्थं अ गृह्णती दंपत्यं कथं नय कथायुर्त्तुर्हृदि गेत् ।
 २— नगर प्रवेश विषयापुपदधे वरपोटने त्रिबुधनैर्धयाप्रयोः । त्र्यपीडन
 ३— ने प्रतिभागयो भवन्दिदोपकृपदि । विदुधत धर्तरीधयाप्रयो यत्र यागव्या त्रिबुधावेवा
 स्तेषां याप्राप्या नगरकोटयाप्रा देवदर्शनयाप्रा । तं धयाप्रा त्रिषु शुक्रान्नदीप गम्मुनश्चिण
 योत्रय दोषानवतीति शास्त्रगम्या । यादरायण—कश्यपेषु पक्षिषु चाग्निधुमं गिर मुच ।
 भरद्वाजेषु रम्येण प्रतिशुक्रं नमुष्यति । आपतिः— एत मागपुरे वाऽदिदिने रष्ट्रिन्ने ।

विचारि तीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रानुपस्थिति । बुधानुकूल्येनशुक्रास्नापवाद्माहश्रीपती—मगस्तं गतेष्या स्फुजिति प्रयाया द्युधोयदिस्था दशुह्यवर्ती । यातव्य दिशीष्टवर्तद्विर्धः । बालविशेषे प्रतिशुक्रापवाद् शुक्रास्तेच विशेषमाह मुहूर्त्तेचिन्तामणौ--य.पचन्द्रः पूषाभाट्टिकाये प.पटुक्रोधोनदुष्टीऽप्रदले । पराशरः—पीष्णादिवदि भ यात्रि यावत्सिष्टति चन्द्रमाः । तावच्छुक्रा- भवेदंधः समुखेगमनं हितम् । पूर्वपदस्येदंतस्यं निपातनाच्छुक्रोधोयदाभयंत्तदासम्भवे दक्षिणभार्गव दोपकृत्र्णाति प्रमाणम् । अथैवंविधेऽपि शुक्रसामुख्येऽवश्यकत्तद्व्यचगमने शान्तिमाह षड्विष्टः—तद्दोष शमनार्थंय शान्तिं वक्ष्ये समाप्तः । कृत्वाशान्तिं प्रथमेन पश्चात्तर्तु समाचरेत् । भृगुलग्ने भृगोवारे भृगोत्रेण भृगूदये । उपोत्त भृगुगोऽपिवावच्छुक्रोदयंप्रति । रजतेनच शुद्धेनकारये त.तिमांशुगोः लिवेदष्टदलं पद्मं कांस्य पात्रेच तण्डुलैः । २६ सूक्ष्मावरैर्वेष्य प्रतिमात्प्रपूजयेत् । शुक्र पुष्पाक्षतैर्गन्धै.शुभ्रमुक्ताकलाग्वितैः । उपचाराणिकावाणिशुभ्रन्त्रेणधीमता । तन्मन्त्रेण जपं कुर्यात्समग्रशोचरं शतम् । कर्मन्ते तेनमन्त्रेण भक्त्याचार्यं प्रदायेत् । श्वेतगंधाक्षतैःपुष्पैः क्षीर- मिश्रेण वारिणा । संप्रार्थ्यंच प्रयत्नेन प्रतिमाभूषणाग्विता । देवजायैवदातव्या श्वेत श्वसहितैवच, ब्राह्मणान्भोजयेत्परचान्स्वयंभुंजीतयेषुभिः । ततः सम्मुखजोदोपस्तत्क्षणादेवनस्थात् ॥

॥ इति प्रतिशुक्रशान्ति परिभाषा ॥

—:—

अथ प्रतिशुक्रशान्तिपद्धतिः ।

अथच सूत्रेण विषयेषु शुक्रशान्तिकर्त्ता शुक्रवारे चन्द्रतार- नुकूलेषुभदिने ॥ पूजास्थलमागत्य गणपत्यादि ग्रहपूजान्त पंचांग पूजनं कृत्वा ततः कांस्यापात्रे श्वेत तण्डुलै रष्टदलं कमलं विरच्य तत्रान्युत्तारणपूर्विकां साश्वशुक्रदंकिनां रजत प्रतिमां संस्थाप्य, संकल्पं कुर्यात्— अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकराशिरमुकशर्माहं, द्विरागन कर्मणि वानीर्थगमन यात्रादिषु प्रतिशुक्रसम्भुव दक्षिण- योर्दोषानुपत्तये, स्थापित रजत प्रतिमायां शुक्रपूजनं करिष्ये—ततः श्वेतपुष्पाक्षतैर्ध्यायित-३० श्वेतांबरः श्वेतपुः किरीटी चतुर्भुजो दैत्य गुरुः प्रशान्तः । तथाच सूत्रेच कमण्डलुंच जपंच विभ्रद्वरदो स्तुमहाम् ॥ ३० भूर्भुवःस्वः भोजकट देशोद्भवभार्गवसगोत्र शुक्ल वर्ण शुक्रअस्यां साश्वप्रतिमाया मिहागच्छेहतिष्टेत्यावाह्य । ३०

अन्नादिति प्रजापत्यश्चि सरस्वतीन्द्रा ऋषयोतिजगतीलुन्दः शुक्रो
 देवता शान्ति प्रतिमायां शुक्रस्थापने विनियोगः—३० अन्नात्परि
 स्रुतोरसं ब्रह्मणा व्यपिचत्क्षत्रं पयः सोमंप्रजापतिः । ऋतेनसत्य
 मिन्द्रियं विवपानं शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधु ।
 ३० एतन्ते देव० इति प्रतिष्ठाप्य । ३० शुक्रायनमः, इति सम्पूज्य
 श्वेतवस्त्रेणावेष्टय उपायनं निवेद्य, अष्टोत्तरशतंशुक्र मंत्रं जप्त्वा,
 ततः श्वेतगन्धाक्षत मुक्ताफल दुग्धमिश्रित जलमंजलीनिधाय
 उत्तिष्ठन्नर्घं दद्यात्तत्रमन्त्रः— ३० दैश्यमन्त्री दिवादर्शीचोश
 नाभार्गवः कविःश्वेतोथमंडलीकाव्यो विधिस्थोभृगवेनमः इत्यर्घ
 वारिणा प्रतिमांसंस्नाप्य मुक्ताफलंनिवेदयेत् । ततः श्वेतपुष्पाक्षतः
 प्रार्थयेत्—३० त्वत्पूजयानयाशुक्र सम्मुग्धत्वसमुद्भवं । दीपं
 विनाशयत्तिप्रंरक्षमांतेजसांनिधे । ततः उत्तरांगपूजनंकृत्वा, प्रति
 मादानंकुर्यात् । ब्राह्मणं सम्पूज्य संकल्पंकुर्यात्—अथेत्यादिसं-
 कीर्त्या मुकराशिरमुकोऽहं प्रतिशुक्रशान्तिकर्मणि, द्विरागमनादि
 दोषानुपत्तये, इमांसाश्वशुक्र प्रतिमांकांस्यपात्रसहितां भृगुदैवत्यां
 रजतस्का ममुकगोत्रायामुकशर्मणे तुभ्यंसंप्रददे ३० तत्सन्नमम
 एवं दानप्रतिष्ठांकृत्वा । कलशजलेन यजमानमभिषिचंगाशीर्दद्यात्
 ततो ब्राह्मणान्भोजयित्वा यथेष्टगमनं यात्रादिकंकुर्यात् अत्रके-
 चिद्वंशपात्रे प्रतिमास्थापनं पूजनंच वक्ष्यन्ति यथासमाचारस्तथा
 कर्तव्यः । इति प्रतिशुक्रशान्तिपद्धतिः ।

अथ नवग्रहशान्तिः ।

- . * -

तत्रादिस्य शान्ति ।

मदनरत्नेभविष्योत्तरं—श्राद्धिद्वार इस्तेन पूर्वपुत्रवियलण । मंत्रोक्तविनिनाम
 पुत्रपुत्रा समाहित । प्रत्यर्षदन्तानिहृष्य भस्तिपरान्तः । एतद्वृत्तमेवाप्ते पुत्रमिह्येभोर्नम्
 भस्करे वृद्धमीपुत्रपुत्रायावेननन्व । ताम् । त्रेस्थापित्वाऽपुत्रैः प्रपूजयेत् । रथयत्रमुक्त्वा
 एतेनपुत्रपुत्रम् । एतेनपुत्रपुत्रायावेननन्व । ताम् । त्रेस्थापित्वाऽपुत्रैः प्रपूजयेत् । रथयत्रमुक्त्वा
 एतेनपुत्रपुत्रम् । एतेनपुत्रपुत्रायावेननन्व । ताम् । त्रेस्थापित्वाऽपुत्रैः प्रपूजयेत् । रथयत्रमुक्त्वा

समिधोष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरेवच होतव्यामधुमपिम्या दध्नाचैव धृतेन च । अग्निमिधः । मन्त्रेणानेन विदुषं
 ब्राह्मणाय प्रदापयेत् । अ दिधेव नमस्तुभ्यंमन्तमन्ते दिवाकम् । स्यंमंत्तारस्वास्त्रा नस्मान् सप्तसागमन ।
 सूर्यपीडासु घोर सु कृता शान्तिः शुभप्रदः ॥

अथ चन्द्रशान्तिः—तद्वच्चिन्नासुं गृह्यसोमय रंविस्तृणः अनेनोत्तरविधिना कुरां पूजा-
 दिवंविधोः । सप्तमेतुततः प्राप्ते कुर्याद्ब्राह्मण भोजनम् । सप्तमेतुतते । कांसापात्रेभ्यस्त्वाप्य सोमं-
 रजत सम्भयम् । श्वेतत्रयुगन्धने श्वेतपुष्पैः पूषयतम् । होमं घृततिलैः कुर्यात्सोम ना-
 म्नाचमंत्रयित् । समिधोऽष्टोत्तरशत मष्टाविंशतिरेवच । होतव्यामधुमपिम्या दध्नाचैव धृतेन च ।
 दध्यध शिखरे कृत्वा ब्राह्मणाय निवेदयेत् । मंत्रेणानेन रजोन्द्र मम्यक् भनया गमन्विनः ।
 महर्देव जातिवन्तो पुण गोक्षीर पांडुर । सोम गीम्यांभयस्माकं सर्वदाने नमो नमः ।

अथ भौमशान्तिः—(वात्या) मंगारके गृह्य क्षमायां नक्त भोजनम् । पृथिव्यामेव ननुपात्रे
 भोजनम् । सप्तमेतवथ संप्राप्ते हेमं ताम्रे निवेशयेत् । रक्त वस्त्र युगन्धनं धुंमुमेनानुपितम् ।
 निवेश भनयाकं सार पुष्प धूपा क्षतादिभिः । होः घृत तिलैः कुर्यात्कुजनाम्नाचमंत्रयित् । समि-
 धोष्टोत्तरशत मष्टाविंशतिरेवच । होतव्यामधुमपिम्या दध्नाचैव धृतेन च । मंत्रेणानेन तं द्य
 द्वाह्मणाय कुंविने । कुत्र कुप्रभवोऽपित्व मंगलः परिगच्छते । अग्नेगले निहत्याशु सर्वदा
 यच्छ मंगलम् ।

अथ बुधशान्तिः—विनायासु बुधं गृह्य सप्त नक्तान्यथा चरेत् । बुधेशम
 मयं कृत्वा रथापिनं कांस्य भाजनं । हरिद्रस्य युगन्धनं पीतमात्यानु लेपनं । क्षीर यष्टिक
 नैरेवं ब्राह्मणाय निवेदयेत् । होमं घृततिलैः कुर्याद्बुधनम्ना च मंत्रयित् । समिधोऽष्टोत्तर
 शत मष्टाविंशतिरेवच । बुधत्वं बुद्धिजननो बोधवात्सर्वदा वृणम् । त्वावयोधे कुरामे सोम
 पुत्रायते नमः ॥

अथ गुरु शान्तिः—गुं चैवत्तुराधासु पूजयेद् भक्तिनरः पूर्वोक्तविधिना
 योमं सप्तनक्तान्यथा चरेत् । ईम ईममयं पात्रं रथापयेत्वा गृहस्थांत । पतिम्बर युगन्धनं पीत
 योमोक्षीतिनम् । पादुकाप नहच्छत्रका डलु निभूयितम् । पूजयेत्पीत कुशुमैः कुंमुमेनविलेपितम् ।
 धूपदीपादिभिर्दिव्यैः फलैश्चन्दन उडुलैः । खंड्याधोपहारैश्च गुरोरग्रे निवेदयेत् ॥ धर्मशास्त्रार्थ
 तत्पज्ञ ज्ञान विज्ञान पारग । विबुधाति हरार्चिल देवाचार्य नमोस्तुते । होमं घृत तिलैः कुर्याद्
 गुरुनम्ना च त्रयित् । समिधोऽष्टोत्तर शतमष्टाविंशति रेवच । होतव्या मधुमपिम्या दध्नाचैव
 धृतेनच । विपनस्थे गुरीकाशां नह शान्तिरियंभुभिः ।

अथ शुक्र शान्तिः—शुकं ज्येष्ठा ३
 संशुद्धनायां (पृथिव्या) नक्त भोजनम् । (दिनस्याधमभागेदे) गुरुक्त व्रमसागण द्विज
 मंतर्पणेन च । सप्तमेतवथ संप्राप्ते रौप्यं शुक्रतुकारयेत् । वंगपात्रे च संस्थाप्य पूजयेत्सित
 र्पकजैः । तद्भावे मितैः पुष्पैस्तान्बूलैश्चन्दनेनच । अथेतस्य प्रदातव्यं पश्यं घृत गुंयुनम् ।
 दद्यादनेन मंत्रेण ब्राह्मणाय बुद्धिम्बने । भर्गवो भर्गुश्च शुभिमृति विशा रद । द्वित्वा

प्रहृष्टान्दोषानाधुरारो यदोऽस्तुस । हाम घृत तले कुर्याच्छुक्र नग्नाच रघवित् । समिधो-
 षोत्तरशत मष्टाविंशतिवच । अथशनैश्चरादि शान्ति शनेश्चरं राहुकेतू लोहपात्रेषु
 विन्यसेत् । कृष्णाण्य रमृतो धूपो दक्षिणाच षशक्ति । यथाक्रम शमीपूर्वा कुशाना समिध
 स्मृता । गन्तमेतथ सप्राप्ततद्गणानथ कारयेत् । वृष्ण यज्ञ युगद्धम मँकैक कारयेद्घुध ।
 मृगनाभ्या ममालभ्य कुर्यान्विनिद्वय । होमावमाने तत्सर्वं ब्राह्मणायोष पादयत् । शनेश्चर
 नमस्तेऽस्तु नमस्ते राहुकेतवा । केतवे च नमस्तुभ्य सर्वशान्ति प्रच्छुभे । इति मदनरत्ने
 भविष्योत्तरे नवग्रह शान्ति विधि ॥

- ५ -

नवाष्टनवभूवर्षे, आश्विन्ये शुक्लपक्षके ।
 दुर्गांतसच दशम्यांच श्रवणक्षैरवेदिने ॥१॥
 आदित्यनामकेयंत्रे, इन्द्रप्रस्थे पुरेशुभे ।
 संरच्यमुद्रितः कर्मकाण्डरत्नाकरोहसौ ॥२॥
 चतुर्थस्तस्यचैवाऽसौ, ग्वंडःशान्त्यादिकर्मणाम् ।
 सम्पूर्णनामगादय गुरुपादानुकंपया ॥ ३ ॥
 प्रशंसन्तुग्रन्थं विमलमनसः कर्मनिपुणाः ।
 प्रवृत्तोनेवाहं जगतिशशसः ख्यापनकृते ॥
 प्रबन्धव्याजेन स्वयमिह महत्कर्मसरणौ ।
 मयाशङ्कापङ्के निजमनसिलग्नः परिहृतः॥४॥
 नात्रातीवप्ररुर्त्तव्यं दोष दृष्टिपरंमनः ।
 दोषोद्यविद्यमानेऽपि तच्चित्तानांप्रकाशते ॥५॥

इतिवैदिक पं० देवानन्द डिमरीविरचित
 कर्मकाण्डरत्नाकरस्यशांतिग्वंडश्चतुर्थः

॥ समाप्तः ॥
 संपूर्णोऽयग्रन्थः
 ॐ शान्तिः ३

